कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● परमात्मा के रचे हुए पदार्थ सबके लिए एक से है। सूर्य और चन्द्रमा सबको समान प्रकाश प्रदान करते है। वायु और जलादि वस्तुए सबको एक सी दी गई है। जैसे वे पदार्थ ईश्वर की देन है, सब प्राणियो के लिए एक से है ऐसे ही परमेश्वर प्रदत्त धर्म भी मनुष्यो के लिए एक और एक सा होना चाहिए।

● मै अपनी सामर्थ्य के अनुसार वेद का उपदेश करता हू। सिवाय उपदेश के और मैं कुछ अधिकार नही चाहता।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अक १] दयानन्दाब्द १६७ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ माघ कृ० १४ स० २०४८ २ फरवरी १९९२

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह १२ फरवरी ९२ को मनाया जायेगा

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा मुख्य अतिथि होंगे

दिल्ली २७ जनवरी। सार्वदेशिक सभा से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति मे बताया गया है कि आर्यसमाज के सस्थापक और भारतीय सास्कृतिक और सामाजिक उत्थान के अग्रदूत स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से आगामी १२ फरवरी १९९२ को नई दिल्ली के हिमाचल भवन के सभागार मे सायकाल ३ बजे से समारोह पूर्वक आयोजित किया जायेगा। समारोह की अध्यक्षता सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे और भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डा० शकरदयाल शर्मा इसके मुख्य अतिथि होगे।

अनेक केन्द्रीय मन्त्री व सासद भी इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करेंगे। सभी प्रान्तीय सभाए भी महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस १९ फरवरी १९९२ को समारोह पूर्वक आयोजित करेगी। सार्वदेशिक सभा से सभी प्रतिनिधि सभाओ और आर्य समाजो को तत्सम्बन्धी आदेश जारी किया जा चुका है।

—प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

श्रीनगर के ऐतिहासिक लाल चौक पर डा० जोशी ने तिरंगा फहराया

7

श्रीनगर २६ जनवरी। श्रीनगर का हृदय स्थल लालचौक एक अरसे के बाद आज वन्देमातरम् के नारो से गूज उठा। अलगाववादियो के राकेटी हमलो, बम विस्फोटो और गोलीबारी के बीच भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष डा० मुरली मनोहर जोशी ने वहा राष्ट्रीय ध्वज तिरगे को बडी शान से फहरा दिया। ठीक पौने नौ बजे लालचौक के निकट घण्टाघर के पास तिरगा फहराया गया और इसे सलामी देने के लिए सुरक्षा बल के सशस्त्र जवान और भाजपा के करीब सौ कार्यकर्ता मौजूद थे। सभी ने समवेत स्वर मे राष्ट्रीय गान गाया। झण्डा फहराने के बाद डा०जोशी और उनका काफिला विशेष विमान से सकुशल जम्मू लौट आया।

गत वर्ष भी घाटी मे हिंसक गतिविधिया पूरे उफान पर थी। घाटी के ज्यादातर लोग जगजुओ के साथ थे। उस समय जब राज्यपाल के सलाहकार वेद मरवाह ने श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम मे झण्डा फहराने के बाद लाल चौक जाकर भी राष्ट्रीय ध्वज फहराया तो किसी को नही मालूम था कि यही लालचौक और राष्ट्रीय ध्वज अगले साल १९९२ मे एक बडा और अलग किस्म का मुद्दा बनने जा रहा है।

इसी लाल चौक पर ३५ वर्ष पूर्व सोवियत रूस के राष्ट्रपति बुलगानिन और कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव ख्रुश्चेव ने कहा था कि हिन्दुस्तान को जब भी जरूरत पडे, यही खडे होकर हमे पुकार ले, हम दौडे चले आयेगे।

प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने भी यहा अनेक ऐतिहासिक भाषण दिए थे। १९४७ मे इसी लाल चौक से शेख अब्दुल्ला ने घोषणा की थी कि कश्मीर पाकिस्तान के साथ नही भारत के साथ रहेगा।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का १०६वां वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

लखनऊ २५ जनवरी, १६६२। उत्तर प्रदेश की आर्य समाजो के प्रान्तीय सगठन "आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ' का १ ६वा बृहदधिवेशन एव वार्षिक निर्वाचन दिनाक-२५ जनवरी १६६२ को पूर्वान्ह ११ बजे सभा के पूर्व घोषित कार्यक्रमानुसार डी०ए०वी० कालेज, लखनऊ के परिसर मे प्रान्त के ४७ जि म कि ३४१ आर्य समाजो क ८७४ प्रतिनिधियो की उपस्थिति मे श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री--सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एव कार्यकारी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सर्वसम्मति मे नि सज्जन उनके सम्मुख अ कित पदो पर निर्वाचित हुए।

१—श्री प० इन्द्रराज, १२४५ गोहरीपुरा मे ठ	प्रधान
२—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, सार्वदेशिक स०, नई दिल्ल	उपप्रधान
३—श्री जय नारायण जी अरुण प्रसाद कु ज, बिजनौर	„
४—श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य मोहल्ला कोट अमरोहा	„
५—श्रीमती डा० प्राणारानी राय, कानपुर	„
६—श्री मनमोहन तिवारी, लखनऊ	मन्त्री
७—डा० विनयप्रताप जी, गोरखपुर	उपमन्त्री
८—श्री वीरेन्द्र पाल जी शर्मा, बुलन्दशहर	„
६—श्री अरविन्द कुमार जी, मुजफ्फरनगर	„
१०—श्री विद्या सागर आर्य, सहारनपुर	„
११—श्री यशपाल जी आर्य, ४६-डिस्पेन्सरी रोड, देहरादून	कोषाध्यक्ष
१२—श्री बाबेलाल कक्कड़, सुमित्रा सदन, नैनीताल	सहायक कोषाध्यक्ष
१३—श्री देवकी नन्दन गुप्ता, मालवीयनगर, मु०बाद	पुस्तकाध्यक्ष
१४—श्री वेदप्रकाश आर्य, आ स. औरैया, इटावा	स० पुस्तकाध्यक्ष
१५—श्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी, राजस्व मन्त्री उ० प्र० शासन, लखनऊ, आर्यसमाज फर्रुखाबाद	प्रतिष्ठित अन्तरग सदस्य
१६—श्री चौ० माधवसिंह जी विनोद निवास, पट्टी चौधरान, बड़ौत मेरठ	प्रतिष्ठित अन्तरग सदस्य
१७—श्री महेश्वर जी पाण्डेय पूर्व एम एल सी, डी.ए.वी परिसर लखनऊ	प्रतिष्ठित अन्तरग सदस्य

इनके अतिरिक्त ४७ अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुए।

नोट—आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के वृहद अधिवेशन मे जो प्रस्ताव पारित किए गए हैं वे विस्तार पूर्वक अगले अक मे प्रकाशित किए जायेंगे।

पं० विशुद्धानन्द जी मिश्र एव पं० नरेन्द्रभूषण सम्मानित

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा प्रवर्तित "वेदवेदाग एव वेदोपदेशक पुरस्कार १६६२' के लिए आदरणीय पण्डित विशुद्धानन्द जी मिश्र एव पण्डित नरेन्द्र भूषण जी केरल का चयन किया गया है। वेद वेदाग पुरस्कार विजेता प० विशुद्धानन्द जी को २१०००) रुपय एव वेदोपदेशक पुरस्कार विजता प० नरेन्द्र भूषण जी को ११०००) रुपये की थैली अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी, शाल एव श्रीफल भेट कर सम्मानित किया जायेगा।

समारोह २ २-६२ को आर्य विद्या मन्दिर जुहू विलेपार्ले स्कीम बम्बई के सभागृह मे सम्पन्न होग। समारोह के मुख्य अतिथि भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह तथा समारोह का सयोजन वेदवेदाग पुरस्कार समिति के सयोजक कैप्टिन देवरत्न आर्य करेगे। —कैप्टिन देवरत्न आर्य, प्रधान

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई का ५८वा वार्षिकोत्सव रविवार दिनाक २६-१-६२ से २-२-६२ तक होगा। इस अवसर पर यजुर्वेद महायज्ञ राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, वेद वेदाग पुरस्कार एव वेदोपदेशक पुरस्कार के विशेष कार्यक्रमो का आयोजन किया गया है। यजुर्वेद महायज्ञ गुरुकुल एटा के आचार्य श्री वागीश शर्मा के ब्रह्मत्व मे होगा तथा नित्य साय ६ से ७ बजे तक किशोर शिविर का सचालन भी श्री वागीश जी करेगे। इस शिविर मे १४ से १८ वर्ष की आयु के बच्चो को नैतिक शिक्षा के अतिरिक्त बौद्धिक विकास, स्मरण शक्ति के विकास के लिए विविध प्रकार से प्रशिक्षित करेगे। कैप्टेन देवरत्न आर्य प्रधान

गढ़वाल के भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दानदाताओं की सूची (९)

स्वामी विवेकानन्द जी भिक्षु आर्य समाज बुगुडा जिला गुडगाम	२००)
श्री शिवप्रसाद गुप्ता कमला नगर, दिल्ली	१००)
आर्य समाज कोटली कालोनी जम्मू	३००)
महिला आर्य समाज गोविन्दपुरी मोदी नगर, मेरठ (उ प्र)	५०१)
श्री उत्तमचन्द आर्य द्वारा आर्य समाज चोलथरा जिला मण्डी (हि प्र)	५०)
श्रीमती शीला आर्य द्वारा आर्य समाज चोलथरा जिला मण्डी (हि प्र)	२०)
मन्त्री आर्य समाज हल्दी बाड़ी जिला सरगुजा	५०)
श्री राधकृष्ण नैय्यर हौजखास, नई दिल्ली	२००)
मन्त्री आर्य समाज बावड़ीकुई (राज)	५१)
मन्त्री आर्य समाज फिरोजपुर (हरियाणा)	१०००)
श्री मथुरादास नन्दा ग्राम धनेटा, जिला हमीरपुर(हि प्र)	१०००)
आर्य समाज जिला सिरमौर नारग (हि प्र)	५००)
श्री राजेन्द्र शर्मा जी आर्य मदनू जिला निजामाबाद	२०)
श्री कपिल कुमार राय व श्रीमती नीरजराम गा० बाद	१०००)
आर्य समाज जरीपटका नागपुर	१०००)
मन्त्री आर्य समाज आसनसोल १२० बर्दवान	३५००)
मन्त्री आर्य समाज नैनीताल (उ प्र)	२०००)
मोहनलाल अरोडा चैरि० ट्रस्ट, गगा स्वामी रोड, अमृतसर	२०००)
श्याम बिहारी आर्य ब्रह्मनगर, पुराना भरथना, इटावा	१००)
मन्त्री आर्य समाज खड़गपुर, जिला मिदनापुर (प० बगाल)	१२५)
आर्य समाज निगाव फरीदाबाद	११००)
सोनकी प्रसाद गुप्ता मेडिकल हाल, नया गाव, सीतामढ़ी	१००)
आर्य समाज न्यू कालोनी, गुडगावा (हरि०)	११००)
श्रीराम व श्रीमती सरोज कक्कड़ द्वारा बालकृष्ण शर्मा कैलीफोर्निया (यू एस ए)	१२५०)
मन्त्री आर्य समाज मोर्वी (सौराष्ट्र)	२००)
बालकृष्ण शर्मा कैलीफोर्निया (यू एस ए)	२५७२)
श्रीमती आर बी सलारका, गुरुकुल इगलिश मीडियम के बी स्कूल द्वारा कैप्टेन देवरत्न आर्य बम्बई	५५१)

सभी दानदाताओं का धन्यवाद।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादकीय

आर्यसमाज का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप (४)

९—आर्य प्रतिनिधि सभा डचगायना पो० बा० २५० पारामारिबो (सूरीनाम)

इस उपनिवेश से अमेरिकन आर्यन लीग की ओर से पंडित श्रुतिशील शर्मा ने प्रचार कार्य किया है। उन्होने पोर्टमराट मे एक डी० ए० वी० कालेज भी स्थापित किया। एमस्टरडम मे वर्ल्ड सेन्ट्रल आर्य समाज की स्थापना भी की। पिछले कुछ वर्षों से यहा पर आर्यसमाज का अच्छा कार्य चल रहा है। यहा से हालैण्ड जाने वाले प्रचारक बराबर सूरीनाम भी प्रचारार्थ जाते रहते हैं।

१०—गुयाना आर्य प्रतिनिधि सभा

डब्ल्यू० ३०९ मुकरे सेण्ट जार्ज टाउन पो० बा० ६६७ (गुयाना दक्षिण अमेरिका) इसके साथ अमेरिकन आर्यनलीग जिसकी सपत्ति इस समय ५ लाख डालर से अधिक है और कारिबयन का वैदिक परिषद सम्बद्ध हैं।

११—आर्य प्रतिनिधि सभा ट्रिनीडाड मोण्टीरोज विलेग, चौगानास, ट्रिनीडाड (वैस्टइंडीज)

इसकी स्थापना १९३८ मे हुई। पहले यह गुयाना आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ थी अब अलग है। इसमे लगभग २१ आर्य समाजे सम्बद्ध हैं। इनके अन्तर्गत लगभग २० विद्यालय और ११ महाविद्यालय, वैदिक प्रेस आदि चलते हैं। यहाँ आर्यसन्देश सप्ताहिक वैदिक सर्विस बुक तथा अन्य पुस्तको का प्रकाशन कार्य होता है।

१२—आर्य प्रतिनिधि सभा गैमीटे

पो० बा० २५० प्रेज स्ट्रीट पारामारिबोसुरीनाम डचगायना—स्थापित १९३१ (शाखाए १५ विद्यालय तथा महाविद्यालय ३ अनाथालय है इसकी सम्पत्ति लगभग ३० लाख डालर हैं।

१३—आर्य समाज बैंकाक ९ बेट डोनसेन, नीअर नाघी-सुबा तैग पो० बा० ७९९ बैंकाक

यह आर्य समाज १९३० में स्थापित हुई। २३ फरवरी १९१९ को ठाकुर श्री पलकधारी सिंह और श्री रामदेव सिंह आदि ने वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा की स्थापना की थी। बाद मे १९२० मे यह आर्य समाज के नाम मे परिवर्तित हो गई। इसके पास विशाल समाज मन्दिर भूमि भवन तथा पुस्तकालय आदि हैं जिनकी कीमत इस समय लगभग २५ लाख रुपए है।

१४—आर्य प्रतिनिधि सभा ब्रह्मदेश (रंगून)

१६६ बिगनबेट स्ट्रीट रगून। १८९८ मे जब आर्य समाज आन्दोलन पंजाब मे चल रहा था, तो उसका व्यापक प्रभाव रगून मे भी पडा। इसके परिणाम स्वरूप यहा पर आर्य समाज की स्थापना हुई। प्रथम आर्य समाज की स्थापना माण्डले मे हुई। इस समय लगभग ३० आर्य समाजे बर्मा मे प्रचार कर रही हैं। यहा आर्य समाज मन्दिर आर्य भवन और डी०ए०वी० कालेज हैं। कई लाख रुपए की सम्पति है। यहा सरकारी नियम के अनुसार भारत से साहित्य आदि भेजने मे वित्तीय कठिनाइया पैदा हो रही है फिर भी सार्वदेशिक सभा वहा आर्य समाज की गतिविधियो को सुचारू रूप से चलाने के लिए कृतसकल्प है।

१५—आर्य समाज सिंगापुर

इसका मुख्य कार्यालय ११३-११४ सैय्यद अलबीरोड सिंगापुर मे है। यहा १९२७ मे आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। १८ मार्च १९६१ मे भारत के उच्चायुक्त श्री योगेन्द्र कृष्णपुरी ने आर्य समाज मन्दिर के भवन का शिलान्यास किया और २६ जून १९६१ मे यह तिमजिला समाज मन्दिर बनकर तैयार हो गया। यहाँ पर डी०ए०वी० हिन्दी स्कूल की स्थापना की गई थी अनेक आर्य विभूतिया सिंगापुर गई और आर्य समाज के कार्य को गतिशील बनाने मे बडा योगदान दिया। इस समाज की सम्पत्ति अनुमानत २५ लाख रुपए से अधिक है।

१६—आर्य समाज नैदरलैण्ड

यूरोप महाद्वीप के नैदरलैण्ड मे आर्य समाज का सगठन १९६७ मे प्रारम्भ हुआ था। १९६८ मे आर्य समाज सरकार की ओर से पजीकृत हो गई। समय-समय पर यहा के बन्धु भारत आकर सार्वदेशिक सभा का मार्गदर्शन लेते रहते हैं। भारत से कई प्रचारक और उपदेशक यहा आते रहते हैं। इसका पता आर्यसमाज रोटरडम बीवर्सरेट ५२ ए० ३०७४ एस० पी० रोटरडम, नैदरलैण्ड है।

१७—नेपाल में आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन

नेपाल में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को सुदृढ करने के लिए सार्वदेशिक सभा बराबर प्रयत्न कर रही है। अभी तक नेपाल मे कई वैदिक विद्वान, भजनोपदेशक, उपदेशक आदि गये हैं और उन्होने वहा आर्य समाज के सगठन को मजबूत करने के लिए अपने-अपने ढग से प्रचार कार्य किया है।

नेपाल प्रचार के कार्य मे श्री स्वामी काव्यानन्द, आचार्य रामानन्द शास्त्री, गगाधर शास्त्री बृजमोहन सत्यपाल भजनोपदेशक, श्री प्रेमनारायण उपाध्याय श्री प्रकाशचन्द सुबेदी, (मन्त्री आर्य समाज झापा), श्री नगेन्द्र प्रसाद और श्रीमती चन्द्रकान्ता मल्ल (बहन शहीद शुक्रराज) का सहयोग सराहनीय है।

१८—इसके अतिरिक्त कुवैत, तिब्बत

श्रीलका और पाकिस्तान मे आर्य समाज के कार्यकर्ता वहा आर्यसमाज का स्थापना के प्रयासो मे लगे हुए है। १९८७ मे जर्मनी मे विश्व धर्म सम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती और उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् वहा गये थे और उस देश मे प्रथम बार वेदमन्त्रो का उच्चारण करके वैदिक धर्म के प्रचार का शुभारम्भ किया गया था।

प्रधानमन्त्री की जितनी प्रशंसा की जाए कम है

—शांता कुमार

शिमला २६ जनवरी। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री शांता कुमार ने श्रीनगर के लाल चौक मे राष्ट्रीय झण्डा फहराने के लिए जहा अपनी पार्टी के अध्यक्ष डा० मुरली मनोहर जोशी को बधाई दी है वहा प्रधानमन्त्री नरसिंह राव को भी प्रशसा की है।

श्री शांता कुमार ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने गणतन्त्र दिवस पर श्रीनगर मे राष्ट्रीय झण्डा फहराने का निर्णय लिया और डा० जोशी ने एकता यात्रा ले जाने का साहस किया। उन्होने कहा कि प्रधान मन्त्री श्री पी वी नरसिंह राव ने भी इसमें अपना सहयोग दिया। यह अवसर देश मे आम राय की राजनीति की शुरूआत थी और इसके लिए प्रधानमन्त्री की जितनी प्रशसा की जाय उतनी ही कम है।

नेपाल के विराट नगर में प्रथम ऐतिहासिक आर्य सम्मेलन

आर्य समाज झापा (विराट नगर) तथा आर्य समाज सिलीगुडी तथा नेपाल के कर्मठ आर्य वीरो ने बडी मेहनत व लगन से नेपाल के इतिहास मे पहली बार विराटनगर मे आर्य सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन के अध्यक्ष नेपाल के भू०पू० प्रधान मन्त्री श्री मातृका प्रसाद कोईराला सरक्षक सभापति, नेपाल के भू०पू० प्रधानमन्त्री श्री नगेन्द्र प्रसाद रिजाल थे, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। विशिष्ट व्यक्तियो मे कोशी अचलाधीश भी विराजमान थे।

विराट नगर के वीरेन्द्र सभागार मे २२ जनवरी ८६ को यह सम्मेलन हुआ। यह पहला अवसर था कि सभागार श्रोताओ से खचाखच भरा हुआ था। इस सम्मेलन मे आर्य जगत के सर्वोच्च नेता श्री शालवाले ने नेपाल के महाराजाधिराज से अश्वमेध यज्ञ कराकर विश्व मे वैदिक साम्राज्य की स्थापना हेतु विजय यात्रा की प्रेरणा की। उनकी इस प्रेरणा का जोरदार स्वागत हुआ। नेपाल मे आर्य समाज के प्रचार का मार्ग अब पूरी तरह खुल चुका है।

(समाप्त)

कुछ प्रेरणादायी भजन जिनसे मै प्रभावित हुआ

डा० भवानीलाल भारतीय

संगीत और काव्य के प्रति भावनावान् व्यक्ति का सहज आकर्षण होता है। जब मैं अपने बाल्यकाल की ओर दृष्टिपात करता हूं तो पाता हूं कि मेरे अग्रज श्री जवरनलाल जी माथुर, जो स्वयं आर्यसमाज से प्रभावित थे, हमें कुछ भजन सुनाया करते थे। यह तो बाद में पता लगा कि इनमें से निम्न ईश्वर विश्वास विषयक प्रभावशाली भजन पं० प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न का था:—

अति विकट विकट संकट का ठठ हर पथ है।
परवाह ही नहीं जब रक्षक जगदीश्वर है॥

और एक वीर की कामना को व्यक्त करनेवाले भजन की निम्न पंक्तियों ने तो मेरे बाल सुलभ मन में एक नया उत्साह तथा जोश पैदा कर दिया था:—

मत दो गुण गौरव धन मत घर दर भर दो।
रग रग में मेरे एक वीर रस भर दो॥
हो वही भाव अंकित मम हृदय पटल में।
मैं बनूं भरत अभिमन्यु वीर सा बल में॥
कस कमर ठोक भुजदण्ड धाऊं रण थल में।
तूं मचा प्रबल खल बल रिपुदल में पल में॥
भिड़ जाऊं काल से ऐसा निर्भय कर दो।
रग रग में······

आगे कवि राम, कृष्ण और नृसिंह के उदाहरण देता है:—

रिपु रावण सम यदि होय राम बन जाऊं।
रिपु कंस असुर, मैं सुघड़ श्याम बन जाऊं॥
रिपु हिरनाकुश तो मैं नृसिंह बन जाऊं।
रिपु काल व्याल तो मैं मयूर बन जाऊं॥
हे हरि हर्षित हो, कवि प्रकाश को (हम सब को) वर दो।
रग रग में मेरे एक वीर रस भर दो।

वीर रस की साकार अभिव्यक्ति वाला यह गीत भी कवि प्रकाश जी की ही रचना है।

गत जुलाई में मैं जब नांदेड़ आर्यसमाज में प्रवचन हेतु गया तो वहां के एक सज्जन ने कुंवर सुखलाल की यह मशहूर गजल सुनाई:—

खिदमते धर्म पर जो कि मर जायेंगे।
नाम दुनिया में अपना वो कर जायेंगे॥
यह न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे।
'वो' जिधर भेज देगा उधर जायेंगे॥

इस प्रभावशाली गजल की निम्न पंक्तियां तो और अधिक प्रभावित करती हैं:—

आर दिखला रहे हैं जिसे दुनियां।
वे नजे जो नहीं जो उतर जायेंगे।

अन्त में कवि ने कहा:—

आप मानें न मानें,
हम मुसाफिर हैं, कल अपने घर जायेंगे।

उपदेशक का काम तो तटस्थ होकर अपनी बात को कहना है, यही तटस्थ वृत्ति इन पंक्तियों में है। मैंने अपने प्रवचन के आरम्भ में उक्त गजल पर एक सटीक व्याख्यात्मक टिप्पणी की।

आर्य समाजों के नगर कीर्तनों, प्रभात फेरियों तथा जलसों में गाये जाने वाले भजन और गीत भी बहुत जोशीले, फड़कते हुए तथा श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध करने वाले होते थे। जब मैं जोधपुर में नवीं या दसवीं का विद्यार्थी था और पुरबियों के बास में अपने पैतृक मकान में रहता था, तो मैंने आर्य समाज गुलाब सागर की उन प्रभात फेरियों के भजन सुने जो आज भी मेरे स्मृति पटल पर ज्यों के त्यों अंकित हैं। इन्हें सुनकर मेरा किशोर मन आनन्द से प्रफुल्लित हो जाता था शरीर हर्ष से पुलकित हो उठता था और इच्छा होती थी कि क्यों नहीं 'दयानन्द की फौज' में तुरन्त भर्ती हो जाऊं। इन भजनों के नमूने भी देखिए:—

सिर जावे तो जावे, मेरा वैदिक धर्म न जावे।

और आगे की पंक्तियों में धर्म के ही कारण राम का राज्य त्याग, हरिश्चन्द्र का सर्वस्वत्याग तथा हकीकतराय का आत्म त्याग वर्णित किया गया है। अन्तत: कवि उस महान ऋषि को भी स्मरण करता है जिसने धर्म की खातिर विष पान किया। अब दयानन्द की सेना का यह प्रयाण गीत सुनें:—

अब रस्ता कर दो खाली।
आई फौज दयानन्द वाली॥

और आर्य वीरों के उद्बोधन का यह गीत:—

वैदिक नाद बजाओ, ए आर्य वीर जग जाओ।
समय नहीं सोने का प्यारे···

इसी के साथ इन पंक्तियों को भी सुनो:—

मधुर वेद वीणा बजाये चला चल।

आर्य समाज गुलाब सागर के वार्षिक उत्सव पर नगर कीर्तन आयोजित किया जाता था जो जोधपुर नगर के मुख्य बाजारों और नगर के बाहरी भाग से होता हुआ पुन: समाज मन्दिर में समाप्त होता। जब यह जलूस खाण्डाफलसा स्थित एक मिनारा (एक मीनार वाली) मस्जिद के सामने पहुंचता तो गायकों और भजन मण्डलियों में अतिरिक्त जोश का संचार हो जाता। उस समय भजन के ये बोल फूट पड़ते।

लहराये-लहराये जग मे झण्डा प्यारा ओम का आगे की पंक्तियों में ओम का ध्वज मन्दिरों के शिखरों, गिरजों के कंगूरो तथा मसजिदों की मीनारों पर फहराने की बात कही गई है। इन पंक्तियों को गाते समय तो हमारे आर्य वीरों के हाथों में लिये झण्डे तो सचमुच तीव्र वेग के साथ लहराये जाने लगते, मानो मस्जिद के कंगूरों पर इन्हें फहराने में अब अधिक विलम्ब नहीं था। कैसे थे वे दिन और कैसा निर्मल, निष्कलुष था हम लोगों का उत्साह। ते हि नो दिवसा: गता:। वे दिन बीत गये।

मैं आर्य समाज का मन्त्री २१ वर्ष की आयु में बना। याद आता है कि केसरिया साफा पहन कर मैं स्वयं इस जुलूस का नेतृत्व करता था और ओम का ध्वज मेरे हाथ में होता था।

ऋषि दयानन्द की महिमा के भजन मुझे बचपन से ही प्रिय रहे। हजारो सत्संगों, उत्सवों और सम्मेलनों में मैंने अन्य भजन सुने या नहीं, किन्तु दयानन्द महिमा के भजनों को मैंने सदा ही भाव प्रवण मुद्रा में और हर्ष प्रफुल्लित होकर सुना है। बचपन में महाकवि शंकर का यह भजन कण्ठस्थ किया:—

आनन्द सुधा सार दया कर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया॥

अन्त में:—

शंकर दिया बुझाय दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल बदन में बिला गया॥

अब दयानन्द के वीरो का वह प्रयाण गीत (Marching Song) भी सुनें:—

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
दयानन्द का काम पूरा करेंगे॥
उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे।
इसी के लिये जिये और इसी के लिये मरेंगे॥

अन्त में गीतकार की कामना है:—

कहेगा जगत् फिर इक स्वर से सारा।
अहो वृद्ध भारत गुरु है हमारा॥

हमारी आर्य कुमार सभा के एक पुराने साथी श्री तेजपाल अरोड़ा अपनी प्रभावशाली आवाज में यह भजन नगर कीर्तनों में गाते थे:—

भारत का कर गया बेड़ा पार वो मस्ताना योगी।
सोतों को कर गया फिर बेदार वो मस्ताना योगी॥

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वेद विषयक हमने जो लेख लिखे हैं उनका मुख्य लक्ष्य आर्य समाज के तीसरे नियम को समझने का यत्न करना है। आर्यसमाज का तीसरा नियम है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' इस नियम को समझने के लिए ऋग्वेद का "अदिति' शब्द बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। यह एक अद्भुत शब्द है। "अदिति' के लिये ऋग्वेद(१ ८९-१०) मे निम्न मन्त्र है—

अदितिः द्यौः, अदितिः, अन्तरिक्षं अदिति माता स पिता स पुत्र।
विश्वेदेवा. अदिति पचजना अदिति जात अदिति अदितिः जनित्वम् ॥

इस मन्त्र का अर्थ यह है कि ससार मे जो कुछ है, वह अदिति है। अदिति शब्द दिति से बना है। जो दिति न हो वह अदिति होगा। दिति शब्द दो अवखण्डनो धातु से बना है। दिति का अर्थ है—खडित, अदिति का अर्थ हुआ—अखण्डित। खडित का अर्थ है एक से दो, दो से तीन, तीन से चार इस प्रकार बढते ही जाना, अखडित का अर्थ है—सदा सर्वदा एक बने रहना, टुकडो मे न बटना। जितना भौतिक ज्ञान है जिसे हम विज्ञान कहते हैं, वह सब दिति मे ही समा जाता है क्योंकि वह कभी सत्य माना जाता है, कभी गवेषणा करते-करते असत्य हो जाता है और छोड दिया जाता है। अगर सब कुछ अदिति है जो जात या जनित्व है, वह सब अदिति है, तो वेद भी अदिति है सत्य भी अदिति है वेद ज्ञान भी अदिति है। वेद ज्ञान को अदिति कहने का अर्थ हुआ अखडित ज्ञान ऐसा ज्ञान जो सदा सर्वदा एक बना रहता है कभी बदलता नही सदा सत्य सनातन। इसी अदिति शब्द के लिए ऋग्वेद (८-१८-६) मे दो अन्य शब्दो का प्रयोग हुआ है जिससे हमारा विषय अधिक स्पष्ट हो जाता है। वह मन्त्र है—

अदितिर्नो दिवा पशु अदितिर्नक्त अद्वया।
अदिति पात्वहस. सदावृधा ॥

इस मन्त्र में "अदिति" के लिए "अद्वय' तथा सदावृध शब्दो का प्रयोग हुआ है। 'अद्वय' का अर्थ है जो दो न हो, सदावृध को पदच्छेद करके इसके दो अर्थ हो जाते हैं—सदावृध—अर्थात जो सदा बढता रहे, विकसित होता रहे, एक से दो, दो से तीन, तीन से चार होता रहे बढता रहे, इसका दूसरा अर्थ है सदा अवृध जो सदा एक रहे, १ से २, २ से तीन न हो नित्य सनातन एक रूप मे बना रहे। इस प्रकार वेद ने ज्ञान को तीन भागो मे विभक्त किया है—अदिति सदावृध तथा सदा-अवृध। अदिति वह ज्ञान है जो सदा एक रहता है, उसमें दो पक्ष नही हो सकते सदावृध वह ज्ञान है जो सदा बढता रहता है, बदलता रहता है। आज यह और कल वह बढेगा तो बदल कर ही तो बढेगा—यह वह ज्ञान है जिसे हम आज की भाषा मे विज्ञान कहते हैं—सदा अवृध वह ज्ञान है जिसे हम पहले अदिति कह आये हैं—सत्य ज्ञान अखडित ज्ञान एक ज्ञान न बदलने वाला ज्ञान या जिसे हम ईश्वरीय ज्ञान कहते हैं। ज्ञान सदा बढता रहता है, सदा-अवृध रहता है बदलता रहता है, यह भौतिक विज्ञान है इसका गुरु शिष्य परम्परा द्वारा आदान-प्रदान हो सकता है या मनुष्य द्वारा आविष्कार हो सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान सदा एक रहता है अदिति या अद्वय है, सदा सनातन है, इसका आविष्कार नही हो सकता, यह सदा दिया जाता है। ससार मे सदा एक रहने वाली अगर कोई वस्तु है तो वह सत्य है सत्य ज्ञान है। सत्य सदा एक रहता है, अखडित रहता है वेद के शब्दो मे कहें तो सत्य सदा अद्वय है अदिति है। यह नही हो सकता कि किसी बात के लिए हम कहें कि यह भी ठीक है और उसकी विरोधी बात भी ठीक है। सत्य सदा अद्वय होता है। उदाहरणार्थ हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, यहूदी हो पारसी हो, सभी कहेंगे कि सत्य बोलना चाहिए, कोई नही कहेगा कि सच भी बोल सकते हैं और झूठ भी बोल सकते हैं सब कहेंगे कि प्रेम करना चाहिए कोई नहीं कहेगा कि प्रेम भी करो द्वेष भी करो, सब कहेंगे कि परोपकार करना उचित है, कोई नही कहेगा कि परोपकार भी करो पर अपकार भी करो। ये तथा इस प्रकार के अनेक ऐसे आधार भूत तत्व है जिन्हे अद्वय अर्थात उनमें दो पक्ष नहीं हो सकते ऐसा सब कोई कहते हैं। अगर अदिति का अभिप्राय अद्वय है तो वेद ने इस शब्द को उक्त मन्त्र मे सदावृध शब्द के साथ जिसका अर्थ है सदा वर्धमान सदा बदलने वाला क्यो रखा? वर्धमान न सदभाव है जो सदा बढता रहता है। छोटे से बड़ा बड़े से बहुत बड़ा हो जाता है या हो सकता है। आज जैसा है कल वैसा नहीं है, अर्थात पहले जैसा नही है। जो चीज या जो विचार बदलता रहेगा वही तो बढेगा। वेद के एक साथ पहले कर चुके हैं, कुछ अब प्रयत्न करेंगे। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय मे विद्या तथा अविद्या इन दो शब्दो का उल्लेख करते हुए लिखा है

अन्यदाहु विद्यया अन्यदाहु अविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणा येमस्तद् व्याचचक्षिरे ॥
विद्या च अविद्या च यस्तद वेद उभय सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्यया अमृत अश्नुते ॥ (क्रमश)

आवश्यक सूचना

निर्णय के तट पर (प्राचीन शास्त्रार्थ सग्रह) के पाचवें भाग का प्रकाशन कार्य आरम्भ है, सभी आर्य भाइयो से अनुरोध है कि पूर्व की भांति इस भाग-५ के भी मात्र २०) रुपये भेजकर अग्रिम ग्राहक बनें, शेष क्रुसी रुपये पुस्तक प्राप्ति के बाद लिये जायेंगे।

इस ग्रन्थ का मूल्य भी छपने के बाद दो सौ रुपये या उससे अधिक ही होगा, अत आप अग्रिम ग्राहक बन विशेष छूट का लाभ उठायें। पूर्ण जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें।

पता:

"अमर स्वामी प्रकाशन विभाग"

१०५८-विवेकानन्दनगर, गाजियाबाद-२०१००१ (उ०प्र०)

कुछ प्रेरणादायी भजन

(पृष्ठ ६ का शेष)

ईंटे और पत्थर खाये गोली से न घबराये।
घातक से कर गया अपना प्यार वो ····

ऋषि भक्ति से ओत प्रोत स्व० बुद्धदेव विद्यालंकार का यह भजन है .—

नादान लोगों ने उस योगी का भेद न पाया।

कुछ वर्ष पूर्व आर्य समाज सैक्टर २२ चण्डीगढ के वार्षिक उत्सव पर एक गायक प० रामनाथ ने प० चमूपति की यह गजल गाई :—

ए दुनिया बता इससे बढ कर और हकीकत क्या होगी।
जा दे दी तलाशे हक के लिये और इबादत क्या होगी॥

इस भजन के बाद जब मेरा प्रवचन हुआ तो मैंने इसी गजल की ८-१० पंक्तियों की व्याख्या मे ही अपने प्रवचन को समाप्त कर दिया। गत दिनो जब मैं महाराष्ट्र के प्रवास पर गया तो वयोवृद्ध भजनोपदेशक प० वरदेव जी स्नेही से मैने आग्रह पूर्वक निवेदन किया कि आर्य समाज गुञ्जोटी (जिला उस्मानाबाद) में वे यही गजल गायें। तत्पश्चात मैंने इसकी व्याख्या अपने व्याख्यान मे की। कुछ वर्ष पूर्व तक आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राये अजमेर के ऋषि मेले मे आती थी। उनका निम्न सामूहिक भजन मेरी आत्मा के सुप्त तारो को झंकृत कर देता था :—

मेरा लीजो प्रणाम ऋषि राज दयानन्द।

पुरानी फिल्मो के प्रेमियो को एक 'नमस्ते' नामक फिल्म का स्मरण होगा। इसका एक गीत उस जमाने मे बडा लोकप्रिय हुआ था —

आये भी वो गये भी वो खत्म फसाना हो गया।
मेरे लिये तो मौत का हाय बहाना हो गया॥

इसी फिल्मी गीत की तर्ज पर किसी ऋषि भक्त ने इस सुन्दर भजन की रचना की :—

धन्य है तुमको ऐ ऋषि तूने हमें जगा दिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम तूने हमे बचा लिया॥
अन्धो को आंखें मिल गईं मुर्दों मे जान आगई।
जादू-सा क्या चला दिया अमृत-सा क्या पिला दिया॥

वस्तुत वह दयानन्द का जादू ही था जिसके कारण —

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पर खाई गोलियां।
और—हंस हंस के हंसराज ने तन-मन व धन लुटा दिया॥

उसी दयानन्द के जादू का परिणाम था कि —

अपने लहू से लेखराम तेरी कहानी लिख गया।
और—तूने ही लाला लाजपत शेरे बबर बना दिया॥

आज आर्य समाज में गाये जाने वाले भजनो मे वह गरिमा, प्रभावोत्पादकता और भावो की ऊष्मा नहीं है जो पहले के भजनो में थी। अब हम परमात्मा के निराकारत्व का प्रतिपादन करने वाले उस भजन को भूल गये जो प्रख्यात नाटककार नारायण प्रसाद बेताब की अमर लेखनी से निकला था .—

अजब हैरान हूं भगवन, तुम्हे क्यो कर रिझाऊं मैं।
नहीं वस्तु कोई ऐसी जिसे सेवा मे लाऊं मैं॥

मूर्तिपूजा और उसके अद्भुत देवता के आह्वान, दीपदर्शन, प्रसाद अर्पण पुष्पाञ्जलि आदि पर सटीक व्यंग्य करता हुआ कवि निम्न पंक्तियों मे अपने कथन का उपसंहार कर परमेश्वर के निराकार होने का उद्घोष करता है :—

भुजायें हैं न गर्दन है न सीना है न पेशानी।
तू है निर्लेप 'नारायण' कहां चन्दन लगाऊं मैं॥

आर्य समाज के ख्यात भजनोपदेशक, गायक, कवि और संगीतज्ञ अमीचन्द मेहता के भजनो को तो हमने भुला ही दिया। तभी तो संस्कारादि मंगल अवसर पर अब वह गीत सुनाई नहीं पडता :—

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद। जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद। अमीचन्द का निम्न भजन तो वेद, दर्शन, उपनिषदादि मे प्रतिपादित सिद्धान्तो का निचोड ही है जिसकी प्रत्येक पंक्ति की शास्त्रीय आधार पर व्याख्या की जानी चाहिए :—

जय जय पिता परम आनन्द दाता।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता॥

कीचड मे पडे अमीचन्द को हीरा कहने वाले दयानन्द की प्रशस्ति में स्वय मेहता ने ही लिखा :—

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया।
वाणी से जाये वो क्यो कर बताया॥

अमीचन्द के इन दुर्लभ भजनो के तीन संस्करण मेरे ग्रन्थालय मे हैं— (१) लाहौर की छपी बहुत पुरानी पुस्तक, (२) प० दौलतराम शास्त्री सम्पादित अमीरसुधा (३) प० चमूपति सम्पादित अमीरस सार।

आर्य समाज के सत्संगो मे कुछ अन्य कवियो की कृतियां भी समय-समय पर भजन रूप मे गाई जाती रही। उदाहरणार्थ यह प्रसिद्ध भजन —

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है। तथा— तेरे पूजन को भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान। प्रात काल की पावन बेला में यह भजन भी उद्बोधन तथा प्रेरणा देने वाला है :—

शरणप्रभु की आओ रे यही समय है प्यारे। आर्य समाज का पवित्रतावादी स्वर निम्न भजन मे मुखरित हुआ है :—

हे दयामय हम सबो को शुद्धताई दीजिये।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये॥

भारतेन्दु काल के नाटककार तथा निबन्ध लेखक प० प्रतापनारायण मिश्र ने स्वामी दयानन्द के व्याख्यान कानपुर में सुने थे और वे कुछ काल के लिये आर्य समाज के सदस्य भी रहे थे। उनका यह गीत भी आर्य समाज मे पर्याप्त लोकप्रिय रहा है :—

पितु मातु सहायक स्वामि सखा।
तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

इन पंक्तियो में वैदिक भक्ति तत्त्व ही व्यक्त हुआ है जिसमे परमात्मा को जीव का पिता माता बन्धु स्वामी और सखा माना जाता है। स्व० मुकेश ने इस भजन को अत्यन्त भाव प्रवण होकर गाया था।

पुस्तक समीक्षा

वैदिक सृष्टि उत्पत्ति रहस्य

डा० विष्णुकान्त वर्मा द्वारा लिखित एक अद्भुत ग्रन्थ

मूल्य १०० रुपये प्राप्ति स्थान :—
'इन्द्रप्रस्थ' सीपत रोड सरकंडा
बिलासपुर (म० प्र०)

डा० विष्णुकान्त वर्मा द्वारा लिखित "वैदिक सृष्टि उत्पत्ति रहस्य" भाग १, एक व्यापक विषय के एक पक्ष "वैदिक रसायन शास्त्र एवं नाभिकीय विज्ञान" पर केन्द्रित महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

पुस्तक की विशेषता यह है कि इसके द्वारा जो व्यक्ति विज्ञान के तत्वों से अनभिज्ञ है उसे वे तत्व बहुत सरल भाषा में समझ में आ जाते हैं और फिर वेदमन्त्रों मे उन्ही तत्वों को प्राप्त कर उसे आश्चर्य मिश्रित गर्व की अनुभूति होती है।

मन्त्र क्र० ५ की व्याख्या के अनुसार विष्णु द्वारा तीन पदों मे पृथ्वी को नापने की क्रिया का निराकरण करते हुए विद्वान लेखक ने यह बताया है कि ये मूल प्रकृति के तीन भेद हैं।

आगे चलकर इन तीन भागों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है और वैदिक मन्त्रों से उसे स्पष्ट किया गया है।

इस प्रकार डा० विष्णुकान्त वर्मा ने सृष्टि उत्पत्ति के वैदिक रहस्यों को वैज्ञानिक आधार पर उद्घाटित ही नही किया, अपितु तर्कपूर्वक समझाया भी है।

वेदों में विज्ञान की बात बहुतबार कही तो जाती है, परन्तु उसे तर्कपूर्वक सिद्ध करने का कार्य नहीं किया गया। डा. वर्मा इस प्रयास के लिए बधाई के पात्र हैं। इसी श्रंखला मे उनसे वैदिक विज्ञान के अनेक पक्षो के उद्घाटन की हम आशा करते हैं।

यह सुखद सयोग ही है कि प्रस्तुत पुस्तक के प्रणेता डा० वर्मा गणित और उसकी सहायक विज्ञान शाखाओ के अनुभवी प्राध्यापक और वैदिक साहित्य के समर्थ प्रवक्ता हैं। ऋग्वेद की भाषा और उसकी ऋचाओं में बिखरे गूढ़ संकेतों तथा कठिन प्रहेलिकाओं को सुलझाने का श्रम साध्य प्रयत्न उन्होंने किया है। ऐसा करने में वह पारम्परिक व्याख्या पद्धति से अलग हटकर स्वामी दयानन्द सरस्वती के समान धातु प्रत्यय विश्लेषण पद्धति के आश्रित होकर चले हैं।

डा० वर्मा कहते हैं कि —

—वैदिक सृष्टि उत्पत्ति रहस्य भाग १, शीर्षक ग्रन्थ के अन्तर्गत वेद में विद्यमान रासायनिक विद्या व नाभिकीय विज्ञान को एक क्रमबद्ध व्यवस्थित विषय के रूप में १६ अध्यायों में प्रस्तुत कर रहा हू। मेरा यह आग्रह नहीं है कि वेद मे यह विद्या इतनी ही है किन्तु यह अवश्य है कि मन्त्रो मे निहित विज्ञान को विज्ञान का ज्ञाता ही समझ सकता है जैसे भौतिकी शास्त्र या गणित शास्त्र की पुस्तक को साहित्यकार नहीं समझ सकता।

१—वेद ज्ञान की धरोहर हैं। २—ऋग्वेद दर्शन विज्ञान का ग्रन्थ है।
३—ऋग्वेद मे प्रतीकवाद। ४—ऋग्वेद मे सांकेतिक शब्दों का प्रयोग।
५—ऋग्वेद के शब्द अनेकार्थी हैं। ६—ऋचाएं परस्पर सम्बद्ध हैं।
७—वेद मौलिक सत्ताएं हैं। ८—सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी वैज्ञानिकपरिकल्पना
९—ऋग्वैदिक सृष्ट्युत्पत्ति एवं आधुनिक विज्ञान का तुलनात्मक विवेचन।
१०—ऋग्वैदिकदर्शन ऋग्वेदकी रहस्यमयी अग्नि: के स्वरूप का विवेचन। अग्नि शब्द ज्ञान का द्योतक है, अग्नि शब्द का प्रयोग मूल शक्ति के अर्थ में ऋग्वैदिक परिकल्पना।

आदिकाल से ही मानव की जिज्ञासा उसे सृष्टि के रहस्यों को समझने के लिए प्रेरक करती है। इस जिज्ञासा की पूर्ति के लिए प्राचीन धर्मों ने एक सर्वशक्तिमान देहधारी ईश्वर की कल्पना की जिसके संकल्प मात्र से जगत की उत्पत्ति हो गई। ईश्वर ने विचारा कि हो जा और यह जगत अस्तित्व में आ गया। कुछ ने इस विचार को प्रस्तुत किया कि जगत सदैव से ऐसा ही है। इस मत के प्रवक्ता बौद्ध थे।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

प्रधान संचालक का उड़ीसा प्रांत का दौरा

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य ३ जनवरी को गुरुकुल आमसेना पहुंचे। खरियार रोड स्टेशन पर पश्चिमबंग आर्य वीरों एवं आर्य वीरदल के अधिकारियों ने माल्यार्पण द्वारा उनका स्वागत किया और बैण्ड के साथ शोभायात्रा के रूप में खरियार रोड होते हुए गुरुकुल ग्राम सेना में आगमन हुआ। ४ जनवरी को गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं आर्य वीर दल उड़ीसा के अधिकारियो द्वारा डा० आचार्य की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से मई मास में प्रांतीय शिविर गुरुकुल आमसेना में लगाने का निर्णय लिया गया।

आर्य वीर दल उड़ीसा के सचालक ब्र० जीवबर्धन आर्य तथा उनके अनेक साथी प्रात: गुरुकुल से अनेक ग्रामों में आर्यवीर दल की शाखा लगाने के लिए जाते हैं।

प्रधान सञ्चालक की प्रेरणा से गुरुकुल के अधिकारी तथा योग साधना शिविर में आर्यजनों ने १००० रु० तथा ४० गणवेश बनाने के लिए इतनी ही राशि सहर्ष प्रदान की। गुरुकुल के आचार्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्कल के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी का पूरा सहयोग आर्य वीर दल को प्राप्त हो रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एव विदर्भ के अधिकारियों ने भी इस क्षेत्र में आर्य वीर दल का प्रचार-प्रसार करने के लिए पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया है। दल के शिक्षक ब्र० अरुणकुमार भी १ मास तक दुर्ग भिलाई क्षेत्र में शाखाओं का सचालन करने के लिये पहुंच गये हैं।

—कार्यालय मन्त्री

युग पुरुष स्वामी दयानन्द का सन्देश घर-घर पहुंचाना है

—गिरिधर नाईक

गत १ जनवरी ९२ को श्री महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति सण्डवा के द्वारा आयोजित ग्राम जसवाड़ी में नेत्र शिविर का अवलोकन करते हुये जिला पुलिस अधीक्षक श्री गिरिधर नायक ने कहा कि युग-पुरुष, अन्ध विश्वास को मिटाने वाले, हिन्दी को प्रतिष्ठित करने वाले, स्वाधीनता आन्दोलन को गति देने वाले स्वामी दयानन्द का सन्देश आज ज्यादा आवश्यक है, उसे ग्रामीण अचल में घर-घर पहुंचावे, वह शिक्षा, स्वास्थ के माध्यम से ही होगा। आप लोगों ने जो ग्रामीण अचल में नेत्र शिविर लगाया है इसलिए सभी बधाई के पात्र हैं, स्वागत श्री कृष्णलाल आर्य एवं आभार श्री कैलाश चन्द पालीवाल ने माना।

गढ़वाल के भूकम्प पीड़ितों के लिये आर्यसमाज का योगदान

आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार जयपुर ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर २१००) का ड्राफ्ट भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु भेजा है। साथ ही जूते चप्पलों के बोरे तथा कपड़े भी संग्रहीत कर भेजे जा रहे है इस कार्य में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री सुन्दरलाल महाजन, चन्द्रभान आर्य, शिवकुमार कुर्मी आदि प्रधान श्री ओमप्रकाश विजय के नेतृत्व में धन एवं वस्तु सग्रह के कार्य मे सलग्न है। आर्य समाज के कर्मठ मन्त्री श्री ब्रह्मानन्द जी के प्रयोगों से ११००) की राशि सग्रहीत कर भेजी गई है। नगर की अन्य समाजें भी इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग प्रदान कर रही हैं।

श्रीमती उमा बरतरिया का देहावसान

ग्वालियर ५ जनवरी। आर्य समाज चित्रगुप्तगंज लश्कर की अन्तरग सदस्य एव पूर्व प्रधाना श्रीमती उमा बरतरिया का देहावसान दिनाक १ जनवरी १९९२ को हो गया। श्रीमती बरतरिया अनेक वर्षों तक आर्य समाज के प्रधाना के पदपर आसीन रही तथा वतमान मे वे अन्तरग सदस्या थीं।

दिनाक २ जनवरी को उनके पार्थिव शरीर का दाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री गोकुलप्रसाद शास्त्री के नेतत्व मे लक्ष्मीगज श्मशान घाट पर सम्प न हुआ जिसमें सभी सम्बन्धित समाजो के पदाधिकारी एव सदस्य तथा अनेको गणमा य व्यक्ति उपस्थित थे।

उक्त आर्य समाज के सभा भवन मे आयोजित श्रद्धाजलि सभा मे आर्य समाज के सभी पदाधिकारिया एव अ य गणम य व्यक्तियो ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्म मे दिवगत आत्मा को सद्गति एव शाति प्रदान करने तथा शोक सतप्त परिवार को दु ख सहन करने की शक्ति देने हेतु एक प्रस्ताव पारित कर कामना का गई।

—प्र० शच द्र अग्रवाल म त्री

आर्यसमाज चित्रगुप्तगज लश्कर

शोक समाचार

आर्य समाज के प्रचारक एव भजनोपदेशक स्व० श्री महावीर शास्त्री जो आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के भी प्रचारक रह चुके हैं। उनका निधन दिनाक ८ १ ९२ को आर्य समाज मोगल सराय मे हुआ। उनका शव उनके घर मोहल्लारायगज गाजीपुर दिनाक ९ १ ९२ को आया। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक विधि से गगातट पर सम्प न हुआ।

आर्य समाज गाजीपुर के साप्ताहिक सत्सग दिनाक १२ १ ९२ मे उनकी आत्मा की शाति के लिए तथा शोक सन्तप्त परिवार जनो को धैय प्रदान करने के लिय २ मिनट रहकर ईश्वर से प्राथना की गई

—जयकृष्ण आर्य मन्त्री

शिवशरण दास जी अग्रवाल आर्य का निधन

वयोवृद्ध समाज सेवी श्री शिवशरण दास जी अग्रवाल आर्य का निधन दिनाक १७ ११ ९१ को रात्रि तीसरे पहर मे उनके डालटनगज निवास पर हो गया। कुछ दिनो से उनका स्वास्थ्य गिर गया था।

दिनाक १८ ११ ९१ को कोयल नदी के पावन हरिश्च द्र घाट पर विशाल जन समूह एव परिजनो की उपस्थित में पडित रामदेव प्रसाद शास्त्री आर्य पुरोहित के आचार्यत्व मे उनका अ त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। उनके एकमात्र पुत्र श्री अरूण कुमार अग्रवाल ने मुखाग्नि दी।

आर्य जगत पलामू को इनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। वे अपने पीछे धमपत्नी एक पुत्र पौत्र दो पुत्री दामाद एव भरा पुरा परिवार छोड गये है।



आर्य समाज रंगून (बर्मा) में श्री डा० सुभाष आर्य

रंगून। डा० सुभाष आर्य २४ नव. १९९१ से ३ दिन तक रंगून प्रवास मे रहे। उस समय आपने आर्यसमाज और वहा के विशेष व्यक्तियो से सम्पर्क किया। साप्ताहिक अधिवेशन मे भी उपस्थित सदस्यो को सम्बोधित किया।

श्री वेदव्यास जी के घर पर पारिवारिक सत्सग मे भी भाग लिया। और उपस्थित सदस्यो से आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिये विचार विमर्श किया।

रगून आर्य समाज के विशिष्ट व्यक्ति—

श्री रसिकलाल गांधी, श्री काशीनाथ जी, श्री मोतीराम जी श्री रामदास जी बर्मा से विस्तार से वैदिक धर्म प्रचार की चर्चा हुई। आपने सुझाव दिया, कि बर्मा के क्षेत्र मे आर्य समाज फैले। श्री डा० सुभाष आर्य ने सार्वदेशिक पत्र भी भिजवाने की व्यवस्था की और पाच सौ यज्ञ पद्धति प्रकाश भी भिजवाई हैं।

—सम्पादक

व्यक्तिगत

हमारा सुपुत्री श्री भानुप्रकाश निवासी आर्य बाल गृह, १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली ने अपना नाम बदलकर निल्पी रख लिया है।

श्री वेदप्रकाश आर्य का आकस्मिक निधन

सिंगरौली कालरी आर्य समाज के मन्त्री तथा कर्मठ कार्यकर्ता श्री वेदप्रकाश आर्य का ७ जनवरी १९९२ को देहावसान हो गया। वे ७५ वर्ष के थे। उनके निधन से सिंगरौली के लोगो ने एक लोकप्रिय आर्य समाजी, ऋषि दयानन्द सरस्वती का असाधारण सिपहसालार तथा शिक्षाविद खो दिया है वे अपने पीछे एक भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

उनको श्रद्धाजलि देने वालो मे श्री वी पी. पाण्डेय प्राचार्य कला एव विधि महाविद्यालय सिंगरौली, सेठ माताप्रसाद जी प्रधान आर्य समाज सिंगरौली प० विन्दाप्रसाद चतुर्वेदी आदि गण मान्य व्यक्तियो के अतिरिक्त एन सी एल केन्द्रीय अस्पताल, व्यापार मण्डल, विभिन्न शैक्षणिक सस्थाओ मे भी उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुये दिवगत आत्मा की सदगति तथा शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदनाये प्रकट की गई।

श्री वेदप्रकाश आर्य की इच्छानुसार उनका अन्तिम सस्कार बटका नाला श्मशान घाट पर दिनाक ८ फरवरी को साय पूर्ण वैदिक रीति मे सम्पन्न हुआ। अन्त्येष्टि के अवसर पर भारी सख्या मे लोगो ने उपस्थित होकर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

शांति यज्ञ व शोक सभा शुक्रवार १०-१ ९२ को दोपहर ३ बजे डा० राकेश आर्य के आवास एन सी एल, कालोनी मे श्री वीरेन्द्र आर्य के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुई।

—प० विन्दाप्रसाद चतुर्वेदी

॥ ओ३म् ॥ दूरभाष : ३४३७१८, ३१२११०

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला—राजकोट-३६३६५० (गुजरात), उप कार्यालय : आर्य समाज, 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण
एवं
आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते !

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव १-२-३ मार्च १९९२ तदनुसार रवि, सोम, मगल, को ऋषि जन्म स्थली टंकारा मे भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। देश-देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे। इस वर्ष आर्य वानप्रस्थाश्रम के अध्यक्ष महात्मा आर्य भिक्षु जी, आचार्य यशपाल सुधांशु, एम ए, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार श्री ओमप्रकाश वर्मा भजनोपदेशक यमुना नगर पधार रहे है। कन्या गुरुकुल बड़ोदा, पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्याए, टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी आर्यवीर दल अहमदाबाद, एव केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली तथा अन्य सस्थाओ के युवक, समारोह मे कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। पधारने वालो के आवास, भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा, किन्तु बाहर से पधारने वाले सज्जन ऋतु अनुकूल अपने-अपने बिस्तर अवश्य साथ लायें।

इस समय टंकारा ट्रस्ट के अधीन निम्न कार्य चल रहे है :

(१) अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय (२) दिव्य दयानन्द दर्शन चित्रगृह
(३) आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र (४) गो-सवर्धन केन्द्र (गौशाला)
(५) अतिथि गृह (६) वेद प्रचार
(७) पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय

ऋषि जन्म स्थली टंकारा मे अभी और भी अनेक विशेष करणीय कार्य हैं जैसे ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार मे लेना, टंकारा की सस्थाओ का विकास तथा जन्म स्थली को विश्वदर्शनीय बनाना। टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की सस्थाओ का विकास तथा अन्यान्य कठिनाइयो को दूर करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं। इन सब कार्यों के लिए कम से कम ८-१० लाख रुपए की और आवश्यकता है।

टंकारा की गौशाला मे आजकल २५ से अधिक गायें हैं। इस गौशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष इस गौशाला मे घाटा हो जाता है। यह घाटा ऋषि-भक्तो और गोभक्तो के दान से ही पूरा होता है।

अत आपसे विनम्र निवेदन है कि ऋषि बोधोत्सव पर प्रात इष्ट मित्रो सहित टंकारा पधारिये और इस सारे कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए। यह दान राशि आप क्रास चैक ड्राफ्ट अथवा मनिआर्डर से महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम से इसके दिल्ली कार्यालय, आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली १ के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से अपनी आर्य समाज, अपनी शिक्षण सस्था तथा अन्य सम्बन्धित सस्थाओ की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनिए।

विशेष सूचना—टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि पर आय-कर की छूट है।

निवेदक :—

ओंकारनाथ	**शान्ति प्रकाश बहल**	**रामनाथ सहगल**
मैनेजिंग ट्रस्टी	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४१/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२-२-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसंस U नं० ९३
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment license No. U 93 Post in N.D P.S.O.on 30,31-1-1992

मानव कल्याण महायज्ञ

आर्य समाज विदापुर मण्डल के तत्वावधान में २३-२-१९९२ को पश्चिम दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के सहयोग से सी १ जनकपुरी, पखा रोड निकट मेन रोड चाणक्य प्लेस में मानव कल्याण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर आयोजन को सफल बनायें।

—प० अशोक कुमार

अरुणोदय बाल संस्था

देश की भावी पीढ़ी के अन्दर अपने देश, धर्म व संस्कृति के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु तथा अनाथ, निर्धन व विकलांग बच्चों की शिक्षा व प्रगति में हर सम्भव सहायता देना इस संस्था का उद्देश्य है। इस संस्था की स्थापना १८ नवम्बर १९९० को की गई थी।

इसी परिप्रेक्ष्य में मार्च १९९२ के अन्तिम सप्ताह में संस्था की तरफ से एक प्रतियोगिता सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये इस प्रतियोगिता में चित्रकला, गायन, वादन, वाद-विवाद हस्तलेखन कविता पाठ आदि की प्रतियोगितायें सम्मलित की गई है। प्रतियोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु १५ फरवरी से प्रात १० बजे से ११ बजे तक तथा सायं ६ से ७ बजे तक निम्न पते पर अथवा फोन से सम्पर्क करें—

पता—श्रीमती उज्ज्वला वर्मा बी बी ब्लाक जनकपुरी (मीरा माडल स्कूल के पास) नई दिल्ली-५८। फोन—५५०१८१७ या ५५९४३६५।

इस सामाजिक कार्य हेतु समस्त आर्य भाई बहनों से सहयोग की अपेक्षा की जाती है। प्रतियोगिता में सफल बच्चों को पुरस्कार देने हेतु कप या शील्ड अथवा आर्थिक सहयोग देने वाले सज्जनों का उचित सम्मान किया जायेगा।

संचालिका
उज्ज्वला वर्मा

आर्यसमाज विनय नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज विनय नगर का ४१ वां वार्षिकोत्सव तथा धर्मवीर हकीकत राय का बलिदान दिवस समारोह आर्य समाज मन्दिर बाई ब्लाक सरोजनी नगर नई दिल्ली में ६ से ९ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। मुख्य कार्यक्रम ९ फरवरी को होगा।

६ से ८ फरवरी तक प्रतिदिन प्रात ७ से ८ बजे तक यज्ञ तथा रात्रि में ७ से ९ बजे तक भजन तथा वेद कथा का आयोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा राष्ट्र एकता सम्मेलन तथा अन्य कार्यक्रम भी सम्पन्न होंगे। समारोह में आचार्य रविदत्त जी गौतम, श्री सत्यदेव जी स्नातक रेडियो सिंगर के अतिरिक्त आर्य जगत के अनेक विद्वान् आदि अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

सार्वदेशिक (पत्र) के नियम

(१) सार्वदेशिक पत्र का ग्राहक वर्ष के किसी भी समय से बना जा सकता है।

(२) सार्वदेशिक पत्र का वार्षिक (२०/- रु०) या आजीवन (३००/- रु०) सदस्यता शुल्क मनीआर्डर द्वारा ही भेजने का कष्ट करें।

(३) प्रत्येक ग्राहक के पास 'सार्वदेशिक' बड़ी सावधानी से भेजा जाता है। परन्तु यदि किसी ग्राहक को पत्र न मिले तो कार्यालय से पत्र-व्यवहार द्वारा या व्यक्तिगत सम्पर्क करें तथा साथ ही अपने डाकघर से भी इसका स्पष्टीकरण मांगें। पत्राचार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

(४) प्रकाशनार्थ लेख टाईप किये हो या स्पष्ट अक्षरों में हाथ से लिखे होने पर ही स्वीकार किये जायेंगे।

(५) वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की मान्यताओं के अनुरूप लेखों को ही प्रकाशित किया जाएगा। लेख को न्यूनाधिक करना सम्पादक के अधीन है।

(६) सार्वदेशिक पत्र को और अधिक जनप्रिय बनाने के सुझावों का स्वागत है।

—सम्पादक

10150—पुस्तकालयध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

वैदिक शोध संगोष्ठी का आयोजन

आपको सूचित किया जाता है कि आर्य समाज कोटद्वार के सौजन्य से ७, ८ ९ फरवरी, १९९२ को वैदिक शोध संस्थान संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस संगोष्ठी का उद्घाटन माननीय सुभाष विद्यालंकार, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कर कमलों द्वारा ७ फरवरी ९२ को अपरान्ह २ बजे किया जायेगा। समारोह में सर्वश्री वेदप्रकाश प्रोफेसर, डा भारतभूषण, डा महावीर अग्रवाल, डा हरिगोपाल शास्त्री, डा वेदप्रताप वैदिक, सत्येन्द्र गुहिया पूर्व सांसद, श्री बाकेलाल कंसल आदि पधार रहे है। छात्र-छात्राओं की योग-वाक् प्रतियोगिता, संस्कृत नाटक, चित्र, गायन, विविध कार्यक्रम, प्रात दैनिक यज्ञ ७ से १० बजे मध्याह्न २ से ५ बजे व रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गये हैं। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु आर्य समाजें अपना विशेष योगदान [illegible] पधार कर अपना सहयोग प्रदान करेंगे। जिसके लिए आर्य [illegible] कोटद्वार आप सबका आभारी रहेगा।

शालिगराम	महेन्द्र कुमार वर्मा
प्रधान	मन्त्री

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर विशेष छूट का लाभ उठायें

आर्यसमाजों की लाईब्रेरी व स्कूल कालिज की लाईब्रेरी के लिए निम्न पुस्तकें सभा से आधे मूल्य में खरीदें

	रुपए- पैसे	आधे मूल्य मे
सत्यार्थ प्रकाश शिक्षायें	१०)००	५)००
संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश	५०)००	२५)००
दयानन्द दिव्य दर्शन	५०)००	२५)००
जन्मगत जातपात वेद विरुद्ध मतखण्डन	३)५०	१)७५
स्वामी ब्रह्म मुनी जीवन चरित्र	२)००	१)००
सत्यार्थ प्रकाश दो समुल्लास	१)५०	०)७५
वेद और वेद यज्ञ	६)००	३)००
सिक्खों का तुष्टीकरण	२)००	१)००
बन्दा बीर बैरागी	८)००	४)००
आर्य निदेशिका भाग १	१२)००	६)००
,, ,, भाग २	३)००	१)५०
वेदार्थ कल्पद्रुम	६०)००	३०)००
वेद निबन्ध स्मारिका	३०)००	१५)००
वैदिक कोष संग्रह	१५)००	७)५०
वैदिक धर्म की रूप रेखा	६)००	३)००
Storm in Punjab	८०)००	४०)००
दिल्ली स्मारिका १९९०	१०)००	५)००
Bankim Tilk Dayanand	४)००	२)००
योग—	३५२)५०	१७६)२५

नोट—पूरा सैट मगाने पर ही छूट उपलब्ध होगी तथा डाक व्यय हेतु २५) रुपये आर्डर देते समय अवश्य भेजें।

प्राप्ति स्थान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन ३/५, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २

सार्वदेशिक प्रेस [illegible] द्वारा मुद्रित तथा डा० [illegible] के लिए मुद्रक और प्रकाशक
[illegible] नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● मेरा उद्देश्य इस प्रकार लोगों को मिलाना है ! सकल समुदायों को एकता में लाना है। मैं चाहता हूं कि कोल भील से लेकर ब्राह्मण पर्यन्त, सबमें एक ही जातीय जीवन की जागृति हो। चारों वर्ण के लोग एक दूसरे को अंग अंगी समझें।

● जब कोई आर्य एकाएकी हो तो उसे स्वाध्याय करना चाहिए। दो आर्य हों तो उन्हें परस्पर प्रश्नोत्तर और सम्वाद करना उचित है। यदि दो से अधिक आर्य एकत्रित हों तो उनको चाहिए कि परस्पर सत्संग करें। किसी धर्म ग्रन्थ का पाठ सुनें सुनावें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३१७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक २]   दयानन्दाब्द १६७   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२   फाल्गुन शु० ५   सं० २०४८   ९ फरवरी १९९२

चाणक्य धारावाहिक की सम्पूर्ण ५२ कड़ियां दिखाई जायेंगी

प्रधानमन्त्री श्री पी०वी० नरसिंह राव के हस्तक्षेप से चाणक्य धारावाहिक की सम्पूर्ण ५२ कड़ियों को बिना किसी काट-छांट के दूरदर्शन पर दिखाने का निर्णय लिया गया है।

प्रधानमन्त्री ने सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय को यह निर्देश दिये हैं कि राष्ट्र के चरित्र निर्माता चाणक्य की जीवन चर्या को प्रदर्शित करने वाले धारावाहिक को किसी भी रूप में कम न किया जाय। इस आशय का बयान सूचना एवं प्रसारण राज्यमन्त्री श्रीमती गिरिजा व्यास द्वारा भी जारी किया गया है।

उल्लेखनीय है कि इस धारावाहिक की काट-छांट सम्बन्धी सूचना मिलते ही अखिल भारतीय हिन्दू संस्थाओं के मुख्य प्रतिनिधियों की एक बैठक दिल्ली के आर्य समाज दीवानहाल में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे बुलाई गई थी। जिसमें सरकार को यह चेतावनी दी गई थी कि समस्त हिन्दू सगठनों द्वारा इस धारावाहिक को पूरा न दिखाये जाने पर आन्दोलन किया जायेगा।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने इन प्रस्तावों सहित कड़े शब्दों में सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के निर्णय पर रोश प्रकट करते हुये प्रधानमन्त्री तथा अन्य केन्द्रीय मन्त्रियों को पत्र लिखे थे।

प्रधानमन्त्री के इस दूरदर्शिता पूर्ण निर्णय पर समस्त देशवासियों ने सन्तोष प्रकट किया है।

इज़्राइल के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने पर आर्यसमाज द्वारा स्वागत

दिल्ली ३० जनवरी।

भारत सरकार द्वारा वर्षों की प्रतीक्षा के बाद इज्राइल के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधान मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव और उनकी सरकार को बधाई देते हुए कहा, यद्यपि यह निर्णय देर से लिया गया है, परन्तु भारत की राष्ट्रीय अखण्डता और प्रभुसत्ता के लिए यह महत्वपूर्ण कदम है। इससे देश की अनेक समस्याओं का समाधान होगा। पूरा आर्य जगत इसका स्वागत करता है।

स्वामीजी ने कहा वह जब लोकसभा के सदस्य थे, तो उस समय भी उन्होंने इज्राइल के साथ राजनयिक सम्बन्ध जोड़ने की मांग रखी थी और स्व० प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और स्व० राजीव गांधी से भी यह बात कई बार कही थी। उन्होंने कहा कि प्रधानमन्त्री श्री पी०वी० नरसिंह राव ने यह बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है। पूरा देश इस निर्णय का स्वागत करता है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

गाय बची तो देश बचेगा

गांधी जी के लिए हिन्दू धर्म का मूल तत्व गोरक्षा है। 'मेरे लिए गोरक्षा का विचार मानवता के विकास क्रम में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम है। यह मनुष्य को अपनी जातीय परिधि से बाहर ले जाता है। गाय में मैं समस्त मानवेतर प्राणियों के दर्शन करता हूं। मनुष्य से यह अपेक्षा की जाती है कि गाय के माध्यम से वह समस्त प्राणी जगत् के साथ तादात्म्य का अनुभव करे। और गाय को ही पूजा के लिए क्यों चुना गया, यह मैं स्पष्ट देख सकता हूं। भारत में गाय मनुष्य की सबसे अच्छी साथी थी। वह समृद्धि का स्रोत थी। गाय करुणा का काव्य है। इस निरीह प्राणी में करुणा के दर्शन होते है। वह करोड़ों भारतीयों की मां है। गोरक्षा का मतलब है, ईश्वर की सृष्टि के समस्त मूक प्राणियों की रक्षा। प्राचीन ऋषियों ने, वे जो भी रहे हों, मनुष्य के दया-भाव को मानव जाति की परिधि से निकाल कर सृष्टि भर में फैलाने का काम गाय से ही शुरू किया। मानवेतर प्राणियों के प्रति करुणा रखने की आवश्यकता इस कारण और भी बढ़ जाती है कि वे मूक हैं। गोरक्षा विश्व को हिन्दू धर्म की देन है और जब तक गोरक्षा करने वाले हिन्दू दुनिया मे मौजूद है तब तक हिन्दू धर्म भी जीवित रहेगा।' (वाङ्मय २१/२४८-९)   (शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के वार्षिक अधिवेशन में पारित प्रस्ताव

सभा के १०६ वें वार्षिक अधिवेशन मे देश तथा सम्पूर्ण विश्व की धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विषम परिस्थितियों पर गम्भीर चिन्तन के उपरान्त सर्वसम्मति से क्रमश: निम्न धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये। साथ ही यह विचार भी सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ कि आर्य समाज का वेद सम्मत राष्ट्रीय एवं धार्मिक चिन्तन ही आज की दुर्दशाग्रस्त स्थिति में विश्व को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। अत: आर्य समाजों के संगठन को समस्त कुण्ठाओं और संकीर्ण मनोवृत्तियों से ऊपर उठकर क्षुद्र स्वार्थों को त्यागकर एक सर्वव्यापी विश्व कल्याणकारी संगठन के रूप में शक्तिशाली बनना नितान्त आवश्यक है। एतदर्थ समस्त आर्य बन्धुओं का आह्वान किया गया।

धार्मिक प्रस्ताव

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम" की अवधारणा के साथ "सर्वे भवन्तु सुखिन:" तथा "वसुधैव कुटुम्बकम् की श्रेष्ठ भावना के साथ समस्त विश्व के मानव एक हैं। वेद सभी धर्मों का सार है। व्यक्ति नहीं किन्तु समष्टि के कल्याण के लिए निर्धारित सर्व कल्याणकारी श्रेष्ठ सिद्धान्त ही धर्म है।" संसार का उपकार करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् समस्त विश्व मानवों की धार्मिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करने को सभी आर्य जन प्राणप्रण से उद्यत हों।

सामाजिक प्रस्ताव

आज मानव समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों का शिकार होने के कारण अत्यन्त दुखमय स्थिति मे पहुंच गया है। छुआछूत, जन्मपरक जाति-पाति, दहेज, बाल विवाह, सतीप्रथा, मूर्तिपूजा, पाखण्ड गुरुडम एवं अविद्या ने हमारे समाज को कुण्ठाग्रस्त बना रखा है। आर्य समाज अपने जीवनकाल के प्रारम्भ से ही इन सभी कुरीतियों को सामाजिक अभिशाप मानता है। और इसके विरुद्ध संघर्षरत रहा है। आज की यह सभा अपने सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा जगती के सभी आर्य बन्धुओं का आह्वान करती है कि वे इन सामाजिक कुरीतियों को उखाड़ फेंकने के लिए कटिबद्ध होकर जुट जाये।

राजनैतिक प्रस्ताव

राज्यसत्ता के ऊपर धर्मसत्ता का अकुश न होने से राज्यसत्ता निरंकुश हो जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि समाज मे अव्यवस्था फैल जाती है और प्रशासन पगु हो जाता है। अत: आर्यसमाज सम्प्रदाय निरपेक्ष किन्तु धर्मसापेक्ष राजनीति के सिद्धान्त का पोषक है। इसके कारण हमारे राजनैतिक मनीषियों ने अपनी राज्य संसद का आदर्श सूत्र 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय" निर्धारित किया है। आर्य समाज आसेतु हिमाचल, कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक तथा अटक से लेकर कटक तक प्राकृतिक भौगोलिक सीमाओं मे आबद्ध इस भारत भूमि को अपनी मातृभूमि, पितृभूमि और कर्मभूमि मानने वाला, इसकी सुरक्षा तथा गौरव गरिमा की स्थापना हेतु प्राणोत्सर्ग से भी पीछे न हटने वाला इसके आदर्श पुरुषों और मानबिन्दुओं को अपने आदर्श और प्रतिष्ठा केन्द्र मानने वाला एक सशक्त संगठन है। यह भेदभाव रहित बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की न समाजवादी न साम्यवादी किन्तु त्यागवादी वैदिक राजनीति का पोषक है। समस्त आर्य वैदिक (हिन्दुजन) इसी राजनीति के प्रचार एवं प्रसार हेतु उद्यत हों।

आतंकवादियों के विरुद्ध प्रस्ताव

बड़े दु:ख का विषय है कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा की जाने वाली एकता यात्रा के बन्धुओं तथा पुलिस अधिकारियों और सुरक्षा कर्मियों पर आतंकवादियों ने प्राण घातक हमला करके ६ व्यक्तियों की हत्या कर दी एवं अनेकों को घायल कर दिया। यह सभा इस कृत्य की घोर निन्दा करती है और प्रभु से दिवंगत आत्माओं की शान्ति व दु:खी परिवार जनों के धैर्य के लिए प्रार्थना करती है। दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। सभा की यह सर्वसम्मत मांग है कि कश्मीर में धारा-३७० को तुरन्त हटाया जाय। और पाकिस्तान में जहां-जहां आतंकवादियों के प्रशिक्षण शिविर चल रहे हैं उन्हें नष्ट किया जाय और पाकिस्तान के इस घृणित कार्य के लिए सेना द्वारा मुंहतोड़ जवाब दिया जाय।

सम्मेलन का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने किया।

बसन्त गीत

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आया ऋतुराज बसन्त लेकर के छटा निराली।
लेकर के छटा निराली, लेकर के छटा निराली।।
पचम स्वर अलापिनी कोयल ने आवाज लगाई।
मृदुतर वाणी बोल बोल कर देने लगी बधाई।।
चहक उठीं चचल चिड़ियायें होकर के मतवाली।
पतझड़ वृक्षों की फिर से लहराई डाली डाली।।
हो गया विदा ऋतु हेमन्त—लेकर के छटा निराली।।१।।
जौ गेहूं और मटर चना अरहर ओये तरुणाई।
पीली पीली सरसों फूली देख रहे लहराई।।
मखमल सा हरियाली का सुन्दर बिछ रहा बिछौना।
उगल रहा हीरे मोती भारत का कौना कौना।।
आ गया शीत का अन्त—लेकर के छटा निराली।।२।।
शीतल मलय बयार सुगन्धित आया मस्त महीना।
आलू बैंगन मेथी गोभी खड़े तानकर सीना।।
लाल लाल फूलो से सैमल ढाक सबे छवि छाई।
सुख शृंगार बहार प्यार का मौसम है सुखदाई।।
ऋतुराज बसन्त महन्त—लेकर के छटा निराली।।३।।
मौसम मन भावन फागुन का सुखद महीना आया।
बजे ढोल ढप ढोलक चिमटा घर आनन्द समाया।।
छै: ऋतुओं का राजा आया नूतन शान निराली।
कहे स्वरूपानन्द आज है घर घर में खुश हाली।।
प्रभु गुण गाये साधु सन्त—लेकर के छटा निराली।।४।।
आया ऋतुराज बसन्त—लेकर के छटा निराली।।

गाय बचो तो देश बचेगा

(पृष्ठ १ का शेष)

गांधी के अनुसार 'सच्चे हिन्दू की पहचान तिलक नहीं है, मन्त्रों का सही उच्चारण नहीं है, तीर्थाटन नहीं है और न जाति-पांत के नियमों और बन्धनों का सूक्ष्म पालन ही है। उसकी पहचान तो उसकी गोरक्षा की क्षमता है। गोरक्षा के धर्म को स्वीकार करते हुए भी हमने गौओं और उनकी सन्तानों को दासत्व की स्थिति में पहुंचा दिया है, और परिणामत: हम स्वयं भी दास बन गए हैं।'

(वाङमय २१/२५६)

—महात्मा गांधी

बसन्त मेला

हिमालय की सुरम्य उपत्यका गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम 'कोटद्वार' में बसन्त पंचमी मेला, श्री सत्यदेव जी भारद्वाज की अध्यक्षता में ६ से ११ फरवरी १६६२ तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। राष्ट्र मेध यज्ञ, ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन, विशाल दंगल, राष्ट्ररक्षा, शिक्षा, गोरक्षा तथा आर्य सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया है। इसके अतिरिक्त आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, उपदेशक तथा भजनोपदेशकों के हृदयग्राही प्रवचन भी होंगे। भोजन तथा आवास की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से रहेगी।

सम्पादकीय

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के विवाद को समाप्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा का सद्प्रयास

आदर्श वैदिक आर्य समाज के भूतकाल का पवित्र चित्र देखकर आज के गिरते हुए चरित्र तथा उसकी रक्षा का प्रश्न सामने आता है, और उस प्रश्न का उत्तर यही हो सकता है कि अगर हम लड़ना जानते है तो मिलकर बैठना भी जानते हैं। जिस स्थान पर भय व्याप्त है वहा रक्षा का प्रबन्ध भी होना चाहिए। आज तक यदि हम बाहरी शत्रुओ से रक्षा करने मे समर्थ रहे हैं तो सदा ही समाज के भीतरी घात से भी रक्षा करने मे तत्पर रहे हैं।

आज भी कुछ भीतरी सघान यत्र-तत्र विद्यमान हैं। जिन्हे दूर करने में सज्जनशील व्यक्तियो ने अपने सद्प्रयास किये हैं और कर रहे हैं।

इसी सन्दर्भ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के चल रहे वर्षों के विवाद को निपटाने का भी कितना प्रयास किया गया है इसकी चर्चा करना आर्य जनो के सामने समयोचित हैं—

विवाद होते हैं पर उनका उपशम भी आवश्यक है—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिनिधि सभा के द्वारा स्थानीय आर्य समाजो तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के विवादो को स्वय तथा न्याय सभा के द्वारा उन्हे सही दिशाबोध देकर विराम दिया है।

आज उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का विवाद वर्षों से चला आ रहा है और पहले भी उत्तर प्रदेश सभा विवादो के घेरे मे रही है जब स्व० प० प्रकाशवीर जी शास्त्री प्रधान थे, स्व० स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती के समय मे भी बड़े स्तर पर विवाद थे।

प० प्रकाशवीर जी शास्त्री के समय उन्होने सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती तत्कालीन लाला रामगोपाल शालवाले ने तब मध्यस्थ बनकर विवाद को अपने हाथो में लेकर दोनो पक्षो को समझाकर सुलझा दिया था।

अब भी श्री आनन्दबोध सरस्वती जी वहा के विवाद को सुलझाने की इच्छा रखते हैं इस निमित्त समय २ पर दोनो पक्षो को लिखा भी है

(१) एक बार श्री धर्मेन्द्र सिंह जी तथा श्री प्रो० रतनसिंह जी ने मुझसे कहा था कि श्री स्वामी जी महाराज से कहो कि आप मध्यस्थ बनकर विवाद को सुलझा दें, उन्होने श्री धर्मेन्द्र सिंह जी को पत्राचार किया -पर सफलता नही मिली।

(२) दूसरी बार श्री स्वामी जी ने फिर न्याय सभा के द्वारा निर्णय कराने हेतु लिखा परिणामत दोनो पक्ष न्याय सभा के सामने आ गये पर श्री धर्मेन्द्र सिंह जी ने अपना पत्र (अपील) वापस ले लिया।

(३) अन्तत जब दोनो पक्षो ने अपना-२ निर्वाचन कराने की विज्ञप्ति प्रकाशित की तब एक बार श्री स्वामी जी ने फिर प्रयास किया और पत्र-लिखे कि परस्पर मिलकर एक साथ चुनाव करो। इस पत्र का उत्तर एक पक्षीय श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री सभा की ओर से स्वीकृति के साथ मिला। किन्तु श्री धर्मेन्द्र सिंह जी की ओर से कोई उत्तर नही मिला। इस पत्र मे यही निर्देश दिया गया था कि दोनो पक्ष मिलकर निर्वाचन करे।

इस पत्र को इस लेख के साथ ही अविकल प्रकाशित कर रहे हैं। दोनो पक्षो ने अपना अपना निर्वाचन कर लिया है ऐसी सूचना मिली है। आवश्यकता इस बात की थी कि हाई कोर्ट के निर्णयानुसार एस०डी०एम० लखनऊ जिनके अधिकार क्षेत्र मे था कि वह रजिस्ट्रार महोदय को आदेश देते कि आप अपने अधिकार मे लेकर चुनाव सम्पन्न कराद। परन्तु ऐसा न होकर दोनो पक्ष अधिकार की लड़ाई लड़ते रहे।

आर्य समाज से निष्कासित श्री कैलाशनाथ सिंह जी ने सभा पर अनधिकृत रूप से कब्जा दो बार कर लिया। परन्तु श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री ने दोनो बार अधिकार कर लिया। अबकी बार राजनीति ने नया मोड़ लिया और सरकारी पक्ष (बी.जे.पी.) के श्री कल्याणसिंह जी ने श्री कैलाशनाथ सिंह यादव को अधिकार से बैठा दिया।

इस विवाद को सुलझाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध जी सरस्वती ने जो पत्र धर्मेन्द्रसिंह जी तथा मनमोहन तिवारी जी को लिखा है वह अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री धर्मेन्द्र सिंह जी, ३०-१२-९१

सप्रेम नमस्ते !

मुझे न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने बताया है कि आपने जो विवाद सार्वदेशिक न्याय सभा के समक्ष प्रस्तुत किया था उसे वापस ले रहे हैं।

यह दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जा सकता है, परन्तु फिर भी एक सुझाव आपको देना चाहता हू और मुझे आशा है कि यदि आप उसके अनुसार कार्यवाही करे तो उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा का विवाद हमेशा के लिए समाप्त हो सकता है।

उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव २-२-९२ से पहले होना है, यदि यह चुनाव आप सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह जी के द्वारा करालें और सभी पक्ष उस चुनाव के निर्णय को मान लें तो यह विवाद हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा और आपका पूरा समय आर्य समाज के प्रचार-प्रसार मे लग सकेगा। देश इस समय सकट की परिस्थितियो मे है और हमे इस प्रकार के आपसी विवादो को समाप्त कर के मिलकर कार्य करना चाहिये। मैं दूसरे पक्ष के अधिकारियो को भी लिख रहा हू और उनको लिखे गये पत्र की प्रतिलिपि आपको भी भेज रहा हू।

यदि आप यह सुझाव स्वीकार करे तो अपनी अन्तरग सभा से इस प्रस्ताव को पास कराके मुझे सूचित कर दें। दूसरे पक्ष का उत्तर आने पर मै श्री महावीर सिंह जी से तुरन्त इस कार्य हेतु प्रार्थना करूगा।

शुभकामनाओ सहित !

सलग्न— भवदीय

न्याय सभा के अन्तिम निर्णय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिनाक २७-१२-९१ की प्रतिलिपि सभा प्रधान

श्री धर्मेन्द्र सिंह जी

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

नोट—इस पत्र का कोई उत्तर श्री धर्मेन्द्र सिंह जी ने नही दिया है तथा श्री मनमोहन तिवारी का उत्तर प्राप्त हो चुका है जिसमे उन्होने सभा के सुझाव को स्वीकार किया है।

इस अनाधिकार चेष्टा का उत्तर श्री कल्याणसिंह जी मुख्यमन्त्री को चारो ओर से दिया गया। परन्तु उन पर कोई असर नही पड़ा। अब विवाद ऊचे स्तर पर हो रहा है।

'ऊट किस करवट बैठेगा' कहा नही जा सकता है—श्री मनमोहन तिवारी कब सभा भवन पर अधिकार करले। परन्तु इस अधिकारवाद के विवाद से ऊचा उठकर—न्याय सभा के अध्यक्ष श्री महावीर सिंह जी रि० जज हाई कोर्ट के द्वारा निर्णय करा ले। या सार्वदेशिक सभा को पच मानकर विवाद सुलझा लें जैसा कि परम्परानुसार होता आया है। कहीं एक सीमा रेखा होना चाहिए। लड़ाई भी लड़लें और फिर परस्पर मिल बैठकर निर्णय कर ले।

आवश्यकता इस बात की है कि लोग कहे क्या तमाशा है पहले लड़ते हैं फिर ऐसे मिलकर बैठ जाते हैं जैसे लड़े ही न थे। समय को पहचानिये-विवादो के घेरे तोड़कर परस्पर प्रीतिपूर्वक मिलकर दुनिया को दिखादें कि, हम लड़ना भी जानते हैं और मिलकर बैठना भी जानते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन का दिग्दर्शन

विमल बधावन एडवोकेट

१—वेदों की ओर चलो—महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू समाज में व्याप्त रूढ़िवाद, पाखण्ड और धर्म के नाम पर फैली हुई कुरीतियों पर प्रहार करते हुए लोगों को वैदिक ज्ञान की प्रेरणा देने के उद्देश्य से कहा था 'वेदों की ओर चलो'। स्वामी जी ने सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुन: स्थापना के लिए अनेक कष्ट उठाते हुए भी जीवन पर्यन्त अथक प्रयास किये। उन्होंने वेदों का तर्क संगत तथा विज्ञान मूलक भाष्य किया था।

२—दलितोद्धार—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वर्ण व्यवस्था और जातिवाद के कारण पैदा हुए सामाजिक भेदभाव पर भी कड़ा प्रहार किया और उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर यह सिद्ध किया कि ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जन्म से नहीं होते अपितु अपने व्यक्तिगत गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर इनका निर्धारण होता है। स्वामी जी का कहना था कि समाज से ऊंच-नीच और छुआछूत जैसी बीमारियों का अन्त तभी हो सकता है जब हम यह मान लें कि सत्कर्मों से व्यक्ति ऊंचा और दुष्कर्मों से नीचा होता है।

स्वामी जी के द्वारा स्थापित आर्य समाज ने अपने ११५ साल के इतिहास में दलितों को ऊपर उठाने का सराहनीय कार्य किया है।

३—स्त्री शिक्षा तथा अधिकार—स्वामी दयानन्द सरस्वती स्त्री शिक्षा के भी प्रबल समर्थक थे और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए भी स्वामी जी ने अथक प्रयास किये। स्वामी जी के निर्देशों पर चलते हुये आर्य समाज सदैव बाल विवाह, बहु विवाह और सती प्रथा का कट्टर विरोधी रहा है और दूसरी तरफ अन्तंजातीय तथा विधवा विवाह के समर्थन में आर्य समाज द्वारा सदैव कड़ा मोर्चा लिया गया है।

४—स्वाधीनता संग्राम—महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में भी भूमिगत रहकर देशी रियासतों के राजाओं को एकता सूत्र में बांधने तथा इस संग्राम की तैयारी में बहुत सराहनीय कार्य किया।

स्वामी जी की प्रगाढ़ और उत्कट देशभक्ति किसी से भी छिपी नहीं रही। कांग्रेस की स्थापना के भी लगभग १३ वर्ष पहले सर्वप्रथम १८७२ मे स्वामी जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से पूर्ण स्वतन्त्रता का घोषणा करते हुए स्वदेशी राज्य का नारा बुलन्द किया। इसी ग्रन्थ की प्रेरणा से पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, स्वामी श्रद्धानन्द, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, वीर सावरकर, श्यामजी कृष्ण वर्मा सहित लाखो अन्य नव युवकों ने कांग्रेस आन्दोलन को स्वदेशी राज्य के लक्ष्य की ओर उग्रता से चलाया।

५—आर्यसमाज की स्थापना—अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सन् १८७५ मे स्वामी जी ने बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। इस अवसर पर स्वामी जी ने स्पष्ट घोषणा की थी कि मेरा अभिप्राय किसी नये मत, पन्थ, सम्प्रदाय या मजहब की स्थापना करना नही अपितु सत्य सनातन और प्राचीन मान्यताओं व संस्कृति की पूर्ण स्थापना करना ही है।

६—अनेकता मे एकता की खोज—स्वामी जी यह चाहते थे कि अपनी-अपनी भिन्नताओं के बावजूद समस्त मत, पन्थ एव सम्प्रदाय यदि उदारता पूर्वक विचार करें तो सामाजिक व्यवहार के विषयों पर इन सबमे एक राय स्थापित हो सकती है। स्वामी जी ने यह विचार ब्रिटिश सरकार की ओर से आयोजित दिल्ली दरबार में रखे थे, जिसमें अलीगढ यूनीवर्सिटी के सर सैयद अहमद खां को भी बुलाया गया था।

पं० आशानन्द भजनोपदेशक द्वारा १ लाख रु० का सात्विक दान

अजमेर में ऋषि मेले के अवसर पर सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० आशानन्द जी ने परोपकारिणी सभा को एक लाख रुपए का दान देने की घोषणा की। यह दान उन्होंने ऋषि उद्यान के प्रवेश द्वार के निर्माण के लिए दिया है। श्री आशानन्द जी इस समय ६१ वर्ष के हैं, उन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगाया है। इस वृद्धावस्था में भी उनकी आवाज और उनका जोश जवानों जैसा है। श्री आशानन्द जी इससे पहले भी अनेक संस्थाओं को दान दे चुके हैं। उनके इस दान की प्रशंसा परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्द आर्य ने की है। उन्होंने कहा कि इस सात्विक दान का उदाहरण अन्यत्र मिलना कठिन है।

७—स्वदेश प्रेम—स्वामी जी ने प्रवचनों द्वारा विदेशी वस्तुओं के परित्याग और स्वदेशी वस्तुओं और प्राचीन संस्कृति को ग्रहण करने की प्रेरणा लोगों में की। स्वामी जी का कहना था कि स्वदेशी प्रवृत्ति को बढ़ाने से भारत का धन भारत के उद्योगों में ही लगेगा, तभी भारतकी उन्नति सम्भवहै। दूसरी तरफ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विदेश यात्रा का समर्थन किया जिसे उस समय धार्मिक अन्ध विश्वासों के कारण बुरा माना जाता था। उनका कहना था कि विदेशी लोगों से मिलना तथा उनके विषय में जानकारी रखना आवश्यक है।

८—विश्वबन्धुता—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सच्चे ज्ञान की खोज में जीवनभर ब्रह्मचारी रहकर अष्टांग योग के नियमों का पालन करते हुए जीवन यापन किया। स्वामी जी हर बात को कसौटी पर तोलते थे। उन्होंने सदैव सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा था कि सबका एक सर्व शक्तिमान परमात्मा है और हम सब उसके अमृत पुत्र हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती चाहते थे कि सारा संसार एक राष्ट्र स्वरूप बने और सारी मनुष्य जाति एक ईश्वर पर विश्वास करके आपसी भाई चारे और प्रेम के साथ सुख पूर्वक शान्ति से जीवन यापन करे।

आदान और प्रदान

हमारी भारतीय संस्कृति का मूल आधार दान' ही है। मनुष्य जीवन की कसौटी यही है कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार दूसरो के लिए हम क्या दे पाते हैं।

मन्त्र—शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सकिर।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फाति समावह।।

शब्दार्थ—(शतहस्त) हे सौ हाथो वाले ! तू (समाहर) सम्यक रूप से संग्रह (आदान) कर, और (सहस्रहस्त) हे हजार हाथो वाले ! तू (सकिर) सम्यक रीति से प्रदान कर। (कृतस्य) किए कर्म (च) और (कार्यस्य) कर्तव्य (जो करने योग्य हैं) कर्म की (इह) इस जीवन मे (स्फातिम्) वृद्धि को (समावह) भली प्रकार से प्राप्त कर।

व्याख्यान—मानव के दो हाथ ससार मे विस्मय जनक कार्यों को कर दिखाते हैं। वेद इस मन्त्र के द्वारा शिक्षा देता है कि मनुष्य को ससार की विशालता और अपने केवल दो हाथोको देखकर निराश नही होना चाहिए। जीवात्मा मे अक्षय शक्ति का भण्डार है, जब वह अपने पुरुषार्थ से अन्त-शक्ति को जागृत करता है तब मनुष्य ऐसे-ऐसे कार्य कर दिखाता है मानो कि वह साक्षात सौ हाथो वाला या सहस्र हाथो वाला है। मन्त्र मे कहा कि प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह अपने आपको दीन-हीन न समझे उत्साह वर्धक विचारो से, सतत् परिश्रम से और स्वय पर भरोसा करता हुआ प्रगति पथ पर बढ़े।

इसका यह अभिप्राय नही कि मनुष्य यह समझने लगे कि उसके सौ हाथ या सहस्र हाथ वास्तव मे हो गये हैं, अपितु वह ऐसा निश्चय करे कि मैं अकेला भी इतना कार्य करने मे सक्षम हो जाऊ कि जितना कार्य सौ या सहस्र हाथ करते हो, वह सुगमता से कर सकू। यह बात है भी यथार्थ केवल अन्त शक्ति का जागरण चाहिए। यदि मनुष्य अपने शतहस्त और सहस्रहस्त की दृढ भावना करता जाये तो उसकी अक्षय अन्त शक्ति अवश्य जागृत हो जायेगी। इस सिद्धान्त को दृढ करने के लिए ही इस मन्त्र ने मनुष्य को शतहस्त और सहस्रहस्त (दोनो शब्दो) से सम्बोधित किया गया है।

मन्त्र मे तीन उपदेश मननीय (मनन करने योग्य, हैं —

(१) हाथों के दो काम हैं—सग्रह=आदान और दान प्रदान। मन्त्र मे कहा गया है कि हे मनुष्य ! तू सौ हाथो वाला होकर बटोर=कमा और वह भी उत्तम रीति से पाप से नही। छल कपट से अर्जिन करना अच्छा नही है। तथा सहस्रहस्त=हजारो हाथो से बखेर प्रदान कर। इस प्रकार आदान और प्रदान करना दोनो ही वैदिक आज्ञाये है। यह ध्यान देये योग्य बात है कि मन्त्र मे सग्रह=आदान के साथ-साथ 'शतहस्त और दान=प्रदान के साथ सहस्रहस्त' का प्रयोग हुआ है जिसका भाव यह है कि वैदिक सस्कृति मे जमा करने की अपेक्षा मिल बाट कर खाने (प्रदान करने) की प्रथा है। यह वैदिक समाजवाद का उदात्त भाव है। सग्रह करना अर्थात् कमाकर जमाकर छोडना और उनको राष्ट्रहित मे तथा सत्पात्रो मे न लगाना यह वैदिक विचारधारा मे नीच कर्म है 'शेवधिया" अर्थात कोष मे धन जोड कर रखने वाले को 'अरि' (शत्रु) कहा है। यथा—"शेवधिया अरि"

(यजुर्वेद ३१/८२)

(२) द्वितीय उपदेश यह है कि अपने सत्कर्मों मे वृद्धि करो। प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण किया करो कि मेरे द्वारा उत्तम कर्म अर्जित हो रहे हैं या नही। उच्चविचारो से सदैव आदर्श कर्मों को करने के लिए व्रती बने रहो। शुभ कर्मों का जितना अधिक सग्रह हो जायेगा उतना ही आपका जीवन सुखद बनेगा। शुभ कर्मों का अन्त नही होता है। ये कर्म मनुष्य को यशस्वी बना देते हैं।

(३) तृतीय उपदेश मन्त्र के 'किर' पद मे निहित है। जो कृ धातु से बना है। जिसका तात्पर्य है विक्षेप अर्थात् फेकना (कृ विक्षेपे) अर्थात् जैसे हम किसी वस्तु को निर्मम होके फेक देते हैं उसी प्रकार हमे ममता हीन होकर प्रदान करना चाहिए।

यह भाव 'किर' शब्द से भावित होता है 'सकिर" अर्थात् भली प्रकार से दो, विचार पूर्वक, पात्र-कुपात्र का ध्यान रखकर। कुपात्रों को दिया दान हानिकारक सिद्ध होता है।

जो तुम्हारे पास है, अपनी सामर्थ्य से और प्रेम पूर्वक देना सीखो। उपनिषदो ने दान की बडी महिमा का गान है।

दमत्व, दयत्व, दत्वम्"।

हे देव कोटि के (विद्वानो) ! इन्द्रिय दमन अर्थात् इच्छाओ को सीमित करो।

हे दानव कोटि के (शक्तिशालियो) जीवो पर दया बनाये रखो।

हे मनुष्य कोटि के (सामान्य जनो) शक्ति से दान दिया करो।

दना अपने मे एक महान गुण है। जो देता है, वह अवश्य पाता है।

किसी पाश्चात्य विद्वान ने एक भारतीय पण्डित से पूछा था कि "What is your Indian Culture, and how will you Defineit

(आपका भारतीय सस्कृति क्या है और सकी परिभाषा कैसे करोगे)

भारतीय पडित ने क्या ही सुन्दर उत्तर दिया विचार करें —

"We have to give, We have to Give, Give and Give till Nothing is left cxcept the dead Body Which we shall give to the fiames of the fire

अर्थात्— (हमारी सस्कृति हमारे पास देने को ही है मात्र देने को ही देना हा दना है तब तक जब तक हमारे पास कुछ भी शेष न हो ! मृत्यु के बाद भा हम शरीर को अग्नि की लपटो को भेट कर देते हैं।)

यही हमारी महान सस्कृतिका आदर्श है। कविवर मैथिलीशरण गुप्त' के शब्दो के साथ विषय समाप्त करते हैं —

वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए जिये।
यह पशु प्रवृति है जो आप ही आप चरे।।'

—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'
आर्य समाज चन्दौसी-२०२४१२
जनपद मुरादाबाद (उ०प्र०)

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है (२)

—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वेद के ये दोनो मन्त्र विलक्षण है इनमे से पहले का अर्थ तो स्पष्ट है। प्राय अक्षर-ज्ञान तथा पढने-लिखने को हम 'विद्या' कहते हैं, वेद का कहना है। 'विद्या' तथा 'अविद्या' के ये अर्थ नही हैं। इतना ही नही इन शब्दो के यथार्थ-अर्थ बतलाते हुए वेद का कहना है कि 'अविद्या' रूपी-विद्या से मनुष्य मृत्युञ्जय बन जाता है मृत्यु को जीत लेता है, परन्तु 'विद्या' रूपी विद्या से तो वह अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। वेद की यह विलक्षण घोषणा है। ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक तथा लौकिक शब्दावली मे जमीन आसमान का अन्तर है। उक्त घोषणा से स्पष्ट है कि वेद यहा भौतिकवाद तथा भौतिक विज्ञान को 'अविद्या' कह रहा है क्योकि औषधि आदि भौतिक औषधियो से तथा उसी प्रकार के भौतिक साधनो से जीवन को दीर्घ किया जा सकता है, मृत्यु से लडा जा सकता है, मृत्यु-समुद्र को तरा जा सकता है, किन्तु अमरत्व तो सिर्फ अध्यात्मवाद तथा अध्यात्म-विज्ञान से ही प्राप्त होता या हो सकता है। तभी कहा— अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा —और आगे कहा—'विद्यया अमृत अश्नुते।

यह ठीक है कि हमारा ज्ञान, ज्ञान तभी कहला सकता है जब वह 'वर्धमान' हो, आगे-आगे बढे। आज का वैज्ञानिक-जगत् इसीलिये श्रेयस्कर माना जाता है क्योकि आज जो बात ठीक मानी जाती है, कल वही परीक्षण तथा खोज करते-करते गलत मानकर छोड दी जाती है। अगर विज्ञान रुक जाय, किसी जगह आकर खडा हो जाय, तो वह फेक देने लायक होगा। परन्तु हमारी यह बात सिर्फ भौतिक-विज्ञान पर ही लागू होती है, आध्यात्मिक-विज्ञान पर नही। आध्यात्मिक-तत्व सदा 'अद्वय', 'वर्धमान' होता हुआ भी 'अवर्धमान' होता है। 'हिंसा' से शुरू कर मनुष्य 'अहिंसा' पर जाकर रुक जाता है, 'असत्य' से शुरू कर 'सत्य' की खोज में भटकता है, चोरी-डाके 'स्तेय' से चलता-चलता शान्ति-सन्तोष 'अस्तेय' को जीवन का लक्ष्य बनाता है, पर-दारा-गमन या अब्रह्मचर्य और दुराचार मे भटकता-भटकता 'ब्रह्मचर्य' तथा 'सदाचार' को परम-ध्येय समझने लगता है। भौतिक-तत्व जब तक 'वर्धमान' तक सीमित रहते हैं, तब तक जीवन अपने ध्येय को नही पकडता। जब जीवन के 'वर्धमान' तत्व 'अवर्धमान' हो जाते है, तब वे हिंसा, से अहिंसा, असत्य से सत्य, स्तेय से अस्तेय, अब्रह्मचर्य से ब्रह्मचर्य, परिग्रह से अपरिग्रह तक पहुच जाते हैं तब मनुष्य अद्वय 'अदिति', अवर्धमान', एक नित्य-सनातन को पा लेता है। 'उसी 'अद्वय', 'अदिति', 'अखण्ड व' सत्य का वर्णन वेद में है। हमारे कथन का यह अभिप्राय नही है कि वेद मे सिर्फ अध्यात्मवाद का वर्णन है, भौतिकवाद या विज्ञान का वर्णन नही है। भौतिक ज्ञान जब बढेगा, तो बढते-बढते उसकी सीमा भी कभी न कभी आयगी। वृक्ष ऊचा जाता है, परन्तु कही तो बढना रुक ही जाता है। 'वर्धमान' जब अवर्धमान' हो जाता है, तब वही 'अद्वय' हो जाता है, 'अदिति' हो जाता है। भौतिकवाद जब रुक जाता है और जहा रुक जाता है, तब आगे वहा अध्यात्मवाद शुरू हो जाता है। इसी को ऋग्वेद मे 'अद्वय', 'अदिति' या 'सदावृध' से 'सदा+अवृध' कहा है।

जैसा हम पहले लिख आये हैं ज्ञान या तो 'वर्धमान' होगा या 'अवर्धमान' होगा। वर्धमान ज्ञान भौतिक है, समय-समय पर मनुष्य की खोज के आधार पर बदलता रहता है, बढता रहता है। 'अवर्धमान' ज्ञान आध्यात्मिक है, नित्य है, सनातन है, एक है, अद्वय है, अदिति है, बदलता नही। क्योंकि वेद का ज्ञान मनुष्य की खोज नही, ईश्वरीय देन है इसलिए वेद ने उसे 'अद्वय' तथा 'अदिति' कहा है। परन्तु ज्ञान का स्रोत मनुष्य तथा परमेश्वर दोनो हैं इसलिये ज्ञान को वेद मे 'सदावृध:' कहा है। 'सदावृध' के हमने दो अर्थ किये हैं। जब मनुष्य द्वारा खोज किये ज्ञान के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है तब इसका अर्थ सदा सर्वदा उत्तरोत्तर बढने वाला अर्थ होता है, जब इस शब्द का प्रयोग ईश्वरीय ज्ञान के लिए होता है, तब इसका अर्थ सदा सदा एक रहने वाला, कभी भी न बदलने वाला, 'अदिति' 'अवर्धमान' अर्थ होता है। जैसे 'विद्या तथा 'अविद्या वेद के विलक्षण शब्द हैं, वैसे 'सदावृध' भी वेद का विलक्षण शब्द है 'सदावृध' के रूप मे भौतिक विज्ञान के लिये प्रयुक्त हुआ है, और सदा+अवृध' के रूप मे ईश्वरीय ज्ञान या वेद के लिये प्रयुक्त हुआ है। (क्रमश.)

महान देशभक्त लाला लाजपतराय

स्वतन्त्रता सग्राम के महान सेनानी, कांग्रेस और आर्य समाज के प्रमुख नेता, त्याग की मूर्ति ओजस्वी वक्ता, निर्भीक लेखक, इतिहासकार, विख्यात वकील और प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक, पजाब केसरी लाला लाजपतराय जी की २८ जनवरी को जयन्ती थी।

लाला जी का जन्म २८ जनवरी १८६५ को जिला लुधियाना तहसील जगरांओ के निकट उनके ननिहाल ढुडिके मे एक अग्रवाल परिवार मे हुआ था।

सन १८७८ मे १४ वर्ष की अल्प आयु मे ही लाला जी के सार्वजनिक जीवन का आरम्भ हुआ जब उनकी महर्षि दयानन्द जी से भेंट हुई। वह महर्षि के अनुयायी बन गए। बाद मे वह पजाब मे आर्य समाज के अग्रणी नेता बने। वह डी० ए० वी० कालेज लाहौर के सस्थापक भी थे।

लाला जी के राजनीतिक जीवन का आरम्भ सन् १८८८ मे हुआ, जब वह पहली बार प्रयाग मे कांग्रेस के चौथे वार्षिक अधिवेशन मे सम्मिलित हुए १९०५ मे कांग्रेस का तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मडल इगलैंड गया, जिसमे लाला जी, श्री गोपाल कृष्ण गोखले और जिन्ना शामिल थे। कांग्रेस मे लालाजी गर्म दल के नेताओ में से थे।

४ सितम्बर १९२० को कलकत्ता मे हुए कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के लाला जी प्रधान बने। कांग्रेस के १०६ वर्षीय इतिहास मे लाला लाजपतराय अकेले पजाबी हैं जिनको कांग्रेस का प्रधान बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

भारत के स्वतन्त्रता सग्राम मे सन् १९२८ को विशेष स्थान प्राप्त है। ब्रिटिश सरकार की ओर से नियुक्त किया गया सात सदस्यीय अग्रेज प्रतिनिधियो पर आधारित साईमन कमीशन भारत आया तो कांग्रेस, मुस्लिम लीग व अन्य राजनीतिक दलो ने इसके विरुद्ध जोरदार प्रदर्शन और हडतालें की।

लाला जी ने इस आदोलन मे सक्रिय भाग लिया। ३० अक्तूबर १९२८ को जब साईमन कमीशन लाहौर पहुचा तो कांग्रेस की ओर से रेलवे-स्टेशन के बाहर लाला लाजपत राय के नेतृत्व मे कमीशन के विरुद्ध एक शातिपूर्ण प्रदर्शन किया गया पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर बर्बर लाठीचार्ज किया। पुलिस कप्तान सांडर्स ने लाला जी की छाती पर लाठियाँ बरसाई और वह इससे बुरी तरह घायल हो गये।

उसी शाम मोरी दरवाजा लाहौर के बाहर एक विशाल ऐतिहासिक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए लाला जी ने घोषणा की थी कि "मेरे शरीर पर लगी लाठी का एक-एक प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के कफन मे कील साबित होगा।'

१७ नवम्बर, १९२८ एक यादगारी दिन है, जब लाठियो के घावो के कारण लाला जी शहीद हो गए। लाला जी के बलिदान ने देशवासियो को झिझोड कर रख दिया और लोगों के दिलो मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए नया जोश व जागृति पैदा कर दी। —अविनाश कपूर

क्या ईश्वर और जीव एक हैं ?

डा० गंगाप्रसाद विद्यार्थी, जबलपुर

जीवात्मा व परमात्मा दोनों के गुण कुछ अंशो मे ही मिलते है। दोनों ही सत् और चित् अर्थात् सच्चित् हैं। परन्तु ईश्वर सच्चिदानन्द है। इस आंशिक समानता के होते हुए भी, दोनों में ही बहुत से मूलभूत अन्तर भी हैं। ईश्वर सदा अखण्ड, एकरस, सदैव आनन्दमय, सवज्ञ, सर्वव्यापी, सृष्टिकर्त्ता, पालन व धारण कर्त्ता तथा लय व प्रलयकर्त्ता है। उसके सभी काम निष्काम, एक समान और जीवो के उपकार के लिए हैं, इसलिए वह फलभोक्ता भी नही है।

जीव तो प्रत्येक शरीर में अलग-अलग है। इसीलिए एक का सुख दु:ख व ज्ञान दूसरे जीव को नहीं होता। जीव कभी आनन्दमय और कभी दु:खमय है। ईश्वर होता तो सदा आनन्दमय ही रहता। जीव अल्पज्ञ है, सर्वज्ञ नहीं है। जीव की शक्ति अपने शरीर में सीमित है, वह सर्वव्यापी नहीं है, सर्वशक्तिमान भी नहीं है। कोई भी जीव चाहे वह कितना ही ज्ञानी, विज्ञानी व ध्यानी तथा ईश्वर भक्त क्यों न होवे, वह सृष्टि रचना तो बहुत दूर की बात है, पृथ्वी का एक कण भी नहीं बना सकता है। सृष्टि की पालना, धारण व प्रलय भी नही कर सकता है। झूठी कहानियां गढ़कर या झूठे तर्क प्रस्तुत करके अपना मन बहला लेने से क्या लाभ ? जीव के बहुत से काम सकाम ही होते है। कुछ उच्च विचार लोगों के कुछ काम निष्काम हो सकते हैं, जगत् के उपकार के लिए, सब काम नहीं। जीव कर्मकर्त्ता और ईश्वर की व्यवस्थानुसार फलभोक्ता भी है। उन्ही कर्मफलों के अनुसार वह आवागमन के चक्कर में पड़ा हुआ नाना योनियो में जन्म लेता और मृत्यु को प्राप्त होता रहता है। अन्य योनिया तो केवल भोग-योनियां है, किन्तु मनुष्य योनि भोग योनि और कर्म योनि दोनो ही है। मनुष्य अपने जीवन मे केवल निष्काम व पुण्य-कर्म करते हुए ही आवागमन के चक्कर से छूटकर मुक्ति प्राप्त कर सकता है। मनुष्य पाप व पुण्य दोनों ही करता रहता है, परन्तु ईश्वर कभी भी पाप नही करता है, वह कर ही नही सकता है।

कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर+माया(या अज्ञान)=जीव/और जीव—माया या अज्ञान=ईश्वर। यह एक नितान्त भ्रान्त व मूढ़ कल्पना है। ईश्वर निर्लेप है, उसे अज्ञान कभी छू भी नहीं सकता है। माया (प्रकृति) ईश्वर के वश में है, ईश्वर कभी भी माया के वश में नहीं होता।

जो लोग ईश्वर व जीव को एक मानते है, वे ईश्वर के प्रति अपराध करते हैं, क्योंकि वह जीव के दोषो अवगुणों व कमियों को परमात्मा मे भी रखते हैं। जीवात्मा (मनुष्य) तो नाना प्रकार के पाप कर्म (चोरी, जारी, डकैती, कत्ल व बलात्कार आदि) करता है। यदि वह ईश्वर होता तो ऐसा कभी भी न करता। 'सर्वज्ञ' में अज्ञान का लेशमात्र भी समावेश करना, ईश्वर के प्रति भारी अपराध है।

जो लोग इस संसार को मिथ्या, मृग मरीचिका या स्वप्नवत् समझते हैं, वे भी भारी भ्रम मे हैं। यदि सम्पूर्ण ससार मिथ्या है और ऐसा कहने वाला भी संसार में है तो वह भी मिथ्या हुआ। अर्थात् वादी का कथन अपने ही साक्ष्य से असत्य व मिथ्या सिद्ध होकर स्वयमेव निराकृत (खारिज) हो गया। वस्तुत: वे स्वयं ही बड़े भारी मिथ्यावादी हैं। वे अपने को सत्य समझते हुए भी संसार भर को मिथ्या कहते हैं, और नाना प्रकार के छल, प्रपंच-युक्त, तर्क करते रहते हैं। वे वाग् जाल में पड़कर स्वयं भी धोखे में रहते हैं और दूसरों को भी धोखे में डालते हैं। जो संसार प्रत्यक्ष है और जो दर्शन शक्ति, श्रवण शक्ति, घ्राण शक्ति, रसना शक्ति और स्पर्श शक्ति आदि से जाना जाता हैं उसे मिथ्या या भ्रम कहना, अपने को ही भ्रम में रखना और मिथ्यायुक्त करना है। संसार का कोई भी वैज्ञानिक या बुद्धिमान व्यक्ति संसार को मिथ्या या भ्रमयुक्त नहीं मान सकता है, सिवाय भ्रम युक्त मिथ्यावादियों के।

आदि शंकराचार्य ने तो अनीश्वरवादियों को हराकर वैदिक धर्म की पुन स्थापना के लिए जैनी आचार्यों की जो कि संसार और जीव की सत्ता को तो मानते थे, परन्तु ईश्वर की सत्ता को नहीं अब जैनी यह मानते हैं कि जीव ही सिद्ध पुरुष बनाकर ईश्वर हो जाता है), उनके बिल्कुल विपरीत यह पक्ष रखा कि जगत् मे केवल मात्र ईश्वर है जीव व जगत् नहीं (वे तो ईश्वर के ही प्रतिरूप हैं अतएव 'ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या'। परन्तु यह एक सीमित क्षेत्र का तर्क है केवल शास्त्रार्थ को जीतने के लिए। यह न तो सर्व सत्य है और न वेद सम्मत ही है। वेद तो कहता है—

> द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
> तयोरन्य: पिप्पल स्वादर्यात्त अनश्नन् अन्यो ऽभि चाकशीति।।
> (ऋ० १-१६४-२० तथा श्वेता० ४/६)

श्रीमद्भगवद् गीता मे भी लिखा है—

> द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
> क्षर: सर्वाणि भूतानि, कूट स्थोऽक्षर उच्यते।। १५/१६

यदि लोहे, पीतल, तांबे, चांदी या सोने को अग्नि में डाला जाय तो वह भी अग्निमय हो जाता है, वैसा ही दिखता है और वैसे ही दाहकता आदि गुण भी हो जातेहैं पर तभी तक जब तक वह अग्नि के साथहै। अग्नि से पृथक् करने पर ठंडा होकर अपने असली स्वरूप में फिर आ जाता है। यही स्थिति ब्रह्ममय पुरुष की हो जाती है, परन्तु वह सर्वथा ब्रह्म कभी भी नहीं बन पाता। महर्षि दयानन्द ने "अहं ब्रह्मास्मि" का ठीक अर्थ यह बताया कि 'अहं ब्रह्मणि स्थितोऽस्मि' अर्थात् मैं ब्रह्म में स्थित हूं न कि 'मैं ब्रह्म हूं'। गीता में भी लिखा है—निर्दोषं हि समं ब्रह्म, तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थित:।। गीता १५/१६।। स्थिर बुद्धिर् असमूढ़ो ब्रह्म विद् ब्रह्मणि स्थित:।। गीता १५/२०।। अतएव ईश्वर और जीव भिन्न-भिन्न पदार्थ हैं कभी भी एक नही। प्रकृति भी एक अलग अनादि पदार्थ हैं।

स्वास्थ्य सुधा—

जानलेवा पीठ का दर्द

लगभग साठ अरब कोशिकाओं से युक्त हमारे शरीर को आधार देता है, हमारा अस्थि संस्थान। रीढ़ की हड्डी का अपना विशिष्ट महत्व है। बत्तीस कशेरुकाओं की एक सीधी सशक्त एवं लचकदार माला के रूप में हमारी रीढ़ की हड्डी सिर के निचले भाग से प्रारम्भ होकर कमर के निचले भाग तक चली जाती है। प्रत्येक दो कशेरुक के मध्य पाये जाने वाली विशिष्ट गोलाकार कार्टलिज युक्त संरचना को इंटरवर्टीब्रल कार्टीलेजनस डिस्क कहा जाता है। रीढ़ की हड्डी की गुहा में स्पाइनल कार्ड जैसी महत्व संरचना दिमाग के नीचे से शुरू होकर पीठ में नीचे तक चली जाती है।

हमारी जिन्दगी का लगभग एक तिहाई भाग लेटने, बैठने एवं खड़े रहने में बीत जाता है और पीठ दर्द से परेशान व्यक्ति इन तीन अवस्थाओं में ही बेहाल रहता है।

पीठ दर्द की शुरुआत प्राय ३० वर्ष की उम्र के पश्चात होती है। यह स्त्रियों एवं मोटे लोगों में अधिक पाया जाता है। प्राय पीठ का निचला भाग सर्वाधिक प्रभावित होता है। वे लोग जो जाने अनजाने या किसी भी कार्यवश असामान्य शारीरिक स्थिति (पोश्चर) में कार्य करते है, इससे अधिक प्रभावित होते हैं। चोट, धक्का असमतल सतह पर सोना, भारी वजन उठाना गलत प्रकार से कसरत करना भी पीठ दर्द के आम कारण हैं।

उम्र का ढलान पर शरीर के अन्य अंगों की कार्यविधि के समान अस्थियां भी प्रभावित होती हैं। अस्थियों में कैल्शियम इत्यादि की कमी से कमजोरी बढ़ती जाती है वे खोखली हो जाती है और छोटी-छोटी चोट से टूटने का खतरा बढ़ता ही जाता है। इस अवस्था को 'ओस्टोओपोरोसिस कहा जाता है। इसी प्रकार उम्र के बढ़ने के साथ अस्थियों में असामान्य वृद्धि होने से भी रीढ़ की हड्डी या अन्य जोड़ों में दर्द रह सकता है इसे 'स्पोन्डोइलायटिस' कहा जाता है। कभी-कभी अस्थियों में कैल्शियम की कमी प्रसव के पश्चात महिलाओं में भी पाई जा सकती है। हो सकता है कि उन्हें भी पीठ दर्द की शिकायत हो।

कभी कभी कशेरुकाओं के मध्य पायी जाने वाला डिस्क किसी ज्ञात कारण जैसे चोट इत्यादि अथवा अज्ञात कारण से फट या खिसक कर तन्त्रिकाओं पर असामान्य दबाव डालने लगती है फलस्वरूप तीव्र वेदना, झनझनाहट, सुन्नपन उस तन्त्रिका के खंड की संवेदनहीनता जैसे प्रमुख लक्षण सामने आते है। इसी प्रकार के लक्षण जब टांगों में जाने वाली तन्त्रिका पर अप्राकृतिक दबाव के बाद उत्पन्न होते हैं तो उसे सियाटिका या नाड़ी के दर्द के नाम से जाना जाता है।

स्पाइनलिस्थेसिस नामक अवस्था में जन्मजात या बाद में किसी भी कारण से एक कशेरुका दूसरी कशेरुका के ऊपर आगे खिसक जाती है इससे भी प्राय पीठ के नीचे के भाग में दर्द बना रहता है। एक अन्य गम्भीर रोग है एन्काइलोसिंग स्पोन्डाइलायटिस' यह युवावस्था से शुरू होकर उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। इसमें शरीर के लिगामेंटस में धीरे-धीरे कैल्शियम का जमाव होता है और जोड़ों की गति कम होती जाती है। इसमें भी पीठ दर्द आम शिकायत है। रीढ़ की हड्डी की टी०बी०, कैंसर, इन्फेक्शन, गर्भाशय की असामान्य स्थिति भी पीठ दर्द को जन्म दे सकती है।

चिकित्सक लक्षणों एवं दर्द की प्रकृति को मद्देनजर रखते हुए विशिष्ट परीक्षणों द्वारा रोग की पहचान करता है। एक्सरे सबसे सामान्य एवं उपयोगी परीक्षण हैं। केट स्केन तथा एन एम आर. प्रमुख परीक्षण है। इन दोनों के द्वारा रीढ़ की हड्डी तथा डिस्क दोनों के बारे में सही जानकारी प्राप्त की जाती है। कभी-कभी आवश्यकतानुसार दो या उससे अधिक परीक्षण भी कराए जाते है।

पीठ के दर्द के इलाज में दवा, पोस्चुरल ट्रेनिंग तथा फिजियोथिरेपी का बराबर-बराबर महत्व है। कभी-कभी पीठ के दर्द के इलाज में विशेष बेल्ट अथवा खिंचाव का भी प्रयोग किया जाता है। शार्ट वेव डायथर्मी (बिजली की सिकाई) तथा अल्ट्रासोनिक का उपयोग भी आवश्यकतानुसार किया जाता है। सम्भव है कि चिकित्सक इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि रोग के इलाज में मात्र शल्यक्रिया ही एक उपाय है। अतः सबसे महत्वपूर्ण तथ्य तो यही है कि सही समय पर सही व्यक्ति द्वारा (चिकित्सक) सलाह लेकर उसका पालन किया जाय अन्यथा इस प्रकार के पुराने मर्ज को ठीक करना या दावा करना सचमुच एक कठिन कार्य है।

कार्यमुद्रा (पोश्चर) संबन्धी सावधानियां :

दैनिक जीवन में हम अपनी कार्य मुद्रा के प्रति आवश्यक सावधानी रख कर एक सीमा तक पीठ दर्द से मुक्त रह सकते हैं।

जब आप बैठें :

—कुर्सी की सतह फर्म हो अर्थात बहुत मुलायम या बहुत कड़ी नहीं।
—मेज तथा कुर्सी की ऊंचाई आपकी ऊंचाई के अनुरूप हो अन्यथा रीढ़ को झुकाकर बैठना होगा।
—कुर्सी पर सीधे बैठें। पीठ के पिछले भाग को सहारा मिलना चाहिए इसके लिए तकिया भी लगाया जा सकता है।
—बैठते समय घुटने का जोड़ कूल्हे के जोड़ से कुछ ऊपर रहे यानि फुट रेस्ट का उपयोग अच्छा होगा।
—यदि लम्बाई ठीक-ठीक है तो छोटी साईकिल का प्रयोग न करे।
—लम्बे समय तक बैठना है तो एक दो घंटे बाद थोड़ा सा खड़ा होकर घूम फिर ले।
—स्टूल पर बैठने से अच्छा है कि टेकदार कुर्सी का उपयोग करे।

जब आप खड़े हो :

—सीधे खड़े हो।
—खड़े होकर खाना बनाना, प्रेस करना इत्यादि बैठकर कार्य करने से अच्छा है।

जब आप सोयें :

—बिस्तर फर्म तथा समतल हो।
—सामान्य तौर पर सिर के नीचे एक मध्यम आकार का तकिया प्रयोग करे। अधिक मुलायम गद्दे, अधिक तकियों का उपयोग अच्छा नहीं।

जब आप वजन उठायें :

—जमीन पर रखे वजन को उठाने के लिए सर्व प्रथम जमीन पर घुटने के बल बैठिये, पीठ को सीधा रखिये एवं अब वजन उठायें इससे पीठ के ऊपर असामान्य दबाव आने के लिए वजन घुटने पर आयेगा।
—दोनों हाथों से बराबर काम लेने की आदत डालें।
—यदि वजन ज्यादा है तो दो बराबर भागों में बांटकर दोनों हाथों में उठायें इससे पीठ पर दोनों ओर से बराबर भार आयेगा।
—सिर पर कभी भी झटके से भारी भार न रखें।

जब आप फैशन करें :

—चौड़ी आधा इंच या उससे कम हील का जूता/जूती/सैंडिल उपयोग में लायें।

—डा० अमरनाथ दत्त गिरि

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

देश-विदेश के समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों से विनम्र प्रार्थना है कि सर्वतोमुखी क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव १२ फरवरी ९२ बुधवार को धूमधाम से मनाए। उस दिन सभी आर्य नर-नारी अपने-अपने घरों पर ओ३म् का नया ध्वज लगाए आर्य समाज मन्दिरों पर नये ध्वज के साथ-साथ दीपमालाए भी करे।

आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं समाचार पत्रों के माध्यम से महर्षि दयानन्द विषयक वार्ताएं, परिचर्चाएं एवं लेख प्रकाशित कराने का भरसक प्रयास करें।

—डा० शिवकुमार शास्त्री
धर्माधिकारी, सार्वदेशिक धर्मार्यसभा, दिल्ली

आर्य समाज के बढ़ते कदम

कर्नाटक का युवा वर्ग वैदिक सिद्धान्तों के प्रति आकर्षित

दिसम्बर माह के अन्तिम सप्ताह मे हैदराबाद मे आयोजित भारतीय भाषा सम्मेलन के बाद बंगलौर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बंगलौर के मुख्य आर्य समाज जो कि विश्वेश्वरम् पुरम् क्षेत्र मे तथा शहर के बीचो-बीच स्थित है, मे भी जाने का अवसर मिला। इस बंगलौर आर्य समाज के ही एक भाग मे कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय भी चलता है। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राधा कृष्ण वर्मा तथा युवक मन्त्री श्री सत्यव्रत आर्य के अतिरिक्त आर्य समाज के मन्त्री श्री रेंजूडुप्पा आर्य और कई अन्य सभासदो के दर्शन हुए।

बंगलौर के इस प्रमुख आर्य समाज मे कुल ४०० के लगभग सदस्य है जिनमे लगभग १०० महिलायें हैं। वकीलो, डाक्टरो और बड़े-बड़े व्यापारियो तथा नौकरी पेशा व्यक्तियो के सहयोग से यह आर्य समाज वास्तव मे विद्वानो का एक समूह लगता है। इस आर्य समाज तथा आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक दोनो ने मिलकर लाखो रुपये का कन्नड, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा मे वैदिक साहित्य प्रकाशित किया है। दो भाग मे प्रकाशित कन्नड भाषा का सत्यार्थप्रकाश कर्नाटक के धर्म प्रेमी जनता द्वारा विशेष रूप से पसन्द किया गया। बम्बई के श्री ज्येष्ठ वमन द्वारा अंग्रेजी भाषा मे लिखे ११६ पृष्ठ के the vedas" ग्रन्थ से भी कर्नाटक की जनता मे वैदिक प्रचार करने मे विशेष सहायता मिलती है।

इस आर्य समाज तथा प्रतिनिधि सभा द्वारा गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक श्री विज्ञान भिक्षु तथा श्री प० उपेन्द्र भूपाल की सहायता से समस्त कर्नाटक प्रान्त मे धर्म प्रचार का अनुपम ढंग अपनाया गया है। श्री प० उपेन्द्र जी स्थानीय विद्यालयो मे जा जाकर कन्नड भाषा मे प्रवचन देते हैं तथा प्रवचनो के बाद लिखित तथा मौखिक दोनो प्रकार से नवयुवक छात्रो की धार्मिक और सामाजिक शंकाओ का समाधान भी करते है। यही कारण है कि नवयुवक विशेष उत्साह के साथ आर्य समाज तथा वैदिक सिद्धान्तो की प्रेरणायें सहर्ष स्वीकार करते है।

इसके अतिरिक्त श्री सत्यपाल जी शर्मा वर्ष मे लगभग आधा समय अमेरिका मे लगाते है और आधा समय बंगलौर के वैदिक प्रचार मे सलग्न रहते हैं। स्वामी ब्रह्मदेव जी के द्वारा एक वर्ष मे लगभग तीन योग शिविरो का आयोजन भी अलग अलग स्थानो पर किया जाता है। प्रत्येक शिविर मे सौ से १२५ की सख्या तक लोग भाग लेते है जिनमे युवा वर्ग को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाता है इन्ही शिविरो के साथ "बच्चो का ससार' नाम से नन्हे मुन्नो के लिये नैतिक शिक्षा आदि के लिये विशेष प्रबन्ध किया जाता है।

आर्य समाज भवन मे प्रतिदिन हिन्दी तथा सस्कृत भाषा को सीखने के इच्छुक छटी से बारहवी कक्षा तक के छात्रो के लिये प्रात तथा साय दोनो समय निशुल्क कक्षाओ का भी प्रबन्ध किया जाता है।

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य समाज के सहयोग से इन समस्त गतिविधियो को देखने व जानने के बाद ऐसा महसूस हुआ कि आर्य समाज के प्रचार कार्य मे तेजी लाने का एक मात्र यही रास्ता है जिसके द्वारा हम नयी पीढी को अपनी गतिविधियो की तरफ आकर्षित कर सकते है। आर्य समाज द्वारा जिन वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार का बीड़ा उठाया गया है वह तर्क और विज्ञान दोनो की कसौटी पर खरे उतरने वाले हैं यदि यह बात युवा वर्ग के दिमाग मे बिठा दी जाये तो अवश्य ही उनकी मनोवृत्ति आर्य समाज की तरफ बढेगी। परन्तु ऐसा तभी सम्भव है जब समस्त विश्व की आर्य समाजो में अधिकारी गण तथा सभासद इस तरफ विशेष ध्यान दें और कर्नाटक की इन गतिविधियो से उत्साह वर्धक प्रेरणायें प्राप्त करें।

कर्नाटक के समस्त आर्य बन्धुओ को मेरी हार्दिक शुभ कामनायें तथा धन्यवाद।

— विमल वधावन एड०
संयोजक सार्वदेशिक न्याय सभा

महान त्याग का एक उदाहरण—

रामविलास शर्मा ने "व्यास सम्मान" स्वीकार नहीं किया

नई दिल्ली, २९ जनवरी। प्रसिद्ध आलोचक डा० रामविलास शर्मा ने 'व्यास सम्मान' भी ठुकरा दिया है। के०के० बिडला फाउंडेशन ने पिछले दिनो डा० शर्मा को उनकी किताब 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी' पर डेढ लाख रुपए का यह सम्मान देने की घोषणा की थी।

डा० शर्मा ने एक भेंट के दौरान कहा 'मैं विनम्रतापूर्वक व्यास सम्मान' अस्वीकार करता हूं। मेरा मत है कि हिन्दी प्रदेश के सरकारी और गैर सरकारी संस्थान लाखो रुपए की जो धनराशि पुरस्कारो के रूप मे बांटते है, उसे हिन्दी प्रदेश की पिछडी हुई जनता को साक्षर बनाने मे खर्च करना चाहिए।

डा० शर्मा ने आगे कहा—बिडला फाउंडेशन को चाहिए कि 'व्यास सम्मान' के तहत मुझे दी जाने वाली राशि का उपयोग हिन्दी प्रदेश मे साक्षरता अभियान पर खर्च करे। फाउंडेशन द्वारा पूछे जाने पर मैं उसका प्रारूप बताऊंगा।

डा० शर्मा इससे पहले दो अन्य पुरस्कारो की राशि भी ठुकरा चुके है हिन्दी अकादमी दिल्ली ने सन् १९८७ मे उन्हे ५१ हजार रुपए का शलाका पुरस्कार' और १९८८ मे उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने उन्हे एक लाख रुपए का भारत भारती पुरस्कार देने की घोषणा की थी। इन पुरस्कारो को ठुकराते हुए डा० शर्मा ने कहा था कि इस राशि का उपयोग भी हिन्दी प्रदेश मे साक्षरता अभियान मे किया जाए।

उन्होने कहा कि वृद्ध साहित्यकारो को पुरस्कारो से सार्थक ढंग से मदद नही की जा सकती। सरकार तथा साहित्यिक संस्थानों को चाहिए कि अकेले पड गए वृद्ध और बीमार लेखको की मदद के लिए स्थायी इन्तजाम करें। डा० शर्मा ने कहा कि वे नौजवानों को दिए जाने वाले छोटे पुरस्कारो के विरोधी नही है। वैसे आदर्श तो यह होता कि हमारे देश मे ऐसी उच्चकोटि की संस्थाए होती जो अगर किसी को सिर्फ प्रमाण-पत्र लिख कर दे देती तो स्वय को सम्मानित महसूस करता। बडे-बडे पुरस्कार गरीब हिन्दी जनता की आंख मे धूल झोंकने के लिए है कि हिन्दी के लिए काम किया जा रहा है। (न०भा०टा० ३० जनवरी से साभार)

असम चैन लौट रहा है उम्मीद के साथ

असम गण परिषद के आन्दोलन के पहले से उल्फा के आतंकवादी अलगाववाद तक असम को देखने समझने वाले रामबहादुर राय हफ्ताभर फिर असम घूमकर आये। आज का असम गवाह है कि विदेशी हाथ सीधे बन्दूक बारूद न दे रहा हो और लोग सेना और पुलिस के साथ हो तो आतंकवादी अलगाववाद किस तरह घुटने टेक देता है। कभी हम चिन्तित थे कि असम कहीं पंजाब और कश्मीर न हो जाये। अब उम्मीद कर सकते हैं कि पंजाब और कश्मीर को असम के रास्ते लाया जा सकता है।

(जनसत्ता, ३० जनवरी से साभार)

वृहद यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज कोतवाहा प० चम्पारण के प्रधान श्री जगन्नाथ आर्य के निवास स्थान पर मकर सक्रान्ति पर्व के अवसर पर वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। सैकडो व्यक्तियों के सम्मुख आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के उपमन्त्री श्री राजेश्वर जिज्ञासु जी ने मकर सक्रान्ति के महत्व पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम का नागरिको के ऊपर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्यवीर दल राजस्थान का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज पापाड शहर के तत्वावधान में दि० २० से ३० दिस० ९१ तक नौ दिवसीय आर्य वीर दल राजस्थान प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर सार्व० आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डा० देवव्रत जी आचार्य के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन श्री सत्यवीर जी आर्य प्रान्तीय संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल राजस्थान ने किया।

नौ दिवस की अल्पावधि में २० जिलों के १३५ आर्य वीरों ने अनुभवी शिक्षकों द्वारा स्थानीय सेठ हरखचन्द जी कोठारी गौशाला में बौद्धिक शिक्षण के साथ-साथ जूडो कराटे बॉक्सिंग सैनिक शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा हेतु योगासन प्राणायाम मलखम्भ यौगिक क्रियाओं द्वारा रोग निदान की शिक्षा ग्रहण की जिसका शानदार प्रदर्शन ३० दिसम्बर को दयानन्द चौक में हजारों दर्शकों के बीच किया गया।

दिनांक २९ ३० दिसम्बर ९१ को आर्यसमाज पीपाड शहर का अष्टमठवां वार्षिकोत्सव मनाया गया। दिन में नगर के प्रमुख मार्गों से शोभा यात्रा निकाली गई रात्रि में निवृत्तमान संचालक बालादवाकर जी हुन का सम्मान व अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। —चम्बालाल आर्य

वार्षिकोत्सव

आर्य उप प्रतिनिधि सभा सीतापुर का वार्षिकोत्सव १४ से १६ फरवरी तक आर्य समाज मन्दिर सीतापुर में हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान सन्यासी, तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। वैदिक ज्ञान सिन्धु में गोते लगाकर लाभान्वित व गौरवान्वित हों।

—आर्य समाज विद्युत गृह कासिमपुर अलीगढ का २४वां वार्षिकोत्सव २४ से २९ फरवरी ९२ तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर उत्सव को सफल बनावें।

गुजरात में आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

दर्शन योग महाविद्यालय आर्य वन रोजड के स्नातक ब्रह्मचारी श्री वीरेन्द्र जी इन दिनों गुजरात के ग्रामीण क्षेत्रों में घूम घूम कर युवकों को नैतिक शिक्षा तथा आसन व्यायाम सन्ध्या, यज्ञ आदि का प्रशिक्षण दे रहे हैं। पिछले दिनों आर्य वन में आर्य वीर दल का बाल शिविर लगाया था तथा अभी ७ से १४ जनवरी १९९२ तक विजय फार्म वहेगाव अहमदाबाद में आर्य वीर दल के शिविर में ४० युवकों को प्रशिक्षण दिया गया। इससे प्रेरणा पाकर ग्राम मगोडी लाट में भी २६ जनवरी से २ फरवरी तक आर्य वीर दल के शिविर का आयोजन किया गया।

मणिभाई गंगा राम भाई पटेल
विजय फार्म वहेगाव (गुज०)

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का जयन्ती समारोह

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संस्थापक स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का १३० वां जयन्ती समारोह २९ जनवरी से ४ फरवरी तक आर्य किशोर एवं विद्वत्कला परिषद के तत्वावधान में कुलभूमि में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर क्रीडा प्रतियोगितायें, संस्कृत भाषण, हिन्दी वाद-विवाद तथा अन्य प्रतियोगितायें भी आयोजित की गईं। इस अवसर पर संस्कृत संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

वेद प्रचार का आयोजन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक श्री कर्णसिंह जी गौतम और देवीदास महाराज तलनीकर द्वारा जिला बीदर व गुलबर्गा के अनेकों गांवों में १ जनवरी ९२ से १२ जनवरी ९२ तक वेद प्रचार व भजनोपदेश किया। आर्यवीर दल गुलबर्गा द्वारा आयोजित इस वेद प्रचार कार्यक्रम से ग्रामों में नई चेतना का जागरण हुआ तथा आर्य वीरदल शिविर चलाने हेतु अनेकों युवकों ने प्रार्थना की। —गोविन्द राव आर्य

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/६२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (९-२-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U नं० ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment Licence No. U 93 Post in N.D.P.S.O.on 6,7-2-1992

पुस्तक समीक्षा

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के अनुपम भाष्य

दर्शन शास्त्र के व्याख्याता तार्किक शिरोमणि स्व० श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के अनुपम भाष्य, न्याय, वैशेषिक तथा सांख्यदर्शन को पढ़ कर अपना ज्ञान वर्धन करें।

सरल-सुबोध भाषा-भाष्य तथा प्रश्न व उत्तर शैली में अनूदित ग्रन्थ का प्रकाशन है।

यह दर्शन-ग्रन्थ अब तक लाखों की संख्या में आर्यों के हाथों में जा चुके हैं।

प्रकाशक :—

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार

प्राप्ति स्थान :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

आर्य समाज का प्रकाशित साहित्य, ज्ञान की सांस्कृतिक धरोहर

पुस्तकें धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से जीवन के लिये महत्त्व पूर्ण होती हैं। इस साहित्य में मनुष्य जाति का ईश्वरीय तथा मानवीय ज्ञान सन्निहित होता है वह सांस्कृतिक धरोहर है। शिक्षा और ज्ञान विज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

श्रेष्ठ और उदात्त साहित्य ने इतिहास और समाज को ही नहीं बदला है, बल्कि व्यक्तियों के जीवन में भी क्रान्ति पैदा की है।

माता-पिता के बाद बच्चों पर शिक्षकों का प्रभाव होता है। यदि बालकों तथा अभिभावकों में साहित्य के प्रति चेतना जागृत हो जाय तो अन्य बातों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।

विद्यालयों आर्य समाजों व परिवारों मे अच्छा साहित्य अवश्य रखें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

आर्य वीरों ने दस गऊओं को बचाया

बहीन (मेवात) हरियाणा के जिला फरीदाबाद के ग्राम बहीन की सीमा पार करके दिनांक १३-१-९२ की शाम को लगभग आठ बजे मेवात के ग्राम कोट के कसाई चोरी छिपे दस गऊ, बछड़े व बैलों को लेकर जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश) को ले जा रहे थे। कसाइयों की संख्या छः थी जिन पर लाठियां व बल्लम थे।

एक बूढ़े किसान ने इसकी सूचना वैदिक धर्म सेवा समिति के महामन्त्री पण्डित नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री को दे दी। उसी समय श्री निर्भय जी ग्राम बहीन के चार नौजवानों को साथ लेकर जगल को दौड लिये तथा कोसों की दौड़ करके गऊ हत्यारे (कसाई) जा घेरे। कसाइयों ने विरोध किया तो इस पर भारी झगड़ा हुआ। परिणाम स्वरूप आर्य वीरों ने पापियों से युद्ध किया तथा कसाइयों की अच्छी तरह पिटाई की तथा गऊओं की प्राण रक्षा की। गऊओं को धर्म शहीद दादा कान्हा गऊशाला में भरती करा दिया गया।

ऐसी कई घटनाओं में पण्डित नन्दलाल निर्भय अपनी गऊ भक्ति का प्रमाण दे चुके हैं। आर्य वीरों की वीरता व अदम्य साहस की सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है।

तुलसीराम आर्य मन्त्री
वैदिक धर्म सेवा समिति, मेवात
केन्द्र बहीन, जिला फरीदाबाद-३

डा. आनन्द कुमार बिरजा एम. ए. "संक्षिप्त-परिचय"

डा० आनन्दकुमार बिरजा जिला निकेरी, सुरीनाम देश के निवासी हैं। आप जब तेरह वर्ष सात मास के थे, तभी भारत पढ़ने के लिये चले गये थे। डा. आनन्द जी मार्च १९७६ में भारत पठनार्थ गये थे। आपने वहां के विभिन्न गुरुकुलो में अध्ययन किये, जिसमें गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल सिंहपुरा आदि प्रमुख थे।

तत्पश्चात् आपने १९८३ मे गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश लिया जो अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा खोला गया था और जो वर्तमान में विश्व-विद्यालय (यूनिवर्सिटि) का रूप ले चुकी है, वे एम. ए. वैदिक साहित्य में किया। इससे पूर्व आपने बनारस यूनिवर्सिटि से शास्त्री डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात् उसी कांगड़ी विश्वविद्यालय से आपने 'महर्षि दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य का यौगिक प्रक्रिया के परिपेक्ष्य में एक अध्ययन' विषय पर शोध-ग्रन्थ लिखा, जिसके फलस्वरूप आपको पी. एच. डी. की यानि डाक्टरेट की उपाधि से ११ अगस्त १९९० को अलंकृत किया गया। यह बड़े गौरव की बात है कि सुरीनाम देश के एक नौजवान भारत में लगभग १५ वर्ष तक विद्या अध्ययन करके आये हैं। हमने इनके निवास स्थान पर जाकर इनसे निवेदन किया कि आप प्रतिनिधि आर्य समाज नेदरलान्ड, जो कि 'फास्नेत' के नाम से जाने जाते है को अपना सम्पूर्ण सहयोग दीजिये, तो उन्होंने (समाज को एकता में निबद्ध करने के लिये) इस पर अपनी समूची सहमति की मुहर लगा दी। अब प्रतिनिधि आर्य समाज नेदरलान्ड "फास्नेत" के द्वारा कुछ विशेष कार्यक्रम डा. आनन्द बिरजा के सहयोग से करने का विचार किया गया है, जिससे समाज में जागृति फैले तथा हम सब अपनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के प्रति सजग रहकर समाज तथा राष्ट्र को समुन्नति के मार्ग प्रशस्त कर सकें।

—सोन रणजीत, मन्त्री

स्वामी सत्यानन्द जन्म शताब्दी समारोह

श्री विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम वेदमन्दिर मथुरा में स्वामी सत्यानन्द जन्म शताब्दी समारोह ७ से ९ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। समारोह मे सप्त दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ, संस्कृति रक्षा सम्मेलन, राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, आर्य गुरुकुल दीक्षान्त कार्यक्रम शोभायात्रा सहित अनेकों अन्य कार्यक्रमो का आयोजन किया गया है। सदैव की तरह इस बार भी उत्साह व निष्ठा से सहयोग कर समारोह को सफल बनावें।

सात्विक दान

श्री लाला दीवान चन्द जी सिंगला मण्डी डबवाली वालों ने मकर-सक्रान्ति के पवित्र पर्व पर १४-१-९२ को अपने घर पर यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के पुरोहित श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी थे। श्री दीवानचन्द जी सिंगला ने इस शुभ अवसर पर शहीद परिवारफण्ड के लिये २१२५)००, गोशाला मण्डी डबवाली २०१)००, आर्य वानप्रस्थाश्रम भटिण्डा को १००) का सात्विक दान प्रदान किया।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और-प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक ३]   दयानन्दाब्द १६७   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२   फाल्गुन शु० १३   सं० २०४८   १६ फरवरी १९९२

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्य के शोधक और साधक थे —डा० शंकरदयाल शर्मा

महर्षि के जन्म दिवस पर सरकारी अवकाश की मांग

दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह सम्पन्न

दिल्ली १२ फरवरी। नई दिल्ली के हिमाचल भवन के सभागार में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से आयोजित महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए महामहिम डा० शंकर दयाल शर्मा उपराष्ट्रपति भारत सरकार ने कहा कि महर्षि दयानन्द सत्य के शोधक और साधक थे। उन्होंने होते हुए सत्य की खोज और सत्य के अनुकूल जीवन में आचरण का भारत में ही नहीं अपितु विश्व के सामने वैदिक जीवन का सच्चा आदर्श प्रस्तुत किया था। उनका यह सत्य केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक ही नहीं अपितु व्यावहारिक भी था। गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने अपने विचारों के प्रचार माध्यम के लिए हिन्दी को चुना और हिन्दी को ही राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने का प्रयास किया। स्वामी जी ने सत्य, अहिंसा और करुणा को धर्म का सही रूप माना था, बिना इन्हें अपनाए कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र कभी उन्नति नहीं कर सकता। स्वामी जी ने स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज की स्थापना के उद्देश्य से ही १८७५ में सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। उस युगपुरुष दयानन्द के १६८वें जन्म दिवस पर मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, राष्ट्रवासियों से उनके आदर्शों और सिद्धान्तों पर आचरण करने की अपील करता हूं।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि स्वामी दयानन्द का जन्म दिन आज पूरे विश्व की आर्य समाजें मना रही हैं। उस महापुरुष का १८५७ के स्वतन्त्रता आन्दोलन में बड़ा भारी योगदान रहा था। वह चाहते थे कि भारत राष्ट्र अलग-अलग खण्डों में न रह कर कन्याकुमारी से कश्मीर तक अखण्ड रूप में रहे और राष्ट्रवासी संगठित रहकर इसको शक्ति दें। स्वामी जी ने भारत सरकार से अपील करते हुए कहा कि अन्य महापुरुषों की तरह महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर भी सरकार अवकाश घोषित करे।

इस अवसर पर भारत सरकार के ग्रामीण विकास मन्त्री श्री जी० वेंकट स्वामी, पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल, अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा के महामन्त्री श्री रमाकान्त गोस्वामी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रो० उत्तमचन्द शरर और आचार्य यशपाल सुधांशु ने भी महर्षि दयानन्द के प्रति अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव, मन्त्री डा० धर्मपाल, आर्य केन्द्रीय सभा के डा० शिवकुमार शास्त्री, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, माता सरला मेहता तथा अन्य अनेक विद्वज्जन उपस्थित थे।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री (मन्त्री सभा)

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के तत्वावधान में—

(सिंहस्थ) कुम्भ मेला उज्जैन में विशाल महायज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार का भव्य आयोजन

(१७ अप्रैल १९९२ से १६ मई १९९२ तक)

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के तत्वावधान में उज्जैन सिंहस्थ मेले के अवसर पर १७ अप्रैल से १६ मई १९९२ तक एक विशाल धर्म प्रचार का शिविर लगाया जायेगा। जिसमें निरन्तर एक महीने तक प्रातः-सायं चारों वेदों का पारायण यज्ञ, नेत्र चिकित्सा शिविर, गोरक्षा सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, वेद सम्मेलन, राष्ट्रीय भाषा सम्मेलन आदि का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के सुप्रसिद्ध सन्यासी, वेदोपदेशक, धर्म उपदेशक, भजनोपदेशक एवं देश विदेश के धार्मिक नेताओं को आमन्त्रित किया गया है।

इस समारोह के आयोजन में निरन्तर एक महीने तक निःशुल्क ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई है। जिसके लिए श्री सेवाराम जी आर्य के सद्प्रयासों से २५० कुन्टल गेहूं अब तक एकत्रित किया जा चुका है। देश की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं एवं सभी दानी महानुभावों से अपील है कि इस धार्मिक महान् समारोह की सफलता हेतु अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर १२ वर्षों के पश्चात् होने वाले इस महान् यज्ञ को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग करें।

— सत्यानन्द प्रधान

मारीशस के आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित का भव्य स्वागत

दिल्ली ५ फरवरी। आज आर्य समाज मन्दिर अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता मे मारिशस के आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित का भव्य स्वागत किया गया। समारोह मे सबसे पहले सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री मोहित जी को फूल मालाए पहना कर उनका स्वागत किया। इसके पश्चात् श्री सत्यानन्द आर्य ने मोहित जी को दिये गये अभिनन्दन पत्र को पढा। इस अवसर पर डी. ए. वी के वयोवृद्ध नेता प्रो० वेद व्यास रामलाल सहगल, श्री दरबारीलाल, विशम्भरनाथ भाटिया, तथा डा० धर्मपाल आदि नेताओ ने श्री मोहित जी का फूलमालाओ द्वारा स्वागत किया और सभी नेताओ ने मोहित जी की भूरि-भूरि प्रशसा की।

इस अवसर पर सभी नेताओ ने 'दयानन्द वेद पीठ' जिसकी स्थापना श्री मोहित जी ने ६ लाख रु० देकर की, उसके प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा उसके मन्त्री श्री सत्यानन्द जी को आगे बढाने के लिए प्रोत्साहित किया।

श्री स्वामी आनन्दबोधजी ने उनके स्वागत मे बताया कि श्री मोहनलाल मोहित उस चिनगारी का परिणाम हैं जो जब कि अग्रेजो के समय मे एक सैनिक टुकडी के रूप मे मारिशस गई थी वहा पर उनके एक सैनिक की मृत्यु हो जाने पर आर्य समाज के कार्यकर्ता श्री खेमलाल ने ब्रिटिश सरकार के आपत्ति करने पर भी उनका दाह सस्कार किया। जब वह जहाज पर बैठकर चलने लगे तो उनसे पूछा गया कि आपने यह कार्य क्यों किया तो श्री खेमलाल ने महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश दिखाकर कहा कि यह सब मैंने इस पुस्तक के आधार पर किया है। ऐसे प्राचीन आर्य महापुरुषो से प्रेरणा लेकर श्री मोहित जी ने मारिशस मे आर्य समाज के काम को आगे बढाया।

महर्षि दयानन्द वचनामृत

१—प्रकृति पूजा छोडकर ब्रह्म के उपासक बनो।

२—प्रभु के अटल विश्वासी को सब इष्ट सुखो की प्राप्ति होती है।

३—ईश्वर पुरुषार्थी मनुष्य पर कृपा करता है, आलस्य करने वाले मनुष्य पर नही।

४—शरीर की पुष्टि व आत्मा तथा अन्त करण की शुद्धि प्रभु प्राप्ति का साधन हैं।

५—धर्म, कर्म और आत्मा-परमात्मा से भिन्न वस्तुओ में आनन्द समझना, अविद्या का एक लक्षण है।

६—प्राणीमात्र को प्रभु का प्रिय पुत्र समझकर उससे प्रेम करना, किसी से घृणा का व्यवहार न करना और उसके कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहना, यहा तक कि उनकी हित साधना मे अपने जीवन को भी अर्पित कर देना।

७—सच्चा प्रभु का प्रेमी किसी से घृणा नहीं करता। वह ऊच नीच की भेद भावना को त्याग देता है। वह उतने ही पुरुषार्थ से दूसरो का दुख निवारण करता है जितने पुरुषार्थ से वह अपने कार्य करता है। ऐसे ज्ञानीजन वास्तव मे आत्मा प्रेमी कहलाते हैं।

८—परमेश्वर की आज्ञा पालन करते हुए यदि अज्ञानी जन मेरे जीते जी मेरी अगुलियो को काटकर बत्ती का भी काम क्यो न लें किंतु दयानन्द प्रभु आज्ञा का परित्याग कभी न करेगा।

९—जीव अपने कर्मों मे स्वतन्त्र और कर्मफल भोगने मे ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है।

१०—जो मनुष्य झूठ चलाना चाहता है, वह सत्य की निंदा अवश्य करता है।

११—जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं तभी अन्ध परम्परा नष्ट होकर प्रकाश की परम्परा चलती है।

१२—जो मनुष्य उस परमेश्वर को छोड के दूसरे को इष्टदेव मानता है वह भाग्यहीन बडे-बडे दुखों को प्राप्त होता है।

सकलन—विजय प्रकाश

जय जय यतिवर हे दयानन्द।
हे दयानन्द! हे दयानन्द!!

कर आर्य जाति का गौरव बखान,
वैदिक युग का कर कीर्ति गान।

ऋषि सन्तति कर दी सावधान,
तुमने फिर हे आनन्द कन्द।
जय जय यतिवर हे दयानन्द!!

छल प्रपञ्चियों के विकट ढोल,
अमृत में विष रहे घोल।

जय वेद धर्म की बोल,
खोलकर पोल सकल काटे कुफंद।
जय जय यतिवर हे दयानन्द!!

गुरु देव! तुम्हारे गुण अनेक,
मुख में है कवि के गिरा एक।

प्रतिभा न पास विद्या विवेक,
किस विधि गुण गाये 'प्रकाशचन्द'
जय जय यतिवर हे दयानन्द!!

—स्व० 'प्रकाश' कविरत्न

डा० भवानीलाल भारतीय के निर्देशन में पी. एच. डी. के अनेक शोध कार्य सम्पन्न

जोधपुर। डा० भारतीय के निर्देशन में निम्न शोध छात्रो ने वेद, उपनिषद् तथा ऋषि दयानन्द सम्बन्धी विषयो पर शोध कार्य सम्पन्न कर पजाब विश्व विद्यालय से पी एच डी की शोध उपाधि ग्रहण की। डा० विनोद चन्द्र शास्त्री, आर्याभिविनय का परम्परा में लिखे गये वेद व्याख्या ग्रन्थ, श्रीमती सविता, ऋषि दयानन्द के अनुवर्ती उपनिषद व्याख्याकार डा० उमेश शास्त्री यजुर्वेद के अध्यात्म प्रधान मत्र, कु० नीरोत्तमा शर्मा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ भाषण एव शास्त्रार्थ। गत् ५ फरवरी को मेरठ विश्व विद्यालय के शोध छात्र श्रीपाल ने प्रेमचन्द साहित्य पर महर्षि दयानन्द का प्रभाव विषय लेकर पी. एच डी की उपाधि प्राप्त की।

सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता

सम्पादकीय

ऋषिवर, तेरा आना था गुणकारी

महापुरुष का जन्मदिन भविष्य की नवीन कल्पनाओं के साथ सन्देशवाहक होता है और घर-परिवार के लोग उस आगन्तुक जीव से नयी-नयी आशायें रखते हैं कि यह कुल का दीप बनेगा। क्या बनेगा और क्या करेगा। यह तो भविष्य ही बतायेगा। परन्तु "पूत के पांव पालने में ही दिखाई दे जाते हैं।

मूलशंकर का आना भी मूल में ही "शंकर" कल्याणकारी दिखाई दे रहा था। जब पिता ने विद्याध्ययन कराते समय यजुर्वेद का पाठ करा दिया था "होनहार विरवान के होत चीकने पात।"

जीवन का उदय और उसके घटनाक्रम भविष्य के शुभ सन्देश-वाहक होते हैं और जीवन का अन्त उसके अतीत का इतिहास बन जाता है।

म० बुद्ध का जीवन दर्शन एक मृत्यु-प्राप्त व्यक्ति ही आदर्श वाहक बना उसी प्रकार मूलशंकर का जीवन भी चाचा व बहन की मृत्यु से परिवर्तित हुआ घर-परिवार सब फीका नीरस लगने लगा और संसार के घटनाचक्र ने नई दिशा दी। और घर-परिवार से नाता-तोड़ संसार से नाता जोड़ा।

लक्ष्य क्या था ?

मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य बने, परन्तु जीवन में चेतनता नहीं आई दर-दर की ठोकरें खाईं गिरि कन्दराओं की खाक छानी, फिर भी जीवन में चैतन्यता नहीं आई।

स्वामी पूर्णानन्द ने इस व्यक्ति में कुछ करने की आशायें देखीं तभी सही द्वार पर भेज दिया। उस द्वारे पर सही लक्ष्य मिला और उस सन्त ने चार वर्ष में ज्ञान के द्वार खोल दिये।

"आदेश गुरु का सिर माथे" वेद के प्रचार-प्रसार का प्रकाश करो। लक्ष्य मिल गया। और उस तक किन उपायों से पहुंचना है यदि इन प्रश्नों को स्पष्ट उन्हीं के शब्दों में जानना हो तो 'सत्यार्थ प्रकाश" तथा दूसरे और प्रामाणिक संस्करण में महर्षि के अपने लक्ष्य की प्रणाली की भूमिका को पढ़िये। उस भूमिका में अपने कार्य की प्रणाली का तत्व निकाल कर रख दिया है। उनके कार्यों और लेखों पर समालोचनात्मक दृष्टि डालने से पूर्व सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण की भूमिका को अवश्य पढ़ना चाहिये। यह भूमिका उदयपुर में सं० १९३९ के भाद्रपद मास में लिखी गई थी।

महर्षि ने अपना प्रधान लक्ष्य इन शब्दों में बतलाया है। मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य के अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है सत्य को महर्षि कितना महत्व देते थे।

यह इस बात से स्पष्ट है कि आर्यसमाज के १० नियमों में से ४ नियमों में सत्य को सर्वोच्च स्थान दिया गया है और चौथा नियम तो सत्य पर ही केन्द्रित है।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये

महर्षि ने अपने जीवन का दो तिहाई भाग सत्य की खोज में और एक तिहाई भाग प्राप्त हुए सत्य का प्रकाशित करने में लगाया। सत्य उनका "मुख्य प्रयोजन" और पथ प्रदर्शक था।

सत्य के प्रकट करने से कभी-कभी कुछ लोगों को कष्ट भी होता है वह कष्ट ऐसा ही है जैसा डाक्टर द्वारा फोड़े पर चीरा लगाने से रोगी को होता है। चिकित्सक का उद्देश्य कष्ट देना नहीं अपितु

> **मेरा मन्तव्य**
>
> **"मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता, किन्तु जो आर्यावर्त व अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल-चलन है उसका स्वीकार और धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता और न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।"** —स्वामी दयानन्द सरस्वती

कष्ट को दूर करना है। महर्षि भी आध्यात्मिक रोगों के चिकित्सक थे। अपनी भावनायें अपने निम्नलिखित वाक्यों में व्यक्त की है ?

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़कर असत्य की ओर झुक जाता है। इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं है और न किसी का मन दुखाना न किसी की हानि का तात्पर्य है। मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। महर्षि असत्य को छोड़ने में अपनी भूल मानकर सत्य ग्रहण करने को सदा उद्यत रहते थे।

अपनी भूमिका में स्वामी जी लिखते हैं कि—

इस ग्रन्थ में जो कहीं-कहीं भूल चूक से अथवा शोधने तथा छापने में भूल-चूक रह जाय उसको जानने पर जैसा वह सत्य होगा वैसा ही कर दिया जायेगा।

सत्य किसी एक देश जाति या सम्प्रदाय तक परिमित नहीं है वह सर्वत्र विद्यमान है। कठिनाई यह है कि पक्षपात और अज्ञान से वह ढका रहता है महर्षि लिखते है—

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् अनेक मतों में है वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो बातें सब के अनुकूल है सब में सत्य है उनका ग्रहण और परस्पर विरुद्ध बातें हैं उनका त्यागकर प्रीति पूर्वक ही बनावें, तो जगत का पूर्ण हित होवें।

तत्व दृष्टि और विचारों की उदारता इसके आगे नहीं जा सकती है महर्षि भारत में उत्पन्न हुए थे और अपने देशवासियों का कल्याण चाहते थे परन्तु उनका हृदय केवल जन्मभूमि तक सीमित नहीं था वह मनुष्यमात्र का कल्याण चाहते थे।

ऋषि ने जीवन के क्षण-क्षण में और जीवन यात्रा के पद-पद पर अपनी श्रेष्ठता का परिचय व प्रमाण प्रस्तुत किया हैं। नाना प्रकार की विपत्तियों और परीक्षाओं की भट्टी में से कुन्दन होकर उज्ज्वल मुख निकले।

यदि मनुष्य के व्यक्तित्व में आकर्षण, वाणी में प्रभाव, कर्म में सौष्ठव और चरित्र में बल व सौन्दर्य है इस अवस्था की प्राप्ति के लिये ऋषि ने तप व त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया था। अपनी वासनाओं पर विजय प्राप्त की थी अपने शरीर को आत्मा के वशीभूत किया था। स्वार्थ पर परमार्थ की विजय प्राप्त की थी। माया और मोह के प्रलोभनों से अपने को ऊपर रखा था: काम-क्रोध, लोभ-मोह के मोहक कुत्सित प्रभावों से अपने को बचाया था।

तब ऋषि ने जिधर वेदों का उद्घोष किया विजय की दुन्दुभि बजती ही चली गई।

ऋषिराज तेज तेरा चहुं ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर संसार आ रहा है॥

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा—

आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री को वेद-वेदांग तथा आचार्य नरेन्द्र भूषण को वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित किया गया

अंग्रेजी का दबदबा तोड़ें : —जैलसिंह

बम्बई, ३ फरवरी।

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने वेद-वेदान्तों तथा देश के अन्य धार्मिक साहित्य का हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में सरल और प्रवाहमय अनुवाद किए जाने की जरूरत बताई है। 'क्योंकि उनके गूढ़ और उपयोगी ज्ञान व सन्देश को जनता उसी भाषा में हृदयंगम कर सकती है, जो उसकी अपनी हो।'

ज्ञानी जैलसिंह बान्द्रा स्थित आर्य विद्या मन्दिर में आर्य समाज, सान्ताक्रुज द्वारा आयोजित एक समारोह में बोल रहे थे। समारोह में संस्कृत विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र तथा पं० नरेन्द्र भूषण को क्रमशः वेद-वेदांग तथा वेदोपदेशक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

हिन्दी के प्रति सरकार की उपेक्षात्मक नीति से पूर्व राष्ट्रपति बहुत व्यथित दिखे। उन्होंने देशवासियों से उस स्थिति को उलट देने के लिए कहा 'जिसके चलते सिर्फ चार फीसदी अंग्रेजीदां देश के ९६ फीसदी लोगों पर अपनी मर्जी लादा करते हैं।' इस स्थिति के लिए उन्होंने ऊंचे पदों पर बैठे नौकरशाहों को जिम्मेदार बताया। ठहाकों के बीच उन्होंने इन अफसरों पर चुटकी ली। 'अंग्रेजी तो उनकी प्रेमिका है। वे उसका वियोग भला कैसे सह सकते हैं।'

ज्ञानी जैलसिंह ने कहा, 'हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओं की हमारी हिमायत को अंग्रेजी विरोध का नाम देना गलत है। पर अंग्रेजी तो पीछे की कुर्सी की ही पात्र है। आगे-आगे तो हमारी अपनी भाषाएं ही रहनी चाहिए। उनकी इस चुटकी पर भी श्रोता हंसी थाम न सके कि 'जो भाषा हमारे संविधान में नहीं, हमारी सरकार का उससे काम नहीं।' पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि सिर्फ आत्मिक शक्ति से ही देश को जोड़ा जा सकता है।

समारोह में बदायूं के आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र को वेद-वेदांत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें रजत ट्राफी व प्रशस्ति पत्र के साथ २१ हजार रुपए नकद पुरस्कार के रूप में प्रदान किए गए। केरल के आचार्य नरेन्द्र भूषण को स्मृति चिह्नों के साथ ११ हजार रुपये भेंट किए गए।

आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र ने विभिन्न धर्मों के उदाहरण देते हुए सिद्ध किया कि वेद-वेदान्त व उपनिषदों में समाहित ज्ञान सम्पदा विश्व भर में कितनी मान्य, ग्राह्य व प्रशंसित है। आचार्य नरेन्द्र भूषण ने केरल में वेद गुरुकुल स्थापित करने की अपनी योजना के बारे में बताया।

समारोह के संयोजक तथा आर्य समाज, सान्ताक्रुज के अध्यक्ष कैप्टन देवरत्न आर्य ने पिछले पुरस्कारों का ब्योरा दिया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए पूर्व सांसद रामचन्द्र विकल ने स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज की भूमिका याद दिलाई तथा कहा कि अब उसे पहले की तरह हा सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

मण्डल के सबक

सफल राजनीतिज्ञ वह है जो सही समय पर सही काम करता है। विफल राजनीतिज्ञ वह है जो सही समय पर सही काम नहीं कर पाता और बाद में पछताता है। लेकिन उस राजनीतिज्ञ को किस कोटि में रखा जाए, जो गलत समय पर सही काम करता है और बाद मे पछताता है? यह सवाल मण्डल रिपोर्ट लागू करने के आकस्मिक निर्णय पर जनता दल अध्यक्ष एस. आर. बोम्मई की उस साफगोई से उठता है जिसका परिचय उन्होंने आरक्षण पर हिरण्मय कार्लेकर की ताजा पुस्तक के विमोचन के अवसर पर दिया। श्री बोम्मई ने इस मौके पर तीन बातें कबूल कीं—

(१) शायद मण्डल आयोग की रिपोर्ट लागू करने के फैसले के पीछे विश्वनाथ प्रतापसिंह के राजनीतिक मन्सूबे थे।

(२) यह फैसला शायद जल्दबाजी मे किया गया था।

(३) लोग इस मुद्दे पर इसलिए आन्दोलित हुए, क्योंकि उन्हें आयोग की सिफारिशें लागू करने से निकलने वाले नतीजों की जानकारी नहीं दी गई थी।

इन स्वीकारोक्तियो में एक भयानक सच है और एक उतना ही भयानक झूठ। सच वह है जिसका आरोप विश्वनाथ प्रतापसिंह पर बार-बार लगाया गया है। दर्प साधारण व्यक्तियो को भी अपनी गलती कबूल करने से रोकता है। राजनीतिज्ञों को तो और भी। इसलिए विश्वनाथ प्रताप सिंह से किसी प्रायश्चित की उम्मीद करना बेकार है। लेकिन जनता दल के अन्य नेताओ मे अगर यह एहसास पैदा हो रहा है और वे उसे सार्वजनिक रूप से व्यक्त करने का साहस भी दिखा रहे हैं कि मण्डल निर्णय के पीछे सब कुछ पाक-साफ नहीं था, तो यह एक राष्ट्रीय राहत की बात है। इससे उनकी राजनीति के भविष्य में साफ-सुथरा होने की सम्भावना पैदा होती है। लेकिन इन स्वीकारोक्तियों में जो झूठ है, वह बताता है कि श्री बोम्मई को अब भी इस बात का एहसास नहीं है कि मण्डल रिपोर्ट लागू करने के फैसले ने भारतीय समाज की जड़ों को कितनी गहराई से आन्दोलित कर दिया है। यह राम जन्मभूमि आन्दोलन से भी बड़ी घटना है, क्योंकि राम का सवाल अब भी भारतीय समाज के लिए एक छिछला मामला है क्योंकि मण्डल की प्रतिध्वनियां लोगों के अवचेतन तक गई हैं और देश का लगभग हर समूह भीतर से दरक हो गया है। इसलिए मण्डल रिपोर्ट जब भी लागू होगी, जलजला बरपा होगा ही।

इस जलजले को रोकने का एक ही तरीका था और है कि भारतीय समाज को समतल करने का आन्दोलन बड़े पैमाने पर और लगातार चलाया जाए। सिर्फ सरकारी स्तर पर नही, गैरसरकारी स्तर पर भी। सिर्फ एक बिन्दु पर सीमित रह कर नहीं, समस्या के सभी बिन्दुओं को छूते हुए। लेकिन इसी अवसर पर श्री बोम्मई ने आरक्षण पर जो संकुचित विचार रखे और जनता दल जिस तरह अब भी सिर्फ आरक्षण दल बना हुआ है, उसे देखते हुए लगता नही कि पार्टी ने पिछले डेढ़ साल की घटनाओं से कोई और सबक सीखा है। जो राजनीतिज्ञ अपनी गलतियां देर से समझते हैं, सबक शायद वे और देर से सीखते हैं।

नवभारत टाइम्स ६ फरवरी से साभार

गुरु ग्रन्थ साहब में ईश्वर के ३७ नामों का १५०२५ बार उल्लेख किया गया

नई दिल्ली, २ फरवरी। सिखों के पावन धर्म ग्रन्थ "गुरुग्रन्थ साहब" में परमात्मा को सैंतीस अलग-अलग नामों से सम्बोधित किया गया है। हरि, राम, प्रभु, गोपाल और गोविन्द संबोधन प्रमुख हैं। इनमें से "हरि" का उपयोग ८३४४ बार हुआ है। २५३३ बार परमात्मा को 'राम' के रूप में सम्बोधित किया गया है और 'प्रभु' को १३७ बार। १३७१ बार ही परमात्मा को "गोपाल" कहा गया है। "गोविन्द" कहकर ४७५ बार सबोधित किया गया है। पावन गुरुग्रन्थ साहब में परमात्मा का कुल १५०२५ बार उल्लेख हुआ है। ये आंकड़े हाल में प्रकाशित एक पुस्तक "अन्डर स्टेंडिंग सिखिज्म" में दिये गये हैं, जिसके लेखक एक शिक्षा शास्त्री के. एम. ग्रेवाल है। गुरुग्रन्थ साहब की कालावधि की चर्चा करते हुए पुस्तक में बताया गया है कि जयदेव (११७० ई.) पहले संत थे, जिनकी उक्तियों को इस ग्रन्थ में शामिल किया गया था।

जागरण युग के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द

—डा० सुरेश व्रत राय

महर्षि दयानन्द भारतीय परम्परा के ऐसे युगान्तकारी प्रतिनिधि थे जहां चिन्तन और अनुशीलन एक दूसरे के पूरक है। न्यूटन ने वृक्ष से नीचे गिरते सेब को देखकर गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत प्रतिपादित किया तो रोगी वृद्ध और पार्थिव शरीर ने सिद्धार्थ के मन में दुःख निवारण निदान की ऐसी जिज्ञासा उत्पन्न की कि वह विशाल बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध बन गये। जीवन की सामान्य दशा महापुरुषों के लिये प्रेरणा और आलोक-स्रोत बन जाती है। महाशिवरात्रि के दिन जब एक दूसरे से बढ़कर अनन्य शिव भक्त गहरी निद्रा में लीन हो गये थे, एक टक निहारते जाग रहे बालक मूल शंकर ने देखा, शिव लिंग पर चढ़ाये गये प्रसाद को एक चुहिया इधर से उधर दौड़ती हुई मजे से खा रही है, उछल कूद कर रही है। तीसरे नेत्र मात्र से लोगों को भस्म करने की क्षमता वाले प्रलयकर शंकर की ओर से कोई विरोध नहीं, कोई स्पंदन नहीं, छूने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं। उस छोटी सी चुहिया से बालक मूलशंकर के मन में अनेक प्रश्नों का झंझावात उठ खड़ा हुआ। असली शिव कौन है, उसका स्वरूप क्या है। बहिन और चाचा की आकस्मिक मृत्यु ने बालक को झकझोर दिया, जीवन क्या है? मृत्यु क्यों अनिवार्य है, मृत्यु क्या है? इन प्रश्नों की खोज में मूलशंकर दर-दर भटकता रहा, जब द्वार की कुंडी खटखटाने पर स्वामी विरजानन्द ने पूछा, 'कौन है?' तो जिज्ञासु का उत्तर था, 'मैं यही जानने के लिये तो आया हूं कि मैं कौन हूं।' अततः मूल शंकर स्वयं विषपायी बन महर्षि दयानन्द के रूप में शिवत्व के मूर्तिमान रूप बन गये।

महर्षि दयानन्द ने कभी विदेश जा कर वहां का विदेशी तमगा अथवा प्रमाण पत्र नहीं प्राप्त किया जो हम भारतीयों को अधिक चकाचौंध करता है। दयानन्द ने अपने को किसी प्रांत समुदाय तक भी सीमित नहीं रखा जो प्रांतीयता अथवा समुदाय के नाम पर प्रचार करते। महर्षि दयानन्द ने अपने भाषण राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही दिये, अंग्रेजी में नहीं, जो सन्त महात्मा के विद्वान होने की कसौटी समझी जाने लगी है धर्म के नाम पर पाखण्ड, दुराचार, ठगी, धूर्तता करने वालों तथा दुराचारियों के विरुद्ध महर्षि ने अपनी निर्भीक स्पष्ट आवाज उठाई, चुनौती दी, निहित स्वार्थों पर तीखा प्रहार किया। जिससे उनके अनेक विरोधी सदैव रहे और उन लोगों ने महर्षि का कभी उचित मूल्यांकन नहीं किया और न होने दिया।

मूलशंकर ने किसी क्षणिक भावावेश में वैराग्य सन्यास का मार्ग नहीं चुना और न मात्र भगवावस्त्र, दण्ड-कमण्डल के बल पर समाज में चरण स्पर्श कराने, सम्मान प्राप्ति का प्रयास किया। उनके सामने मौलिक और ज्वलंत प्रश्न थे जिनके उत्तर एवं समाधान की खोज में वह घर से विवाह के लिए निर्धारित तिथि से तीन दिन पूर्व निकल पड़े।

प्रश्नों की खोज में टहकते हुए जब शुद्ध चैतन्य स्वामी पूर्णानन्द आश्रम पहुंचे तो उन्होंने दीक्षा देकर नया नाम आत्म प्रकाश स्वरूप दयानन्द सरस्वती रखा और वह अन्त तक इसी नाम से प्रसिद्ध रहे। अहमदाबाद, बड़ौदा के चैतन्य मठ मे शुद्ध चैतन्य ने ब्रह्मानन्द ब्रह्मचारी से वेदांत (अद्वैतवाद) का गहन अध्ययन किया। नर्मदा तटवर्ती सच्चिदानन्द परमहंस, चाणोदकर्णाली आश्रम के स्वामी चिदाश्रम, परमानन्द परमहंस से शुद्ध चैतन्य ने व्याकरण, वेदान्त सार, वेदान्त परिभाष का विस्तृत और गम्भीर अध्ययन किया। इसी आश्रम में शुद्ध चैतन्य ने पूर्णानन्द जी से सन्यास की दीक्षा लेकर दयानन्द सरस्वती नाम ग्रहण किया। स्वामी दयानन्द ने व्यासाश्रम में योगानन्द से योग, छिन्वाड़े के कृष्ण शास्त्री से व्याकरण, राजगुरु ज्वालानन्दपुरी, शिवानन्द गिरि से योग एवं दर्शन शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया, इनके अतिरिक्त दयानन्द ने आबू पर्वत, हरिद्वार, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड, बद्रीनाथ, तुंगनाथ, केदारनाथ, श्रीनगर के गंगागिरि तथा अनेक सिद्ध योगियों से ज्ञान और योगाभ्यास की शिक्षा प्राप्त की तथापि उन्हें अपने प्रश्नों का समाधान नहीं मिल सका।

समाधान

जीवन के ३६ वर्ष तक प्रश्नों के समाधान की खोज में इधर-उधर भटकने के पश्चात् दयानन्द जी मथुरा के दण्डी स्वामी विरजानन्द की शरण

> महर्षि दयानन्द का सबसे अधिक कट्टर विरोध उनके द्वारा मूर्ति पूजा खण्डन के कारण हुआ। इस खण्डन से धर्म के नाम पर मूर्ति पूजा, मूर्ति विषयक चमत्कार, मनगढ़न्त किंवदंतियां गढ़कर मूर्ति और मन्दिरों में भेंट चढ़ावे से लोगों को तथाकथित धार्मिक लोगों, मठाधीशों, महन्तों को क्षति पहुंचने लगी थी। महर्षि दयानन्द ने कहा, शास्त्रीय दृष्टि से परमात्मा निराकार और एक है। वेदों, उपनिषदों में वैदिक काल में कहीं भी मूर्ति पूजा का विधान नहीं है। इस मत का शास्त्रार्थ में कोई खण्डन नहीं कर सका।

में जा पहुंचे। अब तक संचित पुस्तकों, पोथियों को स्वामी विरजानन्द के आदेशानुसार यमुना में प्रवाहित करके नए सिरे से शिक्षा प्राप्त की। स्वामी विरजानन्द ने अपना सारा ज्ञान प्रिय शिष्य दयानन्द को दे दिया और अंत मे गुरु दक्षिणा मांगी, 'सन्यासी का कर्तव्य आत्म कल्याण और आत्ममोक्ष मात्र नहीं है, उसे अपने आलोक, निर्भीकता और दृष्टि संकल्प से नष्ट प्रायः समाज को शोषण, पाखण्ड, अनाचार, अज्ञान, अन्धविश्वास से मुक्त करना है।

जब तरकस तर्क से रिक्त हो गया तब महर्षि दयानन्द को अपमानित प्रताड़ित करने से लेकर उनकी हत्या का प्रयत्न आरम्भ हो गया। काशी शास्त्रार्थ मे पराजित समुदाय ने महर्षि दयानन्द का स्वांग बनाकर एक गधे पर निकाला, उस पर राख, धूल, कीचड़, जूते, चप्पल, अपशब्दों की बौछार करते हुए नगर में घुमाया। डंडे के बल पर दयानन्द को सुरापान कराने के लिए रतिराम गुंडे को भेजा, परन्तु वह महर्षि के अलौकिक तेज से अभिभूत हो पैरों पर गिर पड़ा और अनुयायी बन गया। जाट पहलवान की भी ठीक यही दशा हुई जो दयानन्द जी को सुरधाम पहुंचा देने का वादा करके आया था।

शुद्धि आन्दोलन तथा ऐंग्लोवैदिक कालेज खोलने से ईसाई अन्य धर्मों के मतावलम्बी भी सशंकित हो उठे, निहित स्वार्थ के कारण 'समाजी से अच्छे नमाजी' जैसा नारा उभरने लगा। पूरे देश को आलोकित करने वाले महर्षि का जीवन दीप बुझा देने के षड्यन्त्र किये जाने लगे। अनूपशहर मे एक ब्राह्मण ने विषयुक्त पान दिया। पान कभी न खाने के बावजूद उसका मन रखने के लिए दयानन्द जी ने पान खा लिया, विष का पता लगने पर यौगिक क्रिया द्वारा अपने को विष के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त कर लिया। जब तहसीलदार सैयद महमूद विष देने वाले ब्राह्मण को बन्दी बनाकर लाए तो इसके लिये महर्षि ने उन्हें प्रताड़ित किया और कहा 'मैं संसार में लोगों को बन्धन मुक्त कराने आया हूं, बन्दी बनाने नहीं' कहकर तुरन्त मुक्त करा दिया। काशी में एक बार फिर पान मे विष दिया गया। महर्षि ने उसे भी झेल लिया। प्रयाग मे जब महर्षि दयानन्द अलोपाबाग में जब भक्तों के बीच बैठे थे, एक ब्राह्मण मिठाई लेकर आया और भोग लगाने के लिये आग्रह करने लगा। दयानन्द जी ने उससे भी ग्रहण करने के लिये कहा परन्तु वह किसी भी प्रकार तैयार नहीं हुआ, मिठाई मे विष मिला था। यहीं सिद्ध हो गया, भक्तों ने पुलिस के हवाले करना चाहा परन्तु दयानन्द ने ब्राह्मण को मुक्त करा दिया। अन्ततः जोधपुर के राणा जसवन्त सिंह की चहेती वेश्या नन्ही जान ने महर्षि दयानन्द की आलोचना से क्रुद्ध होकर महर्षि के विश्वास पात्र रसोइए जगन्नाथ से रात्रि के दूध में हलाहल विष मिलवा कर पिलवा दिया। महर्षि को पता लग गया कि वह हलाहल इस बार प्राण घातक होगा। जब जगन्नाथ रसोइया पकड़ कर उनके सामने लाया गया, महर्षि ने जगन्नाथ को पांच सौ रुपये की पोटली देते हुए कहा, 'मेरे इस प्रकार असमय जाने से मेरा काम अधूरा रह गया, लोकहित की बड़ी हानि हुई है। इस धन राशि से, समाचार फैलने के पूर्व तुम नेपाल भाग जाओ, अपने प्राणों की रक्षा करो, यहां लोग तुम्हारी जान के पीछे लग जायेंगे' अपने हत्यारे को बार बार क्षमा करने का ऐसा दूसरा उदाहरण विश्व में शायद ही मिलेगा।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

युगदृष्टा : महर्षि दयानन्द

श्री राजपालसिंह शास्त्री

आदर्श सर्वतोमुखी सुधारक परमश्रद्धेय दयानन्द बडे उदार विचारो के व्यक्ति थे। उनमे साम्प्रदायिक द्वेष व सकीर्णता का लवलेश भी न था। इसीलिए सब जातियो के उदार विद्वान् उनका मान करते थे।

१—अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सस्थापक सर सय्यद अहमद खा ने—

महर्षि दयानन्द जी के ३० अक्टूबर, सन् १८८३ को बलिदान के ठीक पश्चात् ६ नवम्बर सन् १८८३ के अलीगढ इन्स्टीटयूट मैगजीन मे लिखा था कि—,

'निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहेब ने जो सस्कृत के बडे आलम (विद्वान्) और वेद के बहुत मुहक्किक (समर्थक) थे ३० अक्टूबर ७ बजे शाम को अजमेर मे इन्तकाल किया। इलावा इल्मो फजल (उत्तम विद्या के अतिरिक्त) निहायत नेक और दरवेशसिफ्त (साधु स्वभाव) आदमी थे। इनके मोहतकिद (अनुयायी) इनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। वे सिर्फ ज्योतिस्वरूप निराकार के सिवाय दूसरे की पूजा जायज (विहित) नही रखते थे। हम से और स्वामी दयानन्द मरहूम (स्वर्गीय) में बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा इनका निहायत अदब (आदर) करते थे कि हरेक मजहब वाले को इनका अदब लाजिमी (आवश्यक) था। बहरहाल ऐसे शख्स थे जिनका मसल (उपमा) इस वक्त हिन्दुस्तान मे नही है और हर एक शख्स को उनकी वफात (मृत्यु) का गम (शोक) करना लाजमी है कि ऐसा बेनजीर शख्स (अनुपम मनुष्य) इनके दरमियान से जाता रहा।'

(अलीगढ इन्स्टीट्यूट ६-११-१८८३)

सर सय्यद अहमद खा जैसे सुप्रसिद्ध मुसलमान नेता की ओर से ऐसी श्रद्धाजलि अर्पित की जानी महर्षि दयानन्द की असाम्प्रदायिकता का ज्वलन्त प्रमाण है। इससे उन लोगो की आखे खुल जानी चाहिये जो उन्हे मुसलमानो का शत्रु समझते हैं। महर्षि दयानन्द का वैयक्तिक जीवन बहुत ही उच्च कोटि का था। साथ ही वे बडे कर्मयोगी सुधारक थे। जातिभेद और अस्पृश्यता आदि बुराइयो को दूर करने का उन्होने घोर परिश्रम किया था। स्त्रियो की शोचनीय अवस्था को दूर करने के लिए भी उनका प्रयत्न प्रशसनीय था।

२—इस विषय मे जगद्विख्यात विचारक श्री रोम्या रोला ने ठीक ही लिखा है कि—

'Dayananda transfused into the languid body of india his own formdable energy, his certainty his loin's blood।

Dayananda Saraswati was a personality of the highest order This man with the nature of a lion is one of those men whom Europe apt to forget when she Judges India and whom she will probably be forced to remember to her cost, for he was the rare combination, a thinker of action with a genius for leadership (Life of Rama Krishna P 146)

अर्थात् ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य शरीर मे अपनी अजेय शक्ति अविचल कर्मण्यता तथा सिंह के समान पराक्रम फूक दिये। स्वामी दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व सम्पन्न पुरुष थे। कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा ये सभी प्रकार के दुर्लभ गुण उनमे विद्यमान थे। यह सिंह-समान व्यक्तियो मे से एक है जिसे यूरुप, भारत के विषय मे निर्णय करते हुए सभवत भूल जाए किन्तु जिसे शायद उसे याद करने को बाधित होना पड क्योंकि उसमे कर्म के विचारक और प्रतिभाशाली नेतृत्व का दुर्लभ मिश्रण था।

"Dayananda would not tolerate the abominable injustice of the existence of untouchables and nobody has been a more ardent champion of their outraged rights

अर्थात् स्वामी दयानन्द ने अस्पृश्यता के अन्याय को भी सहन नही किया। उनसे अधिक अस्पृश्यो के अपहृत अधिकारो का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नही हुआ।

भारत मे स्त्रियो की शोचनीय दशा को सुधारने मे भी दयानन्द ने बडी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव मे राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने मे सबसे अधिक प्रबल शक्ति उन्ही की थी)

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सार्वदेशिक (पत्र) के नियम

(१) 'सार्वदेशिक' पत्र का ग्राहक वर्ष के किसी भी समय से बना जा सकता है।

(२) 'सार्वदेशिक' पत्र का वार्षिक (२०/- रु०) या आजीवन (३००/- रु०) सदस्यता शुल्क मनीआर्डर द्वारा ही भेजने का कष्ट करे।

(३) प्रत्येक ग्राहक के पास 'सार्वदेशिक' बडी सावधानी से भेजा जाता है। परन्तु यदि किसी ग्राहक को पत्र न मिले तो कार्यालय मे पत्र-व्यवहार द्वारा या व्यक्तिगत सम्पर्क करें तथा साथ ही अपने डाकघर से भी इसका स्पष्टीकरण मागे। पत्राचार करते समय अपनी ग्राहक सख्या अवश्य लिखे।

(४) प्रकाशनार्थ लेख टाईप किये हो या स्पष्ट अक्षरो मे हाथ से लिखे होने पर ही स्वीकार किये जायेंगे।

(५) वैदिक ज्ञान, महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की मान्यताओ के अनुरूप लेखों को ही प्रकाशित किया जाएगा। लेख को न्यूनाधिक करना सम्पादक के अधीन है।

(६) सार्वदेशिक पत्र को और अधिक जनप्रिय बनाने के सुझावो का स्वागत है।

—सम्पादक

महर्षि दयानन्द, वेद, आर्य और हिन्दु

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, नजीबाबाद (उ०प्र०)

"वेद-संस्थान" राजौरी गार्डन नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा श्री डा० फतहसिंह जी प्रणीत "प्रगतिशील भारतीयता को वेदों की देन" नामक पुस्तक प्राप्त हुई। यद्यपि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के धर्माधिकारी श्री डा० शिवकुमार जी शास्त्री ने मुख्य आक्षेप योग्य शब्दों को चिह्नांकित करके पुस्तक भेजी है किन्तु फिर भी यह सोचकर कि जिस पुस्तक के लेखक श्री डा० फतहसिंह जी हैं, उसमें पर्याप्त उपयोगी सामग्री होनी चाहिये। पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ने का लोभ संवरण नहीं हो सका। पढने के परिणाम स्वरूप "खोदा पहाड़ निकला चूहा, वह भी मरा हुआ" लोकोक्ति चरितार्थ होती दृष्टिगोचर हुई।

पुस्तक का वास्तविक उद्देश्य "हिन्दू" शब्द की वैदिक सिद्धि है, यद्यपि इसमें लेश भी तथ्य नहीं है। लेखक महोदय ने अपने पक्ष को महर्षि दयानन्द का नाम ले लेकर भी प्रमाणित करने का पर्याप्त प्रयत्न किया है, जिसमें मनमोदक खाने से अधिक बल नहीं है। यही कारण है कि हम पुस्तक की समग्र रूपेण समीक्षा लिख लेख का कलेवर बढ़ाना और अपना तथा पाठकों का समय नष्ट करना उचित नहीं समझते। केवल घुमा-फिरा कर वेद और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम का मिथ्या आश्रय लेकर "हिन्दु" शब्द का पिष्टपेषण इस पुस्तक मे किया गया है, उसी के विषय में चर्चा करना उचित है।

मुख्य विषय पर चर्चा करने से प्रथम यह कह देने में संकोच करना उचित नहीं है कि वेद में कहीं भी "भारत-जन" शब्द नहीं है। आपने लिखा है कि "इस समाज के लोगों को वेदों ने भारत जन कहा।" हां, यह तो हो सकता है कि जिस प्रकार ऋग्वेद के १।१६४।२७ मन्त्र के प्रथम पाद के "हि" तथा द्वितीय पाद के "दू" को लेकर हिन्दू शब्द की सिद्धि "वैदिक धर्म" मासिक के जौलायी १६५१ के अंक में श्री दीनानाथ शास्त्री द्वारा की गई थी, उसी प्रकार श्री डा० फतहसिंह जी द्वारा "कही की ईंट,कही का रोड़ा" लेकर भारत-जन शब्द का निर्माण कर लिया गया हो।

सन् १६५१ के अगस्त में हमने "हिन्दू" नहीं "आर्य" पुस्तक लिख कर प्रकाशित की थी दीनानाथ शास्त्री और "वैदिक-धर्म" पत्र के सम्पादक श्री पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर की सेवा में भेज दी थी किन्तु दोनों में से किसी विद्वान् की प्रतिक्रिया न तो पत्र द्वारा व्यक्तिगत हमे प्राप्त हुई और न "वैदिक-धर्म" मासिक मे ही इस विषय में कुछ लिखा गया। मैने अपने उस लेख में यह प्रश्न भी किया था कि यदि इस प्रकार हिन्दू शब्द बन जाता है तो मन्त्र के शेष भाग का क्या उपयोग रहा तथा इतने बड़े मन्त्र की रचना क्यों की गई? यदि उक्त मन्त्र मे केवल हिन्दू शब्द की प्रस्थापना ही उद्देश्य था तो दोनो पादो के प्रथम शब्दों 'हि' तथा 'दू' पर ही बस कर देना था या फिर सम्पूर्ण मन्त्र का अर्थ हिन्दू शब्द प्रतिपादक, समर्थक और परिभाषा प्रस्तुत करने वाला होना चाहिये था। ऐसी ही स्थिति श्री डा० फतहसिह जी के "भारत-जन" की भी प्रतीत होती है। चारों वेदों में कहीं भी "भारत-जन" शब्द यदि है तो डाक्टर जी हमें सूचित करे, हम सहर्ष उनका मत स्वीकार कर लेंगे क्योकि हमने तो "सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग" का गुरुमन्त्र ले रक्खा है।

सामान्यतया वर्तमान कालिक इतिहासज्ञों की जो तथ्यहीन मान्यता बनी हुई है कि फारसी भाषा मे "स" को "ह" हो जाता है अतएव सिन्धु नदी के किनारे रहने से ईरान आदि भारत से पश्चिमीय देशों के निवासी आर्यों को हिन्दू कहने लगे और इसी कारण से भारत का नाम हिन्दुस्तान तथा यहां के निवासियों की भाषा का नाम हिन्दी भाषा पड़ गया, यद्यपि अरब देश में अब भी भाषा को ही नहीं अपितु भारतीयों को भी हिन्दी कहा जाता है, हिन्दू नहीं। अन्य आधुनिक इतिहासज्ञों की ही भांति श्री डा० फतहसिंह जी ने इस मत को एक दूसरा ही रूप देने के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम और जोड़ दिया। जब कि महर्षि हिन्दू संज्ञा के प्रबल विरोधी थे। पूना नगर में जौलाई १८७५ ई० में "धर्माधर्म विषय" पर भाषण करते हुए—जब वह प्राण-प्रतिष्ठा के मन्त्रों के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे—प्रसगवश उनके मुख से यह शब्द निकले "इसका विचार हम हिन्दुओं को" तब उन्होंने इस पर अत्यन्त पश्चाताप किया, क्योंकि वह जानते थे कि हमारा नाम हिन्दू नहीं अपितु आर्य है। हिन्दू शब्द तो हमारी भाषा का भी नहीं अपितु यावनी भाषा का है तथा हमारे ऊपर बलात् लादा गया है एतदर्थ महर्षि ने पश्चात्ताप करते हुए कहा था—"नहीं मैं भूला, हम आर्यों को। आगे उन्होंने वेदादि सद्ग्रन्थों के प्रमाण प्रस्तुत करके आर्य शब्द की पुष्टि की।

उन दिनों आजकल की जितनी जागृति भी नहीं थी। जिसके कारण सभी वैदिक धर्मी अपने आपको हिन्दू शब्द से ही जानते थे, फलतः स्वामी जी का भी वैसा ही अभ्यास बना हुआ था अतः उनके मुख से भी हिन्दू शब्द ही निकला था। वेदादि ग्रन्थों के अध्ययन ने उस अशुद्ध धारण के अभ्यास को तोड़ने में सच्चे हितैषी का कार्य किया और ऋषिवर ने अपनी भूल को स्वीकारते हुए आगे कहा था "हिन्दू" शब्द का उच्चारण मैंने भूल से किया, क्योंकि "हिन्दू" यह नाम हमको मुसलमानों ने दिया है, जिसका अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि है। सो मैंने मूर्खता से उस शब्द को स्वीकार किया था हमारा असली नाम तो आर्य अर्थात् श्रेष्ठ है।

आगे अपने इस विचार की पुष्टि मे उन्होने ऋग्वेद १।५१।८ के "विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो" और पाणिनीय अष्टाध्यायी के "आर्यो ब्राह्मण कुमारयो." सूत्र का उच्चारण करते हुए कहा था "भाइयो! दस्यु सदृश अव्रतचारी लोगों के साथ लड़ने वाले हम व्रतचारी आर्य हैं, सो स्मरण रहे।"

पूना नगर की उसी भाषण शृंखला में इतिहास विषय पर बोलते हुए उपर्युक्त पाणिनीय सूत्र को ही प्रस्तुत करके महर्षि ने कहा था "ऐसी व्यवस्था होते हुए हमारे देश का नाम आर्य स्थान अथवा आर्य खण्ड होना चाहिये,सो उसे छोड़कर न जाने हिन्दुस्तान यह नाम कहां से निकला। भाई श्रोतागण! हिन्दू शब्द का अर्थ तो काला, काफिर, चोर इत्यादि है और हिन्दुस्तान कहने से काले, काफिर, चोर लोगों की जगह अथवा देश ऐसा अर्थ होता है। भाई इस प्रकार का बुरा नाम क्यों ग्रहण करते हो? और आर्य अर्थात् श्रेष्ठ अथवा अभिज्ञात इत्यादि और आर्यावर्त्त कहने से ऐसों का देश अर्थात् आर्यावर्त्त का अर्थ "श्रेष्ठों का देश" ऐसा होना है। सो ऐसे श्रेष्ठ नाम को तुम क्यों नहीं स्वीकार करते, क्या तुम अपना नाम भी भूल गये?" इतना भाषण करने के पश्चात् ऋषि ने शोकातुर होकर आगे कहना प्रारम्भ किया, "हां, हम लोगों की स्थिति देखकर किसके हृदय को क्लेश नही होगा? सभी को होगा। अस्तु सज्जन जन! अब हिन्दू नाम का त्याग करो और आर्य, आर्यावर्त्त इन शब्दों पर अभिमान धरो। गुण-भ्रष्ट हम लोग हुऐ तो हुए परन्तु नाम-भ्रष्ट तो हमे नही होना चाहिये, ऐसी आप सबसे मेरी प्रार्थना है।"

हिन्दू और हिन्दुस्तान शब्दों के विषय मे इस प्रकार स्पष्ट विचार व्यक्त करने वाले महापुरुषके नाम और दृष्टिकोण को घुमा-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

क्या करें, क्या न करें ?

जो माता, पिता और आचार्य, संतान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपने संतान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो संतानों वा शिष्यों का लाड़न करते हैं वे अपने शिष्यों को विष पिला के नष्ट भ्रष्ट करते हैं। क्योंकि लाड़न से संतान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं और संतान और शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न और लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें। परन्तु माता, पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भयप्रदान और भीतर से कृपादृष्टि रखें।

जैसे अन्य शिक्षा की वैसी चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य, मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, मोह आदि दोषों के छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा करें। क्योंकि जिस पुरुष ने जिसके सामने एक बार चोरी, जारी, मिथ्याभाषणादि कर्म किया उसकी प्रतिष्ठा उसके सामने मृत्यु पर्यन्त,नहीं होती। जैसी हानि प्रतिज्ञा मिथ्या करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नहीं। इससे जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसे ही पूरी करनी चाहिए अर्थात जैसे किसी ने किसी से कहा कि 'मैं तुम को वा तुम मुझसे अमुक समय में मिलूंगा वा मिलना अथवा अमुक वस्तु समयमें तुमको मैं दूंगा इसको वैसे ही पूरी करे नहीं तो उसकी प्रतीति कोई भी न करेगा। इसलिए सदा सत्यभाषण और सत्यप्रतिज्ञायुक्त सब को होना चाहिए। किसी को अभिमान करना योग्य नहीं, क्योंकि 'अभिमान: श्रियं हन्ति' यह विदुरनीति का वचन है। जो अभिमान अर्थात अहंकार है वह सब शोभा और लक्ष्मी का नाश कर देता हैं, इस वास्ते अभिमान करना न चाहिए। छल, कपट वा कृतघ्नता से अपना ही हृदय दुखित होता है तो दूसरे की क्या कथा कहनी चाहिए। छल और कपट उसको कहते हैं जो भीतर और बाहर और दूसरे को मोह में डाल और दूसरे की हानि पर ध्यान न देकर स्वप्रयोजन सिद्ध करना। 'कृतघ्नता' उसको कहते हैं कि किसी के लिए हुए उपकार को न मानना। क्रोधादि दोष और कटुवचन को छोड़ शांत और मधुर वचन ही बोले और बहुत बकवाद न करे। जितना बोलना चाहिए उससे न्यून व अधिक न बोले। बड़ों को मान्य दे उनके सामने उठकर जा के उच्चासन पर बैठावे, प्रथम 'नमस्ते' करे। उनके सामने उत्तमासन पर न बैठे। सभा में वैसे स्थान में बैठे जैसी अपनी योग्यता हो और दूसरा कोई न उठावे। विरोध किसी से न करे। सम्पन्न होकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग रखे। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग, अपने माता, पिता और आचार्य की तन, मन और धनादि उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करे।

यान्यस्माकम तानि त्वयोपास्यानि नो इतरणि।

इसका यह अभिप्राय है कि माता-पिता आचार्य अपने संतान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करे। और यह भी कहें कि जो-जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन-उन का ग्रहण करो और जो-जो दुष्ट कर्म हो उनका त्याग कर दिया करो। जो-जो सत्य जाने उन-उनका प्रकाश और प्रचार करे। किसी पाखण्डी दुष्टाचारी मनुष्य पर विश्वास न करे और जिस-जिस उत्तम कर्म के लिए माता, पिता और आचार्य आज्ञा देवे उस-उस का यथेष्ट पालन करो। जैसे माता, पिता ने धर्म, विद्या, अच्छे आचरण के श्लोक 'निघण्टु निरुक्त' 'अष्टाध्यायी' अथवा अन्य सूत्र वा वेदमन्त्र कण्ठस्थ कराए हों उन-उनका पुनः अर्थ विद्यार्थियो को विदित करावें। जैसे प्रथम समुल्लास में परमेश्वर का व्याख्यान किया है उसी प्रकार मान के उसकी उपासना करें। जिस प्रकार आरोग्य, विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार भोजन छादन और व्यवहार करें, करावें अर्थात जितनी क्षुधा हो उससे कुछ न्यून भोजन करें। मद्य मांसादि के सेवन से अलग रहें। अज्ञात गंभीर जल में प्रवेश न करे क्योंकि जलजन्तु वा किसी अन्य पदार्थ से दुख और जो तैरना न जाने तो डूब ही जा सकता है।

'नाविज्ञाते जलाशये' यह मनु का वचन।

अविज्ञात जलाशय में प्रविष्ट होके स्नानादि न करें।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

(सत्यार्थ प्रकाश से)

महर्षि दयानन्द

(पृष्ठ ७ का शेष)

फिरा कर इस प्रकार दुरुपयोग करना नितान्त अनुचित और पाप है। आधुनिक युग प्रवर्त्तक जगद् गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के उपरान्त हम घोर मूर्ति पूजक हिन्दुओं की अनेक बातों में से केवल दो बातें यहां उद्धृत कर देना ही पर्याप्त समझते हैं। एक तो काशी विश्वनाथ मन्दिर वाराणसी के द्वार पर लगी वह पाषण शिला है, जिसमें लिखा हुआ है "आर्येतरस्य प्रवेशो निषिद्धः" अर्थात् आर्यों के अतिरिक्त अन्य लोगों के लिये प्रवेश करने का निषेध है। इसके अतिरिक्त हिन्दू नामधारियों में वर्तमान काल में भी संस्कारों के अवसर पर पुरोहित लोग जिस सकल्प पाठ का उच्चारण करते हैं, उसमें भी "आर्यावर्त्तक देशान्तगते" का प्रयोग है। "हिन्दू वर्त्तक देशान्र्गते" अथवा "हिन्दुस्तानान्तर्गते" का नही, परन्तु इन सब प्रबल प्रमाणों के होते हुए भी कुछ लोग यदा-कदा इस प्रकार के अनर्गल विचार व्यक्त करने मे लगे रहते हैं। शोक, महाशोक।

हमारा इस विषय में कहना यह है कि जिसको अनर्गलता तथा इस प्रकार के निकृष्ट अर्थों के द्योतक नाम आदि का प्रचार करना है, वह करे किन्तु वेदादि सच्छास्त्रों तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम का प्रयोग कर विज्ञजन की दृष्टि में उपहासास्पद न बने और सर्वसाधारण को भ्रान्ति में डालने का पाप न करे।

इन उच्च अधिकारियो की ऐसी बातों से हमें बड़ा आश्चर्य होता है। यदि "स" को "ह" होता है तो सिन्धु नदी का नाम हिन्दू नदी और सिन्धु प्रान्त का नाम हिन्दू प्रान्त हो जाना चाहिये था। किन्तु प्रान्त और नदी—जिनके नाम में "स" है—अब तक भी ज्यो के त्यों हैं, उनमे कोई परिवर्तन नहीं हुआ। परिवर्तन हुआ आर्य में जब कि आर्य शब्द में "स" है ही नहीं। यदि भारतीय इतिहास को विकृत करने वाले विदेशी आक्रान्ताओं ने ऐसा किया तो बात समझ में आती है और उनसे पूर्व आने वाले आक्रान्ताओं ने हमें अपनी भाषा के निकृष्ट अर्थो के द्योतक शब्द से पुकारा तो उनका उद्देश्य मनोवैज्ञानिक रूप से हम लोगों में हीन भावना को उत्पन्न कर सदा-सर्वदा के लिये हमें पादाक्रान्त बनाये रखना ही था। परन्तु भारतीयता के समर्थक-पोषक प्रबुद्ध जन भी वेदादि सच्छास्त्रों और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम लेकर जब इस प्रकार के विचारों को अभिव्यक्ति तथा उनका प्रसारण करते हैं तो आश्चर्य के साथ-साथ खेद भी होना है। ●

महर्षि दयानन्द

(पृष्ठ ६ का शेष)

महर्षि दयानन्द ने केवल नकारात्मक खण्डन नही किया, उन्होने 'भागवत खण्डन' 'नारायण मत खण्डन' 'वेदान्त ध्वन्ति निवारण, 'काशी शास्त्रार्थ 'वेद विरुद्ध मत खण्डन' 'भ्रान्ति निवारण भ्रमोच्छेदन' मे जहा खण्डन किया वहा सत्यार्थप्रकाश मे मत-मतान्तरो का खण्डन करने के साथ अपने मत का प्रतिपादन भी किया। सामान्य गृहस्थ अध्यवसायों के लिए उन्होने संस्कृत वाक्य प्रबोध', 'वेदाम प्रकाश' 'गो करुणा निधि' की रचना की तो विद्वानो के लिये ऋग्वेद भाष्य, 'यजुर्वेद भाष्य' ऋगवेदादि भाष्य, तैयार किया, असामयिक निधन से उनके द्वारा भाष्य का काम अधूरा रह गया। अपने फैलाये आलोक को निरन्तर रूप देने के लिये महर्षि ने आर्य समाज, परोपकारिणी सभा की स्थापना करने के साथ वैदिक शिक्षाओ पर आधारित परन्तु आधुनिक दृष्टिकोण वाले बालक बालिकाओ के डी ए वी, कालेज तथा आर्य कन्या कालेज संस्थाओ की प्रेरणा भी दी।

महर्षि दयानन्द ने एकेश्वर वाद द्वारा पूरे समाज को एक सूत्र मे बाधने का प्रयत्न किया। 'सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास मे उन्होने व्याकरण नियमो, धातु सन्धि नियमो के आधार पर सफलतापूर्वक प्रतिपादित किया कि ईश्वर निर्गुण, अजन्मा अनादि निर्विकार सर्वान्तर्यामी हैं और पक्ष मे वेदो से सशक्त प्रमाण दिये। तथाकथित अनेक देवी देवताओ के नाम एक ही ईश्वर के विभिन्न सन्दर्भों मे अनेक गुणो का संकेत देते है जैसे विष्णु सहस्र नाम एक ही देवता के विभिन्न गुणोका बोध कराने वाले हैं। प्रभु के इसी रूप की अर्चना, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, धनुर्धर राम, कृष्ण करते रहे होंगे। वेद वाक्य ही प्राचीनतम होने के कारण प्रामाणिक है। परवर्ती ग्रन्थ व्यक्ति अथवा सम्प्रदाय विशेष को दृष्टि मे रखते हुए लिखे गये है। अतः अनुकरणीय नही है। महर्षि दयानन्द ने कहा था धूप, वृक्ष, प्रकृति की भाति ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान मानव मात्र के लिये है। किसी वर्ग अथवा जाति का इस पर एकाधिकार नही है, स्त्री पुरुष जो भी परिश्रम करके विधिपूर्वक अध्ययन करना चाहे अध्ययन करें। स्त्री को भी उपनयन धारण करने का अधिकार है।

समाजता के रूप मे दयानन्द ने बेमेल, अवयस्क विवाह का विरोध किया वहीं विधवा विवाह, स्त्रियो के पुनर्विवाह, नियोग का प्रतिपादन किया स्त्रियो द्वारा प्रारम्भ से लेकर उच्चतम शिक्षा प्राप्ति, उपनयन धारण करने दीक्षा लेने, विवाह मे कन्या की स्पष्ट स्वीकृति, निरुक्त के आधार पर पैतृक सम्पत्ति मे पुत्र-पुत्री के समान अधिकार और प्रतिष्ठा की अनिवार्यता को रेखांकित किया। वर्तमान सदर्भ मे महर्षि दयानन्द को भारतीय नारी मुक्ति आंदोलन का प्रवर्तक माना जा सकता है।

महर्षि दयानन्द का सबसे अधिक कटु विरोध उनके द्वारा मूर्ति पूजा खण्डन के कारण हुआ। इस खण्डन से धर्म के नाम पर मूर्ति पूजा मूर्ति विषयक, चमत्कार, मनघडन्त किंवदंतिया गढकर मूर्ति और मन्दिरो मे भेंट चढावे से लोगो को तथा कथित धार्मिक लोगो, मठाधीशों, महन्तो को क्षति पहुचने लगी थी। महर्षि दयानन्द ने कहा शास्त्रीय दृष्टि से परमात्मा निराकार और एक है। वेदो, उपनिषदो म वैदिक काल मे कही भी मूर्ति पूजा का विधान नही है। इस मत का शास्त्रार्थ मे कोई खण्डन नहीं कर सका।

महर्षि दयानन्द ने धर्म के सामाजिक पक्ष की ओर विशेष ध्यान दिया। यदि किसी ने अनजाने भूल अथवा जोर जबर्दस्ती से भी किसी अन्य धर्म वाले का छुआ जल लिया, भोजन, मिठाई अथवा पान खा लिया, देश के बाहर गया तो अज्ञानी कट्टरपंथी संकीर्ण पंडितो ने उन्हे सदैव के लिए हिन्दू धर्म से बहिष्कृत कर दिया फिर वह चाहे जितनी प्रार्थना करे, प्रायश्चित करे। उसके लिए हिन्दू धर्म के द्वार सदैव के लिए बन्द करा दिये गये। अन्य धर्म वालो को तो पहले से ही म्लेच्छ कहा जाता था।

इस क्रम में महर्षि दयानन्द ने प्रतिपादित किया कि यज्ञ अनुष्ठान स्वय करने से उसका जो भी फल हो, प्राप्त होता है पुरोहित की मध्यस्थता पर निर्भरता से वह फल नहीं प्राप्त होगा। इसलिए महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक आर्य द्वारा प्रतिदिन सन्ध्या, यज्ञ एव अनुष्ठान का उपदेश दिया परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये स्वय पढना आवश्यक है। अपनी ओर से किसी अन्य को पढाने से परीक्षा मे अंक नही मिलेंगे।

उनके हिन्दू धर्म मे आने का प्रश्न ही नही था। इस संकीर्णता, कट्टरवादिता से हिन्दुओ को अन्य धर्मों मे सदैव के लिए परिवर्तित कराने वालों को थोक भाव मे सामूहिक धर्म परिवर्तन कराने का सहज लाभ मिल गया।

महर्षि दयानन्द ने निर्भीकता से बारम्बार घोषणा की, वैदिक धर्म और वेदो का ज्ञान परमात्मा द्वारा प्रदत्त जल, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, सरिता, प्रकृति, फल, फूलो की भाति मानव मात्र के लिए हैं।

धर्म परिवर्तन को आज जो सहज सामाजिक मान्यता प्राप्त है उसका श्रेय महर्षि दयानन्द को न देना बहुत बडी कृतघ्नता होगी।

महर्षि को ओखीमठ की विशाल गद्दी का महन्त पद तथा राणा उदयपुर के लिंग महादेव के प्रमुख महन्त की गद्दी का प्रलोभन आकर्षित नही कर सका। उन्होने स्वय किसी गद्दी महन्त मठ की स्थापना नही की। आर्य समाज लाहौर के महा अधिवेशन मे महाशय शारदा प्रसाद ने स्वामी दयानन्द को आर्य समाज के संस्थापक की पदवी से विभूषित करके अभिनन्दन करने का प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से पारित भी हो गया। महर्षि दयानन्द ने इसे अस्वीकार करते हुए कहा, मैंने कोई नया पंथ चलाकर गुरु, गद्दी अथवा मठ नही बनाया है। मैं तो लोगों को मठ वादियो, गद्दीधारियो को मठ से स्वतन्त्र कराना चाहता हू ऐसी पदवियो-अभिनन्दन से हानियां अधिक होती हैं। आप सभी अपने द्वारा बनाये गये नियमों का सच्चाई, समर्पित भाव से पालन करते हुए समाज का कल्याण करे यही मेरा अभिनन्दन है।'

युगद्रष्टा : महर्षि दयानन्द

(पृष्ठ १ का शेष)

'He (Swamı Dayananda) was one of the most advcnt prophcts of ıc construction and of national Organıstıon"

अर्थात् वे पुनर्निर्माण और राष्ट्रीय संगठन के उत्साही अग्रगामियो मे से थे।

स्वामी दयानन्द जी ने सोते हुए भारतवासियो को जगाया। अन्धकार मे ठोकरें खाते हुओ को मार्ग दिखाया। अज्ञान को दूर करके ज्ञान की ज्योति को जगाया। इस प्रकार वे सच्चे मार्गदर्शक थे।

महर्षि दयानन्द का नाम नवीन भारत के निर्माताओ मे सदा आदर के साथ लिया जायेगा। उन्होने केवल धार्मिक और सामाजिक जागृति ही जनता मे उत्पन्न नही की बल्कि स्वराज्य का महत्त्व भी अपने देशवासियो के सम्मुख स्पष्ट शब्दो मे रखते हुए मर्म वेदना के साथ अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि—

'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशो के राज्य करने की तो कथा ही क्या करनी, किन्तु आर्यावर्त मे भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नही है। जो कुछ भी है सो भी विदेशियो से पादाक्रांत हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियो को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पडता है। कोई कितना भी करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।" अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित माता-पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा पृथक-पृथक शिक्षा अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। (सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज बकेवर इटावा का वार्षिकोत्सव २० से २२ दिसम्बर तक धूमधाम के साथ मनाया गया। उक्त समारोह मे आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानो तथा धर्मोपदेशको ने पधार कर जनता जनार्दन को उपदेशामृत का पान कराया उत्सव अत्यन्त सफल रहा।

—आर्य समाज कायम गंज का ११३ वां वार्षिकोत्सव दि० २२ से २५ दिसम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह मे आर्य जगत के ख्याति प्राप्त महात्मा महोपदेशको तथा भजनोपदेशको ने भाग लिया। श्रोताओ ने उक्त विद्वानो के सारगर्भित भाषणो को सुनकर उनकी विद्वता को सराहा। उत्सव मे बाहर से आये अतिथियों के लिए लंगर की भी व्यवस्था की गई थी।

—आर्य समाज कबारी हिसार का वार्षिकोत्सव ३ से ५ जनवरी ९२ तक कार्यक्रमानुसार मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको ने अपने विद्वता पूर्ण प्रवचनो से श्रोताओ को मुग्ध कर दिया। उत्सव मे प० चिरंजीलाल जी तथा प० चन्द्रभान जी का अभिनन्दन भी किया गया।

—आर्य समाज चौक पाटयाला का वार्षिक उत्सव १८ से २४ नवम्बर ९१ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। उत्सव मे नित्य प्रात ७ से ९ बजे तक गायत्री महायज्ञ तथा साय ७ बजे से ८ बजे तक भजन तथा वेदोपदेश का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो ने भाग लिया।

—मकर सौर संक्रांति के पर्व पर गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी का वार्षिकोत्सव १३ तथा १४ जनवरी १९९२ को समारोह पूर्वक मनाया गया। १३ जनवरी को प्रात वैदिक अर्थ व्यवस्था वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे विषय पर शोध गोष्ठी का आयोजन किया गया। १४ जनवरी को नव-प्रविष्ट ब्रह्मचारियो का उपनयन संस्कार तथा शक्ति प्रदर्शन के कार्यक्रम हुए। उत्सव मे अनेको ख्याति प्राप्त विद्वानों तथा उपदेशको के प्रवचन हुए।

प्रथम पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि

रविवार, दि० १९ जनवरी १९९२ को आर्यसमाज डब्ल्यू ब्लाक डब्ल्यू, उप-समिति दिल्ली द्वारा उक्त समाज के कर्मठ कार्यकर्ता दानवीर स्व० श्री मोहन लाल जी की प्रथम पुण्य तिथि श्री खेमसिंह जी रावत की अध्यक्षता मे श्री धर्मसिंह जी के निवास स्थान डब्ल्यू पी ६९ ए, मौर्य इन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली मे मनाई गयी जिसमे विभिन्न समाजो के कर्मठ कार्यकर्ता उपस्थित थे। सर्वप्रथम वैदिक यज्ञ किया गया तत्पश्चात स्व० श्री मोहनलाल जी को श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की गयी। प्रवक्ताओ मे सर्वश्री रावत जी, भास्कर जी व धर्मसिंह जी प्रमुख थे। आर्य समाज के प्रति उनकी बड़ी जागरुकता थी उनकी तप त्याग की बलवती भावना तथा सामाजिक चेतना की एक जाग्रत मिसाल के प्रति उन्हें याद किया गया।

महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थी का देहावसान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरि० के वरिष्ठ उपप्रधान, दयानन्द मठ रोहतक के मन्त्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के भू० पू० मन्त्री श्री महाशय भरत सिंह जी का १६ जनवरी १९९२ को ८१ वर्ष की आयु मे आकस्मिक निधन से समस्त आर्य जनता को बड़ा कष्ट हुआ है। श्री महाशय जी आजीवन आर्य समाज की सेवा मे समर्पित रहे। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन से लेकर आर्य समाज द्वारा चलाये गये सभी आन्दोलनो मे बढ़ चढ़ कर भाग ही नहीं लिया अपितु सूत्रधार भी रहे। वहा आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे आपका बहुत बड़ा योगदान रहा, वहां अन्य सामाजिक कार्यों मे भी सदैव तत्पर रहे। आप जैसे जुझारू, कर्मठ त्यागी तपस्वी के निधन से आर्य समाज एवं सामाजिक संस्थाओ की बड़ी क्षति हुई है। आपका अनेक शिक्षण संस्थाओं से भी गहरा सम्बन्ध रहा है।

वेदों वाले ऋषि

अग्नी है ! ज्वालामुखी !! या चुम्बक, ध्रुवतारा !
वेदो वाले ऋषि, हैं क्या ? "सत्यार्थ प्रकाश 'तुम्हारा ??

चौदह रत्न मिले है, जब जब
होता रहा उदधि-मथन,
सु-मेरु मथनी, शेष की रस्सी
नीलकण्ठ सम आलोडक।

देवो को शान्ति, दानव को क्लान्ति और फुंफकारा।:
वेदो वाले ऋषि, हैं क्या ? "सत्यार्थ प्रकाश" तुम्हारा ??

मत-मतान्तरो का कूड़ा-कर्कट
बाहर धकेलता झोके मे,
अन्ध-विश्वास, पाखण्ड, तिमिर को
भस्मी भूत कर फेंके जो।

अन्धो को लाठी दे दी या बहरो को टकारा।।
वेदो वाले ऋषि, है क्या ? 'सत्यार्थ प्रकाश" तुम्हारा ??

वनस्पति-चन्दन, बूटी मे केसर
और गुलाब एक फूलों में,
अनुपम होता तुच्छ सीप में
मोती चमचम लाखो मे।

संस्कृत-संस्कृति कानन रोपा या सहेज संवारा।।
वेदों वाले ऋषि, है क्या ? 'सत्यार्थ प्रकाश" तुम्हारा ??

बांह पकड़ कर हमे उठा
कैसा उपकार किया है,
भटकते- गोते खाते को
जीवन दान दिया है।

कम होगा यदि लूते अतकर भिस कामें धतद्वारा।।
वेदो वाले ऋषि, है क्या ? 'सत्यार्थ प्रकाश" तुम्हारा ??

—सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मधुप'
प्रेम नगर, नेमदारगंज
नवादा, बिहार-८०५१२१

अरुणोदय बाल संस्था

गत २ फरवरी ६२ के अंक में अन्तिम पृष्ठ पर अरुणोदय बाल संस्था का समाचार प्रकाशित हुआ था। उस समाचार में सञ्चालिका श्रीमती उज्ज्वला वर्मा का पता अधूरा छपा है कृपया उनका पूर्णपता निम्न प्रकार पढ़ें।

—श्रीमती उज्ज्वला वर्मा,
बी--बी ब्लाक, २६ एफ जनकपुरी
(मीरा माडल स्कूल के पास) नई दिल्ली-५८
फोन--५५०१८१७ या ५५६४३६५

शोक समाचार

आर्य समाज के प्रखर विद्वान, महान समाजसेवी श्री रामलाल शास्त्री का शनिवार २५-१-६२ को दिल्ली में निधन हो गया है। दि० २८-१-६२ को उनकी स्मृति में आयोजित शोक सभा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—शास्त्री जी आर्य समाज के अनन्य भक्त थे, उनका एक एक क्षण आर्य समाज के लिये अर्पित था। उन्होने कहा जब देश में एमरजेन्सी लगी हुई थी, उनके क्षेत्र में पुलिस कई नव जवानों को गिरफ्तार कर रही थी और जमुनापार के १३ अध्यापकों को नौकरी से हटा दिया गया था। शास्त्री जी उन लोगो की सहायता करने के लिये मेरे पास आये थे, उनकी जागरुकता से मैंने सरकार से सम्पर्क करके यथासम्भव उन लोगों की सहायता की थी। शास्त्री जी के निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। शोक सभा में श्री विशम्भर नाथ बाटिया, डा० धर्मपाल, डा० शिवकुमार शास्त्री के अतिरिक्त अनेक लोग उपस्थित थे। आर्य जनों ने उन्हें अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित की।

ऋषि-बोधोत्सव

२ मार्च ६२, सोमवार
मावलंकर हाल, रफीमार्ग, नई दिल्ली
प्रात: ८ से सायं ४ बजे तक

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का बोधदिवस महाशिवरात्रि के पावनपर्व पर दिल्ली के समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान में सोमवार २ मार्च ६२ को प्रात: ८ से सायं ४ बजे तक मावलंकर हाल में ऋषि मेला के रूप में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस शुभावसर पर आप सब सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य
१५ हनुमानरोड, नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष : ३१०१५०, ३१११२८०

श्री प्रेमनाथ चड्ढा दिवंगत

पुरानी पीढी के आर्यसमाज के सेवक प्रसिद्ध अधिवक्ता श्री प्रेमनाथ जी चड्ढा का ८८ वर्ष की अवस्था में ५ फरवरी को देहावसान हो गया और उनका पूर्ण वैदिक रीति से संस्कार सम्पन्न हुआ। आप अधिवक्ता के साथ एक अच्छे लेखक और साहित्यकार भी थे। ८८ वर्ष की अवस्था मे भी वैदिक सिद्धांत प्रकाश नाम की पुस्तक लिखी जो कि सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित की जा रही है। उनके देहावसान का समाचार सुनते हुए दिवंगत आत्मा के लिए सदगति की प्रार्थना की गई। वे एक मिलनसार और सच्चे समाज सेवी थे उनके निधन से आर्यसमाज का एक सच्चा सेवक आर्य जगत से उठ गया। उनकी मृत्यु से परिवार ही नहीं समस्त आर्यजगत ने दु:ख अनुभव किया उनके परिवार के दु:ख में हम सभी भागीदार हैं।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर विशेष छूट का लाभ उठायें

आर्यसमाजों की लाईब्रेरी व स्कूल कालिज की लाईब्रेरी के लिए निम्न पुस्तकें सभा से आधे मूल्य में खरीदें

	रुपए- पैसे	आधे मूल्य में
सत्यार्थ प्रकाश शिक्षायें	१०)००	५)००
संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश	५०)००	२५)००
दयानन्द दिव्य दर्शन	५०)००	२५)००
जन्मगत जातपात वेद विरुद्ध मतखण्डन	३)५०	१)७५
स्वामी ब्रह्म मुनी जीवन चरित्र	२)००	१)००
सत्यार्थ प्रकाश दो समुल्लास	१)५०	०)७५
अथर्वोर वेद यज्ञ	६)००	३)००
सिक्खों का तुष्टीकरण	२)००	१)००
बन्दा वीर बैरागी	८)००	४)००
आर्य निर्देशिका भाग--१	१२)००	६)००
,, ,, भाग--२	३)००	१)५०
वेदार्थ कल्पद्रुम	६०)००	३०)००
वेद निबन्ध स्मारिका	३०)००	१५)००
वैदिक कोष संग्रह	१५)००	७)५०
वैदिक धर्म की रूप रेखा	६)००	३)००
Storm in Punjab	८०)००	४०)००
दिल्ली स्मारिका १६६०	१०)००	५)००
Bankim Tilk Dayanand	४)००	२)००
योग—	३५२)५०	१७६)२५

नोट—पूरा सैट मंगाने पर ही छूट उपलब्ध होगी तथा डाक व्यय हेतु २५) रुपये आर्डर देते समय अवश्य भेजें।

प्राप्ति स्थान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन ३/५, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४९/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१६-२-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसंस U नं० ९३
R.N. 625/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 93 Post in N.D.P.S.O.on 15-2-1992

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर का ११२ वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि महापर्व के अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी २८ व २९ फरवरी व १ व २ मार्च १९९२ तक श्रद्धानन्द पार्क तथा आर्य समाज भवन में मनाया जाना निश्चित हुआ है। नगर कीर्तन-शुक्रवार, २८ फरवरी को सायंकाल ४ बजे से प्रारम्भ होगा। महोत्सव २९ फरवरी तथा १-२ मार्च को, विस्तृत कार्यक्रम बाद में प्रकाशित किया जायेगा।

—डा० विजयपाल शास्त्री, मन्त्री

—आर्य समाज सरदारपुरा का ४६ वां वार्षिकोत्सव २९ फरवरी से ४ मार्च ९२ तक गांधी मैदान (दयानन्द नगर) विशाल स्तर पर मनाया जा रहा है। इस अवसर पर गणमान्य विद्वानों और भजनोपदेशकों के व्याख्यान भजनों के अतिरिक्त विशाल नगर कीर्तन, पुस्तक प्रदर्शनी तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

उत्सव में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, पर्यावरण सम्मेलन, ऋषिलंगर आदि का आयोजन किया जायेगा। उत्सव के सफल आयोजन हेतु जोधपुर सम्भाग के आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की बैठक में कार्यक्रम के भावी प्रारूप की रूपरेखा तैयार की जायेगी।

—सुखदेव मोदक, मन्त्री

—आर्यसमाज नगला जाट पत्रालय जाखुमई जनपद फिरोजाबाद का वार्षिकोत्सव महर्षि दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि) के शुभावसर पर दिनांक १ से २ मार्च १९९२ फाल्गुन बदि १२, १३ को आर्य जगत के सुविख्यात भजनोपदेशकों, विद्वानों एवं प्रतिष्ठित आर्य महानुभावों की उपस्थिति में बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। —धनपाल सिंह, मन्त्री

—आर्य समाज बीकानेर का ४१वां वार्षिकोत्सव २९ फरवरी से १ मार्च १९९२ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है जिसमें प्रतिदिन यज्ञोपदेश निबन्ध प्रतियोगिता, खेलकूद, भजनोपदेश व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

—महर्षि दयानन्दार्य गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) के विशाल प्रांगण में २६ फरवरी से ६ मार्च ९२ तक योग साधना शिविर सामवेद पारायण यज्ञ एवं विराट ऋषि मेले का २३वें वार्षिक महोत्सव के शुभ अवसर पर बड़े ही हर्षोल्लास के साथ समायोजन किया जाएगा। जिसमें आप इष्टमित्रों एवं परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं। कृपया यथासमय अवश्य पधारकर कृतार्थ करेंगे।

—पं० मनुदेव आर्य

—आर्य समाज, तोशाम का वार्षिकोत्सव दिनांक १७,१८,१९ फरवरी १९९२ को होना निश्चित हुआ है। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० धर्मपाल शास्त्री मेरठ, प० ज्ञानेश्वर भारती जी, परिव्राजक जमनानगर एवं आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क एवं श्री नरेश-सिंह आर्यवीर जी आदि महानुभाव पधार रहे हैं।

—मन्त्री, आर्य समाज

शोक समाचार

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के महामन्त्री श्री राजसिंह जी आर्य के पिता श्री रनजीतसिंह जी का रोहतक मे ११-२-९२ को अकस्मात निधन हो गया है। वह ७० वर्ष की आयु के थे।

इस शोक के अवसर पर सार्वदेशिक परिवार और आर्य वीरदल परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

टंकारा में भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा (सौराष्ट्र) गुजरात में हर वर्ष की भांति भी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के तत्वावधान में शिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित ऋषि बोधोत्सव १, २, ३ मार्च, ९२ को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस समारोह में शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जायेंगे।

इस अवसर पर देश-देशान्तर से पधारे हुए ऋषि भक्त एवं आर्यविद्वान् स्वामी दयानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। टंकारा में पधारे हुए आर्य जनों के भोजन एव आवास का प्रबन्ध ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क होगा। कृपया ऋतु के अनुसार बिस्तर एव वस्त्रों की व्यवस्था करें।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

आर्यसमाज मन्दिर अल्मोड़ा का जीर्णोद्धार-शिलान्यास

सोमवार दिनांक १३-१-९२ को आर्यसमाज मन्दिर, अल्मोड़ा में श्री कमलनाथ जी, केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन राज्य मन्त्री द्वारा जीर्णोद्धार-शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज अल्मोड़ा ने उनके सम्मान में एक अभिनन्दनपत्र तथा वैदिकसाहित्य भेंट किया। श्री कमलनाथ जी ने अपने सम्बोधन भाषण में आश्वासन दिया कि आर्यसमाज मन्दिर अल्मोड़ा के जीर्णोद्धार पर जो कुछ भी व्यय आयेगा, वे उसकी पूर्ति करने का यत्न करेंगे।

१३ जनवरी को श्री कमलनाथ जी ने गो० व० पन्त पर्यावरण संस्थान, कटारमल, अल्मोड़ा के भवनों का शिलान्यास किया, तदनन्तर आर्य समाज, अल्मोड़ा में भी उनका स्वागत किया गया।

मन्त्री, आर्यसमाज, अल्मोड़ा (उ० प्र०)

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

महाराजपुर। आर्यसमाज महाराजपुर छतरपुर के द्वारा विश्वकल्याण हेतु यजुर्वेद पारायण यज्ञ का दिनांक १७-१-९२ दिन शुक्रवार से पूज्य स्वामी सत्यानन्द सरस्वती वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार के पौरोहित्य में शुभारम्भ किया गया। यज्ञ प्रातः ७-३० बजे प्रारम्भ हुआ वेद वाणी का सस्वर पाठ गुरुकुल आश्रम यमुना नगर से पधारे ब्रह्मचारी श्री ब्रह्मदेव जी एवं अशोक जी द्वारा निरन्तर किया गया! पूज्य स्वामी जी की अमृतमयी वाणी में प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर मातृभाषा हिन्दी में मानव मात्र के कल्याण हेतु सरल, तथा सुगम्य भाषा में उद्बोधन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री जयनारायण आर्य, उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० के द्वारा किया गया।

दीनदयाल आर्य
आर्य समाज महाराजपुर (छतरपुर) म० प्र०

आधुनिक भीम द्वारा शक्ति प्रदर्शन

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं महर्षि दयानन्द की पवित्र स्मृति में आर्य समाज मन्दिर अशोक नगर में दिनांक १२-१-९२ को आधुनिक भीम द्वारा शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम में लोहे की जंजीर तोड़ना पाटी के टुकड़े टुकड़े करना सीने पर पत्थर की शिला तुड़वाना तथा कार रोकना जैसे आश्चर्य चकित कर देने वाले करतब आधुनिक भीम द्वारा दिखाए गये : कार्यक्रम को हजारों व्यक्तियों ने देखकर भीम के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया। —मंगत राम आर्य, प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं डा० स॰ ... शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- कभी वह भी काल था जब भारत वर्ष सुवर्णमय बन रहा था। यहां खाद्य पदार्थों की इतनी अधिकता थी कि भूखा अनाथ देखने को नहीं मिलता था।
- हमने लोगो के कठोर हृदयो को कोमल बनाना है। दूर भागतो को आकर्षित करना है। यदि वे अत्याचार भी करें तो अपने उदात्त उद्देश्य को दृष्टि में रखकर हमे तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा अभद्र है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक ४] दयानन्दाब्द १६७ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२ फाल्गुन कृ० ६ स० २०४८ २३ फरवरी १९९२

अ०भा० संस्कृत वाक् प्रतिस्पर्धा का आयोजन

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार में

भारतसरकार के मानवसंसाधन विकास मंत्रालय के तत्वावधान में २० से २२ फरवरी९२ तक

आर्य जगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उत्तर भारत के प्रसिद्ध शिक्षा सस्थान गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार मे भारत सरकार के मानव ससाधन विकास मन्त्रालय के शिक्षा विभाग के तत्वावधान मे अखिल भारतीय सस्कृत वाक् प्रतिस्पर्धा का आयोजन हो रहा है। जिसका सम्पूर्ण व्यय भारत सरकार के शिक्षा विभाग के मानव ससाधन मन्त्रालय द्वारा होगा।

उद्घाटन समारोह—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान,श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे प्रारम्भ होगा। जो कि आर्यों के लिये उद्बोधक व प्रेरणा दायक होगा।

उद्घाटन भाषण—

भारत सरकार के सयुक्त सचिव श्री प्रियदर्शी ठाकुर द्वारा उद्घाटन के रूप मे हमे सस्कृत शिक्षा और सस्कृत के महत्त्व पर प्रेरणादायक विचार प्राप्त होंगे।

विशेष आकर्षण—

सम्पूर्ण भारतवर्ष के ३५ विश्वविद्यालयो से सस्कृत के छात्र एव प्रोफेसर इसमे भाग लेगे। यह कार्यक्रम २० से २२ फरवरी ९२ तक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रागण मे सस्कृत प्रतियोगियो द्वारा वातावरण को प्राचीन शिक्षा प्रणाली एव सस्कृत के गौरव को बढाने वाला होगा।

मुख्य अतिथि—

डा० रामकरण शर्मा कुलाधिपति महाविद्यालय ज्वालापुर तथा डा० सत्यव्रत शास्त्री कुलपतिचर जगन्नाथ सस्कृत विश्वविद्यालय व डा० सुभाषजी विद्यालकार उपकुलपति गुरुकुल कागडी वि०वि०

पुरस्कार वितरण समारोह—

दिनाक २२-२-९२ को पुरस्कार वितरण समारोह के मान्य अतिथि श्री श्यामसुन्दरदास शास्त्री महामण्डलेश्वर गरीबदासी आश्रम, हरिद्वार। श्री केशवानन्द ऋषि सस्थापक निर्धन निकेतनाश्रम तथा श्री उमाकान्त महोदय जिलाधिकारी हरिद्वार रहेगे।

पुरस्कार वितरण—

भारत सरकार के उपशिक्षा सलाहकार—श्री एस०आर० सिंह द्वारा पुरस्कार वितरण किया जायेगा।

स्वागताध्यक्ष—

इस आयोजन मे आगन्तुक विशिष्ट मान्य अतिथियों का स्वागत डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सार्वदेशिक सभा के मन्त्री द्वारा किया जायेगा।

स्थानीय समायोजक
डा० हरिगोपाल शास्त्री
प्राचार्य

निवेदक
डा० रामकृष्ण शर्मा
सहायक शिक्षा परामर्शक
मानव ससाधन विकास मन्त्रालय
भारत सरकार

ऋषि बोध उत्सव श्रद्धा से मनायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश विदेश की समस्त आर्य समाजो से तथा आर्य सस्थाओ से अपील की है कि २ मार्च १९९२ (सोमवार) को पुण्य स्मरणीय बोध दिवस मना कर स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रदत्त वैदिक ज्ञान ज्योति को प्रकाशित करे। इस दिन समस्त आर्य जनता यज्ञ सत्सग तथा गोष्ठियो का आयोजन कर अन्य गैर आर्य समाजी जनता को भी वैदिक सिद्धान्तो का बोध कराय और उन्हे सत्य मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करें।

आर्यसमाज सीतापुर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सीतापुर का वार्षिकोत्सव दिनाक १४,१५,१६ फरवरी ९२ को बडी ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती भी मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे। रेलवे स्टेशन पर बडी सख्या में

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

समस्त देशमें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव ससमारोह सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस १२ फरवरी को समस्त विश्व मे श्रद्धापूर्वक मनाया गया। देश तथा विदेश से महर्षि दयानन्द का जन्मोत्सव मनाए जाने के समाचार भारी मात्रा मे प्राप्त हो रहे हैं अत इनका संक्षिप्त विवरण प्रकाशित किया जा रहा है।

आन्ध्र प्रदेश—आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के महामन्त्री महाशय के० नरसिंह रेड्डी ने सूचना दी है कि आन्ध्रप्रदेश के कई विद्यालयों और अन्य सामाजिक संस्थाओ द्वारा भी स्वामी दयानन्द सरस्वती का १६८ वां जन्म दिवस १२ फरवरी को धूमधाम से मनाया गया। हैदराबाद के ही लगभग १५ स्थानीय विद्यालयो मे स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस पर कई श्रृंगार व कार्यक्रम आयोजित किये गए। आर्य सारस्वत परिषद हाल मे यज्ञ आदि के पश्चात बहुत बडी सभा हुई जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कान्तिकुमार कोरटकर ने की। इस कार्यक्रम मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् के अतिरिक्त प्रदेश केकई अन्य नेताओ नेभी अपने विचार रखते हुए महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की। दूरदर्शन पर इस समारोह के अतिरिक्त विद्यालयो के कार्यक्रमो को भी प्रसारित किया गया। हैदराबाद दूरदर्शन केन्द्र के द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती का संक्षिप्त जीवनवृत सचित्र प्रसारित किया गया। तेलगू हिन्दी और अग्रेजी के लगभग सभी समाचार पत्रो मे महर्षि दयानन्द सरस्वती पर लेख भी प्रकाशित किये गये।

—आर्य समाज इन्दूर महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६८वा जन्म-दिवस समारोह १२ फरवरी १९९२ को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ, भजन तथा शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। प० विश्वमित्र जी ने अपनी ओजस्वी वाणी मे महर्षि के कार्यों का परिचय दिया।

—आर्य समाज शिवाजी कालोनी रोहतक—में महर्षि का जन्म दिवस समारोह १२ फरवरी को श्रद्धापूर्वक मनाया गया। समारोह मे वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया तथा श्री चन्द्रपाल जी ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला तथा प० जयपाल की भजन मण्डली ने महर्षि का गुणगान किया।

—महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक—मे दिनांक १२ फरवरी को विश्वविद्यालय की भव्य यज्ञशाला मे यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञोपरात विश्वविद्यालय के प्रति उपकुलपति डा० सर्वानन्द आर्य, श्री गजराज सिंह, श्री ईश्वरसिंह आदि ने महर्षि के कार्यों का विस्तृत विवेचन किया। मुख्य अतिथि श्री आचार्य सुदर्शनदेव जी ने महर्षि के सिद्धांतो तथा उनके जीवन की घटनाओ पर प्रकाश डाला।

—आर्य समाज शाहपुरा—में महर्षि का जन्मोत्सव १२ फरवरी को उल्लास पूर्ण वातावरण में मनाया गया जिसमे दयानन्द पाठशाला के छात्र छात्राओ ने भजन भाषण तथा हनुमान प्रसाद जी पारिक तथा हनुमान सिंह जी परिहार के द्वारा महर्षि के गुणो का बखान किया गया।

आर्यसमाज सीतापुर का वार्षिक उत्सव

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य समाज के कार्यकर्ता पुष्प मालाओं के साथ स्वामी जी के स्वागत हेतु पहुंचे। सभा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री भी साथ मे थे।

सभा प्रधान ने विशाल सभा को सम्बोधित करते हुये आर्य समाज के लोगो को वर्तमान परिस्थितियो से अवगत कराया और श्रोताओ ने प्रधान जी के भाषण से उत्साह और प्रेरणा प्राप्त की। इस अवसर पर ओंकार मिश्र, प्रणव शास्त्री, श्री जीवानन्द जी, श्री महेशचन्द जी भजनोपदेशक तथा श्री कक्कड़ की मण्डली ने भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। उत्सव अत्यन्त सफल रहा।

—आर्य समाज मैनपुरी—स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर मे माता कीर्तिदेवी जी की अध्यक्षता मे नव जागरण के पुरोधा, समग्र क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह १२ फरवरी को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर अनेको गणमान्य व्यक्तियों द्वारा महर्षि के कृतित्व तथा व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया।

—आर्य समाज इन्दौर बुलन्दशहर—मे महर्षि का जन्मोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन तथा अनेकों प्रबुद्ध व्यक्तियो द्वारा महर्षि की जीवन गाथा का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया तथा ग्रामवासियो ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

—आर्यसमाज विभव नगर आगरा—दिनांक १२-२-९२ को आर्यसमाज विभवनगर मे श्री इन्द्रमोहन मेहता की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अनेको वक्ताओ ने महर्षि के जीवन से सम्बन्धित घटनाओ पर प्रकाश डाला कार्यक्रम के संचालक श्री शान्तिप्रकाश आर्य ने महर्षि के उच्च आदर्शों एव वैदिक मान्यताओ की ओर ध्यान दिलाया।

विदेश समाचार

आर्य समाज लण्डन की दिसम्बर मास की गतिविधियां

साप्ताहिक सत्सगो का आयोजन नियमित रूप से किया गया। श्रीमती तथा असीम श्री एव श्रीमती प्रेम चड्ढा डा० एव श्रीमती सतीश सूद आदि परिवार यज्ञ मे यजमान बनें। प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज श्रीमती छाबड़ा सावित्री श्रीमती शकुन्तला कोछर और डा० तानाजी आचार्य ने यज्ञ को सम्पन्न कराया। सत्सग प्रेमी आर्य जनो से वन्देमातरम भवन, खचाखच भरा हुआ था।

सन्ध्या यज्ञ के पश्चात वेदसुधा' मे प्रो० एम एन भारद्वाज, श्रीमती वेदवती शर्मा एव डा० तानाजी आचार्य ने वेदमन्त्रो की रोचक व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट किया कि आज के आधुनिक युग मे वेदो की उपयोगिता पहले से कई गुणा अधिक प्रतीत होती है। वर्तमान समाज की शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक समस्याओ का एकमेव समाधान इन्हीं वेदो के उपदेशो पर प्रामाणिकता एव निष्ठापूर्वक चलने से ही है। वेदो के उपदेश तथा आदेश काल, स्थान और व्यक्ति की सीमा से परे, सब मानवमात्र के लिए सदैव समान रूप से अनुकरणीय है।

भक्ति संगीत के कार्यक्रम मे श्रीमती चोपड़ा, सन्तोष आशानन्द, तथा असीम, पुष्पा मलहोत्रा, श्री शशी सोहनदेव, सुखदेव (तबले पर) एव डा० तानाजी आचार्य ने अपने सुमधुर भजनो से श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध किया। श्री यशपाल गुप्ता तथा श्री जे एम. कपिला का प्रासगिक कविता वाचन हुआ।

भारतीय इतिहास के अनुसंधाता श्री वासुदेव शकर गोडबोले (अभियन्ता) का व्याख्यान हुआ, जिसमे उन्होंने सप्रमाण यह बताया कि किस प्रकार मुस्लिम, अग्रेज तथा उनके अन्धानुयायी पश्चाद्वर्ती भारतीय इतिहासकार और लेखको ने तत्कालीन भारतीय इतिहास मे पक्षपात तथा सत्य प्रमाणों की उपेक्षा की है और की जा रही है। प्रो० भारद्वाज ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे इस अनुसन्धानात्मक वक्तव्य की पुष्टि की।

१४ दिसम्बर को युवक और युवतियो सहित पारिवारिक सम्मेलन हुआ जिसमें भारतीय संगीत, नाचना, मिठा और डिस्को आदि का भी समावेश था। अत्यन्त विषम मौसम के होते भी उपस्थिति आशातीत थी। इस संगीत सन्ध्या को सफल बनाने मे श्री राजेन्द्र ओबराय और अचला कोछर ने विशेष परिश्रम किए। श्रीमती शकुन्तला कोछर, नीरज नड्डा, चन्द्रकान्त मलहोत्रा, श्री डी. पी. असीम ने विशेष सहयोग दिया।

दिसम्बर मास के युवक सास्कृतिक कार्यक्रम में अमर हुतात्मा स्वामी

(शेष पृष्ठ १२ पर)

स्वामी दयानन्द सरस्वती को मैं "सत्य का शोधक" तथा "सत्य का साधक" मानता हूं—डा० शंकरदयाल शर्मा

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का एक महत्वपूर्ण कार्य मैं यह मानता हूं कि उन्होंने वेद को सर्वोच्च सत्य घोषित करके हमारे देश के लोगों में स्वाभिमान और आत्म-विश्वास का भाव भरा। अंग्रेजों के प्रचार-प्रसार और व्यवहार के कारण भारतीयों के मन में धीरे-धीरे जो हीन भावना घर करती जा रही थी, उसे दयानन्द सरस्वती जी ने दूर किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस के अवसर पर आयोजित इस समारोह में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। स्वामी दयानन्द जी के विचारो से मैं शुरू से ही बहुत प्रभावित रहा हूं। आर्य समाज शताब्दी वर्ष सन् १९७५ मे जब मैं संचार मन्त्री था, तब मैंने विशेष डाक टिकट प्रकाशित कराया था। आजादी की लड़ाई के दौरान तथा उसके बाद भी आर्य समाज के माध्यम से मैं निरन्तर स्वामी जी के विचारो के सम्पर्क मे रहा हूं। आज स्वामी जी के इस समारोह में मुझे आमन्त्रित करने के लिए मैं आयोजकों का आभारी हूं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को मैं हमारे प्राचीन चिंतन तथा आधुनिक चिंतन के बीच की एक महत्वपूर्ण तथा बहुत मजबूत कड़ी मानता हूं। दयानन्द सरस्वती जी के विचारो को पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगता है मानो कि उन्होंने हमारे वैदिक चिंतन के शाश्वत मूल्यो को जीवन के सदर्भो मे प्रस्तुत किया। वैदिक युग का जो चिंतन बाद मे धूमिल पड़ने लगा था, उस पर आडम्बरों की जो परतें जमने लगी थी, सन्त कवियों और चिंतकों ने उसे साफ-सुथरा बनाने की कोशिश की और धर्म को समाज के आचार-विचार से जोड़ा। इसी परंपरा को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आगे बढ़ाया। उनके प्रतिभाशाली स्पर्श से वैदिक सत्य लोगो के सामने स्पष्ट रूप में प्रकट हुआ, जिससे सामाजिक संस्कार के नये और सही रास्ते खुले। इसलिए स्वामी दयानंद सरस्वती को मै 'सत्य का शोधक' और 'सत्य का साधक' दोनो मानता हू। उन्होने खोये हुए सत्य की खोज की तथा उस पाये हुए सत्य के अनुकूल जीवन जीकर भारत के ही नही बल्कि विश्व के सामने वैदिक जीवन का सच्चा आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की भूमिका में स्पष्ट रूप से लिखा है कि "मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात जो सत्य है, उसको सत्य, और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना सत्य अर्थ समझा है।…जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।" दयानन्द सरस्वती जी के सत्य की इसी खोज को उनके कुछ वर्षों बाद बीसवीं शताब्दी में बापू ने आगे बढ़ाया और उन्होने अपने सम्पूर्ण जीवन को ही 'सत्य का अनुभव' घोषित किया।

इसी सन्दर्भ में मै यहां एक बात विशेष रूप से कहना चाहूंगा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का यह सत्य न तो शुद्धत: दार्शनिक था, और न ही शुद्धत: आध्यात्मिक। बल्कि वह व्यावहारिक भी था। इस बात के स्पष्ट प्रमाण हमारे पास हैं। आप में से जिन लोगो ने 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ा होगा, वे स्वामी जी की लेखन शैली से अच्छी तरह परिचित हो होंगे। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' में अपनी बातें सामान्य लोगो के समझ में आने की शैली में लिखी हैं। इसी दृष्टि से उन्होने प्रश्नोत्तर शैली का सहारा लिया है। जहां प्रश्नोत्तर शैली नहीं है, वहां उन्होंने सूत्रो की बड़ी गहराई से किन्तु बड़े सरल और सहज ढंग से व्याख्या की है। गुजराती भाषी होने के बावजूद उन्होंने हिन्दी भाषा को चुना, ताकि इस ग्रन्थ को ज्यादा से ज्यादा लोग पढ़ और समझ सकें। उनके इस दार्शनिक ग्रन्थ की व्यावहारिकता के प्रमाणके लिए मैं सत्यार्थप्रकाश की भूमिका का एक वाक्य उद्धृत कर रहा हूं, जिसमे उन्होंने इस ग्रंथ के उद्देश्य के बारे में लिखा है। वे कहते हैं कि……इस ग्रन्थ में (ऐसी बाते रखी हैं)……जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नही है।"

अब मूल प्रश्न यह है कि वे कौन से वैदिक सत्य हैं, जिनको सामाजिक उन्नति का कारण मानते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'वेदों की ओर लौट चलो' का नारा दिया। आज हमारे समाज को उस सत्य को जानना है, और उसके अनुकूल आचरण करके उसी मे अपना विकास ढूंढना है।

ऋग्वेद मे कहा गया है "एकम् सत् विप्रा: बहुधा वदन्ति' अर्थात सत्य एक ही है। विद्वान लोग उसकी अलग-अलग तरह से व्याख्या करते हैं। मैं इसी चिंतन के अनुकूल स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का एक वाक्य आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं, जिसमें उन्होने सच्चे धर्म का स्वरूप बताया है। 'अथातस्तोविषद व्याख्यास्याम:' के अन्तर्गत स्वामी जी कहते हैं 'अपने-अपने मत वाले सब कहते हैं कि हमारा ही मत अच्छा है, बाकी सब बुरे हैं। बिना हमारे मत के दूसरे में मुक्ति नहीं हो सकती।……हम तो यही मानते हैं कि सत्य भाषण, अहिंसा, दया आदि शुभ गुण सब मतों में अच्छे है, और बाकी वाद, विवाद, ईर्ष्या, द्वेष, मिथ्याभाषणादि कर्म सब मतों मे बुरे हैं।" इस प्रकार स्वामी जी ने सत्य, अहिंसा और करुणा को धर्म का सही रूप माना। ये तीनों गुण मानवीय चरित्र के आधारभूत गुण हैं और मैं समझता हूं कि बिना इन्हें अपनाये कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र उन्नति नही कर सकता। सेवा और सद्चरित्र को वे कितना महत्वपूर्ण मानते थे, इस बात का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि उन्होंने अपने वसीयतनामें के अंतिम भाग में परोपकारिणी सभा के लिए जो साधारण नियम बनाये थे, उसमें स्पष्ट रूप से यह लिखा कि 'सभा में वही रह सकेगा, जो सदाचार पूर्वक जीवन बिताये।' इसी प्रकार उन्होंने परोपकारिणी सभा के जो तीन मुख्य उद्देश्य बताये थे, उनमें एक मुख्य उद्देश्य था "दीन और अनाथजनों को सहायता देना।' गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, ईसा मसीह, पैगम्बर मुहम्मद तथा गुरु नानक आदि सभी धर्म गुरुओं ने मानव जाति को इसी सत्य, अहिंसा और करुणा का उपदेश दिया था। इन्हीं गुणों में प्रेम, सहनशीलता, क्षमा, त्याग

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा दिनांक ११ फरवरी, १९९२ को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का १६८ वां जन्म दिवस समारोह आयोजित किया गया है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने हिन्दू समाज में व्याप्त रूढ़िवाद, जातिवाद तथा धर्म के नाम पर फैली हुई कुरीतियों को दूर करने हेतु जो प्रयास किये वे वास्तव मे सराहनीय हैं। इसके अतिरिक्त स्वामी जी ने अपने जीवन काल मे जीवन भर ब्रह्मचारी रहकर जो देश की सेवा करने का संकल्प किया वह अपने आप मे एक मिसाल है। इन्ही शब्दों के साथ मैं स्वामी जी के १६८ वें जन्म दिवस के अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हू।

बलराम जाखड़
कृषि मन्त्री, भारत सरकार

गायत्री मंत्र इस देश की संस्कृति का प्राण है

यह साम्प्रदायिक नहीं, मद्रास उच्च न्यायालय का निर्णय

मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति माननीय श्री डी० राजू ने अपने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण निर्णय मे यह कहा है—कि बधाई कार्ड में गायत्री मन्त्र का छपना किसी भी रूप में साम्प्रदायिक भावना के विपरीत नहीं है। एक सार्वजनिक प्रतिष्ठान यूनाइटेड इण्डिया इन्श्योरेंस कम्पनी ने वर्ष १९८१ मे दीपावली के अवसर पर प्रतिष्ठान के बधाई कार्डों पर गायत्री मन्त्र छपवाया था। यह मन्त्र संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा में छापा गया था। इस पर उच्च न्यायालय में रिट याचिका दायर करके प्रतिष्ठान पर यह आरोप लगाया गया था कि यह सरकारी धन का दुरुपयोग तथा संविधान मे निहित धर्म-निर्पेक्षता की मूल भावना के विपरीत है।

माननीय न्यायमूर्ति ने निर्णय मे लिखा है कि गायत्री मन्त्र को तो 'छन्द:ब्रह्म' कहते हैं जो कि समस्त वैदिक ज्ञान की कुन्जी है। वेदों को सदैव ही समस्त मानव जाति की सम्पत्ति माना गया है। इनमें आध्यात्म व दर्शन के मूल मन्त्रो का समावेश है जो कि समस्त मानव जाति के आचरण को निर्धारित करते हैं और जिन पर चलकर मनुष्य आसुरी प्रवृत्तियों से मुक्त होकर देवत्व को प्राप्त होता है। वेदों को किसी भी जाति, धर्म या सम्प्रदाय से जोड़ना हमारी भूल होगी। माननीय न्यायमूर्ति ने यह भी लिखा है कि धर्म निरपेक्षता से तात्पर्य अधर्मी या धर्म विरोधी कार्य से नहीं है। इसका केवल यही मतलब है कि शासन को किसी धर्म विशेष या सम्प्रदाय विशेष से न तो अपने को सम्बद्ध करना है और न ही किसी का पक्ष लेना या विरोध करना है।

अपने निर्णय में माननीय न्यायमूर्ति ने यह लिखा है कि बधाई कार्ड में गायत्री मन्त्र छापने से यह निष्कर्ष कदापि नहीं निकाला जा सकता कि किसी धर्म या सम्प्रदाय को मानने का आह्वान किया जा रहा है। परिणाम-स्वरूप रिट याचिका को माननीय उच्च न्यायालय द्वारा खारिज कर दिया गया।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

प्राणस्वरूप, दु:खहर्ता, सुखदाता पिता आप सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा सकल जगत् के उत्पत्ति करता है। हम आपके उस पाप नाशक तेजमय स्वरूप का ध्यान करते है जो हमारी बुद्धियो को प्रकाशित करता है। हे पिता आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो, आप हमारी बुद्धिमें प्रकाशित रहे और हमें सदैव सत्कर्मों में प्रेरित करते रहें।

तूने हमें उत्पन्न किया,
पालन कर रहा है तू।
तुझ से ही पाते प्राण हम,
दुखियों के कष्ट हरता है तू ॥
तेरा महान तेज है,
छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में,
तू हो रहा है विद्यमान ॥
तेरा ही धरते ध्यान हम,
मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को,
श्रेष्ठ मार्ग पर चला ॥

"सेवा समर्पण" सेवा प्रकाशन दिल्ली की मासिक पत्रिका के जनवरी १९९२ के अंक से उद्धृत।

सत्यानन्द मुंजाल
हीरो साइकल्ज, लुधियाना

आर्य समाज की जानदार हिन्दू लहर

जिस कौम के युवक आंधी तूफानो से टकराने को तैयार रहते हैं उस कौम के निर्बल से भी निर्बल की ओर कोई कुदृष्टि से देखने का साहस नहीं कर पाता।

भाई परमानन्द जी हिन्दू लहर के प्राण थे। पांच सौ वर्षों तक मुस्लिम शासन से टकराते रहने वाले वीर वंश के वह यशस्वी सपूत थे।

१० अक्तूबर, सन् १८७४ में उनका जन्म जेहलम के करियाला ग्राम मे हुआ था। एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करते ही भाई परमानन्द जी ने आर्य समाज की कट्टर हिन्दू लहर से अपने को समर्पित कर दिया। डी० ए० वी० कालेज के लाइफ मैम्बर बन गए। वहीं इतिहास पढ़ाने पर नियुक्त हो गए। कालेज के संस्थापक महात्मा हंसराज जी को भाई जी पर बड़ा ही गौरव था। भाई जी की छात्रों को पढ़ाने तथा उन्हें हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता लहर से जोड़ने की शैली ने महात्मा हंसराज जी को अपार प्रभावित कर रखा था। कालेज का हर छात्र भाई जी द्वारा ही पढ़ना चाहता था।

पंजाब के प्रसिद्ध दानवीर व विद्वान डा० गोकुल चन्द नारंग तथा लाला साईंदास जी भाई परमानन्द जी के कारण ही आर्य समाज से जुड़ गये। इन्होंने सारा जीवन आर्य समाज की हिन्दुत्वयुक्त देश भक्ति की लहर को अर्पित कर दिया।

भाई जी के निवास स्थान पर जनता तथा छात्रो की भीड़ लगी रहती थी। कमरा तो छोटा था। जनता व छात्र अधिक होते थे, इसलिए डा० नारंग ने भाई जी से कहा, आपसे मिलने वाले बहुत लोग आते हैं, पर आप का कमरा छोटा और जगह बहुत कम है। भाई जी ने हंसते-हंसते उन्हें कहा—दिल खुला है, इसलिए इतनी जनता और छात्र आते हैं, भले कमरा छोटा ही है। वहां बैठे एक प्रोफेसर ने कहा, अपने पूर्वजों की भांति इनकी वाणी व लेखनी में ओज है। हिन्दुत्वयुक्त इनकी देश भक्ति में आकर्षण है इसीलिए मिलने वाले दर्शन करने आते हैं और प्रेरित होकर जाते हैं।

सरकारी नौकरी नहीं चाहिए

भाई परमानन्द जी के पढाने की शैली की धाक समूचे पंजाब के विद्यार्थियों में स्तुत्य ढंग से चर्चित थी। उनके सम्पर्क में आने वाला हर युवक हिन्दुत्वयुक्त स्वतन्त्रता का मतवाला बना जा रहा था। पंजाब सरकार ने उन्हें अपने जाल मे फांसने हेतु, पंजाब विश्वविद्यालय का निरीक्षक बनने की पेशकश की।

भाई जी ने लिख भेजा मुझे अंग्रेजों की नौकरी नहीं करनी। अपनी हिन्दू जाति की सेवा नहीं छोड़ सकता। मुझे कालेज से जो ७५ रु० मासिक आनरेरियम मिलता है उस से मैं व मेरी आत्मा सन्तुष्ट है। अतः आपके पांच सौ रुपयों की नौकरी की मुझे कोई चाह नहीं है।

भाई जी के विषय में जब भी महात्मा हंसराज जी के समक्ष कोई बात चलती थी तो वह बड़ी ही आनन्द मुद्रा में कहते रहते थे—भाई परमानन्द जी तो हिन्दुस्तान के आकाश पर ज्योतिमान नक्षत्र हैं।"

अफ्रीका मे हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए किसी बड़े विद्वान तथा संकल्प के अपार धनी को आर्य समाज की ओर से भेजे जाने का निर्णय हुआ। प्रश्न उठा किसे भेजा जाए। महात्मा हंसराज जी तुरन्त बोले—भाई परमानन्द जी को भेजा जाए। वह अपार संकल्प के धनी हैं। ईसाई मिशनरियो से हर प्रकार से टक्कर लेने में वह सक्षम है। भाई जी को अफ्रीका हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए भेजा गया।

भाई जी हिन्दू धर्म के प्रचारार्थ अफ्रीका पहुंचे, हिन्दू प्रोत्साहित हुए ईसाई मिशनरी घबराए। वहाँ के नगर मोमबासा, नैरोबी, जोहन्सबर्ग, नेटाल आदि में उन्होंने खूब जोर-शोर से प्रचार किया। इनकी सार्वजनिक सभाओं में जहां हिन्दू अच्छी संख्या में आते थे वहां ईसाई मिशनरी भी उन्हें सुनने आया करते थे। अंग्रेज मिशनरी घबराए क्योंकि उनकी विद्वता-पूर्ण तर्कों का उनके पास कोई उत्तर न होता था। ईसाईयत से प्रभावित वहां के हिन्दुओं ने गिरजाघरों में जाना बन्द कर दिया। वहां आर्य समाज मन्दिर निर्माण कराए। यज्ञशालाएं निर्माण कराईं। हजारों रुपए एकत्र करके डी० ए० वी० कालेज को भेजे। यहीं गांधी जी भाई जी से मिले थे।

—चमनलाल अजिज सम्पादक वीर सावरकर पत्र

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है (३)

श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

मुण्डकोपनिषद में इसी बात की चर्चा करते हुए कहा है : 'द्वे विद्ये वेदितव्ये परा च अपरा च' । 'परा' क्या है ? 'यया तदक्षर अधिगम्यते सा परा' अर्थात्, जिस विद्या से अक्षर-ब्रह्म का ज्ञान होता है वह 'परा विद्या' है, अर्थात्–'आध्यात्मिक विद्या' । इस कथन से स्पष्ट है कि जिस विद्या से क्षर-प्रकृति के विषयों का ज्ञान होता है वह 'अपरा-विद्या' है । अर्थात् 'भौतिक विद्या' । यजुर्वेद के १९ वें अध्याय के ७७ वें मन्त्र में इसी भाव को 'सत्य' तथा 'अनृत'–इन शब्दों से व्यक्त किया गया है । वहां कहा है—'दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः । अश्रद्धां अनृते अदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः ॥ ससार की सब वस्तुओं को देखकर प्रजापति ने उन्हे दो भागों मे विभक्त कर दिया—'सत्य' तथा 'अनृत' । 'सत्य' में सबको स्वाभाविक रूप मे श्रद्धा होती है, 'अनृत' में सबको स्वाभाविक रूप में अश्रद्धा होती है । उक्त विवरण से स्पष्ट है कि वेद ने 'विद्या', 'सत्य' तथा 'परा' का एक ग्रुप बनाया है 'अविद्या', 'अनृत' एव 'अपरा' का दूसरा ग्रुप बनाया है । यजुर्वेद में 'विद्या' तथा 'अविद्या'—इन दोनो की महिमा का बखान है–'अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा' 'अविद्या' से मृत्यु को तरा जाता है । इससे स्पष्ट है कि वैदिक टर्मिनोलोजी में 'अविद्या' का अर्थ निरक्षरता या अज्ञान नहीं है तो फिर वेद में 'अविद्या' का क्या अर्थ है ? हमारी दृष्टि मे वेद मे 'अविद्या' का अर्थ भौतिकवाद या भौतिक विज्ञान है । भौतिक आविष्कारो से मनुष्य ससार की सब सुख-सुविधाओं को भोगता हुआ, यन्त्रों तथा औषधियों के आविष्कारों से दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की प्राप्ति कर सकता है जिसे वेद ने 'अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा' कहा है । हमारा कथन है कि वेद मे भौतिकवाद या वर्तमान-विज्ञान को वह उच्च स्थान नही दिया गया जो अध्यात्मवाद को दिया गया है । भौतिक-ज्ञान दिनों दिन बदलता रहता है, 'वर्धमान' है, इसलिए वेद ने उसे 'अविद्या' 'असत्य' तथा 'अपरा' विद्या कहा है, आध्यात्मिक ज्ञान सदा एक रहता है, 'अवर्धमान' है, इसलिये वेद ने उसे 'विद्या', 'सत्य' तथा 'परा' विद्या कहा है, इसका यह अर्थ नही है कि वेदो मे भौतिक विज्ञान का सर्वथा अभाव है। वेदो मे भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों विद्यायें हैं परन्तु मुख्यता आध्यात्मिक विद्या की है क्योंकि वही सत्य है, सनातन है, सब देश काल में एक ही बनी रहती है ।

हमारा मुख्य कथन यह है कि वेदो का मुख्य विषय अध्यात्मवाद है, भौतिकवाद या भौतिक विषयों का वेदो मे गौण रूप से वर्णन पाया जाता है, इसलिये वेद में दो विद्याओं का उल्लेख पाया जाता है—'द्वे विद्ये वेदितव्ये' दो विद्याओ को जानना चाहिये—'विद्या' तथा 'अविद्या', 'सत्य' तथा 'अनृत' 'परा' तथा 'अपरा' ।

हमने इस लेख माला में कई बातों को जगह-जगह दोहराया है । इस दोहराने का कारण विषय को अधिकाधिक स्पष्ट करना है । इस लेख माला से किसी को भ्रांति न हो इसलिए इस लेख माला के मुख्य मुद्दों को लिखकर इसे समाप्त कर रहा हूं । इस लेखमाला मे मैंने जो विचार रखा है उसमें कुछ नवीनता है इसलिए इतने विस्तार से लिखना पड़ा और किसी को कोई भ्रांति न हो इसलिये निम्न प्वाइंट दोहरा रहा हूं ।

(क) इस लेख-माला में हमने जो दिशा अपनायी है उससे स्पष्ट है कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है जिसके निम्न कारण हैं :

(ख) वेद ने विद्या के दो भाग किये हैं—'परा' विद्या तथा 'अपरा' विद्या' । 'द्वे विद्ये वेदितव्ये परा च अपरा च' । 'परा विद्या' वह है जो सांसारिक विद्या से, 'भौतिक विज्ञान' से परे है 'अपरा विद्या वह है जो इस की, संसार की विद्या है—पदार्थ विद्या या भौतिक विज्ञान । इस प्रकार वेद ने 'अपरा' या सांसारिक विद्या को भी विद्या का नाम दिया है ।

(ग) 'परा' तथा 'अपरा' की तरह वेद मे दो अन्य शब्द भी ध्यान देने योग्य हैं जिनका इस विषय के साथ सम्बन्ध है । वे शब्द हैं—'अविद्या' तथा 'विद्या' । वेद की शब्दावली में 'अविद्या' का अर्थ अज्ञानता या निरक्षरता नहीं है । यजुर्वेद मे लिखा है । 'अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्यया अमृतं अश्नुते' अविद्या से मृत्यु को तर कर विद्या से अमृत प्राप्त होता है । इस कथन से स्पष्ट है कि वेद की शब्दावली में 'अविद्या' का अर्थ भौतिकवाद या वर्तमान विज्ञान है और 'विद्या' का अर्थ अध्यात्मवाद है, क्योंकि वर्तमान विज्ञान के भौतिक साधनों से दीर्घ जीवन प्राप्त होता है, औषधि आदि के द्वारा रोगो पर विजय प्राप्त किया जा सकता है मृत्यु रूप सागर को तरा जा सकता है, परन्तु अमरता तो अध्यात्मवाद से ही प्राप्त हो सकती है इस कथन से स्पष्ट है कि वेद में 'परा' विद्या से अध्यात्म तथा 'अपरा' विद्या से भौतिकवाद अभिप्रेत है ।

(घ) जैसे वेद ने ज्ञान के 'परा' विद्या तथा 'अपरा' विद्या—ये दो भाग किये है, वैसे ही यजुर्वेद ने इन्ही भावों को प्रकट करने के लिए दो अन्य शब्दों का प्रयोग किया है—वे हैं, 'सत्य' तथा 'अनृत' । 'अनृत' शब्द का अर्थ है—जो 'ऋत' न हो वह 'अनृत' । 'ऋत' का अर्थ है—'सत्य' । ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत–इस मन्त्र में 'ऋत' और 'सत्य' का एक साथ प्रयोग किया गया है । यजुर्वेद के जिस मन्त्र का हमने निर्देश किया है वह है 'दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः । इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'परा' विद्या, सत्य इन तीन एकार्थक शब्दों का एक ग्रुप है । 'अपरा, अविद्या, अनृत—इन तीन एकार्थक शब्दो का दूसरा ग्रुप है । इसी तरह इस लेख माला से स्पष्ट है कि 'परा, विद्या, सत्य' ये एकार्थक शब्द अध्यात्मवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं । 'अपरा-अविद्या-अनृत' ये तीनो एकार्थक शब्द भौतिकवाद या भौतिक विज्ञानों का प्रतिनिधित्व करते हैं । अध्यात्मवाद नित्य है,सनातन है, सत्य है, अपरिवर्तनशील है, स्थिर है, भौतिकवाद जिसकी उपज भौतिक विद्यायें हैं अनित्य है, बदलता रहता है, वेद की परिभाषा मे अनृत है परिवर्तनशील है, अस्थिर है ।

इसी विचारधारा के आधार पर हम कहते हैं, 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है ।" भौतिक विज्ञान बदल सकता है, अध्यात्म विज्ञान बदल नहीं सकता क्योंकि वह 'सत्य' है । ●

जानिए : घरेलू नुस्खे

- नीम के पत्ते का रस मधु मे मिलाकर पिलाने से बच्चों का कृमि दूर होता है ।
- गाजर का रस टमाटर का रस, सन्तरे का रस तथा चुकन्दर का रस मिला कर पीने से कुछ महीनों में चेहरे की झाइयां एवं दाग दूर हो जाते हैं ।
- दो केले एक तोला शहद के साथ सेवन करने से दिल का दर्द ठीक हो जाता है ।
- चूना और शहद बराबर मात्रा में मिलाकर बिच्छू काटने के स्थान पर रखने से दर्द तुरन्त दूर दूर हो जाता है ।
- हृदय रोगी को सोते समय शहद और नीबू का रस मिलाकर एक ग्लास पानी पिलाने से रोगी के हृदय को शक्ति मिलती है ।
- शहद को दूध के साथ समुचित अनुपात में लेने से पेट के छोटे-मोटे घाव तथा प्रारम्भिक अल्सर ठीक हो सकते हैं ।
- सेवो का रस निचोड़कर पिलाने से शराब का नशा कम हो जाता है । फिटकरी को दूध या पानी में घोलकर पिलाने से भी शराब का नशा दूर होता है ।
- अरहर के पत्तों का रस पिलाने से अफीम का नशा कम हो जाता है । दूध या घी पिलाने से भी अफीम का नशा दूर होता है ।
- सौ ग्राम अरहर की दाल को पानी में उबालकर उसका पानी पीने से भांग का नशा उतर जाता है ।

—ललित कुमार

परिक्रमा कैसे करें ? (३)

लेखिका : प्रिंसीपल विमला श्रीवास्तव

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिता अशनिरिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो, रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम
ऐभ्योअस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि य वयम्, द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

अथर्व : ३।२७।४

शब्दार्थ :—उदीची—उत्तर दिशा, उन्नति पथ, दिक्—दिशा, सोम—शान्ति स्वरूप परमेश्वर, चन्द्रमा । अधिपति—स्वामी, स्वजो—स्वयं पैदा होने वाली द्वेषादि भावनाएं, रक्षिता—रक्षक, अशनि—विद्युत-विवेक, इषवः—बाण, तेभ्योनमः—उन्हें नमस्कार ।

नोट—शेष शब्दार्थ पूर्ववत् ।

भावार्थ—हे उत्तर दिशा के स्वामी सोम ! हे शान्ति स्वरूप परमात्मा आप स्वयं पैदा होने वाली अमंगलकारी भावनाओ जैसे—ईर्ष्या, द्वेष, कुटिलता आदि तथा दुर्वृत्तियां जो हमें पग-पग पर दुःखी व सतप्त करती रहती हैं उन्हे आप अपने ज्ञान व प्रेरणा द्वारा नष्ट करके हमारी रक्षा करते हैं। ऐसे मगलकारी, शान्तिदायक, रक्षक ईश्वर को हमारा नमस्कार। हे उत्तर दिशा के स्वामी ! आप सर्वशक्तिमान राजा हैं । आप न्यायाधीश हैं । अतः आपसे हमारी प्रार्थना है कि जो हमसे द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते हैं और अपनी द्वेष भावनाओं के कारण न केवल हम दुःखी होते हैं अपितु दूसरों का विनाश करने में तत्पर रहते हैं, हमारी उस द्वेष भावना के अपराधी को दण्ड देने की हममें क्षमता नहीं । हम अल्पबुद्धि वाले होने के कारण न्याय करने के स्थान पर अन्याय भी कर सकते हैं अतः यह न्याय कार्य आपके न्याय पर छोड़ते हैं । आप जो भी निर्णय करेंगे वही न्याय युक्त होगा ।

उत्तर दिशा से घूमकर हम नीचे की ओर ध्यान को केन्द्रित कर । नीचे की दिशा को ध्रुवा दिशा कहते है । ध्रुवा दिशा में असंख्य वनस्पतियां, औषधियां, फल-फूल और रत्नादि हैं । सबकी उत्पत्ति उस सर्वव्यापक ईश्वर (विष्णु) के सर्वव्यापी नियमों के अधीन होती हैं । अतः उस सर्वव्यापक का ध्यान करके हम उसकी स्तुति करें व उसके आगे समर्पण करके प्रार्थना करें--

ध्रुवा दिग विष्णु रधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः । तेभ्यो नमो अधि पतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम, इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि य वय द्विष्मस्त वो जम्भेदध्मः ।

शब्दार्थ :—

ध्रुवा—नीचे, दिक्—दिशा, विष्णुः—सर्व व्यापक देव, अधिपति—स्वामी, कल्माषग्रीवः—कृष्णग्रीव-प्राण नाशक विषैली गैसें, असाध्य रोग, विषय विकार रूपी विषैले सांप । वीरुधः—जड़ी बूटियां, औषधियां, वृक्षादि । इषवः—बाण, नाश करने के साधन ।

शेष शब्दार्थ पहले समान हैं ।

भावार्थ :—हे निम्न दिशा के स्वामी, विष्णु । आप तो सर्वव्यापक हैं । नीचे की दिशा वसुन्धरा पर जो विविध, औषधियां व वनस्पतियाँ आदि उत्पन्न होती हैं उन सबको उत्पन्न करना व उन्हे नष्ट करना आपके आधीन है । इन औषधियों व वनस्पतियों द्वारा आप हमारे विभिन्न रोगों को विनष्ट करके हमारी रक्षा करते है तथा विषय विकार रूपी कृष्ण ग्रीव विषधरों से आप हमारी रक्षा करते हैं आप हमारी द्वेष भावनाओं को विवेक पूर्ण अन्तः प्रेरणा रूपी बाणो से नष्ट कर हमारी रक्षा कीजिये । जो हमसे द्वेष करते हैं और जिनसे हम द्वेष करते हैं तथा हृदय में प्रज्वलित द्वेषाग्नि के कारण हम जो जलकर पाप करते हैं उसका कौन दोषी है, इसका निर्णय या न्याय हम आपको समर्पित करते हैं । आप सर्वव्यापक व न्यायकारी हैं अतः आप जो भी न्याय करेंगे वही सत्य न्याय होगा ।

पृथ्वी के रचयिता व पृथ्वी पर वनस्पतियो की उत्पत्ति सब जीवों की रक्षा करने वाले ईश्वर की महिमा का गुणगान करने के बाद हम आकाश की ओर द्युलोक का अवलोकन करें । इस लोक में जहां असंख्य नक्षत्र जगमगाते हैं जिन्हें देखकर ईश्वर की महानता, तथा सर्वशक्तिमत्ता की अनुभूति होती है उसे ऊर्ध्व दिशा कहते हैं । यह ऊर्ध्व दिशा छठी दिशा है । पांचों दिशाओ अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण व पृथ्वीआदि परिक्रमा करने के बाद द्युलोक की ओर मन को केन्द्रित करके ईश्वर को स्मरण करते हुए प्रार्थना करें :—

"ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

शब्दार्थ : ऊर्ध्वादिक—ऊपर की दिशा, बृहस्पतिः—महान्, अधिपति—स्वामी, श्वित्रः—श्वेत, अनावृष्टि । रक्षिता—रक्षक, वर्षम्—वर्षा, इषवः—बाण, तेभ्यो—उनके लिए, नमः—नमस्कार, रक्षितृभ्यो—रक्षक के लिए । इषुभ्यो—बाणों के लिए (वर्षा रूपी बाण) । नमः—नमस्कार, एभ्यो—इन (रक्षण सबलो या साधनों) के लिए । अस्तु—हो, यो (यः)—जो, अस्मान् द्वेष्टि—हमसे द्वेष करता है । यम्—जिससे, वयम्—हम, द्विष्मः—जिससे द्वेष करते हैं । तम्—उसे, वः—तुम्हें, जम्भे—न्याय रूपी दाढ़ में । दध्मः—रखते हैं ।

भावार्थ—हे ऊपर की दिशा अर्थात द्युलोक के स्वामी महान् बृहस्पति देव । आप महान् हैं, आपकी न्याय व्यवस्था महान है, आपके न्यायादेश का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता । आप ही इस द्युलोक का सचालन कर रहे हैं । ये असंख्य ग्रह, उपग्रह, चांद, सितारे सब आपकी आज्ञा से नर्तन कर रहे हैं । आपके आदेश से बादल बरसते हैं, वर्षा होती है । इसी वर्षा रूपी बाणों या साधन द्वारा आप अनावृष्टि के कारण झुलसी हुई सफेद दिखाई दे रही वसुन्धरा पर वर्षा करके उसे हरा-भरा कर देते हैं और अन्नादि उत्पन्न करके हमारी रक्षा करते हो । हमारे आत्मिक प्रेम के अभाव को भी आप आनन्द की वर्षा करके अलौकिक आनन्द से भर देते हो ।

ऐसे महान् बृहस्पति, तथा रक्षक को हमारा नमस्कार । वर्षा रूपी रक्षा के साधनों के लिए भी आपको नमस्कार ।

आपकी सर्वशक्तिमत्ता को देखते हुए हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान् ! आप हमारे हृदय से द्वेष भावना को दूर कर दीजिये । जो हमसे द्वेष करते हैं और जिनसे हम द्वेष करते हैं तथा जिससे क्लेश प्राप्त करते हैं उस द्वेष भावना के दोषी को, आप ही दंड देने का कार्य हम आपको समर्पित करते हैं । हम अल्पबुद्धि हैं न्याय करने के अधिकारी नहीं ।

इस प्रकार अपने चारों तरफ तथा ऊपर व नीचे सर्वत्र ईश्वर को व्यापक मानकर हम उसके चारो ओर अपने मन को ले जावें तथा उसमें तन्मय हो जांय । अपनी द्वेष भावना को ईश्वर के न्याय पर समर्पित करके दूर करने का प्रयत्न करे ताकि हम मानसिक कष्टों से निवृत्ति प्राप्त कर सके और हमारा हृदय आनन्द से ओत प्रोत हो सके ।

यही है सच्ची परिक्रमा जिसे करने से हम ईश्वर को सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान, रक्षक, प्रेरणादायक सब कार्यों का कर्ता-धर्ता मानकर हम आनन्द विभोर हो सकते हैं ।

सार्वदेशिक (पत्र) के नियम

(१) 'सार्वदेशिक' पत्र का ग्राहक वर्ष के किसी भी समय से बना जा सकता है ।

(२) 'सार्वदेशिक' पत्र का वार्षिक (३०/- रु०) या आजीवन (३००/- रु०) सदस्यता शुल्क मनीआर्डर द्वारा ही भेजने का कष्ट करें ।

(३) प्रत्येक ग्राहक के पास 'सार्वदेशिक' बड़ी सावधानी से भेजा जाता है । परन्तु यदि किसी ग्राहक को पत्र न मिले तो कार्यालय में पत्र-व्यवहार द्वारा या व्यक्तिगत सम्पर्क करें तथा साथ ही अपने डाकघर से भी इसका स्पष्टीकरण मांगे। पत्राचार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें ।

(४) प्रकाशनार्थ लेख टाईप किये हों या स्पष्ट अक्षरों में हाथ से लिखे होने पर ही स्वीकार किये जायेंगे ।

(५) वैदिक ज्ञान, महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की मान्यताओं के अनुरूप लेखों को ही प्रकाशित किया जाएगा । लेख को न्यूनाधिक करना सम्पादक के अधीन है ।

(६) सार्वदेशिक पत्र को और अधिक जनप्रिय बनाने के सुझावों का स्वागत है ।

—सम्पादक

गुरुकुल शिक्षा पद्धति से लाभ

—विवेक भूषण दर्शनाचार्य

मनुष्य जीवन का लक्ष्य है—सम्पूर्ण दुःखों से छूटकर ईश्वर के आनन्द की प्राप्ति करना। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये यदि मानव जीता है, तो उसका जीवन ठीक है, अन्यथा उसका जीवन व्यर्थ है। खाना-पीना, सन्तानोत्पत्ति करना और मर जाना तो पशु-पक्षी भी करते हैं। फिर यदि मनुष्य का जीवन भी इन्हीं कार्यों तक ही सीमित रहे, तो पशु-पक्षियों से कुछ विशेषता नहीं है। दोनों का जीवन एक समान है। ईश्वर ने मनुष्य को जैसी उत्तम बुद्धि दी है, वैसी किसी अन्य प्राणी को नहीं दी। यद्यपि यह कर्मों का फल है, परन्तु ऐसी उत्तम बुद्धि देने का उद्देश्य इतना ही नहीं है कि मनुष्य भी अन्य प्राणियों की भांति खा-पीकर ही मर जाये। बल्कि मुख्य उद्देश्य यह है कि वह सम्पूर्ण दुःखों से छूटकर ईश्वर के आनन्द की प्राप्ति करना' रूपी लक्ष्य की सिद्धि करे। इस कार्य को मनुष्य के अतिरिक्त अन्य कोई प्राणी नहीं कर सकता। इसलिये हम यह कह सकते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इस विशेष कार्य की सिद्धि के लिये ही दी है। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि किसी भी लक्ष्य की सिद्धि बिना साधनों के नहीं होती। इस लक्ष्य की सिद्धि भी बुद्धि नामक साधन से होगी। यदि केवल मात्र बुद्धि से ही लक्ष्य की सिद्धि सम्भव होती, तो प्रत्येक मनुष्य दु.ख से छूटकर सुख को प्राप्त कर चुका होता, क्योंकि बुद्धि तो सब मनुष्यों के पास है। फिर क्या कारण है कि बुद्धि होते हुए भी मनुष्य इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रहा है? इस प्रश्न का उत्तर है कि बुद्धि को शुद्ध-पवित्र नहीं बनाया जा रहा है। शुद्ध पवित्र बुद्धि ही उक्त लक्ष्य की प्राप्ति करा सकती है, मलिन-अपवित्र बुद्धि नहीं। बुद्धि को शुद्ध-पवित्र कैसे बनायें? इसका सबसे बड़ा माध्यम है 'शिक्षा'। कौन-सी शिक्षा। गुरुकुल की शिक्षा। वेदों पर आधारित ऋषि-मुनियों द्वारा बनाई गई, प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा। यही शिक्षा मानव की बुद्धि को शुद्ध पवित्र बना सकती है और मानव-जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करा सकती है। वर्तमान स्कूली शिक्षा में इतना सामर्थ्य नहीं है। बल्कि वर्तमान की स्कूली शिक्षा पद्धति अनुसार तो मनुष्य एक अनुशासनप्रिय अच्छा नागरिक भी नहीं बन पा रहा है। फिर सम्पूर्ण दु.खों से छूटने की बात ही क्या है। इतना ही नहीं, वर्तमान स्कूली शिक्षा से अनेक दोष व्यक्ति में उत्पन्न होते जा रहे हैं, जो मानव-जीवन के लिये अत्यन्त हानिकारक है। आइये जरा दोनों (गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति और वर्तमान स्कूली शिक्षा पद्धति) का तुलनात्मक अध्ययन करें।

गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त करने से निम्नलिखित गुण प्राप्त होते हैं।

(१) ईश्वर और धर्म में विश्वास—गुरुकुलीय शिक्षा में विद्यार्थी को गुरु (आचार्य, ईश्वर और धर्म का सच्चा स्वरूप बतला कर इनमे विद्यार्थी का विश्वास उत्पन्न करता है। ईश्वर और धर्म का सच्चा स्वरूप जानकर ही मनुष्य एक अच्छा नागरिक बन सकता है। दूसरे के सुख-दुःख को अपने सुख-दुःख के समान समझ सकता है। जैसे अपने दुःख को दूर करने के लिये प्रयत्न करता है, वैसे ही दूसरों के दुःख को भी दूर करने का प्रयत्न करके सच्चा परोपकारी मानव बन सकता है। परन्तु वर्तमान शिक्षा पद्धति में ईश्वर व धर्म का कोई स्थान नहीं है। ईश्वर और धर्म की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है। और न ही 'ईश्वर तथा धर्म में विश्वास करके धर्म के आचरण' पर कोई विशेष बल दिया जाता है। अतः व्यक्ति नास्तिक और स्वार्थी बनता जा रहा है। ऐसे व्यक्ति कभी भी अपना, समाज का, देश का और विश्व का भला नहीं कर सकते। न वे दुःख से छूट सकते और न ही सुख को प्राप्त कर सकते हैं। याद रखने की बात है—"जो व्यक्ति ईश्वर से नहीं डरता, वह कभी भी पाप (अपराध) से बच नहीं सकता।' चाहे गली-गली में पुलिस के सिपाही भी क्यों न खड़े कर दिये जायें। वे मनुष्य के बाहरी अपराधों को रोक सकते हैं, पर मन की बुराइयों को नहीं रोक सकते। मन में बुराई करने वाला व्यक्ति कभी न कभी एकांत पाकर वाणी और शरीर से भी बुराई कर ही लेता है। परन्तु जो ईश्वर से डरता है, वह मन मे भी बुराई नहीं कर सकता। फिर वाणी और शरीर से कैसे करेगा। ईश्वर सर्वव्यापक होने से मन की बुराइयों को भी जानता है और मन में तत्काल भय, शंका, लज्जा उत्पन्न कर देता है। अतः गुरुकुलीय शिक्षा से व्यक्ति आस्तिक, धार्मिक एवं परोपकारी बनता है। पापों से छूटकर उनके फल (दु.ख) से भी छूट जाता है।

(२) ब्रह्मचर्य और संयम—गुरुकुलों में ब्रह्मचर्य और इन्द्रियों के संयम की शिक्षा दी जाती है। ब्रह्मचर्य और इन्द्रियों पर संयम करने से व्यक्ति संयमी और सदाचारी बनता है। ब्रह्मचर्य का पालन करने से शारीरिक और बौद्धिक बल बढ़ता है। शरीर स्वस्थ बनता है। बुद्धि का विकास होता है। इससे व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र मे उन्नति कर सकता है। श्रीरामचन्द्र जी महाराज लक्ष्मण यति, श्रीकृष्ण जी महाराज जैसे महान् पुरुष गुरुकुलों मे ब्रह्मचर्य का पालन करके ही संयमी, सदाचारी और इतने महान् बने थे कि आज तक लोग उनका सम्मान करते चले आ रहे हैं और आगे भी करेंगे। ब्रह्मचर्य का पालन करके ही हनुमान और भीष्म पितामह

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गुरुकुल शिक्षा पद्धति

(पृष्ठ ७ का शेष)

जैसे बलिष्ठ और बुद्धिमान् पुरुष तैयार हुए थे। ब्रह्मचर्य का पालन करके ही महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे अद्वितीय तार्किक, बुद्धिमान, बलवान, परोपकारी, समाज-सुधारक, योगी बने थे। अतः ब्रह्मचर्य का पालन करने से अनेक गुणों की प्राप्ति होती है जो समाज, राष्ट्र और विश्व का कल्याण करने वाले हैं। ऐसे ब्रह्मचर्य की शिक्षा गुरुकुलों में ही दी जाती है। आज के स्कूलों में ब्रह्मचर्य और संयम की शिक्षा का लगभग अभाव हो चुका है। जिसका परिणाम यह है स्कूलों के विद्यार्थी चरित्रभ्रष्ट हो जाते हैं। शरीर और बुद्धि का ह्रास कर लेते हैं। जब आगे गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं, तो समाज में चरित्रहीनता, चोरी, व्यभिचार, बलात्कार आदि की घटनाएं उत्पन्न करते हैं। इन घटनाओं का मूल कारण है कि उन विद्यार्थियों को विद्यालयों, महाविद्यालयों (स्कूलों व कालेजों) में ब्रह्मचर्य और सयम की शिक्षा नहीं दी जाती।

(३) माता-पिता एवं गुरुजनों के प्रति श्रद्धा—माता, पिता और गुरु, ये तीन व्यक्ति मनुष्य को महान् बनाते हैं। अनेक प्रकार से रक्षा करते हैं। खिला-पिला कर पालन-पोषण करते हैं। अनेक प्रकार की विद्याएं पढ़ाकर विद्वान् बनाते हैं। और मोक्ष तक पहुंचने में समर्थ बनाते हैं। इन तीनों का हमे तन, मन, धन से सम्मान करना चाहिये। इनके हम पर बहुत उपकार हैं। गुरुकुलों में माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान और सेवा करना सिखाया जाता है। परन्तु स्कूलों में प्रायः ऐसी शिक्षा नही दी जाती। यहां तक कि स्कूलों में पढ़े हुए लोगों की घटनाएं ऐसी भी सुनी जाती हैं किसी ने अपने माता-पिता को पीटा, उन पर मुकदमा कर दिया किसी ने अपने अध्यापक को घायल कर दिया। पिछले दिनो अहमदाबाद में एक स्कूल के विद्यार्थी ने अपनी अध्यापिका को चाकू मारा। बाद में उस अध्यापिका की अस्पताल में मृत्यु हो गई। ऐसी घटनायें हमारे समाज के लिये लज्जानक हैं, अतः इनसे बचना हो, तो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति ही अपनानी होगी। गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले श्रीरामचन्द्र जी महाराज, लक्ष्मण जी श्रीकृष्ण जी महाराज आदि लोग अपने माता, पिता एवं गुरुजनो का कैसा सम्मान करते थे, यह सर्वविदित ही है।

(४) सरलता और सादगी—गुरुकुलो में सरलता और सादगी की शिक्षा दी जाती है। सत्य का व्यवहार सिखाया जाता है। वास्तव में 'सदा सत्य की ही जीत होती है और सत्य से ही सुख होता है।' भारतीय ऋषियों का वेद के आधार पर सदा यह सिद्धान्त रहा है—"सत्यमेव जयते नानृतम्।" भारत सरकार ने इसी वाक्य का आधा अंश अपना आदर्श वाक्य आज भी बना रखा है। व्यवहार में आज अज्ञानता के कारण कुछ लोगों ने झूठ को अपना लिया है और वे झूठ को लाभदायक समझते है। और यह देन भी आजकल की इस स्कूली शिक्षा पद्धति की ही है, जहां झूठ बोलना लिखना और व्यवहार करना सिखाया जाताहै। परन्तु इस झूठ का समर्थन करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि हमारे इस झूठ का निर्णय जब न्यायकारी ईश्वर के सामने किया जाएगा, तब हमारी अवश्य ही हार होगी। तब तो सत्य की और सत्य बोलने, लिखने और सत्य व्यवहार करने वालों की ही जीत होगी। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र जी का नाम आज तक बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। श्रीरामचन्द्र जी को लोग इसीलिए महान् पुरुष मानते हैं कि उन्होंने जीवन में सदा सत्य का ही पालन किया, कभी झूठ नहीं बोला। प्रमाण के लिये देखें—"अनृतं नोक्तपूर्वं मे न च वक्ष्ये कदाचन।" वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धा काण्ड, सर्ग १, श्लोक १६ में श्रीराम जी का यह वचन। ऐसी सत्यवादिता, सरलता और सादगी की शिक्षा गुरुकुलों में दी जाती है। परन्तु स्कूलों में खूब झूठ, छल, कपट का प्रयोग किया जाता और सिखाया भी जाता है। स्कूलों में सादगी की शिक्षा भी नहीं के बराबर दी जाती है। जिससे स्कूलों के विद्यार्थी फैशन करते और अनेक दुर्गुणों, दुर्व्यसनों से ग्रस्त हो जाते हैं।

(५) तपस्या और आत्मनिर्भरता—गुरुकुलों में व्यक्ति को तपस्वी और आत्मनिर्भर बनाया जाता है जिससे कि वह जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी न घबराये और दृढ़ता से उन परिस्थितियों का मुकाबला कर सके। ऐसा व्यक्ति साहसी, निर्भीक और प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करने वाला होता है, चाहे वह क्षेत्र कला, विज्ञान, अध्यात्म अथवा राजनीति ही क्यों न हो। भारत के भूतपूर्व प्रधान-मन्त्री माननीय श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की शिक्षा गुरुकुलों में ही हुई थी। उनका चरित्र कितना उत्तम था, इसे सभी इतिहास के जानने वाले अच्छी प्रकार से जानते हैं। आज भी गुरुकुलों के पढ़े हुए विद्यार्थी आई०ए०एस० (I.A.S.) बड़ी-बड़ी शिक्षण संस्थाओं कुलपति, उपकुलपति आदि उच्च पदों पर विद्यमान हैं। परन्तु स्कूलों न तपस्या और आत्मनिर्भरता की शिक्षा भी नहीं अथवा बहुत कम दी जाती है। परिणामस्वरूप स्कूल कालेजों के विद्यार्थी आलसी, परावलम्बी (दूसरों के सहारे जीने वाले), विलासी और दीन-हीन हो जाते हैं। परिश्रम के कार्यों से संकोच करते हैं, जैसे खेती करना, घरेलू कला-कौशल इत्यादि कार्यों से। इन कार्यो के करने मे लज्जा और अपमान का अनुभव करते हैं। जब नौकरी नहीं मिलती, तो परिश्रम के इन कार्यों को न करके आत्महत्या तक भी कर लेते हैं। अतः स्कूल, कालेज की शिक्षा से व्यक्ति भीरु (कायर, कमजोर) बनता है, जब कि गुरुकुलीय शिक्षा उसे तपस्वी, ईमानदार और आत्मनिर्भर बनाती है।

इसके अतिरिक्त स्कूल, कालेज में पढ़ने वाले और नगरों में रहने वाले विद्यार्थी सिनेमा, गन्दी पत्रिकाओं, सहशिक्षा आदि दोषों में फंसकर अपना चरित्र भ्रष्ट कर लेते हैं। जब कि गुरुकुलों में ये दोष न होने से चरित्र की रक्षा होती है। इससे बुद्धि शुद्ध-पवित्र बनती है। ऐसी शुद्ध-पवित्र बुद्धि से ही मानव समाज और प्राणिमात्र सुख को प्राप्त कर सकता और दुःख से छूट सकता है। अतः विश्व के कल्याण के लिये एकमात्र उपाय 'गुरुकुल शिक्षा पद्धति को अपनाना' ही है।

ऋषि-बोधोत्सव

२ मार्च ९२, सोमवार
मावलंकर हाल, रफीमार्ग, नई दिल्ली
प्रातः ८ से सायं ४ बजे तक

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का बोधदिवस महाशिवरात्रि के पावनपर्व पर दिल्ली के समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में सोमवार २ मार्च ९२ को प्रातः ८ से सायं ४ बजे तक मावलंकर हाल में ऋषि मेला के रूप में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस शुभावसर पर आप सब सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य
१५ हनुमानरोड, नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष : ३१०१५०, ३११२८०

स्वास्थ्य चर्चा

मधुमेह के लिए रामबाण

मधुमेह के उपचार के लिए इसुलिन का प्रयोग इस राग को जड से समाप्त करने मे असमर्थ है। इसुलिन के प्रयोग से रक्त मे शर्करा के स्तर को भले ही कम किया जा सके, परन्तु इससे कोशिकाए पुष्ट नही हो पाती।

मनुष्य की रक्त कोशिकाए तब अपना कार्य सुचारु रूप से करना बन्द कर देती हैं जब रक्त में सतृप्त वसा की मात्रा बहुत बढ जाती है। अत यदि आहार मे चर्बी युक्त पदार्थों का सेवन सीमित कर दिया जाए तो स्वत ही कोशिकाए स्वस्थ अवस्था मे आ जायेगी।

वस्तुत जब मनुष्य की कोशिकाए रक्त मे उपस्थित कार्बोहाइड्रेट्स को पर्याप्त रूप से भस्म नही कर पाती तो वे शरीर मे पायी जाने वाली प्रोटीन का आश्रय लेने लगती है, फलस्वरूप शरीर के तन्तु क्षीण होने शुरू हो जाते हैं और धमनियो पर वसा की पर्त जमने लगती है। इससे शरीर मे दुर्बलता उत्पन्न होती है।

मधुमेह रोगियो के आहार मे रेशेयुक्त खाद्य पदार्थ और वसारहित वस्तुओ की मात्रा बढ़ाने से इस बीमारी को रोकने मे काफी मदद मिल सकती है। चिकित्सा के क्षेत्र मे किए गए अनुसन्धान भी इस तथ्य को सिद्ध करते हैं। 'अमेरिकन जर्नल आफ क्लीनिकल न्यूट्रीशन' में प्रकाशित एक रिपोर्ट मे बताया [गया है कि एक अध्ययन मे ऐसे २० रोगियो को जो इन्सुलिन का प्रयोग कर रहे थे अधिक रेशेयुक्त व कम वसा वाले आहार सेवन करने पर पाया गया कि मात्र १६ प्रतिशत दिनो के भीतर ४५ मरीजो को इन्सुलिन के चगुल से मुक्ति मिल गई।

मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति इन्सुलिन के अतिरिक्त कई अन्य प्रकार की दवाइया भी लेते हैं। इनके शरीर मे भयानक कुप्रभाव होते हैं। इनसे दिल के दौरे की सम्भावनाए बहुत बढ जाती हैं और इसके अतिरिक्त रक्ताल्पता, पीलिया व कई चर्म रोग उत्पन्न हो जाते हैं। चूकि मरीज के शरीर मे शर्करा स्तर मे हो रहे परिवर्तनो की सही जानकारी रखना असम्भव है अत कई बार आवश्यकता से अधिक दवा ले लिए जाने से कई प्रकार की जटिलताए उत्पन्न हो जाती है।

मधुमेह रोगियो के शरीर मे रक्त नलिकाओ में वसा की परतें जमा हो जाने से रक्त का प्रवाह प्रभावित हो जाता है जिससे दिल के दौरे का खतरा बढ जाता है। यदि भोजन में फाइबरयुक्त और वसारहित तत्वो का बाहुल्य हो तो इस भयकर खतरे मे बचा जा सकता है।

प्रश्न उठता है कि वे कौन से पदार्थ हैं जो अधिक रेशेयुक्त और कम वसावाला आहार प्रदान कर सकते हैं। यह निरपवाद रूप से कहा जा सकता है कि खाद्यान्नो दाले, सब्जिया व फल अधिक रेशेयुक्त व कम वसा युक्त पदार्थ हैं।

मिनेसोट्टा विश्वविद्यालय के डा डेविड स्नोहन ने २१ वर्षों तक २५,००० व्यक्तियो पर किए गए सर्वेक्षण से यह तथ्य सिद्ध किया है कि शाकाहारी लोगो मे मासाहारियो की अपेक्षा मधुमेह की सम्भावना बहुत कम रहती है।

विटामिन 'सी' से भरपूर आमला तो विशेष रूप से मधुमेह रोगियो के लिए हितकर है, विशेषकर जब करेले के रस मे मिलाकर इसका सेवन किया जाए। आवला और करेले के इस मिश्रण का सेवन करने से मधुमेह रोगियो की कोशिकाए स्वस्थ रूप से अपना कार्य प्रारम्भ कर देती हैं आ पशुओ के इन्सुलिन की कदापि आवश्यकता नही रहती। इससे मधुमेह के फलस्वरूप होने वाली आखो की बीमारिया भी जल्द ठीक हो जाती हैं। एक अन्य फल है जामुन—यह भी मधुमेह रोगियो के लिए रामबाण सिद्ध हुआ है। ऐसा ही एक अन्य फल है चकोतरा जिसका सेवन इस रोग को रोकने मे सक्षम सिद्ध हुआ है।

मधुमेह के इलाज मे करेला तो एक पारम्पारिक औषधि है। इसके रस मे एक ऐसा तत्व होता है जो रक्त में शर्करा के स्तर को सीमित कर देता है। कुछ अन्य फल, फलिया व सब्जिया जो मधुमेह को रोकने मे प्रभावकारी सिद्ध हो सकती हैं इस प्रकार है—

मेथी, मूगफली, टमाटर, सलाद पत्ता, सोयाबीन, चना आदि।

आम के पेड पर निकली नई पत्तिया मधुमेह के उपचार मे प्रभावी पाई गई हैं। इस प्रकार एक सन्तुलित आहार जो रेशेयुक्त और वसारहित पदार्थों से भरपूर हो मधुमेह को रोक सकता है। —पन्नालाल

स्वर्गीया आदर्श जी एक आदर्श आर्य महिला थो



आर्य स्त्री समाज पजाबी बाग वैस्ट की मन्त्राणी श्रीमती आदर्श कुमारी (धर्म पत्नी प्रिसीपल ओमप्रकाश जी तलवार पूर्व महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य) का निधन तिथि (१६ १-१९९२) को सर गगा राम अस्पताल मे प्रात ७-३० बजे हुआ था उन्हे आकस्मिक हार्टअटेक हुआ। अन्तष्टिके बाद श्मशान भूमि मे तीसरे दिन उनकी अस्थिया यमुना मे प्रवाहित की गई और रविवार १९ जनवरी को साय ३ बजे आर्य समाज पजाबी बाग मे उनकी मधुर स्मृति मे यज्ञ तथा श्रद्धाजलि सभा हुई जिसमे दिल्ली के अनेक सस्थाओ के वक्ताओ ने उनके कार्यो का यशोगान किया गया अश्रु पूर्ण नेत्रो से दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि अर्पण करने के लिए विशाल हाल खचा खच भरा हुआ था।

श्रीमती आदर्शकुमारी का जन्म १४ सितम्बर १६३३ को मजीठा (जिला अमृतसर मे हुआ था) उनकी प्रारम्भिक शिक्षा धर्मकोट रधावा जिला गुरदासपुर की आर्य पुत्री पाठशाला मे हुई थी, फिर उन्होने लाहौर मे प० भगवतदत्त जी के विद्यालय से प्रभाकर की परीक्षा पास की उनके घर मे सदा यज्ञ होता था। और सदैव गौ घर मे रहती थी।

श्रीमती आदर्श जी का विवाह २८-१२-१९५२ को ओमप्रकाश से भरमाड जिला कागडा (हिमाचल प्रदेश) मे हुआ था अभी कुछ दिन पहले उन्होने अपना ४०वा विवाह दिन मनाया था। उनके पति की मान्यता है कि वे भारीया मन्त्रीवरा सखा परिजना सा एका बहुत्व गता की साक्षात मूर्ति थी, उनके सतत् सहयोग एव मधुर प्रेरणा से वे एक साधारण अध्यापक से प्रिन्सीपल बने बाद मे आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के मन्त्री बने आदर्श जी ने परिवार तथा समाज की निष्ठा पूर्वक सेवा की आदर्श जी के जीवन म सेवा की भावना कूट कूट कर भरी हुई थी।

उनकी प्रेरणा दायक मान्यता थी कि दैनिक यज्ञ से उन्हे प्रभु कृपा मिली और सास ससुर की सेवा से अनेक सौभाग्य प्राप्त हुए। वे पहले लगभग दस वर्ष आर्य स्त्री समाज अनार कली मन्दिर मार्ग की मन्त्राणी रही और बाद मे पजाबी बाग आर्य स्त्री समाज की लगभग १५ वर्ष से मन्त्राणी थी। दीन दुखियो की सेवा करना तथा आर्य सस्था की सेवा का उन्होने एक प्रवाह सा बहा दिया और अपने सहयोगी अधिकारी मण्डल के साथ लगभग हर वर्ष १५ या २० हजार की सहायता देती थी लगभग १० सस्थाओ को मासिक सहायता की एक अदभुत योजना बहनो से अलग-अलग चन्दा इकट्ठा करके भी उनके कार्य काल मे बनी।

सभी वक्ताओ ने आदर्श जी का गुण गान करते हुए कहा कि वे सचमुच आदर्श महिला थी निष्ठा एव स्नेह की साक्षात मूर्ति थी। लगन शीलता मे अद्वितीय थी अपने घर मे आर्यत्व की लहर चलाये रखने मे सदा प्रयत्नशील थी और इसका प्रकट प्रमाण दो बातो से मिलता है। एक दैनिक यज्ञ तथा वेद का स्वाध्याय दूसरा पुत्र जिस दिन १८ वर्ष का हुआ उसी दिन उसे आर्य समाज का सदस्य बनाया सरलता एव सौम्यता की वह देवी थी। कभी किसी को कडवा वचन कहते नही देखा गया।

८७ परिवारों के ४०० से अधिक ईसाई वैदिक धर्म मे

५,६ फरवरी ९२ को फुलवाणी जिले के गण्डगा एव सदनमेडी मे पुनर्मिलन समारोह का आयोजन उत्साहमय वातावरण मे श्री स्वामी धर्मानन्दजी प्रधान उत्कल आर्य'प्रतिनिधि सभाकी अध्यक्षता मे हुआ। इस अवसर पर ८७ परिवारो के ४०० से अधिक ईसाई वैदिक धर्म मे दीक्षित हुए।

इस आयोजन के लिये ग्रामवासी अति उत्साहित थे श्री स्वामी जी एवं अन्य विद्वानो के स्वागत के लिये ३ कि० मी० दूर गाजे बाजे के साथ सैकडो की सख्या मे आये हुए थे। इसके साथ पूरा ग्राम वैदिक धर्म मे दीक्षित हो गया, यहा आर्य समाज की स्थापना भी हो गयी। और गिरजाघर मे ताला लग गया। सायकाल गुरुकुल ग्रामसेना के होनहार ब्र० कुन्जदेव जी का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ, इस अवसर पर भी स्थानीय ब्लाक समिति के चेयरमैन एव कई पचायतो के सरपच तथा भारी सख्या मे जनता उपस्थित थी।

इस अवसर पर श्री स्वामी जी के साथ श्री दासरथी प्रधान, श्री नारायण शास्त्री, श्री भास्कर नष्ठिक, श्री पीताम्बर आर्य ने जनता को ईसाई षडयन्त्र से सावधान किया तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार पर जोर दिया।

विधिकेसन शास्त्री मन्त्री

सूरजकुण्ड के मेले पर संघर्ष के वातावरण में यज्ञ किया गया

आजकल हरयाणा प्रदेश के प्रसिद्ध स्थान सूरजकुण्ड जिला फरीदाबाद मे हस्तशिल्प कला से सम्बन्धित एक मेला लग रहा है, जहा प्रतिदिन भारी सख्या मे इस मेले को देखने के लिए पर्यटक आते हैं। मेले मे एक चोपाल बनाई गई है जिसके एक चबूतरे पर हवनकुण्ड भी बनाया गया है। यहा श्रद्धालुओ की मांग पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अध्यापको तथा ब्रह्मचारियो द्वारा ९ फरवरी रविवार को यज्ञ किया गया। परन्तु तत्कालीन मेला प्रबन्धक श्री रामनिवास इस परोपकारी कार्य को सहन नही कर सका और उसने पुलिस को आदेश दिया कि हवन करने वाले बदमाशो को मारपीट करके भगा दो। उनको समझाने का यत्न किया गया कि यज्ञ से चारो ओर सुगन्धी फैलती है और वातावरण शुद्ध होता है। उन्होने एक न सुनी और यज्ञ करने वालो को गिरफ्तार करने की धमकिया दी। गुरुकल ब्रह्मचारियो ने यज्ञ पूरा करके ही शान्तिपाठ किया। श्री रामनिवास के इस यज्ञ विरोधी आदेश की आर्यसमाज के अनेक नेताओ ने निन्दा की है।

—केदारसिंह आर्य

आर्यसमाजों के निर्वाचन

—आर्यसमाज सीतापुर, चौ० रनवीरसिंह प्रधान, श्री वीरेन्द्रसिंह चौहान मन्त्री, श्री कृष्ण कुमार आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज इन्दिरा नगर लखनऊ, श्री देवेन्द्र कुमार डोंगरा प्रधान, श्री रामकृष्ण मन्त्री, श्री शिवधर मौर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज भीमनगर गुडगाँव, श्री जसवन्त राय गुगलानी प्रधान, श्री अमीरचन्द्र ओबर मन्त्री, श्री हीरानन्द आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज रांची, श्री शत्रुघ्नलाल गुप्त प्रधान श्री रणजीत जालान मन्त्री, श्री टेकचन्द आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज रामनगर गुडगाव, श्री राजेन्द्र प्रसाद प्रधान, श्री ओम-प्रकाश चुटानी मन्त्री, ताराचन्द्र मनचन्दा कोषाध्यक्ष।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा हरिद्वार, श्री सुमन्त सिंह आर्य प्रधान, श्री देवराज मन्त्री, श्री राममूर्ति कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद, श्री विद्या सागर अरोडा प्रधान, श्री श्रद्धानन्द जी मन्त्री, श्री जयन्ती प्रसाद गुप्त कोषाध्यक्ष।

आर्य समाज इन्दोर बुलन्दशहर, श्री राजेन्द्र प्रकाश गहलोत प्रधान श्री देवेन्द्र शर्मा मन्त्री, श्री रघुवीर शरण शर्मा कोषाध्यक्ष।

—आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाँव, श्री ओमप्रकाश आर्य प्रधान, श्री ओम-प्रकाश चुटानी मन्त्री, श्याम सुन्दर आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज चौक प्रयाग, श्री पन्नालाल गुप्त प्रधान, श्री मूलचन्द्र अवस्थी मन्त्री श्री सज्जान सिंह कोषाध्यक्ष।

—आर्य प्रतिनिधि सभा हि० प्र०—आर्य समाज सुन्दर नगर कालोनी मे दिनाक ९-२-९२ को आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमे निम्नलिखित अधिकारी चुने गये। प्रधान—स्वामी सुमेधा-नन्द जी, उपप्रधान—श्री रोशनलाल बहल प० विद्याधर, श्रीमती चादरानी, मन्त्री—श्री कृष्णचन्द्र आर्य। सयुक्त मन्त्री—श्री भगवान देव चैतन्य, वेद प्रचार अधिष्ठाता। कोषाध्यक्ष—श्री अरुणेश सूद। लेखा निरीक्षक—श्री करतार नाथ गण्डोतरा। इनके अतिरिक्त बीस अन्तरग सदस्य तथा पाच प्रतिष्ठित सदस्य भी चुने गये

—आर्यसमाज माडल बस्ती शीदी पुरा दिल्ली श्री चुन्नीलाल जी विज प्रधान, श्री अमरनाथ जी मन्त्री श्री विजय दास जी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज गढवा, श्री शिवनाथ तिवारी प्रधान, श्री जीवनचन्द्र जी आजाद मन्त्री, श्री ज्वाला प्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मधुपुर, श्री तारकेश्वर कुंवर प्रधान, श्री वासुदेव दास आर्य मन्त्री श्री रविन्द्रकुमार मराबाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बडेडी, श्री चन्द्र किरण आर्य प्रधान, श्री विजयपाल आर्य मन्त्री, श्री पूर्णसिंह आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज पलडी मेरठ- श्री जुगलकिशोर आर्य प्रधान, देवेन्द्र कुमार आर्य मन्त्री, अशोककुमार टेलर्स कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज रजोली, डा० बुद्धदेव आर्य प्रधान, रामप्यारे प्रसाद मन्त्री, डा० देवेन्द्र प्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज छाता मथुरा, श्री नत्थीलाल जी गुप्त प्रधान, श्री चन्द्र-प्रकाश आर्य मन्त्री, श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता कोषाध्यक्ष।

विश्व शान्ति गायत्री महायज्ञ धूम-धाम से सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना प्रतिवर्ष अपने वार्षिकोत्सव के रूप मे मकर सक्रान्ति से आरम्भ होने वाले गायत्री महायज्ञ जो कि १४ जनवरी से १९ जनवरी ९२ रविवार तक बडी धूम-धाम से महात्मा सुमना यति की अध्यक्षता मे मनाया गया। हरिद्वार से योगधाम के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती पधारे हुए थे। उन्होने लुधियाना की आर्य जनता को अपने उपदेश अमृत से अत्यन्त प्रभावित किया।

पुरुष समाज तथा आर्य युवक सभा ने गायत्री महायज्ञ के प्रचार प्रसार मे स्त्री समाज की भरपूर सहायता की। अत: स्त्री समाज श्री रणवीर जी भाटिया तथा महामन्त्री महेन्द्रप्रताप और श्रवण कुमार जी की विशेष ऋणी हैं।

—जनकरानी आर्या, महामन्त्री

सत्य का शोधक

(पृष्ठ १ का शेष)

तथा सेवा जैसे परम भाव छिपे हुए हैं। मैं समझता हू कि यदि आज की मानव जाति इन गुणो को अपने अन्दर समाहित कर ले, तो वर्तमान समय की आपा धापी, झगडे-विवाद तथा अशाति से उसे मुक्ति मिल सकती है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प भी नहीं है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने एक स्वस्थ एव प्रगतिशील समाज की स्थापना के उद्देश्य से ही आर्य समाज की स्थापना की थी। अपनी तीक्ष्ण बौद्धिकता, सटीक व्याख्यात्मक शक्ति तथा दृढ आत्मविश्वास के द्वारा उन्होने धर्म की गहरी व्याख्या की। उन्होने अपने समय के समाज में प्रच-लित कर्मकाडो, आडम्बरो, अधविश्वासो तथा रूढिगत परम्पराओ का पूरे साहस के साथ विरोध किया। उन्होंने जाति प्रथा को असगत ठहराते हुए कहा कि "जो दुष्ट कर्मकारी द्विज को श्रेष्ठ तथा श्रेष्ठ कर्मकारी शूद्र को नीच माने तो उससे पक्षपात अन्याय, अधर्म दूसरा अधिक क्या होगा।" इसी प्रकार उन्होंने नारी को समाज मे सम्मानजनक स्थान दिलाने मे महत्व-पूर्ण भूमिका निभाई। दयानन्द सरस्वती जी के इन प्रयासो से समाज में एकता की भावना पैदा हुई और बिखरे हुए समाज मे एकसूत्रता आई। उनकी इन बातो का भविष्य में जबर्दस्त असर हुआ। इस असर को स्वतत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका के रूप में देखा जा सकता है। मुझे मालूम है कि उस समय आर्य समाजियो को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का एक महत्वपूर्ण कार्य मैं यह मानता हू कि उन्होने वेद को सर्वोच्च सत्य घोषित करके हमारे देश के लोगो मे स्वा-भिमान और आत्मविश्वास का भाव भरा। अग्रेजो के प्रचार-प्रसार और व्यवहार के कारण भारतीयो के मन मे धीरे-धीरे जो हीन भावना घर करती जा रही थी, उसे दयानन्द सरस्वती जी ने दूर किया।

जब भारतीयो को यह आभास हुआ कि उनकी अपनी सास्कृतिक धरो-हर कितनी अधिक मूल्यवान है, तब उनमें एक नया जोश, एक नया आवेग पैदा हुआ। इससे हमारे स्वतन्त्रता आदोलन को एक नई गति और ऊर्जा मिली। केवल इतना ही नही बल्कि मुझे तो यह भी लगता है कि यहीं से स्वदेशी की भावना ने भी जोर पकडा। दयानन्द सरस्वती जी ने जिस स्व-भाषा और स्वसस्कृति का गौरव गान किया, उसे अपनाकर बाद के हमारे नेताओ ने पूरे देश मे स्वदेशी आन्दोलन की धूम मचा दी। यहाँ तक कि स्वदेश की इस चेतना का व्यापक प्रभाव हम बीसवी सदी के आरम्भ के साहित्य तक मे गहरे रूप मे पाते हैं। इस प्रकार उस समय की स्थितियों की दृष्टि से उनका यह कार्य ऐतिहासिक महत्व का है। मुझे विश्वास है कि हमारे देश की वर्तमान चेतना स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारो से निरन्तर प्रेरणा और दिशा प्राप्त करती रहेगी। इस दिशा मे आर्य समाज जो कार्य कर रहा है, उसे मैं अत्यन्त उपयुक्त और आवश्यक मानता हू। नि सन्देह मनुष्य के व्यक्तित्व और विचारों मे आवश्यक उपयुक्त परिवर्तन लाने की जो शुरुआत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने की थी, उसे हमे जारी रखना है, तभी एक स्वस्थ एव शान्तिपूर्ण समाज की रचना हो सकेगी।

अपने इन्ही शब्दो के साथ मैं महान ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धाजलि निवेदित करता हू। जय हिन्द

(स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस समारोह में उपराष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा का भाषण)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०४१/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१-२-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U नं० ९१
R N 686/57 Licensed to post without Prepayment, Licence No. U 93 Post in N.D P.S.O.on 20,21 2-1992

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज आर्यनगर (खासपुर) टाण्डा का ९६वा वार्षिकोत्सव १ से ५ मार्च तक समारोह पूर्वक सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। मगलवार तीन मार्च को अपराह्न शोभा-यात्रा का आयोजन किया गया है।

—आर्यसमाज हवडा अपना ७० वा वार्षिकोत्सव २ अप्रैल से ५ अप्रैल तक धूम-धाम से मना रहा है इस अवसर पर अनेकों कार्यक्रमो का आयोजन किया जायेगा तथा आर्य जगत् के प्रसिद्ध महात्मा तथा भजनोपदेशक अपने विचार प्रकट करेंगे।

—नगर आर्य समाज जौनपुर अपना १८वा वार्षिकोत्सव नगर पालिका मैदान जौनपुर के भव्यपडाल मे दिनाक २ से ५ मार्च तक समारोह पूर्वक मना रहा है। इस अवसर पर अनेको सम्मेलनो का आयोजन किया गया है। तथा आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा उपदेशको का समागम होगा।

पदमनगर में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

आर्य महिला समाज की श्रीमती गोपीदेवी, श्रीमती चन्द्रकाता पालीवाल ने बताया कि १२ तारीख को युग पुरुष स्वामी दयानन्द जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे पदमनगर मे आर्य समाज स्कूल मे दोपहर के ४ बजे नि शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे श्रीमती रसीला मिश्रा, डा० सुनीता वर्मा, डा० ममता सेन गुप्ता, महिला रोग विशेषज्ञ, डा० एस०सी० जैनी, एवम् चिकित्सक डा० मुनीश मिश्रा, नाक, कान, गला रोग विशेषज्ञ डा० राजेश वर्मा चर्मरोग विशेषज्ञ डा० डी० के० गवे, डा० बसत वर्मा, डा०जी०पी० शाह, डा० दिलीप जैन हड्डी रोग विशेषज्ञ—डा० सतीश अग्रवाल डा० अतुल शुक्ला ने अपनी सेवाए प्रदान की।

इस शिविर का शुभारम्भ दैनिक स्वदेश के प्रधान सम्पादक एव उपाध्यक्ष भारतीय भाषाई समाचार-पत्र सगठन बम्बई श्री राजेन्द्र शर्मा ने किया। अध्यक्ष श्री रमेशचन्द जी श्रीवास्तव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा म०प्र० विदर्भ नागपुर थे।

शोक सभा एवं रस्म पगड़ी

बड़े दु ख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारे पूज्य पिता श्री रणजीत सिंह जी का देहान्त दिनाक ११-२-९२ मगलवार को हृदय गति रुकने से हो गया है। श्रद्धाञ्जलि सभा एव रस्म पगडी (क्रिया) हमारे निवास स्थान ९२, कृष्णागली, पुरानी गुप्ता कालोनी, निकट विजय नगर, दिल्ली-११०००९ पर २३ फरवरी रविवार साय २ बजे से ४ बजे तक सम्पन्न होगी।— ब्रह्मचारी राजसिंह

वैवाहिक विज्ञापन

पूर्व जागीरदार ठाकुर घराने की आर्यकन्या स्वस्थ सुन्दर सौम्य स्वभाव रग साफ उम्र २१ वष, कद ५-४ इच सिलाई कढ़ाई हस्तकला मे व गृह-कार्यों मे पूण दक्ष, कन्या हेतु गुणकर्मानुसार शाकाहारी 'क्षत्रिय आदर्श आर्य वर चाहिये, राज० दिल्ली मध्यभारत और गुजरात तक वरीयता। वैदिक विवाह शीघ्र।

२—इसी जागीरदार घराने का श्रेष्ठ ब्रह्मचारी आयुर्वेद रत्न शास्त्री (तर्क सिद्धान्त) योग मे सलग्न स्वस्थ, अति सुन्दर, रग साफ, सुडौल सुगठित उम्र २७ वर्ष, कद ५ ६ इच, अति प्रभावी व्यक्तित्व, इकलौता वीर पुत्र हेतु वैदिक सस्कारी वेद विदुषी आर्य कन्या की शीघ्र आवश्यकता है। गुरुकुल स्नातिका को विशेष वरीयता, प्रान्तीय व जातीय बन्धन नही है।

उपरोक्त दोनो रिश्तो हेतु शीघ्र पत्र व्यवहार फोटो सहित करे—
पता—ठाकुर हनुवन्तदेवसिंह 'आर्य नरेश'
ठिकाणा—आर्य निकेतन नाणाबगर
सस्थापक—आर्य वीर दल (आर्य समाज नाणा)
पो०—नाणा तह० बाली जि० पाली (राजस्थान)
प्रेष सूचनाक ३०६५०४ (आर्यावर्त)

स्वदेश समाचार

(पृष्ठ २ का शेष)

चन्द्रशेखर आजाद, प० रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिरी, और ठाकुर रोशन सिंह के बलिदान दिवस तथा डा० राजेन्द्र प्रसाद की जयन्ति मनाई गई बच्चों के गीत, भजन, भाषण, सगीत आदि विभिन्न कार्यक्रम सम्मिलित... बच्चों ने भाग लिया—आशुतोष आर्य मधुर चोपडा, कविता चोपडा प्रीति कहेल, राजीव सूद, विशाल सूबर, सीमा ओबराय, अजय ओबराय, राजेश कैरा, किरण सोमिया, दीपाली साहनी पुनम चोपडा और स्मृति चोपड़ा। अन्त में प्रो० भारद्वाज (प्रधान) ने बच्चो को पुरस्कार वितरण किया और उक्त महापुरुषों के जीवन पर प्रकाश डाला। जिसमें उन्होंने सोमनाथ मन्दिर, जिसे मुस्लिम हमलावर मुहम्मद गजनी ने १७ बार लूटा और तोडा था, के नवनिर्माण की आधारशिला भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने नेहरू जी के इच्छा के विरुद्ध भी, रखकर भारत की खोई हुई अस्मिता लौटाई की है, इत्यादि घटनाओ के आधार पर इन महापुरुषों के देश प्रेम का परिचय दिया। श्री राजेन्द्र चोपडा ने इस आयोजन को सफल करने के लिए अथक परिश्रम किया और इसका सचालन भी। श्री धर्मपाल वसीम और श्रीमती सुमन चोपड़ा ने एतदर्थ विशेष सहयोग दिया।

आर्य समाज लन्दन के द्वारा पारिवारिक सत्सग, हवन, प्रवचन, विविध सस्कार, विवाह विषयक नि शुल्क सेवा हिन्दी कक्षा आदि का सफल आयोजन किया गया। इन सभी कार्यों मे श्रीमती प्रतिमा बहल, सेक्रेटरी, का अथक परिश्रम उल्लेखनीय था।

—ज्ञानाथी आचार्य

लासएंजलस में वेदप्रचार

वैदिक धर्म समाज लासएंजलस अमरीका की ओर से धन्यवाद का दिन (Thanks giving day) तिथि २८ नवम्बर बृहस्पतिवार को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस सन्दर्भ मे यह बताना आवश्यक है कि यह पर्व हरवर्ष नवम्बर के अन्तिम साप्ताहिक बृहस्पतिवार को अमरीका में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सभी कार्यालय इस दिन बन्द रहते हैं सरकारी छुट्टी होती है लोग घरों में बड़े बड़े भोज करते हैं।

यह उत्सव आर्य समाज की ओर से लासएंजलेस में पहली बार मनाया गया। आर्य परिवारो ने बड़े उत्साह पूर्वक ढग से इसमें भाग लिया। कार्यक्रम ठीक ४-३० सायकाल यज्ञ हवन से आरम्भ हुआ। वेदमन्त्रो से प्रभु को धन्यवाद देते हुये विशेष आहुतिया दी गई। आर्य भक्तो ने प्रभु स्तुति के सुन्दर भजन गाये। सारा कार्यक्रम श्रीमती कमला शर्मा जी के पुरोहित्य मे शान्ति पूर्वक ढग से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने मिलकर ऋषि लगर का आनन्द लिया।

—मदनलाल पुरोहित
वैदिक धर्म समाज

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० स दानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष ३१७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक ५]   दयानन्दाब्द १६७   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२   फाल्गुन कृ० १२   सं० २०४८   १ मार्च १९९२

अजमेर विश्व विद्यालय का नाम दयानन्द विश्व विद्यालय रखा जायेगा

श्री दिग्विजय सिंह की घोषणा

अजमेर १५ फरवरी।

राजस्थान सरकार के गृहमन्त्री श्री दिग्विजयसिंह ने कहा है कि अजमेर विश्वविद्यालय का नाम दयानन्द सरस्वती के नाम पर ही रखा जायेगा। वे शनिवार की शाम को दयानन्द महाविद्यालय के सभागार मे आयोजित दयानन्द बाल निकेतन के सालाना जलसे मे मुख्य अतिथि के रूप मे बोल रहे थे।

गृहमन्त्री ने इस बात को दोहराया कि राज्य सरकार अजमेर विश्वविद्यालय का नाम दयानन्द सरस्वती के नाम पर रखने की बात पर सिद्धान्त रूप से सहमत हो गई है। कुछ अड़चन नाम को अन्तिम रूप देने मे ही आ रही है। इसकी वजह बताते हुये उन्होंने कहा कि रोहतक मे कायम विश्वविद्यालय भी महर्षि दयानन्द के नाम पर ही है, अत अजमेर विश्व विद्यालय के नाम मे थोडा अन्तर रखना आवश्यक हो गया है। इसका नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती विश्व विद्यालय भी हो सकता है।

आर्यसमाज अजमेर के प्रधान दत्तात्रय आर्य ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को अपने १९-२-९२ को लिखे पत्र मे लिखा है कि अजमेर विश्व विद्यालय का नाम केवल दयानन्द विश्व विद्यालय रखना कई दृष्टियो से उपयुक्त और सार्थक होगा अत आप अपने स्तर पर राजस्थान सरकार के मुख्यमन्त्री को यह प्रेरणा दें कि महर्षि या स्वामी के विवाद को छोडकर अजमेर विश्व विद्यालय का नाम दयानन्द विश्व विद्यालय ही रखा जाना चाहिये।

सभा प्रधान ने राजस्थान सरकार के मुख्यमन्त्री श्री भैरोसिंह जी शेखावत तथा गृहमन्त्री को इस सम्बन्ध मे तार भेजा है तथा विस्तृत पत्र लिखकर अजमेर विश्व विद्यालय का नाम दयानन्द विश्व विद्यालय रखे जाने का आग्रह किया है।

श्री यश जी विजयी

दैनिक मिलाप के सम्पादक, प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तथा स्व० आनन्द स्वामी के सुपुत्र श्री यश जी पंजाब के लोक सभा चुनाव मे भारी बहुमत से विजयी हुये है। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनको बधाई सन्देश प्रेषित कर प्रसन्नता व्यक्त की है।

पंजाब की जनता ने राष्ट्रवासियों का दिल जीत लिया

नई दिल्ली २१ फरवरी।

पंजाब के ऐतिहासिक चुनाव परिणामो पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री नरसिंहराव को भेजे अपने बधाई सन्देश मे कहा है कि कांग्रेस की यह विजय उनकी योग्यता और राजनीतिक विद्वता का ही परिणाम है। इस विजय को राष्ट्रवादी शक्तियो की देशद्रोही ताकतो पर विजय कहते हुए स्वामी जी ने लिखा हैं कि पंजाब की जनता ने पूरे राष्ट्रवासियों का दिल जीत लिया है।

स्वामी जी का कहना है कि पंजाब की जनता ने बहुत कष्ट भोगे है और अन्तर्राष्ट्रीय ताकतो से लम्बी लडाई लडी है परन्तु इस चुनाव के द्वारा एक बार फिर उसने यह सिद्ध कर दिया है कि लोकतान्त्रिक मूल्यो और भारतीय संविधान मे उनकी गहरी आस्था है।

पंजाब के इन चुनावो मे लोकसभा के लिये चुने गये १३ सदस्यो मे आर्य नेता श्री यश तथा युवा तुर्क श्री कमल चौधरी भी शामिल है। श्री यश जी पंजाब के प्रसिद्ध पत्रकार है तथा स्व० महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपुत्र हैं। श्री कमल चौधरी स्व० चौधरी बलवीर सिंह जी के सुपुत्र है जिनकी १० मई १९८५ को उग्रवादियो द्वारा हत्या कर दी गई थी। श्री कमल चौधरी दूसरी बार लोक सभा के लिये चुने गये हैं।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि गुणगान

(आचार्य धर्मदेव विद्यामार्तण्ड देवमुनि वानप्रस्थ)

आनन्द कुटीर, ज्वालापुर

ऋषिवर का गुणगान करें हम, वाणी सफल बनावें।
उनके गुणगण को कर धारण, जीवन सफल बनावें॥
सत्यव्रत धारी वे यतिवर, नहिं असत्य लवलेश।
पढ़ सत्यार्थ प्रकाश सदा हम, ज्ञान सत्य का पावें॥
खोज सत्य की करते ही जो, वन गिरि पथ पे भटके।
पाया उसे वेद योग बल, कैसे हम भी पावें॥
निर्भयता के मूर्त रूप जो, सिंह समान गरजते।
उनकी उस निर्भयता को हम, निज जीवन में लावें॥
एकेश्वर पूजा सिखलाई, प्रतिमा पूजा दूर भगाई।
इससे सबको शान्ति दिलाई, हम भी प्रभु को ध्यावें॥
सब ईश्वर के पुत्र समान, जन्म जाति का भेद न मान।
ऐक्य पत्र मे बांधा जिनने, उनको सीस नमावें॥
वेद सत्य विद्या की पुस्तक, जो अज्ञान तिमिर के नाशक।
उनका पठन तथा पाठन कर, परम धर्म अपनावें।
महिलाओं का मान करो तुम तिरस्कार उनका न करो तुम।
इस शिक्षा के दाता यतिवर, के प्रति आदर दिखलावें॥
ब्रह्मचर्य के तप से जिन ने, पाई थी यम पर भी जीत।
उन आदित्य ब्रह्मचारीवर को, न कभी बिसरावें॥
तेरी इच्छा पूर्ण सदा हो, तूने अच्छी लीला की।
कह कर कूच जगत् से करने वाले को दिल बिठलावें॥
जीवन सच्चा आर्य बनावें, मिलकर सब पाखण्ड मिटावें।
वैर विरोध परस्पर जो है, उसे आग की भेंट चढ़ावें॥
सर्व शक्तिमय ऐसा बल दे, हृदय शुद्ध पावन निश्छल दे।
ऋषिवर स्मरण सदा स्फूर्ति दे, परम देव को ध्यावें॥

ईसाई स्कूल में नमस्ते करने की सजा

'गुडमार्निग' की जगह 'नमस्ते' करने वाली एक अबोध छात्रा को सेन्ट जोसफ स्कूल की अध्यापिका ने पीटते-पीटते लहूलुहान कर डाला। यह घटना बरेली के कान्वेंट संस्कृति के सेन्ट जोसफ स्कूल की है जो फरवरी मास के दूसरे सप्ताह में घटी।

पहली कक्षा की छात्रा शिवि सक्सेना जैसे ही स्कूल पहुंची उसने अपनी मैडम (अध्यापिका) सुश्री किरण से 'गुडमार्निग' न कहकर 'मैडम जी नमस्ते' कह दिया। बस फिर क्या था—मैडम जी बालिका पर टूट पड़ीं। उसका हाथ मरोड दिया तथा गाल पर एक के बाद एक कई तमाचे जड़ डाले। उन्हें जब इससे भी संतोष नहीं हुआ तो अबोध बालिका शिवि को 'मुर्गा' बनने की सजा सुना दी। और फिर 'मुर्गा' बनी हुई उस बालिका की 'फुट्टे' से पिटाई की। इससे शिवि की अंगुली लहूलुहान हो गई। शिवि के पिता खून से लथपथ अपनी बिटिया को साथ लेकर जब प्राचार्या के पास गए तो उन्होंने तुनककर कहा—'यह मामला अनुशासन का है। हमारे स्कूल में अनुशासन बहुत सख्त है। मैं कुछ नहीं कर सकती।'

—शिवकुमार गोयल

सूचना

समस्त आर्य जगत को सूचित किया जाता है कि श्री बाल दिवाकर हंस सभा कार्यालय में यदा कदा ही आते हैं अतः उनसे पत्र-व्यवहार करने वालों से निवेदन है कि उनके घर के पते पर ही पत्र व्यवहार करें। पता— पं० बालदिवाकर हंस
५४६ "अरुणोदय" विकासनगर
नौली, स्टे० नौली जि० गाजियाबाद

आर्य समाज

१—आर्य समाज वर्तमान १९वीं सदी का महानतम् धार्मिक आन्दोलन है।
(ब्लान्ट १९११ की जनगणना की रिपोर्ट)

२—आर्य समाज शिक्षित हिन्दुओं के सामने सुनिश्चित सिद्धान्त प्रस्तुत करता है जिनका मूलस्रोत वेद और आर्य परम्परायें हैं। आर्य समाज सामाजिक और शैक्षिक उन्नति की ऐसी योजना प्रस्तुत करता है जिसके बिना वास्तविक उन्नति सम्भव नहीं है।

—सर हर्बर्ट रिसले

३—संगठित कार्य दृढ़ता उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्य-समाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता।

—सुभाषचन्द्र बोस

४—आर्य समाज एक वास्तविकता है जिससे जन साधारण का आश्चर्य जनक उत्थान हुआ है।

—यदुनाथ सरकार

५—आर्य समाज ने हिन्दू समाज को भले आदमी के रहने योग्य बनाया।

—राजगोपालाचारी

विदेश समाचार

उत्तरी अमेरिका में आर्य सम्मेलन

टोरान्टो आर्य समाज (कनाडा) की ओर से आगामी १५-१६ मई-९२ को उत्तरी अमेरिका के समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन के द्वारा इस क्षेत्र के आर्य संस्थाओं को संगठित करके आर्य परिवारों की समस्याओं और आर्य समाजों के बीच आपसी तालमेल और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के विषय में विशेष रूप से विचार करके आर्यजनों द्वारा वैदिक मूल्यों को जीवन में अपनाने पर बल दिया जाएगा।

सार्वदेशिक सभा ने इस सम्मेलन के आयोजन के लिए अपनी स्वीकृति दे दी है। आर्य समाज टोरन्टो के प्रधान श्री अमरचन्द ऐरी, सम्मेलन की सफलता के लिए सक्रिय होकर कार्य कर रहे हैं। इस सम्मेलन में भारत से अनेक विद्वानों को आमन्त्रित किया जाएगा।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

संस्कृत शिक्षण

संस्कृत सिखाने के लिये लोकभाषा प्रचार समिति: द्वारा प्रत्यक्ष विधि से संस्कृत शिक्षण केन्द्र गांधी भवन, १२ छात्र मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय पर दिनांक १० फरवरी सोमवार साय ४ बजे से आरम्भ किया जायेगा। संस्कृत भाषा जो अब तक कठिन मान कर प्रचलन में प्रयोग नहीं हो पा रही थी अब एक आधुनिक ढंग से सरल व रोचक विधि के माध्यम से योग्य प्रशिक्षकों द्वारा उक्त केन्द्र में सिखायी जायेगी। प्रशिक्षण में व्यवसायी (दुकानदार) किसी भी विभाग या प्रतिष्ठान में काम करने वाले चाहे डाक्टर हो या वकील या अधिकारी या समाज के किसी भी स्तर का कोई भी व्यक्ति पढ़ने में इच्छुक भाग लेकर लाभान्वित हो सकते हैं।

शिक्षण सत्र का समय वयस्क वर्ग के लिये ५.३० से ६.३० साय व विद्यार्थी वर्ग के लिये साय ४ से ५ बजे तक केवल सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को रहेगा।

—ओमप्रकाश वैद्य, कार्याध्यक्ष

बसन्तोत्सव

८ फरवरी सन् १९९२ दिन शनिवार तदनुसार माघ शुदि पंचमी सं० २०४८ वि० को वसन्त पर्व आर्य समाज इन्दौर में वैदिक रीत-रिवाज के अनुसार मनाया गया।

इस अवसर पर यज्ञ, वैदिक प्रार्थना, द्वारा सभी सभासदों द्वारा कार्यक्रम समारोह सम्पन्न हुआ सभी ने इस पर्व के विषय में अपने-अपने विचार व्यक्त किये, तत्पश्चात बच्चों को आशीर्वाद के साथ प्रसाद वितरण किया गया।

—राजेन्द्र प्रकाश पहलोत प्रधान

महर्षि दयानन्द और गोरक्षा एवं गोकृष्यादिरक्षिणी सभा

डा० रामनाथ वेदालंकार

महर्षि दयानन्द रचित पुस्तकों मे एक छोटी सी पुस्तक गोकरुणानिधि है। देखने मे तो यह छोटी-सी है, किन्तु महत्त्व मे कम नही है। इसके तीन भाग हैं। प्रथम भाग मे गाय आदि पशुओं की रक्षा के विषय मे समीक्षा लिखी गयी है। यह समीक्षा भी दो प्रकरणो मे है। प्रथम प्रकरण मे गाय आदि पशुओ की रक्षा का महत्त्व बताया गया है तथा दूसरे प्रकरण मे हिंसक और रक्षक का सवाद है, जिसमे मास भक्षण के पक्ष मे जो भी बाते कही जा सकती हैं वे सब एक-एक करके हिंसक के मुख से कहला कर रक्षक द्वारा उन सबका उत्तर दिलाया गया है, जिससे अन्त मे यह परिणाम निकलता है कि मास भक्षण सर्वथा अनुचित है। पुस्तक के दूसरे भाग मे गोकृष्यादिरक्षिणी सभा के नियम तथा तीसरे भाग मे उसके उपनियम लिखे है। भूमिका मे ग्रन्थ का प्रयोजन बताते हुए महर्षि लिखते हैं—

"यह ग्रन्थ इसी अभिप्राय से रचा गया है, जिससे गौ आदि पशु जहा तक सामर्थ्य हो बचाये जायें और उनके बचाने से दूध, घी और खेती के बढने से सबको सुख बढता रहे।"

गाय आदि पशुओ की रक्षा क्यो आवश्यक है यह समझाने के लिए महर्षि हिसाब लगाकर बताते है कि एक गाय की पीढी रक्षा करने पर कितना लाभ पहुचा सकती है, जब कि उसे काटकर उसका मास खाने से उसकी तुलना मे कुछ भी उपकार नही होता। वे लिखते हैं—

"जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती हो और दूसरी बीस सेर तो प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने मे कोई शका नहीं। इस हिसाब से एक मास मे सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम से कम ६ महीने और दूसरी अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती है तो दोनो का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में १२ महीने होते हैं। इस हिसाब से १२ महीने का दूध ९९ मन होता है।

"इतने दूध को औटा कर प्रति सेर में छटाक चावल और डेढ छटाक चीनी डाल कर खीर बना खावे तो प्रत्येक पुरुष के लिए दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है, क्योंकि यह भी एक मध्यमान की गिनती है, अर्थात कोई दो सेर दूध की खीर से अधिक खायेगा और कोई न्यून। इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से एक हजार नव सौ अस्सी मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय न्यून से न्यून ८ और अधिक से अधिक १८ बार ब्याती है, इसका मध्यभाग तेरह बार आया, तो पच्चीस हजार सात सौ चालीस मनुष्य एक गाय के जन्मभर के दूध मात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं।"

"इस गाय के एक पीढी मे छः बछिया और सात बछड़े हुए। इनमे से एक की मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है, तो भी बारह रहे। उन छः बछियाओ के दूधमात्र से उक्त प्रकार एक लाख चौवन हजार चार सौ चालीस मनुष्यो का पालन हो सकता है। अब रहे छः बैल। उनमे से एक जोडी से दोनो साख मे दो सौ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोडी ६०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती हैं और उनके कार्य का मध्य भाग आठ वर्ष है। इस हिसाब से चार हजार आठ सौ मन अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म मे तीनो जोडी की है।'

"४८०० मन अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन मे गिनें तो दो लाख छप्पन हजार मनुष्यों का एक बार भोजन होता है। दूध और अन्न को मिलाकर देखने से निश्चय है कि चार लाख दस हजार चार सौ चालीस मनुष्यो का पालन एक बार के भोजन से होता है, अब छः गाय की पीढी-परपीढियों का हिसाब लगाकर देखा जावे तो असख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और इसके मास से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो, तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यो नहीं?"

इसी प्रकार बकरी के लिए भी हिसाब लगाकर दिखाया है। पर महर्षि केवल गाय और बकरियो की ही रक्षार्थ सचेष्ट नही थे, प्रत्युत सभी उपयोगी पशुओ की रक्षा आवश्यक समझते थे और किसी भी पशु का मास खाने के लिए सर्वथा विरुद्ध थे।

गाय आदि पशुओ की रक्षा के लिए महर्षि दयानन्द की आतुरता उनकी निम्नलिखित पक्तियो से प्रकट हो रही है—

'गो आदि पशुओ के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते है, तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो, इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु सात सौ वर्ष के पूर्व मिलते थे, उतना दूध-घी और बैल आदि पशु इस समय दशगुणे मूल्य से भी नही मिल सकते।'

'हे मासाहारियो, तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यो का मास भी छोडोगे वा नही? हे परमेश्वर! तू क्यो इन पशुओ पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नही करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नही है? क्या इसके लिए तेरी न्यायसभा बन्द हो गई है।'

दयामय दयानन्द ने गाय आदि पशुओ की हत्या रुकवाने के लिए देशव्यापी हस्ताक्षर-अभियान चलाया था। उनका प्रयत्न था कि गोहत्या रोकने विषयक प्रार्थना पत्र पर दो करोड़ भारतवासियो के हस्ताक्षर करवा कर ब्रिटिश सम्राज्ञी विक्टोरिया को वह प्रार्थना पत्र भेजा जाये। इसके लिए उन्होने राजा से रक तक सभी को प्रेरित किया था। इस प्रार्थना पत्र पर उदयपुर के महाराणा श्री सज्जनसिंह, जोधपुर के महाराज यशवन्तसिंह, शाहपुराधीश नाहरसिंह, महाराजा बूदी आदि ने भी हस्ताक्षर किए थे तथा अपनी प्रजा से कराये थे। महर्षि के असामयिक देहावसान के कारण यह कार्य बीच मे ही रुक गया।

स्वामी दयानन्द ने गोकृष्यादिरक्षिणी सभा की भी स्थापना की थी। इसे वे विश्वव्यापी बनाना चाहते थे। सब विश्व को विविध सुख पहुचाना इस सभा का मुख्य उद्देश्य नियमो मे वर्णित किया गया है तथा लिखा है कि जो-जो मनुष्य इस परम हितकारी कार्य मे तन, मन, धन प्रयत्न और सहायता करेगा वह-वह इस सभा मे प्रतिष्ठा योग्य होगा। यह भी लिखा है कि क्योकि यह कार्य सर्वहितकारी है, इसलिए यह सभा भूगोलस्थ मनुष्य जाति से सहायता की पूरी आशा रखती हैं, जो-जो सभा देशदेशान्तर और द्वीपद्वीपान्तर में परोपकार ही करना अभीष्ट रखती है, वह-वह इस सभा की सहाय कारिणी समझी जायेगी।

जो सभा के उद्देश्य के अनुकूल आचरण करने को उद्यत हो तथा जिसकी आयु १८ वर्ष से न्यून न हो वह इस सभा मे प्रविष्ट हो सकता था। जो इस सभा मे सदाचारपूर्वक एक वर्ष रह चुका हो और अपनी आय का शताश या अधिक देता रहा हो वह 'गोरक्षा समासद' हो जाता था और उसे सम्मति देने का अधिकार प्राप्त हो जाता था। वर्षभर सभा में रह चुकने के नियम को विशेष परिस्थिति मे अन्तरग सभा शिथिल भी कर सकती थी। राजा, सरदार बडे-बडे साहूकार आदि को सभा के सभासद् बनने के लिए शताश देना आवश्यक नही था, वे एक बार या मासिक या वार्षिक अपने उत्साह या सामर्थ्य के अनुसार देकर सभासद् बन सकते थे। अन्तरग सभा किसी विशेष हेतु से चन्दा न देने वाले को भी गोरक्षक सभासद् बना सकती थी।

उपनियमों मे अकित है कि सभा के समस्त कार्यप्रबन्ध के लिए एक अन्तरग सभा नियत की जावे और उसमे तीन प्रकार के सभासद् हो, एक प्रतिनिधि, दूसरे प्रतिष्ठित और तीसरे अधिकारी। प्रत्येक दो सप्ताह बाद अन्तरग सभा अवश्यक हुआ करे और मन्त्री तथा प्रधान की आज्ञा से या जब अन्तरगसभा के पाच सदस्य मन्त्री को पत्र लिखें तो भी हो सकती है।

गोकृष्यादिरक्षिणी सभा का कार्य क्या होगा एतदर्थ लिखा है कि सम्प्रति इस सभा के धन का व्यय गवादि पशु लेने, उनका पालन करने, अगल

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दुश्मन के घर में मार करना इस्राइलियों से सीखो

जैसा कि आपने दूरदर्शन में देखा होगा और समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि आजकल इस्राइल और लेबनान स्थित आतंकवादियों की जबरदस्त जंग छिड़ी हुई है। वर्तमान लड़ाई का दौर तब शुरू हुआ जब १५ फरवरी को दक्षिण लेबनान से अरब छापामारों ने इस्राइल के एक सैनिक ठिकाने पर अचानक हमला करके तीन इस्राइली सैनिकों की गर्दन काटकर मौत के घाट उतार दिया। इस हादसे से १६ घंटे के बाद इस्राइली हेलीकाप्टरों ने लेबनान के अन्दर एक हवाई हमले में ईरान समर्थक हिजबुल्ला के प्रमुख नेता शेख अब्बास मुसावी, उनकी पत्नी और पुत्र को मार डाला। हमले में चार अन्य व्यक्ति भी मारे गये और ११ घायल हुए।

सूत्रों ने कहा कि दक्षिण लेबनान में क्षफिया नामक स्थान के पास शेख अब्बास मुसावी काली मर्सडीज गाड़ी में अपने परिवार के साथ आ रहे थे। शेख मुसावी की गाड़ी सबसे आगे थी। उसके पीछे उनके सुरक्षा गार्डों की दो गाड़ियां थीं। एक गांव जिबशीट से मुसावी एक हिजबुल्ला रैली को सम्बोधित करके निकले ही थे कि शाम चार बजे के करीब दो इस्राइली हेलीकाप्टर अचानक आये और दोनों ने पांच वायर गाइडेड मिसाइल तीनों कारों पर दाग दी। इन मिसाइलों से कारों में आग लग गई और वह पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। शेख मुसावी और उनके परिवार की मौके पर ही मृत्यु हो गयी।

शेख मुसावी की जिस तरीके से हत्या की गई, उस पर विचार करना जरूरी है। लेबनान इस्राइल का दुश्मन देश है। इस्राइली गुप्तचर संस्था मोसाद का कमाल देखिए कि उसे यह स्पष्ट जानकारी थी कि शेख मुसावी कब कहां होंगे। वह कौन सी गाड़ी में होंगे। उनके साथ और कितनी गाड़ियां होंगी। यह तो ऐसी बात है कि मान लो लाहौर या सियालकोट में कोई खालिस्तानी या जगजू नेता किसी गाड़ी में सफर कर रहा हो और भारतीय हेलीकाप्टर ऐन समय पर उस पर हमला करके उसे उड़ा दें। मोसाद के पास इतनी सही जानकारी थी तभी तो हेलीकोप्टरों ने मुसावी पर सफल हमला किया। मुसावी की मौत से सारी अरब दुनिया (शिया दुनिया) में मातम छा गया है। इसके बदले में लेबनान से लगातार दो रातों राकेटों से इस्राइल पर हमले हो रहे हैं। इस्राइल इनका क्या जवाब देता यह देखना है। पर जो बात मैं कहना चाह रहा हूं वह यह है कि आतंकवादियों का मुकाबला कैसे करना है यह इस्राइलियों से बेहतर कोई नहीं जानता। समय समय पर इस्राइलियों ने ऐसे मुंहतोड़ जवाब दिये हैं जिससे अरब आतंकवादियों के होश ठिकाने आ गये हैं।

भारत ने इस्राइल को मान्यता दे दी है और दोनों देशों में आपसी सम्बन्ध सहयोग आने वाले दिनों में बढ़ेगा। इस्राइल ने आतंकवाद से निपटने में विशेष सफलता प्राप्त की है। इस्राइली छोटे हथियार, ऊर्जी सब मशीनगन सारी दुनिया में मशहूर हैं। हमारे एनएसजी के कमांडो भी इसी मशीनगन का इस्तेमाल करते हैं। आर्म्ड परसनल कैरियर बनाने में भी इस्राइलियों ने विशेष सफलता प्राप्त की है। जार्डन स्थित वैस्ट बैंक में इस्राइल ने कई यहूदी पुनर्वास कालोनियां स्थापित की हैं। वर्षों से सारी अरब दुनिया इन कालोनियों के खिलाफ है, पर इस्राइल अपना काम करे जा रहा है। कश्मीर में अगर हमें हिन्दू बसाने हैं और कश्मीर की समस्या का हमेशा हमेशा के लिए समाधान निकालना है तो हमें इस्राइलियों के तजुर्बे का पूरा पूरा लाभ उठाना चाहिए।

इस्राइली गुप्तचर आतंकवाद का मुकाबला करने में चार दशकों से काफी सफल रहे हैं और इस्राइल सशस्त्र बलों ने सीमा के पार आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट करने में असाधारण सफलता पाई है। इसके अलावा इस्राइली हवाबाजों ने सीमा से बहुत दूर इराकी परमाणु ठिकानों पर बमबारी कर इराक के परमाणु अस्त्र निर्माण के काम को एक दशक पीछे धकेल दिया था। कश्मीर और पंजाब के आतंकवादी सीमा पार के ठिकानों पर प्रशिक्षण पाते हैं तथा वहीं से हथियार लेकर इधर घुस आते हैं। इसी प्रकार सीमा पार पाकिस्तानी परमाणु बम बनाया जा रहा है। सीमा पार के आतंकवादी प्रशिक्षण केन्द्रों तथा परमाणु केन्द्रों पर बमबारी करना हमारी सरकार की नीति नहीं है फिर भी इसकी व्यवस्था सीखनी उपयोगी होगी। जरूरत उस समय पड़ सकती है, जब पाकिस्तान हमारे देश पर हमला करेगा। सीमा सुरक्षा करने की रणनीति इस्राइल से सीखी जा सकती है। गुप्तचर सेवाओं को और कैसे कार्यकुशल बनाया जा सकता है, इसमें मोसाद हमारी काफी मदद कर सकता है। इस्राइल ने सीमा पर भूतपूर्व सैनिकों को बसाया है और उन्हें हथियार दिये हैं इसलिए सीमा के निवासी भी अपनी रक्षा में सक्षम हैं तभी तो इस्राइल चार दशकों से चारों ओर से घिरे होने के बावजूद अपनी सीमा की पूरी सुरक्षा करने में सक्षम रहा है। इस्राइल से सम्बन्ध बढ़ाने में भारत को ज्यादा लाभ है। दुनिया के समीकरण बदलने से अब अरब देश ज्यादा तूफान नहीं खड़ा कर सकते। हमें तो देश हित सोचना चाहिए।

आतंकवादियों का मुकाबला कैसे करना है, यह इस्राइलियों से बेहतर कोई नहीं जानता। समय-समय पर इस्राइलियों ने ऐसे मुंह तोड़ जवाब दिये हैं, जिससे अरब आतंकवादियों के होश ठिकाने आ गये हैं। कश्मीर में अगर हमें हिन्दू बसाने हैं और कश्मीर की समस्या का हमेशा-हमेशा के लिए समाधान निकालना है तो हमें इस्राइलियों के तजुर्बे का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए।

—अनिल नरेन्द्र

मंडल रपट लागू करने से देश टूटने का खतरा—पालखीवाला

नई दिल्ली, १९ फरवरी। मशहूर वकील ननी पालखीवाला ने आज सुप्रीम कोर्ट में कहा कि मंडल रपट लागू करने से देश टूटने का खतरा है। उन्होंने मंडल आयोग की रपट को संविधान के बुनियादी ढांचे के खिलाफ बताया और कहा कि इसमें हमारी जातीय व्यवस्था के कैंसर को नया जीवन मिल जायेगा।

उन्होंने नौ सदस्यीय संविधान पीठ के सामने मंडल आयोग की रपट को लागू करने की केन्द्र सरकार की दो अधिसूचनाओं पर सुनवाई के दौरान अपना दलील में कहा कि इस रपट से अगड़े और पिछड़े वर्ग में तनाव बढ़ेगा और पिछड़ापन स्वार्थ बन जाएगा। श्री पालखीवाला ने कहा कि समाज में सामंजस्य और एकता लाने के पिछले चालीस वर्ष में जो भी प्रयास किये हैं वे मंडल आयोग की रपट को लागू करने से खत्म हो जायेंगे। उन्होंने कहा कि देश ने इन बरसों में जातिवाद से समतावाद और सामंतवाद से आजादी व समता की ओर तरक्की की है और ये आजाद देश के लिये बहुत उपयोगी हैं।

उन्होंने कहा कि मंडल आयोग की रपट योग्यता को नजरअंदाज करता है। वह अवसर की समानता के भी खिलाफ है इसलिये संविधान के बुनियादी ढांचे के खिलाफ माना जायेगा। मंडल आयोग की सुनवाई करने वाली पीठ में मुख्य न्यायाधीश एमएच कनिया, न्यायाधीश एमएन वेंकटचलैया, एसआर पंडियन, टीके थोमेन, एएम अहमदी, कुलदीप सिंह पीबी सावंत, आरएस सहाय और बापा जीवन रेड्डी शामिल हैं।

श्री पालखीवाला ने कहा कि मंडल आयोग से सार्वजनिक सेवाओं में आरक्षण की वांछनीयता पर विचार करने को कहा गया था। पर उसने इसकी उपेक्षा की। आयोग के विचारणीय विषयों में वह बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने कहा कि आयोग को अनुच्छेद १८४ के तहत आरक्षण की सिफारिश करने से पहले उस आरक्षण की वांछनीयता पर विचार करना चाहिए।

श्री पालखी वाला ने कहा कि आयोग ने इस बात की भी जांच करने की जरूरत नहीं समझी कि कई राज्यों में आरक्षण लागू होने से अच्छे किस्म की जगह खराब किस्म के कर्मचारी सरकारी सेवा में आए हैं या नहीं, और कर्मचारियों के मनोबल में गिरावट व विशेष रूप से पुलिस बल में असंतोष पैदा हुआ है या नहीं।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश में

—भगवान देव 'चैतन्य'

गत शताब्दि मे अनेक समाज सुधारक हुए—जिनके कालान्तर मे अलग अलग मत व सम्प्रदाय चल पड़े मगर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने साफ शब्दो मे यह घोषणा की है कि मेरा कोई भी नया मत चलाने का बिल्कुल भी लक्ष्य नही है। वे सही अर्थों मे मानवता के वास्तविक पालक और पोषक थे। उनकी प्रतिभा बड़ी ही विलक्षण थी। यही कारण है कि वे मान-अपमान को एक ओर रखकर केवल मानवता के प्रचार व प्रसार मे आजीवन लगे रहे और अन्त मे परोपकार के पथ पर ही "प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहकर आहुत हो गए।

महर्षि दयानन्द एक ऐसे युग मे इस धरा पर अवतरित हुए, जब चारो ओर मानव जाति को समाप्त करने के षडयन्त्र स्वयं मानवो द्वारा ही किए जा रहे थे। आपस के वैर विरोध अन्धविश्वास, पाखण्ड और अधर्म का सर्वत्र साम्राज्य था। धर्म के राग तो अवश्य अलापे जाते थे, किन्तु धर्म एक रूढ़िवाद के दायरे में सिमटकर रह गया था। वेदो का पठन-पाठन कल्पना की बातें थी। नारी जाति की गरिमा पाँव की जूती कहलाने तक गिर चुकी थी। वह मात्र भोग की वस्तु रह गई थी। जातिवाद का जहर अपने पूरे योवन पर आकर फुफकार रहा था। हम पराधीनता की बेड़ियो मे किंकर्तव्य विमूढ़ से होकर लाचार और असहाय बने हुए थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ऐसे ही विकट समय मे अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रयोग करके इन सभी समस्याओ पर एक साथ ही प्रहार करते हुए समूचे विश्व के सामने डटकर खड़े हो गये। धर्म के नाम पर चलने वाली सभी दुकाना की उन्होने जड़े हिलाकर रखदी। उन्होने धर्म को पोथियो और पोपो की कैद से मुक्त करके उसे क्रियात्मकता की ओर मोड़ा। वेदो के पठन-पाठन का प्रचलन कराकर उन लोगो को चौंका कर रख दिया जो कहते थे कि वेदो को तो शंखासुर चुराकर ले गया है। वेद ज्ञान के समक्ष आडम्बर और पाखण्डो की पोले खुलने लगी तथा अज्ञानान्धकार छिन्न भिन्न होने लगा। इस बात का श्रेय महर्षि दयानन्द को ही जाता है कि मैक्समूलर जैसे पाश्चात्य विद्वानो के हृदयो मे भी वेद के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई जो वेदो को मात्र गडरियो के गीत कहा करते थे। महर्षि दयानन्द जी का दर्शन किसी विशेष जाति, क्षेत्र सम्प्रदाय या राष्ट्र के लिए नही था बल्कि व तो "वसुधैव कुटुम्बकम्' कार्यान्वियन करने वालो मे थे। उनका लक्ष्य था कृण्वन्तो विश्वमार्यम्--अर्थात सारे ससार को श्रेष्ठ बनाना। नारी जाति को उन्होने दयनीय दशा से ऊपर उठाते हुए पूजनीय अवस्था तक पहुचाया। यह जो हम अपने राष्ट्र मे आज नारी को प्रत्येक क्षेत्र मे आगे बढ़ता हुआ देख रहे हैं यह सब उस परम कृपालु देव दयानन्द के प्रयत्नो का ही सुफल है। आज उन लोगो को भी नारी उत्थान का पक्षधर बनते हुए देखा जा सकता है जो उस समय महर्षि जी का विरोध करते थे। जाति पाति को समाप्त करने के लिए उन्होने रचनात्मक कदम उठाए। उनकी दृष्टि मे मानव मात्र की केवल एक ही जाति थी—"मनुष्य"।

महर्षि दयानन्द जी की विचारधार इतनी सरल, अकाट्य, हृदयग्राही और वैज्ञानिक है कि उसको गहराई से समझ लेने पर हर किसी का कायाकल्प हो सकता है। आजकल आमतौर पर देखा जाता है कि वर्तमान आर्यसमाजों में आर्य समाज के मान्य सिद्धातो की चर्चा नही हो पाती है बल्कि सिद्धान्त हीनता की बातें भी कई बार मचो पर से सुनने को मिलती है उसका सबसे बड़ा कारण यही है कि लोगो ने महर्षि जी के ग्रन्थो का स्वाध्याय व उन पर मनन करना छोड़ दिया है। महर्षि जी ने हमे इतने विलक्षण ग्रन्थ दिए हुए हैं कि उनकी मौजूदगी मे कोई भी अपने मत एव मजहब की डींगें नहीं हाँक सकता है। यू तो महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित प्रत्येक ग्रन्थ का एक-एक वाक्य अद्भुत है मगर 'सत्यार्थ प्रकाश" में इसका सार्वभौमिक पक्ष भली प्रकार से समझा जा सकता है। यह एक ऐसा अमर ग्रन्थ है कि इसके स्वाध्याय से कितने ही लोगो ने अपने जीवनो को निखार कर कुन्दन बना लिया। इसे जितनी बार पढ़ा जाए उतनी ही बार उससे कोई न कोई नया रत्न प्राप्त होता है। इसलिए कई लोगो ने अनेको बार इस ग्रन्थ का स्वाध्याय किया है। यह एक ऐसा अनमोल हीरा है जिसका कोई मूल्य नही। आवश्यकता इस बात की है कि इसमे विश्लेषित रहस्यो को समझकर अपने जीवन मे धारण किया जाए क्योंकि महर्षि जी का धर्म पोथियों मे रखकर पूजने के लिए नही है बल्कि जीवन को सुजीवन बनाने के लिए है। यदि इस ग्रन्थ की मान्यताओ को प्रत्येक व्यक्ति हृदय मे धारण करके चले तो आज जितने भी मत, मजहब और सम्प्रदाय चल पड़े हैं उनका समूल नाश होकर एक ऐसे सार्वभौमिक धर्म की स्थापना हो सकती है जो समूचे विश्व मे मानवता का प्रसार करने मे सक्षम सिद्ध हो सकता है। प्रेम और सौहार्द का ऐसा वातावरण तैयार हो सकता है जहा सभी एक सत्यता के पक्षधर बनकर इस धरती को स्वर्ग बना सकते हैं।

इस लघु लेख मे इस अनमोल ग्रन्थ के प्रत्येक समुल्लास पर प्रकाश डालना यहा पर सभव नहीं है मगर इसकी सार्वभौमिकता और उत्कृष्टता तथा मानव हितैषी पक्ष को स्पष्ट करने के लिए भूमिका पर थोड़ी सी चर्चा करनी आवश्यक है ताकि उन लोगो को इसकी विलक्षणता का आभास हो सके जो इसे देखने मात्र से ही अपने नाक मुह सिकोड़ लेते हैं। लोगो को भ्रम है कि इस ग्रन्थ में महर्षि जी ने पक्षपात से काम लिया है मगर उनके भूमिका मे ही लिखे शब्दो का जरा अवलोकन कर लें — 'मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है, वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य, और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाश किया जाए, किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना ही सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता , इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नही हो सकता।"

महर्षि जी द्वारा लिखित उपरोक्त शब्द मनन करने योग्य हैं तथा इसी से इस बात का अनुभव किया जा सकता है कि 'सत्यार्थ प्रकाश" का मुख्य उद्देश्य क्या है। वे किसी प्रकार के द्वेषवश किसी भी मत या सम्प्रदाय की पुष्टि के लिए उचित अनुचित तर्क देने के पक्ष मे नही थे। वास्तव मे मानव मात्र की भलाई करने के लिये ही उन्होने इस ग्रन्थ की रचना की है। अलग अलग बटी हुई मानवता को एक सूत्र मे पिरोने का लक्ष्य भी उनके सामने था। वे सही अर्थो मे मानव हितैषी थे। भूमिका मे ही वे लिखते हैं— परन्तु इस ग्रथ मे ऐसी बात नही रखी है और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि का तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को जानकर मनुष्य सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करे, क्योकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नही है।" वे चाहते थे कि यदि प्रत्येक विद्वान अपने अपने दायरो को मद्देनजर रखते हुए समूची मानवता की उन्नति पर ध्यान दें तो ही प्रत्येक हृदय मे मानवता के अकुर प्रस्फुटित हो सकते हैं।' (क्रमशः)

ऋषि-बोधोत्सव

२ मार्च ९२, सोमवार
मावलकर हाल, रफीमार्ग, नई दिल्ली
प्रातः ८ से साय ४ बजे तक

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का बोधदिवस महाशिवरात्रि के पावनपर्व पर दिल्ली के समस्त आर्य समाजो की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान मे सोमवार २ मार्च ९२ को प्रातः ८ से साय ४ बजे तक मावलकर हाल मे ऋषि मेला के रूप मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस शुभावसर पर आप सब सपरिवार एव इष्ट-मित्रो सहित सादर आमन्त्रित हैं।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य
१५ हनुमानरोड, नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष : ३१०१५०, ३११२८०

शिव-चतुर्दशी—व्रत का पावन माहात्म्य

स्नातक श्री सुरेशचन्द्र जी वैद्य, हाथरस

शिव-चौदस के एक महान् पर्व पर चौदह वर्ष की छोटी सी आयु में ही भारत के एक महान् युगपुरुष ने विक्रमी सम्वत् १८९४ की फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी की घोर अर्द्ध रात्रि में सर्व व्यापक सच्चे शिव को पाने का संकल्प किया था। उस बालक को उसके पिता ने स्वयं सामवेदी ब्राह्मण होने पर भी रुद्राष्टाध्यायी से युक्त होने के कारण सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठाग्र कराया था। इसलिए यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का यह मन्त्र सूत्र भी होनहार बालक के मन में अपने कई अर्थों में अप्रत्यक्ष रूप में गहराई से स्थान कर चुका था कि—

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ॥

इस चराचर समस्त जगती में जो कुछ भी है उस सबमें, कण कण में, सर्व शक्तिमान् 'ईश' परमात्मा सर्वतो व्याप्त है।

रात्रि की प्रथमार्द्ध की पूजा के पश्चात् यद्यपि बालक मूलशंकर के धार्मिक और भक्त पिता तथा अन्य सभी व्रतीजन निद्रा के वशवर्ती हो चुके थे, किन्तु श्रद्धालु वह बालक ठंडे पानी के छींटे आंखों में मार मारकर शिवदर्शन की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हुए जागृत और सावधान था। उसकी एक टक निगाह शिव पिण्डी की ओर लगी थी। दिन भर का उपवास कहीं विफल न हो जावे, पिता की आज्ञा का उल्लंघन न हो सके—इसलिए वह सावधानी से शिव माहात्म्य की उपलब्धि हेतु चेतन और सतर्क था। उसका मन पुराण-कथा में श्रुत शिव की सर्वशक्तिमत्ता और महान् व्यापक शौर्य की इयत्ता में खोया था? तो आंखें पिण्डी पर गड़ी थी। पर जब उस चेतन बालक ने उस पिण्डी पर चढ़े पावन प्रसाद को मूषकों द्वारा खाते, बिखेरते और पुनीत मूर्ति को अपवित्र करते देखा तो उसकी निर्मल आत्मा व्याकुल हो उठी। उसका पावन हृदय लिंग-मात्र स्वरूपधारी शिव के प्रांगण में उद्वेलित और व्यग्र होने लगा। सर्वशक्तिमान् शिव अपनी मूर्ति पर से चूहों को हटाने में भी असमर्थ होवे—यह कैसे सम्भव है? इसलिए एक छोटे से शरीर में बैठी बालक की महान् आत्मा एक ऐसे सर्व-व्यापक सच्चे शिव के दर्शनों के लिए व्याकुल हो उठी, जिसका स्वरूप बाद में महर्षि ने एक आवश्यकीय नियम के रूप में निम्न प्रकार निर्धारित किया था कि—

"ईश्वर (शिव) सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है और उसी (निराकार वैदिक शिव की) की उपासना (पूजा, स्तुति, प्रार्थना) करनी योग्य है।"

यजुर्वेद के एक पावन मन्त्र में मानव को ऐसे ही एक सच्चे शिव की पूजा के लिए प्रेरित करते हुए उपरोक्त भाव ही बड़े संक्षेप में व्यक्त किये गये हैं कि—

"हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।

यजु० अ० १५ मं० १३॥

भूत भविष्य और वर्तमान् में सकल सृष्टि के उत्पादक समस्त लोकों के आधार, सर्वत्र ओत-प्रोत, आनन्दमय, शिव स्वरूप प्रभु की ही हम सब 'हविषा विधेम' भक्ति और पूजा करें।

ठीक इसी भाव में सन्निहित योगेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् ने भी अपने पावनतम ग्रन्थ गीता के एक श्लोक में ईश्वर के शिव रूप की सुन्दर और विशद विवेचना करते हुए वेद के उपरोक्त भाव का ही अनुसरण किया है कि—

"उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः। यो लोक त्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः॥ गीता अ० १५ श्लोक १७॥

उत्तम—अतिशय उत्कृष्ट पुरुष तो अन्य ही है, जो कि परमात्मा नाम से कहा गया है। जो पृथ्वी अन्तरिक्ष और स्वर्ग इन तीनों लोकों को, अपने चैतन्य बल की शक्ति से इनमें प्रविष्ट होकर केवल स्वरूप सत्तामात्र से उनको धारण करता हुआ, वह निराकार अविनाशी ईश्वर है। (भाष्य गीता प्रेस)

इन्हीं पावन चेतन सन्देशों से आविर्भूत चतुर्दश वर्षीय लघु शरीर में अवस्थित भावों युग पुरुष की पुण्य आत्मा सम्मुख स्थित प्रस्तर शिव मूर्ति के प्रति आशंकित हो उठी। मूलशंकर का बाल हृदय, जिसने अभी-अभी पुराण की कथा में भगवान् के विशाल, शक्तिमान् स्वरूप में शिव का वर्णन सुना था और शिव के विकराल गुणों, उसकी सर्व व्यापकतादि शक्ति और महत्ता का विवेचन अपने कुल के शिव मन्दिर के पुजारी से प्रथमार्द्ध की पूजा में सुना था। उस सतस्वरूप और सन्मुख उपस्थित मूर्ति में बिलकुल वैपरीत्य अनुभव होने लगा। इस विषम स्थिति ने बालक मूलशंकर (भारत के भावी महर्षि) की तर्कणा शक्ति में ऐसा आघात प्रतिघात उत्पन्न किया कि उसी क्षण से उनको, पाषाण की इस प्रतिमा में शिव के सत्स्वरूप के दर्शन न होने का निश्चय हो गया। और उस प्रबुद्ध चेतन बालक ने उस महाघोर रात्रि में ही 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के सत्य शिव की गवेषणा का सुदृढ़ संकल्प धारण कर लिया।

'मनः शिवसंकल्पमस्तु' वाला महर्षि का बाल मन भी आत्मोन्मुख हो उठा। और इस युग के महान् संन्यासी ने अपने मन में यह व्रत धारण कर लिया कि—मैं शिव का साक्षात्कार किए बिना उसका पूजन कदापि न करूंगा यह पावन व्रत ही मूलशंकर के महर्षि जीवन का आदि सूत्र बन गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आगे चल कर इस महान् शिव को जीवन पर्यन्त स्वयं ही समाविष्ट हो केवल नमस्कार नहीं किया, अपितु प्रत्येक सद्पुरुष को प्रतिदिन सुबह और शाम दिन में दो बार अपनी दैनिक उपासना, सन्ध्या के अन्त में यजुर्वेद के इस मन्त्र से—

"ओम नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।" यजुर्वेद १६। ४१॥

नित्य नमन करने का अनिवार्य आदेश स्थापित कर—इस लघु घटना को सदा-सदा के लिए अमर कर दिया। निश्चय ही चूहे की इस लघुतम घटना ने ही आर्य संस्कृति के पुनरुद्धारक, हिन्दू जाति के संरक्षक, पराधीन भारत को सर्वप्रथम स्वतन्त्रता के प्रेरक, और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के रूप में विश्व को फिर से वेदों की आध्यात्मिक पावनता की ओर मोड़ देने वाले एक छोटे से बालक को युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप में बनने की भूमिका प्रदान की। महर्षि के जीवन की एक के बाद एक घटित सभी घटनायें—अपने रूप में चाहे जितनी छोटी और बड़ी या महत्त्वपूर्ण होवें वे सभी इसी की ही सहायक मात्र बनी। वस्तुतः इस महा शिवरात्रि ने ही दयानन्द में वास्तविक बोध के अंकुर स्थापित किये और यही घटना उनके सम्पूर्ण जीवन भर के मूर्ति पूजा के विरुद्ध विकट संग्राम का और सर्वव्यापक परमात्मा की ही उपासना का प्रमुख हेतु रही। इसीलिये इस महान् तिथि को आर्य समाज के इतिहास में 'श्री दयानन्द बोधरात्रि' के प्रेरक पर्व के स्वर्णिम रूप में अंकित किया गया है। और भविष्य में भी यही महान् दिवस प्रति वर्ष हमें, भारत के प्रत्येक हिन्दू को और विश्व के प्रत्येक मानव, को एक पावन व्रत का सन्देश सदा-सदा, निरन्तर देता रहेगा कि—

"तेनर्ष्या समिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।" और इसी में अन्तर्निहित है महान् भारत का राष्ट्रीय जयघोष। सत्यमेव जयते।

क्या सांख्याचार्य निरीश्वरवादी है ?

ले०—प्रा० सत्यप्रिय वैदिकाश्रम तिजारा (अलवर) राज०

जो लोग सांख्यदर्शन के निर्माता कपिल मुनि जी को निरीश्वरवादी मानते हैं। उनकी यह धारणा उचित नही है और उनको सांख्य दर्शन मे निर्मित निम्न सूत्रो पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये।

जैसे —"अथ त्रिविध दुःख निवृत्तिरत्यन्तः पुरुषार्थः ॥ १ । १ ॥ इस प्रथम ही प्रतिज्ञा सूत्र मे आचार्य ने "दैविक-दैहिक और भौतिक सन्तापो की निवृत्यर्थ जो तद्विषयक सुकर्म हैं जिनसे आनन्द की प्राप्ति हो वही परम-पुरुषार्थ माना है। पूर्णानन्द की प्राप्ति ईश्वर से ही हो सकती है। सांसारिक पदार्थों से तो क्षणिक सुख प्राप्त होता है।

जो विद्वान 'ईश्वरासिद्ध" ॥ १ । ६२ ॥ और "प्रकृति पुरुषयोः सर्वमनित्यम्" ॥ ५ । ७ ॥ इन दो सूत्रो से ईश्वर को असिद्ध अर्थात् सत्ता रहित मानते हैं और प्रकृति पुरुष से भिन्न ईश्वर नाम की सत्ता ही नही है। ऐसा अर्थ करते हैं। वे प्रसग का ध्यान देवे। यहा प्रकरण यह है कि "परिछिन्न न सर्वोपादानम्'।। १ । ७६ ॥ अर्थात् जो उपासक इन सीमित भौतिक इन्द्रियों से पूर्ण असीम उस ईश्वर को जानना चाहता है—वह "ईश्वरासिद्ध." ॥ १ । ६२ ॥ अर्थात् उसे पूर्णरूप से नहीं जान सकता। इस सूत्र मे ईश्वर की सत्ता का निषेध नही किया है। अपितु इन्द्रिय अगोचर कहा है। यदि इसमे "असिद्ध" शब्द सत्ता निषेध परक हो तो स हि सर्व वित् सर्वकर्ता ॥ ३ । ५६ ॥ 'ईदृश, ईश्वरः सिद्धिः सिद्धा' ॥ ३ । ५७ ॥ इन सूत्रो का अर्थ सगत नहीं लग सकता कि वह ही सब ज्ञाता, और सारे ससार का कर्ता, धर्त्ता-हर्त्ता है। क्योंकि कोई भी जीवधारी सर्वज्ञ और सृष्टि का बनाने, पालने और पोषण करने वाला नही हो सकता। अल्पज्ञ, एक देशी और सीमित शक्ति वाला होने के कारण।

और भी देखिये:—"मुक्तात्मनः प्रशसोपासना सिद्धस्य वा" ॥१।६५॥ अर्थात् साधारण सासारिक मनुष्यो की अपेक्षा जो मुक्तात्मा हो जाते हैं। उनकी लोक मे अधिक प्रशसा गाई जाती है !

मुक्ति क्या है ? ईश्वर की प्राप्ति। जन्म-मरण रूप आवागमन से छुट्टी। अर्थात् छत्तीस सहस्र बार सृष्टि का बनना प्रलय होना। तब तक शरीर धारण न करना। इसका समय—इकत्तीस नील, दश खरब, चालीस अर्ब। मुक्ति प्राप्ति के साधन भी बतलाये हैं.—'ज्ञानान्मुक्ति." ॥ ३ । २३ ॥ "बन्धो विपर्य यात्" ॥ ३ । २४ ॥ 'विवेकान्नि' शेष दुःख निवृत्ती कृतकृत्यता नेतरान्नेतरात" ॥ ३ । ८४ ॥ अर्थात् वेदादि सत्शास्त्रो के ज्ञान से और ईश्वर, जीव, प्रकृति के ठीक २ धर्मों का जब बोध हो जाता है कि मैं ससार मे क्यो आया ? क्या मुझे करना और न करना चाहिये। इन सब तत्वो का विवेक होता है तब मुक्ति होती है। अज्ञान से छुटकारा होता है।

कपिल मुनि महाराज ने वेद को ईश्वर निर्मित और प्राणीमात्र के कर्मानुसार ही भोग-योनि प्रदाता माना है। जैसे:—"न पौरुषेयत्व तत्कर्तुः पुरुषस्याभावा त् ॥ ५ । ४६ ॥ "निजशक्तिअभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यात्" ॥ ५ । ५१ ॥ अर्थात् वेद का बनाने वाला कोई सासारिक पुरुष नहीं हो सकता। क्योंकि उस में जो ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान रूप पूर्ण विद्यायें हैं वह किसी सासारिक व्यक्ति से उपदेशटित नही हो सकती। और सृष्टि के आदि मे यदि ईश्वर वेदज्ञान मनुष्यों के कल्याण के लिये नही देता तो किसी को भी कुछ भी बोध नही होता। जैसे आज कल बिना पढ़े-लिखे कोई कुछ नहीं जान पाता। इसलिये अगले सूत्र मे कहा कि ईश्वर ने वेद अपनी शक्ति से चार ऋषियों द्वारा प्रकट किये। वे स्वतः सूर्यवत् प्रमाण हैं।

"नेश्वराधिष्ठिते फल निष्पत्तिः कर्मणा तत्सिद्धेः' ॥७१२॥ यह तो सत्य है कि ईश्वर भी बिना मनुष्यो के कर्मों के फल नही दे सकता। परन्तु ईश्वर को कर्म फल दाता स्वीकार न किया जाये तो प्राणी स्वयमेव अपने कर्मों का ठीक २ भोग-योनि रूप फल प्राप्त नहीं कर सकते। जैसे कोई भी मनुष्य दुष्कर्म करके उसका बुरा दण्ड भोगना नही चाहता, और स्वय कारागार में जाना नही चाहता। इसलिये ईश्वर ही ठीक २ मनुष्यो के कर्मानुसार सुख-दुःख भोग-योनि प्राप्त कराता है।

और जो 'प्रकृति. पुरुषयोः सर्वमनित्यम् कहा है वह प्रकरणानसार "पुरुष' शब्द मे जीव का भी ग्रहण है और ईश्वर का भी। जैसे वेद मे "अग्नि' शब्द से ईश्वर, राजा, सेनापति, विद्वान् आदि का भी ग्रहण किया है। कोई हठधर्मी से इस सूत्र मे "पुरुष' से केवल जीव का ही ग्रहण माने तो उनकी अपनी इच्छा। परन्तु कपिल मुनि ऋषि को तो निरीश्वरवादिता का दोष देना उचित नही।

अन्त मे एक सूत्र और देखिये—'समाधिसुषुप्ति-मोक्षेषु ब्रह्म रूपता ॥ ५ । १६ ॥ अर्थात् इसमे स्पष्ट रूप से ब्रह्म (ईश्वर) का ग्रहण है कि योगी लोग समाधि सुषुप्ति और मोक्ष में ब्रह्मरूपता को प्राप्त हो जाते है। जैसे अग्नि मे लोहा अग्निमय हो जाता है। इसी प्रकार इन अवस्थाओ मे योगी "आनन्दमय' हो जाता है। इन सब प्रमाणो के होते हुए कभी भी सांख्याचार्य कपिल मुनि जी महाराज निरीश्वरवादी नही हो सकते।

सत्य भक्त, स्वामी दयानन्द सरस्वती

विश्वनाथ शास्त्री, २-बी/५१/८ भिलाई (म. प्र.)

स्वामी दयानन्द को सत्य शब्द से बड़ा स्नेह था। उन्होंने अपने प्रमुख ग्रन्थ का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' रखा। उन्होंने पाखण्ड-खण्डन और शंका समाधान विषयक अपनी एक पुस्तक का नाम भी 'सत्य धर्म विचार' (मेला चांदपुर) रखा। आर्य समाज के दस नियमों में चार नियमों में उन्होंने सत्य शब्द का प्रयोग किया है। 'आर्योद्देश्य रत्न माला' मे आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए भी उन्होंने सत्य शब्द का प्रयोग किया है। अगस्त १८७९ को स्वामी जी बरेली पधारे। वहां उन्होंने अपने व्याख्यान मे सिंह गर्जना करते हुए कहा कि लोग कहते है कि सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे, चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेगे।

स्वामी जी अपनी रचनाओं और व्याख्यानो मे तो सत्य को सर्वोच्च स्थान देते ही थे, इसके साथ ही वे जीवनभर सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने मे भी उद्यत रहे। वे बाल्य काल मे शिव की मूर्ति से विरक्त होकर सच्चे शिव की खोज तथा मोक्ष की जिज्ञासा में पन्द्रह वर्ष तक—यहा वहां घूमते रहे। गृहत्याग के पश्चात् बाईस तेईस वर्ष की आयु मे उन्होंने एक अज्ञातनाम ब्रह्मचारी से ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली। तब से वे शुद्ध चैतन्य के नाम से जाने जाते रहे। अगले दो वर्ष उन्होंने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास की दीक्षा ली और स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। पन्द्रह वर्ष के प्रवास में योग और मोक्ष की इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने अनेक सन्यासियों और योगियो के पास रहकर योगाभ्यास किया। पहले उन्होने उत्तरा खण्ड की यात्रा की। उन्होने हठयोग का भी अध्ययन किया परन्तु इससे घृणा हो गई और वे पातंजल योग पर ही दृढ़ रहे। इसके बाद वे तीन वर्ष तक नर्मदा नदी के तट पर ही पर्यटन करते रहे। कई विद्वान कहते हैं कि यह तीन वर्ष का अज्ञात प्रवास सम्भवत: १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम में भाग लेने में ही गुजरा। इसके बाद वे छत्तीस वर्ष की आयु में स्वामी विरजानन्द के पास पहुंचते हैं।

स्वामीजी ने अपने घर पर व्याकरण, निघण्टु, निरुक्त और पूर्व मीमांसा का अध्ययन किया था। उन्हें यजुर्वेद भी कण्ठस्थ था। वे जिज्ञासु समीक्षक और मुमुक्षु बन चुके थे। उन्होने मृत्यु भय से त्राण पाने, योग साधना का अनुभव करने और उच्च संस्कृत की शिक्षा पाने के लिये गृहत्याग किया। अगले पन्द्रह वर्ष के प्रवास मे बड़ौदा मे चैतन्य मठ मन्दिर में सन्यासियों के सम्पर्क में आकर वे शंकर अद्वैत की ओर झुके और वेदान्त स्तर तथा वेदान्त परिभाषा इन दो अद्वैत ग्रन्थो को गुरु से पढ़ा। उन्होंने आबू पर्वत पर योग सीखा। इसके पश्चात् टिहरी में उन्होने वाम मार्ग के तन्त्र ग्रन्थ पढ़े और इनमे प्रतिपादित पंच मकारो को पढ़कर उन्हें इनसे घृणा हो गई। इसके पश्चात् वे नर्मदा नदी के स्रोत की ओर चल दिए और तीन वर्ष तक अज्ञातवास में ही रहे। अब तक वे एक शैव हिन्दू संन्यासी ही थे। उन्होंने इस अवधि में योग का अभ्यास सम्यक् प्रकार से कर लिया था। वे निवृत्ति मार्ग पर ही चलकर अद्वैत सिद्धान्त को मानते हुए मोक्ष मार्ग के पथिक बने हुए थे। वे अभी तक जिज्ञासु ही थे कोई उपदेशक या कथावाचक नही थे।

इक्कीस वर्ष के गृह निवास और पन्द्रह वर्ष के प्रवास के पश्चात् स्वामी जी छत्तीस वर्षकी आयु में मथुरा में दण्डी विरजानन्दी की पाठशाला में पहुंचते है और वहां ढाई तीन वर्ष तक अध्ययन करते हैं। अध्ययन के पश्चात् गुरु जी दयानन्द से गुरु दक्षिणा मांगते हैं—दयानन्द उठो, साम्प्रदायिक पाखण्डो का उन्मूलन करने के लिए तैयार हो जाओ, आर्ष ज्ञान की ज्योति को पुन: प्रकाशित करो, यही मेरी गुरु दक्षिणा है। यहां से स्वामीजी के जीवन से एक प्रबल मोड़ लिया हैं। पहले स्वामी जी मुमुक्षु थे। अब उन्होने नि:श्रेयस के मार्ग को छोड़ कर अभ्युदय और परोपकार का मार्ग अपनाया है।

दण्डीजी से पाठ समाप्त कर के स्वामीजी दो वर्ष आगरा मे रहे। इन दिनों स्वामी जी अवधूत अवस्था में ही रहा करते थे और संस्कृत में ही वार्तालाप करतेथे। मूर्तिपूजा और पुराण खण्डन आदि विषयो पर ही उनके व्याख्यान और शास्त्रार्थ होते थे। वे योग वासिष्ट और गीता की कथा किया करते थे। देशाटन करते हुए स्वामी जी १८६७ मे कुम्भ के मेले पर हरिद्वार पहुंचे। उन्होने वहा सप्त सरोवर पर 'पाखण्ड खण्डनी' पताका गाड़ कर डेरा जमाया। वे वहां मूर्तिपूजा, अवतारवाद और श्रीमद् भागवत पुराण का खण्डन करते रहे। पर उन्हें कुछ ऐसा वैराग्य हुआ कि उन्होंने अपनी सब वस्तुएं बांट दी और अपने पास एक कौपीन और एक दण्ड रखा। उन्होंने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि अब वे केवल संस्कृत में सभाषण करेंगे और भोजन के लिए किसी से याचना नही करेंगे। और आयाचित भोजन को ही स्वीकार करेंगे। स्वामीजी के वैदिक धर्म के प्रचार का सूत्रपात यही से होता है। अब वे पौराणिक धर्म के संस्कारों से प्राय: मुक्त हो चुके थे, इनके स्थान पर मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि आर्ष ग्रन्थों का प्रवचन देते हुए पांच वर्ष तक गांगेय प्रदेश मे इसी अवधूत अवस्था में घूमते रहे।

उपर्युक्त पंक्तियो मे स्पष्ट है कि स्वामी जी सर्वदा ही जिज्ञासु बने रहे। जहा स भी उन्हे सत्य ज्ञान प्राप्त होता है उसको ग्रहण कर लेते हैं और इसके विरुद्ध बात का त्याग कर देते हैं। उन्हें मूर्तिपूजा से पहले ही घृणा हुई थी अब वह पुराणों के सभी पाखण्डों, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध आदि कुरीतियो का खण्डन करते हैं, और मनुस्मृति आदि ऋषिकृत ग्रन्थों को ही प्रामाणिक मानते हैं। उनके जीवन में वेद, सत्य, परोपकार और जिज्ञासा का बड़ा महत्व रहा है। इस कुम्भ पर वे पौराणिक संस्कारों से मुक्त हो गए थे और यदि यह कहा जाये कि वे महर्षि पद के योग्य हो गए थे तो अनुचित न होगा।

१८६७ से १८७५ में आर्य समाज की स्थापना तक वे एक क्रांतिकारी हिन्दू सन्यासी के रूप मे ही वैदिक विचारधारा का अनुसरण करते हुए आठ वर्ष तक शास्त्रार्थों और व्याख्यानों द्वारा पाखण्ड खण्डन ही करते रहे। उनके इस अभियान में १९६७ में कर्णवास में पं० हीरावल्लभ से उनका छ: दिन का शास्त्रार्थ बड़ा प्रभावकारी रहा। चार हजार पण्डित शास्त्रार्थ देखने आए। पण्डित हीरावल्लभ ने पराजित होकर मूर्तियों को गंगा में प्रवाहित कर दिया। अन्य सैकड़ों मूर्तिपूजकों ने भी मूर्तियों को गंगा में प्रवाहित कर दिया। कईयों ने कण्ठियां तोड़ डालीं और तिलक पोंछ डाले। एक अन्य घटना भी बड़ी चिरस्मरणीय है। स्वामी जी १८६८ में कर्णवास में गया दशहरे के मेले पर पधारे। वहां राव कर्णसिंह से गंगा पर चर्चा चली। राव ने उत्तेजित होकर स्वामीजी पर आक्रमण करने के लिए तलवार उठाई। स्वामी जी ने उस तलवार के दो टुकड़े कर दिए और कहा कि वह यदि अपने क्षत्रियत्व पर पूरा नहीं उतरा तो हम अपने ब्राह्मणत्व से पतित क्यों हो? सोलह दिसम्बर १८६९ को स्वामी जी का काशी के पण्डितों से सर्वप्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ। इसके अध्यक्ष काशी नरेश थे। इसका विषय था—

(शेष पृष्ठ १० पर)

सार्वदेशिक (पत्र) के नियम

(१) 'सार्वदेशिक' पत्र का ग्राहक वर्ष के किसी भी समय से बना जा सकता है।

(२) 'सार्वदेशिक' पत्र का वार्षिक (३०/- रु०) या आजीवन (३००/- रु०) सदस्यता शुल्क मनीआर्डर द्वारा ही भेजने का कष्ट करें।

(३) प्रत्येक ग्राहक के पास 'सार्वदेशिक' बड़ी सावधानी से भेजा जाता है। परन्तु यदि किसी ग्राहक को पत्र न मिले तो कार्यालय में पत्र-व्यवहार द्वारा या व्यक्तिगत सम्पर्क करें तथा साथ ही अपने डाकघर से भी इसका स्पष्टीकरण मांगे। पत्राचार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

(४) प्रकाशनार्थ लेख टाईप किये हो या स्पष्ट अक्षरों में हाथ से लिखे होने पर ही स्वीकार किये जायेंगे।

(५) वैदिक ज्ञान, महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की मान्यताओं के अनुरूप लेखों को ही प्रकाशित किया जाएगा। लेख को न्यूनाधिक करना सम्पादक के अधीन है।

(६) सार्वदेशिक पत्र को और अधिक जनप्रिय बनाने के सुझावों का स्वागत है।

—सम्पादक

स्वास्थ्य चर्चा

आहार संयम

मनुष्य का शरीर अन्नमय कोष है। आहार में अन्न अत्यन्त महत्वपूर्ण पदार्थ है। मन का स्तर भी आहार पर निर्भर है। आहार जितना सात्विक होगा मन उसी अनुपात से निर्मल बनता चला जायेगा। आहार शास्त्री बताते हैं कि ८० प्रतिशत रोगों का कारण आहार का व्यतिक्रम है। कुछ तो यहां तक कहते हैं कि पाचन सम्बन्धी अनेक असन्तुलन कैंसर, दमा, हृदय रोग आदि भयंकर रोगों के पूर्व संकेन है।

"राष्ट्र संघ पोषण एवं मानव की आवश्यकता" रिपोर्ट से आहार संयम पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है—

"इस शताब्दी के आरम्भ से ही संक्रामक रोग बढ़ते चले जा रहे हैं। इसका कारण है आहार में विद्यमान संघटकों में परिवर्तन। कार्बोहाइड्रेट, फल, साग, सब्जी तथा अन्न के स्थान पर बसा, शर्करा, स्टार्च ने जगह ले ली है। कैलोरी सम्बन्धी आवश्यकता पूरी करने वाली सामग्री का साठ प्रतिशत भाग इन्हीं से बना होता है। शरीर की जीवनी शक्ति के बजाय ये सभी तथा कथित पोषक पदार्थ मनुष्य को पाचन सम्बन्धी रोगों तथा संक्रामक रोगों के जंजाल में डाल देते हैं। असामयिक मृत्यु के १० कारणों में ६ का सम्बन्ध आहार से होना है। कैंसर भी उनमें से एक है।"

शरीर के अन्दर प्रकृति ने ऐसी व्यवस्था बनादी है जो बताती है कि हमें कितना खाना चाहिये और कब बन्द कर देना चाहिये। अति आहार से मोटापा, अजीर्ण आदि होता है उनके निवारण के लिये आत्म नियन्त्रण की आवश्यकता है। जो अन्न खाया जाता है वह तीन भागों में विभाजित होता है—स्थूल अंश से बल बनता है, मध्यम अंश से रक्त और मांस बनते हैं, सूक्ष्म अंश से मन बनता है। अत: आहार शुद्ध होने पर चित्त की शुद्धि होती है और चित्त से ही धर्म का प्रकाश होता है। आहार स्वाद के लिये नहीं औषधि रूप में लिया जाना चाहिये। आहार जीवन का आधार हैं यह समझते हुए उसके स्वाद को नहीं सात्विकता को महत्व दिया जाना चाहिये। जब मनुष्य अभक्ष्य और अति पर उतर आता है तो जो अन्न जीव के जन्म और पालन करने की श्रेष्ठता रखता है वह जीवों को खा भी जाता है।

योग, आहार व इच्छा शक्ति के आधार पर मनुष्य रोगों पर विजय प्राप्त कर सकता है यह एक प्रामाणिक तथ्य है। अत: आहार संयम की आवश्यकता को समझकर उसका प्रयोग करना चाहिये। —वेदप्रकाश सेंगर हाथरस

आर्य वन में योग शिविर

(२६ मार्च से ४ अप्रैल ९२ तक)

श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज की अध्यक्षता में अष्टांग योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। क्रियात्मक रूप से योग साधना सीखने में रुचि रखने वाले स्त्री पुरुष अपनी योग्यता, व्यवसाय आदि के विवरण सहित शीघ्र आवेदन करें।

शिविरार्थी की अवस्था १५ वर्ष से अधिक हो, ८ कक्षा की योग्यता हो, अतिवृद्ध अथवा रोगी न हो, धूम्रपान आदि व्यसनों से रहित हो। शिविर शुल्क २०० रुपये होगा। ५ अप्रैल को उत्सव मनाया जायेगा। सम्पर्क करें—

आचार्य, दर्शन योग महाविद्यालय,
आर्य वन, रोजड़, पत्रालय—सागपुर
जि० साबर कांठा (गुजरात)-३८३३०७

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय एवं उसका वार्षिकोत्सव

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी अपनी उल्लेखनीय उपलब्धियों के साथ निरन्तर अभूतपूर्व प्रगति पथ पर आगे बढ़ रहा है। कन्याओं के लिये आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन का यह एक केन्द्रस्थल बन चुका है। यह विद्यालय अपने पीछे २० वर्ष का इतिहास समेटे हुये है जो उत्तरोत्तर तेजी से विकास करते हुये यहां तक प्रवृद्ध हुआ है। इस विद्यालय की अन्य प्रगतियों के साथ-साथ इसके अपने वार्षिकोत्सव की भी बडी विशेषता सदैव से रही है। जिस ऊंचे मापदण्ड को लेकर यहां प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव होते रहे हैं उनका महत्व किन्हीं बड़े सम्मेलनों से कम नहीं होता है। इस वर्ष इस विद्यालय का महोत्सव ३,४,५ अप्रैल १९९२ को होना निश्चित हुआ है।

इस वर्ष के वार्षिकोत्सव की विशेषता—

इस वर्ष ३,४,५ अप्रैल को होने वाले वार्षिकोत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह होगी कि जिन पूज्यपाद गुरुवर्य श्री प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की स्मृति में यह विद्यालय संचालित है उनकी जन्म-शती का प्रारूप वर्ष मानकर यह उत्सव मनाया जायेगा। पूज्य गुरुवर्य का जन्मदिवस १४ अक्तूबर १८९२ है अत: १४ अक्तूबर १९९२ से यह शती वर्ष प्रारम्भ होगा तथा १४ अक्तूबर १९९३ को इसका समापन माना जायेगा। इस जन्मशती वर्ष का प्रारूप कैसा हो? इस सम्बन्ध में वार्षिकोत्सव के अवसर पर महत्वपूर्ण विचार गोष्ठियां होगीं जिसमें उनके आत्मीय भक्तगण भाग लेंगे।

इस शती वर्ष पर पूज्य गुरुवर्य के जीवन पर प्रकाश डालने वाली एक पुस्तक का प्रकाशन करने का हमारा निश्चय है अत: सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे पूज्य गुरु जी से सम्बद्ध लेख, घटना, संस्मरण अथवा कोई उनका महत्वपूर्ण पत्र जो उनके पास उपलब्ध हो इन सबको पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी के पते पर भेजने का कष्ट करें।

द्वितीय विशेषता इस अप्रैल मास में होने वाले त्रिदिवसीय महोत्सव की यह है कि ४ अप्रैल को यहां देश के गणमान्य महानुभावों के द्वारा एक "पाणिनि मन्दिरम्" (सत्सग हाल) का शिलान्यास होगा। इस पाणिनि मन्दिरम् में पत्थरों में अष्टाध्यायी के सभी सूत्र अंकित किये जायेंगे। यह एक नवीन दर्शनीय स्थल होगा जैसा कि अपनी जानकारी मे अपने देश में अब तक नहीं है।

मेरी प्रार्थना है कि इस महोत्सव में भाग लेने हेतु सब सज्जन अच्छी संख्या मे पधारें तथा अपने तात्कालिक विशेष सुझाव दें एव सभी योजनाओं को क्रियान्वित करने में श्रद्धापूर्वक योगदान करें।

प्रज्ञादेवी
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
तुलसीपुर, वाराणसी-१०

भाषण प्रतियोगिता

सोमवार २ मार्च १९९२ को साढ़े ग्यारह बजे से आर्य युवक परिषद् दिल्ली (पंजी०) के तत्वावधान में मावलंकर हाल, रफी मार्ग, नई दिल्ली में "ऋषि मेले" के मुख्य मंच पर स्कूलों के छात्र-छात्राओं की "युवकों के पथ प्रदर्शक महर्षि दयानन्द" विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

श्री प्रकाशचन्द जी गुप्ता, B-१७० ग्रेटर कैलाश, दिल्ली-४८ की ओर से विजेता छात्र-छात्रों को पारितोषिक दिये जायेंगे।

वक्ता बच्चों के नाम शनिवार २९ फरवरी १९९२ तक परीक्षा कार्यालय एच०-६४, अशोक बिहार दिल्ली-५२ के पते पर भेजे।

—ओमप्रकाश मन्त्री

सत्य भक्त

(पृष्ठ ८ का शेष)

कि 'मूर्तिपूजा वेद विहित है या नही' पण्डित ताराचन्द तर्क रत्न राजाराम शास्त्री बाल शास्त्री, स्वामी विशुद्धानन्द आदि पण्डित विपक्ष मे थे। इसमे पचास-साठ हजार दर्शक थे। पण्डितो की वेद मे गति नही थी। वे स्वामी जी के प्रश्नो का उत्तर नही दे पा रहे थे। स्वामी विशुद्धानन्द ने 'हर हर विश्वेश्वर' कह कर ताली पीट दी और यह शास्त्रार्थ बिना किसी निर्णय के ही समाप्त हो गया। दिसम्बर १८७२ में स्वामी जी कलकत्ता पहुचे। यहा नव विधान (ब्रह्म समाज) के सस्थापक बाबू केशवचन्द्र सेन, महर्षि देवेन्द्रनाथ, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर रामकृष्ण परमहंस आदि महानुभावो से उनकी भेंट हुई। केशवचन्द्र सेन तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने स्वामी जी को सभा मे भाषण के समय वस्त्र पहनने का सुझाव दिया। सेन जी का यह भी सुझाव था कि भाषणो मे हिंदी का प्रयोग करे। स्वामी जी ने सुझाव मान लिए।

क्रान्तिकारी दयानन्द ने इस अवधि मे सस्कृत सभाषणो के माध्यम से पण्डितो को प्रार्थना करना चाहा था परन्तु उन्होने केशवचन्द्र सेनका सुझाव मान लिया और हिन्दी मे भाषण दने प्रारम्भ कर दिये। यह है दयानन्द की उदारता वे सदा सत्य और लोकोपयोगी बात को ग्रहण करने के लिए तत्पर रहते थे। अब स्वामी जी मोक्ष जैसी गम्भीर चर्चाओ को छोड कर सामाजिक समस्याओ के समाधान की ओर झुक रहे थे। कर्णवास मे अपने प्रिय मित्र कैलाश पर्वत के प्रश्न का उत्तर देते हुए वे कहते हैं कि मैं अपनी मुक्ति के लिए उत्सुक नही हू मैं तो उस दिन को देखना चाहता हू जब कि त्रिताप सन्तप्त जन समाज नाना क्लेशो और पीडाओ से मुक्त होकर श्रेय मार्ग का पथिक बनेगा।

स्वामी जी की दृष्टि मे धर्म कोई ऐसी वस्तु या पदार्थ नही था जिसकी सिद्धि प्राप्ति के लिए अनेक प्रकार की अलौकिक तथा दिव्य साधनाए आवश्यक हो, अपितु अपने दैनन्दिन व्यवहारो मे भी ईमानदारी, सत्याचरण तथा लोकहित को प्रधानता देकर धर्म का पालन किया जा सकता है। इसी प्रकार कर्णवास मे निवास करते हुए एक अन्य सज्जन के प्रश्नका उत्तर देते हुए स्वामी जी कहते हैं कि अधर्म का लक्षण जानने के लिए भारतीय दण्ड संहिता की विभिन्न धाराओ को पढने की आवश्यकता है।

स्वामी दयानन्द ने १८७५ मे बम्बई मे आर्य समाज की स्थापना की, परन्तु हमने इन पक्तियो मे स्वामी दयानन्द को १८७५ से पहले एक क्रान्तिकारी हिन्दू सन्यासी के रूप मे प्रस्तुत किया है। स्वामी जी ने इस अवधि मे हिन्दू जाति मे एक नई धार्मिक और वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करने का यत्न किया, साथ ही वे राष्ट्रोन्नति पर भी बल देते रहे।

३७ सिखो को पीपे में बन्द कर कनाडा ले जाने का प्रयास

हैम्बर्ग, २३ फरवरी भारत के कम से कम ३७ नागरिको को एक जहाज के पीपे मे बन्द करके अवैध रूप से कनाडा ले जाने की साजिश रचने के आरोप मे गिरफ्तार दो भारतीय नागरिको को रिहा कर दिया गया है। लेकिन उनके खिलाफ जाच कार्य जारी है।

पुलिस के अनुसार इन दोनो भारतीय नागरिको के अपने घर हैं और उनके भागने की कोई आशका नही। उन्हें कल गिरफ्तार कर उनके कब्जे से कुछ धनराशि भी बरामद की गई थी। जो भारतीय अवैध रूप से लाए जा रहे थे उनमे करीब सभी सिख थे। उन्होने पुलिस को बताया कि अवैध रूप से कनाडा जाने के लिए उन्होने तीन-तीन हजार डालर दिए थे। उन्हे कनाडा जाने वाले पोलेंड के एक जहाज के पीपे मे बन्द करके लाया जा रहा था।

आर्य समाज की गतिविधियां

विश्व शान्ति यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

वैदिक पारिवारिक सत्संग समिति जालना (महाराष्ट्र) द्वारा यजुर्वेद पारायण महायज्ञ गुरुकुल रामलिंग येडशी (धाराशिव) के आचार्य प० सुभाषचन्द्र जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे पूर्ण हुआ। दिनाक २८ जनवरी ९२ से ३ फरवरी सोमवार ९२ तक मनाया गया।

आरम्भ मे स्वामी सन्तोषानन्द जी सरस्वती के हाथो ध्वजारोहण किया गया। प्रतिदिन प्रात ६ से ७ तक अनेक विद्यालयो के छात्र तथा छात्राओ को योगासन प्राणायाम नियुद्ध आदि का शिक्षण दिया गया। ७-३० से ९-३० तथा शाम ५॥ से ८॥ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ भजन कीर्तन प्रवचन आदि कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त रविवार २-२-९२ को दोपहर मे महिला सम्मेलन हुआ। जिसमे अन्तर्जातीय नव विवाहितो का सत्कार किया गया। "आज के युग मे महिलाओ का योग दान" नामक विषयो पर भाषण हुए। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती ताराबाई पित्ती ने की, प्रमुख वक्ता के रूप मे डा० प्रा० कु० भारतीदेवी जाधव मराठवाडा विश्वविद्यालय रही।

—प० रामानन्द शर्मा

वैदिक धर्म मे दीक्षित

१—कु० हुसैनाबानो बोहरा बुरानपुर—जिला खण्डवा की शुद्धि की गई और उसका हिन्दू नाम हुसा देवी रखा गया तथा विवाह सस्कार विजयकुमार शर्मा के साथ कराया गया।

२—कु० शबाना भूरे खा झाबुआ म०प्र० की शुद्धि की गई और उसका हिन्दू नाम नीलिमा रखा गया शुद्धि सस्कार के बाद उसका विवाह सस्कार राजेश कुमार रावलिया के साथ सम्पन्न कराया गया। इसका आयोजन शकरसिंह जी आर्य द्वारा किया गया।

—शकरसिंह आर्य

बोध रात्रि पर आर्य समाज द्वारा भव्य कार्यक्रम

आर्य समाज पचाबी बाग दिल्ला मे दिनाक १ माच से ३ मार्च तक शिवरात्रि (बोध रात्रि) के अवसर पर अनेको कायक्रमो का आयोजन किया गया है। जिसमे प्रतिदिन प्रात ८ बजे स १०ब जे तक यज्ञ एव भजनोपदेश होगे तथा प्रतियोगित ए आयोजित की जायेगी। मुख्य कायक्रम ३ मार्च को रात्रि मे होगा।

- प्रभाकरदेव आर्य मन्त्री

आर्य समाज चाहता है

कि एक परमात्मा की पूजा, वेदो की प्रतिष्ठा, समाज सेवा, देश भक्ति विश्वमार्यम, सर्वे भवन्तु सुखिन, सब वर्ण तेजवान हो, शिक्षा सुधार, स्त्री जागरण, विश्वबन्धुत्व, सह अस्तित्व, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास उन्मूलन यज्ञ प्रचार, गुरुकुल प्रणाली, योगाभ्यास आर्ष ग्रन्थो का स्वाध्याय, सबके प्रति सद्भाव व सम्मान। मूर्ति पूजा, तीर्थ व श्राद्धादि अवैदिक बातो का खण्डन, तथा प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति का अवसर।

आर्य समाज—जड पूजा, अवतारवाद, जादू टोना, भूत प्रेत, फलित ज्योतिष, जातिवाद, सम्प्रदाय वाद, अस्पृश्यता स्त्रीहीनता मृतक श्राद्ध आदि अवैदिक व कपोल कल्पित मिथ्या बातो का बहिष्कार करता है। सती प्रथा, पशु व नर बलि को जघन्य पाप मानता है।

आर्यसमाज किशनपुरा गन्नौर हरियाणा

आर्यसमाज किशनपुरा गन्नौर (हरियाणा) मे १२ फरवरी ९२ को महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का १६८वा जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। श्रद्धालु भक्तो को प्रसादरूप मे मिठाई वितरित की गई। आर्यसमाज पर २५०० बल्वो की दीपमाला की गई। नया ध्वज लगाया गया। इस आर्यसमाज के स्तम्भ श्री हरिचन्द बत्रा ने अपने पोते के जन्मदिवस पर शामिल न होकर दिल्ली से गन्नौर आकर अपने बाबा दयानन्द का जन्मदिवस धूमधाम से मनवाया।

—जयदेव जतोई वाला गन्नौर

महर्षि दयानन्द और गौरक्षा

(पृष्ठ ३ का शेष)

गोव आस के क्रय करने, उनकी रक्षा के लिए भृत्य वा अधिकारी रखने, तालाब, कूप, बावडी अथवा बाडा बनाने के निमित्त किया जावे। पुन अत्युन्नत होने पर सर्वहित कार्य मे भी व्यय किया जावे। यह भी निर्देश है कि इस सभा के जो पशु प्रसूत होगे उनका दूध एक मास तक उसके बछडे को पिलाना चाहिए और अधिक होने पर उसी पशु को अन्न के साथ खिला देना चाहिए। दूसरे मास मे तीन स्तनो का दूध बछडे को देना और एक स्तन का स्वय लेना चाहिए। तीसरे मासके आरम्भ से आधा दूह लेना और आधा बछडेको तब तक देते रहना चाहिए जब तक गाय दूध देतीरहे। सभा जब किसी को स्वरक्षित पशु देवे तब यह व्यवस्था कर ले कि जब वह पशु असमर्थ हो जायेगा, उसके काम का न रहेगा या उसके पालन का सामर्थ्य उसमे न रहेगा तो वह पुन उसे सभा के अधीन कर देगा।

स्वामी दयानन्द का अभिप्राय था कि गाय-बैलो की रक्षा होगी तो घी, दूध, अन्न प्रचुर मात्रा में मिलेगा कृषि उन्नत होगी, देशवासी बलवान तथा बुद्धिमान बनेंगे और इसी प्रकार प्रत्येक देश के समुन्नत होने पर यह धरती गरिमामयी बन सकेगी।

गोरक्षा और पशुरक्षा का प्रश्न जैसा स्वामी दयानन्द के समय था, वैसा ही आज भी है और दयानन्द के द्वारा किये गये तद्विषयक प्रयास आज हमे भी अपने कर्तव्य का बोध करा रहे हैं।

साहित्य समीक्षा

नश्तर का सफर

लेखक—डा० अक्षयकुमार वर्मा
प्रकाशक—ज्ञान गंगा, २०५-सी
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
मूल्य—चालीस रुपये

"नश्तर का सफर" हिन्दी भाषा में प्लास्टिक एवं सौन्दर्य पर कदाचित अपनी तरह की पहली पुस्तक है। इसमें डा० वर्मा के जीवन की जो अटूट साधना निहित है उसके पीछे उनका दृढ़ संकल्प और अनन्य निष्ठा ही प्रमुख है। इस पुस्तक की एक विशेषता यह भी है कि सड़क पर चलने वाला आम आदमी भी इस विधा में हुई आधुनिकतम प्रगति से सहज ही अवगत हो सकेगा।

शल्य चिकित्सा विज्ञान की विभिन्न उपलब्धियों की जो पर्तें डा० वर्मा ने अपनी इस पुस्तक में जिस शैली और अन्दाज में खोली है, सचमुच उन्हें पढ़कर दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है। वर्मा जी के पास जहां एक कुशल सर्जन का मस्तिष्क है वहां एक जागरूक साहित्यकार का संवेदनशील हृदय भी है। एक ही व्यक्ति में इन दोनों गुणों का समन्वय सर्वथा विरल ही दृष्टिगत होता है। "बुधिया की नई नाक का रहस्य" शीर्षक लेख पढ़कर तो अनायास ही मुंह से निकलता है कि प्लास्टिक सर्जरी की इस देन के लिये सुन्दरता नश्तर की सदैव ऋणी रहेगी। "कबाब की प्याली" विष कन्या के होंठों की लाली, शीर्षक विवरण में लेखक ने वैज्ञानिक तर्क देकर मांस और अण्डे से शक्ति प्राप्त करने के लिये चिरकाल से चले आ रहे मानव के भ्रम को तोड़ा है। इसको पढ़ कर अनेक मांस प्रेमी लोग मांस और मदिरा का त्याग करके शाकाहार द्वारा स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन प्राप्त करने को प्रेरणा कर सकेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

—सम्पादक

जिले में प्रथम स्थान

गत दिनों जिला आर्य सभा सगकर कार्यालय चूरी द्वारा आयोजित धर्म शिक्षा की परीक्षा मे लाला लाजपतराय आर्य कन्या विद्यालय सगकर की छात्रा कु० मीनाक्षी ने जिले मे प्रथम स्थान प्राप्त किया हैं। कु० मीनाक्षी प्रशंसा को पात्र है।

—रामसुफल शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड ६ जिल्दो में	६००)
ऋग्वेद प्रथम भाग से पांच भाग तक	३००)
यजुर्वेद भाग—६	९०)
सामवेद भाग—७	५०)
अथर्ववेद भाग—८	६०)
अथर्ववेद भाग—९+१०	९०)

वेद भाष्य का नेट मूल्य ५२५) रुपये
अलग-अलग जिल्द लेने पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

बलिदानों के प्रताप से ही संस्कृति बचा ... है

देहरादून, १७ फरवरी। धर्मवीर हकीकतराय बलिदान स्मृति कार्यक्रमों की श्रृंखला इस जनपद के विभिन्न स्थानों पर बसन्त-पंचमी के दिन से आरम्भ होकर रविवार दिनांक १६ जनवरी को होमरी ग्राम तथा डाकपत्थर में हुए समारोहों के साथ पूर्ण हो गई।

आर्य समाज मन्दिर होमरी के प्रांगण में श्री देवदत्त बाली ने यज्ञ कराया। धर्मवीर ... हकीकतराय के बलिदान पर बोलते हुए आपने कहा कि विभिन्न धार्मिक मतों के बीच सद्भावनापूर्वक शास्त्रार्थ का होना और उसे सुनकर और स्वतन्त्र मनन करके श्रोताओं का किसी मत को स्वीकार या अस्वीकार करना इस देश की सांस्कृतिक परम्परा रही है। परन्तु तलवार के जोर पर दूसरे मत के अनुयायी को अपने मत में लाने की दुष्प्रवृत्ति को तो विदेशी मतों वाले लोग ही इस देश में लेकर आए थे और उनके अत्याचारों का सामना वीरता से आत्म बलिदान करने वालों ने हर युग में किया था। श्री बाली ने कहा कि यही तो 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।"

मास्टर दलीपसिंह ने कहा कि देश के स्वाधीन हो जाने के बाद यहां सुराज्य की स्थापना के लिए आवश्यक है कि आर्य समाज के नशाबन्दी जैसे आन्दोलन में तथा शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के अन्य कार्यक्रमों मे पूरी शक्ति लगाई जाए।

होमरी से मध्याह्नोत्तर चलकर यह दल आर्य समाज डाकपत्थर में पहुंचा। वहां धर्मवीर हकीकतराय बलिदान-समारोह में श्री देवदत्त बाली का ओजस्वी भाषण हुआ। तदनन्तर डाकपत्थर कालोनी में एक प्रचार-यात्रा निकाली गई। धार्मिक साहित्य का वितरण भी दोनों स्थानो पर किया। जनता ने दोनो आयोजनो में उत्साह से भाग लिया।

—देवदत्तबाली, प्रधान
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून

विदेशी युवती का वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न

गत मंगलवार को सायं ६ बजे आर्य समाज केसरगंज अजमेर में स्विटजरलैण्ड निवासिनी मिस बारबरा कोमिक कोर्ड नकी स्वेच्छा से वैदिक धर्म में आस्था होने के कारण ईसाईधर्म से वैदिकधर्म में दीक्षित किया गया तथा उनका नाम सरस्वती आर्या रखा गया तत्पश्चात उनका विवाह वैदिक रीति से पुष्कर निवासी श्री हरिदत्त भट्ट के साथ आचार्य गोविन्दसिंह जी के पौरोहित्य मे शुद्धि के बाद सम्पन्न किया गया। इस समारोह मे आर्य समाज के अधिकारीगण एवं वर पक्ष तथा वधू पक्ष से सम्बन्धित सदस्य उपस्थित थे जिन्होंने वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान करते हुए सुखमय जीवन की शुभकामनायें दी।

—आचार्य गोविन्दसिंह, स० मन्त्री

स्वर्गीय पं० चमूपति एम०ए० की महान रचना

चौहदवीं का चांद (हिन्दी)

हिन्दी रूपान्तरकार
आचार्य शिवराज शास्त्री एम.ए. मौलवी फाजिल
मूल्य १२ रुपये
प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मदान, नई दिल्ली-११०००२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● इस समय आर्य जाति की पुत्रियों की अवस्था शोचनीय है। ये संसार भर के भ्रमों और कुरीतियों का केन्द्र बन रही हैं।

● मैं वेद को ही सर्वोपरि मानता हूं। वेद ही ऐसी पुस्तक है कि जिसके झण्डे तले सब आर्य आ सकते हैं। इसलिए जो मनुष्य कह दे कि मैं वेदों को मानता हूं और आर्य हूं, उसे आर्यसमाज में सम्मिलित कर लो। ऐसे विश्वासी को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक ६] दयानन्दाब्द १६७ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२ फाल्गुन शु० ४ सं० २०४८ ८ मार्च १९९२

वेद ही विश्व को सर्वोत्तम सामाजिक व्यवस्थ दे सकते हैं : पं० वन्देमातरम्

नई दिल्ली २ मार्च। महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोध उत्सव राजधानी तथा देश के विभिन्न भागों मे बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे एक बड़े समारोह का आयोजन मावलकर हाल मे किया गया। जिसमें भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह मुख्य अतिथि थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर आर्य संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द, आचार्य रविदत्त गौतम तथा डा० रामकिशन जी का अभिनन्दन भी किया गया।

मुख्य अतिथि ज्ञानी जैलसिंह ने इस अवसर पर राष्ट्रीय भाषा तथा अन्य विद्वतापूर्ण सिद्धान्तों के योगदान के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों की चर्चा करते हुये कहा कि आज के दिन स्वामी जी ने कुरीतियों के विरुद्ध तथा सच्चे ज्ञान की खोज के लिये अपना जीवन प्रारम्भ किया था। ज्ञानी जी ने आर्य जनता से अपील करते हुये कहा कि वे प्राचीन वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करते हुये सारे राष्ट्र को और अधिक मजबूत बनाने का संकल्प लें। अपने भाषण में ज्ञानी जी ने सरकार तथा कुछ अदूरदर्शी नागरिकों पर अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को लेकर तीखे प्रहार किये।

समारोह के अध्यक्ष पं० वन्देमातरम् जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा साम्यवाद के प्रतिपादक कार्ल मार्क्स का तुलनात्मक विवरण जनता के समक्ष रखा। वन्देमातरम् जी ने कहा कि साम्यवाद जिस गति से ऊंचा उठा उससे भी तेज गति से उसका पतन हो गया। परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दिखाईगई वैदिक सामाजिक व्यवस्था आजभी उतनी ही मजबूत है जितनी हजारो साल पहले थी, क्योंकि इसमें योग्यता के आधार पर समाज को चार विभिन्न कार्य क्षेत्रों मे बांटा गया है तथा साथ ही ऊंच-नीच की भावना न पनपने देने के लिये विशेष उपदेश है। इसलिये आज आर्यसमाज का यह कर्तव्य है कि हम सारे विश्व को यह बोध करा दें कि हमारी वैदिक सामाजिक व्यवस्था जिसे वर्णाश्रम पद्धति भी कहा जाता है, पूर्ण तथा दोष रहित है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की गुजरात यात्रा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती २९ फरवरी को प्रातःकाल दिल्ली से बड़ौदा के लिये रवाना हुये। १ मार्च को स्वामी जी बड़ौदा से सोमगढ़ गये। जहां उन्होने ऋषि बोधउत्सव के अवसरपर २ मार्च को गुरुकुल सोमगढ द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमो में भाग लिया। वापसी पर बड़ौदा होते हुये स्वामी जी चार मार्च को दिल्ली पहुंचे। इस यात्रा में विभिन्न स्थानों पर आर्य जनता द्वारा स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया।

हरियाणा के कृषि राज्यमन्त्री श्री बचनसिंह आर्य ने भी इस उत्सव मे अपने विचार प्रकट किये। उन्होंने कहा कि मन्त्री पद से कोई भी कार्य करते हुये मै उसे सत्यार्थ प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के अन्य आदेशो की कसौटी पर अवश्य तौलता हूं। श्री बचनसिंह आर्य ने कहा कि हरियाणा सरकार की तरफ से पूरे प्रान्त मे लगभग ३६५ अहातों के लाइसेंस उन्होंने रद्द कराये हैं। इन अहातों मे शराब पीने की खुली छूट थी, उन्होंने कहा कि यह नया आदेश १ अप्रैल से लागू होगा और आगामी एक वर्ष तक लागू रहेगा। श्री बचनसिंह ने यह संकल्प भी दोहराया कि भविष्य मे भी मै इन लाइसेंसों के पुनः जारी करने का हर प्रकार से विरोध करूंगा।

इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती डा० ऊषा शास्त्री के प्रवचन तथा गुलाबसिंह राघव के भजनोपदेश भी हुये। इससे पूर्व प्रातः कालीन कार्यक्रम मे आर्य समाज के विभिन्न स्कूलो से आये बच्चों तथा आर्य वीर दल के जवानों द्वारा खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

गढ़वाल के भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ दानदाताओं की सूची (१०)

सूबेदार आर्य द्वारा आर्य समाज बेवर मैनपुरी	१००)
ज्वालाप्रसाद केडिया द्वारा सवेरा मेनरोड प० चम्पारण	११००)
चन्दूलाल खंडेलवाल, माले गांव नासिक, महाराष्ट्र	२५)
मन्त्री आर्यसमाज मधुपुर, जि० देवघर, बिहार	५१)
डा० इन्द्रकृष्णभट्ट १७०६ चर्चरोड, मेक्लीन, वर्जीनिया यू. एस ए,	२१००)
आर्य समाज खड़गपुर जिला, मिदनापुर (बंगाल)	१०१)
आर्यसमाज, आर्यसमाज चौक मोतिहारी बिहार	१५१)
श्रीमती चन्द्रावती माथुर द्वारा युगल किशोर माथुर १/२६ एस.एफ.एस, मानसरोवर दिल्ली	५००)
श्रीमती उमदादेवी पत्नी श्री माधोलाल जी, पौड़ी गढ़वाल	३१)
आर्यसमाज सोहनगंज, दिल्ली	२००)
विद्यारत्न आर्य, मन्त्री भारतीय सिद्धान्त परिषद नजीबाबाद	२१
धनेन्द्रसिंह लोदी, एस. आर. ८ विक्रमनगर, कोटा	१०)
मन्त्री आर्यसमाज मन्दिर नई सड़क, उज्जैन	५००)
रामचरण ठेकेदार द्वारा आर्यसमाज वादी कुंई अलवर (राज.)	५०)
आर्यसमाज विदिशा (म० प्र०)	१०१)
प्रिंसिपल स्टाफ इंडस्ट्रियल इन्सटीच्यूट नगर करनूल महबूब नगर (आन्ध्र प्रदेश)	१५०)
के० एल० पपनेजा जी, कनाडा	१०००)
सुनील चड्ढा जी, कनाडा	५०००)
चमनलाल जी नरूला, कनाडा	५००)
के०एल० चड्ढा जी कनाडा	१०००)
वेदप्रकाश भारद्वाज, चड़तगढ़, जि० ऊना (हि० प्र०)	१००)
श्री उत्तमसिंह, शाखा डाकपाल झालान जि० हमीदपुर	२०)
दयानन्द बालमन्दिर एवं जूनियर स्कूल द्वारा आर्य समाज सासनी, अलीगढ़	२५१)
आर्य समाज रसूला जि० समस्तीपुर बिहार	५००)
श्रीमती चन्द्रकान्ता गुप्ता ५६६ ए० गांधीनगर, जम्मू	१०००)
पं० आर० छांगुर जी, नीदरलैंड	१३५०)
पं० एम० गयादीन जी, नीदरलैंड	१३५०)
पं० डा० गुरदीन जी, नीदरलैंड	१३५०)
पं० राधा बिहारी जी, नीदरलैंड	१३५)
पं० महादेव उजगीर जी, नीदरलैंड	६७५)
भाई रंगई जी, नीदरलैंड	६७५)
भाई बच्चू जी, नीदरलैंड	१३५)
भाई बच्चू जी, नीदरलैंड	११७-५०
श्रीमती छांगुर जी, नीदरलैंड	६७५)
श्रीमती राजकुमारी गयादीन जी, नीदरलैंड	१३५०)
श्रीमती रामदीन जी, नीदरलैंड	२७०)
श्रीमती रसीयावान जी, नीदरलैंड	३१७-५०
श्रीमती कौशल्या भोला जी नीदरलैंड	१३५)
श्रीमती आनन्द बहादुर जी नीदरलैंड	१३५)
श्रीमती जेठु जी, नीदरलैंड	३१७-५०
श्रीमती देई दूबर जी, नीदरलैंड	४०५)
श्रीमती गणपत जी, नीदरलैंड	३१७-५०)

सभी दानदाताओं का धन्यवाद !

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

आर्य समाज के बढ़ते कदम

असम में गुरुकुल तथा एक और आर्य समाज की स्थापना

आर्य समाज के कदम कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम के लक्ष्य की ओर दिनों दिन बढ़ते जा रहे हैं। हमे इस विवाद में नही पड़ना चाहिए कि इस प्रगति की गति क्या है। प्रगति अपने आप में ही एक सराहनीय लक्षण है। प्रगतिशील व्यक्तित्व, समाज और राष्ट्र की अपनी अमूल्य धरोहर, अपनी संस्कृति आदि की रक्षा तथा उसकी उन्नति का समुचित प्रबन्ध कर सकता है।

इस वर्ष आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का १६८ वां जन्म दिवस बड़े हर्ष और उल्लास के साथ समारोह पूर्वक समस्त विश्व में मनाया गया। इस आशय के समाचार बहुत बड़ी संख्या में गत कई अंको मे हमने प्रकाशित किए हैं। असम राज्य की आर्य प्रतिनिधि सभा भी किसी तरह से पीछे नही रही। इस सभा के प्रधान डा० नारायणदासजी ने सूचना दी है कि इस जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त असम के कलसाबाड़ी नामक गांव के वासियो ने मिल कर लगभग ५ बीघा भूमि आर्य समाज मन्दिर की स्थापना तथा गुरुकुल खोलने के लिए उपलब्ध कराई है। यह गांव रंगिया स्टेशन से लगभग पांच किलोमीटर की दूरी पर है। सबसे अधिक हर्ष का विषय यह नहीं है कि आर्य समाजो की संख्या मे एक और वृद्धि हो गई है अपितु इस बात से मन गदगद हो उठता है कि भिन्न २ भाषाओं और रीति रिवाजों के लोग सत्य-असत्य का भेद समझने मे अन्ततः योग्य हुए उन पर ईश्वर की कृपा हुई कि वे सत्य सनातन वैदिक सन्मार्ग के पथिक बने। एक और प्रसन्नता की बात यह है कि इस नई समाज के सभी सदस्य असमी भाषी हैं और लोअर असम में इससे पहले वैदिक प्रचार का कोई केन्द्र वहां के आर्यबन्धुओं को उपलब्ध नहीं था। असमी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद तो पहले ही हो चुका है। उम्मीद है अब और अधिक वैदिक साहित्य असमी भाषा में प्रकाशित किया जाएगा। इन समस्त शुभकार्यों के लिए असम सभा के प्रधान डा० नारायणदास जी विशेष साधुवाद के पात्र हैं परन्तु उनके अन्य सहयोगियों और विशेष रूप से तुलसाबाड़ी गांव के समस्त आर्य बन्धुओं के लिए भी हमारे मन मे कम सम्मान नही है। जिनके प्रयत्नों से उन सब ने मिल कर इस ईश्वर इच्छा और स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की इच्छा को पूर्ण करने हेतु योगदान दिया है वह अत्यन्त सराहनीय है।

—विमल वधावन एडवोकेट
संयोजक, कानूनी समिति

महर्षि दयानन्द सरस्वती

म—मन मन्दिर को कर उज्वल, सच्चा मानव बन जायेगा।
ह—हर पीड़ा का निदान समझ तो आदर्श समाज बन जायेगा॥
र्—रण में भी खाना गम, इसे जो अपनायेगा।
षि—सिद्ध पुरुष का क्या है काम वह समझ पा जायेगा॥
द—दस इन्द्रियों के संयम से ही योग्य पुरुष कहलायेगा।
या—याद रख अपनी जुबां पर ओ३म नाम से ही पार पायेगा॥
न—नर नारी के सारे कर्तव्य जब पर हित में बह जायेगा।
न्—नजर होगी एक समान तो हर प्राणी सुख पायेगा॥
द—दर दर पर यज्ञ हवन वेद वाणी का जब बादल मंडरायेगा।
स—सत पताका की लहर से सारा दुःख दूर हो जायेगा॥
र—रत्न मणी पारस सम आर्य जगत हो जायेगा।
स्—सत्य अहिंसा के प्रभाव से पाखण्ड स्वयं हट जायेगा॥
व—वट वृक्ष की अटल छाया में अष्टांग योग को पायेगा।
ती—तीनों काल की वैदिक संध्या से नर सहज ही तर जायेगा॥
हर बच्चा बच्चा ऋषि दयानन्द बन जायेगा।
गुर तत्व को पा 'सुन्दर' भारत आनन्द से भर जायेगा॥

—सुन्दर लाल प्रहलाद चौधरी, बुरहानपुर (म० प्र०)

बलिदान दिवस पर विशेष—

अमर शहीद पं० लेखराम का बहुमुखी व्यक्तित्व

—श्री रामवीर शर्मा आचार्य, एम० ए० अलीगढ़

सम्पदि यस्य न हर्षो, विपदि विषादो, रणे च न भीरुत्वम्। त भुवनत्रयतिलक जननी जनयति सुत विरलम्।

जो सुख पाकर प्रसन्नता से फूला न समाता हो, दुःख पाकर मन मैला न करता हो और युद्ध भूमि मे कायरता न दिखाता हो ऐसे तीनों लोको के तिलक पुत्र को बिरली माताए ही जन्म देती हैं अर्थात जो मनुष्य सुख मे अपने कर्त्तव्य से विरत नही होते, दुःख मे घबराते नही और आवश्यकता पड़ने पर युद्ध से भी नहीं डरते ऐसे ससार मे बिरले ही मनुष्य होते हैं। ऐसे महापुरुषो को पाकर ही मा और मातृभूमि दोनो ही अपने आपको धन्य समझती हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द म० हसराज गोखले, तिलक एव लाल बहादुर शास्त्री आदि की गणना इनमे होती है आर्यसमाज के सच्चे सेवक धर्म के धनी समाज के हितैषी मानवता के पुजारी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त एव सच्चे देशभक्त अमर शहीद प० लेखराम की भी उपर्युक्त महापुरुषो में ही गणना की जा सकती है जिनका सारा जीवन समाज का सेवा मे ही व्यतीत हुआ। मनुष्य जीवन के उद्देश्य पुरुषार्थ चतुष्टय में से जिन्होने धर्म को सर्वप्रथम स्थान दिया। विद्वान होकर किसी व्यक्ति विशेष के आराधक नही बने, मानवता की आराधना व सेवा करना ही अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य समझा। धन की कमी होते हुए भी कभी कर्त्तव्य पथ से विचलित नही हुए। मोक्ष प्राप्ति की कामना तक नही की। केवल दुःखी, पीड़ित एव शोषित जन समाज को गले लगाकर उन्हे कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ रखना ही अभीष्ट समझा।

समाज की सेवा करने मे आपने अनेक कष्ट सहे और भूखों भी मरना पड़ा पर कभी अपने कर्त्तव्य मार्ग से विचलित नही हुए। जिस प्रकार स्वर्ण तपकर अधिक खरा बन जाता है उसी प्रकार पण्डित जी ने जितना अधिक कष्ट सहा वे उतने ही कर्तव्य मार्ग पर अडिग रहे। दूने उत्साह से काम करते थे। दुःख एव पीड़ा उनके कार्य में बाधक होकर उपस्थित नही होते थे। वे धैर्य धारण करने मे अपूर्व थे। धर्म प्रचार के धनी वे सदा वैदिक धर्म की रक्षा करने मे अपने प्राणो की भी बाजी लगाने में नही हिचकिचाते थे। जब कभी आर्य भाइयो को मुसलमानो के चगुल मे फसा हुआ सुनते तो उन्हे बचाने के लिए तुरन्त दौड़ जाते तनिक विलम्ब न लगाते थे। इस धर्म कार्य मे वे भोजन तक की भी परवाह नहीं करते थे। उनमे अनेक विशिष्ट गुण थे जिनका उल्लेख करना साधारण व्यक्ति की बुद्धि से परे है फिर भी उनके जीवन की मुख्य मुख्य चरित्रगत विशेषताओ का उल्लेख करना मैं आवश्यक समझता हू जिनका अनुसरण कर मानव जीवन सफल बन सकता है—

निर्भीक और साहसी—लेखराम जी धर्म प्रचार का कार्य निर्भीकता से करते थे यदि मार्ग में बाधा उपस्थित होती तो उसे साहस से दूर कर देते थे। उनकी आत्म शक्ति इतनी प्रबल थी जिससे वे बड़े से बड़े अधिकारी को भी फटकार देते थे तथा गुण्डो तक को रास्ता बता देते थे। उनके जीवन की कई घटनाये उनकी निर्भीक भावनाओ का बोध कराती हैं एक बार पसरूर (स्याल कोट) मे जुलाई १८९७ को आर्य समाज के उत्सव में भाषण देने ज्यों ही खड़े हुए त्यो ही स्थानीय नगरपालिका के एक सदस्य आए और पास ही बैठे हुए श्री मथुरा प्रसाद प्रचारक से काना फूसी करने लगे। जब पण्डित जी ने पूछा तो प्रचारक जी ने बतलाया कि थानेदार साहब का सन्देश आया है कि यदि भाषण के समय बलवा हो गया तो पुलिस जिम्मेदार नही होगी। इस पर आर्य मुसाफिर की आंखें लाल हो गई और निर्भीकता से बोले "क्या हम युद्ध करने आए है हम तो धर्मोपदेश करने आए हैं सो जब तक चाहेगे तब तक स्वतन्त्रता से करेगे जो चाहे सुने जो न चाहे न सुने अगर यो ही बलवा हो पड़े तो हम देखते हैं कि कौन बलवा करता है। हम थानेदार साहब या और किसी साहब की रक्षा की परवाह नही करते हैं। ऐसे थे निर्भीक आर्य मुसाफिर प० लेखराम।

एक बार जब आर्य मुसाफिर मिर्जा गुलाम अहमद के शिष्य ख्वाजा कमालुद्दीन के द्वारा लगाये गये आरोप का खण्डन अपने व्याख्यान मे कर रहे थे तब एक युवक ने गुस्सा होकर कहा— काफिरो को काटने वाली मुहम्मदी शमशीर को मत भूल। इस पर आर्य मुसाफिर एक पल के लिए रुक गये फिर जिधर से शब्द सुने थे उधर आंखे घुमाकर सिंहनाद गुंजा दिया— मुझे बुजदिल मुहम्मदी तलवार की धमकी देता है। मैंने अधर्मी निर्बल मनुष्यो से डरना नही सीखा है। जानते नही हो मैं जान हथेली पर लिये फिरता हू। क्या ही निर्भीक वचन हैं आर्य वीर के। इसी प्रकार अनेकों अवसरों पर उन्होने अपनी निर्भयता एव आत्म विश्वास का परिचय दिया था।

एक बार जब पण्डित लेखराम बन्नू (पजाब) मे प्रचार कार्य कर रहे थे तब मुसलमानो से डरकर आर्य भाई आर्य मुसाफिर की पुलिस द्वारा सुरक्षा का प्रबन्ध करने लगे तो निर्भीकता पूर्वक उत्तर दिया "अगर मैं मुसलमानो से डरूंगा तो घर क्यो न बैठा रहूगा। प्रचार के लिये क्यो बाहर निकलू। पुलिस की जरूरत नही। इस प्रकार आत्म विश्वासी एव ईश्वर विश्वासी निर्भीक थे पण्डित लेखराम।

महर्षि के अनन्य भक्त—आप महर्षि दयानन्द के अपूर्व भक्त थे। उनके द्वारा बताये वेद मार्ग पर चलते और उसी पर सभी को चलने का उपदेश भी देते। वेद प्रचार के लिए शारीरिक एव आर्थिक कठिनाइयो की चिन्ता नहीं करते थे। यही तक नहीं—इस पुनीत कार्य मे वह अपनी धर्म पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का भी सहयोग प्राप्त करते। वे भी महिलाओ को वैदिक धर्म की शिक्षाए देतीं। पाषाण पूजा के स्थान पर सास-ससुर की सेवा करना, गुरुडम के स्थान पर पति-प्रेम का उपदेश देतीं।

अपूर्व वक्ता—पण्डित जी अपूर्व वक्ता थे। वे कठिन विषयो को भी आसानी से समझा देते थे। वे उन वक्ताओ मे से एक थे जिनकी वक्तृताओ का जनता मान करती थी। उनके भाषणो मे हजारों व्यक्ति उपस्थित रहते थे। श्रोता मन्त्र मुग्ध की तरह सुनते रहते थे। उनके अकाट्य तर्क एव युक्तियों को सुनकर लोग आश्चर्य मे पड़ जाते थे। विरोधी लोग इनकी वक्तृता से अति प्रभावित हो जाते थे तथा शास्त्रार्थ मे उन्हे मुह की खानी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि

महर्षि दयानन्द सरस्वती रचनात्मक आन्दोलन के प्रणेता, अन्धविश्वास और कुरीतियो के विरुद्ध लड़ने वाले महान कर्मयोगी राष्ट्रीय जन जागृति का सचार करने वाले महान प्रचारक थे। इन सबसे अधिक वह एक सच्चे मानव थे और उन्होंने समानता, स्त्री शिक्षा और देश प्रेम का अमर सन्देश भारत भर मे फैलाया। स्वामी जी के आदर्श एव कार्य हमे सदैव प्रेरणा प्रदान करते रहेगे। उनके दृढ़ सकल्प और इच्छा शक्ति से बहुत कुछ सीखना है। स्वामी जी की शिक्षायें आज के परिवर्तन शील समाज मे भी प्रासगिक है। मेरी यह कामना है कि उनके जीवन दर्शन और कार्य को हम सब अपनी आदतो मे उतारें और समाज को नई दिशा प्रदान करने के लिए कार्य करें।

अर्जुन सिंह
मानव ससाधन विकास मन्त्री
भारत सरकार

आतंकवाद से निपटने के लिए इस्राइली अनुभवों से लाभ उठाया जायगा : शरद

पश्चिमी क्षेत्र में किसी स्थान से, २१ फरवरी रक्षामन्त्री शरद पवार ने आज संकेत दिया कि देश में आतंकवाद का कारगर ढंग से मुकाबला करने के लिए भारत इस्राइल के अनुभव का लाभ उठाने की सम्भावना पर विचार कर रहा है।

श्री पवार वायु सेना के एक प्रमुख अग्रिम अड्डे की यात्रा के दौरान वायु सेना के विशेष विमान में संवाददाताओं से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा—अब जबकि भारत और इस्राइल के बीच पूर्ण राजनयिक सम्बन्ध स्थापित हो गए हैं, आतंकवाद के निवारण में इस्राइल के सफल अनुभव का लाभ उठाया मुमकिन है।

उन्होंने कहा, भारत चाहेगा कि इस दिशा में इस्राइल की तकनीकी जानकारी हासिल करे। इस तरह का आदान-प्रदान दोनों देशों के लिए परस्पर लाभकारी होगा।

भारत की प्रतिरक्षा से सम्बन्धित सभी मामलों की चर्चा करते हुए श्री पवार ने बताया कि अप्रैल के आखरी हफ्ते में वह अमरीका जा रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि इससे भारत-अमरीका सम्बन्धों के सर्वांगीण विकास में मदद मिलेगी।

भारत और अमरीका की सशस्त्र सेनाओं के बीच किस तरह के सम्बन्ध हों, इसकी ठोस योजना श्री पवार की आगामी यात्रा के दौरान तय की जाएगी। इसके बाद वायु सेना अध्यक्ष एयर चीफ मार्शल निर्मलचन्द सूरी और नौसेनाध्यक्ष एडमिरल रामदास अमरीका जाएंगे।

यह पूछने पर कि भारत-अमरीका प्रतिरक्षा सम्बन्धों का क्या स्वरूप होगा, श्री पवार ने कहा कि इसका निर्णय मन्त्रिमण्डल की राजनीतिक मामलों की समिति में होगा। उन्होंने बताया कि अमरीकी नेताओं को भारत उपमहाद्वीप की समग्र स्थिति से अवगत कराएंगे।

आर्य समाज के लिए राष्ट्ररक्षा सर्वोपरि है

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली २३ फरवरी।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली का रजत जयन्ती समारोह आज राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के साथ सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की जिसमें श्री मदनलाल खुराना संसद सदस्य मुख्य अतिथि थे। सम्मेलन को श्री केदारनाथ साहनी, डा० भवानीलाल भारतीय, श्री सूर्यदेव तथा श्री रामनाथ सहगल आदि ने भी सम्बोधित किया।

श्री मदनलाल खुराना ने हाल ही की अपनी एकता यात्रा के कुछ संस्मरण सुनाये। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आर्य समाज ने सदैव ही राष्ट्ररक्षा से सम्बन्धित चिन्तन तथा कार्यों को सर्वाधिक महत्व दिया है। स्वामी जी ने आशा व्यक्त की कि भारतीय जनता पार्टी को जो अपूर्व शक्ति गत चुनावों में प्राप्त हुयी है उसका प्रयोग वे भारत के वर्तमान प्रधान मन्त्री श्री नरसिंहराव के सहयोग से राष्ट्ररक्षा के लिये ही करेंगे।

१७ से २३ फरवरी तक चले इस रजत जयन्ती समारोह में प्रतिदिन प्रातः यजुर्वेद पारायण यज्ञ, तथा वेद कथा का आयोजन किया गया तथा २१ फरवरी को विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अतिरिक्त वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा आर्य युवक सम्मेलन भी आयोजित किये गये।

आर्य समाज लंदन की जनवरी मास की गतिविधियां

लंदन में जनवरी में ठण्डी अपनी चरम सीमा पर होती है। दिन छोटे और हवामान विषम होता है। तथापि साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन नियमित रूप से किया गया। ठण्डी के कारण सत्संगों में जनसंख्या कुछ सिकुड़ती है। परन्तु श्रोता और कार्यकर्त्ताओं के उत्साह में कोई कमी नहीं है।

इस महीने में श्रीमती उषा भसीन, श्री आश्रित वालंविया, श्रीमती सुमन और श्री राजेन्द्र चौपड़ा आदि आर्य परिवार यजमान बनें और श्रीमती शकुन्त कोछर, उषा भसीन और डा० तानाजी आचार्य जी ने पौरोहित्यकर यजमानों को आशीर्वाद प्रदान किया।

वेदसुधा की मालिका में श्री बलदेव मोहन मेहता और डा० ताना जी आचार्य ने वेद-मन्त्र की सरस व्याख्या की। जिसमें उन्होंने वेदमन्त्रों के आधार पर कहा—यह सुसंघटित विश्व कोई आकस्मिक घटना नहीं अपितु सुनियोजित और बुद्धिनिष्ठ कृति है। बिना किसी सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और चेतन कर्ता के इस सुव्यवस्थित विश्व की रचना, कदापि सम्भव नहीं है। इस सन्दर्भ में न्यूटन के गतिविषयक नियमों की समीक्षा करते हुए वेदों की वैज्ञानिकता पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया।

(२) श्री मेहता जी ने वेद-सुधा के माध्यम से संघटन के बल की चर्चा करते हुए आर्य समाज में संघटन को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री वीरेन्द्रवीर वर्मा उपप्रधान आर्यसमाज लंडन ने अपने व्याख्यान में प्राचीन भारतीय ऋषि-मुनि, आदि की विविध कला और विद्या की श्रेष्ठता को सिद्ध किया और वर्तमान में बढ़ते हुए धार्मिक भ्रष्टाचार और अन्धश्रद्धा का खण्डन किया। २६ जनवरी को भारतीय गणतन्त्र दिवस के अवसर पर तिरंगे ध्वज का आरोहण श्री वर्मा जी के करकमलों से किया गया। अध्यक्षीय समर्पण और बलिदान की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए भारत की वर्तमान समस्याओं पर तथा अराष्ट्रीय नीतियों पर गहरी चिन्ता प्रकट की।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर बच्चों के कार्यक्रम में श्री पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, श्री सोहनलाल पाठक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द आदि राष्ट्रीय नेताओं की जयन्तियां मनाई गईं। जिनमें इन महापुरुषों के जीवन पर बच्चों के भाषण, गीत आदि का कार्यक्रम हुआ। इसमें निम्नलिखित बच्चों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। विवेक बहल, कुनाल बहल, रोमिना गुजराल, समीर गुजराल, आशुतोष आर्य, मधुर आर्य, किरण मोंगिया, विशाल लूथर, सुमीर पुरी, विधि कपूर, आदित्य कपूर, रुचि अरोरा, अनुश्रिका अरोरा, ऋषि तनेजा और राखी तनेजा आदि। श्री वर्मा जी ने सबको पुरस्कार वितरण किया। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती स्वर्णा शर्मा ने किया और श्री राजेन्द्र चौपड़ा ने उनका विशेष सहयोग किया।

वेद-पाठ की महिलाओं ने पारिवारिक वेद-पाठ यज्ञ भजन प्रवचन आदि का सफल आयोजन किया। वेद के सन्देश को घर-घर पहुंचाने में इन महिलाओं के प्रयास प्रशंसनीय हैं। श्रीमती सवित्री छाबड़ा कैलाश भसीन, आदि कार्यकर्ता महिलाओं ने अनेक महिलाओं को वेदपाठ और यज्ञ का प्रशिक्षण दिया।

विवाह विषयक निःशुल्क सेवा के कार्य को परिणामकारक करने की दृष्टि से श्री जगदीश शर्मा का परिश्रम उल्लेखनीय है।

आर्य समाज लंडन की ओर से अनेक विवाह संस्कार जन्म दिवस, पुण्य तिथि अन्त्येष्टि संस्कार, हवन, प्रवचन आदि वैदिक संस्कारों के लिए सेवाएं उपलब्ध कराई गईं। प्रतिमाह 'आर्य पत्रिका' प्रकाशित की जाती है जिसमें वैदिक विचार धारा का

राष्ट्र रक्षा के महामन्त्र दाता—आचार्य चाणक्य

—प्रो० भवानीलाल भारतीय

विदेशी आक्रान्ता अलक्षेन्द्र (सिकन्दर) के आक्रमण को अपनी कूटनीति से विफल कर भारत राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने वाले, आर्य प्रज्ञा के धनी, महामेधावी आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य के आदर्श को विस्मृत कर देने से ही आज हम राष्ट्रीय संकट की घड़ी मे अपने को असहाय और असमर्थ अनुभव कर रहे हैं। जिस महान व्यक्ति ने विभिन्न गणतन्त्रो में विभक्त दुर्बल भारत को एक सार्वभौम, अखण्ड चक्रवर्ती राष्ट्र के रूप मे परिवर्तित करने का संकल्प कर देश वासियो की राष्ट्रीय अस्मिता को जागृत किया, उस प्रज्ञाशील राजनीतिज्ञ के प्रति सामान्य लोगों की धारणा कितनी भ्रमपूर्ण है। वे अभी तक यही समझते रहे कि वह व्यक्ति धूर्त, कुटिल तथा मत्सरग्रस्त था।

जिस ऋषि कल्प महापुरुष ने अर्थशास्त्र के रूप मे राजनीति का आकर ग्रन्थ लिखा, जिसका नीति शास्त्र आज लोक व्यवहार और सामाजिक आचरण की आदर्श संहिता समझा जाता है तथा जिसके द्वारा प्रणीत सूत्र मानव के लिए व्यावहारिक और उदात्त जीवन दर्शन उपस्थित करते हैं वह व्यक्ति स्वय कितना उदार तथा उच्चाशय वाला रहा होगा, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। चाणक्य के व्यक्तिगत जीवन के बारे मे हमारा ज्ञान नितान्त अल्प ही है। उसका नाम विष्णु गुप्त ही था, किन्तु लोक मे वह चाणक्य तथा कौटल्य के नाम से विख्यात रहा। स्वरचित सूत्रात्मक अर्थशास्त्र पर उन्होने स्वय भाष्य लिखा और उसमे अपने नाम 'विष्णु गुप्त" की घोषणा करते हुए वे लिखते हैं—दृष्ट्वा विप्रतिपत्ति बहुधा शास्त्रेषु भाष्यकाराणां स्वयमेव विष्णुगुप्तश्चकार सूत्र च भाष्य च। अर्थात प्रायः यह देखा गया है कि शास्त्रो पर लिखे गये विभिन्न भाष्यकारो के भाष्यो मे विसवादी स्वर सुनाई पडते हैं। अत. आचार्य विष्णुगुप्त ने स्वय ही अपने सूत्रो पर भाष्य की रचना की है। चणक ऋषि के वशज होने के कारण वे लोक मे चाणक्य के नाम से जाने गये। एक अन्य नाम कौटल्य भी उल्लिखित हुआ है। कौटल्येन नरेन्द्राथ शासनस्य विधि' कृत। आचार्य कौटल्य ने सम्राट चन्द्रगुप्त के लिए अर्थशास्त्री के रूपमे शासन की विधि का निर्माण किया।

बौद्ध जैन परम्परा ने ब्राह्मण चाणक्य के प्रति किंचित असहिष्णुता दिखाते हुए उनमे कुटिल वृति के दर्शन किये, फलत उन्हे यत्र तत्र कौटिल्य के नाम से अभिहित किया गया। वस्तुतः उनका गोत्र था कुटल। उनके कौटल्य नाम की उत्पत्ति इस प्रकार की गई है—कुटो घट। त धान्यपूर्ण लान्ति सगृह्णन्ति इति कुटलाः। कुम्भीधान्या. त्यागपरा ब्राह्मणा श्रेष्ठा। तथा गोत्रापत्ये कौटल्यो विष्णुगुप्तो नाम। अर्थात् कूट नाम है घट (घड़ा) का। जो लोग एक घडे से अधिक धान्य का सग्रह नही करते वे कुम्भी धान्य अत्यन्त त्याग वृत्ति वाले श्रेष्ठ ब्राह्मण कहलाते है। ऐसे ही त्यागी ब्राह्मणो के कुटल नामके गोत्र मे उत्पन्न विष्णुगुप्त को कौटल्य कहा गया था।

जैसा कि कहा जा चुका है आचार्य चाणक्य का विस्तृत जीवन वृत्तांत क्रमबद्ध उपलब्ध नही होता। उनके सम्बन्ध मे कामान्दकीय नीति शास्त्र में कुछ वृत्त मिलता है जो उनके सहनीय व्यक्तित्व की एक झलक मात्र प्रस्तुत करता है। यहा पर श्लोक आया है—

नीति शास्त्रामृत धीमन् अर्थशास्त्र महोदधे।
समुद्दध्रे नमस्तस्मै विष्णुगुप्ताय वेध से।।

जिसने अर्थशास्त्र रूपी महासागर से नीतिशास्त्र रूपी अमृत को निकाला उस अप्रतिम युग निर्माता विष्णुगुप्त को हमारा नमस्कार होवे। इसी ग्रन्थ मे नीतिकार कामन्दक कहता है "उन अगद्वरेण्य विष्णुगुप्त को हम प्रणाम करते हैं जो उस प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुए जिसके सदस्य ऋषि तुल्य थे, जो दान दक्षिणा नही लेते थे तथा समाज में जिनका सर्वोच्च सम्मान था।" इस उल्लेख से इस किवदन्ती का स्वतः ही खण्डन हो जाता है कि चाणक्य को नन्दराजा के यहा श्राद्ध में भोजन का न्यौता मिला तथा वहा से अपमानित किये जाने पर उन्होने प्रतिशोध जन्य प्रतिहिंसा की भावना से नन्दवश का उच्छेद करने की कठोर प्रतिज्ञा की। इसी नीतिशास्त्र में आगे कहा गया है—वे विष्णुगुप्त वज्राग्नि के तुल्य जाज्वल्यमान् तथा अपूर्व राजनीति तथा पूर्ण चातुर्य से प्रदीप्त वज्र के तुल्य पर्वत की भांति सुदृढ नन्दवश को नष्ट कर दिया तथा अपनी अप्रतिम बुद्धि और विचार शक्ति से चन्द्रगुप्त को ससागरा धरती का स्वामी बनाया। इन पंक्तियो में प्रयुक्त 'अभिचार वज्रेण' से सम्भवतः यह भ्रांति हो सकती है कि चाणक्य ने किसी तान्त्रिक अभिचार शक्ति द्वारा नन्दवश का मूलोच्छेद किया होगा, किन्तु यह कल्पना निराधार है। चाणक्य की अपूर्व मेधा उसकी विश्व विजयिनी कूटनीति ही वह अभिचार वज्र था जिसने नन्दवश का पराभव किया। अपनी इस बुद्धि के बारे में चाणक्य स्वय कहते हैं—जो लोग कुछ सोचकर पहले चले गए हैं, जो अब यहां हैं, वे भी यदि जाना चाहे तो चले जावें। समस्त कार्यो को सिद्ध करने वाली, सैकडो सेनाओ से भी अधिक शक्ति सम्पन्न तथा नन्दोन्मूलन मे जिसके बल की महिमा देखी जा चुकी है, वह मेरी बुद्धि ही मेरा त्याग न करे।' इसी बुद्धि का जयगान करते हुए अर्थशास्त्र के मगल श्लोक का भाव है—"सर्वार्थ साधन मे सक्षम उस अकेली बुद्धि की ही जय हो, जिसके बल से ब्राह्मण चाणक्य ने क्या-क्या नही कर दिखाया।" निश्चय ही चाणक्य का बुद्धि चमत्कार ही था जिसने भारत के मानचित्र पर आर्य गौरव का विस्तार किया।

इसी परिपेक्ष्य मे हमे चाणक्य की प्रवृत्तियो और उपलब्धियो की आलोचना करनी चाहिये। जिस समय यवन देश के अप्रतिरथ विजेता सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हुआ उस समय आचार्य चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय मे उपाध्याय के पद पर अभिषिक्त थे। राजकुमार चन्द्रगुप्त उनका अन्तेवासी (शिष्य) था। इतिहासकारो की नवीन खोजो से चन्द्रगुप्त का अभिजात कुलोत्पन्न होना सिद्ध हो चुका है। वह मुरा नामक शुद्रा दासी से उत्पन्न नन्द का जारज पुत्र था इस प्रकार की भ्रममूलक धारणाओ को श्री जयशकर प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटक चन्द्रगुप्त की शोधपूर्ण भूमिका मे पूर्णतया निरस्त कर दिया है। इसी राजकुमार चन्द्रगुप्त को स्वकौशल से पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आरूढ़ कर चाणक्य ने अपना चिरकालिक स्वप्न पूर्ण किया।

चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में एक सशक्त और एकीकृत राष्ट्र की कल्पना को साकार करने के पश्चात चाणक्य मगध के अमात्य पद पर रहने के लिए तनिक भी इच्छुक नही थे। उसने अपने राजनैतिक चातुर्य से मन्त्री राक्षस को मगध का अमात्य पद स्वीकार करने के लिए मना लिया और स्वय तृतीयाश्रम की मर्यादा का पालन करने के लिए अरण्यवासी बन गये। इतना उच्च त्याग और राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा से निवृत्ति भारत के निरीह ब्राह्मणों मे ही मिलती है। विशाखदत्त ने स्वरचित मुद्रा राक्षस मे इस प्रसग मे चाणक्य के मुख से कहलवाया है—'अब मैं मौर्य को सम्राट बनाकर तुम्ह (राक्षस) को मन्त्रित्व का भार सौंपकर अपनी ब्राह्मी तपस्या के लिए तपोवन जा रहा हू। मेरा आशीर्वाद है कि सम्राट् चन्द्रगुप्त बृहस्पति के समान तुम जैसे कुशल मन्त्री के रहते इन्द्र के तुल्य पृथ्वी का पालन करें।"

चाणक्य का यह सत्ता त्याग अपूर्व था। आज के सत्तालोलुप शासको के सन्दर्भ मे इसे देखें जब कि स्वार्थान्ध राजनीतिज्ञ मृत्युपर्यन्त अपने अधिकार, पद और सत्ता से चिपके रहने में ही जीवन की सफलता समझते हैं। इसके विपरीत महान आर्यावर्त को एकता के सूत्र मे पिरोने वाले आर्य चाणक्य ने न केवल लक्ष्यपूर्ति के तुरन्त पश्चात अपने अधिकार का ही त्याग कर दिया अपितु सर्वसंग परित्यागी परिव्राजक का जीवन अंगीकार कर पुरातन आदर्श की स्थापना भी की। इसी तपस्वी की निभृत कुटिया का वर्णन विशाखदत्त ने इस प्रकार किया है—राजाधिराज चन्द्रगुप्त के मन्त्री चाणक्य के घर की विभूति मे स्वर्ण, रत्न और विलास की वस्तुए नहीं हैं। यहा एक ओर तो यज्ञ की समिधाओं को तोडने के लिए पत्थर का टुकडा पड़ा है, दूसरी ओर आचार्य से शिक्षा ग्रहण करने के लिए आने वाले ब्रह्मचारियो से लाई गई कुशायें पडी हैं। इस जीर्ण शीर्ण भीतो वाली झोपडी के छप्पर पर यज्ञाग्नि प्रदीप्त करने हेतु एकत्रित समिधायें सूख रही हैं।"

धर्म

स्वा० ब्रह्मानन्द सरस्वती (वेदभिक्षु) चन्दौसी मुरादाबाद

'धर्म' शब्द अपने आप में एक महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित है। संस्कृत भाषा में भी उसका दूसरा पर्याय नहीं है। तथा संसार की किसी भी भाषा में उसका यथार्थ अनुवाद सम्भव नहीं है। अरबी के मजहब शब्द का अर्थ 'मार्ग' है। मजहब अनेक सम्भव हैं, लेकिन धर्म मात्र एक ही है। अंग्रेजी का 'रिलीजन' (Religion) शब्द भी धर्म का पर्याय नहीं है। धर्म के सिद्धान्त सार्वभौम, विवेक पूर्ण, तर्क सम्मत, विज्ञान के अनुकूल और मानव मात्र के हित के लिए ही हुआ करते हैं। धर्म शाश्वत है। स्वयं ईश्वर धर्म का सन्देश-वाहक होता है।

भारतीय धर्म शास्त्र में धर्म की परिभाषा इस प्रकार से की गई है—

'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः सधर्मः'=जिसके सेवन=व्यवहार से लौकिक अभ्युदय=उन्नति और अलौकिक निःश्रेयस=परम आत्म सन्तोष=तुष्टि=शान्ति=आनन्द=कल्याण प्राप्त होता हो वह 'धर्म' है।

महाभारत में भी एक स्थान पर कहा गया है—

"धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद् धारण संयुक्तं स धर्म इति निश्चय ॥"

धारण करने से इसका नाम धर्म है। धर्म प्रजा को धारण करता है। जिससे धारण होता है वह निश्चय से धर्म है।

मनुष्य का मनुष्यत्व ही सच मे धर्म है। प्रेम, दया, सौहार्दता धर्म के फल हैं। धर्म-आत्मा को परमात्मा के साथ और मानव को मानव के साथ भली प्रकार से जोड़ता है। जो ईश्वर से तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करा सके और सम्पूर्ण मानव में भ्रातृत्व-की भावना उत्पन्न करा सके वही धर्म है। धर्म ध्वंसक नहीं होता है, इसके विपरीत मजहब ध्वंसक प्रवृत्ति वाला होता है। मजहबों के घिनौने आचारों में संसार से खूब रक्त-पात हुए हैं और अब भी हो रहे हैं।

मजहब का यह एक छोटा सा उदाहरण ही मजहबी मानसिकता का खुलासा कर देता है गांधीजी की हत्या होने पर किसी ने मुहम्मदअली जिन्ना से उनके विचार पूछे तो जिन्ना साहब बोले थे कि—"Yes according to my religion and Creed a ballen and dultrous Musalman is better than Gandhi."

अर्थात्–मेरे मजहब और अकीदे के अनुसार एक पतित और व्यभिचारी मुसलमान गांधी से अच्छा है, क्यो कि वह रसूल को मानता है।

देखिए, स्पष्ट है कि कोई भी विवेकशील व्यक्ति आज के विज्ञान के युग में ऐसी पक्षपात पूर्ण बात को नहीं मान सकता है। गांधी जी ने जिस समुदाय के लिये अपना जीवन दान दिया था, उसी समाज के वरिष्ठ नेता ने मजहबी चश्मे से गांधी जी का मूल्यांकन किया। यह कितना आश्चर्य है। मजहब मानवता के लिए सरासर एक धोखा है। मजहबी कभी धार्मिक नहीं हो सकता है।

जिससे मानव मात्र के सुखों की वृद्धि होती है, वहीं धर्म है। प्रत्येक मानव सुख प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील है, जिसका मूल धर्म ही है। और धर्म का मूल वेद (वेदोऽखिलो धर्म मूलम) है। वेद में कहा हुआ ही धर्म है और उससे विपरीत अधर्म है। "चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः"=वेद में जिसकी प्रेरणा की गई है, वह पदार्थ धर्म है।

धर्म की उत्पत्ति सत्य से होती है, दया और दान से वह बढ़ता है, क्षमा में वह निवास करता है और क्रोध से उसका नाश होता है। वैदिक संस्कृति में धर्म का उदात्त भाव यही है, जो सृष्टि में प्राणी मात्र के प्रति मंगल कामनाएं रखता है और पूर्ण वसुधा को एक परिवार के समान सुख पूर्वक जीने का सन्देश देता है। मजहबों व सम्प्रदायों के दृष्टिकोण संकुचित एवं कुण्ठित होते हैं। वे पूर्ण प्राणी जगत के प्रति उदासीन, क्रूर और पक्ष-पात पूर्ण होते हैं। जो धर्म दूसरे धर्म में बाधा डाले वह धर्म नहीं है किन्तु अधर्म है। जो धर्म समस्त प्रगतिशील समाज को प्रगति-पथ पर प्रेरित करता है, वही यथार्थ धर्म है।

धर्म की सिद्धि दो प्रकार से मानी गई है। प्रथम अहिंसा, श्रद्धा, सत्य, अस्तेय=(चोरी त्याग), ब्रह्मचर्य अक्रोध, शौच, पवित्र द्रव्य सेवन, भक्ति, उपवास, अप्रमाद आदि सामान्य धर्मों के पालन करने से धर्म की सिद्धि में सहयोग मिलता है।

दूसरे चारों वर्णों तथा चारों आश्रमों के अपने-अपने विशिष्ट कर्तव्यों का पालन करना भी 'धर्म' साधना के लिए आवश्यक है। इस प्रकार 'धर्म' के सत्य स्वरूप को समझकर मनुष्य, मजहबों के कु-कर्मों में नही फंसता है और वह एक श्रेष्ठ मानव के रूप में संसार का उपकार ही करता है।

इस प्रकार सभी प्रकार के कर्मों को इस कसौटी पर परखने से उनके विषय में धर्म और अधर्म का निर्णय सहज में ही किया जा सकता है। इसी सिद्धान्त पर स्थूल और सूक्ष्म भेद से धर्म और अधर्म का विवेकद्वार निश्चय कर मनुष्य को प्रत्येक कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए यही धर्म का रहस्य है। इसी धार्मिक नियम से सारी सृष्टि का प्रवाह चल रहा है। इस सुखद प्रवाह मे व्यतिक्रम का कारण मजहबों की कुचालें ही हैं। वैदिक धर्म ही सार्वभौम हो सकता है क्योंकि मजहब तो व्यक्ति विशेष व देश-काल से बंधे हुए हैं। जब कि वैदिक धर्म सिद्धान्तों में आस्था कराता है, व्यक्ति विशेष में नहीं।

अस्तु, हमारी धार्मिक अनुभवों की व्याख्या वैज्ञानिक शोध के अनुरूप होनी चाहिए। परम्परागत वही बातें मान्य होनी चाहिए जो तर्क संगत हों।

धर्म की उत्पत्ति सत्य से होती है, दया और दान से वह बढ़ता है, क्षमा में वह निवास करता है और क्रोध से उसका नाश होता है। वैदिक संस्कृति में धर्म का उदात्त भाव यही है, जो सृष्टि में प्राणी मात्र के प्रति मंगल कामनाएं रखता है और पूर्ण वसुधा को एक परिवार के समान सुख पूर्वक जीने का सन्देश देता है।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश में (२)

—भगवानदेव चैतन्य—

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें-वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों मे विरोध बढ़कर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। "महर्षि दयानन्द की इस मान्यता को आज भी यदि मानकर प्रयास किया जाए तो समूचे राष्ट्र का ही नहीं विश्व का कल्याण हो सकता है। महर्षि जी ने अपने जीवन में इस प्रकार के एक सर्वधर्म सम्मेलन के कार्यान्वयन का प्रयास भी किया था मगर सत्य के प्रदीप के समक्ष आने में सभी ने आनाकानी की और इस प्रकार एक सार्वभौमिक धर्म की स्थापना करने से महर्षि को वंचित कर दिया। वास्तविकता यह है कि यदि इस प्रकार की एकता स्थापित हो जाए तो उन लोगों की दुकानें बन्द हो जाती हैं जिन्होंने अलग-अलग मजहब एवं सम्प्रदाय चलाकर अपने अपने हलवे माण्डे का प्रबन्ध करा रखा है और सैकड़ों-लाखों चेले चेलियां अपनी सेवा के लिए तैयार कर रखी हैं। अपने अपने राजनैतिक या गद्दीधारी बनने के स्वार्थों ने ही ये दीवारें खड़ी कर रखी हैं। इसलिए महर्षि दयानन्द जैसा कोई मानव हितैषी या टूटी-फूटी मानवता को जोड़ने वाला कोई पैदा होता है तो ये ही अपनी-अपनी गद्दियां सलामत रखने वाले एषणाओं से आकण्ठ ग्रसित लोग विरोध करना आरम्भ कर देते हैं क्योंकि मानवताकी छिन्न भिन्नता और अज्ञानता का बना रहना ही इनके अस्तित्व का आधार है। मगर महर्षि दयानन्द ऐसे महापुरुष थे जो व्यक्ति के विचारों को पूर्ण रूप से स्वतन्त्र रखकर उसे विकसित होने का अवसर प्रदान करना अपना लक्ष्य समझते थे। बाबा वाक्य प्रमाणम् की पद्धति उन्हे स्वीकार नही थी। उन्हे यह भी विश्वास था कि उनके द्वारा उद्घाटित कटु सत्य को पचा पाना हर किसी के बस की बात नही, इसलिए वे लिखते हैं— "श्रोता व पाठकगण भी प्रथम प्रेम से देखकर इस ग्रन्थ का सत्य-सत्य तात्पर्य जानकर यथेष्ठ करें। इसमे यह अभिप्राय रखा गया है कि जो-जो सब मतों में सत्य बातें हैं, वे वे सभी में अविरुद्ध होने से उनको स्वीकार करके जो जो मत मतान्तरों मे मिथ्या बातें हैं उन उनका खण्डन किया है…"। महर्षि दयानन्द की शिक्षाएं देश, काल और क्षेत्रवाद के दायरों से बहुत ऊपर हैं। किसी प्रकार का पक्षपात उन्हें छू तक भी नहीं गया है—" यद्यपि मै आर्यवर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं, तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथा तथ्य प्रकाश करता हूं, वैसे ही देशस्थ व मत वालों के साथ भी वरतता हूं… मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता, तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर है, क्योंकि जैसे पशु बलवान होकर निर्बलों को दुःखको देते और मारभी डालतेहैं, जब मनुष्य शरीर पाकर वैसा ही कर्म करतेहैं तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं किन्तु पशुवत् हैं और जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थ वश होकर पर हानि मात्र करता रहताहै वह मानो पशुओं का भी बड़ा भाई है। "महर्षि जी के इन शब्दों में विश्व-बन्धुत्व तथा जियो और जीने दो का अमर सन्देश निहित है। यह ग्रन्थ आज भी सम्प्रदायवाद, देशी विदेशी, गोरे काले, ऊंचे-नीचे, तेरे-मेरे के संकुचित दायरों से हमें बाहर निकालने की क्षमता रखता है।'

महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थों और आर्यसमाज संस्था के प्रति लोगों में अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैली हुई हैं। लोग दूर दूर से ही सुनी सुनाई बातों या पूर्वाग्रहों के कारण दूर भाग जाते हैं मगर आवश्यकता इस बात की है कि हम मिशनरी की भावना से कार्य-क्षेत्र में उतरें। हमें अपने व्यक्तिगत कार्यों से भी बढ़कर आर्य समाज के कार्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए मगर जिस बात की सबसे बड़ी आवश्यकता है उसकी ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। वह यह है कि हमे महर्षि प्रणीत ग्रन्थों की बड़ी ही बारीकी के साथ अध्ययन, चिन्तन और मनन करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हम किसी भी अन्य व्यक्ति को प्रभावित करने का क्षमता नही रख सकते हैं। आजकल के युग में बहुत ही तार्किक होने की आवश्यकता है। बड़े धैर्य और लगन के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। अज्ञानता को भी हमें एक रोग की दृष्टि से देखना चाहिए और ऐसे रोगी को बड़े ही साहस और लगन के साथ ठीक करने की आवश्यकता है। आरम्भ मे भले ही कोई हमारी बातों का बुरा भी मान जायेगा मगर जब उसे दयानन्द के ज्ञान की आंख मिल जायेगी तो वही हमे लाख लाख धन्यवाद भी देगा। हमें नि.स्वार्थभाव से निरन्तर कर्मपथ पर आरूढ़ रहना है और सत्यार्थप्रकाश के प्रकाश में कृण्वन्तोविश्वमार्यम् का सपना साकार करना है।

मानव जीवन और परिश्रम

अखिल उपाध्याय

प्रत्येक देश व समाज की उन्नति वहां के परिश्रमी नागरिकों पर ही अवलम्बित है। सृष्टि का कण-कण हमें कर्मशील जीवन की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। सूर्य, चन्द्र, पशु, पक्षी, वृक्ष, नदियां, स्रोत, समुद्र आदि सभी कार्यरत दृष्टिगोचर होते हैं। इसी कर्मशील परिश्रम के अमरत्व से मानव ईश्वरत्व की प्राप्ति करता है। एक अंग्रेजी लेखक के अनुसार—

"God helps those who help themselves"

वास्तव में सत्य कहा गया है कि ईश्वर ने कर्मठ मनुष्य के लिये ही संसार के समस्त वैभव बनाए हैं। आलसी के लिए तो उसका अपना जीवन ही भार समान है। परिश्रम सफल मानव जीवन का मेरुदण्ड है। यह वह शक्ति है जो उन्नति का मार्ग खोल देती है, यह वह कला है जो मनुष्य को मरने के पश्चात् भी अमरत्व प्रदान करती है। संसार के कठिन से कठिन कार्य परिश्रम के द्वारा ही सरल हुए हैं। मानवता का विकास, विज्ञान की उन्नति आदि परिश्रम के ही तो परिणाम हैं। इसलिए सत्य कहा गया है "परिश्रम वह सुन्दर चाभी है, जो सौभाग्य के द्वार खोल देती है।"

परिश्रमके फलस्वरूप एक सामान्य व्यक्ति भी विद्वान् हो सकता है, एक निर्बल शक्तिशाली बन सकता है। दो पत्थरों की रगड़ से अग्नि उत्पन्न होती है। सतत् चेष्टा करने से कठिन एवं दुरूह वस्तुएं भी सरल हो जाती हैं। परिश्रम के द्वारा ही मनुष्य की शक्तियों का विकास सम्भव है।

अकर्मण्यता दरिद्रता की सहेली है। अत: परिश्रम का सहारा लेकर इससे बचना ही उचित है। यदि परिश्रम, विवेक और व्यवस्था सहित उचित दिशा में संलग्नता के साथ किया जाय, तो उसका परिणाम आश्चर्यजनक होता है। शारीरिक और मानसिक दोनों ही परिश्रम अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण हैं। दोनों के सम्मिलित प्रयास से एक पूर्ण परिश्रम का निर्माण होता है। शारीरिक और मानसिक श्रम जीवन के विकास में समुचित सहायता प्रदान करते हैं। परिश्रम की सफलता के साथ-साथ आनन्द की भी प्राप्ति होती है। जब कोई कार्य परिश्रम के पश्चात् सफल होता है तो हृदय उल्लास से पूर्ण हो जाता है। मानसिक शान्ति मिलने के साथ-साथ पुन: प्रयत्न की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। श्रम करने में वैसी ही रुचि होनी चाहिए जैसी खेल खेलने में होती हैं, कार्य को कर्तव्य समझकर करना चाहिए।

कठिन परिश्रम में संलग्न व्यक्ति की आत्मा भी उसी प्रकार निखर जाती है जिस प्रकार अग्नि में तपकर स्वर्ण। परिश्रम में अनेक गुणों का भंडार भरा हुआ है। इससे आरोग्य, प्रफुल्लता, बलिष्ठता, चैतन्य, स्फूर्ति, उत्साह, साहस आत्मविश्वास आदि अनेक आनन्ददायक तत्वों की बढ़ोत्तरी होती है। दुर्लभता सुलभता का आवरण धारण कर परिश्रम के समक्ष नतमस्तक होती है।

संसार में जितनी भी महानतम विभूतियां हुई हैं, उन्होंने श्रम के प्रति निष्ठा के साधना व्रत से ही उच्चता, श्रेष्ठता एवं गौरव प्राप्त किया है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, कर्मराजयोगी कृष्ण, त्यागी गौतम बुद्ध, महान् तपस्वी महर्षि दयानन्द इसके ज्वलन्त प्रमाण है।

महर्षि दयानन्द गुरु की आज्ञानुसार जब वैदिक धर्म के प्रचार में लग गये, उनके पास उस समय न बाहुबल था, न धन-बल न संस्था थी, केवल बुद्धिबल व उनका स्वयं का परिश्रम था। इसी बुद्धिबल व परिश्रम के बल पर ही वे अपने कार्य में पूर्ण सफल रहे। इसी मूल मन्त्र को अपनाकर नैपोलियन बोनापार्ट, अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी व सुभाषचन्द्र बोस महान् पुरुष बने। अत: हमें भी परिश्रम द्वारा अपने जीवन को सुन्दर और गौरवमय बनाना चाहिये।

आचार्य चाणक्य

(पृष्ठ ५ का शेष)

अनासक्त तथा गीता के शब्दों में जल मे कमल पत्र की भांति निर्लेप रहने वाले ब्राह्मणों का यही जीवनादर्श है जिसे चाणक्य ने साकार किया था। ऐसे ही त्याग, तप और स्थित प्रज्ञता के धनी महापुरुष इतिहास के पृष्ठो पर अपनी पद छाप छोड़ जाते है। उनके लिए राष्ट्र की अर्चना और स्वराज्य स्थापना ही जीवन का एकमात्र मन्त्र होता है। भारतीय इतिहास के ऐसे ही कतिपय महापुरुषों के प्रति अपनी श्रद्धाप्रसून अर्पित करते हुए गुजराती के प्रख्यात लेखक कन्हैयालाल माणेकलाल मुन्शी ने लिखा था— "इतिहास की रंगभूमि पर ऐसे व्यक्ति जब आते हैं तब दूसरे तत्व पुरुषार्थ विहीन हो जाते हैं। समग्र शक्तियों का भान भूलकर दर्शकों का मन उसके आस पास लिपट जाता है। नायक के मोह में नाटक का अर्थ विस्मरण हो जाता है। भूतकाल की रंगभूमि पर ऐसे अनेक व्यक्ति हुए हैं। परशुराम, मधुसूदन भगवान कृष्ण और समस्त जगत के राजनीतिज्ञ शिरोमणि भगवान् विष्णुगुप्त चाणक्य।

आर्य वीर दल

राजस्थान में आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

पीपाड़ शहर, ३१-१२-९१। दिनांक २२ से ३० दिसम्बर १९९१ तक लगे प्रान्तीय शिविर मे नव आशा का संचार हुआ है। इस शिविर में २० जिलों के चुने हुए आर्य वीरो को सघन प्रशिक्षण योग्य प्रशिक्षकों द्वारा दिया गया। आर्य वीरो को दीक्षित किया गया उन्होंने स्थान-स्थान पर नई शाखाये स्थापित करने का संकल्प लिया। इस शुभावसरपर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियों ने ग्रीष्मकाल में लगाये जाने वाले शिविरों का समस्त व्यय भार सभा द्वारा वहन करने की घोषणा की। प्रान्त में विभिन्न स्थानो पर शाखाओं का निरीक्षण करने के लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल के शिक्षकों का कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया गया:—

१. मदनपाल राठी—कोटा संभाग
२. हरिसिंह आर्य - सुजानगढ़, सुमेरपुर, नाथा (पाली) अजमेर आदि
३. अजीतसिंह आर्य—पीपाड़, अलवर, सीरवला, जोधपुर, गंगापुर सिटी

—डा० देवव्रत आचार्य

प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल

आर्य वीर दल का शिविर

दिनांक २२-१२-९१ से २६-१२-९१ तक पांच दिन का शिविर श्री रास. बी, तिकमल प्रधान आर्य समाज मुधोल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, शिविर का संचालन श्री चन्द्रकान्त मिसकीन द्वारा किया गया। इस शिविर में गांव के ५० युवकों ने भाग लिया।

युवकों को श्री गोविन्दराव जी आर्य शिक्षक द्वारा आसन, प्राणायाम, दण्ड, बैठक, लाठी, चाकू, कराटे और आत्म रक्षा के विभिन्न उपाय का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त देश प्रेम और संस्कृति रक्षा की शिक्षा दी गयी।

—गोविन्दराव आर्य

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के समाचार

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह पूर्वक मनाये जाने के समाचार निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं अतः संक्षिप्त रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं।

—सम्पादक

दिल्ली

आर्यसमाज बिरला लाइन्स दिल्ली—समस्त आर्य बन्धुओं द्वारा इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधानजी जय प्रकाश के नेतृत्व मे प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। जिसमे बच्चों, बूढ़ों और स्त्रियों ने भी भाग लिया। यह प्रभात फेरी आर्य भजन गाते हुए घण्टाघर, कमला नगर, आदि क्षेत्रो मे घूमते हुए पुनः आर्य समाज मन्दिर प्रांगण में समाप्त हुई। प्रभात फेरी में भाग लेने वालो को प्रसाद वितरित किया गया। इस प्रभात फेरी से बिरला लाइन्स के आस पास के क्षेत्रो में हर्षोल्लास की लहर प्रवाहित हो गई।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली—विट्ठल भाई पटेल भवन मे आयोजित समारोह की अध्यक्षता प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने की तथा प्रधान श्री दरबारीलाल ने घोषणा की कि अगले वर्ष से जन्मोत्सव के उपलक्ष में समस्त डी० ए० वी० संस्थाओ मे सार्वजनिक अवकाश रहेगा। जिसकी पुष्टि डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धक समिति के प्रधान श्री जी पी चोपड़ा तथा जनरल सैक्रेटरी श्री एम. एल खन्ना ने भी की।

(उत्तर-प्रदेश)

१ आर्य समाज प्रतापगढ़—विशेष जन्म दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमे समाज के सदस्यो के अतिरिक्त आर्यवीर दल के युवा साथियो तथा शीतल प्रसाद आर्य कन्या विद्यालय की समस्त अध्यापिकाओ तथा छात्र-छात्राओ ने भाग लिया। विशेष प्रसाद वितरित किया गया। इस सभा ने एक प्रस्ताव मे १२ फरवरी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव पर अवकाश घोषित करने की अपील प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति तथा प्रदेश के मुख्यमन्त्री से की।

२—आर्य समाज चन्दौसी मुरादाबाद—बाल विद्या मन्दिर के छात्रो का एक जलूस सारे शहर से मार्च पास्ट करते हुए तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती का जयघोष बोलते हुए आर्य समाज मन्दिर भवन तक पहुचा, जहां विशेष उत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लगभग १२००० मन्त्रो का योग समाधि से साक्षात्कार किया था। इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया तथा समस्त बच्चो तथा आर्य महानुभावों को प्रसाद वितरित किया गया।

३, आर्य समाज औरैया इटावा—एक विशाल जन सभा में बहुत बडी संख्या मे स्थानीय नागरिको तथा आर्य परिवारो ने बडे उत्साह से भाग लिया तथा समस्त औरैया क्षेत्र में लोगो की तरफ से इस अवसर पर सार्वजनिक अवकाश की अपील की गई।

४. आर्य कन्या इन्टर कालेज कानपुर—केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे विशेष समारोह आयोजित किया गया। श्री देवीदास आर्य ने कहा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कांग्रेस की स्थापना से पूर्व स्वदेशी राज्य की भावना उत्पन्न कर दी थी। कार्यक्रम का संचालन प्रधानाध्यापिका श्रीमती बसन्त कुमारी मिश्रा ने किया।

(हरियाणा)

१ आर्य समाज नरवाना जीन्द—आर्यसमाज के प्रागण मे आयोजित जन्म दिवस समारोह मे माध्यमिक विद्यालय, आर्य कन्या पाठशाला तथा महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के बच्चो ने ऋषि दयानन्द से सम्बन्धित भजन व भाषण प्रस्तुत किये। मन्त्री श्री राधाकृष्ण जी के द्वारा अपनी तरफ से पुरस्कार बांटें गये।

वृद्ध आर्य नेता श्री ताराचन्द ने कहा कि हम सबको एक दिल होकर वैदिक विचार वाले नवयुवकों को भी आर्य समाज का सदस्य बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इसके पश्चात् ५० आर्य सज्जनो का एक समूह उप-मण्डल अधिकारी नरवाना से मिला तथा स्वामी दयानन्द जन्म-दिवस के सार्वजनिक अवकाश सम्बन्धित प्रस्ताव को उच्च नेताओ तक पहुचाने के लिए दिया।

२—आर्यसमाज फरीदाबाद—में भी विशाल समारोह में सार्वजनिक अवकाश की माग की गई।

(बिहार)

१—आर्यसमाज हवेली खड़गपुर, २—आर्य समाज रजोली नवादा, ३—आर्यसमाज मानपुर गया, ४—गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम, ५—आर्यसमाज जमालपुर, ६—आर्यसमाज रसेड़ा समस्तीपुर, ७—आर्यसमाज रक्सौल, ८—आर्यसमाज बक्सर, ९—आर्यसमाज नरकटियागंज, १०—आर्यसमाज आरा भोजपुर।

महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक की संज्ञा दी गई, तथा १२ फरवरी को सार्वजनिक अवकाश के माग का प्रस्ताव उच्च नेताओ को भेजा गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार—मुख्य मन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव ने जन्मोत्सव समारोह का उद्घाटन किया तथा इस अवसर पर राजस्व मन्त्री श्री देवनारायण यादव और नगर विकास मन्त्री श्री नारायण यादव भी उपस्थित थे। जन्मोत्सव अवकाश की मांग को सैद्धातिक रूप से इन नेताओ ने स्वीकार किया।

(पंजाब)

आर्यसमाज लुधियाना—नगर के प्रसिद्ध विद्वानो तथा धर्मोपदेशको द्वारा स्वामी दयानन्द के जीवन की विस्तृत चर्चा और उनके योगदान को याद किया गया।

(कर्नाटक)

आर्यसमाज हुबली— आर्यसमाज सुरपुर गुलबर्गा—राष्ट्र प्रेम, विश्व का कल्याण और विद्याका प्रसार चाहनेवाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव के अवकाश की माग की गई।

(राजस्थान)

१—आर्यसमाज शाहपुरा भीलवाड़ा २—आर्यसमाज हिण्डौन—अनेको विद्वानो और धर्मोपदेशकों द्वारा समारोह को सम्बोधित किया गया जिसमे सबने स्वामी दयानन्द की जीवन चर्या तथा योगदान पर प्रकाश डाला। और महर्षि दयानन्द जन्म उत्सव पर सार्वजनिक अवकाश की मांग की गई।

३—आर्यसमाज सरदारपुर जोधपुर— द्वारा एक विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

४—आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर—आर्यसमाज द्वारा सम्मिलित रूप से एक विशाल उत्सव का आयोजन किया गया जिसके अध्यक्ष राज्य के राजस्व उप-मन्त्री श्री मिश्रीलाल चौधरी थे। छात्र-छात्राओ द्वारा यह संकल्प लिया गया कि महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्य हम सब करेंगे।

यही प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई से भी पारित किया गया।

(आन्ध्र प्रदेश)

१—आर्य समाज निजामाबाद इन्दूर—तीन दिन तक प्रभात फेरी यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा जन्म दिवस के उपलक्ष मे सारे शहर मे भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया।

२—आर्य समाज करीमाबाद वारंगल, ३—आर्य समाज जोगीपेठ मेढक, ४—आर्य समाज वारंगल—क्षेत्र के समस्त निवासियो ने खुले अधिवेशन समारोह मे महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर सार्वजनिक अवकाश की माग की।

दयानन्द कालेज अजमेर में शारीरिक शिक्षा का डिग्री पाठ्यक्रम

राजस्थान के उच्च शिक्षा मन्त्री डा० रतनलाल ने दिनांक २४-१-९२ ई० को कालेज के वार्षिक समारोह की अध्यक्षता करते हुए यह घोषणा की कि राज्य सरकार ने आगामी सत्र से दयानन्द महाविद्यालय अजमेर मे यू०जी०सी० द्वारा एक करोड की लागत से स्वीकृत त्रिवर्षीय शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य और खेल कूद सम्बन्धी डिग्री पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिये अपनी अनुमति दे दी है। यह उल्लेखनीय है कि राज्य मे इस प्रकार का यह प्रथम उच्च शारीरिक शिक्षा का पाठ्यक्रम होगा। अभी तक राज्य मे केवल सर्टिफिकेट या डिप्लोमा स्तर तक ही व्यायाम शिक्षको के लिये पाठ्यक्रम की व्यवस्था है।

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल

परम पूज्य महर्षि दयानन्द की गौरवमयी परम्परा को सार्थक करने का प्रयत्न करते हुए आर्य समाज, राजौरी गार्डन मे चल रहे "महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल' के छात्र/छात्राओ ने राष्ट्रीय गणतन्त्र दिवस परेड (१९९२) मे उत्साह पूर्वक भाग लिया। देश मे व्याप्त प्रदूषण के प्रति जन-मानस का ध्यान केन्द्रित करते हुए तथा इससे होने वाले परिणामो से अवगत कराना हमारा मुख्य उद्देश्य रहा है। महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेते हुए तथा उनके द्वारा बताये गए मार्ग पर चलने का प्रयास करते हुए, हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति मे सफल रहे और हमारे छात्र/छात्राओ को अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम जिस का विषय था—'कहा गया वह धरती का स्वर्ग' को द्वितीय पुरस्कार प्रदान हुआ।

—नीलम मिश्र

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रामलाल जी शास्त्री नहीं रहे

श्री रामलाल जी शास्त्री ५६ वर्ष का गत माह २५ जनवरी १९९२ को प्राणान्त हो गया। उनका निधन गुर्दे के काम न करने के कारण आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली में हुआ। वे एक मास से अस्वस्थ थे।

श्री रामलाल शास्त्री लगभग २० वर्षों तक आर्य समाज रोहतास नगर (शिवाजी पार्क) के प्रधान रहे। वे महान समाज सेवक तथा शिक्षा शास्त्री थे। कई शिक्षा-संस्थाओ के प्रबन्ध मे व बच्चो मे आर्य संस्कार भरने में वे बहुत सक्रिय रहे।

उनके दिवगत होने पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी, महामन्त्री डा० धर्मपाल जी आर्य, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० शिवकुमार जी शास्त्री पण्डित जयमुनि जी, डा० प्रशान्त वेदालंकार तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियो ने अपने विचार व्यक्त किए।

—सुशीलकुमार, प्रधान

श्री जवाहरलाल बजाज का निधन

आर्य जनता को यह जानकर बहुत कष्ट होगा कि मोदीनगर क्षेत्र के प्रसिद्ध समाज सेवक, आर्य समाज के मूर्धन्य नेता, प्रमुख व्यवसायी, यज्ञ ज्योति के परम आराधक, एवं महर्षि दयानन्द के अनन्यभक्त श्री जवाहरलाल बजाज का ७६ वर्ष की आयु मे ७ फरवरी को निधन हो गया है और उनका शान्ति यज्ञ व श्रद्धांजलि सभा १९ फरवरी १९९२ दिन बुधवार समय मध्याह्न २ बजे जूनियर हाई स्कूल निकट पुलिस स्टेशन पर सम्पन्न हुआ। श्री बजाज जी ने अहर्निश प्रयत्नशील होकर जो इस क्षेत्र की सेवायें की हैं, वे सदा ही स्मरणीय रहेंगी। उनके निधन से इस क्षेत्र की अपूरणीय क्षति हुई है।

मानव कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज विवाकुर मण्डल, दिल्ली के तत्वावधान मे दि० २३-२-९२ को प्रात. ८ बजे से १२.१० बजे तक मानव कल्याण महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा दिल्ली सभा के मन्त्री डा० धर्मपाल जी ने अपने विचारो से श्रोताओं को लाभान्वित किए। इस अवसर पर भजन व प्रवचनो का आयोजन हुआ। इसमे पश्चिम दिल्ली की समस्त आर्य समाजो तथा धार्मिक सस्थाओ ने भाग लिया। मुख्य अतिथि चौधरी अमरजीतसिंह, राजेन्द्रसिंह सोलकी और चौ० राकेश जी के सहयोग से कार्य सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अन्त मे प्रसाद वितरण किया गया।

—प० अशोक कुमार, प्रचार मन्त्री

पं० लेखराम

(पृष्ठ ३ का शेष)

पड़ती थी। युक्तियां विद्वतापूर्ण होती थी जिनका उत्तर देना साधारण व्यक्ति की सामर्थ्य से परे था।

स्वाध्याय शील—प० लेखराम स्वाध्याय शील व्यक्ति थे। बाहर घूमने शास्त्रार्थ करने से जो समय बचता उसे वे स्वाध्याय में लगाते थे। स्वाध्याय शीलता का ही प्रभाव था कि विरोधी लोग इनके सामने थोडी ही देर मे मौन हो जाते थे। इसी स्वाध्याय के द्वारा ही आपने सृष्टि विज्ञान' तथा कई शास्त्रार्थ सम्बन्धी लघु पुस्तिकाए लिखी। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित्र भी लिखा है जो अतीव एव विश्वसनीय ग्रन्थ है। इसकी रचना के लिए प्रमाण सग्रहार्थ आपको भारत के अनेक स्थानो पर जाना पड़ा था। साथ ही धर्म प्रचार का विस्तार करने के लिये सद्धर्म प्रचारक' नामक एक मासिक पत्र भी निकाला।

शुद्धि के प्रचारक—आपने अस्पृश्यता को आर्य जाति का कलक माना तथा उसे दूर करने के लिए जीवनभर लगे रहे। वे अछूत भाइयों को समान समझते थे। विधर्मी बने हजारो आर्य भाइयो को पुन अपने धर्म मे दीक्षित कर लिया। उन्हे बडे प्रेम से गले लगाया। शुद्धि का आन्दोलन चलाया इस आन्दोलन मे आपके साथ स्वामी श्रद्धानन्द, म० हसराज आदि भी रहते थे। आपने हजारों को विधर्मियो के पजे से छुडाया और इस आन्दोलन मे मुसलमानो के द्वारा आपको अनेक कष्ट दिये गये पर व अपने कर्तव्य मार्ग से एक कदम पीछे नही हटे। अन्त में ६ मार्च १८९७ को इसी पुनीत शुद्धि कार्य को करते हुए एक पापी मुस्लिम युवक द्वारा किये गये छुरे के घातक प्रभाव से आर्य वीर सदा के लिये इस नश्वर ससार से विदा हो गये।

आर्य वीर वास्तव मे सच्चे आर्य वीर थे। उनका जीवन सरलता एव पवित्रता की मूर्ति था। वे कर्तव्य पथ से कभी विचलित नही होते थे। धर्म का प्रचार करने के लिये तो हर समय तैयार रहते थे इस कार्य के लिये उनका बिस्तरा बधा रहता था। वे केवल नाम से ही आर्य मुसाफिर नही थे अपितु कर्म से भी थे उन्होने शुद्धि के द्वारा हजारो युवको को आर्य धर्म मे पुन दीक्षित किया। उनका जीवन परोपकार, कर्तव्य परायणता समाज सेवा और देश भक्ति से परिपूर्ण था। हमे आर्य मुसाफिर की तरह कर्मठता एव लगन से कार्य करना चाहिए और इस शुद्धि के कार्य को पुन जीवित करना चाहिए। धनी व्यक्तियो का कर्तव्य है कि वे अपने धन का सदुपयोग करें ताकि आर्य (हिन्दू) धर्म की सुरक्षा हो सके। आर्य मुसाफिर जैसे निर्भीक एव निर्लेप होकर हमे कार्य करना चाहिए।

देश मे बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, दुराचार, अत्याचार, रिश्वत खोरी तथा अन्य अनैतिक कार्यों को आर्य समाज जैसी पवित्र सस्था रोक सकती है। हमे अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति मे योग देना चाहिए। आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम जी के पवित्र चरित्र का अनुकरण कर अपने जीवन को धन्य बनाना चाहिए तथा देश की समृद्धि में पूर्ण सहयोग देना चाहिए। यही आर्य मुसाफिर जी को दी गई श्रद्धाजलि है।

ऋषि भक्त, आर्य विद्वान, श्री उत्तमचन्द शरर का सम्मान

लगभग २०-३० वर्षों से मैं श्री शरर जी से परिचित हू। शरर जी की ऋषि भक्ति और योग्यता के कारण मैं तभी से मन से इनका सम्मान करता हू। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्य केन्द्रीय सभा ने कुछ वर्षों से एक अच्छी प्रथा प्रचलित की है 'आर्य विद्वानो का सम्मान' दिल्ली की आर्य समाजो का जब कोई पर्व, उत्सव या विशेष समारोह होता है तो उस अवसर पर किसी न किसी आर्य विद्वान का सम्मान विधिपूवक किया जाता है।

मेरा सौभाग्य है कि शरर जी का सावजनिक रूप से सम्मान करने का मुझे ऐसा शुभ अवसर मिला जिस दिन वेदोद्धारक, समाज सुधारक, स्वदेशी के प्रचारक, सच्चे देश भक्त भारत की स्वाधीनता की नीव रखने वाले, नारी जाति को शिक्षित कराने वाले, अबलाओ की सुध लेने वाले महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का शुभ जन्म दिवस था। यह कायक्रम जो दिल्ली की आर्य समाजो ने प्रचलित किया है, बहुत ही सराहनीय है दिल्ली की सभी आर्य समाए बधाई की पात्र हैं।

—जगतराम, प्रीत विहार दिल्ली

वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री हरीसिंह जी आर्य का राजस्थान में तूफानी दौरा

पाली जिले के सूमेरपुर आर्य समाज के अन्तर्गत चल रहे श्री चेतन विद्या मन्दिर के अध्यापक एव अध्यापिकाए और आर्य वीरदल के युवको ने दि० १६ जनवरी ९२ से १ फरवरी ९२ तक ५५ आर्य वीरो ने व दस छात्राओ ने सार्वदेशिक आर्य वीर दल क वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री हरिसिंह जी आर्य के नेतृत्व मे प्रशिक्षण प्राप्त किया जो सराहनीय कार्य है। इसी पाली जिले के वर्षों से पिछड आदिवासी क्षेत्र के ऐतिहासिक गाव नाणानगर (जहा ऋषि दयानन्द को आबू से अजमेर जाते वक्त दही पिलाया गया था) मे वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री हरिसिंह जी आर्य का दि० २ फरवरी ९२ से ७ फरवरी ९२ तक का क्रान्तिकारी कार्यक्रम रहा जिसमे नगर के ३० आर्यवीरो ने इस शिविर मे बडे उत्साह से भाग लिया। यहा के स्थानीय आर्य वीर दल सचालक एक उत्साही कमठ युवक है जो वैचारिक क्रान्ति की मशाल क्षेत्र में प्रज्ज्वलित कर रहे हैं। यहा आदिवासी लोगो का मुसलमान छल कपट से धर्म-परिवर्तन करते है। क्षेत्र के आदिवासी महाराणा प्रताप के सैनिक वशो से हैं। यह ऐतिहासिक बात है कि श्री हरिसिंह जी आर्य जैसे कर्मठ आर्य शिक्षक प्रथम बार इधर तूफानी दौरे पर पधारे हैं जो धन्यवाद के पात्र हैं। इस गाव मे सन् १९८४ मे यहा के क्रान्तिकारी युवक 'ब्र० ठाकुर धाव नरेश' ने आर्य समाज व आर्यवीर दल की स्थापना कठोर सघर्षों के साथ की ब्रह्मचारी जी क्षेत्र में शक्ति प्रदर्शन देकर आयुर्वेद से आर्य समाज का प्रचार करते हैं। सभी सदस्य नवयुवक ही हैं समय-समय पर क्रान्ति करते रहते है। अगर इस आदिवासी क्षेत्र के लिए सार्वदेशिक के अगुआ ध्यान देकर तन-मन धन से सहयोग दे तो क्षेत्र मे बढ़ते धर्मान्तरण को रोका जा सकता है। व्यायाम शिक्षक जी का यहा का छ दिवसीय शिविर काफी सराहनीय रहा। हमारी सार्वदेशिक सभा इस क्षेत्र मे समय-२ पर अपने मिशनरी को भेजते रहे तो आर्यत्व की क्षेत्र मे उन्नति होगी। इस क्षेत्र सुमेरपुर आर्य समाज के अन्तगत आर्य वीर दल के शिविर लगाने की भावी योजना मई माह मे है।

आर्य वीर बाल विद्यालय का द्वितीय महोत्सव

आर्य वीर बाल विद्यालय रठौडा मेरठ का महोत्सव २४ से २६ जनवरी तक बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय खेमचन्द जी, वीरपाल जी, वेदपाल जी एव भगराज जी ने वेदोपदेशो से लोगो को लाभान्वित किया। कार्य क्रम की समाप्ति पर २६ जनवरी को प्रात यज्ञ के उपरान्त विशाल शोभायात्रा निकाली गयी जिसमे लगभग ५०० आर्यवीरो एव बालविवाकर हस, ठाकुर ममवीर सिंह सोदान जी आर्य आदि जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति गणों ने भाग लिया।

शोभायात्रा की समाप्ति पर बच्चो के सास्कृतिक कायक्रम एव शारीरिक व्यायाम का प्रदर्शन हुआ।

—सचिव

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०४९/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (८-३-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसंस U नं० ९३
R.N 626/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 93 Post in N.D.P.S.O.on 5,6 3-1992



आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई के वार्षिकोत्सव पर आयोजित वेद-वेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार समारोह के अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र को २१०००) की थैली भेंट करते हुए। साथ में उनकी धर्मपत्नी खड़ी हैं। ज्ञानी जैलसिंह जी के साथ आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तथा सामने की ओर समारोह के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र विकल खड़े हुए हैं।

स्वामी सत्यानन्द शती समारोह सम्पन्न

महर्षि देव दयानन्द की दीक्षा भूमि मथुरा मे ७ से ९-२-९२ तक यह त्रिदिवसीय समारोह आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह में यजुर्वेद पारायण यज्ञ, आर्य समाजोदय चिन्तन संगोष्ठी राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, आदि समायोजित किये गये थे।

समारोह मे मुख्य अतिथि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त मा० आदित्येन्द्र जी, आचार्य प्रेमभिक्षु जी स्वामी ओमानन्द जी डा० प्रशान्त वेदालंकार सहित आर्य जगत के अनेको विद्वान उपदेशक तथा सन्यासियो ने अपने विचार प्रकट किये। समारोह के अध्यक्ष मा० आदित्येन्द्र जी ने १० लाख रुपये की सत्यानन्द स्मारक निधि की घोषणा की तथा स्वयं १०,००१ रुपये सर्वप्रथम प्रदान किए। इस अवसर पर कविसम्मेलन तथा प्रभावी शोभा यात्रा भी निकाली गई। समारोह को सफल बनाने मे श्री वंशीधर जी तथा श्री पूर्णचन्द्र जी ने सराहनीय योगदान प्रदान किया।

बसन्त पंचमी मेला सम्पन्न

महर्षि कण्व की तपोस्थली गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम कोटद्वार मे श्री सत्यदेव भारद्वाज की अध्यक्षता में बसन्त पचमी मेला ९ से ११ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस समारोह मे राष्ट्रभृत यज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी पूर्णाहुति ११ फरवरी को सम्पन्न हुई इस अवसर पर कुश्ती प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था जिसका उद्घाटन श्री रमेश भण्डारी के द्वारा किया गया। समापन समारोह श्री सुभाष वेदालंकार की अध्यक्षता मे पूर्ण हुआ। श्री ब्र० विश्वपाल जयन्त ने समस्त आगन्तुको को धन्यवाद अर्पित किया।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ तथा वेद प्रचार

वेद मन्दिर मार्ग अशरफ टोला हरदोई मे ९ से १३ फरवरी ९२ तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ श्री आर०बी० सक्सेना तथा श्रीमती सुधा देवी विद्या वाचस्पति के यहा समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्य जगत के विद्वान श्री कुन्दन लाल जी वैद्य लखनऊ, प० ब्रह्मानन्द आर्य वानप्रस्थ, रमेशचन्द्र आचार्य व डा० सावित्री देवी वेदाचार्या आदि ने पधार कर अपनी अमृतमयी वाणी से श्रोताओ को विभोर कर दिया।

वार्षिक महासम्मेलन

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ का वार्षिक महोत्सव दिनांक २७ से २९ मार्च १९९२ तक उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के महात्मा, सन्यासी, विद्वान पधार रहे हैं। २३-३-९२ से श्री रामवीर जी शास्त्री की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम २८, २९ मार्च को सम्पन्न होगा।

सार्वदेशिक सभा की विशेष छूट का लाभ उठायें

आर्यसमाजों की लाईब्रेरी व स्कूल कालिज की लाईब्रेरी के लिए निम्न पुस्तकें सभा से आधे मूल्य में खरीदें

	रुपए- पैसे	आधे मूल्य मे
सत्यार्थ प्रकाश शिक्षायें	१०)००	५)००
संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश	५०)००	२५)००
दयानन्द दिव्य दर्शन	५०)००	२५)००
जन्मगत जातपात वेद विरुद्ध मतखण्डन	३)५०	१)७५
स्वामी ब्रह्म मुनी जीवन चरित्र	२)००	१)००
सत्यार्थ प्रकाश दो समुल्लास	१)५०	०)७५
सर्वेश्वर वेद यज्ञ	६)००	३)००
सिक्खों का तुष्टीकरण	२)००	१)००
बन्दा वीर बैरागी	८)००	४)००
आर्य निर्देशिका भाग—१	१२)००	६)००
,, ,, भाग—२	३)००	१)५०
वेदार्थ कल्पद्रुम	६०)००	३०)००
वेद निबन्ध स्मारिका	३०)००	१५)००
वैदिक कोष संग्रह	१५)००	७)५०
वैदिक धर्म की रूप रेखा	६)००	३)००
Storm in Punjab	८०)००	४०)००
दिल्ली स्मारिका १९९०	१०)००	५)००
Bankim Tilk Dayanand	४)००	२)००
योग—	३५२)५०	१७६)२५

नोट—पूरा सैट मगाने पर ही छूट उपलब्ध होगी तथा डाक व्यय हेतु २५) रुपये आर्डर देते समय अवश्य भेजें।

प्राप्ति स्थान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन ३/५, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- मेरे शिष्य सभी आर्य सामाजिक हैं । वे ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन है । उन्ही के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथो की सफलता अवलम्बित है ।
- विद्वान् आप्तो का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यो के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर द पश्चात् वे स्वय अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द मे रहे ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष . ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अक ७] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १६७२६४६०६२ फाल्गुन शु० ११ स० २०४८ १५ मार्च १९९२

राव सरकार लोकसभामें शक्तिपरीक्षामें जीती

धन्यवाद प्रस्ताव में विपक्ष का संशोधन २१० के विरुद्ध २६२ मतों से नामंजूर

देश की आर्थिक सप्रभुता पर कोई समझौता नहीं होगा.: प्रधानमन्त्री

नई दिल्ली ९ मार्च । नरसिंह राव सरकार आज प्रथम शक्ति परीक्षण मे लोकसभा मे विजयी रही । राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव मे भारतीय जनता पार्टी के जिन दो सशोधनो पर मतदान हुआ, उसे सदन ने ५२ मतो के अन्तर से अस्वीकार कर दिया । सशोधन के पक्ष मे २१० तथा विपक्ष मे २६२ मत पडे । राष्ट्रीय मोर्चा व वामपन्थी दलो ने भाजपा के इस सशोधन के पक्ष मे मतदान किया । पाच सदस्यो ने मत विभाजन मे भाग नही लिया ।

अभिभाषण पर हुई चर्चा का उत्तर देते हुए प्रधानमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव ने जोरदार शब्दो मे कहा कि देश की आर्थिक सप्रभुता के साथ कोई समझौता नही किया गया है ।

उन्होने अपने करीब एक घण्टे के भाषण मे कहा कि उनकी सरकार नई आर्थिक नीति को आगे बढाएगी, क्योकि इसे देश की जनता का व्यापक समर्थन प्राप्त है । लेकिन इसके साथ ही उन्होने यह आश्वासन दिया कि सुधारो के नाम पर देश मे अनियन्त्रित पू जीवाद को पनपने नही दिया जायेगा ।

ऋषि बोधोत्सव एवं यज्ञशाला का उद्घाटन

मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह ने यज्ञ में आहुतियां दीं

दिल्ली ८ मार्च ।

आज मध्याह्न १२ बजे आर्य समाज मालवीय नगर की नव निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर अनेकों गणमान्य व्यक्तियो के अतिरिक्त केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री अर्जुनसिंह भी उपस्थित थे । उन्होंने यज्ञ की पूर्णाहुति मे बडी श्रद्धा से भाग लिया ।

उद्घाटन के बाद एक विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा कि इस समय राष्ट्र कठिन परिस्थितियो से गुजर रहा है । हम सबको सगठित होकर ऋषिके बताये मार्ग पर चलकर उनके मिशन को आगे बढ़ाना चाहिए । उन्होंने कहा कि ऋषि ने अपने अन्तिम समय मे कहा था कि "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" हमे सकल्प लेना है कि वैदिक सिद्धांतो का प्रचार और मानवताकी सेवा करके हम उनकी इच्छा पूर्णकरें ।

इस अवसर पर श्री अर्जुनसिंह ने स्वामी जी के कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि ऋषि ने हमे सच्चा रास्ता दिखाया है और उनके उद्देश्यो की पूर्ति के लिए हमें कठिन परिश्रम करना होगा । इन्होने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती हमारी उन्नति के सभी दरवाजे खोल गये हैं, उन्होने हमेशा सत्य का प्रचार किया वे सत्य के पोषक थे । आर्य समाज मालवीय नगर के अनेकों कार्यकर्ताओं ने श्री अर्जुनसिंह का फूल मालाओ तथा शाल पहनाकर सम्मान किया । इस समारोह में श्री प्रेमचन्द तथा अन्य अनेको वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किये ।

गुरुकुल सोनगढ़ का हीरक जयन्ती महोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

बडौदा से २५० कि०मी० दूर स्थित गुरुकुल सोनगढ का हीरक जयन्ती समारोह २ मार्च को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमे हजारो की सख्या मे लोगो ने भाग लिया । महर्षिके जयघोषो से सारा क्षेत्र गु जायमान होउठा । शोभा यात्रा मे स्वामी जी को एक सजी हुई विशेष जीप मे बैठाया गया ।

सम्मेलन मे अनेको गणमान्य व्यक्तियो के अतिरिक्त बाल किशनदास पित्ती, मधुसूदन लाल पित्ती, लोक सभा सदस्य श्री महावीरसिह जी माता उर्मिला देवी तथा बम्बई के अनेको सम्भ्रान्त व्यक्ति उपस्थित थे ।

स्वामी जी २८ तारीख को दिल्ली से बडौदा और वहा से कार द्वारा सोनगढ पहुचे थे । गुरुकुल सोनगढ के इस महोत्सव से सौराष्ट्र मे आर्य समाज की विशेष गतिविधिया प्रारम्भ हो गई हैं । आर्य वीर दल के आश्चर्य चकित करने वाले प्रदर्शन से युवको मे आर्यसमाज के प्रति विशेष रुचि उत्पन्न हुई है ।

• [illegible]

पश्चिमपुरी आर्यसमाज मन्दिर की यज्ञशाला का शिलान्यास

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा सम्पन्न

दिल्ली ८ मार्च।

पश्चिम पुरी दिल्ली मे आर्य समाज मन्दिर की यज्ञशाला का शिलान्यास आज प्रात. १० बजे श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा सम्पन्न हुआ। इमसे पूर्व विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया था। शिलान्यास मे चारो वेद तथा अनेको अन्य ग्रन्थ भी रखे गये। श्री स्वामी दिव्यानन्द जी के मन्त्रोच्चारण तथा यज्ञ की सुगन्ध से हुए पवित्र वातावरण मे शिलान्यास का कार्य पूर्ण हुआ।

इस अवसर पर ससद सदस्य श्री सज्जनकुमार तथा श्री रामचन्द्र विकल ने अपने भाषण मे आर्य समाज के धार्मिक तथा राष्ट्रीय आन्दोलन की सराहना करते हुए महर्षि दयानन्द को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

समारोह मे सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने महर्षि के ग्रन्थो का स्वाध्याय और उनकी आवाज को घर-घर पहुचाने की अपील करते हुए कहा कि ई ट और पत्थर के भवन का नाम आर्य समाज नही है, अपितु चलते-फिरते श्रेष्ठ व्यक्तियो के सगठन का नाम आर्य समाज है। एक सस्मरण की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि जब मैं ससद सदस्य था तो ससद मे बाबू जगजीवन राम ने कहा था कि आर्य समाज कहा है? तब मैंने (लाला रामगोपाल शालवाले) छाती पर हाथ रखकर कहा कि आर्य समाज यहा है। तब बाबू जगजीवन राम ने कहा कि यदि आर्यसमाज है तो,शर्मिला टैगोर और नवावपटौदी की शादी हो रही है वहा पर प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति भी जा रहे है। वहा उनकी फिल्म भी बनेगी। शर्मिला टैगोर श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर की पौत्री हैं और ब्राह्मण है,ऐसे कार्यक्रम मे राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री को वहा नही जाना चाहिए। उन्हे रोको तब आर्यसमाज की शक्ति का पता चलेगा। मैंने अपने प्रयत्नो से ऐसा करके दिखाया। उस समारोह मे न राष्ट्रपति गए और न प्रधानमन्त्री। दूसरे दिन सेन्ट्रलहाल के सामने बाबू जगजीवन राम ने लाला रामगोपाल शालवाले को छाती से लगाकर कहा कि वास्तव मे आर्य समाज जिन्दा है। लेकिन राष्ट्रपति तथा प्रधानमन्त्री को वहा जाने से आपने कैसे रोका, तो मैंने कहा कि इस बात से आपको मतलब नही होना चाहिए।

आर्य धर्मार्थ औषधालय द्वारा निःशुल्क नेत्र जांच शिविर समारोह

दिल्ली ६ मार्च।

आर्य धर्मार्थ औषधालय राधेश्याम भवन, बुराडी दिल्ली द्वारा नि शुल्क नेत्र जाच व्यवस्था समारोह का उदघाटन करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा आर्य समाज एक समाजसेवी सस्था है, इसने दीन, दुखियो, अनाथों, असहायो और विधवाओ की सहायता के लिए अनेक महत्व पूर्ण कार्य किए हैं। आर्य धर्मार्थ औषधालय द्वारा यह नि शुल्क नेत्र जाच शिविर भी इसी सेवा का एक अग है।

आर्य समाज बुराडी के प्रधान श्री राधेश्याम त्यागी ने अपनी ओर से आर्य समाज मन्दिर और धर्मार्थ औषधालय के भवन निर्माण के लिए एक बहुत बडा प्लाट निःशुल्क देने की घोषणा की। इस घोषणा का जोरदार स्वागत हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, मन्त्री डा० धर्मपाल और आर्य समाज बुराडी के मन्त्री रामकिशन त्यागी और आर्य धर्मार्थ औषधालय के प्रभारी चिकित्सक डा० राजेन्द्रप्रसाद अग्रवाल भी उपस्थित थे।

होली मिलन

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

जो होली सो होली भुलादो उसे, आज मिलने मिलाने का त्योहार है।
त्याग दो छल कपट द्वेष की भावना, प्रेम गगा बहाने का त्योहार है॥
न कीचड उछालो न गाली बको यह कुप्रथा बन्द करने मे आनन्द है।
स्वर्ग सम शुद्ध वातावरण हो यहा, आज होली मनाने का त्योहार है॥
ये हीरे से बढकर है इन्सा का तन व्यर्थ मे ना गवाना जरा ध्यान दो।
बाट दो ज्ञान गीता का श्रीकृष्ण सम प्रेमबन्सी बजाने का त्योहार है॥
लोग श्रद्धा से जिसका करे अनुकरण ऐसा आदर्श जीवन बनाओ सभी।
पाप अन्याय उत्पात बढने न दे विघ्न सकट मिटाने का त्योहार है॥
कर रहे जो अनाचार पीकर यहा, ये अहकार मदिरा भरी प्यालिया।
ये सफल होगी होली तभी बन्धुओ, वेदाऽमृत पिलाने का त्योहार है॥
ये विरह ये मिलन काव्य श्रृगार रस, गीत भद्दे व गन्दे सुनाई न दें।
डालदें जो कि मुर्दों में भी जान को, गीत ऐसे सुनाने का त्योहार है॥
सभी मनुष्यो मे हो प्रेम वातावरण है सभी भाई-भाई न झूठा कथन।
'राघव' हो सगठित करे हृदय मिलन जीवन ज्योति जगाने का त्योहार है॥

आर्य वीर दल केराकत (जौनपुर) के शिक्षक का साहस

११ दिसम्बर को जौनपुर मुख्यालय से २५ कि० मी० की दूरी पर देवकली के पास एक बस उलट गयी थी जिसमे ३५ सवारियाँ थी, सभी लोगो को काफी चोटे लगी थी, सुरक्षित जीवित ३३ व्यक्ति बाहर निकाल लिये गये थे। दो व्यक्ति बुरी तरह उसके अन्दर दबे पडे थे और कराह रहे थे किन्तु उन्हे निकालने का कोई साहस नही कर रहा था, उसी समय बी०ए० का छात्र श्री कृष्ण शिक्षक आर्य वीर इस दूसरी बस से केराकत से जौनपुर जा रहा था। उसने इस दृश्य को देखा और बडे साहस से पेड पर चढकर उस बस मे कूद कर घुसा और उन दोनों व्यक्तियो को निकालने का प्रयास किया। एक को पीठ पर लाद कर बाहर किया दूसरे को निकालने मे उसका पैर धक्के से दब गया, पैर कट गया पैर के कटने से काफी खून निकलने के बाद भी दूसरे को भी निकालने का प्रयास किया। काफी खून निकलने के कारण उस व्यक्ति के साथ-२ स्वय भी बेहोश हो गया किन्तु बाहर निकल आया।

—दयानन्द आर्य, मन्त्री
आर्य वीर दल केराकत जौनपुर

श्री लाला वीरसेन दुमाज का दुःखान्त देहावसान

गुना ८ मार्च। सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता एव आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के स्तम्भ श्री वीरसेन जी दुमाज का देहावसान हो गया। वह ८२ वर्ष के थे। आर्य समाज गुना के भव्य निर्माण मे उनका विशेष योगदान था।

उन्होने हर अवसर पर हिन्दू समाज की रक्षा करने के प्रयत्न किए। गुना आर्य समाज को उनके निधन से अपूर्णीय क्षति हुई है

हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके पारिवारिक जनो को इस महान वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आर्य समाज दीवान हाल का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दीवान हाल का वार्षिकोत्सव २७ से २९ मार्च तक लालकिला मैदान नई दिल्ली मे सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रतिष्ठा प्राप्त विद्वान तथा भजनोपदेशकों के अतिरिक्त कई नेता भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर कई विशेष सम्मेलनों का आयोजन भी किया गया है।

होली का वैदिक स्वरूप

—श्री बृजमोहन झा

होली का वैदिक नाम 'नवसस्येष्टि' है। नवीन अन्न प्राप्त होने पर आर्य पुरुष, उस अन्न को पहले परमात्मा को अर्पण किया करते थे। उन्होंने इस बात का नियम कर दिया था कि कोई मनुष्य बिना यज्ञ किये नये अन्न को न खाये। यथा—

नानिष्ट्वाग्रयणेन नवसस्यमश्नीयात्। नव सस्योत्पत्तौ नव सस्येष्ट्या यजेत्। मानव गृ० सूत्र॥

अर्थात नया अन्न उत्पन्न होने पर नवसस्येष्टि नामक यज्ञ करे और जब तक कि अन्न अर्थात पहले उत्पन्न हुए अन्न से होम न करे, उसे न खाये। इसका निम्नलिखित विधान है—

पर्वण्याग्रयणं कुर्वीत। वसन्ते यवानां शरदि व्रीहीणाम्। अग्रपाकस्य पयसि स्थालीपाकं श्रपयित्वा। तस्य जुहोति।

सजूरग्नीन्द्राभ्यां स्वाहा ॥१॥
सजूर्विश्वेभ्यो: देवेभ्य स्वाहा ॥२॥
सजूर्द्यावा पृथिवीभ्यां स्वाहा ॥३॥
सजू सोमाय स्वाहा ॥४॥

अर्थात पर्व में नवीन अन्न से होम करे, बसन्त ऋतु में यवों से और शरद ऋतु में चावल से। नवीन अन्न को दूध में पका कर स्थाली पाक बनावे और उस पाक को ऊपर लिखे हुए चार मन्त्रों से चार आहुतियां दे। यह प्रधान होम है स्वस्तिवाचन, शान्तिपाठ और नित्य हवन करने के पश्चात अन्त में यह आहुतियां देनी चाहिए इसके पश्चात नवीन अन्न का सेवन करें।

कैसा पवित्र भाव है। शास्त्र में लिखा है :—

यज्ञाद् भवति पर्जन्य पर्जन्यादन्न सम्भव।

यज्ञ के द्वारा वृष्टि होती है और वृष्टि से अन्न पैदा होता है। पुन: यज्ञ ही परमात्मा है। यथा—

यज्ञो वै विष्णु (शतपथ)

अत आर्य पुरुष, पहले नवीन अन्न, उस देवता 'यज्ञ' को समर्पण करते थे और तब स्वयं उसका भोग करते थे।

वास्तव में अन्न परमात्मा की कृपा ही से उत्पन्न होता है। यदि परमात्मा की कृपा न हो तो निस्सीम पुरुषार्थ करने पर भी अन्न उत्पन्न होना सम्भव नहीं है। बनी बनाई तैयार खड़ी हुई फसल प्रकृति के जरा से आघात से बात की बात में चौपट हो जाती है। आर्य पुरुष अपनी इस असमर्थता को समझते थे, अत वे परमात्मा के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते नहीं अघाते थे।

अब प्रश्न यह होता है कि इस वैदिक नव सस्येष्टि का नाम "होली" कैसे पड़ गया? इसका उत्तर यह है कि उस अवसर पर अन्न अर्द्ध परिपक्व अवस्था में होता है और इसे जब भूनते हैं तो उसकी संज्ञा लोक में 'होला' होती है, जैसा कि शब्दकल्पद्रुम में लिखा है —

तृणाग्निभ्रष्टार्द्धपक्वशमी धान्य होलक। होला इति हिन्दी भाषा।

अर्थात जो अध पक्का अन्न, फूस की आग में भूना जाता है, उसे संस्कृत भाषा में होलक: और हिन्दी भाषा में होला कहते हैं। ऐसे अन्न के द्वारा जो यज्ञ किया जाता था उसे लोग होलक यज्ञ कहने लगे और यही बिगड़ कर होलिका और अन्त में होली हो गया।

वर्तमान होली के देखने से भी इस बात का निश्चय अवश्य हो जाता है कि यह यज्ञ ही का विकृत रूप है। अब भी लोग नये अन्न चना, जौ, गेहूं आदि की बालें लेकर होली पर जाते हैं। वहां सबसे पहले एक पुरोहित जिसे कि आजकल खेड़ापति कहते हैं, घी, शक्कर से होली का पूजन करता है और पुन: होली की प्रदक्षिणा कर के उसमें अग्न्याधान करता है। इसके पश्चात लोग नया अन्न होली में भूनते हैं। इसमें से कुछ तो प्रदक्षिणा करते हुए अग्नि को समर्पण कर देते हैं और शेष अपने घर ले जाते हैं। घरों पर भी एक छोटा सा हवन किया जाता है और उसमें स्त्री बच्चों सहित सब भाग लेते हैं। इससे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि होली एक सार्वजनिक बृहद यज्ञ है।

विद्वानों को चाहिए कि वे इसके शुद्ध रूप का प्रचार करें। नगर के शिक्षित और शिष्ट लोगों को चाहिए कि फाल्गुन की पूर्णमासी के दिन प्रात: काल के समय प्रत्येक मोहल्ले के सार्वजनिक स्थानों में एक बड़ा यज्ञ करने का आयोजन करें। इसके लिए प्रत्येक घर से कुछ न कुछ पैसे संग्रह किये जायं और विधि पूर्वक यज्ञ किया जाय, वेदों पर श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक आर्य या सनातन धर्मी को इसमें भाग लेना चाहिये। हमारा विश्वास है कि यदि इस प्राचीन प्रथा का उद्धार हो जाए तो चैत मास में होने वाले शीतला आदि अनेक रोग कभी न हों और जनता का बड़ा कल्याण हो। इस यज्ञ के प्रताप से नवीन अन्न, पुष्ट तथा रोग रहित हो और उसे सेवन करके हम लोग बलवान तथा वीर्यवान हुआ करें। आप यह जानकर आश्चर्य न करें कि हमारे इस वैदिक यज्ञ की महत्ता को विदेशियों ने भी अनुभव किया था और उन्होंने अपने देशों में इसका प्रचार किया। टाड राजस्थान को देखने से पता लगता है कि अन्न तैयार होने पर रोम के लोग, Saturn अर्थात कृषि के देवता की पूजा करते हैं, और इस अवसर पर वे आमोद प्रमोद भी मनाते हैं।

कितने गौरव की बात है कि हमारे इस पर्व की श्रेष्ठता और पवित्रता से प्रभावित होकर विदेशियों ने हमारी नकल की, किन्तु दुख की बात है अब हमने उसका रूप इतना बिगाड़ दिया है कि आज लोग उसे देखकर हम से घृणा करने लगे और हमें असभ्य और जंगली की उपाधि देने लगे। यहां तक हमने होली के वैदिक रूप के सम्बन्ध में निवेदन किया। अब इसके पौराणिक रूप के सम्बन्ध में भी थोड़ा कह देना अनुचित न होगा।

होली का पौराणिक रूप

होली के सम्बन्ध में श्रीमद्भागवत में एक आख्यायिका इस प्रकार आती है। हिरण्यकश्यपु प्रह्लाद का पिता है और एक बड़ा अन्यायी तथा ईश्वर की सत्ता को न मानने वाला राजा है। प्रह्लाद ईश्वर भक्त है और अन्याय को पसन्द नहीं करता। हिरण्यकश्यपु, अपने पुत्र प्रह्लाद की गतिविधि पसन्द नहीं करता, प्राय वह उसे तरह-तरह के त्रास देता है। प्रह्लाद इन त्रासों की चिन्ता न करके परमात्मा की भक्ति में मग्न रहता है। अन्त में नृसिंह अवतार होता है और वह हिरण्यकश्यपु का संहार करता है। यह एक अलंकार पूर्ण अत्यन्त शिक्षा प्रद आख्यायिका है, जिसका अभिप्राय यह है —

माया में फंसे रहने वाले व्यक्ति का नाम हिरण्यकश्यपु है अर्थात् जो सदैव हिरण्य धन और वैभव को देखे उसको हिरण्यकश्यपु कहते हैं। यथा—

कश्यप: पश्यको भवतीति। निरुक्त। आद्यन्ताक्षरविपर्य्ययाद्धिंसे: सिंह कृतेस्तर्कुरित्यादिवत्कश्यप इति।

आदि और अन्त के अक्षरों का विपर्यय होकर पश्यक का कश्यप बन जाता है, जैसे हिंस शब्द से सिंह इत्यादि। इसलिए हिरण्यमेव पश्यतीति हिरण्यकश्यप॥ अर्थात जो माया ही में रत रहे, परमात्मा की सत्ता को न माने उसका नाम है हिरण्यकश्यप। ऐसे मदान्ध लोग सदैव परमात्मा के भक्तों को त्रास देते हैं और उन्हें चैन से नहीं बैठने देते, किन्तु परमात्मा के भक्त उनकी सत्ता की परवाह नहीं करते। अन्त में जब उनका अत्याचार बहुत बढ़ जाता है तब कोई पुरुषसिंह उत्पन्न होकर इनका संहार कर देता है।

परमात्मा की भक्ति में सदैव मग्न रहने के कारण जिसको आनन्द लाभ होता है इसलिए उसका नाम प्रह्लाद है। प्रह्लाद, स्वयं सताया जाने पर भी सबकी मंगल कामना करता है। वह कहता है—

कस्यचित्किमपि नो हरणीयं मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम्।
श्रीपतेः पदयुगं स्मरणीयं लीलया भवजलं तरणीयम्॥
[printed as: कस्यचित्किमपि नो हरणीय मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम। / मामुर कुलमनादरणीय चित्तमेतदमलीकरणीयम् ॥ / देव धाम चरणौ करणीय लीलया भव जल तरणीयम्॥]

अर्थात किसी का कुछ भी हरण नहीं करना चाहिए यहां तक कि किसी

(शेष पृष्ठ ४ पर)

विश्ववार्ता—

जीसस और पैगम्बर के अनुयाइयों में संघर्ष

डा० गौरीनाथ रस्तोगी

इस्लामी कट्टरवाद का खतरा कोई नया नहीं है। लेकिन १९९१ वर्ष की समाप्ति तक विश्व राजनीति मे सोवियत संघ के एक महाशक्ति के रूप में प्रतिद्वन्द्वी तथा प्रतिस्पर्द्धी राष्ट्र के मौजूद होने से अमरीका सहित सभी पश्चिमी देशों का लक्ष्य सोवियत संघ और उसके समर्थक देश बने हुए थे। लेकिन अब उसके विघटन के कारण उस ओर से कोई खतरा शेष न रह जाने के बाद अमरीका सहित सभी पश्चिमी देशों का ध्यान इस्लामी कट्टरवाद से उत्पन्न होने वाले गम्भीर खतरे की ओर केन्द्रित होता जा रहा है।

अफ्रीकी महाद्वीप के उत्तर और पूर्वी भाग में मुस्लिम और ईसाई कट्टरतावाद के बीच संघर्ष लम्बे समय से चला आ रहा है और मोरक्को, अल्जीरिया, चाड, सूडान, इथोपिया, सोमालिया, नाइजीरिया एवं दक्षिण-पूर्व अफ्रीका में मोजम्बीक इस परिधि के अन्तर्गत आ जाते हैं। इसके अतिरिक्त लीबिया में कर्नल गद्दाफी के रूप में इस्लामी कट्टरतावाद वहां पूरी तरह हावी है और ट्यूनीशिया तथा मिस्र में भी इस्लामी कट्टरतावादियों की कोई कमी नहीं है। अफ्रीका से सटे हुए पश्चिमी एशियाई क्षेत्रों में सऊदी अरब, ईरान और लेबनान भी पूरी तरह इस्लामी कट्टरतावाद की चपेट में हैं। लेबनान में तो मुसलमानों और ईसाइयों के बीच लम्बे संघर्ष के बाद यहां पर इस्लामी कट्टरतावाद पूरी तरह हावी हो चुका है। ईरान का कठमुल्लापन तो पूरे संसार में कुख्यात है और ब्रिटेन में रहने वाले प्रमुख लेखक सलमान रश्दी के सिर पर खुमैनी का खूनी फतवा आज भी मंडरा रहा है। मिस्र में देश की कुल आबादी के २० प्रतिशत ईसाइयों पर मुस्लिम कट्टरतावादियों ने कहर ढा रखा है और आए दिन उनके व्यापारिक संस्थान तथा अन्य अचल सम्पत्ति को नष्ट करने के साथ-साथ ईसाइयों की खुलेआम हत्याएं राजधानी काहिरा तक में होती रहती हैं।

अल्जीरिया में तो पिछले दिसम्बर मास में हुए चुनावों में जब इस्लामी कट्टरतावादियों को भारी बहुमत मिलने की सम्भावना प्रकट होती दिखाई दी, तब वहां के राष्ट्रपति ने अपने पद से त्यागपत्र देते हुए देश का शासन सेना के हवाले कर दिया। उसने सम्पूर्ण अल्जीरिया में आपातस्थिति लागू करते हुए कट्टरतावादियों के दमन की नीति अपना रखी है, किन्तु उससे इस्लामी कट्टरतावादी तत्व और अधिक प्रबल होते जा रहे हैं और वहां पर गृहयुद्ध छिड़ जाने का खतरा बराबर बढ़ता चला जा रहा है। सन् १९६० में चाड के स्वाधीन होने के समय से ही वहां गृहयुद्ध चल रहा है। ४५ प्रतिशत मुसलमानों और ३५ प्रतिशत ईसाइयों के बीच सशस्त्र संघर्ष चालू है। देश के मुस्लिम कट्टरतावादियों को चाड की उत्तरी सीमा के उस पार लीबिया से बड़े परिमाण में सैनिक सहायता प्राप्त हो रही है। एक समाचार के अनुसार १ लाख ३० हजार चाड शरणार्थी भागकर सूडान पहुंच चुके हैं।

इथोपिया में ४५ प्रतिशत मुसलमान और ४५ प्रतिशत ईसाई जनसंख्या निवास करती है। सन १९६२ से ही वहां निरन्तर गृहयुद्ध चल रहा है। दोनों मजहबों के लोग एक-दूसरे की जान के दुश्मन बने हुए हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ के शरणार्थी आयोग की जानकारी के अनुसार ६ लाख व्यक्ति भागकर सूडान जा चुके हैं। वैसे मोटे अनुमान के अनुसार शरणार्थियों की संख्या १५ लाख के लगभग बताई जाती है। ७० लाख लोग भुखमरी के शिकार बने हुए हैं। इथोपिया इस समय संसार का सबसे अधिक गरीब और निर्धन देश गिना जाता है।

इसी तरह सोमालिया में पिछले तीन वर्षों से गृह युद्ध चल रहा है और यह नहीं कहा जा सकता कि वहां शान्ति कब कायम होगी? सूडान की हालत तो और भी अधिक बदतर है। वहां पर लम्बे समय से मुस्लिम कट्टरतावादियों और ईसाइयों के बीच संघर्ष जारी है। फलस्वरूप ८० हजार सूडानी नागरिक भागकर इथोपिया जा चुके हैं, जबकि एक मोटे अनुमान के अनुसार ३० लाख व्यक्ति बेघरबार हो चुके हैं। सूडान की सैनिक सरकार के प्रमुख जनरल उमर अहमद अल बशीर को इस्लामी देशों से बड़े पैमाने पर अस्त्रशस्त्र मिल रहे हैं। नाइजीरिया में ४७ प्रतिशत आबादी मुसलमान है जबकि वहां पर मजहब बदलकर ईसाई बने हुए लोगों की संख्या ३४ प्रतिशत है। सैनिक तानाशाह जनरल इब्राहिम बाबिंगादा ने १९८५ में शासन की बागडोर सम्भालते ही ईसाइयों के विरुद्ध जेहाद छेड़ रखा है। फलस्वरूप ईसाइयों की हालत वहां पर अत्यन्त दयनीय है।

इसके ठीक विपरीत स्थिति मोजम्बीक की है जहां उसकी सीमा से लगे हुए दक्षिणी अफ्रीकी राज्य से रेनामो नामक ईसाई प्रतिरोधक संगठन को बड़े पैमाने पर सैनिक तथा वित्तीय सहायता प्राप्त हो रही है तथा जर्मनी, ब्रिटेन और अमरीका भी ईसाइयों की मदद करके वहां पर इस्लाम मतावलम्बियों का दमन करने को आतुर है।

इन सभी घटनाओं तथा १९९१ के शुरू में कुवैत की आजादी के प्रश्न पर सद्दाम हुसैन के विरुद्ध की गई सैनिक कार्यवाही ने अमरीका सहित सभी पश्चिमी राष्ट्रों को इस बात का विश्वास करा दिया है कि इस्लामी कट्टरतावाद उनके मार्ग मे सबसे बड़ा अवरोधक तत्व ही नहीं तो विश्व-शान्ति के लिए एक जबर्दस्त चुनौती बनने जा रहा है।

पाञ्चजन्य ८ मार्च से साभार

होली का वैदिक स्वरूप

(पृष्ठ ३ का शेष)

को गाली भी नहीं देनी चाहिए। जो लोग माया में रत रहते हैं और परमात्मा को नहीं मानते, उनका आदर नहीं करना चाहिए। अपने चित्त को निर्मल बनाकर परमात्मा की शरण में जाना चाहिए और इस प्रकार आचरण करते हुए, इस भवसागर को पार कर जाना चाहिए।

कैसा सुन्दर उपदेश है? यदि लोग इसके अनुसार आचरण करने लगें तो एक दिन में होली का सुधार हो जाय। एक ओर प्रह्लाद किसी को गाली न देने के लिए कहते हैं और दूसरी ओर प्रह्लाद नाम को कलंकित करने वाले नर पिशाच माता तथा बहनों के सामने नंगे नाचते हैं और उन को गालियां देते हैं। हे परमात्मन्! तुम इन बेसमझ और दया के पात्र नरकधारी पशुओं को सद्बुद्धि प्रदान करो।

होली का सामाजिक रूप

वैदिक तथा पौराणिक महत्व के अतिरिक्त होली के पर्व की सामाजिक विशेषता भी विचारणीय है। स्मृतियों में इस दिन चाण्डाल तक को स्पर्श करने का विधान पाया जाता है।

विश्व बन्धुत्व का कैसा अच्छा भाव है। होली के पश्चात सब छोटे-बड़े बिना किसी भेदभाव के आपस में गले मिलते हैं। सब भेदभाव को मिटाकर आपस में गले मिलने का भाव और किसी पर्व में नहीं देखा जाता। अतः सामाजिक दृष्टि से भी यह एक महत्त्वपूर्ण पर्व है। अन्तिम निवेदन यह है कि आजकल के नाम से जो निन्दनीय बातें प्रचलित हो गई हैं उन सबको हमें प्रयत्न करके बन्द कर देना चाहिए तथा होली को शुद्ध और पवित्र रूप में मनाने का प्रचार करें और इस अवसर पर किसी प्रकार की असभ्यता न होने दें। जिससे भारत के माथे पर लगा हुआ यह असभ्यता का कलंक शीघ्र ही दूर हो।

सार्वदेशिक (पत्र) के नियम

(१) 'सार्वदेशिक' पत्र का ग्राहक वर्ष के किसी भी समय से बना जा सकता है।

(२) 'सार्वदेशिक' पत्र का वार्षिक (३०/- रु०) या आजीवन (३००/- रु०) सदस्यता शुल्क मनीआर्डर द्वारा ही भेजने का कष्ट करें।

(३) प्रत्येक ग्राहक के पास 'सार्वदेशिक' बड़ी सावधानी से भेजा जाता है। परन्तु यदि किसी ग्राहक को पत्र न मिले तो कार्यालय में पत्र-व्यवहार द्वारा या व्यक्तिगत सम्पर्क करें तथा साथ ही अपने डाकघर से भी इसका स्पष्टीकरण मांगें। पत्राचार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

(४) प्रकाशनार्थ लेख टाईप किये हो या स्पष्ट अक्षरों में हाथ से लिखे होने पर ही स्वीकार किये जायेंगे।

(५) वैदिक ज्ञान, महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की मान्यताओं के अनुरूप लेखों को ही प्रकाशित किया जाएगा। लेख को न्यूनाधिक करना सम्पादक के अधीन है।

(६) सार्वदेशिक पत्र को और अधिक जनप्रिय बनाने के सुझावों का स्वागत है। —सम्पादक

१८ मार्च पुण्य तिथि पर विशेष—

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी : आर्यसमाज का जाज्वल्यमान नक्षत्र

डा० धर्मपाल, मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

मानवता की सेवा के लिए, मानव मूल्यों की स्थापना के लिए, सत्य के प्रचार के लिए तथा असत्य के विनाश के लिये इस पृथ्वी पर अनेक महापुरुषों ने सत्यकार्य किया। यह नियम है जब जब सामाजिक जीवन में विकृति आ जाती है, उसकी निष्कृति के लिए सदात्मा पुरुष के मन में हूक सी उठती है और वह मैदान में कूद पड़ता है। यह नियम सृष्टि के आदि से है। प्रारम्भिक युग के ऋषियों मुनियों ने सांसारिक सुख भोगों को त्यागकर, निरन्तर तपस्या के बल पर ऐसी शक्ति अर्जित की जिससे वे संसार के सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य कर सके। ऐसे महापुरुषों को अपने जीवन में अभावों का सामना करना पड़ा, विरोध भी सहने पड़े, जीवित रहते डण्डे भी सहने पड़े और कभी-कभी तो किसी आततायी के हाथों बलिदान भी होना पड़ा। परन्तु उन लोगों की वाणी कभी नहीं मरती, जो केवल अपने लिए जीवित नहीं रहते, बल्कि दूसरों के लिए जीते हैं, जो लोग केवल अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहते, अपितु दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति मानते हैं, ऐसे महापुरुषों की गणना करने लगें तो अनेक पृष्ठ लिखे जायेंगे।

यहां पर एक ऐसे महामना महानुभाव के कृतित्व का विश्लेषण अपेक्षित है जो मात्र छब्बीस वर्ष की आयु में ऐसे महत् कार्य कर गया, जिन्हें कोई विलक्षण मेधा का व्यक्ति ही कर सकता है। बीस-इक्कीस वर्ष की आयु तो अल्हड़ता तथा अबोधता की आयु ही मानी जाती है। इस महापुरुष को मात्र पांच-छः या अधिकतम सात वर्ष ही मिले, काम करने के लिए। इन स्वल्प वर्षों में ही, वह अपने जीवन को पूर्णता की कोटि तक समुन्नत कर गया। एक "लिली" का फूल केवल एक दिन के लिए खिलता है तथा उसी दिन मुरझा जाता है, परन्तु दुनिया उसे याद करती है। दूसरी ओर "ओक" का वृक्ष तीन सौ वर्ष तक रहता है, पर क्या कोई उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखता है वह तो मात्र ईंधन या अधिक हुआ तो इमारती लकड़ी के रूप में ही प्रयोग लाया जाता है। मनुष्य के जीवन की पूर्णता का आकलन भी इसी प्रकार दिनों की संख्या से नहीं, अपितु उसके जीवन लक्ष्यों तथा उपलब्धियों से किया जाता है।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी मात्र १९ वर्ष की आयु में आर्य समाज बच्छों वाली लाहौर के प्रतिनिधि बनकर लाला जीवनदास के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती के पास उन दिनो गयेथे,जब वे मृत्यु शैया पर थे। उनका सारा शरीर फफोलों से सूजा था, पर फिर भी उनका मुख मण्डल शान्त एवं प्रसन्न मुद्रा मे था। उस समय गुरुदत्त के ऊपर जो प्रभाव पड़ा, बस वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। विज्ञान का तार्किक छात्र गुरुदत्त उस दिन अविचल ईश्वर भक्त बन गया। वह प्रभुनिष्ठ हो गया। वह प्रभुमय हो गया। ऋषिवर दयानन्द के अन्तिम शब्द—"हे दयामय ! हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हों ! अहाः तूने अच्छी लीला की !" आजीवन उस भक्त गुरुदत्त के कानों में गूंजती रही।

गुरुदत्त ने अजमेर से लौटकर लाहौर मे डी ए०वी० स्कूल की स्थापना में प्राणपन से योगदान किया। उनकी इच्छा वेद, वैदिक साहित्य और संस्कृत साहित्य को शिक्षा प्रणाली में सदैव वरीयता देने की रही थी। पर वह ऋषिवर दयानन्द का शिष्य वैदिक धर्म का अनुयायी, वहीं तक न रुका। उसने अपनी सारी शक्ति वेद प्रचार, आर्ष पद्धति से संस्कृत शिक्षण तथा वेद के वैज्ञानिक अर्थ करने पर केन्द्रित कर दी। वे कहा करते थे कि मैं ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र लिख रहा हूं। जब कुछ मित्र पूछते कि कहां लिख रहे हो, तो उन्हें उत्तर मिलता—"अपने जीवन में उसे क्रियात्मक रूप में लिख रहा हूं।" सचमुच वैदिक धर्म के प्रचार और ऋषिऋण से मुक्त होने के लिए वाणी और लेखनी से अनवरत परिश्रम करना उसने प्रारम्भ कर दिया था। जिन लोगों ने उस ज्ञानी आत्मा का सान्निध्य प्राप्त किया है, उनका कहना है कि जब वे "वैदिक मैगजीन" को लिखने बैठते थे तो कई दिन तक वे घर से बाहर भी न निकलते थे। जब वे पढने लगते तो बिना विश्राम किए, बिना सोए कई-कई दिन पढ़ते रहते थे।

पण्डित जी ने वैदिक शब्दों की जो वैज्ञानिक व्याख्या का रूप तैयार किया था उसे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित किए जाने का गौरव मिला था। टर्मिनोलोजी आफ वेदाज ने ब्रिटेन और जर्मनी के भाष्यकारों को चकित कर दिया था। दो उपनिषदों का उन्होंने ऐसा मार्मिक अनुवाद किया था, जिसे उनकी मृत्यु के बाद विश्व धर्म सम्मेलन में पढ़ा गया। वैदिक तथा विज्ञान शीर्षक लेख आर्य पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था, जो बाद में पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का समर्पण भाव उनके दयानन्द निष्ठ होने का कितना सुन्दर उदाहरण है।

वह वीर बालक वैदिक धर्म के लिए, वैदिक मान्यताओं के लिए अपने को बलिदान कर गया। उसके बलिदान दिवस पर हमारा कर्तव्य है कि वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए हम अपने को इसी प्रकार समर्पित करने का व्रत लें।

होली का त्यौहार मनाएं

—राधेश्याम 'आर्य', सुलतानपुर

बढ़ती है अब वृत्ति आसुरी,
बढ़ता है अन्याय-अनय।
साहस शौर्य हुआ कुंठित है,
बढ़ता जन-जन में है भय॥

जले आज होली फिर ऐसी,
मन की राक्षस वृत्ति जलाएं।
होली का त्योहार मनाएं॥

दया-प्रेम के भाव मधुरमय,
जानें कैसे हुए तिरोहित।
मानव-मन से दूर हुआ है,
मानवता का संचित हित॥

सहिष्णुता की, सद्भावों की,
आभा उर में आज जगाएं।
होली का त्योहार मनाएं॥

स्वार्थ परायण हुआ मनुज है,
दुखी हुआ है अब प्रहलाद।
सत्य बहाता है अब आंसू,
मना रही होलिका हलाद॥

पावन है यह पर्व हमारा,
इसकी गरिमा आज बचाएं।
होली का त्योहार मनाएं॥

नारी के विकास में आर्य समाज का योगदान

—राजकुमारी आर्या, हिसार

किसी समाज में नारी की अवस्थिति उसकी सभ्यता का सच्चा मापदण्ड हुआ करती है। नारी प्राचीन काल से ही पुरुष की शिक्षक मानी गयी है, तब भी, जबकि वह बच्चा होता है और तब भी जब वह वयस्क हो जाता है। ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है—'क्योंकि पिता फिर अपनी पत्नी से उत्पन्न होता है (जायते पुन.), इसीलिये वह जाया कहलाती है, वह उसकी दूसरी माता है। गांधी जी ने नर-नारी को एक-दूसरे का पूरक मानते हुए एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व अविचारणीय बतलाया है। वैदिक काल से लेकर आज तक यदि नारी के क्रमिक उत्थान-पतन पर विचार किया जाय तो हमारे समक्ष प्राचीन संस्कृति की अनेक कड़ियां खुलने लगती हैं। वैदिक काल से यज्ञ, प्रार्थना एव सन्ध्या की विधि को पूर्ण करने वाली नारी महाकाव्यों के काल तक किसी विशेष दौर्बल्य का शिकार नहीं हुई थी। उन दिनों ब्राह्मण कन्याओं को वेदों की शिक्षा दी जाती थी और क्षत्रिय वर्ण की कन्याओं को धनुष-बाण का प्रयोग सिखाया जाता था। इसके अतिरिक्त घरों तथा आश्रमों में लड़के तथा लड़कियों को साथ-२ शिक्षा दी जाती थी। भारहुत की मूर्तियों में कुशल अश्वारोही स्त्रियों के दर्शन होते हैं। पतंजलि ने भाला चलाने वाली महिलाओं और कौटिल्य ने महिला धनुर्धरों और मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त की अंगरक्षक यवन महिलाओं का बहुत ही सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है।'

परन्तु मध्य युग तक आते-आते काल ने अपनी चरखी पर नारी के गौरव और उसकी महत्ता को लपेट लिया। मध्ययुग के आस-पास सामान्य लोगों द्वारा अधिकांश रूप में सन्यास ग्रहण करने की प्रवृत्ति ने जहां एक ओर जन-मानस को भौतिक जीवन से उदासीन बनाया, वहां दूसरी ओर नारी को नाना प्रकार के दुर्गुणों और निर्बलताओं में संसिक्त करके भी देखा। प्रव्रज्या को प्रोत्साहन देने के लिये उन दिनों कनक और कामिनी दोनों को दुर्गम घाटी कहा गया। वराह मिहिर (छठी शती) का वह युग समाप्त हो गया था जिसमें धर्म और अर्थ की सिद्धि स्त्रियों पर ही अवलम्बित मानी जाती थी तथा मानवीय प्रगति के लिए उन्हें अनिवार्य समझा जाता था। अब तो नारी को बड़ा भारी विकार मानकर त्यागने की बातें सोची जाती थीं। इस पृष्ठभूमि के रहते हुए आर्य समाज ने सन्त कवियों की भांति न तो नारी को माया कहा है और न दुर्गम घाटी। स्थान-स्थान पर मुक्त कंठ से नारी के गुणों का गान करके उसकी बिखरती महत्ता को बटोरने की चेष्टा करके आर्यसमाज के उपदेशकों ने अपनी महानता का परिचय दिया है क्योंकि संसृति मे महानता का सेहरा उन्हीं को बांधा जाता है जो दूसरों के अस्तित्व को भी स्वीकार करें, उन्हें भी अपने समान हाड़-मास का प्राणी समझें। महर्षि दयानन्द ने नारी को उदासीनता के दलदल और क्लेशों की परिखा से बाहर निकालकर उसमे आत्म-गौरव का इन्द्र-धनुषी रंग भरते हुए कहा है—'स्त्री से मनुष्य जन्म लेता है। स्त्री मां के रूप मे शक्ति है।' तभी तो राजस्थान मे लोगो के साथ जाते हुए एक बालिका को देखकर महर्षि दयानन्द खड़े हो गये और दोनो हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया। लोगों ने इसका कारण पूछा तो स्वामी जी ने मुक्त कण्ठ से उत्तर दिया—'मैंने भावी माता अर्थात इस देश की परम शक्ति को प्रणाम किया है युग-युगों तक वह नारी जिसका कार्यक्षेत्र अभी तक घर की चहार दीवारी तक ही सीमित था महर्षि दयानन्द के आदर्श परक विचारों मे पढ़ने अर्थात् शिक्षा ग्रहण का अधिकारिणी समझी गयी। सुतरां स्त्री शिक्षा को लेकर महर्षि के विचारों को क्रियान्वित करने के लिए देश में शिक्षण संस्थाओं की सुदृढ़ परम्परा स्थापित की गयी। महर्षि दयानन्द नारी के विकास हेतु विधवा-विवाह के पक्ष में थे। यह पुरुष का अनाचार और अत्याचार ही कहा जायेगा कि वह स्वयं अनेक विवाह करे और नारी एक से अधिक विवाह न कर सके, पति के मरने अथवा उससे परित्यक्त होने के कारण या तो जल मे कूद कर डूब मरे अथवा अपने सौन्दर्य को बाजार मे ऊंची-नीची बोली पर बेचने के लिए विवश हो जाय : राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की आक्रोशभरी वाणी तभी तो पुरुष की स्वार्थवृत्ति पर अपने पूरे वेग से फूट पड़ी है—

> अपने लिए सभी सुविधाएं,
> पहले ही कर बैठे नर। (पंचवटी)

महर्षि दयानन्द ने नारी को ऊंचा उठाने के लिए उसे विद्या ग्रहण करने और वेद पढ़ने का अधिकार दिया। पर्दा प्रथा को, जो उसके जीवन का अभिशाप बन गयी थी, परिसमाप्त करने की भरसक चेष्टा की। नारी के रूप को अधिक सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए उन्होंने बाल विवाह प्रथा का घोर विरोध करते हुए आश्रम व्यवस्था के परिपालन पर जोर दिया। निश्चय ही महर्षि दयानन्द ने जहां एक ओर नारी को संसृति के विकास की मूल शक्ति माना है, वहां दूसरी ओर उसे तत्कालीन अवगुणों और दोषों की परिखा से बाहर निकालकर हर प्रकार की महिमा और गौरव से मंडित करने की चेष्टा की है। महर्षि दयानन्द ने एक नरेश के यहां वेश्या को देखकर 'कुतिया' शब्द का प्रयोग मूलतः उसकी विकृतियों के लिए किया है। यह भी अपने आप में एक दम सच है कि विकृतियों पर कुठाराघात करने के लिए पूरी शक्ति से प्रहार करना होता है महर्षि तो इस बात की जीती जागती तसवीर थे। तभी तो उक्त वेश्या द्वारा उत्प्रेरित अपने रसोइया से कांच खाकर समाज को उसकी 'ऊंचाईयों' तक पहुंचाने में उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया।

महर्षि दयानन्द अपने समय के बहुत बड़े सुधारक और दार्शनिक थे। उन्होंने जीवन की उदारतम रेखाओं में पति-पत्नी के सहयोग परक जीवन का उल्लेख करते हुए 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' का उद्घोष करके नारी को आशा, उत्साह और प्रेरणा के त्रिकोण में रखकर सदैव के लिए महान बनाने की सफल प्रचेष्टा की। उन्होंने 'अष्ट-वर्षा भवेत गौरी' आदि काल्पनिक वाक्यों का खंडन करके 'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्' का उद्बोधन देकर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हुए कन्या को युवा एवं विद्वान पति को वरण करने का आदेश दिया। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' में 'मातृमान' पितृमान, आचार्यवान पुरुषो वेद—प्रशस्ता धार्मिकी माता विद्यते यः स मातृमान' आदि वाक्यों को उरेह कर 'मातृत्व' को व्यापक धरातल प्रदान किया और 'ममत्व' को सतरंगी आकर्षक रेखाओं से सम्पृक्त किया। निश्चय ही गार्हस्थिक जीवन के अनेक अलभ्य चित्र दयानन्द की वाणी में सतरंगी रंगों की झिलामिली उत्पन्न करके पति-पत्नी के तात्कालिक सहयोग परक जीवन का सतही चित्रण न करके उसका पूरी गहराई के साथ अभिचित्रण करते हैं।

महर्षि दयानन्द ने कन्यात्व, पत्नीत्व एव मातृत्व—नारी जीवन के तीनो प्रमुख अंगों को आदर देकर उन्हें दृढ़ आधार प्रदान किया है। एक स्थान पर अनाचारी और कुविचारी पुरुषों को चेतावनी देते हुए उन्होने कहा है—ऐ ! स्त्री को जूती समझने वालों तुम उनसे सुशील, सुसंस्कृत संतान के स्थान पर जूता ही पा सकोगे।' निश्चय ही जिस स्त्री को 'निर्माता भवति' की उपाधि से विभूषित किया गया था, कालान्तर में उसका इतना ह्रास हो गया यह देखकर महर्षि का अन्तर्मन महान पीड़ा से मथ उठा और उन्होने भारतीय जन-समुद्र के तल मे क्रांति मचा कर नारी को पुरुष के समान समझने की आवश्यकता पर बल दिया। आक्रोश के अभ्रभेदी तुंगों मे कवि प्रसाद की वाणी मानो ऋषि की वाणी बन गयी—

> तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में,
> कुछ सत्ता है नारी की।
> समरसता है सम्बन्ध बनी,
> अधिकार और अधिकारों की। (कामायनी)

शायद महर्षि के शब्दों में उपर्युक्त पद और भी अधिक सार्थक हुआ। क्रान्ति के शस्त्रों को अपनाकर महर्षि ने नारी में कुछ ऐसा जीवन फूंका कि वह अपनी शक्तियों और गुणों का सही मूल्यांकन करने लगी।

पश्चिम की नारी का अन्धानुकरण करने में भारतीय नारी ने अपने बीच मे जिन अवांछित परिवर्तनों को उद्भूत किया दयानन्द ने उसका विरोध करके उसे बालक की प्राथमिक पाठशाला के सच्चे गुरु के रूप में जमाने की चेष्टा की। महर्षि दयानन्द ने नारी-शिक्षा के जिस स्वप्निम विहान को अपनी आंखों में दीप्ति के साथ भरा, उनके अनुवर्ती समाज ने उसी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यों (हिन्दुओं) का नव वर्ष और होली

स्वामी श्रद्धानन्द, गवां, बदायूं

होली हिन्दुओं का एक महत्वपूर्ण पर्व है बहुत से लोग यह कहते हैं कि श्रावणी (रक्षा बन्धन) ब्राह्मणों का, विजयादशमी क्षत्रियों का और दीपावली वैश्यों का त्योहार है और 'होली शूद्रों का त्योहार है' यह कहावत अज्ञानता पूर्ण है। वास्तव मे होली ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सहित सब का और भारत का सब से बड़ा त्योहार है, क्यो कि होली वर्ष के अन्तिम फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है पूर्णिमा के दूसरे दिन ही चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा होती है जो कि नये वर्ष का प्रथम दिन होता है सृष्टि के आदि से ही आर्य हिन्दू जाति चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को दुलहण्डी के दिन नववर्ष मनाया करती थी। परन्तु भारतीय ज्योतिषियो के द्वारा कृष्ण पक्ष को अशुभ मान कर नव वर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को मनाया जाने लगा।

भारतीय ज्योतिषी शुभ अथवा अशुभ कार्यों का भी मुहूर्त निकाला करते हैं। जब कि वास्तविकता यह है कि सारे दिन ईश्वर के बनाये हुये हैं और धर्मात्माओ के लिये कोई भी दिन अशुभ नही है शुभ कार्यों को सब दिनो मे उपयुक्त अवसरो पर किया जाना चाहिए शुभ कार्य करने के लिये ज्योतिषी से मुहूर्त नही निकलवाना चाहिये। पता नही चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के स्थान पर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को नव वर्ष कब से मनाया जाने लगा। वैसे भारत की अनपढ़ जनता मे आज भी चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा अर्थात दुलहण्डी के दिन नव वर्ष मनाया जाता है। भारत के शिक्षित तथा अशिक्षित सभी लोग भूल गये हैं कि दुलहण्डी के दिन ही हमारा नव वर्ष प्रारम्भ होता है।

भारत के अंग्रेजी पढ़े लोग हिन्दी महीनों के नाम भी नही जानते हैं और वे नया वर्ष चैत्र मास से प्रारम्भ न करके प्रथम जनवरी से करते हैं। विदेशियों की भाषा पढ़कर के हम आत्म विस्मृति के गढ़े में जा गिरे हैं।

जो लोग चैत्र मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को नव वर्ष मानते है मैं उनके ज्योतिषियो को चुनौती देता हू कि वे चैत्र शुक्ला १ को नव वर्ष मनाया जाना उचित एव सत्य सिद्ध करे। जब पूणमासी के दिन मास पूर्ण हो जाता है तो अगले दिन से दूसरा मास लगना ही चाहिये फाल्गुन पूर्णमासी वर्ष के अन्तिम मास का अन्तिम दिन होता है अत चैत्र कृष्ण १ को नव वर्ष माना जाना उचित है और उस नव वर्ष को सुन्दर ढग से सुप्रभावी ढग से मनाया जाना चाहिये।

होली क्यों और कैसे मनावें ?

त्योहार राष्ट्र में नया जीवन एव उल्लास लाने के लिये मनाये जाते है परन्तु जब हम त्योहार को सही ढग से ही न मनावे तो वह हमारे जीवन मे उत्थान कैसे ला सकेंगे। होली मे 'नवशस्येष्टि" अर्थात नये अन्न का यज्ञ किया जाता है आर्यों हिन्दुओ मे परिपाटी है कि नया अन्न देवताओ को अर्पण किये बिना ग्रहण नहीं करते थे। देवताओ का मुख अग्नि है सो इस दिन बड़े २ हवन किये जाते थे और उनमे नये अन्न की बाले तथा गुड़ जो तिल आदि डाला जाता था परन्तु वह सामूहिक यज्ञ करने की परिपाटी भारत से लुप्त हो गई है। नगरो में तो लक्कड़ एकत्रित करके होली के दिन आग लगा देते हैं, और ग्रामो में तो एक मास पूर्व होली के स्थान पर उपले कण्डे फूस झाड़ झंकार एकत्रित करके होली के दिन आग लगा देते हैं हमे स्मरण है कि हमारे गाव मे कुछ गुण्डे लोग निर्बलो के छप्पर, किवाड़, तख्त आदि जो हाथ लगता उठा कर होली पर रख आते थे और वे सामान होली की अग्नि मे भस्म हो जाते थे क्या हमारा त्योहार दूसरो को सताने का माध्यम बन गया था। हमारे गाव की वह गुण्डागर्दी तो बन्द हो गई है। नही जानते कि भारत के किस क्षेत्र मे यह गुण्डागर्दी आज भी चलती है। तो भारत की हिन्दू जनता से मेरा निवेदन है कि वे होली और नव वर्ष को शिष्टता और सज्जनता से मनावें। होली के दिन दूसरे के मुह वस्त्रो को काले लाल नीले पीले पक्के रग वार्निश से पोतना किस धर्म शास्त्र मे लिखा है। भारत में सैकड़ो बड़े २ धर्माचार्य जगतगुरु शकराचार्य हैं पर उन्होंने कभी इस होली की असभ्यता बदतमीजी को रोकने की चेष्टा नहीं की। वे धर्माचार्य शकराचार्य किस मर्ज की दवा हैं जब वे भारत के पतन को रोक नही पाते हैं। चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को होली दुलहण्डी मनायी जाती है यही दिन हमारे नव वर्ष का होता है इस दिन से पूर्व घरो गलियो मार्गों की स्वच्छता हो जानी चाहिये। सभी लोग होली के दिन प्रात काल ही शौच मजन स्नान से निवृत्त होकर सामूहिक यज्ञो में भाग लेने जावे ग्राम नगर सभी स्थानो पर शुद्ध मैदानो मे यज्ञ वेदी बनाई जावें और वेद के मन्त्रो से घी और सामग्री की आहुति दी जावे अपने घरों से खीर लड्डू हलवा आदि जो जनता कर लाये उसकी आहुति अग्नि की भेंट करे तत्पश्चात कुछ धार्मिक भजनो का कार्यक्रम चले और विद्वानो द्वारा बताया जावे कि होली क्यो और कैसे मनायी जावे ? तत्पश्चात सब लोग गले मिले और नये वर्ष की बधाई देवे। फिर सब लोग अपने घरो को जावें।

एक अत्यन्त आवश्यक बात मैं लिखता हू कि होलिका या सस्येष्टि मे जड़ देवों के मुख अग्नि मे अन्न की आहुति देते हैं इसके साथ ही चेतन देवता मात पिता गुरु अतिथि मित्र बन्धु सम्बन्धित ब्राह्मण साधू सन्यासियो को भी स्वादिष्ट अन्न का दान करके ही भोजन करना कल्याणकारी होता है।

मनुस्मृति में कहा गया है कि 'अभिवादन शीलस्यनित्यम् वृद्धोपसेविनः चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयु विद्या यशो बलम्। अर्थात जो अपने बड़ो को अभिवादन करता है और नित्य उनकी सेवा करता है उसके आयु विद्या यश और बल की वृद्धि होती है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

स्व० प्राशुराम प्रार्य,

प० गुरुदत्त का जन्म २६ अप्रैल १८६४ को मुलतान शहर में हुआ उनके पिता श्री रामकृष्ण उर्दू और फारसी के प्रसिद्ध विद्वान थे। विद्यार्थी जीवन मे उन्होंने शानदार सफलतायें प्राप्त की, सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने उनके जीवन को पलट दिया, २० जून १८८० को उन्होने आर्यसमाज में प्रवेश किया, गुरुदत्त के व्यक्तित्व में कमाल का आकर्षण था, जो उन्हें मिलता उनका मित्र बन जाता।

आर्यसमाज में थोड़े ही समय मे उनका स्थान बन गया। लोग उन्हें यग फिलास्फर कहने लगे, १८८५ मे वे लाहौर के गवंर्मेट कालेज मे दाखिल हुये, कालेज में एक डिबेटिंग क्लब बनाकर बहुत से नवयुवकों को आर्य समाज की ओर खींचा गुरुदत्त जी ने लाला लाजपत राय और महात्मा हंसराज जी से मिलकर वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार के लिये एक अंग्रेजी पत्र भी निकाला।

कहते हैं बहुत सी अंग्रेजी किताबे पढ़ने के कारण उनका झुकाव नास्तिकता की ओर होने लग गया था पर उसी वर्ष अचानक यह सूचना मिली कि महर्षि दयानन्द अजमेर में बीमार हैं, लाहौर समाज की ओर से श्री जीवन दास और प० गुरुदत्त को स्वामी जी की सेवा में भेजा गया। महर्षि का इलाज होता रहा परन्तु आराम न आया सारा शरीर छालों से भरा होने के कारण दुर्बल हो गया था। हर एक सांस के साथ तीखा दर्द होता था, इतना कष्ट होने पर भी महर्षि के मुंह से आह तक नहीं निकलती थी। यह देख गुरुदत्त जी हैरान होते थे, उनकी समझ में नहीं आता था कि यह महान आत्मा किस तरह से इतने कष्टो में शान्त पड़े हैं। महर्षि के अन्त समय गुरुदत्त जी उनके पास थे। उस समय जो दृश्य गुरुदत्त ने देखा उसने उन्हें दृढ़ आस्तिक बना दिया। ऋषि ने अन्तिम समय में कहा "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो"। इसे सुनकर वे इतने मन्त्र मुग्ध हुये कि ईश्वर पर उनका विश्वास दृढ़ हो गया।

एम० ए० पास करने के बाद वह गवंर्मेंट कालेज में साइंस के प्रोफेसर हो गये। तीन वर्ष के बाद आर्य समाज की सेवा के लिए उन्होने नौकरी को छोड़ दिया और अपने घर ही एक उपदेशक विद्यालय खोल दिया बहुत से युवक उस मे आकर पढ़ने लग गये। प० गुरुदत्त जी हिन्दी अंग्रेजी संस्कृत के सफल वक्ता थे। बाद मे वैदिक "मैगजीन' नाम से उन्होंने अंग्रेजी पत्र निकालना शुरू किया। उनके तर्क पूर्ण लेखों से देश और विदेश मे धूम मच गई आर्य समाज के विशाल व्यस्तता पूर्ण कार्य और वैदिक धर्म के प्रचार की अटूट धुन के कारण वह अपने स्वास्थ्य के प्रति उदासीन रहने लग गये। परिणाम स्वरूप वह बीमार होते चले गये और बहुत इलाज करने पर भी स्वस्थ न हो सके, १८ मार्च १८९० को २६ वर्ष के पूर्ण यौवन में आप असार संसार को छोड़ कर चल दिये।

अंग्रेजी में उन्होने मार्के की पुस्तके लिखी जिन्हें पढ़कर किसी भी व्यक्ति की वैदिक धर्म में आस्था दृढ़ होती है और जिनके अध्ययन से विशेषतया बड़े बड़े विदेशी विद्वान वैदिक धर्म की अत्यन्त प्राचीनता और महान महिमा पर चकित हो कर वेद महिमा और भारतीय संस्कृति के गीत गाने लगे।

वैदिक धर्म प्रचार की तड़प

स्वामी श्रद्धानन्द जी, प० गुरुदत्त पर लिखते हैं कि आर्य समाज जालन्धर के तीसरे वार्षिक उत्सव पर प०जी का व्याख्यान सुनने के लिए २ हजार की भीड़ इकट्ठी हो रही थी जिनमे राय सालिग राम और वजीर कर्मचन्द मण्डी वाले आदि अनेक प्रतिष्ठित सज्जन कुर्सियो और बैंचो पर शोभायमान थे प.गुरुदत्त ने शनैःशनैः भूमिका उठाकर परमात्मा का निरूपण किया और फिर आत्मा के साथ उसके सम्बन्ध का चित्र खींचकर निराकार पूजा के मण्डन में ही मूर्ति पूजा का खण्डन कर दिया। पर जब जनता के लिए प्रेम के भाव से प्रेरित होकर कहा कि मुझे बड़ा कष्ट होता है और मेरा हृदय विदीर्ण हो जाता है जब मैं देखता हूं कि मेरे पिता के ही पुत्र (जगत पिता परमात्मा) मेरे भाई चैतन्य के पुत्र होते हुये जड़ का पूजन करते हैं तो ऐसे भाव प० जी के सुनते हुये लोगों के दिल भर आये। वजीर कर्णसिंह का दूसरे पूजा के सामान के अतिरिक्त एक मन से कम बोझ तो मूर्तियों का न होगा, जिनका वह नित्य पूजन करते थे, उन्होंने राय शालिग राम से कहा कि कल से मैं मूर्ति पूजा कदापि न करूंगा।

योगाभ्यास का आनन्द

२८ दिसम्बर की रात को मैंने (स्वामी श्रद्धानन्द) भाई देवराज जी के यहां ही सोम: प्रात: स्नान सन्ध्या वन्दनादि से निवृत होकर प० गुरुदत्त जी को उनके स्थान पर न पाया तो पता चला के वह दो बजे से ही स्नान करके एकान्त स्थान में दरवाजे बन्द कर अपनी योग क्रिया में निमग्न हैं। ८ बजे जब किवाड़ खुले, तो मुझसे एकान्त में उन्होंने बताया कि जब तक एकाग्रता से न्योली कर्म न कर ले तो अभ्यास नहीं कर सकते। मैंने निवेदन किया कि यदि पूरा अभ्यास जारी रखना और बढ़ाना है तो व्याख्यान, लेख आदि का कार्य बन्द कर देना होगा और यदि यह जारी रखना है तो अभ्यास को साधारण अवस्था में लाना होगा। पण्डित जी मेरे साथ सहमत होते हुए बोले कि मुन्शी राम जी, जानता मैं भी सब कुछ हूं किन्तु एक ओर तो अभ्यास का आनन्द नहीं छोड़ा जाता और दूसरी ओर जब सज्जन आ घेरते हैं तो उन्हें कोरा जवाब देना भी मेरी शक्ति से बाहर हो जाता है," मै भला इस सरल उक्ति का क्या उत्तर दे सकता था। किन्तु जब भी कभी रात को सोते २ विचार आता तो एक सर्द आह दिल से निकलती है और हृदय पुकार उठता है हा! गुरुदत्त के मूर्ख मित्र तथा अन्धे श्रद्धालु भक्तो। यदि तुम जानते कि पूज्य पंडित जी को दो-दो बजे रात तक पठन पाठन और शंका समाधान के लिये जगा कर तुम उन्हें मौत के मुंह में धकेल रहे हो तो तुम्हे कितना अनुताप होता? किन्तु—होई है सोइ जो राम रचि राखा।

नव वर्ष और होली

(पृष्ठ ७ का शेष)

प्राचीन काल में यज्ञो में एक दूसरे के चन्दन लगाते थे चन्दन के स्थान पर यह गुलाल रग का सेवन अशास्त्रीय और धर्म विरुद्ध है। भारत के धार्मिक सगठन आर्य समाज सनातन धर्म सभा, विश्वहिन्दू परिषद जैन समाज आदि द्वारा इस बात का ज्ञान लोगों को दिया जाना चाहिये कि होली, क्यों और कैसे मनावें? भारत सरकार के रेडियो और टेलीविजन से भी इस विषय पर भाषण होना चाहिये, होली का दिन नव वर्ष अब शीघ्र ही आने वाला है मैं भारत राष्ट्र के कल्याण की कामना करता है।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु:खभाग भवेत ॥

होली के अवसर पर चलती रेलों, बसो पर ग्रामीण लड़के पत्थर कीचड़ फेंक कर नष्ट भ्रष्ट करते हैं यह दुर्जनता नगरो के शिक्षितो ने ही उनको सिखाई है अब होली के विकृत रूप को समाप्त किया जाना चाहिये। और रग से होली बिल्कुल ही बन्द की जानी चाहिये। रग भरे गुब्बारे भी फेंक कर राहगीरों के कपड़े बिगाड़ने की क्रिया बन्द होनी चाहिये। हिन्दू धर्म तो सज्जनता को कहते हैं। ●

नारी का विकास

(पृष्ठ ६ का शेष)

विहीन को अनेक कन्या पाठशालायें खोलकर सार्थक किया। परिणामत: जालन्धर में आर्य कन्या गुरुकुल, देहरादून में कन्या गुरुकुल, इसी तरह हाथरस (उत्तर प्रदेश) मे, गुजरात में, बड़ौदा मे, पोरबन्दर में, हैदराबाद में, बेगमपेठ आदि में कन्या गुरुकुलो की स्थापना हुई। आज नारी का समग्र विकास महर्षि दयानन्द के उच्च विचारों की परिणति मात्र है। सही अर्थों में महर्षि दयानन्द अथवा उनका आर्य समाज नारी के विकास का पर्याय कहा जा सकता है। नारी की प्रगति के लिए उसे उसके तत्कालीन बन्धनों से बाहर निकालने के लिए स्वामी जी ने जो कुछ किया वह प्रत्येक दृष्टि से स्तुत्य एवं पूर्ण है। नव क्रांति के इस अग्रदूत को इस रूप में युगों-युगों तक याद किया जाता रहेगा।

स्वास्थ्य चर्चा

सैकड़ों रोगों का एक इलाज नीम

नीम आयुर्वेद के मतानुसार त्रिदोष का नाश करने वाला है। वह सत्य की तरह कड़वा जरूर होता है लेकिन उसका परिणाम सुखद ही होता है। इसके पत्तों में प्रोटीन, कैल्शियम लौह और विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है। ऐसे पेड़ पौधे बहुत कम हैं जो जड़ से शिखर तक समूचे के समूचे काम के हों। इसकी छाया छिलका, पत्ते, फूल फल और डण्ठल तक मे इन्सान को तन्दरुस्त कर देने वाले गुण विद्यमान हैं।

यह सच है कि नीम हकीम से इलाज कराना खतरे से खाली नहीं होता, मगर 'नीम' से आप बेखौफ इलाज करा सकते हैं। इसे संस्कृत में 'निम्ब', हिन्दी में 'नीम', बंगाली में 'निमगाछ, गुजराती में 'लिबंडो', अंग्रेजी में 'नीमट्री', मराठी में 'कडुनिंब' तथा फारसी में 'नेनबूनीम' कहते हैं। तो फिर आइये साधारण से लगने वाले प्रयोग से कठिन बीमारियों को दूर करने की विधि की सही जानकारी लें—

अजीर्ण

अजीर्ण (बदहजमी) के कारण खट्टी डकार, सिरदर्द, जी मिचलाने और कभी-कभी ज्वर जैसे लक्षण भी पैदा हो जाते हैं। नीम के फल (निमौली) खाइये। मीठे चरपरे होने से उन्हें खाने को जी करेगा। इससे जठराग्नि दहल उठेगी और भूख भड़कने लगेगी।

आंखों में जलन

नीम की पत्तियों का रस और पठानी लोध बराबर पीसकर पलकों पर लेप दें। आंखों की जलन और लाली इससे दूर हो जायेगी।

घाव न भरना

नीम की पत्तियों का रस १० ग्राम और सरसों का तेल १० ग्राम को २५ ग्राम पानी में पकायें। जब जल का अंश जल जाये तो इसे नीचे उतार लें। इस तेल को घाव पर लगाने से मवाद और विष जलकर नयी त्वचा अंकुरित होकर घाव भर जाता है।

जवानी के कील

जवानी में अक्सर कीलें हो जाया करती हैं। इस पर नीम के बीज सिरके में पीसकर लेप करते रहें तो दाग धुलकर मुखड़ा सुन्दर हो जाता है।

जुएं और लीखें

नीम का तेल सिर में लगाने से जुएं और लाखें साफ हो जाती हैं।

तिल्ली बढ़ना

नौशादर, निमौली और अजवाइन समान मात्रा में लेकर चूर्ण बना लें। ३ ग्राम चूर्ण सुबह ताजे पानी के साथ लेने से तिल्ली अपना आकार ग्रहण कर लेती है।

दस्त

नीम के ५ बीजों की गिरी पीसने के बाद फांककर पानी का घूंट भर लें। दिन में ३ बार इसका सेवन करें तो दस्त रुक जाते हैं और दस्त लगने की पुरानी बीमारी भी इससे दूर हो जाती है।

दमा

कहावत है कि 'दमा दम के साथ जाता है' लेकिन नीम तेल दमें को जड़ से उखाड़ देता है। पानी में नीम का शुद्ध तेल १० बूंद डालकर चबाकर निगल जायें। ऐसा दिनभर में ६ बार करने से तीन महीने बाद दमें का दम निकल जाता है।

कम दिखाई देना

नीम के फूल छाया मे सुखाये हुए में कलमी शोरा पीसकर छानकर सुर्मे जैसा बनालें। सुबह-शाम आंखों में १-१ सलाई आंजने से आंखों की ज्योति दिन-ब-दिन बढ़ने लगती है।

पतिंगों से परेशानी

रोशनी पर गर्मियों में पतिंगे आकर परेशान करते है। अगर नीम के तेल से दीपक जलाएं तो पतिंगे उधर आने से भी घबरायेंगे।

बवासीर

बवासीर खूनी हो या बादी नीम इसकी जड़ें हिला देता है। बवासीर का रोग खून से सीधा सम्बन्ध रखता है और नीम खून का नियन्त्रण बखूबी करता है। नीम की अन्दरवाली छाल ३ ग्राम और गुड़ ५ ग्राम पीसकर गोलियां बनाकर निगले और बवासीर में खून रोकने के वास्ते प्रतिदिन ४-५ निमौलियां खाना शुरु करें। रोजाना किसी के साथ भी ५ बूंद नीम तेल पियें और यही तेल मस्सों पर लगाएं तो बवासीर का नाश होता है।

रतौंधी

रतौंधी में रात को कम दिखाई देता है या बिल्कुल दिखाई नहीं देता है। निमौलियां कच्ची ३-४ तोड़ लाइये। निमौली फोड़कर उसमें सलाई घुमाकर आंखों में आंजने से रात को सामान्य दिखाई देने लगता है।

—परशु पाटीदार

निर्वाचन

आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रधान बी. बी. सिंहल, मन्त्री ओमप्रकाश, कोषाध्यक्ष होशियारसिंह चुने गए।

आर्य समाज बारां जिला कोटा श्री भगवती प्रसाद जी भार्गव प्रधान, श्री रामकरण गुप्ता मन्त्री, श्री छोतरलाल शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर (लाल बंगला) कानपुर प्रधान श्री देवेन्द्र आर्य मन्त्री श्री गगाराम आर्य, कोषाध्यक्ष श्री शंकरलाल जी चुने गए।

आर्य समाज महरौली नई दिल्ली प्रधान श्री सुभाष जी कुमार, मन्त्री श्री पुरुषोत्तमदास जी मुक्खी, कोषाध्यक्ष श्री रविकुमार जी चुने गए।

आर्य समाज शान्ति नगर, ज्ञानचन्द मुञ्जाल प्रधान, राजकुमार अरोड़ा मन्त्री, ब्रह्मदत्त नारंग कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज कोसीकलां, श्री ओमप्रकाश जी प्रधान, श्री धर्मचन्द आर्य मन्त्री, श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज मदनगंज किशनगढ़, प्रभुलाल लड्ढा प्रधान, डा० वीररतन मन्त्री, प्रभुलाल कुमावत कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज शक्तिनगर जिला सोनभद्रा, श्री शरदकुमार कमानी प्रधान, श्री परमानन्द पटेल मन्त्री, श्री श्रीनिवाससिंह कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज नागदा, वैद्य श्री रामसेवक पाण्डेय प्रधान, श्री कृष्णमुरारी मन्त्री, श्री मोहनलाल सोनी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज सुभाष नगर फैजाबाद, श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा प्रधान, प्रदीप कुमार आर्य मन्त्री, पण्डित रामपाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज फलावदा, श्री बलदेवसिंह आर्य अध्यक्ष, श्री गिरवरसिंह आर्य मन्त्री, श्री रामकुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज तात्याटोपेनगर भोपाल, श्री आदित्यपालसिंह आर्य प्रधान, जानकीमोहन कोहरी मन्त्री, कैलाशचन्द्र पवार कोषाध्यक्ष चुने गये।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज खेडा अफगान सहारनपुर का वार्षिकोत्सव १५ से १७ मार्च तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प० यशपाल जी आर्य, प० देवदत्त बाली प० ओमप्रकाश तथा प० धर्मसिंह जी आदि अनेको ख्याति प्राप्त विद्वान पधार रहे हैं। इस उत्सव मे अनेको विशेष कायक्रमो का भी आयोजन किया जा रहा है।

—वैदिक वानप्रस्थाश्रम एव साधु साधना केन्द्र काजी खेडा मु० नगर का वार्षिकोत्सव दिनाक १३ से १५ मार्च तक बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के महान् सन्यासी उपदेशक तथा विद्वान पधार रहे है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाये।

—गोविन्दराम वैदिक योगाश्रम गुरुकुल करावल नगर दिल्ली का वार्षिक उत्सव २९ मार्च को अपूर्व धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त आर्य जगत के अनेको विद्वान, महात्मा तथा नेता पधार रहे हैं। इस अवसर पर दिनाक २७ से २९ मार्च तक प्रात ८ से १० बजे तक वेदो से महायज्ञ होगा तथा योग साधना, शक्ति प्रदशन और ऋषिलगर का भी आयोजन किया गया है।

—आर्यसमाज मानसरोवर पार्क दिल्ली का वार्षिकोत्सव १२ से १५ माच तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ आचार्य चन्द्र देव शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न होगा। समारोह मे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान तथा उपदेशक पधार रहे हैं। उत्सव शिव मन्दिर धर्मशाला एच ब्लाक मे मनाया जायेगा।

—आर्य समाज नारसन कलां हरिद्वार का ५४वा वार्षिकोत्सव १५ से १७ मार्च तक धूम-धाम के साथ मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान महात्मा तथा सन्यासी पधार रहे हैं। विद्वानो के आध्यात्मिक एव सामाजिक उदबोधक विचारो को सुनने के लिये अधिक से अधिक सख्या में पधार कर समारोह को सफल बनाये।

—आर्य समाज नीमचाना बुलन्दशहर का ६१वा वार्षिकोत्सव १२ से १५ मार्च तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमे उच्च कोटि के विद्वान्, उपदेशक तथा व्यायाम प्रदर्शक पधार रहे हैं। इस अवसर पर आर्य महा सम्मेलन, किसान सम्मेलन, धर्म सम्मेलन, शुद्धि सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया गया है।

—आर्यसमाज बालकोनगर कोरबा म०प्र०का वार्षिक महोत्सव १९ जनवरी से २१ जनवरी तक मनाया गया। इस समारोह मे आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी श्री स्वामी दीक्षानन्द जी डा० योगेन्द्र कुमार तथा प्रसिद्ध कवि सुरेन्द्रपाल आर्य ने अपने सारगर्भित प्रवचन तथा सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। यज्ञ का सचालन स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी ने किया।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के समाचार

(तमिलनाडु)

१—आर्य समाज मदुरै—जनरजनीय हाल मे प्रतियोगिता,का आयोजन किया गया, जिसमें ६० छात्र-छात्राओ द्वारा व्याख्यान और वेद मन्त्रोच्चारण किया गया, इन छात्रो में एक मुस्लिम छात्र ने भी भाग लिया। सारे कुम्भकोनम शहर मे आर्य समाज के नाम की धूम मच गई। स्थानीय निवासियो को प्रचार पत्रिकाए बाटी गई। इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दक्षिण भारत के सयोजक महात्मा एम० नारायण स्वामी द्वारा समस्त प्रान्त में ७ फरवरी से भ्रमण किया गया। १६ फरवरी को टूटीकोरिम मे भी एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। भूतपाडी (कन्या कुमारी) में भी ११ फरवरी को खेल प्रतियोगिता का समापन एक वृहद यज्ञ द्वारा महात्मा जी के प्रवचनो के साथ सपन्न हुआ।

कुम्भकोनम मेले मे प्रदर्शन के लिए भी आर्य समाज द्वारा एक स्टाल लिया गया है जिससे वैदिक प्रचार किया जा रहा है।

२—आर्य समाज तन्जाबर—एक विशाल समारोह का आयोजन तथा जन्मोत्सव पर सार्वजनिक अवकाश की माग की गई।

(महाराष्ट्र)

आर्य समाज मोगरगा लातूर—आर्य समाज देवलाली कैम्प मे विशाल सभा के आयोजन में महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर सार्वजनिक अवकाश की माग की गई।

(पश्चिम बंगाल)

आर्य समाज खडगपुर मेदिनीपुर—एक विशाल शोभा यात्रा शहर के समस्त क्षेत्रो से होती हुई आर्य कन्या विद्यालय मे पहुची जहा विशाल सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सारा नगर ओ३म् के ध्वजो तथा देश की रक्षा करने वाला आर्य समाज के नारो से गूज उठा। सार्वजनिक अवकाश की माग की गई।

आर्य समाज केराकत—आ० समाज केराकत तथा दयानन्द बाल मन्दिर केराकत जौनपुर मे १२ फरवरी को महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस मनाया गया। प्रात यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया तत्पश्चात नगर मे विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर वानप्रस्थी आर्य मुनिजी तथा मास्टर गणेशप्रसाद ने महर्षि को श्रद्धाजलि अर्पित की।

आर्य समाज सब्जी मण्डी आगरा—मे बुद्धवार दिनाक १२-२ ९२ को महर्षि जन्म दिवस बडे समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे उच्चकोटि के विद्वानो व भजनोपदेशको ने भाग लिया।

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर—मे स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव विशेष समारोह के साथ मनाया गया। समारोह मे स्वामी जी के कार्यों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया। वक्ताओं मे श्री पण्डित प्यारेलाल आर्य, श्री सीताराम आर्य, श्री सत्यनारायण प्रसाद आदि ने महर्षि के कार्यों को आगे बढाने का सकल्प दोहराया। समारोह की अध्यक्षता श्री देवेन्द्र आर्य तथा सचालन श्री गगाराम आर्य ने किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल—के तत्वावधान मे आर्यसमाज आसनसोल द्वारा वृहद्रूप से महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव १२ फरवरी को उल्लासपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। वक्ताओं के महर्षि के जीवन पर चर्चा करते हुये उन्हे श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। बगाल प्रान्त के खडगपुर तथा अन्य स्थानो से भी महर्षि जन्मोत्सव मनाये जाने के समाचार प्राप्त हुये हैं। एक प्रस्ताव में बगाल प्रान्त की समाजो ने इस अवसर पर सरकारी अवकाश की माग की है।

आर्य समाज आनन्द कर्नाटक मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव १२ फरवरी को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर समाज मन्दिर मे नया ओमध्वज लगाया गया तथा यज्ञ, आदि के कार्यों की चर्चा करते हुये उनके कार्य को आगे बढाने का व्रत लिया गया।

आर्यसमाज दयानन्द बाजार निजामाबाद इन्दूर—के प्रधान श्री चिलुका मल्लय्या जी की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। तथा एक प्रस्ताव मे इस दिन सरकारी अवकाश की माग की गई।

जन्म दिवस मनाया गया

श्री प० हरिविश्वेश्वर जी मन्त्री प्रभाकर आर्यसमाज रोटरडाम होलेण्ड की धर्मपत्नी श्रीमति पण्डिता चन्द्रदेई विश्वेश्वर जी का जन्मदिन यहा "चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर ग्रेटर कैलाश तथा गुरुकुल गौतमनगर मे हर्षोल्लास से मनाया गया। दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतमनगर मे विशाल यज्ञ वेदी पर आचार्य हरिदेव जी के पौरोहित्य मे सभी कुलवासियो ने यज्ञ किया तथा मान्या पण्डिता जी लिए मगल कामना करते हुये उन्हे शुभकामना सन्देश भेजा तथा उन्ही की ओर से गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियो को वस्त्र व भोजन दान प्रिय रामकुमार द्वारा दिया गया। इसी प्रकार साय-काल ५ ३० बजे चन्द्र आर्य विद्यामन्दिर मे श्री प० यशपाल जी के पौरोहित्य मे यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात् प्रिय रामकुमार व कुमारी रानी द्वारा सभी छात्राओ को भोजन व गर्म वस्त्र जूते आदि प्रदान किये गये।

आज के इस भौतिकवादी युग मे अनेक लोग ऐसे हैं कि लाखो रुपये पार्टी के बाह्याडम्बर मे व्यय कर देते हैं परन्तु पण्डित जी ने अपने आर्यत्व का परिचय देते हुए अपने जन्म दिवस को इस प्रकार मनाकर लगभग एक लाख रुपये दान दोनो सस्थाओ को करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इससे पूर्व भी आपने अपने जन्म दिवस पर आर्य पटौदी हाऊस दरियागज को भी पचास हजार रुपये का सात्विक दान किया था। आप दोनो का जीवन एक आदर्श जीवन है। मैंने आपको अति निकट से देखा है। दान शीलता व सेवा का गुण आपमे अत्यधिक है। इस समय आप अपने व्यय से अनेक असहाय बच्चो की सहायता कर पढा रहे हैं। प्रिय रामकुमार पटौदी हाऊस, दरियागज व कु० रानी चन्द्र आर्य विद्यामन्दिर ग्रेटर कैलाश मे अध्ययनरत दोनो भाई बहनो को आप अपनी सन्तान मानकर पूर्ण व्यय देकर पढा रही हैं तथा आगे की जिम्मेवारी भी ले रखी है। आप दोनो समाज के कार्यों मे अत्यधिक व्यस्त रहते हैं। पण्डित हरिविश्वेश्वर जी अनेक समाजो मे पढाई का कार्य देखतेहैं। आपके स्वभाव से सभी अत्यन्त प्रसन्न व सन्तुष्ट रहते हैं। प्रभु से मैं तो यही प्रार्थना करता हू कि आप दोनो का जीवन लम्बा एव स्वस्थ रहे जिससे अधिक से अधिक समाज सेवा करते रहे।

रामपाल शास्त्री
वेद विद्यालय, ११९ गौतमनगर
नई दिल्ली ४९

दो मुसलमान युवतियां वैदिक धर्म में प्रविष्ट

१—आदर्श विवाह एव शुद्धि मन्दिर भागीरथपुरा इन्दौर मे। कु० मुनीरा पिता असगरअली बोहरा का शुद्धिकरण कर उसका हिन्दू नाम मीनादेवी रखा गया और उसका विवाह सस्कार रघ'न्द्रसिह ठाकुर के साथ कराया गया।

२—कु० सकीला पिता अब्बासअली का शुद्धिकरण कर उसका हिन्दू नाम सरितादेवी रखा गया और उसका विवाह सस्कार नरसिह ठाकुर के साथ सम्पन्न कराया गया। इसकी सारी व्यवस्था शकरसिह आर्य के द्वारा कराई गई।

होशंगाबाद में आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ द्वारा नियुक्त आर्य गुरुकुल होशगाबाद के अध्यापक श्री जनकराम आर्य (व्यायाम शिक्षक) नगर में आर्य वीर दल की शाखा लगाते हैं। जनकराम आर्य गुरुकुल मे अध्यापन कार्य के अतिरिक्त कार्यालयका भी कार्य करते है, तथा होशगाबाद मे नित्य शाखा लगाते हैं, जिसमे २० से २५ आर्य वीर भाग लेते हैं। शाखा मे इन्हे आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक-लाठी, भाला तथा छूरी आदि सिखाये जाते हैं।

—जगदेव नैष्ठिक

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५-३-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसंस U नं० ११
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment, License No. U 93 Post in N.D.P.S.O.on 12,13-3-1992

बालेरा में होम्योपैथिक औषधालय खुला

सुजानगढ। गत दिना आर्य समाज सुजानगढ चैरिटेबल ट्रस्ट सुजानगढ की प्रबन्ध व्यवस्था मे अरुणा डालमिया चैरिटेबल ट्रस्ट नई दिल्ली के आर्थिक सौजन्य से महर्षि दयानन्द धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय बालेरा का उद्घाटन प्रमुख समाज सेविका भूतपूर्व विधायिका एव प्रधान पचायत समिति सुजानगढ सुश्री सन्नोदेवी शर्मा के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के प्रारम्भ मे वैदिक विधि विधान से हवन पूजन किया गया। मुख्य अतिथि सहायक कलेक्टर इन्द्रसिंह एव विशिष्ट अतिथि नगर पालिका परिषद श्रीमान जुगराज डोसी थे। वक्ताओ ने होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के बारे मे उपस्थित ग्रामीण जनता को जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान तनसुखराय रामपुरिया विकास अधिकारी एस आई सी. ने की।

सुश्री स नोदेवी शर्मा ने जानकारी दी कि यह औषधालय आर्य समाज सुजानगढ चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान मे खुलने वाला ग्यारहवा औषधालय है। पूर्व मे ग्रामीण अचलो के मालीना, बीदी, मगरासर, दूधार कसूम्ब-अलिपुर, नोरमसर, गुलेरिया, हुरासर दढोबा ग्रामो के साथ सुजानगढ मे भी होम्योपैथिक औषधालय सेवा कार्य कर रहे हैं।

आर्य वीर दल बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज मऊनाथ भजन मऊ के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनाक १२-३-९२ से १५-३-९२ तक चार दिवसीय आर्य वीर दल बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें सत्सनातन वैदिक धर्म के सिद्धान्तो की विस्तृत जानकारी उच्चकोटि के विद्वानो द्वारा प्रदान की जावेगी एव दिनाक १५-३-९२ दिन रविवार समय १ बजे से ४ बजे अपराह्न आर्य वीर सम्मेलन परिमण्डल गोरखपुर का होगा। जिसमें मुख्य अतिथि श्री पण्डित बालदिवाकर हस (राष्ट्रसचिव) सार्वदेशिक आर्य वीर दल होंगे। आप सभी आर्य युवकों से निवेदन है कि उक्त अवसर पर आर्य-समाज मन्दिर मऊनाथ भजन, मऊ में पधार कर लाभ उठावें।

नोट —शिविर मे प्रवेश के लिये अपनी सीटें पहले से आरक्षित करालें।

—ओकारनाथसिंह

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी सस्थाओ के सयुक्त तत्वावधान मे 'महात्मा हसराज दिवस समारोह' रविवार दिनाक १९ अप्रैल १९९२ को प्रातः ९ बजे से १ बजे तक तालकटोरा गार्डन इनडोर स्टेडियम (नजदीक बिरला मन्दिर) नई दिल्ली मे समारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

समस्त आर्य समाजो स्त्री आर्य समाजो, डी ए वी सस्थाओ, आर्य शिक्षण सस्थाओ एव समस्त आर्य जगत से प्रार्थना है कि यह तिथि अभी से अकित कर लेवें और उस दिन कोई कार्यक्रम न रखकर इस समारोह मे उपस्थित होने की कृपा करें। —रामनाथ सहगल, मन्त्री

ब्रह्मचारी सम्मानित

"भारत सस्कृत परिषद" द्वारा प्रयाग में आयोजित विश्व वेद सम्मेलन एव वेदज्ञाभिनन्दन समारोह मे गुरुकुल प्रभात आश्रम (मेरठ) के ब्रह्मचारी गोपाल को सामवेदी कण्ठस्थीकरण के उपलक्ष मे सम्मानित किया गया।

इस सम्मान मे ब्रह्मचारी को एक शाल उत्तरीय दो पीत वस्त्र एव एक सम्मान अभिनन्दन पत्र के साथ १५००) की राशी प्रदान की गयी।

समारोह म आर्य जगत् का यही एक मात्र कठस्थीकर्त्ता वेद पाठी था।

यह भी उल्लेखनीय है कि श्री गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट (करतारपुर द्वारा भी ब्रह्मचारी को सामवेदी की उपाधि से पूर्वत' विभूषित किया हुआ है।

इस अवसर पर गुरुकुल स्नातक मण्डल ब्रह्मचारी गोपाल के भावी जीवन की सफलता हेतु शुभ कामनाओ के साथ हार्दिक बधाई देता है।

मन्त्री, स्नातक मण्डल

यज्ञशाला का उद्घाटन

आज दिनांक १६-२-९२ के दिन आर्य समाज झापा (नेपाल) के द्वारा 'धुरुङ्गा' नामक स्थान मे कनकाई नदी के पावन तट में नवनिर्मित यज्ञशाला वेद मन्दिर का उद्घाटन माननीय भूमि सुधार एव व्यवस्थापक मन्त्री श्री जगन्नाथ आचार्य जी के करकमलो से यज्ञ का दीपक जलाकर सुसम्पन्न कराया गया।

इस समारोह मे आर्य समाज झापा के अध्यक्ष श्री ठाकुरनाथ जी पाठक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमरकृति सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण से कहा कि नेपाल सरकार सत्यार्थ प्रकाश को अपने पाठ्यक्रम में समावेश करे जिससे राष्ट्र का चरित्र ऊंचा उठे।

समाज के महामन्त्री श्री नरपति उप्रेती जी ने प्रतिवेदन पेश करते हुए इस समाज के सभी विवरण प्रस्तुत किए। उक्त अवसर पर श्री नित्यानन्द जी पाठक ने स्वागत भाषण और श्रीमती गगादेवी पाठक ने धन्यवाद ज्ञापन किया था। आर्य समाज झापा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री नारायण पाठक जी और स्व० श्री कृष्ण बहादुर जी खत्री के सुपुत्र श्री टेकनारायण जी खत्री भी उक्त समारोह में अनथक कार्य कर रहे थे आर्य-समाज की वरिष्ठ महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती इन्दिरा जी पाठक ने भी वेद विषयक व्याख्यान प्रस्तुत किया था।

यज्ञ का पौरोहित्य पण्डित कमलकान्त आत्रेय और पण्डित दिलाराम उप्रेती जी ने किया था। आर्य युवको का विशेष सहयोग रहा।

—नरपति उप्रेती, मन्त्री

आर्य वन में योग शिविर

(२६ मार्च से ४ अप्रैल ९२ तक)

श्री स्वामी सत्यपति महाराज की अध्यक्षता में अष्टाग योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। क्रियात्मक रूप से योग साधना सीखने में रुचि रखने वाले स्त्री-पुरुष अपनी योग्यता, व्यवसाय आदि के विवरण सहित शीघ्र आवेदन करें।

शिविरार्थी की अवस्था १५ वर्ष से अधिक हो, ८ कक्षा की योग्यता हो, अतिवृद्ध अथवा रोगी न हो, धूम्रपान आदि व्यसनों से रहित हो। शिविर शुल्क २०० रुपये होगा। ५ अप्रैल को उत्सव मनाया जायेगा।

आचार्य दर्शन योग महाविद्यालय,
आर्य वन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर
जिला साबर कांठा गुजरात ३८३३०७

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● जो आचार्य और माता पिता अपने सन्तानो को प्रथम वय मे विद्या और गुण ग्रहण करने के लिए तपस्वी कर और उसको उपदेश देवे और वह सन्तान आप ही आप अखण्डित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढावे वैसे तुम भी बढाओ। क्योकि जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप नही करते वे सब प्रकार के रोगो से रहित होकर धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त होते है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष . ३३७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अक ८] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२ चैत्र कृ० ४ स० २०४८ २२ मार्च १९९२

आर्यसमाज द्वारा राजनीतिक मंच के गठन की शुरुआत : ७ सदस्यीय उच्च समिति का गठन

दो महीने बाद देश के ५०० बुद्धिजीवी प्रतिनिधियों का दिल्ली में सम्मेलन होगा

नई दिल्ली १६ मार्च।

आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्यो की बैठक मे आज यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि आर्य समाज का राष्ट्र के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एव आर्थिक उत्थान व प्रगति मे क्रान्तिकारी योगदान तथा स्वतन्त्रता आन्दोलन की लडाई और सामाजिक सुधारो मे अग्रणी भूमिका को देखते हुए राष्ट्र के वर्तमान हालात मे इसे एक मूक दर्शक सस्था बने रहने नही दिया जा सकता। वर्तमान परिस्थितिया इस हद तक पहुच चुकी हैं कि देश की एकता, अखण्डता, राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता पर पुन खतरे के बादल मडरा रहे हैं।

यह सभा निश्चय करती है कि आर्य समाज द्वारा दल गत राजनीति से अलग रहते हुए एक ऐसे राजनीतिक मच की स्थापना की जाये जो देश की अखण्डता तथा उन्नति से जुडे हुए समस्त पहलुओ पर आर्य समाज का दृष्टिकोण जनता के समक्ष रखेगा और आवश्यकता पडने पर आन्दोलनात्मक रवैया अपनायेगा।

इस मच को विधिवत् स्थापित करने के लिए एक उच्चस्तरीय ७ सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। इस समिति में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, वरिष्ठ पत्रकार श्री वीरेन्द्र जी, पूर्व केन्द्रीय रक्षा मन्त्री प्रो० शेरसिंह जी, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री छोटूसिह जी, हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती तथा बम्बई के कैप्टन देवरत्न आर्य शामिल है। यह समिति दो महीने तक सारे देश से आर्यसमाज के लगभग ५०० बुद्धिजीवी प्रतिनिधियो का विशेष सम्मेलन बुलाकर अपने समस्त उद्देश्यो को जनता के समक्ष रखेगी। इस सम्मेलन मे ही मञ्च के भावी कार्यक्रमो की रूपरेखा तैयार की जायेगी।

तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन पत्थलगाव, रायगढ़ में

हजारों वनवासियों के परावर्तन की शानदार तैयारियां

समारोह में अनेक यज्ञकुण्डों में आहुतियां दी जायेंगी

दिल्ली १२ मार्च। सार्वदेशिक सभा कार्यालय से प्रकाशित सूचना के अनुसार आगामी २१, २२ और २३ मार्च ९२ को पत्थल गाव रायगढ मे तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन की तैयारिया हो रही हैं।

इस सम्मेलन द्वारा भारी सख्या मे बिछुडे हुए भाईयो का वैदिक धर्म में परावर्तन किया जायेगा। पत्थल गांव मे बडी सख्या मे यज्ञकुण्ड बनाये जा रहे हैं।

दिल्ली से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री वेदव्रत मेहता, श्री लाला दीवानचन्द जी पहटा १९ मार्च को रैल द्वारा चलकर २० को रायगढ पहुचेंगे। वहा से जीपो द्वारा पत्थल गाव जाने का कार्यक्रम बनाया गया है।

श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती और गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारी इस क्षेत्र के घर-घर मे पहुच कर आर्य समाज का सन्देश दे रहे है। समारोह का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे किया जा रहा है।

दिल्ली से १६ बण्डल वस्त्रो के पहले ही रायगढ के लिए भेजे जा चुके हैं। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के पूज्य प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे।

सम्मेलन से वनवासी क्षेत्रो मे नई जागृति और चेतना आने की पूर्ण सम्भावना है।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

वैदिक सेवाश्रम बाजना (मथुरा) में

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा बिकलांग शिविर का उद्‌घाटन

बिकलांगों को रिक्शा साईकिल वितरित किए गये

१४ मार्च (मथुरा) वैदिक सेवाश्रम कस्बा बाजना जिला मथुरा द्वारा आयोजित विकलांग शिविर का सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा उद्‌घाटन किया गया। इस अवसर पर सैकडो विकलांग पुरुष व महिलाएं वहां उपस्थित थी। भारत सरकार के कल्याण मन्त्रालय के सौजन्य से लाखो रुपए की सामग्री वितरण के लिए वहा भेजी गई थी। इसके अतिरिक्त सरकार की ओर से डाक्टरो की एक टीम भी बिकलांगो की देखभाल के लिए वहा उपस्थित थी। इस समारोह मे क्षेत्रके हजारो लोगो ने उपस्थित होकर विकलांगो का उत्साह बढाया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि हमारा देश अब स्वतन्त्र है और हमारी सरकार सभी लोगो के जीवन को सुगम और सरल बनाने के लिए प्रयत्नशील है जिन्हे परमात्मा ने शारीरिक रूप से अपग बनाया है। मनुष्य जाति का यह परम कर्तव्य है कि दिल खोलकर ऐसे प्रभावित लोगो के जीवन को प्रकाशित करने मे अपना पूरा सहयोग दें।

इस शिविर के आयोजन से उस क्षेत्र मे ईसाई मिशनरियो को जो लोभ-लालच से गरीब हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन करने मे लगे हुए है, को बडा आघात पहुचा है। वैदिक सेवाश्रम पिछले दस वर्षो से उस क्षेत्र मे इसी प्रकार के कार्यक्रम रखकर गरीब जनता की सेवा मे लगा हुआ है। स्वामी जी ने वैदिक सेवाश्रम के सभी पदाधिकारियो जिनमे आचार्य प्रेमभिक्षु जी, स्वामी मोक्षानन्द जी, श्री रूपसिंह आर्य, श्री द्वारकाप्रसाद आर्य, महाशय गेदालाल जी और श्री मित्रसेन आर्य मुख्य है को इस आयोजन की सफलता के लिए उन्हे धन्यवाद दिया।

संस्कृत को लेकर सदन में शोर-शराबा

नई दिल्ली। तमिलनाडु से राज्य सभा के सदस्यो ने कम्प्यूटर साफ्टवेयर के लिए संस्कृत को काफी अधिक धन दिए जाने और अन्य भाषाओं की उपेक्षा किये जाने पर आपत्ति की। इस मुद्दे पर काफी देर तक शोर-शराबा भी हुआ।

द्रविड मुनेत्र कडगम के वी गोपाला सामी, कांग्रेस के वी. नारायणसामी और कार्मिक राज्यमन्त्री मारग्रेट अल्वा के बीच इस प्रकरण पर झडप भी हो गई। श्रीमती अल्वा ने सदन को बताया कि विभिन्न भाषाओ मे कम्प्यूटर साफ्टवेयर विकसित करने के लिए २ करोड ११ लाख रुपये दिये गये है। इसमे ८८ लाख रुपये संस्कृत के लिए दिये गये हैं। गोपाल सामी ने आरोप लगाया कि अन्य भाषाओ की उपेक्षा की जा रही है। इससे देश की एकता को खतरा है। नारायणसामी जयन्ती नटराजन और गोपालसामी ने माग की कि कम्प्यूटर साफ्टवेयर के लिए तमिल भाषा को कितना धन दिया गया है, इसकी जानकारी दी जाए।

श्रीमती अल्वा ने कहा कि सरकार अन्य भाषाओ की उपेक्षा नही कर रही है। उन्होने बताया कि इण्डियन इंस्टटयूट आफ टक्नालाजी खडगपुर ने भारतीय भाषाओ के लिए कम्प्यूटर साफ्टवेयर विकसित करने म महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की हैं।

(नवभारत टाइम्स १३ ३ ९२)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के विवाद के निपटारे के लिए एक उच्चस्तरीय उप समिति की घोषणा

नई दिल्ली १५ मार्च।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक मे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के विवाद पर विशेष विचार विमर्श के बाद श्री वीरेन्द्र जी के इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया कि इस विवाद के निपटारे के लिए एक ऐसी विशेष उपसमिति बनाई जाए जो उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित दोनो पक्षो को बुलाकर सारी समस्या को समझे और आर्य समाज की संवैधानिक प्रक्रिया से इस विवाद का हल निकले। इस उपसमिति के समस्त प्रयत्न तथा अन्तिम निर्णय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भी स्वीकार होगे।

इस उप समिति के निम्न सदस्य हैं—उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान वीरेन्द्र जी राज० आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री छोटूसिंह जी हरियाणा सभा के प्रधान श्री प्रो० शेरसिंह जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुखदेव जी, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ जी मरवाह तथा न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट। यह उपसमिति श्री महावीर सिंह जी की अध्यक्षता मे कार्य करेगी तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट इस उपसमिति के संयोजक होगे।

चाणक्य के निर्माता को भगवा ध्वज और हर-हर महादेव का उद्‌घोष कम करने के आदेश

नई दिल्ली। डिप्टी इन्फारमेशन मन्त्री श्री गिरिजा व्यास ने सोमवार को लोकसभा को अवगत कराया कि धारावाहिक चाणक्य के निर्माता को आदेश दिए गए हैं कि अनावश्यक तौर पर भगवाध्वज और हर हर महादेव के उद्‌घोष न दिखाए जावे। परन्तु यह सीन अभी भी है। उन्होने यह भी कहा कि इन पर कोई आपत्ति उनसे किसी ने नहीं की थी।

उन्होने यह भी बताया कि सीरियल को ४७ कड़ियो मे समाप्त करने के आदेश दिए गए हैं। सर्व प्रथम यह सीरियल मात्र २६ कड़ियों मे समाप्त होना था परन्तु अधिकार प्राप्त अधिकारियो की बिना अनुमति के बढ़ा दिया गया था। (इण्डियन एक्सप्रेस से साभार)

नरसिम्हाराव के भाषण से जब पश्चिमी उद्योगपति पानी-पानी हो गए

होटल हिल्टन मे उद्योगपतियो को जिस तरह हृदय की गहराई से निकले विचारो की अभिव्यक्ति करके प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हाराव ने अभिभूत किया और यह प्रभाव छोड़ा कि भारत को सही समय पर एक सही प्रधानमन्त्री मिला है।

दावोस में भारतीय अर्थ व्यवस्था की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि श्री नरसिम्हाराव ने लगभग २४ घण्टे वर्ल्ड इकानामिक फोरमके वार्षिक सम्मेलन मे बिताए और भारत की तथा अपनी छवि को बढाने मे पूरी तरह सफलता प्राप्त की। उन्होने जो बात कही पूर्णतः तथ्यो और तर्कों के आधार पर कही और लोगो ने महसूस किया कि उनकी बातो मे कही कोई दुराव और घुमाव नही है—हर बात एकदम सीधी सपाट है।

—अविनाश चोपड़ा

सम्पादकीय

गुणाः पूजा स्थानम्

गुण चरित्र का महत्व

प्राचीन भारतीय समाज में ब्राह्मण व क्षत्रियो को जो विशेष अधिकार प्राप्त थे उसका कारण यह नही था कि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से और क्षत्रिय उनकी भुजा से उत्पन्न हुए थे। न तो ब्राह्मण हैजे के कीड़े थे और न क्षत्रिय वृद्ध ब्रह्मा के पुराने कपड़ो के चीलर (जुए)। ब्राह्मणत्व वस्तुत: वाणी से और क्षत्रियत्व बाहुबल से प्रमाणित होता है। उनकी प्रधानता के पीछे उनकी गुणवत्ता और सदाचार परायणता थी।

महाभारत मे कहा है कि जो शूद्र दम सत्य और धर्म मे परायण है उसे मैं ब्राह्मण मानता हू क्योंकि सदाचार से ही द्विज बनता है—

यस्तु शूद्रे दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थित ।
त ब्राह्मणमह मन्ये वृत्तेन हि भवेद् द्विज: ॥ वन पर्व

गुरुता भी ज्ञान और कर्म के आधार पर मिलती है मनु ने कहा है कि "अज्ञो भवति वै बाल: पिता भवति मन्त्रद:" अर्थात ज्ञान हीन व्यक्ति चाहे वह वृद्ध ही क्यो न हो बालक है और शिक्षक चाहे वह अल्प-वयस्क ही हो पिता कहलाता है।

महाभारत मे १२ वर्ष का बालक अष्टावक्र विद्वान अधिकार पूर्वक कहता है कि कोई सिर के बाल सफेद होने से वृद्ध नहीं होता है बालक हो कर भी यदि ज्ञान सम्पन्न है तो वह वृद्ध माना जायेगा।

गुणा. पूजा स्थान गुणिषु न च लिंग न च वय:। के भी उदाहरण दिए जा सकते हैं। यथा नारी को सती और माता की पदवी उसके विशिष्ट गुणो के आधार पर प्राप्त है। देवता भी अपने दिव्य गुण कर्म के कारण परम पद के अधिकारी माने गये हैं।

प्रभुत्व का रहस्य बताते हुए भगवान कृष्ण ने कहा है कि यद्यपि लोग उसे ऐश्वर्य या प्रभुत्व कहते हैं परन्तु जो कुछ करता हू वह अपनी जाति के लिए दासत्व है।

"दासमैश्वर्यवादेन ज्ञातीनां वै करोम्यहम" शान्तिपर्व।

इन सब उद्धरणो से स्पष्ट है कि किसी प्रकार का स्थायी अधिकार अपनी सुपात्रता और कर्तव्य परायणता से ही मिलता है।

मिथ्या आडम्बरों से अधिकारो की भीख माग कर कोई सच्चा सम्मानस्थ पद का अधिकारी नहीं बन सकता है। अधिकार तो कर्तव्य से ही प्राप्त होते हैं कर्तव्य करने के लिये क्षमता, आत्म सामर्थ्य, चरित्र बल, व्यवहार, दक्षता चाहिए। क्योकि प्रत्येक अधिकार के साथ उत्तरदायित्व लेना पड़ता है।

पद या पदवी से मानव का गौरव नही बढ़ता। मानव के कर्म ही किसी पद को गौरव पूर्ण बनाते हैं।

सदा ही अधिकार तो प्राय सब चाहते हैं परन्तु कर्तव्य उसके अनुरूप कोई करना नही चाहता। इसके लिए ऐसे लोग अपनी असफलता और अप्रतिष्ठा के लिए स्वय दोषी है।

जो छद्म वेषी ऐसे लोग हैं जो ढोंग करके अपनी पूजा करवाते हैं उन्हे सफलता तो मिलती है परन्तु क्षणिक। वे गिरने के लिए ही उठते हैं। अन्त में मायावियो की दुर्गति होती ही है।

सन्त तुलसीदास ने कहा है कि –

सारदूल को स्वाग करि कूकर की करतूति।
तुलसी तापर च हिए, कीरति विजय विभूति ॥

इस समय ऐसे लोगो की कमी नही है जो अवसर का लाभ लेकर दूसरों की आखो में धूल झोक कर अनाधिकार चेष्टा से अशोभनीय व्यवस्था के अधिकारी बन बैठते हैं। उनकी महत्ता पर लोग चन्द समय मे अपमान जनक चर्चा करते देखे गए हैं और वह महत्ता भी अस्थायी होती है।

बिहारी के शब्दो —

बस दिन आदर पाप के,
करिसे आपु बखान।
जो लौं काग सराध पख,
तो लौ तो सम्मान ॥

अयोग्य व कर्तव्य-च्युत प्राणी अन्त मे अपने कार्य मे असफलता का शिकार ही होता है। कुर्सी का पीठ अपनी पीठ नही हो सकती।

धर्म कर्म, पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान के कर्त्ता भी जब इस अपराध के अपराधी दृष्टिगत होते हैं वह केवल निन्दा के पात्र व पराभवजनक होते हैं।

राजनीति मे तो उठापटक निन्दा-स्तुति-सब चलता है परन्तु धर्म की व्यावहारिक दुनिया मे बिना आदर्शों के सुरक्षित रखे आप स्वय जीवित नही रह सकते हैं। ऐसे व्यक्ति का उत्थान लोक प्रकृति को असह्य है।

लोक धर्म की उपेक्षा करके कोई व्यक्ति सम्पन्न नही बन सकता है उपनिषद का मत है कि—

"अबलीयान् बलीयान्सम् आशसते धर्मेण"

धर्म करके ही निबल व्यक्ति बलवान को जीतने की इच्छा रखता है— दानवता या पशुता से देवत्व कैसे प्राप्त होगा।

जो व्यक्ति यति या कुलपति का अधिकार चाहता है उसे कुल-कुली बन कर ससार का सारा बोझ उठाना चाहिए। इसी प्रकार अन्य अधिकारों के विषय मे भी समझना चाहिये।

प्रधानमन्त्री का उत्तर

नई दिल्ली
६ मार्च, १९९२

प्रिय स्वामी जी,

पजाब मे हाल के चुनावो के बारे मे आपके विचार पूर्ण सन्देश के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हू। इनसे लोक तन्त्र, धर्मनिरपेक्षता एव राष्ट्रत्व के मूल्यो को जन समर्थन प्राप्त हुआ है। वास्तव मे वे मूल्य और अधिक सुदृढ हुए हैं। हम पजाब राज्य मे शान्ति, खुशहाली और भाईचारे को सुनिश्चित करने के समान और सयुक्त प्रयास मे पजाब के सभी लोगो के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं।

मैं आपके समर्थन के लिए आभारी हू।

सादर,

आपका

पी० वी० नरसिंह राव

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती,
महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली।

नोट—उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के द्वारा गत २१ फरवरी ९२ को पजाब चुनावो में ऐतिहासिक सफलता पर प्रधानमन्त्री को बधाई देते हुए एक विशेष सन्देश भेजा गया था, जिसमे उन्हे भविष्य मे पजाब की जनता के कष्टों को दूर करने, लोकतान्त्रिक मूल्यो में उनकी आस्था बनाये रखने तथा पजाब को फिर से राष्ट्र की मुख्य धारा मे लाने से सम्बन्धी कुछ सुझाव भी दिये थे। उक्त उत्तर उसी पत्र के सम्बन्ध मे प्राप्त हुआ है।

वासन्तीय नवसस्येष्टि या (होली)

भूदेव साहित्याचार्य

हिरण्यकश्यप की बहन होलिका उसके ही पुत्र प्रह्लाद को जलाकर मारने के चक्कर में खुद ही जलकर मर गयी। क्या हुआ? प्रह्लाद अभी बालक है। पढ़ने लिखने की अवस्था वाला। माला जपता है। हिरण्यकश्यप इसे पसन्द नहीं करता प्रह्लाद को उसकी अवस्था के अनुकूल उपदेश करता है। आप कह लीजिये भगवान् के भजन के लिये मना करता है। हिरण्यकश्यप के सब प्रयत्न बेकार हो जाते हैं। न केवल इतना ही बल्कि उसे कड़े जवाब भी मिलते हैं। हिरण्यकश्यप परेशान। चरम सीमा तक परेशान। क्या करे? हां हां, करे तो क्या करे? खीजकर व्यक्ति क्या करता है? वह सोचता है। ऐसी सन्तान जो उसके अनुकूल नहीं चलती तो इससे तो वह न ही हो तो अच्छा है। पुन: एक समस्या और वह तो राजा था। उसकी समस्या एक और भी थी, यदि उसकी सन्तान ही उसका आदेश नहीं मानेगी तो दूसरा फिर कौन मानेगा? इसलिये उसने प्रयास किया कि प्रह्लाद न रहे। ठीक है, प्रकृति की बात है। हो सकता है उसने नर हत्या के प्रयास किये, पुत्र हत्या की पूरी कोशिश की। किन्तु आप एक बार सोचिए यदि उस स्थान पर आप होते और आपका आठ-दस साल का बेटा, जिसे भविष्य में आपका उत्तराधिकारी बनना है। वह बजाय पढ़ने-लिखने के हाथ में माला लेकर बैठ जाता। समझाने से समझता नहीं धमकाने से धमकी मे नहीं आता। तो आप इस स्थिति में क्या करते? हिरण्यकश्यप का सहयोग उसकी बहन होलिका ने किया। हर अच्छी बहन अपने भाई का सहयोग करती है। जब अपने भतीजे को ही अपने वंश का बीजनाशक पाये बहन तो? हारे का चारा क्या? चमत्कारवादी इसे प्रह्लाद की जीत माने, मानते रहे। हमारे गले उनकी यह बात नहीं उतरती है। लोग कहते हैं प्रह्लाद के बचने और होलिका के जल जाने की खुशी में होली का त्योहार मनाया जाता है। परन्तु एक बात तो सोचिये, क्या हमारे पुरखे ऐसे थे, जिनको 'व्यावहारिकता का इतना भी बोध नहीं था—ऐसी बात नहीं है।

संस्कृत में त्योहार के लिये "पर्व" शब्द आता है। पर्व का अर्थ होता है "पोर"। एक और भी पर्व उस गांठ को कहते हैं जो गांठ गन्ने, बांस, कांस में होती है। वह है रस का संचार करना। संस्कृति भी एक विशेष संचार का नाम है। इस संचार मे आगे बढ़ती विकसित होती संस्कृति की अगली पोर को (पौर अर्थात पीढ़ी को) मूल का वास्तविक रस मिलता रहे ताकि वह खूब विकसित होकर भी अपने मूल से विमुख न हो। क्योंकि मूल में ही सुख है। इधर उधर भटक जाने पर सुख की गारंटी नहीं है। प्रत्येक त्योहार मनाने के मूल में हमारा यही आशय होता है। इसीलिये त्योहार के लिये भी हम पर्व शब्द का ही प्रयोग करते हैं। अब सोचिये, प्रह्लाद बच भी गया और होलिका जल भी गयी तब भी यदि हम इसे तराजू पर तोलें तो क्या परिणाम मिलेगा? यही न आवेगा कि यह हमारा अविवेक है और उसी अविवेक की लीक को आज भी हम पढ़-लिख जाने और विकसित हो जाने के बाद भी पीट रहे हैं।

वस्तुत: इस घटना का सम्बन्ध होली से नहीं है। होली अपने आप में बिल्कुल स्वतन्त्र और पवित्रतम पर्व है। जो प्रतिवर्ष आपसी भाईचारा एवं प्रेम प्रीति और उल्लास का सन्देश देकर जाता है। यह घटना तो लोगों ने बाद मे जोड़ दी है। न केवल यही घटना बल्कि बृज बरसाना, वृन्दावन और बृजेत्तर अन्य क्षेत्रों की घटनाएं भी होली के साथ जुड़ी है। जो समय समय पर हमने जोड़ दी है। बृज मे बरसाने की होली को लीजिए। बृज मे होली का हुड़दंग लगभग आधे माह से यानी माह के उत्तरार्ध से ही शुरू हो जाता है। और लगभग पूरे फाल्गुन मास तक चलता रहता है। आज तो उत्तरोत्तर जैसे जैसे हम बढ़ रहे हैं। बृज की होली अपने मूल स्वरूप को छोड़कर बनावट की ओर सरकती जा रही है। मूल स्वरूप क्या था वहां? इसकी झलक हम यों देख सकते हैं कि आज भी बृज मे होली के अवसर पर (समाज मे) जगह जगह बैठते हैं। समाज है शास्त्रीय संगीतज्ञों की टोलियां। तो बैठने का अर्थ है कि वे शास्त्रीय संगीत का अभ्यास करते थे। संगीत का सम्बन्ध सामवेद से है। अत: स्वाभाविक सा है कि वे किसी समय सामवेद का भी अभ्यास करते रहे हों। बरसाने की लठामार होली—इसमें भी बृज मे एक विशेष चमत्कार है। विलक्षणता है। एक विशेष प्रकार की आकृति में महिलायें अपने हाथों में डण्डा लिये हुए खड़ी होती है यह आकृति और क्या है पुरानी युद्ध कला पद्धति की व्यूह रचना के? इन महिलाओं में पुरुष केवल एक प्रवेश करता है। पुरुष केवल बचाव करता है। महिलायें उस पर चोट करती हैं। पुरुष मार नहीं सकता। दृश्य बहुत मनोरंजक एवं विनोदपूर्ण होता है। इसमें नियम है महिलायें पुरुष पर डण्डे से जो वार करेंगी, वह शरीर के कुछ विशेष हिस्सों में होगा। यह नहीं की लाठी सिर में ही ठोक दी जाये। वस्तुत: है क्या? जब कंस आदि अत्याचारियों के बृज पर आक्रमण एवं अत्याचार जारी रहे तो समूचे बृज में उन अत्याचारियों के खिलाफ जनता ने अपने सैनिक संगठन खड़े किये। ये संगठन मथुरा में योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण एवं उनके मित्र मथुरा आदि के नेतृत्व में बने। इधर बरसाने में राधारानी वैश्य की परम रूपवती, पतिव्रत्य, संगीत, नृत्य, युद्ध एवं गुप्तचर विद्या निष्णात, परम सुन्दरी, प्रभु परायण राधा के नेतृत्व में। इन संगठनों के सर्वोच्च नेता भगवान कृष्ण ही थे। इन संगठनों का काम अत्याचारियों को छद्म भेद से अपने चंगुल मे फंसाना और उन्हें परास्त करना था। चूंकि बृज में होली का पर्व कंस आदि विलासियों ने लम्बा मदनोत्सव बना डाला और उसके माध्यम से वे अत्याचार करते थे। अत: उनको उनके ही दाव से परास्त करने की योजना थी।

होली की लम्बी उत्सव यात्राओं में आज भी वृन्दावन आदि नगरों के राजमार्ग एवं वीथियां अबीर एवं फूलों से होली के भक्तों द्वारा पट जाते हैं। ये सब प्रयोग उसी मदनोत्सव के ध्वंसावशेष है। होली केवल बृज में या भारत में ही मनायी जाती रही हो—ऐसी बात नहीं है। जहां जहां भारतीय संस्कृति के चिह्न थोड़े भी अंश बचे हैं वहां वहां आज भी यह उत्सव अपने विभिन्न अदले-बदले रूपों मे मनाया जाता है। अंग्रेजी का समर फैस्टीवल इसी का परिवर्तित रूप है चार पर्व ऐसे हैं भारत के जो लगभग सारी दुनियां मे किसी न किसी रूप में अवश्य ही मनाये जाते हैं। ये हैं होली, दीवाली, दशहरा और रक्षाबन्धन। यदि इनका सम्बन्ध केवल भारत की इतिहास कथा या लोकगाथाओं मात्र से ही होता तो सारी दुनियां मे इनके अंश मिलना असंभव होता।

मुख्य बात क्या है? इस पर विचार करते हैं। वस्तुओं के गुणदोष विवेचन के लिए भारत मे यज्ञ और यज्ञशाला का प्रयोग बहुत पुराना है। यज्ञ का जहां अर्थ पूजा है, वहीं एक अर्थ गुण दोष परीक्षण भी है। इसी प्रकार यज्ञशाला का अर्थ यज्ञ करने का स्थान है। किन्तु यज्ञ शाला का अर्थ विद्यालय एवं पाठशाला जैसे अर्थों मे भी ब्राह्मण ग्रन्थों एवं कर्मकाण्ड साहित्य में आया है। शास्त्रीय भाषा मे बसन्त पंचमी से लेकर धुलहैण्डी तक के पर्व को वासन्तीय नवसस्येष्टि कहते हैं। इसी प्रकार दीपावली को शारदीय नवशस्येष्टि, रक्षा बन्धन से श्रावणी तक चातुर्मासीय नवसस्येष्टि, विजयादशमी (दशहरा) ग्रीष्मकालीन नवशस्येष्टि। यहां इष्टि शब्द का अर्थ यज्ञ है। वासन्तीय नवशस्येष्टि से अभिप्राय उस यज्ञ से है, जिसमें उस अन्न से आहुति दी जाती है, जो अभी रस से तो सूखा नहीं, किन्तु पक चुका है। ऐसा अन्न बसन्त में तैयार होने वाली नई फसल से ही मिल सकता है शारदीय नवशस्येष्टि में शरद ऋतु में तैयार होने वाला अन्न, चातुर्मासीय नवशस्येष्टि मे चातुर्मास में तैयार होने वाला, ग्रीष्मकालीन नवसस्येष्टि में गर्मी में तैयार होने वाला प्रयोग होता है। नवशस्येष्टि यज्ञ की प्राचीन परिपाटी थी। गांव से बाहर प्रदूषण रहित स्थान पर खेतों में विशाल यज्ञशाला एवं यज्ञकुण्ड (हवन करने का वह भाग जिसमे अग्नि जलाई जाती है) बनाते थे। पुन: पुरा गांव पूरे उत्साह के साथ अपने-अपने खेतों से अन्न की बालियां या फलियां, घी एवं अन्य पदार्थ लेकर उसमें यज्ञ करता था। उस खुशी में प्रसन्न

(शेष पृष्ठ ११ पर)

तपस्वी प्रचारक पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

—वीर भान 'वीर'

गुरुदत्त जी लिखते हैं कि 'मैंने अठारह बार सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ का पाठ किया, हर बार नई से नई शिक्षा और जानकारी प्राप्त हुई।' आपने जब महर्षि स्वामी दयानन्द से भेंट की और उन्हें प्राणत्यागते समय देखा तो उस दृश्य से प्रभावित होकर नास्तिक से आस्तिक बन कर ओजस्वी वक्ता एवं कुशल प्रचारक बन गए। जितना ही ऋषि को समझते गए, उतना ही उन पर जादू सा चढ़ता गया। उनके जीवन का कांटा बदल गया। आर्य समाज के पांच पांच नियम दो कपड़ों पर लिखवा लिए। प्रातः काल जलपान किया। एक कपड़ा आगे लटका लिया दूसरा पीठ से बांध लिया और ऋषि सन्देश सुनाने चल पड़े। उनका रोम-रोम ऋषि की धरोहर बन गया और वह दीवाना ओजस्वी वक्ता बना सुलझे हुए विचार जगह जगह देने लग पड़े आपका निधन २६ वर्ष की आयु में १८-१९ मार्च १८९० को हुआ। इतनी अल्पायु में आपने जो काम वेद प्रचार का किया, वह प्रशंसनीय है। जन्म मुलतान (पाकिस्तान) में हुआ। उस समय उर्दू, फारसी आदि भाषाएं पढ़ाई जाती थी। आपने जब पढ़ना शुरू किया, तो आपके प्रश्नों का उत्तर अध्यापक भी सन्तोषजनक रूप से नहीं दे सकते थे। मेधावी छात्र को लाहौर में हंसराज (महात्मा) लाजपत राय जैसे सहपाठी मिल गए। उन सब पर भारत की प्राचीन संस्कृति को उजागर करने का भूत सवार था। सबने मिलकर डी०ए०वी० संस्था की नींव डालने का निश्चय किया। शुद्ध हृदय से गुरुदत्त के विचारों से श्रोतागण प्रभावित हुए। धन एकत्र हुआ और लाहौर में ही डी ए वी स्कूल की नींव रखी गई। कितना त्याग एवं कठिनाई का सामना इन लोगों ने उस समय किया जबकि विदेशी शासन ऐसी गतिविधियों को प्रोत्साहित नहीं करना चाहती थी। तय हुआ कि सरकारी सहायता न लेकर अपने बलबूते पर खड़ा होना चाहिए। यह वह युग था जबकि लोग ईसाई तथा मुसलमान बनते जा रहे थे। भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत भाषा का चिराग टिमटिमा रहा था। भला हो स्वामी दयानन्द का जिसने बिगुल बजा दिया। लाहौर में आर्य समाज की स्थापना हुई और बच्छोवाली से ही इस कार्य को योजनाबद्ध ढंग से प्रारम्भ किया गया। संयोगवश ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका हाथ लग गई। शब्दकोश की सहायता से उसका संस्कृत भाग पढ़ डाला। आर्य समाज मुलतान के अधिकारियों से कहा 'मैं अष्टाध्यायी तथा वेद भाष्य पढ़ना चाहता हूं इसका प्रबन्ध कर दो अन्यथा मैं जनता में प्रसिद्ध कर दूंगा कि तुम्हारे एक भी व्यक्ति में संस्कृत पढ़ाने की योग्यता नहीं, आप केवल ढोल ही पीट रहे हैं।' तुरन्त ही पण्डित अक्षयानन्द को बुलाया गया और भक्त रेमलदास तथा गुरुदत्त ने संस्कृत पढ़नी आरम्भ कर दी। यह थी लगन और लगन जिससे गुरुदत्त ने पढ़ने और पढ़ाने का कार्य सम्भाला।

२४, २५ अप्रैल १८८६ को आर्य समाज पेशावर का उत्सव था। पं० लेखराम इस समाज के प्रधान थे। गुरुदत्त ने उत्सव पर भाषण दिया जो अतिरोचक एवं प्रभावशाली रहा।

पं० गुरुदत्त अंग्रेजी में भाषण देते और अपने लेख भी लिखते। उनके लेख जब विदेशों में गये, तो वहां के लोगों को उपनिषदों के ज्ञान की जानकारी हुई तो वे दंग रह गये कि भारत के पास इतना ज्ञान का भण्डार है।

पं० गुरुदत्त ने 'वैदिक मैगजीन' आंग्ल भाषा में शुरू की थी। आप उसके सम्पादक थे। उनके लेखों से पता चलता है कि वह खोजपूर्ण सामग्री इन लेखों द्वारा जुटाया करते थे। इससे देश-विदेश में सर्वत्र पत्रिका का मान हुआ इससे उनकी योग्यता, विशाल ज्ञान, ऋषि भक्ति तथा वैदिक संस्कृति में उनकी आस्था टपकती थी।

आज पूरे एक सौ एक वर्ष हो गए कि गुरुदत्त जी इस पटल पर नहीं रहे। हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके ऋण से उऋण होने के लिए उनके चलाए काम को जारी रखेंगे ताकि वेद का प्रचार चहुं ओर हो और मनुष्य सुख, शान्ति का जीवन व्यतीत कर सके।

१३/१४, तिलक नगर नई दिल्ली-१८

हरियाणा की पावन धरती पर पूर्ण नशाबन्दी हो : प्रो० शेरसिंह

आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत के तत्वावधान में युग प्रवर्तक आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का बोधोत्सव आर्य समाज माडल टाऊन, पानीपत में २ मार्च, १९९२ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। समारोह के मुख्य वक्ता श्रीमती सन्ध्या बजाज, अध्यक्ष अपैक्स थी। उन्होंने स्वामी दयानन्द के स्त्री जाति पर उपकारों की विशेष चर्चा की।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय प्रो० शेरसिंह जी पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा थे। उन्होंने दुःख भरे शब्दों में कहा कि हरियाणा की इस पावन धरती पर दूध और दही की जगह शराब ने ले ली है। इससे व्यक्ति समाज और राष्ट्र विनाश की ओर जा रहा है। उन्होंने हैरानगी प्रकट की कि पश्चिमी देश तो इससे तंग आकर आध्यात्मिकवाद की ओर आ रहे हैं परन्तु जगत गुरु कहलाने वाला भारत देश नशीले पदार्थों के सेवन में लगा हुआ है। उन्होंने इसमें सरकार को भी दोषी ठहराया कि वह रेवेन्यू की लालच में इसको प्रोत्साहन दे रही है।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए उपायुक्त महोदय जी रामफलसिंह जी ने कहा कि हमें सरकार को दोषी बताने की बजाय लोगों को शराब न पीने की प्रेरणा करनी चाहिए।

—चमनलाल आर्य मन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा, पानीपत

क्या शहीदों का सपना पूरा हुआ ?

शिवकुमार गोयल

जिस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के स्वप्न सुखदेव, भगतसिंह, पं० चन्द्रशेखर ने मन में संजोकर अनगिनत क्रान्तिकारियों ने शहादतें दीं। क्या वे आजादी मिलने के बाद पूरे हुए ? वह क्रान्तिकारी कल्पना किया करते थे कि भारत के स्वाधीन होने के बाद असमानता, शोषण, भ्रष्टाचार, उत्पीड़न आदि से जनता को पूरी तरह मुक्ति मिलेगी। इसलिए वे समाजवाद प्रणाली के प्रबल हामी थे। उन्होंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि देश की आजादी मजहब के नाम पर बटवारे के साथ मिलेगी किन्तु १५ अगस्त, १९४७ को आजादी मिली तो देश के टुकड़े-टुकड़े कर उसे बाँट देने के बाद।

हमारे ताया जी लाला विश्वराम थापर कट्टर गांधीवादी कांग्रेसी थे। मुझे अच्छी तरह से याद है कि जब जिन्ना ने पाकिस्तान की मांग उठाई तथा महात्मा गांधी ने घोषणा की कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा तो लाला जी भी कहा करते थे—पाकिस्तान बन ही नहीं सकता। गांधी जी देश के टुकड़े नहीं होने देंगे। पाकिस्तान बनने की घोषणा हुई तब लालाजी को विश्वास था कि जिस तरह जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दुस्तान को धर्म-निरपेक्ष देश रखने की घोषणा की है उसी तरह मियां जिन्ना के पाकिस्तान में भी हिन्दू-सिख-मुसलमान सभी भाईचारे के साथ रहेंगे।

जिन्ना ने कहा हिन्दुओं का यहां क्या काम ?

एक दिन लाला जी ने लायलपुर के मुस्लिम नेता तथा अपने मित्र के पुत्र को पत्र लिखकर कराची भेजा, जिन्ना से मिल कर जानने के लिए कि "पाकिस्तान" में हिन्दू-सिखों को भी बराबरी का दर्जा तो मिलेगा।

वह मुस्लिम नेता जैसे ही कराची में जिन्ना से मिला, उन्होंने पत्र पढ़ते ही पूछा—"तुम पाकिस्तान का अर्थ जानते हो ?" अरे पाक-स्तान का तो अर्थ ही यह है जहां इस्लामी शासन होगा और इस राज्य में "काफिरों" बुतपरस्तों को बराबरी का दर्जा कैसे मिलेगा ?

वे पाकिस्तानी झण्डा फहरा रहे थे—उधर खून-खराबा हो रहा था।

१४ अगस्त का दिन आ पहुंचा। लाला जी लायलपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष के साथ-साथ लायलपुर म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन भी थे। पाकिस्तान का पहला आजादी दिवस मना तो लाला जी के हाथों ही पाकिस्तानी झण्डा फहराया गया। मैं समारोह में उनके साथ था। लालाजी जिस समय झण्डा फहराने के बाद भाषण में कह रहे थे कि मजबूरी में देश बटा तो क्या हुआ—हम तो यहीं रहेंगे—हमारी तो यही मातृभूमि है—ठीक उसी समय लीगियों ने लायलपुर में हिंसा-आगजनी शुरू कर दी थी।

लाला जी यह दृश्य देखकर बेहोश हो गए थे। अन्त में उसी दिन हम लोगों को डी. ए. वी. कालेज में बनाए कैम्प में शरण लेने को विवश होना पड़ा था। लाला जी ने मकान की चाबी अपने मुस्लिम मित्र को सौंप दी थी कि जब यह जनून समाप्त हो जाए तो वह उन्हें कैम्प से वापस बुला लें।

मुस्लिम मित्र ने अगले ही दिन कैम्प में चाबी के साथ पत्र भेजा था जिसमें लिखा "आपका पूरा मकान लूट चुका है। उस पर कब्जा कर लिया गया है। अब आपका सुरक्षित रूप से हिन्दुस्तान चला जाना ही ठीक है।"

लाला जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के घोर विरोधी थे। वे कांग्रेस के मंचों से आर. एस. एस. को साम्प्रदायिक बताकर कोसा करते थे किन्तु जब डी.ए.वी. कालेज में कैम्प में रहकर जो उन्होंने देखा कि आर.एस.एस. के युवक जान हथेली पर रखकर हिन्दू-सिखों को बचा कर कैम्प में पहुंचा रहे हैं—उनके लिए भोजन की व्यवस्था कर रहे हैं—तो वे कह उठे थे "मैं जिन्हें जीवन भर "फिरकापरस्त" बताता रहा वे ही आज जान हथेली पर रखकर हजारों लोगों के जीवन बचा रहे हैं। लाला जी उसी दिन से आर. एस. एस. के प्रशंसक बन गये थे।

खैर जब हमारा परिवार लायलपुर के कैम्प से हिन्दुस्तान के लिए रवाना हुआ तो सड़कों, आसपास के खेतों में हिन्दुओं के शव पड़े थे। खून से लथपथ बच्चों, युवतियों व बूढ़ों की लाशें देखकर हमारी मां श्रीमती रामोदेवी की चीख निकल पड़ी थी" "क्या इसी आजादी के लिए मेरे जिगर के टुकड़े सुखदेव ने फांसी खाई थी ?" हमने माता जी की आंखों पर कपड़ा ढांप दिया था।

लाला जी आजाद देश में भी अनेक वर्षों तक यातनाएं भोगते रहे। सच्चे स्वाधीनता सेनानियों की दुर्दशा तथा उपेक्षा से उन्हें कष्ट होता था। वे अक्सर कहा करते थे, "बबरा, हम लोगों ने यह कभी नहीं सोचा था कि आजादी के बाद भी असमानता शोषण, भ्रष्टाचार का बोलबाला रहेगा। वे प्रायः देश की दुर्दशा को देखकर रोने लगते थे।

देश को आर्यावर्त बनायें

(पृष्ठ ६ का शेष)

११—सब ज्ञान विज्ञान आर्यों द्वारा भूमण्डल में प्रचारित हुए।

१२—पुरातत्व ऐतिहासिक तथ्यों ने प्रमाणित कर दिया है कि आर्यों का समस्त भूमण्डल पर अखण्ड चक्रवर्ती राज्य महाभारत काल तक रहा।

१३—सब भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा सिद्ध हो चुकी है।

१४—पूर्व काल में सब भूखण्डों में आर्य संस्कृति थी।

(ग) बहुत कम खर्च पर यह कार्य हो सकता है

आर्य समाज में बड़े-बड़े त्यागी, विद्वान, शिक्षा-शास्त्री, लेखक, कवि, कलाकार, चित्रपट अनुभवी विद्यमान है। आर्य स्कूलों, कालेजों के अध्यापक कलाकार, लड़के-लड़कियां इस कार्य में विशेष रुचि से कार्य करेंगे। इस प्रकार हर प्रकार के कलाकार बिना खर्च उपलब्ध हो जायेंगे।

धन—इस योजना को सुचारु रूप से चलाने के लिए १०-१५ लाख की धनराशि एकत्रित करनी ही होगी। मैं इस कार्य में एक लाख रुपया तो स्वयं कर दूंगा और भी ५-६ लाख एकत्रित कर दूंगा। सब प्रांतीय आर्य-समाज इस कार्य में योगदान देंगी। बड़ी-बड़ी व्यापारिक संस्थाओं से पर्याप्त धन मिल सकता है। इस उद्योग के लिए जो संस्था बने, उसकी ओर से २० रु०, ५० रु०, १०० रु० की रसीदें छपवा आर्य समाजों को अपने-अपने क्षेत्र में धनसंग्रह के लिए दी जावें।

(घ) हमारे प्रचार के माध्यम :

हमारे पास ५००० तो आर्य समाजें हैं। ५०० के लगभग डी०ए०वी० शिक्षा संस्थाएं हैं। १००० के करीब हिन्दू आर्य स्कूल होंगे। लगभग एक सौ गुरुकुल होंगे। इनके माध्यम से इनके ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों में प्रचार हो सकता है। सनातन धर्म संस्थाओं, विश्व हिन्दू परिषदों, आर.एस.एस. की हजारों शाखाओं द्वारा सारे हिन्दू क्षेत्रों में प्रचार किया जा सकता है। ध्यान रहे हमारे पास सन्यासियों का एक बृहिमण्डल भी है। इसमें ७०-८० सन्यासी हैं, जिन्हें स्थान-स्थान पर भेज प्रचार कार्य में सहयोग लिया जा सकता है और भी अनेकों प्रचार माध्यम सोचे जा सकते हैं।

कोई भी "आर्य-सभा" इस कार्य को स्वतन्त्र रूप में अपने हाथ में ले सकती है। स्कूल संस्थायें तो इसे बड़ी सुगमता से करने में सक्षम हो सकती हैं। कुछेक आर्य-सज्जन इस समय फिल्म उद्योग में बहुत ऊंचे पद हुए हैं, उनसे हर प्रकार का सहयोग लिया जा सकता है। ●

स्वतन्त्रता प्राप्ति में महर्षि दयानन्द का योगदान

शिवसरन, अध्यक्ष अखिल भारत हिन्दू महासभा

आधुनिक भारत की सर्वांगीण प्रगति विकास तथा स्वातन्त्र्य के पहले पुरोधा महर्षि दयानन्द थे जो प्रत्येक अर्थमे पूर्णतया आत्मस्थ और स्वदेशस्थ होते हुए भी विश्वजनीय थे। महाशिवरात्रि को उन्हें बोध हुआ कि जो 'शिव विश्वरक्षक और कल्याणकर्ता है वह आकार की सीमातीत है इस अवसर पर श्री शिवसरन का विशिष्ट लेख श्रद्धासुमन के रूप में समर्पित है।

— सम्पादक

सर्वप्रथम आज से करीब एक सौ पचास वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देखा था कि हिन्दू अंग्रेज के स्वार्थपूर्ण मिथ्या प्रचार का शिकार होकर वैदिक धर्म भूलकर केवल पोंगापथी को मान्यता देने की भूल कर रहा था। उस समय चारों ओर से भारतीय सस्कृति को नष्ट करने के प्रयास हो रहे थे। महर्षि ने अलख जगायी। हिन्दू समाज को अन्धकार के गर्त से निकालकर वेदों के प्रकाश में खड़ा किया। हिन्दू समाज मे एक नई चेतना का सचार हुआ। उसने अपने अतीत के गौरव को खोजा और पुन: स्थापित किया। महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्त्री जाति को उनका खोया हुआ सम्मान दिलाया। स्त्री को पुरुष के बराबर के अधिकार दिलाये। स्त्री शिक्षा शुरू की। पर्दे की प्रथा का अन्त किया। हिन्दू समाज का आधा भाग जो निष्क्रिय पड़ा था उसमें नई चेतना का सचार हुआ।

महर्षि ने बलपूर्वक कहा कि जन्म से कोई शूद्र या ब्राह्मण नहीं होता है। सब व्यक्ति बराबर हैं। जातिवाद और कुप्रचारित वर्ण व्यवस्था का खण्डन किया। छूआ-छात मिटाई। आर्य समाज मन्दिर सबके लिए बिना भेदभाव के खोल दिये।

महर्षि ने ओ३म् का झण्डा ऊचा किया। वेदों की महत्ता, शास्त्रों की उपयोगिता और भारतीय सस्कृति मे व्यक्ति की स्वतन्त्रता और सत्य के प्रति अटूट निष्ठा का प्रतिपादन किया। समस्त भारत में जगह-जगह शास्त्रार्थ करके हिन्दू धर्म पर कालिख पोतने वाले पादरियो और मुल्लाओं के मुह बन्द कर दिये।

महर्षि ने सर्वप्रथम लगभग सन् १८७० में यह घोषणा की कि हमें भारतीय सस्कृति को बचाने के लिए राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करनी होगी। स्वतन्त्रता की मांग से ब्रिटिश सरकार बौखला उठी और सन् १९०७ से १९१४ तक लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द जिन पर सेना में बगावत फैलाने का आरोप लगाया गया था—सरदार अजीतसिंह जैसे अन्य सहस्रो आर्य समाजियों से जेलें भर दी जिनको बड़ा कठोर यातनायें दी गई।

सन् १८७५ में महर्षि बम्बई में श्याम जी कृष्ण वर्मा से मिले। स्वामी जी ने स्वतन्त्रता की चाह की जो आग श्याम जी कृष्ण वर्मा के तन-मन में लगाई उसके फलस्वरूप वर्मा जी का लन्दन निवास "इण्डिया हाऊस" क्रांतिकारी ढालने की टकसाल बन गया और वहां से स्वातन्त्र्य वीर सावरकर, मदनलाल ढींगरा इत्यादि अनेक जगत विख्यात क्रान्तिकारी निकले और सुखदेव, राजगुरु, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे न जाने कितने क्रान्तिकारियों ने उनके चरण चिन्हो पर चलकर ब्रिटिश सरकार को नाकों नाक चने चबवा दिये और अन्त मे स्वतन्त्रता की वेदी पर अपने प्राणों की बलि दे दी।

भारतमाता के एक और सपूत नेता जी सुभाषचन्द्र बोस सन् १९४१ में वीर सावरकर से मिलने बम्बई गये। नेता जी उस समय बहुत क्षुब्ध थे कि क्या करें। अंग्रेज महायुद्ध मे फसे थे परन्तु स्थिति से कोई लाभ उठाने का उपाय नहीं दीख रहा था। सावरकर जी ने उन्हे परामर्श दिया कि नेताजी को अंग्रेज की नजरों से दूर किसी प्रकार भी योरुप में हिटलर से बात करके जापान जाना चाहिए। वहा सावरकर जी के अनुयायी और पत्राचार माध्यम से सम्पृक्त श्री रासबिहारी बोस ने आजाद हिन्द फौज का गठन प्रारम्भ कर दिया है उस आजाद हिन्द फौज से प्रथम बर्मा पर और फिर भारत पर आक्रमण करके अंग्रेजों को निकाल दो। सावरकर जी की भर्ती करवाई अंग्रेजों की भारतीय सेना उनका साथ देगी। सावरकर जी का कहना था कि शस्त्र बल से परास्त करके ही स्वतन्त्रता प्राप्त की जा सकती है। नेताजी ने ऐसा ही किया। भारतीय सेनाओं ने अंग्रेजों को छोड़ कर उनका साथ दिया। बर्मा और भारत की सीमाओ पर इमफाल पर आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजो के छक्के छुड़ा दिये। इसी बीच जापान के युद्ध में परास्त हो जाने से नेताजी की सेना को मैदान छोड़ना पड़ा। नेताजी वहां से वायुयान द्वारा पहले चीन गये और वहा से रूस के राज्य में साईबेरिया पहुंचे। वहां उनको स्टालिन ने कैद मे डाल दिया।

अंग्रेजों ने यह देखकर कि भारतीय सेना पर विश्वास नहीं किया जा सकता और विलायत से गोरी फौज बुलायी नही जा सकती भारत को स्वतन्त्रता देकर अपना पीछा छुड़ाया।

यह कहना कि :—

"साबरमति के सन्त तूने कर दिया कमाल।
ले दी हमें आजादी, बिना खड्ग बिना ढाल।।"

सरासर झूठ। क्रान्तिकारियो और आर्य समाज के श्रेय को हड़पने का कुचक्र है। चर्चिल, लार्ड वेवेल, ऐटली, और माउण्ट बैटन ने भी इसे स्वीकारा है।

हिन्दी, कन्नड़ तथा अंग्रेजी में तीन आर्ष पुस्तकों का विमोचन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १६८ वें जन्म दिनावरण के उपलक्ष्य में कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज विश्वेश्वरपुरम बेंगलोर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक ९ से १२-२-९२ तक स्थानीय स्वामी श्रद्धानन्द भवन में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन सम्पन्न किया गया।

दिनांक ९-२-९२ रविवार प्रात: ९.४५ बजे प्रारम्भ हुआ यज्ञ दिनांक १२-२-९२ बुधवार प्रात: ११ बजे पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। प्रो० ज्येष्ठवर्मन ने यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र गत वाक्य "मा व: स्तेन ईशत माघशंस:" पर विशेष व्याख्यान दिया। पूर्णाहुति के बाद यज्ञब्रह्मा यज्ञाध्यक्ष, प्रवचनकर्ता, पुरोहित एवं सभी वेदपाठियों को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

दिनांक ९-२-९२ रविवार मध्यान्ह को शोभायात्रा का आयोजन किया गया था। इसमें आर्य समाज के सभी सदस्य एव विद्वानो ने भाग लिया। जहां स्त्री-पुरुष एव बच्चे नारे लगाते जा रहे थे, वहां आर्यंयुवक घर-घर जाकर करपत्रों के माध्यम से आर्य समाज का परिचय बांटते हुए लोगों को आर्य समाज मे आने की प्रेरणा दे रहे थे।

ग्रन्थ विमोचन कार्यक्रम—दिनांक १२-२-९२ को सायकाल ५.३० बजे आयोजित ग्रन्थ विमोचन कार्यक्रम मे सभा के आचार्य प० उपेन्द्र भूपाल ने अध्यक्षता की। कर्नाटक राज्य के माननीय गृहमन्त्री श्री धर्मसिंह मुख्य अतिथि थे तथा मुम्बई के प्रो० ज्येष्ठवर्मन विशेष प्रवचनकर्ता थे। एम. आर्य मित्र द्वारा स्वागत भाषण के पश्चात मन्त्री महोदय ने प्रो० ज्येष्ठ वर्मन द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक 'दी वेदास' के आक्स फोर्ड--आई. बी. एच. सस्करण का तथा प० उपेन्द्र भूपाल द्वारा किया गया पूना प्रवचन-मुम्बई प्रवचन का कन्नड़ अनुवाद "दयानन्द प्रवचन-माला" का विमोचन किया।

इसके बाद प० उपेन्द्र भूपाल ने हैदराबाद के प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री प्रेम चन्द जी 'प्रेम' द्वारा रचित प्रेम भजनावली (हिन्दी) पुस्तक का विमोचन किया।

माननीय गृहमन्त्री ने तीनों ग्रन्थ प्रणेताओ को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। अपने भाषण मे प्रो० ज्येष्ठ वर्मन ने यजुर्वेद की महत्ता को दिखाते हुए बताया कि हम कैसे महर्षि दयानन्द के निरन्तर ऋणी होते जा रहे हैं।

माननीय मन्त्री श्री धर्मसिंह ने आर्य समाज से साथ विद्यमान अपने पूर्व परिचय का विवरण देते हुए इच्छा व्यक्त की कि हम महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों के कार्यान्वयन में आगे बढ़ते चलें।

उपरोक्त कार्यक्रम के अंश दूरदर्शन बेंगलोर केन्द्र द्वारा प्रसारित किए गए। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के १६८वें जन्मदिन का पर्व यजुर्वेद पारायण यज्ञ, शोभायात्रा, भजन-सगीत एव तीन ग्रन्थों के विमोचन के साथ सम्पन्न हुआ।

—सत्यव्रत, सभा-मन्त्री

समस्त आर्य सन्तानों में आर्यत्व जागृत कर देश को आर्यावर्त बनायें

(भोलानाथ दिलावरी, पूर्व प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर)

एक व्यापक योजना

आर्य सन्तान—हिन्दुओ की वर्तमान सख्या ६० करोड है। बहुसख्यक हैं। परन्तु मत-मतान्तरो मे बुरी तरह बटे होने से दीन-हीन-मृत प्राय से बने हुए हैं। अल्पसख्यको ने इनका जीना दूभर कर रखा है। यहा तक कि इनकी मान्यताओ को पैरो तले रौद रहे है। गो-वध जारी है। हमारे पूज्य श्री राम--श्री कृष्ण जी के जन्म स्थानो पर अधिकार जमा रखा है और छोडने को तैयार नही। इनके होसले इतने बढे हुए हैं कि वह अब देश को खण्ड-खण्ड करने के लिए जोर-शोर से प्रयत्नशील हैं। एक बार तो बटवारा भी कर चुके हैं। कारण स्पष्ट है कि आर्य सन्तान—हिन्दू सगठित नहीं। इनकी एक सच्चे "आर्य" धर्म पर आस्था नही, फिर एक भाषा और भावनात्मक एकता कैसे हो।

आज से करीब डेढ सौ वर्ष पूर्व महर्षि ने इनके इस रोग का निदान कर इनमे एकात्मता लाने का प्रयत्न आरम्भ किया था और मृत्यु पर्यन्त इस महत कार्य मे जुटे रहे। महर्षि एक थे परन्तु अब तो हम उनकी मानस सन्तान "आर्य" डेढ दो करोड हैं। हमारी अनेक वृहद सस्थाए भी हैं। यदि हम आलस्य प्रमाद छोड उनके कार्य को दिलो जान से, लक्ष्य तक पहुचाने के लिए अग्रसर हो जावे तो कोई कारण नही कि कुछ ही काल मे सफल न हो सके। महर्षि ने आर्य सन्तानो मे एकात्मता लाने के लिए स्पष्ट शब्दो मे कहा था "पण्डया जी, जब तक आर्य सन्तान (हिन्दू) एक धर्म, एक भाषा एक भावना मे ब ध नही जाते अर्थात हर दृष्टि से आर्य नही बन जाते, तब तक इस देश का पूर्ण कल्याण न हो पाएगा।" मानना होगा यह ऋषि वाक्य एक ध्रुव सत्य है। आर्यो! आओ एक जुट हो--दिलोजान से अपने सब साधन एकत्रित कर समस्त आर्य सन्तान-हिन्दू मात्र मे एकात्मता लाने का सकल्प ले, क्रियाशील हो जावे।

मेरी योजना—वर्तमान परिस्थितियो को ध्यान मे रख मैंने बडी गम्भीरता से ऋषि भावना को कार्य रूप देने की एक योजना विचारी है। यदि हम आर्य मिलजुल सगठित रूप से इसे कार्यान्वित करे तो कोई कारण नही कि केवल पाच वर्ष के अल्पकाल मे ही समस्त आर्य सन्तान हिन्दू मात्र में आर्यत्व का बीजारोपण व कर पावें। इसमे इनमे निश्चय ही भावनात्मक एकरूपता आ जावेगा। देश सच्चे अर्थो मे 'आर्यावर्त' बन जावेगा। फिर आर्य-राज्य बनने मे क्या देर लगेगी।

एकात्मता लाने के लिए शिक्षा और प्रचार दो बडे साधन है।

(१) शिक्षा के लिए हमे भावी पीढी मे अपनी शैक्षिक सस्थाओ-स्कूलो आदि मे धार्मिक शिक्षा का समुचित सतत प्रबन्ध करना होगा। इस विषय मे डी०ए०वी० सस्था कुछ ध्यान दे सकतीहै उसे और प्रभावी बनाना होगा। एव अन्य हिन्दू स्कूलो मे प्रचलित करना होगा।

(२) दूसरा बडा साधन 'व्यापक प्रचार' का है। वास्तव मे इसके द्वारा ही केवल पाच वर्ष के अल्पकाल मे ही समस्त हिन्दू मात्र मे 'आर्यत्व" लाया जा सकता है।

(क) समस्त हिन्दू मात्र में आर्य चेतना लानी

पूर्व मे आर्य समाज का प्रचार प्राय: उपदेशको द्वारा ही हुआ करता था, उस समय दूसरा विकल्प भी नही था। अब स्थिति बदल गई है। प्रथम तो उपदेशक प्राय: समाप्त हैं। आगे कोई बनना भी नही चाहता। यदि कोई बनेगा भी तो वह बडा बोझल सिद्ध होगा।

उपदेशको के विकल्प रूप मे हम वीडियो (वी० सी० आर०) प्रणाली से बडे प्रभावशाली रूप मे कार्य ले सकते हैं। इसके द्वारा अच्छे-अच्छे सुन्दर सुन्दर प्रोग्राम तैयार करवा और उनके कैसेट तैयार करवा एक ही समय मे अनेक स्थानो पर लाखो व्यक्तियो मे प्रचारित कर सकते हैं। इस प्रणाली द्वारा आर्य-महापुरुषो की जीवन झाकियां, नाटक, वैदिक धर्म सस्कृति सम्बन्धी अनेक कार्यक्रमो को तैयार कर इनके कैसेटो को बहुत कम खर्च पर स्थान-स्थान पर पहुचाया जा सकता है। इन्हे आर्य समाजो, स्कूलो, कालेजो, गली मोहल्लो, गांव-गाव मे हिन्दुओ की अन्य सस्थाओ द्वारा भी प्रचारित किया जा सकता है। मजे की बात यह है कि ऐसे प्रोग्रामो को देखने के लिए बाल वृद्ध स्त्री पुरुष स्वयमेव खिचे चले आवेगे। केवल जनता मे सूचना खूब प्रभावी ढग से देनी होगी।

आर्यो, आओ, 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्', को कार्य रूप दें

समस्त आर्यों को एक आवश्यक क्रियात्मक सुझाव

समस्त आर्य बन्धुओ, एव आर्य सभा-समाजो, सस्थाओ से निवेदन है कि "प्रभु प्रार्थना" काल मे निम्न भावो को आवश्यक रूप से सम्मिलित करें, ताकि समस्त आर्य सन्तान हिन्दू मात्र मे आर्यत्व जाग्रत कर एकात्मता का भाव उत्पन्न कर सकें। इस प्रकार सच्चे अर्थो मे "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" की वेद आज्ञा और महर्षि की हार्दिक अभिलाषा को पूर्ण करने की ओर पग बढा, कर्तव्य निभावे, देश को फिर से 'आर्यावर्त' बना सच्चा 'आर्य-राज्य' बना पाए।

प्रार्थना के भाव :

हे परमपिता! आपकी महान कृपा से हमे 'आर्य कुल मे जन्म मिला। इस नाते आपने हमे सत्य सनातन वेद-ज्ञान का अधिकारी बनाया।

हम आप का प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए प्रतिज्ञा लेते हैं कि–

१—हम सच्चे अर्थो मे आर्य बनेगे, समस्त आर्य सन्तान हिन्दू मात्र को जाग्रत कर उनमे एकात्मता, सत्यसनातन आर्य धर्म पर चलने को प्रेरित करेंगे।

२—आपकी आज्ञा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् तन-मन-धन से पालन करेंगे।

३—सर्व प्रथम अपने देश को फिर से सच्चे अर्थो से "आर्यावर्त" बना स्वच्छ "आर्यराज्य" स्थापित करेगे।

४—समस्त ससार मे वेद ज्ञान, आर्य सस्कृति फैला भूमण्डल पर पूर्व काल की भांति चक्रवर्ती 'आर्य राज्य' स्थापित करने की ओर अग्रसर होगे।

प्रभो! हमे इन लक्ष्यो की पूर्ति के लिए शक्ति दो, हम आपको विश्वास दिलाते हैं, प्रतिज्ञा लेते है, कि हम हर चुनौती का (अपना सर्वस्व बलिदान कर) दृढता से मुकाबला करेंगे।

(ख) एकात्मता दृढ़ करने हेतु कुछ उदघोष :

एकात्मता के भाव की ओर भी दृढ भूमि करने के हेतु कुछ उदघोष मैंने विचारे हैं इनमे से कोई भी पुरोगम प्रोग्राम अनुसार प्रारम्भ मे, मध्य में एव अन्त मे बोले बुलाए जा सकते हैं।

(ऐसे और भी प्रभाव-उत्पादक उदघोष सोचे जा सकते हैं)

१—श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण चन्द्र जी आर्य थे। हम उनकी सन्तान होने के नाते आर्य है।

२—आर्य सस्कृति एव धर्म की रक्षा करना हम आर्यों का परम धर्म है।

३—आर्य सनातन धर्म ही सत्य-सनातन-धर्म हैं।

४—आओ सच्चे अर्थों म आर्य बनें, आर्य-धर्म का प्रचार करे।

५—आर्य समाज, हिन्दुओ का सजग अभिन्न अ ग है—अटूट भाग है।

६—आर्य समाज हिन्दुओ का सैनिक प्रहरी रक्षक है।

७—आर्य सस्कृति की रक्षा करना आर्य समाज का परम धर्म है।

८—आर्य धर्म का स्रोत स्वय परमात्म देव हैं।

९—आदि मे परमात्म देव द्वारा 'चार वेद" महर्षियों पर अवतरित हुए।

१०—वेद-ज्ञान द्वारा आर्यो ने सब मनुष्यो को सभ्य बनाया, आग जलानी सिखाई।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा रोहतक के तत्वावधान मे दिनाक १५, १६, १७ मई १९९२ को हरियाणा प्रान्त के प्रसिद्ध नगर चरखी दादरी (जिला भिवानी) मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त एव प्रथम उत्तराधिकारी शिष्य प० गुरुदत्त विद्यार्थी ा अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण शताब्दी समारोह" बड़े उल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है।

इसमे भारत तथा भारत से बाहर के देशों मे विद्यमान आर्य समाजें, आर्य शिक्षण सस्थाये आदि भाग ले रहा हैं। आर्य जगत् के उच्चकोटि के सन्यासियो, आर्यनेता विद्वान् वक्ता लेखक और भजनोपदेशक पधार रहेहैं।

इस समारोह मे समाज सुधार नशाबन्द राष्ट्ररक्षा, वैदिक धर्म, राष्ट्रभाषा, आर्य युवक और आर्य महिला सम्बन्धी विविध सम्मेलनो का आयोजन किया जा रहा है। इसमें राष्ट्र को सामाजिक समस्याओ का वैदिक समाधान प्रस्तुत किया जायेगा।

दिनाक ११ मई १९९२ से समारोह की भव्य यज्ञशाला मे 'यजुर्वेद पारायण महायज्ञ" का शुभारम्भ किया जायेगा।

दिनांक १५ मई १९९२ को नगर मे ऐतिहासिक बल समारोह (भव्य जलूस) का प्रबन्ध किया जा रहा है।

अत आपसे निवेदन है कि आप इस महायज्ञ मे अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर आर्यसमाज की अनुपम शक्ति का परिचय दे तथा तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर इस शताब्दी समारोह को सफल बनावे।

—शेरसिंह प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्दमठ रोहतक

स्वामी दयानन्द का आर्थिक चिन्तन ग्रन्थ पुरस्कृत

कोटा। श्रीराम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स, कोटा के वरिष्ठ महाप्रबन्धक श्री सुधीर कुमार अग्रवाल ने श्रीराम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स, कोटा की ओर से कार्यरत श्रमिक एव राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्ता डा० रामकृष्ण आर्य को हाल ही मे प्रकाशित एव विद्वानो द्वारा प्रशसित उनके शोध ग्रन्थ "स्वामी दयानन्द का आर्थिक चिन्तन पर पजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ द्वारा डाक्टर आफ फिलोसफी उपाधि प्राप्त करने पर उद्योग मे आयोजित गणतन्त्र दिवस के समारोह मे ५०००) रु० की नगद राशि और सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह मे उपस्थित सभी श्रमिक, कर्मचारियो ने उद्योग की ओर से पुरस्कृत डा० आर्य की इस उपलब्धि पर अति हर्ष प्रकट करते हुए कहा कि कम्पनी के इतिहास मे यह पहला अवसर और पहला उदाहरण है कि किसी श्रमिक ने स्वाध्यायी छात्र के रूप मे पी एच. डी की उपाधि पायी और कम्पनी ने इतने बड़े सम्मान से सम्मानित किया।

डा० आर्य ने पुरस्कृत राशि मे से ५००) रु० अपने माता पिता और ५००) रु० अपनी धर्मपत्नी को भेंट करते हुए शेष ४०००) रु० आर्य परिवार सस्था, कोटा को दान कर दिये।

—दौलत सहाय भटनागर, अध्यक्ष
आर्य परिवार सस्था, कोटा

दीक्षा, यज्ञोपवीत एवं नाम परिवर्तन सम्पन्न

श्रीमती लक्ष्मीबाई जैसी के पुत्र तेगबहादुर को आर्य समाज राऊ ने यज्ञोपवीत, ब्रह्मचर्य दीक्षा दी। स्वामी योगीराज छगनलालनन्द के सानिध्य मे योगाभ्यास, प्राणायाम का प्रशिक्षण लेते हुये वे आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे। नाम परिवर्तन कर निचिकेता रखा गया है। मन्त्री मागीलाल वर्मा एव प्रधान अरुणकुमार आर्य ने कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

ऋषि बोध उत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज सैक्टर २२ ए चण्डीगढ़ मे २ मार्च १९९२ को ऋषि बोधोत्सव पर्व चण्डीगढ़ की समस्त आर्य समाजो एव आर्य शिक्षण संस्थाओ के सहयोग से विशेष समारोह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यहाँ साप्ताहिक वेद कथा का आयोजन किया गया था जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने अपने प्रवचन द्वारा धर्म लाभ कराया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की सुयोग्य भजन मण्डली द्वारा मधुर गीत गाये गये।

—आर्य समाज दयानन्द बाजार इन्दूर, में महर्षि का बोधोत्सव अत्यन्त धूमधाम से मनाया गया कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री चिलुका मलैय्या जी ने की। सर्वप्रथम सामूहिक बृहदयज्ञ सम्पन्न हुआ तत्पश्चात श्री गगाराम आर्य, श्री मुक्का चन्द्रशेखर, श्री नरसिंह राव, राम-गिरधार तथा श्री धर्मेन्द्र आर्य जी ने सारगर्भित प्रवचन द्वारा महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला।

—आर्य समाज सरदार पुरा जोधपुर, के ४९ वे वार्षिकोत्सव तथा ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर सत्यव्रत सामवेदी ने महर्षि के बताये मार्ग पर चलने की अपील की। आर्य समाज के उत्सव व बोधरात्रि का पर्व स्थानीय दयानन्द नगर मे अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। आर्ष गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारियो ने अपनी मधुर वाणी से सस्वर वेदपाठ कर हजारा व्यक्तियो का मन मोह लिया।

—आर्य समाज आगर मालवा, आर्य समाज आगर मालवा के तत्वाव-धान मे ऋषि बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम मोहनलाल जी आर्य के पौरोहित्य मे यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात आर्य वीरदल के प्रांतीय अधिष्ठाता श्री चम्पालाल जी अजमेरा ने दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बोध दिवस पर अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर श्री प्रहलाद जी अजमेरा, श्री राकेश अजमेरा, श्री दिनेश श्रीवास्तव श्री रमेश जैन तथा श्री बृजमोहन चौहान सहित अनेको आर्य वीरों ने भाग लिया।

—आर्य समाज अजमेर, मे ऋषिबोधोत्सव पुलिस अधीक्षक श्री महेन्द्र-नाथ धवन की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओ के बालक बालिकाओ ने ऋषि बोध दिवस के महत्व पर मधुरगान प्रस्तुत किये। डा० कृष्णपाल सिंह एव आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य ने अपने भाषण मे मूर्ति पूजा के १६ दोषो पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम का सचालन श्री वेद रत्न आर्य मन्त्री द्वारा किया गया। श्री धवन जी का माल्यार्पण तथा वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया।

—आर्य समाज मोगा, आर्य गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल मोगा मे दयानन्द बोध उत्सव बड़ी धूमधाम तथा श्रद्धा से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री हरबसलाल जी भूषण ने की। इस अवसर पर यज्ञ के उपरात स्कूल के बच्चो ने ऋषि के जीवन से सम्बन्धित गीत प्रस्तुत किए तथा अनेक वक्ताओ ने महर्षि के कार्यों पर प्रकाश डाला।

—आर्य समाज धार, मे ऋषिबोधोत्सव २ मार्च को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर अनेको वक्ताओ ने अपने विचार प्रकट किए आर्य समाज धार के प्रधान प० बालकृष्ण चतुर्वेदी ने कहा कि इस समय कुरीतियो के अधेरो से समाज चारों तरफ से घिरा हुआ है और महर्षि दयानन्द की शिक्षायें ही प्रकाश पुज के रूप मे दिखाई दे रही हैं, महर्षि के अनुसार शिव के सच्चे स्वरूप की आराधना ही मनुष्य का सही मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

आर्य समाज हडसन लाइन किग्जवे कैम्प दिल्ली, मे दिनाक १ मार्च को ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष मे एक शोध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नगर के सैकड़ों बुद्धि जीवियो ने भाग लिया। मच सचालक श्री सत्यकाम वेदालकार ने किया। सम्मेलन मे श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, म० प्रशान्त वेदालकार, डा० मूलचन्द आर्य, एव प्रि० चन्द्रदेव जी सहित अनेको विद्वानो ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डाला।

वासन्तीय नवसस्येष्टि

(पृष्ठ ४ का शेष)

होता था। नए कपड़े पहनता था, पूरी पकवान बनाता था। अपने मित्रो सम्बन्धियो की बधाईया एव शुभ कामनाए स्वीकार करता था। उन्हे भी बधाई एव शुभकामनायें देता था मित्रो एव सम्बन्धियो का अपने घर आने पर नए अन्न से स्वागत भी करता था। इसी तरह का छोटा सा यज्ञ प्रत्येक व्यक्ति अपने घर मे भी करता था।

वर्तमान होली आदि उन्ही नवसस्येष्टियो के उसी रूप के बाहर है। हमारी सास्कृतिक अज्ञानता के कारण वे और प्रदूषित हो गए हैं इस वर्तमान होली मे बिल्कुल साफ देखा जा सकता है। गाव से बाहर होली रखा जाना बढान एव सेनापति (ब्राह्मण) द्वारा उसमे आग लगाना। जौ भूनना, कुछ जौ होली मे चढाना, आपस मे बाटना, परस्पर गले मिलना गाना बजाना, जलती होली से आग पहले लेने की होड और आग लेकर अपने घर मे होली के छोटे रूप घरहुली जलाना। यह घरहुली क्या है? इसे अपभ्रंश रूप मे घुरगुली भी कहा जाता है। बसन्तपचमी से ही महिलाये घुरगुली का स्थान लीपती पोतती है उसे आटे और रगो से विशेष रूप से सजाती है। उस पर विभिन्न प्रकार के फूल भी डालती है होली के दिन उस पर ईधन इकट्ठा करती है जो प्राय उन्होने अपने हाथो से गोबर का बनाया होता है। फिर उसकी पूजा करती है। होली जलने के बाद महिलाये भी उसी प्रकार उसमे जौ आदि भूनती हैं जैसे पुरुष गाव से बाहर होली में भूनते है वैसे बाटती भी है। पुराने समय नवसस्येष्टि यज्ञ इसलिए किया जाता था, ताकि तैयार फसले प्रत्येक प्रकार के प्रदूषण से मुक्त हो जाये। जिससे जो भी अन्न आये, उसे खाकर समूचा समाज सब प्रकार से सुपुष्ट हो। अब से कुछ वर्ष पहले फसलो के बीच यज्ञ करना अजीब लगता हो परन्तु विज्ञान ने विभिन्न बीमा-रियो से फसलो को बचाने के लिये भिन्न भिन्न औषधि एव वनस्पतियो का धुआ करना सिद्ध कर दिया है।

वर्तमान मे होली के नाम पर खुशी के बहाने हमने जो सुरूर के लिये भाग-शराब या अन्य मादक द्रव्यों का सेवन गावो मे एक दूसरे पर कीचड़ फेंकना, शहरो मे तारकोल, सफेदा गन्दे तेल आदि चेहरों पर मल देना, गावो और शहरो दोनो ही जगहो पर लोगो की काम की चीजें जैसे छप्पर आदि होली बढ़ाने के नाम पर होली के कूड़े पर फेंक देना, दूसरो की बहन बेटियो की बेइज्जती करना और गन्दे अश्लील एव अवाच्य गीत गाना, बोलना या यो ही बकवास करना आदि शुरू किया है। ये होली का काम नही है होली होला का रूप है होला पक्की रसदार उन भूनी फलियो को कहते हैं जो विशेष प्रकार से भून दी जाती है होली होला यज्ञ है। हमारी आन-बान-शान का सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्रचलित पवित्र कर्म जो सभी प्रकार की पवित्रताओ आपसी भाईचारे, सहयोग उत्साह एव प्रेम प्रीति का सन्देश लेकर आता है।

एक बात कहकर इस चर्चा को विराम दे वह यह कि हमारी सस्कृति मे शुरू से ही प्रत्येक मागलिक कार्य यज्ञ से शुरू करने का विधान है। कुछ तो ऐसे भी जो बड़े यज्ञो के समय करने के लिये हम छोड देते हैं। होली, दिवाली आदि के यज्ञ हम चूकि बहुत बड़े मनाते रहे है इसलिये बहुत से महत्वपूर्ण कार्य भी हमने इन्ही विशेष अवसरो पर किये है। अत वे काम उनके साथ घटनाये बनकर जुड गये है। जैसे होली पर हिरण्य कश्यपु की घटना, दिवाली पर भगवान राम, भगवान महावीर एव आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी की घटना आदि।

इसका यह अर्थ कतई नहीं कि उन कामो के कारण इन पर्वों का शुभा-रम्भ हुआ है। वासन्तीय नवसस्येष्टि आदि सभी पर्व हमारी सस्कृति के प्राण हैं। अतः जहां तक बने हमे इनकी पवित्रता और यथार्थता को सुरक्षित रखना चाहिए। क्योंकि किसी राष्ट्र का मूल उसकी सस्कृति मे बसता है। जो सभ्यता, सदाचार एव सद्व्यवहार के रूप मे हमे दिखाई देता है।

—आर्य समाज मैनपुरी, में महर्षि दयानन्द का बोधदिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ इस अवसर पर नवजागरण और महर्षि दयानन्द के विषय मे एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। (शेष पृष्ठ १२ पर)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२२-३-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U न० ९१
R N 02 / '7 Licensed to post without Prepayment License No. U 93 Post in N.D.P.S.O on 19,20-3-1992

पंजाबियत की हत्या

संगरूर से पंद्रह किलोमीटर दूर इण्डियन एक्रिलिक लिमिटेड की हरिकिशनपुरा स्थित कालोनी में पंद्रह इंजीनियरों की हत्या आतंकवाद में इस पंजाबियत को ढकेलने की पहली घटना है जिस पर दिल्ली में सम्भ्रान्त सेमिनार हो रहे हैं। पंजाब देश का समृद्धतम तथा औद्योगिक दृष्टि से सर्वाधिक प्रगतिशील राज्य रहा है। वहां लोग इतने सम्पन्न हो चुके हैं कि दूसरे राज्यों से मजदूर-कामगार मंगवाने पड़ते हैं। इसलिए यह समझना कठिन है कि पंजाब के कौनसे योग्य और प्रतिभाशाली सपूतों को वहां काम नहीं मिल रहा है। इण्डियन एक्रिलिक का वह संयंत्र, जिसे बनाने के लिए ये पन्द्रह इंजीनियर पंजाब गए थे ३०० करोड़ रुपये लागत का है और अमेरिका की डु पोन्ट कम्पनी के सहयोग से कांग्रेस समर्थक पंजाबी उद्योगपति आर. के गर्ग द्वारा स्थापित किया जा रहा है। यह पंजाब के बाशिंदों को ही फायदा पहुंचाएगा। मारे गए इंजीनियर यह संयंत्र तैयार करके अपने-अपने घरों को लौट जाते। उन्हें मार कर पंजाब की कथित बेरोजगारी को कैसे हल किया जा सकता है? यह तो साफ है कि डाकुओं ने भाषा के आधार पर इंजीनियरों का विभाजन कर गैरपंजाबियों की हत्या की। लेकिन यदि पंजाबी-गैरपंजाबी के तर्क को उसकी चरम फासिस्ट सीमा तक ले जाएं तो देश के कोने-कोने में न सिर्फ फैले हुए बल्कि सम्पन्नतम जीवन जीते हुए पंजाबीभाषियों के बारे में वहां के मूल गैरपंजाबीभाषी निवासी क्या सोचें? क्या हमारे राष्ट्रीय जीवन का कोई हिस्सा बचा है जहां पंजाबीभाषी अपना योगदान न कर रहे हों? देश के किस-किस कोने से कौनसी भाषा, जाति, सम्प्रदाय एवं धर्म और संस्कृति वाले लोगों को खदेड़ा जाए? खालिस्तानी यही चाहते हैं कि प्रदेश, धर्म और भाषा के नाम पर देश और लोगों के टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए। वैसे तो वे पंजाब में और उसके बाहर पंजाबीभाषियों को भी मार रहे हैं लेकिन राष्ट्र में और बारूद बोने के लिए अब वे पंजाबियत पर उतर आए हैं। यह घातक होगा यदि संगरूर की हत्याओं को पंजाबी-गैरपंजाबी, उत्तर भारतीय-दक्षिण भारतीय की घृणा में बदल दिया गया। निजी होते हुए भी इण्डियन एक्रिलिक राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय सहयोग का प्रतीक है। उसके इंजीनियरों की हत्या भारत की नई आर्थिक-औद्योगिक नीतियों पर भी हमला है। वह अमेरिकी प्रशासन, जो खालिस्तानियों को प्रोत्साहन पत्र लिख रहा है शायद डु पोन्ट के सहयोग से बनाए जा रहे इस संयंत्र में इन हत्याओं के बारे में भी कुछ सोचे। यह सही है कि डु पोन्ट और गर्ग की आपराधिक मूर्खता के कारण ही संयंत्र के आसपास सुरक्षा का सही इन्तजाम नहीं हो पाया किन्तु बेअन्त सरकार उन्हें सुरक्षा लेने पर बाध्य कर सकती थी। समय आ गया है कि पंजाब में हर ऐसी निजी जगह पर, जहां बड़े जनसमूह काम करते हों और डाकुओं का निशाना बन सकते हों, वहां के प्रबन्धकों पर पर्याप्त सशस्त्र सुरक्षा का प्रबन्ध अनिवार्य कर देना चाहिए। पंजाब में प्रत्येक राष्ट्रवादी व्यक्ति और संस्था को सजगता और सुरक्षा से लैस करना ही चाहिए। सबसे बड़ी जरूरत यह है कि पंजाबियत के नाम पर की गई इन हत्याओं की भर्त्सना समूचा पंजाबीभाषी समाज करे और गैरपंजाबी भारतीय भी इन हत्याओं के पीछे के राष्ट्रनाशी षड्यंत्र को समझें। खुलूस, भाईचारा और मुहब्बत पंजाबियत के विशेष लक्षण माने जाते हैं। वे देश की बाकी भाषाओं, संस्कृतियों और कौमों के हिस्से में भी आवें। बेअन्तसिंह और नरसिंहराव सरकारें पंजाब में और देश में जो करेंगी सो करेंगी, इन त्रासद हत्याओं के बावजूद भारत को अपनी पंजाबियत नहीं खोनी है।

न० भा० टा० १३ मार्च से साभार

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली का

१०७वां वार्षिकोत्सव

२७, २८, २९ मार्च १९९२ को लालकिला मैदान में
बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायेगा

इस उपलक्ष्य में २३ मार्च से २६ मार्च तक

आर्यसमाज दीवानहाल में रात्रि ८ बजे से ९ बजे तक

वैदिक विद्वान पं० नेत्रपाल जी शास्त्री

द्वारा वेद प्रवचन होगा।
प्रवचन से पूर्व प० गुलाबसिंह 'राघव' के मधुर भजन होंगे।
आप सपरिवार सादर आमन्त्रित है।

निवेदक

मूलचन्द गुप्त — प्रधान
सूर्य देव — मन्त्री

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज मन्दिर रघपुरा बदायूं, आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग तिलक द्वार मथुरा आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द पथ रांची, वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी, आर्य समाज मन्दिर दयानन्द मार्ग, जोगीपेठ मेढ़क, नगर आर्य समाज साहबगंज गोरखपुर, आर्य समाज एवं आर्य बाल-विद्या मन्दिर दयानन्द मार्ग भीलवाड़ा, आर्य समाज मन्दिर बांकीपुर, दया टोला पटना आर्यसमाज मन्दिर रेलवे रोड उन्नानी, आर्य समाज नागदा म० आर्य समाज हिरण मगरी राज०, आर्यसमाज मन्दिर सुल्तानपुर, पट्टी नैनीताल, आर्यसमाज किला रोड जौनपुर आदि में भी ऋषि बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया।

पानीपत में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

गतवर्षानुसार इस वर्ष भी वैदिक यज्ञ समिति के तत्वावधान में, "यजुर्वेद पारायण यज्ञ" दि० ६ अप्रैल से १२ अप्रैल १९९२ तक माडल टाऊन, बोसाराम चौक (मैदान) में होगा। जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् प० वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय, प० ओम्प्रकाश जी वर्मा, श्रीमती सुनीति जी आर्या व अन्य संन्यासी महात्मा पधार रहे हैं।

आवश्यकता है

धार्मिक ट्रस्ट के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता है जिसकी शैक्षणिक योग्यता बी ए. एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों का जानने वाला हो आयु सीमा लगभग तीस वर्ष अविवाहित अथवा विधुर जो परावर्तन कार्य में रुचि रखता हो। मानदेय १५००) रुपये मासिक योग्यतानुसार अधिक भी विचारणीय है।

सम्पर्क करें।

गणदेव शर्मा
सी-११९ सरोजनी नगर
नई दिल्ली-११००२३

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं डा० स० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- जिस देश मे ब्रह्मचर्य विद्या ग्रहण रहित बाल्यावस्था मे और अयोग्य का विवाह होता है वह देश दुख मे डूब जाता है। क्योकि ब्रह्मचर्य विद्या के ग्रहण पूर्वक विवाह के सुधार ही से सब बातो का सुधार और बिगडने से बिगाड होता है।
- कोई भद्र पुरुष व वृद्ध हो उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार से तृप्त करना अर्थात् जिस-जिस कर्म से उनकी आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे उस उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करना वह श्राद्ध व तर्पण कहाता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष . ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक ६]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२   चैत्र कृ० ११   स० २०४८   २९ मार्च १९९२

आतंकवादियों का साथ देने वालों को सुरक्षा नहीं : बेअन्त

जालन्धर २२ मार्च। पजाब के मुख्यमन्त्री बेअतसिह ने सगरूर जिले मे कल आतकवादियो की गोलीबारी की घटना की आज कडी निन्दा की। इस घटना मे १३ व्यक्तियो की जाने गई तथा बीस अन्य घायल हुए।

यहा सवाददाताओ से बातचीत मे उन्होने अकालियो से अपनी यह अपील फिर दोहराई कि वे बातचीत मे शामिल हो और अपनी शिकायतो पर चर्चा करें। उन्होने कहा कि उनकी सरकार राज्य मे नगर पालिकाओ और पचायतो का चुनाव कराने के लिए वचनबद्ध है। मगर उन्होने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का चुनाव करान के बारे मे कोई आश्वासन नही दिया।

पृथक सिख राष्ट्र की माग करने वाले अकाली नेताओ की सुरक्षा व्यवस्था वापस लेने सम्बन्धी बयान के बारे मे पूछे जाने पर श्री बेअन्तसिह ने कहा कि आतकवादियो का साथ देने वालो को सुरक्षा व्यवस्था प्रदान करने की जिम्मेदारी सरकार नही ले सकती है।

श्री बेअन्तसिह ने बताया कि हरियाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल से उनकी हाल मे बातचीत हुई है। उन्हे आशा है कि चण्डीगढ तथा अन्य पजाबी भाषी क्षेत्रो के पजाब मे हस्तातरण तथा जल वितरण का मामला सुलझा लिया जाएगा।

पंजाब को सेना के हवाले किया जाये

राष्ट्र निर्माण सम्मेलन में आर्य समाज की मांग

आर्य समाज शालीमार बाग की ओर से क्षितीश वेदालंकार का सम्मान

दिल्ली २२ मार्च।

आर्यसमाज शालीमार बाग (दिल्ली) के वार्षिकोत्सव पर 'राष्ट्र निर्माण सम्मेलन' की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि पजाब मे गत दिनो चुनाव होने पर मैंने प्रधानमन्त्री को बधाई सन्देश दिया था और मुझे आशा थी कि चुनाव के बाद पजाब मे आतकवाद समाप्त होगा, किन्तु पजाब मे आतकवादियो ने बेअन्तसिह की सरकार को गिराने के लिए लुधियाना और सगरूर म ४ बार भयकर हत्याकाण्ड किये हैं। अत पजाब समस्या का समाधान करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि सरकार समूचे पजाब को सेना के हवाले करे, इसके अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नही है। यह माग आर्यसमाज पिछले काफी समय से करते आ रहा है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री क्षितीश वेदालकार को आर्य समाज शालीमार बाग की ओर से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक शाल और ११०० रु० की नकद राशि देकर सम्मानित किया। श्री क्षितीश वेदालकार ने अश्रुपूरित नेत्रो से भाव विभोर होकर आर्य जनो का धन्यवाद किया।

इस सम्मेलन मे राजसिह आर्य, आचार्य यशपाल सुधाशु, श्री सूर्यदेव, डा० शिवकुमार शास्त्री तथा डा० धर्मपाल आदि महानुभावो ने जन समूह को सम्बोधित किया। इसके उपरान्त ऋषि लगर का आयोजन भी किया गया।

★

अयोध्या में मन्दिरों का गिराना शुरू

फजाबाद। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने आज अयोध्या मे श्री राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद परिसर मे अधिग्रहित भूमि पर बने पाच मन्दिरों और नौ दुकानो को गिराना शुरू कर दिया है। इन मन्दिरो मे साक्षी गोपाल मन्दिर और सकट मोचन मन्दिर शामिल है।

उ०प्र० पर्यटन विभाग के उपनिदेशक श्री दिनेश दयाल ने पत्रकारो को बताया कि अधिग्रहीत भूमि को समतल करने का काम शीघ्र शुरू होगा। यह काम अयोध्या विकास प्राधिकरण के अधिकारियो की देखरेख मे होगा।

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली का १०७वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली का १०७ वां वार्षिकोत्सव दिनाक २७ से २९ मार्च १९९२ तक लालकिला मैदान मे समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्य जगत् के ख्याति प्राप्त विद्वान् तथा महात्मा पधार रहे हैं। उत्सव मे अनेकों विशेष सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया है प्रतिदिन प्रात काल ७-१०बजे से यजुर्वेद परायण यज्ञ होगा तथा २३ से २९ मार्च तक प्रतिदिन रात्रि ८से ९बजे तक आर्यसमाज मन्दिर मे वैदिक विद्वान प० नेत्रपाल शास्त्री जी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर विशेष प्रवचन करेंगे।

भारतीय जनता पार्टी और चण्डीगढ़

भारतीय जनता पार्टी के नेताओ के कार्यकलाप इनके अनुयायियो के लिए परेशानिया पैदा कर रहे है। यह लोग एक तरफ अपने आपको देश का सबसे बडा विरोधी दल कहकर सरकार का विरोध करना अपना हक समझते हैं, लेकिन दूसरी तरफ अहम मामलो पर सरकार के कार्यकलाप का समर्थन कर रहे हैं। इससे इनके अनुयायी बडी परेशानी का शिकार हो रहे है।

चण्डीगढ का मसला ऐसा है जिसमे नेताओ और उनके अनुयायियों के दृष्टिकोण मे जमीन और आसमान का फर्क है। भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने यह मान लिया है कि चण्डीगढ पजाब को दे दिया जाये। इस पर चण्डीगढ के भाजपा नेताओ ने अपने लीडरो से सवाल किया है कि क्या इन्हे पूछने की कोई जरूरत यह लीडर नही समझते। उनका कहना है कि चण्डीगढ के ८५ प्रतिशत लोग पजाब मे शामिल होने के खिलाफ हैं। लेकिन भाजपा नेताओ ने ऐसा मान लिया है कि इसे पजाब को दे दिया जाय। यह लोग अपने नेताओ से पूछ रहे है कि क्या वह भेड बकरियां हैं कि उन्हे जिधर चाहा हाक दिया ?

चण्डीगढ के भाजपा नेता श्री प्रेम सागर जैन ने अपने नेताओ को आडे हाथो लिया है। अपने बयान मे उन्होने १० मिसाले पेश की हैं जिनमे साबित किया है कि हर मसले पर यह एक दिन और कहते रहे है और दूसरे दिन कुछ और ?

श्री जैन ने अपने नेताओ से सवाल किया है कि क्या उन्हे यह मालूम नही कि आज से कुछ दिन पहले चण्डीगढ के शहरियो ने आम हडताल करके सारी दुनिया को बता दिया था कि वह न पजाब के साथ जाना चाहते हैं और न हरियाणा के। वह तो 'स्वतन्त्र केन्द्र शासित चण्डीगढ का स्थान चाहते हैं। लेकिन भाजपा के नेताओ ने इनकी परवाह न करते हुए शाह कमीशन के तमाम हालात का जायजा लेने के बाद चण्डीगढ हरियाणा के हवाले करने का फतवा दिया था। लेकिन श्रीमती इन्दिरा जी अपनी राजनैतिक चालें चल रही थी। आपने शाह कमीशन के स्पष्ट फतवा को नजरन्दाज करके ऐलान कर दिया कि चण्डीगढ पजाब को दिया जायेगा। आज के भाजपा नेता शायद कांग्रेस से कोई गुप्त समझौता कर बैठे है इसलिए वे एक से ज्यादा मामलो पर सरकार का साथ दे रहे हैं और यह जानने की कोशिश नही करते कि इस सहयोग का इन्हे क्या कीमत अदा करनी होगी।

के० नरेन्द्र

इंगलैंड से एक कविता—

आनन्द

जैसे हो आनन्द मीन को, अथाह सागर मे।
मणि से हो जैसे कि आनन्द अहि फण मे॥
चन्द्रमा के सामने चकोर को आनन्द जैसे।
जैसे हो आनन्द युवती को आभूषण मे॥
प्रजा को आनन्द जैसे प्रजाप्रिय राजा से हो।
दयानन्द को आनन्द जैसे गुरु के चरण मे॥
रक को आनन्द जैसे राजनिधि पाये से हो।
योगी को आनन्द जैसे ओ३म् की शरण मे॥
"सोम' को आनन्द जैसे वेदामृत पान से हो।
वैसे है आनन्द वैदिक धर्म के वरण मे॥

—सोमदत्त शर्मा एम०ए० रिसर्च स्कालर,
डी०वी० मिनिस्टर आफ वैदिक हेरीटेज
हिन्दू टेम्पल आफ नाटिंघम इगलैंड

धर्मप्रचार के लिए सार्वदेशिक सभा का सहयोग

सार्वदेशिक सभा की १५-३-८२ की अन्तरग सभा ने धर्म प्रचार के कार्य के लिए निम्न प्रकार राशिया दिए जाने की घोषणा की।

१ सिंहस्थ मेला वैदिक प्रचार समिति उज्जैन कुम्भ मेले पर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उज्जैन में लगाए जा रहे वैदिक धर्म प्रचार शिविर के लिए २५ हजार रुपए की राशि का चैक श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती और श्री सेवाराम आर्य को दिया गया।

२ वैदिक धर्म प्रचार शिविर हरिद्वार—हरिद्वार मे भी कुम्भ मेले पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा लगाए जा रहे प्रचार शिविर के लिए २५ हजार रुपया आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री प० मनमोहन तिवारी को दिया गया।

३—नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) मे पानी की व्यवस्था हेतु ट्यूबवैल के शेष कार्य को पूरा कराने के लिए १२,५००.०० साढे बारह हजार रुपए वहा भिजवाए गए हैं।

४—वनवासी आर्य महासम्मेलन—३ से ५ अप्रैल १९८२ तक रायगढ के हृत्थलगाव मे तृतीय वनवासी आर्य सम्मेलन का आयोजन जोरदार ढग से किया गया है। यह सम्मेलन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती और मध्यप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से किया जा रहा है। इस सम्मेलन के आयोजन के लिए सार्वदेशिक सभा पहले ही बीस हजार रुपया भेज चुकी है। पुन ३० हजार रुपया और देने का निर्णय हुआ है।

गायत्री मन्त्र लिख कर विश्व रिकार्ड स्थापित किया जसवन्तसिंह गुप्ता ने

चरखी दादरी (नि० स०) भारत साधु सन्तो, भगवान भक्तो विद्वानो की बहुसख्या वाली भूमि है इसी भूमि पर भगवान रामचन्द्र कृष्ण, महावीर, महर्षि दयानन्द आदि अनेक विभूतियो ने जन्म लिया व मानव जाति को उपदेश दिया। चरखी दादरी मे भी एक इसी श्रृंखला मे जो कीर्तिमान स्थापित किया वह पूरे विश्व मे एक अनूठी मिसाल है। वह यह कि यहा के आर्य समाजी विचारक श्री जसवन्तसिंह गुप्ता ने पिछले १८ सालों से लगातार गायत्री मन्त्र अपने हाथ से पाच लाख मन्त्र लिख कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। एक कापी मे उन्होने पाच हजार मन्त्र लिखे हैं एक सौ कापियो मे लिखे मन्त्रो को उन्होने एक पूरी अलमारी मे सजोय कर रखा है। ६९ साल की आयु मे हैं उन्हे देश के प्रमुख ट्रासपोर्ट क० के सस्थापक व आर्य समाज के प्रमुख स्व० लालमन जी आर्य के सुपुत्र स्व० विरबान व आर्य की प्रेरणा से ही इस गायत्री मन्त्र के लिखने व इसका सग्रह की शुरुआत की थी। पता चला है कि विश्व रिकार्ड कायम 'गिनीज बुक' में उक्त सग्रह का नाम शीघ्र दर्ज हो जायेगा। श्री गुप्ताजी द्वारा लिखित यह गायत्री मन्त्र का विशाल लेखन एक सुनहरी दस्तावेज ही नही बल्कि आज के युग ने समाज के सामने एक बहुत बडा उदाहरण है। इस कार्य लेखन से पूरे देश के। विभिन्न भागो में गुप्ता जी की प्रशसा की जा रही है।

गोविन्दराम वैदिक योगाश्रम गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

इस सस्था का वार्षिकोत्सव २९ मार्च रविवार को अपूर्व धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस शुभावसर पर स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, डा० धर्मपाल, महाशय धर्मपाल, डा० शिवकुमार, हरिदत्त शास्त्री, यशपाल सुधाशु, इन्द्रनारायण, रामचन्द्र विरल, केदारनाथ साहनी, अभय भल्ला, शान्तिलाल चरखन्दा शान्तिप्रकाश बहल, रामनाथ सहगल दरबारीलाल, महाशय देवराज जी अग्निहोत्री परिवार, चन्दीमल आदि साधु महात्मा, नेता, भजनोपदेशको को आमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर अनेकों विशेष कार्यक्रमो का आयोजन भी किया गया है। —यशराज मुद्गानी, मन्त्री

स्वतन्त्रता यज्ञ के ब्रह्मा महर्षि दयानन्द

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती—

'आर्यावर्त (भारत) में आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देश वासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

उक्त आप्त वाक्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८८० में मातृभाषा गुजराती होने पर भी हिन्दी में लिखे अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा हैं। इस समय तक नेशनल कांग्रेस की स्थापना का विचार भी नहीं उठा था। जिस अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन राज्य की परिकल्पना महर्षि ने की है, उसका विचार पचास वर्ष की लम्बी अवधि के बाद १९२९ में लाहौर कांग्रेस में प्रस्तुत किया गया। सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के बाद अक्तूबर १८८३ में महर्षि का देहान्त हो गया। इनकी मृत्यु के भी पूरे दो वर्ष बाद २८ दिसम्बर १८८५ में कांग्रेस की स्थापना हुई थी।

महर्षि ने अपने इस ग्रन्थ में राजधर्म के बारे में पूरा एक समुल्लास ही अलग से लिखा है। इस बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में प्रजातन्त्र या लोकतन्त्र के बारे में जो विचार उद्भूत हुए, उन्हें महर्षि ने १९ वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में ही सांगोपांग प्रतिपादित कर दिया था। इसमें उन्होंने वेदों एवं स्मृतियों का उद्धरण देकर राजा प्रजा द्वारा निर्वाचित हो, शासन मन्त्रियों की सभा द्वारा हो, पुरुषों और स्त्रियों के अधिकार समान हों, शासन बिना किसी पक्षपात या अभिनिवेश के सभी के साथ न्याय पूर्वक व्यवहार करें आदि सब मूल सिद्धांतों पर बल दिया है।

महर्षि ने अपने इस ग्रन्थ में बार-बार देश की दुर्दशा, निर्धनता, पारिवारिक कलह, प्रमाद, अविद्या, आदि पर अपनी अन्तर्वेदना को प्रकट किया है। एक सफल चिकित्सक की भांति उन्होंने देश की विपदा और पराधीनता का कारण ढूंढ निकाला था। वे एक स्थान पर लिखते हैं "विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना, पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठ जाता है।

एक समय ऐसा आया जब देश कूप मण्डूक की अवस्था में था तथा विदेश यात्रा को अधर्म समझा जाता था। इस मिथ्यावाद से ही देश में निर्धनता बढ़ी है। वे लिखते हैं "सबसे प्रथम आर्यावर्तीय देशीय लोग व्यापार राजकार्य और भ्रमण के लिए सब भूगोल में घूमते थे और आजकल छूतछात और धर्म भ्रष्ट होने की शंका है वह केवल मूर्खों को बहकाने और अज्ञान बढ़ने से है। जो मनुष्य देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने आने में शंका नहीं करते, वे देश देशान्तर के अनेक विध मनुष्यों के समागम, रीति, नीति देखने अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय, शूर वीर और अच्छे व्यवहार का ग्रहण व बुरी बातों को छोड़ने में तत्पर होकर बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं। इसी सिलसिले में लिखते हैं—क्या बिना देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य या व्यापार किये स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है जब परदेशी स्वदेश (भारत) में व्यवहार या राज्य करें तो बिना दारिद्र्य और दुःख के दूसरा कुछ भी हो नहीं सकता।"

देशवासियों को स्वदेश के प्रति अपना सम्पूर्ण समर्पण करने की प्रेरणा देते हुए महर्षि लिखते हैं 'जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन और धन से सब मिलकर प्रीति से करें।"

आश्चर्य होता है कि महर्षि ने कितनी दूर दृष्टि से ये बातें तब लिखी जबकि बाल विवाह करना, विधवा विवाह न करना, स्त्रियों को शिक्षा न देना, छूत-छात का निष्ठा से पालन करना, अन्धविश्वास रूढ़िवादिता आदि बातें समाज के लिए मान्य बातें थीं तथा ये बातें बुरी हैं इस प्रकार के विचार भी कोसों दूर की बात थी। इन क्रान्तिकारी विचारों, स्थापनाओं और प्रचारों से यह कहा जा सकता है कि भारत में नव जागरण की और स्वतन्त्रता की जो लहर चली उनके प्रथम प्रणेता महर्षि दयानन्द ही थे। १५ अगस्त, १९४७ को जिस स्वतन्त्रता यज्ञ की पूर्णाहुति हुई, उसका प्रारम्भ उन्होंने ही किया था। यह ठीक है कि इससे पूर्व राजा राममोहन राय ने प्रमुखता से तथा तत्कालीन अंग्रेजी पढ़ लिखने के कारण शिक्षित माने जाने वाले एक वर्ग ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का स्तुत्य प्रयास किया था। पर ये सभी पाश्चात्य सभ्यता और इंग्लैण्ड की भक्ति प्रवाह में आकण्ठ डूब गए थे। इन्हें समस्त भारतीय समाज, तुच्छ, हेय और गर्हित लगता था। राजा राम मोहनराय द्वारा स्थापित ब्रह्म-समाज, ईसाइयत का एक लघु संस्करण समझा जाता था। ब्रह्म-समाज का आन्दोलन भारत को पश्चिम की ओर धकेल रहा था। परन्तु महर्षि दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने इस नव जागरण की पश्चिमाभिमुखी प्रवृत्ति को, अंग्रेजी सभ्यता को श्रेष्ठ समझने वाली और आत्मसम्मान को घटाने वाली भावना को बदलकर देश के गौरव, अस्मिता और गरिमा के साथ जोड़ा। भारतीयों की पश्चिमी प्रगति से चकाचौंध और आत्म विस्मृति पैदा करने वाली दृष्टि को देश की सर्वात्मना, समग्रता और सर्वश्रेष्ठता की दिशा दी। उन्होंने कहा "यह आर्यावर्त ऐसा देश है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है जिससे लोहे रूपी विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात धनाढ्य हो जाते हैं।" महर्षि ने ऐसी बातें बताकर देश के प्रति अनन्य, अखण्ड और अपूर्व अवस्था के लिए प्रेरित किया।

भारतीय क्रान्तिकारी आंदोलन के पितामह समझे जाने वाले श्याम जी कृष्ण वर्मा महर्षि के शिष्य थे तथा उन्होंने ही श्याम जी को विदेश जाकर कार्य करने की प्रेरणा की। महर्षि ने ही उनके (श्याम जी) के लिए छात्रवृत्ति एवं विदेश जाने की व्यवस्था की थी।

महर्षि ने जागरण के जिस महाघोषी शंख को फूंका वह भारतीय समाज के वास्तविक स्वरूप को स्पर्श करने वाला था। भारतीय संस्कृति के मूल वेदों को आधार बनाकर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराते हुए वे कार्य क्षेत्र में उतरे थे। धर्म शिक्षा, संस्कृति, राजनीति, शासन व्यवस्था, वर्णाश्रम,

(शेष पृष्ठ ११ पर)

केवल भारत में ही लोग अपनी भाषा का तिरस्कार करते हैं

जापानी प्रोफेसर तोमियो मिजोकामी का आरोप

उल्हासनगर (महाराष्ट्र)। जापान के ओसाका विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तोमियो मिजोकामी ने यहां न्यू इरा हाई स्कूल को भेंट देने के बाद एक मुलाकात में इस बात पर गहरा आश्चर्य व्यक्त किया कि भारतीय लोग अपने देश में तथा विदेशों में भी अपनी समृद्ध मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी का तिरस्कार क्यों करते हैं? अधिकांश भारतीय बड़ी आसानी से हिन्दी बोल सकते हैं किन्तु वे अंग्रेजी बोलने में ही अपनी शान समझते हैं, जो खेदजनक बात है।

जापानी प्राध्यापक का कहना है—"मेरे देश जापान में प्रत्येक व्यक्ति अपनी जापानी भाषा का उपयोग करता है विदेशों में भी जापानी लोग अपनी भाषा में बोलने का पूरा ध्यान रखते हैं।'

प्रा० मिजोकामी को यह जानकर बहुत हैरानी हुई कि इस देश में अधिकांश माता पिता और अभिभावक अपने बच्चों को इंगलिश मिडियम और कान्वेन्ट स्कूलों में भेजने लगे हैं और अपनी मातृभाषा का तिरस्कार करते हैं। ('नवभारत' से)

जानवर और हम

पशु-पक्षियो पर होने वाले अत्याचारो की रोकथाम के लिये कार्यरत एक दक्षिण भारतीय विद्वान प्रो०एन०एस० रामास्वामी ने दावा किया है कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश मे हल चलाने और बोझा ढोने वाले बैलों को हर साल १०० करोड़ कोड़े खाने पड़ते हैं और ३००० म्यूनिसिपल बूचड़खानो में छोटे-बड़े १२ करोड़ पशु और २० करोड़ पक्षी हर साल काट दिये जाते हैं।

प्रो० रामास्वामी का कहना है कि इस देश में बूचड़खानो का जो सिस्टम इस सदी के प्रारम्भ में शुरु हुआ था उसके इस ढंग से आधुनिकीकरण किये जाने की जरूरत है कि जानवरो के प्रति अत्याचार की भावना जहां तक सम्भव हो उसमें कम हो सके। जानवरों को काटने से पहले उन्हें अचेत कर दिया जाना चाहिये। इस आधुनिकीकरण से देश के लगभग ५० करोड़ मांसाहारियों को जहां अच्छा मांस सुलभ हो सकेगा, वहीं पर्यावरण मे भी सफाई रह सकेगी। प्रो० रामास्वामी ने यह सुझाव भी दिया है कि जानवरों को बूचड़खाने तक डण्डे के बल पर जबरदस्ती पैदल ले जाने या ट्रकों मे ठूस-ठूस कर भर कर ले जाने की बजाय उन्हें आराम के साथ ले जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए और मारे जाने से पहले उनके साथ यह यातनापूर्ण व्यवहार बन्द होना चाहिए।

प्रो० रामास्वामी ने बताया कि पशु धन के कारण देश की अर्थ-व्यवस्था मे हर साल ४५ करोड़ रुपए की राशि आती है। यह भारी-भरकम राशि उनके दूध, काम, गोबर, मांस और खालों आदि से प्राप्त होती है। देश में जितनी भी कृषि योग्य भूमि है उसके दो तिहाई भाग को मशीनी खेती के इस युग मे भी बैल और भैंसे ही हल चला कर फसल बोने के लिये तैयार करते हैं। इतना ही नहीं ये पशु २५० करोड़ टन बोझा हर साल ढोते हैं और इससे ५ लाख टन पैट्रोल और डीजल की बचत होती है जिसकी कीमत २५०० करोड़ रुपये से भी अधिक होती है। अफसोस की बात यह है कि ये हालांकि मानव समाज की इतनी बड़ी सेवा करते हैं और सकल राष्ट्रीय उत्पादन मे १० प्रतिशत का योग देते हैं फिर भी आदमी पशु-पक्षियों का बुरी तरह अवहेलना करता है और उनके साथ बड़े क्रूर किस्म का व्यवहार करता है।

प्रो० रामास्वामी का दावा है कि अगर देश के पशु धन की रक्षा की जाए और उसके वैज्ञानिक ढग से विकास के लिए पग उठाए जाएं तो उससे देश के ३० करोड गरीब किसानों को ठोस लाभ पहुच सकता है, उनका यह भी दावा है कि अगर देश के पशु-धन की सही ढग से देखभाल की जाये तो गरीबी उन्मूलन के काम मे भी काफी सहायता इससे मिल सकती है। जानवरों की जिस ढग से उपेक्षा की जाती है और उनसे काम लेने वाले लोग जिस किस्म के अत्याचार उन पर करते हैं, उनकी वजह से किसानों और उनके उपयोग कर्त्ताओं की आमदन कम हो जाती है। स्वस्थ और प्यार पाने वाले पशु जितना अच्छा काम कर सकते हैं, उतना अच्छा काम उपेक्षित और आतंकित पशु नहीं कर सकते।

प्रो० रामास्वामी का कहना है कि पशुओं पर होने वाले अत्याचारो के कारण देश को हर साल ३००० करोड़ और ५००० करोड रुपये के बीच नुकसान बर्दाश्त करना पड़ता है। इस स्थिति पर दुख व्यक्त करते हुए प्रो० रामास्वामी ने कहा है कि न जाने इतनी छोटी सी बात आदमी की समझ में क्यो नही आती कि आदमी के बगैर तो जानवरों का काम चल सकता है मगर जानवरो के बगैर आदमी का काम नहीं चल सकता।

प्रो० रामास्वामी ने जो आंकड़े पेश किये हैं वे निश्चित ही चौंका देने वाले हैं। यह ठीक है कि पशुओ पर अत्याचार रोकने का काम कुछ संस्थाओं ने अपने हाथ मे ले रखा है मगर क्रियात्मक रूप से ये संस्थाए निष्क्रिय होकर रह गई है। काश! मानव समाज के लिए पशुओं की उपयोगिता उनके महत्व और राष्ट्रहित में उनकी रक्षा और विकास के लिए कोई योजनाबद्ध कार्यक्रम कुछ लोग या कुछ सरकारी अथवा गैर-सरकारी संस्थाए अपने हाथों मे ले लें ताकि पशु धन की उपेक्षा और उस पर होने वाले अत्याचारों के कारण जो क्षति देश को उठानी पड़ रही है, वह न उठानी पड़े और देश को भरपूर लाभ अपने पशु धन का मिल सके। —विजय

रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के सबसे बड़े दैनिक पत्र

प्रावदा की मौत

हर कम्यूनिस्ट (साम्यवादी) प्रशासन में सूचना तथा प्रसारण पर सरकार का पूर्णतया नियन्त्रण होता है इसलिए सरकार अपनी जनता को वही कुछ जानने देना चाहतीहै जो इसके लाभ में हो वह यह सहन नहीं करती कि लोगों को स्वतन्त्रता से घरेलू या विदेशों के समाचार जानने की इजाजत दी जाए। इस तरह वह अपनी जनता को दूसरे देशों के हालात से बेखबर रखती है ताकि लोग अपनी हालत को दूसरों से मुकाबला न कर सकें। सोवियत रूस में कम्यूनिस्ट पार्टी का अपना समाचार-पत्र "प्रावदा" था जिसका अर्थ सच है। इस प्रकार कम्यूनिस्ट पार्टी झूठ-सच जो भी चाहती इस समाचार-पत्र के माध्यम से जनता तक पहुंचाती। एक अनुमान के अनुसार "प्रावदा" का प्रकाशन ६० लाख कापी प्रतिदिन का था। इसमें हर सरकारी इतलाह और सरकार का दृष्टिकोण रूसी जनता तक पहुंचाया जाता था। अब ज्ञात हुआ है कि "प्रावदा" का प्रकाशन बन्द हो गया है। रूस की साम्यवादी पार्टी की मौत के साथ-साथ "प्रावदा" का जिन्दा रहना सन्देह जनक हो गया था। अपने आखरी दिनों में "प्रावदा" केवल बेसकीयत पर आधारित था बताया गया है कि कम्यूनिस्ट सरकार से जो आर्थिक सहायता मिलती थी वह बन्द हो गयी। इस प्रकार गत दो तीन महीनोंसे यह समाचार-पत्र प्रतिदिन प्रकाशित होने की बजाए, सप्ताह में दो दिन प्रकाशित होने लगा परन्तु वह भी बन्द हो गया और "प्रावदा" ने दम तोड़ दिया। यह भी कहा जा रहा है कि इसके बन्द होने की तात्कालिक वजह यह है कि जिस भवन में इसके कार्यालय थे इसका किराया वह न दे सके। जब तक रूस में कम्यूनिस्ट सरकार थी यह "प्रावदा" के सारे व्यय स्वयं वहन करती थी परन्तु अब कम्यूनिस्ट सरकार की समाप्ती के साथ ही इसकी मौत भी निश्चित हो गई और इस प्रकार कम्यूनिस्ट रूसका सबसे बड़ा समाचार पत्र अपनी मौत मर गया। —श्री के० नरेन्द्र

सार्वदेशिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान	—महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२
प्रकाशन का समय	—प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम	—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	—भारतीय
पता	— सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ आसफ अली रोड महर्षि दयानन्द भवन, रामलीलामैदान नई दिल्ली-२
सम्पादक	—श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	—भारतीय
पता	—पूर्ववत
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी हैं साझीदार या हिस्सेदार हैं सम्पूर्ण पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं उनके नाम व पते।	—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्र की स्वामिनी है।

मैं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान एव विश्वास है सही है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रकाशक व मुद्रक

आर्य समाज स्थापना दिवस

ले० पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी एम. ए., एम. फिल., जबलपुर सिटी

वैदिक सिद्धान्तो के व्यापक प्रचार व कुरीतियो को मिटाने के लिए अनेक लोगो के आग्रह पर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती (१८२५-१८८३ ई०) ने आर्य समाज की स्थापना बम्बई मे चैत्र शुक्ल १९३२ विक्रमी अर्थात् अप्रैल १८७५ मे की थी। यद्यपि सभा सत्सग के रूप में विधिवत प्रारम्भ १० अप्रैल १८७५ ई० शनिवार को सायकाल ५।। बजे हुई थी, परन्तु उसके पहिले पुराने नियमो का प्रारूप बनाकर स्वामी जी की भी स्वीकृति ले ली गई थी। अतएव आर्यसमाज की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (७ अप्रैल १८७५ ई० बुधवार) को मान ली गई है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सम्वत्सर व युगादि का भी प्रारम्भ होता है। इस प्रकार आर्यसमाज भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जिसकी स्थापना अग्रेज ए ओ ह्यूम द्वारा १८८५ ई० में हुई थी, १० वर्ष पुरानी सस्था है।

आर्यसमाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य तो वेद की शिक्षाओ का व्यापक प्रचार ही है, जैसा कि उसके तीसरे नियम मे कहा गया है कि 'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इसके साथ ही उसके छठे नियम मे यह भी कहा गया है कि ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

आर्यसमाज चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य सत्यवादी, सदाचारी, ईश्वर-भक्त और धार्मिक बने जिससे कि वह सभी प्रकार के दुःखो से छूटकर सुखी होवे और मुक्ति प्राप्त करे।

लोगो में धर्म के स्वरूप के सम्बन्ध मे अनेको रूढिया और भ्रान्त विचार प्रचलित हैं। सभी लोग अपने विचारो को सत्य उचित व आवश्यक और अन्य विचारों को मिथ्या व अनावश्यक मानते है। परन्तु महर्षि दयानन्द ने अनेकश लिखा है कि सत्य और न्याय का ही दूसरा नाम धर्म है। जो कि सभी लोगो के लिए और सभी कालो मे एक ही होता है भिन्न-भिन्न नही।

किसी भी बात को सत्य मान लेने से पहिले उसकी भलीभाति परीक्षा कर लेनी चाहिए। स्वामी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास के मध्य मे सत्यासत्य की परीक्षा के लिए पाच कसोटिया प्रस्तुत की हैं।

१—जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव और वेदो के अनुकूल हो वह-वह सत्य और जो-जो उससे विरुद्ध हो वह असत्य है।

२—जो-जो बाते सृष्टिक्रम अर्थात् विज्ञान के अनुकूल हो वे सत्य और जो बातें सृष्टिक्रम के विरुद्ध हैं वे सब असत्य। इसलिए विद्या विरुद्ध बातो को कभी भी न मानना चाहिए।

३—जो-जो बाते आप्त पुरुषो अर्थात् सत्यवादी, निष्कपटी और धार्मिक विद्वान् के आचरण व उपदेश के अनुकूल हो उसी को ग्रहण करना चाहिए। छली, कपटी और धूर्त लोगों की चिकनी चुपडी और लच्छेदार बातो अथवा थोथे तर्कों के भ्रमजाल मे फसकर अपना बहुमूल्य जीवन नष्ट नही करना चाहिए।

४—अपनी आत्मा की पवित्रता और विद्या के अनुकूल बातो को ही ठीक समझना चाहिए। जिस प्रकार सुख अपने को प्रिय और दुःख अप्रिय है, उसी प्रकार सभी मनुष्यो व अन्य जीवो के लिए भी समझ लेना। तब किसी भी बहाने से किसी भी जीव का वध करना, बलिदान करना या कष्ट पहुचाना उचित नही कहा जा सकता है।

५—न्याय शास्त्र के अनुसार आठ प्रमाणो से सत्यासत्य की परीक्षा होती है, परन्तु उसमें छल, धूर्तता या भ्रम न हो। एक जादूगर अपने अद्भुत खेल दिखलाकर सबको आश्चर्य चकित कर देता है, परन्तु वह सब वैसा ही सत्य नहीं होता जैसा कि वह दिखलाता है, वास्तविक व सम्पूर्ण सत्य को वह अपने कौशल से छिपा देता है। वे आठ प्रमाण हैं १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ उपमान, ४ ऐतिह्य अर्थात् वास्तविक व सत्य इतिहास, ५ शब्द अर्थापत्ति जैसे किसी पिता ने अपने पुत्र को पूर्व दिशा मे जाने को कहा तो अर्थापत्ति से अन्य दिशाओ में जाने का निषेध है। यदि यह कहा जाय कि बादलो से वर्षा होती है तो अर्थापत्ति से यह भी जाना जाता है कि बिना बादलो के वर्षा नहीं होती। ७ सम्भव जो बातें सम्भव हों वे ही सम्भव हो सकती हैं उन्ही को सत्य माना जा सकता है। अन्ध श्रद्धावश मन गढन्त गपोडो और असम्भव बातो को भी सत्य नही मान लेना चाहिए। जो बाते सत्य होती है वे त्रिकाल मे भी सत्य होती हैं। ८ अभाव जैसे किसी ने किसी से पानी मगवाया तो विदित हुआ कि वहा उस पानी का अभाव था, अतएव जहा पर पानी था वहा से ले आया।

न्याय दर्शन मे इन प्रमाणो को समझ कर बताया गया है कि जिससे लोग हेत्वाभास (जो वास्तविक कारण है नहीं, परन्तु गलत तर्क के कारण मालूम पडता है) छल इत्यादि से बच सकें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश मे चतुर्दश समुल्लास के बाद 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' के आरम्भ मे लिखते हैं—

'सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् सार्वजनिक धर्म वह है जिसको सदा से सब लोग मानते आए हैं, मानते हैं और आगे भी मानेंगे, इसीलिए उसको सनातन या नित्य धर्म कहते कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके। जिस बात को आप्त अर्थात् सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी, परोपकारक व पक्षपात रहित विद्वान् मानते हैं वही सबको जानने योग्य है। और जिसको वे आप्त लोग नही मानते हैं वह सत्र अमन्तव्य होने से ग्रहण करने योग्य नही होता। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हू कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना

(शेष पृ० ८ पर)

३ अप्रैल पुण्य तिथि पर विशेष

आर्यसमाज के लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

ले० श्री प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु वेद सदन अबोहर

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज का आर्यसमाज के इतिहास में बहुत ऊंचा स्थान है। आपका जन्म सन् १८७७ में लुधियाना जिला के मोही ग्राम मे एक प्रतिष्ठित सिख जाट परिवार मे हुआ। यही वह वर्ष है जब महर्षि प्रथम बार पजाब में वेद ज्ञान की निर्मल धारा बहाने पधारे। लुधियाना नगरी को सर्वप्रथम उन्होने अपने अमृत वचनो से तृप्त किया।

स्वामी जी ने सन् १९०० मे सन्यास लेकर प्राणपुरी नाम पाया। आर्यसमाज के नेताओं व विद्वानो मे सर्वप्रथम आपने ही सन्यास लिया। आपको वैदिक धर्म की घुट्टी पिलाने वाले महात्मा का नाम विष्णुदास था। वह उदासीन सम्प्रदाय के महन्त थे। बड़े विद्वान् और अनुभवी वैद्य थे। उन्ही के सत्सग से आप विरक्त हुए। बिना किसी सभा सस्था की सहायता के श्री स्वामी जी ने सन्यास लेकर दक्षिणा पूर्वी एशिया के देशो में तीन वर्ष तक वैदिक धर्म का प्रचार किया।

विदेशो से लौटकर तीन वर्ष तक पैदल भारत का भ्रमण किया। तब आप प्रायः साधु मण्डली के साथ भ्रमण करते थे। जहां-जहां ऋषि गए, उन सब स्थानों की आपने यात्रा की। तब आपका आर्यसमाज मे कोई वैधानिक सम्बन्ध न था तथापि लगन ऐसी कि शब्दों मे हम कुछ कह नही सकते।

स्वामी जी तब वर्षों कोपीनधारी रहे। आपकी लम्बी चौड़ी काया व तेजस्वी मुख देखकर भक्तजन बहुत निहाल होते थे। साधुओ में स्वामी जी वैदिक धर्मका प्रचार करते। दुःखियो, रोगियो को औषधियां भी बताते थे। आपका यूनानी व आयुर्वेदका गहन अध्ययन था। आप पंजाबके मालवा ग्राम के एक गुरुद्वारे में ठहरे हुए थे कि एक स्त्री दोपहरके समय औषधि लेने का बहाना बनाकर आ गई। तब वहां श्री महाराज जी ही अकेले थे। उसे दूर से आता देखकर आपने डांटा वह न रुकी। आकर महाराज की डांट फटकार सुनकर उसने स्वीकार किया कि वह वासना की मारी आई है।

श्री महाराज जी ने कहा, 'जा मैं वैद्यक को तो आज से ही छोड़ता हूं परन्तु ब्रह्मचर्य व्रत का पालन नही छोड़ सकता।" इतिहास साक्षी है कि इसके पश्चात् आपने कई वैद्यो व हकीमो को पढ़ाया परन्तु किसी रोगी को कभी औषधि न दी।

आप दिन मे एकही बार भोजन किया करते थे और वह भी १२ बजे। यदि १२ से ऊपर समय हो जाए तो भोजन नही करते थे फिर अगले दिन १२ बजे ही करते थे। इस कड़े नियम के कारण आपको जीवन में अनेक बार वेद प्रचार करते हुए तीन-तीन दिन भूखे रहना पड़ा। एक बार चार दिन भी भूखे रहे। प्रचार फिर भी करते थे। कभी भी भोजन न मिलने की चर्चा किसी लेख व व्याख्यान मे नही किया करते थे।

मैंने जीवन मे अमुक कार्य किया, अमुक कार्य किया—ऐसी कभी भूलकर भी चर्चा नही करते थे। आज तो ऐसे नेता भी आर्यसमाज के पल्ले पड़े हैं जिनके पास एक ही व्याख्यान है और वह है उनकी आत्मकथा। आर्यसमाज कहां से कहां पहुंच गया।

स्वामी जी भिक्षा के भोजन पर जीवन बिता गए। सुखी सम्पन्न परिवार छोड़ा परन्तु भिक्षा के कारण अनेक बार तिरस्कृत भी हुए। एक बार एक माता ने भिक्षा मांगने पर अपने लेपन (गोबर मिट्टी) का सब बचा खुचा माल महाराज पर फैंक दिया। आपने कहा, चलो कुछ तो मिला एक दिन भिक्षा भी मिलेगी। वह देवी फिर स्वामी जी की सहनशीलता देखकर उनकी बड़ी श्रद्धालु बन गई। ऐसे कितने लोगों के जीवन आपके कारण पलट गए।

आप हैदराबाद सत्याग्रह के फील्ड मार्शल बने तो चारपाई पर सोना छोड़ दिया, जूता छोड़ा, और करखाना छोड़ा और जेल जैसी जवार की रोटी ही खाते थे। वस्त्र तक त्याग दिए।

लोहारू में आपने नवाब से टक्कर ली तो आपके सिर पर कुल्हाड़ा चलाया गया। पैंसठ वर्षीय महात्मा पर सारा दानव दल टूट पड़ा। आपकी जम कर राक्षसों ने पिटाई की परन्तु बाल ब्रह्मचारी ने बड़े-बड़े सब प्रहार सहे। आज हम ऐसे शूर शिरोमणि को ही भूल चुके हैं। आपने मालेरकोटला के नवाब से भी टक्कर ली और विजयी हुए। सिन्ध में सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा तब भी आप ही सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ता प्रधान थे।

लाहौर में खुदाबख्श नाम के एक पहलवान ने महाशय राजपाल जी पर छुरे से वार किया तो उस समय आप वहीं महाशय जी की दुकान पर बैठे थे। आपने घातक को वही धर दबोचा। उसके हाथ की कलाई को ऐसे कस कर पकड़ा कि मानो ब्रह्मचारी का पंजा नहीं, कील है। आपकी इस अद्वितीय शूरता के लिए प्रथम आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आपका आर्य समाज ने अभिनन्दन किया। प० मदन मोहन जी मालवीय आपकी शूरता की गाथा सुनकर गद्गद् हो गए।

आप देश हित कई बार बन्दी बनाए गए। जलियां वाला बाग के खूनी कांड के समय आपने कांग्रेस की बहुत सेवा की। जब मार्शल के कारण पजाब मे आतक था तब भी जो-जो कार्य आपको सौपा गया आपने उसे करके दिखाया। १९३० के आन्दोलन मे आप पजाब में कांग्रेस का सत्याग्रह चलाते रहे। लाहौर मे कांग्रेस की एक सभा हुई। तब भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव पर अभियोग चल रहा था। आप सभा के प्रधान थे। आपने वहां अध्यक्ष पद से ऐसा भाषण दिया कि सरकार आपकी बागयाना तकरीर को सहन न कर सकी। अगले रविवार आप आर्य समाज मन्दिर जा रहे थे कि बन्दी बना लिये गये।

हाथी की सूड के समान आपकी भुजाओ को हथकड़ी ही न लगाई जा सकी। आप पर अभियोग चला। दण्डित हुए। आप पर पजाब के गवर्नर की हत्या करने का षडयन्त्र रचने का भी दोष लगाया गया। भारत छोड़ो आन्दोलन में आपको फिर बन्दी बनाया गया। इस बार सेना मे विद्रोह करवाने का भयकर दोष लगाकर आपको सहस्र यातनाएं दी गई। वायसराय के आदेश से आपको पकड़ा गया। आपको अज्ञात स्थान पर ले जाया गया सब कुछ इतना गुप्त रखा गया कि आपके शिष्य और पंजाब की सरकार के लौहपुरुष चौधरी छोटूराम व पत्रकार शिरोमणि महाशय कृष्ण जैसे प्रतिष्ठित आर्य नेता को भी यह पता न चलने दिया गया कि आपको कहां ले जाया गया है। बहुत समय के बाद पता चला कि आपको शाही किला लाहौर मे रखा गया है।

साधु ने पूछताछ के समय सब यातनाएं तो सह लीं परन्तु किसी भी गृहस्थी का नाम व अता पता न बताया। अपने ऊपर ही सब कुछ झेल लिया। ऐसे महाबलि दानी संन्यासी नेता का गुणगान करने में यह लेखनी अक्षम है।

दस वर्ष तक सभा के अधिष्ठाता वेद प्रचार रहे। उपदेशक विद्यालय के आचार्य भी रहे परन्तु सभा पर आपका कोई भार न था। न भोजन लिया, न वस्त्र लिया और न कभी किसी कार्य के लिये सभा से एक पैसा लिया। हां सभा के गुरुदत्त भवन के नलके का जल अवश्य पिया करते थे। ऐसे त्यागी वीतराग महापुरुष पर हम जितना भी गौरव करें थोड़ा है।

स्टेशन पर गये। कहीं का टिकट मांगा। बाबू ने कहा कि पैसे कुछ कम हैं। आपने कहा इतने मे जहां का भी टिकट आता है आप दे दें। उसने पूछा आपने महाराज कहां जाना है? स्वामी जी ने कहा उपदेश ही देना है जहां भी जायेंगे वहीं उपदेश दे देंगे। ऐसे कर्मयोगी महात्मा की सेवा का मूल्यांकन तो करिए।

आपने आर्य समाज को जितने साधु सन्यासी, वानप्रस्थी, उपदेशक, विद्वान् व ब्रह्मचारी दिये इतने आज तक कोई दूसरा व्यक्ति नहीं दे सका। आज भी कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और गुजरात से लेकर बंगाल तक आप के शिष्य वेद प्रचार मे जुटे हुए हैं। आर्य समाज के गौरव स्वामी सर्वानन्द जी महाराज कर्नाटक के वयोवृद्ध प० सुधाकर जी चतुर्वेद और पश्चिमी तट पर स्वामी सदानन्दजी, बंगाल के प्रियदर्शन जी व शास्त्रार्थ महारथी प० शान्तिप्रकाश जी सब आपकी देन हैं। आर्य मात्र का कर्तव्य है कि इस महामुनि, दीनबन्धु, दलितोद्धारक, बालब्रह्मचारी आचार्य के चरण चिन्हों पर चलकर धर्म रक्षा करें।

आर्य समाज के स्वर्णिम नियम

श्री यशपाल जी आर्यबन्धु आर्यनगर मुरादाबाद (उ०प्र०)

वैसे तो श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव वाले मनुष्यों के किसी भी संगठन को आर्य समाज की संज्ञा दी जा सकती है तथापि यहां आर्य समाज से तात्पर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित एक समाज विशेष से है। अतः इस सन्दर्भ में कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा १० अप्रैल,१८७५ ई० को जिस बुद्धिवादी आन्दोलन की स्थापना की गई थी, उसी का पञ्जीकृत नाम 'आर्य समाज' है।

प्रारम्भ में इस समाज के २८ नियम बनाये गये थे। इनमें इसके उद्देश्यात्मक और संगठनात्मक दोनों प्रकार के नियम शामिल थे। किन्तु बाद में लाहौर में इसके उद्देश्यात्मक और संगठनात्मक नियमों को अलग-अलग कर दिया। वर्तमान दस नियम इसके उद्देश्यात्मक नियम हैं जबकि संगठनात्मक नियमों को उपनियमों की संज्ञा दी गई। आर्य समाज के उद्देश्यात्मक नियम यद्यपि गणना में केवल दस है तथापि इनमें मानवमात्र के सर्वांगीण विकास की सम्पूर्ण योजना निहित है। वस्तुतः आर्य समाज के नियम मानव निर्माण के दस अनुपम सूत्र एवं सुनहरी असूल हैं। इनको अपना कर कई भी स्थापित विश्व संगठन आर्य समाज के उद्देश्यों के घोषणा पत्र भी हैं। इनमें न केवल आर्य समाज के तत्वचिंतन का ही हमें बोध होता है अपितु व्यक्ति के निजी सार्वजनिक सामाजिक नियमों का भी बोध होता है अतः आइए! इन नियमों पर थोड़ा विचार करें।

प्रथम नियम—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

आर्य समाज का यह नियम आस्तिकता का पावन उद्घोष है। यह नियम जहां ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारता है, वहां उसे सब सत्य विद्या और विद्या द्वारा जानने योग्य पदार्थों का आदिकारण भी कह रहा है। यहां ईश्वर को जिस सत्य विद्या का आदि कारण कहा गया है उसकी व्याख्या तीसरे नियम में कर दी गई है और वह ईश्वरीयज्ञान वेद है। ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में अपना ज्ञान मानवमात्र के कल्याण के लिए चार ऋषियों के अन्तरात्मा में प्रकाशित करता है। अतः ईश्वर वेद विद्या का आदि मूल है दूसरा आदि मूल विद्या के द्वारा ज्ञेय पदार्थों का है। विद्या से वही पदार्थ जाने जाते हैं जो कार्यावस्था में हों, क्योंकि इनकी कारण अवस्था तो सर्वथा अव्यक्त एवं अगम्य हुआ करती है। यही कारण है कि ईश्वर को कारणावस्था अर्थात प्रकृति का आदिमूल नहीं कहा गया। आर्य समाज ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीनों को अनादि मानता है। प्रकृति सत रज और तम की साम्यावस्था का नाम है। ईश्वर अपनी सामर्थ्य से साई हुई निश्चेष्ट प्रकृति को साम्यावस्था से विषमावस्था में परिवर्तित कर जगत की सृष्टि करता है। स्पष्ट है कि ईश्वर वेद विद्या और प्राकृतिक पदार्थों का आदिमूल है, मानव द्वारा कल्पित एवं विकसित ज्ञान तथा मानव द्वारा प्राकृतिक पदार्थों से निर्मित विभिन्न पदार्थों का नहीं।

यहां यह भी समझ लेना चाहिए कि विद्या दो होती है। एक सत्य विद्या दूसरी लौकिक विद्या। सत्य विद्या नित्य होती है। उसमें किञ्चिन्मात्र भी कभी परिवर्तन नहीं होता और लौकिक विद्या जो मनुष्यों की कल्पना से उत्पन्न होती है या विकसित होती है, परिवर्तित होती रहती है। अतः वह अनित्य होती है। इसमें महर्षि दयानन्द का कथन है कि—'शब्द दो प्रकार का होता है—एक नित्य और दूसरा कार्य। इसमें जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध परमेश्वर के ज्ञान में हैं वे सब नित्य ही होते हैं और जो हम लोगों की कल्पना से उत्पन्न होते हैं वे कार्य होते हैं।' (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदानां नित्यत्व विषय.)।

कोई-कोई सज्जन महर्षि के इस आशय को न समझकर तथा आर्यसमाज के इस नियम की भाषा को मनमाने ढंग से तोड़-मरोड़ कर उपस्थित कर दिया करते हैं और फिर उसके मनमाने अर्थ भी करने लग जाते हैं। हमारी मति में यह महर्षि की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं। श्री मोहन लाल विष्णुलाल पण्ड्या ने 'आर्य समाज के नियमों की अपूर्व व्याख्या' नाम से एक पुस्तक लिखी थी, जिसका प्रथम संस्करण सन् १८९७ ई० में प्रकाशित हुआ था। जनज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली ने मई, १९७१ ई० के अपने अंक में इसे पुनः प्रकाशित किया है। इसमें आर्यसमाज के प्रथम नियम की भाषा को उन्होंने बदलकर इस प्रकार कर दिया है—'जो सब सत्य विद्या और पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, (जनज्ञान पृष्ठ ९२) यहां उन्होंने प्रथम तो 'जो' को अपने स्थान से हटाकर वाक्य के प्रारम्भ में रख दिया है और 'पदार्थ' और 'विद्या' जो दो अलग अलग शब्द थे, मिलाकर एक शब्द 'पदार्थ विद्या' कर दिया है। इससे अर्थ का अनर्थ हो गया है। इस प्रकार आर्य समाज के प्रथम नियम की सर्वथा निर्दोष भाषा के दोष दिखाकर उसे तोड़-मरोड़ डाला है। उन्होंने ऐसा क्यों किया? इसलिए कि इससे वे यह दर्शाना चाहते हैं कि—'यहां पदार्थ विद्या' शब्द का प्रयोग हम को सचेत करता है कि इस नियम के रचने वाले ने यहां विद्या को दो भेद से माना है—जैसे सत्य विद्या और पदार्थ विद्या। इन दोनों विद्याओं की संज्ञाओं के बीच में 'और' शब्द भी प्रयोग किया है।' (देखें जनज्ञान उपरोक्त, पृष्ठ १३) फिर आगे इसकी व्याख्या में पण्ड्या जी लिखते हैं कि—'निदान इससे और भी स्पष्ट है कि नियम के रचने वाले ने यहां पर सत्य विद्या से तो परा और पदार्थ विद्या से अपरा विद्याओं को माना है पदार्थ विद्या से=सृष्टि विद्या व प्रकृति विद्या अर्थात जगत के कारण की विद्या।' (वही, पृष्ठ ३४) पण्ड्या जी ने यह निष्कर्ष महर्षि के ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद विषय विचार के निम्न उद्धरण से निकाला है। यथा—वेदों में दो विद्या है एक अपरा और दूसरी परा। इनमें से अपरा यह है कि जिससे पृथ्वी और तृण से लेके प्रकृति-पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना होता है और दूसरी परा जिससे सर्वशक्तिमान ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है। यह परा विद्या अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम है, क्योंकि अपरा का ही उत्तम फल परा विद्या है।''

यदि गम्भीरता से महर्षि के इस उद्धरण को पढ़ें तो पता चलता है कि महर्षि अपरा विद्या को भी वेद से ही प्रादुर्भूत मानते हैं और वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, अतः स्पष्ट है कि अपरा विद्या भी सत्य विद्या ही हुई। यह और बात है कि परा विद्या की अपरा विद्या से श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हैं। तथापि वेद से ही प्रादुर्भूत होने से अपरा विद्या को भी सत्यविद्या ही मानते हैं। अतः पण्ड्या जी की पदार्थ विद्या जिसे वे सृष्टि विद्या भी कहते हैं महर्षि के अनुसार सत्य विद्या ही ठहरी। अतः इन्हें अलग-अलग करने की कोई आवश्यकता नहीं रहती और न ही इसका कोई औचित्य ही रहता है। महर्षि केवल ब्रह्म विद्या को ही सत्य विद्या मानते हों—ऐसी बात नहीं और साथ ही वे वेद में केवल ब्रह्म विद्या को ही नहीं मानते। वे अन्य विद्याओं को भी वेद से निकली हुई मानते हैं। अतः वेद से निकली हुई अन्य विद्याएं भी ब्रह्म विद्या की ही भांति सत्य विद्याएं ही हैं। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि का निम्न प्रश्नोत्तर इसमें प्रमाण है।

प्रश्न—वेदों में सब विद्या हैं या नहीं?

उत्तर—सब हैं, क्योंकि जितनी सत्य विद्या संसार में हैं, वे सब वेदों से ही निकली हैं। उनमें से पहले ब्रह्म विद्या संक्षेप में लिखते हैं। (ब्रह्म विद्या विषय)।

यहां पर महर्षि ने केवल एक अर्थात ब्रह्म विद्या को ही सत्य विद्या नहीं माना अपितु बहुवचन का प्रयोग कर अनेक सत्य विद्याएं मानी हैं। महर्षि की यह शब्दावली बता रही है कि ब्रह्म विद्या ही अकेली सत्य विद्या नहीं (भले ही वह परा विद्या ही क्यों न हो) अपितु वेद में वर्णित सभी विद्याएं सत्य विद्याएं ही हैं। जब वेदों में दो विद्याएं अपरा और परा का होना महर्षि मानते हैं और वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते हैं तो फिर अपरा विद्या भी सत्य विद्या क्यों नहीं। स्मरण रहे कि आर्य समाज के तीसरे नियम में भी वेद को सब सत्य विद्याओं अर्थात बहुत सी सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते हैं, केवल ब्रह्म विद्या का ही नहीं। अतः हमारा विनम्र निवेदन है कि आर्य समाज के प्रथम नियम की भाषा को न बिगाड़ कर इसे इसी रूप में समझने का यत्न किया जाना चाहिए। इस नियम का सार यह है कि मनुष्य को वेद विद्या के द्वारा इस कार्य रूप जगत और उसके आदि मूल परमेश्वर का ज्ञान अवश्य ही प्राप्त करना चाहिये। कार्य को देखकर कारण को जानना ही मानव-जीवन की सफलता है। ईश्वर कार्य रूप जगत का और वेद ज्ञान का आदि कारण है।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

(पृष्ठ ७ का शेष)

और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। सभी देशों में जो धर्मयुक्त सत्य बातें हैं उन्हें स्वीकार करना चाहिए और अधर्म युक्त असत्य बातों का त्याग करना चाहिए। मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति और प्रियाचरण सदा करता रहे। और अधर्मी चाहे वह चक्रवर्ती, सनाथ महा बलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे, इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी भी न होवे।"

आर्यसमाज के लोगों ने भारतवर्ष में बहुत से गौरवशाली काम किए हैं परन्तु उनका श्रेय नहीं लिया। देश की स्वतन्त्रता की प्रेरणा तो बालगंगाधर तिलक और फीरोजशाह मेहता जैसे कांग्रेस के नेताओं ने भी सत्यार्थ प्रकाश से ली थी। स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखते हैं कि कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तरों के आग्रह रहित, अपने और पराए का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं। परन्तु भिन्न भिन्न भाषा, पृथक् पृथक् शिक्षा व अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है, बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।" स्वामी जी ने अपने उपदेशों व लेखों में स्वराज्य स्वदेशी स्वभाषा और सच्चरित्र तथा कर्मशीलता की प्रेरणा दी है। वह भी तब जब कि कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था। कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके डा० पट्टाभि सीतारमैय्या ने कांग्रेस के इतिहास में लिखा है कि राष्ट्रीयता आन्दोलन में भाग लेने वाले तीन चौथाई व्यक्ति आर्य समाजी ही थे।

इसके अतिरिक्त आर्य समाज ने बालकों व बालिकाओं की शिक्षा में बहुत बड़ा योगदान किया है। समस्त देश में डी. ए वी स्कूलों कालेजों, आर्य विद्यालयों का जाल सा बिछा दिया अनेक गुरुकुल भी खोले।

स्त्रियों के लिए शिक्षा, स्वयंवर विवाह और विधवा विवाह का द्वार खोल दिया जिसमें उनमें पर्दा प्रथा बाल विवाह आदि कुरीतियां दूर होकर उनकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ। उन्होंने मनु के प्रमाणपूर्वक बताया कि,

> यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ॥ मनु० ३।५६ ॥

अर्थात् जहां नारियों का सत्कार होता है, वहां देवता निवास करते हैं और जहां पर इनका सत्कार नहीं होता वहां सभी क्रियायें निष्फल हो जाती हैं। इसलिए

> पितृभिर् भ्रातृभिश्चैता:, पतिभिर् देवरैस्तथा।
> पूज्या भूषयितव्याश्च बहु कल्याणमीप्सुभि: ॥ मनु० ३।५५ ॥

बहुत कल्याण चाहने वालों, पिता, भाई, पति व देवरों के द्वारा स्त्री का सत्कार करना चाहिए, उसका पालन पोषण व उसे आभूषित करना चाहिए।

उन्होंने वेद के प्रमाण पूर्वक बताया कि वेद की शिक्षा ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र वैश्य, स्त्री, पुत्र व नौकर तथा वनवासियों के लिए भी है—

यथेमां वाचं कल्याणीम् आवदानि जनेभ्य: ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ॥ यजुर्वेद अध्याय २६, मन्त्र २ ॥

उन्होंने यह भी बताया कि पति पत्नी सदैव एक दूसरे को पूर्णत: सन्तुष्ट रखें इसी में ध्रुव कल्याण है—

> सन्तुष्टो भार्यया भर्ता, भर्त्रा भार्या तथैव च।
> यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥ मनु० ३।६०॥

उन्होंने माता, पिता, आचार्य व अतिथि का देववत् सम्मान करने की भी प्रेरणा की।

> मातृदेवोभव, पितृदेवोभव, आचार्य देवोभव, अतिथि देवोभव ॥
> तैत्तिरीय उपनिषद शिक्षावल्ली अनुवाक ११ ॥

स्वामीजी व आर्यसमाज ने यज्ञों का खूब प्रचार व प्रसार किया उन्होंने पशु हिंसा को सर्वथा हटाया। यज्ञ को तो अध्वर कहा गया है जिसमें कोई भी हिंसा नहीं हो सकती। गाय की रक्षा आर्थिक दृष्टि से हजारों गुना लाभकारी है इसे बताने व सिद्ध करने के लिए स्वामी जी ने गोकरुणानिधि पुस्तक लिखी है।

आर्यसमाज का स्पष्ट मत है कि सभी देशों व सभी विचारों के लोग वैदिक शिक्षाओं को जानें और उन्हें अपना कर लाभ उठावें। वेद कहीं भी मनुष्य मनुष्य के बीच पक्षपात नहीं करता। वह परमात्मा की वाणी है जो सभी देशों के सभी स्त्री पुरुषों के लिए है। आओ आर्यसमाज में आओ, आकर के लाभ उठाओ॥

श्री पं० बटेश्वर दयाल दीक्षित द्वारा सात्विक दान



श्री प० बटेश्वर दयाल जी दीक्षित एक साधारण व्यक्तित्व के धनी भावी व्यक्ति, इटावा उत्तर प्रदेश के निवासी हैं और चिरकाल से दिल्ली में निवास कर आर्यसमाज में दीक्षित होकर ऋषि दयानन्द के मिशन के एक सच्चे सेवक हैं। आर्य समाज दीवान हाल के आर्य सभा सद के रूप में प्रविष्ट होकर वहां के उप-प्रधान भी हैं।

जिसके जीवन में तप के साथ त्याग की वृत्ति जाग जाए वही मनुष्य है। प० बटेश्वर दयाल जी ने गृहस्थाश्रम से हटकर सदाचार का जीवन ही जीने का संकल्प लिया। सादा जीवन उच्च विचार ही आपका उद्देश्य है।

व्यक्ति माया का वशी तो होता ही है पर माया को अपने वश में करके त्यागी बनने की कला को धारण करे वही वशी कहलाता है।

प० बटेश्वर दयाल जी ने परिग्रह तो बहुत किया परन्तु उससे बंधे नहीं रहे और अपरिग्रही जीवन जीने का व्रत लिया।

व्यक्ति आमदनी तो करता है पर खर्च नहीं करता है। पर प० बटेश्वर दयाल जी एक उदाहरण हैं कि आपने अपने जीवन में जो (अर्थ) धन एकत्रित किया उसे दोनों हाथों से बांटा भी।

आपने आर्य समाज को विगत समय में ५०,०००) (पचास हजार) रु० की एक बड़ी राशि दान दी थी, किसी को पता तक नहीं चला। न माला, न सम्मान की भूख।

अब आपने अपनी माता स्व० श्रीमती फूलमती दीक्षित की स्मृति में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को एक राशि २०,०००) (बीस हजार रु०) की स्थिर निधि के रूप में दान दी है। जो दोगुनी होने पर उसके ब्याज से पुस्तक छापकर आर्य समाज दीवानहाल के उत्सव पर वितरित की जायेगी।

माननीय श्री प० बटेश्वर दयाल जी एक हमारी परम्परा में अपना अनुपम योगदान देकर यश के भागीदार बने हैं।

प्रभु उन्हें दीर्घायु करे जिससे वह हम सभी के लिये प्रेरणा प्रद बनें।

—सम्पादक

आर्य समाज गुवाहाटी का २९ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

(प्रहरी सम्वाददाता)

गुवाहाटी ४ मार्च। आर्य समाज गुवाहाटी का २९ वां वार्षिकोत्सव स्थानीय आर्य समाज मन्दिर, डी. ए. वी. स्कूल के प्रांगण में दिनांक एक से तीन मार्च तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस उत्सव में भाग लेने के लिये असम राज्य के विभिन्न भागों से भारी संख्या मे आर्य जनो ने भाग लिया तथा देश के विभिन्न भागों के विद्वानो ने प्रवचन दिया।

एक मार्च को सुबह ८ बजे ब्र० मधुसूदन जी आर्य समाज कलकत्ता द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ का शुभारम्भ किया गया तथा इसमें विशिष्ट सदस्य डा० नारायणदास अध्यक्ष, असम आर्य प्रतिनिधि सभा गुवाहाटी थे। इस यज्ञ के बाद ब्र० मधुसूदन जी द्वारा वेद पाठ किया गया तथा इस उत्सव के शुभ अवसर पर डा० नारायणदास जी ने मन्दिर के प्रांगण में 'ओ३म्' ध्वज फहराया।

इस कार्यक्रम के बाद ऋषि बोध उत्सव के उपलक्ष्य मे एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु किया गया। इस शोभा यात्रा का आयोजन आर्यसमाज, गुवाहाटो के अध्यक्ष हंसराज आर्य के नेतृत्व में ओ३म् ध्वज के साथ किया गया तथा इस शोभा यात्रा में भारी संख्या में नगर निवासियों तथा बाहर से आये आर्यजनों एवं विभिन्न स्कूल कालेज के छात्र एव छात्राओं ने भाग लिया।

१ मार्च की शाम को फिर कार्यक्रम ब्र० मधुसूदन जी के धार्मिक उपदेशों द्वारा हुआ तथा इस अवसर पर स्थानीय पुरोहित, पं० भगवतीप्रसाद विद्या-वाचस्पति एव भजनोपदेशक विद्युतवाहन जी द्वारा ऋषि दयानन्द एव आर्य-समाज के विचारो पर भजन एव प्रवचन किये गये। ब्र० मधुसूदन जी ने अच्छे मानव के गुणों के बारे में बताया।

२ मार्च सोमवार को ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय आर्य समाज मन्दिर डो.ए.वी. स्कूल में सुबह ८ बजे हवन यज्ञ द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डा० नारायणदास जी ने अपना प्रवचन दिया। उन्होंने कहा कि हम सभी ऋषि के ऋणी हैं जिन्होंने हमें हर क्षेत्र में अंधेरे से उजाले की ओर आने के लिए मार्ग दिखाया और देश आजाद हुआ। उन्ही की प्रेरणा से आज देश हर क्षेत्र में आगे बढ रहा है।

३ मार्च मगलवार को सुबह यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्ण आहुति हुई और इसमें प्रमुख यजमान श्री हंसराज आर्य अध्यक्ष, आर्यसमाज महेन्द्रप्रताप मिश्र मन्त्री आर्य समाज एव अन्य प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया तथा ब्र० मधुसूदन कलकत्ता वालो ने यज्ञ के यजमानो को आशीर्वाद दिया।

उसी दिन शाम को स्थानीय डी. ए. वी. स्कूल का वार्षिकोत्सव केन्द्रीय लाइब्रेरी सभा कक्ष मे हुआ। कार्यक्रम को अध्यक्षता श्री आर. एन. सिंह ने की तथा मुख्य अतिथि के. एन. शर्मा रहे।

इस उत्सव में भाग लेने के लिए असम राज्य से निम्न आर्य समाजो ने भाग लिया। आर्य समाज बल्लमगुरो (बिजनी) आर्य समाज माहाबारी (बरपेटा रोड), आर्य समाज निकाशी (नलबाड़ी), आर्य समाज सराड़ा बाड़ी (बरपेटा रोड), आर्य समाज वरनाजुली (बर)।

आवश्यकता है

धार्मिक ट्रस्ट के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता है जिसकी शैक्षणिक योग्यता बी. ए. एव आर्य समाज के सिद्धांतों का जानने वाला हो आयु सीमा लगभग तीस वर्ष अविवाहित अथवा विधुर जो परावर्तन कार्य में रुचि रखता हो। मानदेय १५००) रुपए मासिक योग्यतानुसार अधिक भी विचारणीय है। सम्पर्क करें—

गगादेव शर्मा
सी-११९ सरोजनी नगर
नई दिल्ली-११००२३

मां-बाप को भूलो नहीं

भूलो सभी को तुम मगर मां बाप को भूलो नहीं,
उपकार अगणित हैं कभी इस बात को भूलो नहीं।
क्या-क्या नही किया तुम्हारे जन्म की खातिर अरे,
पत्थर न बनों मां बाप की छाती को कुचलो नहीं।
मुख का निवाला दे अरे जिसने तुम्हें मोटा किया,
अमृत दिया तुमको, जहर उनके लिये उगलो नहीं।
लाखो कमाये हो भले, मां बाप से ज्यादा नही,
सेवा बिना सब राख है मद में कभी फूलो नहीं।
सन्तान की सेवा मिले सन्तान बन सेवा करो,
जैसा करो वैसा भरो-इस सत्य को भूलो नहीं।
जो स्वयं गीले में सो, सुलाती थी तुम्हें सूखो जगह,
मां की बरसती भावना को तुम कभी कुचलो नहीं।
जिसने बिछाये फूल हर कदम तुम्हारी राह में,
उस राहपर के प्राण को कंटक बन कुचलो नही।
धन तो मिलेगा फिर, मगर मां-बाप क्या मिल पायेंगे,
उनके चरण की धूल लेना, तुम कभी भूलो नही।

'ग्रामवासी' लखनऊ से साभार

शहाबुद्दीन का दुराग्रह

पी. एन. ओक की ऐतिहासिक पुस्तक को लोक सभा के पुस्तकालय से हटाने की मांग

नई दिल्ली, ११ मार्च (यू. एन. आई.), लोक सभा में आज इस बात की जोरदार मांग की गई कि लोक सभा के पुस्तकालय से पी० एन० ओक को लिखित इतिहास की पुस्तक को खारिज किया जाये। और इस किताब पर पाबन्दी लगाई जाये। शून्यकाल में मामला उठाते हुए, जनता दल के सदस्य सैयद शहाबुद्दीन ने कहा कि इस किताब में इस किस्म के गुस्ताखाना जुमले हैं जैसे कि पैगम्बर इस्लाम पहले हिन्दू थे, और काबा शरीफ पहले हिन्दू मन्दिर था। उन्होने कहा कि यह इतिहास नही बल्कि एक खास समुदाय की भावनाओं को चोट पहुंचाने की कोशिश है। श्री शहाबुद्दीन ने कहा कि यह आश्चर्य की बात है कि यह पुस्तक लोक सभा को लाइब्रेरी से प्राप्त की है, और मांग की कि इस पुस्तक को लोक सभा के पुस्तकालय से खारिज किया जाये और इस पर पाबन्दी लगाई जाये। इस मांग का मुस्लिम लोग के सदस्य इब्राहीम सुलेमान सेठ और मजलिस इत्तिहाद के एस० एस० ओवसी ने समर्थन किया।

(दैनिक प्रताप, १२-३-९२)

ध्यान योग-शिविर

आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार) में श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे शनिवार चैत्र शुक्ल १ वि० सं० २०४९ तदनुसार ४ अप्रैल १९९२ ई० से चैत्र शुक्ला १० रवि वार १२ अप्रैल १९९२ ई० तक ध्यान-योग-शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा यम नियमादि का पालन कराया जायेगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। शिविर मे यथा समय अन्य विद्वानो के प्रवचन तथा भक्ति सगीत भी होंगे। ७ अप्रैल मध्याह्नोत्तर २ बजे से 'योग और सामाजिक स्थिति' पर सगोष्ठी होगी। ८ अप्रैल बुधवार को साधिका सम्मेलन होगा। अतः योगाभिलाषी अपने इष्ट मित्रों एव परिवार सहित पधार कर प्रशिक्षण प्राप्त करें।

—इन्द्रपाल आर्य, मन्त्री

सम्पर्क लिपिका अभियान गीत

सम्पर्क लिपि का यह अभियान, करे भारत एकात्म महान।
देव भाषा जननी सबकी, देव नागरी लिपि महान॥
भारत रहा बना एक तो, प्रदेश सारे टिके रहेंगे।
विनाश की ओर बढ़े चलेंगे प्रदेश जब सब बटे रहेंगे॥
तेलुगु तामिल मलियालि असमि उड़िया बगाली।
कन्नड़ गुर्जर पजाबी, मराठी उर्दू कश्मीरी॥
ये भाषा बहने आपस मे सपर्कलिपी से जुडी रहे।
एक होकर खडी रहे, देश भाषा के ये अग अग बनी रहे॥
हरियाणा, हिमाचल, उत्तर प्रदेश राजस्थान बिहार, मध्य प्रदेश।
ये प्रदेश हिन्दी के गहवारे राष्ट्रभाषा के ये सहयोगी भी बने रहे॥
सम्पर्क लिपि को अपना कर करो भारत देश महान।
विश्व को भी दे सकोगे, सरल लिपि का यह अनुदान॥
लिपि रोमन का रूप निहारो विसगति का करो विचार।
जगत् का कल्याण करो बोझ का इस कर निस्तार॥
'बट' मे जो 'यु' अ हो जाता पुट मे वही 'उ' बन जाता।
स्पेलिंग सदा रटे चलो, बोझ उसका लिये चलो॥
नागरी को अपना लो, झझट से इस बच निकलो।
जन मानस को जोड लो, सुविधा मे सब खुल खेलो॥
विश्व लिपि का यह सम्मान पाये नागरी लिपि महान।
करो परिश्रम रात दिन, सदैव रख कर इसका ध्यान॥
मुद्रण टकन् सुलभ करो, सम्पर्क देश का एक करो।
विश्व का उपकार करो, ज्ञान मार्ग सुलभ करो॥

—सखेराव कुलकर्णी

विशाल प्रान्तीय आर्य वीर दल सम्मेलन

सिंहस्थ समिति की बैठक दिनाक १-३-९२ के निश्चयानुसार २ व ३ मई १९९२ को सिंहस्थ महापर्व के उपलक्ष्य मे सम्पूर्ण मध्य प्रदेश का द्वि दिवसीय विशाल आर्य वीर दल सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। जिसमे करीब २००० आर्य वीरो के भाग लेने की आशा है।

आर्य वीर दल सम्मेलन मे मार्ग दर्शन हेतु सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पूर्व प्रधान सचालक पूज्यनीय श्री बालदिवाकर जी हस, प्रधान सचालक पूज्यनीय डा० देवव्रत आचार्य दिल्ली, तथा प्रदेश की दोनो सभाओं के प्रांतीय अधिकारी पूरे समय उपस्थित रहेंगे।

इसी अवसर पर शारीरिक शक्ति प्रदर्शन के लिये आधुनिक भीम सत्यवीर शास्त्री व उनके अन्य सहयोगी कार रोकने, जजीर तोडने जैसे अद्भुत कौशल प्रदर्शित करेंगे।

अत आप क्षेत्र के अधिक से अधिक आर्य वीरों सहित कार्यक्रम में पधार कर प्रात की गौरवमयी आर्य शक्ति उच्च अधिकारियो के सामने प्रस्तुत कर प्रदेश का सम्मान वर्धन करें।

—सचिव

विद्वत्सत्कार समारोह

सभी सज्जनो को हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, अनेक शोध ग्रन्थो के यशस्वी प्रणेता स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, एव सस्कृत की महती सेवा के लिये राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विश्व विश्रुत वैदिक विद्वान महामहोपाध्याय प० युधिष्ठिर जी मीमासक को स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता मे विश्व कल्याण धमार्थ न्यास द्वारा समारोह पूर्वक सम्मानित किया जायेगा।

कार्यक्रम १५ मार्च १९९२ रविवार को मध्याह्न २-३० से ५-३० बजे तक आर्य समाज सैक्टर ७ फरीदाबाद मे सम्पन्न होगा।

—ब्र० राजसिंह आर्य

हमने कभी भी मस्जिद तोड़ने की बात नहीं की : भाजपा

लखनऊ, १२ मार्च। उत्तर प्रदेश विधान सभा में आज भाजपा सरकार ने स्पष्ट किया कि उसने कभी भी अयोध्या में मस्जिद तोड़े जाने की बात नहीं कही है।

यह स्पष्टीकरण देते हुए संसदीय कार्यमन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त ने कहा कि भाजपा ने मन्दिर निर्माण का वायदा अवश्य किया था। इस सिलसिले में बाधाएं दूर की जा रही हैं, तथा जल्दी ही निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

श्री गुप्त ने कहा कि भाजपा को मन्दिर निर्माण के लिए स्पष्ट जनादेश मिला हुआ है। इसलिए इस जनादेश का सम्मान सत्तापक्ष व विपक्ष दोनों को ही करना चाहिए।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अयोध्या में जो राम दीवार बनाई जा रही है उसका उद्देश्य विवादित ढांचे की सुरक्षा करना है। इसका मन्दिर निर्माण से कोई सम्बन्ध नहीं है। सरकार ने विवादित ढांचे की सुरक्षा का आश्वासन दे रखा है, इसलिए उसने इस स्थल का अधिग्रहण नहीं किया है।

श्री गुप्त ने कहा कि सरकार मन्दिर निर्माण के प्रति वचनबद्ध है, लेकिन यह काम सरकारी पैसे से नहीं किया जायेगा।

सदन में रामदीवार के निर्माण का मामला सजपा के विधायक एवं पूर्व मन्त्री मोहम्मद आजम खां ने औचित्य के प्रश्न के रूप में उठाया था। उनका कहना था कि संविधान की व्यवस्थाओं के अनुसार किसी भी धार्मिक निर्माण कार्य को सरकारी पैसे से नहीं कराया जा सकता है, लेकिन अयोध्या में ऐसा कर एक धर्म विशेष के लोगों की भावनाओं पर कुठाराघात किया जा रहा है।

विपक्ष के नेता श्री रेवती रमण सिंह ने कहा कि भाजपा ने चुनाव के समय में मन्दिर निर्माण का स्पष्ट आश्वासन दिया था तथा उसने इस सम्बन्ध में अदालती आदेशों को न मानने की बात भी कही थी, लेकिन अब सत्ता में आने पर वह इन दोनों बातों से फिर रही है। ऐसा लगता है कि भाजपा कभी भी मन्दिर निर्माण नहीं करेगी।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज बीसलपुर (पलीभीत) श्री भीमसेन जी प्रधान श्री डा० सत्येन्द्र कुमार जी मन्त्री श्री चन्द्रपाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज बिसवा (सीतापुर) श्री ज्योतिषचन्द्र गुप्त प्रधान श्री अजीत कुमार आर्य मन्त्री श्री बैजनाथप्रसाद रस्तोगी कोषाध्यक्ष चुने गये।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल सुजानगढ़ (राज०) श्री ओमप्रकाश लाहोटी नगर नायक श्री महेन्द्र मुन्धड़ा मन्त्री श्री महेश कुमार अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज लाजपत नगर (रजि०) नई दिल्ली श्री बलदेवकृष्ण जी पिपलानी प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री मन्त्री श्री शादीलाल जी गेरा कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज आर्य नगर मूढ़ बरेली श्री विद्याकर प्रधान श्री जसवन्त सिंह मन्त्री श्री राममोहनराय कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज मन्दिर मुरैना (म० प्र०) श्री विद्याव्रतार्य वैदिक प्रधान श्री वीरेन्द्रसिंह जी तोमर मन्त्री श्री विवेकानन्द जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज रामनाथपुर (गुड़गाव) जिला रायगढ़ श्री रामेश्वर जी प्रधान श्री कांशीराम जी मन्त्री श्री रमाशंकर जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज कृष्णपोल बाजार जयपुर श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति प्रधान श्री रामजीलाल सिंघल श्री सूर्यनारायण गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज स्टेशन रोड पीलीभीत श्री प्रकाशवीर जी प्रधान श्री मोहनलाल आर्य मन्त्री श्री विद्यासिंह जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज लश्कर ग्वालियर श्री भारत भूषण त्यागी प्रधान श्री अभिमन्यु कुमार मन्त्री श्री रामसिंह चौहान कोषाध्यक्ष चुने गये।

ऋषि की आवाज सुनो

जयघोष बोलने से पहले, ऋषि की आवाज सुनो।
ऋषि ने जो सन्देश दिया था, उस पर पुनः विचार करो॥
पैदा होते ही बच्चा, अंग्रेजी भाषा सीख रहा है,
हिन्दी की गिनती नहीं आती, वन टू थ्री बोल रहा है।
यज्ञोपवीत का नाम न जाने, नकटाई को धार रहा है
नमस्ते करना भूल गया है गुडमानिंग सीख रहा है।
विदेशी भाषा से पहले, मातृभाषा का ज्ञान करो॥
ऋषि की आवाज सुनो।

जिस कालिज में लड़का पढ़ता उसी में पढ़ती है लड़की
आकर्षण पैदा करने में फैशन की है नू भड़की।
फिल्मी गाने गा गा करके प्रेम के पींग बढ़ाते हैं
नहीं सुनाई होती है तब प्रेम पत्र भिजवाते हैं।
दुष्परिणामों से बचने को, सह शिक्षा को बन्द करो॥
ऋषि की आवाज सुनो।

लड़की पैदा हो जाने पर, घर में मातम सा छा जाता है
लड़का यदि जन्म ले तो घर खुशियों से भर जाता है।
लड़की का पालन पोषण भी लापरवाही से होता है,
लड़का शीघ्र बड़ा हो जाये, ध्यान विशेष दिया जाता है।
लड़की को लड़का समझो, नारी का मत अपमान करो॥
ऋषि की आवाज सुनो।

ऋषि ने जो सन्देश दिया था उस पर पुनः विचार करो।
जयघोष बोलने से पहले, ऋषि की आवाज सुनो।

—देवराज आर्य मित्र
आर्य समाज बल्लभगढ़, जि० फरीदाबाद

वेद सम्मेलन का आयोजन

बल्लभगढ़ के निकटवर्ती कस्बा तिगाव में वेद विद्या मन्दिर के तत्वावधान में १० मार्च से १ अप्रैल १९९२ तक विशाल वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा संगीत सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर उच्च कोटि के राष्ट्रीय वक्ता एवं संगीताचार्य भाग ले रहे हैं।

यज्ञ के ब्रह्मा

(पृष्ठ ३ का शेष)

आचार, व्यवहार, संस्कार आदि जीवन के सभी पहलुओं को उन्होंने अपने सामने रखा था। उनकी दृष्टि एकांगी न होकर सभी समस्याओं को व्याप्त करने वाली थी।

सामाजिक बुराइयों पर कबीर ने अपने ढंग से तीखे प्रहार किए हैं, परन्तु महर्षि दयानन्द ने इन पर भारी कुठाराघात किया। इस बारे में उनकी अपनी एक विशिष्ट शैली है। अस्पृश्यता भारतीय समाज की एक बहुत बड़ी बुराई है। महात्मा गांधी जी ने अपने स्वतन्त्रता संग्राम में इस बुराई को दूर करने के लिए विशेष अभियान चलाया था तथा उन्हें ही इसका आदिकारक माना जाता है। परन्तु महर्षि, गांधी जी के इस आन्दोलन से पचास वर्ष पूर्व ही सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं—द्विज, शूद्रों (समाज में नीच व दलित समझे जाने वालों) के हाथ का बना खाना खावें। परन्तु वे शूद्र वस्त्रादि से पवित्र रहें।' स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्य समाज अस्पृश्यता निवारण के लिए गांधी जी के आगमन से पूर्व ही सक्रिय था। गांधी जी को भी इस दिशा में आर्य समाजियों का ही सहयोग मिला। स्व० लाल बहादुर शास्त्री ने अपना सार्वजनिक जीवन मेरठ में कुमाराश्रम से अस्पृश्यता निवारण कार्य से प्रारम्भ किया था। इस समय इस कार्य के नेता प्रमुख आर्य समाजी अलगूराय शास्त्री थे। गढ़वाल का डोला पालकी आन्दोलन जम्मू काश्मीर में मेघों का आन्दोलन आर्य समाज की ही देन है।

यदि यह कहा जाए कि भारतीय समाज के प्रत्येक क्षेत्र को नया, स्वस्थ तथा सर्वांग सुन्दर रूप देने में जैसा अद्भुत तथा सार्थक प्रयास महर्षि दयानन्द ने किया वैसा अन्य किसी ने भी नहीं, तो यह अत्युक्ति नहीं होगी।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२९-३-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U नं० ९३
R N 686/57 Licensed to post without Prepayment, Licence No. U 93 Post in N. P.S.O.on 26,27-3-1992

वनवासी आर्य महासम्मेलन की पूर्व घोषित तिथियों मे परिवर्तन

पत्थल गाव रायगढ़ मे २१ से २३ मार्च ९२ तक होने वाले तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन की तिथियो मे परिवर्तन किया गया है। अब यह सम्मेलन ३ से ५ अप्रैल तक आयोजित किया जायेगा। इस सम्मेलन द्वारा भारी संख्या में बिछुड़े हुये भाइयो का वैदिक धर्म मे परावर्तन किया जायेगा। इस आयोजन से वनवासी क्षेत्रो में नई जागृति और चेतना आने की पूरी सम्भावना है।

अखिल भारतीय वाल्मीकि सनातन धर्म सम्मेलन

समाज मे नवचेतना और धर्म, संस्कृति एव शिक्षा के अभ्युत्थान के उद्देश्य से २८ एव २९ मार्च को रवीन्द्र नाट्य गृह इन्दौर म०प्र० मे विराट वाल्मीकि धर्म सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन मे देश के कोने-कोने से सनातन धर्म के अनेकों सत, धर्माचार्य एव महात्मा पधार रहे हैं। इस अवसर पर देश धर्म एव सस्कृति के प्रति सन्त महात्माओ के योगदान के बारे मे विचार प्रकट किये जावेंगे।

शोक समाचार

आर्य समाज बीसलपुर की दो अलग २ शोक सभाओ मे आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता श्री हरदयालजी वैद्य एव अवकाश प्राप्त प्रधान अध्यापक न० पा० प्राईमरी स्कूल बीसलपुर लगभग ९० वर्षीय श्री रामस्वरूप जी भू० पू० मन्त्री आर्य समाज के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। साधारण सभा में सामूहिक रूप से ईश्वर से प्रार्थना की गयी कि परमात्मा इन दोनो व्यक्तियों की आत्मा को सद्‌गति प्रदान करें एव परिवार को हुयी अपूरणीय क्षति को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

—डा० सत्येन्द्र कुमार

चम्बा में दयानन्द नेत्र चिकित्सालय की स्थापना

दयानन्द मठ चम्बा मे दयानन्द नेत्र चिकित्सालय की स्थापना होने से शहर एव ग्रामीण नर नारियो को बहुत सुविधा हो गई है। इस चिकित्सालय द्वारा रोगियो की निःशुल्क सेवा की जा रही है। प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक श्री डा० एस० के० महाजन ने इस चिकित्सालय हेतु अपनी निःशुल्क सेवाए प्रदान की हैं। हि० प्र० के उद्योग मन्त्री श्री किशोरीलाल जी ने इस चिकित्सालय के उद्‌घाटन के अवसर पर आशा व्यक्त की कि निकट भविष्य मे यह संस्थान ख्याति प्राप्त आदर्श चिकित्सालय का रूप लेगा इस अवसर पर उन्होंने अपने एक मास का वेतन ५५००) दान किया। श्रीमती माता जयन्ती गुप्ता ने २०,०००) तथा श्री अमरजीत महाजन ने १०,०००) दान दिया। श्री रामकुमार गुप्ता प्रिंसिपल भारतीय पब्लिक स्कूल चम्बा इस चिकित्सालय के विस्तार हेतु विशेष प्रयास कर रहे हैं।

—आचार्य महावीर एम० ए० आयुर्वेदाचार्य
दयानन्द मठ, चम्बा (हि० प्र०)

नेत्रों का सदोपयोग करें

आख दी भगवान् ने रस्ता दिखाने के लिये।
खोल कर आखें चलो, मंजिल पर जाने के लिये॥
अन्धा न बन कुछ होश कर आखो का सदोपयोग कर।
पापो के मल से दूर रख, आदर्श के ही दर्शन कर॥
जीवन को मत बरबाद कर आंखो पर पर्दा डाल कर।
आखो का ज्योति से ही मन में सद्‌भाव का प्रकाश कर॥
आख वालो आख मे हर चीज की पहचान कर।
आख हजार नेमत हैं, आखो को रख सुधार कर॥
हर समय पर ध्यान रखो, इनकी रक्षा के लिये।
आहार विहार शुद्ध रखो स्वस्थ रहने के लिये॥

—देवराज, आर्य मित्र, बल्लभगढ

श्री विमलकान्त शर्मा को पितृशोक

आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली के पूर्व प्रधान एव निष्ठावान आर्य समाजी श्री चिरंजीलाल शर्मा का १२ फरवरी ९२, को निधन हो गया। वे ८१ वर्ष के थे। वे आर्य सन्देश के सह-सम्पादक व आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री विमल कान्त शर्मा के पूज्य पिता थे।



श्री शर्मा का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रियतम दास रसवन्त आर्य नेता चौधरी लक्ष्मीचन्द एव आर्य समाजो व अनेक संस्थाओ की ओर से भारी संख्या मे लोगो ने अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री शर्मा के शोक संतप्त परिवार मे उनकी धर्म पत्नी श्री लज्यावती, चार पुत्र व तीन पुत्रिया हैं।

आर्य समाज मन्दिर तिमारपुर मे १५ फरवरी को डा० सत्यकाम विद्यालकार के पुरोहित्य मे शान्ति यज्ञ व रस्म पगड़ी हुई। शोक सभा मे श्री शर्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री चिरंजीलाल शर्मा का जन्म १० अप्रैल, सन् १९११ को गाव नगवा, जिला ऊना होशियारपुर मे हुआ था। वहां डी० ए० वी० स्कूल मे प्राप्त शिक्षा के फलस्वरूप कट्टर आर्य समाजी बन गए। सन् १९६९ में टेलीफोन रेवेन्यू विभाग दिल्ली से सेवा निवृत्त हुए थे। वर्षों तक आर्य समाज तिमारपुर मे महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए सेवा की। सन् १९८९ में आर्य समाज तिमारपुर मे आयोजित एक समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने उन्हें सम्मानित किया था। सरल, शान्त, गम्भीर, मिलनसार, समय के पाबन्द, सच्चाई ईमानदारी व आचरण की पवित्रता पर बल देते हुए वे आर्य पर्यन्त समाज सेवा में संलग्न रहे। ऐसे पुण्यात्मा को शतः शतः प्रणाम।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा [illegible]

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- स्त्री और पुरुष को ध्यान रखना चाहिए वीर्य और रज को अमूल्य समझे, जो कोई इस अमूल्य पदार्थ को पर स्त्री, वेश्या या दुष्ट पुरुष के संग में खोते है वे महामूर्ख होते हैं।
- जहां तक बने वहां तक प्रेम से अपनी सन्तानों को विद्वान् और सुशिक्षित करने कराने में धनादि पदार्थो का व्यय करके उनको पूर्ण विद्वान् सुशिक्षायुक्त कर दे और धर्मयुक्त व्यवहार करके मोक्ष का भी साधन किया करे कि जिसकी प्राप्ति से परमानन्द भोगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक ११] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२ चैत्र शु० १० सं० २०४८ १२ अप्रल १९९२

५१४०, ईसाईयों द्वारा क्रास उतार कर स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्य महासम्मेलन में विदेशी पादरियों को भारत से निकालने की जोरदार मांग

कोतबा (रायगढ़) में तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली ७ अप्रेल, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रकाशित विज्ञप्ति के अनुसार रायगढ़ (म०प्र०) के कोतबा ग्राम में ४-५ अप्रेल ९२ को तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

कोतबा में यजुर्वेद पारायण यज्ञ के अवसर पर ५१४० ईसाई युवकों, स्त्री-पुरुषों ने क्रास उतार कर यज्ञोपवीत ग्रहण किये। इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने जल छिड़क कर "पुनन्तु माम् देवजना पुनन्तु मनसा धिया" मन्त्र के उच्चारण के साथ ईसाई वनवासियो को वैदिक धर्म की दीक्षा दी। दो दिन तक लगातार इस यज्ञ मे ५१४० ईसाईयो को शुद्ध करके वैदिक धर्म में मिला दिया गया।

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री स्वामी जी ने भारत सरकार से अपील की कि विदेशी पादरियों को भारत से तुरन्त निकाला जाये। यज्ञस्थल में विदेशी पादरियों भारत छोड़ो के नारों से सारा वातावरण गूंज उठा।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती मध्यप्रदेश विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, गुरुकुल गौतम नगर के आचार्य श्री हरिदेव जी के अतिरिक्त भारी संख्या मे आर्य समाज के नेताओं एवं संन्यासियों ने इस शुद्धिसम्मेलन में भाग लिया।

शुद्ध किये गये वनवासी बन्धुओं के बालकों की शिक्षा के लिए लैलूंगा (रायगढ) में ८.५ एकड़ भूमि में गुरुकुल दयानन्द विद्यालय की स्थापना की गई है जिसमे एकसौ से अधिक बालक शिक्षा ग्रहण कर कर रहे हैं। इस सम्मेलन मे जिन ईसाईयों की शुद्धि की गई है उनके बालकों को भी इस गुरुकुल मे नि.शुल्क शिक्षा दीजायेगी। आज से दो वर्ष पूर्व स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस गुरुकुल की नींव रखी थी और अब वहा भवन बनकर तैयार हो गये हैं।

पंजाब व काश्मीर के विस्थापितों को सम्मान के साथ वहां पुनः बसाया जायेगा

—लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल

आर्यसमाज दीवानहाल के वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके समाज और राष्ट्र को नई शक्ति दी है। उन्होने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को वेद के दर्शन कराये। स्वामी दयानन्द ने मानव समाज के समक्ष यह स्पष्ट किया था कि ससार का मूल तत्व सब प्राणियों में एक है, यानि ईश्वर सर्वव्यापक और एक है। जिस प्रकार युग पुरुष कृष्ण ने मानव समाज को

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

...लाल फोतेदार ने राष्ट्रीय पर्यावरण कार्य में आर्यसमाज की सराहना की

भारत की अखण्डता और आर्यसमाज सम्मेलन में विघटनकारी प्रवृत्तियों को सख्ती से कुचलने की मांग

आर्य समाज दीवानहाल का १०७वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिल्ली २९ मार्च। दिल्ली की एतिहासिक आर्य समाज दीवानहाल का १०७ वां वार्षिकोत्सव लालकिला मैदान मे २७ से २९ मार्च १९९२ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। अन्तिम दिन यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री श्री माखनलाल फोतेदार की आहुति के साथ सपन्न हुई। यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० राजगुरु शर्मा ने इस अवसर पर वेदोपदेश किया। श्री फोतेदार ने कहा कि आर्यसमाज ने राष्ट्र के पर्यावरण और लोगों के मन की शुद्धि का जो बीड़ा उठाया है वह सराहनीय है। यज्ञ से सम्पूर्ण प्राणी मात्र का कल्याण होता है यह हमारे शास्त्र और ऋषि मुनियो का सन्देश है। इसी कारण स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के माध्यम से यज्ञ के प्रचलन को सम्पूर्ण विश्व मे प्रसारित करने का सराहनीय प्रयास किया था।

मध्यान्ह तीन बजे से भारत की अखण्डता और आर्य समाज सम्मेलन-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल थे। (शेष पृष्ठ ११ पर)



आर्य समाज दीवान हाल के वार्षिकोत्सव पर स्वास्थ्य मन्त्री श्री माखनलाल फोतेदार यज्ञ मे आहुति देते हुए। साथ मे श्री विमल वधावन तथा उनकी पत्नी श्रीमती पूनम वधावन। पीछे खड़े हुए श्री सूर्यदेव जी तथा श्री लक्ष्मीचन्द्र जी। मच पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा स्वामी दीक्षानन्द जी विराजमान है।



लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल उद्घाटन भाषण देते हुए। साथ मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प०राजगुरु जी तथा श्री लक्ष्मीचन्द्र जी

पंजाब व कश्मीर के विस्थापित

(पृष्ठ १ का शेष)

अन्धविश्वास, अत्याचार और उत्पीड़ना से मुक्त कराने के लिए संघर्ष किया था, उसी प्रकार स्वामी दयानन्द ने मानव जाति को कुरीतियो, अन्धविश्वासों और विभिन्न प्रकार के शोषणो से मुक्त कराने के लिए कार्य किया था।

सम्मेलन मे पारित प्रस्ताव की चर्चा करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ने राष्ट्र की ओर से देशवासियो को आश्वासन दिया कि पंजाब व जम्मू काश्मीर के विस्थापितो को सरकार सम्मान के साथ उनके पूर्व स्थानो पर बसाने का प्रयत्न करेगी। जब तक ऐसा नही हो जाता तब तक सभी विस्थापितो को राष्ट्रवासी इस कुशलक्षेम के साथ सहयोग करे जैसे कि एक लड़की अपनी मा के संरक्षण मे सुरक्षित रहती है।

केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ ने सम्मेलन मे उपस्थित न हो पाने के कारण अपने लिखित सन्देश में कहा—स्वामी दयानन्द ने पराधीन भारतीयो मे स्वाधीनता की भावना जागृत की।

सम्मेलन ने आर्य जगत के प्रमुख विद्वान डा० वाचस्पति उपाध्याय, अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा के महामन्त्री श्री रमाकान्त गोस्वामी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० राजगुरु शर्मा और सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी अपने अपने विचार प्रकट किये।

सम्मेलन के समापन पर प० राजगुरु शर्मा ने आर्य समाज दीवानहाल के प्रधान श्री मूलचन्द जी गुप्त, मन्त्री श्री सूर्यदेव आर्य समाज के जागरूक कार्यकर्ता चौ० लक्ष्मीचन्द तथा अन्य समस्त पदाधिकारियो और कार्यकर्ताओ का धन्यवाद किया।

सम्पादकीय

भारतीय सम्वत का प्रयोग हो

चैत्र शुक्ला ४ अप्रैल को विश्व नए वर्ष मे प्रवेश कर रहा है भारत के राष्ट्रीय सम्वत् का प्रारम्भ भी इसी दिन से होता है इसमें समय गणना का प्रयोग करना स्वतन्त्रता का द्योतक है। यदि भारत की अपनी गणना पद्धति न होती तो कदाचित विदेशी समय गणना को ग्रहण किए रहने में दोष न होता। परन्तु वौदिक विज्ञान की कसौटी पर सर्वथा खरे सांस्कृतिक जीवन में सदा से व्यवहृत अपनी गणना जब विद्यमान है और उसका ईस्वी सन् के म० ईसा के समान किसी मत विशेष से सम्बन्ध न होकर विश्व से सम्बन्ध है तो उसका व्यवहार करना हमारा अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य भी है।

वर्ष गणना चाहे शालिवाहन से की जाय या विक्रमादित्य से, चाहे म० युधिष्ठिर से प्रारम्भ करे। किन्तु प्रयोग भारतीय विक्रमादित्य के सवत् का होना आवश्यक है। भारतीयता के नाते भारत की जनता और सरकार को इसकी पूर्ति करनी चाहिए।

किसी भी धार्मिक कृत्य के लिए हिन्दू समाज मे पहले संकल्प करने का विधान है। संकल्प में कल्प से लेकर सम्वत्, अयन, ऋतु, मास, पक्ष-तिथि-वार, नक्षत्रादि सबका उच्चारण आवश्यक माना गया है।

यह प्रथा सूचित करती है कि अनादि काल से हिन्दू विचारकों को समय का अत्यन्त सूक्ष्म ज्ञान था। वे काल एव नक्षत्रादि की स्थिति से पूर्ण परिचित रहते थे इस काल ज्ञान के लिए भारतीय ज्योतिष शास्त्र मे बहुत विचार किया है। तुलना की दृष्टि में—

…त गणना में—कल्प, मन्वन्तर, युगादि के पश्चात् सम्वत्सर का नाम आता है। अनेक राजाओं तथा सम्प्रदाय के आचार्यों के नाम पर सम्वत् चलाये गये हैं।

भारतीय सम्वतों के अतिरिक्त विश्व में और भी सम्वत् चलाये हैं तुलना के लिए कुछ मुख्य-मुख्य की तालिका दी जा रही है।

भारतीय सम्वत्

सं०	नाम		वर्तमान वर्ष
१—	कल्पाब्द		१९७२९४९०९४
२—	सृष्टि सम्वत्		१९६५८८२०९४
३—	वामन् ,,		१९६०८८९०९४
४—	श्रीराम ,,		१२५६९०९४
५—	श्रीकृष्ण ,,		५२२१
६—	युधिष्ठिर ,,		५०९८
७—	म० बुद्ध ,,		२५७१
८—	महावीर स्वामी जैन संवत्		२५२२
९—	श्री शंकराचार्य	,,	२२७१
१०—	विक्रम	,,	२०४९
११—	शालिवाहन	,,	१९१७
१२—	कलचुरी	,,	१७४७
१३—	वल्लभी	,,	१६७५
१४—	फसली	,	१४१५
१५—	बंगला	,,	१४१२
१६—	हर्षाब्द	,,	१३८८

इसी प्रकार भारतीय सम्वत् की भांति विदेशीय सम्वत् भी चले हैं—

१. चीनी सम्वत्	९६०२२९३	७. ईरानी सम्वत्	५९९०
२. खताई ,,	८८८३८३९६	८. यहूदी ,,	५७३६
३. पारसी ,,	१८९९१३	९ इब्राहीम ,,	४४१४
४. मिस्री ,,	२७६४८	१०. मूसा ,,	३७०२
५. तुर्की ,,	७६०२	११ यून नो ,,	३५६८
६. आदम ,,	७३४७	१२. रोमन् ,,	२७४६
१३. ब्रह्मा सम्वत्	२५३६	१६. ईस्वी सम्वत्	१९९२
१४. मलयकेतु ,,	२३०७	१७. जावा ,,	१८८१
१५. पार्थिमन ,,	२२४२	१८. हिजरी ,,	१४१७

यह तुलना इस बात को तो स्पष्ट ही कर देती है कि भारतीय सम्वत अत्यन्त प्राचीन हैं। साथ ही वे गणित की दृष्टि से अत्यन्त सुगम और सर्वथा ठीक हिसाब लगाकर निश्चित किए गए हैं।

सम्वत् चलाने की विधि

१—नवीन सम्वत् चलाने की शास्त्रीय विधि यह है कि जिस नरेश को अपना सम्वत् चलाना हो उसे सम्वत् चलाने के दिन से पूर्व कम से कम अपने पूरे राज्य में जितने भी लोग किसी के ऋणी हों उनका ऋण अपनी ओर से चुका देना चाहिए। कहना नहीं होगा—

२—कि भारत के बाहर इस नियम का पालन कहीं नहीं हुआ भारत में भी महापुरुषों के सम्वत् उनके अनुयायियो ने श्रद्धावश ही चलाए। लेकिन भारत का सर्वमान्य सम्वत् "विक्रम" है।

३—और महाराज विक्रमादित्य ने देश के सम्पूर्ण ऋण को चाहे वह जिस व्यक्ति का रहा हो, स्वयं देकर इसे चलाया।

इस सम्वत् के महीनों के नाम विदेशी सम्वतों की भांति मनुष्य या संख्यावाचक कृत्रिम नाम नहीं है।

४—ये नाम आकाशीय नक्षत्रों के उदयास्त से सम्बन्ध रखते है यही बात तिथि व अंश (दिनांक) के सम्बन्ध मे भी हैं। वे भी सूर्यचन्द्र की गति पर आश्रित हैं।

सारांश यह है कि यह सम्वत् अपने अंग उपांगों के साथ पूर्णत: वैज्ञानिक सत्य पर स्थित है।

ईस्वी सन् पर एक दृष्टि

उज्जयिनी सम्राट महाराज विक्रम के इस वैज्ञानिक सम्वत् के साथ विश्व में प्रचलित ईस्वी सन् पर भी ध्यान देना चाहिये। ईस्वी सन् मूल रोमन सम्वत् है।

पहले यूनान में ओलम्पियम सम्वत् था जिसमें ३६० दिन का वर्ष माना जाता था रोम नगर की प्रतिष्ठा के दिन से यही रोमन सम्वत् कहलाने लगा।

ईस्वी सन् की गणना ईसामसीह के जन्म से तीन वर्ष बाद से की जाती है रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने ३६० दिन के बदले ३६५¼ दिन का वर्ष प्रचलित किया।

छटी शताब्दी में डायोनिसियस ने इस सन् में फिर संशोधन किया किन्तु फिर भी प्रतिवर्ष २७ पल ५५ विपल का अन्तर पड़ता ही रहा।

सन् १७२९ में यह अन्तर बढ़ते बढ़ते ११ दिन का हो गया। तब पोप ग्रेगरी ने आज्ञा निकाली कि इस वर्ष २ सितम्बर के पश्चात ३ सित० को १४ सित० कहा जाय और जो ईस्वी सन् ४ संख्या से विभाजित हो सके उसका फरवरी मास २९ दिन का हो।

वर्ष का प्रारम्भ २५ मार्च के स्थान पर एक जनवरी से माना जाय। इस आदेश को इटली, डेनमार्क हॉलैंड ने तभी स्वीकार कर लिया। जर्मनी और स्विटजरलैण्ड ने १७५९ मे, इंगलैण्ड ने सन् १८०९ में और रूस ने इसे स्वीकार किया।

... ... इतना संशोधन होने पर भी इस ईस्वी सन् में सूर्य की गति के अनुसार प्रतिवर्ष १ पल का अन्तर पड़ता है साम्राज्य दृष्टि से यह बहुत थोड़ा अन्तर है पर गणित के लिए यह एक बड़ी भूल है। ३६०० वर्षों के बाद यही अन्तर एक दिन का हो जाएगा। और ६६०० वर्षों के बाद दस दिन का भेद हो जाएगा और इस प्रकार यह अन्तर चालू रहा तो किसी दिन जून का महीना वर्तमान अक्तूबर के शीतल समय में पड़ने लगेगा।

विक्रम सम्वत्

एक बार विश्व राष्ट्र संघ में प्रतिवर्ष तारीख और वार को एक रखने

(शेष पृष्ठ ४ पर)

मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य राम

श्री पण्डित भवानी प्रसाद जी

भारतीय इतिहास के इस निशाकाल के तिमिराच्छन्न नभोमण्डल में कई ऐसी ज्योतियां जगमगा रही हैं, जो इस संसार मरुस्थली के मार्गभ्रष्ट पथिकों को पथप्रदर्शन करके अपनी जीवन यात्रा को पूरी करने में सहायता देती रहती हैं, परन्तु उनमें इक्ष्वाकु-कुल-कुमुद-चन्द्र श्री रामचन्द्र का सर्वोत्कृष्ट-समुज्ज्वल प्रकाश ही इस कड़ी मंजिल को अन्त तक पहुंचाने या पूरी करने में पूरा सहायक और सब से बढ़कर पथप्रदर्शक है। यूं तो इन चमकती हुई ताराओं की संख्या संख्यातीत है, पर उनमें सर्वनयनाभिराम श्री रामचन्द्र का प्रकृष्ट प्रकाश ही सर्वातिशायी और सर्वव्यापी है। यदि इस घनघोर अंधियारी रात्रि में जगद्वन्द्य श्री राम के आदर्श जीवन की जाज्वल्यमान शीतल किरणावली का प्रकाश प्रसार न पड़ता तो भारतीय यात्री का कहीं ठिकाना न था। इस सूचिभेद्यअन्धकार में उनको न जाने कहां से कहां भटकना पड़ता।

इस समय भारत के शृङ्खलाबद्ध इतिहास की अप्राप्यता में यदि भारतीय अपना मस्तक समुन्नत जातियों के समक्ष ऊंचा उठाकर चल सकते हैं, तो महात्मा राम के आदर्श-चरित की विद्यमानता में। यदि प्राचीनतम ऐतिहासिक जाति होने का गौरव उनको प्राप्त है, तो वह सूर्य-कुल-दिवाकर राम की अनुकरणीय अपनी जीवनी की प्रस्तुति से। यदि भरताभिजनों को धार्मिक, सत्यवक्ता, सभ्य और दृढ़व्रत होने का अभिमान है, तो प्राचीन भारत के धर्मप्राण तथा गौरवसर्वस्व श्री राम के पवित्र चरित्र की विराजकता से।

यदि पूर्णपरिश्रम से संसार के समस्त स्मरणीय जनों की जीवनियां एकत्रित की जांय, तो हम को उनमें से किसी एक जीवनी में वह सर्वगुण एकत्र न मिल सकेंगे, जिससे अनुपचार श्रीराम का जीवन भरपूर है। आज हमारे पास भगवान् राम जी का ही एक ऐसा आदर्श चरित्र जीवन है जो अन्य महात्माओं के उपलब्ध चरित्रों में सर्वथा सब से बढ़कर शिक्षाप्रद है। वस्तुतः श्रीराम का जीवन सर्वकर्तव्यों का ऐसा उत्तम आदर्श है कि मर्यादापुरुषोत्तम की उपाधि केवल उनके लिए ही रूढ़ हो गई है। जब किसी को सुराज का उदाहरण देना हो तो "रामराज्य" का प्रयोग किया जाता है।

केवल लोकमर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति बनी रखने के लिए निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्णरूप से पालन करके प्रातःस्मरणीय श्री रामचन्द्र ने ही दिखलाया था।

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः॥ (वाल्मीकिरामायण)

अर्थ—"राज्याभिषेकार्थ बुलाए हुए और वन के लिए विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में मैंने कुछ भी अन्तर नहीं देखा" आदि कवि श्री वाल्मीकि का यह शब्द-चित्र निष्काम कर्मवीर श्री रामचन्द्र जी का ही यथार्थ चित्र था।

श्री रामचन्द्र ने पितृ आज्ञा को शिर धर कर, अयोध्या के महासाम्राज्य को त्यागकर और इसी महाकान्तार के दण्डकारण्य में विवासित होकर अपने प्रेम और सदुपदेश से उस वानर जाति को अपना मित्र बनाया और सुग्रीव से सौहार्द की स्थापना करके उनके धनकलत्रापहारी भ्राता बालि को मार कर उसका राज्य सुग्रीव को दिया तथा अत्याचारी राक्षसों के दमन के लिए महावीर हनुमान के सेनापतित्व में उन्हीं वानरों की अपनी सङ्गठन शक्ति से प्रबल और सुशिक्षित सेना सन्नद्ध की। उसी सेना की सहायता से लङ्काद्वीप के अतुल बलशाली तथा महापराक्रमी राक्षसजाति के साम्राज्य का उसके अधीश्वर प्रबलप्रतापी अनाचारी रावण सहित विध्वंस किया। किन्तु श्री रामचन्द्र सदृश आर्य दिग्विजेता का विजय साम्राज्यविस्तार या सम्पत्तिसञ्चयार्थ नहीं था। उन्होंने विजित प्रदेश में धर्म की विजयवैजयन्ती उड़ा कर, भूतपूर्व लंकेश्वर रावण के स्थान में उसके अनुज, धर्मपरायण का ही प्रजापालनार्थ अभिषिक्त कर दिया। इस प्रकार दक्षिणापथ में आर्यसभ्यता का प्रसार करके अपनी वनवास यात्रा की अवधि पूर्ण होने पर श्रीरामचन्द्र अपनी पैतृक राजधानी अयोध्या में लौट आए और स्वपितृपरम्परासाकेत राज्य के सिंहासन पर अभिषिक्त होकर यावज्जीवन नृपति धर्म का पालन करते रहे।

इस क्षुद्र निबन्ध में पुण्यश्लोक, विश्वविश्रुतकीर्ति, लोकाभिराम श्रीराम की पुण्यगाथा कहां तक वर्णन की जा सकती है। काव्य उनके यशोगान से भरे पड़े हैं। भारतीय कवियों ने अपनी उच्च कल्पना का पूर्ण परिचय देकर शब्दचित्र के जितने मनोरम और सुन्दर स्वरूप बनाए हैं, देववाणी के सिद्धसारस्वतों ने अपनी प्रखर प्रतिभा का जितना चमत्कार दिखलाया है, उसमें से अधिकांश में राम के पथप्रदर्शक पावनचरित्र का वर्णन पाया जाता है। भाषा-कवियों की भी जिह्वा उनका यश वर्णन करने से नहीं थकती। हिन्दी के महाकवि तुलसीदास अपने रामचरितमानस में रामचरित्र का प्रवाह बहाकर अपने को अमर बना गए हैं। बङ्गभाषा की कृत्तिवास रामायण से भी रामचरित्र बङ्गदेश के कुटीर और प्रासादों में गाया जाता है।

हमारे लिए इससे अधिक सौभाग्य और क्या हो सकता है कि हम ऐसे मर्यादापुरुषोत्तम आदर्शचरित्र की सन्तान हैं। उन्हीं पवित्र नाम के जन्मदिन की शुभतिथि इस चैत्र सुदि नवमी है। हमारे पूर्वजों ने हमपर एक यह भी बड़ा उपकार किया है कि इस लोकाभ्युदयकारक जन्म की तिथि इस चैत्र शुक्ला नवमी को हम तक अविच्छिन्न रूप से पहुंचा दिया है। परन्तु आज कल अज्ञानान्धकार में निमग्न आर्यसन्तान रामनवमी प्रभृति जन्मोत्सवों को लाभप्रद रीति से नहीं मनाते और उनके वास्तविक उद्देश्यों को भूलकर अनशन आदि वृथा रूढ़ियों में फंस गए हैं। शिक्षा से आलोकित हृदय सुधारकों और वैदिक धर्मावलम्बी आर्य महाशयों का कर्तव्य है कि लुप्तप्राय-विशुद्ध-वीरपूजा की प्रथा का पुनरुद्धार करें और अपने आदर्श महापुरुषों की जन्मतिथियों और स्मारकों को शिक्षाप्रद प्रकारों से मनाएं तथा सर्वसाधारण के लिए पथप्रदर्शक बनें। आज के दिन मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र के चरित्र के अध्ययन या स्वाध्याय के लिए रामायण की कथा की प्रथा को पुनःप्रचारित करना चाहिए। यज्ञ और दान का शुभानुष्ठान होना चाहिए और अपने पूर्व-पुरुषों के पदचिन्हों पर चलते हुए धर्म के तीनों यज्ञ, अध्ययन और दान के विशेष आचरण में ही ऐसे शुभ दिनों को बिताना चाहिए, जिससे कि हम अपनी उन्नति करते हुए अन्यों के उद्धार के हेतु बन सकें।

(आर्य पर्वपद्धति से)

सम्वत् का प्रयोग

(पृष्ठ ४ का शेष)

के लिए ग्रेगरी कलेण्डर को बदलने की किसी एलिजाबेथ नामक महिला ने प्रार्थना की थी परन्तु यदि ऐसा होता तो गणित की दृष्टि से भूल होगी।

भारत का राष्ट्रीय सम्वत् तो विक्रम सम्वत् ही हो सकता है जिसमें आज तक कोई अन्तर नहीं पड़ा और न पड़ने की सम्भावना है। अतः वैज्ञानिक दृष्टि से भारत का राष्ट्रीय सम्वत् घोषित किया जाए। सूर्योदय के समय से दिन के समय का निर्धारण हो। घंटा-मिनट-सैकिण्ड के स्थान पर होरा, विहोरा, प्रविहोरा रखे जाए। बजे के स्थान पर "इष्टकाल" शब्द का प्रयोग हो।

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

श्री जगदीश प्रसाद एरन आर्य समाज नीमच

आर्य जगत् के महान् तार्किक शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित रामचन्द्र देहलवी प्रायः देहलवी जी के नाम से सम्बोधित किये जाते थे। आपकी आर्य जगत् मे ही क्या सारे भारत मे अपनी विद्वता तर्क शैली, शीरी जुबानी, अथक परिश्रम व धुन के धनी होने के कारण प्रसिद्धि थी। आप अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, अरबी तथा फारसी के पूर्ण विद्वान् थे। आपने वैदिक साहित्य के साथ-साथ पौराणिक व जैन, सनातनी, मुस्लिम व ईसाई धर्म का भी पूर्ण मन्थन किया था।

इस महान् विभूति का जन्म सन् १८८१ मे राम नवमी के पवित्र दिन नीमच केन्ट (म० प्र०) मे हुआ था। आपके पूज्य पिता जी श्री मुन्शी छोटेलाल जी मिजाज से धार्मिक प्रवृत्ति के थे। आपकी माता श्रीमती रामदेई दिल्ली की रहने वाली थी। पण्डित रामचन्द्र जी को आर्य समाजी बनाने का श्रेय इन्ही को है। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा नीमच मे ही की तथा बाद मे आप इन्दौर उच्च शिक्षा हेतु चले गये।

१८ वर्ष की अल्पायु मे ही आपका विवाह दिल्ली निवासी श्रीमती कमलादेवी नामक विदुषी कन्या से हुआ। जीविकोपार्जन के लिए आपने नीमच मे ही एक प्रायमरी स्कूल से अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया किन्तु परमात्मा को जिस विभूति से महान् कार्य करवाने हो वह एक जगह कैसे ठहर सकती है। गृह कलह के कारण कुछ दिन बाद आप अपनी ससुराल देहली आ गये।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। फिर भी धर्म प्रचार के लिये कहीं भी जाते तो तांगा खर्च तक अपनी जेब से देते थे। धर्म प्रचार की ऐसी लगन थी कि लगातार १५ वर्ष (सन् १९१० से १९२५ तक दिल्ली के फव्वारे तथा गांधी ग्राउण्ड पर आप वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप को बतलाते रहे तथा विरोधियों को मुँह तोड़ उत्तर देते रहे। प्रतिदिन हजारों की संख्या मे उपस्थिति रहती थी। धुन के इतने पक्के थे पुत्र तथा पत्नी के देहावसान के दिन भी आपने कथा बन्द न रखी। इस काल मे पण्डित जी की तार्किक शैली तुरन्त बुद्धि व अनुपम कार्य प्रणाली का बोलबाला सारे भारत मे हो गया। आप कुरान पढ़ने के लिए एक हाफिज को गोद मे उठाकर रात को घर लाते व दिन होने से पहले मस्जिद मे छोड़कर आते क्योंकि हाफिज लूला था तथा मुसलमान किसी अन्य मत वाले को कुरान पढ़ने देने के पक्ष मे नहीं थे। इसी प्रकार बड़ी कठिनाई से आपने बाइबिल का भी अध्ययन किया। आप जब सस्वर आयत पढ़ते थे तो अच्छे-अच्छे मौलवी दांतो तले उगली दबा लेते थे। फिरोजपुर वार्षिकोत्सव पर तो इसी लिए एक पठान लड़की ने आपके स्वर पर लट्टू होकर १०) रु० भेंट किए।

आपका पहला शास्त्रार्थ बाड़ा हिन्दू राव मे मुसलमानो से हुआ जिनके निर्णायक न्यायाधीश रेवरेण्ड मिस्टर जुडास थे। विजयश्री का सेहरा आपके मस्तक पर बंधा। आप वैदिक शास्त्रार्थ समर में भीम" नाम से विख्यात हुए। इसके बाद आपने जीवन समर म भारत के प्रत्येक शहर मे घूम-घूम कर विविध मतावलम्बियो से शास्त्रार्थ किए।

आपकी सफलता का राज यह था कि आपको सभी सिद्धान्तो का सही व गम्भीर अध्ययन था। आप कभी किसी दूसरे धर्मावलम्बियों के मौलियो व नेताओ के लिए अपशब्द नहीं कहते थे। सिद्धान्तो को स्वयं के आचरणो में धारण करते थे। आपकी प्रचार की गति का अनुमान इससे लगा सकते हैं कि आप अकेले ने हैदराबाद में ७ दिन मे १२५ व्याख्यान दिये तथा निजाम की नींद हराम कर दी, उसकी धर्मान्धता के विरुद्ध शखनाद आपने ही किया था। पंजाब में हिन्दी रक्षा आन्दोलन के समय कैरो शाही के विरुद्ध विशाल जत्था लेकर सत्याग्रह की आग मे कूद पड़े थे।

लगभग ८० वर्ष की आयु तक इसी तरह घूम-घूम कर धर्म ध्वजा लहराते रहे। इसके बाद आपने बाहर जाना कम कर दिया क्योंकि एक रिक्शा दुर्घटना के कारण आपके बाये हाथ मे कम्पन हो गया था। इसके बाद पण्डित जी लगातार कमजोर होते चले गए। आप अपनी पुत्री के यहां हापुड़ मे रहने लगे। सन् १९६७ तक तो आप इतने कमजोर हो गए कि आप उठ बैठ भी नहीं सकते थे। पूरा परिवार आपकी सेवा करता था।

अक्टोबर १९६७ मे ही आपकी रुग्णावस्था का हाल सुनकर सार्वदेशिक सभा के वर्तमान प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले तथा मन्त्री श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी व वैद्य श्री प्रह्लाद जी आपको देहली ले आए। इर्विन अस्पताल तथा दीवानचन्द नर्सिंग होम में आपका इलाज चला। आर्य-जगत् मे आपकी बीमारी का समाचार जंगल की आग के समान फैल गया। लगातार ३ माह तक मृत्यु से संघर्ष करते रहने के बाद ३ फरवरी को यह ज्योतिर्मय दीप बुझ गया।

४ फरवरी १९६८ के रेडियो ने यह दुःख भरा समाचार सारे संसार को सुना दिया। वैदिक धर्म का प्रबल प्रहरी, शास्त्रार्थ केसरी, महर्षि का अनन्य भक्त ओ३म् का जाप करता हुआ 'ओ३म्' मे विलीन हो गया।

धर्म का राजनीति में स्थान

—भगवान देव 'चैतन्य'

महाभारत के शान्ति पर्व में लिखा है—

सर्वे विद्या राजधर्मेषु युक्ताः

सर्वे लोकाः राजधर्मे प्रविष्टाः

सर्वे धर्माः राजधर्म प्रधानः

अर्थात् सब विद्याएं राजधर्म से सम्बन्धित, सारे लोक राजधर्म के अन्तर्गत आ जाते हैं। सब धर्मों में राजधर्म प्रधान धर्म है। इसी लिए कई शास्त्रकारों ने राजनीति को एक महायज्ञ अर्थात पवित्र और श्रेष्ठतम कर्म बताया है।

महाभारत की उपरोक्त पंक्तियों से हमें मालूम होता है कि राजनीति कितना गहन और श्रेष्ठ कर्म है। आज के तथाकथित नेताओं के कारण राजनीति का स्तर बहुत गिर गया है। इसीलिए आमतौर पर कहा जाने लगा है कि राजनीति का कर्म बहुत ही नीच है। जिस प्रकार से किसी व्यक्ति के आधार पर ही किसी संस्था का उत्थान या पतन निर्भर करता है ठीक उसी प्रकार राजनीति भी अपने आप में अच्छी या बुरी नहीं है मगर यदि यह श्रेष्ठ और पवित्र आदमियों के हाथ में जाए तो वैसी और इसके विपरीत नीच और भ्रष्ट लोगों के साथ आए तो वैसी ही बन जाती है। आजकल प्रत्येक व्यक्ति एषणाओं में डूबा हुआ दिखाई देता है तथा इन एषणाओं की संपूर्ति के लिए वह कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार हो जाता है। राजनैतिक क्षेत्र में यह स्वार्थपूर्ति और भी अधिक विशाल स्तर पर होती है इसलिए वहां जाकर व्यक्ति वह नहीं रह पाता जो वह पहले था। कहा भी जाता है कि सत्ता का मद व्यक्ति को कहीं का नहीं छोड़ता है। राजनीति से इस भ्रष्टता को समाप्त करने के लिए नैतिकता पर बल देना होगा और नैतिकता का आधार ही धर्म है। आज प्रत्येक राजनैतिक नेता बड़े गर्व के साथ कहता फिरता है कि राजनीति में धर्म का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। उनके इस वक्तव्य का भाव मजहब और सम्प्रदायों से हो तब तो बात समझ में आती है मगर यदि वे धर्म को ही राजनीति से बहिष्कृत करना चाहते हैं तो यह एक बहुत बड़ी विडम्बना है। आज स्थिति तो यही है कि धर्म पूरी तरह से बहिष्कृत हो चुका है और इसका कुपरिणाम राष्ट्र और आम नागरिक को भोगना पड़ रहा है। धर्म विहीन राजनीति और राजनीतिज्ञ बिना लगाम की घोड़ी के समान हो चुके हैं। इन पर जब तक धर्म का अंकुश नहीं लगाया जाता है तब तक राजनीति भ्रष्ट ही कहलायेगी। धर्म किन्हीं पोथियों में या बाहरी दिखावों या पहरावों में नहीं है बल्कि धर्म तो एक ऐसी जीवन-पद्धति है जो व्यक्ति को महान से महानतम बनाती चली जाती है। व्यक्ति के महान् बनने से समाज का प्रत्येक क्षेत्र स्वयंमेव ही महान बन जाता है क्योंकि मानव ही मूल इकाई है। हमारा राष्ट्र आज भी सोने की चिड़िया हो है मगर यहां पर फैले हुए भ्रष्टाचार ने इसे खोखला बना दिया है। यह भ्रष्टाचार निहित रूप से फैल रहा है। यथा राजा तथा प्रजा की उक्ति को चरितार्थ करता हुआ यह शहरों में ही नहीं बल्कि गांवों तक फैल चुका है। आज भी सभी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है मगर इसके लिए धर्म की शरण में ही जाना पड़ेगा। आज के राजनीतिज्ञ दोहरा व्यक्तित्व रखते हैं क्योंकि वे दिखना तो धर्मात्मा चाहते हैं मगर कार्य उसके एकदम विपरीत करते हैं। कुछ राजनीतिज्ञ तो राजनीति में धर्म का हस्तक्षेप नहीं मानते हैं और कुछ एक ऐसे हैं जो सम्प्रदायों और मजहबों को ही धर्म समझ बैठे हैं। ये दोनों ही प्रकार के लोग राष्ट्र का किसी प्रकार का हित नहीं कर सकते हैं। धर्म विहीन राजनीतिज्ञ गुणविहीन होकर राष्ट्र का अहित करता है तो मजहबी राजनीतिज्ञ का भी अपना विशाल दृष्टिकोण नहीं होता है। इसलिये ये दोनों ही राष्ट्र के लिए घातक हैं।

प्रजा की सुख शान्ति और समृद्धि तथा उसके चारित्रिक उत्थान और पतन का उत्तरदायी निश्चित रूप से राजा ही होता है। जिस प्रकार से राजा अपना जीवन यापन करेगा उसी प्रकार का प्रभाव आम जनता पर भी पड़ेगा। एक समय था जब इस राष्ट्र में अश्वपति जैसे महाराजा थे जो इस प्रकार की घोषणा करते थे कि—

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।

नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

अर्थात मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस नहीं है, शराबी नहीं है प्रतिदिन अग्निहोत्र न करने वाला नहीं है, कोई मूर्ख नहीं है, कोई व्यभिचारी पुरुष नहीं फिर भला व्यभिचारिणी स्त्री के होने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

अब तनिक पहले के प्रधानमन्त्री की तुलना आज के साधारण से मन्त्री के साथ करें तो तब और अब की राजनीति और उत्कृष्टता एवं निकृष्टता का पता चल जायेगा। वे लोग धर्म में विश्वास रखते थे तथा धर्म को राजनीति का ही नहीं अपितु अपने जीवन का भी अभिन्न अंग मानते थे। उनके जीवन स्वयं तपस्वी जीवन थे मगर आज के लोगों को धर्म कर्म और तप त्याग तो विष के समान लगता है। कारण क्योंकि उनकी अपनी तृष्णाएं और स्वार्थ आड़े आते हैं। इन स्वार्थों की सम्पूर्ति भली भांति हो सके इसी लिये धर्म को राजनीति से बहिष्कृत करने की बात की जाती है। महाराजा जनक जैसे राजा हुआ करते थे जिनके राजमहल किसी गुरुकुल से कम नहीं होते थे। वे स्वयं महान योगी हुआ करते थे। सदा शास्त्र और मोक्ष चर्चा होती रहती थी। इसी प्रकार से राम राज्य को आदर्श माना जाता है तो उसका कारण भी यही है क्योंकि महात्मा तुलसी जी ने उस राज्य का कितना सुन्दर चित्रण किया है—

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज्य नहिं काहुहि व्यापा।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

इस राज्य की उत्कृष्टता के पीछे भी धर्म ही आधार है क्योंकि साफ लिखा है कि किसी को भी तीनों प्रकार के क्लेश दुःखी नहीं करते थे मगर उसका कारण भी साथ ही बता दिया गया है कि सभी लोग आपस में बड़े प्यार के साथ रहते थे। यही नहीं श्रुति के आदेशानुसार अर्थात वेदाज्ञानुसार सभी धर्म पर आरूढ़ होकर अपना-अपना जीवन निर्वाह करते थे। आज धर्म त्याज्य मान लिया गया है क्योंकि उस पर चलने से व्यक्ति के अपने स्वार्थ आहत होते हुए दिखाई देते हैं। मगर यह सर्वसिद्ध बात है कि जब तक धर्म पर नहीं चलता है तब तक चाहे कोई व्यक्ति हो या राष्ट्र हो वह सुखी नहीं रह सकता है। 'सुखस्य मूल धर्मः' मनु महाराज की यह उक्ति अक्षरशः सत्य है। धर्म पर चलने से सुख प्राप्त किया जा सकता है।

धर्म शब्द को आज सभी अपने-अपने स्वार्थों की संपूर्ति के लिये प्रयोग करते हैं। अनेक प्रकार के बढ़ते हुए सम्प्रदायों ने विशेष रूप से धर्म का अहित किया है। इन्हीं सम्प्रदायों से निकले हुए या समर्थित लोग जब राजनीति में आते है तो वे धर्म की सार्वभौमिकता को संकुचित करके आंकते हैं। बाहरी निशानों या चिन्हों आदि को ही धर्म की संज्ञा दे दी जाती है जबकि "न लिंगम धर्मकारणम्" कोई चिन्ह विशेष धर्म नहीं है। धर्म को लोगों ने अपनी २ दुकानें चमकाने के लिये प्रयोग किया है। वास्तव में धर्म के कुछ ऐसे शाश्वत नियम हैं जो व्यक्ति और समाज या राष्ट्र की सुख समृद्धि के आधार हैं। मनु महाराज जी का कितना स्पष्ट कथन है—

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।

तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो, मा नो धर्मो हतोऽवधीत॥

अर्थात मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश और रक्षित किया हुआ धर्म रक्षक की रक्षा करता है। इसलिए धर्म का हनन कभी नहीं करना चाहिए। क्योंकि मारा हुआ धर्म उस व्यक्ति विशेष को भी मार देता है। अतः धर्म की सदा रक्षा करनी चाहिए।

मनु महाराज के इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को सामने रखकर यदि चिन्तन किया जाए तो इससे साफ स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति धर्म के नियमों की अवहेलना करता है या उन पर नहीं चलता है—उस व्यक्ति का नाश निश्चित है। इसके विपरीत जो धर्म के नियमों का पालन करता है उस व्यक्ति का निरन्तर उत्थान होता चला जाता है। ठीक इसी बात को हम राष्ट्र पर घटा सकते हैं कि जो राष्ट्र धर्म का अपनी राजनीति में समावेश करता है उसका निरन्तर उत्थान होता है और जो धर्म को अपनी राजनीति से बहिष्कृत कर देता है वह राष्ट्र नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

१६०/एस-३ सुन्दर नगर (हि० प्र०)

आओ ! वेद पढ़ें

पहले ज्ञान पीछे अनुष्ठान

"पहले वेद के महत्व को समझें फिर उसको पढ़कर तदानुकूल आचरण करके जीवन को सुन्दर, सफल बनावें।"

वेद में प्रभु को आहुत, स्वाहुत, अलंकृत आदि नामों से सम्बोधित किया है—अर्थात् प्रभु ने जीव हित के लिए सम्यक प्रकारेण अपनी आहुति देदी है सृष्टि के आदि में मानव की सर्वांगीण उन्नति और मार्ग प्रदर्शन के लिये चार ऋषियों द्वारा वेद ज्ञान देकर अपार उपकार किया है।

पक्षपात रहित संसार के सभी विद्वान इस बात से सहमत हैं कि 'वेद' संसार के पुस्तकालय में सबसे पुराना ग्रन्थ है, इसलिए इसको 'अग्रिय' कहा गया है। महर्षि कणादि इसको सबसे पहला ज्ञान भगवान से मिलने के कारण वेद को प्रमाणिक मानते हैं।—

तद्वचनादाम्न यस्य प्रमाण्यम्।

वेद ज्ञान का भण्डार है—वेद महान ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है। तृण से लेकर ब्रह्म पर्यन्त सभी पदार्थों की गुणगाथा इसमें है, अर्थात् जीवनोपयोगी सभी पदार्थों का ज्ञान इसमें उपलब्ध है। वेद ही सर्वव्यापक अविनाशी परमपिता का ज्ञान कराने के लिए है।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्। ऋग्वेद १।१३४।३९

उपनिषद महर्षियों ने भी यही बात कही है।

"नावेदविन्मनुते त बृहन्तम्।"

वेद की महिमा—स्मृति ग्रन्थों में वेद के सम्बन्ध में बहुत कुछ उल्लेख मिलता है। महर्षि मनु ने वेद को धर्म का आधार और सर्व ज्ञानमय बताया है।

"वेदोऽखिलो धर्म मूलम्।" मनु० २।६

"सर्व ज्ञान मयो हि सः।" मनु० २।७

"धर्म जिज्ञासामानानां प्रमाणं परम श्रुतिः।" मनु० २।११

वेद से ही विश्व की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का विकास हुआ है। मनु जी अपने मानव धर्म शास्त्र मे लिखते हैं कि चारों वर्ण, तीनों लोक चारो आश्रम तथा भूत, वर्तमान और भविष्य की सब व्यवस्थायें वेद से ही संसार मे प्रचलित होती है:—

"चातुर्वर्ण्य त्रयो कालश्चत्वारश्चाश्रमः पृथक्। भूत भव्य भविष्य च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति॥ मनु० १२।९७

इसी भाव को महर्षि वेदव्यास जी ने अपने महान ग्रन्थ महाभारत के शान्ति पर्व में इन शब्दों में व्यक्त किया है।

"अनादि निधना नित्यावागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा। आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृतयः।"

वेद ही मनुष्यों, देवो तथा पितरो का शाश्वत चक्षुः मार्गदर्शक है।

"पितृ देव मनुष्याणाम वेदश्चक्षुः सनातनम्॥" मनु० १२।९४

यही नहीं, मनु जी ने वेदों का पढ़ना ही विद्वान पुरुषों का महान तप बताया है।

"वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते।" मनु० २:१६६

अतः वेद का पढना मनुष्य का परम धर्म कहा गया है, अन्य सब धर्म गौण—इससे नीचे दर्जे के हैं।

"वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथा कालमतन्द्रितः। त ह्यस्याहुः, परं धर्म मुपधर्मोऽन्य उच्यते॥" मनु० ४।१४७

अतः मनु जी का यह भी कहना है कि जो द्विज नित्य प्रति प्रातः वेद पढ़कर अन्य कामों में समय नहीं गंवाता है, वह जीवनकाल में ही शुद्र भाव को प्राप्त होते हैं।

योऽन धीत्य द्विजो वेदम् अन्यत्र कुरुते श्रमम्।

स जीवन्नेव शूद्रत्वम् आशु गच्छति सान्वय॥" मनु० २।१६८

वेद के अध्ययन, तदानुकूल आचरण करने से हमें शान्ति, ऐश्वर्य ही नहीं अपितु सब प्रकार के सातों भगवा को देकर मोक्ष तक प्राप्त कराने वाला है।

"अय ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शन्तमः।

अथा सोम सुतं पिब॥" ऋग० १।१६।२

"स्तुतामया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्म वर्चसम्। मह्यम् दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥"

अथर्व० १९।७१।१

ऐसी महाकल्याणमयी वेद विद्या को महामानव देव दयानन्द जी महाराज ने मानव जाति के उत्कर्ष, उत्थान के लिए नितान्त उपयोगी और अभ्युदय का आधार बताया है। इसी उद्देश्य से महर्षि ने आर्य-समाज की स्थापना करके इसके तीसरे नियम मे वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

परन्तु वेद हमको उस सरल रूप में नहीं उपलब्ध है, जिनसे जन-साधारण लाभ उठा सके। दूसरे जनता अपनी उच्च शिक्षा के अभाव में वेदों के सैकड़ो सूक्तों और मन्त्रो में छुपे अथाह वेद ज्ञान के लाभ से वंचित रहती है। परन्तु हमारे ऋषियों का एक मत यह भी है कि मण्डलो आदि की बात तो जाने दीजिये, वेद का एक शब्द यदि पूरे तौर पर समझ लिया जाये और तदानुकूल आचरण हो, तो वह हमारे जीवनों को सुन्दर और सफल बनाने को शक्ति रखता है। इस बात को महर्षि पतञ्जलि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ महाभाष्य में एक स्थान पर वेदों के सम्बन्ध मे लिखते हुए यूं कहा है:—

एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गलोके काम धुग भवति।"

ऐसी पावमानी, स्वस्ति आयनी वेद विद्या के प्रचार प्रसार की बड़ी सरल विधि भी परमात्मा ने स्वयं बतायी कि सज्जन विद्वान लोग वेद ज्ञान का अध्ययन करके इसे मानव कल्याण के लिए ऐसे फैलावे जैसे बादल चहुं ओर वर्षा करके गर्मी से पीड़ित लोगो को शान्ति प्रदान करता है।

"मिमीहि श्लोकमास्य पर्जन्य इव ततनः।

गाय गायत्रमुक्थ्यम्॥" ऋग० १।३८।१४

अतः मैं यहां कतिपय वेदमन्त्र अंशो को वैदिक सूक्ति के रूप में देता हूं। पाठकगण इन्हें पढ़ें और अर्थों को समझकर तदानुकूल आचरण करके, अपने जीवनों को सुन्दर और सफल बनावें।

वैदिक सूक्ति—

स श्रुतेन गमेमहि। अथर्व० १।१।४ वेद के अनुकूल चलें। ओ३म् क्रतो स्मर कृतं स्मर। यजुर्वेद ४०।१५ ईश्वर को याद कर और अपने किये हुए कर्म को। देवानां सख्यमुपसेदिमा वयम्। ऋग० १।८९।२ हम विद्वानों से मित्रता करें। एक सद्विप्राः बहुधा वदन्ति। ऋग० १।१६४।४ एक ईश्वर को विद्वान कई नामो से पुकारते हैं। गां मा हिंसीः। यजुर्वेद १३।४३ गाय को मत मार। उद्धृत्य वेदमथ कर्माणि कृण्महे। अथर्व० १९।६८।१ वेद को पढ़कर तदनन्तर विविध प्रकार के कर्म करें। यः शर्धते नानुददाति शृध्याम्। ऋग० २।१२।१० जो पाप कर्म के लिये बढ़ना चाहने वाले को बढ़ने नहीं देता। वयं ते इन्द्र विश्वह प्रियासः ऋग० २।१२।१५ हे परमऐश्वर्य वाली प्रभु। हम सब सदा तेरे प्यारे बने। इदं पृश्निरदुहत्। अथर्व० २।१।१ सारा संसार इस प्रभु को प्रकट कर रहा है। मा भ्राता भ्रातरम् द्विक्षत। अथर्व० ३।३०।३ भाई भाई से द्वेष न करे।

—चमनलाल एम. ए.
एच-६४, अशोक विहार, दिल्ली-५२

ऋषि के शब्दों में—

अध्ययन—अध्यापन विधि

—श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री

ऋषि दयानन्द ने विश्व की जनता के लिए प्रथम प्रसन्नता ईश्वर के गुण परक एवं निर्गुण नामों को प्रदर्शित कर मानव समाज को एकता के सूत्र में ग्रंथित करने का प्रकार बताकर प्रथम प्रसन्नता प्रदान की यादि सब के निर्माता बालकों को शिक्षित करने वाले माता पिता के कर्तव्य का उद्बोधन कर प्रसन्नता से मनुज वृन्द के हृदयों को दूसरी प्रसन्नता शिक्षा सरस्वती से भर दिया।

उन्होंने शिक्षा के सम्बन्ध में कहा—

"शिक्षा जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियता आदि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटे उसे शिक्षा कहते हैं।

तृतीय समुल्लास आनन्द को प्रदान करने के निमित्त अधिकार पूर्वक वेद शास्त्रों में रमण करने वाले गुरुजनों को शिष्यों के मानस सरों को वेदों को अधिक से अधिक अनेक विध विद्या स्त्रोतों से पूर्ण करने का प्रकार दर्शाया है।

शिक्षा समाप्ति पर गुरु धाम से विदाई लेते समय उनके विद्या गुरु स्वामी विरजानन्द जी ने जो अन्तिम बात कही थी वह यह थी—'दयानन्द! स्मरण रखना, मनुष्य कृत ग्रन्थो में परमात्मा और ऋषि-मुनियों की निन्दा भरी पड़ी है। परन्तु आर्ष ग्रन्थों में इस दोष का लेश भी नहीं है। इस कसौटी को हाथ से कभी न छोड़ना।" ऋषि शैली प्रचलित करके वैदिक ग्रन्थो के पठन पाठन से लोगों को प्रवृत्तिशील बनाओ।

उनका अपना भी परिपक्व दृढ़ मन्तव्य था कि क्रान्तदर्शी महर्षियों की अध्यापन पद्धति को अपनाना चाहिए।

ऋषि प्रणीत ग्रन्थो को इसलिए पढ़ना चाहिए कि वे बड़े विद्वान सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे। और अनृषि अर्थात् जो अल्प शास्त्र पढ़े हैं और जिनकी आत्मा पक्षपात सहित है उनके बनाए ग्रन्थ भी वैसे ही हैं।

ऋषि कृत आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए क्योंकि जो महर्षि लोगो ने सहजता से महान विषय अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है। आर्षग्रंथो का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना।"

महर्षि लोगों का आशय जहां तक हो सके वहां तक सुगम और जिसके ग्रहण करने में समय थोड़ा लगे इस प्रकार का होता है।" क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहां तक बने कठिन रचना करनी जिसको बड़े परिश्रम से पढ़के अल्प लाभ उठा सके जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना।

विद्यार्थियों के सच्चे आभूषण अनेक विध वेद विद्याएं

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चांदी, मणिक मोती, मूंगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण करने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं हो सकता। क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भय भी सम्भव है। संसार में देखने मे आता है कि आभूषणों के योग से बालकादिकों का मृत्यु दुष्टों के हाथ से होता है।

विद्याविलासमनसो धृतशील शिक्षाः सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसार दुःख दलनेन सुभूषिता ये, धन्या नरा विहित कर्मपरोपकाराः॥

जिन पुरुषो का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, सुन्दर शीलस्वभाव युक्त, सत्य भाषणादि नियम पालन युक्त और जो अभिमान अपवित्रता से रहित अन्य की मलीनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से संसारी जनो के दुःखो को दूर करने से सुभूषित, वेदविहित कर्मों से पराए उपकार करने मे रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं। इसलिए आठ वर्ष के हो तभी लड़कों को लड़को की और लड़कियों को लड़कियो की पाठशाला मे भेज देवे। जो अध्यापक पुरुष व स्त्री दुष्टाचारी हो उनसे शिक्षा न दिलावे। किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हो वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं। द्विज अपने घर मे लड़को का यज्ञोपवीत और कन्याओ का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्यकुल अर्थात अपनी अपनी पाठशाला में भेज दे।

सह शिक्षा निषेध—विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और वे लड़के और लड़कियो की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य, अनुचर हों वे कन्याओ की पाठशाला मे सब स्त्री व पुरुषो की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहे तब तक स्त्री व पुरुष का दर्शन, स्पर्शन, एकांत सेवन, भाषण विषय कथा, परस्पर, क्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग उन्हें जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील स्वभाव, शरीर और आत्मा से बलयुक्त होके आनन्द को नित्य बढ़ा सके पाठशाला से एक योजन अर्थात चार कोस दूर नगर व ग्राम हों। (क्रमशः)

अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न

विदित हो कि उभयपक्ष की परस्पर सहमति से श्री सुरेश कुमार सुपुत्र श्री ब्रज किशोर प्रसाद निवासी धनीसाबाद, पटना-२ एव सुश्री रजनी कुमारी सुपुत्री श्री भुवनेश्वर झा निवासी रघुनाथ टोला, पटना-२ का अन्तर्जातीय विवाह दिनांक १४-३-९२ को आर्य समाज मन्दिर, दानापुर में समाज के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी के आचार्यत्व में पूर्ण वैदिक रीति से समाज के गण्यमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। —अखिलेश कुमार मन्त्री

आर्य समाज दानापुर कैन्ट पटना

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश आरम्भ

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सराय ख्वाजा (फरीदाबाद) में चौथी से नवमी कक्षा तक प्रवेश आरम्भ है। अन्तिम तिथि १५ मई है। पाठ्यक्रम सी.बी.एस.ई. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। विद्यालय के साथ छात्रावास की व्यवस्था है। —प्रिंसिपल

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डा० नई दिल्ली-४४

फोन : ८-२७५३९८

व्याकरण वेद विद्यालय प्रवेश आरम्भ

भारत के हृदय मध्यप्रदेश में व्याकरण वेद विद्यालय आरम्भ हो चुका है जिसमें सांगोपांग वेद अध्ययन कि व्यवस्था है।

(१) जिन विद्यार्थियों को अष्टाध्यायी याद है उन्हें प्राथमिकता दी जायेगी।

(२) विद्यार्थी कक्षा दस उत्तीर्ण हो अथवा तीव्र बुद्धि वाला हो।

(३) ब्रह्मचारियो के लिये भोजन आदि निःशुल्क होगा।

(४) यदि विद्यार्थी योग्य होगा तो तीन वर्ष में उसे व्याकरण पढ़ाकर विदेशों में संस्कृत पढ़ाने हेतु भेजा जायेगा।

सम्पर्क करें:—

आचार्य आदित्य अनन्तांशु
आचार्य ओमानन्द व्याकरण वेद विद्यालय
देहधर्म पो० गांधी नगर इन्दौर, मध्यप्रदेश

श्री शिवलाल गुप्त को श्रद्धांजलि अर्पित

ग्वालियर २१ मार्च। आर्य समाज चित्रगुप्तगंज, लश्कर के पूर्व प्रधान श्री शिवलाल जी गुप्त का दिनांक १९ मार्च को देहावसान हो गया। उनका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से लक्ष्मीगंज श्मशान घाट पर श्री गोकुल प्रसाद शास्त्री के आचार्यत्व में, उनके बड़े पुत्र द्वारा मुखाग्नि देकर किया। इस अवसर पर उनके परिवार जनों के अतिरिक्त सभी रिश्तेदार आर्यसमाज के सदस्यगण व अन्य प्रतिष्ठित महानुभाव भारी संख्या में उपस्थित थे।

दिनांक २१ मार्च को एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर तथा एक श्रद्धांजलि प्रस्ताव पारित कर, आर्य समाज द्वारा श्री गुप्त के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से, दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शांति प्रदान करने तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य धारण करने हेतु, कामना की।

—प्रकाशचन्द्र अग्रवाल, मन्त्री
आर्य समाज चित्रगुप्तगंज, लश्कर

जीवन को वेदों के अनुरूप ढालना होगा

नई दिल्ली २४ मार्च। पश्चिमी देशों में मानव मूल्यो को लेकर जो तनाव व विषमता पैदा हुई है उसका असर अब भारत पर भी हो रहा है। इससे बचने के लिए हमें अपनी जीवन शैली को वेदों के अनुरूप ढालना होगा। दर असल वेद हमारी सस्कृति का मूल हैं और उससे अलग होकर हम कहीं के भी न रहेंगे। सूचना व प्रसारण उपमन्त्री सुश्री गिरिजा व्यास ने यह बात आज यहां लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित शास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला के तहत "वेदो का स्वरूप" विषयक संगोष्ठी में कही।

उन्होंने कहा कि देश में वैदिक वातावरण का सृजन करना बहुत जरूरी है।

सुश्री व्यास ने कहा कि वैदिक विज्ञान को समझने के लिए एक जिजीविषा की जरूरत है। उन्होंने सस्कृत भाषा की हिमायत करते हुए कहा कि संस्कृत सिर्फ भाषा नहीं अपितु सारे ज्ञान-विज्ञान का समायोजन है। इसे त्रिभाषा फार्मूले में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि वैदिक सस्कृति ने वैदिक विज्ञान की गौरवशाली परम्परा को जन-जन तक पहुंचाया, लेकिन आजादी के बाद ऐसा नहीं हुआ। परिणाम स्वरूप हमारा सांस्कृतिक रूप से पतन हुआ। आज विज्ञान के विकास के साथ-साथ समाज में मूल्यो की स्थापना के लिए वैदिक विज्ञान के प्रचार-प्रसार की सख्त जरूरत है।

विद्यापीठ के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए वैदिक विज्ञान के ज्ञाता तथा राजस्थान पत्रिका (हिन्दी दैनिक) के संस्थापक सम्पादक श्री कपूरचन्द कुलिश ने कहा कि वैदिक परिभाषाओं को बहुत ध्यान पूर्वक समझने की आवश्यकता है।

"ऋतं च सत्यमम्" आदि श्लोकों की विशेष समीक्षा करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पूर्व वैदिक काल में जितने भी मतान्तर थे उसके ऊपर भाष्य लिखे गये तथा उनकी विवेचना की गयी। आकाश व अन्तरिक्ष के बीच जो वास्तविक अन्तर है उसके सूत्र को पकड़ना होगा।

श्री कुलिश ने कहा कि हमारा वेद जीव, ब्रह्म, प्रकृति, अणु इत्यादि के विषय में क्या कहता है उसकी गुत्थियों को सुलझाना होगा। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि "मैं वेदो में सामवेद हूं। इस वाक्य से कृष्ण के किस स्वरूप का चित्रण होता है यह विचारणीय है।

उन्होंने कहा कि मधुसूदन ओझा द्वारा वेद के ऊपर लिखे गये भाष्य, जो कि एक व्यापक कार्य है, से सिद्ध हो जाता है कि वेद में न सिर्फ स्तुति बल्कि इतिहास, विज्ञान सब कुछ है। (राष्ट्रीय सहारा दिनांक २५ मार्च)

रूस पागलखाना बन गया है : गोर्बाचेव

वाशिंगटन २४ मार्च (ए०पी०)। पूर्व सोवियत संघ के पूर्व राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव ने कल कहा कि उनकी भविष्यवाणी सच हो रही है तथा बोरिस येल्तसिन के शासन में रूस पागलखाना बन गया है।

वाशिंगटन पोस्ट को मास्को में दी भेंटवार्ता में श्री गोर्बाचेव ने अमरीकी रक्षा विभाग पेंटागन के इस नतीजे पर असन्तोष जताया कि अमरीका ने शीत युद्ध जीत लिया है तथा उसे विश्व की एकमात्र महाशक्ति का रुतबा बनाए रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि पूर्व सोवियत संघ मे स्थिति विस्फोटक हो गई है तथा अब अधिकतर अर्थव्यवस्था शासकीय एकाधिकार में है। श्री येल्तसिन ने मूल्यों का उदारीकरण कर गलत कदम उठाया है। श्री गोर्बाचेव ने सोवियत संघ के विघटन के समय देश के भविष्य को भयकारक बताया था। उन्होंने कहा कि देश की अर्थ व्यवस्था चरमरा गई है और आर्थिक संधियां भंग हो गई हैं तथा पूरा वातावरण पागलखाने की तरह हो गया है। अखबार के अनुसार वे बदली हुई परिस्थितियों में भी अपनी भूमिका देख रहे हैं। (हिन्दुस्तान २५ मार्च से)

अमर यह सिंहनाद रहेगा

जग में परमार्थी महापुरुष विरले ही देखे जाते हैं।
जो अपनी जीवन ज्योति से सत् धर्म मार्ग दर्शाते हैं।
स्वामी श्रद्धानन्द संत ने सारे सुख वैभव त्यागे।
निर्भय हो खोल दिया सीना नमी संगीनों के आगे॥

स्वामी रामेश्वरानन्द यति निर्भीक आर्य संन्यासी थे।
वैदिक विवेक क्रान्तिकारी और ईश्वर के विश्वासी थे।
साधारण और महापुरुषों में एक अन्तर भारी पाते हैं।
महापुरुष स्वय दुःख सहकरके औरों को सुख पहुंचाते हैं।

गुरुकुल घरोंडा के संस्थापक वेद धर्म ध्वज फहराई।
जीवन भर बांटा वेद ज्ञान पाखण्ड गढ़ की नींव हिलाई।
ओजस्वी वाणी राष्ट्र विचारक धुन के धनी महान थे।
विद्या दानी स्वाभिमानी देव तुल्य गुण विद्यमान थे।

हैदराबाद के धर्मयुद्ध मे आगे चल कदम बढ़ाये थे।
सन् उन्नीस सौ बासठ में संसद सदस्य कहलाये थे।
सन् उन्नीस सौ छियासठ मे छिड़ गया गोरक्षा आंदोलन।
गो भक्तो का जन समूह पहुंचा जब पार्लियामेंट भवन।

गोहत्या बन्द करो मिलकर भारत सरकार से मांग करी।
गोभक्षक कुछ लोगो ने वहां बातें भी ऊट पटांग करी।
फूट पड़ी ओजस्वी वाणी सभी उधर को नजर फेर लो।
सीधी ऊंगली घी नहीं निकले जाकर पार्लियामेंट घेर लो।

सन् उन्नीससौ छियासठ का यह ७ नवम्बर याद रहेगा।
सन्त स्वतन्त्र सेनानी का अमर यह सिंहनाद रहेगा॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

भू पर फैले आर्य समाज

बजे पुनः डंका वेदों का,
तिमिराच्छादित महिमण्डल पर।
वैदिक सत्य सनातन पावन,
फैले धर्म धरणि तल पर।
मानव में मानवता आए,
सजे मनुजता का शुचि साज।
भू पर फैले आर्य समाज॥

वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था,
का धरती पर हो अनुपालन।
आर्य विचारों से आप्लावित,
हो सम्पूर्ण जगत का जन-जन।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का,
गूंजे सिंहनाद फिर आज।
भू पर फैले आर्य समाज॥

जाग्रत ज्योति जगे जन-जन में,
शान्ति सुचिरता-समरसता हो।
हो मन में देवत्व भावना,
कहीं नहीं परवशता हो।
वेदों की गरिमा से मण्डित,
यह स्वराज्य फिर बने सुराज।
भू पर फैले आर्य समाज॥

—राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

वनवासी क्षेत्रीय आर्य समाज सम्मेलन सम्पन्न

वैदिक आर्य आश्रम, ४४/२ नर्मदा मार्ग म० प्र० की ओर से वनवासी क्षेत्रीय, खण्डवा, खरगौन, धार तथा झाबुआ के आर्य समाज कार्यकर्ताओं का सम्मेलन ४ अप्रैल १९९२ को आयोजित किया गया। इस सम्मेलन मे वनवासी क्षेत्रीय वैदिक धर्म प्रचार सभा के निर्माण तथा वैदिक धर्म के प्रचार मे प्रगति आदि विषयो पर गम्भीरता से विचार किया गया।

आर्य वीर दल विचार गोष्ठी

दिनांक १६-३ ९२ को सायं काल ६ बजे आर्य समाज आर्यमगढ मे एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य वीर दल के सैनिक व आर्य समाज के कार्यकर्ता व अधिकारी उपस्थित थे। माननीय बाल दिवाकर हंस जी ने अ ना विचार मगठन के प्रति दिया तथा ब्र० सुरेन्द्र जी ने अपने वीर र्प के ग न म प व वीरो को उत्साहित किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष ने अन्त मे माननीय हंस जी व ब्र० सुरेन्द्र जी को धन्यवाद दिया।

—विजय कुमार मन्त्री
आर्य वीर दल आर्यमगढ

शुद्धि तथा विवाह संस्कार

दि० १९ ३ ९२ को आर्यसमाज अल्मोडा मे कु० आशा सिंह, पुत्री स्व० श्री धन नरसिंह निवासी तिलकपुर अल्मोडा का शुद्धि संस्कार किया गया। उन्होंने स्वेच्छा से ईसाई मत क परित्याग कर सनातन वैदिक धर्म को ग्रहण किया। तदन्तर कु० आशा का विवाह श्री विनोद थापा निवासी दुग्वालखेला अल्मोडा के साथ वैदिक विधि से सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर वर और कन्या पक्ष के सम्बन्धी उपस्थित थे और उन्होंने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

—मन्त्री, आर्य समाज, अल्मोडा

नवसस्येष्टि (होल्कोत्सव) मनाया

आर्य समाज मन्दिर सुभाषनगर फैजाबाद मे वासन्ती नवसस्येष्टि होल्कोत्सव पर्व १९ मार्च को दिन ३-३० से हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भारी संख्या में पधारे हुये गणमान्य व्यक्तियो ने यज्ञ में भाग लिया जिसमे नये अन्न से आहुति दी गयी।

इस अवसर पर सभी सम्प्रदाय के सज्जन आपसी भाईचारा परस्पर प्रेम व सद्भावना से आपस मे एक दूसरे से गले मिले। कार्यक्रम का संचालन सभा मन्त्री प्रदीप आर्य ने किया। इस अवसर पर मिठाई भी बाँटी गयी और आपस मे बधाइयां दी गयी।

—प्रदीप आर्य मन्त्री
आर्य समाज सुभाषनगर साकेत (फैजाबाद)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड ९ जिल्दो में	६००)
ऋग्वेद प्रथम भाग से पाच भाग तक	३००)
यजुर्वेद भाग—६	६०)
सामवेद भाग—७	६०)
अथर्ववेद भाग—८	६०)
अथर्ववेद भाग—९+१०	६०)

वेद भाष्य का नेट मूल्य ५२५) रुपये
अलग-अलग जिल्द लेने पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २

हिन्दी के अलावा कोई रास्ता नहीं : डा. शर्मा

उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने कहा है कि अब अंग्रेजी से काम चलने वाला नहीं है। राष्ट्रीय एकता और संपर्क के लिए हिन्दी के अलावा कोई रास्ता नही है। इसलिए हिन्दी सेवा राष्ट्रसेवा है। आज जरूरत इस सेवा का तेजी से प्रसार करने की है।

डा. शर्मा अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के रजत जयन्ती समापन समारोह मे बोल रहे थे। इस समारोह में २४ हिन्दी-अहिन्दी भाषी हिन्दी सेवियों तथा २० संस्थाओ को सम्मानित किया गया।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि अहिन्दी भाषियो के त्याग और श्रम के कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव मिला है। १९ वी सदी में दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दी मे लिखा। वे अहिन्दी भाषी थे, लेकिन अपने प्रवचन हिन्दी में देते थे। इसी तरह तिलक, महात्मा गांधी और विनोबा भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे।

डा. शर्मा ने कहा कि हिन्दी राष्ट्रभाषा इसलिए नही बनी है कि उसका साहित्य दूसरी भारतीय भाषाओ के साहित्य से श्रेष्ठ है, बल्कि इसकी साधारण-सी वजह यह है कि वह देश के अधिकांश भागो मे समझी जाती है। हिन्दी भाषियो की जिम्मेदारी है कि वे दूसरी भाषाओ की तुलना में हिन्दी का अनुवाद साहित्य विशाल बनाए, ताकि संपर्क भाषा के रूप मे उसकी अनिवार्यता बढ़े। हिन्दी सीख कर बाकी भारतीय भाषाओ के साहित्य का आनन्द लिया जा सके।

उन्होने कहा कि भाषा को लेकर हमे संकुचित दृष्टि नही अपनानी चाहिए।

उपराष्ट्रपति ने दीर्घ कालीन हिन्दी सेवा के लिए जिन विद्वानों सेवकों को सम्मानित किया उसमें कुछ प्रमुख नाम हैं। विष्णु प्रभाकर क्षेमचन्द्र सुमन, शंकरदयालसिंह, अक्षयकुमार जैन, यशपाल जैन, विश्वम्भेद्र स्नातक, जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी, सुधाकर पांडेय, बच्चूप्रसादसिंह, गंगाप्रसाद विमल, मन्नूलाल द्विवेदी, गोपालप्रसाद व्यास, शंकरराव लोंढे, मधुकरराव चौधरी, मोटूरि सत्यनारायण, प. नारायणदेव, नानुभाई बारोट विद्याधर गुरुजी, रजनीकान्त चक्रवर्ती, प्रो नागप्पा तथा वेमूरि, राधाकृष्ण मूर्ति आदि।

कुछ सम्मानित हिन्दी संस्थाओ के नाम हैं। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (गुवाहाटी) ओडिसा राष्ट्रभाषा परिषद, पुरी, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बंगलूर, केरल हिन्दी प्रचार सभा तिरुवनन्तपुरम, गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद, हिन्दी विद्यापीठ, देवघर तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद आदि।

नेपाल में नई आर्यसमाज की स्थापना

यज्ञशाला के लिए प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जुद्धबहादुर श्रेष्ठ द्वारा भूमि दान

नेपाल आर्य समाज के पूर्वी अंचल विराटनगर मे दरहैया नामक स्थान में एक नई आर्य समाज का गठन किया गया है। इसके अध्यक्ष श्री केशवलालसिंह सुवाल जी नियुक्त हुए हैं।

इस अवसर पर नेपाल के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जुद्धबहादुर श्रेष्ठ ने बीस हजार रुपये कीमत की भूमि आर्य समाज मे यज्ञशाला के निर्माण के लिए दान मे दी है। उक्त भूमि पर निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि यज्ञशाला के निर्माण के लिए अपना सहयोग —आर्य समाज दरहैया, रानी शाखा, विराटनगर १६ आर २० सिमाना, नपाल के पते पर भेजें।

गोविन्द प्रसाद पोखरेल मन्त्री
नपाल आर्य समाज, विराटनगर

४४०० आदिवासी स्वेच्छा से वैदिक धर्म में दीक्षित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में स्वामी सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री भारतीय हिन्दू शुद्धि संरक्षिणी सभा ने मध्यप्रदेश के जिला सरगुजा छत्तीसगढ़ मे जो आदिवासी ईसाई बन गये थे उनकी शुद्धि का कार्य किया। गोमांस अन्य मांस शराब आदि न खाने पीने का संकल्प कराया गया और गिरजाघर न जाने का भी संकल्प कराया गया। यज्ञ पर बैठाकर यज्ञोपवीत धारण कराया गया और शुद्धि के पश्चात कपड़े भी वितरित किये गये। शुद्धि का यह समस्त कार्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर के आदेश के अनुसार किया गया।

शुद्धि का विवरण निम्न प्रकार है—

२७-१-९२ ग्राम तमता	१००० व्यक्ति
५-१-९२ को ग्राम प्रतापगढ़, सरगुजा	१००० ,,
२७ फरवरी को नर्मदापुर मेनपाठ, जिला सरगुजा	९०० ,,
५ मार्च को ग्राम केसरा में	५०० ,,
१७ मार्च को ग्राम सरवका सरगुजा	४०० ,,
२० मार्च को बरीमा, सरगुजा	४०० ,,
२७ मार्च को अम्बिकापुर भजनाश्रम	२०० ,,
	योग—४४००

आर्यसमाज दीवान हाल का वार्षिकोत्सव

(पृष्ठ २ का शेष)

स्वामी जी ने राष्ट्रीय अखण्डता के लिए आर्य समाज के योगदान की चर्चा करते हुए भारत सरकार से जोरदार मांग की कि पंजाब और काश्मीर के साथ लगे पाकिस्तान के सीमा क्षेत्र के साथ एक सुरक्षा पट्टी का निर्माण किया जावे और वहां भू० पू० फौजी अफसरो को बसाया जावे और उन्हे आधुनिक हथियार दिये जावें ताकि पाकिस्तान से यहा जो विघटनकारी और अलगाववादी तत्व आकर गड़बड़ी फैला रहे हैं, उन्हें रोका जा सके।

इस अवसर पर सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पास किया गया—

प्रस्ताव

आर्य समाज की यह महती सभा—प्रान्तीय, क्षेत्रीय, भाषायी, साम्प्रदायिक संकीर्णताओं तथा आतंकवादी गतिविधियों की रोष पूर्वक भर्त्सना करती है, तथा सभी आर्य जन संकल्प लेते हैं कि वे भारतीय अखण्डता की रक्षा के लिए सभी प्रकार की संकीर्ण क्षुद्रताओ से ऊपर उठकर राष्ट्रीय भौगोलिक सीमाओ तथा भावात्मक सांस्कृतिक एकता की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे।

यह सभा सरकार से साग्रह अनुरोध करती है कि विघटनकारी प्रवृत्तियो को सख्ती से कुचला जाए तथा राष्ट्रीय अखण्डता को स्थापित करने वाली प्रवृतियो को संरक्षण दिया जाए। साथ ही यह सभा मांग करती है कि जम्मू-काश्मीर व पंजाब से आए लगभग ३ लाख परिवारो की सरकार रक्षा करे तथा इन्हे पुन: अपने-अपने स्थानो पर बसाया जावे और सेवा निवृत्त सैनिक परिवारो को काश्मीर की गाजा पट्टी मे बसाकर, तत्पश्चात वहां चुनाव कराये जावें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी-(सी) ११०७४/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१२-४-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस उ नं० ९१
R.N. 830/57 Licensed to post without Prepayment, licence No. U 93 Post in N.D.P.S.O.on 9-10 4-1992

मदुरै में महर्षि जन्मोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य भवन हाल मदुरै में आर्य समाज मन्दिर मदुरै की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव १५-३-९२ को उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस समारोह की अध्यक्षता नगर के भूतपूर्व मेयर श्री एस के. बालकृष्णन जी ने की। इस अवसर पर कुम्बाकोणम, टूटी कोरिन, तिरुनेलवेली आदि स्थानों से सैकड़ो आर्य समाज के कार्यकर्ता उपस्थित थे। वृहद यज्ञ सम्पन्न होने के पश्चात वैदिक संगीत तथा भाषण के कार्यक्रम प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किये गये इस अवसर पर एक पौराणिक सन्यासी ने महर्षि के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें [illegible] मार्मिक श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह के अन्त मे प्रीतिभोज का आयोजन भी किया गया था।

—एम० नारायण स्वामी

जोशी ने मन्दिर गिराने को उचित ठहराया

पटना, २६ मार्च। भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष डा० मुरली मनोहर जोशी ने अयोध्या मे कुछ मन्दिरो के भवन गिराए जाने के कदम को उचित ठहराते हुए आज कहा कि वहा राम मन्दिर का निर्माण हर कीमत पर होगा 'चाहे उसके जो भी परिणाम हो।'

यहा गांधी मैदान मे अपनी पार्टी द्वारा आयोजित एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए श्री जोशी ने कहा कि उत्तरप्रदेश की भाजपा सरकार को राममन्दिर बनाने का जनादेश मिला है। हम जनादेश का पालन करेंगे और हर कीमत पर राम मन्दिर बनायेंगे।

श्री जोशी ने संसद मे इस मामले को उठाने तथा गृहमन्त्री शंकरराव चव्हाण द्वारा उत्तर प्रदेश की सरकार को धमकी देने पर कड़ा ऐतराज किया और इसे अनुचित बताया।

बूचड़खाने का विरोध

नई दिल्ली (स)। आर्य समाज बाकनेर ने दिल्ली प्रशासन द्वारा नरेला अलीपुर क्षेत्र में बूचड़खाना चालू करने का विरोध किया है। संस्था के प्रधान मनिराम आर्य ने कहा कि इस क्षेत्र मे सौ-सौ बिस्तरों के दो अस्पतालो की जरूरत है। परन्तु दिल्ली प्रशासन यहां बूचड़खाना खोल रहा है।

(न० भा० टा० २१ मार्च)

शौर्य पुरस्कार से छात्र सम्मानित

४ अप्रैल ९२, हिमाचल भवन नई दिल्ली के सभागार मे आर्यकेन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित ११७ वें आर्य समाज स्थापना दिवस पर हरियाणा के विज्ञान एव तकनीकि शिक्षा राज्य मन्त्री डा० रामप्रकाश ने निम्नलिखित प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को अमरशहीद मेजर (डा०) अश्विनीकुमार कण्व 'स्वर्णपदकीय शौर्यपुरस्कार से सम्मानित किया—

सुश्री नलिनी चावला, ममता मित्तल, नीशू कुमार, दीपिका गुलाटी, मोनिका शर्मा, सुरभि 'विभा', विभु आर्या, विशाल मलिक, प्रवीण कुमार, विकास गुप्त।

—विमल कान्त शर्मा

वार्षिकोत्सव

श्री निश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या का वार्षिकोत्सव दिनांक २७ २८-२९-३० अप्रैल १९९२ को मनाया जा रहा है। समारोह का उद्घाटन, स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली करेंगे। आप सब आर्य जनो से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या मे पधारकर समारोह को सफल बनावें।

—वसुमित्र चतुर्वेदी, कुलपति

आर्य समाज बिन्दकी जिला फतेहपुर का ८२ वां वार्षिकोत्सव

उत्तर प्रदेश की प्रमुख आर्य समाज बिन्दकी जिला फतेहपुर का वार्षिक उत्सव ५ से ८ अप्रैल तक धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी मेधानन्द जी सरस्वती, श्री उत्तमचन्द्र जी शरर आदि कई सन्यासी और विद्वानो ने भाग लिया।

—सन्तोष कुमार मन्त्री

आर्य वीर दल वाराणसी निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

१७-३-९२ को आर्य समाज लल्लापुरा मे सायंकाल ५ बजे आर्य वीर दल, वाराणसी की बैठक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के रक्षा सचिव श्री पण्डित बालदिवाकर हंस की अध्यक्षता में हुयी। बैठक में सार्वदेशिक के वरिष्ठ शिक्षक श्री ब्र० सुरेन्द्रसिंह आजाद, श्री राजेन्द्रसिंह मन्त्री आर्य वीर दल उ० प्र/पूर्वी ने सम्बोधित किया। पूर्वी उ० प्र० के सहसंचालक श्री दिनेशकुमार आर्य ने परिमण्डल की आख्या प्रस्तुत की। सभा का संचालन वाराणसी के संचालक श्री प्रमोद आर्य ने किया। स्वागत एवं धन्यवाद आर्य समाज लल्लापुरा के कोषाध्यक्ष श्री बुद्धदेव आर्य ने किया।

श्री पण्डित बालदिवाकर हंस जी को अपने बीच पाकर वाराणसी के आर्य वीरो में अत्यधिक उत्साह वृद्धि हुई। इस अवसर पर निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुआ।

१—आर्य वीर दल के राष्ट्रीय गीत, ध्वजगीत एव आर्य वीर दल के कोरस के अच्छे व मधुर गायको द्वारा गीतों के कैसेट तैयार करायें जाय तथा इसे प्रचारित प्रसारित किया जाये ताकि आर्य वीरो के गायन मे एकरूपता हो सके।

२—सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्य समाजो को निर्देश जारी किया जाय कि आर्य समाज मन्दिर में साप्ताहिक आर्य वीरो की बौद्धिक बैठक के लिए आर्य वीर दल अधिष्ठाता एव स्थानीय शाखा नायक को निर्देशित किया जाय।

—राजेन्द्रसिंह आर्य मन्त्री
आर्य वीर दल पूर्वी उ०प्र०

सामवेद पारायण [illegible]

वैदिक धर्म के लिए समर्पित [illegible] के कर्मठ कार्यकर्ता, उदारमना श्रीयुत प० भाऊलाल जी शर्मा [illegible] की प्रेरणा से आर्य समाज मानसरोवर पार्क (शाहदरा) दिल्ली [illegible] तत्वावधान में सामवेद पारायण महायज्ञ का दिनांक १२ [illegible] तक बड़ी ही धूमधाम के साथ समायोजन किया गया। [illegible] माननीय आचार्य चन्द्रदेव जी शास्त्री अपने वेदपाठी ब्रह्मचारियो के साथ (महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद) से पधारे। वेदमन्त्रों की सुमधुर ध्वनि, व्याख्या एव भजन प्रवचनो ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

प्रथम दिन प्रभातफेरी एव अन्तिम दिन ऋषिलंगर का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

—मन्त्री

तपोवन का ग्रीष्मोत्सव २० अप्रैल से

देहरादून २० अप्रैल। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के ४३वें वर्ष का ग्रीष्मोत्सव २० अप्रैल से आरम्भ होकर २६ अप्रैल को सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आचार्य अखिलेश्वरजी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ तथा श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती महाराज के निर्देशन में योग-साधना-शिविर चलेगा। महात्मा चयनमुनि वानप्रस्थी, स्वामी सत्यपति जी महाराज, डा० महेश जी विद्यालंकार, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार भी पधारेंगे।

उल्लेखनीय है कि महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वतीजी की पावन प्रेरणा से स्थापित यह आश्रम देश-भर के धर्म-प्रेमियो को आकर्षित करता है और यज्ञ की पूर्ण आहुति वाले दिन तो हजारों लोगों की उपस्थिति होती है और जन-सामान्य ने उस दिन को "तपोवन-मेले" का नाम दिया हुआ है।

—देवदत्त बाली मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम सोसायटी तपोवन

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- तभी गृहाश्रम में सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों।
- जो स्वयं धर्म में चलकर सब संसार को चलाते हैं जिससे आप और सब संसार को इस लोक अर्थात् वर्तमान जन्म में परलोक अर्थात् दूसरे जन्म में स्वर्ग अर्थात् सुख का भोग करते कराते हैं वे ही धर्मात्मा जन संन्यासी और महात्मा हैं।
- धर्म युक्त सत्य भाषण करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक १७] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२ वैशाख कृ० २ सं० २०४८ १९ अप्रैल १९९२

द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन ९ मई ९२ को दिल्ली में होगा

श्री शिवराज पाटिल सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे

नई दिल्ली १४ अप्रैल।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी ९ मई को दूसरे भारतीय भाषा सम्मेलन के आयोजन का निश्चय किया गया है। विट्ठल भाई पटेल भवन मे आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल करेंगे। पहले दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन गत् दिसम्बर में हैदराबाद के भारतीय विद्या भवन में केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह ने किया था। यह सम्मेलन सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे होगा।

इस सम्मेलन के आयोजक श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने बताया कि देश के समस्त बड़े शहरो और महानगरों में आर्यसमाज इस प्रकार के सम्मेलन और गोष्ठियां आयोजित करेगा। भारतीय भाषा सम्मेलनों की इस श्रृंखला का मुख्य उद्देश्य भाषा के आधार पर देश के विभिन्न प्रान्तों और भाषाई समूहों में एकता स्थापित करना है।

श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि संस्कृत से लेकर उर्दू तक भारतीय संविधान में लिखी समस्त १५ भाषाएं हमारी अपनी है और आर्य समाज चाहता है कि समस्त भाषाओं के विकास पर समान बल दिया जाना चाहिए।

श्री वन्देमातरम् ने कहा कि आर्यसमाज दक्षिण प्रान्त की भाषाओं को देवनागरी लिपि के जरिए जन साधारण तक पहुंचाने की दिशा मे विचार कर रहा है और इस प्रकार के सम्मेलन उत्तर भारत की जनता में दक्षिण भाषाएं और दक्षिण भारत की जनता में हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के प्रचार-प्रसार में भी सहायक होंगे।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का दीक्षांत समारोह सम्पन्न

उद्बोधन भाषण श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् द्वारा

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के ८५वें वार्षिक महोत्सव पर नवस्नातकों को विद्याभास्कर और आयुर्वेद भास्कर की उपाधि प्रदान की गई।

पूज्यपाद स्वामी जी महाराज एव श्री पं० वन्देमारम् जी के कुल भूमि में पहुचते ही गुरुकुल छात्रावास से शोभायात्रा के रूप में बैंड बाजे के साथ उत्सव स्थल की ओर प्रस्थान किया। मान्य अतिथि महोदय नव स्नातकों के साथ गाउन पहने हुए कुलपति जी के साथ आगे आगे चल रहे थे। मुख्य सभा स्थल पर पहुंच कर श्री आचार्य जी द्वारा यज्ञ मण्डप मे नव स्नातकों को यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ दीक्षा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

मान्य अतिथि स्वामी जी एव श्री वन्देमातरम् जी का गुरुकुल के अधिकारियों द्वारा पुष्प मालाओं से स्वागत कर मंच की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। गुरुकुल की गतिविधियो से आर्य जनता को परिचित कराकर नव स्नातकों को आशीर्वाद दिया गया।

दीक्षान्त भाषण

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने नवस्नातकों को बताया कि गुरुकुलीय भूमि के संस्थापक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वतीसे लेकर श्री प०पद्मसिंह शर्मा,नाथूराम शंकर शर्मा, भीमसेन जी आचार्य नरदेव शास्त्री के त्यागपूर्ण जीवन से इस सस्था को जो सम्बल मिला उसका यह परिणाम हुआ कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने जो विद्वान साहित्यकार राजनेता और शास्त्रार्थ महारथी आर्य जगत् को प्रदान किये वह अपने मे बेजोड़ है। विद्वानों की श्रेणी की चर्चा करते हुये पूज्य स्वामी जी महाराज ने दिल्ली की कुछ शास्त्रार्थ चर्चाओं की जानकारी देते हुये प० व्यासदेव शास्त्री की विद्वता और तर्क पूर्ण युक्तियो की चर्चा कर उनको स्मरण किया। प० पद्मसिंह शर्मा की बेजोड़ पत्रकारिता की चर्चा की। आचार्य नरदेव शास्त्री के

(शेष पृष्ठ २ पर)

भविष्य में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव देशी तिथि फाल्गुन बदी दशमी को ही मनाया जाए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग का निर्णय

डा० शिवकुमार शास्त्री
धर्माधिकारी सार्वदेशिक धर्मार्य सभा

विचार विचक्षण पाठकवृन्द ! ऐतिहासिक तथ्यों, तर्कों एवं प्रमाणों के आधार पर वैदिक विद्वानों ने महर्षि की जन्मतिथि सवत् १८८१, फाल्गुन बदी दशमी, शनिवार तदनुसार १२ फरवरी १८२५ ई० निर्धारित की थी।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने इस तिथि को स्वामी जी की प्रामाणिक जन्मतिथि माना है। इस विचार के समर्थक विद्वानों में प्रो० भीमसेन शास्त्री, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, प० बुद्धदेव विद्यालंकार, पं० भगवद्दत्त बी.ए. प० धर्मदेव विद्या मार्तण्ड, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा व्यास आदि प्रमुख हैं।

१५ मार्च १९९२ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक मे सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि भविष्य में महर्षि दयानन्द का जन्मोत्सव देशी तिथि के अनुसार फाल्गुन बदी दशमी को ही मनाया जाए। अत: भविष्य में सभी आर्य समाजें महर्षि का जन्मोत्सव फाल्गुन बदी दशमी को धूमधाम से मनाया करें।

पुस्तक समीक्षा

'वेद वैचित्र्य'

ले०—आचार्य श्री ओंकार मिश्र प्रणव एम. ए.
शास्त्री सदन रामनगर (कटरा) आगरा-६ (उ०प्र०)
प्रकाशक—विश्व निधि मिश्र एम. ए.
विश्व फोटोज, कटरा वाजीर खा, आगरा-६
मूल्य १००) (एक सौ रुपया)

मान्य विद्वान् विचारक, चिन्तक लेखक आचार्य पं० ओंकार मिश्र प्रणव के नाम को आर्य जगत भली प्रकार जानता है।

बड़े गहन मनन के पश्चात् आपने "वेद वैचित्र्य" नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। आपने अनुभूत, प्रयुक्त बाईस मन्त्रो की सरल-सुगम, युक्ति-युक्त तर्कपूर्ण व्याख्या की है।

प्रस्तुत पुस्तक अवलोकन से प्रत्येक मन्त्र का अर्थ दोहे में करके एक-एक गीत मे निबद्ध किया है। मन्त्रो के व्याख्यान पाण्डित्य प्रदर्शन के व्यामोह से हटकर पाठकों के मनों को प्रकाशित करने में सजग हैं।

वेद विषयक प्रचलित भ्रान्त धारणाओ का उन्मूलन करने मे विद्वान् लेखक सक्षम है।

आचार्य नरेन्द्र देव शर्मा की उक्ति के आधार पर—

वैचित्र्यं वेद मन्त्राणां पुष्ट प्रणव तेजसा।
कल्पतां लोक तृष्णाया: सुखान्त्यं शाश्वत ध्रुवम्॥

आचार्य विशुद्धानन्द जी के शब्दों में—

वेद-वैचित्र्य लेखेन निर्मले जन मानसे।
विशुद्धानन्द बोधेन प्रणवो धान्यतां व्रजेत्॥

इस ग्रन्थ की उपयोगिता है "गागर मे सागर" सुखद सूक्ति को चरितार्थ करने वाले—अग्रज, आचार्य, प्रणव जी सदा अपनी लेखनी तृप्त करते रहें।

साथ ही सुधीजन-ग्रन्थ का पारायण करके जहां लाभान्वित होगे वहां लेखक अपने प्रयास में कहां तक सफल हुआ है इसका औचित्य भी प्रकट होगा।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री- सार्व० सभा

दीक्षान्त समारोह

(पृष्ठ १ का शेष)

त्यागपूर्ण जीवन से कुलभूमि से निकले स्नातकों की चर्चा में गुरुकुल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। राजनीति से सामाजिक जगत् तक इस गुरुकुल के स्नातकों और विद्यार्थियों का जो योगदान रहा है उसमें ब्रह्० दयानन्द के शहीदी जीवन की चर्चा भी की।

पूज्य स्वामी जी महाराज ने गुरुकुल महाविद्यालय के संचालकों की चर्चा के प्रसंग में कहा कि इस कठिन समयमें इस गुरुकुल में जो प्राण फूंकेहैं उसके परिणाम स्वरूप आज इस कुलभूमि में चार-पांच सौ विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। आपने इस बात की चर्चा करते हुये सन्तोष व्यक्त किया कि इन अधिकारियों के प्रयास से आज गुरुकुल की उपाधि दस-बारह विश्वविद्यालयों द्वारा बी० ए० के समकक्ष मान्यता प्राप्त हैं। गुरुकुल के हरीतिमामयी वातावरण को देखकर प्राचीन ऋषियों के आश्रम की तुलना की।

आपने नवीन स्नातकों को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुये कहा कि आप इस वातावरण से चलकर संसार के नये धरातल पर पैर रखने जा रहे हैं अब घर की परीक्षा से निकल कर आपको जनता की दृष्टि में परीक्षा देनी है यदि आप यहां की विद्वतापूर्ण परिस्थिति को कायम करने में सफल हुये तो आप अपने को धन्य समझेंगे, यह आपके अधिकार क्षेत्र में हैं। आज आप यहां से प्रस्थान कर रहे हैं। मेरी शुभ कामनायें और आशीर्वाद आपके साथ हैं। आप जीवन में सदा उन्नति के पथ पर अग्रसर हों प्रभु आपको शक्ति प्रदान करे।

उद्बोधन भाषण

माननीय श्री पं० वन्देमातरम् जी ने उपनिषद् से नचिकेता का कथानक प्रस्तुत करते हुये वैदिक संस्कृति और सभ्यता का परिचय कराकर श्रेय और प्रेय की चर्चा करते हुये कहा कि इनमें से आप किस मार्ग को जानकर रुचिकर समझकर आगे बढ़ेंगे ? मान्य पंडित जी ने नव स्नातकों को यह सन्देश दिया कि आपको अपनी परम्पराओं का निर्वाह करते हुये इस संस्था को गौरवशाली बनाना है। इस संस्था के संचालकों की भांति अपने जीवन में त्याग और तपस्या के भाव जगाने होंगे तभी आप अपने को प्राणवान बनाकर सफलता की ओर बढ़ सकेंगे। आपने जहां नव स्नातकों की उन्नति के लिये प्रभु से प्रार्थना की वहीं गुरुकुल के संचालकों को धन्यवाद भी दिया कि आप इस संस्था को और शक्तिशाली बनाये जिससे इसका प्राचीन गौरव अक्षुण्ण रह सके।

इस अवसर पर पचास स्नातकों को विद्याभास्कर और आयुर्वेद भास्कर को उपाधि प्रदान की गई अन्त में गुरुकुल के कुलपति आचार्य गौरीशंकर जी तथा पं० रामकरण जी शर्मा कुलाधिपति ने गुरुकुल की उन्नति के लिये आर्य जनता से विशेष सहयोग देने की अपील की।

अन्य आवश्यक कार्यक्रम

उत्सव की पावन बेला पर वेद सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन आयुर्वेद सम्मेलन और कविसम्मेलन का आयोजन भी किया गया। विशेष आकर्षण का केन्द्रबिन्दु प्रात:कालीन विशेष यज्ञका आयोजन था। ब्रह्मचारियों के व्यायाम के प्रदर्शन ने जनता को मन्त्रमुग्ध किया। इस प्रकार से सभी के आशीर्वाद के साथ दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ।

तमिलनाडु में वैदिक अनुसन्धान केन्द्र बनेगा

तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री सुश्री जय ललिता ने विधान सभा में यह घोषणा की है कि तमिलनाडु सरकार राज्य मे एक वैदिक अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना करेगी जिसमें राज्य सरकार द्वारा एक करोड़ रुपया व्यय किया जायेगा।

भारतीय भाषा सम्मेलन क्यों ?

भाषा देश को एक सूत्र में बांधती है। हमारे देश की संस्कृति को देश की भाषाएं ही वाणी प्रदान कर सकती हैं। एकता को बल प्रदान करने वाले इस स्वर्ण सूत्र की गत वर्षों में उपेक्षा की गई है। यही नहीं निहित स्वार्थों ने भाषा का प्रयोग विभाजक अस्त्र के रूप में किया है।

हमारे समाज में आर्थिक विषमता के लिए भी भारतीय भाषा की उपेक्षा एक प्रमुख कारण है। आज भारतीय भाषा के माध्यम से शिक्षा के अवसर सीमित हैं और उन भाषाओं के माध्यम से शिक्षित युवकों के लिए नियोजन के अवसर भी नगण्य हैं।

परकीय भाषा आज भी हमारे ऊपर थोपी हुई है। यदि इस सांस्कृतिक दासता से विमुक्ति नहीं हुई तो हमारा विचार, हमारा तत्वज्ञान और हमारी सभ्यता नष्ट हो जाएगी। हमारी अस्मिता ही मिट जायेगी। प्राचीन सुमेरू और मिस्र की सभ्यता के साथ जो हुआ वही हमारे साथ हो जाएगा।

आज मुट्ठी भर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित धनिक वर्ग सम्पूर्ण देश पर परमाधिकार जमाए हुए है। योग्य युवकों के लिए नियोजन के द्वार केवल इसलिए बन्द हैं कि वह हमारे पुराने शासकों की भाषा मे निष्णात नही है। यदि सत्ता कुछ अंग्रेजी जानने वालों के पास ही बंदिनी है तो यह न तो लोकतन्त्र है न समाजवाद।

संविधान मे और राजभाषा अधिनियम में भाषाओं के सम्बन्ध में उपबन्ध किए गए थे। संविधान निर्माताओं की यह आकांक्षा थी और जनता की आज भी यह अभिलाषा है कि जनभाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग हो। किन्तु संविधान की उपेक्षा करते हुए आज भी दासता का बोझ अंग्रेजी के रूप में हमारे कन्धों पर पड़ा हुआ है। भारत का नवयुवक इसके विरुद्ध आवाज उठा रहा है। देश के उत्कर्ष में अंग्रेजी बाधक है। उसके स्थान पर भारतीय भाषाओं का लाना समय की माग है।

भाषा विषयक संकल्प भारत की ससद् ने १९६८ में पारित किया था। १९९१ में ऐसा ही संकल्प लोक सभा ने पुन: पारित किया। दु:ख की बात है कि फिर भी शासकों ने इस ओर ध्यान नही दिया है। इसमे केन्द्र सरकार जितनी दोषी है लगभग उतनी ही राज्य सरकारें भी। उदाहरण के लिए अभी तक केवल चार उच्च न्यायालयो में राज्य की राजभाषा के प्रयोग की अनुमति है। शेष में भारतीय भाषाएं आज भी न्यायालय के परिसर से बाहर खड़ी हैं और अंग्रेजी आसनारूढ़ है।

भारतीय भाषा यात्रा

आज हमारे बीच ऐसे राजनैतिक दल मौजूद हैं जो नाम और कर्म दोनों से ही एक प्रान्तवाद और एक भाषावाद के लिए स्थापित किए गए हैं। भाषाओं को आधार बनाकर अलगाववाद का जहर फैलाने की कुचेष्टा की जा रही है। ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि हमारी प्राचीन संस्कृति समस्त आर्यावर्त देश के लिए एक थी। उस समय भी भाषाओं में भेद था परन्तु लोगों के मन अलग-संस्कृति का विकास करने की कोई कोशिश नहीं कर पाया।

भाषा एकता तथा विभाजन दोनों का ही साधन बन सकती है परन्तु यह निर्भर करता है नेतृत्व करने वालों पर, एक तरफ जहां राजनीतिक दल भाषाओं के आधार पर विभाजन को अपना लक्ष्य मानते हैं वही आर्य समाज भाषाओं के ही आधार पर सारे देश की एकता एवं अखण्डता को सुदृढ़ बनाने का सपना संजो रहा है।

इस प्रकार भारतीय भाषा सम्मेलनों का देश के विभिन्न शहरों में शृंखला बद्ध आयोजन करके उत्तर और दक्षिण प्रान्त के लोगों में मेल-मिलाप और एक दूसरे की भाषाओं को समझने के अवसर उपलब्ध कराए जायेंगे। आर्यसमाज की यह भारतीय भाषा यात्रा न तो वोट बटोरने के लिए है और न ही किसी अन्य स्वार्थ के कारण। अपितु केवल मात्र इस उद्देश्य से प्रारम्भ की गई है कि सारे देशवासी भारत की समस्त १५ भाषाओं को अपनी मातृ भाषाएं समझें तथा हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप मे विकसित किया जाए।

भारतीय भाषा सम्मेलन शान्ति पूर्ण तरीकों से जन-जागरण करके भारतीय भाषाओं को शिक्षा, न्याय, प्रशासन और अन्य सभी क्षेत्रों में उनका उपयुक्त स्थान उन्हें दिलाना चाहता है। यह कार्य ऋषि दयानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी के विचारों के अनुरूप है। इस उद्देश्य से २१ और २२ दिसम्बर १९९१ को हैदराबाद में पहला सम्मेलन हुआ। जिसका उद्घाटन केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह जी ने किया था। उसमें प्राप्त जन सहयोग और परिलक्षित जनभावना को देखते हुए यह निर्णय किया गया कि इस प्रकार के सम्मेलन भारत मे अन्य स्थानों पर भी किए जाएं।

इस कड़ी में ६ मई १९९२ को दिल्ली में कांस्टीट्यूशन क्लब में प्रात: १० बजे से १ बजे तक एक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसका उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल करेंगे।

स्वागत समिति

भारतीय भाषा सम्मेलन

डा० सच्चिदानन्द श्री विमल वधावन डा० धर्मपाल
श्री के०नरसिम्हा रेड्डी श्री सूर्यदेव श्री क्रांतिकुमार कोरटकर
श्री राजेन्द्र अग्रवाल श्री आदर्श गोयल श्री विद्याधर गुरुजी

आचार्य कुमुदेन्दु नाम के प्रसिद्ध जैन विद्वान् और वेद

जैन मतावलम्बी साधारणतया वेद-विरोधी माने जाते हैं किन्तु उनमें भी निष्पक्ष विद्वानो ने वेदों के गौरव को जिस रूप में स्वीकार किया है उसका एक अद्भुत उदाहरण हम 'भूवलय' नामक अत्यन्त आश्चयजनक ग्रन्थ के रचयिता आचार्य कुमुदेन्दु के उपर्युक्त (भूवलय) ग्रन्थ से पाठकों के सन्मुख रखते हैं। आचार्य कुमुदेन्दु नामक इस जैन विद्वान् ने लिखा है कि—

ऋग्वेद ही अनादिनिधना आदिम भगवद्वाणी है इसमें से अनेक भाषाएं निकलती हैं। भगवान् का सन्देश सभी भाषाभाषियों के लिये एक सा होता है। भूवलय में मूलशब्द इस प्रकार के हैं—

महदग्र्यणि विजय ऋग्वेद वलय हे ट्ह गुणिसलनाद्यनन्त
सर्वज्ञ देवनु सर्वांगदि पेलद सर्वस्वभाषेय सरणि
पर्वदन्ददलि हब्बुतहोगि लोकाग्रसर्वार्थसिद्धिय बलसि ॥
मुक्तियोलिह सिद्ध जीवर तागुत व्यक्ताव्यक्तवदागि
सकलवु कर्माटदणु रूप होंदुत प्रकटदे ओंदरोल् अडगि।
इदिनेन्टु भाषेयु महाभाषेयागलु वदिय भाषेगल येलनूरम्।
हृदयदोलडगिसि कर्माटि लिपियाग हुदुगिसिदंक भूवलय
सकलड् सादि अनादि (भूवलय ४३)
वशगोंडु द्वैताद्वैतवनेल्लव अनेकान्त रसदोलु ओंकारदेकम्।
यशवादक्षरवोन्दिगे वेसेदिह होसवनादिय ग्रन्थ ॥
भूवलय अ० ६ श्लो० २१४॥

ज्ञान को तलाश में लिखी रामायण

—सुरेश शर्मा—

बासठ वर्षीय जाने माने हिन्दी लेखक पांडुरंग राव की नवीनतम कृति है—'रामकथा नवनीत।' हिन्दी में राम काव्य की परंपरा में यह नवीनतम गद्य कृति है। साढ़े चार सौ पन्नों की यह कृति उपन्यास या काव्य नहीं है। श्री राव कहते हैं, मेरी यह कृति कहानी, उपन्यास या आलोचना नहीं है। यह तो वाल्मीकि रामायण की महज विवक्षा हैं। इसे नवनीत कहने का कारण है। 'कहानी कहने के बाद जो सारतत्व शेष रह जाता है कि ऐसा क्यों कहा, यही नवनीत है। असल में रामायण में वाल्मीकि ने राम कथा के माध्यम से जो सवाल उठाए हैं 'रामकथा नवनीत' मे उसी का विवेचन है।'

हिन्दी के अलावा भी विभिन्न भारतीय भाषाओं में रामकथा की समृद्ध परंपरा रही है। स्वयं श्री राव की मातृभाषा तेलुगु मे राम काव्य का संसार काफी विस्तृत है। ऐसे मे आदि राम काव्य रामायण को ही उन्होंने आधार क्यों बनाया? श्री राव कहते है, वाल्मीकि की रामायण एक सम्पूर्ण महाकाव्य है। उसमें जीवन के सभी पक्ष चित्रित हुए हैं। इसमें दासता और दैन्य कहीं नहीं है। वाल्मीकि ने न तो कहीं भक्ति का उल्लेख किया है और न ही राम को भगवान के रूप में प्रस्तुत किया है। फिर भी इसका यह मतलब नहीं कि उन्होंने 'भक्ति' या 'भगवान' की उपेक्षा की है। असल मे वाल्मीकि की मान्यता है कि भक्ति ज्ञान के माध्यम से ही होगी। उन्होंने ज्ञान की महत्ता प्रतिपादित करने के लिए रामायण लिखी। अज्ञान के परिवेश मे ज्ञान को कैसे महत्व मिले यह वाल्मीकि की मुख्य चिन्ता है। श्री राव का कहना है कि वाल्मीकि ने ज्ञान की तलाश मे रामायण लिखी। आज के समय मे रामायण की प्रासंगिकता इसलिए है क्योंकि वाल्मीकि द्वारा अभिव्यक्त 'ज्ञान' अब भी पुराना नहीं पड़ा है। यह और बात है कि हम उसे भूलते जा रहे हैं।

वाल्मीकि के जीवन और विचारधारा के बारे में श्री राव की राय है, वाल्मीकि को शुरू में पारंपरिक शिक्षा बेशक न मिली हो, लेकिन उनके संस्कार बेहद ऊंचे थे। सामान्य जीवन में वैदिक संस्कृति का प्रचार करना उनके लेखन का उद्देश्य था। उनकी सर्जनशीलता इतनी गहरी है कि उनके शब्द ही नहीं, उनके मौन भी बोलते हैं···

रामायण की पृष्ठभूमि के बारे में श्री राव का कहना है कि वाल्मीकि ने जब यह महाकाव्य लिखा था उस समय लोक जीवन मे विभिन्न रूपों में राम कथा मौजूद थी। इन कथाओं को रामायण मे उन्होंने पहली बार 'संवेदनात्मक ज्ञान' के मौलिक रूप मे सामने रखा।

पुस्तक के छह अध्याय हैं। उनके नाम हैं: बाल्य, अयोध्या, अरण्य, किष्किंधा, सुन्दर और विजय। ये सभी अध्याय ७७ शीर्षकों मे बटे हैं। इन शीर्षकों के तहत राम के जीवन के विविध प्रसंग परिभाषित हुए हैं। श्री राव ने राम के जीवन के एक-एक आचरण की महत्वपूर्ण व्याख्या की है। अपनी भावी योजना के बारे मे श्री राव बताते हैं 'वाल्मीकि रामायण में जितने शब्द राम के मुंह से निकले हैं, उन्हीं को आधार बना कर उनका चरित्र खड़ा करना चाहता हूं। इस पुस्तक का नाम वे 'सत्य पराक्रम राम' रखना चाहते हैं। इसी तरह श्री राव की योजना 'मधुर मनोहर श्याम' पुस्तक लिखने की भी है। इसमें कर्म के आधार पर संस्कृति का विवेचन होगा जो महाभारत का प्रतिपाद्य है।

हिन्दी की रामकथा परंपरा के बारे में उनकी निजी राय है। कहते हैं: तुलसी ने भक्ति को प्राथमिकता दी और लोक रंजन को महत्व दिया। मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' में कल्पनाशीलता ज्यादा है। वाल्मीकि पर लगाया गया यह आरोप सही नहीं है कि उन्होंने उर्मिला पर ध्यान नहीं दिया। अगर उर्मिला पर ज्यादा ध्यान देते तो राम की कहानी समग्रता में नहीं कह पाते। निराला ने भी 'राम की शक्ति पूजा' में राम के चरित्र के एक पहलू को ही लिया है।

वाल्मीकि को शुरू में पारम्परिक शिक्षा बेशक न मिली हो, लेकिन उनके संस्कार बेहद ऊंचे थे। सामान्य जीवन में वैदिक संस्कृति का प्रचार करना उनके लेखन का उद्देश्य था। वाल्मीकि रामायण में जितने शब्द राम के मुंह से निकले हैं, उन्हीं को आधार बना कर उनका चरित्र खड़ा करना चाहता हूं।

आज लिखी जा रही कविता को लेकर श्री राव सन्तुष्ट नहीं हैं। उनकी राय है: कहे बिना नहीं रह सकते, ऐसे अन्तःकरण शुद्धि के लिए लिखने वाले कम होते जा रहे हैं। पद और धन के लिए लोग लिख रहे हैं। शुद्ध भावना के बिना कविता नहीं आ सकती। लोक स्वर ही कवि का स्वर बनता है···आज लोक स्वर 'विक्षिप्त' है।

पुस्तक के 'प्रस्तुति' में कहा गया है कि राम काव्य की···विराट परंपरा को हृदयंगम करने के लिए वाल्मीकि की रामायण को समग्र रूप से समझना आवश्यक है। निश्चय ही पांडुरंग राव की पुस्तक 'रामकथा नवनीत' रामायण को समग्रता से समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसराईल से बातचीत

अरब नवाज भारतीयों के सीनों में आग भड़क उठी होगी जब इन्होंने देखा होगा कि इसराईल के दो उच्चतम अधिकारी भारत सरकार के प्रतिनिधियों से अनेकों हालात पर विचार-विमर्श करने के लिए हाल में आ गए अब यह सुनने में आया है कि भारतीय अफसरों की एक समिति सम्भवतः अरब जाएगी और वहां से यूरोसलम जहां वह इसराईली सरकार से विचार विमर्श करेगी—

कहा जाता है कि जराअती और कैमीकल के सम्बन्ध में दोनों सरकारों में जो बातचीत हो रही है इसी के साथ ही सुरक्षा के सम्बन्ध में भी सोच विचार होगा। यह सब कुछ पढ़कर इसराईल के शत्रुओं के सीने में सांप लोट जाएगा—क्योंकि ऐसा मुमकिन है कि भारत और इसराईल की सरकारें दोनों देशों को भावी खतरों का सामूहिक मुकाबला करने के लिए योजना बनालें अभी तक किसी अरब देश ने भारत सरकार को इसराईल की सरकार को मान्यता देने के कारण बुरा भला नहीं कहा और शायद कहे भी न। इसलिए कि अब अरब स्वयं इसराईल को मान्यता देने के लिए तड़प रहा है। ऐसी अवस्था में वह भारत को क्या बुरा भला कहेंगे, हां उन लोगों को मरोड़ जरूर लग जायेगी जो हर हालत मे इसराईल को मान्यता देने के विरुद्ध हैं—अब एक निहायत ही काबिले गौर बात हुई है जब तक भारत सरकार ईसराइल को मान्यता न देने की बातें करती थी तो कई लोग इस के इस दृष्टिकोण का समर्थन करते थे परन्तु अब जबकि इसने इसराईल को मान्यता दे दी है वह सब के सब खामोश होकर बैठ गए। गोया कि वह अपना सारा विरोध दिखावे के लिए कर रहे थे। अगर वाकया भी यही है—इसराईल के दृष्टिकोण को जो कोई गम्भीरता और निष्पक्ष भावना से देखेगा उसे यह विश्वास हो जाएगा कि इससे जियादती हो रही है इसराईल को आए दिन अरबों की तरफ से जो धमकियां दी जा रही हैं इसके उत्तर में इसराईलों में भी कुछ कोई अनुचित बात कह देते हैं—परन्तु दोष नहीं दिया जा सकता। कोई कारण नहीं कि इसराईली और फिलस्तीनियों का झगड़ा थाम तक समाप्त न हो जाए—अगर अरब सियासतदान भी हमारे कांग्रेसी हाकिमों की तरह मुसलमानों को अपनी तरफ करने की नीयत से अमल न करें अब जबकि इसराईल से राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित हो गए हैं इसराईल के विरोधियों को भी इससे सहयोग के साथ बढ़ने वाले आरम्भ हो जायेंगे यदि इन्होंने आंखों पर तासुब की ऐनक न लगा रखी हो—

'प्रताप' के सौजन्य से (तिथि १०-३-९२)

जन्मशती पर विशेष लेख (१८९२-१९९२)—

स्वामी भवानीदयाल सन्यासी : आर्य समाज के गौरवमय व्यक्तित्व

—ब्रह्मदत्त स्नातक, जनकपुरी, दिल्ली

उन्नीसवी सदी मे जन्मे भारतीय सपूतो मे स्वामी भवानीदयाल सन्यासी का विशिष्ट और अनूठा स्थान है। यो तो उनका जन्म भारत के बाहर दक्षिण अफ्रीका मे हुआ और उनके जीवन का काफी बड़ा भाग भी वही पर बीता परन्तु अन्तिम सांस तक वे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से भारत की सेवा मे लगे रहे। अपनी कुशल किन्तु साधारण रूप से क्रियाशील काया से उन्होंने भारत मे और भारत के बाहर विशेषत प्रवासी भारतीयो के लिए जो कार्य किया, वह सदैव स्मरणीय रहेगा। स्वदेश और विदेश मे भारतीयो के सुख-दुःख मे हिस्सा बटाना उनका व्रत था, जिसे उन्होंने आजीवन बड़ी निष्ठा से साथ निभाया।

पिछली शती के अन्तिम चरण मे एव इस शती के प्रारम्भिक दशकों मे प्रवासी भारतीयो के लिए जिन महानुभावो ने विशेष रूप से काम किया उनमें लाला लाजपत राय भाई परमानन्द गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गांधी, स्वामी शंकरानन्द, दीनबन्धु सी एफ एण्ड्रूज सरोजिनी नायडू, वी० एस० श्री निवास शास्त्री और प० बनारसीदास चतुर्वेदी विशेष उल्लेखनीय है। प्राय उन सभी का स्वामी जी से सम्पर्क था और वे सब स्वामी जी की निष्ठा एव कार्यशक्ति को कद्र करते थे।

भवानीदयाल जी का जन्म १० सितम्बर १८९२ को जोहान्सबर्ग मे हुआ था। इस तरह उनकी जन्मभूमि दक्षिण अफ्रीका थी किन्तु उनकी जड़ें भारत मे थी जहां से उनके बिहार निवासी पिता जयराम सिंह और अवध निवासिनी माता मोहिनीदेवी शर्तबन्द कुलियो के रूप में दक्षिण अफ्रीका पहुंचे थे। इस तरह प्रवासी भारतीयो की सेवा की ललक और भारत भक्ति भवानीदयाल जी को घुट्टी में मिली थी। इस दृष्टि से भवानीदयाल (सन्यासी वे उत्तरकाल मे बने थे) जी ने गांधी जी के द० अफ्रीका आने से पूर्व ही सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र मे काम करना शुरू किया था।

गांधी जी से भेंट

कुछ वर्ष भारत मे बिताकर दिसम्बर १९१२ मे २० वर्षीय भवानी दयाल जोहान्सबर्ग वापिस चले गए। वहां पहुंचकर उसी दिन गांधी जी के दर्शन करने फीनिक्स आश्रम चले गये। (आज फीनिक्स आश्रम तथा उसकी गांधी प्रवृत्तियो के केन्द्रो पर अश्वेत लोगो ने कब्जा कर रखा है और सरकारी औषधालय चल रहा है।)

इस भेंट का मार्मिक वर्णन भवानीदयाल जी ने आत्मकथा मे यो किया है—

"रास्ते में मैं महात्मा गांधी जी की उस मूर्ति की कल्पना कर रहा था जिस रूप मे उन्हे अपने बचपन मे जोहान्सबर्ग में देख चुका था। किन्तु वहां पहुंचते ही मेरी कल्पना भ्रान्त सिद्ध हुई। आश्रम के निकट पहुंचा तो देखता क्या हूं कि महात्मा गांधी बहुत मोटे कपड़े का जांघिया और अधबही (आधी बांह का कुरता) पहने खेत मे कुदाल चला रहे है। न पैरो मे जूते थे न सिर पर टोपी। वे कुदाल इस तेजी से चला रहे थे कि उनके सभी साथी पीछे छूट गए थे। मैंने मुखाकृति देखकर उन्हे पहचान लिया और उनके चरणो की धूल माथे पर चढ़ायी।'

गांधी जी ने भवानी दयाल से इंडियन ओपीनियन" के हिन्दी भाग का सम्पादन करने और फीनिक्स आश्रम में रहने का प्रस्ताव किया। भवानी दयाल सहर्ष तैयार हो गए। इसी दौर मे उनका दीनबन्धु सी. एफ एण्ड्रूज से परिचय हुआ, जिससे उन्हे प्रवासी भारतीयो की सेवा और भारतीय स्वाधीनता के कार्यों के लिए बड़ी प्रेरणा मिली।

सन् १९१९ में भवानीदयाल अपनी पत्नी जगरानी जी को दक्षिण अफ्रीका मे मरणासन्न छोड़कर अपने पुत्र और भतीजे को गुरुकुल वृन्दावन मे भरती करवाने भारत आए और अगस्त १९२० तक यहां रहे। भारत निवास की इस स्वल्पावधि मे अनेक सम्पर्कों की नींव पड़ी। इसी दौर मे उनकी भेंट प० बनारसी दास चतुर्वेदी से हुई।

इस यात्रा के दौरान उन्होंने गांधी जी के कुछ निर्णयों की निर्भीक भाव से आलोचना की थी। उनका कहना था कि १९०७ के आंदोलन में भारतीयो को अपमान का कड़वा घूंट पीना पड़ा था दुर्भाग्य से या गलतफहमी से गांधी जी ने उंगलियो की छाप देने के मामले मे दक्षिण अफ्रीका सरकार की नीति का समर्थन किया और इससे क्रुद्ध होकर मीर आलम नामक पठान ने उन पर आक्रमण किया था जिससे उनके आगे के दो दांत टूट गये थे। भवानी दयाल मानते थे कि उस मामले में भी गांधी जी से भूल हुई थी।

इसी तरह जब नेटाल मे रहने का अधिकार छोड़कर स्वेच्छा से स्वदेश लौटने वाले भारतीयो के लिए दक्षिण अफ्रीका सरकार ने पुरस्कार योजना चालू की और गांधी जी और एण्ड्रूज ने उसका समर्थन किया तब भवानीदयाल ने उसका विरोध किया था।

दक्षिण अफ्रीका मे हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए भवानीदयाल जी ने एक प्रेस खोलकर हिन्दी' नामक पत्र निकाला। मारिशस फीजी, डमरेरा, ट्रिनीडाड, सूरीनाम, टांगानीका, युगांडा केन्या, रोडेशिया (जाम्बिया और जिम्बाब्वे) आदि देशो के प्रवासी भारतीयो में यह समाचार पत्र लोकप्रिय हुआ। परन्तु बाद मे भवानीदयाल जी को पारिवारिक कारणो से इसे बन्द करके भारत लौट आना पड़ा।

भारत मे रहते हुए उन्होंने पटना मे आर्यावर्त का और हजारी बाग जेल मे हस्तलिखित 'कारागार" का सपादन किया। हिन्दी मे लिखी उनकी बहुत सी पुस्तकें हैं, जिनमे से मुख्य हैं। १ दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, २ दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव, ३ हमारी कारावास कहानी ४ महात्मा गांधी, ५ ट्रान्सवाल मे भारतवासी ६ नेटाली हिन्दू ७ वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता ८ शिक्षित और किसान ९ वैदिक प्रार्थना, १० वैदिक धर्म और आर्य समाज तथा ११ प्रवासी की कहानी। इनमे से अधिकांश पुस्तकें बाजार मे उपलब्ध नहीं हैं।

विदेश मे निवास एव शिक्षा के कारण स्वामी भवानीदयाल जी को अंग्रेजी में लेखन तथा धाराप्रवाह भाषण का अभ्यास था। परन्तु स्वदेशवासियो से वे यथासम्भव हिन्दी मे ही बोलते थे और उन्हे भी हिन्दी में बोलने को विवश करते थे। दक्षिण अफ्रीका मे भारत सरकार के प्रतिनिधि श्री श्रीनिवास शास्त्री ने जब अंग्रेजी को प्रवासी भारतीयो की शिक्षा का माध्यम रखने के पक्ष मे अपनी रिपोर्ट दी तो स्वामी जी ने उसका डटकर विरोध किया। भारतीय वेशभूषा के भी वे बड़े आग्रही थे और सन्यासी होने के बाद देश-विदेश मे जहां भी रहे गेरुआ रंग की पगड़ी चोगा और पाजामा पहनते थे।

नक्षत्र विद्या और वेद

—पं० शिवदयालु आर्य वानप्रस्थ

नक्षत्र शब्द का अर्थ है न+क्षतं+राति अर्थात् जो किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाते हैं।

अथर्ववेद काण्ड १६ के सूक्त ७ में नक्षत्र विज्ञान सम्बन्धी निम्न ५ मन्त्र विशेष विचार करने योग्य हैं।

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि।
तुर्मिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम् ॥१॥

अर्थ- नभ-मण्डल में विचित्र आभा व ज्योति से युक्त, निरन्तर अपनी धुरी पर वेग से घूमने वाले नक्षत्र हैं। मैं सुमति की कामना से युक्त होकर दिन-दिन उनके प्रकाश में पवित्र स्तोत्रों द्वारा प्रभु का गुणगान करता और अपने स्वर्ग समान आश्रम को सुख का धाम बनाता हूं॥१॥

सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी: चास्तु भद्रं मृगशिर: शमार्द्रा।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे ॥२॥

हे एक मात्र वन्दनीय ज्योति स्वरूप प्रभो! कृत्तिका, रोहणी नक्षत्र कल्याणकारी हों मृगशीरा और आर्द्रा नक्षत्र शान्ति के दायक हों। पुनर्वसु सुख बरसाने वाला हो और इसी प्रकार सुन्दर पुष्य नक्षत्र भी सुखदायक हो। तथा आश्लेषा और मघा नक्षत्र मेरी जीवनचर्या को तेजयुक्त करें॥२॥

पुण्यंपूर्वा फाल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठ। सुनक्षत्र मरिष्ट मूलम् ॥३॥

पूर्वा फाल्गुनी तथा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र इस जीवन में पुण्योदय के हेतु हों, हस्त और चित्रा नक्षत्र मंगलकारी हों और इसी प्रकार स्वाति नक्षत्र भी मुझे सुखदाता हो। अनुराधा और विशाखा नक्षत्र मुझे प्रशंसित करें। ज्येष्ठा नक्षत्र सदा प्रसन्नता कारक हो तथा श्रेष्ठ मूल नक्षत्र सभी विधि कल्याणकारी हो।

अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आवहन्तु।
अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवण: श्रविष्ठो: कुर्वतं सुपुष्टिम् ॥

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र मुझे अन्न से भरपूर करें तथा दिव्य गुणों वाला उत्तराषाढ़ बल वृद्धि का हेतु हो। अभिजित् नक्षत्र सदा पुण्यकारी हो तथा श्रवण और श्रविष्ठा (धनिष्ठा) नक्षत्र मुझे पुष्टि दायक हों।

आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्मा।
आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आवहन्तु ॥५॥

शतभिषग् नक्षत्र जीवन में वरण करने योग्य महान् यश का दाताहो। पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मुझे तेजस्वीबनावें। रेवती तथा अश्विनी नक्षत्र मुझे ऐश्वर्य से युक्त करें तथा भरणी नक्षत्र सम्पदा प्राप्त करावें॥५॥

इस सारे अथर्ववेदीय सूक्त मे एक भी नक्षत्र अनिष्टकारक नहीं। सबके सब सुख, शान्ति, तेज, ऐश्वर्य आदि से युक्त करने वाले हैं। नक्षत्रो मे शुभ अशुभ की कल्पना फलित ज्योतिष वालों का माया जाल है

नक्षत्रो के सम्बन्ध मे पुण्य-अपुण्य की कल्पना आश्वलायन गोभिल तथा शौनक गृह सूत्रों मे भी विद्यमान है। संस्कार विधि में इन गृह सूत्रों के प्रमाण भी विवाह संस्कार मे दिये गये हैं।

यथा—उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्ये नक्षत्रे आश्वलायन।
पुण्ये नक्षत्रे दारान् कुर्वीत। गोभिल गृह्य सूत्र शौनक॥

यह सब काल्पनिक और वेद विरुद्ध होने से त्याज्य हैं। तिथि तथा नक्षत्रों के देवताओ की भी गोभिल आदि गृह सूत्रों में कल्पना की गई है। संस्कार विधि में इनके कल्पित देवताओं से आहुति देने का विधान किया गया है जो विचारणीय है।

नक्षत्र कितने है

नक्षत्र असंख्य हैं। सर्वव्यापक सर्वज्ञ चेतन परमात्मा के अति-रिक्त अन्य कोई उनका पूर्ण पता नहीं पा सकता। अब तक वैज्ञानिकों ने जितने नक्षत्रों का ज्ञान प्राप्त किया है उनकी संख्या २६६ बतलाई जाती है। आकाश गंगा में जो ओरायन नक्षत्र के निकट आकाश में दृष्टिगोचर होती हैं उसमें असंख्य छोटे बड़े नक्षत्र और ग्रह हैं। इन्हीं में १२ राशियों में दृष्टिगोचर होने वाले तारों के समूह भी सम्मिलित हैं जिनको मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन नाम से पुकारा जाता है।

पृथिवी सूर्य की परिक्रमा ३६५ दिनों में करती है। सूर्य को केन्द्र बिन्दु मानकर पृथिवी के मार्गचक्र को १२ भागों में विभक्त किया जाता है। उन्हीं भागों का नाम मेष वृष आदि तारा समूहों के दृष्टिगोचर होने से पड़े हैं। राशियों के नामों की विभिन्न भाषाओं में तालिका निम्न प्रकार है—

सं०	हिन्दी	फारसी	लातीन	अंग्रेजी
१	मेष	हमल	एरीज	रैम
२	वृष	सौर	टाइस	बुल
३	मिथुन	जौज	जैमिनाई	ट्विन
४	कर्क	सरतान	कैन्सर	क्रैब
५	सिंह	असद	लियो	लायन
६	कन्या	सम्बुला	विरगो	वरजिन
७	तुला	मीजान	लिब्रा	बैलैन्स
८	वृश्चिक	अजरब	स्कारपियो	स्कारपियन
९	धनु	कौस	सैगीटारिस	आर्चर
१०	मकर	जदी	कैप्रीकारनस	गोट
११	कुम्भ	दल्व	ऐक्वारियस	वाटरबेयरर
१२	मीन	हूत	पिसेज	फिसेज

पृथिवी के मार्गचक्र को सूर्य को केन्द्र बिन्दु मानकर २७ विभागों में भी गणित ज्योतिष के आचार्यों ने विभक्त किया है। जिस विभाग मे जो अश्विनी भरणी आदि नक्षत्र दृष्टिगोचर होते रहे हैं उनकी संज्ञा उन्ही के नाम के आधार पर रखी गई है। इस प्रकार प्रत्येक राशि में २॥ नक्षत्र माने गये हैं। गणित सौकर्य से २८वें अभिजित् नक्षत्र को छोड़ दिया गया है। संसार के सब देश, अरब राष्ट्रों को छोड़कर, सौर्य सम्वत् ही मानते हैं। किन्तु अरब राष्ट्र केवल चन्द्र मास सम्वत् को ही मानतेहैं जो २९ २/३×१२=३५६ दिन का होता है अर्थात् सौर्य मास से १० दिन कम। अरब देशों का पञ्चाग चन्द्रमास मासों पर आधारित होने से उसके ६६ वर्ष और सौर्य सम्वत् वालों के ३५ वर्ष बैठते हैं। केवल चान्द्रमस सम्वत् की मान्यता के कारण मुसलमानों के सारे त्यौहार घूमते रहते हैं। भारत के ज्योतिषियों ने सौर्य और चान्द्रमस सम्वतों का समन्वय किया हुआ है। प्रति तीन वर्ष में एक मलमास जिसको लौंद का महीना भी कहते हैं, जोड़ा गया है जिससे यह अन्तर लगभग निकल जाता है। चान्द्रमस मास २९ दिन १६ घण्टों का होता है। पूर्ण चन्द्रमा पर मास की समाप्ति मानते हैं। इस मास को ३० भागों मे विभक्त किया गया है जो प्रतिपदा द्वितीया आदि तिथियां कहाती हैं।

चन्द्रमा के मार्ग चक्र को पृथिवी को केन्द्र बिन्दु मानकर २७ भागों में विभक्त किया गया है। इन २७ विभागों में २७ नक्षत्रों की कल्पना भी की गई है। इस क्रम से एक नक्षत्र का काल २९-२/३/२७ दिन होता है अर्थात् २६ घण्टों से कुछ अधिक समय तक नक्षत्र रहता है। (क्रमशः)

शिक्षा के अग्रदूत—

महात्मा हंसराज

श्री दयानन्द आर्य, एम० ए० रिसर्च स्कालर
साधु आश्रम, होशियारपुर

महात्मा हंसराज जी का जन्म १९ अप्रैल १८६४ ई० में पंजाब प्रान्त जिला होशियारपुर के बजवाड़ा ग्राम में हुआ। उनके पिता लाला चुन्नीलाल मध्यवर्ग से सम्बन्ध रखते थे, आय इतनी कम थी कि परिवार का निर्वाह बड़ी कठिनता से होता था। महात्मा जी की प्रारम्भिक शिक्षा तो अपने गांव के विद्यालय में हुई। छः वर्ष की अवस्था में उनकी सगाईकर दी गई। दुर्भाग्यवश १२ वर्ष की आयु में पिता जी का स्वर्गवास हो गया। सारे परिवार को विपत्ति झेलनी पड़ी। हंसराज जब हाई स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने जाते तो मार्ग में पड़ने वाला जो ग्रीष्म-काल में तप जाता था, हंसराज नंगे पांव इसे पार किया करते। परिवार की निर्धनता में वह तपस्वी पला।

१८७७ ई० में अपने बड़े भाई मुलकराज के साथ वे कालेज-शिक्षा के लिए लाहौर चले गए। वहां यूनिवर्सिटी कालेज में प्रवेश ले लिया। उनके सहपाठियों में ला० लाजपतरायजी के भाषणों में अग्नि बरसती थी। जबकि हंसराज जी का शान्त भाषण जनता के लिए शान्तिप्रियता का सन्देश देता था। १८७७ ई० में आर्यसमाज के संस्थापक युग-प्रवर्तक ऋषि दयानन्द लाहौर में आए। उसी वर्ष वहां आर्य समाज की नींव रखी गई। ला० साईंदास जी चीफ कोर्ट के अनुवादक थे, आर्य समाज के मन्त्री बने। वे नवयुवकों को आर्य समाज में लाया करते थे। उनके सम्पर्क एवं प्रेरणा से ला० लाजपतराय, हंसराज व गुरुदत्त का झुकाव आर्य समाज की ओर हो गया। २१ वर्ष की आयु में हंसराज जी की शिक्षा का चरण समाप्त हुआ। विद्यार्थी-काल में इन युवकों ने एक अंग्रेजी-पत्रिका प्रकाशित करनी आरम्भ कर दी थी। आर्य समाज की स्थिति आरम्भ में आकांक्षाएं बहुत ऊंची व साधन सीमित वाली थी जिसमें महात्मा जी का योगदान अमर है।

महात्मा हंसराज की पैतृक सम्पत्ति शून्य के निकट थी, उनकी शिक्षा का भार बड़े भाई ने उठाया था। किन्तु जब ऋषि दयानन्द के सच्चे स्मारक के रूप में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना की गई तो महात्मा हंसराज ने अपना जीवन इस विद्यालयके लिये अर्पणकर दिया। जब १८८९ ई० में स्कूल को कालेज के रूप मे परिणत किया तो इसका प्रिंसिपल कौन बने, यह जटिल समस्या थी। ला० लालचन्द जी चाहते थे कि कालेज के प्रिंसिपल कालेज के आदर्शों की प्रतिमा हो। अतः महात्मा हंसराज जी को यह प्रतिष्ठित पद योग्य समझ कर सौंपा गया।

महात्मा हंसराज जी ने अपनी सूक्ष्म ईक्षिका से देखा था कि ईसाई अपने स्थापित विद्यालयों में अपनी संस्कृति का केवल प्रसार ही नहीं करते प्रत्युत भारतीय संस्कृति के बारे में विद्वेष-घृणा की भावना भर रहे हैं। अतः इस दृष्टि को सामने रख कर महात्मा जी ने डी० ए० वी० कालेज में शिक्षा का भारतीयकरण कर दिया जिससे भारतीय संस्कृति के आधारभूत ग्रन्थ वेद-शास्त्रों का अध्ययन होने लगा। उन्होंने संस्था के नाम में दयानन्द का नाम रखा ताकि ऋषि दयानन्द का सन्देश सदा सम्मुख बना रहे। वे स्वयं छात्रों को धर्म-शिक्षा पढ़ाते थे ताकि विद्यार्थी अपने देश की प्राचीनता के गौरव को समझें। उनकी मान्यता थी कि मानव को सुसंस्कृत रूप देने का श्रेय सुशिक्षा को है, यह वह निर्माण-शाला है जिसमें भावी राष्ट्र कर्णधार बनते हैं। उनका जीवन मुख्य रूप से शिक्षा-क्षेत्र में गुजरा।

प्रारम्भ में डी० ए० वी० कालेज के सर्वप्रथम पाठ्य-क्रम मे अष्टाध्यायी, महाभाष्यादि लिखे हुए थे इससे उनकी संस्कृत-निष्ठा का सारगर्भित परिचय मिलता है। शिक्षा के कार्यों से उनका नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखने योग्य है।

महात्मा हंसराज जी की महत्ता का परिगणन करने के लिए हमें इन कठिनाइयों को देखना होगा जिनको चीरते हुए उन्होंने शासकीय सहायता लिए बिना ही महाविद्यालय का सुचारु रूप से संचालन किया। कालेज की स्थापना के बाद लाहौर में इस्लामिया, दयालसिंह व सनातन-धर्म कालेज खुले। अमृतसर मे खालसा कालेज स्थापित किया गया। सनातन-धर्म कालेज के उद्घाटन-समारोह में जम्मू-कश्मीर के महाराजा प्रतापसिंह ने भाषण करते हुए हंसराज जी को देख कर कहा था, हंसराज जी, हमें भी एक हंसराज ला दीजिए।

वास्तव में भारतीय शिक्षा-व्यवस्था में महात्मा हंसराज ने एक नया मोड़ दिया, उसका रुख पश्चिम की ओर से पूर्व को कर दिया। इसके साथ-साथ दयानन्द कालेज मे विभिन्न ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था हुई, विद्यार्थी आश्रमों मे रहकर स्वजीवन को नियमपूर्वक विधि से व्यतीत करने लगे। डी.ए.वी. कालेज की स्थापना का लक्ष्य केवल पाश्चात्य विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा देना ही नहीं था, प्रत्युत प्राचीन वैदिक व संस्कृत का प्रचार भी था।

महात्मा जी के जीवन की एक सब से बड़ी विशेषता थी कि एक उच्च शिक्षा-संस्था के प्रिंसिपल होते हुए भी प्राचीन ऋषि-मुनियों की भांति तपस्या की मौन मूर्ति थे। वे कहा करते थे कि शिक्षा-संस्थाएं सात्विक रूप से शिक्षा-संस्थाएं बनी रहें। राजनीति के संघर्षों मे विद्यार्थी न उलझें। उन्हें उस समय राजनीति मे प्रवेश करने की अनेकों प्रेरणाएं गईं किन्तु उनका मत था कि मैंने एक बार निर्णय कर लिया सो कर लिया यह सौभाग्य की बात है कि कृष्ण के पुत्र अजीतसिंह व उनके पुत्र भीमसिंह ने भारत की सर्वप्रथम शिक्षा संस्था से, जिसके निर्माता महात्मा हंसराज थे, शिक्षा प्राप्त कर के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। निस्सन्देह भारतीय इतिहास के शिक्षा-क्षेत्र में महात्मा हंसराज का योगदान सदा अमर रहेगा।

आर्या-वर्त

(कवि कस्तूरचन्द 'घनसार' पा० स०, पीपाड़ शहर)

(१)

समस्त ही भू-भाग पर यहां,आर्यों के निज राज थे।
बल,वेद, विद्या-द्रव्य से सुसज्जित सबविधि साजथे॥
गंग-सिन्धु सैं हिंगलाज तक रामेश्वर के थे यहां।
अमरनाथ से कन्या कुमारी तक स्वराज थे यहां॥

(२)

आर्यों की है मूल भाषा, संस्कृति-सरबानी है।
सृष्टि की आदि में रची सब, विद्या की महारानी है॥
एव विश्व भाषा की जननी वेद वाणी है यही।
अति मृदु, रसयुत सर्वगुणमय, लोक-मानी है यही॥

(३)

अनेक भाषा बोलते हैं, मिटती रहती बदल ये।
किन्तु न भाषा बदलती शुद्ध-रूप रहती अदल ये॥
ये राज्य-भाषा, देव-भाषा, वेद-भाषा भासती।
है शुद्ध अति निरदोष प्यारी, विश्व को प्रकाशती॥

(४)

सत्य नीति-रीति सर्वविधियुत, जानते यजमान थे।
बोलते ऋचाएं शुद्ध-मन्त्र-ओम् जपतं महान् थे॥
सब वेदपाठी, इष्ट ईश्वर, मानते थे सब यहां।
वर योगि विद्या योग की वह, जानते थे सब यहां॥

ऋषि के शब्दों में—

अध्ययन–अध्यापन विधि (२)

—श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री

समान व्यवहार—सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिए जावें चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो चाहे दरिद्र की सन्तान हों सबको तपस्वी होना चाहिए। उनके माता-पिता अपनी सन्तानों से व सन्तान अपने माता पिता से न मिल सकें और न किसी से पत्र व्यवहार एक दूसरे से कर सकें जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें। जब भ्रमण करने को जावें तब उनके साथ अध्यापक रहे जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद करें।

पुन समन्त्रक प्राणायाम, मनसा परिक्रमण, उपस्थान, पीछे परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना की रीति सिखलावे। पश्चात् 'अघमर्षण' अर्थात् पाप करने की इच्छा भी कभी न करे। यह सन्ध्योपासना एकान्त देश मे एकाग्रचित से करे।

दूसरा देव यज्ञ—जो अग्निहोत्र और विद्वानों का संग सेवादिक से होता है। सन्ध्या और अग्निहोत्र साय प्रात दो ही काल में करे दो ही रात दिन की सन्धि वेला है, अन्य नहीं। न्यून से न्यून एक घण्टा ध्यान अवश्य करे। जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान रखते हैं वैसे ही सन्ध्योपासना भी किया करे तथा सूर्योदय के पश्चात और सूर्यास्त के पूर्व अग्निहोत्र करने का भी समय है।

ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी मद्य, मांस, गन्ध, माला, स्त्री और पुरुष का संग, सब खटाई प्राणियों की हिंसा, अंगो का मर्दन, बिना निमित्त उपस्थेन्द्रिय का स्पर्श, आंखों मे अंजन, जूते और छत्र का धारण, काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, ईर्ष्या, द्वेष और नाच गाना और बाजा बजाना। द्यूत, जिस किसी की कथा, निन्दा, मिथ्या भाषण, स्त्रियों का दर्शन, आश्रय दूसरे की हानि आदि कुकर्मों को सदा छोड़ देवें। सर्वत्र एकाकी सोवें, वीर्य स्खलित कभी न करे, जो कामना से वीर्य स्खलित कर दे तो जानो कि अपने ब्रह्मचर्य व्रत का नाश कर दिया।

विद्या का अधिकार सबको—इस प्रकार आचार्य अपने शिष्य को उपदेश करे और विशेषकर राजा इतर क्षत्रिय, वैश्य और उत्तम शूद्र जनों को भी विद्या का अभ्यास अवश्य करावें। क्योंकि जो ब्राह्मण हैं वे ही विद्याभ्यास करें और क्षत्रियादि न करे तो विद्या, धर्म राज्य और धनादि की वृद्धि कभी नहीं हो सकती। क्योंकि ब्राह्मण तो केवल पढ़ने पढ़ाने और अविद्यादि से जीविका को प्राप्त होके जीवन धारण कर सकते है। जीविका के आधीन और क्षत्रियादि के आज्ञादाता और यथावत् परीक्षक दण्डदाता न होने से ब्राह्मणादि सब वर्ण पाखण्ड ही मे फस जाते हैं और उन क्षत्रियादि विद्वानों के सामने पाखण्ड झूठा व्यवहार भी नहीं कर सकते और जब क्षत्रियादि अविद्वान होते हैं तो वे जैसा अपने मन मे आता है वैसा ही करते कराते हैं इसलिए ब्राह्मण भी अपना कल्याण चाहे तो क्षत्रियादि को वेदादि सत्यशास्त्र का अभ्यास अधिक प्रयत्न से करावें। क्योंकि क्षत्रियादि ही विद्या, धर्म राज्य और लक्ष्मी की वृद्धि करने हारे हैं, वे कभी भिक्षा वृत्ति नहीं करते, इसलिए वे विद्या व्यवहार में पक्षपाती भी नहीं हो सकते और जब सब वर्णों में विद्या सुशिक्षा होती है तब कोई भी पाखण्ड रूप अधर्म युक्त मिथ्या व्यवहार को नहीं चला सकता, इससे क्या सिद्ध हुआ कि क्षत्रियादि को नियम मे चलाने वाले ब्राह्मण और सन्यासी तथा ब्राह्मण और सन्यासी को सुनियम मे चलाने वाले क्षत्रियादि होते हैं इसलिए सब वर्णों के स्त्री पुरुषों मे विद्या और धर्म का प्रचार अवश्य होना चाहिए।

पठन—

डेढ वर्ष में अष्टाध्यायी।

डेढ वर्ष मे महाभाष्य।

४ मास मे छन्दशास्त्र।

१ वर्ष में बाल्मीकि व रामायण, महाभारत और विदुर नीति।

२ वर्ष मे षड्दर्शन १० उपनिषद्।

६ वर्ष में ४ ब्राह्मण ग्रन्थ, चार वेद।।

४ वर्ष मे आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद अथर्ववेद।

इस प्रकार २० वें इक्कीसवें वर्ष के भीतर समग्र विद्या उत्तम शिक्षा प्राप्त होके मनुष्य लोग कृतकृत्य होकर सदा आनन्द मे रहे।

उपरोक्त अध्ययन काल क्षत्रिय और वैश्य वर्ग के छात्रों के लिए ३ वर्ष न्यून होता है क्योंकि वह धनुर्वेद और अथर्ववेद का अध्ययन करेंगे। १८ वर्ष मे ही उनकी शिक्षा पूर्ण हो जाती है।

क्या देश विदेश का समस्त आर्य समाजो और समाजो मे अपनी शिक्षण सस्थाओं मे यह आर्य *अध्ययन अध्यापन विधि पूर्ण रूपेण प्रचलित है?*

१—दयानन्द का नाम जिन शिक्षण सस्थाओं से जुड़ा हुआ है उनमे सहशिक्षा क्यों प्रचलित है? क्या यह प्रचलन ऋषि भक्ति का परिचायक है।

२—दयानन्द की सस्थाओं मे अध्यापक और छात्र प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ करे। धर्म शिक्षा की व्यवस्था हो।

३—संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य किया जाए। हमारी आंखें खुलनी चाहिए कि जर्मन आदि पाश्चात्य देशों ने इसको अपनाया। उन्होंने इसमे लिखे वेदों को शास्त्रों को, सभी इतिहासों को पढ़कर लाभ उठाया।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य समाज का सच्चा उत्तराधिकारी आर्य वीर दल ही है

सच्चा उत्तराधिकारी वही हो सकता है, जो आर्य समाज के विचार परम्पराओं व रिवाजों का पोषक हो, जिसका वह उत्तराधिकारी बन रहा है। इस दृष्टि से आर्य वीर दल को आर्यसमाज का सच्चा उत्तराधिकारी कहा जा सकता है। क्योंकि आर्य वीर दल द्वारा संचालित शाखाओं व शिविरों के माध्यम से नवयुवकों को आर्य समाज की विचारधारा से परिपूर्ण बनाकर प्रशिक्षित करने का कार्य किया जाता है। इन्हें सन्ध्या हवन व स्वाध्याय का प्रशिक्षण देकर आर्य समाज के सिद्धान्तों व मन्तव्यों को अपने जीवन मे उतारने के लिये प्रेरित किया जाता है। कुल मिलाकर उसे सच्चा आर्य वीर व कर्तव्यनिष्ठ आर्य बनाने पर जोर दिया जाता हैं।

यह अनुभव की बात है कि जहां जहां आर्य वीर दल सक्रिय है वहां वहां आर्य समाज सक्रिय है। वहां के आर्य समाजों मे यह शिकायत नहीं मिलेगी कि वहां युवक नहीं आते या सफाई नहीं होती या यज्ञ मे बैठने के लिये चार व्यक्ति भी नहीं आते।

आर्य वीर दल एक ऐसा कारखाना है जहां अनुशासित, चरित्रवान, बलिष्ठ व आर्य समाज की विचारधारा से ओत-प्रोत युवकों का निर्माण किया जाता है। ऐसे निर्मित युवकों पर ही आर्य समाज का भविष्य अब टिका हुआ है।

अन्त मे मैं तो यही कहूंगा कि अगर आर्य समाज को जिन्दा रखना चाहते हो तो हर आर्य समाज मन्दिर में आर्य वीर दल की स्थापना पर जोर देकर उसे मजबूती प्रदान की जावे। फिर आप देखेंगे कि आर्य समाज का प्रचार दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढने लगेगा। हम अन्तर्मन से पुकार उठेंगे:—

"धन्य है तुझको ऐ ऋषि, तूने हमें क्या सिखा दिया।
अन्धो को आंखें मिल गई मुर्दों में जान आ आई।।

—सीताराम आर्य वैदिक" प्रान्तीय मन्त्री
आर्य वीर दल राजस्थान
बालाजी चौक, गंगापुर सिटी-३२२२०१

आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर—

आर्य जगत की सुप्रसिद्ध शिक्षण सस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ८५ वां वार्षिक महोत्सव ११ से १३ अप्रैल १९९२ तक कुल भूमि मे धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर वेद, शिक्षा, आर्य राष्ट्ररक्षा, आयुर्वेद एवं कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा। समारोह का मुख्य आकर्षण दीक्षान्त समारोह होगा। इस अवसर पर केन्द्रीय एवं प्रादेशिक राजनेताओं, आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी महात्माओं के साथ साथ लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों के पधारने की सम्भावना है।

आर्य समाज जमनियां—

आर्यसमाज जमनियां का ५१ वां वार्षिक महोत्सव १० से ११ अप्रैल ९२ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान पधार रहे हैं। आपसे प्रार्थना है कि इस अवसर पर होने वाली अमृतवर्षा से लाभ उठायें।

विदेश समाचार

कैलीफोर्निया में ऋषिबोधोत्सव

वैदिक धर्म समाज दक्षिणी कैलीफोर्निया लास एंजलस की ओर से ऋषि बोध दिवस (शिवरात्रि) ८ मार्च रविवार को बड़े उत्साह पूर्ण ढंग से श्री बाल कृष्ण शर्मा जी की अध्यक्षता मे मनाया गया। वैदिक धर्म समाज का विशाल हाल आर्य परिवारो से खचाखच भरा हुआ था। कार्यक्रम यज्ञ हवन से प्रात १० ३० बजे प्रारम्भ हुआ। लास एंजलस म डा० महेश गुप्ता जो अमरीका मे हिन्दुओ की विविध सस्थाओ से सम्बन्धित हैं, ने मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढाया।

इस उत्सव की विशेषता अमरीका मे जन्मे, बड़े भारतीय बच्चो मे वैदिक धम के प्रति रुचि उत्पन्न करना था। श्रीमती उमा मनचन्दा जी ने अनथक परिश्रम करके भारतीय बच्चो को अग्रेजी। हिन्दी मे भाषण, प्रतियोगिता, आर्य समाज के नियम, महर्षि की जीवनी आदि की तैयारी करवाई थी। चार वर्ष से लेकर १८ वर्ष तक के १३ बच्चो न इस कार्यक्रम मे भाग लिया। न्यायाधीशो के एक समुदाय ने ७ वर्षीय एक बालिका को हिन्दी में अर्थ सहित गायत्री मन्त्र बोलने पर प्रथम घोषित किया। आर्य जनता की ओर से करतल ध्वनि के मध्य श्री बालकृष्ण शर्मा जी ने बालिका को बहुत बडी ट्राफी पुरस्कार मे दी। कार्यक्रम मे भाग लेने वाले सभी बच्चो को पदक देकर सम्मानित किया गया।

समय-समय पर आर्य परिवारो के बच्चों का मार्ग दर्शन करने हेतु स्वय सेविका श्रीमती उमा मनचन्दा को वैदिक धर्म समाज की ओर से विशेष ट्राफी देकर सम्मानित किया।

लास एंजलस की आर्य जनता के आग्रह पर तथा वैदिक धर्म के प्रति श्री बालकृष्ण शर्मा तथा वैदिक मिशनरी श्रीमती कमला शर्मा की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए डा० महेश गुप्ता जी ने दम्पति को अलग-अलग ट्राफी देकर सम्मानित किया। उपस्थित जनता ने तालियो की गडगड़ाहट से इसका स्वागत किया। उत्सव मे आने वाले अतिथियो के लिए श्री रमेश महाजन, मोहिनी महाजन ने स्वादिष्ट भोजन का उत्तम प्रबन्ध किया। जिन कार्यकर्ताओं ने आर्य परिवारो ने इस महान कार्यक्रम को सफल बनाने में सहायता की, वैदिकधर्म समाज की ओरसे पुरोहित मदनलाल गुप्ता ने उन सब का धन्यवाद किया। आरती, शान्ति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—मदनलाल गुप्ता

गुजरात के आर्य विद्वान

वैद्य महेन्द्रनाथ वेदालंकार का सम्मान

आर्य समाज, सैजपुर बोघा (अहमदाबाद) ने ऋषिबोधोत्सव के दिन (ता० २। ३। १९९२) ऋषिबोधोत्सव के कार्यक्रम के पश्चात् गुजरात के वयोवृद्ध (७७ वर्ष) विद्वान वैद्य महेन्द्रनाथ वेदालकार का सम्मान किया। गुजरात युनिवर्सिटी के संस्कृत के प्रोफेसर श्री कमलेश कुमार शास्त्री ने श्री वैद्य जी का सक्षिप्त परिचय देकर बताया कि पिछले छ वर्षों से श्री वैद्य जी द्वारा अनुवाद किये गये ३० ट्रेक्ट तथा १२ पुस्तकें गुजराती भाषा मे समाज की ओर से छप चुकी है। इस समाज की ओर से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका स्वस्ति पथा के भी सह सम्पादक हैं।

आर्य समाज के प्रधान श्री गोविन्दराम जी ने पुष्पमाला पहना कर और सम्मान पत्र तथा २५०१) (दो हजार पाच सौ एक रुपये) देकर सम्मान किया। गुजरात राज्य द्वारा सम्मानित सिंधी विद्वान श्री गगाराम सम्राट ने शाल तथा श्रीफल देकर सम्मान किया।

ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर उपस्थित ४०० व्यक्तियो के भोजन की व्यवस्था भी आर्य समाज की ओर से की गई थी।

—दि० म० सुखड़िया, अहमदाबाद

पति के स्थान पर राजनीति को प्रमुखता

पाकिस्तानी विपक्षी नेता और भूतपूर्व प्रधान मन्त्री बेनजीर भुट्टो ने कहा है कि जेल मे कैद इनके पति आसफ जरदारी का प्रशासन ने बुराहाल कर रखा है—यहा अरब समाचार को इन्होने बताया कि पाकिस्तान मे अब परगमाल सियासत है—डाकू मारी कैदियो के लिए कारोबारी लोगो को परगमाल बनाते है। परन्तु हमारे यहा एक राजनैतिक लीडर के खावन्द सियासी कैदिया के लिए परगमाल बना लिया गया है—आसफ १५ अक्तूबर १९९० से फौजदारी के केसा मे कैद है परन्तु अभी तक किसी भी केस मे दोषी नहीं ठहराया गया—श्रीमती भुट्टो यह कहना चाहती थी कि इनके पति को कैद करके मुझे सियासत से तौबा करने पर विवश किया जा रहा है—ताहम इन्होने कहा कि मैं राजनीति के मैदान मे तमाम धमकियो के बावजूद डटी रहूगी – बेनजीर उमराह करने यहा आई हुई थी—

प्रताप के सौजन्य से २७ ३ ९२

६ ईसाई परिवारो का वैदिक धर्म में प्रवेश

मदुरै ३१ मार्च। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण भारत के व्यवस्थापक श्री एम नारायण स्वामी जी निरन्तर वैदिक प्रचार और आर्य समाज के सगठनात्मक ढाचे को मजबूत करने के लिये कार्यरत है। प्रतिमाह दक्षिण के विभिन्न प्रान्तो नगरो और गाव-गाव मे घूम कर वैदिक प्रचार व नई आर्य समाजो की स्थापना मे लगे रहते है। इन कार्यो के साथ ही शुद्धि का कार्य भी सतत् चल रहा है। गत मार्च माह में ६ ईसाई परिवारो के १० सदस्यो को शुद्ध करके वैदिक धर्म मे प्रविष्ट किया है। स्वामी जी के प्रचार कार्य का मुख्य केन्द्र आर्य समाज मदुरै है।



आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज बबराला—

श्री मोहनलाल गुप्ता प्रधान श्री राजेन्द्रसिंह आर्य मन्त्री श्री डा० ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज लखीमपुर—

श्री सुशील कुमार अग्रवाल प्रधान, श्री रामजनम बरनवाल मन्त्री, श्री सुधीर कान्त बरनवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज गुलाब सागर जोधपुर—

श्री महेन्द्रसिंह देवड़ा प्रधान, डा० ओमप्रकाश आर्य मन्त्री, श्री फकीर चन्द आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज पूंजला जोधपुर—

श्री ब्रह्मसिंह परिहार प्रधान, श्री प्रकाशसिंह मन्त्री, श्री मनोहरलाल परिहार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज अलीगढ़—

श्री चन्द्रपाल गुप्ता आर्य प्रधान, श्री रामप्रसाद आर्य मन्त्री, श्री राम स्वरूपसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सांवली आदि पंचपुरी—

श्री चन्द्रमणि जी प्रधान श्री वासुदेव विमल मन्त्री श्री योगेश्वर प्रसाद कोहली कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज फाजिल्का—

श्री सुभाषचन्द्र असूजा एड० प्रधान, मा० मूलचन्द वर्मा मन्त्री, श्री बनवारीलाल लूथा कोषाध्यक्ष चुने गए।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सिंगरौली कोलियरी—

आर्य समाज सिंगरौली कोलियरी जिला सीधी म० प्र० का चतुर्थ वार्षिकोत्सव १६ से १७ अप्रैल तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित आर्य विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। उत्सव में होने वाले वैदिक यज्ञ भजनोपदेश, वेदोपदेश धार्मिक एवं क्रान्तिकारी प्रवचन से लाभ उठावें।

आर्य समाज नेमदार गंज—

आर्य समाज नेमदार गंज नवादा बिहार का हीरक जयन्ती समारोह ११ से १५ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक पधार रहे हैं। नित्य प्रात आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में विश्व कल्याण यज्ञ सम्पन्न होगा। तथा स्थानीय दुर्गा मन्दिर के प्रांगण में सायकाल का कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला दिल्ली—

कन्या गुरुकुल नरेला का १६ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २८ से २९ मार्च तक उल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक विद्वान, शिक्षाविद् तथा आर्य नेताओं ने अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन भी किया गया।

आर्य वीर दल बलरामपुर—

डा० राजेन्द्र कुमार सचालक, श्री धर्मेन्द्र कुमार नगर नायक, श्री अमरपाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

अध्ययन-अध्यापन विधि

(पृष्ठ ८ का शेष)

४—प्रत्येक शिक्षक और विद्यार्थी यज्ञोपवीत अवश्य धारण करे। नकटाई का पूर्ण रूप से बहिष्कार किया जाय। यह ईसाइयों का चिन्ह है। यज्ञोपवीत हमारी भारतीयता का कर्तव्य बोधक निशान है।

५—संस्थाओं मे प्रत्येक कार्य कर्ता को अपनी वेश-भूषा धारण कर देश को महत्व देना चाहिए।

६—आर्य संस्थाओ के परिसरो मे धूम्रपानादि पूर्णतया अनिवार्य रूप से निषिद्ध होवे।

७—सभी शिक्षको को आर्य समाज का सदस्य बनना आवश्यक हो, अन्यथा उनके स्थान पर आर्य विचारो के अध्यापको का भविष्य मे चयन किया जाए भले ही इस व्यवस्था के करने मे आर्थिक हानि भी उठानी पडे।

८—शिक्षण संस्थाओं मे प्रत्येक शनिवार को कुमार एव युवा सभाओ का निश्चित रूप से आयोजन किया जाए जिनमें वैदिक विषयो पर भाषण दिया जाए। शंका समाधान किये जावें।

९—हमारी संस्थाओ की व्यवस्था वैदिक सिद्धातानुसार की जावे। हम इस व्यवस्था में वैसे ही स्वतन्त्र हो जैसे शिक्षण संस्थाओं मे ईसाई, मुसलमान, जैन, बौद्ध अपने मतो के अनुसार धर्म शिक्षा व्यवस्था करने में स्वतन्त्र हैं।

१०—हमारी प्रत्येक शिक्षण संस्थाओ मे ओम ध्वज सर्वोच्च स्थान पर लगाये जाये। जिससे देखते ही आर्य संस्था का बोध होवे। आर्य जब मन वचन कर्म से एक जैसे होने चाहिए। हम महर्षि दयानन्द की जय तो बोलें परन्तु उनके मन्तव्यो को अंगीकार न करे और उनकी भावनाओ को जीवनो में न उतारे तथा उनके उद्देश्यो, संकल्पों को उनके अनुसार पूरा करने का यत्न न करे तो फिर हम ऋषि के अनुयायी कहलाने के अधिकारी कैसे ?

देव वाणी संस्कृत विज्ञान-की कसौटी पर खरी उतरती है। वेदो की शिक्षा मानव को मानव का सन्देश देती है। मनुष्य जाति को एक जाति मानती है फिर उसको विश्व के मानव क्यों नही अपनाए। यह हमारी कमी का द्योतक है।

आज सभ्यता एव सत्यता हीन मतो की वृद्धि होती जा रही है। जो भी इन मतावलम्बियो के पास हैं वे उसको अपने जीवनो मे उतारते हैं उसका प्रचार करते हैं। इसलिए उनकी दिनो दिन संख्या बढ़ती जा रही है।

हमे चाहिए कि जो कहें वही करे और उसको प्रचारित करे। तब अवश्य ऋषि के मनतव्यो को साकार कर सकेंगे।

लेखक का उद्देश्य किसी के दिल को दुखाना नही अपितु जिन्होने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास के अनुसार पठन पाठन विधि को अपनाया उनको धन्यवाद देना है। जिन्होने नही अपनाया उनके लिये सत् प्रेरणा है।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश आरम्भ

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सराय ख्वाजा (फरीदाबाद)मे चौथी कक्षा से नवमी कक्षा तक प्रवेश आरम्भ है। अन्तिम तिथि १५ मई है। पाठ्यक्रम सी बी एस ई गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। विद्यालय के साथ छात्रावास की व्यवस्था है।

आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
डा० नई दिल्ली-४४
फोन : ८-२७५१९८

आर्य समाज महावीरगंज लखनऊ का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज महावीरगंज लखनऊ का वार्षिकोत्सव आगामी ३ से ५ मई तक आयोजित होगा। इसमें उ० प्र० व बिहारके कई प्रख्यात भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर अनेको कार्यक्रमो का आयोजन किया जा रहा है।

पुण्यस्मृति में वेद भेंट किये

आर्य समाज दमकोर (जि०झुंझुनू) के प्रधान श्री जयचन्दलाल ने अपनी सहधर्मिणी स्वर्गीया कलावतीदेवी की पुण्यस्मृति मे आर्य समाज गुडाण (जि० चूरू) को चारो वेदो की नौ जिल्द छ सौ रुपये मे सार्वदेशिक सभा से खरीद कर भेंट की।

—बाबराम आर्य
प्रधान आर्य समाज गुडाण

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०७६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१६-४-१९९२) लि ॥ टिकट भेजने का लाइसेंस ८ नं० ६९
R.N. 686/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 83 Post in N.D.P.S.O.on 18-4-1998

सत्यार्थ प्रकाश

यह अमर ग्रन्थ ध्रुवतारा है।
सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥
ऋषिवर ने गोते लगा-लगा, अज्ञान तिमिर को भगा भगा।
अपने विवेक को जगा-जगा, यह चौदह रत्न निकाले थे ॥
साहित्य सिन्धु मय सारा है।
सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥

ज्योतिष पुराणगिर खोद-खोद, बायबिल कुरान को सोध-सोध।
निर्भय निश्चक मन मोद-मोद, लाये भागीरथ कर प्रयास ॥
वैदिक गंगा जल धारा है।
सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥

इसको पथ-दर्शक मान-मान, जयदेश धर्म की ठान-ठान।
दे गये अनेकों जान-जान, ऋषि प्रतिभा कापरिचिन्तन ॥
यह आर्य भुवन का गारा है।
सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥

इस अमर ग्रन्थ को पढ़ो-पढ़ो, वेदो के पथ पर बढ़ो-बढ़ो।
ले ओ३म् पताका कढ़ो-कढ़ो, यह अखिल विश्व फिर आर्य बनें ॥
ऋषि दयानन्द का नारा है।
सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥

—सत्यव्रतसिंह चौहान, पुन्डरी मैनपुरी

सिंहस्थ मेले में

वेद प्रचार का भव्य आयोजन

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे १७ अप्रैल ९२ से १६ मई ९२ तक सिंहस्थ मेले मे वैदिक धर्म प्रचार का भव्य आयोजन किया गया है। इस महत्वाकांक्षी आयोजन मे प्रतिदिन आर्य सन्यासियो के उपदेश, विद्वान आर्य नेताओं के भाषण व भजनोपदेशकों के मधुर भजन सुनने के अतिरिक्त, प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन, आर्य वीर दल सम्मेलन, राष्ट्रद्रोह विरोध सम्मेलन, नशा उन्मूलन सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन व वेद सम्मेलन भी आयोजित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त विशाल वेद पारायण महायज्ञ (सम्पूर्ण एक मास तक दोनो समय) का आयोजन भी किया गया है।

प्रवेश आरम्भ

आर्य बाल संरक्षण गृह पुलबंगश मे ग्यारह ११ वर्ष से ऊपर आयु के असहाय एव निर्धन बच्चो का प्रवेश आरम्भ है।

जिस बच्चे की मा अथवा पिता न हो तो मृत्यु प्रमाण पत्र, जो निर्धन हो तो किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के प्रमाणित पत्र सहित एक १ अप्रैल से ३० अप्रैल तक अभिभावक बच्चे को लेकर निम्न पते पर सम्पर्क करें।

—अखिलेश भारती, प्रबन्धक
आर्य बाल संरक्षण गृह
आर्य समाज पुलबंगश
नया मोहल्ला, दिल्ली ६
नजदीक—आजाद मार्किट चौक

सुयोग्य आर्य वर चाहिये

राणा वंश की आठवी पास गेहुआ रंग गृह कार्य मे दक्ष कन्या के लिये चौहान वंश राजपूत आर्य वर चाहिये। हरियाणा निवासी को प्राथमिकता दी जायेगी।

पत्र व्यवहार इस पते पर करें —

रणजीतसिंह राणा
आर्य समाज दीवान हाल
चांदनी चौक दिल्ली-६

आर्य समाज भवन तथा इन्टर कालेज के जीव विज्ञान कक्ष का शिलान्यास

बिन्दकी (फतेहपुर)

बिन्दकी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ८ अप्रैल को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की उपस्थिति में उल्लासपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी जी ने आर्य समाज मन्दिर के नये भवन का शिलान्यास किया तदुपरात वे बिन्दकी आर्य समाज के अधिकारियो तथा सैकड़ो कार्यकर्ताओं के साथ एक जलूस के रूप मे दयानन्द इन्टर कालेज पहुचे वहा उन्होने कालेज के जीव विज्ञान कक्ष का शिलान्यास किया। उपरोक्त दोनो कार्यक्रम अत्यन्त समारोहपूर्वक सम्पन्न हुये।

इससे पूर्व ७ अप्रैल को जब स्वामी जी बिन्दकी रेलवे स्टेशन पर पहुचे तो सैकड़ो कार्यकर्ताओ ने स्वामी जी का पुष्प मालाओं से भव्य स्वागत किया, सारा रेलवे स्टेशन ऋषि के जयघोषो से गुजायमान हो गया।

इस अवसर पर श्री उत्तमचन्द जी शरर तथा प० धर्मपाल शास्त्री के अतिरिक्त अनेको विद्वानो तथा भजनोपदेशकों ने अपने उपदेशो से श्रोताओ का मन मोह लिया।

विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

उत्कल के फूलबाणी जनपद तपोवन शान्ति आश्रम मे, फा० शु० अष्टमी से फा० शु० ११ वशी अर्थात् १२ मार्च से १५ मार्च तक विश्व कल्याण महायज्ञ आयोजित किया गया। उत्कल की राजधानी भुवनेश्वर से २१० कि० मी० सुदूर सर्वथा अरण्य प्रान्त पर्वत की उपत्यका में आदिवासी ईसाई बहुल क्षेत्र मे सुशिक्षित नगरनिवासी जनो से लेकर आदिवासी ग्रामीण जनता का जनप्रवाह बाढ के पानी की भाति उमड पड़ा। बिहार, बंगाल, आन्ध्र-प्रदेश उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तो से आए हुए आर्यजन इस अपार भीड को देखकर आश्चर्य चकित थे। प्रातः ११ बजे से रात १० बजे तक उन्मुक्त विश्वभृत भण्डारे में प्रसाद लेने तथा वेद सम्मेलन, योग सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन, वनवासी सम्मेलन सन्त सम्मेलन आदि सम्मेलनो के माध्यम से सन्त विद्वान समागत जनता की ज्ञान पिपासा की शान्ति करते रहे। इस प्रकार विश्व कल्याण महायज्ञ सबको विस्मय विमोर करते हुए सम्पन्न हो गया। इतना बड़ा कार्य बिना प्रभु की कृपा के कैसे हो सकता था।

आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर बी० एच० ई० एल० पिपलानी भोपाल के लिये सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो वेद प्रचार, आर्य परिवारों मे सम्पर्क एव वैदिक कर्म-काण्ड आदि का कार्य कर सके। आवास सुविधा के साथ योग्यतानुसार दक्षिणा दी जायेगी। प्रार्थना-पत्र के साथ सम्पूर्ण जानकारी एक बार में ही भेजे।"

—उपमन्त्री आर्य समाज
क्षेत्र पिपलानी

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- जो परमात्मा वेदों का प्रकाश न करे तो कोई कुछ भी न बना सके । इसलिए वेद परमेश्वरोक्त हैं इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिए । और जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना कि हमारा मत वेद है अर्थात् जो कुछ वेदों मे कहा है हम उसको मानते है ।
- मूर्ति के जडत्व धर्म आत्मा मे आने से विचार शक्ति छूट जाती है । विवेक के बिना न वैराग्य और वैराग्य के बिना विज्ञान, और विज्ञान के बिना शान्ति नही होती ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३१७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक १३] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२ वैशाख कृ० ६ सं० २०४८ २६ अप्रैल १९९२

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग

उज्जैन के सिंहस्थ कुम्भ में वैदिकधर्म प्रचार शिविर का स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा उद्घाटन

आर्यसमाज के सुधार कार्य प्रशंसनीय : वाणिज्य करमन्त्री श्री बाबूलाल जैन के उद्गार

उज्जैन १७ अप्रैल । सिंहस्थ कुम्भ के अवसर पर मध्य भारतीय तथा आर्य प्रतिनिधि सभा म०प्र० विदर्भ के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज द्वारा वैदिक धर्म प्रचार शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने किया । तथा इस अवसर पर सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट विशिष्ट अतिथि थे । म०प्र० सरकार के वाणिज्य कर मन्त्री श्री बाबूलालजैन ने इस समारोह में मुख्यअतिथि के रूपमे भाग लिया ।

इस समारोह के साथ ही गो रक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया । सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गाय के आर्थिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए सारे देश में गौ हत्याबन्दी तथा गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की । स्वामी जी ने कहा कि गाय का दूध, घी, दही और मक्खन आदि के अतिरिक्त इसका मूत्र और गोबर भी कई औषधियों के उत्पादन मे सहायक हैं । उन्होंने कहा कि गोवंश आज भी भारतीय कृषि का प्रमुख आधार है । स्वामी जी ने दिल्ली स्थित महर्षि दयानन्द गो संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र के विकास कार्यों की जानकारी देते हुए सम्मेलन में उपस्थित जन समुदाय को बताया कि यह दुग्ध केन्द्र मात्र गौशाला न होकर दुग्ध उत्पादन का बहुत बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का अनुसंधान केन्द्र होगा ।

श्री विमलवधावन ने इस सम्मेलन मे प्रस्ताव रखा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४८ के अन्तर्गत जिन राज्यों में गौहत्याबन्दी के कानून लागू हैं उन राज्यों से गाय तथा गोवंश का लदान कलकत्ता तथा बम्बई जैसे दूसरे शहरों के लिए बन्द किया जाये । जहां बड़े पैमाने पर गौहत्या होती है । श्री वधावन ने समस्त देश वासियों से यह अपील करते हुए कहा कि इस अवसर पर हम यह संकल्प लें कि देश की समृद्धि और खुशहाली के लिए गाय से प्राप्त उत्पादों का ही अधिकाधिक प्रयोग करेंगे । उपस्थित जन समुदाय ने हाथ उठाकर इस प्रस्ताव का समर्थन किया ।

सिंहस्थ मेले में वेद पारायण महायज्ञ का स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा शुभारम्भ

दूषित पर्यावरण को पवित्र करने के लिये क्षिप्रा के पावन तट पर सम्पन्न होने वाले सिंहस्थ मेले में विशाल वेद पारायण महायज्ञ सम्पूर्ण एक मास तक दोनों समय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हो चुका है । इस महायज्ञ में गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियों द्वारा सस्वर वेदपाठ सम्पन्न हो रहा है । इस महायज्ञ का आयोजन मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है ।

मध्य प्रदेश के वाणिज्य कर मन्त्री तथा समारोह के मुख्य अतिथि श्री बाबूलाल जैन ने कहा कि समाज सुधार का जो कार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज ने किया है वैसा कोई अन्य व्यक्ति या सस्था नही कर पाई । श्री बाबूलाल जैन ने यह भी कहा कि जिस प्रकार आर्य समाज ने स्वतन्त्रता से पहले और बाद में देशवासियों का मार्गदर्शन किया है आज भी उसी प्रकार के मार्गदर्शन के लिए हमारी निगाहें आर्यसमाज की ओर हैं । श्री जैन ने गोहत्याबन्दी के विषय मे बोलते हुए कहा कि म० प्र० सरकार द्वारा तो इस आशय का कानून हाल ही में पारित किया जा चुका है । उन्होने कहा कि हमें उम्मीद है कि निकट भविष्य में राजस्थान, उ०प्र० और हि०प्र० की सरकारें भी इसी नये कानून के आधार पर गौहत्या बन्दी के प्रभावशाली कानून बनायेगी ।

इस समारोह को डा० भवानीलाल भारतीय तथा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने भी सम्बोधित किया । स्वामी दीक्षानन्द जी ८ दिवस तक इस 'शिविर में चल रहे प्रातः तथा सायंकालीन वेद पारायण महायज्ञ का संचालन करेंगे ।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

परमपूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

की सेवा मे आर्य समाज पुड़री (मैनपुरी) द्वारा सादर सम्प्रेषित

—: स्वागत शुभ कामना पत्र :—

कर रहे अविराम गति से आप जन सेवा निडर।
आपका शतबार स्वागत धार्मिक नेता प्रवर॥
अनुभवी चिन्तक मनीषी धर्म निष्ठ प्रवीर हो तुम,
कर्मयोगी देश भक्त प्रशान्त चित्त सुधीर हो तुम,
गूंजती मानस भवन में ओजस्वी वाणी तुम्हारी,
बात उद्बोधक मधुर, करते श्रवण प्राणी तुम्हारी,
छा रही असमानता से तुम चले करने समर।
आपका शत् बार स्वागत् पुरुष दृढ़ नेता प्रवर॥
राष्ट्र के प्रहरी सजग रहिते सदा गतिमान हो तुम,
आर्य (हिन्दू) जाति के नेता महामतिमान हो तुम,
मार्ग दर्शन सकटो मे देश का तुमने किया है,
लोक सेवा का कठिन व्रत आपने अपना लिया है,
हे प्रणय नर श्रेष्ठ तुमको प्राप्त है प्रतिभा प्रखर।
आपका शत्बार स्वागत् धार्मिक नेता प्रवर॥
राजनीति विडम्बनाओ से विषमता आ रही है,
कालिमा जनतन्त्र के पावन क्षितिज पर छा रही है,
कामना तुम देश का यह ध्वज तिरगा झुक न जाये,
दलित उत्पीड़ित जनोकी गति प्रगतिकी रुक न जाये,
भारतीय स्वाधीनता की दीप्ति तुम करदो अमर।
आपका शतबार स्वागत पुरुष दृढ़ नेता प्रवर॥
हो रहा विघटन असत् आडम्बरों की बाढ मे है
देश मे गतिविधि विदेशी शक्तियो की आड मे है,
राष्ट्र की नौका भवर के बीच मे अब आ पड़ी है,
देश के शुभ चिन्तको को आपसे आशा बड़ी है,
भव्य युग निर्माण को अब बाधलो कस कर कमर।
आपका शत्बार स्वागत् देश के नेता प्रवर॥
ऋषि प्रणीत विचारधारा पर निरंतर चल रहे तुम,
लोक मगल के हवन की हव्य बनकर जल रहे तुम,
आपका मिलता रहे चिरकाल तक नेतृत्व हमको
शब्द श्रद्धा के सुमन करते समर्पित आज तुमको,
देश सेवा आपकी इतिहास मे होगी अमर।
आपका शत्बार स्वागत् पुरुष दृढ़ नेता प्रवर॥

रचयिता :—सत्यव्रतसिंह चौहान सिद्धान्त शास्त्री
मन्त्री आर्य समाज पुड़री मैनपुरी उ० प्र०

—: प्रस्तुतकर्ता :—

जगदीशसिंह यादव सिद्धान्ताचार्य, नत्थूसिंह आर्य स्वतन्त्रता सेनानी, डा० रुद्रदेव त्रिवेदी, डा० शिवचरनलाल सक्सेना, पण्डिता विद्या भारती, कु० मीरा, सुशीला जौहरी, उमारानी शर्मा ऊषा त्रिपाठी, ओमप्रकाश मिश्र, मुरारीलाल बाल्मीक, राष्ट्र कवि वीर मुहम्मद दीन, सुरेश पीटर, वेदप्रताप वेद, सरदार दलीपसिंह, सुरेशचन्द्र जैन, मटकलाल कठेरिया, डा० महेशचन्द्र सगर, प० बारेलाल नीरज, सत्यरामसिंह एडवोकेट, महीपतिलाल शाक्य, हीरालाल कश्यप, सहदेवसिंह आर्य।

विशेष सूचना

विशुद्ध आर्य समाजी कर्मकाडी ब्राह्मण परिवार की गौरवर्ण ग्रेजुएट ५'-२" गृहकार्य मे दक्ष, सुन्दर आकर्षक कन्या हेतु आर्य समाजी शिक्षित वर की आवश्यकता है।

—रामदेव अग्निहोत्री एडवोकेट
जिला शासकीय अधिवक्ता (अपराध)
प्रधान, आर्य समाज हरदोई

महाधिवेशन में हिन्दी को सम्मान मिला

राजीवनगर, १४ अप्रैल। कांग्रेस (इ) का ७९ वां महाधिवेशन एक गैर हिन्दी प्रदेश मे होने के बावजूद इसमे हिन्दी को पर्याप्त सम्मान मिला।

कांग्रेस (इ) अध्यक्ष और प्रधान मन्त्री पी वी. नरसिंह राव ने ध्वजारोहण के बाद कांग्रेस सेवादल के कार्यकर्ताओ को हिन्दी मे ही सम्बोधित किया।

उन्होंने महाधिवेशन के आरम्भिक उद्बोधन मे हिन्दी मे ही अपना भाषण किया और कार्यवाही का सचालन भी इसी भाषा मे हो किया।

राजनीतिक प्रस्ताव पेश करते हुए मानव ससाधन विकास मन्त्री अर्जुनसिंह ने भी अपने विचार हिन्दी में ही व्यक्त किये। हिंदी के अलावा भारतीय भाषाओ मे भी भाषण हुए। खास तौर पर आन्ध्र के प्रतिनिधियों ने अपने विचार तेलुगू मे ही व्यक्त किए।

आर्यकन्या पाठशाला व आर्यसमाज चौक बाजार बुलन्दशहर का विवाद समाप्त

आर्य समाज चौक बाजार व आर्य कन्या इन्टर कालेज बुलन्दशहर में श्री कैलाशनाथ सिंह यादव कथित प्रधान तथा श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य कथित मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने श्री राजकुमार गौड को प्रशासक नियुक्त किया था उनकी सूझ बूझ के कारण त्याग-पत्र दे देने से विवाद समाप्त हो गया है। यहा पर श्री नरेन्द्रकुमार नीति एडवोकेट को श्री इन्द्रराज जी प्रधान एव श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्रदेश ने आर्य समाज चौक बाजार बुलन्दशहर का प्रशासक तथा श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा को आर्य कन्या इन्टर कालिज बुलन्दशहर का प्रशासक नियुक्त किया है जिन्होने विधिवत चार्ज लेकर कार्य प्रारम्भ कर दिया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री इन्द्रराज जी प्रधान तथा श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री को ही मान्यता प्रदान कर रखी है, तथा अपने पत्र मे श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा प्रशासक आर्य कन्या इन्टर कालेज व आर्य समाज चौक के प्रशासक श्री नरेन्द्र कुमार नीति एडवोकेट की भी नियुक्तियो की ही पुष्टि की है। इससे यहा का समस्त विवाद अब समाप्त हो गया है।

—वीरेन्द्र पाल शर्मा
उपमन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

आर्य वीर दल शिविरों की सूचना

सभी सर्वसाधारण एव आर्यवीरों को सूचना प्रेषित है कि निम्न स्थानो पर ग्रीष्म कालीन अवकाश मे आर्यवीर दल के शिविर स्थानीय सहयोगों से आयोजित किए जा रहे हैं।

१—७ जून से २१ जून तक (राष्ट्रीय शिक्षक शिविर)
स्थान : (एस० एम० आर्य पब्लिक स्कूल पजाबी बाग, नई दिल्ली)
सौजन्य से : गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली।

२—२० मई से ३१ मई (आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश)
स्थान : (सरस्वती उ० मा० महाशय चुन्नीलाल विद्यालय हरिनगर एल ब्लाक नई दिल्ली) (दीनदयाल अस्पताल के पास)

३—उत्तर प्रदेश—२१ मई से ३१ मई फिरोजाबाद एव १ जून से १० जून तक बदरासा।

४—राजस्थान प्रान्तीय शिविर—२६ मई से ४ जून तक
स्थान : (पुत्र गुरुकुल चित्तौड़ गढ़)
सौजन्य से : प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान)

५—१७ अप्रैल से १६ मई तक (मध्य प्रदेश)
स्थान : उज्जैन कुम्भ मेले में

—हरिसिंह आर्य वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक
सार्व० आर्य वीर दल दिल्ली

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जौनपुर का वार्षिकोत्सव ७ से १० मई ९२ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान अपनो वैदिक प्रचार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या में पहुंचकर लाभ उठावें।

म० हंसराज जा एक प्रकाश स्तम्भ थे

यदि हम लगभग एक शताब्दी पीछे जाये तो पंजाब मे तीन यह मूर्तियां हमारे सामने आती हैं जो उस समय भी हमारे लिए एक प्रकाश स्तम्भ थी और आज भी हैं। उनका जीवन हमारे लिए एक प्रकाश स्तम्भ है और वह हमारा मार्ग दर्शन करता है। वह तीन थे लाला मुन्शीराम, लाला हंसराज और प० गुरुदत्त। लाला मुन्शीराम तो फिर आगे चलकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। लाला हंसराज ने सन्यास तो नही लिया परन्तु उनका जीवन एक समाज को समर्पित जीवन था। इसलिए वह किसी एक सन्यासी से कुछ कम भी न थे। वह तप और त्याग की साक्षात् मूर्ति थे। जैसा कि उनके परम शिष्य स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी जी ने लिखा था कि—

"महात्मा जी त्याग की साक्षात मूर्ति, सरलता एव सादगी का सजीव चित्र और निराभिमानता के आदर्श थे। उनका जीवन बहुत ही अनुकरणीय है। रहने का एक छोटा सा कमरा, लकडी का तख्तपोश, दो टूटी हुई कुर्सियां बस। कपडे मोटे छोटे शुद्ध स्वदेशी, जूता होशियारपुर का, सीधा सादा पजामा, बन्द गले का कोट, ऊबडखाबड सी पगडी। यह था उनका वेश। उन्नत विशाल मस्तक, श्वेत वर्ण लम्बे चेहरे पर भव्य दाढी ऐसा लगता था मानो कोई प्राचीन काल का देवता हो। बात चीत में केवल माधुर्य ही नही आर्यिकता भी थी। नपे तुले शब्द एक अक्षर भी व्यर्थ न बोलते। सागर की तरह गम्भीर, हिमालय की तरह निश्चल और चन्द्रमा की तरह शान्त, क्रोध पर उन्हे पूर्ण विजय प्राप्त थी। पूर्ण संयमी, कितना ही कीचड उन पर उछाला लेकिन उन्होने कभी किसी को बुरा भला नही कहा।

महात्मा हंसराज जी यदि चाहते तो वह एक बहुत बडे सेठ बन सकते थे। मन चाहा धनोपार्जन कर सकते थे उन्हे बडी से बडी सरकारी नौकरी मिल सकती थी। परन्तु उन्होने यह सब कुछ न करके अपने आपको महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदेशानुसार जनता व जनहित की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला लाजपत राय के साथ मिलकर उन्होने डी०ए०वी० आन्दोलन की आधारशिला रखी, क्योंकि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की तरह वह भी यह समझते थे कि हमारे देश का उद्धार उस समय तक नहीं हो सकता जब तक कि नई पीढी को वैदिक सिद्धातो और वैदिक परम्पराओ के साचे मे मे नही ढाला जा सकता। इसके लिए उन्होने पहले डी० ए० वी० स्कूलों और उसके पश्चात् डी ए वी कालेजो की स्थापना की और आज डी ए वी का सारे देश मे ही नही, देश से बाहर भी एक जाल सा बिछा हुआ है। यह सब उनके तप और त्याग का ही फल है।

मैंने जिन तीन महानुभावो का ऊपर नाम लिया है। उन तीनों का जीवन शिक्षा के क्षेत्र मे विशेष महत्व रखता है। महात्मा हंसराज और लाला मुन्शीराम अर्थात स्वामी श्रद्धानन्द इन दोनो ने तो विशेष रूप से अपने आप को केवल शिक्षा के क्षेत्र तक ही सीमित न रखा था इन्होने उससे बाहर भी बहुत कार्य किया। कही किसी पर भी कोई मुसीबत आई तो महात्मा हंसराज जी वहां पहुच जाया करते थे। कांगडा मे भूचाल आया तो वहा चले गए, दक्षिण भारत मे मोपला विद्रोह हुआ और वहा निरपराध हिन्दुओ की हत्याए की गई उन पर बहुत बडे-बडे अत्याचार किये गये। बहुत से हिन्दुओ को तलवार के जोर पर मुसलमान बना दिया गया, बहुत से डर के मारे अपने घरो को छोडकर जगलो मे चले गये। जब यह खबर मोपला विद्रोह की महात्मा हंसराज जी को मिली तो कहते हैं वह उस रात्रि सो भी नहीं सके और प्रात.काल ही अपने अन्य साथियो को साथ लेकर वह वहा पहुच गये। उनके जीवन चरित्र को पढकर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हे न दिन में चैन था न रात को। जब वह अपने देशवासियों की तरफ देखते थे तो वह मौन हो जाते थे, और उनके दिल में यह प्रेरणा उठती थी कि कुछ न कुछ तो हमें करना ही चाहिए और वह करते भी थे। उनकी डी०ए०वी० संस्थाए एक माध्यम थी जिनके द्वारा वह जनता की सेवा करते थे। वह अपने समय के सबसे बडे जीवन दानी थे। उनको देखा देखी उनके कई और सहयोगियो ने भी देश और धर्म की सेवा करने के लिए अपना जीवन दान दे दिया था। उनके सम्पर्क मे आने वाला प्रत्येक व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था।

परवीन बाबी ने हिन्दू धर्म अपनाया

एक समय भारतीय सिने जगत की सर्वाधिक चर्चित अभिनेत्री परवीन बाबी ने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया है। जन्म से मुस्लिम परवीन जूनागढ के नवाब के चचेरे भाई की पुत्री है। उन्होने हाल ही मे मुबई के खार उपनगर मे एक आर्य समाज मन्दिर मे स्वय की शुद्धि करवा हिन्दू धर्म की दीक्षा ली है। उन्होने अपना नया नाम भारती रखा है क्योंकि उससे राष्ट्रीय एकता का भाव प्रकट होता है। उनके इस कदम के पीछे उनकी मा के नैतिक समर्थन और आशीर्वाद की बडी भूमिका रही है। राजनीति से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध न रखने की बात कहते हुए भारती ने कहाकि हिन्दुत्व विश्व का सबसे अधिक विकसित विचारो वाला धर्म है। कर्म की अवधारणा और उसकी नैतिकता मे मेरा विश्वास है। मैं लोकतन्त्र को भी कर्तव्यों और अधिकार के समन्वय, का राजनैतिक रूप मानती हू।

भारती का कहना है कि भगवान श्रीकृष्ण का भी गीता मे यही सन्देश है।

श्रीराम जन्म भूमि के विषय मे उनका मानना है कि मुसलमानो को उसे हिन्दुओं को वापस कर देना चाहिए क्योंकि वह हिन्दुओ के लिए उतनी ही पवित्र है जितना कि मुसलमानो के लिए काबा।

अपनी शुद्धि के विषय मे भारती का कहना है कि यह मेरा व्यक्तिगत मामला है। अन्य लोगो से अपने सम्बन्धो मे वह हिन्दुत्व के मानवीय पक्ष को अधिक प्रबल रखती है। वह भावना पूर्वक कहती है कि मैं एक हिन्दू हू फिर भी अपने पूर्ववर्ती सम्बन्धियो से मेरे मधुर सम्बन्ध हैं।

स्वदेश (म० प्र०) इन्दौर १९ मार्च ९२

एक व्यक्ति ने महात्मा जी की ख्याति सुनी वह सोचने लगा निश्चय ही वह बहुत ठाट-बाट से रहते होंगे। इतने बडे कालिज का प्रिंसीपल है उसका मकान बडा सजावट वाला होगा। जिसने लाखो रुपये कालेज के लिए इकट्ठे किये है जिसका सारे शिक्षा जगत मे डंका बज रहा है, जिसकी ख्याति चारो ओर फैल रही है वह अवश्य ही बडी सज धज के साथ रहता होगा। ऐसी कल्पना करके जब वह महात्मा हंसराज जी के मकान पर पहुचा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह यह देखकर हैरान रह गया, एक फटा सा कम्बल ओढे एक साधारण से तख्तपोश पर बैठे महात्मा जी कुछ लिख रहे हैं। वह उनकी सादगी से प्रभावित हुए बगैर नही रह सका। महात्मा जी की सादगी देखकर लोग आश्चर्य चकित रह जाते। वे जब दयानन्द हाई स्कूल के मुख्याध्यापक थे तब भी लाहौर के अन्दर एक मामूली से मकान मे रहते रहे और वे जब कालेज के प्रिंसीपल बन गए तब भी कालेज के होस्टल के पास एक साधारण से मकान मे रहते रहे। उनका रहन-सहन खान-पान पहरावा सब बहुत ही सादा था। उनका सारा जीवन तप और त्याग की एक जीती-जागती मशाल है।

१९ अप्रैल को उनका जन्मदिन था। यह एक ऐतिहासिक दिवस है जब उस महान आत्मा ने जन्म लिया था। वह हम सबके लिए एक प्रकाश स्तम्भ और प्रेरणास्रोत थे। यही कारण है कि उनकी विदाई के इतनी देर बाद भी आज हम उन्हे यादकर रहे हैं। क्योंकि उनके बाद हम कोई दूसरा हंसराज आज तक पैदा नहीं कर सके। और वास्तविक स्थिति तो यह है कि कुछ ने हंसराज बनने का प्रयास भी किया परन्तु वह इसमे भटक गये। क्योंकि हंसराज बनना अर्थात सर्वस्व त्याग करना प्रत्येक व्यक्ति के बसकी बात नहीं। इसके लिये तो कोई विरला व्यक्ति ही आगे आ सकता है। इस प्रकार उस जैसा जीवन दानी दूसरा सम्भवत: कोई न मिलेगा।

इसलिये हम सब का यही कर्तव्य हो जाता है कि हम उस महान आत्मा के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हुए यह समझने का प्रयास करें कि वह क्या थे? और उन्होने अपने देश धर्म और समाज के लिए क्या कुछ किया था? वह हमारे लिए एक महान् प्रकाश स्तम्भ है। उनके जाने के पश्चात भी उनके जीवन से बहुत कुछ सीख सकते हैं। — वीरेन्द्र

क्या अकालियों को रिहा कर दिया जाय ?

पंजाब में जो प्रमुख अकाली इस समय नजर बन्द हैं इनके सम्बन्ध में दो प्रश्न किए जा रहे हैं—एक यह कि क्या अब इन्हें रिहा कर दिया जाए। दूसरा यह कि रिहाई के बाद सरकार इनकी सुरक्षा का वही प्रबन्ध करे या न करे जो वह पहले किया करती थी। यह प्रश्न उत्पन्न न होते, अगर यह अकाली ऐसे बयान न देते जो देश के कानून और विधान दोनों के विरुद्ध हों।

बड़े बड़े नेता गिरफ्तार होते ही रहते हैं। अगर अकाली भी इस समय जेल मे हैं तो यह कोई नयी बात नहीं जो इसके लिए इतनी हायतोबा करने की आवश्यकता है जैसा कि की जा रही है। जेल जाना और वहां कुछ देर रहना और फिर बाहर आकर बड़े लीडर बन जाना यह तो हमारे देश की ऐसी आदत बन चुकी है कि बड़े या छोटे लीडर की गिरफ्तारी या नजरबन्दी पर जनता अब ज्यादा परेशान नहीं होती—इन नेताओं के घर वालों को अधिक चिन्ता होती है आम लोगो को नही। न ही वह अब पूछते हैं कि प्रकाश सिंह बादल कैसे हैं और टोहरा कैसे हैं यही कारण है कि इस समय जो अकाली नेता जेल में हैं इनके सम्बन्ध में साध संगत को अधिक चिन्ता नहीं है। लोग यह जानते हैं कि इनके यह नेता जहां भी बैठे हैं—सरकार ने इनके आराम का पूरा-पूरा प्रबन्ध कर रखा है इसलिए इनके परिवार वालो को भी इतनी चिन्ता नहीं। यह शायद पहली बार है कि इनकी रिहाई के लिए जनता की तरफ से कोई खास मांग नहीं है, केवल श्री प्रकाश सिंह बादल की रिहाई के लिए कुछ लोगो ने कहा है इनकी आंख मे कुछ तकलीफ है जिसके लिए इन्हें आपरेशन कराना पड़ेगा और इस सम्बन्ध में सम्भवत: अमरीका जाना पड़े। इसलिए कुछ लोगों ने यह अवश्य कहा है कि अब प्रकाशसिंह बादल को रिहा कर दिया जाए। गुरुचरण सिंह तोहड़ा का तो कोई नाम भी नहीं लेता और मांग की कोई बात भी नही करता।

परन्तु मैं समझता हूं कि यदि इन्हें रिहा कर दिया जाए तो इसमें कोई हर्ज नहीं है विशेषकर प्रकाश सिंह को तो अवश्य रिहा कर दिया जाना चाहिए और वह आप्रेशन के लिए अमरीका जाना चाहते हैं तो इन्हें नजरबन्द रखना किसी भी प्रकार उचित न होगा। मैं जानता हूं कि वह रिहा होने के बाद भी सरकार के विरुद्ध बयान देंगे। अगर वह आप्रेशन कराने के लिए अमरीका गए तो वहां जाकर भी सरकार के विरुद्ध बहुत कुछ कहेंगे। सरकार को यह खतरा मोल लेना ही चाहिए। इसी तरह अब तोहड़ा को भी रिहा कर देना चाहिए अधिक आशा तो नहीं कि यह लोग बाहर आकर निर्माण की भावना से काम करेंगे अब यह इतनी दूर जा चुके है कि इनके लिए कदम वापिस लेना भी कठिन है। परन्तु इन्हें अवसर अवश्य प्रदान किया जाए, ताकि कल को यह न कहें कि हम तो सारी सूरत हाल पर नए सिरे से विचार करना चाहते थे परन्तु सरकार ने हमें करने नही दिया।

हालात इस कदर बिगड़ गये हैं कि इन्हे बेहत्तर बनाने के लिए जो कुछ भी हो सके करना चाहिए सरकार को भी इस मामले में किसी तकल्लुफ से काम नही लेना चाहिए बाकी रहा प्रश्न, रिहाई के पश्चात इनकी सुरक्षा का जब यह जेल से बाहर थे तो सरकार ने हर अकाली को इसकी सुरक्षा के लिए हथियार बन्द पुलिस दे रखी थी। अनेकों को मोटर गाड़ियां भी दे रखी थी। सबसे अधिक सुरक्षा का प्रबन्ध प्रकाश सिंह बादल का किया गया था इन्हें तो हरियाणा सरकार ने भी अपनी पुलिस दे रखी थी। अब पंजाब के मुख्य मन्त्री ने कहा है कि जब यह अकाली रिहा होंगे तो सरकार इनकी सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं करेगी यह स्वयं अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध करें—सरकार निर्णय करने में पूर्ण अधिकृत हैं—यह लोग वर्तमान सरकार को अपनी सरकार नहीं मानते न ही पंजाब सरकार को, इनमें से कुछ तो अब स्वतन्त्र खालिस्तान की मांग भी कर रहे हैं ऐसी अवस्था में वह सरकार से कैसे आशा रखे कि वह इनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करे जिस सरकार को वह मान्यता नहीं देते और उसे समाप्त करने का हर सम्भव प्रयत्न कर रहे है वह सरकार इनकी सुरक्षा का प्रबन्ध क्यों करे ?

मैंने अकालियों के सम्बन्ध में जो प्रश्न उठाए हैं इन पर सरकार को भी गम्भीरता से विचार करना चाहिए विशेष तौर पर अकालियों की रिहाई के लिए। पंजाब में चुनाव हो चुके हैं, वजारत बन चुकी है और वह बाकायदा काम कर रही है इस लिए अकालियों की बदोलत का एक दौर तो समाप्त हुआ। इसका यह अर्थ नहीं कि अकाली इसके पश्चात कोई नया आन्दोलन नहीं करेंगे, अवश्य करेंगे वह इसके बिना रह ही नहीं सकते, यह केवल अकालियों की ही नहीं तमाम राजनैतिक नेताओं और पार्टियों के लिए मुश्किल पैदा होती है कि वह कभी चैन से नहीं बैठ सकते वह मौन हो जायें तो लोग उन्हें भूल जाते हैं जो इनके लिए मौत के बराबर होती है, इसलिए राजनैतिक नेता किसी न किसी रूप मे कोई न कोई आन्दोलन चलाते ही रहते हैं। हम पंजाब वाले समझते थे कि पंजाबी सूबा बन जाने के बाद अकाली कोई तैमारी काम शुरू करेंगे परन्तु इसके बाद इन्होने आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव पास कर दिया—फिर धर्म युद्ध शुरू करके कुछ समस्याएं उत्पन्न करदीं इसलिये यह कुछ न कुछ करते ही रहेंगे, न चैन लेंगे न लेने ही देंगे फिर भी मैं समझता हूं कि इन्हें रिहा कर देना चाहिये हो सकता हैं कि वाहे गुरु इनकी खोई हुई अकल वापिस कर दे और वह राहे रास्त पर आ जाएं।

—वीरेन्द्र

लीबिया पर नजला

लीबिया को अपनी करनी के फल से दो चार होना पड़ रहा है कोई समय था जब इसके नेता करनल कज्जाफी संसार के गोरिल्ला पसन्दों की रहनुमायी करनल अपना परमधर्म समझते थे और इसी वजह से जहां भी कोई किसी सरकार के विरुद्ध विद्रोह करता था आप उसकी सहायता को पहुंच जाते, आपके दिमाग में इतना अहंकार आ गया था कि आप ने अमरीका-बरतानिया और फ्रांस तक को राहेरास्त लाने के लिए उनके दो हवाई जहाज गिराए और इस तरह से ३०० के लगभग बेगुनाह इन्सानों को समाप्त करा दिया ऐसा करके आप शान्ति से बैठ गए परन्तु आप यह भूल गए कि आपका वास्ता किस से पड़ा है। अमरीका, फ्रांस और बरतानियां ने इतिहादी सभा में आपके विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत कर यह प्रमाणित कर दिया कि जिन दरिन्दो ने इन तीन सौ बेगुनाहों का खून नाहक किया वह लिबनियन बाशिन्दे थे। इस पर इतिहादी सभा ने करनल कज्जाफी से कहा कि आप इन दोनों अभियुक्तों को अमरीका के हवाले कर दें ताकि उनके विरुद्ध कानूनी कारवाही हो सके और इन्हें अपने किए की सजा मिल सके। जिस दिन से यह निर्णय हुआ है आप टालमटोल ही कर रहे हैं। अन्त में आपको यह ध्यान आने लगा कि यदि आपने इतिहादी सभा के फैसले को न माना तो अमरीका जबरदस्ती करके आपको विवश कर देगा कि आप उसके आगे घुटने टेक दें। इस पर आपने यह कहा कि आप इन दोनों नवयुवकों को अमरीका अथवा इतिहादी सभाको नहीं सौंपेगा बल्कि अरब लीग के हवाले कर देंगे। और अरब लीग चाहे तो वह इतिहादी सभा अथवा अमरीका को सौंप दे। यह अपनी इज्जत को बचाने का एक तरीका था। अब आप इन्हें अरब लीग को सौंपने से भी आनाकानी कर रहे हैं। अरब लीग ने इतिहादी सभा से कहा है कि इसे सोचने के लिए और समय दिया जाए।

कहते हैं कि बकरे की मां कब तक खैर मनाएगी। आज नहीं तो कल करनल साहब को झक मारनी पड़ेगी और इन दोनों अभियुक्तों को अमरीका को सौंपने तथा उन पर मुकदमा चलाने को बाध्य होना पड़ेगा। वरना अमरीकन बम्बारो से "तोहफे" रसीद करने के लिए तैयार रहना होगा। आपने समझा था कि आप निर्दोषों का खून करके चैन से रह पाएंगे। परन्तु जिन देशों के शहरी आपने जो हलाक किए वह आपसे पूरा २ बदला लेने के मूड में हैं और बदला लेकर रहेंगे। इस घटना से एक और बात भी नुमायां हो रही है और वह यह कि दुनिया के सामने एक नया अदारा खड़ा हो गया है जो प्रत्येक देश की सरदारी पर हावी होने का दावा करता है। इतिहादी सभा का आदेश मान कर लीबिया दुनिया की वह क्या रहा है।

"प्रताप" के सौजन्य से २२-४-९२

अंग्रेजी के साथ 'रोटी और रुतबे' का रिश्ता खतम हो

—बालकवि बैरागी

संसदीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के पूर्व सदस्य, प्रतिष्ठित कवि--गीतकार श्री बालकवि बैरागी से आनन्द गुप्त ने 'अंग्रेजी हटाओ आंदोलन' और राजभाषा हिन्दी के संबंध मे लम्बी बात चीत की, महत्वपूर्ण अंश यहां प्रस्तुत हैं।

अफसोस है, हम अन्तर्राष्ट्रीय बनने के चक्कर मे अपनी राष्ट्रीयता को भूलते जा रहे हैं, जिस भाषा को हम न ठीक तरह लिख पाते हैं, न ठीक तरह बोल पाते हैं—न समझ पाते हैं, वह भाषा यहां कब तक जिंदा रहेगी? नकल कब तक करेंगे? उसका जाना निश्चित है।

—कुछ लोगों की यह धारणा है कि अंग्रेजी देश को एकता के सूत्र मे बांधे हुए है, अंग्रेजी के जाते ही देश टूट जाएगा। यह धारणा भ्रामक है, दर असल अंग्रेज और अंग्रेजी के आने से यह महादेश टूटा है—श्रीलंका, नेपाल बर्मा और पाकिस्तान इसके जीवंत प्रमाण हैं, हमारा विरोध अंग्रेजी भाषा से नहीं है उसकी प्रभुता से है, हमारा विरोध शेक्सपीयर और बर्नार्ड शा से नहीं बल्कि क्वीन एलिजाबेथ और मैचर सरकार की मानसिकता से है, उनकी प्रभुता से है, आज जरूरत है अंग्रेजी के साथ 'रोटी और रुतबे' का रिश्ता खत्म किया जाये जिस दिन ये दोनो चीजें अंग्रेजी माध्यम से मिलनी बन्द हो जायेगी उस दिन अंग्रेजी मानसिकता अपने आप खत्म हो जायेगी हमारे देश मे प्रभुता भारतीय भाषा की ही होगी, हिन्दी का झगड़ा तमिल, तेलुगु, मलयालम, उर्दू या गुरुमुखी से कतई नहीं है।

—भाषा के मामले मे हमे देश को उत्तर और दक्षिण मे बांटकर नहीं देखना चाहिए, यह सुखद आश्चर्य है कि संसद में दक्षिण भारतीय सांसद यह मांग करते हैं कि उन्हें दक्षिण में हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए और अधिक धन चाहिए दक्षिण वालों को हिन्दी से द्वेष नहीं है—असली मुद्दा राजनीति है, हिन्दी का विरोध कर वे वहां सरकार बना लेते हैं—अगर वहां हिन्दी का समर्थन करने से सरकार बने तो हिन्दी के वे सबसे पहले समर्थक होंगे।

—हिन्दी वालों को किसी 'विशेषाधिकार या दुराग्रह' की बात नहीं करनी चाहिए। हमे भी अपने घर की खिड़कियां दरवाजे दूसरी भाषाओं के लिए खुले रखने चाहिए, हिन्दी के अतिरिक्त भी हमे एक दो दक्षिण की भाषाएं और सीखनी चाहिए--दूसरी भाषा की जानकारी से ही अपनी भाषा की असली ताकत मालूम पड़ती है, हिन्दी गाली गलौच की भाषा नहीं है, इसलिए इसको लेकर हमारा कोई दुराग्रह नहीं होना चाहिए।

—हमे करना सिर्फ यह है कि इसे ढलान की तरफ ले जायें इसे कठोर नहीं बनायें, प्रवाह अपने आप आ जायेगा और यह जन जीवन मे समाती चली जाएगी हमे अपनी भाषा पर भरोसा रखना चाहिए। ढलान पर और भाषाओं के कुछ शब्द साथ आयें तो आने दें मुझे उन पर दया आती है जो हिन्दी की पाचन शक्ति और मातृ शक्ति पर शंका करते है हिन्दी हमारी मातृभाषा है—मां है, तो किन्हीं मुद्दों पर उससे हम असहमत भी हो तो भी वह मां ही रहेगी।

सरकारी काम-काज के लिए शब्दावली बनायी गयी है हम उसका सहज प्रयोग प्रारम्भ करें—इसमे संकोच क्यों है? जब तक व्यवहार मे शब्द नहीं आयेंगे तब तक स्वीकार्यता कैसे होगी शुरु शुरु मे दूर दर्शन, समय सारणी, पंजीकरण जैसे शब्द बड़े अटपटे लगते थे अब कितने आम हैं सहज हैं, लेकिन इसके साथ-साथ इनके प्रारम्भिक प्रयोग से हमे सचेत रहना चाहिए, मुद्रण और प्रकाशन के समय भाषायी अशुद्धि और प्रूफ की गलतियों के प्रति हमें अत्यन्त सावधान रहने की जरूरत है।

—उदाहरण के लिए बैंकिंग मे शिपमेंट की जगह पोत-लदान शब्द का प्रयोग करते हैं छपाई मे जरा सी असावधानी से यह पोतल दान छप गया तो अकारण उपहास होगा, अतः इस बारे मे हमे अतिरिक्त सतर्कता बरतनी चाहिए, राजभाषा कार्यान्वयन की बैंको मे अन्य सरकारी कार्यालयों की अपेक्षा अधिक संभावनाएं हैं क्योंकि यहां का अधिकांश कारोबार फाइलों पर नहीं बल्कि सीधे जन साधारण से होता है प्रतिदिन लाखो लोग बैंको मे आते-जाते हैं, उनके माध्यम से हम हिन्दी के प्रति एक जीवंत माध्यम बना सकते हैं।

—हम अपने घर मे पत्नी को नहीं बदल सकते मगर प्रजातन्त्र मे सरकार को बदलना सबसे आसान हैं, यह सोचना गलत है कि सरकार ने जो नियम-अधिनियम बनाये हैं उससे तो अंग्रेजी कभी नहीं जायेगी, दरअसल कितने लोग हैं जो सरकार के नियमो, आदेशो का ठीक-ठाक पालन करते हैं।

हम उन नियमों का ही पालन कर ले तो बहुत है, मगर जनता का क्या करें? सरकार को बदल सकते हैं, सरकार की विचारधारा को बदल सकते हैं, नियम-अधिनियम, कायदे-कानून बना सकते है, मगर समाज को नियम कानून से नहीं बदला जा सकता, केवल कानून के बल पर कोई चीज आप नहीं लागू कर सकते जब तक जनता स्वयं उसे ग्रहण न करे, उसे सामाजिक मान्यता न मिले, अफसोस है आज भी कुछ हिन्दी भाषी सांसद अंग्रेजी मे बोलते हैं।

नक्षत्र विद्या और वेद (२)

—पं० शिवदयालु आर्य वानप्रस्थ

सब नक्षत्र अपनी धुरी पर ही तीव्र गति से घूमते हैं और यह सब तेज और प्रकाश से युक्त हैं। इनकी रचना परमात्मा ने सत्य परमाणुओं से ही प्रधान रूपेण की है। इन सबको द्यौ नाम से पुकारा जाता है और यह सब द्रवित अवस्था (Fluid State) में होते हैं। उस महान् कारीगर की यह द्यौ की रचना अत्यन्त अद्भुत और महान् हैं। जैसा कि ऋग्वेद में "येन द्यौ उग्रा स्तभितम्०" वर्णित है।

नक्षत्रों की परिक्रमा करने वाले इस ब्रह्माण्ड में असंख्य ग्रह (Plamcts) हैं अब तक केवल हमारे सौय मण्डल के ग्रहों का ही वैज्ञानिक पता चला सके हैं। अन्य नक्षत्रों के ग्रहों का बोध नहीं के बराबर ही है। सप्तर्षि मण्डल के नक्षत्र व तारे वशिष्ठ के एक ग्रह अरून्धती का वर्णन गोभिल गृह्य सूत्र में आता है। विवाह संस्कार में अरून्धती दर्शन का विधान आचार्य गोभिल ने किया हैं।

भारतवर्ष के फलित ज्योतिष् के आचार्यों ने जो नवग्रह की कल्पना की है और इन नवग्रहों की पूजा का विस्तृत वर्णन किया है वह वास्तविकता से परे है।

इन तथा कथित नवग्रहों में केवल इस सौर्य मण्डल के पांच ग्रहों में मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि को सम्मिलित किया गया है। पृथिवी के उपग्रह चन्द्रमा को नवग्रह में स्थान दिया गया है और पृथिवी को छोड़ दिया गया है। सौर्य मण्डल के अधिष्ठाता सूर्य को भी ग्रहों में गिना है जो वास्तव में ग्रह नही अपितु तारा या नक्षत्र हैं। राहु केतु नामक पृथिवी और चन्द्रमा के दो छाया-कोणों (nodes) को ग्रह मान लिया गया है।

पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने जो तीन यूरेनस, नेपच्यून व प्लुटो ग्रहों का पता चलाया है जो लगभग २ से ३ अरब मील की दूरी पर सूर्य की परिक्रमा करते हैं। उनको तथा पृथिवी को मिलाकर नवग्रह की सिद्धि होती है।

जब ब्रह्माण्ड के नक्षत्रों का ही बोध न हो पाया जो आकार और प्रकाश में बहुत बड़े हैं तो उनके ग्रहों का जो अपेक्षाकृत छोटे तथा निज प्रकाश शून्य हैं पता चलाना लगभग असम्भव है। तथा उनके उपग्रहों का तो पता चलाना सर्वथा असम्भव ही है।

इस सौर्य मण्डल में जिन उपग्रहों का अब तक बोध हो पाया है उनकी संख्या १५ है जो चन्द्रमा के नाम से पुकारे जाते हैं। पृथिवी का उपग्रह चन्द्रमा एक है तो मंगल ग्रह की परिक्रमा करने वाले दो चन्द्रमा हैं, बृहस्पति के चार और शनि के ८ उपग्रह अर्थात् चन्द्रमा हैं जो नाना वर्ण के बतलाए जाते हैं और आकाश में छल्ले जैसे विपरीत दिशाओं में शनि की परिक्रमा करते दूर्वीक्षण यन्त्रों से देखे जाते हैं।

समस्त ग्रहों और उपग्रहों के लिये वैदिक साहित्य में पृथिवी शब्द का प्रयोग किया गया है। यह सब तमस् परमाणुओं से विशेषतया रचे गये हैं और काठिन्येता युक्त हैं। ऋग्वेद में "दृढा पृथिवी स्तभितम्" पाठ दशम मण्डल में आता है।

ग्रहों के चहुं ओर अन्तरिक्षों की प्रभु ने सृजना की है जो वायव्य लोक कहाते हैं रजस् परमाणुओं से विशेषतया निर्मित है। गैसेज रूप में ग्रहों की तेजी के साथ परिक्रमा करते हैं सूर्य के आकर्षण से सागर से जल वाष्प के रूप में यहां संचित होता और मेघ बनकर पृथिवी आदि ग्रहों में वर्षा होती जिससे पृथिवी आदि में तृण, पौधे व वृक्ष उत्पन्न होते और नाना प्रकार के शाक, फल फूल अन्न उत्पन्न होते हैं जो मनुष्य पशु पक्षियों के जीवन के आधार बनते हैं। यह वायव्य लोक केवल ग्रहों के चहुं ओर ही पाये जाते हैं, चन्द्रमा आदि उपग्रह इनसे वंचित है। इसी कारण चन्द्रमा में किसी भी प्रकार के प्राणी, वनस्पति, तृण आदि का अभाव है। यह चन्द्रमा पृथिवी आदि ग्रहों को शीतल प्रकाश देते और प्राणियों तथा वनस्पति आदि में रस का सञ्चार करते हैं इसीलिए रसराज चन्द्रमा की वसुओं में गणना की गई है।

नक्षत्र से तात्पर्य किसी एक तारे (Star) वा तारों के समूह (Constilation) से है। यह प्रसिद्ध २७ नक्षत्र प्रायः तारों के समूह ही हैं।

अश्विनी नक्षत्र दो तारों का समूह है। ऊपर मन्त्र में इसको अश्वयुजो शब्द से पुकारा गया है। मूल नक्षत्र ११ विशेष कांति वाले तारों का समूह है। जिसको फलित वालों ने घोर अनिष्ट-कारक माना है। यह मान्यता सर्वथा विज्ञान शून्य है रेवती नक्षत्र ३१ तारों का समूह और सबसे बड़ा समूह है।

इन नक्षत्रों के अरबी भाषा में अल-शिरात, अल-बतून, अल-थुरैया, अल-देवरां, अल-हिकाह आदि नाम प्रसिद्ध हैं।

ध्रुवतारा सदा उत्तर दिशा में दिखाई देता है इसी कारण इसको ध्रुव भी कहा गया है। यह पृथिवी से तीन नील मील की दूरी पर है। इसका प्रकाश पृथिवी पर २ वर्षों में आता है। सूर्य से बहुत बड़ा होने के कारण पृथिवी से सदा दिखलाई देता है।

योग—ज्योतिष् में २७ योगों का भी वर्णन है। अथर्ववेद में भी नक्षत्रों के साथ योगों का वर्णन है। वेद में योगों के नाम नहीं दिये हैं। ज्योतिष् शास्त्र में इनके नाम दिये हुए हैं। यह योग केवल ज्यतिष् के गणित से ही सम्बन्ध रखते हैं। उत्तर व दक्षिण भारत मे योगों के नामों में अन्तर है। इन योगों में इष्ट अनिष्ट की कल्पना भी फलित वालों का केवल भ्रमजाल है। राशियों में भिभिन्न नक्षत्र, ग्रह एवं उपग्रहों के निवास से योगों की कल्पना की गई प्रतीत होती है। पञ्चक योग ५ नक्षत्र, ग्रह, उपग्रहों के एक राशि में आने से बनता है। इस योग को फलित वाले घोर अनिष्ट कारक मानते है। यह भी उनका अज्ञान मात्र है। कुछ वर्ष पूर्व फलित ज्योतिषियों ने अष्टग्रह योग को घोर अनिष्ट कारक बतलाया था जो केवल उनका भ्रमजाल था। अथर्ववेद में योगों का कोई वैज्ञानिक रहस्य छिपा हो सो इमें पता नहीं।

योगों का विधान करने वाला अथर्ववेद का निम्न मन्त्र मनन करने के योग्य है।

अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तुमे।
योगं प्रपद्ये क्षेमं क्षेमं च क्षेमं प्रपद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्याम्॥
अथर्व० १९।८।२॥

(अष्टाविंशानि शग्मानि) २८ नक्षत्र (सहयोगं) अपने योगों के साथ (मे शिवानी भजन्तु) मेरे कल्याण के विधाता हों। इनके सहयोग से मैं (योगं प्रपद्ये) जीवन की सब आवश्यक वस्तुओं को जुटाकर (क्षेमं प्रपद्ये) जीवन में सुख शान्ति को उपलब्ध करते हुए (क्षेमं प्रपद्ये) और क्षेमं को प्राप्त करते हुए (योगं च) में परमपिता परमात्मा के साथ मिलन करने वाला बन जाऊं (नमो अहोरात्राभ्यां) और रात्रि दिन उसकी वन्दना में रत रहूं।

सामाजिक समरसता की खोज

—डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार पलवल

आज अनास्था का युग है। पहले आस्थाओं का युग था। तब हमारी समाज में आस्था थी, उसकी मान्यताओं और परम्पराओं में आस्था थी। उससे बढ़कर शास्त्र में आस्था थी। सबसे बढ़कर ईश्वर में आस्था थी। अतएव समाज और व्यक्ति आस्था और विश्वास के बल पर चल रहे थे। ऐसा नहीं था कि उस पुराने समय के समाज में समस्याएं नहीं थी। समस्याएं थी लेकिन उनके समाधान भी उपस्थित थे। वह चाहे शास्त्रोक्त कथन रहे हो या बुजुर्गों की समझदारी या अपने भाग्य का भरोसा—इन सब चीजों के सहारे व्यक्ति, परिवार और समाज की सारी समस्याएं हल हो जाती थी। अब ऐसा कोई आधार हमारे पास नहीं रह गया है, जिसके सहारे सामाजिक संघर्ष को टाला जा सके। पहले चाहे शारीरिक संघर्ष आज से कहीं ज्यादा था, लेकिन मानसिक संघर्ष इतना प्रबल तब नहीं था। भौतिक दृष्टि से पहले का समाज चाहे जितना विपन्न था, लेकिन मानसिक दृष्टि से वह पर्याप्त समरस था। बेशक उस समाज में शोषण का बेरोकटोक चक्र चलता था। बेकारी थी—भूख थी—सब कुछ था तथापि व्यक्ति-व्यक्ति में, वर्ग-वर्ग में, जाति-जाति में एक प्रकार का सामञ्जस्य स्थापित था। हमारा लक्ष्य यह बिल्कुल नहीं है कि शोषण और उत्पीड़नको अनदेखा करके समाज में सामञ्जस्य स्थापित हो। ऐसा सामञ्जस्य तो समाज की अधिक से अधिक समता पर ही आधारित हो सकताहै।

हमारे आज के संघर्ष या अनास्था और अविश्वास का मूल कारण क्या है? यह जानने की बात है। अब हमारे जीवन के मान-मूल्य बदल रहे हैं। हमारी भारतीय-संस्कृति त्यागमूलक थी। अतएव तब त्याग पर जोर था। समाज में जो भौतिक सुख-सुविधाओं का जितना ज्यादा त्याग करता था वह उतना ही सम्मान का भाजन होता था। उदाहरण के लिए सन्यासी या ब्राह्मण वर्ग को ले सकते हैं। समाज में यदि उनको सर्वाधिक सम्मान प्राप्त था तो वह केवल उनके त्याग के ही कारण था। उस समाज में विद्या-विवेक का भी अपना महत्व था विद्या को सबसे बड़ा धन उस जमाने में माना जाता था। कहा जाता था कि 'विद्या धन सर्व धन प्रधानम्' अर्थात् विद्या ही सबसे बड़ा धन है। विद्या से जो विवेक (समझदारी) जाग्रत होता है वह भी पुराने जमाने में बहुत बड़ी बात थी। इनके अतिरिक्त सहन-शीलता का बड़ा महत्व था। उसी को क्षमाशीलता या तपस्या कहा जाता था। उदारता के साथ दूसरे के अभ्युदय या अपराध को सहन करना बहुत बड़ी तपस्या समझी जाती थी। बलवान और वीर पुरुषों के लिए भी क्षमा भूषणस्वरूप थी। विनयशीलता का पुराने जमाने का अपना बहुत बड़ा मूल्य था। जो व्यक्ति जितना अधिक विनयशील होता था वह उतना ही महान और समझदार समझा जाता था। घर-परिवार, जाति और बिरादरी में लोग उसी व्यक्ति का सम्मान करते थे जो सबको उचित सम्मान देता था। इसी को शील और शिष्टाचार कहा जाता था। पुराने जमाने में आचरण की शुद्धता या पवित्रता भी बहुत बड़ी बात थी। तब किसी भी सभ्य व्यक्ति में इन सभी गुणों का होना अनिवार्य था। सादगी पुराने युग का शृंगार था। तन और मन की सरलता अपने आप में देखने ही बनती थी। एक व्यक्ति को दूसरे के कथन पर पूरा-पूरा विश्वास रहता था। तब लोग अपने कथन और वचन का मूल्य भी मानते थे। जिस समाज के जीवन मूल्य इतने उच्च और उदार हों, उस समाज में समरसता अवश्यम्भावी थी। वहाँ पर संघर्ष और तनाव का अवसर कम से कम था।

आज स्थिति बहुत बदल गयी है। पहले व्यक्ति जहाँ पर विनय-सम्पन्न होता था, आज का व्यक्ति अहम्मन्य हो चला है। वह विनय और शिष्टाचार को आत्महीनता का पर्याय मान बैठा है। भौतिक-समृद्धि ने उसके अहं को उन्नत कर दिया है। सहनशीलता या क्षमाशीलता को वह अपनी सबलता न मानकर दुर्बलता मानता है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है। आचार-विचार का कोई मापदण्ड ही अब नहीं रह गया है। जिसको जो अच्छा लगता है, वह वही करता है। उचित-अनुचित, पाप-पुण्य, अच्छाई-बुराई का सब विवेक भोथरा हो गया है। मन-वाणी की सरलता अब मूर्खता या गवारपन है। सभ्यता की पहचान तो यह है कि चाहे आपके मन में कुछ भी क्यों न हो लेकिन उसे मुख पर न लाइये। पहले का व्यक्ति अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करके निर्विकार हो जाता था लेकिन अब का आदमी तो इतना व्यक्तिगत हो गया है कि वह अपने हर सुख दुःख को गोपनीय समझता है। तभी कुण्ठित रहता है। दूसरे का मान सम्मान करना आजकल अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझा जाता है। सादगी अब शृंगार नहीं अब तो वह अंगार हैं। यदि कोई व्यक्ति सादा रहता है तो यह उसकी सज्जनता नहीं अपितु या तो निर्धनता है या कृपणता है या फिर असभ्यता है। आज व्यक्ति स्वयं में इतना सम्पूर्ण हो गया है कि वह दूसरों के साथ उठना बैठना हिलना-मिलना अपनी शान के विरुद्ध समझता है। पहले व्यक्ति समाज में स्वयं को अपूर्ण समझता था इसीलिए वह दूसरों की अपेक्षा का अनुभव करता था। लेकिन आज का व्यक्ति तो स्वयं को सभा भांति सर्वतन्त्र और स्वावलम्बी मानता है दूसरों के यहाँ आना-जाना, सुख दुःख की बातें करना उसकी अहम्मन्यता को ठेस पहुंचाती है। आज उसकी अस्मिता इतनी अतुंग हो चुकी है कि उसके सामने सारा ही समाज बौना नजर आने लगा है। एक ओर उसका व्यक्तिगत हित अहित है तो दूसरी ओर सारे समाज का अस्तित्व। पहले का व्यक्ति यह सोचता था कि मैं समाज के लिए क्या कर सकता हूं, उसे क्या दे सकता हूं। आज का व्यक्ति तो केवल लेने की बात सोचता है देने की नहीं। इसीलिए सुख-सुविधाओं और अधिकारों की एक अन्धी दौड़ लगी हुई है। पहले जीवन में सन्तोष और समर्पण होता था। जो कुछ प्रयत्न पूर्वक सहज सुलभ होता था पहले का व्यक्ति उसी में सन्तुष्ट होकर अपने कर्म के प्रति समर्पित होता था। वह उसी को धर्म मानता था। उसमें घाटा उठाकर भी वह स्वयं को लाभान्वित मानता था। तभी तो गीता में श्रीकृष्ण ने कहा था कि स्वधर्मे निधनं श्रेय परः धर्मो भयावह। अपने कर्तव्य-पालन के लिए मृत्यु भी वरेण्य है उससे विचलित या पथभ्रष्ट होकर जीना भी मरण के समान है। पर आज हमारे अन्दर वह कर्तव्य निष्ठा कहाँ? वह सुख और शान्ति कहाँ है? कहाँ गया वह सन्तोष का परम धन? कहाँ गया अमृत तुल्य स्नेह सम्बन्ध।

आजकल कोई भी व्यक्ति अपने निर्धारित कर्म या व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं है। वह चाहे किसी भी पेशे का व्यक्ति हो और तो क्या अध्यापक वर्ग भी जो ब्राह्मण वर्ग के अन्तर्गत आता है आज व्यवसायी हो चला है। उसका उद्देश्य भी मात्र धनार्जन बन गया है। दूसरे व्यवसायों की तो बात ही क्या है। हर व्यक्ति आज आपको प्रापर्टी डीलर मिलेगा, या बीमा-कम्पनी का एजेन्ट या पुलिस का दलाल या इसे और भी सभ्य ढंग से कहा जाये तो राजनैतिक मिलेगा। सर्वतोभावेन समर्पित होकर जीवन की कोई सृजनात्मक दिशा अब नहीं है। जीवन का कोई सुनिश्चित उद्देश्य नहीं है। कोई दिशा और दृष्टि नहीं है। जीवन में खाली आर्थिक घुड़दौड़ शेष रह गयी है। ऐसे में क्या पाप-पुण्य, होगा क्या उचित-अनुचित होगा। कहाँ धैर्य और सन्तोष होगा? कहाँ क्षीरोज्ज्वल क्षमाशीलता और सहनशीलता होगी? तब व्यक्ति व्यक्ति या जाति-जाति के सम्बन्ध कैसे मधुर रह सकते हैं। ऐसे समाज में स्नेह और अहंकार नहीं। संघर्ष और तनाव ही इस समाज की नियति रहेगी। आस्था और विश्वास के स्थान पर तर्क और आलोचना ही व्यक्ति के सम्बल होंगे। वह बजाय कुछ करने के कहने में अब विश्वास रखता है। साहित्याचार्यों ने काव्य में नवरसों का विधान किया था। शायद दृष्टि आलोचना-रस पर नहीं पड़ी थी। यह काव्य और साहित्य का अभिनव रस है। और इसी रस में आज लोकरुचि है। शेष रस तो अब केवल साहित्य समीक्षा तक ही सिमटकर रह गये हैं, जो व्यक्ति

(शेष पृष्ठ ९ पर)

स्वास्थ्य चर्चा—

टेटनस रोग : उपचार कठिन बचाव आसान

टेटनस या धनुष टकार स्नायुतन्त्र की एक जान लेवा सक्रामक बीमारी है। यह क्लोस्ट्रिडियम टेटनाई नामक ग्राम धनात्मक छडाकार (माचिस की तीली के समान) गैर आक्सीजन प्रिय जीवाणुग्रो द्वारा टिटैनोस्पैस्मिन नामक स्नायु विष उत्पन्न करने के कारण होती है। उक्त स्नायुविष (न्यूरोटाक्सिन) से स्नायुतन्त्र के प्रभावित होने के फलस्वरूप शरीर के विभिन्नग्रगो जैसे जबडे, गरदन पीठ पेट व मेरूदण्ड तथा सीने की मासपेशियो मे पीडा युक्त गम्भीर अकडन या दृढता (स्पैस्म) उत्पन्न होती है।

जीवाणु का शरीर मे प्रवेश—क्लोस्ट्रिडियम टेटनाई नामक उक्त जीवाणु नमी व गन्दगी युक्त धूल मिट्टी, मनुष्य तथा जानवरो के मल, तथा गन्दगीयुक्त धातु की वस्तुग्रो के साथ पाया जाता है। जहा ये जीवाणु अधिक समय तक निष्क्रिय अवस्था मे (बीजाणु या स्पोर्स के रूप मे) पड रहते हैं। शरीर मे कही भी घाव लगने व उपरोक्त गदगियो से दूषित होने पर वे जीवाणु शरीर मे प्रवेश करते हैं।

विकृति व लक्षण—गैर आक्सीजन जन्य वातावरण मे टेटनस के बीजाणु प्रौढ जीवाणु मे बढकर प्रजनन द्वारा अपनी सतति सख्या बढाते हे व साथ ही टिटैनोस्पैस्मिन नामक स्नायुविष उत्पन्न करते हैं। ये स्नायुविष घाव से स्नायुतन्तुग्रो के सहारे केन्द्रीय स्नायुतन्त्र मे पहुचकर उनकी तन्तुग्रो मे स्थिर हो जाते हैं। जिसके फलस्वरूप वहा असामान्य रासायनिक परिवर्तन (एसीटिल कोलिन की अधिकता) होता है तथा इसी कारण सम्बन्धित मासपेशियों मे जबरदस्त अकडन (टोनिक मस्कुलर स्पैस्म) उत्पन्न होती है। साथ ही ये स्नायुविष स्नायुग्रो को छोटे से छोटे उत्प्रेरकों (स्टीमुलाई) के प्रति अतिसवेदनशील बना देते हैं।

टेटनस के रोगी मे सर्वप्रथम जबडे व गले की मासपेशियो मे अकडन के कारण मुह खोलने मे तथा कुछ भी निगलने मे परेशानी होती है। चेहरे की विशिष्ट मासपेशियों मे दृढता के कारण आकृति कुछ कुछ मुस्कुराहट युक्त (सारडोनिक स्माइल) हो जाती है। तत्पश्चात् गरदन, पीठ व पेट तथा सीने की मासपेशियों मे भी दृढता आ जाती है, जिससे रोगी का आकार कुछ वक्राकार सा हो जाता है इस रोग को साधारण बोलचाल मे धनुषटकार या धनुषस्तम्भ भी कहा जाता है। रोगी को थोडा सा भी हिलाने डुलाने पर या शोर गुल करने या कमरे मे प्रकाश करने पर रोगी को तीव्र झटके आने लगते हैं व मासपेशियो मे विस्फोटक अकडन आती है। तीव्र झटको व दृढता के कारण कई मासपेशिया टूट भी जाती हैं। रोगी की हालत तब और भी दयनीय हो जाती है जब श्वसन मे सहायक मासपेशिया प्रभावित होती हैं तब रोगी की ऐस्फेक्सिया-साइनोसिस (नीला पडना) व ऐस्पीरेशन के कारण मृत्यु भी हो सकती है अनुकम्पी तन्त्रिकातन्त्र (सिम्पेथेटिक नर्वस सिस्टम) की प्रक्रिया तीव्रगामी होने पर रोगी की हृदयगति मे बढोतरी होती है तथा रक्तचाप भी बढ जाता है। इसके अतिरिक्त रोगी के शरीर मे अन्य सक्रमणो का आक्रमण (जैसे न्यूमोनिया आदि) भी होता है।

बचाव व उपचार—जहा एक ओर टेटनस एक ऐसी बीमारी है जिसमे गहन सेवा सुश्रुषा व महगी औषधियो से युक्त अत्याधुनिक उपचारो के बावजूद रोगी के बचने की आशा धूमिल सी रहती है (मृत्युदर चालीस से शत प्रतिशत) वही दूसरी ओर हम थोडी-सी सावधानी से (१ या २ रु० या नि शुल्क तथा कुछेक मिनट खर्च कर) इस रोग से हमेशा के लिए बच सकते हैं। अत इस देश के सभी नागरिको का यह कर्त्तव्य है कि वे टेटनसके टीके लगवायें।

प्रतिरक्षण के साथ-साथ निम्नलिखित बातो का भी ध्यान रखना चाहिए।

मामूली से मामूली घाव की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। उसमे धूल, मिट्टी, गोबर या अन्य कुछ न लगाकर घाव को अच्छी तरह पानी व साबुन या किसी जीवाणु प्रतिरोधी लोशन से साफ कर एटीबायटिक औषधि से पट्टी कर दे। गहरा घाव से बचने के उपाय जाने व करे।

सक्रिय प्रतिरक्षण (ऐक्टिव इम्यूनाइजेशन)—

टेटनस से बचने के लिए सक्रिय प्रतिरक्षण के अन्तर्गत टीके (ऐडवंजड टाक्साइड) लगाये जाते हैं। इसकी अनुसूची विभिन्न वर्गों के लिए निम्नलिखित हैं—

(१) वयस्को के लिये—आधा मि०ली० की एक सूई मास मे अभी लगवायें, दूसरी छ हफ्ते बाद व तीसरी छ महीने बाद। बूस्टर डोज प्रति पाच वर्ष के उपरान्त, बेहतर सुरक्षा हेतु चोट लगने पर पुन एक सूई।

(२) गर्भवती माता को —जितनी जल्दी हो सके एक माह के अन्तर पर दो सूई।

(३) नवजात शिशु को डेढ, ढाई व साढे तीन माह पर डी पी टी (डिफ्थेरिया, परटयूसिस तथा टिटनस एक साथ) की सूई लगवायें (साथ ही साथ पोलियो की खुराक भी पिलवा दे)। प्रथम बूस्टर डेढ वर्ष की आयु मे तथा दूसरी बूस्टर ५ वर्ष की आयु में (डी०टी०)।

निश्चेष्ट प्रतिरक्षण (पेसिव इम्यूनाइजेशन)—इसके अन्तर्गत घाव लगने पर तथा टेटनस होने की अधिक सम्भावना होने पर अधिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए टेटनस प्रतिरोधी रक्तोद (एटीटेटनस सीरम या ए टी होने पर एटीबायटिक औषधि लेने की भी आवश्यकता पड सकती है।

अपने आस-पास को साफ सुथरा रखें व अपनी व्यक्तिगत सफाई पर भी विशेष ध्यान दे।

प्रसव किसी चिकित्सा केन्द्र मे अथवा प्रशिक्षित उपचारिका से करावे। शिशु की नाभिनली काटने तथा उसकी ड्रेसिंग में स्वच्छता व निष्क्रिटीकरण का ध्यान रखे।

उपचार हेतु—यदि किसी मे टेटनस के लक्षण दिखाई दे तो उसे निकट के उच्चीकृत चिकित्सा केन्द्र मे तुरन्त भर्ती करा दे। क्योकि टेटनस का उपचार अस्पताल मे ही सम्भव है। जहा रोगी को गहन सेवा-सुश्रूषा के मध्य शान्त एकान्त अन्धेरे कमरे मे रखा जाता है। वहा शिरा मार्ग द्वारा ग्लूकोज, रायल्स ट्यूब द्वारा तरल भोज्य, विभिन्न जीवाणु प्रतिरोधी औषधिया, अकडन व झटके रोकने वाली औषधियो तथा खत मे टेटनस के स्वतन्त्र स्नायु विष को निष्क्रिय करने के लिए ह्यूमैन इम्यूनोग्लोबिन (ए टी जी) आदि महगी औषधियो से उपचार किया जाता है। श्वसनावरोध ठीक करने के लिए कृतिम श्वसन नलिका (इनट्यूबेशन द्वारा) कृनिम श्वसन की आवश्यकता पडती है।

सक्षेप मे इतना जान लेना चाहिए कि टेटनस का उपचार बहुत कठिन तथा बचाव अत्यन्त सरल है अत आइए आज ही इस रोग से बचने के लिए अपने चिकित्सक की सलाह लें।

—डा० सी० आर० विश्वास

सम्पादक के नाम पत्र

माननीय मन्त्री जी

सादर नमस्ते ।

सार्वदेशिक का आर्य समाज स्थापना विशेषांक पाकर हृदय गद्गद हो गया, एक लम्बे समय के बाद ऊपर का पृष्ठ दर्शनीय एवं आकर्षक है। मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि इस प्रकार के ही विशेषांक प्रकाशित करेंगे। डा० भवानीलाल भारतीय का हिन्दू धर्म की निर्बलता लेख आज के परिवेश मे बहुत ही महत्वपूर्ण है शेष सभी ठीक हैं।

—वेदमित्र हापुड़ वाले मन्त्री

माननीय सम्पादक महोदय !

साद‍र नमस्ते ।

सार्वदेशिक साप्ताहिक का आर्य समाज स्थापना दिवस अंक प्राप्त हुआ। यद्यपि सारा विशेषांक चुनीदा सामग्री से ओतप्रोत है पुनरपि आपका बेबाक सम्पादकीय आज की नई पीढ़ी को तथाकथित नेताओं विशेषकर महात्मा गांधी की क्षुद्र मनोवृत्ति से परिचित कराने में बहुत अधिक प्रभावकारी है।

महात्मा गांधी इस बात से अच्छी तरह परिचित थे कि सत्यार्थप्रकाश ने मरणासन्न हिन्दु जाति को झकझोर कर जगा दिया।

सम्पादकीय के साथ जो विधिवत खण्डन विशेषांक के रूप में सत्यार्थ-प्रकाश के खण्डनात्मक प्रकरण को लेखबद्ध कर के प्रकाशित किया है वह अपने आप मे अनुपम है। इस प्रकार खण्डनात्मक शैली की भांति यदि मण्डनात्मक विशेषांक भी दिया जाए तो एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव से पुराणों के पाठ बदल गए। बाइबिल का रूपान्तर हो गया और कुरान के मानी बदल गए। सत्यार्थप्रकाश को जिसने पढ़ लिया और समझ लिया वह ऐसा दृढ़ सिद्धांती बनता है कि वह कभी डगमगा नहीं सकता।

इस शोधपूर्ण सम्पादकीय एवं लेखों के लिखने पर आपको अनेकशः बधाई। भगवान आपको चिरायुष्य एवं नीरोगता प्रदान करे जिससे आप वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में निरन्तर तैयारत रहें।

—डा० शिवकुमार शास्त्री

जे—१८६, विकासपुरी नई दिल्ली-११००१८

समरसता की खोज

(पृष्ठ ७ का शेष)

स्वयं कर्मण्य होता है उसे आलोचना मे नहीं सृजन में आनन्द मिलता है। उत्तम सृजन स्वयं में सर्वश्रेष्ठ आलोचना है।

यह बात ठीक है कि समाज मे आस्था और विश्वास के भाव-बिन्दुओं का ह्रास है। लेकिन वह इस सीमा तक तो अभी नहीं हुआ है कि उनका नाम ही निःशेष हो जाये। आज व्यक्ति के अपने अन्तर का स्रोत ही सूख गया है। जिस धवल जल से भक्ति और आस्था तथा सृजन की जलधाराएं प्रवाहित होती हैं वह सरस हृदय तो आज मरुस्थल बन गया है। उसमें अब सुशीतल जल नहीं केवल मृगमरीचिका का विभ्रम है। आस्था और विश्वास जहां पर व्यक्ति के व्यक्तिगत मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, वही पर सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी वे हितकर हैं। आज हम मूल्यों के दोराहे पर खड़े हैं। एक रास्ता भारतीय चिरंतन मूल्यो का है जो कि हमें अब अप्रासंगिक दिखाई पड़ता है, लेकिन पूर्णतया त्याज्य भी नहीं प्रतीत होता। दूसरा रास्ता आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति का है। जिसकी ओर हम दिन-प्रतिदिन लालायित होकर बढ़ते चले जा रहे हैं। इन दोनों दृष्टियों या संस्कृतियों के जीवन-मूल्यों में धरती और आकाश का अन्तराल है। एक का रास्ता त्यागपूर्वक सरलतायुक्त जीवन यापन है तो दूसरा रास्ता प्रदर्शन प्रियता के साथ कृत्रिम और कुछ सुविधा सम्पन्न जीवन-यापन का है। एक में अपनाव है तो दूसरे में तनाव है। एक में सहकार है तो दूसरे में संघर्ष है। एक मे स्नेह है तो दूसरे में स्वार्थ है। एक में ममता है तो दूसरे में समता की दुहाई है। आज का सामाजिक संघर्ष केवल व्यक्तियों-२ का संघर्ष न होकर दो विरोधी व्यवस्थाओं या विचारधाराओं का संघर्ष है। अब देखना यह है कि मानव कौन से पथ को अपनाता है। एक में शांति और सन्तोष है तो दूसरे में विग्रह और संघर्ष है हमारा विश्वास यही है कि मनुष्य मूलतः शांतिकामी है। संघर्ष उसकी विवशता हो सकता है कामना नहीं। अतएव देर-सबेर वह प्रथम पथ का ही वरण करेगा और अपने जीवन को समरस बनायेगा।

विदेश समाचार

आर्य समाज लण्डन की गतिविधियां

साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन नियमित रूप से किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर आध्यात्म लाभ किया। श्री प्यारेलाल चड्ढा, श्री पी. डी. दानी एवं अन्य आर्य परिवार यजमान बनें। सन्ध्या यज्ञ को डा. तानाजी आचार्य तथा श्रीमती सुधाप्रकाश ने सम्पन्न कर वेदमन्त्रो की सरस व्याख्या की। वेद सुधा के इस कार्यक्रम में उन्होंने वेद के उपदेशों की सार्वभौमिकता, व्यावहारिक उपयोगिता, तथा वैज्ञानिकता को दर्शाया।

डा. रघुवीरसिंह बाली ने अपने व्याख्यान मे इस बात पर गहरी चिन्ता प्रकट की कि वर्तमान में रेडियो, टी. वी. चित्रपट, समाचार पत्र आदि हिन्दी मे अरबी, फारसी और उर्दू के शब्दो की मिलावट से हिन्दी की मौलिकता को भयकर क्षति पहुंचा रहे हैं। विविध शब्दकोशों को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दू शब्द के अर्थ को हेतु पुरःसर बिगाड़ा गया है, जो कि असहनीय है।

भारतीय इतिहासो में राजपूतों के पराक्रम, बलिदान और साहस का उल्लेख करते हुए, श्री वीरेन्द्र वीर वर्मा (उपप्रधान) ने राणा सांगा के देश प्रेम और शूरता को अनुपमेय बताया। युरोप में वैदिक संस्कृति के प्रभाव को दर्शाया।

युवक सांस्कृतिक कार्यक्रम मे निम्न युवक और युवतियो ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपने सुप्त गुणो को प्रकट किया। जिनके नाम इस प्रकार है। अमित कहरे, मोनिका मलहोत्रा, सोनिका मेहदिरत्ता, रुचि चड्ढा, मोनिका छाबड़िया, किरण मोंगिया, आदित्य कपूर, विधि कपूर, दीवा ओबराय, संजय ओबराय, ऋषि तनेजा, साक्षी तनेजा, प्रीति कहरे, मधुर आर्य, आशुतोष आर्य, इला कहेर, रुचि अरोरा, रोहित मलहोत्रा और नीतिका मलहोत्रा। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में बसन्त पंचमी, श्री गोपालकृष्ण गोखले जयन्ति, पं० मदनमोहन मालवीय जयन्ति और धर्मवीर हकीकतराय का बलिदान दिवस मनाया गया। इन महापुरुषो के जीवन पर श्री वर्मा ने और बसन्त पंचमी पर डा० तानाजी ने प्रकाश डाला। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन श्री राजेन्द्र चोपड़ा तथा संचालन श्रीमती स्वर्णा शर्मा ने सफलता पूर्वक किया। एतदर्थ श्रीमती सुमन चोपड़ा और सरोज कपूर ने उल्लेखनीय सहयोग दिया। श्री वर्माजी ने बच्चो को पुरस्कार वितरित किए।

भक्ति संगीत के कार्यक्रम में श्रीमती सन्तोष हांडा, यश वेदी, उषा मसीन, स्वर्णा शर्मा सुरक्षा वर्मा, कान्ता पुरी, सन्तोष दासानन्द आदि ने सुमधुर भजनो का गायन किया।

श्री जे. एम. कपिला ने देशभक्ति से ओतप्रोत कविता का वाचन किया।

वेदपाठ की महिलाओं ने परिवारों मे वेदपाठ, हवन, भजन, प्रवचन आदि का आयोजन किया। आर्य समाज की ओर से अनेक संस्कार, हवन आदि सम्पन्न कराए गये। एतदर्थ श्रीमती प्रतिमा बहल के विशेष परिश्रम के लिए हार्दिक धन्यवाद।

—तानाजी आचार्य

शोक समाचार

सखेद सूच्य है कि श्री लखनलाल गुप्त संरक्षक के भतीजे श्री प्रदीपकुमार उम्र ४० वर्ष तथा श्री रामदास खोजी आर्य उम्र ८५ वर्ष आर्य समाज धकुवा एवं उपप्रधान गुरुकुल महाविद्यालय सिरथू इलाहाबाद के आकस्मिक निधन पर गुरुकुल परिवार ने एक शोक सभा करके दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं शोक सतप्त परिवार के धैर्य, साहस एवं शान्ति हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

—डा० रमामित्र शास्त्री, आचार्य

नवसम्वत्सरोत्सव तथा आर्य समाज स्थापना-दिवस

आर्य समाज अल्मोड़ा मे शनिवार, ४ अप्रैल, ९२ को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रमी सवत् २०४९ के शुभ अवसर पर नव सवत्सरोष्टि तथा आर्य समाज स्थापना दिवस उल्लास और हर्ष के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज मन्दिर मे पद्धति के अनुसार बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। उपस्थित लोगो ने एक दूसरे को नये वर्ष वि० स० २०४९ की बधाई तथा शुभ कामनाये प्रदान कीं। तदनन्तर डा० जयदत्त शास्त्री तथा डा० ज्ञानप्रकाश कण्वाहारी (स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती जी) के इन दोनो उत्सवो के सम्बन्ध मे रोचक तथा ज्ञानवर्धक प्रवचन एवम् उपदेश हुये, जिनका उपस्थित श्रोताओ पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

मन्त्री, आर्य समाज, अल्मोड़ा

मध्य प्रदेश में वेद प्रचार की धूम

आर्य समाज देवगढ़ (देवास) के प्रधान तथा सरपच दान श्रेष्ठी श्री गोवर्धनलाल जी आर्य ने अपने पूज्य पिताश्री की स्मृति मे आर्य भवन बानकर आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश को समर्पित करने के उपलक्ष्य मे ५ से ८ मार्च तक एक विशाल आर्य सम्मेलन का आयोजन किया। जिसमे सभाप्रधान स्वामी सत्यानन्द जी की अध्यक्षता मे मुख्य अतिथि विश्ववेद परिवार सघ के सस्थापक तथा मन्त्री प० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वदेश की इस विपत्ति ग्रस्त दशा मे आर्यों को सगठित होकर वेद प्रचार के पुनीत कार्य मे अपने तन मन धन से जुट जाना चाहिये, क्योंकि प्रभु की अमरवाणी वेद के प्रचार और प्रसार से ही ससार की अशान्ति और बेचैनी दूर हो सकती है।

—आचार्य वीरेन्द्र शर्मा, मन्त्री
विश्व वेद परिवार सघ

शिवरात्रि एवं ऋषिबोध उत्सव

आर्य समाज उदयपुर में ऋषिबोध उत्सव २ मार्च १९९२ को मनाया गया। इस अवसर पर पच कुण्डीय शाति महायज्ञ श्री सुबोधार्य जी शास्त्री (पुरोहित आर्य समाज ऊधमपुर) के नेतृत्व मे सम्पन्न हुआ। श्री शास्त्री जी राष्ट्र उन्नति पर प्रभावशाली प्रवचन दिए। लोग काफी प्रभावित हुए।

इस अवसर पर डी ए वी हाई स्कूल के छात्राओ ने मग निरा श्री श्री. एव कोल एजुकेशनल एड बाइबर एव प्रिन्सिपल डा ए वी हाई स्कूल गुरुदासपुर ने मुख्य वक्ता के रूप मे महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की। एव सबका इस अवसर पर मार्ग दर्शन किया।

बरेटा मण्डी में नये सम्वत पर कई परिवारों में यज्ञ

आज नए वर्ष के आरम्भ मे नीचे लिखे व्योपारियो ने अपनी अपनी दुकानो पर श्री ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा द्वारा हवन यज्ञ करके नये वर्ष के बहीखाने शुरू करने से पहले सभी बहीखातो के प्रथम पृष्ठ पर बड़े सुन्दर ढग से रगीन "ओ३म्" लिखवाया —

१ श्री जवाराम बनारसीदास जी बरेटा मण्डी
२ श्री शिव काटन फैक्ट्री बरेटा मण्डी।
३ मिलखीराम भगवानदास जी बरेटा मण्डी

ऊपर लिखी तीनो फर्मों ने एक एक सौ रुपया आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को दान किया।

इसके अतिरिक्त डी ए वी पब्लिक स्कूल बरेटा मण्डी मे भी नये वर्ष पर आज हवन किया गया।

महाशय हसराज आर्य पब्लिक स्कूल बरेटा का नतीजा १००) रहा—श्री ओम् प्रकाश जी वानप्रस्थी बठिण्डा के हाथो से होशियार विद्यार्थियो को इनाम दिलाये गये। इससे पहले स्कूल मे हवन यज्ञ किया गया।

—ओम्प्रकाश वानप्रस्थी

विदेश समाचार—

आर्यसमाज एम्सटर्डम होलैण्ड का वार्षिक निर्वाचन

१९९२-९३ वर्ष का चुनाव सत्य सनातन वैदिक प्रकाश, एम्सटर्डम होलैण्ड (आर्यसमाज एम्सटर्डम) का हुआ जिसमें निम्नलिखित व्यक्ति चुने गये।

प्रधान—श्री सुन्दर प्रसाद शुमधन
उपप्रधान—डा० दयानन्द परसंचू
मन्त्री—श्री सफलबत्त लालबहादुरसिंह पुनवासी
उपमन्त्री—श्री प्रदीप छोटकन
कोषाध्यक्ष—श्री कमलजीत कुमार

सभा के परामर्शदाता

(१) डा० महेन्द्र स्वरूप (३) श्री मया प्रसाद पुनवासी
(२) पण्डित रामराज बख्शा (४) श्री चन्द्रिका प्रसाद बख्शा

महिला आर्यसमाज एम्सटर्डम का वार्षिक निर्वाचन

१९९२-१९९१ के लिये आर्यसमाज सत्य सनातन वैदिक प्रकाश नारी समाज एम्सटर्डम, हौलैण्ड का चुनाव हुआ जिसमे निम्नलिखित महिलायें चुनी गई।

प्रधाना—श्रीमती रुकमिन शुमधन
उपप्रधाना—श्रीमती वेर्दा स्वरूप
मन्त्राणी—श्रीमती प्रतिमा देवी रामदीन
उपमन्त्री—श्रीमती विद्यावती शर्मा
कोषाध्यक्षा—श्रीमती जयरानी सीताराम
परामर्शदाता—श्रीमती मनावती छोटकन

—एस. शुमधान प्रधान

हिन्दुओं पर जुल्म अब सहन नहीं किए जायेंगे

मेवात में हिन्दुओं को परेशान करना मेव मुसलमानों का रात-दिन का काम बन गया है। इस क्षेत्र में गऊ हत्या प्रत्येक गाव मे होती है। मुसलमान राजनेता कसाइयों की भरपूर सहायता करते हैं इसलिए गऊ हत्यारों के हौंसले बढ़ गये हैं।

यदि कोई थानेदार या गऊ भक्त, मुसलमानो की गलत कार गुजारियों का विरोध करता है तो उसे हर प्रकार से तग किया जाता है।

चौधरी गोर्धनसिंह थानेदार हथीन का स्थानान्तरण तथा चौधरी बलबीर सिंह आसद थानेदार हथीन को हरियाणा सरकार के मुसलमान राजनेताओ ने निलम्बित करा दिया है, आर्य समाज के नेता पंडित नन्दलाल निर्भय ने मुख्यमन्त्री हरियाणा को इस समस्या का समाधान करने के लिए पत्र लिखकर गऊ हत्या रोकने की मांग की है।

श्री निर्भय जी ने ऐलान किया है कि यदि सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया तो आर्य समाज विवश होकर दूमरा कदम उठाएगा जिसकी जिम्मेदारी सरकार पर होगी।

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज भीमनगर गुड़गांवा में ३-५-९२ से १०-५-९२ तक प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। रात्री खुले मैदान में वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया था। इस शुभावसर पर आर्य जगत के सन्यासी, महात्मा, विद्वान एव आर्य नेता पधारे। यजमान शुल्क नहीं रखा गया है ताकि सभी धर्मप्रेमी यजमान बन सकें।

— अमीरचन्द धीमर, मन्त्री आ. स. भीमनगर, गुड़गांवा

साधना शिविर

२५ से ३१ मई १९९१

उदगीथ साधना स्थली चोहर (राजगढ़ हि०प्र०) में २५ मई से ३१ मई तक ब्र० आचार्य नरेश की देखरेख में साधना शिविर का आयोजन किया गया है। यह स्थान सोलन से हब्बन मार्ग पर पचास कि० मी० पर स्थित है। इच्छुक युवक शीघ्र सूचित करें व अपने साथ बिस्तर, थाली, कटोरी, गिलास, लोटा, कापी पेंसिल आदि साथ लावें।

—ईश्वर मित्र आर्य

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज नीमच के वरिष्ठ उपप्रधान तथा प्रसिद्ध चिकित्सक श्री डा नोतनदास जी की मातुश्री तथा भू० पू० नगर पालिका अध्यक्ष डा० सुन्दरदास जी रामनानी की दादीजी श्रोमती रोनसेबीबाई का ९३ वर्ष की पूर्ण आयु में देहावसान हो जाने से उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से किया गया। आपकी शव यात्रा में नगर के गणमान्य नागरिक चिकित्सक समाज सेवियों व बडी सख्या में नागरिको ने भाग लिया।

आर्य समाज नीमच की ओर से श्रद्धांजलि सुमन समर्पित करते हुए एक शोक प्रस्ताव पारित कर परमपिता परमात्मा से दिवगत पुण्यात्मा की सदगति के लिए प्रार्थना की गई।

—जगदीश प्रसाद आर्य, मन्त्री
आर्य समाज, नीमच (म० प्र०)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२६-४-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न नं० ६१
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment Licence No. U 93 Post in N .P.S.O.on 23,24-4-1992

बरनावा गुरुकुल का तैंतीसवां वार्षिक चतुर्वेद पारायण यज्ञ

उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले मे कृष्ण और हिंडन नदी के संगम पर बरनावा गाव बसा है। यहा एक बड़ा ऊंचा टीला लाक्षा मडप के नाम से विख्यात है। इसी स्थान पर महाभारत काल में महाराजा दुर्योधन ने पांडवो को छल से जलाकर मार डालने के लिए लाक्षागृह का निर्माण किया था। युद्ध में विजय के बाद पांडवो ने यहा विशाल प्रयोगशालायें विद्यालय, पुस्तकालय और न्यायालय आदि का निर्माण कराया जो समय के साथ काल के गर्भ मे समा गए। मध्यकाल मे पुन इस स्थान पर अतिविशाला यज्ञशाला मन्दिर और कूपो का निर्माण हुआ परन्तु विदेशी शासको ने उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर इस पवित्र स्थल को श्मशान भूमि मे बदल डाला। पूरे टीले पर बिखरे विध्वस के चिन्ह देखकर आज भी इस स्थान की पूर्वकालीन गरिमा का आभास होता है। यहा बह रही जिस नदी के तट पर वैदिककाल मे, महर्षि जैमिनि, वेदव्यास आदि अनेकों ऋषि मुनि यज्ञ करते थे, आज पुन, उस स्थल पर चार विशाल यज्ञशालायें खड़ी हैं।

यहा पर श्रावणी इत्यादि पर्वो पर सदैव ही सामवेद पारायण यज्ञ होते हैं पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ का कुम्भ के मेले के समान अपना अलग ही महत्व है। शिवरात्रि के बाद पड़ने वाले प्रथम रविवार से लगातार आठ दिन तक होने वाला यह यज्ञ पिछले तैंतीस वर्षों से निरन्तर आयोजित किया जा रहा है। इन आठ दिनो में देश भर से वेद विद्वान यहाँ पधारते हैं और अपने उपदेशो की वृष्टि कर जनता को जी भर आध्यात्मिक ज्ञान सागर मे खूब डुबकियां लगवाते हैं।

इस वर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन ८ से १५ मार्च तक किया गया। ब्रह्म वेला मे ब्रह्मचारियो द्वारा किए जाने वाले प्रात कालीन वेदमन्त्रो के गायन से विद्यालय का प्रागण गु जायमान हो उठा। सूर्योदय का समय होते ही सब सस्वर सन्ध्या-उपासना करते हैं और उसके बाद दैनिक यज्ञ के साथ वेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम प्रारम्भ होता है। प्रात कालीन यज्ञ के बाद मुख्य वेदी पर बाहर से पधारे मान्य विद्वानो के प्रवचन होते हैं। जिन्हें सब लोग बड़ी जिज्ञासा से एकाग्रचित होकर सुनते हैं।

दोपहर में 'भजनोपदेश का कार्यक्रम होता है। इस कार्यक्रम मे देश के सुप्रसिद्ध वैदिक संगीतज्ञ भाग लेते है और मधुर भजनो के गायन से श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध कर देते हैं। इसके पश्चात् सभा मच पर विद्यालय के ब्रह्मचारियो द्वारा प्राणायाम और योगक्रियाओ द्वारा अपनी शारीरिक क्षमता का प्रदर्शन किया जाता है। ये सभी कार्यक्रम जनमानस को सात्विक विचारधारा की ओर प्रेरित करते है। दोपहर की सभा के अन्त मे ब्रह्म० कृष्णदत्त जी का योगमुद्रा मे प्रवचन होता है। हजारो लोग प्रतिवर्ष दूर-दूर से यहा आते है और वैदिक विचारधारा में अपने विश्वास को पुन दृढ कर फिर देश के कोने कोने मे फैल जाते हैं। आर्य विचार धारा के प्रचार और प्रसार में यह आयोजन पिछले अनेक वर्षों से अहम् भूमिका निभा रहा है।

—सोमसिंह ग्राम- खेड़ी खेड़ा (गाजियाबाद) उ० प्र०

ग्रामीण स्त्रियों का आजीव जागृति शिविर सम्पन्न

आर्य समाज अकोला द्वारा केन्द्रीय कल्याण बोर्ड दिल्ली के सौजन्य से किन्खेड (बाकली) इस ग्राम मे दि० २८-२-९२ से १०-३-९२ तक ग्रामीण एव निर्धन स्त्रियोके लिये आजीव जागृति शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर में ३० महिलाओ का सहभाग था। शिविर का समापन समारोह श्री राऊत साहेब, मोहिम अधिकारी जिला परिषद अकोला की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। प्रमुख अतिथि के रूप मे श्री अग्रवाल जी प्राचार्य डी० ए० वी० कालेज अकोला, श्रीमुनि 'वानप्रस्थ' आमगाव उपस्थित थे।

शिविर का समापन एव आभार प्रदर्शन श्री बसन्त काले, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ ने किया।

—उपप्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र व विदर्भ नागपुर

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार उ प्र

आर्यसमाज के विशाल आयोजन हेतु समन्वय समिति गठित

ग्वालियर ५ अप्रैल। दिनांक ४ अप्रैल ९२ को आर्यसमाज मन्दिर, चित्रगुप्तगंज लश्कर मे आयोजित वृहत्तर ग्वालियर की आर्यसमाजो के पदाधिकारियो की बैठक मे श्री दिवाकर विद्यालंकार की अध्यक्षता में लिए गए निर्णय अनुसार सभी समाजो के प्रधान व मन्त्री को सम्मिलित करते हुए, श्री प्रकाशचन्द्र अग्रवाल के सयोजकत्व में एक समन्वय समिति का गठन किया गया। इस समिति द्वारा किसी सार्वजनिक स्थल पर एक विशाल आयोजन तथा देश की अन्य ज्वलन्त समस्याओ के निराकरण हेतु निर्णय किये जायेंगे। तथा इसकी आगामी बैठक नया बाजार आर्यसमाज में सम्पन्न होगा।

इसके पूर्व नव संवत्सर एव आर्यसमाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें यज्ञ, भजन व आर्यसमाज की स्थापना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्री दिवाकर विद्यालंकार ने अपने विचार प्रकट किये।

—प्रकाशचन्द्र अग्रवाल मन्त्री

मुक्त हस्त से दान

आर्य समाज नीमच के उपप्रधान व सुप्रसिद्ध चिकित्सक व गरीबो के मसीहा डा० मोतनदास जी रामवानी ने अपनी मातुश्री श्रीमती सेवीबाई के देहावसान पर उनकी पुण्य स्मृति से ५०१) रु० आर्य समाज नीमच को, ५०१) रु० श्मशान विकास सुमिति को व ५०१) रु० श्री वानेश्वर आश्रम समिति को प्रदान किये।

तीनों ही सस्थाओ ने आपका आभार प्रकट करते करते हुए पुष्प श्रीला, रतन वर्मा मातुश्री की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

—जगदीश प्रसाद मन्त्री

नवीन आर्य समाज की स्थापना

सत्य सनातन वैदिक धर्म एव सस्कृति सभ्यता के प्रचार प्रसार करने तथा महर्षि दयानन्द के सन्देश को घर-घर पहुचाने के उद्देश्य को ध्यान मे रखकर ग्राम पो० टारीघाट जिला गाजीपुर मे आर्य समाज की स्थापना की गई है। इस समाज का प्रथम समारोह १८-१९ अप्रैल को प० नृसिंह जी तिवारी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- प्रकृति और परमाणुओं का ज्ञान और युक्ति से परमेश्वर के मिलाये बिना जड़ पदार्थ स्वयं कुछ भी कार्य सिद्धि के लिए विशेष पदार्थ नहीं बन सकते। इसलिए स्वाभावादि से सृष्टि नहीं होती परन्तु परमेश्वर की रचना से होती है।
- देखो शरीर मे किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते है।
- धर्म युक्त सत्य भाषण करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड देना ही मुक्ति का साधन है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३१७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक १४)   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२   वैशाख शु० १   सं० २०४८   ३ मई १९९२

ओ३म् ध्वज साम्प्रदायिक नहीं, सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक है

उच्चतम न्यायालय के निर्णय की चर्चा

विशाखा एन्क्लेव आर्यसमाज का ध्वजारोहण तथा अशोक विहार की यज्ञशाला का उद्घाटन, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का उद्बोधन

नई दिल्ली २६ अप्रैल,

प्रीतमपुरा विशाखा एन्क्लेव आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर ध्वजारोहण करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि इस भगवे ध्वज पर सूरज का चिह्न और परमात्मा का नाम ओ३म् इस बात का प्रतीक है कि अज्ञान रूपी अन्धकार दूर होकर वेद ज्ञान रूपी प्रकाश आने वाला है जैसे रात्रि के अन्धकार को हटाकर सूर्य समस्त प्राणी मात्र के लिए प्रकाश की व्यवस्था करता है। स्वामी जी ने कहा कि हमारे देश के उच्चतम न्यायालय तक ने यह निर्णय दिया है कि ओ३म् ध्वज साम्प्रदायिक नहीं है। यह निर्णय हरियाणा के आर्य नेता स्वर्गीय श्री जगदेव सिद्धांती की चुनाव याचिका पर उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश श्री गजेन्द्र गडकर ने दिया था। श्री जगदेव जी पर यह आरोप था कि उन्होने मोटरों पर ओ३म् ध्वज लगाकर चुनाव प्रचार किया है जो कि साम्प्रदायिक है। न्यायमूर्ति

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दूसरा भारतीय भाषा सम्मेलन

आगामी ६ मई शनिवार को दिल्ली के रफी मार्ग स्थित विट्ठल भाई पटेल भवन में भारतीय भाषा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है, जिसका उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल करेंगे। प्रात. १० बजे से ५ बजे तक चलने वाले इस सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों के विद्वान, प्रतिनिधियों को सम्बोधित करेंगे।

यदि आप किसी भी तरीके से भारतीय भाषाओं के विकास में योगदान कर सकते है, चाहे वह सार्वजनिक कार्यालयो मे भारतीय भाषाओं के प्रयोग मे वृद्धि के द्वारा हो, या इनके पठन-पाठन में विकास के द्वारा हो तो आप इस सम्मेलन मे प्रतिनिधि के रूप में अवश्य पधारें। दोपहर के भोजन की व्यवस्था सम्मेलन मे ही की गई है।

अजमेर विश्वविद्यालय का नाम "महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व विद्यालय" रखने का विधेयक विधानसभा में सर्वसम्मति से पारित

राजस्थान के प्रमुख वैदिक विद्वान श्री दत्तात्रेय जी आर्य का इस सम्बन्ध में सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम पत्र—

आदरणीय स्वामी जी,

सादर नमस्ते।

रेडियो तथा समाचार पत्रों द्वारा आपको यह तो विदित हो ही गया होगा कि राज्य सरकार ने विधानसभा के वर्तमान सत्र के अन्तिम दिन अजमेर विश्वविद्यालय का नाम "महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय" रखने का विधेयक सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया है, इस कार्य मे आपका जो सहयोग रहा उसके लिए हम सब आपके आभारी है। राज्य सरकार के प्रति भी आभार व्यक्त करते हुए मैंने यह सुझाव दिया है कि इस विश्व विद्यालय में अब ऋषि दयानन्द के जीवन और उपदेशों के अध्ययन और शोध के लिए प्रावधान किया जाना चाहिए। ताकि यह नामकरण सार्थक हो सके।

आपका

दत्तात्रेय आर्य

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

भारतीय भाषा सम्मेलन

हमारे देश की राष्ट्रभाषा क्या हो? इसका निर्णय १९४९ में उस समय ही हो गया था जब हमारी संविधान सभा ने देशका विधान बनाया था और यह भी निर्णय लिया था कि देश की राष्ट्रीय भाषा कौन सी होगी और देश के राज प्रबन्ध में प्रादेशिक भाषाओं का क्या स्थान होगा। हिन्दी को देशकी राष्ट्रभाषा घोषित किया गया था और उसके साथ यह भी कहा गया था कि जो प्रादेशिक भाषाएं हैं उन्हें भी उनके प्रान्तो के राज मे पूरा महत्व दिया जायेगा। इस आधार पर उस समय १५ भाषाओं का नाम दिया गया था। जो राष्ट्रीय भाषाए होगी उनमें अंग्रेजी का नाम नहीं था। आज स्थिति यह है कि अंग्रेजी ही एक मात्र राष्ट्रीय भाषा समझी जा रही है। न हिन्दी को कोई पूछता है न दूसरी किसी भाषा को, यह स्थिति अत्यन्त निराशाजनक और दुर्भाग्य पूर्ण है।

इस स्थिति पर विचार करने के लिये पिछले दिनों हैदराबाद में एक भारतीय भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तो से कई महानुभाव सम्मिलित हुये और प्राय: सभी इसी विचार के थे कि हिन्दी ही देश की राष्ट्र भाषा हो सकती है। परन्तु उसके साथ प्रादेशिक भाषाओं को भी उतना ही महत्व मिलना चाहिए जितना कि हमारे विधान निर्माता चाहते थे। इस सम्मेलन की एक विशेषता यह भी रही है कि इसमें जो महानुभाव दक्षिण भारत से सम्मिलित हुए थे उन्होंने भी यह स्पष्ट कर दिया था कि वह हिन्दी के विरोधी नहीं हैं। यद्यपि वह चाहते थे कि उनकी जो प्रादेशिक भाषाए हैं उन्हे भी पूरा महत्व मिलना चाहिए।

यह सम्मेलन हैदराबाद में हुआ और इसका श्रेय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्लीके वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव को है। उन्होंने कई प्रान्तो के शिक्षा विशेषज्ञ और राजनीतिक नेता इस सम्मेलन मे इकट्ठे किये और उन सबने मिलकर ही यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही देश की राष्ट्रीय भाषा हो सकती है। आर्य समाज के लिये यह अत्यन्त हर्ष और गौरव का विषय है कि हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा घोषित की गई है। आर्य समाज ने ही यह सब से पहले कहा था कि हिन्दी ही देश की राष्ट्रीय भाषा होनी चाहिए। आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओ मे हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम रहा है। प्रात: स्मरणीय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जब गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में आरम्भ किया था तो वहां भी शिक्षा माध्यम हिन्दी ही रखा गया था। उन विषयो पर हिन्दी मे पुस्तके लिखी गई थी, जिन पर उससे पहले किसी ने न लिखी थी। गणित 'विज्ञान' मनोविज्ञान और इस प्रकार के कई विषय जो बहुत ही महत्वपूर्ण समझे जाते हैं उनके लिएभी हिन्दीमें पुस्तकें लिखी गईहै। देशकी, राजभाषाव राष्ट्रभाषा क्याहोनी चाहिये? इस दिशा मे वास्तव मे आर्य समाज ने ही देश का नेतृत्व किया है। परन्तु यह भी एक शोचनीय और निराशाजनक स्थिति है कि आज हिन्दी पिछड़ रही है और अंग्रेजी आगे आ रही है। केन्द्रीय सरकार अंग्रेजी को ही अधिक महत्व देती है उसे देखकर कई बार दुख होता है। शिक्षा संस्थाओं मे भी माध्यम अंग्रेजी बना दिया गया है। और तो और अब कई आर्यसमाजी शिक्षा संस्थाओ मे भी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो गया है। इसलिये सारी स्थिति आज अत्यन्त निराशाजनक है।

श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव केवल आर्य जगत के ही नहीं सारे देश के धन्यवाद के पात्र है कि उन्होने इस समस्या की ओर अपने देशवासियों का ध्यान दिलाया है जो सम्मेलन उन्होने हैदराबाद में किया उसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि दक्षिण के विषय में यह समझा जाता है कि वहां कोई हिन्दी का नाम सहन करने को तैयार नहीं है। परन्तु हैदराबाद मे ऐसा सम्मेलन करना और उसमें यह प्रस्ताव पारित करना कि हिन्दी ही देश की राष्ट्रभाषा हो सकती है, बहुत अधिक उत्साहजनक है परन्तु यह पहला प्रयास है जो इस दिशा में किया गया है। लेकिन हम यह नहीं भूल सकते कि यह सम्मेलन दक्षिण भारत में किया गया है। आवश्यकता अब यह है कि इस प्रकार के सम्मेलन देश के दूसरे प्रान्तों में भी किये जायें। सारे देश में यह अभियान प्रारम्भ होना चाहिए कि हिन्दी को उसका वह स्थान मिलना चाहिए जो संविधान के अनुसार उसे दिया गया है। हम लोग जो पंजाब में रहते है हम जानते हैं कि हमारे लिए कितनी कठिनाइयां पैदा हो रही है। पंजाब की सरकार इस प्रदेश में हिन्दी और संस्कृत दोनों का ही विनाश करने का प्रयास कर रही है। फिर भी आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं मे हिन्दी शिक्षा का माध्यम है। यद्यपि यह कहना कठिन है कि यह स्थिति कब तक रह सकेगी परन्तु यदि दूसरे उन प्रान्तों में जो हिन्दी भाषी नहीं कहे जा सकते उनमे हिन्दी को महत्व दिया जाये तो हम भी पंजाब मे समय समय पर इसके पक्ष में अपनी आवाज उठा सकते हैं। जो कुछ हैदराबाद मे किया गया है उसके लिये मैं श्री वन्देमातरम और उनके सहयोगियों का धन्यवाद करता हूं। उन्होंने यह सम्मेलन करके अपने देश-वासियों का मार्ग दर्शन किया है। अब इसे आगे ले जाने की आवश्यकता है। वह कैसे हो इस पर विचार करना चाहिये।

— वीरेन्द्र

भारतीय भाषाओं की विजय:

—डा० श्यामसिंह शशि का त्यागपत्र अस्वीकृत

घटनाएं कितनी तेजी से बदलती हैं और "सत्यमेव जयते" की सूक्ति साकार ले रूप सकती है, इस तथ्य का एक ताजा प्रमाण भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिए डा० श्याम सिंह शशि की लड़ाई में प्राप्त सफलता से मिलता है। विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि डा० शशि द्वारा तीसरी बार स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति के लिए इस्तीफ़ा देने के तुरन्त बाद सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार ने प्रकाशन विभाग को अन्तरिम बजट की पूरी राशि मंजूर कर दी तथा डा० शशि से अपने पद पर बने रहने का अनुरोध किया है। उन्होंने भारतीय भाषाओं में पिछले दिनो बहुत-सी पुस्तकं प्रकाशित की हैं तथा कई नए क्षेत्रो में कार्य किये हैं।

प्रकाशित समाचारों के अनुसार प्रकाशन विभाग के निदेशक तथा अध्यक्ष डा० शशि ने गत वर्ष अपने पद से तीन बार इस्तीफा दिया था। कारण, उन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त पंजाबी, उर्दू, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बंगला, मराठी, गुजराती, कन्नड आदि भारतीय भाषाओं की विभागीय पत्रिकाओं योजना, आजकल आदि को बिना किसी लाभ के प्रकाशित करने के लिए धनराशि की मांग की थी जिसे मन्त्रालय ने मंजूर नही किया था।

हमने डा० शशि से एक भेंट में वस्तुस्थिति जानने की कोशिश की तो उन्होंने अपनी चिरपरिचित मुस्कान के अतिरिक्त कोई उत्तर नहीं दिया। शायद वह कहना चाहते हैं—प्रतीक्षा करो मेरे उत्तर की। वैसे उत्तर हमे उनके व्यस्त कार्यक्रमो से भी मिल गया। वे भारतीय भाषाओं के प्रकाशनों के अतिरिक्त अपने कार्यालय में अत्यधिक व्यस्त रहते है। उन्हें एक और बड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ा। प्रश्न था कि क्या मार्च में वे इतनी बड़ी राशि पुस्तक-प्रकाशन में व्यय कर पायेंगे? क्या सरकार बिना इस्तीफा दिये उनकी यह मांग स्वीकार नही कर सकती थी? उन्होंने अस्वस्थ होने के बावजूद पन्द्रह मार्च तक प्रकाशन की पूरी राशि व्यय करके सांस ली।

उल्लेखनीय है सो से अधिक पुस्तकों के लेखक डा० शशि को दो वर्ष पूर्व अंग्रेजी तथा हिन्दी मे उत्कृष्ट लेखन के लिए भारत सरकार ने "पद्मश्री" का उच्च राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया था। उनके सामने कर्तव्य पहले है फिर कुछ और। डा० शशि ने अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन के कार्य को शुद्ध राष्ट्रीय कार्य माना है तथा सेवानिवृत्ति के बाद इस पुनीत कार्य मे पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया है। सरकार डा० शशि को रोकने का भरसक प्रयास कर रही है किन्तु लगता है वे किसी और बड़े राष्ट्रीय कार्य मे अपना भविष्य खोज रहे हैं। इस्तीफा देने के बाद उन्हें सरकारी, गैर-सरकारी स्तर पर कई अच्छे पदो के लिए आमन्त्रण मिले हैं। कुछ राजनैतिक दलों ने भी उनसे सम्पर्क किया है किन्तु वे अपना अधिकांश समय साहित्य सृजन को ही देना चाहते हैं यह भी सुनने मे आया है कि सरकार ने उनका इस्तीफा लिखित रूप में नामन्जूर कर दिया है तथा कई और महत्वपूर्ण कार्य सोपे है। डा० शशि शालीनता वश रूक तो गये हैं किन्तु कब तक रहेंगे, भविष्य बतायेगा।

—राजेन्द्रसिंह

भारतीय भाषा संरक्षण संगठन सत्याग्रह स्थल

संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली

सम्पादकीय

ईमानदारी पर कैसा विश्वास ?

ईमानदारी ? कैसी ईमानदारी मानव अहम् स्वार्थ पर जब टिका हो; तब ईमान कहीं पर भी बिक सकता है—दो पैसे पर भी और दो लाख पर भी मनुष्य का मन डगमगा जाता है।

जिस व्यक्ति से भी बात करे, वह अपने को ईमानदार और दूसरों को बेईमान समझता है। यह है आज का मानव मन !

किसी भी दुकानदार से सौदा सामान लो, तो वह यह कहकर ज्यादा पैसे लेता है कि मंहगाई है। समाज के प्रत्येक वर्ग की यही दशा है।

कपड़े वाला डाक्टर के पास, डाक्टर जूते की दुकान पर, हर स्थान पर तथा प्रत्येक दुकानदार से सौदा महंगा लिया जाता है मंहगाई के नाम पर। सामान मंहगा लिया जाय—चलो ठीक है। परन्तु हमारा पतन उस चरम सीमा तक जा सकता है जिसमे राष्ट्र के चिन्तक मानव का मन बुद्धि सभी कुछ विकृत हो जाय। उसे अर्थ चाहिये—राष्ट्र निर्माण नही ! इसके लिये उसे कितना नीचे स्तर पर गिरना पड़े, कोई चिन्ता की बात नहीं ?

समय समय पर समाचार-पत्रो में पढ़ लेते है कि अमुक सामान में मिलावट ! तो आश्चर्य का ठिकाना नही रहता है।

काली मिर्च मे पपीते के बीज हल्दी में पिसी ईंट का बुरादा, हवन सामग्री मे लकड़ी का बुरादा, दूध मे पानी, घी में चरबी आदि घटनायें सुनने को मिलती है। किस लिये—अपनी आर्थिक उन्नति हेतु और महल बन जायं, कार आ जाय, लोग हमें बड़ा व्यक्ति मानें, यह है आत्म प्रवञ्चना !

निन्यानवे व्यक्ति—इस प्रकारके गिरे स्तर को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और बुरा भी कहते हैं पर करते भी बुराई वही लोग है। भ्रष्टाचार हमारे जीवन का अंग बन चुका है वह हमारी रगो में खून की तरह घुल गया है।

प्रश्न यह है कि कोई गलत वस्तु हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है तो क्या उसे निबाहते रहना ही ईमानदारी है। या उसे दूर करने की चेष्टा की जानी चाहिये। प्रश्न उठता है क्या दुनियां से ईमानदारी उठ गई।

व्यक्ति ईमानदार बनता है पर दोष दल सगठन, समूह नेता मे गड़बड़ दिखाई देता है। ठंडी सांसें छोड़ते हुए लोग कहते हैं कि ईमानदारी तो अब कलियुग में ढूंढे नहीं मिलती है। क्या समय था जब सतयुग था जिसका व्याख्यान सन्त महात्मा विद्वान कथा वार्ता सत्सगों में करते हैं। अब और तब में आयें अन्तर को स्पष्ट करते हैं।

पहले मिलावट करना हर व्यक्ति अपराध समझता था। परन्तु आज का मानव मिलावट करना पुण्य कर्म मानता है न उसे धर्म की चिन्ता है और न धर्मोपदेष्टा आचार्य या गुरु के ज्ञान की। फिर यदि पापियों की संख्या बढ़ रही हैं तो दूसरी ओर आज भी आम आदमी में सच्चाई ईमानदारी जैसे गुणों के उदाहरण देते नही थकते हैं।

आज जब समाचार-पत्र पढ़ने को हिन्दुस्तान हिन्दी लिया तो प्रथम पृष्ठ पर जो समाचार छपा है २५ अप्रैल १९९२ का अंक देखें ? लोकसभा की कार्यवाही में नीतेश कुमार ने कहा कि—

दिल्ली मिल्क स्कीम के दूध में यूरिया, दिल्ली दुग्ध योजना को दुग्ध सप्लाई करने वाली प्राइवेट फर्मों द्वारा दूध मे चिकनाई और प्रोटीन की मात्रा को बढ़ाने के लिये उसमें यूरिया व कुछ अन्य वस्तुओं की मिलावट की गई है।

एकबार पढ़ा था कि दूध में मलाई लाने हेतु स्याही सोखता मिला देने से जम कर मोटी मलाई बन जायेगी और दूध पीने वाला-मलाई का दूध बढ़िया बतायेगा।

न्यायमूर्ति श्री महावीरसिंह जी के ज्येष्ठ भ्राता का निधन

सार्वदेशिक न्यायसभा के अध्यक्ष न्यायमूर्ति महावीरसिंह (अवकाश प्राप्त) के भ्राता श्री रणवीरसिंह का २६-३-९२ को मेरठ में निधन हो गया। वे ८४ वर्ष के थे। श्री रणवीरसिंह एक निष्ठावान आर्य थे। उनका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से मेरठ मे साकेत आर्य समाज के तत्वावधान में २८-३-९२ को हुआ और ४-४-९२ को शान्ति यज्ञ हुआ।

श्री रणवीरसिंह जी का राष्ट्र प्रेम अत्यन्त ही अनोखे किस्म का था वे लगभग गत २ वर्षों से पूर्णतया अमेरिका में अपने सुपुत्र के पास जा बसे थे। शरीर त्याग से लगभग एक माह पूर्व जब वे भारत वापिस पहुंचे तो सम्बन्धियों से वार्तालाप में यही कहते रहे कि मैं तो अपनी धरती पर मृत्यु को प्राप्त होने आया हूं। एक टिप्पणी पर कि अमेरिका में मृत्यु या भारत में प्राप्त मृत्यु मे क्या भेद है, श्री रणवीरसिंह जी का उत्तर था कि कम से कम यहां वैदिक रीति से आर्य समाज में संस्कार तो सुलभ होगा।

श्री महावीरसिंह को इस वियोग में हम अपनी सम्वेदना भेजते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवगंत आत्मा को शान्ति दे व उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति दे।

—विमल वधावन एडवोकेट
संयोजक, सार्वदेशिक न्याय सभा

घी में जानवरों की चर्बी मिलाकर खिलाना कहां की नैतिकता है मुर्गी के अण्डों की जगह कछुओं के अण्डे खिलाना-बुराई की सीमा को लांघना है। आज मानव विचार करें कि हम कहां पर खड़े हैं—हमारा पतन ही नही राष्ट्रीयता का नैतिकता का पतन है।

आज भी बेईमानी के साथ ईमानदारी भी विद्यमान है—अच्छाई और बुराई की पाठशाला घर की चार दीवारी है पर घर से बाहर समाज का चरित्र देश जाति के उत्थान का उदाहरण बनता है समाज में व्याप्त तमाम कटुताओ के अतिरिक्त आस्था मूल्य नैतिकता व सामाजिक इकाई भी इन गुणों की ओर प्रवृत्त होगी इन्हें सदाशयता का पाठ अपने प्रत्येक सदस्य को पढ़ा सकती है प्रत्येक परिवार दयानन्द गांधी सुभाष बुद्ध के पद चिन्हों की ओर आयेगा। घर परिवार और जनता ही इस महायज्ञ की पुरोहित भी है और यजमान भी।

बाबा नानकदेव जी महाराज तथा मस्ताना के विषय में प्रचलित एक लोक कथानक से बात स्पष्ट कर रहा हूं—

बाबा नानकदेव जी एक समय एक गांव में पहुंचे। वहां के लोगों ने उनसे दुर्व्यवहार किया। बाबा बोले—

१—तुम यहीं रहकर फलों फूलो ? खूब उन्नति करो।

२—फिर बाबा दूसरे गांव में गये। वहां के लोगो ने बाबा का अत्यधिक आदर सत्कार किया।

बाबा नानकदेव जी ने ईश्वर से अभ्यर्थना की, कि ये लोग सारे संसार में फैलें।

मस्ताना ने प्रश्न किया कि बाबा यह कैसा व्यवहार ? गलत व्यवहार करने वालों को तो यहीं फलने-फूलने खुश रहने का आशीर्वाद दिया। साथ ही अच्छे लोगों से कहा—तुम संसार में बिखरो यह कैसा आशीर्वाद है ! बाबा बोले—बेटा,

अगर बुराई सब जगह फैली तो लोगों में समाज में हानि ही पहुंचायेगी और अच्छाई अगर समाज में फैली तो लोगों में अच्छा व्यवहार उत्तम गुण लायेगी। मैंने इसीलिए दुर्व्यवहारी लोगों को सिमटे रहने और अच्छे लोगों को फैलने का आशीर्वाद दिया।

अच्छाई ईमानदारी सद्गुण सद्व्यवहार वास्तव में समाज में फैलें यही मानव मात्र की हार्दिक इच्छा है ?

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय

क्या आर्य समाज एक संकीर्ण और कट्टरपंथी संस्था है?

—डा० बाबूराम शास्त्री, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष दयानन्द वैदिक शोधपीठ, अजमेर

११ अप्रैल, १९९२ को परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में दयानन्द आश्रम, अजमेर में आयोजित एक सभा मे प्रसिद्ध पत्रकार डा० वेद प्रताप वैदिक के भाषण का जो विवरण यहां के स्थानीय दैनिक पत्रों में प्रकाशित हुआ है उसने आर्य समाज के वास्तविक स्वरूप के सम्बन्ध में कई गम्भीर प्रश्न खड़े कर दिये हैं।

डा० वेद प्रताप के अनुसार "पिछले सौ वर्षों के दौरान आर्य समाज कट्टरता और संकीर्णता के दायरे में बंधकर रह गया है तथा यही उसकी विफलता का प्रमुख कारण है"—उनकी यह भी मान्यता है कि "हर धर्म और सम्प्रदाय के लोगों के लिए आर्य समाज के दरवाजे खोल देने चाहिये।"

आर्य समाज की स्थापना सन् १८७५ में हुई थी और इस प्रकार उस की स्थापना को आज ११७ वर्ष हो गए हैं। ऋषि दयानन्द का निधन १८८३ में अजमेर मे ही हुआ जिसे अब १०८ वर्ष हो गये हैं। अत: प्रश्न यह उठता है कि यदि आर्य समाज संकीर्णता और कट्टरता के दायरे में गत सौ वर्षों से ग्रसित है तो इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि ये दोनों दोष आर्य समाज मे ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बाद ही प्रवेश कर गये। आर्य समाज के प्रारम्भिक इतिहास से परिचित व्यक्तियों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि ऋषि दयानन्द के जीवन काल में आर्य समाज के दस नियम ही उसके उद्देश्य तथा धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं के आधार समझे जाते थे। इन नियमो की विशेषता यह समझी जाती थी कि उनमें से केवल प्रथम तीन ही आर्य समाज की धार्मिक मान्यता को उजागर करते हैं जिनके द्वारा वेद धर्मग्रन्थ के रूप में और ईश्वर को एक निराकार सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है किन्तु शेष सात नियम इतने व्यापक और निर्विवाद है कि उन्हे प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय के लोग भी स्वीकार कर सकते हैं। दूसरे शब्दो में ये नियम किसी प्रकार की कट्टरता और संकीर्णता के दायरे से परे है।

ऋषि दयानन्द का धार्मिक दर्शन

महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म को सार्वभौम, सार्वजनिक तथा शाश्वत धर्म बतलाया है एवं वेदों को अनादि, अपौरुषेय तथा सभी सत्य विद्याओ की पुस्तक बतलाया है। अत: स्वामी जी ने वेद को ही सार्वभौम वैदिक धर्म का आधार बतलाया और उसके प्रचार प्रसार के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की। यद्यपि पौराणिक और सनातन धर्मी भी वेद को अपना आदि धर्म ग्रंथ मानते हैं किन्तु उसी के नाम पर मूर्ति पूजा, जातपात, छुआ-छूत, बाल विवाह, सती प्रथा तथा महिलाओ के प्रति असमानता का व्यवहार भी करते हैं। इन सबका ऋषि दयानन्द ने स्वयं वेदों का तर्क संगत भाष्य करके उसके आधार पर खण्डन किया। इसी प्रकार ईश्वर के सम्बन्ध में भी हिन्दू समाज मे जो अन्धविश्वास प्रचलित है तथा अनेक देवी देवताओं और अवतारो तथा गुरुओ की परम्पराए प्रचलित है उनके लिए भी हिन्दू वेद को ही प्रमाण मानते हैं। जबकि ऋषि दयानन्द के अनुसार वेद केवल एक निराकार ईश्वर की उपासना का उपदेश देता है—जिसका वर्णन आर्य समाज के दूसरे नियम मे किया गया है।

वर्तमान स्थिति

हिन्दू धम की इन निर्बलताओ से आर्य समाज को बचाये रखने के लिए यह नितान्त आवश्यक था कि उसकी धार्मिक मान्यताओ को स्पष्ट निश्चित और तर्कसगत किया जाय इसलिए आर्य समाज के दस नियमो के अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धार्मिक सिद्धान्त और सामाजिक मान्यताएं भी आर्य समाज में प्रवेश के लिए अनिवार्य कर दी गई। यही कारण है कि सन् १९२४ में ही सार्वदेशिक सभा ने औपचारिक रूप से इन्हें सदस्यता सम्बन्धी उपनियमों में सम्मिलित कर लिया।

ऐसी स्थिति मे प्रश्न यह उठता है कि क्या ऋषि दयानन्द की इन मान्यताओं के कारण ही आर्य समाज एक कट्टरपंथी और संकीर्ण संगठन बन गया है जैसा डा० वेदप्रताप वैदिक जी के आरोप से संकेत मिलता है।

संकीर्ण या उदार

आर्य समाज से परिचित वेद प्रताप जी जैसे व्यक्ति को यह बताने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि वस्तुत: आर्य समाज ही एक ऐसा धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन है जिसके दरवाजे सब धर्म और सम्प्रदायों के लोगों के लिए प्रारम्भ से ही खुले है। इसकी तुलना में उदार समझा जाने वाला हिन्दू धर्म भी अत्यन्त संकीर्ण और कट्टरपन्थी रहा है। ऋषि दयानन्द से पूर्व कोई मुसलमान या ईसाई चाहने पर भी हिन्दू समाज में सम्मिलित नहीं हो सकता था—इतना ही नहीं जो हिन्दू अपना धर्म छोड़कर अन्य धर्मों में स्वेच्छा से या बलपूर्वक सम्मिलित हो गए थे उन्हें भी वापिस लेने का कोई प्रावधान हिन्दू धर्म में नहीं था। इतना ही नहीं जात पांत तथा छुआछूत जैसी अन्य परम्पराओं के परिणामस्वरूप हिन्दू धर्म के अनुयायी भी अस्पृश्यता और अत्याचार के अनेक दुर्व्यवहारों के शिकार होते थे। इस प्रकार जो हिन्दू धर्म स्वय अपने धर्म बन्धुओं के साथ ऐसी अनुदारता का व्यवहार करता था उसे उदार और व्यापक कहना कितनी बड़ी विडम्बना थी। ऐसी स्थिति में जिस हिन्दू समाज ने अपने सारे दरवाजे और खिड़कियां अन्य धर्म के लोगो के लिए ही नहीं स्वय अपने धर्म के लोगों के लिए बन्द कर दिये थे उन्हें आर्य समाज ने ही न केवल खोल दिया अपितु प्रवेश के अन्य नए दरवाजे और मार्ग भी प्रशस्त कर दिये। जिनमें होकर जन्म के मुसलमान और ईसाई भी आर्य समाज और वैदिक धर्म में प्रवेश कर सकते हैं और शुद्धि आन्दोलन से ऐसा हुआ भी है।

यही कारण है कि धार्मिक और सामाजिक इतिहास में आर्य समाज को एक व्यापक उदार और क्रान्तिकारी आन्दोलन समझा जाता रहा है—जो ऊंच-नीच, जात-पांत, छुआछूत के भेदभाव को न मानकर गुण कर्म-स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था का पक्षधर है और सर्वसामान्य के लिए समान रूप से उन्नति के अवसर उपलब्ध कराता रहा है।

अन्य धर्मों के अनुयायियों के प्रवेश का प्रश्न—

डा० वेदप्रताप जी उपर्युक्त वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ नहीं हो सकते फिर जब वे आर्य समाज पर कट्टरता और संकीर्णता का दोषारोपण करके यह सलाह देते है कि आर्य समाज के दरवाजे हर धर्म और सम्प्रदाय के लोगों के लिए खोल देने चाहिए तो उसका यही अर्थ हो सकता है कि उनके अनुसार हर धर्म और सम्प्रदाय का व्यक्ति अपने अपने धर्म और सम्प्रदाय में विश्वास रखकर भी आर्यसमाज का सदस्य और अधिकारी बन सकता है।

यदि यह निष्कर्ष सही है तो उसकी अव्यवहारिकता और विरोधाभास से किसी बुद्धिमान व्यक्ति को परिचित कराने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। यदि एक व्यक्ति कुरान को अपनी धर्म पुस्तक और मोहम्मद साहब को अपना एकमात्र पैगम्बर मानता है तो वह आर्य समाज के प्रथम तीन नियमों को कैसे स्वीकार कर सकता है? इसी प्रकार ईसाई और पौराणिक हिन्दू या सिक्ख अपनी धार्मिक मान्यताओं को बनाये रखकर किस प्रकार आर्य समाज में प्रवेश कर सकता है—यह समझना कठिन है।

परोपकारिणी सभा की स्थिति

परोपकारिणी सभा ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारी संस्था समझी जाती है। जिसका मुख्य उद्देश्य ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश, वेदभाष्य ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ग्रन्थों का प्रकाशन और उनमें प्रतिपादित धार्मिक मान्यताओ का देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में प्रचार और प्रसार करना है। ऐसी स्थिति में उसके तत्वावधान में आयोजित समारोह में आर्य समाज को अन्य धर्म सम्प्रदायो की मान्यताओं को स्वीकार करने या कम से कम उनके अनुयायियों को अपने संगठन में सदस्यता प्रदान करने का यह प्रचार कहां तक ऋषि दयानन्द के प्रति निष्ठा का परिचायक है। इसका स्पष्टीकरण इस सभा द्वारा होना आवश्यक है। अन्यथा कावे में कुफ्र की यह परम्परा आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के दर्शन और चिंतन के लिए एक खुली चुनौती सिद्ध होगी।

एक और प्रश्न जो इस प्रकार के आह्वानों से उत्पन्न होता है वह यह है कि क्या अन्य धर्म और सम्प्रदायों के लोग आर्य समाज में प्रवेश के लिए कतार बांधे खड़े है जो उसके तथाकथित बन्द दरवाजे खुलते ही उसमें प्रवेश करेंगे। इनका उत्तर इन पहले से ही खुले दरवाजों के खाली पड़े रहने मात्र से मिल सकता है।

देश की एकता में हिन्दी का योग

श्री क्षेमचन्द्र सुमन

किसी भी देश की एकता में उसकी भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इस दृष्टि से यदि हम विचार करें तो देखेंगे कि हमारे देश की एकता को बनाए रखने और उसकी अखण्डता को सुरक्षित रखने में हिन्दी का अभूतपूर्व स्थान है। हिन्दी को यह महत्त्व इसलिए नहीं दिया गया कि वह सारी भारतीय भाषाओं में ऊंची है, बल्कि उसे 'राष्ट्रभाषा' इसलिए कहा और समझा जाता है कि हिन्दी को जानने, समझने और बोलने वाले देश के कोने-कोने में फैले हुए हैं। ये लोग चाहे हिन्दी न जानते हों, व्याकरण की भूलें करते हों, अशुद्ध हिन्दी बोलते हों, परन्तु बोलते हिन्दी हैं और उसी में अपने भाव व्यक्त करते एवं दूसरों की बात समझते हैं। वास्तव में हिन्दी की यह प्रकृति ही देश की एकता की परिचायक है और इसी प्रकृति ने उसे इतना व्यापक रूप दिया है। वह केवल हिन्दुओं या कुछ मुट्ठी-भर लोगों की भाषा नहीं है; वह तो देश के कोटि-कोटि कण्ठों की पुकार और उनका हृदय-हार है।

हिन्दी के सूत्र के सहारे देश के एक कोने से चलकर कोई भी व्यक्ति दूसरे कोने तक जा सकता है और अपना काम चला सकता है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की समानता एवं एकात्मकता किसी भाषा में दिखाई देती है तो वह हिन्दी में ही है। चाहे सब लोग हिन्दी न जानते हों, लेकिन फिर भी इसके द्वारा वे अपना काम चला लेते हैं और उन्हें इसमें कोई कठिनाई नहीं होती। भारत की बहु-भाषिकता के प्रश्न को उठाकर जो लोग हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित करने में रुकावट डाल रहे हैं वे यह कैसे भूल जाते हैं कि आज विश्व के सर्वाधिक शक्ति-सम्पन्न देश रूस ने इस समस्या का किस प्रकार समाधान किया है। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि 'सोवियत-संघ में यद्यपि १६ भाषाएं बोली तथा लिखी जाती हैं, किन्तु फिर भी वहां की राष्ट्र-भाषा 'रूसी ही है। सोवियत-संघ की मंगोल' और 'तुर्की' भाषाओं के शब्दों का रूसी भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके विपरीत यहां की दक्षिण की भाषाओं में भी संस्कृत के प्राय: ६० प्रतिशत शब्द मिल जाते हैं। तमिल को हम अपवाद के रूप में रख सकते हैं, किन्तु उसमें भी कुछ शब्द तो ऐसे मिल ही जाते हैं, जिन्हें भारत की दूसरी भाषाओं के बोलने वाले सरलता से समझ लेते हैं।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति से पूर्व हिन्दी के ही माध्यम से भारत के अनेक सन्तों सुधारकों, मनीषियों और नेताओं ने अपने विचारों का प्रसार एवं प्रचार किया था। अपनी दूरदर्शिता के कारण उन्होंने ऐसी ही भाषा को अपनी भावधारा के प्रचार का साधन बनाया, जो देश के सभी भू-भागों के अधिकांश जन-समुदाय को एकता के सूत्र में पिरो सकती थी, और वह भाषा हिन्दी थी। यही कारण था कि जहां उत्तर प्रदेश के कबीर, पंजाब के नानक, सिन्ध के सचल, कश्मीर के लल्लद्यद, बंगाल के बाउल, असम के शंकरदेव, गुजरात के नरसी मेहता और महाराष्ट्र के तुकाराम एवं ज्ञानेश्वर आदि सन्तों ने जिस सांस्कृतिक एकता को आधार बनाकर अपने काव्य की रचना की, वहां दक्षिण के वेमना और आलवार आदि सन्तों की कविता की मूल भावभूमि भी वही थी। इनके सन्देश में कहीं भी भाषागत विघटन का स्वर नहीं उभरा था, बल्कि सभी की रचनाएं उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक समान रूप से समादृत होती थीं। जिन साधु-वैरागियों के मठ और अखाड़े सारे देश में फैले हुए थे, उनमें भी कहीं भाषा का झगड़ा नहीं उठता था।

भाषाओं की यह विविधता देश की एकता में कहीं भी बाधक नहीं समझी जानी चाहिए। 'दस बिगहा पर पानी बदलै, दस कोसन पर बानी' के अनुसार 'पानी' और 'बानी' की अनेक विधता तो स्वाभाविक ही है किन्तु कबीर ने जिस 'संस्कृति' को 'कूप-जल' और जिस 'भाषा' को 'बहता नीर' कहा वह भाषा निश्चय ही 'हिन्दी' है। इसी में उन्होंने अपना सन्देश देश को दिया और उसे वे एकता की कड़ी' के रूप में देखते थे। भाषा वही महत्त्वपूर्ण होती है जो लोगों को 'तोड़ने' के बजाय जोड़ने' का सन्देश दे और जिसके माध्यम से प्रेम का मार्ग प्रशस्त हो। इसी पावन भावना से प्रेरित होकर महाकवि जायसी ने यह कहा था :—

तुरकी, अरबी, हिन्दुई, भाषा जेती आहि।
जेहि मंह मारग प्रेम का, सबै सराहै ताहि॥

और यह प्रेम का मार्ग केवल हिन्दी के माध्यम से ही प्रशस्त हो सकता है। यदि ऐसा न होता तो बंगाल के अद्वितीय सुधारक राजा राममोहन राय और केशवचन्द्र सेन-जैसे मनीषी अपने विचारों के प्रचार के लिए इसे क्यों अपनाते? आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने गुजराती होते हुए भी राष्ट्रीयता और समाज-सुधार की अपनी भाव-धारा को हिन्दी के द्वारा ही सारे देश में फैलाया। 'स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है' के जन्मदाता लोकमान्य बाल-गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्रीय होते हुए भी १९२० में बनारस में हिन्दी में भाषण दिया था। उनके यह विचार वास्तव में हिन्दी की व्यापकता का सुपुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कहा था : "मेरी समझ में हिन्दी भारत की सामान्य भाषा होनी चाहिए। जब एक प्रान्त दूसरे प्रान्त से मिले तो आपस में विचार-विनिमय का माध्यम हिन्दी ही होनी चाहिए।" सामाजिक क्षेत्र में अनेक सुधारकों द्वारा जहां हिन्दी को भारत की एकता का प्रमुख साधन समझा जा रहा था वहां महात्मा गांधी के द्वारा उसके प्रचार और प्रसार को इतना व्यापक बल मिला कि कांग्रेस के अधिवेशनों में भी प्रस्तावों और भाषणों की भाषा हिन्दी हो गई। महात्मा गांधीजी ने हिन्दी का महत्त्व इन शब्दों में स्वीकार किया था : 'जैसे अंग्रेज अपनी मातृभाषा अंग्रेजी में ही बोलते हैं वैसे ही मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हिन्दी को भारत माता की एक भाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिन्दी को सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य-पालन करना चाहिए।"

हिन्दी की सार्वजनीन उपयोगिता और महत्ता का इसीसे पता चलता है कि इसे दूसरे प्रदेशों के निवासी नेताओं और विचारकों ने अपने विचारों के प्रकट करने का माध्यम बनाया था। श्रीमती सरोजिनी नायडू ने इसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए एक बार कहा था : "देश के सब से ज्यादा हिस्से में हिन्दी ही लिखी जाती है। अगर हम साधारण बुद्धि से काम लें तब भी हमें पता चलेगा कि हमारी कौमी जबान हिन्दी ही हो सकती है। "सुप्रसिद्ध मनीषी आचार्य क्षितिमोहन सेन ने भाषा को किसी भी देश की एकता का प्रधान साधन मानते हुए हिन्दी की महत्ता की जो प्रतिष्ठापना की थी वह भी हमारे लिए उपेक्षणीय नहीं है। उन्होंने कहा था : "अंग्रेजी भाषा की महिमा इसलिए नहीं है कि वह हमारे शासकों की भाषा थी बल्कि इसलिए है कि उसने संसार की समस्त विद्याओं को आत्मसात् किया है। हिन्दी को भी वही पद पाना है। उसे भी नाना विद्याओं, कलाओं और संस्कृतियों की त्रिवेणी बनना होगा। हिन्दी में वह क्षमता है। बिना ऐसा बने भाषा की साधना अधूरी रह जायगी। भाषा हमारे लिए साधन है, साध्य नहीं; मार्ग है मन्तव्य नहीं आधार है आधेय नहीं। (क्रमश:)

स्वास्थ्य चर्चा—

नजला-जुकाम

डा० सोमवीर उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

वैसे देखने में अनेक रोग ऐसे होते हैं जो साधारण प्रतीत होते हैं और थोड़ी सावधानी से जल्दी ही बिना दवाई के ठीक हो जाते हैं, किन्तु यदि लापरवाही की जावे तो भयंकर रोग का रूप धारण कर लेते हैं। नजला-जुकाम भी ऐसा ही रोग है। यदि हम थोड़ी सावधानी बरतें तो बिना दवाई के दो-तीन दिन में ठीक हो जाते हैं।

शायद ही कोई ऐसा आदमी होगा जिसे कभी न कभी यह बीमारी न हुई हो।

यदि इस रोग के प्रति हम लापरवाही करें—विषम भोजन व प्रतिकूल आहार विहार करें तो नजला बढ़कर खांसी, दमा तथा तपेदिक जैसी भयंकर व्याधि का रूप धारण कर सकता है। अतः हमें सावधानी के साथ रहकर आवश्यकता अनुसार दवाई का प्रयोग करना चाहिए।

आयुर्वेद के मतानुसार इसे वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज चार प्रकार का मानते हैं।

कारण—मलमूत्र के वेग को रोकने से, नाक में धूल जाने से, अजीर्ण से, रात को अधिक जागने से, बहुत चिल्लाकर बोलते रहने से, क्रोध से, ऋतु बदलने से, सिर में बहुत धूप लगने से, दिन में सोने से, नया पानी पीने से जैसे वर्षा के बाद तालाब या जोहड़ का पानी पीने से, ठण्डे जल में अधिक देर तक स्नान करने से, धूआं लगने से, वर्षा में अधिक भीग जाने से, तेज ठण्डी हवा में स्कूटर या मोटर साईकल पर नगे सिर सफर करने से, रात को ठण्ड लगने से या ओस में रहने से आदि कारणों से सिर में कफ एकत्रित हो जाता है, जिससे वायु बढ़कर नजला-जुकाम उत्पन्न होता है। नासिका मल में रोगाणु पैदा हो जाते हैं जो अधिक बढ़ने पर नाक की अन्दर की झिल्ली को प्रभावित करके व्याधि का उग्ररूप धारण कर लेते हैं। जिसके कारण गला भी प्रभावित हो जाता है। खांसी व दमा तथा तपेदिक भी हो जाता है।

जिन लोगों की धातु क्षीण होती है उनमें रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होती है। इसलिए बार-बार जुकाम की शिकायत होती है।

जुकाम होने से पूर्व शरीर में सुस्ती-सी अनुभव होती है। रोम खड़े होते हैं, बार-बार छींक आती हैं, सिर भारी हो जाता है और कनपटियों में दर्द होता है, आंखों से पानी आना, भूख कम लगना तथा नाड़ी की गति थोड़ी तेज होती है।

वायु का प्रकोप अधिक होगा तो नत्थुनों में मल भरा रहता है और सांस लेने मे भी कष्ट होता है। सुर भी बढ़कर कनपटियों में दर्द होता है, गला बैठ जाता है। यदि पित्त का प्रभाव होगा तो प्यास अधिक लगती है, नाक से गर्म धुआं-सा निकलता है, नाक में पपड़ी-सी जम जाती है। कफ का प्रभाव अधिक होने पर सिर का भारीपन, गले में खुजली पैदा होना, गला बैठ जाना तथा मल खुश्क होकर रुकावट व भारीपन होता है। छोटे बच्चो में पसलियां चलने लगती हैं।

उपचार—जिन कारणों से जुकाम होता है वे नही करने चाहियें। जैसे अधिक सफर करना तेज हवा मे घूमना, ठण्डे जल से स्नान करना, नगे सिर घूमना, जुकाम से पीड़ित रोगी का तौलिया व रुमाल प्रयोग में लाना आदि कार्य जुकाम में नही करने चाहियें। सिर को ढक कर रखें तो अच्छा है। रात सोने के लिए है। अतः रात्रि जागरण करने से दोष कुपित होकर रोग पैदा करते है। जुकाम से पीड़ित रोगी को दिन में सोना व रात को बहुत देर तक जागना उचित नहीं है।

जिन लोगों को सदा ठण्डे पानी से स्नान करने व शुद्ध ठण्ठी हवा में नंगे सिर घूमने की आदत है उनको प्रायः जुकाम नहीं होता। रोगों का प्रभाव सदा ऐसे व्यक्तियों पर ही होता है जिनके दोष धातु और मल दूषित होते हैं तथा रोगप्रतिरोधक शक्ति अर्थात् Immnity कम होती है।

कई लोगों का मत है कि जुकाम होते ही कफ को रोकने वाली दवाई नहीं देनी चाहिए, इससे जुकाम बिगड़ जाता है। नाक मल को बाहर निकालना चाहिए। वायु की वृद्धि न हो ऐसे पदार्थ खाने चाहियें। एक-दो दिन गर्म पानी पीने को देवें, भोजन न करे तो अच्छा है।

कुछ नुस्खे :

बनफ्शादि क्वाथ—गुल बनफ्शा ४ ग्राम, गावजां ४ ग्राम, रेशाखत्मी ४ ग्राम, मुलहटी ४ ग्राम, अंजीर जर्द ३ दाने, लिसोड़ा ५ दाने, मुनक्कादाख ७ दाने, काली मिर्च ५ दाने, सबको २५० ग्राम पानी में मिलाकर पकावें, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान कर थोड़ी चीनी या खस-खस का सर्बत मिला कर रोगी को दिन में २-३ बार गर्म-गर्म पिलाने से २-३ दिन में सभी तरह का जुकाम ठीक हो जावेगा।

● सौंफ १० ग्राम, बिहिदाना ४ ग्राम, मुलहटी ४ ग्राम, नीलोफर के फूल ४ ग्राम इन सब का काढ़ा बना कर प्रातः सायं तीन दिन लेने से जुकाम ठीक हो जाता है।

● पिप्पली, सोंठ, कालीमिर्च, कुठ, बिल्व मूल प्रत्येक १ ग्राम लेवें, ४०० ग्राम पानी में काढ़ा बना कर चौथाई पानी रहने पर उतार कर छान कर दिन में २-३ बार ३ दिन पिलाने से जुकाम में लाभ होगा।

● सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, चीते की जड़, तालीस पत्र, अम्ल-बेतस, जीरा प्रत्येक १० ग्राम, छोटी इलायची, तेजपत्र इनका चूर्ण १ ग्राम सब को मिला कर कूट-छान कर रखें। इसकी १ ग्राम मात्रा प्रातः सायं गर्म पानी से लेने से जुकाम ठीक होता है।

कफकेतु रस—२-२ गोली गर्म पानी या शहद के साथ प्रयोग करने से सभी प्रकार के नजलों-जुकाम में लाभ होगा।

● बेसन को घी में भून कर उसमें अद्रक व कण्टकारी का क्वाथ छान कर चीनी व किसमिस डाल कर हलवा बना कर प्रातः सायं खाने से जुकाम अवश्य ठीक होगा। हलवा खाकर कुछ देर हवा में न निकलें।

● नासिका रुक जाने पर कोई नसवार जैसे कटफलादि नस्य सूंघने से लाभ होगा।

● व्याघ्री तैल, षड्बिन्दु तैल, कारवीरादि तेल नाक में २-३ बार १ बूंद डालने से पके हुए जुकाम में लाभ होगा। यदि झिल्ली पकी हुई हो तो उसमें इस दवा से बड़ा लाभ होगा।

आदि मानव कहां पैदा हुआ था ?

—विश्वनाथ प्रसाद, वि० वाचस्पति, कोरबा

यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया, और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया और उसने अपने किये हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया, क्योंकि उसने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।

आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृतान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया, तब मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और न मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा था, क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल नहीं बरसाया था, और भूमि पर खेती करने के लिए मनुष्य भी नहीं था, तो भी कुहरा पृथ्वी से उठता था जिससे सारी भूमि सिंच जाती थी और यहोवा परमेश्वर ने आदम (मनुष्य) को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और आदम जीवता प्राणी बन गया (उत्पत्ति २/१से७) परन्तु आदम के लिए कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके। तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसुली निकालकर, उसकी सन्ती मांस भर दिया, और यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया, और उसको आदम के पास ले गया और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है, सो इसका नाम नारी होगा क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।

(उत्पत्ति २।२० से २३)

आदम कब पैदा हुआ था ? इसका कोई उल्लेख बाईबिल में पढ़ने को नहीं मिलता और न यह ही ज्ञात हो पाता है कि विश्व के किस स्थान पर यहोवा ने उसको उत्पन्न किया था किन्तु विश्व का कल्याण करने के लिए विद्वानों ने इसकी खोज कर ही डाली —

धार्मिक सम्प्रदायों में से इस समय हिन्दू पारसी, यहूदी, बौद्ध, ईसाई और मुसलमान ही प्रधान हैं। शेष जितने मत मतान्तर हैं, सब इन्हीं की शाखा, प्रशाखा अथवा मिश्रण है। आर्यों और पारसियों के यहाँ सृष्टि काल वही माना जाता है, जो हमारे दैनिक संकल्प से सिद्ध होता है। १२००० दिव्य वर्षों का देवी समय पारसियों के यहां भी माना जाता है। यह सिवा आर्यों की चतुर्युगी के दूसरा कुछ भी नहीं है। आर्यों की १२००० दिव्य वर्षों की एक चतुर्युगी सर्वमान्य और जगत प्रसिद्ध है। बौद्धों के यहां भी माना जाता है। इस तरह से प्राचीन आर्यों का इस विषय में मतभेद नहीं है। अब यहूदी, ईसाई और मुसलमानों के मत से केवल एक ही समय शेष रह जाता है, जो बाईबिल के पुराने अहदनामे में इस प्रकार दिया हुआ है —

आदम से नोआ तक ११ पीढ़ी २२६२ वर्ष नोआ के पुत्र शेम से इबराहीम तक ११ पीढ़ी १३१० वर्ष।

———

योग ३५७२ वर्ष,

———

इबराहिम कब हुआ इसमें जरा सा मतभेद है। डाक्टर स्पीगल कहते हैं कि वह ई० सन् पूर्व १९०० में हुआ था। इनके अनुसार इबराहिम को हुए आज तक ३८९९ वर्ष होते हैं किन्तु अन्य विद्वान आदम का समय आज से ६९९३ वर्ष पूर्व बतलाते हैं। इस हिसाब से इबराहीम को हुए आज तक ३४२१ वर्ष होते हैं। दोनों का मध्य भाग यदि ३६०० वर्ष मान ले तो आदम को हुए आज तक (३५७२+३६००=७१७२) वर्ष होते हैं। बस संसार के ये धार्मिक सम्प्रदाय इससे आगे नहीं जाते।

आइये बाइबिल के आदम की उत्पत्ति के पहिले विश्व के इतिहास पर एक नजर डालें—

(१) करनल अल्काट साहब थियोसोफिकल सोसायटी के संस्थापकों में से एक के सुप्रसिद्ध अमेरिकन विद्वान का कथन है कि बाईबिल के लिखे जाने, यहूदी जाति की उत्पत्ति होने, बेबीलन नगर की आधार-शिला रखी जाने, मिश्र के मकबरों=समाधि स्थानों के बनने और मिश्र के सुविशाल स्तम्भों का निर्माण होने से पांच हजार, सात सौ वर्ष पूर्व, जिसको कि कोई-कोई ईसाई मतानुयाई विद्वान् सृष्टि की उत्पत्ति का समय बताते हैं, आर्य लोगों ने समाज और सभ्यता के विषय में बहुत अधिक उन्नति की थी। उन्होंने व्याकरण शास्त्र के ऐसे उत्तम नियम बनाए थे कि जिनके समान नियम कोई भी नहीं बना सका।

(देखो भारत के त्रिकाल दशा, पृष्ठ ७६ से ८१ तक सन् १८८३ ई० में प्रकाशित मद्रास संस्करण) (कुलियात आर्य मुसाफिर, पहला भाग)।

(२) महाभारत से २७०० वर्ष पूर्व का तात्पर्य है कि आजसे लगभग ८ सहस्र वर्ष पूर्व (यहूदियों के आदम की उत्पत्ति के समय)। सुश्रुत ग्रन्थ के सूत्र-स्थान में शल्य चिकित्सा के साधनभूत अवजारों का वर्णन है। ये अवजार बहुत ही परिष्कृत हैं क्योंकि इनसे शल्य क्रिया (Surgery) की जाया करती थी। ये कितने तीक्ष्ण अवजार थे इसका वर्णन करते हुए अपनी पुस्तक (Ancien and Mediaeval India) मेनिंग लिखती हैं 'कि' ये शल्य चिकित्सा के यन्त्र इतने तीक्ष्ण थे कि बाल को भी खड़े-खड़े फाड़ सकते थे। शल्यचिकित्सा के विषय में वेबर ने कहा है, "भारतीय शल्य चिकित्सा में विशेष दक्षता को प्राप्त थे। इस विषय में योरुपियन सर्जन अब भी उनसे कुछ सीख सकते हैं जैसा कि वस्तुतः इन्होंने पूर्ण ही कृत्रिम नाक और कृत्रिम कान बनाने की शल्य क्रिया का उधार लिया है। इसी प्रकार प्रसिद्ध इतिहासज्ञ एल्फिन्स्टन भी कहते हैं कि हिन्दुओं की शल्य चिकित्सा भी औषध चिकित्सा की ही तरह प्रशस्त थी। सर विलियम हण्टर ने भी ऐसे ही विचार प्रकट किये हैं—प्राचीन भारतीय डाक्टरों की शल्य चिकित्सा प्रबल

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आदि मानव

(पृष्ठ ७ का शेष)

और दक्षतापूर्ण थी। ज्वर, गर्भ, आन्त्र, भगन्दर, अर्श आदिकी चिकित्सा वे लोग शल्य क्रिया से करते थे। डाक्टर सलिका कथन है कि भारतीय हिन्दु पोस्ट-मार्टम और गर्भकी शल्यक्रिया आदि सभी करते थे। इन प्रमाणों से यह सिद्ध है कि सुश्रुत में जिन शल्य यन्त्रों का वर्णन है वे परिमार्जित थे।

(वैदिक युग और आदि मानव, लेखक आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री)

(१) आज मुतफासीर भाग १ पृष्ठ १४३ के अनुसार आदम की उत्पत्ति का विवरण इस प्रकारहै कि जब खुदाने उन्हेंपैदा करना चाहा तो जिब्रिलसे फरमाया कि विभिन्न की मिट्टी एकत्रित कर भूमि के नाभि स्थान (जहां अब काबा है) पर फरिश्तों को मिट्टी बनाने का आदेश दो और ४० दिनों तक वहां पर वर्षा करवाई। ३९ दिनो तक कष्ट और शोक की तथा ४०वें दिन हर्ष की वर्षा की। इसी कारण मनुष्य पर दुःख अधिक आया करते हैं और हर्ष कम प्राप्त होता है। फिर इस चिकनी और खनखनाती मिट्टी से खुदा ने मक्का व ताइफ के मध्य नैमान की घाटी में अपने हाथों की शक्ति से आदम की प्रतिमा निर्मित की। वह प्रतिमा ४० दिन तक उसी क्षेत्र में पड़ी रही। कभी-कभी इब्लीस भी उस प्रतिमा (पुतला) के पास आता था और पांव से ठोकर मारकर कहता था कि इस खोखली वस्तु में, जो भीतर से ठोस नहीं है खुदा जाने इसमें क्या हिकमत रखी जाएगी। कभी इस पुतले को बातें बनाने वाला घोषित कर कहता कि सड़े हुए कीचड़ के पुतले ! तू मात्र इस हेतु ही निर्मित नहीं किया गया अपितु तेरा खमीर (सद्भाव-प्रकृति) इस हेतु तैयार किया गया है कि कुछ और काम लेना अभिप्रेत है।

बगवी ने लिखा कि सईद बिन जुबैर ने इब्ने अब्बासका कथन उद्धृत किया है कि अल्लाह ने आदम को उत्पन्न किया।-एक मुट्ठी भूमि की मिट्टी ली, मीठी भी और नमकीन भी।

रसूलिल्लाह (मुहम्मद साहब) ने फरमाया कि अल्लाह ने सम्पूर्ण धरती से एक मुट्ठी मिट्टी ली और उससे आदम का निर्माण किया। इस. आदम की सन्तति भूमि के सदृश हुई लाल, सफेद और काली इत्यादि।

हजरत अबूमूसा बिन कास से रवायत का (कथन) है कि रसूलिल्लाह ने कहा कि आदम का कद इतना लम्बा था, जैसे खजूर का पुराना वृक्ष। सिर पर बड़े-बड़े बाल थे। बजाएबुल कसम में लिखा है कि आदम के कद की लम्बाई साठ गज और चौड़ाई सात गज थी। आदम का पुतला उक्त भूमि में ४० वर्षों तक पड़ा रहा। (कुरान परिचय)

कुरान का परिचय के लेखक पंडित देव प्रकाश लिखते हैं कि खुदा ने फरिश्तों से कहा—जब आदम में जीवन स्थिर हो जाये तो उसके लिए सजदा करो। इस बात से पाठकों को सन्देह (शक) होगा कि आदम को तो मक्का और ताइफ के मध्य बनाकर जीवित (उत्पन्न) किया और सजदा का कार्यक्रम आसमान पर हुआ, तो आदम पृथ्वी से आसमान पर कैसे पहुंच गया ? पृथ्वी से आसमान पर ले जाने हेतु खुदा ने फरिश्तों से कहा कि एक तख्त आदम के लिए बनाओ। उस तख्त के ३०० पाए थे। एक पाये से दूसरे पाये तक सैकड़ों वर्षों का मार्ग था। तख्त बनाया गया और आदम का श्रृंगार किया गया। स्वर्ण के रत्नादि उसके कानों में और स्वर्ण के दस्ताने उसके हाथों मे और अमूल्य अगूठियां उंगलियों मे डाल दी तथा नेकी की पोशाक(वेशभूषा)पहिना दी और मस्तक पर करामात (प्रतिष्ठा) का ताज पहनाया। फिर फरिश्ते उस सौभाग्यशाली तख्त को अपने कंधों पर उठाकर आसमान पर ले गये और वहां खुदा के सिंहासन (अर्श) के बराबर (फरिश्तों ने ले जाकर) रख दिया। फिर उस समय खुदा ने सजदा का कार्यक्रम सम्पन्न होने के पश्चात् फरिश्तों ने आदम को स्वर्ग के आभूषण पहिनाए और रत्न जड़ित मुकुट व लाल जवाहरातों से जड़ा कमरबन्द (करधना) पहना कर तख्त पर आरूढ़ कर दिया और सात-सात हजार फरिश्ते उस तख्त के दांए एवं बायें उठाने हेतु लग गये और सात हजार फरिश्ते आदम के प्रशंसा-गीत गाते हुए चले और फरिश्तों ने आदम के तख्त को ले जाकर स्वर्ग में रख दिया।

(बजाएबुल कसम पृ० ४०-४२)

हजरत इब्ने अब्बास और इब्ने मसऊद इत्यादि से वर्णित है कि जब खुदा ने शैतान को स्वर्ग से निष्कासित कर दिया और आदम को स्वर्ग में बिना सहयोगी और हितैषी के एकाकी रहे। उस समय खुदा ने उन पर निद्रा को निश्चित कर दिया और बांये ओर की एक कोख को चीरकर निकाल डाला और उस रिक्त स्थान को किंचित मांस से जोड़ दिया और उससे हव्वा को उत्पन्न किया। (आज मुतफासीर भाग १ पृष्ठ १४६) तफसीर इब्ने कसीर भाग १, पृष्ठ १० पर लिखा है कि जब वह निद्रा से जागृत हुए तो उस (हव्वा) से पूछा तू कौन है ? और क्यों उत्पन्न की गई है ? हजरत हव्वा ने कहा—मैं एक स्त्री हूं, और आप के साथ रहने तथा सन्तोष का कारण बनने हेतु उत्पन्न की गई हूं। फिर तत्काल फरिश्तों ने पूछा कि कहिए। इसका नाम क्या है ? आदम ने कहा—हव्वा। फरिश्तों ने कहा—यह नाम रखने के कारण क्या है ? तो आदम ने उत्तर दिया—यह एक जीवित (प्राणी)से उत्पन्न हुई है। (कुरान का परिचय)

(क्रमशः)

विशाल व्यायाम एवं ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

२० मई बुधवार से ३१ मई रविवार १९९२ तक

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में—आचार्य डा० देवव्रत जी, (प्रधान सचालक सार्व. आर्य वीरदल)के सरक्षण में तथा ब्र०राजसिंहआर्य की अध्यक्षता में महाशय चुन्नीलाल बालमन्दिर सेकेण्ड्री स्कूल एन ब्लाक हरिनगर नई दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है।

आर्य समाजो से निवेदन,

यदि आप चाहते हैं कि आर्य समाजों में नई पीढ़ी आवे तथा आर्यवीर दल की शाखा आरम्भ करें और आर्य समाज का भविष्य सुरक्षित रहे, तो कम से कम अपनी आर्य समाज से दो-दो युवक इस शिविर में अवश्य भेजें।

दिल्ली की आर्य जनता से निवेदन :

यदि आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान राम जैसी आदर्श, कृष्ण जैसी चतुर, चाणक्य जैसी नीतिज्ञ, राणाप्रताप व शिवा जैसी राष्ट्र रक्षक, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल जैसी बलिदानी दयानन्द जैसी ईश्वर भक्त, श्रद्धानन्द जैसी संस्कृति रक्षक बने तो अपने बच्चों को आवश्यक रूप से इस शिविर में भेजें।

सम्पर्क स्थान—

आर्य समाज मन्दिर बिरला लाइन्स—रात्रि ७ बजे से ९ बजे तक

ब्र० राजसिंह आर्य, ३६६ गली रोशन,

सिनेमा पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-७ — दूरभाष : २९१०३०४

ब्र० बृजेश मन्त्री त्रिनगर — दूरभाष : ७२१६१७३

ईश कुमार नारंग-बी-१६, आशा पार्क, निकट तिलक नगर

वीरेन्द्र कुमार आर्य, रानी बाग, — दूरभाष : ७१८७१८६

राकेश आर्य, लाजपत नगर — दूरभाष : ६८४६७७५

श्रीकान्त, आर्य समाज मालवीय नगर — दूरभाष : ६८६८८८६

उद्घाटन समारोह २१ मई प्रातः १० बजे, समापन समारोह ३१ मई प्रातः १० बजे।

विशेष आकर्षण : शिविरार्थियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन। समापन समारोह में अपनी-अपनी आर्य समाजों से बसे भर कर लावें और समारोह स्थल पर युवकों का उत्साह वर्धन करें। ऋषिलंगर का प्रबन्ध होगा।

अपील—१० दिन तक तीनों समय का भोजन व समापन पर ऋषि लंगर पूर्ण शुद्ध देशी घी का होगा। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक धन देकर पुण्य के भागी बनें। दान राशि आर्यवीर दल दिल्ली के नाम से भेजें, तथा आटा, दाल, चावल, घी आदि के रूप में भी दान दे सकते हैं।

निवेदक—

संचालक	संगठन मन्त्री	शिविर संयोजक
डा० ज्ञान प्रकाश	विनय सिंघल	रूप चन्द नागर

वनवासी क्षेत्रों में वैचारिक क्रान्ति

श्रीमती प्रेमलता खन्ना द्वारा शिविरों का आयोजन

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की उपमन्त्री श्रीमती प्रेमलताजी खन्ना ने आर्य समाज व संघ के अन्य कार्यकर्ताओं के साथ मध्य प्रदेश स्थित संघ के केन्द्रों और बालवाड़ियों का निरीक्षण किया और वनवासी क्षेत्रों में वैचारिक क्रान्ति लाने के लिए १०से १८अप्रैल तक एक शिविर का आयोजन थांदला में किया जिसमें ५०-६० बच्चों ने उत्साह पूर्वक भाग किया।

अब एक और प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज रानीबाग दिल्ली में १५ मई १९९२ से प्रारम्भ हो रहा है। इसमें वनवासी बच्चों के अतिरिक्त नेपाल के भी कुछ छात्र भाग लेंगे।

थांदला में आयोजित उक्त शिविर के समय उस क्षेत्र में संघ के कार्यों का विवरण निम्न प्रकार है। —संपादक

स्वतन्त्रता प्राप्ति के लगभग ४५ वर्षों के बाद भी भारत मे ऐसे क्षेत्रों की कमी नहीं है, जो आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिणिक दृष्टि से बहुत पिछड़े हुए न हो। इसी कारण ये लोग अपना वास्तविक स्वरूप और अपनी संस्कृति की पहचान तक भी भूल चुके हैं। ईसाई मिशनरियों ने इस बात का लाभ उठाकर तथा इन लोगोंको आर्थिक व अन्य प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करने का एक आसान तरीका प्रचलित किया था, जो कि अब दिन प्रतिदिन अपनी पकड़ मजबूत करता जारहा हैं। आज उत्तर पूर्वभारत उड़ीसा, बिहार का छोटा नागपुर क्षेत्र, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के वनवासी क्षेत्रो मे ईसाई मिशनरियों का जाल फैला हुआ है और सेवा के नाम पर भारतकी एकताको खण्डित करने की यह बहुत पुरानी चाल है, जिसमें उन्हें बिना रोक टोक सफलता मिलती रही है।

जाति के ऊपर हो रहे इस अत्याचार को रोकने और जनजागृति पैदा करने के लिए आजतक किसी भी स्वयसेवी संस्था ने आगे आकर समस्या के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझा है। लेकिन २२ वर्ष पूर्व आर्य समाज ने इस षडयन्त्र से पूरे देश को अवगत कराया था और सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्र में अराष्ट्रीय तत्वों से देशवासियो को सावधान रहने की प्रेरणा की थी। यहां तक ही नहीं—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मूर्धन्य नेता और महामन्त्री स्व० ओमप्रकाश त्यागी ने लोकसभा में धर्म परिवर्तन पर रोक विषयक एक विधेयक भी प्रस्तुत किया था। परन्तु दुर्भाग्य से यह बिल पारित न हो सका था।

धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त पर चल रही केन्द्र सरकार से कोई आशा करना व्यर्थ जानकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्णधारों ने १९६८ में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नामक संस्था को जन्म दिया था। इस समय—दयानन्द सेवाश्रम संघ विगत २४ वर्षों से आसाम, नागालैंड, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान आदि में कई पिछड़े क्षेत्रों में कार्य कर रहा है।

वस्तुत: किसी कार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि कार्य करने वाला अपने उत्तरदायित्व को किस सीमा तक समझता है और निभाने का सामर्थ्य रखता है। दयानन्द सेवाश्रम संघ के भूतपूर्व महामन्त्री स्व० श्री पृथ्वीराज जी खन्ना शास्त्री अपनी धर्मपत्नी श्रीमती माता प्रेमलता खन्ना (वर्तमान मन्त्रिणी दयानन्द सेवाश्रम संघ) के सक्रिय सहयोग से इस कार्य की एक मजबूत नींव रख कर गए हैं। वास्तव में स्व० शास्त्री जी और पूज्य माता श्रीमती प्रेमलता खन्ना जी का यह स्वप्न रहता है कि वे अखण्ड भारतवर्ष को आर्य समाज की विचारधारा से ओतप्रोत देखें।

शास्त्री जी के निधन के पश्चात् विषम परिस्थितियों के बावजूद भी माता जी ने अपने अदम्य साहस को कहीं ठेस न लगने दी और शास्त्री जी के प्रारम्भ किए हुए कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प किया। स्व० शास्त्रीजी द्वारा संचालित सभी आश्रम और बालवाड़ियो की निरन्तर प्रगति के लिए माता जी ने शीघ्र कार्यक्रम बनाये तथा आदिवासी क्षेत्रो का व्यक्तिगत दौरा प्रारम्भ कर दिया। मध्य प्रदेश में रतलाम से लगभग ९० किलोमीटर दूर थांदला एक तहसील है जिसमें दयानन्द सेवाश्रम संघ का मुख्य केन्द्र स्थापित किया गया था, जिसके संचालक श्री रामकृष्ण बजाज तथा श्री परमानन्द है, जो क्रान्तिकारी विचारधारा के आर्य समाजी हैं और उस क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। इस केन्द्र के अन्तर्गत ५ आश्रम तथा २० बालवाड़ियों को स्थापित किया गया है। प्रतिवर्ष लगभग ३०-४० वनवासी नवयुवको का एक शिविर आयोजित किया जाता है, जिसमें सामाजिक और धार्मिक शिक्षा दी जाती है। इस वर्ष भी १५ मई से इसी प्रकार का एक शिविर रानीबाग आर्य समाज में आयोजित किया जायेगा जिसमें मध्य प्रदेश के भील, उड़ीसा के आदिवासी और नेपाल के कुछ छात्र भाग लेंगे। इन शिविरों का आयोजन गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी माता जी की देखरेख में किया जायगा। इनका समझाने का ढंग इतना सरल व स्वाभाविक होता है कि आदिवासी छात्र सहजता से इनकी विचारधारा समझ पाते है।

माता जी ने १० अप्रैल से १८ अप्रैल तक मध्य प्रदेश के इन्हीं क्षेत्रों में दौरा करने का कार्यक्रम बनाया था। स्व० शास्त्री जी की अनुपस्थिति में पू० माताजी का यह प्रथम दौरा था। हम दोनो को माताजी का अकेला जाना अच्छा नहीं लगा। प्रेरणा तो पहले से मिलती ही रहती थी, परन्तु इस बार हम भी जाने को प्रेरित हुए। ९ अप्रैल को माता जी श्री देव रत्न जी आर्य के साथ थांदला के लिए रवाना हुए। माता जी ने बताया कि १० अप्रैल से १४ अप्रैल तक आश्रम तथा बालवाड़ियो के शिक्षको का शिविर आयोजित किया गया था और इस शिविर मे प्रतिदिन ६ घण्टे तक शिक्षकों को वैचारिक क्रान्ति-सन्ध्या एव यज्ञ के अर्थ सम्बन्धी प्रशिक्षण भी दिया गया।

१४ से १८ अप्रैल तक हम दोनो उपमन्त्रियों (वीरेन्द्र सैनी तथा कुलभूषण कुकरेजा) को माता जी व श्री देवरत्न वानप्रस्थी जी के साथ बालवाड़ियों व आश्रमों का निरीक्षण करना था। इस कार्य में वहां के संचालक श्री परमानन्द जी व श्री रामलालजी आचार्य भी हमारे साथ थे। विभिन्न बालवाड़ियाँ, आश्रम से विभिन्न दिशाओं में मीलों दूर ऊबड़-खाबड़ कच्चे रास्तो से जाकर ही दीखती है। इन बालवाड़ियों में पहुंचना ही अपने आप मे चुनौती है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वतीजी का आशीर्वाद और प्रेरणा के शब्द हो जैसे मन्द पड़ते दीपक को घृत पुन: प्रज्वलित कर देता है, उसी प्रकार उनका आशीर्वाद संघ के कार्य शक्ति को बढ़ा देता है। माता जी ने हमें बताया कि थांदला में हर्षवर्धन फर्टीलाइजर्स एवं कैमिकल्स उद्योग के मालिक श्री राठौर जी एक कर्मठ आर्य समाजी हैं और समय समय पर अपनी एक जीप आश्रम के प्रचारादि के कार्य के लिए देते हैं। जिनकी विशेष कृपा से हमे इस बार भी बालवाड़ियों व आश्रमके निरीक्षण के लिए एक जीप प्राप्त हुयी। उनके इस सहयोग से हम सभी बालवाड़ियो का निरीक्षण करने में सफल रहे।

चार दिनों मे हमने लगभग सभी जगह जाकर आश्रम तथा बालवाड़ियों को देखा। एक बालवाड़ी और एक आश्रम की स्थापना की। बालवाड़ी की स्थापना आर्य समाज रानीबाग मे प्रशिक्षित नवयुवक छात्र अमरसिंह के ग्राम नरसिंहपुर में पुनीत बालवाड़ी के नाम से तथा गुलाबसिंह व रवि के ग्राम मे सुनीता भवन आश्रम की स्थापना की। इन ग्रामो मे बहुत ही उत्साह था और ग्रामवासियों ने यज्ञ को उत्सव का रूप दिया और यज्ञ के पश्चात् माता जी के प्रवचन मे नीति सम्बन्धी विचार सुन ग्राम तथा आस-पास के ग्रामो से आये लोगो ने दुर्व्यसनों जैसे शराब, बीड़ी आदि त्यागने की प्रतिज्ञा की। इस ग्राम में इस अभूतपूर्व सफलता व लोगों को एकत्र करने में रवि व गुलाबसिंह का अच्छा योगदान रहा।

इसी दिन सायंकाल हर्ष वर्धन कैमिकल्स के प्रबन्धक व लायन्स क्लब के अध्यक्ष श्री चौहान की अध्यक्षता में एक समारोह (थांदला) में आर्य वीर दल की स्थापना, ध्वजारोहण व शपथ समारोह के साथ की गई। समारोह में थांदला तथा आस-पास के क्षेत्रों के नवयुवकों ने भाग लिया।

वापसी में हमने कुण्डा आश्रम (इसका निर्माण माता जी की देखरेख में हुआ था) तथा सरवन आश्रमों का दौरा किया। पिछले ३ वर्षों से इन आश्रमों का संचालन दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा चलाया जाता था, परन्तु यह हर्ष का विषय है कि अब इन दोनों आश्रमों को सरकार द्वारा आर्थिक सहायता मिलनी आरम्भ हो गई है।

इस बार तथा पहले के कार्यक्रमों से यह सिद्ध होता है कि किस प्रकार मनुष्य इच्छा शक्ति के बल पर साधनों के अभाव में भी विपरीत परिस्थितियों में कार्य कर सकता है। इसका ज्वलन्त उदाहरण माता जी का साहस तथा आर्य समाज की क्रान्तिकारी विचारधारा है।

पुस्तक समीक्षा

आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन "व्यक्तित्व और कृतित्व"

(रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की 'पी, एच डी.' उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध")

लेखिका—डा० आशा अग्रवाल

प्रकाशक—पुस्तकायन—२/४२४० ए

अन्सारी रोड नई दिल्ली-२

मूल्य—दो सौ रुपए

शोधकर्त्री डा० आशा अग्रवाल ने आचार्य क्षेमचन्द्रसुमन के व्यक्तित्व एव कृतित्व" नामक शोध प्रबन्ध मे जीवन के विविध पक्षो को प्रकाश मे लाने के साथ कृतित्व के भी कई आयामो पर भी प्रकाश डाला है। जिनसे हिन्दी जगत अभी तक परिचित नही था।

आचार्य श्री डा० विजेन्द्र स्नातक के शब्दो मे श्री सुमन जी ने क्या-क्या भोगा और सहा यह तो आप इस शोध प्रबन्ध को पढ़कर ही जान सकेंगे। वैसे सुदीर्घ काल से आचार्य सुमन जी के उभरते व्यक्तित्व को तथा जीवनीय कृतित्व को भली भांति अतिनिकट से देखा व समझा है।

हिन्दी के साहित्यकारो-पत्रकारों मे आपका प्रतिष्ठापूर्ण विशिष्ट स्थान है इस प्रकार के विभिन्न पक्षो को उजागर करने वाली शोधात्म कृति की चिरकाल से आवश्यकता अनुभव की जा रही थी।

डा० आशा अग्रवाल जी का 'रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय से स्वीकृत शोध प्रबन्ध इस अभाव की पूर्ति करता है जिसके आधार पर यह ग्रन्थ लिखा गया है। आपका जीवन दर्शन स्वावलम्बन और पुरुषार्थ पर आश्रित है।

वह अपनी बुद्धि और भुजबल पर ही कार्य को पूर्ण विराम देते हैं। सुमन जी इन आजीवन विघ्नो की विशाल पर्वत मालाओ को पारकर गौरव के शिखर पर पहुचेहैं। चार की चार दिवारी व गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की चार दीवारी मे आचार्य शुद्धबोध तीर्थ प० नरदेव शास्त्री जैसे तपस्वियो की समीपता में तपकर कुन्दन बनकर उपाधियो की चकाचौंध से हटकर आचार्यों के आशीर्वचनो की उपाधि लेकर जो चलें तो जीवन मे कर्त्तव्य कर्म की शक्ति और ज्ञान के अर्जन मे अध्यापन व सम्पादन की ही धाराओं में बहने का श्रेय और प्रेय पाया।

आचार्य सुमन—

काव्याम्भोधिमणि सुकर्मप्रवण: पद्मश्रिया भूषित: ।
हिन्दी रक्षण तत्पर सरलता सद्भाव शुभाऽन्वित ।
ज्ञानेनात्म गुणोदय प्रकटयन् काव्येऽनघे पटु ।
स्वीया कीर्तिलति तनोतु भुवने श्री क्षेमचन्द्रो बुध ॥

सुमन जी की साहित्यिक परिस्थितिया, साहित्यिक-व्यक्तित्व-निबन्ध लेखक पत्रकार, दिवगत साहित्य सेवी, सन्दर्भ ग्रन्थ का प्रणयन सहज-कृति व्यक्तित्व तथा हिन्दी साहित्य को उनके बहुमूल्य प्रदेय का एक कालजयी दस्तावेज है।

श्रीमती डा० अग्रवाल ने ऐसा प्रतीत होता है कि सुमन जी को अति निकट से देखा व परखा हो। लेखनी चिरपरिचित व जीवनीय है। जो कि सुमन जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का विश्लेषण-प्राञ्जल भाषा में सहज शैली मे सुमन जी का सुमन पाठको को सहज ही आकर्षित कर लेता है।

यह शोध परक कार्य अपनी विषयवस्तु विवेचन पटुता को अति विशिष्ट पद्धति पर निर्धारित किया है।

इस प्रकार गौरव को प्राप्त करने वाले श्री क्षेमचन्द्र जी को समझने हेतु इस ग्रन्थ को पढ़कर अपना सुमन बनायेंगे।

व्यक्तित्व कृतित्व के धनी श्री सुमन जी पर और भी अनुशीलन होना चाहिए।

साहित्यार्णव मनमथोत्थमखिल पीयूषमास्वादयन् ।

साहित्य समुद्र के मन्थन से प्राप्त अमृत पान करने वाले विद्वद्वर्य श्री क्षेमचन्द्र सुमन पर शोध करने पर डा० आशा अग्रवाल को अनेकश बधाई जिन्होंने इस व्यक्तित्व पर कार्य कर अपना गौरव बढ़ाया है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

चरखी दादरी में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

१५ मई से १७ मई १९९२ तक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे चरखी दादरी जिला भिवानी मे १५ से १७ मई ९२ तक पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में अति हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागो से आर्य जन भारी संख्या में भाग ले रहे है। लुहारू राजस्थान से होते हुए पांच हजार पदयात्री इस सम्मेलन मे भाग लेने के लिए चरखी दादरी पहुंच रहे हैं। देश भर के गुरुकुलो से लगभग दो हजार विद्यार्थी तथा कोटा से पचास साइकिल सवारो का एक जत्था इस सम्मेलन मे सम्मलित हो रहा है।

इस विराट समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द, स्वामी विद्यानन्द स्वामी धर्मानन्द गुरुकुल आमूसेना डा० देवव्रत आचार्य तथा स्वामी सुमेधानन्द सहित आर्य जगत के उच्चकोटि के सन्यासी तथा वक्ता पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह उप राष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा, श्री धनिकलाल मण्डल तथा श्री वीरेन्द्र वर्मा राज्यपाल हिमाचल प्रदेश के अतिरिक्त अनेको राजनेता भी पधार रहे हैं।

इस समारोह मे वेद सम्मेलन, स्वदेशी सम्मेलन नशाबन्दी सम्मेलन तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अतिरिक्त अन्य अनेको सम्मलनो का आयोजन किया गया है। ११ से १७ मई तक प्रतिदिन प्रातःकाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न होगा। इस अवसर पर १६ मई को एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन भी किया गया है।

माता मीरायति का सम्मान

अध्यक्ष आर्य सभा विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर के सौजन्य से प्रति वर्ष महान कर्मठ समाज सेवी एवं वैदिक प्रचार के लिए समर्पित व्यक्तियों को आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के माध्यम से सम्मानित किया जाता है।

इस वर्ष भी इसी परम्परा का पालन करते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय ने १९९१ वर्ष के इस पुरस्कार से आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) की सन्यासिनी माता मीरायति जी का सम्मानित किया गया है।

मीरा माता जी ने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे लेखनी और वाणी से लगाया है। वह आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर कार्य क्षेत्र मे उतर पडी थी। उनकी लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। वह पूरे भारत वर्ष मे ही नहीं विदेशों मे भी पहुंच चुकी है जिसमे नेपाल अमरीका, केनेडा सिंगापुर इत्यादि वहां से पारितोषिक रूप मे कई बार डालर के रूप में धन भी आता रहता है।

इनकी दीर्घायु की कामना करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने गम शाल उनके कन्धो पर डाल-कर सम्मान किया। गुरुकुल के कुलपति श्री सुभाष जी विद्यालंकार ने मान एवं प्रशस्ति पत्र पढ़ा और कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने महत्वपूर्ण समा-रोह मे २१०० रुपये की धन राशि से सम्मानित किया। दिल्ली आर्य प्रति-निधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी यशस्वी मन्त्री डा० धर्मपाल जी ने माता जी के प्रति बहुत आदर और स्नेह के भाव प्रदर्शित किए। —प्रधान

पर्वतीय क्षेत्रो मे वेद प्रचार

तह० उखीमठ के निकट कोट माहेश्वरी में २० से ३० मार्च तक वैदिक प्रचार हेतु नवर सिंह राणा के प्रयासो से शिविर लगाया गया जिसमे श्री नवरसिंह जी ने अपने ओजस्वी प्रवचनों के द्वारा क्षेत्रीय निवासियो पर गहरा प्रभाव छोडा है उनके प्रयत्नों से उस क्षेत्र में पशुबलि के विरुद्ध भावना बननी प्रारम्भ हो रही है। ४ से ११ अप्रैल तक इसी प्रकार का एक शिविर कालीमठ में भी लगाया गया है।

विद्यार्थियों को चरित्रवान बनाने की आवश्यकता : रामलाल राही

सी० आर० पब्लिक स्कूल, टी० ब्लाक, सुखीराम पार्क उत्तम नगर नई दिल्ली ५९ का उद्घाटन आज १९-४-९२ को केन्द्रीय गृह उपमन्त्री श्री रामलाल राही के द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह मे बोलते हुए श्री राही ने कहा कि आज अच्छे विद्यालयो की आवश्यकता है जहा प्रारम्भ से ही बच्चो को चरित्र की विशेष शिक्षा देकर चरित्रवान बनाया जा सके तथा उन्हें प्राचीन भारतीय संस्कृति के बारे में पूर्ण जानकारी दी जानी चाहिए। इस समारोह मे अनेकों गणमान्य व्यक्तियो ने विद्यालय की विशेषताओ को बताकर इसे एक अच्छे स्कूल की संज्ञा दी।

—अशोक कुमार वैदिक प्रवक्ता

स्वामी त्यागानन्द सरस्वती जन्मशती समारोह सम्पन्न

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद का ६४ वा वार्षिकोत्सव तथा स्वामी त्यागानन्द जी सरस्वती जन्मशती समारोह २७ से ३० अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की अध्यक्षता में विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए। समारोह म अनेको गणमान्य व्यक्ति तथा वैदिक विद्वानो ने अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ का भी आयोजन किया गया।

श्री देवेन्द्र कुमार आर्य दुर्घटनाग्रस्त

श्री देवेन्द्र कुमार आर्य प्रबन्धक हवन सामग्री भण्डार ६३१/३९ ओंकार नगर सी-त्रिनगर दिल्ली-३५ का दिनांक ३१ मार्च १९९२ को शाम के समय एक दुर्घटना में सीधा हाथ घायल हो गया। आप्रेशन व प्लास्टिक सर्जरी द्वारा हाथ की हड्डी को कंधे से जोड दिया जाएगा।

उनके पास अनेक समाजो के पत्र (आर्डर) हवन सामिग्री के सम्बन्ध मे मिले है उसे वह पूरा कर रहे हैं तथा वैकल्पिक व्यवस्था भी की गयी है। उनके अस्वस्थ होने के कारण यदि कुछ विलम्ब होता है तो उसका हमे खेद है। प्रबन्धक, हवन सामग्री भण्डार

आर्य समाज मंगलौर के निर्वाचित पदाधिकारी

प्रधान श्री टी वी राव उपप्रधान श्री के कृष्णाकामथ, मन्त्री श्री पी एस कामथ उपमन्त्री श्री पूवप्पा, कोषाध्यक्ष श्री के भवानी शंकर, लेखा निरीक्षक श्री टी० रामचन्द्र। इनके अतिरिक्त ९ अन्तरंग सदस्य भी चुने गए।

आर्य समाज की वार्षिक रिपोर्ट मे कहा गया है कि गत वर्ष मे ९ शुद्धि संस्कार कराए गये है, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा का समस्त सहयोग के लिए धन्यवाद भी किया गया।

ओ३म् ध्वज साम्प्रदायिक नहीं

(पृष्ठ १ का शेष)

श्री गजेन्द्र गडकर ने अपने निर्णय मे कहा कि ओ३म् तो परमात्मा का नाम है। अत यह ध्वज भी परमात्मा की सर्वव्यापक सत्ता का ही प्रतीक है इसे किसी देश या काल तक सीमित करना उचित नही है।

इस समारोह के उपरान्त स्वामी जी ने आर्यसमाज अशोक विहार की नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन किया। इस उद्घाटन अवसर पर यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ की अग्नि मे जलते हुए घी और जडी बूटियो की सुगन्ध कई गुना बढकर सैकडो प्राणियो को शुद्ध वायु उपलब्ध कराती है। स्वामी जी ने कहा कि आज विश्व के बडे बडे वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करने लगे हैं कि गाय के घी को अग्नि मे जलाने से उत्पन्न गैसो से पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने मे सहायता मिल सकती है। प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१-५-१९९२) बि टिकट भेजने का लाइसेंस नं० ९१
R.N. 686/57 Licensed to post without Prepayment Licence No. U 93 Post I P.S.O.en 30, 1-5 1992

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान शिशुपाल रामभरोस का सम्मान

२९ मार्च १९९२ को दुर्ग स्थित दयानन्द परिसर में श्री शिशुपाल रामभरोस, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का भव्य स्वागत समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा म०प्र० व विदर्भ द्वारा सयोजित किया गया। इस अवसर पर सैकड़ो गणमान्य नागरिक तथा स्थानीय आर्यबन्धु उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता श्री रमेशचन्द्र सभा प्रधान ने की। विद्यालय की छात्राओं के स्वागत गीत के पश्चात माननीय अतिथि महोदय का सभा से सम्बद्ध महानुभावों द्वारा पुष्प मालाओं से स्वागत किया गया। अपने उद्बोधन मे श्री शिशुपाल रामभरोस ने दक्षिण अफ्रीका की परिस्थितियो पर प्रकाश डालते हुए वहा पर आर्य समाज की गतिविधियो की विस्तृत जानकारी दी। स्वागत समारोह का सचालन श्री गुलाब सिह बसल ने किया।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का २१ वा वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक गत ३, ४, ५ अप्रैल को सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर "पाणिनि मन्दिरम" का शिलान्यास तप पूत पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दयानन्द मठ दीनानगर श्री गजानन्द जी आर्य मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर श्रीमती ईश्वरी देवी जी आर्या पटना, श्रीमती रेशमा कपूर वाराणसी द्वारा सम्पन्न हुआ जो इस महोत्सव की एक उपलब्धि रही।

कार्यक्रमान्तर्गत तीनों दिन विभिन्न यजमानत्व मे वैदिक अग्निहोत्र तदुपरान्त सुश्री नन्दिता शास्त्री के निर्देशन मे मधुर भजन हुए। महाविद्यालय की छात्राओ द्वारा सस्कृत व्याख्यान सस्वर वेदपाठ, अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, अन्त्याक्षरी, सत्यार्थ प्रकाश-प्रश्नोत्तरी, सस्कृतगीत, लघुनाटिका भोजपुरी गीत व्यायाम एव शौर्य प्रदर्शन आदि के मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किए महत्वपूर्ण गये।

समारोह मे महाविद्यालय की छात्राओ द्वारा प्रस्तुत 'सृष्टि का प्रथम नास्ता" (आचार्या प्रज्ञादेवी जी द्वारा लिखित) नामक अद्भुत नाटिका तथा "ऐसी उपवन मे आंधी चली कि हम कहा से कहा आ गए हैं' शीर्षक की कव्वालि (कव्वाली) से श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। इन तीनो दिवसो मे हुए गीतो मे 'शिक्षा दयानन्द स्वामी के जिन बिसरावा हे सखी" यह भोजपुरी गीत सर्वाधिक पुरस्कृत हुआ जब कि सस्कृत गीत ,"पुराण पापनाशकम , श्रुतेर्सतप्रकाशकम स्वधर्मकर्ममण्डितञ्च वेदशास्त्रपण्डितम" की अपनी पृथक् विशेषता रही।

अन्त मे श्री ओमप्रकाश जी झवर के धन्यवाद आचार्या डा० प्रज्ञादेवी जी के आभार ज्ञापन एव शान्तिपाठ शखध्वनि के पश्चात इस त्रिदिवसीय महोत्सव का समापन हुआ। —प्रियम्वदा शास्त्रिकी स्नातिका

श्री कृष्णचन्द्र नरूला का स्वर्गवास

सार्वदेशिक सभा के विक्रय विभाग के प्रबन्ध श्री चन्द्रप्रकाश जी के बड़े भ्राता श्री कृष्णचन्द्र नरूला का २०-४-९२ को भिवानी मे स्वर्गवास हो गया। वे आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। उनकी शवयात्रा मे भिवानी के निवासियो ने बड़ी सख्या मे भाग लिया। शान्ति यज्ञ मे आर्य समाज के इस कार्यकर्ता को अनेको गणमान्य व्यक्तियो तथा सस्थाओं के प्रतिनिधियो ने श्रद्धांजलि अर्पित की। —मन्त्री, आर्य समाज कृष्णा कालोनी, भिवानी

स्वास्थ्य सुधार

आर्य वीर दलो आर्य समाज के प्रमुख अधिकारियो और आर्य जगत को यह जानकर हर्ष होगा कि लम्बी रुग्णावस्था से गुजर कर श्री पंडित बालदिवाकर हस रक्षासचिव सार्वदेशिक आर्य वीर दल का स्वास्थ्य उन्नति की ओर अग्रसर है।

ईश्वर कृपा से शीघ्र ही वे कर्मक्षेत्र मे उतर आर्यवीर दल को अपना नेतृत्व सदा की भांति देंगे यह प्रभु से प्रार्थना है।

हरद) (स्व०
डा० जय ० पूर्णदेव
जी एम बी. बी. एस. की धर्मपत्नी श्रीमती गिरजा सक्सेना एम ए एल टी भूतपूर्व प्रिन्सिपल बेनीमाधव कन्या इण्टर कालिज हरदोई का हृदयगति रुक जाने से कुछ मास पूर्व देहावसान हो गया।

वैसे ससार की गति विलक्षण है कुछ समझ मे नहीं आता ऐसी "गहना कर्मणो गतिः" के अनुसार जीवनीय क्षण कब समाप्ति पर होंगे। समझ से परे है।

श्रीमती गिरजा सक्सेना अब दिवगत व भूतपूर्व हो गई है जो भी उनके सम्पर्क मे आया होगा वह सदा सर्वदा उन्हे स्मरण करेगा।

स्वभाव से मृदु प्रसन्न वदन, शुद्ध आर्य परिवार दैनिक पचयज्ञो से पूर्ण पुत्र-पौत्रो से भरा परिवार छोड़कर असार ससार से अति दूर चली गई।

मैं सदा ही हरदोई जाने पर घर-परिवार से मिलने अवश्य जाता था किन्तु इधर एक दो बार जाने पर अल्प समय के कारण मिलने न जा सका। जिज्ञासा वश आर्य परिवार के श्री लाल जी गोपाल जी टडन से चर्चा होने पर ज्ञात हुआ कि श्रीमती गिरजा जी स्वर्गवासी हो गई मैं हतप्रभ रह गया। मेरी स्थिति विचित्र बन गई क्योकि मैं भी एकाकी जीवन का पक्षी और आज डा० पूर्णदेव जी व सारा परिवार मेरे जैसा हो गया। प्रभू की दया का पात्र।

अब केवल एक ही आशय, हमे प्रभु उनके वियोग स्थिति मे सहनीय शक्ति दे और दिवगत आत्मा को सद्‌गति मिले—इस विश्वास के साथ-- मान्यवर डाक्टर साहब मैं तथा परिचित आर्य जगत आपके दुःख में भागीदार— —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सुल्तानपुर (हरिद्वार) में वेदप्रचार की धूम

आर्यसमाज सुल्तानपुर जिला हरिद्वार का वार्षिकोत्सव दिनांक २२, २३, २४ मार्च को बड़ी धूम-धाम से मनाया गया जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी महाशय लिखीराम आर्य ने की तथा सयोजन श्री धर्मवीर आर्य ने किया। तीनो दिन देवयज्ञ किया गया।

इस सम्मेलन के अवसर पर वेद सम्मेलन, गऊ रक्षा सम्मेलन मद्यनिषेध सम्मेलन व दहेज विरोधी सम्मेलन रखे गए।

इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई जिसका जनता ने भारी स्वागत किया।

इस सम्मेलन को श्रीमती विद्यावती आर्या, श्री सत्यव्रत राजेश वेदालकार, महाशय रणजीत आर्य तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक प० नन्दलाल निर्भय ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद ने सम्बोधित किया।

यज्ञ के उपरान्त कई युवको ने धूम्रपान व शराब छोड़ने का व्रत लिया। इस कार्यक्रम की सर्वत्र प्रशसा की जा रही है।

—नाथी राम आर्य, मन्त्री
आर्य समाज सुल्तानपुर जिला हरिद्वार (उ० प्र०)

आर्यवीर दल की शाखा का शुभारम्भ

भारतीय नव वर्ष एव आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य मे आर्य समाज आदर्शनगर की ओर से आर्यवीर दल की स्थापना की गई। शाखा लगने से पूर्व सर्वप्रथम आर्यसमाज आदर्शनगर के पुरोहित श्री विष्णुमित्र आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया उसके पश्चात श्री राकेश आर्य शिक्षक ने शाखा का कार्यक्रम करवाया। कार्यक्रम काफी सफल रहा। श्री विष्णुमित्र श्री बालकृष्ण आर्य श्री मानकचन्द आर्य प्रचार अधिष्ठाता जी का विशेष सहयोग रहा।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- हमने लोगों के कठोर हृदयों को कोमल बनाना है। दूर भागतों को आकर्षित करना है। यदि वे अत्याचार भी करें तो अपने उदात्त उद्देश्य को दृष्टि में रखकर हमें तो उनसे प्रेम ही करना चाहिए। धर्म के नाम से बदला लेने की भावना सर्वथा अभद्र है।
- मैं वेद को ही सर्वोपरि मानता हूं। वेद ही ऐसी पुस्तक है कि जिसके झण्डे तले सब आर्य आ सकते है। इसलिए जो मनुष्य कह दे कि मैं वेदों को मानता हूं और आर्य हूं उसे आर्यसमाज में सम्मिलित कर लो। ऐसे विश्वासी को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक १५] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२ वैशाख शु० ८ सं० २०४८ १० मई १९९२

गुरुकुल अयोध्या के कुलपति, संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान–

पंडित वसुमित्र शास्त्री का संन्यास आश्रम में प्रवेश

स्वामी तत्वबोधानन्द सरस्वती द्वारा आजीवन वैदिक धर्म की सेवा का संकल्प

अयोध्या २८ अप्रैल।

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के कुलपति श्री वसुमित्र शास्त्री ने आज विधिवत् पं० नेत्रपाल शास्त्री के पौरोहित्य में गुरुकुल अयोध्या की भव्य यज्ञशाला में संन्यास आश्रम में प्रवेश किया। संन्यास आश्रम की दीक्षा उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को गुरु मानते हुए ली। स्वामी जी द्वारा श्री वसुमित्र जी को संन्यास आश्रम के काषाय वस्त्र तथा नया नाम स्वामी तत्वबोधानन्द सरस्वती दिया गया। स्वामी जी द्वारा काषाय वस्त्र प्रदान करने पर उपस्थित जन समूह ने हर्षोल्लास के साथ वैदिक धर्म तथा महर्षि की जय-जयकार से वातावरण गुंजायमान कर दिया।

स्वामी तत्वबोधानन्द जी संस्कृत भाषा तथा वेदों के प्रकाण्ड विद्वान तथा उच्चकोटि के संगीतज्ञ भी हैं। उल्लेखनीय है कि स्वामी जी इसी गुरुकुल अयोध्या के संस्थापक स्वामी त्यागानन्द जी के सुपुत्र हैं जिनके त्याग और तपस्या के कारण ही आज यह गुरुकुल दिनों दिन उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है। स्वामी तत्वबोधानन्द जी ने भी अपना सम्पूर्ण जीवन इसी गुरुकुल तथा आर्य समाज की सेवा में लगाया है।

इस दीक्षा समारोह में आशीर्वाद देते हुए सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि स्वामी तत्वबोधानन्द सरस्वती सरीखे धारा प्रवाह संस्कृत बोलने वाले विद्वानों के संन्यास आश्रम में प्रवेश से आर्य समाज को एक नई शक्ति प्राप्त होगी। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी तत्व बोधानन्द जी यदि दक्षिण भारत के विभिन्न प्रान्तों का दौरा करें तो सार्वदेशिक सभा उनके लिए इस प्रचार यात्रा का आयोजन करेगी।

स्वामी तत्व बोधानन्द जी ने संन्यास आश्रम में प्रवेश के बाद अपने पहले भाषण मे यह संकल्प लिया कि मैं सम्पूर्ण जीवन अथक प्रयासों से आर्य समाज की सेवा करता रहूंगा। उन्होंने कहा कि स्वामी आनन्दबोध जी जो कार्य मेरी जिम्मेदारी पर मुझे सौंपेंगे उसे मैं आज्ञा मानते हुए सम्पन्न करूंगा।

इस अवसर पर सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली के तत्वावधान में

द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन

९ मई १९९२, शनिवार, प्रातः १०.३० बजे से सायं तक
स्पीकर हाल, "विट्ठल भाई पटेल भवन"
रफी मार्ग, नई दिल्ली

उदघाटन—लोक सभा अध्यक्ष
श्री शिवराज पाटिल

स्वागताध्यक्ष :
श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव वरिष्ठ उप-प्रधान

अध्यक्षता :
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान

मुख्य अतिथि—हरियाणा के मुख्यमन्त्री
श्री भजनलाल

वक्ता :
श्री बी० डी० जत्ती--पूर्व उपराष्ट्रपति भारत, श्री वीरेन्द्र--प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, न्यायमूर्ति महावीर सिंह-सेवानिवृत्त, डा० पांडुरंग राव-पूर्व निदेशक यू.पी.एस सी, श्री ब्रिजकिशोर शर्मा-अतिरिक्त सचिव विधि मन्त्रालय, सुधाकर पाडे-पूर्व संसद सदस्य, श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, श्री बचनसिंह आर्य--कृषि राज्यमन्त्री हरियाणा।

निवेदक :
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री डा० धर्मपाल
विमल वधावन एडवोकेट, संयोजक

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज का भारतीय भाषा-दर्शन

—विमल वधावन एडवोकेट, संयोजक

भारत बहुधर्मी, बहुभाषी और बहुजातीय देश है। फिर भी हम लोग एक ही इतिहास, एक ही परम्परा और एक ही आचार संहिता में बंधे हुए हैं। कुछ लोग भारत को बहुजातीय समाज कहते हैं और इसलिए वे इसे सही मायनों में एक राष्ट्र नहीं मानते। ब्रिटिश शासन की दासता में दो सौ वर्षों की अवधि में यह झूठा विश्वास हमारे तथाकथित शिक्षितों के एक वर्ग में धीरे-धीरे पनपता रहा। ये लोग 'उपराष्ट्रवाद' का प्रचार करने लगे और इस सिद्धांत के अनुसार वे भाषा और क्षेत्रीयता के आधार पर भारत संघ में स्वायत्तशासी राज्यों के रूप में कुछ "स्तानों" को स्थापित करने के लिए आंदोलन कर रहे हैं। इनमें से कुछ उग्रवादी खालिस्तान और काश्मीर जैसे स्वतन्त्र राज्यों के लिए लड़ रहे हैं और इनकी विध्वंसात्मक गतिविधियों को हमारे कुछ पड़ोसी देश समर्थन भी दे रहे हैं।

इस समय हम आतंकवाद और हिंसा के दौर से गुजर रहे हैं। हमारी सरकारों अर्थात् केन्द्र और राज्य सरकारों में दृढ़ निश्चय के अभाव के कारण देश में अव्यवस्था फैलती दिखायी दे रही है। इस अव्यवस्था को रोकने के लिए न तो केन्द्र और न ही राज्य सरकार कोई उपाय कर रही है। वे स्थिति पर नियन्त्रण करने की बजाय अपनी 'कुर्सी' के लिए अधिक चिन्तित हैं। आज का सामान्य व्यक्ति निरन्तर भय की स्थिति में जी रहा है। वह या तो पुलिस से भयभीत है या दंगाग्रस्त भीड़ से या आतंकवादियों से। दूसरी ओर उच्च पदों पर बैठे लोग कमांडों के संरक्षण में अपने आपको सुरक्षित पा रहे हैं।

इसके लिए वोटर ही दोषी हैं। अगर हम अच्छे लोगों को चुनते हैं तो हमें अच्छा परिणाम मिलता है। जनता की इच्छा या जनादेश प्रशासनिक व्यवस्था में से ही झलकता है। लोकतन्त्र हमें न तो स्वतन्त्रता दे पाया है, न ही शांति और न ही भरपूर भोजन। इस समय हम अपने राष्ट्रीय जीवन में ह्रास की स्थिति में जी रहे हैं।

आर्य समाज ने अतीत में स्वतन्त्रता-संग्राम मे विशेष भूमिका निभाई है। अब उसने पुनः देश के पुनर्निर्माण के लिए कमर कस ली है। भारत के इस पुनर्निर्माण कार्य में भाषा भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसकी शुरुआत दिसम्बर १९९१ में हैदराबाद में हुई थी। जहां राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय भाषा सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन का स्वागत किया गया, क्योंकि हैदराबाद हमारी मातृभूमि के उत्तर और दक्षिण के बीच सम्पर्क का काम कर रहा है और हम यह आशा करते हैं कि यह सम्मेलन हमारे राष्ट्र को सशक्त बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

सम्मेलन के आयोजकों ने देश के विभिन्न भागों में सम्मेलनों की यह शृंखला प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय स्वागत-योग्य है। इस शृंखला के अन्तर्गत ९ मई, १९९२ को दिल्ली में भारतीय भाषा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसमें यह दृष्टि प्रस्तुत की जाएगी कि भारतीय भाषाएं हमारी एकात्मक बल हैं। इससे राष्ट्रीय अखण्डता का विकास होगा और पृथकतावादी शक्तियों का विनाश होगा।

आर्य समाज के इस सारस्वत यज्ञ में हम सभी अपना योगदान दें, यही प्रार्थना है।

भारतीय भाषाएं : ऐक्य शक्ति का प्रतीक

—प्रो० सी. बालासुब्रह्मण्यम, कुलपति तमिल विश्वविद्यालय, मद्रास

भाषा सम्प्रेषण की वह व्यवस्था है जो किसी जाति समूह या समुदाय विशेष के मध्य बोधगम्य होती है। निश्चय ही भाषा एक सामाजिक वस्तु है, जिससे व्यक्ति अपने विचारों एवं मनोभावों को अभिव्यक्त करता है। भारत एक विशाल देश है जो अपने बहुजातीय और बहुभाषिक स्वरूप के लिए विख्यात रहा है। भारत मे बोली जाने वाली सभी भाषाओं को तीन प्रमुख भाषा परिवारों के अन्तर्गत रखा एवं वर्गीकृत किया जा सकता है। ये परिवार हैं—

(१) मुंडा परिवार

(२) द्रविड़ परिवार

(३) आर्य परिवार।

इन तीनों भाषा परिवारों में अन्तिम दो परिवार ही ज्यादा महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मुंडा परिवार की भाषा बोलने वाले केवल पहाड़ी और उपेक्षित क्षेत्रों तक ही सीमित हैं। द्रविड़ भाषाओं की ओर यूरोपीय विद्वानों का ध्यान सर्वप्रथम आकृष्ट हुआ था और उन्होंने द्रविड़ भाषाओं की समरूपी आधार भूत शब्दावली और संरचना का व्यापक एवं सफल अध्ययन किया। द्रविड़ भाषा अध्ययन के प्रवर्त्तक डा० राबर्ट काडवेल हैं। उन्होंने इस वर्ग की १२ प्रमुख भाषाओं को पहचाना। किन्तु अमेरिकी भाषा विज्ञानी ई० बी० एमेन्यू और ब्रिटिश द्रविड़ भाषा-विशेषज्ञ डा० टी० बरों ने इन भाषाओं की संख्या २० बताई। इनमे तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं का समृद्ध साहित्य एवं मानक व्याकरण है। इन भाषाओं के समान स्रोतीय शब्दों के नैकट्य से यह सिद्ध होता है कि ये एक ही परिवार की भाषाएं हैं और भाषाविज्ञान की दृष्टि से ये कुछ विशेष प्रकार की एकता को उद्घाटित करती हैं।

आर्य परिवार की भाषाएं भारतीय भाषाओं के अन्तर्गत आती हैं। इन भाषाओं मे संस्कृत की उच्च धरोहर और समृद्ध साहित्य है। संस्कृत का प्रभाव प्रायः सभी भारतीय भाषाओं पर पड़ा है, जिसमें तमिल भी सम्मिलित है। किन्तु भारतीय भाषाओं की तुलना में तमिल पर संस्कृत का प्रभाव अपेक्षाकृत कम मात्रा मे पड़ा है।

भारतीय भाषाओं की ऐक्य शक्ति पर यदि हम विचार करते हैं तो हमें परस्पर सद्भाव और व्यापक सौहार्द्र की भावना का विकास करना होगा। धर्म की भांति भाषाओं को भी एक गत्यात्मक शक्ति के रूप मे कार्य करना चाहिए जिसमे सभी भारतवासी एक झंडे के नीचे आ सकें। यद्यपि भारतवासी धर्म, भाषा और क्षेत्र के आधार पर अलग-अलग हैं फिर भी उनकी संस्कृति एवं रीति रिवाजों के बीच एक अन्तर्भूत एकता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में 'यहां अनेकता मे एकता है। तमिल राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्यम् भारती ने अपनी एक सशक्त कविता में इस प्रकार कहा है जिसका सार इस प्रकार है—

"यद्यपि हमारी भारत मां की अट्ठारह भाषाएं हैं किन्तु उसका विचार एक है।" यह पद इस तथ्य का उद्घाटन करता है कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का नियमन करने वाले बुनियादी और मौलिक-सिद्धांत, भाषा की विभिन्नता मात्र से ही नहीं बदल जाते हैं। भारतवासियों में एकता की भावना का उन्नयन करने हेतु हमें सभी प्राचीन अथवा आधुनिक भारतीय भाषाओं को पर्याप्त महत्व एवं मान्यता प्रदान करना होगा।

दक्षिण भारत के प्रत्येक भारतवासी को पूरी निष्ठा और लगन से अनिवार्य रूप मे उत्तर भारत की एक भाषा सीखनी चाहिए। इसलिए उत्तर भारत के व्यक्ति से भी दक्षिण भारत की एक भाषा सीखने की अपेक्षा की जाती है ताकि परस्पर सौहार्द्र और सद्भावना पैदा हो सके। हमारे पाठक

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादकीय

कश्मीर को दिया जाने वाला धन जंगजुओं के हाथों में

स्व० प० प्रकाशवीर जी शास्त्री अपने भाषणो मे कहा करते थे कि भारत सरकार ने जितना धन कश्मीर के भरण-पोषण पर ४५ वर्षों मे व्यय किया उतने धन से दस नए कश्मीर बसाए जा सकते थे। तात्पर्य यह था कि वह धन राष्ट्र सेवा मे न जाकर बजर भूमि मे बखेरा गया। जिस भूमि से कांटे व सोम्भे ही पैदा हुए हैं।

इसी प्रकार की बात वीर अर्जुन ने अपने सम्पादकीय द्वारा सचय काव की एक सनसनी खेज रिपोर्ट प्रस्तुत करके की है। जिससे स्पष्ट किया है कि किस प्रकार कश्मीर में भेजी जा रही धन राशि जगजुओ के हाथो मे सीधे दी जा रही है। सीधा सा प्रश्न है क्या भारत सरकार को दिखाई नहीं दे रहा है कि जलते हुए देश की चार दीवारी मे यह जगजू कैसे पनप रहे हैं बजट की राशि का एक बड़ा भाग सरकारी अधिकारियो व जगजुओं द्वारा बन्दर बाट कर देश का सत्यानाश किया जा रहा है।

सरकारी रिपोर्टों के आधार पर विभिन्न योजनाओ पर निर्धारित राशि का ८५ प्रतिशत से ९९ प्रतिशत तक भाग कागजो मे घाटी के ६ जिलो मे व्यय दिखाया जाता है। आरोप पत्र के अनुसार विगत तीन वर्षों मे आतक वाद के दौरान विकास के लिए निश्चित राशि का ५० से ७० प्रतिशत तक अधिकारियो के पेट मे जाता है। विशेष सूत्रो का कहना है कि इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती कि आतकवाद से प्रभावित कुपवाड़ा मे ९१-९२ के लिए १४ करोड रुपये से १२ करोड का व्यय दिखाकर दो करोड कहां गये।

इसी प्रकार श्रीनगर, अनन्तनाग, पुलवामा, बारामूला की भी रिपोर्ट है। बन्दूक लेकर घूमने वाले युवक ठेकेदारो की ए बी सी डी क्लास बनाकर उनसे सदा ही पैसे के एक बड़े भाग की माग करते हैं जो तुरन्त देनी पड़ती है और इन्जीनियर कागजो पर योजनाओ के पूर्ण होने का विवरण लिख देते हैं जो कि हुई ही नहीं है।

उदाहरणत इसे रोकने के प्रयास किए गये। परन्तु आतकवादियो ने कहा चूकि इन्जीनियरो ने लाखो कमाया है तो हमारा भी हिस्सा होना चाहिए यह घटना है पुलवामा क्षेत्र के डिप्टी कमिश्नर की। जगजुओ के द्वारा अब तक जो घाटी की दशा बना दी गई है उसका परिणाम है कि धन का उपयोग गोला-बारूद पर हो रहा है गरीब जनता बिना कामके भारत के भूभाग मे आ रही है। कश्मीर जल रहा है। अमरीका चाल ने पाक० के द्वारा भारतीय भूभाग मे हमारे ही धन मे उग्रवादियो को पनपाया जा रहा है और भारत के भाग कश्मीर को हमसे छीनने का प्रयास किया जा रहा है।

नौकरियो में भर्ती के बिना सीधे जगजूओ मे मिलकर नौकरी पा जाते हैं। काश ! भारत सरकार इस बात ज्यादा समय से कश्मीर का सहायता राशि बन्द कर दे तो दो दिन मे उपद्रवी शान्त हो जायगे।

भारत सरकार बारीकी से छानबीन करके उचित कदम नहीं उठायेगी तो कश्मीर की जो दशा बना दी गई है वह बद से बदतर हो जाएगी।



—भारतीय भाषाएं हमारी सबकी अपनी भाषाएं हैं जो एक-दूसरे के दिलों को जोड़ती हैं और आपस मे निकटता बढ़ाती हैं तथा साथ ही राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की भावना को बल प्रदान करती है। भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार की दिशा मे 'भारतीय भाषा सम्मेलन' का आयोजन एक सराहनीय प्रयास है।

—बी० सत्यनारायण रेड्डी (राज्यपाल उ० प्र०)

—अपनी भाषा का सम्मान करना इस चेतना का मूल्य बोध हर एक भारतीय के मान में उद्रेक हो यही मेरी कामना है। अपनी पहचान बनाये रखना देश की एकता और जातीय सहृति के लिए आवश्यक है।

—यज्ञदत्त शर्मा (राज्यपाल उड़ीसा)

—भारतीय भाषा सम्मेलन के आयोजन से भारतीय भाषाओ को बल मिलेगा और उनका आपसी सम्पर्क भी बढ़ेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

—चन्द्रशेखर (पूर्व प्रधान मन्त्री)

बंगलादेशीय घुसपैठियों से दिल्ली की आबादी बढ़ी ? प्रशासन परेशान

दिल्ली मे बगला देश के घुसपैठियों से भारत सरकार चिन्तित है बगला देशी अवैध रूप से भारत सीमा मे प्रवेश कर राजधानी दिल्ली मे आ कर बस रहे हैं। सरकारी आंकड़ो के आधार पर दिल्ली मे एक लाख से भी ऊपर बगलादेशी अवैध रूप से बस चुके हैं वैसे यह सख्या कई लाख है सरकारी चिन्तानुसार इनका निर्बाध दिल्ली में बसना एक ऐसे उपवाद को जन्म दे रहा है जिससे भविष्य के लिए राजधानी के स्वरूप को भयकर खतरा है।

अत्यधिक चिन्ता इस बात से है कि यह किसी कीमत पर वापस लौटने को तैयार नहीं। आबादी के बढ़ने पर आसाम में भी भयकर जन आन्दोलन चला था और माग की गई थी कि इन्हे वापस बगलादेश भेज दिया जाय। पर वह आन्दोलन भी सत्ता प्राप्त करने के बाद समाप्त हो गया। विदेशी नागरिको के विषय में केन्द्रीय सरकार की ढुलमुल राजनीति का ही परिणाम है। अवैध बसी कालोनियो मे बिजली पानी व राशन कार्ड भी बन चुके हैं। आव्रजन सम्बन्धी औपचारिकताए पूरी किये बिना ये नागरिक बन चुके हैं। राशन कार्ड की बदौलत देशी होने का प्रमाण लेकर यह विदेशी पास पोर्ट भी बनवा रहे है। गृह मन्त्रालय ही घुसपैठ को स्वीकार कर रहा है तो दिल्ली प्रशासन चोरी छिपे आ रहे लोगों को कैसे रोके पचासो झुग्गी-झोपड़ी बस्तिया बस चुकी हैं।

आज यह चिन्ता का विषय है कि यह विदेशी दिल्ली तथा समूचे भारत मे बसकर सुरक्षा व्यवस्था मे नया खतरा पैदा कर रहे हैं। सार्वजनिक भूमि अधिग्रहण, नि शुल्क पानी बिजली ले रहे हैं और राजनेता इन्हे अपना वोट बैंक बनाने हेतु मदद दे रहे हैं। परिवार नियोजन इन्हे रास नहीं आ रहा। आबादी बढ़ती जा रही है। स० अर्जुनसिंह ने स्पष्ट कहा था कि बगलादेशियो की घुसपैठ सरकार के लिए सरदर्द बन जायेगी।

गृहमन्त्रालय ने दिल्ली पुलिस से कहा है कि अवैध रूप से बगलादेशियो की सख्या कितनी है। यमुनापुस्ते, नेहरू प्लेस, सीमापुरी, और कितनी ही बस्तिया बसी हुई हैं। पहनावा व सास्कृतिक दृष्टि से यह बगाली है। इनकी बस्तियां अनैतिक धन्धो के अड्डे बने हैं अनैतिक कार्यों की चरम सीमा है। अपराध नगरी मे बदली ये बस्तियां राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक दृष्टि से भारतीयता को जबर्दस्त झटका दे रही हैं।

राजनीतिज्ञो को भले ही थोड़ा लाभ पहुचे, पर एक दिन यह घुसपैठ नासूर बनकर विनाश का कारण बन जायेगी।

उ० प्र० गोरक्षा अध्यादेश राष्ट्रपति जी द्वारा रोके जाने पर देश की गोभक्त जनता में रोष

नई दिल्ली, १८ अप्रैल। राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के गोरक्षा अध्यादेश को जारी करने से रोके जाने पर भारत गोसेवक समाज के कार्याध्यक्ष श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा कि देश की गोभक्त जनता में इसके प्रति रोष व्याप्त है।

आपने बताया कि यह अध्यादेश उत्तर प्रदेश में गोहत्या पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगाने और गोमांस के किसी भी तरह के व्यापार पर पाबन्दी लगाने से सम्बन्धित है। राष्ट्रपति जी द्वारा उक्त अध्यादेश को रोके जाने की घोर निन्दा करते हुए आपने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और संत विनोबा भावे की आत्मा की शांति तथा करोड़ों की संख्या में गोवंश के प्राण बचाने एवं बढ़ रहे जन असंतोष को रोकने के लिए राष्ट्रपति महोदय को इस पर से तुरन्त रोक हटानी चाहिए।

गया सिंह

सचिव, भारत गोसेवक समाज

आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन पर शोध कार्य सम्पन्न

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार "पद्मश्री" आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन" के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर शोध ग्रन्थ प्रस्तुत करने के लिए लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली की प्राध्यापिका सुश्री सविता को मेरठ विश्व विद्यालय के दिनांक ३० मार्च, ९२ को सम्पन्न हुए समारोह में डा० शंकर दयाल शर्मा ने पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की।

सुश्री सविता के शोध ग्रंथ का विषय "आचार्य सुमन का सम्पादकीय वैशिष्ट्य" था और यह प्रबन्ध लाजपतराय कालेज साहिबाबाद के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० राम कृष्ण कौशिक के निर्देशन में प्रस्तुत किया गया था।

यहां यह उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व भी आचार्य जी के साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व पर मेरठ तथा रुहेलखंड विश्व विद्यालयों में शोध हो चुकी है।

इन्द्र सेंगर

हिन्दी का प्रयोग किए जाने की आवश्यकता

अब भारत सरकार और हिन्दी भाषी राज्यों की सरकारों द्वारा अपने प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के प्रयोग के लिए जोर दिया जा रहा है। एक स्वतंत्र राष्ट्र में ऐसा किया जाना जरूरी भी है। व्यापारियों और उद्योगपतियों आदि का भी देश की स्वतन्त्रता में उल्लेखनीय योगदान रहा है। आशा है उसी परम्परा में वर्तमान पीढ़ी के व्यापारी और उद्योगपति भी अपने पूर्वजों का अनुसरण करेंगे तथा यथासम्भव हिन्दी का प्रयोग करके सरकारी प्रयत्नों को बढ़ावा देंगे। राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी का प्रयोग राष्ट्रनिर्माण में एक महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्यक्रम है। इस प्रकार वे उत्पादों की लोकप्रियता भी बढ़ा सकेंगे। कुछ व्यवहारिक सुझाव निम्न प्रकार हैं:—

१—सामान्य जनता हिन्दी को भलीभांति समझती है। अतः अपने माल को लोकप्रिय बनाने के लिए यह जरूरी है कि आप अपने विज्ञापन हिन्दी पत्र पत्रिकाओं और हिन्दी स्मारिकाओं आदि में भी दें और वे हिन्दी में ही दिए जाएं।

२—आप यह चाहेंगे कि आपकी फर्म-कम्पनी का नाम तथा आपके उत्पाद (प्रोडक्ट्स) अधिक से अधिक लोकप्रिय हों। इस दृष्टि से यह उचित होगा कि आप अपने समस्त उत्पादों पर और उनके पैकेटों पर उनका नाम प्रयोग करने का तरीका, कम्पनी तथा फर्म का नाम आदि हिन्दी में भी छपवाएं। अब भारत सरकार ने भी अपने सभी उत्पादों पर विवरण हिन्दी में भी दिए जाने अनिवार्य कर दिए हैं।

३—आप अपने नाम के बोर्ड, अपनी विज्ञापन तथा प्रचार सामग्री को हिन्दी में भी बनवाएं क्योंकि अंग्रेजी को समझ सकने वाले मात्र २-३ प्रतिशत ही लोग हैं। चाहे तो साथ में अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा का भी प्रयोग कर सकते हैं।

४—सम्भवतः आपको विदित होगा कि देवनागरी लिपि के माध्यम से भेजे जाने वाले तार रोमन लिपि के मुकाबले सस्ते पड़ते हैं और लिखने में आसान भी हैं। अतः निवेदन है कि अपने तार भी देवनागरी में ही भेजें। इसमें पैसों की भी बचत होगी। अनुरोध है कि आप अपने मित्रों तथा सहयोगियों को भी ऐसा करने की प्रेरणा दें। निर्णय से मुझे भी अवगत करा सकें तो हम उसकी जानकारी अन्य को भी दे सकेंगे।

(डा० धर्मपाल)

मन की पीड़ा बरसे

सच तो यह है ताल बिछुड़ गई इस जीवन के स्वर से !
नित्य नयनों से पिघल-पिघल कर मन की पीड़ा बरसे !!

हंसती गाती हुई जिंदगी पलक झपकते सूनी !
सब सुख सब सिंगार उजड़ गए मांग हो गई सूनी !!

कदम कदम पर पीछा करता गम का काला साया !
हर दुख का हर पीड़ा का 'कांड' को गया सजाया !!

प्रियतम के दर्शन तक को भी आज अभागिन तरसे !
नित्य नयनों से पिघल-पिघल कर मन की पीड़ा बरसे !!

नन्हे मुन्नों तक के सिर से छीना पिता का साया !
हर वह जो कल तक अपना था अब हो गया पराया !!

उजड़ी मां की कोख, पिता का छीना आंख का तारा !
किससे मांगें और कौन दे किसको आज सहारा !!

आज मुहूरत बरस रही है दीवारों से, दर से !
नित्य नयनों से पिघल-पिघल कर मन की पीड़ा बरसे !!

अगर कहीं पर बम फटता है गोली कहीं बरसती !
मरघट से होती जाती है छोटी हर दिन बस्ती !!

मिट्टी मे मिल गई कसम पे सब कद्रें इन्सानी !
जिधर देखिए उधर बह रहा खून हो गया पानी !!

पता नहीं घर लौटेगा भी जो निकला है घर से !
नित्य नयनों से पिघल-पिघल कर मन की पीड़ा बरसे !!

कितना सूनापन लगता है कहीं भरी महफिल में !
कितने जख्म दर्द कितना है पूछो इनके दिल में !!

बहन, बेटियां, बूढ़े, बच्चे सब अपने हैं भाई !
इनकी व्यथा, व्यथा अपनी है किंचित नहीं पराई !!

देश प्यार का मोल चुकाया वर वालों के सिर से !
नित्य नयनों से पिघल-पिघल कर मन की पीड़ा बरसे !!

— [illegible]

देश की एकता में हिन्दी का योग (२)

श्री क्षेमचन्द्र सुमन

आज राजनीति की आड़ लेकर जहाँ बंगाल में यदा कदा हिन्दी-विरोध की जो आवाज उठ खड़ी होती है वहां के निवासी यह कैसे भूल जाते हैं कि अतीत काल में बंगाल ने हिन्दी के संवर्धन और उन्नयन में बड़ा भारी योगदान दिया था। बंगाल से जहाँ राजा राममोहन राय ने 'बंगदूत' नामक पत्र हिन्दी में सफलतापूर्वक प्रकाशित किया, वहां 'वन्देमातरम्' राष्ट्र-गान के अमर गायक बंकिमचन्द्र चटर्जी ने अपने 'बंग दर्शन' नामक ग्रन्थ के पांचवें खण्ड में स्पष्ट रूप से यह लिखा था 'हिन्दी भाषा की सहायता से भारत वर्ष के विभिन्न प्रदेशों में बिखरे हुए लोग जो ऐक्य बन्धन स्थापित कर सकेंगे, वास्तव में वे ही सच्चे भारतीय कहलाने योग्य हैं।' केवल यही नहीं 'बंगला वसुमति' के सम्पादक श्री सुरेशचन्द्र समाजपति और 'सन्ध्या' के सम्पादक पं० ब्रह्मबान्धव उपाध्याय आदि ने भी अपने पत्रों में हिन्दी की राष्ट्रभाषा सम्बन्धी क्षमता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया था। सुप्रसिद्ध तत्व-चिन्तक श्री अरविन्द घोष ने भी अपने 'कर्मयोगी' और 'धर्म' नामक पत्रों के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नयन में अपना अनन्य सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका का कार्य किया था। जहां बंग देश में समस्त सुधारक, विचारक और चिन्तक हिन्दी सम्बन्धी आन्दोलन को आगे बढ़ा रहे थे वहाँ श्री भूदेव मुखर्जी बिहार में तथा श्री नवीनचन्द्र राय पंजाब में हिन्दी प्रचार का कार्य कर रहे थे। प्रकाशन और मुद्रण के क्षेत्र में भी बंगवासियों की सेवाएं अविस्मरणीय हैं। श्री रामानन्द चटर्जी ने अपने प्रवासी प्रेस से जहां 'विशाल भारत' जैसा उच्चकोटि का मासिक पत्र निकाला वहां श्री चिन्तामणि घोष के इण्डियन प्रेस ने 'सरस्वती' का प्रकाशन करके हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि में अभूतपूर्व योगदान दिया।

अनेक बंग नेताओं द्वारा जहां राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान की दिशा में ऐसे महत्वपूर्ण कार्य हो रहे थे वहां जस्टिस शारदाचरण मित्र ने 'एक लिपि विस्तार परिषद' की स्थापना करके उसके 'देवनागर' नामक ऐसा पत्र प्रकाशित किया कि जिसका उद्देश्य देवनागरी लिपि के माध्यम से समस्त भारतीय भाषाओं की कृतियों को प्रकाशित करके उनमें समन्वय स्थापित करना था। उनका यह भी अभिमत था कि यदि भाषाओं में से लिपि की दीवार को हटा दिया जाय और सब भाषाओं को 'देवनागरी' लिपि में ही लिखने की परम्परा चल पड़े तो भारत की एकता अखण्ड रह सकेगी। वास्तव में यदि लिपि की बाधा को दूर कर दिया जाय और सारे देश की भाषाएं 'देवनागरी' को अपना लें तो हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्यिक चेतना को बड़ा बल मिल सकेगा। पश्चिमी एशिया की 'ताजिक' और 'तुर्की' भाषाओं ने जब 'अरबी' लिपि को छोड़कर रोमन लिपि को अपनाया तब वहां भी बड़े ही क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए थे। एक लिपि के माध्यम से हमारी एकता सर्वथा अक्षुण्ण रह सकेगी।

इस परिप्रेक्ष्य में यदि हम उर्दू के हिमायतियों के उन तर्कों को ध्यान से देखें जो आज उर्दू को एक स्वतन्त्र भाषा का दर्जा देने के लिए प्रस्तुत किये जाते हैं, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं, बल्कि वह तो हिन्दी की ही एक शैली मात्र है। यदि उर्दू के लिए देवनागरी लिपि का आश्रय ले लिया जाय तो उसका शैलीगत रूप बना रह सकेगा। उर्दू के हिमायती यह कैसे भूल जाते हैं कि जिस हिन्दी को जायसी, रहीम, रसखान, आलम, शेख और उस्मान जैसे मुस्लिम कवियों ने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया वह क्या केवल हिन्दुओं की ही भाषा कही जा सकती है? खड़ी बोली के आदिकवि के रूप में जहां अमीर खुसरो ने हिन्दी कविता को नये मुहावरे दिये वहां सैयद इन्शा अल्लाखां की 'रानी केतकी की कहानी' नामक रचना से हिन्दी कहानी की विधा में एक अभूतपूर्व निखार आया। हिन्दी साहित्य में जहां उक्त विभूतियों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है वहां आधुनिक काल में ऐसे अनेक नाम हमारे सामने उभरकर आते हैं जिन्होंने जाति और धर्म की दीवार को तोड़कर साहित्य निर्माण के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया था। ऐसे महानुभावों में सैयद अमीर अली 'मीर', कासिमअली साहित्यालंकार, बन्देअली फात्मी, जहूरबख्श हिन्दी कोविद और नबीबख्श 'फलक' आदि के नाम गौरव के साथ स्मरण किये जा सकते हैं। कदाचित् ऐसे ही उदारमना मनीषियों को दृष्टि में रखकर किसी कवि ने यह लिखा था 'इन मुसलमान हरिजनों पर, कोटिन हिन्दू वारिये।'

स्वतन्त्रता के बाद उर्दू भाषा के लिए आन्दोलन तो बहुत हुए, लेकिन वास्तविकता यह है कि प्रायः सभी उर्दू लेखकों ने अपनी रचनाएं हिन्दी में प्रकाशित करनी प्रारम्भ कर दी हैं। यह शुभ चिन्ह है। उर्दू की अधिकांश शायरी भी देवनागरी में लिप्यन्तरित होकर हिन्दी में आ गई है। ऐसी स्थिति में यदि भारत की एकता को दृष्टि में रखकर हम 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' के साथ साथ 'राष्ट्र-लिपि देवनागरी' को अपनाने का संकल्प कर लें तो एक दिन समस्त भारतीय भाषाएं मुक्त स्वर में यही उद्घोष करेंगी:

'एक हृदय हो भारत जननी।'

भाषा का विवाद राजनीतिक विवाद है, वह जनता का विवाद नहीं है। जनता को आज दिग्भ्रमित किया जा रहा है। हमारा यह कर्तव्य है कि हम जनता को शिक्षित करें और उससे कहें कि वह अपना सारा कार-बार, पत्र-व्यवहार आदि हिन्दी में करे। यदि हमने शुद्ध मन से और दृढ़ निश्चय से हिन्दी प्रचार की पावन वेदी पर पैर रखा तो वह दिन दूर नहीं, जब देश के कोने-कोने में हिन्दी का स्वतः ही प्रचार हो जायगा। ●

आदि मानव कहां पैदा हुआ था ? (२)

—विश्वनाथ प्रसाद, वि० वाचस्पति, कोरबा

और हमने कहा हे आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत में रहो, और जहां से चाहो जी भरकर खाओ और इस वृक्ष के निकट न जाना, नहीं तो तुम जालिम ठहरोगे। तो शैतान ने दोनो को वहां से फिसला दिया और जिस (सुख और चैन) में थे उससे उन्हें निकलवा कर छोड़ा, और हमने कहा "उतरो तुम एक दूसरे के शत्रु होंगे, और तुम्हें एक (निश्चित) समय तक धरती में ठहरना और बिलसना है।

(अल बकरा २/३५ और ३६)

ईसाई और मुसलमानों के आदम की उत्पत्ति में निम्न भेद है—

(१) दोनों का आदम इसी पृथ्वी पर जन्म लेता है, एक अदन देश में, तो दूसरा मक्का व ताइफ के मध्य नैमान की घाटी में। एक की हव्वा इसी पृथ्वी पर पैदा की जाती है तो दूसरे की हव्वा जन्नत में।

(२) ईसाई के आदम को अदन के बाग (वाटिका) में हव्वा के साथ रखा जाता है तो मुसलमानों का आदम स्वर्ग के बाग में हव्वा के साथ रहता है।

(३) ईसाई के आदम की लम्बाई-चौड़ाई नहीं लिखी गई किन्तु मुसलमानों के आदम की लम्बाई साठ गज और चौड़ाई सात गज थी।

ईसाई और मुसलमान का आदम लगभग आठ हजार वर्ष पूर्व पैदा हुआ था किन्तु यह समय विज्ञान के प्रतिकूल है। इधर अनेकों विद्वानों ने अपने तर्क के आधार पर इस अनुमानित समय को असत्य पाया है। ऐसे कुछ विद्वानों के खोजों को पढ़ने की कृपा करें—

(१) हार्म्सवर्थ हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड के योग्य सम्पादकों ने मनुष्य की उत्पत्तिकाल को एक लाख वर्ष का पुराना माना है।

(२) विकासवाद में कई विद्वानों के मत से ८ लाख वर्ष माने गए हैं।

(३) अभी लगभग ५० वर्ष पूर्व एक जूता मिला है, जिसको देखकर वैज्ञानिक लोग मनुष्योत्पत्ति काल को साठ लाख वर्ष से पूर्व का मानते हैं।

(वैदिक सम्पत्ति)

(४) मध्य अमरीका में मनुष्य प्रचलित धारणा से भी लाखों वर्ष पहले रहा करता था। पुरातत्ववेत्ताओं को हाल ही मे इस सम्बन्ध में हैरतअंगेज प्रमाण मिले है। अगर इस खोज की पुष्टि हो जाती है तो इस प्रचलित धारणा को बदलना होगा कि आदि मानव एशिया मे ३५,००० वर्ष पूर्व अस्तित्व में था। अन्तर्राष्ट्रीय पुरातत्ववेत्ताओं के दल को पिछले माह पुर्तगाल में ग्रोटो आफ होपके टोका डो० एस्पेरेन्को में एक गुफा मिली जिसमे मध्य अमरीका में आए आदिमानव के आए आदिमानव के अवशेष मिले हैं। एक फ्रेंच भौतिक शास्त्री जैक लेवरे के अनुसार चट्टान की जिस तह के नीचे से चीजें मिली है वह १५ ००० वर्ष या उससे भी ज्यादा पुरानी है, उन्होने बताया अभी इस खोज की सफलता के बारे में शत प्रतिशत नही कहा जा सकता है लेकिन हम निश्चित तौर पर ६० प्रतिशत सही हैं। (नवभारत, बिलासपुर, १२ जून १९८७)

(५) मैक्समूलर आदि भाषा शास्त्रियों का विचार है कि मध्य एशिया में ही मनुष्य सृष्टि हुई पर जिन दिनों मे इस प्रकार के विचार हो रहे थे, उन दिनो में विज्ञान की इतनी उन्नति नहीं हुई थी। उन दिनो में जावा, अफ्रीका आदि देश निश्चित नहीं हुये थे। मध्य एशिया में आर्यों की बस्ती का यह अनुमान करके कि आर्यों से ही समस्त मनुष्य जाति पैदा हुई होगी, उन्होंने मध्य एशिया का इशारा किया था किन्तु तब तक की ढूंढ तलाश से यह सिद्ध नहीं हुआ कि मनुष्य जाति मध्य एशिया मे उत्पन्न हुई हो।

(६) बाबू उमेशचन्द्र विद्यारत्न बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान हैं। उन्होंने 'मानवेर आदि जन्मभूमि' नामी एक बड़ा ही उत्तम ग्रन्थ लिखा है। आपने उसमें मनुष्यो की आदि जन्मभूमि को मंगोलिया बताया है। हमने उस पुस्तक को बड़े ध्यान से पढ़ा किन्तु उसमें हमको कोई ऐसा प्रमाण न मिला जिससे यह सिद्ध हो कि मनुष्य सृष्टि पहले मंगोलिया में हुई। उससे यह तो अच्छी तरह सिद्ध हो जाता है कि अति प्राचीन काल में आर्य लोग वहां भी रहते थे और यह भी ज्ञात होता है कि आर्यों से ही समस्त मनुष्य जाति उत्पन्न हुई है किन्तु इस बात का उसमे एक भी प्रमाण नहीं दिया गया है कि मनुष्यो की सृष्टि मंगोलिया में ही हुई।

(७) स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तिब्बत में आदि सृष्टि का होना तो बतलाया है परन्तु कोई प्रमाण नही दिया।

(८) भारतीय सनातन धर्मी आर्य देश में कुरुक्षेत्र को आदि स्थान बतलाते हैं। क्योंकि शतपथ मे 'तेषां कुरुक्षेत्र देवयजनमास तस्मादाहुः कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनम' और 'जाबालोपनिषद्' में 'यदनु कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम' लिखा है परन्तु चरक के प्रमाण से सिद्ध होता हैं कि ऋषि लोग हिमालय में ही निवास करते थे। यहीं से हरिद्वार के रास्ते से नीचे उतर कर भारत आए और बीमार होकर फिर अपने पूर्वनिवास हिमालय को चले गये। इस पूर्व निवासपद से स्पष्ट हो जाता है कि 'कुरुक्षेत्र आदि जन्म स्थान नहीं है, प्रत्युत वह निवास स्थान है क्योंकि हिमालय पर जाने वाले वही ऋषि थे जिनसे मनुष्यों का वंश चला है।

(वैदिक सम्पत्ति लेखक पंडित रघुनन्दन शर्मा)

(९) अमरीका और पोलैंड के पुरातत्व विशेषज्ञों ने मिस्र में एक लाख बीस हजार वर्ष पुराने कुएं का पता लगाया है। विशेषज्ञों का दावा है कि यह कुंआ विश्वभर में खोजबीन के बाद मिले कुंओं में सबसे पुराना है। पोलैंड पुरातत्व केन्द्र द्वारा यहां की गई घोषणा के अनुसार यह कुआं मिस्र में लीबियायी क्षेत्र के पाषाण-युग की एक बस्ती में पाया गया।

इस खोज से ही मालूम होता है कि आज से लगभग एक लाख बीस हजार वर्ष पूर्व मिस्र में मानव निवास करता था।

(१०) इजराइली पुरातत्व वेत्ताओं ने एक छोटी गुफा खोज निकाली है जिसमें प्रागैतिहासिक काल की हजारों दुर्लभ वस्तुएं मिली हैं इन वस्तुओं में अब तक का सबसे पुराना कपड़े का टुकड़ा व ६००० वर्ष पुराने कुछ सिक्के भी मिले हैं। यह गुफा इजराइल के दक्षिणी रेगिस्तान में मिली है। यह स्थान उसी स्थान से कुछ किलोमीटर दूर है जहां १९४० में 'ओल्ड टेस्टामेंट' के कुछ अंश पाये गये थे।

(नवभारत, बिलासपुर, २४ मार्च १९८५)

इस खोज से ईसाई और मुसलमान के आदम की उत्पत्ति का समय आठ हजार वर्ष झूठा साबित हो जाता है। आदम और हव्वा अपने गुप्त अंग छिपाने के लिए अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़कर लंगोट बना रहे थे, उसके बहुत पहले से उसी देश मे कपड़ा पहिनने का प्रयोग होने लगा था। उन्नतिशील देश व्यापारिक सुविधा के लिए सिक्के चलाते हैं। इसमे यह भी स्पष्ट होता है कि इजराइल के मानव ने बहुत प्रगति कर ली और उसका व्यापार अन्य पड़ोसी देशो के साथ था। इससे बाइबिल का खोखलापन बेनकाब हो जाता है।

(११) सृष्टि का पहला मनुष्य अफ्रीका मे पैदा हुआ था और बाद में उसके वंशज यूरोप और एशिया मे फैल गये। अमरीका के इस जैवरसायनविद एलन सी विल्सन ने यह दावा करते हुए कहा है, कि इस निष्कर्ष के समर्थन मे और प्रमाण मिल गयेहैं। अमरीकी विज्ञान विकास संघ के वार्षिक अधिवेशन में श्री विल्सन ने कहा कि उन्होने दुनिया भर के २००० जीवों का विश्लेषण करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला है, उन्होंने कहा कि उन्हे जो और प्रमाण मिले हैं उनसे १९८७ में पहली बार प्रकाशित उस शोध के निष्कर्षों की भी पुष्टि हुई है जिसमें १४७ व्यक्तियों के जैविक सूत्रों के परीक्षण के आधार पर कहा गया था कि मनुष्य जाति दरअसल इवांजल होव्वा की सन्तान है। डा० विल्सन ने अनुवांशिक अध्ययनों के आधार पर कहा कि यह होव्वा लगभग दो लाख वर्ष पूर्व अफ्रीका में थी।

(नवभारत, बिलासपुर, १८-१-८९)

(क्रमशः)

११ मई पुण्य तिथि पर विशेष :

शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

—पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी, निदेशक विश्व भारती अनुसंधान परिषद, ज्ञानपुर (वाराणसी)

परमात्मा की असीम अनुकम्पा से धर्म और समाज की उन्नति के लिए असाधारण महापुरुषों का आविर्भाव होता है। स्वामी दर्शनानन्द जी उन्हीं महापुरुषों में से हैं, जिन्होंने अपनी चतुर्मुखी क्रान्ति के द्वारा शिक्षा, धर्म और समाज के क्षेत्र में क्रान्ति का बिगुल बजाया। शिक्षा के क्षेत्र में निःशुल्क शिक्षा वाले गुरुकुलों के प्रथम प्रवर्तक थे। वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए तीन सौ से अधिक ग्रन्थ और ट्रैक्ट लिखे। सामाजिक क्रान्ति के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर सहस्त्रों युवकों को ईसाई और मुसलमान होने से बचाया। धर्म और संस्कृति की सत्य रूपरेखा प्रस्तुत कर उन्हें ज्ञान का आलोक दिया।

नीतिकारों का कथन है कि उसी मनुष्य का जीवन सफल है जिसने ज्ञान, पुरुषार्थ और अदम्य उत्साह से संसार में अक्षय यश प्राप्त किया है। अन्यथा पशु-पक्षी भी अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यै—
विज्ञान विक्रम यशोभिरभज्यमानम्।
तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञाः
काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते॥

अतएव महाभारतकार का कथन है कि क्षण भर का जीवन भी सफल है, यदि वह प्रकाश पुंज की तरह देदीप्यमान होता है। धुंए के तुल्य मलिन जीवन निन्द्य है।

'मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयो न च धूमायितं चिरम्।'

स्वामी दर्शनानन्द जी महापुरुष के सभी गुणों से विभूषित थे। ये आर्य जगत की त्रिवेणी (दयानन्द, श्रद्धानन्द और दर्शनानन्द) के एक रत्न थे। ये परम तपस्वी, वैदिक वाङ्मय के उद्भट विद्वान्, महान दार्शनिक, परम वाग्मी, शास्त्रार्थ महारथी, अथक लेखक और सरस्वती के वरद पुत्र थे।

स्वामी दर्शनानन्द जी का जन्म माघ कृष्णा १० संवत् १९१८ वि० (सन १८६१ ई०) में लुधियाना जिले के जगरांवा ग्राम में हुआ था। इनके पिता पंडित रामप्रताप मौदगल्य गोत्रीय सारस्वत ब्राह्मण थे। इनकी माता का नाम हीरा देवी था। स्वामी जी का बचपन का नाम नेत्रराम था, जो बाद में कृपाराम हो गया। इनके पितामह प० दौलतराम और प्रपितामह प० परशुराम थे। ११ वर्ष की अल्प आयु में इनका विवाह पार्वती देवी से हुआ।

इनके पिता धनाढ्य और व्यापारी थे। इन्हें परिवार का व्यवसाय पसन्द नहीं आया और ये महर्षि दयानन्द के व्याख्यान सुनने के लिए लालायित रहते थे। उनका स्वयं का कथन है कि—'मैंने स्वामी दयानन्द के ३७ व्याख्यान सुने हैं और ३७ वर्षों तक आर्यसमाज की सेवा की है।'

इनके पितामह प० दौलतराम अन्तिम समय में काशी में निवास करने गए थे। वहां वे संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति और भोजन आदि देते थे। उनके दिवंगत होने पर कृपाराम जी ने यह काम संभाला। उन्होंने १८८९ ई० में 'तिमिर नाशक' प्रेस की स्थापना की। इस प्रेस से उन्होंने 'तिमिर नाशक' साप्ताहिक पत्र निकाला और अष्टाध्यायी, काशिका, महाभाष्य आदि ग्रन्थों को भी प्रकाशित किया। ये निर्धन छात्रों को बहुत कम मूल्य पर या बिना मूल्य के भी ये ग्रन्थ देते थे। काशी के प्रायः सभी प्राचीन संस्कृतज्ञ विद्वान पं० कृपाराम के इस उपकार के ऋणी हैं और वे उनका नाम सदा स्मरण करते हैं।

उन्होंने काशी में रहते हुए प० हरिनाथ जी (स्वामी मनीषानन्द जी) से दर्शन शास्त्र पढ़े और न्याय वैशेषिक, सांख्य योग और वेदान्त दर्शनों में विशेष योग्यता प्राप्त की। बाद में उन्होंने इन दर्शनों का हिन्दी में विस्तृत भाष्य भी किया है।

वे वर्तमान समय में महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार प्राचीन गुरुकुल पद्धति के प्रवर्तक हैं। उन्होंने पांच गुरुकुलों की स्थापना की। तत्पश्चात १९०३ में गुरुकुल बदायूं, १९०५ में गुरुकुल विरालसी (मुजफ्फरनगर), १९०७ में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) की स्थापना की। इसके अतिरिक्त रावलपिंडी के निकट चोहान मनमा में गुरुकुल पोठोहार की स्थापना की। इस समय गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ही स्वामी दर्शनानन्द जी के आदर्शों के अनुरूप संस्कृत और वैदिक वाङ्मय की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र चल रहा है।

शास्त्रार्थ महारथी के रूप में उनका नाम अग्रगण्य है। उन्होंने अपने जीवन में छोटे-बड़े सैकड़ों शास्त्रार्थ किए थे। वे ही एक ऐसे शास्त्रार्थ महारथी थे, जो पौराणिकों, ईसाई, मुसलमान, जैनों आदि सभी से शास्त्रार्थ में विजयी थे। उनके अकाट्य तर्कों का उत्तर प्रतिपक्षी नहीं दे पाते थे, अतः निरुत्तर हो जाते थे। सभी विपक्षी एकमत से यही भाव प्रकट करते थे। कि उनकी तर्क शक्ति प्रबल और अनुपम है, अतः उनके सामने शास्त्रार्थ के लिए आने से घबराते थे। उनकी एक विशेषता यह भी थी। कि वे कभी भी अशिष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं करते थे, अतः विपक्षी भी उन्हें पूज्य, मान्य और हितैषी के तुल्य मानते थे।

स्वामी जी उच्चकोटि के लेखक, सम्पादक और साहित्यकार थे। संस्कृत, हिन्दी और उर्दू तीनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। लेखक के रूप में उन्होंने ३०० से अधिक बड़े और छोटे ग्रन्थों की रचना की है। इनके ट्रैक्टों की संख्या २०० से ऊपर है। वे प्रायः एक ट्रैक्ट प्रतिदिन लिख लेते थे। इनके शास्त्रीय ग्रन्थों में विशेष उल्लेखनीय हैं—न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन, सांख्यदर्शन और वेदान्त दर्शन (पूर्वार्ध) के भाष्य, उपनिषद् प्रकाश, मनुस्मृति का हिन्दी अनुवाद, श्रीमद् भगवद्गीता-सिद्धांत। इनके कुछ ट्रैक्टों का संग्रह—दर्शनानन्द ग्रन्थ—संग्रह पूर्वार्ध और उत्तरार्ध के रूप में छपा है। ये ट्रैक्ट आर्य सिद्धांतों की पुष्टि के लिए लिखे गए हैं। कुछ ट्रैक्ट ईसाई, मुसलमान, जैनियों और पौराणिकों के मन्तव्यों के खण्डन के रूप में हैं।

कवि के रूप में उन्होंने 'जंग-ए-आजादी' नामक एक काव्यकृति उर्दू में प्रकाशित की थी। इसमें हिन्दी और उर्दू छन्दों का प्रयोग है। भाषा हिन्दी, उर्दू, फारसी और पंजाबी मिश्रित है। उन्होंने उपन्यास और कहानी ग्रन्थ भी लिखे हैं। इनमें मुख्य है—सत्यव्रती महानन्द, धर्मवीर, क्षमा व द्रोपद चण्डाल चौकड़ी, विचित्र ब्रह्मचारी और कथा पच्चीसी।

पत्रकार के रूप में उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाएं निकाली थीं। इनमें उल्लेखनीय हैं—१ तिमिरनाशक (साप्ताहिक काशी से, १८८९ ई०) २. वेद-प्रचारक (मासिक) ३. भारत उद्धार (साप्ताहिक जगरांवा से १८९४ ई०) ४. वैदिक धर्म (उर्दू, मुरादाबाद, १८९७ ई०) ५. वैदिक धर्म दिल्ली, १८९८), ६. वैदिक मैगजीन (दिल्ली, मासिक, १८९९ ई०), ७. तालिबे इल्म (साप्ताहिक, आगरा, १९००), ८. आर्य सिद्धान्त (मासिक बदायू १९०३) और मुबाहिसा (साप्ताहिक, बदायू), ९. ऋषि दयानन्द (मासिक, लाहौर, १९०८), १०. वैदिक फिलासफी (मासिक, गुरुकुल पोठोहारा, १९०९ ई०) आदि। उन्होंने लगभग ९२ पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन और प्रकाशन किया।

स्वामी दर्शनानन्द जी पक्के योगवादी थे। वे बीमारी में कभी कोई दवा नहीं लेते थे। उनका मत था कि मनुष्य के भोगों के कारण बीमारी आदि होती हैं। भोग की समाप्ति पर रोग अपने आप ठीक हो जाएगा। स्वर्गीय ठा. नत्थासिंह उपदेशक ने अपने संस्मरण में लिखा है कि स्वामी जी को बहुत दस्त हो रहे थे। उन्होंने डाक्टर की दवा नहीं ली और दही-पकौड़ी मंगाकर खाई। इससे ही उनका दस्त बन्द हो गया। नए नए गुरुकुलों की स्थापना करना और उन्हें राम भरोसे छोड़कर आगे बढ़ते जाना उनकी प्रवृत्ति थी। भाग्य से उन्हें योग्य और तपस्वी कार्यकर्ता मिल जाते थे।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

उद्योग एवं व्यापार में हिन्दी का महत्व

श्री जगन्नाथ संयोजक राज भाषा कार्यालय

अब जब कि हिन्दी भाषी राज्यों और केन्द्रीय सरकार के काम काज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाए जाने के लिए गम्भीर प्रयत्न किए जा रहे हैं यह आवश्यक है कि साथ ही साथ निजी क्षेत्र के उद्योगपतियों और व्यापारियों के द्वारा भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ाया जाय। इस दिशा में राजधानी दिल्ली गांधीनगर के सिले सिलाए वस्त्र विक्रेताओं के संघ ने सदस्यों को एक परिपत्र भेज कर प्रेरित किया है कि वे अपने काम काज में हिन्दी का प्रयोग करें। यह संघ भारत में थोक वस्त्र निर्माताओं और विक्रेताओं का कदाचित् सब से बड़ा संघ है। संघ ने सदस्यों से कहा है कि—

"प्रत्येक राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपनी राष्ट्रभाषा का प्रयोग कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है। अपनी मातृभाषा की अवमानना एवं अपमान किसी भी अवस्था में सहन नहीं कर सकता और अपने राष्ट्र के अस्तित्व के लिए निरन्तर संघर्षरत रहता है।

अंग्रेजी के अवांछित प्रयोग का अर्थ है अंग्रेजियत के संस्कारों को अंगीकार करना: दूसरे शब्दों मे भारतीयता का उपहास और अपने कर्मों के द्वारा अपनी राष्ट्रभाषा और संस्कृति को नष्ट करना।

आप आज से ही अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करना आरम्भ कर दें। अपने व्यवसाय के नाम पट्ट और अभिलेख, पत्र व्यवहार, निमन्त्रण पत्र, शुभकामना सन्देश, सवेष्टनों (लिफाफों और पैकिंग) पर हिन्दी का ही यथा सम्भव प्रयोग करें। यथासम्भव उधार/नकद पर्चियों और दूरभाष पर बातचीत में हिन्दी का ही प्रयोग करें। केवल अंग्रेजी में छपी प्रचारात्मक सामग्री जैसे कलेण्डर, डायरी आदि को कदापि स्वीकार न करें और न ही छपवा कर वितरण करें।"

२. इसी प्रकार गाजियाबाद (उ० प्र०) के लोहा व्यापारियों की समिति ने भी अपने सदस्यों को हिन्दी मे काम करने के लिए प्रेरणा देने के लिए एक परिपत्र प्रचारित किया। परिपत्र का आशातीत प्रभाव हुआ। अधिकांश व्यापारियों ने अपने नामपट्ट हिन्दी में बदल दिए। लेखा-जोखा' चिट्ठी-पत्री, नकद-उधार की पर्चियां, बैंक में हस्ताक्षर आदि ऐसे दैनदिन कार्य हिन्दी में करने आरम्भ कर दिए। Telephone की जगह दूरभाष, Unloading की जगह उतराई, Loading लदान और ऐसे ही Average की जगह औसत, Confirm पुष्टि, Cancel निरस्त, Amount राशि, Signature हस्ताक्षर, Sheet चादर, Tax paid कर प्रदत्त, Shortage घटत, Payment भुगतान, अदायगी आदि हिन्दी शब्दों को खुल कर, धड़ल्ले से प्रयोग किये: हिन्दी का एक अच्छा वातावरण बना। लोगों ने अनुभव किया कि अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का प्रयोग करके हम विदेशीयता एवं अंग्रेजियत का बहिष्कार करने में समर्थ होंगे।

इस हिन्दीमय वातावरण से उत्साहित होकर, 'लोहा व्यापार समिति' ने अपनी एक बैठक मे सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि व्यापारियों को हिन्दी अपनाने के लिए प्रोत्साहन स्वरूप प्रति वर्ष एक "राष्ट्रभाषा हिन्दी पुरस्कार योजना' प्रारम्भ की जाए।

हिन्दी नामपट्ट, हिन्दी मे उधार-नकद पर्चियां बहियों/बही खातो, हिन्दी में ही पत्राचार एवं परस्पर वार्तालाप में अंग्रेजी शब्दों का बहिष्कार आदि के आधार पर एक निर्णायक पुरस्कार एक भव्य समारोह मे प्रदान किए गए। पुरस्कार आकर्षक एवं स्थाई महत्व के थे।

३. केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने भी उद्योगपतियों और व्यापारियों को पत्र भेजे हैं और उन्हे हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव निम्न प्रकार से दिए है—

(क) सामान्य जनता हिन्दी को भली-भांति समझती है। दक्षिण और पूर्व के राज्य मे भी अब काफी अधिक संख्या अंग्रेजी जानने वालों की अपेक्षा हिन्दी जानने वालो की है। अतः अपने माल को लोकप्रिय बनाने के लिए यह जरूरी है कि आप अपने विज्ञापन हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं और हिन्दी स्मारिकाओ आदि में भी दें और वे हिन्दी में ही दिए जाए। हिन्दी पत्र पत्रिकाओं आदि में अंग्रेजी में विज्ञापन छपवाने से उसका पूरा लाभ नहीं हो पाता, क्योंकि हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं आदि के पाठकों में ऐसे कम ही व्यक्ति होते हैं जो अंग्रेजी के माध्यम से विज्ञापन को पूरा समझ सकें।

(ख) आप यह भी चाहेंगे कि आपकी फर्म/कम्पनी का नाम तथा आपके उत्पाद (प्रोडक्ट्स) अधिक से अधिक लोकप्रिय हों। इस दृष्टि से यह भी उचित होगा कि आप अपने समस्त उत्पादों पर और उनके पैकिटों बंडलों पर उनका नाम, प्रयोग करने का तरीका, कम्पनी।फर्म का नाम आदि हिन्दी में भी छपवाएं। इसी सच्चाई को मानते हुए अब भारत सरकार ने अपने सभी उत्पादों के विवरण उन पर हिन्दी में भी दिए जाने अनिवार्य कर दिये हैं। अपने नाम के बोर्ड, अपनी लेखन सामग्री तथा प्रचार सामग्री को हिन्दी मे भी बनवाए क्योंकि अंग्रेजी को समझ सकने वाले मात्र दो तीन प्रतिशत ही लोग हैं। चाहें तो साथ में अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा का भी प्रयोग कर सकते हैं।

(ग) सम्भवतः आपको विदित होगा कि हिन्दी में भेजे जाने वाले तार अंग्रेजी के मुकाबले सस्ते पड़ते हैं और लिखने में आसान भी हैं। अतः निवेदन है कि अपने तार भी हिन्दी में ही भेजें। इससे पैसों की भी बचत होगी।

(घ) अपने चैक हिन्दी में बनाएं। बैंक खाते हिन्दी में खोलें इत्यादि।

४. कई प्रसिद्ध कम्पनियां और फर्में अपने कामकाज में हिन्दी का प्रयोग कर भी रही हैं। ताप नियंत्रण यंत्र बनाने वाली प्रसिद्ध सधीर कम्पनी न केवल अपना सारा कामकाज हिन्दी मे करती है अपितु भारत सरकार को अपने टेण्डर भी हिन्दी मे ही भेजती है। इस कम्पनी के मालिक श्री नेत्रपाल सूदन (जो विज्ञान-स्नातक हैं) ने बताया कि उनके उपकरण दक्षिण ध्रुव मे अपने परीक्षण के लिए रक्षा मन्त्रालय ने काफी संख्या में खरीदे हैं और उसके लिए उन्होने अपना टेण्डर केवल हिन्दी में भरा था। स्वास्तिक फैब्रिकेशन, नोएडा के साझीदार श्री राजेन्द्र नारायण गोयल का अपना अधिकांश कामकाज पहले केवल अंग्रेजी में होता था। वे विद्युत विषय में इन्जीनियर हैं और इन्स्टीट्यूशन आफ इन्जीनियर्स के फैलो भी हैं। पहले वे डी सी एम लिमिटेड मे बड़े ऊंचे पद पर अधिकारी थे और उनका अंग्रेजी में ही काम करने का अभ्यास था। किन्तु मेरी प्रेरणा पर उन्होंने अपना काम हिन्दी में करना आरम्भ कर दिया। श्री गोयल जी और भी कई कम्पनियों में साझीदार हैं। अब उनका कहना है कि उनकी कम्पनियों का लगभग ८० प्रतिशत कार्य हिन्दी में होने लगा है और इससे उनके ग्राहकों और उत्पादन के विक्रेताओं को काफी सुविधा हुई है। इसी प्रकार दिल्ली की शिवको नामक एक फर्म कापियों और रजिस्टरों का उत्पादन करती है। उन्होंने भी अपने अनुभव के आधार पर बताया कि भारतीय भाषाओं के प्रयोग से, विशेष रूप से हिन्दी के प्रयोग से व्यापारियों के उत्पादनो की बिक्री अधिक ही होगी। और भी बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। पुराने ढंग की थोक मंडियो मे तो अधिकांश व्यापारी अपना सारा कामकाज हिन्दी में ही करते हैं।

५. गाजियाबाद के लोहा व्यापारियों और दिल्ली के वस्त्र विक्रेता समिति के सदस्यों से हिन्दी अपनाने के लिए निरन्तर सम्पर्क बनाकर प्रेरित करने वाले गाजियाबाद के श्री ओमप्रकाश अग्रवाल रक्षा मंत्रालय मे प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी रह चुके हैं। अन्य नगरों में भी और अन्य वस्तुओ के विक्रेताओ/निर्माताओ से भी वे सम्पर्क बनाए हुए हैं जिससे हिन्दी का व्यवहार पक्ष सबल हो सके। कानपुर में केन्द्रीय तार घर के श्री मैथिलीशरण सराफ ने रोटरी क्लबो के माध्यम से हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए वर्षों से सफल अभियान छेड़ा हुआ है। वाराणसी के श्री जगदीश नारायण राय ने जीवन बीमा निगम आदि के अधिकारियों और कर्मचारियों से सम्पर्क बढ़ाकर हिन्दी का व्यवहार बढ़ाया है। हैदराबाद में श्री सदानन्द गुप्त भी इसी प्रकार से प्रयत्न कर रहे हैं। आगरा में श्री जगदीश प्रसाद बंसल भी अपने ढंग से व्यापारियों से हिन्दी में काम करने के लिए सम्पर्क बनाए हुए

(शेष पृष्ठ ९ पर

शास्त्रार्थ महारथी

(शेष पृष्ठ ७ का)

११ मई १९११ ई० को उन्होंने अपना पार्थिव शरीर छोड़ा और दिव्य-ज्योति में विलीन हो गए। उनके निधन पर न केवल आर्य जगत ने शोक मनाया, अपितु उनके सम्पर्क में आने वाले सभी पौराणिक पंडित, ईसाई, मुसलमान और जैनी विद्वानों ने भी वज्राघातके तुल्य शोकोद्‌गार प्रकट किए।

उन्होंने अन्तिम समय में आर्यसमाज को चेतावनी दी कि वे विद्वानों का आदर-सम्मान करना सीखें अन्यथा आर्यसमाज निष्क्रिय और निष्प्राण हो जाएगा। उनकी यह चेतावनी आज भी उतनी ही सार्थक और उपयोगी है। विद्वान और तपस्वी ही किसी समाज के निर्माता होते हैं।

हिन्दी का महत्व

(पृष्ठ ८ का शेष)

हैं। उधर भारत सरकार ने भी अपने सभी कारखानों को आदेश दिए हैं कि वे अपने उत्पादनों पर माल के विवरण हिन्दी में भी अनिवार्य रूप से लिखाएं और हिन्दी भाषी राज्यों की सरकारों तथा जनता के साथ अपना पत्राचार हिन्दी में ही करें। भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित सरकारी सुपर बाजार (जिसकी १००० से अधिक शाखाएं हैं) की सामान ले जाने वाली थैलिया अब केवल हिन्दी में छपने लगी हैं। इसी प्रकार दिल्ली उपभोक्ता सहकारी थोक भण्डार (जो दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत है) की थैलिया भी हिन्दी में ही छप रही हैं। दिल्ली में सरकारी दूध की दुकानों पर जिन टोकनों की सहायता से दूध मिलता है वे भी केवल हिन्दी में बने हुए हैं। इस प्रकार कुछ वर्षों में जहाँ सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है वहाँ उद्योगपतियों और व्यापारियों द्वारा भी इसका अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है।

६. अतः पाठकों से अनुरोध है कि वे भी अपना अधिकाश कार्य हिन्दी में करना आरम्भ करें तथा अपने-अपने क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अभियान चलाएं जिससे कि जनता और शासन के आपसी सहयोग से हिन्दी का व्यवहार बढ़ सके।

सम्पादक के नाम पत्र

संग्रहणीय-विशेषांक

सार्वदेशिक पत्र का "आर्य समाज स्थापना दिवस" विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। विशेषांक के माध्यम से आर्य समाज व महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। इस पत्र के विशेषांको की बड़ी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। सार्वदेशिक पत्र का आर्यजगत की तमाम पत्र पत्रिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान है। आशा है पत्र भविष्य में भी इसी तरह पाठकों की सेवा करता रहेगा।

विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य, मन्त्री
आर्य युवक परिषद गोहाना (सोनीपत) हर०

(२)

श्रीयुत सम्पादक जी,

सादर नमस्ते। सार्वदेशिक साप्ताहिक का "विविधमत खन्डन विशेषांक" प्राप्त हुआ। आपके इस सत् प्रयत्न के लिये बहुत-२ साधुवाद। क्योंकि इस किंचित अनुपेक्षित विषय पर विशेषांक निकालना बहुत साहस और सूझबूझ का काम है आप इस कार्य में सफल हुए। मेरी बधाई स्वीकार करें।

—डा० गंगा प्रसाद विद्यार्थी, जबलपुर

वैदिक धर्म ग्रहण किया

पानीपत। दिनांक २०-४-९२ आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत में शुद्धि समारोह बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुस्लिम युवक श्री मुर्तजा अहमद त्यागी ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस अवसर पर आर्य समाज के पुरोहित पं० शिवकुमार आर्य ने श्री मुर्तजा को यज्ञ का मुख्य यजमान बनाकर यज्ञोपवीत दिया। इस प्रकार श्री मुर्तजा अहमद शुद्ध होकर वैदिक धर्म में, श्री मोहन त्यागी के नाम से घोषित हुए।

इस अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी परिव्राजक, आर्यसमाज के प्रधान श्री रामानन्द सिंगला व मन्त्री श्री राममोहन राय उपस्थित थे।

शिवकुमार आर्य, एम. ए.
पुरोहित,
आर्य समाज बड़ा बाजार
पानीपत

पुस्तक समीक्षा

युगनिर्माता—सत्यार्थ प्रकाश सन्दर्भ-दर्पण

ले०—प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
आर्य समाज विधान सरणी कलकत्ता

प्रकाशक—आर्य समाज विधान सरणी-१ कलकत्ता-६

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का शोध प्रबन्ध ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन, जगत में जब हुआ तो ससार के विभिन्न मतावलम्बी चाहे (हिन्दू मुसलमान ईसाई चारवाक जैन बौद्ध) कोई भी थे सबने इस पुस्तक पर दृष्टिपात किया और सभी को अपने घर की बीमारियो पर ध्यान देने को बाध्य होना पडा।

वस्तुत 'सत्यार्थ प्रकाश' बीमारो के लिए तो १४ बायोकेमिक दवाओ का बक्सा सिद्ध हुआ और खुरापातियो के लिए १४ फायर का रिवाल्वर सिद्ध हुआ।

परिणामतः—सभी मतावलम्बियो ने स्वामी जी महाराज की सम्यक आलोचना अपनी अपनी दृष्टि से की। परन्तु वह आलोचना उनके बुद्धि-विवेक से परे थी।

महर्षि को अपने इस ग्रन्थ की उपादेयता पर इतना भरोसा व विश्वास था कि वे इसमे किसी प्रकार का परिवर्तन करने के लिए किसी भी समझौते पर तैयार न हुए। हाँ इतनी गुजाइश अवश्य दी इस ग्रन्थ के लिखने मे (१) किसी के दिल दुखाने का उद्देश्य नही है किन्तु जबर्दस्ती नहीं। (२) जब समझ मे आ जाय तब मान लेना, अन्यथा रगड कसते रहना। निरभिमानता इतनी कि यह मैं नहीं कह व लिख रहा हू—जिसे ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त मानते हैं उसे मैं भी मानता हू और सबको मानना चाहिए।

परिणामत जिसने भी इस ग्रन्थ का विचार पूर्वक स्वाध्याय किया उस के विवेकपूर्ण विचार से जीवन धारा ही बदल गई। इस ग्रन्थ का प्रकाशन कितना हुआ है। केवल परोपकारिणी सभा अजमेर तथा सार्वदेशिक सभा ने ही २५ भाषाओ में लाखों प्रतियां प्रकाशित की हैं। लोकप्रियता की दृष्टि से जन मानस में स्थान मिला है और पिपासित जन मानस की पिपासा शान्त की।

इसमे विषय बहुमूल्य हैं इसमें विद्या शिक्षा षड्दर्शनो का अविकल दृष्टिकोण विद्यमान हैं। अत: जन साधारण मे विषय वस्तु को सुबोध-सरल बनाने हेतु ग्रन्थ का भाष्य व्याख्या और टिप्पणियां की।

प्रस्तुत पुस्तक महिमामय सन्दर्भ ग्रन्थ है उसका जितनी बार स्वाध्याय करे उतनी ही नवीनता के दर्शन होगे।

बडे भ्राता प्रो० उमाकान्त उपाध्याय बधाई के पात्र हैं जिन्होंने कठिन श्रम से ऋषि के मन्तव्यो का ऊहापोह जनता की सेवा में प्रस्तुत किया है।

सुधी पाठकगण इससे लाभान्वित होंगे। ऐसा विश्वास है—

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रवेश प्रारम्भ

श्री सर्वदानन्द गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ में १ मई से प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक अभिभावक विवरण नियमावली निम्न पते पर मगा सकते हैं।

—आचार्य श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय
साधु आश्रम (अलीगढ)

सार्वदेशिक आर्यवीर दल की गतिविधियां

ग्रीष्मकालीन आर्यवीर दल शिविरों की सूचना वर्ष १९९२ ई०

पूर्व विज्ञप्ति में कुछ भूल हो गयी थी अत यह विज्ञप्ति आपकी सेवा मे पुनः प्रकाशित है। इस वर्ष राष्ट्रीय शिक्षा शिविर दिल्ली आर्य वीर दल मे ही ७ जून से २१ जून तक स्थान:—महाशय चुन्नीलाल उच्च० मा० सरस्वती बाल मन्दिर हरिनगर एल ब्लाक नई दिल्ली-११००६४ मे दीनदयाल हस्पताल के सामने आयोजित किया जा रहा है। अतः सभी आर्यवीरो तथा शिक्षको एव उपशिक्षको को सूचित किया जाता है कि अपनी पूर्ण तैयारी के साथ इस शिविर मे भाग लेंगे। ऐसी आशा है।

उप व्यायाम शिविर

१, २८ मई से ७ जून तक कैथल हरयाणा २, २६ मई से ५ जून तक स्थान:—पुत्र गुरुकुल चित्तोड़गढ़ राज०। सौजन्य से :—आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ३, १ जून से १० जून तक, स्थान.—गुरुकुल महाविद्यालय पुष्पावती पूठ उ० प्र०। सौजन्य से :—गुरुकुल महाविद्यालय पुष्पावती पूठ गाजियाबाद उ० प्र०।

अन्य प्रथम श्रेणी शिविर

उत्तर प्रदेश १, ११ से ३१ मई फिरोजाबाद २, १ से ७ जून स्थान:— श्री हरिबाबा जनता इण्टर कालिज गवा जनपद बदायू उ० प्र०।

हरयाणा—१, २३ से ३१ मई तक फरीदाबाद २, २३ से ३१ मई तक आर्य समाज माडल टाऊन पानीपत ३, २८ मई से ७ जून तक जीन्द ४, १ से ७ जून तक रोहतक ५, १ से ७ जून तक करनाल ६, ८ से १४ जून तक घरोण्डा ७, १४ से २२ जून तक पटौदी।

मध्यप्रदेश—१, १७ अप्रैल से १६ मई तक उज्जैन कुम्भ।

आसाम—१ जून से ११ जून तक सम्भावित गोहाटी। सौजन्य से :—आर्य प्रतिनिधि सभा आसाम।

राजस्थान—जून माह मे हिण्डोन सिटी।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक आर्य वीर दल

हिमाचल प्रदेश प्रान्तीय शिविर सम्पन्न

सुन्दर नगर (मण्डी) मे दिनांक ५ से १२ अप्रैल तक आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रान्तीय आर्य वीर दल का आयोजन किया गया जिसमे ७१ आर्य वीरो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया दीक्षान्त समारोह मे डा० देवव्रत आचार्य प्रधान संचालक, ब्र० आर्य नरेश, स्वामी सुमेधानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल, मन्त्री तथा हिमाचल प्रदेश के वन मन्त्री इत्यादि गणमान्य नेता एव विद्वानो ने आर्य वीरो का उद्बोधन किया तथा पुरस्कार एव प्रमाण पत्र वितरित किये। अनेक आर्य वीरों ने मांसाहार का परित्याग किया तथा आर्य वीर दल की शाखा लगाने का संकल्प लिया।

मन्त्री आर्यवीर दल हि० प्र०

पानीपत में निःशुल्क नेत्र शिविर

आर्य वीर दल पानीपत की ओर मे नि.शुल्क नेत्र शिविर दिनांक २८-३-९२ से ४-४-९२ तक आर्य समाज मन्दिर माडल टाउन पानीपत में रोटरी क्लब मिड टाउन पानीपत के सहयोग से लगाया गया। जिसका उद्घाटन उपायुक्त श्री रामफल सिह जी ने किया। नगर के प्रसिद्ध डा० रवि बजाज, श्रीमती कमला बजाज एव डा० रमेश टण्डन ने ५२५ रोगियो की जांच की तथा १२१ रोगियो की आंख का सफल आपरेशन किया। १६-४-९२ को आर्य वीर दल के प्रधान, संचालक डा० देवव्रत आचार्य ने रोगियो का निरीक्षण किया सभी रोगियो को भोजन तथा ऐनक निःशुल्क दिये गये।

संस्तुत | मण्डलपति
देवव्रत आचार्य | सुभाष मुंजलानी

विशाल व्यायाम एवम् ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर की तिथियां परिवर्तन

२० मई से ३१ मई के स्थान पर ७ जून से २१ जून १९९२ तक निश्चित हुआ है। सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिक्षक शिविर और दिल्ली प्रदेश का संयुक्त शिविर लगाने के लिये यह परिवर्तन किया गया है।

आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीर दल उपमण्डल गुन्नौर जनपद बदायू (तहसील केन्द्र बबराला) का सात दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक १ जून से ७ जून १९९२ तक तिथि ज्येष्ठ कृष्णा ३० से ज्येष्ठ शुक्ला ७ विक्रमी सम्वत २०४९ तदनुसार दिन सोमवार से रविवार तक स्थान श्री हरि बाबा जनता इण्टर कालिज गवा (बदायू) मे आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थी पूर्ण गणवेश तथा ११ रु० १० कि. ग्रा. गेहू सहित दिनांक १ जून को १२ बजे तक प्रवेश पा सकेंगे।

दयाशंकर आर्य वीर

पानीपत में आर्य वीर दल कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर

दि० १५-४-९२ से २५-४-९२ तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य जी की अध्यक्षता मे कार्यकर्ता एव शिक्षक शिविर का आयोजन किया गया इस शिविर मे भोजन व आवास की व्यवस्था आर्य वीर दल पानीपत व आर्य समाज माडल के द्वारा की गयी। जिसमे क्षेत्र के १४ आर्य वीरो ने भाग लिया व शाखा लगाने का संकल्प लिया। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के शिक्षक श्री अनिल कुमार, श्री अजीत आर्य एव श्री मदन पाल राठी ने भी सहयोग दिया।

संस्तुति | मण्डलपति
देवव्रत आचार्य | सुभाष मुंजलानी

पूर्वी उत्तरप्रदेश में आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र० के संचालक आर्य मुनि वानप्रस्थी जी, सह-संचालक नरेन्द्रपाल जी आर्य ने श्री अवध बिहारी जी खन्ना की सरक्षता मे १८ जनवरी से २८ जनवरी तक आजमगढ़ जोगी, बस्ती, खलीलाबाद, गोरखपुर, बड़हलगञ्ज, दोहरीघाट, गोण्डा, मऊ सभी शाखाओं का निरीक्षण किया गया। श्री सुरेन्द्र आजाद व्यायाम शिक्षक ने भी मऊ एव आजमगढ़ शाखाओ मे प्रशिक्षण दिया। ४ मार्च को पूर्वाञ्चल आर्य वीर सम्मेलन मनाया जा रहा है तथा १२ मार्च से १५ मार्च तक आर्य समाज मऊ मे बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन रक्खा गया है। इसस क्षेत्र मे जागृति आई है नई शाखाओ का गठन भी हुआ है तथा आर्यमुनि जी ने कार्यभार ग्रहण करके तूफानी दौरा किया गया है। आदरणीय हंस जी को भी मार्च मे पूर्वी क्षेत्र मे आमन्त्रित किया गया है। सभी अधिकारी और कार्यकर्ता अपने समय का सदुपयोग युवको को प्रोत्साहित करने मे ही करते हैं। मैं जौनपुर वाराणसी जनपदो का निरीक्षण करके आया लोगो मे आर्य वीर दल के प्रति बड़ा उत्साह दिखाई दिया मन्त्री भाई राजेन्द्र सिंह जी आर्य, वाराणसी मण्डल के संचालक दिनेश सिंह जो बड़े उत्साही अधिकारी मिले जौनपुर के श्री राधेमोहन जी गुप्त ने पूरे जिले को अच्छे ढग से गठित किया है मऊ और आजमगढ़ के अधिकारी भी उत्साही मिले। मैं सभी को हृदय से धन्यवाद देता हू इसी प्रकार से कार्य करने की प्रभु इन्हें सामर्थ्य प्रदान करता रहे।

धर्मपाल आचार्य
संचालक आर्य वीर दल

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०७६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-५-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस ड नं० ९९
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment licence No. U 99 Post ।। P.S.O.en 7, 8-5 1992

गुरुकुल आश्रम आमसेना में धर्मार्थ चिकित्सालय का शिलान्यास

गुरुकुल आश्रम आमसेना का २४वां वार्षिक महोत्सव १० अप्रैल १९९२ को अत्यन्त समारोह के साथ मनाया गया, इस अवसर पर ५० शैया वाले धर्मार्थ चिकित्सालय का शिलान्यास करने एवं रजत जयन्ती वर्ष प्रारम्भ करने के लिये उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल श्री यज्ञदत्त शर्मा उड़ीसा शासन के उच्चाधिकारियों के साथ गुरुकुल भूमि पधारे।

गुरुकुल का सारा कार्यक्रम, ब्रह्मचारियों की व्यवस्था एवं जन सेवा के कार्यक्रम को देखकर राज्यपाल महोदय अत्यन्त प्रभावित हुए और आश्वासन दिया कि जितना सम्भव होगा सरकार इस संस्था को सहायता देगी, इस अवसर पर भारी संख्या में जनता विद्वान, व वक्ता उपस्थित थे।

—आचार्य धर्मानन्द सरस्वती
गुरुकुल आश्रम आमसेना, कालाहांडी (उड़ीसा)

आर्य समाज भीकमपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भीकमपुर जैती जनपद बदायूं का १३वां वार्षिकोत्सव दिनांक १६ मई से १८ मई तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी, महात्मा तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। विद्वानों के अमृतमय वचनों को सुनने के लिये अधिक से अधिक संख्या मे पहुंच कर लाभ उठावें।

आर्य समाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नैनीताल अपना वार्षिकोत्सव २० से २७ मई तक समारोह-पूर्वक मना रहा है। इस समागम मे आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर अनेकों सम्मेलनों का आयोजन भी किया जा रहा है। इस समारोह मे सपरिवार तथा इष्टमित्रो सहित पधार कर धर्म एवं आध्यात्म का लाभ उठावें।

—आर्य समाज बरौंदा जनपद करनाल का वार्षिकोत्सव २७ से २९ मार्च तक उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशको ने अपने अमृतमय उपदेशों से जनता जनार्दन को लाभान्वित किया। २७ मार्च को एक विशाल शोभायात्रा भी निकाली गई शोभायात्रा मे आर्य वीर दल के स्वयंसेवकों द्वारा किये गये व्यायाम प्रदर्शन को जनता ने अत्यधिक पसन्द किया। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

आर्य समाज मन्दिर गोहाटी का निर्वाचन

१९९२-९३ के लिये पदाधिकारियों का चुनाव २२-३-९२ को आर्य-समाज मन्दिर गोहाटी के प्रांगण मे श्री परेशचन्द्रदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

१—प्रधान डा० नारायणदास जी
२—मन्त्री श्री भगवानदास गुप्त
३—कोषाध्यक्ष श्री जगदीश वर्मा
४—पुस्तकाध्यक्ष श्री रमेश गोयल

—भगवानदास गुप्ता, मन्त्री

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा संचालित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद मे ४ से ९ वीं कक्षा तक प्रवेश प्रारम्भ है। आठवीं की परीक्षा का परिणाम १००प्र० श० रहा है। इस वर्ष सी०बी०एस०ई० केन्द्रीय विद्यालय का पाठ्यक्रम जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। विद्यालय के साथ छात्रावास की व्यवस्था है। अतः अपने पुत्रो को धार्मिक, चरित्रवान तथा उनका भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए गुरुकुल मे प्रविष्ठ करवा कर लाभ उठावें।

—आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
डाकघर नई दिल्ली-४४
फोन : ८-२७५३९८

ऐक्य शक्ति का प्रतीक

(पृष्ठ २ का शेष)

क्रम मे भारतीय साहित्य का इतिहास तथा भारतीय संस्कृति का इतिहास तथा भारतीय संस्कृति के इतिहास की नीति के रूप मे राष्ट्रीय शिक्षा देने का प्रावधान होना चाहिए। सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में निबद्ध करने के लिए एक समान सम्पर्क भाषा होनी चाहिए। किसी एक भारतीय भाषा में संचित विशेषज्ञान को अन्य भारतीय भाषाओं मे उपलब्ध कराने की सुविधा होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसे मंच का निर्माण होना चाहिए, जिससे देश की जनता तथा भावी पीढ़ी यह समझ सके कि भारतीय भाषाओं के माध्यम से एकता की भावना का संवर्धन अविच्छिन्न हो सकता है। इस प्रसंग में साहित्य अकादमी की सेवाओं का उल्लेखनीय महत्व है, जहां विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों और भाषा विशेषज्ञों को मान्यता प्रदान कर समुचित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा रहा है।

यह विशेष ध्यान देने की बात है कि कुछ अन्य राष्ट्रीय संस्थाएं जैसे 'भाषा संगम' विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा साहित्यिक संगोष्ठियों के आयोजन से देशवासियों में एकता को अधिक मजबूत एवं स्थायी बनाने हेतु असाधारण सेवाएं कर रही हैं। किसी भी कीमत पर हमें अपने नागरिकों मे राष्ट्रीय भावना को जगाना है जिससे वे परस्पर सद्भाव से जी सकें। हम कभी भी इसका समर्थन नहीं करते कि क्षेत्रीयता के भाव का सर्वथा परित्याग होना चाहिये। हम अपने क्षेत्रीय संस्कार या अपने विशेष भाव में विकास तो करें परन्तु इसके साथ ही व्यापक राष्ट्रीय एकता और भावनात्मक एकात्मकता को भी प्रोत्साहित करें।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- मेरे शिष्य सभी आर्य सामाजिक हैं। वे ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथों की सफलता अवलम्बित है।
- विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक १६] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ ज्येष्ठ शु० १ सं० २०४८ १७ मई १९९२

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन का सफल आयोजन

भाषाई आधार पर प्रदेशों का बटवारा न होता तो खालिस्तान की मांग न उठती : भजनलाल

संस्कृत सभी भाषाओं का उद्गम है : शिवराज पाटिल

नई दिल्ली ६ मई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन विट्ठल भाई पटेल भवन के स्पीकर हाल मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। सम्मेलन का प्रारम्भ देवी सुनन्दा आर्या के मधुर वेदपाठ से हुआ।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने भारतीय भाषाओ के सरक्षण पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्यसमाज सविधान मे उल्लिखित १५ भारतीय भाषाओ के सरक्षण के साथ-साथ स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी को देव नागरी लिपि के साथ राज भाषा के पद पर आसीन करके मैकाले द्वारा थोपी गई अग्रेजी से देश को मुक्त कराना चाहता है।

इससे पूर्व सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि भाषा के विकास की सबसे बडी जिम्मेदारी सरकार की है। उन्होने भारतीय भाषाओ को समृद्ध बनाने की जरूरत पर बल दिया। श्री पाटिल ने कहा कि विभिन्न भाषाओ को एक दूसरे का अग बनना चाहिए, इससे भाषा समृद्ध होती है। उन्होने भाषा के प्रचार के लिए नई पद्धति अपनाने पर जोर दिया। उन्होने कहा कि वर्तमान मे एक देश दूसरे देश से अलग नही रह सकता इसको ध्यान मे रखकर अन्तर्राष्ट्रीय भाषाए जानना भी जरूरी है।

समारोह के मुख्य अतिथि हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने कहा कि भाषा और सस्कृति का मेल ही देश को एक सूत्र मे बाध सकता है। उन्होने कहा कि देश को जोडने वाली भाषा हिन्दी ही है, लेकिन प्रदेशो की भाषा को भी जीवित रखना होगा। उन्होने कहा कि भाषा के आधार पर प्रदेशो का बटवारा उचित नही था। इसी से आज तनाव बढा है। श्री भजनलाल ने कहा कि अगर पजाब हरियाणा और हि० प्र० इकट्ठा होते तो आज न खालिस्तान

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्य समाज का शिष्टमण्डल लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल से मिला

लोकसभा के नियम १६० के अन्तंगत स्मृति-पत्र भेंट किया गया

दिल्ली ११ मई।

आज आर्य समाज का एक उच्च स्तरीय शिष्ट मण्डल सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता मे भारतीय भाषाओ के सम्बन्ध मे लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल से मिला तथा उन्हे एक ज्ञापन दिया।

ज्ञापन मे यह माग की गई है कि समस्त भारतीय भाषाओ के सरक्षण तथा देवनागरी लिपि को अतिरिक्त लिपि के रूप मे स्वीकार किया जाय जिससे उत्तर तथा दक्षिण भारत की भाषाओ का परस्पर आदान-प्रदान सम्भव हो सके। इस शिष्ट मण्डल मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, बाबू सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, न्यायमूर्ति श्री महावीरसिंह जी श्री अनिल नरेन्द्र सम्पादक वीर अर्जुन, श्री रमाकान्त गोस्वामी हिन्दुस्तान श्री सूर्यदेव, श्री विमलवधावन एडवोकेट तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के मन्त्री श्री के० नरसिम्हा रेड्डी सम्मिलित थे।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार

आर्यसमाज लंदन की गतिविधियां

नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन किया गया जिसमें श्री एवं श्रीमती रोहिणीकान्त मलहोत्रा एवं आर्य परिवार यजमान बने तथा सत्संग में सबको प्रसाद प्रदान किया। प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज एवं डा० तानाजी आचार्य ने सन्ध्या यज्ञ सम्पन्न कराया। 'वे. सुधा' के कार्यक्रम में प्रो० भारद्वाज डा० श्रुतिशील शर्मा एवं डा० तानाजी आचार्य ने संक्षेप में वेदमन्त्रों की व्याख्या करते हुए कहा कि मानव शरीर इस जीवन यात्रा का मौलिक आधार है। आत्मा इस शरीर के द्वारा अपने सभी कार्य और भोग सम्पन्न करती है। परन्तु यह देह 'भस्मान्त है (भस्मान्त इद शरीरम) इस बात का हमें सदैव स्मरण रहे। कहीं यह मिट्टी का शरीर ही हमारे जीवन का लक्ष्य न बन जाय। यह साधन (शरीर) ही कहीं हमारे जीवन का साध्य न बन जाय।

भक्ति संगीत के सत्र में श्री देवराज राजपूत, श्रीमती उर्मिला चोपड़ा, ऊषा भसीन, यश वेदी स्वर्णा शर्मा, एवं सावित्रि छाबड़ा ने भक्तिरस से ओतप्रोत भजनों का मधुर गायन किया।

युवा सांस्कृतिक कार्यक्रम में महान क्रान्तिकारी श्री श्याम जी कृष्ण-वर्मा अमर हुतात्मा भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव के जीवन और कार्य पर भाषण हुए। इन क्रान्तिकारियों को श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए प्रो० भारद्वाज ने उनके राष्ट्रप्रेम और बलिदान को अमर और हमारे लिए सदैव अनुकरणीय बताया।

इस कार्यक्रम में विभिन्न युवक और युवतियों ने भाग लेकर अपने सुप्त गुणों का प्रदर्शन किया—अमित कक्कड़ वन्दना चोपड़ा कविता चोपड़ा, मधुकुर वर्मा, मोनिका छाबरिया, गुञ्जन वर्मा, संजय ओबराय, नीना ओब-राय किरणमोंगिया, दीपाली साहनी अनीश साहनी, वन्दना सहजपाल, विनीता चौधरी, वराण्डा मल्होत्रा राहुल मलहोत्रा, रुचि चड्ढा नील खन्ना, आशिष वर्मा, कोजल आचार्य और पुनम चोपड़ा।

वेदपाठ की महिलाओं ने सफल पारिवारिक सत्संगों का आयोजन किया। शेष सभी कार्यक्रम पूर्ववत सम्पन्न हुए। —तानाजी आचार्य

भारतीय भाषा सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

की माग होती और न ही कोई मुल्क को तोडने की कोशिश ही करता।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि भारतीय मूल की सब भाषाओ की अपनी अपनी लिपि के साथ उनके लिए देवनागरी को भी एक अतिरिक्त लिपि के रूप मे प्रयोग किया जाना चाहिए। इस प्रकार सब भाषाओ को एक दूसरे के नजदीक आने का अवसर मिलेगा और हर भाषा-भाषी एक दूसरे के विचारो और भावनाओ को अच्छी तरह समझ सकेगा। उन्होंने कहा कि यह खेद की बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के चार दशक बाद भी सरकार, भारतीय भाषाओ को राष्ट्रीय कार्य प्रणाली के समस्त क्षेत्रो मे प्रशासन शिक्षा तथा न्याय दिलाने मे असफल रही है।

इससे पूर्व भूतपूर्व मन्त्री पी० शिवशकर ने कहा कि दक्षिण भारत मे हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए आदान-प्रदान तथा प्रेम भाव की जरूरत है। इस अवसर पर १५ सूत्रीय प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया तथा यह मांग की गई कि दिल्ली उच्च न्यायालय मे हिन्दी मे काम करने की अनुमति दी जाये और जिला स्तर के न्यायालयो मे भी हिन्दी का प्रयोग किया जाये। प्रस्ताव मे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा प्रधानमन्त्री से अनुरोध किया गया कि वे सभी शासकीय समारोहो मे भारतीय भाषा का ही प्रयोग करें।

सम्पादक के नाम पत्र

श्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री

सम्पादक सार्वदेशिक साप्ताहिक

आपके सम्पादकत्व मे सार्वदेशिक पत्रिका का स्तर उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर है, अब पहले की अपेक्षा अधिक ज्ञानवर्धक सामग्री पढने के लिये प्राप्त हो रही है इसके लिए मेरी तथा मेरे परिवार की तरफ से आपको अनेक बधाई। बहुत समय के बाद आपने आर्य समाज स्थापना दिवस विशेषांक के रूप मे विशेषांक निकाला। विशेषांक को देखा तथा पढा वास्तव मे समाज को ऐसे ही लेखो तथा सामग्री की आवश्यकता है जिससे व्यक्ति के मन मे कुछ सोचने की भावना जागृत हो। आपके इस विशेषांक की जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। यदि इस प्रकार के विशेषांक आप पत्रिका भी निकालें तो हम ऋषि के स्वप्नो का साकार करने मे सहज ही सफल हो सकते हैं। भविष्य में भी इसी प्रकार के विशेषांक प्राप्त होते रहेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

—रमेशचन्द्र आर्य
नासिक (महा०)

—सार्वदेशिक का 'आर्य समाज स्थापना दिवस विशेषांक' प्राप्त हुआ जो निश्चय ही आर्य वीरो के हृदय को ज्ञान से ज्योतित करेगा सभी लेख सम्पादकीय समेत सभी मत के विषय में जानकारी तथा उनकी वैदिक धर्म से तुलनात्मक अध्ययन कराकर सत्य तत्व को सरलता से समझाने का प्रयास प्रशंसनीय है भविष्य मे भी इस प्रकार के प्रयास जारी रहे ऐसी हम सबको अपेक्षा है।

शुभाकांक्षाओ सहित

—प्रजीत कुमार आर्य
बिसवा सीतापुर

आर्य अनाथालय की स्थापना

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पूर्व मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी ने ग्रा० पो० कौरानी फज्जूपुर बल्लभगढ फरीदाबाद मे आर्य अनाथालय की स्थापना की है। भवन निर्माण का कार्य आरम्भ हो गया है। इस पावन कार्य मे दानी सज्जनो से प्रार्थना है कि इस महान यज्ञ मे सहयोग देंगे। जिससे यह कार्य सम्पन्न हो सके।

अनाथालय १ जुलाई १९९२ से प्रारम्भ हो जायेगा।

—रमेशचन्द्र शास्त्री, अध्यक्ष
ग्रामीण विकास शिक्षा समिति

भारतीय भाषा सम्मेलन में भाग लेने वाले वरिष्ठ नेता

इस अवसर पर लोकसभा के अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री पी० शिवशकर, यूनीवर्सिटी ग्रांट कमीशन के अध्यक्ष श्री रामरेड्डी, हरियाणा के कृषि राज्यमन्त्री श्री बचनसिंह, बाबू सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, श्री बृजकिशोर शर्मा अतिरिक्त सचिव विधिविधान, श्री श्यामसिंह शशि, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री विमल वधावन एडवोकेट, श्री सूर्यदेव जी, डा० धर्मपाल, आ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री के० नरसिम्हा रेड्डी सहित अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया।

भारतीय भाषा सम्मेलन में पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा प्रारम्भिक अभिभाषण

मेरा मुख्य कार्य न तो भारतीय भाषाओं के इतिहास की खोज करना है, और न यह मालूम करना कि किस प्रकार से उनका प्रयोग शुरू हुआ, किस प्रकार से इन भाषाओं ने अपने आपको सम्पन्न बनाया और कौन सी भाषा किस भाषा समूह से सम्बन्ध रखती है। मैं केवल इतना ही बताना चाहता हूं कि भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति क्या है ? और भविष्य मे उनकी प्रगति की क्या सम्भावनाएं हैं, और हमारे राष्ट्र की कार्यविधि में उनका क्या स्थान अपेक्षित है ?

जब उपनिवेशवादी अंग्रेज भारत आये थे तब उन्होंने यहां की तत्कालीन परिस्थितियों को देखकर और काफी सोच-विचार के बाद एक ऐसी योजना बनाई जिसके द्वारा वे हमारे देश की सार्वभौमिक सत्ता को नष्ट करके हमारे ऊपर निरकुश राज कर सकें। 'फूट डालो और राज्य करो' वाली नीति उन्हे बहुत उपयोगी मालूम हुई। जिसका सफलता पूर्वक प्रयोग करते हुए उन्होने अपने ध्येय को प्राप्त किया। भारत वासियों को पहले उन्होने मत्त धर्म, जाति और रग-भेद के आधार पर विभाजित किया और फिर हमें भाषा के आधार पर भी बांटने की कोशिश की।

दक्षिणात्य लोगो को उन्होने उत्तर भारतियां के विरुद्ध यह कहकर भड़काया कि ये आर्य लोग हैं जो आक्रान्ता के रूप में बाहर से आये और यहा आकर उन्होंने द्रविणों को अपने आक्रमण का शिकार बनाया। अंग्रेजो ने इस बात का भी प्रचार किया कि उत्तर भारत की भाषायें भारत-यूरोपीय समूह की भाषायें हैं, जबकि दक्षिण भारत की भाषाओं का सम्बन्ध द्रविड़ समूह की भाषाओं से है, जो एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं।

यह जानते हुए भी कि भारतीय भाषाओ के इस प्रकार के वर्गीकरण का कोई ठोस आधार नही है, उन्होने इस प्रकारका दुष्प्रचार केवल इस लिए किया जिससे हमारे भारतीय समाज को और अधिक विखण्डित किया जा सके। आजकल दक्षिण भारत मे हिन्दी का जो विरोध हो रहा है वह केवल अंग्रेजों की इस कूटनीति का ही परिणाम है।

महोदय, मैं एक निगूहीत सत्य को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बताना चाहता हूं कि द्रविड़ लोग अन्य कोई नही बल्कि उन्हीं आर्य ऋषि मुनियो की सन्तान हैं जिनको परमात्मा ने मानव-सृष्टि के आदि-काल में, जिसे कृत-युग के नाम से जाना जाता है, हमारे देश के प्राचीन सप्त-सिन्धु प्रदेश मे अवतरित किया था। द्रविड़ शब्द की उत्पत्ति 'द्र' धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'दृष्टा' अर्थात ऋषि, और 'विड' (विद) का अर्थ है जानने वाला या ज्ञानी व्यक्ति। द्रविड़ो मे जो लोग पश्चिम दिशा की ओर-चलकर यूरप पहुंचे और वहीं पर बस गये, वे 'द्रुइद' कहलाये। कालान्तर मे उन्होंने योरुप के सामाजिक जीवन को बहुत प्रभावित किया। योरुपीय 'द्रुइद' साहित्य मे 'शिव सहित' का समावेश इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि 'द्रुइद' जाति का मूल स्थान उत्तर भारत ही था। एक दूसरा उदाहरण और देना चाहता हूं। अगस्त्य ऋषि उत्तर भारत से विन्ध्याचल पर्वत पार करके दक्षिण मे गये थे। उनकी आज भी वहां बहुत मान्यता है। वहां के लोग उनकी पूजा करते हैं।

तेलुगु, तमिल, मलयालम आदि तथाकथित द्रविड़ भाषाओं की संरचना, उनका वाक्य विन्यास व्याकरण इस बात का प्रमाण है कि उनका आदि मूल संस्कृत भाषा ही है, जिसे देव-भाषा, सुर-भाषा, गीर्वाणीय भाषा आदि नामों से भी जाना जाता है। इन भाषाओं मे संस्कृत शब्दो की बहुलता स्पष्ट दिखाई देती है। मेरा विश्वास है कि ससार की समस्त भाषाओ की उत्पत्ति, चाहे वह ग्रीक हो या लैटिन, संस्कृत भाषा से हुई है। आज ससार मे जो भी भाषायें हम देखते हैं वे देश काल और परिस्थिति से प्रभावित, संस्कृत भाषा का ही वर्तमान स्वरूप है।

जब हम भारतीय भाषाओ के वर्ण-कर्म पर दृष्टिपात करते हैं तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वे एक दूसरे की बहनें हैं। एक ही माता की अलग-अलग सन्तान है। जिनमे कई बातोंकी समानता है। उनका व्याकरण, उनकी सरचना आदि मे बहुत कुछ साम्य है। हमारा आपका और सरकार का यह कर्तव्य है कि इन भाषाओं को उनके सही स्वरूप में देखने और दिखाने का प्रयत्न करे। भाषाओ में सगठन की शक्ति होती है, विघटन की नहीं। हमें निरन्तर प्रचार द्वारा इस ध्रुव सत्य को जन-जन के मानस तक पहुंचाने का प्रयत्न करना चाहिए।

एक दूसरी बात जो हमारे पक्ष में जाती है वह यह है कि सब भारतीय भाषाओं की उनकी अपनी स्वतन्त्र लिपि के साथ-साथ उनके लिए एक समान लिपि के प्रयोग की भी सम्भावना दिखाई देती है। इस समान लिपि के प्रयोग से विभिन्न भाषा समूहों को एक दूसरे के पास आने, एक दूसरे को सोचने समझने का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा।

भारतीय भाषा सम्मेलन, सभी भारतीय भाषाओ के लिए 'देव-नागरी' को अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रयोग करने पर बल देता है।

अब मैं सरकारी प्रशासन-तन्त्र में भारतीय भाषाओ की सवैधानिक स्थिति क्या है ? इस विषय पर कुछ चर्चा करूंगा। सविधान के भाषा परक अध्याय में हिन्दी एव अन्य भारतीय भाषाओं को सिद्धान्त रूप मे, एक उच्च स्थान दिया गया है। लेकिन व्यवहार मे, कथनी और करनी के बीच एक बहुत बड़ा अन्तर है। इसका मुख्य कारण सरकार की इस विषय मे उदासीनता और राजनैतिक आकांक्षा का अभाव ? इसके अतिरिक्त दूसरा कारण है हमारे देश की अफसर-शाही का अंग्रेजी भाषा के प्रति मोह जो अंग्रेजों के चले जाने के बाद आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। अन्यथा और कोई कारण नहीं है जो हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ को उनका वांछित पद देने मे बाधक हो ? कुछ ऐसे राज-नेताओं को छोड़ कर, जो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए भाषा का अस्त्र के रूप में दुरुपयोग करते हैं, सारा देश चाहता है कि अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जाय, जिनमें हिन्दी का स्थान सर्वोच्च है। विभिन्न प्रान्तों मे क्षेत्रीय भाषा का उपयोग होना ही चाहिए।

अपने इस सक्षिप्त भाषण को समाप्त करने से पूर्व मैं कहना चाहता हूं कि मैं सब भारतीय भाषाओ को, जिनमे लिखित साहित्य उपलब्ध है 'राष्ट्र-भाषा' घोषित किए जाने के पक्ष मे हू।

'दयानन्द बाल सदन, अजमेर को ५०,००० का पुरस्कार

दयानन्द बाल सदन, अजमेर को राज्य सरकार ने राज्य की सर्वश्रेष्ठ बाल कल्याण सस्था घोषित करके उसे ५०,०००) रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया है।

जयपुर में दिनांक १४-४-९२ को रविन्द्र मच पर समाज कल्याण मन्त्री की अध्यक्षता तथा जन सम्पर्क मन्त्री श्रीमति पाठक के मुख्य आतिथ्य में आयोजित एक समारोह में सन् १८९५ में स्थापित इस सस्था द्वारा कई हजार अनाथ और निराश्रित बालक-बालिकाओ को शिक्षित और दीक्षित करने का उल्लेख करते हुए उसे बाल कल्याण को सर्वश्रेष्ठ संस्था घोषित किया है।

संस्था में इस समय देश के अनेक प्रान्तों के १५० अनाथ और निराश्रित बालक-बालिकाएं हैं जिनके निःशुल्क भोजन और वस्त्र की सुन्दर व्यवस्था के अतिरिक्त उन्हे काष्ठकला और सीवनकला के औद्योगिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त कालेज स्तर तक उच्च शिक्षा की सुविधा भी निःशुल्क प्राप्त है, परिणामस्वरूप उसके अनेक भूतपूर्व छात्र आज देश में ही नहीं अपितु विदेशों मे ऊंचे पदों पर कार्यरत हैं। बाल सदन अब केवल राज्य स्तर की नहीं अपितु अखिल भारतीय स्तर की एक प्रतिष्ठित बाल कल्याण सस्था समझी जाने लगी है। —आचार्य गोविन्दसिंह, मन्त्री

द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन के प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित यह भारतीय भाषा सम्मेलन सर्वसम्मति से निम्नलिखित संकल्प पारित करता है और केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार विभिन्न प्राधिकरणों और व्यक्तियों से यह आग्रह करता है कि उन्हें लागू करने में वे अपना पूर्ण सहयोग और समर्थन प्रदान करें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रस्तुत मुख्य प्रस्ताव

देश के सभी प्रदेशों से आए हुए विभिन्न भाषाई संगठनों के प्रतिनिधियों की यह सभा अपने इस विश्वास को पुन: दुहराती है कि समस्त भारतीय भाषायें एक जोड़ने वाली शक्ति हैं, जिनका मूलस्रोत एक है, जिनके गुण समान हैं, जिनका व्याकरण और विचारों को अभिव्यक्त करने की शैली भी एक प्रकार की है।

आज की परिस्थिति में, जबकि अनेक विघटनकारी शक्तियां प्रत्येक विषम परिस्थिति का दुरुपयोग करके देश को और अधिक खंडित करने का प्रयत्न कर रही हैं, सभी देश भक्त संगठनों को इन विनाशकारी शक्तियों को कुचल डालने का प्रण लेना चाहिए, जिससे हमारी मातृभूमि की रक्षा हो सके।

इस सभा का सुझाव है कि जनता और सरकार, दोनों ही प्रत्येक स्तर पर हर सम्भव कार्य द्वारा स्वयं को मात्र संगठनात्मक शक्ति के रूप में ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न करें। इसकी शुरूआत विभिन्न भारतीय भाषाओं से एक ऐसी शब्दावली तैयार करके की जा सकती है जिनका स्वरूप और अर्थ एक समान हों ऐसे शब्दों का भी चयन किया जाना चाहिए, जिनका विभिन्न भाषाओं में स्वरूप और निर्माण व्यवस्था अलग-अलग होते हुए भी उनका अर्थ एक समान हो।

यह सभा यह सुझाव भी देना चाहती है कि भारतीय मूल की सब भाषाओं की अपनी-अपनी लिपि के साथ-साथ उनके लिए देवनागरी को भी एक अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रयोग किया जाय इस प्रकार सब भाषाओं को एक दूसरे के निकट आने का अवसर मिलेगा, और हर भाषा-भाषी एक दूसरे के विचारों और भावनाओं को अच्छी तरह समझ सकेंगे।

यह सभा इस बात पर खेद प्रकट करती है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के चार दशक बाद भी सरकार भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय कार्य प्रणाली के समस्त क्षेत्रों, प्रशासन, शिक्षा तथा न्याय विधि में उनका उचित स्थान करने के लिए अपनी राजनैतिक आकांक्षा का परिचय देने में असफल रही है।

यह सभा स्पष्ट करना चाहती है कि उनका किसी भी विदेशी भाषा के प्रति चाहे वह अंग्रेजी हो अथवा जर्मन या जापानी कोई दुर्भावना नहीं है। लेकिन वह भारतीय भाषाओं को निरन्तर अधीनस्थ स्थिति में बनाये रखना सहन नहीं कर सकती, जबकि ये भाषायें सब दृष्टि से सम्पन्न हैं और उन्हें अपने देश में सम्मान जनक स्थिति में रहने का पूर्ण अधिकार है।

यह सभा आशा करती है कि सरकार अधिक देर न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने का प्रयत्न करेगी।

अन्य प्रस्ताव

१—भारत के सभी शासकीय पदों में और सरकारी उपक्रमों के अधीन पदों में भर्ती की परीक्षा और साक्षात्कार में प्रत्याशियों को हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दी जाय तथा प्रश्नपत्र हिन्दी में उपलब्ध कराए जावें।

२—हिन्दी का सम्यक ज्ञान रखने वाले कुछ व्यक्ति संघ लोक सेवा आयोग, लोक सेवा उपक्रमों के भर्ती संगठन आदि में नियुक्त किए जाएं।

३—सम्मेलन राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री से यह विशेष अनुरोध करता है कि सभी शासकीय समारोहों में वे भारतीय भाषा का ही प्रयोग करें।

४—हमारे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, लोकसभा अध्यक्ष तथा अन्य मन्त्री और शिष्टमंडल जब विदेश जाएं तो वहां वे समारोह और औपचारिक कार्यक्रमों में भारतीय भाषा का ही प्रयोग करें।

५—केन्द्र सरकार और दिल्ली प्रशासन को अच्छे स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की स्थापना में और विद्यमान हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के स्तर के उत्थान के लिए पर्याप्त सहयोग और सहायता प्रदान करनी चाहिए। जिससे हिन्दी माध्यम के छात्र पीछे न रहें।

६—दिल्ली विश्वविद्यालय में पहले चरण में कला, वाणिज्य और विधि में हिन्दी माध्यम से शिक्षण करने की व्यवस्था तुरन्त की जाए।

७—संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदनों पर विचार करके जो विभिन्न राष्ट्रपति आदेश निकाले गए हैं उनका अनुपालन न होना राष्ट्र के लिए लज्जाजनक है और प्रशासन के लिए कलंक है। केन्द्र सरकार तुरन्त राष्ट्रपति आदेश के पूर्ण अनुपालन की व्यवस्था करें।

८—१९६८ में संसद ने और १९९१ में लोकसभा ने राजभाषा के सम्बन्ध में जो संकल्प पारित किए हैं उनके अनुसरण में केन्द्र सरकार त्वरित कार्रवाई करे।

९—दूरदर्शन और आकाशवाणी के कार्यक्रमों और समाचार प्रसारण में मानक शब्दावली का प्रयोग न करके भाषा को अरबी, फारसी के शब्दों का प्रयोग करके अवैधानिक और दुरूह बनाया जा रहा है। इन प्रसार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग हो। हिन्दी को भ्रष्ट नहीं किया जाए।

१०—यह लज्जास्पद है कि उच्चतम न्यायालय में आज भी हिन्दी के प्रयोग की अनुमति नहीं है। केन्द्रीय सरकार अधिनियम बनाकर हिन्दी के प्रयोग की अनुमति प्रदान करे।

११—दिल्ली स्थित न्यायालयों में साधारण वादकारी और न्यायाधीश के बीच खड़ी भाषा की दीवार को हटाना आवश्यक है। दिल्ली उच्च न्यायालय में हिन्दी में कार्य करने की अनुमति दी जाए और जिला स्तर तक के न्यायालयों में हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य किया जाए।

१२—राजभाषा अधिनियम की धारा ७ का संशोधन करके उच्च न्यायालय के ऐसे प्रत्येक निर्णय का जो भारतीय भाषा में दिया गया है अनिवार्यत: अंग्रेजी में अनुवाद की व्यवस्था समाप्त की जाए।

१३—जो भी औषधियां, खाद्य या अन्य उपभोक्ता सामग्री पैक करके विक्रय की जाती हैं उन पर जिस क्षेत्र में वह विक्रय के लिए रखी जाती है, उस क्षेत्र की प्रधान भाषा में समस्त विवरण लिखना कानून द्वारा अनिवार्य किया जाए जिससे साधारण व्यक्ति यह जान सके कि वह क्या क्रय कर रहा है, उसका भार क्या है और कीमत क्या है। इससे साधारण उपभोक्ता अपने हित की रक्षा कर सकेगा।

१४—आठवीं अनुसूची की उपयोगिता समाप्त हो गई है अतएव उस का निरसन कर दिया जाय और हमारे देश की जिन भाषाओं का लिखित साहित्य है उन सब भाषाओं को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया जाये।

१५—प्रत्येक प्रदेश में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा की लिपि के साथ-साथ देवनागरी लिपि भी सिखाई जाए।

हरियाणा में नैतिक शिक्षा में पास होना अनिवार्य होगा : भजनलाल

हरियाणा में नए सत्र से सभी सरकारी शिक्षण संस्थाओं में नैतिक शिक्षा विषय लगाया जाएगा जिसमें पास होना सभी छात्रों के लिए आवश्यक होगा यह घोषणा हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल ने हिसार में आर्य महासम्मेलन में की उन्होंने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को देश की आजादी की सुरक्षा करने के लिए काम करने को कहा क्योंकि देश को आजाद कराने में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उन्होंने नारी शिक्षा को फैलाना और दहेज जैसी बुराइयों को मिटाने के लिए आह्वान किया।

समारोह की सफलता हेतु डा० धर्मदेव विद्यार्थी के उत्तम संयोजन की सराहना की गई जिन्होंने टोहाना से समस्त कार्य का संचालन किया। समारोह दो दिन चला जिसमें विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसका स्थान-२ पर स्वागत किया गया समारोह में लगभग एक लाख लोगों ने भाग लिया।

प्राच्य विमान विद्या संशोधक, श्री शिवकर बापूजी तलपदे

—प्रा० कुशलदेव व्याकरणाचार्य, विद्याभास्कर

प्राच्य विमान विद्या संशोधक श्री शिवकर बापूजी तलपदे का जन्म ईस्वी सन् १८६४ में हुआ था। महाराष्ट्र की सुप्रसिद्ध और सर्वोत्कृष्ट चित्र-शाला 'जे०जे० स्कूल आफ आर्ट, मुंबई' में चित्रकला के शिक्षक थे। इसी जीवनकाल में आपने वेदादिक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर आधुनिक प्रथम विमान बनाने का प्रारम्भिक प्रयोग किया था। जिस समय आप यहां शिक्षक थे, तो उसी समय श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने उक्त स्कूल में एक विद्यार्थी के रूप में प्रवेश किया था। वे तलपदे जी से केवल तीन वर्ष छोटे थे। सम्भव है इन दोनों वैदिक विद्वानों ने विमान बनाने के सिलसिले में एकाधिक बार विचार विमर्श किया हो। श्री तलपदे ने 'प्राचीन शास्त्र का भूताथ दर्शन', 'गुरुमन्त्र महिमा' और 'प्राचीन विमान कला' नामक तीन ग्रन्थों की रचना की थी। उनके शास्त्राध्ययन और अध्यवसाय को देखकर कोल्हापुर (करवीर) के श्रीमत् शंकराचार्य जी ने उन्हें विद्या प्रकाश प्रदीप' नामक उपाधि से विभूषित किया था।

सन् १८९५ में चौपाटी पर जो विमान उड़ाने का सफल प्रदर्शन किया उसके निर्माण में श्रीमती तलपदे के अतिरिक्त मुम्बई के पब्लिक वर्क्स विभाग के वास्तुशास्त्रविद् श्री पिटकर का भी उल्लेखनीय सहयोग था। तलपदे जी ने इस स्वनिर्मित विमान का नाम 'मरुत्सखा' रखा था। तत्का-लीन शासक और शासितों द्वारा यथोचित प्रोत्साहन एवं समुचित सुविधा के न मिल पाने के कारण १८९५ के बाद वे विमान विद्या के क्षेत्र में और अधिक प्रगति नहीं कर पाये। सम्भवतः अंग्रेज शासकों को यह पसन्द नहीं था कि यूरोपीय वैज्ञानिकों से पहले भारतीय वैज्ञानिक को विमान विद्या संशोधक का श्रेय मिले। उन्होंने सन् १९०४ से १९०६ तक मराठी में 'आर्य धर्म' मासिक का भी संपादन किया। मुम्बई के चीरा बाजार में स्थित 'डुकरवाड़ी' में रहते थे। वे प्राच्य विमान विद्या संशोधक के साथ-साथ एक आर्टिस्ट और फोटोग्राफर के रूप में भी प्रसिद्ध थे।

सन् १९०४ में अपने फोटो-ग्राफिक स्टूडियो को वेदधर्म प्रचारिणी सभा' का कार्यालय भी बना दिया था। यथोपलब्ध विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती विनिर्मित 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका', 'सत्यार्थप्रकाशादि, साहित्य को पढ़कर 'शामराव कृष्ण आणि मंडली' तथा 'वेदधर्म प्रचारिणी सभा' के सम्पर्क में आकर अथवा प० चिरंजीलाल वर्मा, प० रामकृष्ण जी शर्मा और स्वामी नित्यानन्द जी के सान्निध्य में रहकर वे सन् १८८५ के आस पास स्वामी दयानन्द और वेदोक्त धर्म के सर्वात्मभाव से अनुयायी बन गये थे और आर्य समाज के सम्पर्क में आने के दस वर्ष बाद ही उन्होंने मुंबई की चौपाटी पर हजारों लोगों की उपस्थिति में आकाश में विमान उड़ाने का यशस्वी प्रयोग किया था।

इस समय तक विमान विद्या संशोधन के क्षेत्र में यूरोप और अमेरिका को भी सफलता प्राप्त न हो पाई थी। राईट बन्धु का ऊट प्लेन के नाम अभी तक दुनियां के सामने नहीं आये थे। ऐसे समय में एक आर्य समाजी वैदिक विद्वान द्वारा किया गया प्रयोग वस्तुतः अभिनन्दनीय और स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय है। विशेष बात यह थी कि इस प्रयोग की कल्पना और इस की समस्त साहित्य सामग्री पूर्णतः स्वदेशी थी। पाश्चात्य जगत से वह उधार रूप में बिल्कुल भी नहीं ली गई थी। आश्चर्य है—ऐसे अप्रतिम आर्यावर्तीय आर्य विद्वान का नामोनिशां कहीं भी नजर नहीं आता। आशा है अब तक जो अनजाने में उनकी उपेक्षा हुई है वह आगे फिर कभी नहीं होगी। 'विमान विज्ञान विश्व' से जुड़े आर्यसमाज के इस स्वर्णिम अध्याय को अब हम सदा-सदा के लिए संजोकर रखेंगे, क्योंकि जो कौम गाती नहीं वह मिट जाती है।

शिवकर बापू तलपदे और आर्य समाज

'विज्ञान कथा' के लेखक प्रह्लाद नारायण जोशी के अनुसार श्री तल-पदे आर्यसमाज के अनुयायी थे। इसीलिए वैदिक वाङमय के विषय में उनके अन्तःकरण में विशेष प्रीति थी। 'अर्वाचीन भारतीय वैज्ञानिक' के लेखक प्रो० मालवा केलकर के अनुसार भी तलपदे आर्य समाज के अनुयायी थे और उनकी यह श्रद्धा थी कि अगत ज्ञान-विज्ञान वैदिक साहित्य में परिपूर्ण रूपेण संचित और समाविष्ट है।

आधुनिक युग के अप्रतिम वैदिक विद्वान स्वामी दयानन्द ने तलपदे की कर्मभूमि मुम्बई की कुल पांच बार यात्रा की थी और इस समय तलपदे की आयु १० ११ १२ और १८ वर्ष की थी। बिना आधार के यह कह पाना सम्भव नहीं है कि इस कालावधि में वे स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में कभी आ भी पाये थे या नहीं। स्वामी जी विरचित ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका' का प्रकाशन मई १८७७ में हुआ था, जिसका एक अध्याय विमान विद्या से सम्बन्धित है। शत-प्रतिशत यह कहना कठिन है कि विमान बनाने से पूर्व यथासमय श्री तलपदे के हाथों तक स्वामी जी की यह कृति पहुंची थी या नहीं। तलपदे जी ने जब १८९५ में विमान का प्रदर्शन किया था तब उनकी आयु केवल ३१ वर्ष की थी।

स्वामी जी द्वारा लिखे गये ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'नौ-विमानादि प्रकरण' के सन्दर्भ में बहुत से लोगों का यह कहना है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पाश्चात्य वैज्ञानिक उन्नति को देखकर वेद से भी उन्हीं बातों को दिखाने का प्रयत्न किया है', पर महामहोपाध्याय प० युधिष्ठिर मीमांसक के कथनानुसार—"वस्तुतः यह कथन ठीक नहीं है क्योंकि पाश्चात्य देशों में सन १९०१ में विमान की प्रथम उड़ान हुई थी, परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन १८७६ में यह पुस्तक लिखी थी। स्वामी जी ने जो कुछ लिखा है, वह भारतीय वाङमय के आधार पर ही लिखा है। रामायण, महाभारत और संस्कृत ग्रन्थों में विमान का वर्णन भरा पड़ा है। राजा भोज के समराङ्गण-सूत्र-धार' ग्रन्थ (११ वीं शती) में विमान बनाने का संक्षेप में वर्णन मिलता है।

जैसी आपत्ति स्वामी दयानन्द की विमान विद्या के प्रकरण के विषय में उठाई गई है वैसे ही या उससे मिलती-जुलती आपत्ति तलपदे जी द्वारा प्रस्तुत प्राचीन विमान कला के सन्दर्भ में लोगों द्वारा उठाई जा सकती है। वे यह भी कह सकते हैं कि 'उनका विमान विद्या विषयक ज्ञान तो विदेशियों के ही माध्यम से अपने तक पहुंचा है। पर उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए। कि विमान आविष्कारक के रूप में राइट बन्धुओं के सुप्रसिद्ध होने से भी पांच वर्ष पूर्व न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे और बड़ोदा नरेश सयाजी-राव गायकवाड़ की उपस्थिति में तलपदे जी ने पूर्ण स्वदेशी उपकरणों के आधार पर मुंबई में विमानोड्डान का सफल प्रदर्शन प्रदर्शित किया था।

आर्य समाज और शिवकर बापूजी तलपदे के अन्तः सम्बन्धों को स्पष्ट रूप से जानने के लिए १८८५ में स्थापित 'शामराव कृष्ण आणि मंडली' और सन् १८८६ में स्थापित 'वेदधर्म प्रचारिणी सभा' नामक दो आर्यसमाजी संस्थाओं का इतिवृत्त जान लेना जरूरी है जिससे यह स्पष्ट होता है कि श्री शिवकर बापू तलपदे स्वामी दयानन्द और आर्य समाज की विचारधारा में केवल एक रूप ही नहीं थे अपितु वे आर्य समाजमय हो गये थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के तो वे अप्रतिम भक्त थे। उनके द्वारा सम्पादित 'आर्य धर्म' मराठी मासिक के अंक भी इस तथ्य के साक्षी हैं।

(क्रमशः)

सन्ध्या—एक चिन्तन

देवनारायण भारद्वाज

वैदिक जीवन पद्धति मे पञ्च महायज्ञो का पालन अनिवार्य है। उनमें से सर्वप्रथम महायज्ञको ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। यज्ञ आयोजनमे अग्नि समिधा और हवि की आवश्यकता होती है। हृदय रूपी समिधा मे प्रज्वलित अग्नि परम ब्रह्म रूपी अग्नि मे आत्मारूपी हविकी आहुति-अर्पण ही ब्रह्मयज्ञ है। इसी प्रकार शास्त्र रूपी समिधा से प्रकट शब्द ब्रह्मरूपी अग्नि मे बुद्धिरूपी हवि की आहुति अर्पण भी ब्रह्म यज्ञ है। अर्थात् शब्द ब्रह्म को पकड़ कर परम ब्रह्म तक पहुचने की सारी प्रणाली ब्रह्म यज्ञ है। अधिक स्पष्टता की दृष्टि से कहा जा सकता है कि स्वाध्याय और सन्ध्या दोनो ही ब्रह्मयज्ञके अन्तर्गत आते है। सन्ध्या शब्द किन्ही दो वस्तुओ मे सन्धि या एकता होना भी इंगित करता है। पुस्तको के शब्दो में संचित ज्ञान राशि से हमारी बुद्धि की सन्धि होना जहा एक ओर स्वाध्याय है, वही समस्त ज्ञान के स्रोत परमपिता परमात्मा से आत्मा की सन्धि होना सन्ध्या कहलाता है। सन्ध्या कब होती है जबदिन चलते-चलते रात्रिके समीप आजाता है, उससे मिलने लगता है—वे ही मनोरम क्षण सन्ध्या कहलाते है। इसी प्रकार जब रात्रि बढ़ते-बढ़ते दिवस की ओर पहुचने लगती है, इसी मिलन को सन्ध्या कहते हैं।

सायंकालीन सन्ध्या सन्ध्या ही रह जाती है क्योकि इसके उपरांत अंधेरा घिरने लगता है, जबकि प्रातःकालीन सन्ध्या को एक दूसरा चमकता नाम मिल जाता है उषा, क्योकि अन्धकार सिमटकर प्रकाश के लिए मार्ग प्रशस्तकर देता है। इन दोनो ही अवसरों पर लगभग एक समान ही मनोहारी अवलोक दृश्य दिखाई देने लगते हैं। सूर्योदय के समय जो दिनकर अपनी अरुणिम आभा से प्रकट होता है, सूर्यास्त के समय भी वह अरुणिम आभा के साथ ही विदाई लेता है। दोनो ही समय की अरुणाभ तरगे सम्पूर्ण प्रकृति को जहाँ सौन्दर्य प्रदान कर देती हैं, वही उसे शांति सौम्यता का वरदान भी दे देती हैं प्रकृति ही क्या प्राणिमात्र-मानव पशु-पक्षी, वृक्ष-वनस्पति सभी अपने अन्तस्तल मे विश्रान्ति और शान्ति का अनुभव करते हैं इसीलिए यह सन्धिकाल आत्मा के परमात्मा में विलयके लिए, आत्म परमात्म मिलनके लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है। मानव के हृदय स्थलमें परमात्मा आत्मा सदैव मिले रहते हैं प्रत्युत परमात्मा की गोदमे आत्मा, अथवा आत्मा के सूक्ष्म कलेवर मे परमात्मा के अति सूक्ष्म अस्तित्व का प्रकाश होता है। आवश्यकता इस मिलन की अनुभूति की है। इसी अनुभूति का माध्यम सन्ध्या है।

सन्ध्या' अपने शाब्दिक परिवेश मे "सम्यक् ध्यान" की ओर संकेत करती है। अपने हृदयमे स्थित आत्मामे सन्निविष्ट परमात्माका ध्यानकरना ही सन्ध्या है। अपने शरीर के अंग-प्रत्यंग का ध्यान, सृष्टि के अंग उपांग का ध्यान प्राणिमात्रके संग एवं उनका ध्यान करते हुए, अपने सपूर्ण ध्यानको इन सबके निर्माता विधाता प्रभुपर केन्द्रित करना ही सम्यक् ध्यान है। कोईभी आस्तिक मानव ज्ञान, कर्म और उपासना की त्रिक के बिना नहीं रह सकता है। उसे यह तीनो किसी न किसी रूपमे करने ही पड़ते हैं। आत्माकी सन्धि ज्ञानसे हो जाये, ज्ञान की सन्धि कर्मसे हो जाये ज्ञान कर्म मिलकर उग्र उद्दण्ड न हो जायें, इसलिए इनकी सन्धि भी उपासना मे हो जाये—यही तो सन्ध्या है। स्वाध्याय केवल अध्ययन मात्र न रह जाये, पुस्तकीय ज्ञान मात्र न रह जाये। इसमे स्व' का अध्ययन भी हो। यह स्व' जो सृष्टिसे लेता है केवल लेताही नही देता भी है सृष्टि को यह स्व समाज से लेता है केवल लेता ही नही, उसे कुछ देता भी है, समाज को, इन सबका अध्ययन हो तो स्वाध्याय है। स्व' की सृष्टि समाज में सन्धि और 'स्व की सर्वस्व प्रभु से सन्धि हो तो सही रूप मे सन्ध्या है।

सृष्टि मे सब है किन्तु उसमे तेजस्व कहा है? तेजस्व' तो सर्वस्व' मे ही है। इसी सर्व' के सहारे से स्व का 'सर्वस्व' मे विलीनीकरण ही सन्ध्या है। सर्वस्व मे ही तेजस्व है तेजस्व मे ही वर्चस्व है यही तेज एवं वर्चस्व का कृतित्व मे ढल जाना ही सन्ध्या का सुफल है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास मे हमे ऐसी ही दिशा दृष्टि मिलती है।

> य मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति,
> यद्वाचा वदति तत् कर्मणा करोति,
> यत् कर्मणा करोति तदभिसम्पद्यते।

जीव जिसका मन से ध्यान करता है, उसको वाणी से बोलता है, जिसको वाणी से बोलता है, उसको कर्म से करता, जिसको कर्म से करता उसी को प्राप्त होता है। 'सत्य ज्ञानमनन्त ब्रह्म'' यह तैत्तिरीयोपनिषदका वचन है। जो पदार्थ हैं उनके सत कहते हैं उनमे साधु होने से परमेश्वरका नाम सत्य' है। जो जानने वाला है, इससे परमेश्वर का नाम ज्ञान है। जिसका अन्त अवधि मर्यादा अर्थात् इतना लम्बा चौड़ा, छोटा-बड़ा है, ऐसा परिमाण नहीं है, इसलिए परमेश्वर के नाम सत, ज्ञान और अनन्त हैं। यही ब्रह्म है और इसी से आत्मा का मिलन सन्ध्या है। लोहा अग्नि में पड़कर न केवल रंग-रूप में अग्नि सदृश हो जाता है, प्रत्युत उसमे, अग्नि को ऊष्मा एवं ऊष्णता भी तो आ जाती है। यह लौह पुरुष उस अग्नि पुरुष से मिलकर ऐसी ही एक रूपता स्थापित कर लेता है।

> यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्।
> स्युष्टे सत्या इहाशिष ॥ ऋ० ८-४४-२३

हे (अग्ने) प्रकाश स्वरूप (यत् अहम् त्व स्याम्) जब मैं तू हो जाऊं (वा घा) अथवा (त्व अह स्या) तू मैं हो जायें तो (ते इह आशिष) तेरे इस संसार के सब आशीर्वाद (सत्या. स्यु) सत्य सफल हो जायें।

स्वका अध्ययन करना ही स्वाध्याय है। इन्द्रिय संयम चित्त की एकता बुद्धि वृद्धि, लोकोपकार तथा यश प्राप्ति आदि जीवन की सफलता के सभी सूत्र इस स्वाध्याय से जुड़ जाते हैं। सूर्य का गमनागमन, चन्द्रमा का अनुक्रमण नक्षत्रो का परिक्रमण, सरिताओ का प्रवहन जिस प्रकार नित्य नियमित चलता है उसी प्रकार स्वाध्याय नित्य नियमित निश्चित रूपेण चलना चाहिए। इसके लिए कोई एक सद्ग्रन्थ हो नही, उसके एक शब्द का चिन्तन भी कम नही है। स्वाध्याय मे भव और शर्व दोनो की समझ आती है। अपने 'स्व' को दोनो की ही आवश्यकता है।

> नम. सायं नम प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा।
> भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नम ॥
> अथर्व० ११-२-१६

सायंकाल, प्रातःकाल की सन्ध्या स्वाध्याय से और रात्रि दिन मे इसके उपयोग से शर्व-दुःख नाशक प्रभु और भव-सुखदायक सृष्टि दोनो का हम सम्पादन करते हैं। पहले जो 'सर्वस्व' का सर्व था—वह अब शर्व के रूप मे मुखर हो उठा है। भव और सर्व (शर्व) दोनो मिलकर तो २४ घण्टे चिन्तन का विषय हो सकते हैं, किन्तु कोई एक नही और शर्व तो बिल्कुल नहीं। जैसे प्रातः सायं थोड़ी-थोड़ी देर के लिए हम आहार करते हैं, किन्तु उसका शरीर के लिए उपकार और समाज के लिए व्यवहार शेष समस्त समय के लिए चलता है, किन्तु हम निरन्तर २ घण्टे खाते ही रहें तो यह हमारे लिए संहार बन जाता है। स्वाध्याय सन्ध्या का अल्पकालिक चिन्तन मनन ध्यान सम्पूर्ण रात्रि-दिवस के आचार-व्यवहार का आधार बना रहता है, यदि हम उसे प्रयोग मे न लाकर केवल चिन्तन ही करते रहे, तो यह भी हमारे लिए संहार का कारण बन सकता है। सन्ध्या-स्वाध्याय के इस ब्रह्मयज्ञ की तैयारी ब्रह्मचर्य के साथ ब्रह्म मुहूर्त में करना इसलिए आवश्यक है, क्योकि ब्रह्म मे विचरण के लिए शरीर को संयमित रखते हुए सूर्य के निकल आने पर हमे शत्र से भव के भण्डार की पालना भी तो करनी हैं। इस प्रकार समय न होने की कोई समस्या ही शेष नहीं रह सकेगी।

हम सन्ध्या से सम्यक् रूपेण ध्यान लगाने चले हैं, फिर कोई बाधा भी नही आनी चाहिए। यही एक बाधा क्या कम हैं, जो हमारे शिर के केश बिखर रहे हैं तथा शिखर पर स्थित शिखा भी उछल कूद कर रही है। हमारी एक शिखा के मूल मे सैकड़ो बाल जुड़े रहते हैं, यह सभी तो हमारे, विचारों एवं भावनाओं के प्रतीक हैं, यदि यही विचार अव्यवस्थित रहे तो हमारा सम्यक् ध्यान कहा सम्भव हैं। इसलिए गुरुमन्त्र गायत्री पढ़कर इस शिखा की शिखाओ को ग्रन्थित कर दो। शिर-शिखा के बाल गुथ जाने पर जहा एक ओर व्यवस्था एवं सुन्दरता हमें प्रदान कर देते है, वही दूसरी ओर आन्तरिक शान्ति सम्पन्नता की ओर बढ़ने का संकेत भी हमे देते हैं। जिसके सफाट शिर पर इन बालो का बवाल नही हैं, उसे फिर ऊपर की क्या चिन्ता, पर आन्तरिक विचार बन्धन तो उसके लिए भी आवश्यक हैं।

—एफ-४२, मानसरोवर कालोनी, रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ प)

आदि मानव कहां पैदा हुआ था ? (३)

—विश्वनाथ प्रसाद, वि० वाचस्पति, कोरबा

ईसाई होते हुए भी डा० विल्सन सत्यता को न छिपा पाए। उनको अपनी खोज के अनुसार स्वीकार करना पड़ा कि आदि मानव दो लाख वर्ष पूर्व मे उत्पन्न हुआ था न कि बाइबिल के अनुसार आठ हजार वर्ष पूर्व मत मतान्तरो के अनुमानित गणना पर यह स्पष्ट विज्ञान की विजय है।

(१२) चीन के भू वैज्ञानिको ने अपनी खोजबीन के आधार पर दावा किया है कि पृथ्वी पर जीवन एक अरब ८० करोड़ वर्ष पुराना है जैसे विश्व में इस दिशा मे अब तक की खोज के आधार पर वैज्ञानिको का मानना है कि पृथ्वी पर जीवन एक अरब ७० करोड़ वर्ष पुराना है चीना सवाद समिति सिन हुआ ने खबर दी है कि यह घोषणा चीन के एक शोध कर्ता ने भू विज्ञान एव खनिज अनुसधान सस्थान म प्रो० केम्बियन भू विज्ञान पर आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सगोष्ठी मे का गुरुवार को समाप्त हुई इस गोष्ठी में अमरीका सोवियत सघ आस्ट्रिया ब्रिटेन फ्रास पश्चिम जर्मनी और चीन के भूवैज्ञानिको ने भाग लिया।

(नवभारत जयपुर १९ सितम्बर ८३)

जिस प्रकार बाइबिल मनुष्योत्पत्तिकाल बताने मे असमर्थ है उसी प्रकार पाश्चात्य वैज्ञानिक भी पृथ्वी की आयु और मनुष्योत्पत्ति काल निकालने में हताश हो रहे है इसलिए मनुष्योत्पत्ति काल और पृथ्वी की सच्ची आयु कल्पना के आधार से निकल ही नही सकती इनका सच्चा हिसाब कल्पना से नही प्रत्युत आर्यों के सृष्टि सवत् से ही ज्ञात हो सकता है।

आगे हम आर्यों के वैदिक सवत की पड़ताल करते हैं और देखते है कि उससे मनुष्योत्पत्ति काल कब निश्चित होता है। आर्यो का वैदिक सवत् हिन्दुओ पारसियो क्लदानियनो और बेबिलोनियावासियो मे एक समान ही पाया जाता है और हिन्दुओ के दैनिक सकल्प में रोज पढा जाता है। सकल्प का सारांश इस प्रकार है—द्वितीयपरार्द्धे वैवस्वतम वतरे अष्टाविंशति कलौ युगे ५०८९ गताब्दे अर्थात् यह वैवस्वत मनु का अट्ठाइसवा कलि है जिसके ५०८९ वर्ष बीत चुके हैं। ब्रह्मा के एक दिन को कल्प अथवा सृष्टि समय कहते हैं। यह कल्प १४ मन्वन्तरो अथवा एक सहस्र चतुर्युगियो का होता है। अब तक छः मन्वन्तर बीत चुके हैं। एक मन्वन्तर लगभग ७१ चतुर्युगियो का होता है। वैवस्वत मनु की २७ चतुर्युगी बीत चुकी है २८वी में भी (कृत त्रेता और द्वापर) तीन युग बीत चुके हैं। गणित करके देखा गया है कि इस गणनाके अनुसार सृष्टि उत्पत्ति को अब तक १९७२९४००८९ वर्ष बीत चुके हैं।

सृष्टि की वर्ष सख्या कुछ कम दो अरब के करीब है पर यह समय मनुष्यो की उत्पत्ति का नही है। यह समय सृष्टि की उत्पत्ति के आरम्भ से लेकर आज तक का है। सृष्टि उत्पत्ति तब से मानी जाती है जब से सृष्टि का बनना आरम्भ हुआ। वह यह समय है जब प्रलय का समय पूरा होकर सृष्टि का बनना आरम्भ होता है अर्थात मुक्त प्रकृति का परस्पर सघात आरम्भ होता है और परमाणु से द्वयणुक आदिक बनने आरम्भ होते है। इस समय से लेकर सूर्य ग्रह नक्षत्र आदि बनने तक के समय को स्वायम्भुव मनु कहते हैं। स्वायम्भुव मनु के समय मे उत्पन्न उत्तानपाद और ध्रुव आदि नक्षत्र आकाश मे मौजूद है जिस प्रकार स्वयम्भु मनु के समय नाक्षत्रिक जगत तैयार हुआ उसी तरह दूसरे स्वारोचिष मनु के समय मे पृथिवी से चन्द्रमा जुदा हुआ। चौथे मनु मे समुद्र से भूमि निकली पाचवें मे वनस्पति हुई छठव मे पशु हुए और सातव वैवस्वत मनु मे मनुष्यो का जन्म हुआ। इसका हिसाब इस प्रकार है —

सत्ताइस चतुर्युगियो के	११ ६६ ४० ००० वर्ष
सतयुग के	१७ २८ ००० वर्ष
त्रेतायुग के	१२ ९६ ००० वर्ष
द्वापर युग के	८ ६४ ००० वर्ष
आज तक कलियुग के	५ ०८९ वर्ष
वैवस्वत मनु से आज तक का योग	१२ ०५ ३३ ०८९ वर्ष

हमारे हिसाब और विश्वास के अनुसार मनुष्यो को पैदा हुए भी आज इतना ही समय हुआ।

यहा तक हमने आदिम स्थान के विषय मे उपलब्ध मतमतान्तरो की आलोचना करके देखा तो एक भी ऐसा मत न निकला जो किसी अकाट्य सिद्धात पर स्थित हो इसलिए हम चाहते हैं कि आदिसृष्टि का मूल स्थान निश्चित करने के लिए कुछ परीक्षाय निश्चत की जाय तथा ऐसी कसौटी बनाई जाय जिसके अनुसार मूल स्थान का निश्चय किया जा सके।

आदिमस्थान की सात कसौटिया हैं —

(१) यह स्थान ससार भर में सबसे पुराना और ऊचा हो।

(२) उस स्थान मे सरदी और गरमी जुड़ती हो।

(३) उस स्थान मे मनुष्य की प्रारम्भिक खुराक फल और अन्न मिलते हो

(४) उस स्थान मे अब भी मूल पुरुषो के वर्ण रूप के मनुष्य बसते हो

(५) उस स्थान के आस पास ही सब रूप रगो के विकास और विस्तार की परिस्थिति हो।

(६) उस स्थान का नाम सभी मनुष्य जातियो के स्मरण मे हो। विशेषकर भारतीय आर्यों और ईरानियो के यहा तो स्पष्ट लिखा हो कि मनुष्य अमुक स्थान मे उत्पन्न हुआ क्योकि आर्यो की यही दो जातिया शेष हैं।

(७) यह स्थान उच्चकोटि के देशी और विदेशीय विद्वानो के अनुमान के बहुत विरुद्ध न हो। (क्रमशः)

योग नवयुग की संजीवनी

डा० एस. के. भटनागर हैल्थ होम शकरपुर, दिल्ली

लक्ष्मण को मृत्युमुख से बचाने के लिए संजीवनी बूटी की आवश्यकता पड़ी थी। क्या नवयुग भी मृत्युमुख में आ चुका है अथवा उसके पाश में पूर्णतया आबद्ध होकर दम तोड़ने के लिये छटपटा रहा है। यदि उत्तर हाँ में है, तब उसकी छटपटाहट से मृत्युपाश और अधिक जकड़ते जायेंगे तथा मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की उचित चरितार्थ होती जायेगी।

आइये सर्वप्रथम मृत्युपाश में फंसाने वाले कारणों व परिस्थितियों पर विचार करें, आज के युग को लोग वैज्ञानिक, यान्त्रिक औद्योगिक, अणुशक्ति, उपग्रह, अन्तरिक्ष, तथा तनावपूर्ण युग······आदि की संज्ञा देते हैं, जिसमें मल शरीर को तथा माल मस्तिष्क को परेशान कर रहा है। विजातीय तत्वों का शरीर से समुचित निष्कासन न होने पर मनुष्य डाक्टरों के चक्कर की चक्की में पिस रहा है। माल (कनक) की प्राप्ति मात्र से वह बौखला उठा है:—

> कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय
> वा खाये बौराय है, वा पाये बौराय॥

वास्तव में अंग्रेजी भाषा के पांच पकारों (Possession, Position Power Praist, & Pleasure) ने मनुष्य का जीवन दर्शन बदल दिया है। आवश्यकता से अधिक संग्रह, उच्चस्थिति की दौड़ व होड़, शक्ति संचय, आत्म-प्रशंसा एवं 'खाओ पियो, मौज उड़ाओ' को ही मनुष्य जीवन का चरमलक्ष्य मान बैठा है "सादा-जीवन उच्च विचार (Simple Living & High Thinking) के बदले मोटे गद्दे, मोटे तकिये और मोटर गाड़ी आदि के मोटे सुखसाधन उसे मोटी मोटी बीमारियां उपहार में ला रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता के दुष्प्रभाव, आधुनिक तकनीकी और सम्मिलित परिवारों के टूटने के कारण अपनी प्राचीन भारतीय जीवन-प्रणाली छिन्न-भिन्न हो गई है। आधुनिक सभ्यता के अभिशाप ने अन्त: शरीर एवं बाह्य संसार की शांति भंग कर दी है। सुख की कामना करते हुए भी मनुष्य पहले से अधिक दु:खी है। आराम व शांति की खोज में नींद की गोलियां व अनेक औषधियां लेकर भी निरन्तर रोगी बना रहता है। स्पर्धा, महत्त्वाकांक्षा, सफलता के सन्देह ने मनुष्य का चैन छीनकर उसे कोल्हू का बैल बना दिया है। सुख प्राप्ति की दौड़ में उचित-अनुचित सभी साधन अपनाने से सामाजिक संरचना चरमरा गई है। कार्यक्रम की व्यस्तता ने जीवन के आराम के क्षण व चैन की श्वास समाप्त कर बेचैनी, अशांति व अव्यवस्था पैदा कर दी है। फलस्वरूप मनुष्य की समस्त खुशियां काफूर हो चुकी हैं। वास्तव में वह पश्चाताप कर रहा है—

> चल-चल के चूर हो गया जब कारवाने उम्र,
> हर एक कदम गलत था, मुझे अब पता चला।

विवाह-विच्छेद, पति-पत्नी की मृत्यु, निकटतम प्रिय सम्बन्धी का देहान्त, नौकरी छूटना सेवा-निवृत्ति, भारी हानि, बीमारी दुर्घटना, पारिवारिक-कलह, पैतृक स्नेह-हीनता व तिरस्कार भयंकर रूप धारण कर मानसिक तनाव उत्पन्न कर सम्पूर्ण स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। मान-अपमान, हानि-लाभ की प्रतिक्रियाओं से मन अस्थिर हो उठता है तथा कार्य की स्वाभाविक गति बिगड़ जाती है। मशीनी जीवन यापन गलत रहन-सहन गलत व बेमेल खाने-पीने, सोने और हर समय चिन्ताओं में दबकर सोचने ने शांति भंग कर दी है। पाचन-क्रिया बिगड़ना, नींद नसीब न होना, रक्तनाड़ियों का समय से पूर्व शिथिल हो जाना, दवाओं से खुश्की पैदा होना, उम्रभर बीमार रहना एक साधारण दिनचर्या बन गई है। भौतिक इच्छाओं की पूर्ति से दबाव बढ़ता है। इंगलैंड के डा० वोड़े का मत है कि क्षमता से आगे बढ़ने पर दबाव व क्रोध बढ़ता है। हृदय रोग विशेषज्ञ डा० डेटे का मत है कि दिल बैठने का मुख्य कारण दबाव है। सम्प्रति योग द्वारा मानसिक तनाव कम होने से वर्तमान युग की एक गम्भीर समस्या का समाधान उजागर हो रहा है।

दबाव व उत्तेजक परिस्थितियाँ पिट्यूटरी ग्रन्थि (शरीर को व्यवस्थित रखने वाली) को सक्रियकर शरीर व पेट में प्रतिकूल प्रभाव पैदा करती हैं। लगातार विषम परिस्थितियों व दबाव से आन्तरिक गतिविधियों के कार्य में बाधा पड़ती है। हृदय पर अधिक कार्यभार पड़ने पर मस्तिष्क थकने की सम्भावना रहती है। उपेक्षा करने पर मानसिक विक्षिप्तता, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, अल्सर, आधाशीशी, अनिद्रा, चर्म रोग, दमा, जोड़ दर्द, स्पोण्डोलाइटिस मलनिष्कासन में रुकावट, उदर रोग, अरुचि आदि बिना बुलाये आ जाते हैं। धीरे-धीरे मनुष्य की कार्यशील चिन्तन क्षमता नष्ट होने लगती है। आज के नवयुग (जिसे तनाव युग कहना अधिक समीचीन होगा) में कठोर परिस्थितियों में, थोपे रीति-रिवाजों एवं गरीबी में अकारण क्रोध आना, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, ईर्ष्या, अपराध भावना, निराशा, भय, शोर-शराबे से कष्ट व घबराहट, चंचल मन विस्मृति आदि तनाव के मुख्य लक्षण बहुतायत में दिखाई पड़ रहे हैं। सामाजिक अन्याय, गुण्डागर्दी, मिलावट, ढीला प्रशासन भी तनाव पैदा करते हैं। दबाव के कारण गुर्दे के पास एड्रिनल ग्रन्थियों से स्राव निकल कर खून में मिलता है। अत: हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। पेशियों व मस्तिष्क में जो चीनी तथा जमी हुई चर्बी होती है, वहां से रस स्राव के रूप में अलग होकर नाड़ियों को, श्वास क्रिया को तथा रक्त चाप को उत्तेजित करती है। डा० हसेले के अनुसार दबाव का पहला कारण भय दूसरा विरोध (रुकावट) तीसरा थकान है। भावनाओं का अत्यधिक वेग, दबाव व खिंचाव के कारण उत्पन्न बीमारियां प्राण-घातक सिद्ध हो रही हैं, जिनका आधुनिक चिकित्सा पद्धति में कोई समाधान नहीं है। ठीक ही कहा है—

> न साथ देंगी ये दम तोड़ती शमायें,
> नए चिराग जलाओ कि रोशनी कम है।

अमेरिका में १० प्रतिशत आदमी मानसिक तनाव से ग्रस्त हैं। भारत में यह प्रतिशत तो कम है किन्तु गांवों की अपेक्षा नगरों में तनाव खूब पनप रहे हैं। चूंकि ८० प्रतिशत बीमारियां मनोवैज्ञानिक हैं, अत: मजबूरी में मनुष्य अन्य उपचारों की ओर झुक रहा है। सौभाग्य से योगाभ्यास सब से प्रसिद्ध व प्रभावकारी उपचार पद्धति सिद्ध हो रहा है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने ठीक ही कहा था—"डाक्टरों से दूर रहने का उत्तम साधन योग है।" राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी इस ओर संकेत किया था—"जिस व्यक्ति को योग हवा, पानी का महत्व समझ में आ गया तो वह अपने शरीर पर जितना अधिकार रख सकता है, उतना एक डाक्टर भी नहीं रख सकता।"

इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वर्तमान युग अर्थप्रधान है—'य: अस्ति वित्त स नर कुलीन:" की उक्ति सर्वथा वर्चस्व प्राप्त किये हुए है, फिर भी सभी धनवान नहीं बन सकते और जो धनी हैं वे पैसे से निद्रा खरीद नहीं सकते। निद्रा के प्रमुख कारण आर्थिक चिन्तायें; मानसिक पीड़ायें दिमागी कमजोरी कब्ज गैस पाचन-क्रिया की दुर्बलता, लैक्टिक अम्ल की कमी, एवं अधिक दवाओं के प्रयोग से खुश्की बढ़ जाना, स्नायुमण्डल दुर्बल पड़ जाना, लेटकर पढ़ना, चित्त लेटकर सोना, मुलायम गद्दे का प्रयोग, शारीरिक व मानसिक श्रम का अभाव, अधिक देर से भोजन करना, रात्रि को प्रकाश में सोना, गलत दिशा में पैर पसारना (चुम्बकीय धाराओं के विपरीत) गन्दे, शोर-शराबे के वातावरण इत्यादि हैं।

गहरी नींद मनुष्य के स्वास्थ्य और लम्बी उम्र के लिये अत्यन्त आवश्यक है। यदि उपयुक्त असावधानियों के कारण यह बहुमूल्य सोना खो दिया, तब केवल योग की शय्या में ही उसकी प्राप्ति शवासन द्वारा की जा सकती है। मानसिक-स्नायु की उत्तेजना में रक्तचाप बढ़कर नींद नहीं आती। मानसिक स्नायु को योगासन द्वारा ही ढीला कर सकते हैं। मस्तिष्क को आराम देने के लिए एक ही क्रिया या अवयव पर ध्यान लगाते हैं, जबकि मन को आराम देने के लिए उज्जायी प्राणायाम का सहारा लेते हैं। इस प्रकार हृदय की स्पन्दन धीमी होने से उसका जल्दी-जल्दी धड़कने से पैदा हुआ श्रम बच जाता है। डा० ग्रीन के अनुसार ५० प्रतिशत से भी अधिक रोगों की जड़ रुग्ण मन:स्थिति है और योगासन एवं ध्यान मानसिक स्वास्थ्य और साइकोसोमेटिक रोगों के लिए रामबाण हैं। (क्रमश:)

सरकारी खर्च में कटौती के उद्देश्य से दो हजार से अधिक नौकरियां खत्म

नई दिल्ली, ४ मई। सरकार ने खर्च में मितव्यता के उद्देश्य से आज एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए सचिव तथा अतिरिक्त सचिव स्तर के २३ स्थानों समेत दो हजार से अधिक नौकरियों को समाप्त करने की घोषणा की है। इसके अलावा ४१४ अन्य स्थानों को समाप्त करने के लिए चुना गया है। इनमें सचिवालय में संयुक्त सचिव स्तर की ६९, नौकरियों के अलावा रेल मन्त्रालय के ५४ स्थान तथा अधीनस्थ स्तर की २९१ नौकरियां शामिल हैं। इन पदों की समाप्ति की घोषणा तथा सभी मन्त्रालयों के यात्रा भत्तों में बीस प्रतिशत की कटौति के अलावा नए वाहनों की खरीद पर रोक की घोषणा प्रधान मन्त्री पी. वी. नरसिम्हा राव ने स्वयं सरकारी खर्च में मितव्ययता के सम्बन्ध में बुलाई गई सचिवों की बैठक में की।

समाप्त किये गये दो हजार पदों में से ११४० के सम्बन्ध में उनकी कामकाज की समीक्षा के बाद यह पाए जाने पर निर्णय लिया गया कि उन की कोई उपयोगिता नहीं है। सभी मन्त्रालयों से कहा गया है कि वे अपने देशी और विदेशी यात्रा भत्तों में बीस प्रतिशत की कटौती करें। इससे १९९२-९३ के दौरान ही ८० करोड़ रुपये की बचत होने का अनुमान है।

नए वाहनों की खरीद पर रोक—इसी प्रकार नए वाहनों की खरीद पर रोक लगा दी गई है। यह रोक पेट्रोल तथा डीजल की खपत पर चालू वर्ष के दौरान पहले लगाई गई पाबन्दियों के अलावा है।

विभिन्न स्तरों पर इन पदों की समाप्ति का निर्णय प्रधानमन्त्री द्वारा राष्ट्रीय विकास परिषद की पिछली बैठक में की गई घोषणा के अनुसरण में है।

यह भी घोषणा की गई कि ४३ मन्त्रालयों अथवा विभागों ने अपने कुल २७२६३ टेलीफोन कनेक्शनों में से ३८३१ को कटवा दिया है। सचिवों को सम्बोधित करते हुए प्रधानमन्त्री ने उनसे अपनी कार्यक्षमता को बनाए रखते हुए यथा सम्भव खर्च में मितव्ययता बरतने का आग्रह किया।

सात साल की गीता सरे आम ब्याह दी गई

अलवर, ४ मई। हम २१ वी सदी की तरफ तेजी से कदम बढ़ाने का दावा कर रहे हैं और सरकार बाल विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों से निपटने के लिए कड़े कानून बनाने और उन्हें कड़ाई से लागू करने का दावा कर रही है। इसके बावजूद दुधमुंहे बच्चों की शादी की परम्परा राजस्थान में अभी भी जारी है। ऐसा ही एक सामूहिक विवाह समारोह अभी हाल में राजस्थान के अलवर जिले में सम्पन्न हुआ।

२६ अप्रैल को जिले के भिवाड़ी गांव मे जगमालसिंह के यहां शादियां हुई। पेशे से सैनिक जगमालसिंह ने अपनी तीन लड़कियों कृष्णा (१६ साल) सुमन (१२ साल) व गीता (७ साल) के लिए क्रमशः कंवरसिंह के पुत्र वीरेन्द्र कुमार (१८ साल), साहबराम के पुत्र मनपाल सिंह (१४ साल) व बालचन्द के पुत्र अशोक कुमार (११ साल) को दूल्हा बनाने का निर्णय किया। तीनों दूल्हों के पिता खेती करते हैं। वीरेन्द्र कुमार व अशोक कुमार गुड़गांव जिले के बंधवाड़ी गांव के हैं जब कि मनपाल सिंह इसी जिले के कादरपुर गांव का निवासी है। वीरेन्द्र कुमार गांव मे पहलवानी करता है। बाकी दोनों लड़के अभी कुछ करने की स्थिति मे नही है। दुल्हनों में, कृष्णा नवी कक्षा में फेल होने के बाद पढ़ाई छोड़ चुकी थी, सुमन आठवीं कक्षा में और गीता तीसरी कक्षा में पढ़ रही थी। इन तीनो लड़कियों के अलावा जगमाल सिंह की एक बेटी और है जो अभी सिर्फ ७ महीने की है। जगमाल सिंह का यह मानना है कि जितनी अधिक बेटियां होंगी उतनी परेशानियां भी होंगी। इसलिए जितनी जल्दी इन्हे घर से हटा दिया जाए उतना ही अच्छा। अत: तीनों लड़को को अपनी कन्याओं के लिए उपयुक्त पाकर २६ अप्रैल की शादी कर दी गई। —ऋतु शर्मा

चरित्र निर्माण अत्यन्त आवश्यक

हरिद्वार, १३ अप्रैल। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के ८५वें वार्षिक महोत्सव का उद्घाटन ओ३म् ध्वजोत्तोलन के साथ डा० गौरीशंकर आचार्य (पूर्व शिक्षा मन्त्री राजस्थान) ने किया इस अवसर पर आयोजित वेद सम्मेलन की अध्यक्षता भगवानदास संस्कृत महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य श्री मनसाराम शास्त्री ने की। कार्यक्रम का संयोजन डा० सत्यव्रत शर्मा "अजेय" ने किया। आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री विद्यासागर शास्त्री ने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेदों का, प्रचार करके स्वामी दयानन्द ने महान् कार्य किया है। राजस्थान के पूर्व शिक्षा मन्त्री डा० गौरीशंकर आचार्य ने वेद की महत्ता प्रतिपादित की। श्री विद्यारत्न वानप्रस्थी ने कहा कि वेद प्रतिपादित ब्राह्मण का धर्म है त्याग चाणक्य ने अपने छात्रों की सेना तैयार कर अत्याचारी नन्द वंश का नाश वेद प्रतिपादित मार्ग के द्वारा ही किया था। शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री वैद्य हरिप्रसाद ने और संयोजन गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्राचार्य डा० हरिगोपाल ने किया।

दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता डा० रामकरण शर्मा ने की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने नवस्नातकों को दीक्षान्त भाषण दिया श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम ने उद्बोधन भाषण दिया। दीक्षान्त समारोह का संयोजन श्री हरिपालसिंह एडवोकेट ने किया। आचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री ने नवस्नातकों को आशीर्वाद देते हुए राष्ट्र सेवा हेतु प्रतिज्ञायें कराते हुए अपना आशीर्वचन दिया। इससे पूर्व डा० प्यारेलाल (मन्त्री सभा) ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

पाकिस्तानी खा रहे हैं कुत्ते का मांस

चण्डीगढ़, २१ अप्रैल। पाकिस्तान में लोगों को कुत्ते का गोश्त खिलाने का एक स्कैंडल पकड़ा गया है। नवाए वक्त के अनुसार पंजाब पुलिस ने नियाज अली नाम के एक कसाई को गिरफ्तार किया है जिसके विरुद्ध हराम गोश्त बेचने का आरोप है।

अखबार लिखता है कि नियाज अली काफी लम्बे समय से कुत्ते का गोश्त लोगों को खिलाता रहा है। जबकि दिखाता यह था कि वह बकरे का गोश्त है। इस स्कैंडल से पर्दा उस समय उठा जब एक व्यक्ति नियाज अली की दुकान पर गया और उसने बकरे का गोश्त मांगा लेकिन उसे कुत्ते का गोश्त दे दिया गया जिस पर गोश्त खरीदने वाले को शक पड़ गया और उसने जानना चाहा कि गोश्त किस जानवर का है। इस पर नियाज अली घबरा गया और लोगो ने उसे पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। तलाशी लेने पर नियाज अली के कब्जे से कुत्ते के पंजे और खालें बरामद हुई। जांच के दौरान अभियुक्त ने पुलिस को बताया कि वह यह धंधा काफी लम्बे समय से करता चला आ रहा है और कुछ दिन पहले उसने समारोह में बकरे की बजाए कुत्ते का गोश्त सप्लाई किया। इस समारोह मे पाक पंजाब की एक प्रमुख हस्ती भी मौजूद थी। पुलिस जांच कर रही है। उसे इस तरह का मीट बेचने की हिम्मत किसने बधाई।

(पंजाब केसरी २२-४ ९२)

सुयोग्य वर-वधु चाहिए

आर्य परिवार की, आयु २१ वर्ष, रंग गेहुंआ, कद ५ फुट ३ इंच, एम. ए. सरकारी सेवा मे कार्यरत, वेतन २५००, पिता सरकारी सेवा में, स्वस्थ तथा सुदर्शिनी कन्या हेतु, सरकारी सेवा मे रत अथवा उच्च व्यवसायी सुयोग्य वर चाहिए। आर्य जाट परिवार के युवक को प्राथमिकता एवं २७ वर्षीय एम. एस. सी. सरकारी सेवा में कार्यरत, द्वितीय श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, कद पांच फुट सात इंच, दिल्ली में अपना मकान पिता सरकारी सेवा में, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाले युवक के लिए सुन्दर, स्वस्थ तथा सुयोग्य वधु चाहिए। सेवारत जाट कन्या को प्राथमिकता। सम्पर्क करे—

—ओमप्रकाश कहिल
बी--२१ अरुणा पार्क
शकरपुर, दिल्ली-९२

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज नरवाना जिला जींद का वार्षिकोत्सव ३ से ५ अप्रैल १९९२ तक धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर ३ अप्रैल को एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमे हजारो व्यक्तियो तथा स्कूल के छात्र छात्राओ ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने श्रोताओ का मन जीत लिया। समारोह मे अनेको प्रस्ताव पास किये गये तथा सरकार से माग की गई कि गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाय।

—आर्य समाज हापुड का ८३वाँ वार्षिकोत्सव ६ अप्रैल से १२ अप्रैल तक उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान विदुषी महिलाओं महात्मा व संगीताचार्यों ने पधार कर जनता को लाभान्वित किया। समारोह मे अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया था। ९ अप्रैल को एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका नगर निवासियो पर अच्छा प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ

—आर्य समाज भगतपुर गोविन्दपुर आजमगढ का १५वा वार्षिकोत्सव २० से २४ माच तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वानो ने उत्सव के अतिरिक्त अन्य ग्रामो मे भी प्रचार कार्य किया।

—आर्य समाज खासपुर टाण्डा का ४६वां वार्षिकोत्सव ३ से ५ माच तक समारोह पूर्वक मनाया गया। उत्सव मे अनेको विद्वानो ने अपने विद्वता पूर्ण उपदेशो से श्रोताओ को लाभान्वित किया। इस अवसर पर प० युगल किशोर त्रिपाठी द्वारा धनुर्विद्या का प्रदर्शन भी किया गया

—आर्यसमाज टमकोर का ८० वा वार्षिकोत्सव १५ से १७ अप्रैल तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर तीनो दिन अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। उत्सव मे अनेको विद्वान महोपदेशक तथा भजन मण्डलियो को आमन्त्रित किया गया। जिनके उपदेशो से जनता जनार्दन ने धर्म लाभ उठाया।

—आर्य समाज जलाली अलीगढ़ का ७९ वा वार्षिकोत्सव २० से २२ माच तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको ने पधार कर उपस्थित जनता को वैदिक आदर्शों से परिचित कराया।

—आर्यसमाज देशराज कालोनी पानीपत का पांचवा वार्षिकोत्सव २८ से २९ माच तक धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अनेकों सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया था जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान आर्यनेता तथा भजनोपदेशको ने भाग लिया। इस अवसर पर हरियाणा के कृषि राज्यमंत्री श्री बचनसिंह जी आर्य का अभिनन्दन भी किया गया

आर्य समाज नौएडा का शिलान्यास सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर बी ९१ सैक्टर ३३ नौएडा का शिलान्यास पूज्यपाद श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के कर कमलो द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस एव नव वर्ष के पावन पर्व चैत्र प्रतिपदा विक्रमी संवत् २०४९ तदानुसार ४ अप्रैल १९९२ को बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो द्वारा वैदिक मन्त्रोच्चारण करते हुए चारो वेदो की मूल संहिताओ तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को आधार शिला मे विधिवत् सुरक्षित रखा गया। वैदिक मर्यादाओ का यह एक अलौकिक दृश्य देखकर सभी आगन्तुको ने मुक्तकण्ठ से प्रशसा की।

इस अवसर पर श्री गुलाबसिंह राघव तथा कु० अर्चना ने मधुर गायन प्रस्तुत किया। तत् पश्चात् स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के इस स्थापना दिवस पर सभी आर्यों को कर्तव्य का बोध कराते हुए आशीर्वाद दिया।

—डा० ओम प्रकाश
प्रधान आर्य समाज नौएडा

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का विशाल राष्ट्रीय व्यायाम एवं शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

७ जून से २१ जून तक

महाशय चुन्नीलाल बाल मन्दिर हायर सैकन्ड्री स्कूल, एल. ब्लाक हरि नगर, नई दिल्ली में आचार्य डा. देवव्रत (प्रधान संचालक सार्व० आर्यवीर दल) की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है।

आर्य समाजों से निवेदन

कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखने वाले आर्य वीरो का यह काफिला आर्य समाजो मे नई पीढी के अभाव को दूर करने का दृढ साहस करता है इसलिए प्रत्येक आर्य समाज से कम से कम पाच आर्य वीरो को अपनी आर्य समाज से शिविर में भेजे।

अभूतपूर्व शिविर

दिल्ली मे पहली बार इतना विशाल शिविर होने जा रहा है जिसमे ० शिविरार्थी, १०० शिक्षक, १०० व्यवस्थापको के शिक्षण के लिये, आवास भोजन एव समारोह की समूची व्यवस्था तथा व्यय आर्य वीर दल दिल्ली वहन करेगा, आर्य वीर दल ने पिछले वर्ष के कार्यों से यह सिद्ध कर दिया है कि रचनात्मक व ठोस कार्य करने वाला युवा सस्था आर्य वीर दल ही है। पिछले साल के शिविर मे ३०० युवको को शिक्षित करने के बाद मसूरी, देहरादून प्रचार यात्रा, भूकम्प राहत हेतु सबप्रथम पहुंचना, लगभग ६० लाख की राहत सामग्री १२७ गांवो मे वितरण करना, आर्य नगर बसाना ओमप्रकाश त्यागी फुटबाल टूर्नामेन्ट, दौड प्रतियोगिता मैराथन, जहांगीरपुरी मे अग्नि काण्ड मे सेवा, दल के कुछ प्रमुख कार्य रहे है यह आपके आशीर्वाद व सहयोग से ही सभव हुआ है इस विशाल शिविर पर भी हम आपका सहयोग व आशीर्वाद चाहते है।

अपील ऋषिलंगर

इस विशाल शिविर मे १५ दिनो तक ८०० व्यक्तियो का तीनो समय का शुद्ध देसी घी का भोजन दूध आदि तथा समापन समारोह मे लगभग १० हजार व्यक्तियो के लिए ऋषि लगर की व्यवस्था यह सब आपके द्वारा दिल खोलकर दान देने पर ही सभव है। नौजवान अपना जीवन, आर्यबन्धु जन अपना धन राष्ट्र हित मे देकर इस महा युवा सैनिक यज्ञ को सफल बनायें। दानदाताओ से प्रार्थना है खुले दिल से अधिक से अधिक धन नकद व क्रास चैक या ड्राफ्ट द्वारा देकर रसीद प्राप्त करे तथा आटे की बोरिया, दाल, चावल चीनी की बोरिया तथा शुद्ध घी के टीन, दलिया, दूध सब्जी आदि के रूप मे भी दे सकते हैं। यह सामान निम्न सम्पर्क स्थलो पर भेज सकते है।

सम्पर्क व सूचना स्थल

आर्यसमाज बिरला लाईन, सब्जी मण्डी, दिल्ली-७, रात्रि ७ से ९ बजे तक
बृजेश आर्य (मन्त्री) श्री नगर, ७२१६१७३
राकेश आर्य II सी ७० लाजपत नगर, ६८४६७७५
वीरेन्द्र आर्य (जिला अध्यक्ष) रानी बाग, ७१८७६८६
श्री कान्त आर्य--आर्य समाज मालवीय नगर (जिला अध्यक्ष) ६८६८८८१
विजय सिंघल- बी-६१, अशोक पार्क जेल रोड, नई दिल्ली ५०२४६०
ओमेश्वर आर्य, आर्यसमाज जनकपुरी, बी-ब्लाक, दोपहर १० से १२ बजे तक

उद्घाटन समारोह ७ जून प्रात. दस बजे से
समापन समारोह २१ जून प्रातः १० बजे से

विशेष आकर्षण—युवको का विशाल अभूतपूर्व व्यायाम एव सैनिक शिक्षा प्रदर्शन जो कभी पहले नही देखा गया है सभी आर्य समाजें समापन समारोह मे अपनी बसे भर कर लावे तथा सभी प्रान्तीय आर्यवीर दल व समाए एक-एक बस सभी प्रान्तो से समापन समारोह में लावें और देखे। इतना विशाल आर्यवीरो का मेला पहली बार देखने को मिलेगा बसो के आने की सूचना शीघ्र दें जिससे भोजन की सुव्यवस्था कर सकें।

—ब्र० राजसिंह आर्य, महामन्त्री शिविर सयोजक दिल्ली प्रदेश

आर्य वीर बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

—मऊनाथभजन, १६ मार्च। आर्य वीर दल मण्डल मऊ के तत्वावधान मे गत १२ मार्च से १५ मार्च तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के रक्षा सचिव श्री बालदिवाकर हंस जी के सुन्दर सरक्षण, निर्देशन व मार्गदर्शन मे बौद्धिक शिविर लगाया गया, जिसमे सैकडो आर्य वीरो ने प्रशिक्षण प्राप्तकर, कार्य क्षेत्र मे उतरने का व्रत लिया।

इसी क्रम मे १५ मार्च को मण्डलीय आर्य वीर सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री दिनेश जी शर्मा असम प्रान्त व मुख्य वक्ता श्री बालदिवाकर हंस जी रहे।

सम्मेलन मे जहा आर्य वीरो ने अपनी उच्च प्रतिभा युक्त कार्यक्रमो से उपस्थित जनसमूह का मन मोह लिया वही ब्र० श्री सुरेन्द्रसिंह जी आजाद, श्री खगेन्द्र जी पश्चिम बगाल श्री सुमेधा मित्र जी वेदालकार, श्री सुकीर्ति मित्र शास्त्री, श्री रामचन्द्रसिंह, ब्र० श्री नरेन्द्रपाल जी, विद्यासागर जी, डा० ओकारनाथ जी, श्री आर्यमुनि जी सहित अन्यान्य सुबुद्ध वक्ताओं ने अपने हृदयोद्गार से कार्यक्रम मे चार चाद लगा दिये।

—रामाज्ञा 'आर्यपुत्र' बौद्धिकाध्यक्ष

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) के तत्वावधान में बेवर (मैनपुरी) निवासी श्री जगदीशप्रसाद जी के पुत्र जन्म के उपलक्ष्य मे दिनाक २३ २४, २५ फरवरी ९२ मे सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटवा) के कुलपति श्री स्वामी देवानन्द जी के निर्देशन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा किये गये मधुर वेद पाठ एव प्रवचन को लोगो ने दत्तचित्त होकर सुना। इस कार्यक्रम की क्षेत्रीय जनता ने भूरि भूरि प्रशसा की।

—पं आर्य राजदेव शर्मा आचार्य
आर्य गुरुकल ऐरवा कटरा (इटावा)

गुंजोटी के सरपंच संन्यासी बने

आर्य समाज गुंजोटी के पुराने सक्रिय कार्यकर्ता, गरीबो के हितैषी, तप त्याग की साक्षात मूर्ति व गुंजोटी गाव के सरपच श्री दगम्बरराव जी वानप्रस्थी ने अपनी आयु के ७६वे वर्ष में वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद के वार्षिकोत्सव पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी आनन्द जी महाराज से दि० १९-४ ९२ को प्रात ९ बजे सन्यास ले लिया। इनका नाम बदलकर स्वामी व्रतानन्द रखा है।

—प० अशोक कुमार प्रवक्ता दिल्ली

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०७६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१७-५-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस उ नं० ६१
R.N. 686/57 Licensed to post without Prepayment Licence No. U 93 Post I. N D P.S.O.on 14, 15-5 1992

शुद्धि समाचार

ईसाई महिला वैदिक धर्म में दीक्षित

आदर्श विवाह एवं शुद्धि मन्दिर भागीरथपुरा इन्दौर में कुमारी स्टेला प्रटिक का शुद्धि संस्कार किया तथा उसका हिन्दू नाम-सपना देवी रखा गया फिर उसका विवाह संस्कार वैदिक पद्धति से शैलेन्द्र कुमार पाराशर के साथ सम्पन्न कराया गया। इस शुद्धि एवं विवाह संस्कार की सारी व्यवस्था शंकरसिंह आर्य के द्वारा कराई गई।

—संचालक आदर्श विवाह एवं शुद्धि मन्दिर
५२५, भागीरथपुरा इन्दौर (म० प्र०)

12437—श्री उपकुलपति महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कांगड़ी, हरिद्वार (उ० प्र०)

आर्य समाज, लहेरिया सराय (दरभंगा)

आर्य समाज, लहेरिया-सराय (दरभंगा) का ७१ वां वार्षिकोत्सव, इस वर्ष, १५ से १९ अप्रैल तक हीरक जयन्ती महोत्सव के रूप में, ससमारोह मनाया गया इस अवसर पर आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान, संन्यासी तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर श्रोताओं को लाभान्वित किया।

अनिवार्य कारणों से गत वर्ष का स्थगित, हीरक जयन्ती के सभी कार्यक्रम इसी शुभावसर पर सम्पन्न हुए जिसमें दानवीर माननीय सरक्षकों तथा समागत विद्वानों को प्रशस्ति पत्र एवं उपाधि-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

भुवनारायण आर्य, महामन्त्री

वैदिक सेवाश्रम का शिलान्यास

महात्मा अभेदमुनि जी द्वारा संस्थापित 'वैदिक चरित्र निर्माण सेवा आश्रम न्यास' के अन्तर्गत ३१ बीघे भूभाग पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (आर्य-समाज स्थापना दिवस) २०४९ विक्रमी (चार अप्रैल १९९२) को "वैदिक सेवा आश्रम' हाथरस अलीगढ का शिलान्यास यज्ञ आचार्य प्रेमभिक्षु जी के ब्रह्मत्व में स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (संस्थापक, गुरुकुल आश्रम बिठूर कानपुर) के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

न्यास-उद्देश्य के अनुसार वैदिक-शिक्षा, वृद्धाश्रम, गोशाला, योगाश्रम आदि के सचालन हेतु सुश्री कमला जी (मुख्याधिष्ठात्री, कन्या गुरुकुल) के अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये।

—गुरुकुलानन्द सरस्वती (कन्दाहारी)
आर्य समाज पिथौरागढ (उ० प्र०) पिन २६२५०१

नामकरण संस्कार

आर्य समाज, लहेरिया सराय (दरभंगा) के अधीक्षक श्री मदन मोहन दास जी के प्रथम पुत्र का, नामकरण संस्कार, दि० ११ मार्च, १९९२ को स्थानीय समाज के प्रधान आचार्य डा० महावीरप्रसाद रंजन, विद्यावाचस्पति द्वारा, पूर्णतया वैदिक रीत्यानुसार, सानन्द सम्पन्न हुआ। नवजात शिशु का नाम 'अरविन्द' रखा गया।

—भुवनारायण आर्य

आर्य वीर दल नजीबाबाद का शुभारम्भ

भारतीय नव वर्ष एवं आर्य समाज की स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आर्य समाज आदर्श नगर की ओर से आर्य वीर दल की शाखा जननी प्रारम्भ हो गई। शाखा से पूर्व विष्णुमित्र आर्य पुरोहित जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। उसके पश्चात श्री राकेश आर्य ने शिक्षक के रूपमें शाखा लगवाई। कार्यक्रम काफी सफल रहा। श्री विष्णु मित्र आर्य, श्री डा० बालकृष्ण आर्य, श्री मानकचन्द आर्य का विशेष सहयोग रहा।

—मानकचन्द आर्य

गोवंश को न बेचने का अभियान चलाना चाहिए

आर्य समाज खण्डवा के मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव एवं प्रधान श्री कृष्णलाल आर्य ने जानकारी दी कि दि० २५-४-९२ को रविवारीय सत्सव में श्री एस. के. त्रिपाठी जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि यदि गोवंश के पालने वाले यदि गोवंश को कसाईयों को बेचना बन्द कर दें तो गो-हत्या न होने में सहयोग दे सकते हैं। परन्तु समाज का दुर्भाग्य है कि गो माता की जय बोलने वाले ही अनुपयोगी होने के बाद बेचते हैं। श्री पाटीदार ने कहा कि समाज की मूल बुराइयों को हटाने का प्रयत्न होना चाहिए। कार्यक्रम का सचालन लक्ष्मीनारायण भार्गव मन्त्री आर्य समाज ने किया एवं आभार श्री कृष्णलाल आर्य प्रधान ने माना और कहा कि गोशालाओं के रखरखाव पर भी ध्यान देना चाहिए।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी (नैनीताल) के प्रतिनिधि डा० रामप्रसाद जी की धर्मपत्नी का स्वर्गवास २-४-९२ को हो गया। उनका अंतिम संस्कार वैदिकरीति से किया गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

—श्रीकृष्ण आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● जो आचार्य और माता पिता अपने सन्तानो को प्रथम वय मे विद्या और गुण ग्रहण करने के लिए तपस्वी कर और उनको उपदेश देवे और वह सन्तान आप ही आप अखण्डित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढावे वैसे तुम भी बढाओ। क्योंकि जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप नही करते वे सब प्रकार के रोगो से रहित होकर धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त होते।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष . ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक १७]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   ज्येष्ठ शु० ७   स० २०४९   २४ मई १९९२

देवनागरी को 'अतिरिक्त लिपि' की मान्यता दी जाए : लोकसभा अध्यक्ष को ज्ञापन

नई दिल्ली, १२ मई । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने लोकसभा अध्यक्ष शिवराज पाटिल को एक याचिका सौंप कर उनसे आग्रह किया है कि लोकसभा एक अधिनियम पारित करके देवनागरी लिपि को भारतीय भाषाओ की अतिरिक्त लिपि' के रूप मे मान्यता देने की व्यवस्था करे।

अतिरिक्त लिपि से प्रतिनिधियो का तात्पर्य भारतीय भाषाओ की मूल लिपि के साथ देवनागरी का भी इनके लेखन आदि म उपयोग करनाहै। याचिका कर्ताओ ने यह आग्रह किया है कि सविधान के उन अनुच्छेदो को जो भारतीय भाषाओ को उनका उचित स्थान दिलाने मे बाधक हो, इस प्रकार सशोधित किया जाना चाहिए ताकि उनसे उपर्युक्त उद्देश्यो की पूर्ति हो सके। याचिका मे लोकसभा अध्यक्ष से सविधान मे इस तरह का प्रावधान कराने का आग्रह भी किया गया है जिससे शिक्षा के क्षेत्र तथा न्यायालयो मे हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओ को उचित स्थान मिल सके।

याचिकाकर्त्ताओ ने यह माग भी की है कि भारतीय भाषाओ को उचित स्थान दिलान के लिए यह जरूरी है कि हिन्दी का सघ की राजभाषा होने के नाते उसका प्रयोग अन्तर्राज्यीय सम्पर्क और अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार मे किया जाए।

साथ ही क्षेत्रीय भाषाओ को अपने-अपने प्रदेशो मे वही स्थान

(शेष पृष्ठ २ पर)



स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे आर्य समाज का शिष्टमण्डल लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल से ११ मई ९२ को मिला और लोकसभा के नियम १६० के अन्तर्गत भारतीय भाषाओ के सम्बन्ध मे एक ज्ञापन दिया।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के निर्वाण शताब्दी समारोह पर विशाल शोभा यात्रा

चरखी दादरी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह का तीन दिवसीय आयोजन पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे १५ मई को प्रात यज्ञ से प्रारम्भ हुआ हरियाणा की जनता ने बड़े उत्साह से इस आयोजन मे भाग लिया।

१६ मई को चरखी दादरी मे विशाल शोभा यात्रा निकाली गई, इसमे हजारो लोगो ने भाग लिया। शोभा यात्रा का नेतृत्व पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती और आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी कर रहे थे। दूसरी पंक्ति मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती शोभा यात्रा का मार्ग दर्शन कर रहे थे। शोभा यात्रा के मुख्य सचालक स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान थे। उनके पीछे अनेक गुरुकुलो के आचार्य ब्रह्मचारी तथा हरियाणा राज्य के आर्य युवक भारी सख्या मे उत्साह पूर्वक शोभा यात्रा की शोभा बढा रहे थे। इस अवसर पर चरखी दादरी का पूरा नगर सजा हुआ, और प० गुरुदत्त विद्यार्थी अमर रहे के नारो से गूज रहा था। शोभा यात्रा मे शराबबन्दी के लिए भी सरकार से जोरदार माग की गई।

पुस्तक समीक्षा

बेहतर जीवन की ओर

लेखक—राम निवास लखोटिया, आशा पब्लिशिंग हाउस,

एस-२२८, ग्रेटर कैलाश भाग-२, नई दिल्ली-४८

मूल्य रु० ९९) पृष्ठ १०८

इस पुस्तक में एक ऐसे व्यक्तित्व की कहानी जुड़ी हुई है जिसने अथक साधना एव लगन से वक्त के बढते पलो के साथ-साथ अपने लक्ष्य की ऊचाइयो को छुआ है। लेखक श्री राम निवास लखोटिया भारत की ऐसी अनूठी एव प्रेरणादायी प्रतिभा है, जिनका सतत कर्ममय जीवन इस बात के प्रति आस्था प्रकट करता है कि जीवन के महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अदम्य उत्साह, दृढ निश्चय, समय का सदुपयोग एव कठोर परिश्रम से मनुष्य स्वय ही अपनी गम्भीर प्रतिकूल परिस्थितियो को अनुकूल बनाने मे पूर्ण सक्षम हैं।

लेखक का सघर्षमय जीवन प्रारम्भ हुआ बचपन मे मा के देहान्त के साथ तथा आर्थिक सकटो को झेलते हुए अकेले रहकर और बिना बिजली और पानी वाले दो रुपये महीने के किराये के मकान मे रहकर पढाई से। साथ ही साथ मात्र १५ वर्ष की अति अल्प आयु मे ही विवाह हुआ, तत्पश्चात् भी प्राय सभी परीक्षाओ मे प्रथम स्थान की प्राप्ति और आज भारत के उच्चतम शिखर के आयकर विशेषज्ञ के रूप मे गणना। यह सब बातें क्या प्रेरणादायक नही है? नई पीढी के नवयुवको के लिए। ऐसे व्यक्ति के समग्र जीवन की अति प्रेरणादायक जीवन गाथा प्रस्तुत है इस पुस्तक में स्वय लेखक की जुबानी। यह पुस्तक निश्चय ही नई पीढी के नवयुवको को प्रेरणा, उत्साह, जिन्दगी के प्रति रुचि, आत्म स्वाभिमान आदि विषयो के प्रति आकर्षित करेगी। इस पुस्तक का विमोचन हाल ही मे लेखक की ६०वी वर्षगांठ के अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति डा० शकर दयाल शर्मा द्वारा किया गया।

—सम्पादक

दयानन्द बाल सदन में नवीन कक्ष का उद्घाटन

दयानन्द बाल सदन अजमेर का ९७वा वार्षिक उत्सव सदन के आचार्य दत्तात्रेय जी वाब्ले की अध्यक्षता में रविवार १० मई, को आयोजित किया गया। समाज कल्याण मन्त्री श्री कुन्दनलाल मिगलानी ने सदन के छात्र-छात्राओ को पारितोषिक वितरित किये, तथा कन्या विभाग में एक लाख की लागत से नवनिर्मित कक्ष का उद्घाटन सांसद श्री रासासिंह जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

—शिवचरणसिंह व्यवस्थापक

प्रवेश आरम्भ

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (जनपद-अलीगढ़) उ० प्र०

शिशु कक्षा से बी ए स्तर तक की निशुल्क शिक्षा, गुरुकुल पद्धति पर निशुल्क छात्रावास, सबका सीधा सादा एक सा रहन सहन, कड़ा अनुशासन नगर से दूर उच्च वातावरण, सामान्य विषयो के अतिरिक्त धर्म, नैतिकता, सगीत, कला गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा, नवम् श्रेणी से विज्ञान (सामान्य एव विशेष) की भी शिक्षा, देशी घी दूध, दो जलपान सहित भोजन शुल्क कक्षा शिशु से पचम तक १८०) रुपये मासिक तथा कक्षा ६ से बी० ए० तक १९) मात्र। प्रवेश प्रारम्भ। नियमावली मगावे।

—मुख्याधिष्ठात्री

वेदोपदेशक विद्यालय में प्रवेश आरम्भ

आर्य जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट का नया सत्र १ जुलाई से आरम्भ हो रहा है। इसमे १०वी पास योग्य सुशील, एव वैदिक धर्म प्रचार मे समर्पित विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकेंगे। २ तथा ४ वर्षों के अध्ययनकाल मे भोजन, शिक्षा और निवास की निशुल्क व्यवस्था होगी। निम्न पते पर शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

सस्थापक एव अधिष्ठाता

वेदानन्द वैदिक वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट-२४५२०५

जिला गाजियाबाद उ० प्र०

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) में नये छात्रो का प्रवेश १५ जून ९२ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो मे पढाये जाने वाले हिन्दी, गणित अग्रेजी, विज्ञान समाज शास्त्र आदि सभी विषयो के साथ सस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है।

निशुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण सात्विक भोजन दूध व आवास की "बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताए हैं।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिले अथवा पत्राचार करें।

—आचार्य

श्री विरजानन्द गुरुकुल, करतारपुर

जिला जालन्धर-१४४८०१ (पजाब)

लोकसभा अध्यक्ष को ज्ञापन

(पृष्ठ १ का शेष)

दिया जाए जो हिन्दी को सघ की राजभाषा के रूप मे प्राप्त है। लोकसभा अध्यक्ष शिवराज पाटिल ने याचिकाकर्त्ताओ के प्रतिनिधिमण्डल के इस विचार की सराहना की कि देवनागरी को सभी भारतीय भाषाओ की एक अतिरिक्त लिपि के रूप मे प्रचलित किया जाए।

लोकसभा अध्यक्ष के यह पूछने पर कि इस विचार को किस प्रकार कार्यान्वित किया जा सकता है? श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने प्रतिनिधिमण्डल की ओर से कहा कि निरक्षरता उन्मूलन अभियान के साथ-साथ देवनागरी को भी सर्वप्रिय बनाने का कार्य किया जा सकता है। याचिकाकर्त्ताओ मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आनन्दबोध सरस्वती, वरिष्ठ उप-प्रधान वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, सासद मदनलाल खुराना, के० नरसिंह रेड्डी और ए० रामाराव भी शामिल थे।

एक राष्ट्रीय समस्या

सात करोड़ वनवासियों पर मिशनरियों की निगाह

आगरा १३ मई (जनसत्ता)। देश के पचास हजार गांवों के करीब सात करोड़ वनवासी ईसाई मिशनरियों के चंगुल में हैं। असम, बंगाल, बिहार ओड़िशा और मध्य प्रदेश में फैले ये आदिवासी हिन्दू समाज से कटने को तैयार खड़े हैं। ईसाई मिशनरी इन्हें इनकी मजबूरियों का लाभ उठा कर ईसाई बनाने पर उतारू हैं। वनवासी कल्याण केन्द्र पूर्वांचल के संगठन मन्त्री श्याम जी ने यह बात यहाँ अखबार वालों को बताई।

इतने विशाल वनवासी समाज की सेवा में आज विश्व के ईसाई समाज ने करीब १० हजार विदेशी पादरी, ४५ हजार भारतीय पादरी और २५ हजार महिला पादरी लगा रखे हैं। इतना ही नहीं विदेशी ईसाई समाज ने इस अलगावबाद की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए सात अरब रुपए की मदद देने का फैसला भी किया है। अकेले बिहार के चर्च के लिए विदेशों से पांच अरब रुपए हर साल यहां आता है।

विदेशी धन के अलावा केन्द्र सरकार से ये ईसाई मिशन सेवा के नाम पर करोड़ों रुपए वसूल करते हैं। देश में हजारों प्राइवेट स्कूल सहायता के नाम पर करोड़ों रुपए वनवासियों को ईसाई बनाने के लिए भेज रहे हैं। इन सबके बावजूद केन्द्र सरकार शांत है। श्याम जी ने बताया कि इस समय ईसाई मिशनरियां अपने काम को झारखण्ड उत्तराखण्ड, उदयाचल इलाकों में तेजी से बढ़ा रही हैं। झारखण्ड आंदोलन के रूप से बिहार के दक्षिणी भाग के १२ वनवासी जिलों में चर्च, कम्युनिस्ट, नक्सलवादी और बंगलादेश से आए घुसपैठिए सक्रिय हैं।

इस सम्बन्ध में झारखण्ड आंदोलन की चर्चा करते हुए श्याम जी ने कहा कि भारत के मध्य चार राज्यों के वन क्षेत्र (झारखण्ड) को एक स्वतन्त्र राज्य बनाने के लिए झारखण्ड आंदोलन चल रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य वनवासियों को देश की मुख्य धारा से अलग करना है। बिहार के १२ जिले, ओड़िशा के चार जिले, पश्चिम बंगाल के तीन जिले और मध्य प्रदेश के दो जिलों में इस आंदोलन ने अपनी जड़ें जमा ली हैं। इस तरह २१ जिलों में विदेशी ताकतें पूरी तरह सक्रिय हैं और केन्द्र सरकार चुपचाप बैठे तमाशा देख रही हैं।

प्रस्तावित झारखण्ड राज्य में बिहार के १२ जिले हैं रांची, लोहरदगा, गुमला, पलामू, सिंहभूम पूर्व सिंह भूम व पश्चिमी सिंहभूम, गिरीडीह, हजारीबाग, धनबाद, दुमका, गोड्डा देवघर और साहेबगंज। ओड़िशा के चार जिले हैं, केंवझर, मयूरगंज, सुन्दरगढ़ और सबलपुर। पश्चिम बंगाल के तीन जिले हैं पुरुलिया बाकुडा और मिदनापुर। मध्य प्रदेश के सरगुजा और रायगढ़ को शामिल किया गया है।

इन जिलों में वनवासी समाज के ६२ लाख लोग रहते हैं, जो मुण्डारी, संथाल, खड़िया, कुलकू, मांतो, किसानी नागपुरी, कुरमाली आदि भाषा-भाषी हैं। इस अलगाववादी आन्दोलन का मुकाबला करने के लिए पूरे देश को वनवासियों की समस्याओं से जोड़े जाने की जरूरत है। यह समस्या राजनैतिक न होकर राष्ट्रीय समस्या है।

वनवासियों को असभ्य, गरीब, भूखा, नंगा या जंगली नामों से पुकारा जाता है। उसी का यह परिणाम है यह समाज अपने आप को हिन्दुस्तान से अलग-अलग समझने लगा है। देश की सांस्कृतिक धारा से यह वर्ग अलग हो गया है। वनवासी समाज की उपेक्षा के कारण आज देश की कई सीमाएं सुरक्षित नहीं रह गई हैं। इन इलाके में साक्षरता की बेहद कमी है। इन इलाकों में पुरुषों की साक्षरता १० से १२ फीसदी है, जबकि महिलाओं में साक्षरता पांच फीसदी है।

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण परिषद ने इन वनवासियों के उद्धार के लिये तीन स्तरों पर प्रयास शुरू किए हैं। वनवासियों की सेवा में जुटे कार्यकर्ताओं का उद्देश्य शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार और स्वावलम्बनसे इस समाज का उद्धार करना है। वनवासी इलाकों में इस संस्था के माध्यम से लगभग तीन हजार सेवा प्रकल्प चल रहे हैं, जिनमें १४०० तो केवल शिक्षा प्रसार सम्बन्धी हैं। इसके अलावा १००० स्थानों पर सत्संग एवं खेलकूद के माध्यम से वनवासी समाज में योग्य संस्कार जागरण का काम चल रहा है। २० केन्द्रों पर चिकित्सा सेवा और सौ केन्द्रों पर ग्रामोद्योग एवं कृषि प्रशिक्षण का काम चल रहा है।

असम में ५० फीसदी वनवासी और १२ फीसदी वनवासी ईसाई धर्म स्वीकार कर चुके हैं, फिर भी वनवासी कल्याण केन्द्र के कार्यकर्ता जी-जान से अपने अपने कामों में लगे हुए हैं। वनवासी इलाकों में कार्यरत सभी संस्थाओं में तालमेल बैठाने और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनबन्धु परिषद (फ्रेंडस आफ ट्राइबल्स सोसाइटी) का गठन किया गया। जिसका मुख्य आफिस कलकत्ता में है। श्याम जी ने याद दिलाया कि देश में किसी भी क्रांति की सफलता वनवासी गिरिवासी और ग्रामवासी समाज के जरिए ही हो सकी है। जिस वनवासी समाज के संगठित सामर्थ्य के कारण राजा राम साक्षात भगवान बन सके, वही वनवासी समाज देश के लोगों के सहयोग का इन्तजार कर रहा है।

वेदामृत

मानव क्यों है दुःखी आज यह बात समझनी चाहिए।
वेदों के अनुसार पुनः अब हमको चलना चाहिए॥
सत्य विद्या जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं,
आदि मूल सबका परमेश्वर वेद हमें बतलाते हैं,
सत्य के ग्रहण असत्य त्याग में, उद्यत रहना चाहिए।
वेदों के अनुसार पुनः अब···

सर्व व्यापक सर्व अन्तर्यामी नित्य पवित्र ईश्वर है,
दयालु, अजन्मा अनादि अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर है,
न्यायकारी सृष्टि का कर्ता निराकार सब कहिए।
वेदों के अनुसार पुनः अब···

वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना है,
सभी सत्य विद्याओं का यह वेद ही एक खजाना है,
सत्य असत्य विचार के ही, हर काम को करना चाहिए।
वेदों के अनुसार पुनः अब···

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई वेद में नाम नहीं है
साम्प्रदायी मत पन्थों के झगड़े की बात नहीं है,
मानव बनकर मानवता का, सबको पाठ पढ़ाइये।
वेदों के अनुसार पुनः अब

सामाजिक और सर्वहितकारी नियम में परतन्त्र रहें,
हितकारी प्रत्येक नियम में निर्भय बन स्वतन्त्र रहें,
महेश आर्य वैदिक पथ पर अपना कदम बढ़ाइये।
वेदों के अनुसार पुनः अब हमको चलना चाहिये॥

—ब्रह्मचारी महेश आर्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

सरकारी भोजों में मदिरा और मास का सेवन बन्द हो

२३ अप्रैल को मानसा के नए जिले का उद्घाटन करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री श्री बेअन्त सिंह ने जहां पंजाब की विगत दस वर्षों से चली आ रही ज्वलन्त परिस्थितियों, नित्य-प्रति बह रहे इन्सानी खून को रोकने के लिए सरकार के निश्चय, अकालियों के रवैये, गुरुद्वारों की पवित्रता को भंग न होने देने, देश की एकता तथा अखण्डता को हर हालत में बरकरार रखने और समाज में किसी प्रकार का भी कोई भेद उत्पन्न न होने देने के बारे में जहां बहुत कुछ खुल कर कहा वहां लोगों से मदिरापान न करने का भी प्रबल अनुरोध किया।

श्री बेअन्त सिंह ने कहा कि यदि हमारी यह आस्था है कि पवित्र तख्तों वाले स्थानों को पवित्र घोषित करके वहां शराब आदि की बिक्री बंद करके एक उचित काम किया गया है तो लोगों को चाहिए कि वे शराब का सेवन बन्द कर दें, चाहे सरकार के राजस्व पर उसका बुरा प्रभाव ही क्यों न पड़े। उन्होंने कहा कि मैंने अपने वित्त मंत्री डाक्टर केवल कृष्ण से कहा है कि वह राजस्व के कुछ अन्य स्रोत तलाश करें।

यहां यह लिखना असंगत नहीं होगा कि यदि दृष्टि दौड़ाई जाए तो कुछेक मुख्यमंत्री चाहे उनका सम्बन्ध इन्दिरा कांग्रेस से है, या अन्य राजनीतिक दलों से शराब का सेवन करते हैं। इतना ही नहीं यह भी एक वास्तविकता है कि विभिन्न प्रदेशों के और केन्द्र के भी कुछेक मंत्री मदिरापायी हैं और बहुत से एम पी और एम एल ए भी इस लत के शिकार हैं।

यह वस्तुत एक सौभाग्य की बात है कि न तो देश के प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हा राव ही शराब को हाथ लगाते हैं और न पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्त सिंह ही शराब को छूते हैं और उन्होंने खुल कर लोगों से मदिरा के परित्याग का अनुरोध भी सार्वजनिक रूप से किया है।

इतना ही नहीं जबकि कई मुख्यमंत्री मद्यनिषेध के विरोध में यह तर्क देते हैं कि ऐसा करने से राजस्व में कमी आ जाएगी और उसका विकास के कामों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, श्री बेअन्त सिंह ने अपने वित्त मन्त्री से राजस्व के अन्य साधन खोजने की बात भी कह दी है।

जहां तक अकाली नेताओं का सम्बन्ध है उनमें भी बहुत से नेता ऐसे हैं जो मदिरापान करते हैं भले ही ऊपर से वे पवित्र तख्तों वाले स्थानों को पवित्र शहर घोषित करके वहां शराब की बिक्री बंद करने की बात करते हैं। इस सन्दर्भ में मुझे उन दिनों की एक दिलचस्प घटना याद आ रही है जब जरनैल सिंह भिंडरावाला के जीवनकाल में सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री खुशवन्त सिंह अमृतसर में अकालियों की एक बैठक में भाग लेने के लिए आए थे। उस बैठक को सम्बोधित करते हुए भिंडरावाला ने कहा था—"मैं तो संत हूं दो चपाती खाता हूं और सिख कौम को मदिरापान जैसी बुराइयों से बचने और सात्विक जीवन बिताने का उपदेश देता हूं।" श्री खुशवन्त सिंह भिंडरावाला के कट्टर आलोचक थे। उस बैठक की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा था कि जब भिंडरावाला उपरोक्त बातें कह रहे थे तो उनके साथ कई अकाली नेता ऐसे बैठे थे जो उनके अर्थात् श्री खुशवन्त के घर आकर शराब के कितने ही प्याले तोड़ चुके थे। भिंडरावाला जनता में तो शराब न पीने का प्रचार करते हैं मगर उन्हें इन लीडरों को भी तो सुधारना चाहिए।

हम पहले भी कई बार लिख चुके हैं और आज फिर दोहराना चाहते हैं कि शराब की लानत आज हमारे समाज के अधिकांश परिवारों में घर कर गई है। ब्याह-शादी और अन्य समारोह में शराब के दौर चलते हैं और कोई भी वह पार्टी जिसमें बोतल न खुले, फीकी-फीकी ही समझी जाती है। सत्य तो यह है कि इस अभिशाप को रोक पाना आज एक काफी मुश्किल काम हो गया है मगर इसके बावजूद कुछ आवाजें शराब के विरुद्ध उठती रही हैं और उठ रही हैं।

जब श्री मोरारजी देसाई बम्बई के मुख्यमन्त्री बने तो उन्होंने वहां शराब की बिक्री पर रोक लगाई और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सपनों को किसी हद तक साकार करने का यत्न किया। इसके बाद जब वह जनता सरकार के समय में देश के प्रधानमन्त्री बने तो उन्होंने क्रमिक मद्यनिषेध देश भर में लागू करने की योजना बनाई मगर वह अधिक देर तक सत्ता में नहीं रह सके और मद्यनिषेध सम्बन्धी उनकी नीति भी उनकी सरकार के पतन के साथ ही समाप्त हो गई।

इसी तरह पूज्य पिता लाला जगत नारायण जी भी आजीवन मदिरापान के विरुद्ध एक जोरदार अभियान चलाते रहे और अपने लेखों तथा भाषणों में रह-रह कर यह बात लिखते और कहते रहे कि शराब केवल घर और परिवार को ही नहीं समूचे राष्ट्र को तबाह और बर्बाद करके रख देती है। भारत-पाक-बंगलादेश युद्ध में पाकिस्तान की कमर तोड़ पराजय के बाद भी लाला जी ने यह बात खुलकर कही कि पाकिस्तान की पराजय का सबसे बड़ा कारण यह था कि पाकिस्तान के सैनिक शराबी थे, उसके कमांडर शराबी थे और खुद पाकिस्तान के राष्ट्रपति यहिया खां हर वक्त शराब के नशे में डूबा रहता था।

लाला जी ने तो महिलाओं तक को इस अभिशाप के विरुद्ध कमर कस लेने की 'कॉल' दी और कहा कि अगर किसी का बेटा शराब पीकर आए तो मां उसके लिए दरवाजा न खोले, किसी का भाई शराब पीकर आए तो बहन उसके लिए दरवाजा न खोले और अगर पति शराब पीकर आए तो पत्नी उसके लिए दरवाजा न खोले।

अगर व्यापक रूप से दृष्टि दौड़ाकर देखा जाए तो समाज के उच्च वर्ग को छोड़कर मध्यम और निम्न वर्ग के बेशुमार घर-परिवार ऐसे हैं जिन्हें शराब ने तबाह और बर्बाद करके रख दिया है। शराब जिन्हें पूरी तरह पी गई है। दिन भर मेहनत-मजदूरी करके जो थोड़ी बहुत कमाई इन परिवारों के लोग करते हैं, उसे घर का चूल्हा जलाने के लिए खर्च करके मयखाने की नजर कर आते हैं। शराब के इसी दुष्प्रभाव के कारण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि अगर भारत का शासन एक घन्टे के लिए भी उनके हाथों में आ जाए तो वह सबसे पहला काम शराब की तमाम फैक्टरियों और दुकानों को बगैर कोई मुआविजा दिए ही बंद कर देने का करेंगे मगर इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी कि स्वाधीनता के बाद बापू के नामलेवा उनके इस पवित्र संकल्प को भूल गए और स्वाधीन भारत में इस लानत का 'कद' पराधीन भारत की तुलना में कई गुना बड़ा हो गया।

अत शराब के परित्याग की जो अपील मुख्यमंत्री श्री बेअन्त सिंह ने लोगों से की है हम उसका स्वागत करते हैं मगर इसके साथ ही एक दुखदायी खबर यह भी छपी है कि मानसा जिले के विधिवत् उद्घाटन के अवसर पर १०१ मुर्गों की कुर्बानी दी गई जो कि पंजाब भर के विभिन्न नगरों से पहुंचे पत्रकारों और अफसरों के लिए परोसे गए। इस सन्दर्भ में विशेष रूप से ध्यान दिए जाने योग्य बात यह रही है कि जहां तक जिला मानसा का उद्घाटन करने वाले मुख्यमंत्री श्री बेअन्त सिंह का सम्बन्ध है, वह स्वयं एक शाकाहारी सज्जन हैं।

हम समझते हैं कि जहां श्री बेअन्त सिंह ने लोगों से मदिरापान के परित्याग का अनुरोध किया है वहां उन्हें यह बात भी निश्चित बनाना चाहिए कि सरकारी स्तर पर आयोजित किसी भी भोज में न तो मांस ही परोसा जाए और न शराब की कोई बोतल ही खुल पाए। समाज की रीत यही है कि आम लोग प्राय उसी रास्ते पर चलते हैं जिस रास्ते पर राजा अर्थात् उनके शासक और शासन के संचालक चलते हैं। अतः जनता के जीवन में सात्विकता लाने और राष्ट्रपिता के मद्यनिषेध और शाकाहार के स्वप्न को यथासम्भव पूरा करने के लिए इस काम की शुरुआत श्री बेअन्त सिंह को सरकारी भोजों और समारोहों में सात्विकता लाकर ही करनी होगी।

—विजय

आदि मानव कहां पैदा हुआ था ? (४)

—विश्वनाथ प्रसाद, वि० वाचस्पति, कोरबा

लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धि —अर्थात लक्षणा और प्रमाणो से वस्तु पहचानी जाती है। अतएव उपर्युक्त लक्षण और प्रमाणो के अनुसार देखना है, कि कौन सा स्थान है ? जिसमे ये लक्षण और प्रमाण घटते हैं ? थोड़ा-सा ही विचार करने पर ज्ञात होगा कि ये लक्षण और प्रमाण हिमालय पर ही घटित है, इसलिए यहा हम इस विषय से सम्बन्ध रखने वाले कुछ प्रमाण एकत्रित करते हैं—

(१) हिमालय सबसे ऊंचा और पुराना है। यह समुद्र से २९००० फीट ऊंचा है। कहते है कि आरम्भ में समस्त पृथ्वी जल से भरी थी। उस जल से सब प्रथम यही भूमि निकली है उसी मे वनस्पति उत्पन्न हुई हैं और उसी मे मनुष्य प्राणी उत्पन्न हुए है सबसे ऊंची है। हिमालय की ऊंचाई और मनुष्य सृष्टि के सिद्धांत पर अमेरिका का प्रसिद्ध विद्वान् डेविस अपनी 'हारमोनिया' नामी पुस्तक मे पांचवें भाग पृष्ठ ३२८ में ओकन को गवाही से लिखता है कि हिमालय सबसेऊंचा स्थान है, इसलिए आदिसृष्टि हिमालय पर ही हुई।

(२) हिमालय सर्दी गर्मी को मिलाता है। प्राणी दो प्रकार के पाये जाते हैं। मनुष्य को छोड़कर शेष प्राणी या तो अधिक बाल वाले या कम बाल वाले पाए जाते हैं। सर्द देश वालो के शरीर पर अधिक और गर्म देश वालो के शरीर पर कम बाल होते हैं किन्तु मनुष्य के शरीर मे बालो की संख्या बराबर रहती है चाहे वह सर्द स्थान मे रहे या गर्म। इससे यह बात स्पष्ट हो गई कि केवल सर्द देशो मे रहने मात्र से शरीर पर बड़े बड़े बाल नही उग निकलते किन्तु यह बात पाई जाती है कि जन्तुओ को सृष्टि की ओर से बाल दिए गए हैं, उन्ही के होते हैं और जिनको नही दिए गए उनके नही होते। बम्बई के प्रसिद्ध पारसी विद्वान मि० खुरशेद जी रुस्तम जी कहते हैं कि माऊंट स्टूअर्ट एलफिन्सटन और बरनस आदि प्रवासियों ने पता लगाया है कि हिन्दूकुश मे दो महीने गर्मी और दस महीने सर्दी रहती है। हिमालय पर ही काश्मीर नेपाल, तिब्बत और भूटान आदि देश बसे हुए हैं। इनके निवासी कहते हैं कि यहा सर्दी और गर्मी मिलती है। इससे हिमालय ही मूल स्थान होता है।

(३) हिमालय पर फल मन्द और घास आदि खाद्यपदार्थ होते हैं। अब यह बात निर्विवाद हो गई है कि मनुष्य का प्रधान खाद्य दूध और फल है। दूध पशुओ से और फल वृक्षो से पैदा होते है। इससे पाया जाता है कि मनुष्य के पहले वृक्ष और पशु हो चुके हैं तथा मनुष्य ऐसे मातदिल देशो मे रह सकता है जहा पशु रह सकते हो और वनस्पति उग सकते हो। पहाड़ो का सबसे ऊंची बर्फानी स्थानो और ग्रीनलैंड आदि देशो मे वनस्पति नही उग सकती, इसलिए वहा पशुपक्षी भी नही रह सकते। इससे ज्ञात होता है कि वनस्पति और पशु पक्षी भी मनुष्य की भांति किसी मत दिल देश में ही रहने वाले है। अर्थात् सारी सृष्टि किसी एक ही स्थान मे पैदा हुई मालूम होती है।

हम पहले ही बतला आये हैं कि बीज किसी एक ही स्थान मे बोया जाता है, पर इस वृहत् सृष्टि का बीज भी जिससे दो प्रकार की सर्द और गर्म तासीर रखने वाले वृक्ष और प्राणी उत्पन्न हुए है, ऐसे ही देश मे बोया जा सकता था, जहा सर्दी और गर्मी कुदरती तौर से मिली हो क्योंकि जहा सर्दी और गर्मी कुदरती तौर से मिलती है वही देश वनस्पति पशु और मनुष्यो के मिजाज के अनुकूल होता है और सबका खाद्य भी उत्पन्न कर सकता है तथा सर्द और गर्म देशो मे जाने लायक प्राणी भी पैदा भी कर सकता है। मशहूर सोशियलिस्ट कारपेंटर कहता है कि मनुष्य मातदिल गर्म मुल्को के रहने वाले हैं और कुदरती फल अनाज की खुराक खाते हैं, अत वही मुल्क उनका स्वाभाविक निवास स्थान है जहां ऐसी खुराक पैदा होती है।

हम देखते हैं कि हिमालय रूपी शंकर की गोद मे वनस्पति रूपी पार्वती अधिकता से विद्यमान हैं। यहा गाय, भैंस, घोड़ा, बकरी ऊंट, हाथी और कुत्ता आदि मनुष्य के सभी प्राणी बहुतायत से रहते है। विद्वानो ने पता लगा लिया है कि हिमालय पर प्राणियो के शरीरास्थ (फोसिल) पाये जाते हैं। पृथ्वी पर कोई स्थान नहीं है जो हिमालय स्थित प्राणियो के वंशजो से अधिक पुराने दे सके। ऐसी दशा मे स्पष्ट प्रमाणित होता है कि हिमालय पर मनुष्य के पूर्व उत्पन्न होने वाले और उसके जीवन आधार वृक्ष और गाय आदि पशु पूर्वातिपूर्व काल मे उत्पन्न हो गये थे, अतएव हिमालय आदि सृष्टि उत्पन्न करने की पूर्ण योग्यता रखता है।

(४) उस स्थान के पास ही मूल पुरुषो के रंग रूप वाले मनुष्य बसते हैं। काश्मीर हिमालय का ही एक भाग है जहा के निवासी मूल पुरुषो की सूरत शकल के पाए जाते हैं। इसलिए हिमालय को अब मूल स्थान कहने मे जरा भी सन्देह प्रतीत नही होता। एक बहुत बड़े भाषा शास्त्री की साक्षी से टेलर महोदय कहते हैं कि मनुष्य जाति की जन्मभूमि स्वर्गतुल्य काश्मीर ही है। आर्यों के विशुद्ध रंगरूप के ब्राह्मण काश्मीर मे आज भी निवास करते है जिससे बल पूर्वक कहा जा सकता है कि आदि सृष्टि हिमालय पर ही हुई।

(५) हिमालय के आस पास समस्त रंगरूपो के विकास की परिस्थिति हो। भारत देश की ऐसी बनावट है, जहा नित्य ही छहों ऋतुएं वर्तमान रहती हैं। इसी देश मे सब रंगरूप के आदमी निवास करते हैं यह इतना पूर्ण और सर्वगुण सम्पन्न देश है, जहा प्रत्येक स्वभाव के मनुष्य का निर्वाह हो जाता है। मूल स्थान के पास ऐसी विस्तृत भूमि की आवश्यकता थी, जहा आकर संसार भर मे रहने की योग्यता प्राप्त करके मनुष्य पृथिवी मे सर्वत्र फैले। भारत जैसे देश के सामीप्य के कारण भी यही प्रतीत होता है कि हिमालय पर ही मनुष्यो की आदिसृष्टि हुई।

(६) समस्त मनुष्यो को हिमालय की याद हो। संसार की समस्त

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्राच्य विमानविद्या संशोधक, श्री शिवकर बापूजी तलपदे-२

—प्रा० कुशलदेव व्याकरणाचार्य, विद्याभास्कर

कामराव कृष्ण आणि मंडली और तलपदे

डा० भवानी लाल भारतीय के अनुसार सन् १८८५ में मुंबई में 'कामराव कृष्ण आणि मंडली' नामी एक संस्था स्थापित हुई जिसने स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के मराठी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बनाई थी। हमारा यह अनुमान भी है कि इसी संस्था के माध्यम से श्री तलपदे स्वामी दयानन्द सरस्वती के साहित्य और उनकी वेदोक्त विचारधारा से सुपरिचित हुए होंगे।

'कामराव कृष्ण आणि मंडली' ने मार्च सन् १९०४ से 'आर्य धर्म' नाम मासिक भी शुरू किया था जिसमें क्रमश: 'सत्यार्थप्रकाश' और 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' का श्री पाद दामोदर सातवलेकर कृत मराठी अनुवाद प्रकाशित हुआ था। सर्व प्रथम बड़ौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ ने ही स्वामी नित्यानन्द जी से सत्यार्थ प्रकाश का मराठी अनुवाद करवाने की हार्दिक अभिलाषा व्यक्त की थी। श्री सातवलेकर कृत मराठी अनुवाद को उन्होंने पुरस्कृत भी किया। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्व प्रथम मन्त्री और अनुसंधित्सु पं० धर्मवीर (जिनकी जन्मभूमि हरियाणा और कर्मभूमि पुणे-मुंबई है) के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन हेतु श्री गायकवाड़ ने आर्थिक अनुदान भी प्रदान किया था। डा० भवानीलाल भारतीय के अनुसार इसी सातवलेकर कृत मराठी अनुवाद का संशोधन श्री शिवकर (शिवशकर नहीं) बापू तलपदे जी ने किया था।

श्री तलपदे द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के संशोधन किये जाने की बात हमें बिल्कुल ठीक लगती है क्योंकि क्रमश: सर्वप्रथम सत्यार्थ प्रकाश का मराठी अनुवाद 'आर्य धर्म' मराठी मासिक में प्रकाशित हुआ था और इस मासिक के सम्पादक श्री शिवकर बापू तलपदे ही थे, अत: उन्होंने संभव है भाषा शैली की दृष्टि से प्रकाशन से पूर्व मराठी सत्यार्थ प्रकाश का संशोधन किया हो।

सत्यार्थ प्रकाश के संशोधन वाली बात इसलिए भी ठीक लगती है कि श्री तलपदे और श्री सातवलेकर दोनों का सम्बन्ध 'सर जमशेद जिजीभाई स्कूल आफ आर्ट्‌स' आया था तलपदे इस चित्रशाला के शिक्षक थे, तो सातवलेकर ने इसी चित्रशाला में सन १८९० ई० में एक विद्यार्थी के रूप में प्रवेश किया था। श्री तलपदे ने विमान का प्रारम्भिक ढांचा भी सबसे पहले इसी स्कूल में बनाकर बताया था। तलपदे और सातवलेकर दोनों ही अपने अपने समय मे आर्टिस्ट, फोटोग्राफर और वेद विद्या विशारद के रूप में सुप्रसिद्ध थे। एक ही स्कूल मे तथा समानशील होने के कारण यहीं पर दोनों की निश्चित रूप से प्रगाढ़ मैत्री हुई होगी। आयु की दृष्टि से श्री तलपदे, श्री सातवलेकर जी से केवल तीन वर्ष बड़े थे। 'आर्यधर्म' प्रकाशन काल में सातवलेकर हैदराबाद मे थे तो तलपदे मुंबई मे। अत: श्री तलपदे जी ने सत्यार्थ प्रकाश का संशोधन किया, यह तथ्य पूर्णतया विश्वसनीय प्रतीत होता है। इस लेख के लेखक को श्री तलपदे द्वारा सम्पादित 'आर्यधर्म' मराठी मासिक की मार्च १९०४ से जनवरी १९०६ तक की फाइलें देखने का सौभाग्य मिला है, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि 'कामराव आणि कृष्णमंडली' का कार्यालय मुंबई के ठाकुर द्वार क्षेत्र में था। इस मंडली ने चारों वेदों की मूल संहिता, चारों वेदों की अनुक्रमणिका, सम्पूर्ण शतपथ ब्राह्मण, दशोपनिषद, निघण्टु, निरुक्त, अष्टाध्यायी, धातुपाठ, शतशब्द रत्नमाला (ईश्वर के सौ नामों की मराठी में कवितावद्ध व्याख्या), देशाटन (स्वामी नित्यानन्द जी के व्याख्यान) और 'अठारह पुराण किसने लिखे ? (अठरा पुराणे कोणी लिहिली ?) इत्यादि पुस्तकें प्रकाशित की थी।

डा० भवानीलाल भारतीय के अनुसार 'कामराव कृष्ण आणि मंडली' ने 'आर्याभिविनय', संस्कार विधि' तथा 'गोकरुणानिधि' भी मराठी में प्रकाशित की थी। इस मंडली के कार्यालय मे गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रकाशित पुस्तक भी ग्राहकों की सुविधा की दृष्टि से उपलब्ध रहती थीं।

वेदधर्म-प्रचारिणी सभा और तलपदे

आर्य समाज और तलपदे जी के अभिन्न सम्बन्धों को स्पष्ट रूप से जानने के लिए वेदधर्म प्रचारिणी सभा का परिचय भी जान लेना भी जरूरी है, क्योंकि वे मुंबई की 'वेदधर्म प्रचारिणी सभा' के अभिन्न थे। 'पं० इन्द्र-विद्यावाचस्पति के अनुसार सन '१८८६ के नवम्बर मास में जब मुंबई आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई थी, तभी मुंबई के कुछ उत्साही नवयुवकों ने आर्यसमाज के समानान्तर एक 'वेदधर्म प्रचारिणी सभा' नाम की संस्था स्थापित की। इस सभा के उपदेशक पं० भीमसेन शर्मा के शिष्य प० बाल कृष्णशर्मा थे। कालांतर (सन १९०१) में यह संस्था पुन: आर्यसमाज में विलीन हो गई, १७ पर 'आर्य धर्म मासिक अक्तूबर १९०४ के अंक में तलपदे जी ने जो मराठी मे निवेदन छापा है उससे जहां इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि सन् १९०४ में भी 'वेदधर्म प्रचारिणी सभा' गतिशील थी, वहां यह तथ्य भी उजागर होता है कि शिवकर बापू तलपदे महर्षि दयानन्द के परम भक्त और अनुयायी थे। वह निवेदन इस प्रकार है :—

"सभी लोगों को सविनय सूचित किया जाता है कि 'वेदधर्म प्रचारिणी सभा' अपने वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य दिनांक २५ सितम्बर १९०४ से 'कांदीवाड़ी' में 'मुंबई वैभव' नामक मुद्रणालय के पास हमारे फोटोग्राफिक स्टूडियो मे कर रही है।

प्रति रविवार को साय ५ से ७ बजे तक यहां ऋषि प्रणीत सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थों का पठन होता है तथा इसी विषय पर शंका समाधान भी किया जाता है। अत: सभी सद्धर्माभिलाषी लोगों से प्रार्थना है कि वे उपरोक्त स्थान पर पधारने की कृपा करें।

इस सभा का ध्येय लोगों को सद्धर्मामृत पिलाना है। यह सभा अपने मूल संस्थापक (स्व०) गुरुवर्य प० चिरंजीलाल वर्मा का स्मारक है। इस स्मारक को स्थायित्व प्रदान करने के लिये सतत् प्रयत्नशील और संघर्षशील रहनेवाला—

आप सबका सेवक—

शिवकर बापूजी तलपदे

(आर्टिस्ट फोटोग्राफर व प्राचीन विमानविद्या संशोधक)

'आर्यधर्म' मराठी मासिक और तलपदे

'आर्यधर्म' मराठी मासिक में प्रकाशित कुछ और विज्ञापन तथा निवेदन हम यहां दे रहे हैं, जिनसे यह पूर्णतया सिद्ध हो जाता है कि 'आर्यधर्म' के सम्पादक श्री शिवकर बापूजी तलपदे, ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, आस्थावान्, वेदमतानुयायी और सुदृढ़ आर्यसमाजी थे।

ऋग्वेद व यजुर्वेद के मराठी भाषान्तर के सन्दर्भ में 'आर्यधर्म' जनवरी १९०६ के अंक मे निम्नांकित विज्ञापन श्री तलपदे जी ने दिया है।

"हम 'आर्यधर्म' मासिक के द्वारा महाराष्ट्रीय पाठकों को वैदिक धर्म स्वरूप (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका) का परिचय देते आ रहे हैं, 'वैदिक धर्म स्वरूप' इस पुस्तक मे चारो ही वेदों के मुख्य-मुख्य विषयों से पाठकों को परिचित कराया ही है। अब यदि कम से कम दो हजार ग्राहक बनें तो ऋग्वेद व यजुर्वेद का भाषान्तर-मन्त्र, पदपाठ अन्वय, मराठी भाषान्तर, अकारादि क्रम से पद का अर्थ, भावार्थ सहित प्रतिमास ऋग्वेद के १६ पृष्ठ और यजुर्वेद के ८ पृष्ठ प्रकाशित करने का विचार है। अग्रिम वार्षिक शुल्क १-५० रुपया है। भाषान्तर का नमूना इसी अंक मे दिया गया है। यदि किसी को पृथक् रूप से चाहिये तो एक आने की डाक टिकट भेजें जिससे उन्हें भाषान्तर नमूने के आठ पृष्ठ भेजे जा सकें।

आदि मानव

(पृष्ठ ५ का शेष)

जातियों को साधारणत: ईरानी तथा भारतीय आर्यों को, विशेषत: हिमालय की आदिम कथा याद है दुनिया की बहुत सी जातियों को हिमालय पर हुए जलप्लावन की कथा याद है। इसी तरह हिमालय के दूसरे नाम 'मेरु' का स्मरण अनेक जातियां भिन्न-भिन्न नामों से करती हैं—भारतीय आर्य मेरु' जेन्द भाषा वाले ईरानी 'मोरु' यूनान वाले 'मेरोस' दक्षिणी तुर्किस्तान वाले 'मेरुव' मिश्रवाले 'मेरई' और असीरिया वाले 'मीरुम' कहते हैं। ईरान के पारसी आर्य और भारतीय आर्य अपना अर्थात् आदि महापुरुषों का आदि स्थान हिमालय बतलाते हैं। (वैदिक सम्पत्ति के आधार पर)

इस लेख का निष्कर्ष यह है कि आदि मानव-स्थान हिमालय है न कि अरब, जर्मनी, योरुप, उत्तरी ध्रुव, अफ्रीका या अमरीका है। इसी प्रकार मानव को पैदा हुए ८ हजार, दो लाख, चार लाख वर्ष नहीं हुए किन्तु १२ करोड़, पांच लाख, तैंतीस हजार नवासी वर्ष गुजर चुके हैं।

सन्ध्या—एक चिन्तन-२

देवनारायण भारद्वाज

सन्ध्या का सबसे प्रथम मन्त्र आचमन मन्त्र है। इस मंत्र का प्रथम शब्द भी 'शम' है और सन्ध्या के अन्तिम नमस्कार मन्त्र में तो 'शम-शिवम्' का ही साम्राज्य है। इसका आशय यही है कि शान्ति के साथ सन्ध्या को प्रारम्भ करें और समाप्ति पर शान्ति में बहुगुणित वृद्धि हो जाये। मन में स्थापित यह शान्ति प्रभु-दर्शन के साथ-साथ जगत के कार्यों में भी शक्ति एवं सम्बल प्रदान करे। आइये सर्व प्रथम मन्त्रार्थ पर विचार कर लिया जाये।

ओ३म्! शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः॥ यजु० ३६-१२, अथर्व० १ ६-१

अर्थ—वह आपः। जल के समान सब मंगलकामनाओं को प्राप्त कराने वाली (देवी) दिव्य प्रभु भक्ति (नः) हम सबके लिए (अभीष्टये) अभीष्ट सिद्ध के लिए और (पीतये) परम रस का पान करने के लिए (शम्) शान्ति दायक (भवन्तु) होवे और (शंयो) सुख को (अभिस्रवन्तु) सब ओर से बरसाये।

मन्त्र का देवता (विषयः) आपः अर्थात जल है, यहां पर यह बहुवचन स्त्रीलिंग है और प्रभु शक्ति 'देवी' के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ। आचमन भी तीन बार जल से ही किया जाता है। वैसे तो हथेली में स्वनिर्मित तालाब बनाकर उतने ही मात्रा में जल का पान करते हैं, जो गले को तर करता हुआ—हृदय तक ही जाये, इससे अधिक न हो। इससे गले में एकत्र कफ की निवृत्ति हो जाये। ऋषि ने तो यह भी स्पष्ट कर दिया है कि यदि जल न हो या कफ आदि की निवृत्ति भी न करनी हो, तो इस आचमन की क्या आवश्यकता। पर मन्त्र की, अर्थ की और उसके आदर्श—आचरण की आवश्यकता तो रहेगी ही। बहुत ही मोटे रूप में जल को सम्बोधित करते हुए हम कह सकते हैं, कि जल के रस से परिपूर्ण दिव्य प्रभु शक्ति, हमें तू अभीष्ट रूप व मात्रा में प्राप्त हो, हम तेरा पान करके तृप्त होते रहें। हे मातृ जल प्रभु शक्ति हम अकेले ही तृप्त न हों, हे जल, तू कूप, तड़ाग, नदी एवं सागर में ही सीमित मत रह जाये, जो तुझे प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के साधन हमें जुटाने पड़ें। कुछ लोग जुटा सकते हैं, वे अवश्य जुटालें, पर कोई ऐसा भी होगा, वह शायद न जुटा पाये, तो तू ऐसी कृपा कर कि सभी ओर से जल की वर्षा करके हमें तृप्त कर दे, जिससे कोई भी अतृप्त न रहने पाये। प्यासे को तो सदैव कुए के पास जाना ही पड़ता है, किन्तु हे दिव्य प्रभु शक्ति यदि तू कृपा का भण्डार खोल दे तो कुआं क्या सागर भी चलकर प्यासे के पास आ सकता है। हे देवी माता-यह वर्षा आपकी वही दिव्य शक्ति है जो सागर के जल को प्यासे के पास लाकर वर्षा देती है। समीपवर्ती निवासी या यात्री को छोड़कर कितने होंगे जो सागर का दर्शन भी कर सकें, पर यह वर्षा ही तो है जो अथाह सागर की जलराशि को कुटी-महल, खेत-उद्यान, तालाब, झील तक पहुंचा देती है और विशेषता यह कि सागर के कटु खारेपन को हाथ भी नहीं लगाती है, जल को अति शुद्ध-पवित्र-मधुर बनाकर हमें प्रदान कर देती है।

आचमन में जो जल हमने पान किया—वह शान्ति शीतलता एवं शक्ति का संगम है। इससे प्रथम हम अपने शरीर को शान्ति-शीतलता प्रदान कर देते हैं। जहां हम बैठकर सन्ध्या कर रहे हैं—वहां सामने सरित-प्रवाह है, झील, झरना या तालाब ही है, कोई कूप है और कुछ नहीं तो किसी पात्र-आचमनी में ही जल हमारे सम्मुख है, इस जल की थोड़ी सी मात्रा को पीकर हम अपने शान्ति के अंकुर जगाना चाहते हैं, तो बाहर भी यह सम्मुख जल राशि वातावरण व शान्ति का संग्रह कर रही है। ऋषियों ने इसीलिए तो सन्ध्या स्थल का निर्धारण निम्नवत् किया है:—

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रोऽजायत॥ साम १४१

पर्वतों की गुफाओं में और नदियों के संगम पर मानव विशेष बुद्धि से मेधावी बनता है। इसी का अनुमोदन मनु जी "अपां समीपे नियतो नैत्यिकं विधिमास्थित।" अर्थात् नित्य कर्म जल के समीप, पवित्र स्थान में करना चाहिए। जल से उठने वाली तरंगें प्रकृति-प्रणाली सभी को हर्ष प्रदान करती हैं। जल यहां पर अप्रासंगिक नहीं लगता है क्योंकि आगे भी शरीर को सबल एवं शुद्ध बनाने की बात कही है, जिसके लिए जल एक आवश्यक उपादान है। जल प्रतीक से ठीक-ठीक बोध प्राप्त करने के लिए आचमन मन्त्र के अन्य शब्दों से भी हमें सहायता लेनी चाहिए। 'अभिष्टये', 'पीतये' एवं 'शम्' इन तीनों शब्दों से हमें सुन्दर संकेत मिलता है। अभिष्टय-मनोवांछित आनन्द की ओर हमें अग्रसर करता है, जो हमें उचित ज्ञान से ही प्राप्त होगा—पीतये-अभीष्ट ज्ञान को कर्म में परिणित करके ही हम पूर्णानन्द की लब्धि कर सकते हैं। यह दोनों मिलकर ही हमारे लिये 'शम्' शान्तिदायक या कल्याणकारी हो सकते हैं—अकेले नहीं। ज्ञान+कर्म का परिणाम यही शम्-शान्ति है। मुझे अकेले को प्राप्त शान्ति से काम नहीं चलने वाला है, क्योंकि समाज में कहीं भी उपद्रव होते हैं; कहीं हत्या, अपहरण, लूट-मार होती है, तो उनके समाचार ही हमारी शान्ति को भंग कर सकते हैं, इससे बढ़कर भुक्तभोगी की चीत्कारें जो वातावरण में गूंज जायेंगी, वे भी जल से उठने वाली शान्त तरंगों का रंग-भंग कर देती हैं। इसलिए भक्त की प्रार्थना है कि ज्ञान+कर्म की सुपरिणामी शान्ति की सर्वत्र वर्षा हो जाये।

अभीष्ट ज्ञान को सुखपूर्वक व्यवहार में लाकर स्वतः शान्ति प्राप्त होता है। कोई भी व्यक्ति अध्यापक, उपदेशक, अभियन्ता, चिकित्सक या अधिकारी बनना चाहता है, तो वह उसी के अनुकूल ज्ञान का अर्जन करता है, यदि उसी ज्ञान के प्रयोग में सुख मिलता है तो यही शान्ति का साधन बन जायेगा। यदि कार्य में ही सुख नहीं है तो शान्ति बहुत दूर है। जिसका मन जिस काम में—लक्ष्य में लग जाता है—उसे भूख भी याद नहीं रहती है—मन उसी कार्य में मग्न हो जाता है और कार्य की पूर्णता के बाद उसके फल में भी। सुख और दुःख तो भोजन के स्वाद एवं सतृप्ति में ही बदल जाती है। 'अभिष्टये' हमें भौतिक अभ्युदय की ओर सरकाता है तो 'पीतये' 'निःश्रेयस' में विन्यास करके 'शम' पर स्थापित कर देता है।

मनुष्य धर्म-प्राणों के चार हो तो पुरुषार्थ होते हैं, जो उसके जीवन के साधन एवं लक्ष्य बन जाते हैं। जिन्हें हम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के नाम से जानते हैं। इन चारों को हम दो 'वर्गों' में समूह बद्ध कर सकते हैं। धर्म अर्थ, काम, यह तीन मिलकर एक समूह हुआ और अकेला मोक्ष दूसरा समूह है। पहले तीनों पुरुषार्थों का उद्देश्य तो मोक्ष ही है। यह भी कह सकते हैं कि प्रथम तीन साधन हैं, तो चौथा-साध्य है। मन्त्र के 'अभीष्टये' के अन्तर्गत धर्म, अर्थ, काम निहित हो गया और 'पीतये' में मोक्ष सन्निहित हो गया। हम यों भी कह सकते हैं कि बिना अर्थ के कोई काम नहीं होता-तो अर्थ हो किन्तु धर्म से नियन्त्रित, सृष्टि संचालन के लिए काम भी वांछनीय है, यदि वह धर्म-अर्थ से नियन्त्रित है तो सुखदायक अन्यथा दुःखदायक। आशय यह है कि धर्मपूर्वक अर्थ का अर्जन हो, धर्म-अर्थ दोनों के नियन्त्रण में काम-कामनाओं का सृजन हो, तो हमें बन्ध में न पड़कर मुक्तानुभूति मिलेगी; *अन्यथा तो बन्धन ही बन्धन है। जिस मोक्ष-मुक्ति-आनन्द* के लक्ष्य को लेकर हम मानव योनि के पड़ाव तक आ गए हैं, वह हमें-हमारी आत्मा को प्राप्त करना है, किन्तु प्राप्त करना होगा—इसी शरीर में ऐसा न हो कि शरीर त्याग कर पृथक आत्मा को सहसा ही यह लक्ष्य मिल जाये, इसलिए आत्मा की आनन्दानुभूति के लिए शरीर की स्वस्थानुभूति भी अनुपेक्षणीय है।

'शम्'—शान्ति आनन्द के लक्ष्य की यात्रा है तो मात्र पांच कोस (कोष) की, किन्तु कोई इन कोषों को छोटा कर लेता है, कोई इतना लम्बा कि एक कोष से ही पार निकलना कठिन हो जाता है ये पांच कोष बहुप्रचलित हैं—(१) अन्नमय कोष (२) प्राणमय कोष (३) मनोमय कोष (४) विज्ञान-मय कोष (५) आनन्द मय कोष। आचमन का यह मंत्र हमें इन कोषों से लक्ष्य-प्राप्ति के प्रकरण की ओर भी तो मोड़ देता है। (क्रमशः)

योग नवयुग की संजीवनी-२

डा० एस. के. भटनागर हैल्थ होम शकरपुर, दिल्ली

यदि तनाव एवं बाधाओं से बचना है, धन और समय को बचाना है, तब बीमार होने से पहले बचाव कार्य अर्थात् योगाभ्यास करें (Prevention is better than cure) योगाभ्यास द्वारा शान्त व स्वस्थ मन ही सारे दुःखों का निराकरण कर सकता है, अन्य कोई मार्ग नहीं है।

योग ऋषि मुनियों की मानव-मात्र के लिए महान देन है। वे योगी ही नहीं, अपितु महान वैज्ञानिक भी थे। उन्होंने बताया कि शरीर में ३६४ हड्डियां, २ करोड़, २ लाख, ९० हजार, २८९ नाड़ियों की शुद्धि शिव सकल्पों और हर्षोत्पादक विचारों से सम्भव है। ऐसे प्रामाणिक तथ्य वैज्ञानिकों द्वारा अभी तक नहीं दिये गये हैं।

प्राचीनकाल में रोग निर्णय के लिए सूक्ष्म यंत्र न थे। उस समय योग द्वारा ही यह निर्णय लिये जाते थे या पहले ही योग द्वारा अपने को स्वस्थ रखा जाता था ताकि व्याधियां शरीर को न घर दबोचें। शारीरिक बीमारियों का सम्बन्ध जीवनी शक्ति से होता है। मानसिक बीमारियों का संबंध मन की शक्ति से होता है। पिंगला प्राण शक्ति व इड़ा मानसिक शक्ति का सचालन करती है पिंगला शारीरिक बीमारियों के लिए उत्तरदायी है और इड़ा मानसिक बीमारियो के लिए। कुछ बीमारियाँ मनोकायिक (Psychosometic) होती हैं, जो शरीर से प्रारम्भ होकर मानसिक रूप मे बदल जाती हैं। कुछ बीमारियां कायं मानसिक (SOMATO PSYCHIC) होती हैं, जो मन से प्रारम्भ होकर शारीरिक रोग में परिवर्तित हो जाती है। डा० उडुप्पा और उनके सहयोगियो द्वारा बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय के आयुर्वेद संस्थान मे किये गये प्रयोगों के आधार पर आसन, प्राणायाम और ध्यान से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य दोनों मे पर्याप्त सुधार होता है। यौगिक क्रियाओ का विशेष प्रभाव अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों (Endocrime glands) पर होता है।

परम स्वास्थ्य का अर्थ है पूरे व्यक्तित्व की समग्रता। स्वास्थ्य का परमस्वभाव शांत समरसता, आनन्द, मुदिता, संगीता, निराकुलता, प्रेम, मैत्री, करुणा, सम्यकत्व, संतुलन, कल्याण एवं मंगलभाव आदि दिव्यगुण जीवन मे प्रस्फुटित होना है। इस प्रकार योग जीवन का विधायक एवं स्वस्थ रूपान्तरण अर्थात् परमस्वास्थ्य का महा विज्ञान है।

योग को ज्ञान प्राप्ति और आत्मदर्शन का साधन बताया गया है। भारतीय मनीषियों ने "योग" शब्द को बड़े व्यापक अर्थ मे लिया है। आत्मा को परमात्मा से जोड़ना योग का तात्त्विक अर्थ है। योगी अपनी प्राणधारा को परमात्मा से संयुक्त करने पर भवसागर के दु.खों से छुटकारा पा लेता है।

परमात्मा के अनेक नामों में एक नाम 'सच्चिदानन्द" है। प्रकृति, जीव परमात्मा क्रमशः सत् सत्‌चित्त (चेतन) और आनन्द है। सुख और शान्ति के लिए परमात्मा का आश्रय लेना पडेगा। अतः योग की अनिवार्यता निर्विवाद है।

"योगः चित्तवृत्ति निरोधः" पातञ्जलि मुनि के इस सूत्र के अनुसार चित्त की अशुभ वृत्तियो को रोकना योग है। अशुभ विचारो को हटाने पर शुभ विचारों का उदय स्वतः ही होगा। योग चित्त की ऊंची अवस्था का नाम है, जिसका अभिप्राय परमात्मा की स्थिति का होना है। चित्त (साधारण भाषा मे मन) वस्तुतः महत्तत्व, अन्तःकरण, बुद्धि आदि का सामूहिक नाम है। साधारण मनुष्य के चित्त की अवस्था क्षिप्त रहती है। निरन्तर विकीर्ण रहने वाले व्यक्ति मे योग से समता, एकरूपता और चित्त में संतुलन आता है। सांसारिक वस्तुओं तथा आन्तरिक काम, क्रोध लोभ, मोह आदि का मन पर जो अच्छा या बुरा फोटो खिंचता है और उसके प्रभाव से जो हलचल पैदा होती है, उसे वृत्ति कहते हैं। सक्षेप में मन रूपी समुद्र में तरंगे ही वृत्ति है। ये पांच (प्रमाण, विपर्य, विकल्प, निद्रा, स्मृति) हैं। निरोध का उपाय पातञ्जलि मुनि ने अभ्यास और वैराग्य बताया है—"अभ्यास व वैराग्य द्वारा पांच वृत्तियों को रोक लेने पर योगी पुरुष ईश्वरानन्द में मग्न हो जाता है। तब उसे ससार के कोई क्लेश नहीं सताते।

शरीर में हलकापन, रोग मुक्ति, स्वार्थत्याग, रस से निखार, वाणी में माधुर्य, श्वास में मधुर गन्ध, मलमूत्र की न्यूनता, योग में प्रथम सिद्धि के लक्षण है, परन्तु भौतिकवाद में ग्रस्त मानव के लिए स्वार्थ से मुक्ति पाना यदि असम्भव नहीं, तो अत्यन्त कठिन कार्य अवश्य है। स्वार्थ से मानव में ईर्ष्या, द्वेष आदि क्षुद्र भावनाएँ जन्म लेती है। योग द्वारा ही इसका परिष्कार बहुत आवश्यक है।

योग से समत्व की गति प्राप्त होने पर द्वन्द्वात्मक भावनाओ का मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कर्म के परिणाम का चिन्तन ही द्वन्द्व को जन्म देता है। द्वन्द्वात्मक संवेदनाओं से अप्रभावित रहना ही योग है।

योग यज्ञीय कर्मों की भी सतत् प्रेरणा देता है (यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म) असयमी कभी योगाभ्यास नही कर सकता। संयम् के लिए त्याग चाहिये। त्याग से प्रेम, प्रेम से सुख और सुख में शांति मिलती है। यही शांति नवयुग की सजीवनी है।

श्री कृष्ण महाराज ने गीता मे 'योग" का अति विस्तृत अर्थ में प्रयोग किया है। "योग कर्मसुकौशलम्" कहने का तात्पर्य कार्य को कुशलता पूर्वक सरलता से सम्पादित करना योग है। योग का कोई गौण उद्देश्य नहीं; अपितु योग समाज के हर पहलू के साथ गहराई से संबधित है।

योग सार्वभौम है। मानव व्यक्तित्व से सर्वांगीण व सर्वतोमुखी विकास का साधन है। शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य प्रदान कर जीवन में कर्मठता, त्याग सहनशीलता, सयम सेवा इत्यादि दिव्यगुणों को भरना योग युक्त जीवन से ही संभव है। योग नैतिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की उन्नति का परम साधन है।

पातञ्जलि मुनि ने अपने भाष्य "योगानुशासनम्" सूत्र द्वारा प्रारम्भ किये थे; क्योंकि अनुशासन जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है। महाविद्यालयों मे अध्ययन, देश तथा राष्ट्र की समृद्धकरण आदि सभी कार्य अनुशासित व्यक्तियो के द्वारा ही निस्पन्न हो सकते हैं। उसके अभाव में विद्यार्थी नकल न करने देने पर अध्यापक को छुरा घोंपते हैं और विधायक तथा सांसद सबधित सदनों में हाथापाई करते, जूते-चप्पल उछालते देखे गये हैं। बिना अनुशासन के परिवार, समाज, जाति, देश, व राष्ट्र सुसगठित तथा समृद्ध नही बन सकते। अनुशासन हीनता से भ्रष्टाचार, अन्याय अत्याचार, हिंसा-द्वेष, ईर्ष्या आदि बढ़ती है। इनसे छुटकारा पाने के लिए योग द्वारा अनुशासित जीवन कला सीखनी होगी। अनुशासन समाज की रीढ़ की हड्डी है (Disci pline is the Back Bone of the Society) योगाभ्यास से अनुशासन एव रीढ़ दोनों ही भली-भांति प्रभावित होकर समाज व शरीर के लिए सुखारी सिद्ध होते हैं।

ज्ञान-विज्ञान की बढ़ती शाखाओं, ध्यान को भटकाने वाली सामाजिक एव राजनैतिक परिस्थितियो तथा नौकरी पाने के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धाओं ने छात्र जीवन के बोझ को द्विगुणित कर दिया है। "काकचेष्टाबकोध्यानम्" इत्यादि विद्यार्थियो के लिए गिनाये पांच लक्षण आज भी महत्वपूर्ण हैं। इनके प्राप्त करने का एक सर्वश्रेष्ठ साधन योग है। योग की कार्य-प्रणाली ही निरुद्योगी, किंकर्त्तव्यविमूढ़, निद्राग्रसित, आलसी और प्रमादी छात्रो का शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के पतनो से उठाकर दिव्यता, देवी तेज, इन्द्रियों को शुद्ध निर्मल एव स्थिर गति तथा पुरुषार्थी व्यक्तित्व का निर्माण करने में पूर्ण समर्थ होकर संजीवनी सिद्ध होगी।

(क्रमशः)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

प्रान्तीय उप व्यायाम शिक्षक शिविर

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ (गा० बाद) उ० प्र० में १ से १० जून ९२ तक प्रान्तीय उप व्यायाम शिक्षक शिविर लगाया जा रहा है जिसमे पूरे प्रान्त से वह युवक प्रवेश ले सकेंगे जो कम से कम १ शिविर कर चुके हैं। शिविर मे उप व्यायाम शिक्षक की उपाधि दी जाएगी। और गंगा किनारे भ्रमण आदि द्वारा मनोरंजन भी होगा। सभी जिला संचालक अपने-अपने जनपदो से अधिक आर्यवीर भिजवायें।

नोट—(१) यह गुरुकुल गढ़ मुक्तेश्वर के निकट गंगा किनारे पर स्थित है गढ मुक्तेश्वर बस अड्डे से पूठ के लिए बसें उपलब्ध रहती हैं।

(२) भोजन आवास की सुविधा गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क रहेगी।

(३) विजेताओ को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र भी दिये जावेंगे।

—धर्मपाल आचार्य
संचालक--आर्यवीर दल उत्तर प्रदेश

श्री गंगानगर में आर्य वीर दल

१९ से २५ फरवरी १९९२ तक श्री गंगानगर मे स्वामी सुमेधानन्द के निर्देशन मे तीन अलग-अलग ग्रामो मे ३ शिविर सम्पन्न हुए इनमे 11EEA ग्राम में हरफूल सिंह आर्य, 2RB मे हरदयाल सिंह आर्य तथा फकीरवाली मे श्री रामकृष्ण जी सरपंच का सहयोग विशेष सराहनीय रहा। इनमे लगभग १९५ आर्य वीरो ने भाग लिया। प्रदर्शनो के कार्यक्रम भी एक ही दिन मे अलग अलग स्थानो पर जिला सभा के मन्त्री शुद्धबोध जी के व्यवस्थापूर्ण विशेष प्रयासो से बड़े सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुए। आर्य वीरों ने शाखायें चलाने का दायित्व लिया। शिविरों मे विशेष स्थान प्राप्त करने वाले आर्य वीरों को पुरस्कार तथा सभी को आर्यवीर प्रमाण पत्रो से सम्मानित किया गया। इन स्थानो से अनेक आर्य वीर राजस्थान के आर्यवीर दल प्रांतीय शिविर (गुरुकुल चित्तौडगढ) मे भाग लेंगे। जनपद स्तर पर शिविर समारोह उपरान्त आर्य वीर दल हेतु निम्न प्रकार मनोनयन हुआ।

अधिष्ठाता—श्री शुद्ध बोध जी शर्मा, जनपद संचालक (मण्डलपति)—हरफूल सिंह आर्य (11EEA), कार्यवाहक मन्त्री—विनेश आर्य (2RB)।

—मदनपाल राठी आर्य
व्यायामशिक्षक सा आर्य वीर दल

आर्य वीरदल मध्य प्रदेश का प्रान्तीय सम्मेलन सम्पन्न

उज्जैन सिंहस्थ पर्व के अवसर पर आर्य वीर दल मध्यप्रदेश द्वारा प्रान्तीय सम्मेलन का आयोजन १-४ मई को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सञ्चालक ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। ३ मई को आर्य वीरो की रैली को सम्बोधित करते हुए उन्होने, संस्कृति रक्षा, शक्ति सञ्चय और सेवा इन तीन उद्देश्यो पर विस्तार से चर्चा की स्मरण रहे आर्य वीर मध्य प्रदेश १६ मई से यहां भोजन आवास तथा सुरक्षा कार्य मे सन्नद्ध है।

४ मई को व्यायाम सम्मेलन हुआ जिसमें शक्ति प्रदर्शन, महाराष्ट्र से आये आर्य वीरो द्वारा मल्लखम्भ प्रदर्शन तथा अन्य व्यायामो की जनता ने बहुत सराहना की। आ० वी० मध्य प्रदेश के अधिकारीगण पूरी शक्ति से कार्य क्षेत्र मे जुटे हैं।

—आदित्यपाल सिंह
मन्त्री आर्य वीर दल मध्यप्रदेश

पं० विश्वमित्र मुख्याधिष्ठाता नियुक्त

आर्य जगत् के लिए यह जानकर हर्ष होगा कि गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू के माननीय कुलपति श्री प० विश्वमित्र जी मेधावी 'विद्यावागीश' को गुरुकुल वैदिक संस्कृति महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद के प्रबन्ध तंत्र ने दिनांक २७-४-९२ को सर्व-सम्मति से मुख्याधिष्ठाता का पदभार देकर सम्मानित किया है। आप वैदिक प्रखर व्याख्याता तथा यज्ञादि कर्मकाण्ड के विशेषज्ञ भी हैं।

—डा० रमामित्र शास्त्री

आदर्श सामूहिक विवाह

बाथम वैश्य सभा लखीमपुर खीरी द्वारा दिनांक ४-५-९२को बाथम वैश्य धर्मशाला लखीमपुर खीरी मे एक साथ एक ही मण्डप पर १४ जोडों का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हुआ यह सब विभिन्न स्थानो से आए हुए थे, धर्मशाला हजारो दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था विवाहोपरान्त बाथम वैश्य सभा द्वारा सभी के प्रीतिभोज की भी व्यवस्था की गई। यह आयोजन दूसरी बार हुआ है।

श्री रामनिवास लखोटिया की षष्टी पूर्ती पर उप-राष्ट्रपति द्वारा आत्मकथा का विमोचन

नई दिल्ली। सुप्रसिद्ध समाज सेवी एवं आयकर विशेषज्ञ श्री रामनिवास लखोटिया का षष्टी पूर्ती समारोह स्थानीय चैम्सफोर्ड क्लब नई दिल्ली में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

देश एवं विदेश से पधारे सैकड़ो व्यक्तियों ने इस समारोह में भाग लिया। उपस्थित जन समुदाय ने श्री लखोटिया जी के ६० वें जन्म दिवस पर उनके द्वारा किए गए विभिन्न सेवा कार्यो की चर्चा की। ज्ञातव्य है कि गत ४० वर्षों से श्री लखोटिया विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं समाजोपयोगी संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए है तथा देश एवं समाज की सच्ची सेवा तन मन तथा धन से बड़ी लगन के साथ करते आ रहे हैं।

षष्टी पूर्ती के इस अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल जी शर्मा ने श्री लखोटिया द्वारा रचित हिन्दी एवं अंग्रेजी आत्मकथा- बेहतर जीवन की ओर का विमोचन किया तथा उन्हे शाल भेंट कर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर उनकी पत्नी आशारानी लखोटिया ने स्व रचित कविता से श्रोताओं को आत्मविभोर कर दिया।

डा० गिरिजा व्यास, श्री लाल कृष्ण आडवानी श्री राजा विजयकरण एवं अनेक सांसद, उद्योगपति एवं विभिन्न समाजसेवी व्यक्तियों ने इस समारोह मे भाग लिया। सभी ने एक मत होकर श्री लखोटिया को समाज का बहुमूल्य रत्न बतलाया तथा उनके दीर्घ जीवन की कामना की।

आर्य अनाथालय का शुभारम्भ

गुरुकुल विद्यापीठ ध्रुवपुरी फरीदाबाद के पूर्व मुख्याधिष्ठाता स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने ग्रा० पो० कौराली छज्जुपुर बल्लभगढ़ हरियाणा मे आर्य अनाथालय की स्थापना कर दी है। निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। जुलाई १९९२ मे अनाथालय प्रारम्भ हो जायेगा।

—रमेशचन्द्र शास्त्री अध्यक्ष
ग्रा० वि० वि० समिति

कल्याण जी भाई वेलाजी कल्याणदेव आर्य बने

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा प्रसिद्ध आर्य श्रेष्ठी श्री कल्याण जी भाई वेलाजी (७ बी कनकद निकेतन, देरासर लेन, घाटकोपर (पूर्व) मुम्बई ७७) का नाम परिवर्तित करके श्री कल्याणदेव आर्य रखा गया है। यह नाम परिवर्तन चैत्र शुक्ला २ वि० स० २०४९ (५ ४ ९२) को ग्राम वन विकास फार्म के वार्षिक उत्सव पर किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री कल्याणदेव जी आर्य, आर्य जगत् की अनेक धार्मिक, शैक्षणिक व सामाजिक संस्थाओं के सक्रिय कार्यकर्ता हैं तथा उदीयमान उत्साही व्यक्तित्व रखते हैं। सभी आर्य सज्जनो से निवेदन है कि भविष्य मे उनके साथ नवीन नाम से ही व्यवहार करें।

—ज्ञानेश्वरार्य
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड पो० सागपुर
(सा० का०) गुजरात-३८३३०७

वेदोध्वनि गूंजती रही

आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता (वि० क्षेत्र) श्री सदाशिव जी गुप्ता व आर्य समाज रीवा के श्री प्रधान व मन्त्री जी की अनुमति से समाज के पुरोहित प० प्रमोद कुमार शास्त्री ने आर्य समाज सतना के माननीय सदस्य गणों के सहयोग से श्री फूलेलाल मन्दिर (सतना) मे दिनांक १९-३-९२ से २१-३-९२ तक निरन्तर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का संचालन किया। यज्ञ मे आहुति देने हेतु उपस्थित माताओं, बहिनों आगन्तुक अतिथियों व स्थानीय लगभग पाच सौ लोगो ने यज्ञ मे उत्साह पूर्वक भाग लिया। तीन दिन तक वेद मन्त्र गूंजते रहे। यज्ञ के उपरान्त समाज के पुरोहित प० प्रमोद कुमार शास्त्री ने कहा कि वेदो के बताये हुए रास्ते पर चलकर मानव अपने जीवन को सफल और मंगलमय बनाये। सम्पूर्ण कार्य सुखद वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

— मन्त्री
आर्य समाज रीवा (म० प्र०)

विदेश समाचार

आर्य समाज लण्डन में गायत्री महायज्ञ

१२ अप्रैल १९९२ को आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आर्य समाज लण्डन में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर गायत्री महामन्त्र से आहुतियां प्रदान की। इस अवसर पर आर्यजनों का उत्साह उल्लेखनीय था। प्रसाद के रूप में श्री सोफट परिवार ने ऋषिलंगर की व्यवस्था कर आगन्तुकों को स्वादिष्ट भोजन प्रदान किया।

इस यज्ञ का प्रारम्भ प्रो० एस एन भारद्वाज, प्रधान आर्य समाज लण्डन ने किया और पूर्णाहुति पं० सहदेव मलहोत्रा तथा डा० तानाजी आचार्य, डा० श्रुतिशील शर्मा, एवं पं० विनय कुमार जी ने यजमानों को आशीर्वाद प्रदान किया और यज्ञ को सम्पन्न कराया।

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अपने संक्षिप्त संबोधन में श्री पं० सहदेव जी ने सभी कार्यकर्ता और प्रेमीजनों से कहा कि प्रथम कठोर तप और साधना के बल पर स्वयं के चरित्र का निर्माण करो। तत्पश्चात् उत्तम चरित्र के बल पर संसार को आर्य बनाने का प्रयत्न करो। हम सुधरेंगे, तो जग सुधरेगा। आर्यसमाज रूपी वृक्ष की जड़ों को मजबूत बनाकर उसे विश्व में फैलाने की यही सर्वोत्तम विधि है। इस कार्य के लिए हम सबको एकजुट होकर अभी से ही लगना होगा।

प्रार्थना और शान्तिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

इस महायज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था का भार स्वीकार कर इसे सफल कराने में वेद पाठ की महिलाओं ने अथक परिश्रम किया है। उनमें भी श्रीमती सावित्री छाबड़ा कैलाश मलीन सुमन चोपड़ा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। एतदर्थ सभी वेदपाठ ग्रुप तथा सहयोगियों को विशेष धन्यवाद।

—तानाजी आचार्य

आर्य सम्मेलन

गढ़वाल, वेद प्रचार समिति देहरादून द्वारा आगामी ५ से ७ जून ९२ तक नौगांवखाल गढ़वाल में धर्म रक्षा एवं जनजागरण हेतु एक आर्य सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सहित अनेकों विद्वान् भजनोपदेशक तथा नेता पधार रहे हैं। इस अवसर पर अनेकों अन्य सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया है। अतः आर्य समाज के प्रचार प्रसार में गढ़वाल वेद प्रचार समिति को तन, मन धन से सहयोग दें तथा अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनावें।

ओ पी निर्मल, मन्त्री

धार्मिक संस्कार शिविर

गुरुकुल धर्मधापुरम् होशंगाबाद में २० मई से १ जून ९२ तक धार्मिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः तथा सायं बृहद् यज्ञ तथा रात्रि में भजनोपदेश का कार्यक्रम रखा गया है। इस अवसर पर ११ मई से २१ मई तक धार्मिक संस्कार शिविर में वैदिक धर्म की व्यवहारिक शिक्षा व सिद्धान्त, योग आसन व्यायाम का शिक्षण दिया जायेगा। शिविर स्थान में ही आवास, भोजन व शिक्षण होगा। शिविर शुल्क १०० रुपये रखा गया है।

आचार्य

दोनों नेत्र दान किये

श्री वीरेन्द्र सिंह चौहान निवासी ग्राम मनौना ने अपने दोनों नेत्र, बरेली नेत्र बैंक को दान कर दिये। इसके साथ ही आपने मरणोपरांत अपना मृत शरीर आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज के प्रशिक्षणार्थियों के अध्ययनार्थ दान करने का संकल्प किया है आपका यह कार्य सराहनीय, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। श्री वीरेन्द्र सिंह चौहान आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा प्रताप सेवा समिति बरेली के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी हैं।



आयुष्मति लक्ष्मीदेवी आर्या आत्मजा श्री वैद्य विश्वकेतु आर्य ग्राम कन्धारी पोस्ट नेमदारगंज (नवादा बिहार) का शुभ पाणिग्रहण चिरञ्जीव श्री अरविन्दसिंह आर्य सुपुत्र श्री दोनासिंह आर्य ग्राम रिउआ पोस्ट सौंसर (गया) के साथ दिनांक ६-१-९२ शुक्रवार को वैद्य जी के पौरोहित्य में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक परिवार इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

दयानन्द सेवाश्रम संघ के बढ़ते कदम

श्रीमान् धर्मसिंह राठौर के आदेशानुसार महर्षि दयानन्द सेवाश्रम अन्तरवेलिया जिला झाबुआ (म० प्र०) में दिनांक १५-४-९२ को माता प्रेमलता शास्त्री का कार्यक्रम रखा गया। डा० आर एम चौहान डायरेक्टर हर्षवर्धन केमिकल्स का उक्त कार्यक्रम में प्रशंसनीय सहयोग रहा। पं आर्येन्द्र कुमार आर्य के प्रयास द्वारा प्रोग्राम में ग्राम अन्तर बेलिया के पुरुष व महिलाओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् ममतामूर्ति माता प्रेमलता शास्त्री का हृदयग्राही प्रवचन हुआ। पूज्या माता जी ने प्राचीन भारत का गौरव रामायण कालीन इतिहास व अपने पूर्वज भाई हो वे आदि पर प्रकाश डाला। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली (शाखा बांग्ला) के पदाधिकारी भी सम्मिलित थे। अस्तु माता शास्त्री जी के प्रभावशाली प्रवचनों से जन सामान्य प्रभावित हुआ।

—पं० आर्येन्द्र कुमार शास्त्री

गुरुकुल प्रवेश सूचना

आचार्यकुल ऋतस्थली, दतियाना जो एक आर्ष पाठ-विधि की नवीन संस्था है, में प्रवेश प्रारम्भ है। पूर्णस्वस्थ, मेधावी कम से कम कक्षा ५ उत्तीर्ण, आयु कम से कम १० वर्ष हो आवेदन कर सकते हैं। प्रवेश से पूर्व लिखित व मौखिक परीक्षा ली जायेगी। पूर्ण जानकारी हेतु शीघ्र सम्पर्क करें। स्थान सीमित हैं।

—आचार्य
आचार्यकुल ऋतस्थली
पत्रालय—दतियाना मुजफ्फर नगर-२५१००१

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२४-५-१९९१) बिन टिकट भेजने का लाइसेंस U न० ६१
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 98 Post in N D P.S.O.on 21 ,22-5 1992

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का विशाल राष्ट्रीय व्यायाम एवं शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

७ जून से २१ जून १९९२ तक

महाशय चूनीलाल बाल मन्दिर हायर सेकण्ड्री स्कूल एल० ब्लाक हरिनगर, नई दिल्ली मे आचार्य डा० देवव्रत (प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल) की अध्यक्षता मे आयोजित किया जा रहा है।

आर्य समाजों से निवेदन

कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखने वाले आर्य वीरो का यह काफिला आर्य समाजो मे नई पीढी के अभाव को दूर करने का दृढ सकल्प करता है इसलिए प्रत्येक आर्य समाजो में नई पीढ़ी के अभाव को दूर करने का दृढ सकल्प करता है इसलिए प्रत्येक आर्य समाज से कम से कम पांच आर्य वीरों को अपनी आर्य समाज से शिविर म भेजें।

शिविर के नियम

१—१२ वर्ष से अधिक आयु के युवक प्रवेश के अधिकारी हैं।
२—शिविर स्थल पर शाम ६ जून तक पहुचना अनिवार्य है।
३—शिविर शुल्क ५० रु० मात्र होगा।
४—शिविर में ऋतु अनुकूल बिस्तर एव भोजन के बर्तन साथ लावें।
५—वेश भूषा, खाकी नेकर व सफेद कमीज सफेद सैन्डो बनियान लगोट, काला कच्छा, लाठी, कापी पेन, डाइन पत्तीट, सफेद जुराब होगी।
६—काली बैल्ट व टोपी शिविर स्थल पर क्रय की जा सकती है।

अपील व ऋषि लंगर

इस विशाल शिविर मे १५ दिनो तक ८०० व्यक्तियो का तीनो समय का शुद्ध देशी घी का भोजन, दूध आदि तथा समापन समारोह मे लगभग १० हजार व्यक्तियो के लिए ऋषि लगर की व्यवस्था आपके द्वारा दिल खोलकर दान, देकर सम्भव है।

नौजवान अपना जीवन आर्य बन्धु जन अपना धन, राष्ट्रहित मे देकर इस महान युवा सैनिक यज्ञ को सफल बनायें। दान दाताओ से प्रार्थना है कि खुले दिलों मे अधिक से अधिक धन, नकद व क्रास चैक अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के नाम भेज कर रसीद प्राप्त करें। तथा आटा, दाल, चावल, चीनी की बोरिया तथा शुद्ध घी के टीन, दलिया दूध व सब्जी आदि के रूप में भी दे सकते हैं।

१—मिल्कफूड शुद्ध घी का टीन	१२००)	२—आटे की बोरी	५००)
३—चावल की बोरी	२०००)	४—दलिया का बोरी	६००)
५—चीनी की बोरी	९००)	६—दाल की बोरी (चने, राजमा आदि	१५००)
७—दूध प्रति क्विंटल	८००)		

सम्पर्क व सूचना स्थल

१—ब्र० राजसिंह आर्य (महामन्त्री) १६६, गली रोबिन सिनेमा, पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली-२ फोन - २९३०१०४, २९२५४२४
२—आर्य समाज, बिरला लाइन्स, सब्जी मण्डी, दिल्ली-७ (समय ७ से ९ बजे सायं)
३—अवेश आर्य मन्त्री भीमनगर, फोन—७२१६१७३
४—राकेश आर्य, सी०-७०, लाजपत नगर, फोन—६८४६७७५
५—वीरेन्द्र आर्य (जिला अध्यक्ष रानी बाग) फोन—७१८७६८६
६—श्रीकान्त आर्य जिला अध्यक्ष आर्यसमाज मालवीय नगर फोन-६८६८८८६
७—विनय सिंघल सगठन मन्त्री, बी-६१, आशा पार्क जेल रोड नई दिल्ली—५०९४६०
८—योगेश्वर आर्य (१० से १२ बजे तक) आर्य समाज सी० ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली

निवेदक

डा० ज्ञान प्रकाश शर्मा	रूपचन्द नागर	ओमप्रकाश रसवन्त
प्रान्तीय सचालक	व्यवस्थापक	अधिष्ठाता
ब्र० राजसिंह आर्य		डा० देवव्रत आचार्य
महामन्त्री प्रान्तीय		प्रधान सचालक
		सार्वदेशिक आर्य वीर दल

आर्य वीरांगना दल का प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीरांगना दल का शिविर ३१ मई से ७ जून तक आर्य समाज मन्दिर तिलक नगर मे लगेगा। इसमे उच्चकोटि की शिक्षिकाओ द्वारा आसन, प्राणायाम, लाठी, तलवार, जूडो कराटे, आत्मरक्षा आदि का शिक्षण दिया जाएगा। साथ ही साथ यज्ञ, सन्ध्या, और आर्य समाज के सिद्धान्तो का ज्ञान कराया जाएगा।

नियम—(१) १२ वर्ष स २५ वर्ष की युवतियां भाग ले सकेंगी।
(२) शुल्क पैंतीस रुपए मात्र होगा।
(३) खाने के बर्तन व ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाए।
(४) वेषभूषा, सफेद सलवार, नीला सूट व सफेद जूते।

सम्पर्क करें—

डा० सुमित्रा आर्या	विद्या आर्या	रामदेवी आर्या	उज्ज्वला वर्मा
(५५००२७२)	३०१६११५	२/३१६ सुभाषनगर	५११४३६५
	५०२४१०		संयोजक—

(डा० शिवकुमार शास्त्री) ५५६६२०७

आर्य वीर दल राजस्थान का विशाल प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल राजस्थान का प्रान्तीय शिविर २६ मई से ४ जून ९२ तक आर्य गुरुकुल चित्तौड़ गढ मे आयोजित किया जा रहा है। शिविर का मुख्य उद्देश्य, शारीरिक एव बौद्धिक प्रशिक्षण देकर युवकों को आर्य समाज मे दीक्षित करना है। प्रवेश शुल्क ५५) रु० रखा गया है, न्यूनतम आयु १५ वर्ष, तथा सम्बन्धित सामिग्री प्रवेशार्थी को स्वय लानी होगी। ४ जून ९२ को शिविर का समापन समारोह १ से १२ बजे तक सम्पन्न होगा। विजयी आर्यवीरों को पुरस्कार दिये जायगे तथा आर्यवीरो द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन भी किया जायेगा। दानी महानुभावो से निवेदन है कि तन-मन-धन से सहयोग करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड ९ जिल्दो मे	६००)
ऋग्वेद प्रथम भाग से पांच भाग तक	३००)
यजुर्वेद भाग—६	६०)
सामवेद भाग—७	६०)
अथर्ववेद भाग—८	६०)
अथर्ववेद भाग—९+१०	६०)

वेद भाष्य का नेट मूल्य ५२५) रुपये
अलग-अलग जिल्द लेने पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एव डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- प्रकृति और परमाणुओं का ज्ञान और युक्ति से परमेश्वर के मिलाये बिना जड़ पदार्थ स्वयं कुछ भी कार्य सिद्धि के लिए विशेष पदार्थ नहीं बन सकते। इसलिए स्वभावादि से सृष्टि नहीं होती परन्तु परमेश्वर की रचना से होती है।
- देखो शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं।
- धर्म युक्त सत्य भाषण करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : १२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक १८] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ ज्येष्ठ शु० १४ सं० २०४९ ३१ मई १९९२

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की बिहार यात्रा

तीसरा भारतीय भाषा सम्मेलन पटना में होगा

पटना २३ मई।

आर्य समाज हवेली खड़गपुर के वार्षिकोत्सव पर जाते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और उप-मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री आज पटना पहुंचे। पटना से बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री के साथ स्वामी जी तथा शिवकुमार शास्त्री जमालपुर के लिए रवाना हुए। सायंकाल ७-१० बजे गाड़ी जब जमालपुर रेलवे स्टेशन पर पहुची, तो आर्यसमाज जमालपुर के कार्यकर्ताओं ने भारी संख्या में स्टेशन पर पहुच कर सभा प्रधान श्री स्वामी जी का स्वागत किया। वह वहां से सीधे आर्य समाज जमालपुर पहुंचे वहां आर्यसमाज मन्दिर में आर्य जनो को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को बढाने और आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने पर बल दिया।

सांय ८-३० बजे स्वामी जी और शिवकुमार शास्त्री जमालपुर से कार द्वारा चलकर ९-३० बजे हवेली खड़गपुर पहुंचे। वहां एक सजे हुए मैदान में हजारों की संख्या में आर्य जन उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। डा० शिवकुमार शास्त्री ने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए वेदानुसार जीवन व्यतीत करने तथा सच्चे आर्य बनने की अपील की। रात्रि १० बजे स्वामी जी ने अपने ओजस्वी भाषण में बिहार में आर्य समाज को मजबूत करने और घर घर में उसका सन्देश पहुंचाने का आर्य जनों से आह्वान किया और नवयुवकों के चरित्र निर्माण एवं नशाखोरी छोड़ने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि यह चम्पारण की धरती हमेशा देश का नेतृत्व करती रही है, आपके इसी प्रदेश में गांधी जी ने आजादी का बिगुल बजाया और चम्पारण की जनता ने दिल खोलकर उनका साथ दिया।

२४ तारीख को प्रात:काल यज्ञोपरान्त डा० शिवकुमार शास्त्री

(शेष पृष्ठ २ पर)

सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का त्याग-पत्र

दिल्ली १५ मई।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री प० रामचन्द्रराव बन्देमातरम को डाक द्वारा प्रधान पद से त्याग-पत्र भेज दिया है।

स्वामी जी ने बताया कि वे भविष्य में बिना पद के ही आर्य समाज की उसी प्रकार सेवा करते रहेंगे जैसा उन्होने आजीवन किया है।

जासूसी कर रहे, दो पाक राजनयिक निष्कासित

भारत की जवाबी कार्रवाई

भारत ने आज पाकिस्तानी उच्चायोग के दो वरिष्ठ राजनयिकों को अवांछनीय व्यक्ति घोषित कर दिया और उन्हें ४८ घण्टे में देश छोड़ने को कहा। जाहिराना तौर पर यह कार्रवाई कल इस्लामाबाद में भारतीय राजनयिक राजेश मित्तल के अपहरण, उन्हें दी गई यातनाओं और उनके निष्कासन के जवाब में की गई है। विदेश मन्त्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि पाकिस्तान के कार्य-वाहक उच्चायुक्त जहीद मलिक को आज दिन में दोबारा विदेश मन्त्रालय में बुलाकर कहा गया कि इन दोनों राजनयिकों की गतिविधियां मान्य राजनयिक व्यवहार के प्रतिकूल हैं। ये दोनों राजनयिक जासूसी कर भारत की सुरक्षा को खतरा पैदा कर रहे हैं। देश की सुरक्षा पर असर डालने वाली इन गतिविधियों पर सरकार बारीकी से नजर रखे हुये थी।

विदेश मन्त्रालय में पाकिस्तानी कार्यवाहक उच्चायुक्त को

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्कूली बच्चों के भोजन में अण्डा शामिल करने के प्रस्ताव का कड़ा विरोध

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का डा० बलराम जाखड़ को पत्र

माननीय डा० बलराम जाखड़ जी
केन्द्रीय कृषि मन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली-११०००१

१८-५-१९९२

सेवा मे सादर नमस्ते ।

१६ मई १९९२ के पंजाब केसरी मे प्रकाशित समाचार के अन्तर्गत आपके मन्त्रालय ने ग्रामीण क्षेत्रों मे मुर्गी पालन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार को स्कूली बच्चों के लिए दोपहर के भोजन मे अण्डा शामिल करने का सुझाव दिया है।

मुझे यह समाचार पढ़कर आश्चर्य ही नही अपितु कष्ट भी हुआ। मेरे पास अनेक लोगों के फोन और पत्र आ रहे हैं जिनमे पूछा गया है कि केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ आर्य संस्कृति के परम संरक्षकों में हैं, फिर उनके मन्त्रालय द्वारा यह सुझाव कैसे दिया गया है ?

मेरा विनम्र निवेदन है कि अण्डे के स्थान पर बच्चों को दूध अथवा फल आदि देने की व्यवस्था होनी चाहिए। अण्डा एक तामसिक पदार्थ है, इसके सेवन से अनेक प्रकार के शारीरिक विकार उत्पन्न होना स्वाभाविक है। स्कूली बच्चो को इस प्रकार का भोजन देना राष्ट्रीय चरित्र का पतन करना होगा। अतः दूध, अथवा फलों का उपयोग जहां विद्यार्थियों में सात्विक वृत्ति उत्पन्न करेगा, वहीं हमारी कृषि व्यवस्था के विकास में दुधारू पशुओं और फल देने वाले वृक्षों का महत्व भी बढ़ेगा और पर्यावरण भी रुकेगा।

कृपया उक्त प्रसारित विज्ञप्ति का अपने मन्त्रालय द्वारा खण्डन करावें और सभी राज्य सरकारों को स्कूली बच्चों के भोजन में दूध और फलों के वितरण का सुझाव भी देने का कष्ट करें। आशा है इस महत्वपूर्ण विषय पर आप तुरन्त उचित कार्यवाही करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

मुरली मनोहर जोशी भाजपा अध्यक्ष को इलाहाबाद हाईकोर्ट का नोटिस

इलाहाबाद। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पद से हटाने सम्बन्धी याचिका पर उनको नोटिस जारी किया है।

न्यायमूर्ति बी.एम. लाल तथा न्यायमूर्ति ए.एस. त्रिपाठी ने इस मामले में सुनवाई के लिए जुलाई का चौथा सप्ताह निर्धारित किया है और डा० जोशी को प्रति शपथपत्र दाखिल करने का निर्देश दिया है। न्यायालय ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय को निर्देश दिया है कि वह डा० जोशी के अवकाश सम्बन्धी सभी कागजात न्यायालय में पेश करें।

ज्ञातव्य है कि एक सामाजिक कार्यकर्ता केशवदेव त्रिपाठी ने उच्च न्यायालय में दायर याचिका में आरोप लगाया था कि डा० जोशी ने विश्वविद्यालय के भौतिकशास्त्र विभाग में लगभग दस वर्षों से नहीं पढ़ाया है जबकि इस दौरान वह विश्वविद्यालय से वेतन लेते जा रहे हैं। आवेदक के अधिवक्ता उमेश नारायण शर्मा ने तर्क दिया कि डा० जोशी ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों की आचार संहिता का उल्लंघन किया है और उन्हें प्राध्यापक पद से तुरन्त हटाया जाए।

बिहार के विवाद सम्बन्धी मामलों की जांच

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री और उप-मन्त्री डा० धर्मपाल आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के विवादों की जांच हेतु २२ मई को दिल्ली से पटना पहुंचे। उन्होंने पटना में २३ २४ और २५ मई तक आर्य प्रतिनिधि सभा के विवादों की जांच की और २६ मई को दिल्ली पहुंचकर अपनी रिपोर्ट सभा को दी।

बिहार यात्रा

(पृष्ठ १ का शेष)

और स्वामीजी के आध्यात्मिक प्रवचन हुए। दोपहर को ठीक १ बजे हवेली खड़गपुर मे शानदार शोभायात्रा निकाली गई। इस शोभायात्रा में कड़ाके की धूप होने पर भी स्वामी जी पैदल ही चल रहे थे और हजारो की संख्या में आर्य नवयुवक उनके आगे-पीछे चल रहे थे। इस शोभायात्रा मे आर्य समाज की नई स्फूर्ति और उसका नया जोश दृष्टिगोचर हो रहा था। रात्रि ८.३० बजे से १०.३० बजे तक हवेली खड़गपुर के सजे हुए मैदान में डा० शिवकुमार शास्त्री और स्वामी जी का ओजस्वी भाषण हुआ। इस अवसर पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री भी उपस्थित थे।

इस सभा में यह भी निर्णय किया गया कि तीसरा भारतीय भाषा सम्मेलन बिहार के किसी बड़े शहर मे किया जाए।

स्मरणीय है कि सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री और उप-मन्त्री श्री डा० धर्मपाल बिहार सभा के विवाद सम्बन्धी मामलों की जांच के लिए पहले से ही वहां पधारे हुए थे।

२५ मई को वहां से चलकर स्वामी जी, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० शिवकुमार शास्त्री और डा० धर्मपाल २६ मई को २.३० बजे दिल्ली पहुंचे।

पाक राजनयिक निष्कासित

(पृष्ठ १ का शेष)

को साफ तौर पर कहा गया कि इस्लामाबाद में श्री मित्तल के साथ अमानवीय और बर्बर व्यवहार किया गया उसे भारत सरकार आपत्तिजनक मानती है और इस गम्भीर मामले पर अपना कड़ा विरोध प्रकट करती है। प्रवक्ता ने कहा कि यह और भी अफसोस की बात है कि पाकिस्तान ने भारतीय राजनयिक के साथ यह हिंसक कार्यवाही उस समय की जब एक सप्ताह के बाद भारत पाक विदेश सचिवों की वार्ता होने वाली थी। इससे दोनों देशों के बीच सम्बन्ध सुधारने के प्रयासों पर भी असर पड़ेगा।

प्रवक्ता ने कहा कि पंजाब और कश्मीर में पाकिस्तान के लोगों को रंगे हाथों पकड़े जाने के मामले से ध्यान बटाने के लिये ही पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी ने भारतीय राजनयिक श्री मित्तल के साथ ऐसा बर्बर सलूक किया जो राजनयिक व्यवहार के सभी मानदण्डों के प्रतिकूल है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अथवा आर्य समाज के नाम पर स्थापित व्यक्तिगत मठ, ट्रस्ट अथवा आश्रमो का प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा सार्वदेशिक सभा के साथ सम्बद्धीकरण आवश्यक

समस्त आर्य समाजों व आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आवश्यक परिपत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक १५ मार्च १९९२ मे डा० शिवकुमार शास्त्री एक प्रस्ताव सदन में रखते हुए मांग की थी कि आर्य समाज अथवा महर्षि दयानन्द के नाम पर पनप रहे व्यक्तिगत मठो, ट्रस्टो, आश्रमो की गति को रोकने के लिये यह आवश्यक है किउन पर सार्वदेशिक सभा अथवा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ के नियन्त्रण की व्यवस्था की जावे। क्योंकि इन संस्थाओं के लिए इनके संस्थापकों को महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रचार कार्य के नाम पर ही दानी तथा धार्मिक महानुभावों द्वारा धन मिलता है। इसलिए सार्वदेशिक सभा का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह आर्य समाज अथवा दयानन्द के नाम पर चल रही व्यक्तिगत संस्थाओ की सम्पत्ति को सदैव आर्य समाज के लिए सुरक्षित रखने की व्यवस्था करें।

इस प्रस्ताव पर सदन मे गम्भीरता से विचार हुआ। अन्त मे सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ—

"आर्य समाज अथवा महर्षि दयानन्द के नाम पर जो व्यक्तिगत ट्रस्ट, मठ अथवा आश्रम इस समय देश के विभिन्न भागों मे चल रहे हैं, वह सब सम्बद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध होने चाहिए ताकि उस संस्था के अवसान के समय उसकी सम्पत्ति का हस्तांतरण प्रतिनिधि सभा अथवा सार्वदेशिक सभा को हो सके।

यह भी निश्चय हुआ कि सभी प्रान्तीय सभाओ के प्रधानो को भी लिखा जावे कि वे इस प्रकार की संस्थाओ मठो व आश्रमो के अधिकारियो से सम्पर्क करे और इस निर्णय से अवगत करायें। यदि कोई निर्णय को न माने तो आर्य जनता तथा धनी मानी लोगो से अपील की जावे कि इन संस्थाओ को दान न दें।"

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा

भाऊराव देवरस नहीं रहे

नई दिल्ली १४ मई।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ नेता श्री भाऊ राव देवरस का आज निगमबोध घाट पर अन्तिम संस्कार किया गया। श्री देवरस का निधन दिल का दौरा पड़ने के कारण हुआ। वे ७५ वर्ष के थे।

निगमबोध घाट पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त म०प्र०, राज०, उ०प्र० के मुख्यमन्त्री, भा०ज०पा० के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री वाजपेई डा० मुरली मनोहर जोशी, मदनलाल खुराना तथा श्री केदारनाथ साहनी सहित हजारो की संख्या मे लोग उपस्थित थे।

श्री देवरस का पार्थिव शरीर एक दिन पहले से संघ के दिल्ली स्थित कार्यालय मे जनता के दर्शनार्थ रखा गया था। प्रधानमन्त्री श्री नरसिंहराव की तरफ से भी श्री देवरस के पार्थिव शरीर पर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

श्री देवरस को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिये १७ मई को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम मे भी एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमे संघ और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के अतिरिक्त स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री देवरस के जीवन तथा कार्यों की सराहना की।

नवलखा महल में दयानन्द स्मारक सभी के लिए प्रेरणा स्रोत बने—शेखावत

१६ मई १९९२।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत ने चरखी दादरी में आयोजित पं० गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे उदयपुर स्थित नवलखा महल को स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक के लिए उपलब्ध कराने की घोषणा करते हुए, इसके लिए दस लाख रुपए देने वाले दानदाता हनुमान प्रसाद चौधरी से कहा कि स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रन्थ के रचना स्थल को ऐसा स्वरूप दे कि देश-विदेश के लोग वहा से प्रेरणा लेकर जाए तथा स्वदेशी और स्वावलम्बन का सन्देश घर घर पहुंचे।

शेखावत जी ने कहा कि देश मे राजनीति, समाज एवं शिक्षा के क्षेत्र मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसा क्रान्तिकारी उनके बाद पैदा नहीं हुआ यदि वे दस वर्ष और जीवित रहते तो देश मे छुआ-छूत मिटाने का कानून व महिलाओं पर अत्याचार के विरुद्ध कानूनों की जरूरत नहीं होती तथा पाखण्ड और जातिवाद इतिहास का विषय होता। उन्होने देश भर मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विस्तार पर बल देते हुए कहा स्वामी दयानन्द सरस्वती के पदार्पण से पावन इस धरती मे भी यह परम्परा आगे बढ़े तथा युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का मार्ग प्रशस्त हो।

श्री शेखावत ने अपनी १९७७ की जेल यात्रा का स्मरण कराते हुये कहा कि बन्दीगृह मे सत्यार्थ प्रकाश के पूर्ण अध्ययन के बाद ही मेरे मन मे यह संकल्प पैदा हुआ था कि यदि अवसर मिला तो गरीबी की समस्या का समाधान करूंगा। उन्होने बताया कि सत्ता में आते ही राज० में पूर्ण शराब बन्दी लागू करके हमने पूरे देश मे पहल की तथा अन्त्योदय के माध्यम से गरीबो का चयन कर उन्हे उनके इच्छित कार्यों के लिये बैंक ऋण तथा उपकरण आदि सुलभ कराये थे।

श्री शेखावत ने हरियाणा की तरह राज० में भी गुरुकुल खोले जाने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि इस पावन धरती पर भी यह परम्परा आगे बढ़नी चाहिये जिससे युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

निःशुल्क योग चिकित्सा शिविर

आर्य समाज मन्दिर झोटवाड़ा द्वारा ७ जून से १६ जून १९९२ तक निःशुल्क योग चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर मे सरल योग क्रियाओं द्वारा मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के लिये स्वयं पधारें तथा अन्य व्यक्तियो को भी सूचना दें। इस योग चिकित्सा शिविर का संचालन श्री ओम प्रकाश जी शर्मा, डायरेक्टर योग सेन्टर, बिड़ला पिलानी इन्स्टीट्यूट (राजस्थान) करेंगे। —के० देवदत्त आर्य

क्रांतिकारी नेता, वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

मैंने एक आर्य समाजी परिवार मे जन्म लिया। आर्यसमाज के स्वस्थ राष्ट्रीय एवं क्रान्तिकारी वातावरण मे ही मेरा पालन पोषण हुआ। जब मैं बच्चा ही था तो हैदराबाद के प्रचण्ड सत्याग्रह से देश को अनुप्राणित होते देखा। आर्य समाजी परिवार मे जन्म लेने के कारण तथा हैदराबाद राज्य मे ही रहते हुए मैं हैदराबाद के पीड़ित एवं दलित पदाक्रान्त परन्तु साहसी आर्यों से जुड़ गया।

हैदराबाद का नाम सुनते ही ऐसा अनुभव होता था कि आर्यों के रक्त से रंगीन भूमि मेरे पूज्यो की साधना स्थली है। महात्मा नारायण स्वामी जी, लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, दक्षिण केसरी वीर विनायकराव जी, भाई बंसीलाल जी भाई श्यामलाल जी, बंसीलाल व्यास जी हैदराबाद के लौहपुरुष युवक हृदय सम्राट प० नरेन्द्र जी, प्रकाशवीर शास्त्री जी आदि मेरे सामने खड़े होते हैं। हैदराबाद के रक्त रंजित इतिहास में कवि बड़ी तो जिन शूरवीरो के अतुलशौर्य से मैं सर्वाधिक प्रभावित हुआ इनमे से एक है साहस के अंगारे श्री रामचन्द्रराव जी 'वन्देमातरम्'।

श्री रामचन्द्र राव जी की माता श्रीमती रामलक्ष्माम्बा और पिता रामाराव थे। उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री वी वीरभद्रराव जी थे। ये बचपन से ही अपने माता पिता के धार्मिक भावो से प्रभावित थे। इससे नित्य प्रति प्रातः उठते ही अपने माता पिता के चरणो को मस्तक झुकाने के आदी हो गए थे। जब सन १९२४ मे एक दिन रोज की भांति पिता के चरणो में रामचन्द्रराव जी मस्तक झुकाने गये तब उनके पिता चिंतित दिखाई दिये तो रामचन्द्रराव ने कारण पूछा तो पिता ने उत्तर दिया कि महान क्रान्तिकारी श्री अल्लूरी सीताराम राजू जी की अंग्रेजी शासन के अधिकारियो ने निर्दयता से हत्या का समाचार बताते हुए उस क्रान्तिकारी वीरश्रेष्ठ का सारा वृत्तांत बता दिया। इस समाचार से बालक रामचन्द्र राव पर अमिट छाप पड़ी। उस समय ग्यारह वर्ष का रामचन्द्रराव गद्वाल के माध्यमिक विद्यालय मे पढ रहे थे। तब से वे क्रांतिकारियों की ओर प्रभावित हुए थे। स्वयं अचपल, बुद्धिवादी साहसी, दृढ़ निश्चयी, देशभक्त व्यक्तित्व के निर्माण मे लगे थे। इनमें त्यागभाव तप साहस जैसे सद्गुण आदि अपने माता पिताओ के प्रबोधों से प्राप्त किये।

इस प्रकार रामचन्द्र राव जी साहसी बहादुर, सहनशील, अद्वितीय राष्ट्रीय नेता, प्रताप का प्रताप, शिव की शान, राम का आदर्श, कृष्ण की नीति, चाणक्य की चतुराई, दयानन्द की दया, श्रद्धानन्द की श्रद्धा, परम सात्विक देश भक्ति के कारणों से सर्वदा जाति के उद्धार के लिए अपने साथी और कार्यकर्ताओ को तैयार कर संगठन मे लगे थे। वे गठिला सुन्दर, सुडौल शरीर, रग रग मे देशभक्ति का स्वाभिमान, प्रफुल्लवदन विशाल नेत्र प्रशस्त वक्षस्थल, त्यागमय जीवन, सहनशीलता वनराजसिंह की भांति वीर आक्रमणकारी निडर और शत्रुओ को एक ही दहाड़ मे परास्त करने वाले व्यक्तित्व के साथ साथ आर्य समाज की ओर प्रभावित हुए। सन १९३८ में जब आर्य समाज की ओर से निजाम के विरुद्ध जन-आंदोलन का रूप लिया गया और सत्याग्रह की शुरुआत हो गई। तो रामचन्द्रराव जी को भी पकड़कर अन्य सत्याग्रहियो के साथ चचलगूडा जेल भेज दिया गया। तब वहा जेल के प्रांगण मे जाते ही सभी अन्य सत्याग्रहियो के साथ रामचन्द्र राव को भी जनेऊ उतार देने के लिए कहा गया। पर उन्होने जनेऊ उतार देने से इनकार कर दिया। जेलर साहब कानून का हवाला देकर जनेऊ उतरवा लिये। इस प्रकार जनेऊ उतारने के कारण उन्होने बिना जनेऊ के भोजन न करने का अपना दृढ निश्चय बतलाया। यहा 'यह मामला धार्मिक है। अन्त मे जनेऊ लाकर दिया गया पर रामचन्द्रराव ने कहा निकाला गया जनेऊ बिना हवन के पहना नही जाता। तो डिप्टी जेलर चकराकर कहने लगा कि 'हवन होगा, पुरोहित आयेगा और आप जनेऊ पहनेंगे। आखिर सुगन्धित सामग्री जलाकर मन्त्रोच्चारण के साथ जनेऊ पहनाया गया तब भोजनादि स्वीकार किया गया।

इन्हीं दिनो में जेल में सत्याग्रही हर दिन "वन्देमातरम" नामक राष्ट्रीय गान गाना शुरू किये यह सुन सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल तिलमिला उठा। तब घोषणा की गई कि जेल मे 'वन्देमातरम्" नहीं गाया जाना चाहिए। रामचन्द्र राव तथा अन्य कुछ युवको ने आदेश का पालन करने से इनकार कर दिया। स्वाधीनता के पुजारी तथा वीरता के प्रतीक वीर रामचन्द्रराव ने उस अवस्था में उक्त राष्ट्रीय गीत को सार्वजनिक रूप मे गाकर निजाम के आदेश की अवहेलना की। जिसके परिणाम स्वरूप इस उत्साही युवक को (२४) कोड़ो को सजा का कठोर दण्ड दिया गया। जब फरवरी १९३९ में इस वीर वर को यह सजा दी जा रही थी तब प्रत्येक कोड़े की चोट शरीर पर पड़ते ही इनके मुख से 'वन्देमातरम' की ध्वनि निकलती थी। जब बेहोश होने के पश्चात कुछ होश आया तो भी इनके मुख से यही शब्द निकले थे कि "मैं शरीर नहीं आत्मा हू।" इस गीत के गाने के अपराध मे उन्हें २४ कोड़ो का दण्ड दिया गया। इस प्रकार बेंतें लगने से उनके शरीर से रक्त बह रहा था। गहरे घाव हो गये थे। शरीर से मांस कट कटकर शायद छड़ियो के साथ अलग हो गया था। देश भक्ति के इस प्रचार से 'शासक एवं शासन दोनो तिल मिला उठे।" निजामशाही पुलिस के कोड़े निर्दयता के साथ जब इस युवक की कुन्दन सी पीठ पर बरसने लगे तो हर कोड़े पर "वन्देमातरम' की गूंज सुनाई दे रही थी। रामचन्द्र राव ने जिस साहस एवं वीरता का उदाहरण दिया उसको देखकर अंग्रेज आई जी पी भी चकित रह गया। वीर दामोदर सावरकर जी ने तो आर्य वीर रामचन्द्रराव को 'वन्देमातरम्" के नाम से विभूषित किया। तभी से आप वन्देमातरम् रामचन्द्र राव के नाम से प्रख्यात हो गये।

श्री रामचन्द्र राव जी के सुमुज्ज्वल क्रान्तिकारी जीवन का एक और महत्वपूर्ण उदाहरण हमारे सामने आता है १५ अगस्त १९४७ के पश्चात जब स्वतन्त्र भारत की सरकार ने अपना जनरल एजेंट बनाकर श्री के एम. मुंशी जी को हैदराबाद भेजा तब वहा के प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता दक्षिण केसरी वीर विनायक राव जी विद्यालंकार वरटला से सम्पर्क स्थापित कर विश्वस्त गुप्तचर देने की इच्छा व्यक्त की। तो वीर विनायक राव ने मुंशी जी के सामने वन्देमातरम् परिवार के बलिदान का वर्णनकर उन्हे ही उपयुक्त समझ कर उपस्थित किया। इस आधार पर वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा उनके कुछ साथी निजाम की कुटिल चालो की वास्तविक रिपोर्ट देने लगे। जब निजाम अपने को स्वतन्त्र रखने के लिये विदेशो से हथियार मंगाता था तथा भारत सरकार से युद्ध करने की तय्यारी मे था, इसके लिये उसने रजाकारो की एक प्राईवेट सेना कासिमरज्वी के नेतृत्व मे खड़ी कर ली थी। एक सिडनी काटन नामक अंग्रेज के नेतृत्व में भी रजाकारो का दल रात्री मे चोरी से हवाई जहाज के जरिये प० पाकिस्तान तथा गोवा के मार्ग से हथियारो की खेपें लाया करता था। यह जहाज कभी बीदर और कभी वरंगल मे हथियारो की पेटिया उतारकर लौटा जाया करता था। उस समय वन्देमातरम् के साथी हवाई अड्डो के निकट एक साधारण ग्रामीण वेश धारण कर रात्री मे बराबर जागकर उस जहाज का नम्बर, पेटियो के नम्बर हथियारो की संख्या, क्वालिटी तथा उन हथियारों को हैदराबाद तक पहुचाने वाले माल ट्रक का नम्बर ठीक-ठीक पता लगा लेते थे। इसमे इनको हवाई अड्डों पर काम करने वाले स्वाधीनता प्रेमी कर्मचारियो का सहयोग भी मिलता था। जब सारा जग निद्रा देवी की शरण मे विश्राम करता था तब ये रात्रि भर जागकर उसकी टोह लेते थे और भारत सरकार के जनरल एजेंट तक ठीक ठीक समाचार पहुचाने मे सफल होते थे। इतना ही नहीं अपनी जान हाथ में रखकर निजाम की आर्डिनेन्स फैक्ट्री में प्रवेशकर वहा की सारी ही गुप्त जानकारी लेकर भी भारत के जनरल एजेंट के. एम मुन्शी जी तक पहुचाने का महान दुर्लभ कार्य किया करते थे। उस समय सिक्स्टी मिल्स हैंड ग्रेनेड तथा जापानी टाइप डायनामाइट की जानकारी अपेक्षित थी। अतः वन्देमातरम जी ने स्वयम् ही मिलट्रीवर्दी पहनकर साथ मे निजामी सेना के दो सिपाही जगन्नाथ तथा गणेश सिंह को साथ लिये निषिद्ध क्षेत्र में सेना के निर्धारित कोड-वर्ड शब्द का प्रयोग कर प्रवेश पालिया और दो तीन घन्टे तक घूमकर सारी जानकारी लेकर भारत सरकार के जनरल एजेंट श्री मुंशी जी तक पहुचाई। इस

((शेष पृष्ठ ६ पर)

वेदों में मन्त्र का महत्व

वेदमार्तण्ड स्वामी रमेश मुनि, जयपुर

ऋग्वेद मे मडल ४/१२/२० मे निम्नलिखित मन्त्र है—

वामदेव ऋषि, इन्द्र देवता —

ओ३म् भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर।

भूरि घेदिन्द्र दित्ससि स्वाहा ॥

परमपिता परमात्मा ने वेद मे इस मन्त्र को वायु शुद्धि या पर्यावरण-शुद्धि के उद्देश्य से नही दिया है बल्कि इसका सीधा सादा भावार्थ यह है "हे इन्द्र तू धनेश्वर्य का भण्डार है। उस धनेश्वर्य मे से हमे भी दे, इसमे लोभ मत कर हमको धनेश्वर्य देता रह। हमको पूर्ण विश्वास है कि हे इन्द्र तू देता है एव अवश्य देगा।" यह मन्त्र धनेश्वर्य बढ़ाने वाला है। उदाहरण-तया हम एक व्यक्ति को सन १९४० से जानते हैं। वह हर मेले मे काजल की डिबिया दो-दो पैसे मे बेचा करते थे लेकिन उन्हे वेद के स्वाध्याय की आदत थी। वे इसी मन्त्र से पति-पत्नी रोजाना यज्ञ किया करते थे और वे इस मन्त्र के प्रभाव से करोडपति ही नही अरबपति की हैसियत को पहुच गये। अभी हाल १९९१ मे उनका स्वर्गवास हुआ। और भी कई यजमान हमारी दृष्टि मे हैं जिन्होने इस मन्त्र का सहारा ले रखा है और उनकी दिनो दिन उन्नति होती जा रही है। वेद मन्त्र केवल मामूली सस्कृत भाषा नहीं हैं बल्कि अपौरुषेय शक्ति से सम्पन्न है। दूसरा उदाहरण—ओ३म यस्ते-ऽङ्कुशो वसुदानो बृहन्निन्द्र हिरण्यय तेना जनीयते जाया मह्य धेहि शचीपते स्वाहा॥ यह मन्त्र पर्यावरण सुधारने या विनोद करने के लिए परमात्मा ने नही बनाया बल्कि इसका भावार्थ हिन्दी पढ़ा लिखा मामूली व्यक्ति भी समझ सकता है कि "हे शचीपते तेरा सारे विश्व मे साम्राज्य है उसमें से पत्नि की कामना वाले मुझे भी पत्नी प्रदान कर। इस मन्त्र से यज्ञ करने पर कई व्यक्तियो का विवाह बहुत शीघ्र हो गया। इसे समझाने के लिए हम उन विशेषताओं का वर्णन करेगे जिनसे ज्ञात होगा कि वेदो की सस्कृत साधारण सस्कृत नही है बल्कि ब्रह्म शक्ति का एक तिलिस्म है—

(१) मात्राकाल—साधारण सस्कृत साहित्य मे गद्य पद्य मे कही पर भी किसी भी ऋषि, विद्वान, कवि ने स्वर नही लगाये है। जो ह्रस्व दीर्घ और प्लुत के नाम से जाने जाते हैं। इसलिए वेदमन्त्रो मे ह्रस्व को एक मात्रा, दीर्घ को दो मात्रा एव प्लुत को तीन या अधिक मात्रा काल मे बोला जाना चाहिए। वेद मन्त्र के जिस वर्ण या अक्षर पर कोई लकीर नही है उसे ह्रस्व, जिस अक्षर या वर्ण के ऊपर में खडा डडा हो उसे दीर्घ और जिस अक्षर या वर्ण के नीचे आडा डडा लगा हो उसे प्लुत समझना आवश्यक है। वेद के इस स्वर विज्ञान को हम सार्वदेशिक अखबार के चार एव ग्यारह अगस्त १९९१ के अको में भली प्रकार समझा चुके है। उन लेखो को पाठक दुबारा देख ले। हमको सस्कृत के एक विद्वान मिले उन्होंने बताया कि सस्कृत बड़ी कठिन भाषा है और वेद के मन्त्रो के बोलने से पहले उसका अर्थ जानना चाहिए। उनकी इस शका को महर्षि दयानन्द ने सस्कार विधि मे निर्मूल कर दिया है जो भूमिका मे निम्नलिखित वर्णित है—'यहा सब मन्त्रों का अर्थ नही लिखा है, क्योकि इसमे कर्मकाण्ड का विधान है। इसलिए विशेष-कर क्रियाविधान लिखा हैं।"

(२) वेद मन्त्रों का उच्चारण—वेद मन्त्रो मे अक्षर व वर्णों का उच्चारण उदात्त, अनुदात्त एव स्वरित विधि के अनुसार करना चाहिए। ह्रस्व अक्षर या वर्ण को अनुदात्त या धीमी ध्वनि मे बोला जाना चाहिए, प्लुत उदात्त ध्वनि स बोला जाता है एव स्वरित दोनो के मध्य की ध्वनि मे बोला जाता है दीर्घ को इसी ध्वनि मे बोलना चाहिए जैसे—ओ३म् मे 'ओ' को वैदिक ध्वनि से अनेक मात्रा काल मे उच्च ध्वनि से बोलना आवश्यक है।

(३) सप्त स्वर ज्ञान:—वेदो म हरेक मन्त्र का स्वर दिया हुआ है जैसे सा षड्ज, रे ऋषभ ग गान्धार, म मध्यम, प पचम, ध धैवत, नी निषाद। इनको और भी सरल भाषा मे समझाते हैं जैसे—हारमोनियम मे इन सप्त स्वरो को सा, रे, गा, मा, पा धा, नी मे बोला जाता है। उसी प्रकार वेद मन्त्रो को भी वेद के द्वारा निर्धारित स्वर मे बोला जाना आवश्यक है। इसके लिए वैदिक पडितों, पुरोहितों एव यजमानो को हारमोनियम की ध्वनि से वेद मन्त्रो की सगत मिलानी होगी।

(४) ओ३म्--वेद मन्त्र को बोलने से पहले—ओ३म् बोलना अत्यन्त आवश्यक है। सभी वेदो मे भार को कम करने के लिए ओ३म् को विलोपित कर दिया गया। लेकिन ओ३म् को लोप करके वेद मन्त्र का उच्चारण करना इस प्रकार है जैसे—सिर कटने से मनुष्य निष्प्राण हो जाता है। उसी प्रकार ओ३म् कटने से वेद मन्त्र भी निष्प्राण हो जाता है। गो-पथ ब्राह्मण मे अथर्वा ऋषि ने यह भली प्रकार समझाया है। अत निष्प्राण मन्त्र से कोई लाभ नही उठाया जा सकता।

योग नवयुग की संजीवनी-३

डा० एस. के. भटनागर हैल्थ होम शकरपुर, दिल्ली

योग द्वारा छात्र व्रत यम-नियम का पालन कर मन मे प्रज्ञाव चेतना और धैर्य धारण कर सयमी बन जाता है। इसी सयम से प्रज्ञा का आलोक खिल उठता है, जिसके द्वारा वह अपनी पतोन्मुख मनोवृत्तियो का परिष्कार करता है और जीवन को ऊचा उठाता है। योग पर आचरण करने वाला विद्यार्थी गुरु-द्रोह तोडफोड, छेड-छाड हडताल, परीक्षा बहिष्कार और अनैतिक गतिविधियो से कोसो दूर रहता है। स्पष्ट है छात्र व योग का घनिष्ठ व सीधा सम्बन्ध है। वर्तमान समय में छात्र पतन की परिस्थितियों मे योग का प्रचार व प्रसार राष्ट्र और समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। योग छात्रो के व्यक्तिगत जीवन की नीव को इतना गहरा व पुष्ट और सुन्दर बना सकता है कि उस पर सामाजिक एव राष्ट्रीय जीवन का ऊचे से ऊचा महल खडा किया जा सकता है। योग से मन और आत्मा दोनो प्रसन्न होते हैं।

योग साधना के लिए शरीर, मन और आत्मा तीनो को सयमित करना होता है। शरीर वह रथ है, जिसका सारथी मन और आत्मा रथी है। यदि रथ व घोड निर्बल और रोगी होगे तब सारथी व रथी क्या करेंगे? इसलिए योग मे शरीर को महत्व दिया जाता है। कहा भी है—

'शरीरमाद्य खलुधर्मं साधनम्'

अर्थात् शरीर की रक्षा ही धर्म का मुख्य साधन है। स्वस्थ शरीर के बिना कार्य सम्पादित नही होते। स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मन का वास होता है (A sound mind in a sound body) बलिष्ठ शरीर अनियन्त्रित रहकर राक्षस बन जाता है। निरोग शरीर सयम मे रहना जरूरी है। मन को योग से ही स्वस्थ बनाया जा सकता है।

योग के आठ अग बताये गये हैं। विभिन्न मनुष्यो के स्वभाव विभिन्न होने से सबको अष्टांग योग रास नही आता। स्वभाव की विभिन्नता के कारण योग मे विभिन्न शैलियो जैसे भक्तियोग, कर्मयोग ज्ञानयोग, लययोग, क्रियायोग, हठयोग, एव राजयोग सभी मन-मस्तिष्क व शरीर पर गहरे प्रभाव के साधन हैं। आसन-प्राणायाम एव षट्कर्म हठयोग के अन्तगत आते हैं, जो उपचार की दृष्टि से बेजोड हैं। दमा, गठिया, मधुमेह हृदय चाप, रक्त चाप, सेप्टिक अलसर, चर्मरोग आदि के भयकर रोगी इनसे स्वास्थ्य लाभ करते हैं।

, यम नैतिक चरित्र के नियम है जिनसे मन को रोका जाता है। इस प्रकार व्यक्ति समाज देश और विश्व के सभी पुरुषो का नैतिक चरित्र निर्माण होने पर वैर-भाव कम होकर विश्व को युद्ध की विभीषिका से बचाया जा सकता है। इस सन्दर्भ मे भी योग नवयुग की सजीवनी सिद्ध होगा।

नियम सामाजिक चरित्र दर्शाते हैं जिनके अभ्यास से मन को शक्तिशाली बनाया जाता है। शरीर व मन के स्वस्थ होने से समाज मे प्रेम व विश्व-बन्धुत्व की भावना भरती है। इस परिप्रेक्ष्य मे भी योग नवयुग की सजीवनी है।

योग विज्ञान सम्मत ही नही, अद्भुत विज्ञान है, जो दवाओ का विरोध करता है। योग शरीर को सुख व आत्मा को शाति प्रदान करता है। रक्त शुद्धी करके नवीन, स्वस्थ कोषिका-निर्माण करता है, जो दवाओ द्वारा सम्भव नही है। खाने पीने की आदत को बदलना, सादा जीवन उच्च विचार अपना योग का अद्भुत चमत्कार है। योग से निरर्थक व्यय बचता है। नाडी, पाचन, निष्कासन सस्थानो को शक्ति प्रदान करता है। बिन दवाओ बिन गोलियो व इजेक्शन के पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करता है। मानसिक व शारीरिक स्तर पर ठीक रखने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करता है। शरीर को स्वस्थ, मस्तिष्क को चेतन तथा भावनात्मक सन्तुलन (Physicaly fit, mentally alert emotionally balanced) उत्पन्न करता है।

सवेदनशील व्यक्तियों को पेप्टिक अल्सर, अल्सरेटिव कोलाइटिस, चर्मरोग दमा, उच्च रक्तचाप, फोबिया, चिन्ता न्योरोसिस, सिर व जोड दर्द जैसी बीमारिया होती है। योगाभ्यास द्वारा इन विकृतियो पर काबू पाया जा सकता है, स्पष्ट है—योग जीने की कला है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमे आधुनिक मानव जीवन को समृद्ध करने की क्षमता है। अब योग साधु महात्माओ की धरोहर नही रह गई है। वैज्ञानिक पुनरुत्थान की लहर आज विश्व भर मे (विशेषकर अमेरीका, इगलैंड जर्मनी फ्रास, इटली और रूस मे) फैल रही है, यह उत्साह की बात है। "योग नवयुग की सजीवनी है" तथ्य को समझकर ही पाश्चात्य देशो ने योग को अपनाना प्रारम्भ किया है। तिब्बत मे भी प्रत्येक लामा को योग का कुछ न कुछ अभ्यास करना पडता है। अब पश्चिमी देश ही नही पुन भारतवर्ष मे ही कैवल्यधाम पूना, उत्तरकोचिन, बैगलूर मद्रास, पाण्डेचेरी, काशी ऋषिकेश, जयपुर उदयपुर ग्वालियर, दिल्ली आदि मे अनेक योग केन्द्र कार्यशील है। समस्त विश्व के नर-नारी बिना भेदभाव के समान रूप से योग के अधिकारी हैं। वास्तव मे योग भवरोग भगाने की दवाई और सस्कृति को पुन जगाने की अचूक औषधि (Panacea) है। योग हमारे सामने

शारीरिक स्वास्थ्य (Physical hygiene)

मनोवैज्ञानिक उपचार (Psychoso matic treatment)

आत्म साक्षात्कार (Self realisation)

के रूप मे आने पर ही कल्याण सभव है।

वास्तव मे योगाभ्यास का लाभ किसी योग्य गुरु के मार्गदर्शन के बिना नही हो सकता। बिना सोचे समझे अभ्यास के परिणाम हानिकर हो सकते है।

'देखा देखी करे योग छीजे काया बढ़े रोग"

ससार को उस योग की आवश्यकता है, जो समस्त समाज को आगे बढने मे मदद करे दुख को शात करे चिन्तित व्यक्तियों की चिन्ता दूर करे। यदि आप दुखी हैं, पति-पत्नी, पिता-पुत्र और पडोसी मधुर सम्बन्धो मे स्थित हैं, तब आप योगी हैं। ऐसा होने पर ही—

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की बात चरितार्थ होगी। योग भूत की याद नही, वर्तमान मे भी अत्यन्त उपयोगी है। वास्तव मे योग नवयुग की सजीवनी ही है।

योग की कार्य-पद्धति के मूलपतः दो नियम हैं —

आराम द्वारा—शवासन द्वारा अगो को शिथिल करते हुए मन को शरीर की क्रियाओ पर केन्द्रित करके शरीर के तनाव को दूर किया जाता है। ऐसा होने पर टूटी हड्डिया जुडती हैं तथा पीडा, दर्द व घुमन से छुटकारा मिलता है।

आसनो द्वारा—शरीरागो मे रक्त परिभ्रमण ठीक करके सचित मलो का निष्कासन किया जाता है। आसनो मे सुषम्ना के ऊपर अधिक ध्यान दिया जाता है। यही शरीर की शक्ति का उत्पादन केन्द्र है और यही चेतना शक्ति का स्रोत है। प्रत्येक आसन किसी न किसी रूप मे मेरुदण्ड या उससे निकलने वाली नाडिया को प्रभावित करता है। आसनो की यौगिक क्रियाओ द्वारा इन्द्रियो को काबू मे रखा जाता है। इनसे अन्तः बाह्य शक्ति व स्वास्थ्य मिलता है। आसन शरीर की वे अवस्थाये और परिस्थितिया हैं, जो अपने स्वभाविक गुणो से शरीर की नाडियों के चेतन परिपथ को प्रभावित करती और परिवतन लाती हैं। योगासन से श्वास-प्रश्वास क्रिया सशक्त बनती है। मास पेशियो व नाडियो का नियन्त्रण सुचारु व समन्वित होता है। तन्तु व स्नायु सशक्त बनते हैं। मांस पेशिया लचीली बनती है। अन्त: स्रावी-ग्रन्थियो पर अनुकूल प्रभाव पडता है। पाचन क्रिया व मल विसर्जन क्रिया नियन्त्रित रहती है। शरीर के जोड और कशेरुक बाहक रुग्ण नहीं पडते। स्त्रियो के मासिकधर्म सम्बन्धी सभी विकार ठीक हो जाते हैं। योगाभ्यास से शारीरिक सुघडता पैदा होती है। इससे शारीरिक क्रियाओ में तालमेल बना रहता है। मन में आत्मविश्वास पैदा होकर अपने स्नायुओ को विश्राम देना भी आ जाता है। इसमें बाह्य तत्वो (औषधियो) की आवश्यकता ही नहीं पडती। पैसे और समय दोनों की बचत होती है

(क्रमशः)

आर्य समाजी अपने नाम के साथ 'आर्य' शब्द लिखें

ओमप्रकाश आर्य विद्यावाचस्पति रावत भाटा

आर्य किसे कहते हैं? 'कर्तव्यमाचरन् कार्यमकर्तव्यमनाचरन्। तिष्ठति प्रकृताचारे स वा आर्य इति स्मृतः।' अर्थात् कर्तव्यकर्म को करता, अकर्तव्य को न करता हुआ अपने प्रकृताचार में सदा स्थित पुरुष आर्य कहलाता है। "वृत्तेन हि भवत्यार्यो न धनेन न विद्यया।" अर्थात् उत्तम सदाचार से पुरुष आर्य कहलाता है धन व विद्या से नहीं। अतः आर्य वह होता है जो श्रेष्ठगुणों से सम्पन्न होता है, जिसमें अपने कर्तव्य के प्रति जागरूकता होती है, जिसका आचरण उत्तम होता है, जो धीर, गम्भीर मृदुभाषी सत्यनिष्ठ और सदा श्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है। संक्षेपतः आर्य समस्त उत्तम कर्मों का आकर होता है। इसीलिए रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में आर्य शब्द का अनेकशः श्रेष्ठ पात्रों के साथ प्रयोग किया गया है। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् सारे संसार को आर्य बनाओ—ऐसा वैदिक उद्घोष है। किसी व्यक्ति को उच्च-सम्मान सूचक शब्दों में सम्बोधित करने के लिए आर्य शब्द से बढ़कर दूसरा कोई शब्द नहीं है। महर्षि दयानन्द ने बहुत चिन्तन के पश्चात् वेद ज्योति बिखेरने वाली संस्था का नाम आर्य समाज रखा। इस देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त था। यहां के निवासी आर्य थे।

इन समस्त विशेषताओं के होते हुए भी आज की परिस्थिति और भ्रान्त धारणा के अनुसार इस शब्द का लोग गलत अर्थ लगाते हैं। आर्य समाजेतर व्यक्तियों से जब अपना नाम बताया जाता है कि मेरा नाम अमुक आर्य है। तो वे झट समझ बैठते हैं कि वह व्यक्ति अनुसूचित जाति का है। इसका अनेकों लोगों ने अनुभव किया गया है। कारण इसका यह है कि आर्यसमाज के गिने चुने लोग ही नाम के आगे आर्य शब्द का प्रयोग करते हैं। आजकल बहुतेरे अनुसूचित जाति के व्यक्ति अपनी जाति छिपाने के लिए या भगवान जाने किसलिए अपने नाम के साथ आर्य शब्द लगाते हैं। जिन्हें आर्यसमाज और आर्य सिद्धांतों का क ख ग भी नहीं मालूम रहता। और न ही उन्हें आर्य समाज से कुछ लेना देना ही रहता है। इसलिए आम लोगों की यह धारणा बनती चली जा रही है कि जो नाम के साथ आर्य शब्द लगाता है वह अनुसूचित जाति का होता है।

बहुत से आर्य समाजी भी आर्य शब्द से खिन्नता व्यक्त करते हैं। वे कतई अपने को आर्य शब्द से सम्बोधित करवाने में कतराते हैं। जबकि हम संगठन सूक्त का पाठ करते हैं—

> हों विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों।
> ज्ञान पाते हैं बराबर, भाग्यशाली सब नेक हों॥

जब हम नाम की समानता नहीं ला सकते, तो विचार चित्त-मन की समानता बहुत दूर की बात है। कितनी अच्छी बात होती, यदि सभी आर्य समाजी अपने और अपने बच्चों के नाम के आगे जाति सूचक शब्द न जोड़कर आर्य शब्द लिखते। इससे जहां अपने आर्य समाजियों की एकरूपता और पहचान बनती, वहीं एक भावनात्मक एकता का भाव भी जाग्रत होता। एक तरफ तो आर्य समाज जाति प्रथा का विरोध करता है और दूसरी तरफ आर्य समाजी अपनी जाति को उजागर करने के लिए शर्मा, वर्मा आदि विभिन्न जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करते हैं। इससे जहां आर्य समाज में भी जाति की झलक मिलती है, वहीं पर हम आर्य समाजियों की एकरूपता और समता पर प्रहार होता है। हमारे ही मुहल्ले में एक आर्य समाजी हैं जो नाम के साथ आर्य शब्द लिखते हैं। एक दिन उनके यहां बहुत से अनुसूचित जाति के लोग आए और बोले कि आइए हमारे कार्यक्रम में। अपनी जाति की मीटिंग है। उन्होंने कहा कि मैं अनुसूचित जाति का नहीं हूं। फिर वे उनके यहां से चलते बने। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं। मैं भी नाम के साथ आर्य लगाता हूं। कितनों ने मुझसे भी यही पूछा। फिर उन्हें समझाया।

इस सम्बन्ध में मेरा समस्त आर्य समाजियों से निवेदन है कि वे तो कम से कम जाति सूचक शब्द का प्रयोग न करें तो बेहतर होगा। सब लोग अपने नाम के साथ आर्य शब्द लगावें। इससे लोग 'आर्य' शब्द का गलत अर्थ नहीं समझेंगे आर्य समाजी ही समझेंगे। जब गिने चुने लोग ही इस शब्द का प्रयोग करेंगे तो फिर कौन आर्य समाजी समझेगा।

जब हमारा नारा है कि हमारा धर्म एक हो, हमारा उपास्य देव एक हो उपासना पद्धति एक हो, अभिवादन एक हो, यज्ञ पद्धति एक हो, ध्वज एक हो, भाव विचार एक हो तो फिर नाम के साथ उपनाम क्यों अनेक हो? कुछ लोग कहते हैं कि नाम से कुछ नहीं होता। मैं कहता हूं कि नाम से बहुत कुछ होता है। एक अनजान व्यक्ति से जब परिचय होता है और वह अपने को आर्य शब्द से जुड़ा हुआ बताता है तो दूसरा आर्य शब्द से अलंकृत व्यक्ति कितना प्रसन्न होता है।

जब हम नाम मात्र की समानता नहीं ला सकते तो फिर कर्म विचार, भाव की समानता कैसे ला सकते हैं। इसीलिए कितने आर्य समाजी भी आर्य शब्द लगाकर बाद में उसे छोड़ देते हैं। यदि ऐसा नहीं होगा तो धीरे-धीरे "आर्य" शब्द का प्रयोग कोई नहीं करेगा और जिस प्रकार 'हिन्दू' शब्द गलत होते हुए भी भारतीय जनों का पर्याय बन गया उसी प्रकार 'आर्य' शब्द अच्छा होते हुए भी अनुसूचित जाति का पर्याय बन जाएगा और अन्य संस्थाओं की तरह आर्य समाज में भी जाति का विष घुलेगा जो इस समाज के लिए घातक सिद्ध होगा। बात तो बहुत छोटी है किन्तु एक छोटा सा छिद्र नाव को डूबो देता है।

नाम के साथ आचार्य, शास्त्री कोई अन्य कवियों जैसा उपनाम, विद्यालंकार, वेदालंकार, विद्यावाचस्पति आदि जो योग्यतासूचक शब्द प्रयोग किए जाते हैं उनमें तो जाति की गन्ध नहीं आती ये अच्छे हैं किन्तु अन्य जातिसूचक शब्दोंसे जाति की गन्ध अवश्य आती है। जो आर्यसमाज केलिये ठीक नहीं है। जब आर्य समाज वर्ण को गुण-कर्म स्वभाव के अनुसार मानता है तो जन्मना जाति सूचक शब्द लोग क्यों प्रयोग करते हैं?

आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में रजिस्टर में जो लोग हस्ताक्षर करें उनमें भी जाति सूचक शब्द न लिखें। विभिन्न समाजों के पदाधिकारियों के चुनाव के उपरान्त पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिये दिए गए नामों में भी यही चीज हो।

आशा है सभी आर्य बन्धु मेरे इन विचारों पर अवश्य ध्यान देंगे और अनुकूल कार्यवाही भी प्रारम्भ होगी।

अमरीका क्यों नाराज हो गया ?

आज सारे देश में इस प्रश्न पर अलग २ सम्भावनाएं प्रगट की जा रही हैं कि भारत की तरफ से कौन सी ऐसी बात हुई है जिससे अमरीका इससे अचानक बिगड़ गया है और बिगड़ा भी ऐसा कि इसके विरुद्ध पाबन्दियों पर उतर आया है—अभी कल की बात है कि दोनों देश दोस्त नजर आते थे—कश्मीर के मसला पर इसने हमारा साथ दिया—आतंकवाद की समस्या पर इसने हमारा समर्थन किया—परमाणु बम की तयारी के प्रश्न पर इसने हमारी भावनाओं का समर्थन किया—इन सारी बातों के होते हुए कौन सी बात हो गयी है जिससे यह इतना बिगड़ गया है—इस सीधे प्रश्न का उत्तर भी सीधा है—हमने कोई ऐसी बात नहीं की जिसकी बिना पर कोई यह कह सके कि हमारी तरफ से कोई ऐसी बात की है जिसका अमरीका के ऊपर असर पड़ा है—फिर क्या हुआ है, हुआ यह कि अमरीका अपने कारणों से यह पसन्द नहीं करता कि भारत अपने अन्तरिक्ष के रिसर्च को जारी रखे—क्योंकि इससे अमरीका की तौफीक को चेलन्ज हो सकती है—यही कारण है कि आज से दो वर्ष पूर्व जिन बातों को अमरीकन फर्में हमे बताने को तैयार थी—इन पर आज ऐतराज किया जा रहा है क्योंकि रूस की एक फर्म इसे हमे बताने को तैयार है अमरीका को यह भी पता हैं कि हमने पहले उससे ही वाकफीयत हासिल करने की कोशिश की परन्तु रूसी फर्म को प्राथमिकता इसलिए दी कि इस वाकफीयत के लिए रूसी सरकार हमसे तीन गुना कम माग रही थी—भारत सरकार को अपने अन्तरिक्ष प्रोग्राम के लिए हाईड्रोनिक इन्जन की आवश्यकता थी—दुनिया के कई देशों से इस सम्बन्ध मे बात चीत हुई अमरीका से बात की गयी—फ्रांस तथा रूस से भी बात की गयी अमरीकन फर्म इस इन्जन के लिए ६३२ करोड़ रुपया माग रही थी—परन्तु रूस ने इसके लिए २१० करोड़ मांगे इस दिन से इन सम्बन्ध मे रूस से बात चीत चल रही हैं और अब जबकि भारत इस इन्जन की प्रतीक्षा कर रहा था अमरीका ने इसे भी कह दिया कि वह यह इन्जन भारत को न दे और भारत को भी कह दिया कि वह यह इन्जन न ले और यदि लेगा तो इस पर और रूस पर—तिजारती पाबन्दी लगा दी जाएगी—अमरीका की तरफ से कहा यह जा रहा हैं कि इस इन्जन की मदद से हिन्दोस्तान अपना परमाणु बम बनाएगा भारत न सिर्फ इनकी तरदीद ही करता हैं अपितु इसे यह भी बताया कि इसके अपने विशेषज्ञों ने तमाम तहकीकात करके यह प्रमाण पत्र दिया कि वह परमाणु शक्ति को फौजी जरूरियात के लिए प्रयोग नहीं कर रहा—ऐसा प्रमाण पत्र दे देने के पश्चात भी यह बात समझ में नहीं आती कि भारत सरकार की तरफ से इन आश्वासनों पर विश्वास क्यों न किया जाए—कि वह यह इन्जन अपने गैर फौजी कार्यक्रम के लिए खरीद रहा हैं ऐसी अवस्था मे प्रश्न उठता हैं कि अमरीका क्या समझता हैं कि यह इन्जन क्यों रूस से खरीद रहे हैं—

जानकार हलकों का कहना हैं कि अमरीका को यह बात परेशान कर रही हैं कि भारत के अन्तरिक्ष के सैटलाट का जो कार्यक्रम हैं वह बड़ी आसानी से फौजी आवश्यकताओं मे सहन किया जा सकता है इस समय तक भारतीय वैज्ञानिकों ने जो राकेट चलाए हैं और जो भी उन्नति की है इसने अमरीका को चिन्तित कर दिया हैं और इससे इसे दो बातों का डर हो रहा हैं प्रथम यह कि भारत किसी दिन इस शक्ति को फौजी आवश्यकताओं के लिए परिवर्तित कर लेगा—परन्तु मेरे विचार में इससे भी बड़ी बात जो अमरीका को परेशान कर रही है—यह हैं कि भारत जिस प्रकार उन्नति कर रहा हैं वह यदि इसी प्रकार जारी रही तो भारत एक दिन अमरीका के मुकाबले पर खड़ा हो जाएगा या इसे भी मात कर जाएगा—इस समय भारत का एक राकेट अमरीका के पैरामान से उत्तम माना जा रहा हैं और पीटरमार वह मिजाइल था जिसने खलीज के युद्ध मे ईराक की रूसी स्कडमरातलों को तबा किया था—ऐसे कामयाब हत्यार से उत्तम हथियार अगर हिन्दोस्तान के साईसदेन बनाते तो अमरीका की चिन्ता स्वाभाविक हैं सत्य यह हैं कि ससार के वैज्ञानिक यह मान रहे है कि भारत ने इस समय तक जितने राकेट तथा मिजायल बनाए हैं यह उत्तम तथा

अमरीका की परेशानी भारत द्वारा निर्मित अग्नि, पृथ्वी त्रिशूल और नाग जैसे राकेट और मिजायल का निर्माण ।

प्रथम श्रेणी के हैं—आज भारत का अपना कार्यक्रम हैं और इसे जो सफलता मिल रही हैं इसे देखते हुए अमरीका यह अनुभव कर रहा हैं कि शीघ्र ही इसके मुकाबले में उत्तम राकेट इत्यादि आजाएंगे—और इसी स्थिति से अमरीका बचना चाहता हैं—इसलिए वह भारत पर दबाव डाल रहा हैं कि वह अपनी उन्नति जरा धीमी कर दे—आज भारत मध्यम श्रेणी के मिजाइल फेंकने की स्थिति मे हो गया हैं कहा जाता हैं कि भारत ने "अग्नि" और "पृथ्वी" मिजाईलों के जो सफल तजरबे किए हैं इनसे अमरीका परेशान हैं—माहेरीन का कहना हैं कि यह अनेक कारणों से उनके मुकाबले में उत्तम हैं—अग्नि राकेट ने सारी दुनिया का ध्यान इस तरफ दिलाया हैं कि यह २ हजार किलो मीटर की दूरी तक वार कर सकता हैं—अमरीका और दूसरे देशों ने यह समझा कि यह भारत का इस तरफ पहला कदम है—अग्नि राकेट के निर्माता डा० अब्दुलकलाम का कहना हैं कि यह राकेट इतना तेज चल सकता हैं कि ससार का कोई राडोमीटर इसको पकड़ नहीं सकता—डा० महोदय ने गतवर्ष बगलौर की एक मीटिंग मे बताया कि इस मिजाईल का वार निशाने से ६० मीटर दूर तक लग सकता है इसलिए इसे ससार का सर्वोपरी माना जा सकता हैं इस तरह पृथ्वी मध्यम श्रेणी का मिजाइल हैं—जो जमीन के निशानों को तबाह करता है—इसका वार १५० से लेकर २५० कि० मीटर तक मार कर सकता हैं और इसका वजन ९५० किलोग्राम का होता है अगर यह गोला १००० किलोग्राम का होता तो इसका वार १५० किलोमीटर दूर तक हो सकता हैं—इन सारी बातों ने मिलकर अमरीका और योरुप के कई देशों को सोचने विचारने पर विवश कर दिया हैं कि क्या हिन्दुस्तान अपने राकेटों पर परमाणु बम नहीं रख सकता अग्नि और पृथ्वी राकेटों के अतिरिक्त भारत ने एक और मिजाईल "त्रिशूल" भी बनाया हैं—इसकी खूबी यह हैं कि यह जमीन से आकाश की तरफ मार करने को बेहतरीन मिजाइल बताया जाता हैं—एक और मिजाईल हैं "नाग" यह टैंकों को तबाह करता हैं—इन सारी बातों ने अमरीका को परेशान कर रखा हैं और वह यह समझ रहा हैं कि किसी भी दिन भारत इस सभी टैकनालोजी मे अमरीका के मुकाबले आकर खड़ा होगा—रूसी इन्जन मिल जाने से भारत २५०० किलोग्राम का गोला आकाश से फैंक सकेगा—यही कारण हैं कि अमरीका भारत से चिन्तित हैं—वह यह समझ रहा हैं कि हिन्दुस्तान इसे चेलन्ज करने की हैसीयत मे हो सकता है और इससे बचने के लिए भारत और रूस पर दबाव डाल रहा है ।

—के नरेन्द्र

सन्ध्या—एक चिन्तन-३

देवनारायण भारद्वाज

शुभ लाभ के लिए दो व्यापारी साझे मे व्यापार करते हैं। आज की भांति नहीं कि वहा लाभ ही लाभ का लक्ष्य है चाहे वह काला ही क्यो न हो। पर नहीं लाभ तो हो किन्तु वह शुभ हो—अर्थात् 'शम' हो। एक व्यापारी ने अपना 'अभिष्टये' लगाया और दूसरे ने 'पीतये' लगाया, तब उसने 'शम्' का लाभ कमाया। बाजार यह सारा संसार है और व्यापार प्रतिष्ठान यह देह स्थान है। इसी मे वे दोनो व्यापारी बैठते हैं—परमात्मा और जीवात्मा। परमात्मा सृष्टि की वस्तुओं का संग्रह करके देह मे रख देता है और आत्मा उनका सदुपयोग करके उससे लाभ प्राप्त कर लेता है। जीवात्मा ने भूमि से अन्न उत्पन्न कर लिया, किन्तु, वह वायु या प्राण उत्पन्न नही कर सकता है, वह उसे परमात्मा की सहायता से मिलता है। इस प्रकार अन्नमय एव प्राणमय दो कोषो से भौतिक शरीर गठित हो जाता है। जीवात्मा अपने मन को जगाता है तो परमात्मा उस मन मे अपना विज्ञान मिला देता है। इस प्रकार मनोमय एव विज्ञानमय कोषसे आध्यात्मिक शरीर संगठित हो गया। स्थूल और सूक्ष्म दोनो सत्ताओ के सक्रिय योगदान से आनन्दमय कोष मे जीवात्मा की गति हो गई, क्योंकि परमात्मा तो वहा पहले ही से था। जीवात्मा ने उससे साझा ही इसने इसलिए किया था कि जो लाभ उनके पास है वह मुझे भी मिल जाये। 'अभिष्टये' चूकि भौतिक पक्ष है—जिससे अन्नमय एव प्राणमय कोष आते हैं जैसा कि ऊपर कहा है कि इससे भी दोनो का साझा है। बिना परमात्मा के भौतिक पदार्थों का अस्तित्व भी असम्भव है। 'पीतये' मे आध्यात्मिक पक्ष है—जिसमें मनोमय एव विज्ञानमय कोष आते है, इसमे भी जीवात्मा एव परमात्मा दोनों का ही साझा है। मन्त्र का 'शम' शब्द जीवात्मा को इन कोषो के पार जाकर आनन्दमय कोष मे पहुचने की बात कहता है।

हमने ऊपर बहुतायत मे 'जल' शब्द का प्रयोग किया है। इसे मात्र जल यह भौतिक जल जो सदा ऊपर से नीचे को ओर स्वय बहता है, उसी पर सीमित मत हो जाना। आप नाम जल का है तो आप नाम प्रभु का भी है। ता' आप: स प्रजापति (यजु० ३२) सब शान्ति कामनाओ को प्राप्त कराने वाले वह प्रभु ही है। यह गुण जल मे भी है। तो हाथ मे जल आये, गले मे 'जल जाये किन्तु मन मे ध्यान प्रभु का आये, क्योंकि भौतिक शान्ति तो उसी मे है। यहा पर जल के विनियोग का सावधानी से लाभ लेना चाहिये। प्रभु के पीछे जल है, न कि जल के पीछे प्रभु हैं। जैसे किसी ने कोई सुन्दर वस्त्रधारण किया और कुछ काल बाद शरीर स्थूल हो गया—तो उस सुन्दर वस्त्र को धारित करने के लिए क्या शरीर की छटाई कर दी जाये। शरीर के पीछे वस्त्र है, न कि वस्त्र के पीछे शरीर है। सभी कामनाओ की पूर्ति कराने वाली प्रभु की करुणा धारा स्नेह धारा-वात्सल्य धारा निर्झर झील-सरिता कूप मे है क्या, पत्ते पत्ते और कण कण मे नहीं है? अवश्य है। इसीलिये तो हम इस ब्रह्म यज्ञ की यात्रा पर प्रस्थान से पूर्व मा जगदम्बा का आशीर्वाद लेकर आगे बढ रहे हैं। यही भौतिक एव आध्यात्मिक शान्ति ही हमारा लक्ष्य है। ●

श्री बिहारीलाल जी का निधन

श्री बिहारीलाल जी बधवा गिदड़बहा मण्डीवालो का निधन १५ ४ ९२ को हुआ। उनके पुत्र श्री वेदप्रकाश जी बधवा ने २४-४-९२ को श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी बठिण्डा वालों को बुला कर अपने परिवार मे हवन-यज्ञ कराया, श्री वानप्रस्थी जी ने जीवन एव मृत्यु पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर श्री बिहारीलाल जी बधवा के पुत्रों ने ११००० रुपये भिन्न-भिन्न धार्मिक सस्थाओ को दान देने की घोषणा की। जिसमें से ५००) पांच सौ रुपये का दान आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा को मिला।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

उ०प्र० के आर्य बन्धुओं से

श्री धर्मेन्द्रसिंह जी द्वारा सम्पादित आर्यमित्र, लखनऊ दिनाक ५-४-९२ के मुख पृष्ठ पर, 'आवश्यक-सूचना' शीर्षक से प्रकाशित सूचना, मेरे अभिमत से अनधिकृत और अनियमित ही नहीं, वरन् आर्य समाजो, आर्य प्रतिनिधि सभाओ और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की वर्षों पुरानी शृंखला को विशृंखलित करने वाला एक सुनियोजित षडयन्त्र भी है।

अत: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, विश्व भर के आर्य सगठनो की शिरोमणि सस्था तथा आर्य समाजो की एक मात्र नियामिका सस्था है।

अत. किसी भी आर्य समाज को, सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्गत निर्देशो तथा निर्मित उपनियमो की उपेक्षा करने का लेशमात्र भी अधिकार नही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नियमानुसार भी, उसके प्रत्येक आर्य समाज को सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्मित उपनियमो का परिपालन करना परमावश्यक है।

हा, इतना अवश्य है कि उ प्र की आर्य समाजें, सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्गत निर्देशो तथा निर्मित उपनियमो को मानने के साथ-साथ अपनी आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नियमोपनियमो को मानने हेतु भी सर्वथा बाध्य है।

सगठन के हित मे—

कु० ध्रुवपालसिह 'अटल' मुख्य निरीक्षक
आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र खरपरी (मैनपुरी)

जिला आर्य सभा संगरूर का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

जिला आर्य सभा संगरूर का वार्षिक अधिवेशन १९-४-९२ को प्रात ११ बजे आर्य समाज मालेर कोटला मे सम्पन्न हो गया। जिसमें जिले की सभी समाजों के प्रधान व मन्त्रियों के अतिरिक्त अन्य प्रतिनिधियो ने भाग लिया। वार्षिक विवरण के पश्चात् प्रतिनिधियो ने श्री राधेश्याम जी मोहिल को सर्व सम्मति से प्रधान चुना। तथा शेष कार्यकारिणी बनाने का अधिकार प्रधान जी को ही दिया। मोहिल जी ने प्रतिनिधियो की आशाओ की पूर्णता का आश्वासन दिया। उन्होने जिले की सभी समाजो को १७ मई तक अपनी स्थानीय समाजो को चुनाव करने का निर्देश दिया ताकि जिला आर्य सभा की कार्यकारिणी समाजो के नये प्रधान-मन्त्रियो के विचार विमर्श से तैयार की जा सके।

—योगेन्द्र वीर शास्त्री, पुरोहित

क्रान्तिकारी नेता

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रकार निजाम सरकार गुप्तरूप से स्वतन्त्र भारत की सरकार से युद्ध करने की जो अन्दर ही अन्दर जोरदार तय्यारियां कर रहा था उसका सारा ही भेद इस वीर ने अपनी जान पर खेलकर प्राप्त किया। हम देखते हैं कि जानबाज आर्य समाजी युवको के कारण ही हैदराबाद की जनता निजाम के खूनी साम्प्रदायिक पंजे से बच सकी और भारत सरकार के लिए मार्ग सरल एव प्रशस्त बन सका परन्तु ऐसे जिन युवको ने स्वाधीनता के लिये तिल-तिल कर अपना जीवन जलाया। स्वाधीनता प्राप्ती के पश्चात सरकार की ओर से इन वीरो का क्या सम्मान और सहयोग किया गया? आज भी ऐसे स्वाधीनता की नीव के पत्थर हमारी उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं। काश कि हमारी सरकार उनका यथोचित सम्मान कर तथा सुध लेकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर पाती।

ऐसे महान बुद्धिवादी, साहसी, आर्यत्व निष्ठ एव देशभक्त, देशनायक अपनी आयु के ७५ वर्ष पूरे कर ७६ वें वर्ष मे पदार्पण कर रहे हैं मैं उनके लिए दीर्घायु तथा ऐश्वर्य की कामना करता हुआ वर्तमान राज नैतिक तथा धार्मिक कार्यकर्ताओं को उनके गुणो और कर्तृत्व शक्ति का लाभ उठाने की सद्बुद्धि के लिये परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हू।

—लक्ष्मणार्य "विद्यावाचस्पति" प्रधान
आर्य समाज वरगल आन्ध्रप्रदेश

इमाम बुखारी को पाकिस्तान में किसी ने घास नहीं डाली, भविष्य में पाकिस्तान न जाने का निर्णय

दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी जो कि इन दिनो पाकिस्तान की यात्रा पर है ने खेद प्रकट किया है कि पाकिस्तान मे उनका किसी सरकारी अधिकारी अथवा प्रशासन के प्रवक्ता ने स्वागत नही किया। हालांकि वह प्रधान मन्त्री मियां नवाज शरीफ की दावत पर पाकिस्तान गये थे।

बुखारी ने कहा कि मैने अपने दौरे की सूचना पहले ही पाकिस्तान सरकार और दिल्ली मे स्थित पाकिस्तान उच्चायुक्त को भी दे दी थी लेकिन किसी ने कोई परवाह न की। इससे स्पष्ट है कि मियां शरीफ की बात कहने और करने मे फर्क है। मैंने पाकिस्तानी शासको की बेरुखी को देखकर फैसला किया है कि अब मै पाकिस्तान कभी नहीं आऊंगा।

नवा ए-वक्त के अनुसार शाही इमाम ने लाहौर में कहा कि मैंने नवाज शरीफ का निमन्त्रण मेहमान की हैसियत से इसलिए मंजूर कर लिया कि पाकिस्तान एक प्रमुख इस्लामी मुल्क है। मगर जब मैंने देखा कि मेरे स्वागत के लिए कोई नही आया तो मुझे देखकर बहुत अफसोस हुआ। लेकिन नवाज शरीफ ने जो मेरे साथ सलूक किया है, उसको देखकर मैंने फैसला किया है कि मैं कभी पाकिस्तान नही आऊंगा। मेरी बेइज्जती है।

(वीर अर्जुन (साप्ता) १४ मई ९२ के अंक से साभार)

आर्यसमाज फर्रुखाबाद का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज फर्रुखाबाद का वार्षिक महोत्सव १८ मई से २४ मई तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ, योग साधना शिविर ऋषि मेला का आयोजन किया गया है। उत्सव मे आर्य जगत के उच्चकोटि के सन्यासी, महात्मा विद्वान पधार रहे हैं। लोगो ने अधिक संख्या मे पधारकर जीवन को पवित्र एवं विकासमय बनाया।

श्री राम वशिष्ठ आर्य वानप्रस्थी बने

आर्य समाज शान्ताक्रुज के ४८ वें वार्षिकोत्सव पर वैदिक मिशनरी श्री राम वशिष्ठ जी आर्य ने स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती जी महाराज से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली। श्री राम वशिष्ठ जी आर्य ने आर्यसमाज के कार्य में अपने क्षेत्र मे जो सहयोग दिया वह सराहनीय है। उन्होंने दीक्षा लेते हुए कहा कि अब मेरे पास आर्य समाज का कार्य करने का पूरा समय है, मैंने रिटायर्ड होने के बाद अपना जीवन आर्य समाज के कार्य के लिए अर्पित किया है और मैं घूम घूम कर यह कार्य करता रहूंगा। वानप्रस्थ दीक्षा के उपरान्त श्री राम वशिष्ठ जी का नया नाम श्री मुनि वशिष्ठ रखा गया।

आर्यसमाज की ओर से आपका अभिनन्दन किया गया। श्री मुनि वशिष्ठ जी ने १ फरवरी १९९२ को यजुर्वेद पारायण यज्ञ के साथ दीक्षा ली।

—के० देवरत्न आर्य कुते प्रधान

सीताराम मन्दिर योग केन्द्र कठनी का महोत्सव

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि सीताराम मन्दिर योग केन्द्र कठनी जि० सोलन (हिमाचल प्रदेश) का द्वितीय वार्षिकोत्सव १६ जून मंगलवार को हो रहा है। इस अवसर पर हिमाचल के राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द जी, आचार्य इन्द्रपाल जी, नगीनचन्द्रलाल राजस्व मन्त्री, महेन्द्र कुमार सोफत पर्यटन मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र चक्र निडर संगीत मण्डली पधार रहे है। इस मौके पर विश्व शान्ति महायज्ञ ब्रह्मचारियो द्वारा व्यायाम प्रदर्शन, शानदार दंगल, योग साधना शिविर आदि का आयोजन हो रहा है। यह स्थान साधना प्रेमियो के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र है।

—स्वामी आनन्दवेश संचालक

स्वास्थ्य चर्चा

बदलते मौसम में सावधान रहें

मौसम बदलने का सीधा असर शरीर पर पड़ता है। ऋतुएं बदलने के साथ साथ अगर हम अपने खान पान और रहन सहन में भी बदलाव लाते रहे तो अस्वस्थ होने का खतरा नहीं रहता। हमारे देश में छह ऋतुएं हैं। एक ऋतु का आखिरी सप्ताह और दूसरी ऋतु का पहला सप्ताह एहतियात बरतने के नजरिये से बेहतर समय होता है। इसी वक्त हमें धीरे २ अपने खान पान में बदलाव ले आना चाहिए।

बसन्त (मार्च-अप्रैल)

इस मौसम में पेड़ों पर नए पत्ते आने लगते हैं। कफ वाली बीमारियां ज्यादा फलती है। कफ निकालने के लिए उल्टी कर लेना ठीक रहता है। टट्टी पेशाब कसरत और उबटन के बाद गर्म पानी का इस्तेमाल करना चाहिए। खुशबूदार फूलों की माला पहनने और सैंट लगाने से फायदा होता हैं।

इन दिनों दिन में सोना ठण्डी चीजें पीना भारी और खट्टा खाना ठीक नहीं होता। पानी में शहद मिलाकर पीने से कफ की शिकायत नहीं रहती। इन दिनों पुराना अनाज खाना ज्यादा अच्छा होता है।

ग्रीष्म (मई-जून)

लू का असर होने से शरीर कमजोर रहता है। इन दिनों धूप से बचना चाहिए और ठण्डी चीजें खानी पीनी चाहिए। सत्तू घी दूध चावल खाना ठीक रहता है।

वर्षा (जुलाई-अगस्त)

बारिश की वजह से शरीर कमजोर हो जाता है। ठण्ड, हवा और बारिश से बचना चाहिए। मक्खी मच्छरों से दूर रहें। उबटन, स्नान और खुशबूदार चीजों का इस्तेमाल ठीक रहता है। पुराना अनाज खाना और उबला पानी पीना फायदेमन्द होता है। दिन में सोना, नदी या तालाब का पानी पीना ज्यादा कसरत करना पानी के साथ सत्तू लेना और धूप में बैठना अच्छा नहीं रहता।

शरद (सितम्बर-अक्टूबर)

पित्त की शिकायत रहती है। सादा खाना गेहूं जौ मूंग आंवला शक्कर और शहद खाने से फायदा होता है। चांदनी में बैठना अच्छा रहता है। चर्बी, तेल ओस दही और ज्यादा खाना ठीक नहीं। सामने की हवा दिन का सोना और ज्यादा शराब पीना भी नुकसानदायक होता है

हेमन्त (नवम्बर-दिसम्बर)

तेल की मालिश उबटन लगाने और व्यायाम करने से फायदा होगा। हवा से बचते हुए धूप का सेक सोने के लिए गद्दे और कम्बल का इस्तेमाल और पहनने के लिए गरम कपड़े जरूरी हैं इस मौसम में शरीर भारी खाना हजम कर लेता है। मीठा खट्टा और नमकीन खाने के साथ साथ रसीली चीज़ें नया चावल मक्खन दूध मिश्री फायदेमंद हैं। शराब इस मौसम में ज्यादा नहीं पीनी चाहिए।

शिशिर (जनवरी-फरवरी

इस मौसम में रूखापन आ जाता है। सर्दी हो जाने के कारण ठण्ड बढ़ जाती है। हेमन्त जैसा खान पान और रहन सहन इस ऋतु में भी ठीक रहता है। चरपरी, कसैली ठण्डी और मादक चीजों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

—दीनानाथ उपाध्याय



आर्य समाज शकरपुर के वार्षिकोत्सव पर विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुये श्री बी० एल० शर्मा। मंच पर श्री सूर्यदेव जी श्री सिक्का जी। तथा स्वामी स्वरूपानन्द जी। पीछे खड़े हैं आ० स० के मन्त्री धर्मेन्द्र आर्य।

आर्यसमाज शकरपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर का ४८वां वार्षिकोत्सव ३ मई से ५ मई तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एक बृहदयज्ञ का आयोजन श्री सुदेव शास्त्री के पौरोहित्य में किया गया। जिसकी पूर्णाहुति ५ मई को सम्पन्न हुई। यज्ञ में लगातार तीन दिन तक सैकड़ों धर्म प्रेमी सज्जनों ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति से अपनी धार्मिक पिपासा को शान्त किया। मुख्य कार्यक्रम ५ मई को श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी के ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ। उत्सव में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों भजनोपदेशकों तथा नेताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री बी० एल० शर्मा (सांसद) ने कहा कि भारत को स्वतन्त्र कराने में और भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों का उन्मूलन करने में आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है और आज भी देश की देश भक्त जनता की निगाहें आर्यसमाज पर लगी हैं तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है जिसके उद्देश्यों और सिद्धान्तों का पालन करने पर देश का उद्धार सम्भव हो सकता है। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती तथा के० एल० सिक्का जी के अतिरिक्त कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री चुन्नीलाल जी तथा नन्दलाल निर्भय ने अपने भजनों से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। इससे पूर्व विभिन्न आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों तथा आर्यसमाज के प्रमुख व्यक्तियों ने श्री बी० एल० शर्मा का पुष्प मालाओं से स्वागत किया। इस आयोजन की अभूतपूर्व सफलता का सम्पूर्ण श्रेय आर्य-समाज के मन्त्री श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य को जाता है जिन्होंने अथक परिश्रम करके इस उत्सव को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराया। श्री ओमप्रकाश कौशिक प्रधान के धन्यवाद के साथ उत्सव की कार्यवाही पूर्ण हुई। श्री रामनिवास कश्यप के सौजन्य से विशाल ऋषि लंगर में सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन ग्रहण किया।

शोकसमाचार

—आर्य समाज सम्पत्ति रक्षा समिति अजमेर के संयोजक भवानी हरसुखदास आर्य के अग्रभ्राता स्व० हरखराम की धर्मपत्नी सरस्वती देवी का बन्दौटा बान्दा (यू० पी०) में निधन हो गया।

वह धार्मिक प्रवृत्ति की आर्य महिला थी। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे व परिवार जनों को यह महाविछोह सहन करने की क्षमता दे।

—किशोर कुमार आर्य
आर्य समाज बन्दौटा बान्दा

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३१-५-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U नं० ६१
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment Licence No. U 99 Post in N D.P.S.O.on 28, 29-5 1992

शोक समाचार

—आज दिनांक १७-५-९२ को प्रात: ८ बजे आर्य समाज में एक शोक सभा श्री देव शर्मा शास्त्री उपप्रधान आर्य समाज होडल की अध्यक्षता में हुई। जिसमें श्री नेतराम जी शास्त्री के बड़े भाई श्री तुलसीराम जी के सुपुत्र श्री ब्रह्मदत्त की जघन्य हत्याकाण्ड पर शोक प्रकट किया गया। दिवगत श्री ब्रह्मदत्त भारतीय वायु सेना के पूर्णिया सेन्टर पर कार्यरत थे। वे अपनी छुट्टियां बिताने अपने पैतृक स्थान होडल आये हुए थे। दिवंगत अपने पीछे भी सम्पूर्ण परिवार छोड़ गये हैं। वे अपने वृद्ध माता पिता एव पत्नी व बच्चों के एक मात्र सहारे थे। उनके अभाव मे सारे परिवार की दशा बड़ी शोचनीय हो गई हैं। आज की यह सभा हरियाणा सरकार से मांग करती है कि हत्याकाण्ड की जांच कराई जाये और दोषी हत्यारो को उचित सजा दिलाई जाये सभा में दिवगत आत्मा की शान्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करी गई।

—रतनलाल मन्त्री
आर्य समाज होडल

—देहरादून १५ अप्रैल। प० विश्वनाथजी की पत्नी श्रीमती कुन्तीदेवी जी का आज दिनांक १५ अप्रैल, १९९२ को देहान्त हो गया। वह ९४ वर्ष की थी। विगत वर्ष १९९१ में ११ मार्च को पं० विश्वनाथ जी की मृत्यु के समय से ही वह अस्वस्थ चल रही थीं। उनके परिवार में अब दो पुत्र श्री राजेन्द्रनाथ, श्री सोमनाथ एव तीन पुत्रियां श्रीमती कमला अग्रवाल, श्रीमती विमला एव श्रीमती इन्दिरा खन्ना, पौत्र-पौत्रियां दौहित्र-दौहित्रियां हैं। दो पुत्र डा० प्रेमनाथ एव श्री रवीन्द्रनाथ कई वर्ष पूर्व दिवगत होचुके हैं। डा० प्रेमनाथ पजाबी विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में दर्शन विभाग के अध्यक्ष थे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह माता कुन्तीदेवी जी की आत्मा को शान्ति व सदगति तथा परिवार के लोगों को इस वियोग को सहन करने की शक्ति एव वेदमार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।

—मनमोहन कुमार आर्य
१९६-ब्लाक १, पुक्खूवाला, देहरादून

—आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी (नैनीताल) के सदस्य श्री ओमप्रकाश आर्य की चाची का निधन १५-५-९२ को हो गया। इनकी अन्त्येष्टि व गृह शुद्धि पूर्णतया वैदिक रीति से श्रीकृष्ण आर्य के पौरोहित्य में की गई।

—श्रीकृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष
आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी
वाया-काशीपुर (नैनीताल) उ० प्र०

श्री सरदारीलाल वर्मा नहीं रहे

दिल्ली के वरिष्ठ आर्य समाजी नेता श्री सरदारीलाल वर्मा का १३ मई १९९२ को आकस्मिक निधन हो गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे आयोजित एक शोक सभा में सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दिवंगत के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा स्व० श्री वर्मा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओ मे से एक थे। सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का नेतृत्व किया था और कई वर्षों तक वह उसके प्रधान रहे। उनके निधन से दिल्ली मे आर्य समाज को अपूर्णीय क्षति पहुंची है।

शोक सभा मे दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना और शोक संतप्त परिवार के लिए हार्दिक सवेदनाए प्रकट की गई।

१४ मई १९९२ को उनकी अन्त्येष्टि निगमबोध-घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। इस अवसर पर दिल्ली की आर्य जनता भारी संख्या में वहां उपस्थित थी। सार्वदेशिकसभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री डा० सोमनाथ मरवाह एडवोकेट दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव और मन्त्री डा० धर्मपाल तथा अन्य कई प्रमुख आर्य जन भी उपस्थित थे। वहां पर आयोजित शोक सभा मे भी दिवगत को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ प्र)

वैदिक धर्म में प्रवेश

—ग्राम मुड़ागांव जिला रायगढ़ (म. प्र.) निवासी श्री मुरलीधर प्रधान ने वैदिक धर्म की दीक्षा हेतु १८-३-९२ को अपना आवेदन पत्र भेजा था। आर्य कुमार सभा के सर्वानुमती से श्री टीकाराम के पौरोहित्य में मुरलीधर एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीलादेवी एवं श्री दुखुराम तथा पत्नी श्रीमती बुहानी देवी का संस्कार कर वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। इस अवसर पर मुड़ागांव आर्य समाज के प्रधान श्री वामन चरण जी ने आर्य समाज के नियमों से इन्हें अवगत कराया इस अवसर पर आर्य कुमार सभा के सभी सदस्य उपस्थित थे।

—बसन्त कुमार आर्य

—मुड़ागांव जिला रायगढ के निवासी श्री ज्योतिष प्रसाद एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जयन्तिदेवी का यज्ञोपवीत संस्कार पं० अमृतलाल जी शर्मा (होशंगाबाद) द्वारा किया गया व वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। इस अवसर पर आर्य कुमार सभा के सदस्यों आर्यसमाज के सदस्यों के अतिरिक्त श्री जनकराम आर्य अध्यापक गुरुकुल होशंगाबाद भी उपस्थित थे।

—बसन्त कुमार आर्य

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज देवनगर नई दिल्ली का ३२ वां वार्षिकोत्सव ४ मई से १० मई १९९२ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ आर्यसमाज में मनाया गया इस अवसर पर ४ मई से १० मई तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य अखिलेश्वर जी वैदिक प्रवक्ता गुरुकुल गौतमपुर की अध्यक्षता में हुआ। इस यज्ञ की पूर्णाहुति १० मई को सम्पन्न हुई।

प्रत्येक दिन साय को ७-३० बजे से ८-३० तक श्री गुलाबसिंह राघव द्वारा भजन व ८-३० से ९-३० तक आचार्य अखिलेश्वर जी का वेद प्रचार होता रहा जिसमें अनेको श्रद्धालुओ ने भाग लिया। इस सुअवसर पर १० मई को सर्वश्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा, श्री सूर्यदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा० धर्मपालजी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आचार्य विश्वश्रवा जी व डा० प्रेमचन्द श्रीधर जी के ओजस्वी व्याख्यान हुए उन्होने समाज के उत्थान के लिए बहुत अधिक बल देने के लिए लोगों को प्रेरित व उत्साहित किया।

इसके पश्चात दोपहर १ बजे से २॥ बजे तक ऋषि लंगर की व्यवस्था आर्य समाज में की गई जिसकी सभी ने सराहना की।

—रघुवर दयाल प्रधान

—आर्य समाज नगल टाऊनशिप का ४४ वां वार्षिक महोत्सव दिनांक ४ मई से १० मई १९९२ तक धूम-धाम से मनाया गया। सामवेद पारायण यज्ञ प्रात: आर्य समाज में होता रहा। सायकाल पारिवारिक सत्सग होते रहे जिसमें दूसरे धर्मों के मानने वाले लोग भी बड़ी संख्या में भाग लेते थे। यह कार्यक्रम आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

—डा० इन्द्र कुमार मन्त्री

—आर्य समाज जौनपुर का ९२ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ७ से १० मई तक मनाया गया जिसमे स्वामी मुक्तानन्द जी सरस्वती पिथौरागढ़ श्री पं० महेन्द्रपाल जी आर्य श्री प० बनारसीलाल जी गुरुकुल सिराथू तथा श्री रामदेव जी एडवोकेट प० सत्यव्रत जी वानप्रस्थी श्री वीरपाल जी एवं श्री श्याम जी राघव श्री पारसनाथ जी शास्त्री श्री उमाकान्त ने भाग लिया दिनांक ९ मई को आर्य समाज जौनपुर के भूतपूर्व प्रधान श्रीयुत रामबिहारी लाल जी एडवोकेट का सम्मान किया गया जिसमें जनपद की सभी समाजों ने भाग लिया।

—ताराचन्द

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एव डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्य-भाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित न्याय धर्म की वृद्धि करने पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने विद्या पढने पढाने, और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनो को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपात रहित न्यायधर्मानुसार ही करे इत्यादि साधनो से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भग करने आदि काम मे बन्ध होना है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक १६] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ ज्येष्ठ शु० ७ सं० २०४९ ७ जून १९९२

भारत का अगला राष्ट्रपति कौन होगा ?

भारत के निर्वाचन आयोग ने आगामी १३ जुलाई १९९२ को राष्ट्रपति के चुनाव की तिथि नियत की है। ज्यों ज्यों तारीख नजदीक आ रही है, इस प्रश्न पर अधिक से अधिक कयासआरियां आरम्भ हो रही हैं कि नया राष्ट्रपति कौन होगा ? वर्तमान राष्ट्रपति श्री आर० वेंकट रमन अपने पद से मुक्त होंगे और उनकी तरफ से इशारा हो चुका है कि वह दुबारा चुनाव लड़ने को तैयार नहीं हैं और सेवानिवृत्त होकर मद्रास में जाकर शान्ति से अपना जीवन बिताना चाहते हैं।

उनके इस निर्णय से आम जनता मे यह प्रश्न हो रहा है कि क्या उस परिपाटी का सम्मान करते हुए वर्तमान उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा को इस पद के लिए नामजद किया जाएगा ? प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हाराव जी की तरफ से अभी कोई संकेत नहीं हुआ कि आप क्या सोच रहे है ? परन्तु दीखता यही है कि श्री शर्मा को इस पद के लिए नामजद किया जाएगा। रहा प्रश्न उपराष्ट्रपति का इस पर काफी ले दे हो सकती है।

परन्तु इस चुनाव का सबसे अफसोसजनक पहलू यह है कि इसे भी साम्प्रदायिकता का रंग दिखाया जा रहा है। जनता दल के लोग इस बात पर बल दे रहे हैं कि किसी हरिजन को इस पद के लिए नामजद किया जाए ? वह सब इसलिए कर रहे हैं कि वह समझते हैं कि इस तरह वह हरिजनो में लोकप्रिय हो जायेंगे। ऐसे लोग यह नजर अन्दाज कर रहे है कि नया राष्ट्रपति सारे देश का राष्ट्रपति होगा। वह सारे देश का नुमायन्दा और तर्जमान है। यह किसी एक फिर्के या तबके से सम्बन्धित नही हो सकता। जो भी व्यक्ति सब मामलात मे इस पद के लिए उपयुक्त हो, उसे ही चुना जावे चाहे वह हरिजन अथवा पिछड़ी जातियों मे से ही हो परन्तु इस बात पर विवश करना कि यह विशेष तौर पर एक खास फिर्का या जात से सम्बन्धित हो। देश के इस महान तथा महत्वपूर्ण पद को फिरकादाराना रंग देना जिसके अत्यन्त भयकर परिणाम हो सकते है।

इस देश की बदनसीबी है कि इसके चन्द नेता अपनी हविश के हानिकारक असर को जानते हुए भी अपने अस्थायी लाभ के लिए इस विष को सबसे बडे पद के चुनाव मे भी घसीटना चाहते हैं।

—के० नरेन्द्र

श्री यश का निधन

प्रमुख पत्रकार और लोक सभा सदस्य श्री यश का दिल का दौरा पडने से कल जालन्धर मे निधन हो गया है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने शोक सन्देश मे कहा है कि श्री यश के निधन से राष्ट्रीय क्षति हुई है। श्री यश जी आर्य समाज के प्रखर नेता महात्मा आनन्द स्वामी के सुपुत्र थे। वह स्व० सरदार प्रतापसिंह कैरो ज्ञानी गुरुनामसिंह मुसाफिर और ज्ञानी जैलसिंह के मन्त्रिमण्डलो मे कई वर्षो तक पजाब सरकार के मन्त्री भी रहे थे। पहली बार गत चुनाव में वह पंजाब से लोकसभा सदस्य चुने गए थे। वह महान् स्वतन्त्रता सेनानी थे। बचपन से ही स्वतन्त्रता आंदोलन मे जुडे हुए थे। पत्रकार के रूप में उन्होंने बचपन से ही कलम सम्भाली थी। अनेक कहानियों के संग्रह उनके प्रकाशित हो चुके हैं। इस समय भी वह दैनिक उर्दू मिलाप (जालन्धर) के सम्पादक थे। श्री यश के बड़े भाई श्री रणवीर जी शहीद भगतसिंह के साथी थे, उन्हे भी अंग्रेज सरकार ने मृत्यु दण्ड दिया था, पर बाद मे आजीवन कारावास में बदल दिया था।

श्री यश के निधन से सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्र की अपूर्णीय क्षति हुई है।

समूचे आर्य जगत् की ओर से दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए स्वामी जी ने शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त की है।

सुरक्षा अधिकारी ही आतंकवादियों को हथियार बेच रहे हैं

जम्मू १ जून। कश्मीर घाटी में सक्रिय आतकवादी दल वहां पर तैनात अर्द्ध सैनिक बलों के अधिकारियो के साथ मिलकर पंजाब के खाडकुओं को भारी मात्रा में हथियार बेच रहे है जिन्हें राज्य प्रशासन के अधिकारियों के साथ मिलकर ट्रकों मे पजाब मे लाया जा रहा है। इतना ही नही, कश्मीर मे तैनात सुरक्षा बल के अधिकारी भी पजाब के आतंकवादियों के अतिरिक्त तराई क्षेत्र में सक्रिय आतंकवादी दलों को कश्मीरी आतंकवादी दलों से बरामद हथियारों को भारी कीमतों पर बेचकर हजारों रुपया बटोर रहे हैं।

उच्च पदस्थ खुफिया सूत्रों का कहना है कि कश्मीरी आतंकवादियों ने अर्द्ध सैनिक बलों की मदद मे पंजाब के आतंकवादियों

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार

आर्य सभा मोरीशस का निर्वाचन

आर्य सभा मोरिशस की कार्यकारिणी समिति (अन्तरंग सभा) का गठन सन् १९९२-९३ ई० के लिए निम्न प्रकार हुआ है—

संरक्षक	:	श्री मोहनलाल मोहित, जी. ओ. ई, आर्य रत्न
प्रधान	:	माननीय राजनारायण गति, एम पी.
उप प्रधान	:	श्री वसकरण मोहित
उप प्रधान	:	माननीय डा० रुद्रसेन नीऊर, एम०पी०
मन्त्री	:	श्री सत्यदेव प्रीतम, बी० ए०
उप मन्त्री	:	श्रीमती धन्वन्ती रामचरण
उप मन्त्री	:	श्री जयचन्द लालबिहारी, एम० ए०, एम० एड
कोषाध्यक्ष	:	श्री शीतल प्रसाद ओपाम
उप-कोषाध्यक्ष	:	श्री चन्द्रमणि रामधनी, एम०बी० ई
उप-कोषाध्यक्ष	:	श्री सन्तोष जगन्नाथ
पुस्तकाध्यक्ष	:	श्री केशवदत्त चिन्तामणि
जन-सम्पर्क अधिकारी	:	श्री रामशरण नन्दलाली
सदस्य	:	श्री विद्यानन्द देवकरण, डा० हरिदत्त धूरा, श्री सुधीरचन्द्र कन्हाई, श्री मूलशंकर रामधनी-एम. बी. ई., श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजी, श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन, श्री प्रेमहंस बीकिसुन

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करना चाहिए—

सभा मन्त्री, आर्य सभा मोरिशस

१, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई

सत्यदेव प्रीतम
सभा-मन्त्री

शराब का ठेका बन्द कराने के लिए संघर्ष

ग्राम करेवड़ी जिला सोनीपत मे हरयाणा सरकार द्वारा देशी शराब के ठेके का ग्रामीण नर-नारियों ने कड़ा विरोध किया है। आर्य समाज के नेता श्री सज्जान सिंह के अनुसार ग्राम नर-नारी सैकड़ों की संख्या मे इस ठेके को बन्द करवाने के लिए जिला उपायुक्त श्री रामपाल चन्द्र के कार्यालय में उपस्थित हुए और उनसे ठेका तुरन्त बन्द करने की मांग करते हुए चेतावनी दी कि यदि सरकार ने इस ठेके को बन्द नहीं किया तो ग्रामीण जनता की ओर से संघर्ष आरम्भ किया जायेगा। जिला उपायुक्त को बताया कि इस शराब के ठेके के कारण शराब पीने वाले असामाजिक तत्व उत्पात मचा रहे हैं। बहन-बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं है। युवा वर्ग पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

श्री सज्जान सिंह आर्य ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से भी अनुरोध किया है कि ग्राम करेवड़ी से शराब के ठेके को बन्द करवाने के कल्याणकारी कार्य में ग्रामीण जनता का मार्गदर्शन करें। सभा की ओर से सभा के प्रचारक प० रतनसिंह आर्य को प्रचारार्थ तथा संघर्ष की तैयारी करने के लिए करेवड़ा भेज दिया है। नशाबन्दी आन्दोलन के नेता श्री ओमप्रकाश सरोहा ने ठेके को बन्द करवाने के लिए सरकार को चेतावनी दी है कि कोई कार्यवाही न की तो ठेके पर धरना देकर शराब की बिक्री बन्द करवा दी जावेगी।

—केदारसिंह आर्य

सूचना

प्रधान, आल इण्डिया दयानन्द सालवेशन मिशन, ऊना रोड, होशियारपुर स्कूलों तथा कालिजों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान करने के लिए १५ जून १९९२ तक प्रार्थना-पत्र आमन्त्रित करते हैं। यह प्रार्थना-पत्र अपनी संस्था में उच्च अधिकारी से प्रमाणित करवा कर भेजे जाने चाहिए।

—हृदयपाल सिंह, प्रधान

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान पं० वासुदेव शर्मा का निधन

सार्वदेशिक सभा के वर्तमान उपप्रधान और आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के भू० पू० प्रधान प० वासुदेव शर्मा का ८५ वर्ष की आयु में कल पटना मे निधन हो गया है।

उनके निधन पर सार्वदेशिक सभा में आयोजित शोक सभा मे सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा पण्डित जी हमारे वरिष्ठ सहयोगियो मे थे। वे आर्य समाज के जागरूक प्रहरी और नेता थे। उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। वह अपने पीछे पत्नी तथा २ लड़के और लड़कियां छोड़ गए हैं। शोक सभा मे दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

दिवगत के सम्मान मे सभा कार्यालय बन्द कर दिया गया:

आतंकवादियों को हथियार बेच रहे हैं

(पृष्ठ १ का शेष)

को हथियार बेचे है, इस बात का रहस्योद्घाटन २४ अप्रेल के दिन जम्मू मे बड़ी ब्राह्मणा के निकट गोलों से भरे ट्रकों को ले जा रहे ड्राइवर जसविन्द्र सिंह जिसकी पहचान बाद में पंजाब के एक आतंकवादी के रूप मे की गई, ने पूछताछ के दौरान किया है।

उसके कब्जे में से हरियाणा पुलिस के महानिरीक्षक गुप्तचर शाखा का एक पत्र भी बरामद किया गया जिसे सभी पुलिस अधीक्षकों को लिखा गया था तथा जिसमे यह बताया गया था कि कौन-कौन से ट्रक को कौन-कौन सा आतंकवादी चलाता है और वह किस कम्पनी से सम्बन्धित है। उसके कब्जे से पत्र की असल प्रति बरामद हुई है।

जसविन्द्र सिंह ने रहस्योद्घाटन किया है कि उन्हे हथियारों की तस्करी मे अर्द्ध सैनिक बलों व राज्य प्रशासन के अधिकारी भरपूर सहायता किया करते थे। उसे गोलों को घाटी में ले जाने के लिए जाली प्रमाण पत्र जम्मू उपायुक्त श्री परवेज दीवान के क्लर्क अनिलकुमार ने जारी किया था जिसे अब बर्खास्त कर दिया गया है।

उच्च पदस्थ सूत्र बताते हैं कि हथियारों की तस्करी का सिलसिला एक लम्बे अरसे से चल रहा है। गिरफ्तार किये गये लोगों ने पूछताछ करने वालों के समक्ष स्वीकार किया कि स्थानीय अधिकारियों के अतिरिक्त सुरक्षा बलों व जम्मू-कश्मीर पुलिस के जवानों ने भी उन्हे संरक्षण प्रदान किया। कुछेक का कहना है कि उन्होने इन हथियारो को घाटी मे तैनात सुरक्षा अधिकारियों से ही खरीदा था जो आतकवादियों से हथियार बरामद करने के उपरान्त हथियारों को इधर-उधर कर देते हैं।

इधर-उधर करने का एक मामला भी सामने आया है जिसमें सीमा सुरक्षा बल के कई उच्चाधिकारी शामिल बताए जाते हैं। इनमें एक महानिरीक्षक या उपमहानिरीक्षक भी शामिल था।

आवश्यकता है

सम्पादकीय

भाषा एक समस्या

हिन्दी-उर्दू-बाई के साथ-अंग्रेजी मेमसाहब ?

किसी समय में एक नवाब थे उनके दो बेगमे थीं एक का नाम हिन्दी बाई दूसरी का नाम था उर्दू बाई। नवाब की शिक्षा दीक्षा इगलैण्ड में हुई थी इस कारण वह वहा से एक अंग्रेजी मेम ले आये और उसे अपनी मेम बनाकर रखने लगे। हुआ यह कि दोनो बीबिया अंग्रेजी मेम की दासी बनकर रहने लगी।

इस बातकी चर्चा महलोसे निकलकर गली चौराहो पर आ गई। राज्य की जनता को यह बात बुरी महसूस हुई कि उनका अपने घर की बीबिया एक विदेशी औरत की दासी गुलाम बनाकर रखी गई। लोगो का असन्तोष इस बात से सीमा परे हो गया और दोना बीवियों के अधिकारों की रक्षार्थ माग पत्र पेश किये जाने लगे।

नवाब साहब बडे विवेकशील समझदार व्यक्ति थे राजनीतिक दाव पच पारिवारिक परम्परा मे प्राप्त थे।

प्रथम तो नवाब साहब ने जनता को यह कहकर गुमराह किया कि मेरी दोनो रानिया गवांर अनपढ हैं। पर्दे मे रहने स दीन दुनिया से बेखबर हैं। अत राजनैतिक विषयो मे अनपढ होने से कोई सही सलाह भी नही दे सकती।

यह बात नवाब साहब के दिमाग मे नहीं घुस पई तो उन्होंने ऐसे दोस्त जो लार्ड मैकाले की परम्परा को पसन्द करते थे विचार-विमर्श के लिये बुलाया। यह सब मैकाले की परम्परा पर अभिमान करते थे।

कई दिनो वर्षों तक विचार करने पर अ त मे एक साहब का यह सुझाव सभी को रुचिकर लगा कि आम जनता जाहिल मूर्ख है अत अंग्रेजी बाई की योग्यता को नहीं जान सकती। क्यो न ऐसा किया जाय कि वैधानिक रूपसे दोनो बेगमो हिन्दी उर्दू को राज्य रानी घोषित किया जाय। वास्तविक अधिकार अंग्रेजी-बाई के हाथो मे हा रहे। यह दोनो अपढ औरतें क्या करेंगी ?

नवाब साहब ने यही किया। एक शाही आदेश मे कहा गया कि हिन्दी बाई देश की अर्थात् नवाब की महाराना है और उर्दू बाई रानी हैं। आदेश मे अलग से कोई आदेश अंग्रेजी बाई के लिये नही दिया गया।

इतना अवश्य किया जाय कि नवाब साहब की दोना बीबिया अनपढ हैं अत इन्हे योग्य बनाया जाय। जब तक यह लिख पढकर जहालत से ऊपर योग्य न बन जाय। तब तक अग्रेज मेम साहब राज-काज मे मदद करती रहेगी।

नवाब साहब का आदेश सही-साबित हुआ जनता ने मौन धारण कर लिया कि चलो कभी न कभी इन अभागी दोना बेगमो के दिन फिर फिरगे।

> आवेंगे बौर रसालन पै और डालन प कोयल कुहकगी।
> एक दिना न तो एक दिना इन बेगमो के दिन फेर फिरेंगे॥

कभी न कभी योग्य बनकर राजकाज के काम लायक हो जायगी और राज्य के गम्भीर कामो को समझते हुए—सलाह देने लगेंगी।

दिन गुजरते गये, वर्षो बीत गये दोनो दोनो बेगमो ने दिन रात मेहनत करके अपने आपको इस योग्य बना लिया कि वह राज्य के कठिन से कठिन काम को समझ कर हल कर सकें। लेकिन नवाब साहब का दोनो ही बेगमो के प्रति नफरत बढती हो गई।

परिणामत नवाब साहब दोनो बाइयो से अंग्रेजी मेम साहब के पैर दबवाते और काम काज मे दोनो बेगमे दासियो की तरह अपने जीवन को व्यतीत करने लगी।

दिन बीतने लगे दोनो बेगमों ने हिन्दी और उर्दू ने दिन रात मेहनत करके अपने आपको इस योग्य बना लिया कि वह किसी भी समस्या को आसानी से हलकर सकें। लेकिन नवाब साहब की दोनो बेगमो के प्रति नफरत बढती ही गई।

परिणामत नवाब साहब दोनों बेगमो को सरे आम अपमानित करके अंग्रेजी मेम के पैर दबवाते, चरण चुम्बन कराते इससे दोनों बेगमों की दशा दासियो से भी बदतर हो गई और उनका जीना दूभर हो गया।

हिन्दी बाई की क्षेत्रीय भाषायें जहा अपने २ क्षेत्रो में फटीचर बनकर जीवन यापन कर रही हैं—हिन्दी-बाई का बच्चा स्कूलों में व उर्दू-बाई का बच्चा मस्जिद के मदरसे मे जाता है वहीं अंग्रेजी मेम का बच्चा कान्वेन्ट व अच्छे पब्लिक स्कूलो मे विद्योपार्जन करता है। अवकाश के दिनो मे या कही बाजार में जब यह बच्चे मिलते हैं तो अंग्रेजी मेम के बच्चे हिन्दी-उर्दू बाई के बच्चो को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। समझाने पर बताया जाता है कि यह भी तुम्हारे भाई हैं।

अंग्रेजी-बाई का लडका सर्विस या किसी आयोग मे या इन्टरव्यू मे जाता है तो उसे प्राथमिकता दी जाती है और बेचारे बाइयो के लडको को भगा दिया जाता है या साधारण काम पर लगा दिया जाता है मेम के बच्चो के सामने ही अपमानित होना पडता है। जवाब मे यह भी सुनना पडता है कि यह जगली मेरे भाई नहीं हो सकते है नवाब साहब स्वय भी मुह फाडकर बच्चों की बातो पर हस देते हैं दोनो बेगमो के सिर लज्जा म अपमानित होकर ग्लानि से झुक जाते हैं इसके पश्चात दोनो बेगमो के बच्चो को अंग्रेज मेम के बच्चों के सामने गुलाम बना दिया जाता हैं।

क्यो कि नवाब साहब मेम के बच्चो को ही वास्तविक उत्तराधिकारी मानते हैं।

अब न नवाब रहे और न राजा ही तथा न रियासत ही रही बेगमे भी नहीं रही। पूरी रियासत एक स्वतन्त्र देश मे बदल गई है लेकिन आज भी राज्यो का काम काज अंग्रेजी मेम के बच्चो की देखरेख में हो रहा है।

हिन्दी-बाई के बच्चे व दूसरी बाइयो के बच्चे इस बात से खुश और खामोश हैं कि कानून की पुस्तक मे उनके अधिकार लिख दिये गये हैं।

हिन्दी मेम के बच्चे अपने अधिकार के लिये लडकर माग कर रहे है।

पुस्तक—समीक्षा

माण्डवी महाकाव्य

रचयिता—श्री ओ३म् प्रेमी चतुर्थाश्रमी
गुरुकुल होशगाबाद (म० प्र०)

रामायण काल की महिला पात्रो मे जो यश महारानी सीता को गृह निर्वास काल १४ वर्ष के लिये पति के साथ स्वीकार किया एक एक साम्राज्ञी के वन गमन त्याग तप का सच्चा उदाहरण है।

लक्ष्मण की ध० प० उर्मिला का उदाहरण विपरीत है पति के साथ वन गमन न कर घर में सुख सुविधाओ को प्राप्त कर रहना—अपने मे पति वियोग का सीता की भांति द्वितीय त्याग तप का सच्चा उदाहरण भी बनता है जिसकी उर्मिला महाकाव्य के रूप मे प्रसिद्ध हुई।

परन्तु माण्डवी भरत प्रिया को किस आधार पर काव्य की नायिका के पद पर प्रतिष्ठत किया है।

सीता उर्मिला और यशोधरा का जीवन काम त्यागमय जीवन की कष्ट प्रद घडिया रही हैं वहां माण्डवी किसी भी रूप में समकक्ष नहीं उतरती हैं माण्डवी का जीवन भरतप्रिया बनकर वैभव पूर्ण रहा। भले ही भरत ने खडाउओ पर राज्य किया। लेकिन भरत महाराज है तो 'माण्डवी महारानी है।

नवीन जी की उर्मिला और तुलसी की सीता काव्यो मे सरस मधुर कृति के रूप में स्थित है ?

फिर भी भ्राता के वियोग में तडपता भरत तापसाध्यक्ष होकर भी 'माण्डवी ने अपना जीवन वनवासी पतियो की प्रतिष्ठा मे सभी सुखो का त्याग भी माण्डवी के यश को चार चाद लगाता है।

लेखक ने इस कृति में माण्डवी के व्यक्तित्व और बलिदान के साथ पूर्ण न्याय किया है।,

महाकाव्य की दृष्टि से सीता और उर्मिला की वेदना को तो सबने छुआ है परन्तु 'माण्डवी' और श्रुतिकीर्ति की पीड़ा का किसी ने जानने व समझने का प्रयास तक नहीं किया।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

राष्ट्रभक्त और स्वाभिमान के प्रतीक महाराणा प्रताप

—जगदीश प्रसाद एरन, नीमच

स्वातन्त्र्य सूर्य महाराणा प्रताप की जयन्ती ९ जून को सारे भारत वर्ष में धूमधाम से मनाई जा रही है। जिनका उद्घोष था—

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

जननी जन्म भूमि स्वर्ग से महान है।

प्रातः स्मरणीय प्रताप के पिता श्री उदयसिंह जी ने अपना उत्तराधिकारी ज्येष्ठ पुत्र जयमल को बनाया था, किन्तु जयमल राष्ट्र की बागडोर न सम्भाल सके इसका मूल कारण यह था कि एक ओर जयमल स्वयं विलासी व कायर था तथा दूसरी ओर मेवाड़ पर अकबर जैसे शक्तिशाली शासक की आंखें लगी हुई थीं। अकबर ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता व कूटनीति से कई राजपूत राजाओं को न केवल अपनी ओर मिला लिया था अपितु पारिवारिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लिए थे तथा शिवपुर कोटा चित्तौड़ जैसे दुर्गों पर अपना अधिकार कर लिया था।

ऐसे समय मे मेवाड़ की आन-बान और शान को बचाने के लिए एक वीर स्वाभिमानी व कर्तव्य निष्ठ शासक की आवश्यकता थी। मेवाड़ के दूरदर्शी व साहसी शासकों ने वि० ३ मार्च १५७२ को उदयपुर से १९ मील दूर गोगूदा नामक स्थान पर जयमल को हटाकर प्रताप का अभिषेक कर दिया।

महाराणा प्रताप ने चित्तौड़ को स्वतन्त्र कराने का निश्चय किया, किन्तु धन व साधनो के अभाव में वे क्या कर सकते थे। महाराणा की लोकप्रियता व दूरदर्शिता यहीं पर दृष्टिगोचर होती है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने जिस प्रकार वानर दल की एक बड़ी सेना इकट्ठा की थी, हमारे चरित्र नायक ने भी अरावली पर्वत श्रेणी के चप्पे-चप्पे का दौरा किया। जन-जन से सम्पर्क किया तथा अपने त्यागमय जीवन की उनके हृदय पर छाप छोड़ कर उनमे राष्ट्र भक्ति का भाव जगाया। भील, मीणों तथा अन्य वन्य जातियों व अपने विश्वस्त राजपूत व अन्य देशभक्तों की एक सुदृढ़ सेना बनाई।

शक्ति सिंह के शत्रु मे जा मिलने पर भी स्वाभिमानी प्रताप ने अकबर के सेनापति, कुलद्रोही मानसिंह का स्वयं आतिथ्य नहीं किया तथा उसके द्वारा दी गई युद्ध की चुनौती को स्वीकार कर लिया। हल्दी घाटी के ऐतिहासिक मैदान मे दिये और तूफान के बीच घनघोर युद्ध हुआ : महाराणा तथा उनके राष्ट्रभक्त साथी उस चट्टान से जा टकराए।

महाराणा युद्ध मे पराजित हो गए किन्तु सिद्धांतों व आदर्शों में जीत गए। घास पात की रोटियां छोटी सी बालिका तक ने खाई, ढेलो का बिस्तर व पत्थर का सिरहाना तक लगाया, अपने प्राण प्यारे चेतक को खोया किन्तु परतन्त्रता स्वीकार नही की।

उनके साहसिक कार्यो व राष्ट्र प्रेम पर झाला सरदार के अनुपम बलिदान से प्रभावित होकर बिछुड़े भाई शक्तिसिंह उनसे गले आ मिले। दानवीर भामाशाह ने पीढ़ियो से एकत्रित की गयी धन राशि को लाकर महाराणा के चरणो मे डाल दिया। भामाशाह अपनी उदारता और राष्ट्रभक्ति के कारण इतिहास मे अमर हो गए।

दृढ़व्रती प्रताप ने चित्तौड़ पर विजय न कर लेने तक थाली में भोजन न करने, जमीन पर सोने, मूछो पर ताव न देने की प्रतिज्ञा की, जिसका उन्होने जीवन भर पालन किया, उनके वशधर आज भी उस परम्परा को निभाते दिखाई देते हैं।

महाराणा ने मेवाड़ के कई स्थानों पर विजय प्राप्त की। किन्तु १९ जनवरी १५९७ को केवल ५७ वर्ष की आयु में स्वतन्त्रता का वह साध्य प्रहरी नवीन निर्मित राजधानी चावड़ में सदा के लिए सो गया।

इतिहास कार कर्नल टाड ने अपनी पुस्तक "राजस्थान का इतिहास' में लिखा है कि ऊंचे अरावली पर्वत का कोई भी ऐसा दर्रा नहीं जो प्रताप के साहस पूर्ण कार्य से पवित्र न हुआ हो। महाराणा ने मातृभूमि की रक्षा के लिए पर्वतों को ही दुर्ग मानकर, कन्दराओं को महल, वृक्ष को दिया, धरती को बिछौना व आसमान को छत मानकर देश और जाति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

मण्डोली गांव के पास नदी के तट पर महाराणा प्रताप का अन्तिम सत्कार किया गया जहां संगमरमर की आठ खम्भों वाली छत्री आज भी उस महान राष्ट्रभक्त की वीर गाथा सुना रही है। हर साल इस वीर की पुण्य तिथि पर यहां विशाल मेला लगता है।

उस महामानव के चरणों में शत-शत वन्दन।

सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में गोभक्त नेताओं की बैठक

नई दिल्ली, २७ मई।

दिल्ली के प्रमुख गोभक्त नेताओं की एक आवश्यक बैठक 'स्कूली बच्चों के भोजन में अंडा शामिल करने सम्बन्धी कृषि राज्य मन्त्री श्री के० सी० लेंका के वक्तव्य पर विरोध प्रकट करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय दयानन्द भवन, नई दिल्ली में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई।

भारत गोसेवक समाज के कार्याध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता ने कृषि राज्यमन्त्री के वक्तव्य के विरोध में अब तक की गई कार्यवाही पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि कृषि राज्य मन्त्री का यह वक्तव्य कि स्कूली बच्चो के भोजन में अंडा शामिल किया जाय, अत्यन्त निन्दनीय है और अहिंसा में विश्वास रखने वाले करोड़ो धार्मिक जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला है।

बैठक मे सर्वसम्मति से निम्न निर्णय लिये गये—'

(१) पत्रकार वार्ता परिषद आयोजित कर मन्त्री महोदय के वक्तव्य की निन्दा की जाय।

(२) शीघ्र ही एक शिष्टमण्डल प्रधान मन्त्री तथा कृषि मन्त्री जी से भेंटकर अपनी भावनाओ से उन्हे अवगत कराये और वक्तव्य सम्बन्धी आगे की कार्यवाही वापस लेने का अनुरोध करे।

(३) निश्चय हुआ कि यदि १५ दिन तक सरकार का कोई सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त न हो तो आन्दोलन किया जाय।

स्वामी आनन्दबोध जी ने सुझाव दिया कि 'स्कूली बच्चों को अंडे की जगह गोदुग्ध पिलाया जाय' जिससे उनके अन्दर सात्विक भावनाओं का विकास हो।

—गंगासिंह, मन्त्री, भारत गोसेवक समाज

आर्य वधुओं की आवश्यकता

१—आनन्दकुमार पुत्र श्री आचार्य वेदप्रिय शास्त्री (आर्य महोपदेशक) आयु २४ वर्ष, शिक्षा हाईस्कूल, कद ५ फुट ६ इंच, व्यवसाय कोटा के पास केलवाड़ा कस्बे में व्यापार (परचूनी) करता है।

२—धर्मबन्धु आर्य पुत्र डा० रामकृष्ण आर्य एम०ए०, पी०एच० डी० आयु २४ वर्ष, शिक्षा हाईस्कूल, कद ५ फुट ६ इंच न्यायालय (कोटा) परिसर में टाइपिस्ट है।

दोनों युवकों के लिए उपयुक्त वधुओं की आवश्यकता हैं।

विशेष—दोनों युवक आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता हैं, दोनों के विवाह दहेज और जातपात तोड़ो (जाति बन्धन रहित) योजना के अन्तर्गत होगे। लिखें या मिलें:—

मन्त्री आर्य परिवार संघ, ४ म २७ विज्ञाननगर

कोटा (राज०) ३२४००५

वेदों में मन्त्र का महत्व

—स्वामी रवेश मुनि, जयपुर-२०

(गताङ्क से आगे)

(५) मन्त्र द्रष्टा ऋषि का नाम—"वेद मन्त्र का द्रष्टा एक ऋषि है। किसी-किसी मन्त्र के कई-कई ऋषि हैं। यजमान जो किसी मन्त्र से लाभ उठाना चाहता है तो उसे ऋषि ऋण उतारने के लिए मन्त्र का उच्चारण करने से पहले ऋषि या ऋषियों के नाम का उच्चारण करना होगा जो कि उस मन्त्र के मन्त्र द्रष्टा हैं। जिन्होंने बहुत काल तक पेड़ों के पत्ते पी पी कर बड़े भारी श्रम से उस मन्त्र का साक्षात्कार किया। इसमें अनेकों उदाहरण दिये जा सकते हैं। ऋग्वेद १/१८९/१ एवं यजुर्वेद ४०/१६ में हालांकि वेद मन्त्र एक से हैं लेकिन उनके ऋषि एवं देवता भिन्न हैं। अगर उस मन्त्र के मन्त्र द्रष्टा ऋषि जिसने कितनी तपस्या से व कष्ट से प्राप्त करके वह मन्त्र हमें दिया उसका नाम भी नहीं लेंगे, तो हमारे बराबर कृतघ्न कौन होगा। कृतघ्नता सबसे बड़ा पाप है और इतना बड़ा पाप करने वाले यजमान को उस मन्त्र से क्या लाभ मिलेगा? बल्कि इससे वह बड़े भारी पातक का ही भागी होगा। इसको समझाने के लिए हम नीचे एक उदाहरण और देते हैं—

ओ३म् विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते स्वाहा॥

यह मन्त्र ऋग्वेद (१०/१८४/१) में भी है और अथर्ववेद (काण्ड ५/२५/५) में भी है लेकिन ऋग्वेद के मन्त्र द्रष्टा "त्वष्टागर्भकर्ता", 'विष्णु' एवं 'प्रजापति' तीन ऋषि हैं एवं 'देवता" लिंगोक्ता.' (गर्भार्थाशी:) हैं। जो पुरुष के प्रतीक हैं। जबकि अथर्ववेद में इसी मन्त्र के मन्त्रद्रष्टा केवल एक ऋषि ब्रह्मा हैं एवं "योनि:" 'गर्भ:' और पृथिव्य दय' देवता हैं। अथर्ववेद में यह मन्त्र योनि अथवा स्त्री परक है। इस प्रकार एक जैसे ही मन्त्र के दो भिन्न-भिन्न अर्थ, भिन्न स्वतन्त्र सत्ता एवं भिन्न-भिन्न शक्ति हैं। बिजली के नैगेटिव, व पोजीटिव दोनों तार एक से होते हैं, लेकिन जब वे दोनों मिलते हैं, तभी बिजली जलती है। इसी प्रकार दोनों मन्त्रों का 'विनियोग' सहित प्रयोग करने पर ही "पुत्रेष्टियज्ञ" सफल होता है। वेदों में पुनरुक्ति का दोष नहीं है। वेदमन्त्र' रहस्य व विज्ञान से परिपूर्ण हैं। इसलिए वेद अमूल्य रत्नों के भण्डार हैं। वेद ने स्वयं घोषित किया है कि जो व्यक्ति वेद मन्त्रों के रहस्य को जानता है वही इनसे लाभ उठा सकता है, दूसरा नहीं। (प्रमाण ऋग्वेद मण्डल १/१६४/३९)

(६) देव ऋण से उऋण होना—वेद में प्रत्येक मन्त्र का एक देवता है। अगर अलग-अलग देवता नहीं होते केवल एक ही ईश्वर होता तो सभी मन्त्रों में केवल ईश्वर देवता ही लिखा होता। लेकिन ऐसा नहीं है। यजुर्वेद के अध्याय २५/१३ 'ओ३म्य आत्मदा बलदा, विधेम" का देवता परमात्मा है। जबकि यजुर्वेद के २३/३ ("य: प्राणतो निमिषतो ···विधेम") मन्त्र का देवता केवल 'परमेश्वर' है। यजुर्वेद के दो मन्त्र ३६/१७ ('द्यौ शान्ति ·····शान्तिरेधि") का देवता केवल 'ईश्वर' है। साधारण बुद्धि का आदमी भी समझ सकता है कि आखिर 'परमात्मा', 'परमेश्वर' व 'ईश्वर' में वेद मन्त्रों के अनुसार कुछ न कुछ भिन्नता तो होगी ही। अगर हम परमात्मा की जगह परमेश्वर बोल दें या 'ईश्वर' बोल दें तो महान दोष उत्पन्न हो जाएगा और उस मन्त्र से यजमान या प्रयोग करने वाला कोई लाभ नहीं उठा सकेगा पहले राजा अथवा सम्राट वेदों के विद्वानों का बड़ा आदर करते थे एवं उनको राज्याश्रय प्राप्त था। विश्वामित्र ऋषि को दशरथ जी ने अपने प्राणों से प्यारे पुत्र यज्ञ की रक्षा के लिये भेजे थे जबकि वे अपनी फौज के हजार दो हजार सैनिक दे सकते थे। दशरथ महाराज ने तीन-तीन शादियां की लेकिन उनको चार-चार पुत्र वेदमन्त्रों की शक्ति से ही शृंगी ऋषि ने दिये।

(७) विधि विधान—यज्ञ पूरे विधि-विधान से करना चाहिये उसमें कोई त्रुटि, अपराध, अथवा विघ्न नहीं होना चाहिये। वाल्मीकीय रामायण के छठे सर्ग में कण्डिका नम्बर ९ में महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ करने से पहले यह कहा—"विधिहीनस्य यज्ञस्य सद्य: कर्ता विनश्यति। तथा विधिपूर्ण से ऋत्विग् समाप्यते॥५॥ लेखक ने ४० कामना यज्ञों को पूर्ण विधि-विधान, जप व उपांगों सहित 'वैदिक यज्ञानुष्ठान विधि:' नामक पुस्तक में दिया है (जो मैं० मुंशीराम मनोहरलाल बुक सेलर, ४४१६, नई सड़क दिल्ली से उपलब्ध हो सकती है।)

(८) वेद मन्त्र का सन्दर्भ—वेद चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

ऋग्वेद—इसमें मण्डल, सूक्त हैं जिनमें मन्त्र विभाजित हैं।
यजुर्वेद—इसमें अध्याय और सूक्त हैं जिनमें मन्त्र विभाजित हैं।
सामवेद—इसमें पूर्वार्चिक, प्रपाठक, अर्ध प्रपाठक, दशति एवं ऋचाओं में मन्त्र विभाजित हैं।
अथर्ववेद—इसमें मन्त्र, काण्ड, सूक्त एवं मन्त्रों में विभाजित है।

इस प्रकार चारों वेदों में यकसार विभाग नहीं हैं। चारों वेदों में यही भिन्नता है इसलिए किसी मन्त्र का प्रयोग करने से पहले उसका संदर्भ बोलना आवश्यक है। इस मामले को भली प्रकार समझने के लिए हम आचमन मन्त्र का उदाहरण देते हैं। आचमन मन्त्र 'शन्नो देवी रभिष्टये ··' ऋग्वेद में भी है, यजुर्वेद में भी है अथर्ववेद में भी है। लेकिन मन्त्र अलग अलग वेद के अनुसार भिन्न प्रकार के जलों से सम्बन्धित है। समुद्र का जल, कुआ, बावड़ी एवं तालाब का जल, एवं बरसात का जल। ऋग्वेद के मन्त्र को प्रयोग करने से पहले उसका सन्दर्भ ऋग्वेद १०-९-४ बोलना होगा। यजुर्वेद का मन्त्र प्रयोग करने से पहले य० ३६/१२ बोलना होगा एवं अथर्ववेद के मन्त्र का प्रयोग करने से पहले हमको अथर्व० १/६/१ बोलना होगा। अगर हम सन्दर्भ नहीं बोलेंगे तो हमारा उस वेद के मन्त्र से सम्पर्क नहीं हो सकेगा और हमें अपनी कामना पूरा करने के लिए असली सम्बन्धित मन्त्र से सम्पर्क करना आवश्यक है। तीनों ही मन्त्र एक से हैं लेकिन तीनों मन्त्रद्रष्टा ऋषि अलग अलग हैं। ऋग्वेद के मन्त्रद्रष्टा चार ऋषि हैं। यजुर्वेद के मन्त्र के मन्त्रद्रष्टा एक ऋषि है और अथर्ववेद मन्त्र के मन्त्रद्रष्टा दो ऋषि हैं। इसलिए वेद को अथवा वेद के मन्त्रों के प्रयोग में सन्दर्भ एक आवश्यक तथ्य है।

(९) संसार में सबसे श्रेष्ठ कर्म—संसार में सबसे श्रेष्ठ कर्म यज्ञ है। शतपथ ब्राह्मण के ऋषि ने तो यहां तक कहा है 'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म:" यानि संसार में यज्ञ के सिवाय कोई अन्य श्रेष्ठतम कर्म नहीं है। इसलिए वेद मन्त्रों से लाभ उठाने के लिये एवं कामनाओं की पूर्ति करने के लिये यज्ञ करना परम आवश्यक है। पर्यावरण की शुद्धि के साथ-साथ यज्ञ से अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ हैं जिन्हें इस छोटे से लेख में बताना मुश्किल है।

(१०) भुवनस्यनाभि—"अयं यज्ञो विश्वस्य भुवनस्यनाभि" अथर्ववेद ९।१०।१४ में कहा है कि इस विश्व का कोई ओर-छोर नहीं है। हमारी पृथ्वी के चारों ओर सैकड़ों प्रकाश वर्ष दूर करोड़ों सूर्य हैं लेकिन यज्ञ की कितनी महिमा है कि जहां भी यज्ञ की वेदी होगी वह इस विश्व की एवं सम्पूर्ण भुवन की नाभि होगी। यानि यज्ञ वेदी ही केन्द्र बिन्दु है।

(प० १३। ४। १-५६)

एक गाय की सन्तति से ४१०४४० मनुष्यों का पालन : गाय का अर्थशास्त्र और गणित

परमात्मा का बनाया कोई पदार्थ निष्प्रयोजन नहीं होता। अतः प्रत्येक पदार्थ का उपयोग उसी प्रयोजन की सिद्धी के लिए करना उचित और न्याय है। इसके विपरीत अन्याय। किसी पदार्थ का विपरीत प्रयोजन से उपयोग कर उसे नष्ट कर देना घोर अन्याय और पाप हैं। इसी न्याय से गो आदि पशुओं को मारकर खा जाना घोर अन्याय और, कृतघ्नता और महापाप है। जैसे दो और दो चार होते हैं वैसे ही सत्य विद्या से जो विषय जाने जाते हैं वे कभी अन्यथा नहीं हो सकते।

गाय के उपकार

जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती हो, और दूसरी बीस सेर तो प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने में कोई शंका नहीं। इस हिसाब से एक मास में ८। सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम से कम ६ महीने, और दूसरी अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती है, तो दोनों का मध्यभाग प्रत्येक गाय के दूध देने मे बारह महीने होते हैं। इस हिसाब से १२ महीनों का दूध ९९ निन्यानवे मन होता है। इतने दूध को औटा कर प्रति सेर मे एक छटांक चावल और डेढ़ छटांक चीनी डालकर खीर बना खावें, तो प्रत्येक पुरुष के लिए दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है। क्यों कि यह भी एक मध्यभाग की गिनती है, अर्थात् कोई दो सेर दूध की खीर से अधिक खा जाता और कोई न्यून। इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से १९८० एक हजार नव सौ, अस्सी मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय न्यून से न्यून ८ और अधिक से अधिक १८ बार ब्याती है, इसका मध्य भाग तेरह बार आया, तो २५७४० पच्चीस हजार सात सौ, चालीस मनुष्य एक गाय के जन्म भर के दूधमात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं।

इस गाय की एक पीढ़ी में छः बछिया और सात बछड़े हुए। इनमें से एक की मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है, तो भी बारह रहे। उन छः बछियाओं के दूध मात्र से उक्त प्रकार १५४४४० एक लाख, चौवन हजार, चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन हो सकता है। अब रहे छः बैल, उनमें से एक जोड़ी से दोनों साख मे २००S दो सौ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी ६००S छः सौ मन अन्न उत्पन्न कर सकती हैं, और उनके कार्य का मध्यभाग आठ वर्ष है। इस हिसाब से ४८००S चार हजार आठ सौ मन अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म मे तीनो जोड़ी की है। ४८००S इतने (मन) अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन मे गिनें, तो २५६००० दो लाख, छप्पन हजार मनुष्यो का एक बार का भोजन होता है। दूध और अन्न को मिलाकर देखने मे निश्चय है कि ४१०४४० चार लाख, दस हजार, चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब छः गाय की पीढ़ी-परपीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यो का पालन हो सकता है। और इसके मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो ! तुच्छ लाभ के लिए लाखो प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यो नही ?

यद्यपि गाय के दूध से भैंस का दूध कुछ अधिक और बैलों से भैंसा कुछ न्यून लाभ पहुंचाता है, तथापि जितना गाय के दूध और बैलों के उपयोग से मनुष्यो को सुखों का लाभ होता है उतना भैंसियों के दूध और भैंसों से नहीं। क्योकि जितने आरोग्यकारक और बुद्धिवर्द्धक आदि गुण गाय के दूध और बैलों मे होते हैं, उतने भैंस के दूध और भैंसे आदि में नही हो सकते। इसलिए आर्यों ने गाय सर्वोत्तम मानी है।

और ऊटनी का दूध गाय और भैंस के दूध से भी अधिक होता है, तो भी इसका दूध गाय के सदृश नहीं। ऊंट और ऊंटनी के गुण भार उठाकर शीघ्र पहुंचाने के लिए प्रशंसनीय है।

अब एक बकरी कम से कम एक और अधिक से अधिक पांच सेर दूध देती है, इसका मध्य भाग प्रत्येक बकरी से तीन सेर दूध होता है। और न्यून से न्यून तीन महीने और अधिक से अधिक पांच महीने तक दूध देती हैं, तो प्रत्येक बकरी के दूध देने में मध्य भाग चार महीने हुए। वह एक मास में २/S सवा दो मन और चार मास में ९ नौ मन होता है। पूर्वोक्त प्रकारानुसार उस दूध से १८० एक सौ अस्सी मनुष्यों की तृप्ति होती है। और बकरी एक वर्ष में दो बार ब्याती है। इस हिसाब से एक वर्ष में एक बकरी के दूध के एक बार भोजन से ३६० तीन सौ साठ मनुष्यों की तृप्ति होती कोई बकरी न्यून से न्यून चार वर्ष और कोई अधिक से अधिक ८ वर्ष तक ब्याती है, इसका मध्य भाग ६ वर्ष हुआ, तो जन्म भर के दूध से २१६० दो हजार, एक सौ, साठ मनुष्यों का एक बार के भोजन से पालन होता है।

अब उसके बच्चा-बच्ची मध्य भाग से २४ चौबीस हुए, क्योंकि न्यून से न्यून एक और कोई अधिक से अधिक तीन बच्चों से ब्याती है। उनमें से दो का अल्प मृत्यु समझो, रहे २२ बाईस उनमें से १२ बकरियों के दूध से २५९२० पच्चीस हजार नव सौ बीस मनुष्यों का एक दिन पालन होता है। उसकी पीढ़ी परपीढ़ी के हिसाब लगाने से असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और बकरे भी बोझ उठाने आदि प्रयोजनों में आते हैं, और बकरा-बकरी और भेड़ भेड़ी के ऊन के वस्त्रों से मनुष्यों को बड़े-बड़े सुख लाभ होते हैं। यद्यपि भेड़ी का दूध बकरी के दूध से कुछ कम होता है, तथापि बकरी के दूध से उसके दूध मे बल और घृत अधिक होता है। इसी प्रकार अन्य दूध देने वाले पशुओं के दूध से भी अनेक प्रकार के सुख लाभ होते हैं।

जैसे ऊंट-ऊंटनी से लाभ होते हैं, वैसे ही घोड़ा-घोड़ी और हाथी आदि से अधिक कार्य सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार सुअर, कुत्ता, मुर्गा-मुर्गी और मोर आदि पक्षियों से भी अनेक उपकार होते हैं। जो पुरुष हरिण और सिंह आदि पशु और मोर आदि पक्षियो से भी उपकार लेना चाहें तो ले सकते हैं, परन्तु सबका पालन उत्तरोत्तर समयानुकूल होवेगा। वर्तमान में परमोपकारक गौ की रक्षा में मुख्य तात्पर्य है। दो ही प्रकार से मनुष्य आदि की प्राणरक्षा, जीवन, सुख, विद्या, बल और पुरुषार्थ आदि की वृद्धि होती है—एक अन्नपान, दूसरा आच्छादन इनमे से प्रथम के बिना मनुष्यादि का सर्वथा प्रलय और दूसरे के बिना अनेक प्रकार की पीड़ा होती है।

देखिये, जो पशु निःसार घास तृण पत्ते फल-फूल आदि खावें और सार दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवें, हल गाड़ी मे चल के अनेकविध अन्न आदि उत्पन्न कर सबके बुद्धि बल पराक्रम को बढ़ा के नीरोगता करें, पुत्र-पुत्री और मित्र आदि के समान पुरुषो के साथ विश्वास और प्रेम करें, जहां बांधें वहां बन्धे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहां से हटावें वहां से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारने वाले को देखें, अपनी रक्षा के लिए पालन करने वाले के समीप दौड़कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा।

जिसके मरे पर चमड़ा भी कंटक आदि से रक्षा करे, जंगल में चर के अपने बच्चे और स्वामी के लिए दूध देने को नियत स्थान पर नियत समय चले आवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन, मन लगावें जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्यों के सुख के लिए है, इत्यादि शुभ गुणयुक्त सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो (मनुष्य) अपना पेट भर सब संसार की हानि करते है, क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी, दुःख देने वाले और पापी जन होंगे ?

इसीलिए यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि—(अघ्न्या यजमानस्य पशून् पाहि) हे पुरुष ! तू इन पशुओं को कभी मत मार, और यजमान अर्थात् सबके सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्वामी दयानन्द एवं साम्यवाद

रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी, नेपाल

ऋषि राज तेज तेरा चहु ओर छा रहा है।
तेरे बताए पथ पर संसार जा रहा है॥

उपरोक्त पंक्तियों से ऋषि दयानन्द द्वारा मण्डित वैदिक सनातन धर्म की व्यापकता एवं लोगों के उसके अनुगमन पर प्रकाश पड़ता है। लेकिन अभी भी आशातीत रूप में सफलता हासिल नहीं हो सकी है। स्वामी जी का वैदिक धर्म के प्रति अटूट विश्वास, निष्ठा एवं धर्मानुचरण अनुकरणीय था। वैदिक धर्म के अनुशीलन एवं अनुकरण से ही मानव मात्र का कल्याण सम्भव है। स्वामी जी ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों एवं वेद की शिक्षाओं तथा आर्य संस्कृति पर पड़ रहे विजातियों के प्रभावों को बहुत ही नजदीक से समझा, परखा एवं आत्मसात् किया था। यही कारण है कि उनकी शिक्षाएं आए दिन की अग्नि परीक्षाओं में कुन्दन-सी दमकती रही। उनके सत्य सन्देशों ने विधर्मियों का हृदय विदिर्ण कर दिया। उनके कटु सत्य से ढोल ढकोसला वाले लोग विचलित हो उठे। यद्यपि उनकी शिक्षाएं मानव मात्र के लिए थी किसी सम्प्रदाय या धर्म विशेष के लिए नहीं थी।

जहां स्वामी जी के सत्यज्ञान गंगा मे बहुत लोगों ने अवगाहन किया और अपनी जीवन धारा को ही बदल डाला वहीं कुछ ऐसे नासमझ लोग भी थे जिन लोगों ने स्वामीजी को न समझा और न वेद की शिक्षा को। फलस्वरूप लोग वेद से अलग हो गये। सद्-ज्ञान से वंचित रह गए। जो चीज उनके ज्ञान की श्रोत थी उसी चीज से विरक्ति हो गई। जों उनके लिए अमृत लाया था वहीं उनको कुपथगामी दिखने लगा। कवि ने कहा:—

"पिलाया जहर का प्याला इन्हीं नादान लोगों ने
जिनके लिए अमृत का प्याला ले के आये थे।"

इसका दुष्परिणाम यह निकला, जिसे लोगों ने ज्ञान समझ रखा था वह अज्ञान साबित हुआ। जिस नींव पर अपना ज्ञान का महल खड़ा किया था वह महल ही धाराशायी हो गया। भौतिक जगत की चमक दमक मन को चैन एवं शान्ति प्रदान नहीं कर सकी। आज न चैन धनवानको है, न बलवान को है और न रूपवान को। बेटा वाले अलग दुखी हैं, निर्धन अलग। वेद विहित मार्ग पर नहीं चलने से चैन किसी को नही है और न था। अगर कहीं सुख दिखाई भी दिया तो वह क्षणिक था।

हर युग और समय की अपनी समस्याएं होती हैं। राम के सामने समस्या थी रावण पर विजय, कृष्ण के सामने पाण्डव को राज्य प्राप्त कराना। स्वामी जी के सामने कुछ और ही समस्या थी स्वामी जी के सामसे एक रावण, एक कौरव कुल नहीं, हजारों रावण एवं हजारों कौरव कुलथे। उनकी समस्याथी वेदोंका प्रचार, छुआछूत का अन्त, ढोंग पाखण्ड का खण्डन एवं स्वराज्य प्राप्ति। लोगों में व्याप्त अनास्था को आस्था में बदलना कोई सरल काम नहीं था, समुद्र मन्थन से भीकठिन काम था। जिसके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व होम किया वहीं उन्हें दुश्मन समझते थे।

प्राच्य संस्कृति के धर्म, अर्थ, काम एव मोक्ष के महत्व एवं गहनता से अनभिज्ञ कुछ पाश्चात्य विचारकों ने अर्थ को ही जीवन के सत्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। मानव जीवन का चरम लक्ष्य अर्थ प्राप्ति ही माना जाने लगा। आर्थिक समानता के नाम पर नये ढंग से शोषण का सूत्रपात हुआ। साम्यवाद की शिक्षा कहती है कि पूंजीवादी समाज में पूंजीपतियों द्वारा मजदूरों का शोषण होता है। लेकिन उनकी व्यवस्था सर्वहारा वर्ग की अधिनायकवाद में बहुसंख्यक द्वारा अल्पसंख्यक का शोषण होता है। इस चीज को नजर अन्दाज कर दिया गया। साम्यवादी समानता मात्र आर्थिक समानता तक ही सीमित लगती है। साथ ही मानवीय जीवन के अन्य आदर्श अछूते लगते हैं।

वेदों के समानता का सिद्धान्त अपने आप में निराला है। सभी मानवों के लिए वेदों के ज्ञान ग्रहण की समानता उत्कृष्टतम व्यवस्था का प्रतीक है। साथ ही धनोपार्जन के लिये संयमित प्रयास की आवश्यकता, साधन की पवित्रता एवं साध्य की उत्कृष्टता सम्बन्धी वैदिक सन्देश व्यवस्था वह व्यवस्था है जिसमे गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक के मानवीय व्यवहार को व्यवस्थित करने का प्रावधान है। आचार शुद्धि के बाद ही आर्थिक समानता का वास्तविक लक्ष्य प्राप्त कर सकना सम्भव है।

स्वामी जी के आदर्शों एव पवित्र निर्देशों के अनुरूप अगर चला जाय तो निस्सन्देह बसुधैव कुटुम्बकम् हो सकता है। लेकिन आज भौतिकवादी चकाचौंध में भूलकर मानव ने अपना स्वरूप ही खो दिया है। आये दिन हो रहे युद्धों, सोवियत रूस में हुए व्यवस्था परिवर्तन निःसन्देह आधुनिक युग में मानव सुख प्राप्ति के लिए हो रहे प्रयास की असफलता की कहानी है। काश आज का मानव पुनः एक बार ऋषि के त्याग एवं तपस्या के महत्व को समझ पाता। जिन मूल्यों के लिए उन्होंने अपना बलिदान किया उन मूल्यों को मानव अपने जीवन का आदर्श बना पाता तो महर्षि का परिश्रम बहुत अंश में सार्थक होता।

सुख चैन चाहते हो तो वेद को देखो।
आनन्द चाहते हो तो दयानन्द को देखो॥

योग नवयुग की संजीवनी-४

डा० एस. के. भटनागर हैल्थ होम शकरपुर, दिल्ली

योगासन का समय खुले बाग, मैदान, नदी किनारे, ब्रह्ममुहूर्त में कहा गया है। उस समय वातावरण से ओजोन (०३) उपस्थित रहने पर रक्त शुद्धि अच्छी होती है। जब तक जनसाधारण सोये पड़े होते हैं, तब तक योगाभ्यासी जागकर सब कुछ समाप्त कर चुका होता है। उसे समयाभाव नहीं खटकता। अतः वह अपेक्षाकृत अधिक कार्य कर पाता है। योगासन तेजस्वी, बलिष्ठ, सच्चरित्र, श्रद्धासम्पन्न, आत्मनिर्भर व कर्मयोगी बनाते हैं। योगिकासन प्रभावकारी मालिश का कार्य करके अंगों एवं ग्रन्थियों में आक्सीजन युक्त नवीन रक्त का संचार करते है। इस प्रकार टूटे-फूटे क्रियाहीन अंगों में शक्ति का संचार होकर वे पुनः क्रियाशील होने के लिए पुनर्जीवित हो जाते हैं। मयूरासन से जलोदर, उदरवात, गुल्म, वात पित्त कफ के विकार दूर होते हैं। तिल्ली (Spleen) जिगर (Liver) की अनुचित वृद्धि रुक जाती है। विशेष रूप से गुर्दे की कार्यशक्ति बढ़ती है। शरीर में रक्त संचार ठीक-ठीक होने से तेज व लावण्यता आती है।

गैस रोग में वज्रासन, पवनमुक्त, पश्चिमतान, कपालभाति प्राणायाम, पुरानी कब्ज में, मकर, मत्स्य, तानासन, नाड़ीशोधन प्राणायाम व उष:पान, मोटापे में, भुजंग, धनु, पश्चिमतानासन, बाह्यकुम्भक, कपालभाति मधुमेह में, अर्धमत्स्येन्द्र, पश्चिमतान, सुप्तवज्र, जानुसार, नाड़ीशोधन प्राणायाम, कुंजल व शंखप्रक्षालन।

दमे में शलभ, भुजंग, कोणास उष्ट्र, मत्स्य, नाड़ीशोधन, उज्जयी, जोड़ों के दर्द में पवन, अर्धपद्म, सर्वांग, पश्चिमतान, भस्त्रिका, उज्जयी रक्तचाप में शिथिल, शव, पद्मासन, भ्रामरी व उज्जयी प्राणायाम आदि-आदि अन्तः स्रावी ग्रन्थियों (आमाशय पोषणिका ग्रन्थि, अधिवृक्क, ग्रन्थि) आदि के स्रावों में संतुलन पैदा करते हैं। योग बीमारी का इलाज, ठीक एवं अशान्त मन को शान्ति, अनिद्रा के रोगियों को सुख भरी नींद, कुरूप को रूप, दुर्बल को बल जिज्ञासु को ज्ञान मनोवैज्ञानिक संतुलन आदि प्रदान करता है। यही कारण है कि योग के जिज्ञासुओं की संख्या दिन-प्रतिदिन प्रातःकाल पार्कों में बढ़ती जा रही है और उसे जीवन की संजीवनी समझकर लोगों को वास्तविकता अभिरुचित हो रही है। अब लोग समझने लगे हैं कि सर्वोत्तम सम्पदा योग है।

प्राणायाम (श्वासप्रश्वासप्रक्रिया) द्वारा मन को शक्ति दी जाती है वे शरीर के आन्तरिक पक्ष पर विशेष बल देते हैं।

प्राणायाम के बाद मन की शुद्ध साधना शुरू होती है। प्रत्याहार द्वारा इन्द्रियों को विषयों से लौटाया जाता है। फलस्वरूप आत्मा का विकास प्रारम्भ होता है।

धारणा में भौतिकवाद से ऊपर उठकर चिन्तन की स्थिति आती है। निराकार, साकार पर केन्द्रिकरण (Concentration) किया जाता है तब मन ध्यान में लग जाता है। ध्यानावस्था में अल्फा तरगें उत्पन्न होती है। निष्ठापूर्वक नियम से अधिक देर ध्यान करने पर सूक्ष्म मन भी प्रभावित होता है। अतः तनाव व रोग भाग जाते हैं। ध्यानावस्था में चंचलमन के एकाग्रचित होने पर एकाग्रता की उच्चतम सीमा का प्राप्त किया जा सकता है। इस स्थिति में अन्तर्ज्ञान की प्राप्ति, मानसिक शांति सन्तुलन व बहुमुखी प्रतिभा का प्रस्फुटन, बौद्धिक विकास, सम्पूर्ण समस्यों का हल, चिन्ताओं व तनाव से मुक्ति आनन्दमय जीवन, मन पर पूर्ण अधिकार व ज्ञान की प्राप्ति के बाद समाधि की प्राप्ति होती है। स्पष्ट है कि चंचलता समाप्त होने पर ही समाधि की अवस्था में आत्मा परमात्मा का योग होता है। योग साधना के बिना मनुष्य अपूर्ण है। योग से मन का रूपान्तरण, कई तरह से मानसिक विकास, नयी आशा सम्भव है।

महात्माओं, ऋषियों, मुनियों का मार्ग योग का है। किन्तु यह धारणा कि आजकल लोग योगाभ्यास करने योग्य नहीं हैं बिल्कुल निराधार है। योगाभ्यास के करने के लिये घरबार, संसार को त्यागने की आवश्यकता नहीं। सभी अभ्यास ऐसे हैं जो सीखे जा सकते हैं। योग द्वारा मानव को आध्यात्मिक, सांसारिक तथा शारीरिक, सभी प्रकार की सफलतायें एक साथ एक मार्ग पर चलकर प्राप्त हो सकती हैं। आज सारे विश्व के लोग ऐसे मार्ग की खोज मे भटक रहे हैं, जिस पर चलकर वास्तविक शान्ति मिले। हर वर्ग, जाति, स्थिति का व्यक्ति योग द्वारा अपना समाज, देश और विश्व का कल्याण कर सकता है। संयम, शक्ति संकल्प साहस मनोबल एवं आत्म विश्वास मनुष्य को सम्पूर्ण मानव बनाते है, जो केवल योग द्वारा ही सम्भव है।

हमारा देश सन् २००० तक सभी के लिये स्वास्थ्य का संकल्प लिए हुए है। इस महानलक्ष्य की प्राप्तिभी योग द्वारा हीसम्भव है। अतः यह आवश्यक है कि योगका शिक्षा मे समन्वय व समाजमें विस्तार किया जाए। अब दुखों में संतप्त मानव को कस्तूरीमृग की भांति इधर उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है। उसके रोग, शोक, मोह और हर प्रकार के दुःखों के निवारण का अमृतमय मधुर एवं शीतल स्रोत-संजीवनी सुधा योग है। तभी तो कहा है—

"भवतापेन तप्तानां योगः परमौषधम्"

यदि हम हृदय से युग परिवर्तन चाहते हैं तब हमें उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर योग को नवयुग की संजीवनी समझकर आगे बढ़ना होगा। एवमस्तु।

नोट—व्यक्तिगत सम्पर्क हेतु निम्न पते पर मिलें।

निदेशक, हैल्थहोम
[२ दयानन्द ब्लाक शकरपुर
दिल्ली-९२]

गाय का अर्थशास्त्र और गणित

(पृष्ठ ९ का शेष)

रक्षा कर जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे। और इसीलिए ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा मे पाप और अधर्म समझते थे, और अब भी समझते हैं। और इनकी रक्षा में अन्न भी महगा नहीं होता, क्योंकि दूध आदि के अधिक होने से दरिद्री को भी खान-पान में मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है, और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है। मल के न्यून होने से दुर्गन्ध भी न्यून होता है, दुर्गन्ध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टिजल की शुद्धि भी विशेष होती है. उससे रोगों की न्यूनता होने से सबको सुख बढ़ता है।

इससे यह ठीक है कि गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है, क्यों कि जब पशु न्यून होते हैं, तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो! इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु ७०० सात सौ वर्ष के पूर्व मिलते थे, उतना दूध, घी और बैल आदि पशु इस समय दस गुने मूल्य में भी नहीं मिल सकते। क्योंकि ७०० सात सौ वर्ष के पीछे इस देश में गवादि पशुओं को मारने वाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं। वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़मांस तक भी नहीं छोड़ते, तो 'नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्' जब कारण का नाश कर दे, तो कार्य नष्ट क्यों न हो जावे? हे मांसाहारियो! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं? हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या उनके लिए तेरी न्याय सभा बन्द हो गयी है? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता? क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता? जिससे ये इन बुरे कामों से बचें।

पुस्तक समीक्षा

प्रगतिशील भारतीयता को वेदों की देन

लेखक—डा० फतह सिंह एम. ए., डी लिट्
प्रकाशक—वेद संस्थान, सी-२२ राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७
पृष्ठ संख्या— ५२ प्राक्टेव साइज
मूल्य—बारह रुपये

महर्षि दयानन्द के १६८वें जन्म दिन १७ सितम्बर १९९१ पर प्रकाशित यह पुस्तिका इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि राष्ट्र की जो परिभाषा या कल्पना आज के समाजशास्त्री या राजनीति विज्ञान के पंडित करते हैं, वह पाश्चात्य जगत में १७ वीं शताब्दी की प्रौद्योगिक क्रान्ति से प्रसूत अर्थनीति एवं स्थूल रूप से भौगोलिक सीमाओं, भाषागत भेदों एवं संस्कृति अन्य विषमताओं के विकास से प्रादुर्भूत है। सम्वाद शैली में लिखित डा० फतह सिंह की यह पुष्ट रचना उनकी बहुआयामी विद्वता को जहां उजागर करती है, वहां अनेक स्थापनाओं की सम्पुष्टि भी सप्रमाण निष्पादित करती है। वेद, पुराण, इतिहास से लगाकर पुरातत्व की खोजों को शामिल करके वेद और उपनिषद तथा कर्मकाण्ड के दार्शनिक स्वरूप की गोटी इसमें बैठाने की युक्तिसंगत चेष्टा भी सजगता से की गई है। अनेक स्थलों पर मुसलमानों और ईसाइयों के धर्म ग्रन्थों की युक्तिसंगतता दिखाकर व्यक्ति के आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्यों पर रचना में जोर दिया गया है। इस पुस्तिका में मुसलमान पात्र जहूर और ईसाई पात्र जान के हिन्दू धर्मगुरु के साथ हिन्दुस्तानियत पर हुए सम्वाद में हिन्दुत्व की श्रेष्ठता को बोलचाल की भाषा में सप्रमाण सिद्ध कर सच्चे मानव धर्म का स्वरूप दर्शाया गया है। यहां एक आपत्ति यह हो सकती है कि यदि इस देश की भाषा, मजहब और कौम मुल्क के नाम पर रखे गये हैं तो इस हिन्दू संस्कृति व धर्म को दैशिक यानि सीमित एवं परिवर्तनशील भौगोलिक सीमा से आबद्ध मानना होगा। उसे सार्वभौम और विश्वजनीन कहना-मानना युक्तिसंगत नहीं ठहरेगा।

पुस्तक के नाम से स्पष्ट है कि लेखक ने भारतीयता अथवा मानव धर्म की जड़ वेदों में खोजी और प्रतिष्ठापित की है और उसी के आधार पर वैश्वानर अथवा विश्वमानव की संस्कृति को पल्लवित किया है।

लेखक व प्रकाशक पुस्तक के सौष्ठव-सज्जा के लिये धन्यवाद के पात्र हैं। मुद्रण की छोटी भूलें अगले संस्करण में दूर होंगी, ऐसी आशा है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
सी-४ बी/३३२ बी, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—विगत १०, ११ एवं १२ अप्रिल शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार को तदनुसार शुक्ल अष्टमी नवमी एवं दशमी १९९२ को आर्य समाज मच्छी का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस शुभावसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प. सत्यव्रत वानप्रस्थी, श्री प. नवलकिशोर शास्त्री, प्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती धर्मशीला आर्या एवं ठाकुर श्री महावीरसिंह जी पधारे थे। इस धार्मिक प्रचार का समाज में व्यापक प्रभाव पड़ा।

—रामदेव यादव मन्त्री

—दिनांक १ अप्रैल से लेकर ३ अप्रैल तक अर्थात् ३ दिवसीय वार्षिकोत्सव आर्य समाज मठगुलनी का सम्पन्न हुआ, ३ अप्रैल को बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय भुपनारायण शास्त्री एवं सभा मन्त्री श्री योगेन्द्र जी भी उपस्थित थे। उनके क्रान्तिकारी एवं ओजस्वी भाषण का प्रभाव जनता पर अच्छा पड़ा। जिन्होंने अपने भाषण में उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि मठगुलनी मेरी कर्मभूमि है, यहीं से मैंने क्रान्तिकारी कार्यक्रम सबसे पहले शुरू किया था।

—जयप्रकाश आर्य प्रधान
आर्य समाज मठगुलनी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में

हिमालय की सुरम्य घाटियों के बीच, प्रकृति की गोद में, मालिनी नदी के तट पर
स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में

विशाल युवक निर्माण शिविर व योग साधना शिविर

१३ से २१ जून ९२ तक गुरुकुल कण्वाश्रम कोटद्वार पौड़ी गढ़वाल में आर्य युवकों के लिए जीवन निर्माण का स्वर्ण अवसर

अनुशासित जीवन, भारतीय संस्कृति व वैदिक संस्कृति की जानकारी, योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, स्तूप कराटे, बाक्सिंग, फ्री स्टाईल कुश्ती, पर्वतारोहण, वन भ्रमण, तैराकी आदि का शिक्षण तथा जंगल के रमणीक वातावरण में नदी के तट पर एक रोमांचकारी शिविर। प्रवेश शुल्क ६० रुपये तथा साधकों हेतु १०० रुपये इच्छुक नवयुवक व योगसाधक शिविर प्रवेश पत्र व नियमों की जानकारी हेतु निम्न पते पर शीघ्र सम्पर्क करें : शिविर में जाने आने हेतु बस की व्यवस्था है।

१—महामन्त्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, क्रान्ति भवन, आर्य समाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-७
२—आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ फोन : ३४३७१८, ३१२११०
३—श्री धर्मपाल आर्य, डी०ए०वी० फार्मेसी चित्र गुप्त रोड, पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५ फोन : ७३४६१४
४—श्री सत्यभूषण आर्य, ५१ सैक्टर, १६, फरीदाबाद फोन : ८२८८८८२

उद्घाटन समारोह शनिवार १३ जून १९९२, प्रातः १०-३० बजे
अध्यक्षता—प्रि० वाई०पी० वर्मा विशिष्ट, अतिथि—प्रि० शमा शर्मा एवं प्रि० एस०एल० गुप्ता
समापन समारोह रविवार २१ जून १९९२, प्रातः १० बजे से १२-३० बजे तक

सान्निध्य : प्रि० ज्ञान प्रकाश चोपड़ा (प्रधान डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्री समिति)
मुख्य अतिथि : श्री रामनाथ सहगल (मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली)

विशेष आकर्षण आर्य युवकों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन का भव्य कार्यक्रम रहेगा।

—: निवेदक :—

अनिल आर्य	चन्द्रमोहन आर्य	ब्र० विश्वपाल जयन्त	अजय सहगल	विजयभूषण आर्य
अध्यक्ष	महामन्त्री	संस्थापक गुरुकुल	कार्यकर्त्ता अध्यक्ष	वरि० उपाध्यक्ष
७३४१६०४, ७२१२५३१	५१९२४७		६१५११५	७१८९३१३

मुख्य कार्यालय : क्रान्ति भवन, आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-११०००७
उप कार्यालय : आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार १९९२

यह पुरस्कार मरुकत निवासी श्री मेघ जी भाई नैबसी की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कनकसिंह मेघ जी भाई के आर्थिक सहयोग से प्रारम्भ किया गया था। पुरस्कार वितरण समारोह ५ जुलाई १९९२ को मनाया जाएगा। आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ उक्त पुरस्कार के लिए प्रविष्टियां आमन्त्रित करता है।

उद्देश्य—

आर्य साहित्य के लेखकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस पुरस्कार का प्रारम्भ किया गया है वेद वेदांगों के अतिरिक्त जीवन-पर्यन्त आर्य साहित्य के माध्यम से सेवा करने वाले लेखक को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

पुरस्कार—

पुरस्कार प्राप्त लेखक को ११०००/- की राशि रजत ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जाएगा।

नियम—(१) जिस आर्य विद्वान ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्य समाज की अधिकतम सेवा की हो।

(२) प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्य समाज के दर्शन इतिहास, सिद्धांत अथवा आर्य महापुरुषों के जीवन आदि से है इस पुरस्कार की सीमा में आने जायेंगे।

(३) ग्रन्थ लेखक को अपनी समस्त रचनाओं की दो-दो प्रतियां आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) बम्बई को भेजनी होगी। एक बार ग्रन्थ प्राप्त होने के पश्चात पुन अगले वर्ष भेजने की आवश्यकता नहीं होगी।

(४) सर्वोत्तम ग्रन्थ का चयन एक समिति करेगी जिसका निर्वाचन आर्य समाज सान्ताक्रुज करेगा। आर्य समाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा का निर्णय अन्तिम निर्णय माना जाएगा।

(५) इस पुरस्कार हेतु लेखक अपने ग्रन्थों की दो प्रतियां संयोजक--आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई ५४ को भेजने की कृपा करें।

—कैप्टन देवरत्न आर्य
संयोजक–पुरस्कार समिति

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्य कुमार सभा मुड़ागांव का वार्षिक उत्सव ९-४-९२ को क्षेत्रीय उपदेशक श्री धनसिंह आर्य के पौरोहित्य में बृहद यज्ञ द्वारा सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम का व्यय आर्य कुमार सभा के उपप्रधान ने अपनी ओर से की थी इस अवसर पर आर्य समाज रामनाथपुर के प्रधान मन्त्री एवं सदस्य गण और आर्य समाज मुड़ागांव के सभा प्रधान श्री बाबनचरण जी वानप्रस्थी श्री सच्चिदानन्द जी उपस्थित थे आर्य कुमार सभा के सभी सदस्य एवं समस्त पदाधिकारी व समस्त ग्रामीण श्रोता वृन्द भी बहुत अधिक संख्या में उपस्थित थे।

—बसन्त कुमार आर्य मन्त्री
आर्य कुमार सभा, मुड़ागांव

—आर्य समाज राज चैनपुर जिला पलामू बिहार का ३३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १-४-९२ से ३-४-९२ तक चैनपुर बाजार के प्रांगण में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्नलिखित विद्वान एवं भजनोपदेशक पधारे। श्री प० सत्यदेव जी वाराणसी, ठा० कवि इन्द्रदेवसिंह इन्द्र छपरा, प० ज्ञानप्रकाश शर्मा मुरादाबाद उ०प्र०, श्रीमती धर्मशीला जी भजनोपदेशक मुजफ्फरपुर बिहार, श्री महावीर प्रसाद तार्किक चलथा हजारीबाग, श्री वीरसिंह आर्य सोन नगर बिहार, श्री रामनारायण शास्त्री पश्चिमी चम्पारण बिहार।

—हजारीप्रसाद आर्य प्रधान
आर्य समाज राज चैनपुर पलामू बिहार

आर्य वीरांगना दल का शिविर समापन समारोह ७ जून को

आर्य वीर दल (दिल्ली प्रदेश) के तत्वावधान में आर्य समाज तिलक नगर मे ३१ मई से चलने वाले शिविर का समापन समारोह आर्य समाज तिलक नगर मे ही ७ जून को प्रात साढ़ सात बजे से यज्ञ सत्संग के पश्चात स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे प्रारम्भ होगा। शिविर में लगभग ८० युवतियो को नित्य-प्रति चारित्रिक एव शारीरिक विकास प्रशिक्षण दिया जा रहा है। समापन समारोह मे एक सप्ताह के अल्प समय में युवतियों द्वारा सीखे गये आसन, लाठी, जूडो, तलवार और छुरी आदि का प्रदर्शन किया जायेगा। अन्य उपस्थित विदुषी महिलाओ के विचार भी आपको सुनने को मिलेंगे। सभी से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में उपस्थित हो इस अवसर की शोभा बढायें।

—प० वेदपाल शास्त्री
प्रेस सचिव आर्य वीर दल

धार्मिक वैदिक सत्संग

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के तत्वावधान मे देहातो मे यज्ञ भजन एव प्रवचनो का धार्मिक वैदिक सत्संग का आयोजन २१ मई से ७ जून तक किया गया है। इस अवसर पर हरियाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ईश्वर सिंह तूफान तथा श्री भजनलाल पधार रहे हैं। इस आयोजन के अन्तर्गत ग्राम बसई, धनकोट बेडकी, धनवापुर, धर्मपुर दौलताबाद काजीपुर तथा झाड़सा मे वैदिक धर्म का प्रचार किया जायेगा। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात काल यज्ञ तथा भजन होगे एव रात्रि मे भजनोपदेश का कार्यक्रम रखा गया है। —ओमप्रकाश खुटानी, महामन्त्री

पुस्तक समीक्षा

(पृष्ठ ११ का शेष)

कवि लेखक ने माण्डवी को इतिहास के पृष्ठों पर एक श्रेष्ठ स्तर-प्रदान किया है। "माण्डवी" रचना कर यशस्वी सीता उर्मिला यशोधरा की पंक्ति मे बैठाकर स्तुत्य कार्य किया है।

लेखक धन्य है जिन्होने इस कृति की रचना करके एक छिपी नारी को उचित सम्मान दिया है। लेखक बधाई के पात्र है लेकिन पाठक गण "माण्डवी" पढ़े और समझें तो लेखक का प्रयास स्तुत्य करे। —सम्पादक

वैदिक धर्म स्वीकार किया

१४.५.९२ आर्यसमाज बिरला लाईन्स मे आज क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों तथा श्री अनवर अहमद व अनुभ्राता राशिद की उपस्थिति में २३ वर्षीय नवयुवक 'मोहम्मद असलम' ने वैदिक धर्म स्वीकार किया उनका नया नाम जीवन लाल रखा गया। इस अवसर पर उन्हे यज्ञोपवीत धारण कराया गया तथा देवयज्ञ के उपरान्त श्री जीवनलाल का स्वागत करते हुए वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

— आर्य बन्धु जयप्रकाश
प्रधान, आ स, बिरला लाईन
कमला नगर दिल्ली-७

नवीन आर्य समाज की स्थापना

दि० १६ मई ९२ को आर्य उप प्रतिनिधि सभा पीलीभीत के तत्वावधान मे, ग्राम खकैनिया रमपुरा मे पूर्ण हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज की स्थापना हुई। जिसमे गांव के सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अखिल भारतीय आर्य सभा के पुरोहित श्री इन्द्रदेव जी 'यति' ने डेढ़ दर्जन युवाओ को यज्ञोपवीत धारण कराकर वैदिक ऋचाओं से यज्ञ सम्पन्न कराया। युवाओ ने सत्य वैदिक धर्म मे निष्ठा व्यक्त करते हुए आर्य समाज के नियमानुसार आचरण का संकल्प लिया। भजन, प्रवचनो के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—मोहन लाल आर्य
मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का

विशाल राष्ट्रीय शिविर

दिनांक ७ जून से २१ जून १९९२ तक

स्थान : महाशय चुन्नीलाल सरस्वती

बाल मन्दिर, हरि नगर, नई दिल्ली-६४

उद्घाटन समारोह

शिविर का उद्घाटन ७ जून रविवार को साय ५ बजे विश्व प्रसिद्ध पहलवान पद्मश्री गुरु हनुमान जी के करकमलो द्वारा सम्पन्न होगा।

समापन समारोह

दो सप्ताह तक चलने वाले इस अभूतपूर्व शिविर मे लगभग ७०० आर्य वीर सारे भारतवर्ष से भाग लेगे। सभी आर्य बन्धुओ से अनुरोध है कि २१ जून का प्रात: ९ बजे पूर्ण दल बल के साथ शिविर के समापन समारोह मे उपस्थित हो एव आर्य समाज की भावी पीढी के निर्माण मे अमूल्य सहयोग दें।

नियम व निर्देश

१—शिविरार्थियो को शिविर मे कठोर अनुशासन से रहना होगा, बाहर जाने की आज्ञा नही होगी।

२—भोजन व आवास का प्रबन्ध आर्य वीर दल द्वारा होगा।

३—न्यूनतम १४ वर्ष या नवी कक्षा से ऊपर के ही योग्यता के युवक शिविर मे भाग ले सकेगे।

४—शिक्षणार्थी ऋतु अनुकूल बिस्तर, थाली, कटोरी, गिलास, लोटा या मग वेशभूषा सफेद कमीज, खाकी निक्कर, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जुराब खाकी फलीट, लगोट, काला कच्छा, कान तक की लाठी, टार्च, कापी-पेन साथ लेकर आयें। यज्ञ हेतु कुर्ता-पाजामा भी लाने का प्रयास करें।

५—शिविरार्थी ६ जून साय ७ बजे शिविर स्थल पर पहुच जायें।

६—उत्तीर्ण शिविरार्थियो को सुन्दर प्रमाण-पत्र भी दिये जायेगे।

७—युवको के लिए ५० रुपये प्रति युवक शिविर शुल्क रहेगा।

नि:शुल्क संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला रोहतक मे नि.शुल्क संस्कृत प्रशिक्षण शिविर का १९ से २८ जून तक आयोजन किया गया है। शिविर मे संस्कृत मे वार्तालाप करना एव संस्कृत अध्ययन की सरल विधिया समझाने के साथ साथ मन्त्र श्लोको का शुद्ध उच्चारण और संस्कारो का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। शिविर मे प्रतिदिन प्रात: ४-३० से ५-३० तक आसनादि प्रशिक्षण, ६ से ८ बजे तक चतुर्वेद शतक मे विशेष यज्ञ, ९ से १२ बजे तक संस्कार प्रशिक्षण मन्त्र श्लोक उच्चारण अभ्यास तथा ३ बजे से ५ बजे तक संस्कृत अध्ययन की सरल विधिया तथा वार्तालाप करना सिखाया जायेगा। सायकाल ५ से ७ तक भजन प्रवचन तथा सामूहिक व्यायाम।

इस अवसर पर अनेको उच्चकोटि के वक्ता तथा विद्वान पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर लाभ उठायें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार-१९९२

वैदिक धर्म, वैदिक साहित्य एव आर्य समाज के प्रति समर्पित भाव से की गई श्लाघनीय सेवाओ के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास, आर्य समाज फुलेरा, जिला-जयपुर राजस्थान की ओर से दस हजार (१०,०००) रुपये नकद, उत्तरीय, प्रशस्ति-पत्र तथा अभिनन्दन-पत्र महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार स्वरूप प्रति वर्ष ऋषि निर्वाण दिवस पर प्रदान किया जाता है। सन् १९९२ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिए कोई भी आर्य विद्वान स्वय अपना या अन्य आर्य विद्वान का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियो सहित दि० ३१-७-१९९२ तक प्रस्तुत कर सकता है।

—भवर लाल शर्मा, प्रधान

—मह ... गुरुकुल ऐरवा कटरा ... ९ जून से प्रारम्भ हो चुका है। वि... दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य परीक्षाए दिलाई जाती हैं। इस विद्यालय में संस्कृत व्याकरण, वेद दर्शन साहित्य के अलावा हिन्दी गणित भूगोल इतिहास अंग्रेजी आदि सभी विषयो के पठन-पाठन की अच्छी व्यवस्था है। विद्यालय में ८ से १२ वर्ष तक के सुयोग्य, मेधावी एव स्वस्थ बालक ही प्रवेश पा सकेंगे बालक का कक्षा पांच उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

इच्छुक अभ्यर्थी शीघ्रता करे। स्थान सीमित है। नियमावली मगाने हेतु ५) के डाक टिकट भेजें।

—आचार्य राजदेव शर्मा शास्त्री व्याकरणाचार्य
आचार्य आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) २०६२५२

आर्य समाज कागज नगर शाखा बिसगांव का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज कागज नगर शाखा बिसगांव का निर्वाचन निम्न प्रकार रहा, प्रधान श्री एम. ठाकुर राय, उपप्रधान श्री सुनील जी, मन्त्री श्री देवेन्द्र जी मण्डल, उपमन्त्री देवेन्द्र जी, कोषाध्यक्ष श्री रजीत जी, तथा कोषाध्यक्ष श्री गोविन्द जी निर्वाचित हुए।

कु० भारती वर्मा ने प्रावीण्य सूची में १० वां स्थान प्राप्त किया

श्री महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति के मन्त्री श्री कैलाशचन्द पालीवाल ने बताया कि ५ वी की बोर्ड की परीक्षा मे सस्था की छात्रा कु० भारती कालूराम वर्मा ने १० वा स्थान प्राप्त कर सस्था को गौरवान्वित किया है। सस्था के प्रथम मे ९७ द्वितीय मे ६० तृतीय में १९ छात्र/छात्राए उत्तीर्ण हुए हैं।

—कैलाशचन्द पालीवाल, मन्त्री
महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति, खण्डवा

वेद कथा का भव्य समायोजन

आर्य समाज मन्दिर, जूनामण्डी, पहाड़गज नई दिल्ली ५५ मे वेद कथा का भव्य समायोजन १ जून सोमवार से ७ जून रविवार तक होगा। जिसमे आचार्य श्याम सुन्दर जी स्नातक श्री विजय भूषण जी आर्य चन्द्रशेखर शर्मा शास्त्री के सुन्दर उपदेश होगे। —मन्त्री

आवश्यकता है

हिन्दू धर्म का प्रचार प्रसार करने वाले ट्रस्ट को, लगन से कार्य करने वाले सुशिक्षित आकर्षक व्यक्तित्व वाले आर्य समाजी, शास्त्री जिसने कम से कम इगलिश माध्यम से बी. ए. पास किया हो, जिसकी आयु लगभग ४० वर्ष हो, और गृहस्थ जीवन के भार से मुक्त हो। मासिक मानदेय दो हजार रुपये या अधिक योग्यतानुसार।

सम्पर्क करें :—

गगादेव शर्मा
C-११९ सरोजनी नगर, नई दिल्ली-११००२३

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एव डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- जो मुक्ति चाहे वह जीवन मुक्त अर्थात् जिन मिथ्या-भाषणादि पाप कर्मों का फल दुःख है उनको छोड़ सुखरूप फल को देने वाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूलकारण है।
- कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : २७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष २० अंक २०) दयानन्दाब्द १६० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८५ ज्येष्ठ शु० १४ सं० २०४१ १४ जून १९८४

विशाल आर्य वीर दल शिविर के उद्घाटन में मैंने स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में बैठकर देश सेवा एवं युवक निर्माण की प्रेरणा ली थी

विश्व विख्यात गुरु हनुमान के उद्गार

दिल्ली ७ जून, आज सायं महाशय चुन्नी लाल विद्यालय हरि-नगर के परांगण में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में गुरु हनुमान ने आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुये कहा कि मैंने भरी जवानी में स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों में बैठकर देश सेवा एव युवक निर्माण की प्रेरणा ली थी—उन्होंने कहा मेरे शाकाहारी शिष्यों ने दुनिया के बड़े २ पहलवानों पर विजय पाकर भारत का माथा ऊंचा किया है कहा आपने वीरो ! जीवन भर शाकाहारी रहकर हिन्दी का प्रचार करते रहना।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य वीरों को आशीर्वाद देते हुये कहा कि वेद का उदघोष है ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्यु मुपाघनत देवताओं ने ब्रह्मचर्य और तप से मौत को जीत लिया स्वामी जी ने आर्य वीरों से कहा कि आर्य वीरों प्रतिज्ञा करो कि आप लोग २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करोगे।

दूसरी बात आर्य वीर दल को सुदृढ़ बनाने के लिये अनुशासन का पालान करना परमावश्यक है—स्वामी जी ने कहा आर्य वीरों तीसरी बात मैं कहना चाहता हूं कि आप लोग स्वामी दयानन्द के तप त्याग और निष्ठा को याद रखते हुये जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के संगठन को पवित्र और मजबूत बनाने में पूरा योगदान देना, स्वामी जी ने कहा उत्तर काशी में आर्य वीर दल ने जो सेवा कार्य किया है उसके लिये मैं आप सबका धन्यवाद करता हूं—इस शिविर में पहले दिन ६५० आर्य वीरों ने भाग लिया—डा० देवव्रत आचार्य की देख रेख में यह शिविर २९ जून तक चलेगा।

ब्रह्मचारी राजसिंह जी ने सब प्रकार से शिविर की सफलता की जिम्मेदारी निभाने की घोषणा की।

सेना की वापसी

पंजाब में इस समय भारतीय सेना के छह डिविजन तैनात है इनके कमाण्डर लैफटिनैन्ट जनरल बी० के० एन० छत्तरे ने कहा कि अब पंजाब की हालात पहले से बेहतर हो चुकी है इसलिए आप समझते है कि समय आ गया है जब पंजाब से सेना को हटा लिया जाए—आप ने यह भी कहा है कि आप २० हजार जवानों का एक जत्था तैयार करना चाहते है जिसको भिन्न २ स्थानों पर रखेंगे—ताकि जब भी आवश्यकता हो उन्हे एकदम से बुलाया जाए—मैं जनरल छत्तरी की इस बात से सहमित नहीं हूं कि पंजाब की अवस्था इतनी सुधर गयी है कि सेना को वहां से निकाल लिया जाए—हो सकता है कि सेना की मौजूदगी में आंतकवादियों को अपनी कार्यवाहियों में रुकावट हो परन्तु इससे कहीं बढ़ कर वह विश्वास और सुरक्षा की भावना है जो सेना के जवानों की मौजूदगी से पंजाब के लोगों में है—जनरल महोदय की यह बात दरुसत है कि आज खालिस्थान के नाम लेकर, लिफंगे-बदमाश-पेशावर कातिल और समगलर अपना काम कर रहे है, इसका परिणाम यह है कि पंजाब की जनता में खालिस्तान से घृणा हो गयी है—प्रश्न यह किया जा रहा है कि अगर खालिस्थान में यह सब कुछ होना है तो ऐसे खालिस्थान से दूर ही रहा जाए—पंजाबी जनता को इस भावना से प्रभावित होकर यह समझा जाने लगा है कि अब पंजाब में सेना को रखने की आवश्यकता नही रही—हक तो यह है कि यह दृष्टिकोण भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार है जिसमें यह कहा गया कि कुछ हजार कमाण्डो दस्ते तैयार किए जाए जिनको राज्य के नाजुक स्थानों पर बैठा दिया जाए ताकि जब भी आवश्यता हो उन्हे फौरन बुला लिया जाए इस कमाण्डो दस्ते के विषय पर शंका समाधान करते हुए मैंने लिखा था कि यह दस्ते पंजाब के आंतक-वाद का मुकाबला न कर सकेंगे—कमाण्डो दस्ते बुनियादी तौर पर दुश्मन के ठिकानों पर अचानक हमले करने के लिए बनाए जाते

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

बुर्के की आड़ लेकर आतंकवाद के बढ़ते कदम

ऊपर से नीचे तक बुर्के से ढकी औरत के पास से जब दूसरे व्यक्ति ने बैठना चाहा तो वह उससे दूर हट गई। इसी समय जवानो ने देखा कि बुर्के के अन्दर जो सिर दिखाई दे रहा है वह किसी स्त्री का नही बल्कि किसी पुरुष का है। सच्चाई यह है कि कश्मीर घाटी मे आतंकवादियो ने जोर जबर्दस्ती से बुर्का पहनने के लिए प्रत्येक स्त्री को मजबूर कर दिया। इसके पीछे आतंकवादियो के छिपकर आने-जाने की घिनौनी चाल थी।

इस आतंकवादी ने औरत का पूरा मेकअप किया हुआ था और सिर पर विग लगा रखी थी यह सब अपने आपको सुरक्षाबलो से छुपाने के लिए किया था। जो वहाँ घर-घर की तलाशी ले रहे थे।

उपरोक्त घटना पुलवामा जिले के बन्द कपोरा की है।

सुरक्षा बलो को शक कैसे हुआ? जब वे पुरुषो की तलाशी ले रहे थे तब सभी औरतो को एकत्रित होने के लिए कहा—तब पास खड़ी महिला ने कोहनी मारकर उस पुरुष को अलग हटकर खड़े होने को कहा ऐसा करने पर विग नीचे गिर गई। बुर्के से ढकी महिलाओ के अतिरिक्त उस पुरुष पर जवानों की पहले से नजर थी विग खिसकने पर तुरन्त उसे पकड़ लिया उसके पास से हथगोला, कारतूस आदि मिले।

इसी प्रकार की घटना अन्य कई जगहों पर घटी इसी के साथ जवानो ने महिलाओं से अपने नाम बोलने को कहा तब छिपे पुरुष ने न बोलकर केवल कन्धे हिला दिए। तब दूसरी महिलाओं ने उसे बहरी बताकर बचाना चाहा।

इस प्रकार की अनेक घटनाएं घटीं जिसमे एक दर्जन आतंकवादी पकड़े गए। जो अपने को बुर्के में छिपाए हुए थे। यह व्यक्ति अनन्तनाग व बारामूला से गिरफ्तार किए गए। बारामूला में यह आतंकवादी गोद में बच्चे लिए हुए भी थे।

बुर्का पहनने पर जोर का रहस्य इस कार्य के करने के लिए जोर जबर्दस्ती की गई है।

इस बुर्के की आड़ धार्मिक जरूरत कम रणनीति का हिस्सा ज्यादा है। ऐसे व्यक्ति किसी भी घटना का सामना करने के लिए कटिबद्ध है। मेकअप किट-बिग यहाँ तक कि चोली आदि सभी कुछ उनके पास हैं जब भी उन्हे पकड़ जाने का भय मालूम होता है वह तत्काल इस सामान से आप को ढक लेते हैं। इस बुरके की आड़ का आतंकवादी खुलकर प्रयोग कर रहे हैं। परन्तु देखने सुनने में यह भी आया है कि कुछ इस बुरके के आदेश के विरुद्ध भी आवाज उठा रहे हैं।

जे-के० स्टूडेन्ट्स लिबरेशन फ्रन्ट जैसे संगठन भी हैं जिन्होंने बुर्का समर्थकों की ओर से अपनाए जा रहे क्रूर तरीको का कड़ा विरोध किया है इसके अतिरिक्त भी कुछ उपाय अन्य भी अपनाए जा रहे है जैसे आतंकवादी गन्दे तालाब मे घन्टो पड़ा रहा। उस समय तलाशी अभियान चल रहा था पानी मे फिरन से सिर ढका हुआ था जिससे कपड़ा मात्र लग रहा था।

सुरक्षा बलो की दृष्टि तीव्र थी उन्होंने देखा कि फिरन का बहाव विपरीत दिशा की ओर है। उसे पकड़ने पर आदमी का सिर हाथ आया।

सुरक्षा बल आतंकवादी गुटो की बुर्का नीति को लेकर काफी सतर्क हैं और सुरक्षाबलो को जब भी महिलाए मिलती हैं तो उनसे वह चेहरा दिखाने और नाम बोलकर बताने को कहते हैं।

कश्मीर घाटी का खतरनाक बुर्का अभियान कितना भयंकर साबित होगा। इसके पीछे पाकिस्तान का षड़यन्त्रकारी हाथ है।

भारत सरकार इस प्रकार के आतंकवादियो से सावधान रहे।

विश्व के अनूठे "पाणिनि मन्दिरम्" का निर्माण

संस्कृत प्रेमियों से खुलकर सहयोग की अपील

सज्जन महानुभाव !

आप सबको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय के प्रांगण में एक अभूतपूर्व "पाणिनि मन्दिरम्" का निर्माण होने जा रहा है। पाणिनि महर्षि संस्कृत व्याकरण शास्त्र के प्रणेता एवं अपने आर्यावर्त्त देश के गौरवललाम थे। यह पाणिनीय व्याकरण विश्वविख्यात अनुपम कृति है। इस पद्धति मे व्याकरण का सूक्ष्म बोध बड़ी सरलता से किया जा सकता है, यह हस्तामलकवत् सिद्ध हो चुका है। आर्यजन दिल खोल कर सहायता करें।

निवेदक :

पं० शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी	आचार्या प्रज्ञा देवी
श्री ओमप्रकाश झंवर, कोषाध्यक्ष	पाणिनि कन्या महाविद्यालय
परोपकारिणी सभा, अजमेर	तुलसीपुर, वाराणसी-१०
	दूरभाषांक : ३६०१४०

सेना की वापसी

(पृष्ठ १ का शेष)

हैं, परन्तु इसके विपरीत आंतकवादी गिरोह अचानक हमले करके भाग जाते है—इतनी देर मे पुलिस या कमाण्डो दस्तों के जवान उस दुर्घटनाग्रहस्त स्थान पर पहुचते है तब तक आंतकवादी कहां से कहा तक पहुंच चुके होते है—जिस फौजी दस्ते की तरफ जनरल महोदय इशारा कर रहे है वह भी कमाण्डो दस्ते की भान्ति उपयुक्त साबित न होंगे—इसलिए आम यह समझा जा रहा है कि अभी वह समय नहीं आया कि पंजाब से सेना हटाई जाए—यह ठीक है कि यह फौजी जवान इन अपनी प्रतिदिन की फौजी ट्रेनिंग के अभाव मे रह रहे हैं परन्तु यह कोई ऐसी बात नहीं, जिसके लिए जनता के विश्वास और भरोसे को तोड़ा जाए—पंजाब में सेना है इसलिए लोगों मे इतमाद कायम करने के अतिरिक्त इनकी जो सेवा की है इससे भी जनता को लाभ ही हुआ है इसे किसी तरह भी नजर अन्दाज न किया जाए—इन तमाम बातों को देखकर यही कहा जाएगा कि अभी पंजाब से फौज को हटाने का समय नहीं आया।

के नरेन्द्र

प्रताप के सौजन्य से

डा० आचार्य प्रभाकर मिश्र को (फादर आफ नेशनल इंटेग्रेशन पद्मभूषण)

वर्ल्डस्पिरिचुअल गवर्नमेंट संगठन ने ७ जनवरी को हिमाचल भवन नई दिल्ली मे आयोजित विशेष दीक्षान्त समारोह में विश्वधर्मायतन के परमाचार्य डा० आचार्य प्रभाकर मिश्र को राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र मे विशेष उल्लेखनीय सेवाओ के लिए "फादर आफ नेशनल इंटेग्रेशन" पदवी से विभूषित किया गया। इस अवसर पर जापान, ब्रिटेन, बंगलादेश, नेपाल, श्री लंका आदि देशो के प्रतिनिधि उपस्थित थे। तथा भारत के विशिष्ट धर्माचार्य सन्त महात्मा नागरिक विद्यमान थे। ज्ञात हो कि आचार्य प्रभाकर मिश्र ने नयी पीढ़ी मे राष्ट्रीय एकता सद्भावना की भावना स्थापित करने के लिए विश्वधर्मायतन संस्था द्वारा राष्ट्रीय एकता परीक्षा का संचालन कर ५० हजार छात्रों को अभीतक प्रशिक्षित किया है। तथा विश्वधर्मसंसद् संगठन के माध्यम से समस्त धर्माचार्यों का एक मंच स्थापित कर साम्प्रदायिक सद्भावना का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मृत्यु का स्वरूप

—श्री पूर्णचन्द्र उपाध्याय

मृत्यु संसार में सबसे ज्यादा भय और दुःख की चीज समझी जाती है, कि संसार में जिन कारणों और घटनाओं को दुःख माना जाता है, वे भी इसी कारण से हैं क्योंकि उनका मृत्यु से सम्बन्ध है। हम बीमारी डरते हैं, हम रेल की दुर्घटना या भूचाल से भयभीत होते हैं वह इसलिए कि इससे मौत का डर रहता है। जिसको मौत का डर नहीं रहता, उसके लिये संसार के सब दुःख-सुख एकसमान हो जाते हैं। एक साधारण आदमी जरा-सी फांस लग जाने पर व्याकुल हो जाता है। एक वीर पुरुष शरीर का एक अंग कट जाने पर भी उफ तक नहीं करता। ऋषि दयानन्द जिस भयंकर रोग से पीड़ित थे, यदि वैसा रोग साधारण मनुष्य को होता, तो वह बहुत बेचैन और व्याकुल रहता; परन्तु ऋषि दयानन्द उस असह्य वेदना से पीड़ित होते हुए भी ईश्वर-भक्त और शान्तचित्त रहे, यह इसी लिए कि उन्हें मृत्यु से भय न था। इसलिए कर्म सिद्धान्त पर विचार करते हुए मृत्यु के सम्बन्ध में विचार कर लेना अत्यावश्यक और लाभदायक है।

मृत्यु क्या है ?

यह एक जटिल प्रश्न है। इस पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से विचार किया जा सकता है। साधारण मनुष्य की दृष्टि से मृत्यु इस शरीररूपी कार्यक्षेत्र की क्रियाओं का अन्त है। हम जीवित और मरे हुए मनुष्य को देखते हैं। जीवन में क्रिया और गति है हाथ पैर हिलते हैं आँखें झपकती हैं, सांस लिया जाता है और शरीर में चोटी से लेकर एड़ी तक क्रिया ही क्रिया दिखाई देती है। जब मौत आने को होती है तो क्रिया आहिस्ता-आहिस्ता मन्द होने लगती है और सांस आखिर तक चलता रहता है। जब वह भी बन्द हो जाता है, तो उस शरीर को मृत्युग्रस्त या मृत कहा जाता है। क्रिया या क्रिया-शक्ति की समाप्ति का नाम मृत्यु है और इस मृत्यु की दशा को देखकर हमको जीव के स्वतन्त्रकर्ता होने में बड़ा सन्देह हो जाता है। यदि स्वतन्त्रकर्ता है, तो क्रिया क्यों समाप्त होवे। यदि उसने स्वयं बन्द कर दी तो यह बात समझ में नहीं आती, क्योंकि मरना कौन चाहता है। यदि किसी दूसरे ने बन्द की, तो जीव स्वतन्त्रकर्ता नहीं रहता। यह सब भ्रम है। मृत्यु के स्वरूप को समझ लेने से यह भ्रम दूर हो जाएगा। मृत्यु क्रिया की समाप्ति नहीं है। फिर क्या है ?

जीव अनादि है

यदि यह सत्य है कि जीव अनादि है तो उसकी आयु के अन्त का क्या अभिप्राय ? आयु उस योनि विशेष की अवधि का नाम है और मृत्यु से उस विशेष दशा का ही अन्त होता है जीव का अन्त नहीं होता है, और न उनकी क्रिया का, हो अन्त होता है। जीव न केवल काल की दृष्टि से अनादि है, अपितु अपने अन्य गुणों से भी अनादि है। हमने ज्ञान, कर्म और भोग जीव के गुण बतलाये है। जीव के ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति और कर्म करने की शक्ति अनादि है, इसलिए इनका भी अन्त नहीं हो सकता। इसलिए फिर यह प्रश्न होता है कि मृत्यु क्या है ?

मृत्यु को उपमा

(अ) मृत्यु घर बदलना है।

(ब) पुराने वस्त्र उतारकर नये वस्त्र पहनना है।

(स) सर्प की तरह केंचुली उतार देना है।

(द) मृत्यु एक निद्रा है, जिससे दोबारा जागने का समय हमें ज्ञात नहीं।

(य) मृत्यु एक यात्रा है।

(फ) मृत्यु परलोक-गमन है।

(ज) मृत्यु मोक्ष का द्वार है।

(ह) मृत्यु स्वर्ग की सीढ़ी है।

(क) मरना नरक में जाना है।

इसी प्रकार के अनेक विचार मृत्यु के सम्बन्ध में पाये जाते हैं। इनसे पता चलता है कि मृत्यु दशा-परिवर्तन का नाम है और वह इस जीवनरूपी लीला का अन्त नहीं बल्कि इस लीला का नवीन रूप उपस्थित होने का साधन है।

उपर्युक्त सब विचारों में मृत्यु को परिवर्तन माना है और परिवर्तन के लिये एक सत्ता की आवश्यकता है। यात्रा में यात्री प्रारम्भ से अन्त तक एक ही रहेगा। यदि मार्ग के बीच में कोई दूसरा यात्री पहले यात्री का स्थान ले ले, तो पहले यात्री की यात्रा समाप्त समझी जाएगी।

मृत्यु का शरीरान्त कौन मानते हैं

जो अत्यन्त भोग-विलासी हैं और अपने कर्मों के फल से बचना चाहते हैं वे न तो आवागमन मानते हैं और न ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखते हैं। वाममार्गियों का सिद्धान्त और विश्वास है कि यह शरीर भस्म होकर इसका अन्त हो जाएगा, इसलिए खाओ, पियो और मौज करो। यही हाल आजकल पश्चिमीय जगत् में पदार्थ-विज्ञान वालों का है, जो केवल इस शरीर के सुख की सामग्री एकत्र करने में लगे हुए हैं। आत्मा के परलोक-गमन का कोई विचार नहीं रखते।

मृत्यु से भविष्य में उन्नति के लिए अथवा विकास प्राप्त करने के लिए नवीन साधन दूसरे जन्म में मिलते हैं। विकासवाद वालों ने अपने परीक्षणों से यह सिद्ध कर दिया है कि दुःख या प्रतिकूल परिस्थिति से ही विकास होता है। यदि बन्दर को दुम से बन्दर को सीधे खड़ा होने में बाधा न पड़ती, तो बन्दर का दुम से पीछा नहीं छूटता और वह मनुष्य का रूप धारण न करता। जो सिद्धान्त विकासवाद का है, उसकी ही झलक आवागमन के सिद्धान्त में है। भेद केवल दृष्टिकोण का है। आवागमन का सिद्धान्त यह है कि मनुष्य-योनि कर्तव्य-योनि है। यदि मनुष्य-शरीर प्राप्त करके मनुष्य पाप करता है, तो उसके पाप का फल भोगने के लिए और सुधार प्राप्त करने के लिये भिन्न-भिन्न योनियों में जाना पड़ता है, चाहे वे योनियाँ पशु-जगत की हों, चाहे वृक्ष-जगत् की। 'पाप का सिर नीचा' यह एक प्रसिद्ध कहावत है। इसका मतलब यह है कि हम मनुष्य से लेकर वृक्ष तक अपनी दृष्टि ले जायें तो सब योनियों में शरीर-निर्माण की दशा में भेद है। और वह भेद मुख्यतया सिर के ऊंचा या नीचा होने का है। हम अपने सामने निम्नलिखित योनियों को लें।

रानी बाग में वनवासी प्रशिक्षण शिविर का दीक्षान्त समारोह

दिल्ली ३१ मई। आज प्रातः आर्यसमाज रानीबाग (दिल्ली) में दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में माता प्रेमलता जी की अध्यक्षता में दो सप्ताह पूर्व लगाये गये वनवासी बालकों के शिविर का दीक्षान्त बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर में २२ वनवासी युवकों को माता प्रेमलता जी ने बड़े स्नेह के साथ वैदिक धर्म प्रचार के लिए प्रशिक्षित किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समारोह में पधार कर अपना आशीर्वाद देते हुए स्व० प० पृथ्वीराज जी शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा—माता प्रेमलता जी ने भी शास्त्री जी के अधूरे काम को पूरा करने का व्रत लिया है। उनका यह महा प्रयास आर्य समाज के वनवासी क्षेत्रों में किए जा रहे शुद्धि आन्दोलन को बल देगा। स्वामी जी ने मध्य प्रदेश और अनेक दूरस्थ स्थानों से आये हुए युवकों को आशीर्वाद दिया और माता प्रेमलताजी के कार्यों की सराहना की।

अमरीकी सहायता प्राप्त संस्था द्वारा धर्म परिवर्तन का कुचक्र

नई दिल्ली, २ जून। नेताजी सुभाष सेना के सेनापति श्री. रमेश दलाल ने आरोप लगाया है कि अमरीकी सहायता प्राप्त संस्था 'फास्टर पेरेन्ट्स प्लान इन्टरनेशनल' बड़े स्तर पर धन का दुरुपयोग देश में धर्म परिवर्तन के कार्यों पर कर रही है।

श्री० दलाल ने आज यहां एक संवाददाता सम्मेलन में उक्त संस्था के प्रधान श्री केविन पोटर पर आरोप लगाया कि वह अमरीकी नागरिक हैं और श्री पोटर यहां कुछेक भारतीय संस्थाओं को शिक्षा, गन्दी बस्तियों में सुरक्षा आदि के नाम पर करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष देते हैं। इसी प्रकार राजौरी गार्डन स्थित एक संस्था दीपालया एजुकेशन सोसायटी को, जिसके प्रमुख श्री टी के मैथ्यू हैं व्यापक स्तर पर आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

श्री मैथ्यू राजधानी के पश्चिम भाग से रघुबीर नगर की झुग्गी-झोंपड़ी बस्तियों के गरीब परिवारों में आर्थिक सहायता देने के नाम पर धीरे-धीरे ईसाई धर्म ग्रहण करवाने का कुचक्र चला रहे हैं।

नेताजी सुभाष सेना ने सेनापति के संवाददाताओं के समक्ष ऐसे अनेक लोग पेश किये जिन्हें धर्म परिवर्तन करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि दीपालया एजुकेशन सोसायटी में कार्यरत गैर ईसाई कर्मचारियों को श्री मैथ्यू ने यह कहकर निकाल दिया कि या तो वे धर्म परिवर्तन करें अथवा नौकरी छोड़ दें। और उन्हें नौकरी से इसी कारण निकाल दिया कि उन्होंने धर्म परिवर्तन नहीं किया।

श्री० दलाल ने यह भी आरोप लगाया कि गृहराज्य मन्त्री श्री एम.एम. जैकब के प्रभाव के कारण श्री टी, के. मैथ्यू को पी. ए. सी. पुलिस गार्ड उपलब्ध कराया गया जबकि श्री मैथ्यू एक साधारण व्यक्ति हैं।

उन्होंने श्री मैथ्यू पर आरोप लगाया कि संस्था के कर्मचारी जहां पर २० दिनों से धरना दे रहे हैं वहां महिला जागृति समिति की अध्यक्षा के घर भाड़े के लोगों को हमले के लिये भेजा गया। परन्तु पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की।

श्री० रमेश दलाल ने सरकार से मांग की कि पोटर एवं मैथ्यू के विरुद्ध कार्यवाही की जाए अन्यथा सुभाष सेना भूख हड़ताल प्रारम्भ करेगी।

विश्व मानव कल्याण केन्द्र (आर्ष गुरुकुल) की स्थापना

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह संस्था कार्य करेगी।

इस संस्था का पहला उत्सव ९ जून से १२ जून तक चलेगा जिसमें ईश्वर उपासना, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक कुरीतियों का खण्डन करना मुख्य विषय रहेंगे।

इस पावन उत्सव मे दानी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस महान यज्ञ में सहयोग देंगे। जिससे यह कार्य सम्पन्न हो सके।

—रामजीलाल आर्य (भवभूति) महेतु एटा (उ० प्र०)

वधु चाहिए

२४ वर्षीय, गौर वर्ण, आई.ए.सी. होम्योपैथ डाक्टर के लिए वैश्य वर्ण की या आर्य विचार, गुण कर्म स्वभाव से सज्जन, शिक्षित व स्वस्थ सुन्दर कन्या चाहिए। विवाह बिना दहेज के स्वीकार किया जायेगा। इच्छुक सज्जन पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें।

पता :—रामचन्द्र गुप्त
C/o चन्द्रगुप्त होम्योपथिक फार्मेसी, पो० बाक्स नं० १, मंच नं० १
वार्ड न० १५, मु० पो० बेतिया, जिला प० चम्पारण (बिहार)

हर्षद मेहता की कहानी—

तख्त से तख्ता

छोटी उम्र में ही अमीर हो जाने की महत्वाकांक्षा करना कोई बुरी बात नहीं है लेकिन अगर कोई व्यक्ति रातों-रात बगैर मेहनत किए, लखपति करोड़ पति और अरबपति हो जाए तो यह निश्चित ही एक हैरानी वाली बात होगी और जब कोई व्यक्ति 'डाके' ही मारने शुरू कर दे तो किसे अचम्भा नहीं होगा?

हर्षद मेहता ऐसे ही व्यक्ति हैं जिन्होंने चार-पांच साल पहले अपना एक पुराना टाइपराइटर बेचकर उससे मिली धनराशि से शेयरों का काम शुरू किया और गत दिवस कई अरब रुपए के घोटाले में उन्हें दो भाइयों हितेन तथा अश्विनी और दो व्यापारिक हिस्सेदारों पंकज बी० शाह और अतुल पारिख को गिरफ्तार कर लिया गया है।

दो महीने पहले ३७ वर्षीय हर्षद मेहता स्टाक मार्किट के बादशाह समझे जाते थे और अब भी जब उनकी धोखाधड़ी का पर्दाफाश हुआ तो बहुत से लोग बम्बई की सड़कों पर निकल आए और जब तक सूरज चांद रहेगा, हर्षद तेरा नाम रहेगा के नारे वातावरण में गूंजने लगे और इन नारों के बोर्ड भी लगाए गये। इस प्रकार के प्रदर्शन करने और नारे लगाने वाले लोग वे थे जिनके शेयरों की कीमतें कई गुणा बढ़ गई थी और तो और कई कम्पनियां ऐसी भी थी जिनके मरे हुए शेयरों के दाम बढ़ने और चढ़ने लगे थे।

हमने भी हर्षद मेहता के बारे में एक लेख छापा था, मगर उस समय यह ख्याल नहीं था कि हर्षद मेहता देखते ही देखते अर्श से फर्श पर आ जायेंगे। जिस तरह अरबों रुपयों के इस स्कैंडल में ६ बैंक शामिल हैं और लगभग २०० बैंक अधिकारियों के संलिप्त होने की संभावनाएं व्यक्त की जा रही हैं और तीन बड़े बैंक अधिकारी गिरफ्तार भी किये जा चुके हैं, उसके दृष्टिगत बोफोर्स का घोटाला भी इस घोटाले के आगे फीका लगने लगा है। मामले की गम्भीरता का अनुमान इस बात से भली भांति लगाया जा सकता है कि राजनीतिक दल वित्तमन्त्री डाक्टर मनमोहनसिंह तक से त्यागपत्र की मांग करने लगे हैं। जिस तरह इस मामले में बैंकों पर डाका डाला गया है, उससे निश्चित ही वह देश छिन्न कर रह गया है।

देश के वित्तीय संस्थानों का खोखलापन भी इस काण्ड से पूरी तरह सामने आ गया है। अगर किसी आम उद्योगपति को एक छोटा सा ऋण भी लेना हो तो उसे मशीनरी बैंक के पास गिरवी रखना पड़ता है। अपनी और अपने बच्चों की गारंटियां देनी पड़ती हैं। बार बार बैंक के चक्कर काटने पड़ते हैं और जब तक लिखा पढ़ी के पांच किलो कागजों का ढेर इकट्ठा न हो जाए, तब तक साधारण सा ऋण भी मंजूर नहीं होता है। लेकिन हर्षद मेहता को अरबों रुपया बोगस कागजों पर ही बैंकों ने एडवांस कर दिया और कोई पूछताछ हो किसी स्तर पर नहीं हुई।

इतना ही नहीं हर्षद मेहता ने १९९१-९२ के लिए कोई आय कर या संपत्ति कर की रिटर्न दाखिल नहीं की और १९९०-९१ में भी आयकर रिटर्न बहुत विलम्ब से दाखिल की थी। इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी कि अगर एक सामान्य व्यक्ति समय पर आयकर रिटर्न दाखिल न करे तो उसे तो नोटिस जारी कर दिया जाता है, मगर हर्षद मेहता के मामले में आयकर अधिकारियों ने भी कोई कार्रवाई करना जरूरी नहीं समझा।

इस स्कैंडल में हर्षद मेहता ने 'खाओ और खाने दो' की नीति से ही काम लिया है और जहां खुद लूट मचाई वहां उसमें बैंकों के छोटे बड़े अधिकारियों को भी पैसा खिलाया और कहा तो यह भी जा रहा है कि कुछ मन्त्री भी इसमें संलिप्त हैं।

आज जबकि देश पहले से ही एक गम्भीर वित्तीय संकट के दौर में से गुजर रहा है। इस घोटाले से स्थिति और गम्भीर हो गई है। हम समझते हैं कि इस कांड की व्यापक स्तर पर सार्वजनिक जांच होनी चाहिए और दोषी पाये जाने वाले लोगों को चाहे वे किसी भी पोजीशन के मालिक क्यों न हों, कठोरतम दण्ड दिया जाना चाहिए। किसी भी हालत में कोई भी बड़ी मछली जांच के इस जाल में फंसे बगैर रहनी नहीं चाहिए। —विजय

यमाचार्य का आतिथ्य

डा० नरेश कुमार शास्त्री, आचार्य श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जालंधर)

कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा से सम्बद्ध प्रसिद्ध उपनिषद् है। यह उपनिषद् दो अध्यायों मे परिसमाप्त हुआ है और प्रत्येक अध्याय तीन वाल्लियों मे विभाजित हुआ है। इस उपनिषद् मे जहां आत्मतत्त्व का गम्भीर ज्ञान सरल सुबोध संवादशैली में प्रस्तुत किया गया है, वहीं पर "अतिथि: देवो भव" की व्याख्या भी बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की गयी है।

भारतीय संस्कृति के इस अनुपम आदेश का प्रस्तुतीकरण कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय की प्रथमवल्ली मे नचिकेता की कथा के प्रसंग मे हुआ है।

वह कथा इस प्रकार है कि यज्ञफल की कामना से वाजश्रवा के पुत्र वाजश्रवस ने "विश्वजित्" नामक यज्ञ का आयोजन किया। "वाज" अन्न को कहते हैं, वाज अर्थात अन्न के दानादि करने के कारण जिसका श्रव=यश फैला हुआ हो उसे वाजश्रवा कहते हैं। वाजश्रवा के पुत्र को ही कठोपनिषद में वाजश्रवस कहा गया है—"वाजमन्नं तद्दानादिनिमित्तं श्रवो यस्य स वाजश्रवा; रूढितो वा, तस्यापत्यं वाजश्रवस:। कठ० शंकरभाष्य-१"। इस विश्वजित् यज्ञ मे यज्ञ का यजमान अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है, इसी यज्ञ का दूसरा नाम सर्वमेध यज्ञ भी है। वाजश्रवस यज्ञ के उपरान्त जो कुछ उसके पास था, सब दान करने लगे। उन वस्तुओं मे जहां बहुत सी श्रेष्ठ वस्तुएं थी वहीं पर कुछ ऐसी भी थी जिन्हे श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता परन्तु सर्वस्व दान के समय तो श्रेष्ठ-अश्रेष्ठ सभी वस्तुएं दान करनी होती हैं। अतः वाजश्रवस को अपनी वे गऊएं भी दान करनी पड़ी जिन्हे अच्छी गाय नहीं कहा जा सकता! जबकि वे गऊएं जल पी चुकी थीं घास भी खा चुकी थी—न भूखी थी, न प्यासी थी। परन्तु उनका दूध दुहा जा चुका था और वे इस योग्य भी नहीं थी कि भविष्य मे दूध दे सके क्योंकि वे इतनी बूढ़ी हो चुकी थी कि भविष्य मे उनके प्रसव की कोई सम्भावना नहीं थी, वे किसी बच्चे को जन्म देकर पुन: दुधारू गाय नहीं कहला सकती थी। वाजश्रवस जब इन बूढ़ी गऊओं को भी दक्षिणा के रूप मे दे रहे थे तो उन का आस्तिक बुद्धि पुत्र जिसका नाम नचिकेता था, अपने पिता को बड़े ध्यान से देख रहा था और अपने अन्त: हृदय मे सोच रहा था—

> पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रिया:।
> अनन्दा नाम ते लोका: तान् स गच्छति ता ददत्॥

जो गायें पीतोदका=जल पी चुकी हो, जग्धतृणा=घास खा चुकी हो, दुग्धदोहा=दूध दुहा जा चुका हो और निरिन्द्रिया=बच्चा पैदा करने मे भी असमर्थ हो—ऐसी गऊओं का दान करने वाला यजमान ऐसे लोकों को प्राप्त होता है, जो आनन्द से रहित हैं उन्हे ऐसी योनियों मे जन्म लेना पड़ता है, जो स्वर्ग रूप न होकर नरक रूप हो—दु:खो का घर हो।

नचिकेता आयु से तो बालक था परन्तु वैचारिक दृष्टि से प्रबुद्ध था। वह अपने पिता को इस प्रकार के कुदान से प्राप्त होने वाले फल से बचाना चाहता था। अत: अपने बालसुलभ स्वभाव से पिता के समीप जाकर बोला—'तत कस्मै मां दास्यसि"—"पिता जी मुझको आप किसे देंगे।" पिता के उत्तर न देने पर नचिकेता ने अपने प्रश्न को दुबारा तिबारा दुहराया। पिता का पुत्र के प्रति मोह होता है, अत: बार-बार पूछने से वाजश्रवस को क्रोध आ गया और क्रोध में बोले—"मृत्यवे त्वा ददामि"—मैं तुझे मृत्यु के हवाले करूंगा।" पिता का यह कहना कुछ वैसा ही था जैसा कि आजकल की माताएं बार बार तंग करने पर अपने प्रिय पुत्र को क्रोध मे आकर कह देती हैं—'तेरा गला घोंट दूंगी।' परन्तु उनका ऐसा कहने का तात्पर्य उन्हें शरारतों से ऊटपटांग के प्रश्नों के करने से ही होता है न कि गला घोंट कर मृत्यु के घाट उतारने से। वाजश्रवस का भी यही अभिप्राय रहा होगा कि नचिकेता मृत्यु के नाम से घबरा जाए और बार बार यह न पूछे कि 'मुझे किसे देंगे?" परन्तु नचिकेता ने अपने पिता के क्रोधभाव को न समझा और घर से निकल पड़ा। घर से निकलकर नचिकेता यमाचार्य के घर पहुंचे। (यमाचार्य को उपनिषद् मे वैवस्वत, मृत्यु, अन्तक आदि कई नामों से सम्बोधित किया गया है) परन्तु जब नचिकेता वहां पहुंचे तो यमाचार्य घर से बाहर गये हुए थे, अत: नचिकेता को द्वार पर ही प्रतीक्षा करनी पड़ी। अन्न जलादि भी ग्रहण नहीं किया। तीन दिवस के बाद यमाचार्य घर लौटे तो उन्हे किसी धर्मज्ञ ने नचिकेता का आतिथ्य करने के लिए निम्न प्रकार सावधान किया—

> वैश्वानर: प्रविशति--अतिथिर्ब्राह्मणो गृहान्।
> तस्यैतां शान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वत--उदकम्॥ १.१.७

हे विवस्वान् के पुत्र वैवस्वत=यम! आपके घर मे वैश्वानर=अग्नि के समान तेजस्वी, विद्वान् अतिथि ने प्रवेश किया है। तुम सद्गृहस्थ हो, सद्गृहस्थ विद्वान् अतिथि को अपने आतिथ्य से सर्वथा प्रसन्न रखते हैं। अत: इसके आतिथ्य के लिए जल लाओ।

भारतीय संस्कृति मे अतिथि सेवा के लिए तीन कार्य आवश्यक होते थे। (१) अर्घ्यपाद्य अर्थात सत्कार पूर्वक जल द्वारा हाथ-पैर धुलवाना, (२) आसन अर्थात बैठने के लिए उचित स्थान एवं आसनादि प्रदान करना, (३) मधुपर्क अर्थात् अल्पाहार के रूप मे खाने के लिए कुछ भोज्य पदार्थ प्रदान करना। इसीलिए धर्मज्ञ ने अर्घ्यपाद्य हेतु जल लाने के लिए यमाचार्य को प्रेरित किया। इसी के साथ विद्वान अतिथि का सत्कार न करने पर क्या हानि होती है? इसकी ओर भी बड़ कठोर शब्दों मे सावधान करते हुए कहा—

> आशा प्रतीक्षे संगतं सूनृतां च,
> इष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्।
> एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्य अल्पमेधस:,
> यस्य-अनश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे॥ १. १. ८॥

जिस गृहस्थ के घर मे ब्रह्मवित् अतिथि भूखा रहता है, उस अल्पबुद्धि की आशा, प्रतीक्षा, संगत, सूनृता, इष्ट, आपूर्त्त, पुत्र तथा पशु आदि सब समृद्धियां नष्ट हो जाती हैं।

आचार्य शंकर उपर्युक्त श्लोक के व्याख्यान में आशा प्रतीक्षा आदि शब्दों को निम्न रूप मे व्याख्यात करते हैं—

आशा—'अनिर्ज्ञातप्राप्येष्टार्थप्रार्थना आशा"
अज्ञातप्राप्य इष्टवस्तु के लिए की गयी प्रार्थना का नाम 'आशा' है।

प्रतीक्षा—''निर्ज्ञात प्राप्यार्थप्रतीक्षणं प्रतीक्षा'
ज्ञात प्राप्य वस्तु के लिए की गयी प्रार्थना का नाम 'प्रतीक्षा' है।

संगत—'संगत तत्संयोगजं फलम्" विद्वान् अतिथि के संयोग (संगत) से उत्पन्न होने वाले फल को 'संगत' कहते है।

सूनृता—'सूनृता हि प्रियावाक् निमित्तं च" प्रियवाणी तथा उससे होने वाले फल को 'सूनृता" कहते हैं।

इष्ट—"इष्टं यागजम् (फलम्)" यागादि से प्राप्त होने वाले फल का नाम 'इष्ट' है।

आपूर्त्त—'पूर्त्तम् आरामादि क्रियाजं फलम्" सामाजिक कल्याण के लिए लगाए गए बाग-बगीचे विश्रामस्थल, पेयजल व्यवस्था, नि:शुल्क चिकित्सालय आदि कार्यों के प्रति रूप प्राप्त होने वाले फल को 'आपूर्त्त' कहते है।

महात्मा नारायणस्वामी अतिथि निरादर के उपर्युक्त रहस्य को खोलते हुए उपनिषद् रहस्य (कठ.) मे लिखते हैं—

"जब कोई व्यक्ति किसी का आतिथ्य नहीं करना चाहता तो उसकी इच्छा होती है कि उसे घर से बाहर करे और इसके लिए उसे कुछ रुखाई से बात करनी पड़ती है। रुखाई से बात करने के फलरूप में मधुरभाषिता जाती है, मधुरभाषिता के न रहने से कोई विद्वान न उसके पास जाता है, न अपने पास आने देता हैं इससे सत्संग भी गया और इस सत्संग के अभाव से श्रौत और स्मार्तकर्म भी छूटे, क्योंकि बिना विद्वानों के सहयोग के ये काम अकेले करने के नहीं है। विद्वानों के असहयोग से पुत्रेष्टि आदि करके

(शेष पृष्ठ ८ पर)

११ जून जन्म दिवस पर विशेष

आजादी के दीवाने श्री रामप्रसाद बिस्मिल

लेखक : जगदीश प्रसाद एरन, नीमच

छेड़ने पर मौन भी वाचाल हो जाता है दोस्त,
टूटने पर आइना भी काल हो जाता है दोस्त।
मत करो ज्यादा हनन तुम आदमी के खून का,
जल के काला कोयला भी लाल हो जाता है दोस्त।

अपनी जन्म भूमि के बन्धन कटवाने मे अनेक माताओं के सपूतों ने सर पर कफन बांधे। अनेकों ने अपनी जवानियां जेल के सीकचों में बिता दी, तथा अनेकों ने हंसते हंसते फांसी के फन्दे को पुष्प हार की तरह वरण किया। उन्हीं हुतात्माओं में अमर शहीद पं० श्री रामप्रसाद बिस्मिल का नाम भी बड़े गौरव के साथ लिया जाता रहेगा।

श्री रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल ११ संवत १८५४ को शाहजहांपुर के एक साधारण परिवार में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री मुरलीधर तिवारी था माता पिता के लाड़ले होने से आप बचपन से ही नटखट रहे। माता पिता का अत्यधिक प्यार व ठीक संगत न मिलने से आपकी शिक्षा केवल आठवीं तक ही हुई। तथा आप कई गन्दी आदतों के शिकार हो गये।

भारत माता के इस सपूत के भाग्य ने पलटा खाया। उनके मकान के पास ही आर्य समाज मन्दिर था। वे वहां के एक सच्चरित्र पण्डित जी के पास बैठने लगे। धीरे-धीरे इनकी सब बुरी आदतें छूट गईं व अधिकांश समय ईश्वर स्तुति, भजन पूजन व पढ़ने मे लगने लगा महाशय मुन्शी इन्द्र जीत जी ने आपको सत्यार्थ प्रकाश पढने को दिया। जिसे पढ़कर आपका जीवन ही बदल गया। वे कट्टर आर्य समाजी हो गये, तथा उनकी काया कुन्दन की तरह निखर उठी। आपने एक आर्य कुमार सभा की स्थापना की, जिसके माध्यम से सभायें व शेरो शायरी करने लगे।

इन्ही दिनों वहां एक आर्य महोपदेशक पं० सोमदेव जी पधारे। इन्हें आप अपना गुरु मानने लगे। उस समय आर्यसमाज देशके स्वतन्त्रता सैनानियों की संस्था बन चुकी थी। महात्मा गांधी ने कई बार कहा भी है कि आर्य-समाज के रूप मे उन्हें आजादी के दीवानों की बनी बनाई मिशनरी मिल गई। ऐसे समय मे आर्य समाज के सम्पर्क में आकर भला बिस्मिल कैसे चुप रह सकते थे।

सन् १९१६ मे लाहौर षडयन्त्र के कारण भाई परमानन्द जी को फांसी की सजा सुनाई गई तो आपने अपने गुरु के चरणो में मस्तक रखकर अंग्रेजो को अच्छा सबक सिखाने की शपथ खाई। आपको एक सम्पन्न तरुण से पिस्तौल भी प्राप्त हो गया। जिसे पाकर आप प्रसन्न हुए, किन्तु वह खराब निकला। उस समय आपकी आयु केवल १८ वर्ष की थी, किन्तु आर्य कुमार सभा व कांग्रेस के अधिवेशन मे भाग लेने आप लखनऊ गये तथा वहां कई नेताओं से परिचय किया। एक नव परिचित सज्जन के माध्यम से आप क्रान्तिकारी संस्था के सदस्य बन गये। कुछ दिन बाद छोटी बहन के विवाहोत्सव पर आप घर आये नया पिस्तौल खरीदने के लिये माता से १२५ रु० लेकर ग्वालियर चले गये। जहां आपने एक छर्रे वाली टोपीदार बन्दूक खरीदी, किन्तु जानकारी न होने से एक बार फिर धोखा खा गये। फिर आपने काफी रुपया खर्च कर एक पुलिस अधिकारी की पिस्तौल खरीद ली तथा एक अंग्रेज पुलिस अधिकारी को गोले से उड़ा दिया। इस प्रकार आपने और भी कई अस्त्र-शस्त्र एकत्रित किये।

गुप्त संस्था की भनक खुफिया पुलिस को लग गई। पण्डित रामप्रसाद को एक सिपाही अस्त्र दिखाने के बहाने एक पुलिस अधिकारी के बंगले पर ले गया किन्तु सन्देह होने पर ये वहां से भाग गये। थोड़े समय बाद इनके अस्त्रों शस्त्रोंकी मरम्मत करने वाले मिस्त्रीको पुलिस ने जा घेरा तथा उसने सारा भेद बता दिया। पुलिस अधिकारी सतर्क हो गये। व नाका बन्दी शुरू हो गई। इस समय दल का एक सदस्य भी पुलिस से जा मिला। क्रान्तिकारियों की पकड़ धकड़ शुरू हो गई। जिससे बिखर गया वह दल भाग गया। श्री बिस्मिल भी उ० प्र० की सीमा लांघ मध्य प्रदेश में एक किसान के रूप में कार्य करने लगे। यहां इनका स्वास्थ्य ठीक हो गया तथा रंग काला पड़ गया।

थोड़े दिन बाद २१ मील पैदल चल कर आप अपनी मातृभूमि शाहजहांपुर पहुंचे किन्तु पुलिस वालो द्वारा पहचान लिए जाने पर उन्हें चकमा देकर फिर ३५ मील पैदल चल कर गायब हो गये। कुछ वर्षों बाद जब गुप्त संस्था पर से सभी प्रकार के प्रतिबन्ध हटा दिये तो वे वापस शाहजहांपुर पहुंचे तथा एक कारखाने में मैनेजर के स्थान पर नौकरी कर ली।

कुछ समय बाद आपने नवयुवकों के सहयोग से पुन: हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के नाम से एक क्रान्तिकारी संगठन बनाया। उत्तर प्रदेश मे उसकी शाखायें खोली गईं। एक अखबार भी निकाला जाने लगा। इस सब काम के लिए धन की आवश्यकता थी। अतः ९ अगस्त सन १९२५ की अन्धेरी काली रात मे सहारनपुर लखनऊ पैसेन्जर को लखनऊ के निकट काकोरी नामक स्थान पर रोककर आपके दल ने लूट लिया। इससे बारह हजार रुपया हाथ लगा।

पुलिस को इस सरकारी खजाने को लूटने वालों का पता लग गया। कानपुर, लखनऊ, वाराणसी, आगरा इलाहाबाद आदि मे कई गिरफ्तारियां हुईं। हमारे जन नायक श्री बिस्मिल भी गिरफ्तार हो गए। ४३ लोगों के नाम वारन्ट थे जिनमे से ४२ गिरफ्तार हो गये, केवल आजादी के परवाने श्री चन्द्रशेखर आजाद फरार थे।

४ जनवरी १९२६ को मुकदमा शुरू हुआ व ६ अप्रैल को फैसला सुना दिया गया। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां राजेन्द्र लाहिड़ी व रोशनसिंह को फांसी की सजा हो गई। १५ अभियुक्तों को ३-३ साल की सजा हुई। बाकी प्रमाण के अभाव में छोड़ दिये गये। अपील करने पर कुछ लोगों की सजा और बढ़ा दी। श्री राजेन्द्र लाहिड़ी व रामप्रसाद बिस्मिल को १७ दिसम्बर को फांसी दे दी गई।

मरते समय बिस्मिल का वजन ४ पौंड बढ़ गया था। धन्य है देश पर मर मिटने वाले शहीदों को। उन्हें शत शत नमन।

युवा शक्ति–राष्ट्र शक्ति

डा. धर्मपाल ए/एच-१६ शालीमार बाग दिल्ली

भारतवर्ष मे पिछले एक दशक से भी अधिक समय से राजनीतिक अस्थिरता उखाड़, पछाड़, आपाधापी और कुण्ठा और निराशा का वातावरण बना हुआ है। यह स्वाभाविक ही है कि इसका प्रभाव हमारी शक्ति पर भी पड़ा है। युवा शक्ति वास्तव मे राष्ट्र की शक्ति है। उनको यदि सही मार्ग दिखाया जाये तो वे राष्ट्र के कल्याण के लिए तथा उसकी उन्नति के लिए अनेक स्रोत खोज सकते हैं। तथा देश को सम्पन्नता एव समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर कर सकते हैं। परन्तु यदि उन्हे सही मार्ग न दिखाया जाये तो वे ही युवा सामर्थ्यवान होते हुए भी पराजित मनोवृत्ति के शिकार होकर गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं। आज जो देश मे अलगाववाद, आतंकवाद एव दगा-फसाद हो रहा है, उसमे मस्तिष्क चाहे जिसका हो परन्तु हाथ और पैर युवा और किशोर आयु के बालको के ही हैं। विश्वविद्यालयो मे अनेक स्थानों पर तोड़-फोड़ तथा नेतृत्व बदलने की मांगें उठती हैं। बड़ो का अपमान होता है। यह सब इस दिग्भ्रमित युवा शक्ति को सही मार्ग न दिये जाने का ही परिणाम है। यदि सामाजिक, राजनैतिक वैज्ञानिक और कलात्मक स्तर पर निर्णय लेते समय युवाजनो को विश्वास में ले लिया जाये तो निश्चय ही वे उच्छृंखल घटनाओ से दूर रहकर राष्ट्रोन्नति के कार्यों मे सहायक हो सकेंगे।

युवा शक्ति के सायास एव सचेत प्रयास के पश्चात ही हम सुख शान्ति एव समृद्धि के राजपथ पर आगे बढ सकते हैं। देश के सामने अनेक आयाम हैं। युवा शक्ति इन सारे कार्यों मे मानवमूल्यो की सही पहचान मे तथा सच्ची धार्मिक जागृति मे सहयोगी हो सकती है। कई बार स्कूलों, कालेजो मे धार्मिक शिक्षा तथा नैतिक शिक्षा की ओर ध्यान ही नही दिया जाता। कर्म और ईश्वर की तो बात ही नहीं कही जाती और इसका परिणाम होता है हड़तालें, तोड़फोड़ तथा व्यवस्थाओ का विरोध। आवश्यकता इस बात की है कि युवा शक्ति का सही मार्गदर्शन किया जाये। यदि यह बात कही जाये कि युवा वर्ग दोषी है तो शायद हम उनके साथ न्याय नही कर रहे हैं। उनमें, जोश और ऊर्जा होती है। इस जोश और ऊर्जा का सदुपयोग भी किया जा सकता है और दुर्पयोग भी। हमारे राजनेता, अध्यापक, धर्माधिकारी अपने स्वार्थों को पूर्ति के लिए उन्हे गलत रास्ते दिखला देते हैं। कुछ लोग मजहब के नाम पर राष्ट्रीय एकता को विघटित कराते है उनकी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। धर्मान्धता उनकी भावनाओ को ईंधन देती है और वह बिना सोचे समझे स्वार्थी धर्माधिकारियो के आदेश पर कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं।

हम कहते तो हैं, सब समान है, सब भाई भाई हैं, हमे सबका कल्याण करना है हमे विश्व का कल्याण करना है, हम सभी को समान सुविधायें देंगे, पर यह सब भाषणो तक ही सीमित रहता है। हमारे अगुआ केवल भाषण देते हैं। वे न तो कोई रचनात्मक काम स्वयं करते है और न ही इस युवा पीढी को ऐसा कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। वे केवल इतना ही सोचते हैं कि किस प्रकार हम प्रकाश में बने रहे, हम दूसरो से ऊपर बने रहें। स्वतन्त्र भारत की कल्पना जो हमारे वीर शहीदो ने की थी, वह तो आज बहुत पीछे छूट गयी है। राष्ट्रहित पीछे छूट गया है। स्वहित और राजनैतिक समीकरण आगे आ गये हैं। मत, मजहब, सम्प्रदाय, क्षेत्रीयता, जातीयता और भाषायी विवाद उभर कर ऊपर आ रहे हैं।

युवा शक्ति शान्ति, स्वतन्त्रता और समानता के लिए बहुत बड़ा कार्य कर सकती है। युवा शक्ति देश की आर्थिक असुरक्षा को समाप्त करने में अपनी कर्मण्यता और स्वरोजगार की भावना के आधार पर महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है। युवा शक्ति का योगदान विकलांगों और वृद्धों की सेवा में लिया जा सकता है। अनेक वृद्ध भी सामाजिक निर्माण की भूमिका में उपयोगी हो सकते हैं। हमे इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

युवा शक्ति राष्ट्र के निर्माण के साथ-साथ मानवता के निर्माण मे भी बहुत उपयोगी हो सकती है। आर्यसमाज ने सदैव ही इस दिशा में गम्भीरता पूर्वक विचार किया है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सार्वदेशिक आर्य वीर दल का विशाल राष्ट्रीय शिविर देश की राजधानी दिल्ली में देश के जाने-माने व्यायामाचार्य एव सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सचालक डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन मे आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में वास्तव मे ऐसे मनुष्यो का निर्माण किया जायेगा जो देश, जाति और धर्म के लिए समर्पित हो। नवयुवकों मे आसन, प्राणायाम, कराटे, आत्मरक्षण, सन्ध्या, यज्ञ, सत्सग, बौद्धिकज्ञान चर्चा, सयम तथा देशभक्ति के प्रवचनो द्वारा सेवाभावना की प्रेरणा दी जायेगी।

युवा शक्ति से तात्पर्य केवल युवको से ही नही है। हमारी बेटिया और बहनें भी युवकों की भांति ही राष्ट्र निर्माण मे अपना सहयोग सदा से देती आयी हैं। इन वीरांगनाओ के विकास के लिए भी आर्य वीरांगना दल का एक शिविर आर्य समाज मन्दिर तिलक नगर, नई दिल्ली-१८ मे ३१ मई से ७ जून १९९२ तक लगाया जा रहा है। इस शिविर के माध्यम से युवति बहन अपने को कर्तव्य का बोध कराने, राष्ट्रीय चेतना जागृत कराने, अनुशासित जीवन तथा आत्मरक्षण के लिए सशस्त्र प्रशिक्षण दिया जायेगा। उनमे शारीरिक क्षमता के साथ-साथ चारित्रिक बल, बौद्धिक विकास तथा आर्य संस्कृति की भावना को भी जागृत किया जायेगा।

इस प्रकार के शिविर प्रतिवर्ष लगते हैं। परन्तु ७ जून १९९२ से २१ जून १९९२ तक महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मन्दिर, हरि नगर, नई

(शेष पृष्ठ ९ पर)

विदेश समाचार

महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद

बैंकोक की थाई भाषा में

गत मई मास के प्रथम सप्ताह मे हवाई जहाज द्वारा सिंगापुर, थाइलैण्ड और होंगकोंग जाने का अवसर मिला।

सर्व प्रथम सिंगापुर मे वहाँ आर्य समाज मन्दिर मे कार्यकर्ता और उन के परिवार के सदस्यो से दिन के समय पर भेंट की। लोगो ने कहा आर्य समाज का कार्य अच्छी तरह चल रहा है। फिर प्रधान जी के घर पर गया तो वे घर नहीं थे, पर उनकी माताजी ने सत्कार किया और कहा कि "कोई भी कठिनाई हो तो यहाँ चले आवें।" यहाँ के समाज मे भी अतिथियो के ठहरने के लिए अनेक कमरे है।

सिंगापुर से थाईलैण्ड के बैंकाक नगर मे पहुंचने पर वहां के आर्यसमाज के अध्यक्ष श्री राम पलट पाण्डे जी को फोन किया तो, वे होटल ही मे अपने सुपुत्र श्री नरेन्द्र जी के साथ मुझसे मिलने आए। वे मिलनसार और हंसमुख भी हैं। आप भारत से यहां पर १९५६ मे पधारे और तभी से वहां के आर्य समाज की सेवा विभिन्न पदो से करते आए हैं।

वहाँ पर प्रचारार्थ हेतु आर्यसमाज के कई विद्वान पधारे थे, उन्होने श्री पांडे जी और अन्य कार्यकर्ता महानुभावो से वहा की 'थाई' राजकीय भाषा मे महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया था। श्री पांडे जी ने वहा के शिक्षा विभाग के उप डायरेक्टर प्रो० प्रधान सनानक्षयानुकूल जी ने सन १९७५ मे जब भारत और समस्त विश्व मे आर्य समाज शताब्दी मनाई जा रही थी तभी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से थाई भाषा मे अनुवाद किया। वहा के आर्य समाज भवन मे इस अनुवादित ग्रन्थ को देखकर मन गदगद हो गया। प्रकाशन प्रभावशाली है। इस कार्य के लिए प्रधान जी को मैंने बधाई दी थी।

इस देश की राजकुमारी श्री चुलालकों यूनिवर्सिटी मे आचार्य सत्यव्रत शास्त्री जी से संस्कृत का अध्ययन किया करती थी। राजकुमारी जी ने थाई भाषा ही मे सत्यार्थ प्रकाश का पठन किया। प्रो० सत्यव्रत शास्त्री जी नई दिल्ली भारत मे यूनिवर्सिटी मे उप कुलपति के रूप मे कार्यरत थे।

यह ग्रन्थ थाईलैण्ड के ७३ इलाको, विश्वविद्यालयो और सभी संस्थाओ को प्रदान किया गया। बैंकोक आर्य समाज ने इस कार्य को करने मे कोई कसर नहीं रख छोडी। इस समाज मे प्रति रविवार को यज्ञ सत्संग के बाद सहभोज का आयोजन किया जाता है। दिवस काल मे श्री शिवनारायण सिंह जी के पास प्रधान जी के साथ जाकर उनके नवीन निर्मित निवास भवन गृह मे यज्ञ और उद्घाटन विधि करने का मौका प्रदान किया गया था। मुझे और श्री पाण्डे जी को यह भार सौंपा गया था। श्री शिवनारायण सिंह जी एक प्रभावशाली व्यापारी है। यहां से होकर होंकोंग और काबलुन टापुओ की यात्रा करने का आनन्द प्राप्त हुआ। यहां पर बीस हजार हिन्दू हैं पर भारतीय भाषाओ को जानने वाले ३० हजार प्रवासी भारतीय हैं।

होंकेग टापू के रेडियो स्टेशन द्वारा भारतीय भाषाओं मे कार्यक्रम किये जाते है। हिन्दी भाषा मे श्री मुल जी कार्यक्रम चलाते हैं। आप का कहना है कि "गत १३ वर्षो से आप इस क्षेत्र में लगे हैं। वेद, गीता, रामायण के सम्बन्ध मे भी समयानुसार कार्यक्रम किये जाते हैं। श्री मुल जी के एक सुपुत्र ने सन्यास धारण कर लिया है और प्रचार कार्यों में लगे हैं। श्री के० पी० दसवानी जी जो अनेक संस्थाओ के अध्यक्ष है वहां के प्रवासी भारतीयो का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन स्तर उठाने में लगे हैं। आपके बेटे की सुवर्ण की एक दुकान है जिसका बोर्ड 'आर्य' शब्द से सुसज्जित है। इन तीनो देशों में हमारे प्रवासी भारतीय परिवार के लोग व्यापार, शिक्षा, कला, कौशल और राष्ट्रीय कार्यों मे लगन के साथ रत हैं। अपनी संस्कृति के लिए जागृत हैं: संसार के ३० देशो में अब भी मैं यथा वेदो के आधार पर एकत्व का भाव बताया।

घर लौटने पर जब आर्य सभा मे सभा मन्त्री श्री सत्यदेव प्रियतम जी से भेंट हुई तो उन्होने कहा कि 'होकोंग मे भी आर्य समाज का केन्द्र है', यदि इसका पता पहले से मुझे होता तो जरूर जाता, क्योकि अब तक अमेरिका, कनाडा, लण्डन, दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे नैरोबी आदि देशो मे आर्य समाज के कार्यों को देखने का शुभावसर प्राप्त हुआ। होकोंग मे मुझे रेडियो पर कार्यक्रम करने का आमन्त्रण मिला था पर समय का अभाव रहा, गत ४१ वर्षो से रेडियो पर कार्यक्रम किया करता हू तथा वेदो के प्रचार-प्रसार का कार्य श्रद्धा पूर्वक कर रहा हू।

पण्डित धर्मवीर घूरा, शास्त्री
प्रचारक आर्य सभा मोरिशस
अध्यक्ष मोरिशस हिन्दी लेखक संघ

यमाचार्य का आतिथ्य

(पृष्ठ ५ का शेष)

पुत्र भी पैदा नहीं कर सकना और यदि पैदा हुआ भी तो वह मूर्ख ही रहेगा जो मरने से बदतर है जैसा कि नीति मे कहा गया है—

अजातमृत मूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः।
सकृद्दुःखकरावाद्या वन्तिमस्तु पदे पदे॥ (पंचतन्त्र)

अर्थात पुत्र का न पैदा होना, पैदा होकर मर जाना और मूर्ख रहना (इन तीनों मे से पहले दोनों श्रेष्ठ हैं परन्तु अन्तिम (मूर्ख रहना) श्रेष्ठ नहीं है, क्योकि पहले दो से तो मनुष्य को एक ही बार दुःखी होना पड़ता है परन्तु अन्त की बात से तो उसे पग पग पर दुःख भोगना पड़ता है—अस्तु सन्तान के मूर्ख रहने से पशु आदि धन का संग्रह भी सम्भव नहीं—इस प्रकार उपर्युक्त बातों के अभाव से कोई गृहस्थ न किसी वस्तु की आशा कर सकता है और न किसी की प्रतीक्षा।"

यमाचार्य ने आतिथ्य के महत्व को समझते हुए अर्घ्यपाद्य आदि से नचिकेता का सत्कार ही नहीं किया, अपितु यम ने आस्तिकबुद्धि नचिकेता को अपने गृह पर तीन रात्रि तक निराहार पड़े रहने के प्रतिरूप आत्मप्रायश्चित के रूप मे तथा अतिथि की प्रसन्नता के लिए प्रति रात्रि एक-एक वर अर्थात् तीन वर मांगने के लिए नचिकेता से कहा—

'तिस्रोरात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मे
अनश्नन् ब्रह्मन् अतिथिर्नमस्यः।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु
तस्मात् प्रति त्रीन वरान् वृणीष्व॥ १। १। ९॥

हे ब्रह्मवित् विद्वान अतिथि! आपको मेरा प्रणाम हो। हे नचिकेता आप नमस्य हैं, मेरे प्रणाम योग्य हैं, मुझे आपका सत्कार करना चाहिये था। परन्तु आप तीन रात्रि तक निराहार मेरे द्वार पर पड़े रहे अतः प्रायश्चित रूप मे—जिससे मैं अतिथि निरादर के पाप से मुक्त हो सकू, मेरा भी कल्याण हो जाए, आप प्रति रात्रि के हिसाब से एक-एक वर अर्थात तीन वर मांगने की मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।

नचिकेता ने कठोपनिषद की अग्रिम कथा के अनुसार यमाचार्य से ऐहलौकिक तथा पारलौकिक वरों की याचना की। प्रथम वर में पितृलोक-क्रुद्ध पिता की प्रसन्नता तथा द्वितीय वर मे यज्ञाग्नि विज्ञान के द्वारा स्वर्ग-भौतिक शरीर मे सुख विशेष की प्राप्ति की याचना की। ये दोनो वर ऐहलौकिक वर थे, तृतीय वर पारलौकिक था—आत्मतत्व का ज्ञान।

इस प्रकार यमाचार्य ने "अतिथिः देवो भव" "अतिथिः नमस्यः" के महत्व को अपने आचरण से उपस्थित किया। उपनिषद् काल से भी पूर्व से चला आ रहा यह अतिथि सत्कार भारतीय संस्कृति का आज भी वैसा ही अभिन्न अंग है, प्रत्येक मनुष्य का आवश्यक कर्त्तव्य है।

स्वास्थ्य सुधा—

सलाद खाएं, मोतियाबिंद भगायें

—डा० अखिल चतुर्वेदी

तकरीबन ८० वर्ष पहले मोतियाबिन्द के रोगी को खासी परेशानी झेलनी पड़ती थी। आपरेशन के बाद भी उसे करीब एक सप्ताह तक अस्पताल में ही रहना पड़ता था। समय के साथ आये बदलाव के चलते अब मोतियाबिंद का आपरेशन बहुत आसान हो गया है। आपरेशन के बाद, उसी दिन आराम से घर लौटा जा सकता है। आपरेशन के दूसरे दिन से ही आंख में सुधार नजर आने लगता है। बहुत पहले, यह जरूरी नहीं था कि आपरेशन के बाद आंख की रोशनी बढ़ ही जाये।

मोतियाबिंद होते ही आंख के पारदर्शक लेंस में धुंधलापन छा जाता है। यही लेंस बाहरी रोशनी भीतर पहुंचाता है। मोतियाबिन्द में यह बाहरी रोशनी भीतर नहीं पहुंच पाती। दीखना बहुत कम हो जाता है। चकाचौंध वाली जगहों पर मोतियाबिंद का रोगी परेशानी महसूस करने लगता है। कभी-कभी तो एक की जगह दो-दो चीजें नजर आने लगती है। यही वजह है कि चश्मे का नम्बर भी बार-बार बदलना पड़ जाता है।

अक्सर यह बीमारी ज्यादा उम्र के लोगों मे पाई जाती है। ५० से ६० वर्ष के लोगों में मोतियाबिंद ज्यादा देखने में आता है। अमेरिका में पिछले वर्ष १५ लाख लोगों को मोतियाबिंद का आपरेशन करवाना पड़ा। यह भी देखा गया है कि गर्भावस्था में बच्चे में, नजर की खराबी बढ़ जाती है। बाद मे यही धीरे-धीरे मोतियाबिंद में बदल जाता है। आंख पर चोट लगने डायबटीज से या जन्मजात भी यह बीमारी हो सकती है।

मोतियाबिंद के आपरेशन के दौरान धुंधले लेंस को निकालकर, नया लेंस लगा दिया जाता है। इस तरह के तकरीबन ९५ फीसदी आपरेशन कामयाब रहते हैं। आज यह सहूलियत हमारे देश के तमाम बड़े अस्पतालों में मौजूद है।

मोतियाबिंद की गिरफ्त में सिगरेट पीने वाले लोग ज्यादा आते हैं। सिगरेट का निकोटीन आंख की झिल्लियां खत्म कर लेंस को कठोर बना देता है। इससे उस पर धब्बे पड़ने लगते हैं। मोतियाबिंद लम्बे समय तक बना रहता है तो नजर धीरे धीरे इतनी कमजोर पड़ जाती है कि फिर अन्धा होने के करीब आ पहुंचता है।

दुनियां भर में हर वर्ष तकरीबन पांच करोड़ लोग इस बीमारी के शिकार हो जाते हैं। अकेले अमेरिका में ही करीब १५ लाख लोग हर वर्ष मोतियाबिंद के शिकार हो जाते हैं।

इस बीमारी से बचने के लिए फलों का रस और हरी सब्जियां ज्यादा खानी चाहिए। अमेरिका के ब्राइटन केन्द्र में, ४० से ७० वर्ष की उम्र वाले ११२ लोगों में, मोतियाबिंद पर आहार के असर का अध्ययन किया गया। जो लोग एक या डेढ़ फल और दो सब्जियों से कम खाते हैं, उनमें मोतियाबिंद की उम्मीद तीन गुना बढ़ जाती है। जो लोग न हरी सब्जियां खा पाते हैं और न ही फल ले पाते हैं, उन्हें मोतियाबिंद का खतरा सात गुना बढ़ जाता है। जिन लोगों के खाने मे विटामिन सी का इस्तेमाल २० फीसदी से कम होता है, उन्हें मोतियाबिंद का खतरा चार गुना बढ़ जाता है। दरअसल विटामिन सी आंख के लेंस पर इकट्ठा हुए रसायन को हटाकर लेंस को पारदर्शक बना देता है। इससे नजर की रोशनी तेज होती है।

इस अध्ययन के दौरान यह भी पाया गया कि जो लोग टमाटर, गाजर, मूली, सन्तरे और हरी सब्जियों का इस्तेमाल नहीं करते, उनमें मोतियाबिंद का खतरा छः गुना बढ़ जाता है।

मोतियाबिंद के खतरे से बचने का सबसे आसान तरीका यह है कि सलाद ज्यादा से ज्यादा खायें।

अग्नि प्रक्षेपास्त्र के परीक्षण से देशवासियों में खुशी की लहर

भारत ने दूसरी बार २५०० किलोमीटर तक जमीन से जमीन में मार करने वाले अग्नि प्रक्षेपास्त्र का २९ मई को सफल परीक्षण किया है। इस वैज्ञानिक उपलब्धि से भारत ने दुनिया के छः देशों में अपना स्थान बना लिया है, जिनके पास मध्यम दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश की इस सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहा कि इस सफलता से पूरे एशिया महाद्वीप में भारत की सामरिक एवं प्रहारक शक्ति का व्यापक प्रभाव पड़ेगा। इस सफलता से राष्ट्रवासियों के इस विश्वास को बल मिला है कि आनेवाले ८-१० वर्षों में भारत सामरिक क्षेत्र में दुनिया का शक्तिशाली राष्ट्र बन जायेगा।

प्रवेश सूचना

—महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा में १ जुलाई १९९२ से नए सत्र हेतु प्रवेश होगा। एतदर्थ विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश पत्र हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें।

इस विद्यालय में चार वर्ष के पाठ्यक्रम में वेद, संस्कृत-व्याकरण, संस्कृत साहित्य, दर्शन शास्त्र एवं उपनिषद और स्वामी दयानन्द जी महाराज के ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। अध्ययनकाल में छात्र को अपनी ओर से किसी भी प्रकार का व्यय नहीं करना पड़ता। भोजन-आवास-वस्त्र-दवाई पुस्तकें एवं लेखन सामग्री इत्यादि की सारी व्यवस्था विद्यालय की ओर से निःशुल्क है। विद्यार्थी का लक्ष्य आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करना होना चाहिए।

आचार्य

—म० द० अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा जि० राजकोट (सौराष्ट्र)-३६३६५०

(२)

—आर्य शिक्षा प्रेमी सज्जनों के ८ वर्ष या उससे अधिक आयु और सातवीं कक्षा तक के बालकों के लिए, सेवका ग्राम की पवित्र भूमि पर एक "आर्य संस्कार बाल आश्रम" की स्थापना की गई है। जो भी अभिभावक अपने बालक को इसमे प्रवेश कराना चाहते हैं, वे पत्र व्यवहार से या प्रत्यक्ष मिलकर संस्था से प्राप्त आवेदन पत्र भर के निम्न पते पर भेज सकते हैं।

—जगदीश चन्द्र आर्य
व्यवस्थापक-आर्य संस्कार बाल आश्रम
सेवका, सोनीपत (हरियाणा)

युवा शक्ति

(पृष्ठ ७ का शेष)

दिल्ली-९४ में लगाया जाने वाला शिविर अभूतपूर्व शिविर होगा। इस महान कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए सभी भाई बहनों से विनम्र निवेदन है कि वे तन, मन, धन से सहयोग करें तथा क्रास बैंक ड्राफ्ट, एव नकद धनराशि "आर्य वीर दल" के नाम से सभा कार्यालय में भिजवायें। जो दानी सज्जन आटा, चावल और देसी घी के टीन देना चाहें वह आर्य समाज दीवान हाल, आर्य समाज बिरला लाईन्स, आर्यसमाज हनुमान रोड, आर्यसमाज तिलक नगर में यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें।

अतीत स्वयं उत्तर है, उस पर सवाल नहीं होते।
मिट्टी की कोख में डूबे बिना गुलाब नहीं होते॥
चिरागों की तरह जवानी को जलाना होता है।
मुट्ठियां बांध लेने भर से तो इन्कलाब नहीं होते॥

पुस्तक समीक्षा

सन्ध्या भास्कर

व्याख्याता—आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार

२/२६ आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार

मूल्य—तीस रुपए

छात्रों के लिए १५) रु०

महर्षि दयानन्द सरस्वती से पूर्व और पश्चात् पूजा पद्धति में नाना विकृतियां आ गई और एक ईश्वर पूजा से हटकर नाना भगवानों की उपासना होने लगी। स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कहा जिसकी उपासना करनी है प्रथम उसकी स्तुति विवेचना करो फिर प्रार्थना करो।

प्रार्थना करने वाला कमजोर होता है जिससे प्रार्थना की जाय वह अपने में सामर्थ्यवान होना चाहिए तभी प्रार्थी की प्रार्थना सुनी जाकर समीप जाकर अपनी बात कहना उपासना है।

सन्ध्या के विकृत रूप को सही दिशा देकर इस ब्रह्म यज्ञ को किया जाय।

शन्नो देवी मन्त्र से तीन कामनाएं की—

उनकी प्राप्ति की सफलता साधनों द्वारा और उसकी सिद्धि अन्त में सन्ध्या का प्रभाव पूर्णत्व है।

ब्रह्म यज्ञ के अन्त में नम शम्भवाय' में शिव शम्भु शंकर शिवतर इन चार नामों को पुकार कर सच्चे शिव के प्रति अगाध श्रद्धा का परिचय दिया है।

श्री आचार्य धर्मवीर जी विद्यालंकार के जीवन का सन्ध्या एक अनोखा अनुभव पूर्ण विवेचना है। जिसे सविस्तार इस पुस्तक सन्ध्या भास्कर' में विशिष्ट शैली में दिया है।

सन्ध्या न करने से दण्ड विधान सन्ध्या से लाभ स्थान विशेष फिर सन्ध्या की विधि उपासना से पूर्व स्थिति पर अच्छी विवेचना की है मन्त्रों के अर्थों को आधिदैविक, आधिभौतिक आध्यात्मिक रूप देकर विषय को सरल सुबोधगम्य बनाकर भक्त के समझने योग्य व्याख्या की है। बुद्धि का स्थिरता, दृढ़ता की प्रार्थना उपासक करता है और उस ब्रह्म की कृपा पाने की प्रार्थना करता है। इस प्रकार ब्रह्म पूजा की विधि विधान परक व्याख्या कर साधारणी करण करके अल्प बुद्धि वाले मानव को समझने में लेखक का प्रयास सफल है।

सन्ध्या की पुस्तक तो बहुत देखी पढ़ी, परन्तु आचार्य जी की लेखनी ने एक नयी दिशा दी है। यह पुस्तिका अधिक से अधिक लोगों के दृष्टिपथ से गुजरे और विवेचना कर लाभान्वित हो तभी लेखक का पुरुषार्थ सफल होगा—सम्पादक की शुभकामनाओं के साथ— —सम्पादक

जंगली जाति थारुओं के बीच वैदिक धर्म का प्रचार

नेपाल एवं प० चम्पारण के जंगली तराई क्षेत्रों में 'थारु' जाति के लोग बसे हुए हैं इनकी गिनती भी पिछड़ा जातियों में है। मार्च के प्रथम सप्ताह में प० चम्पारण दोन क्षेत्र में (सुदूर जंगली क्षेत्र) थारुओं की बस्ती में जिला सभा के प्रचारक श्री रामचन्द्रसिंह क्रान्तिकारी (नेपाली) श्री दीनानाथ जी आर्य श्री नागेश्वर जी आर्य श्री पारस प्रसाद आर्य भजनोपदेशक आदि जिला सभा के कार्यकर्ताओं द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार सम्पन्न हुआ। हजारों की संख्या में थारु स्त्री पुरुष सभा में उपस्थित हुए एवं यज्ञ में भाग लिए। थारु नवयुवकों को यज्ञोपवीत भी दिया गया उन्हें अभक्ष्य पदार्थ छोड़ने की प्रतिज्ञा भी कराई गई। थारुओं के बीच वैदिक धर्म का प्रचार का प्रभाव अच्छा पड़ा।

—बी के शर्मा मन्त्री

चम्पारण जिला सभा

वैदिक धर्म में दीक्षित

आर्य समाज, उन्नाव के प्रांगण मे रविवार दिनांक १-५-९२ को जनपद उन्नाव के ग्राम दबौली के एक मुस्लिम परिवार ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया। श्री राधेश्याम शर्मा के पौरोहित्य में आर्य समाज के प्रधान श्री दयाशंकर त्रिवेदी व मन्त्री रविशंकर शर्मा श्री रामभारती, राधाकृष्ण त्रिवेदी, राम निवास सिंह, राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल आदि गणमान्य सज्जनों की उपस्थिति में शुद्धि संस्कार सम्पन्न हुआ तथा उनका नामकरण कमरुद्दीन से कर्मवीर सिंह श्रीमती कासिमा बेगम से श्रीमती कुसुमावती, कु० शबनम से कु० सुमन तथा कु० सबीना से कु० सुनीता किया गया। ज्ञातव्य है कि श्री कर्मवीर सिंह के पितामह रामरतन सिंह ने किसी कारणवश इस्लाम मत स्वीकार कर लिया था। श्री श्रीकान्त शुक्ल दबौली की सद्प्रेरणा से उक्त परिवार अपने घर वापस आ गया।

आर्यवीर दल की स्थापना

ग्राम गुडुबहाल जि० रायगढ (म० प्र०) में २८ अप्रैल से १ मई तक श्र० कपिलदेव व्यायाम शिक्षक द्वारा आर्य वीर दल का शिविर लगाया गया। दीक्षान्त समारोह मे गुरुकुल आश्रम सर्नाबाया के बच्चो द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया गया जिसे हजारो लोगों ने देखा और निश्चय किया गया कि इस क्षेत्र मे युवकों के आर्य वीर दल की स्थापना होनी चाहिए। तदनुसार १ मई को श्री छोटाराम मन्त्री की अध्यक्षता मे आर्यवीर दल का गठन हुआ।

शाखा सञ्चालक—विनोद प्रसाद आर्य, मन्त्री—भानुप्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष—देवप्रसाद आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—चिन्तामणि आर्य।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्री धर्मसिंह जी मुखायाम एवं स्थानीय आर्य समाज के अधिकारियो का बहुत योगदान रहा।

मन्त्री, आर्य समाज गुडुबहाल

वेद प्रचार

दि० १९-४-९१ रविवार को आर्य समाज कठूआ के एक श्रद्धालु कार्यकर्ता श्री मुलखराज जी के निवासस्थान कृष्णानगर कालोनी मे भव्य यज्ञ समारोह किया गया। जिसमे आर्यसमाज कठूआ के अधिकारीगण, समस्त सदस्यगण शहर के प्रमुख नागरिको ने उत्साह से भाग लिया। प्रात १० से ११ बजे तक हवन यज्ञ हुआ जिसे आर्य समाज के पुरोहित श्री विनोद शास्त्री जी ने सम्पन्न करवाया। ११ से १ बजे तक विशाल पण्डाल में भजन व प्रवचन के कार्यक्रम रहे जिसमे निम्नलिखित महानुभावों ने श्रद्धा से भाग लिया—डा० वेद कुमारी घई जी डा० जनक गुप्ता जी श्री जगराम 'आर्य' जी। १ बजे से ४ बजे तक प्रीतिभोज रहा। कठूआ क्षेत्र मे यह भव्य समारोह अपनी एक छाप छोड गया। इस समारोह ने अन्य व्यक्तियो को भी हवन यज्ञ की प्रेरणा।

—सुरेन्द्र

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ११०७५/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१४-६-१९९२) पूर्व भुगतान बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० ५९
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment Licence No. U 93 Post ! N D P.S.O.on 11, 12-6 1992

अमरीका में जगमोहन ने कश्मीर की गड़बड़ी में पाक-हस्तक्षेप के सबूत दिखाए

न्यूयार्क, ३० मई। जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल जगमोहन ने अपनी आलोचनाओं का यह कह कर खण्डन किया है कि आलोचक अन्य बातों के साथ-साथ इस बात पर भी ध्यान दें कि किस तरह अमरीका को खास एशिया में मात्र दो दिनों के उत्पात से सेना का प्रयोग करने पर बाध्य होना पड़ा।

श्री जगमोहन ने न्यूयार्क में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा—ऐसी हिंसा हम कई वर्षों से झेल रहे हैं। सम्वाददाता सम्मेलन का आयोजन भारतीय जनता पार्टी के परदेशी मित्र संगठन की ओर से आयोजित किया गया था।

श्री जगमोहन ने प्रश्न किया कि आप कैसे फर्क कर सकते हैं ज्यादती क्या है उन्होंने भाव भंगिमा के साथ कहा कि हवा में बार फायरिंग की तो चलेगा, लेकिन चार फायर करना ज्यादती होगी।

उन्होंने कहा कि आलोचना करने वाले भारतीय सेना पर ज्यादतियों का आरोप लगाते रहते हैं लेकिन उनकी इस आलोचना का कोई आधार तो होना चाहिए।

श्री जगमोहन ने कहा कि मुझे दोषी करार देने वाले लोग स्वयं सफाई का मौका न देकर फैसला सुनाने के दोषी हैं।

कश्मीर के पूर्व राज्यपाल ने कहा कि उन्होंने अमरीकी विदेश विभाग में मानवाधिकार सम्बन्धी मामले देखने वाले अधिकारियों एमनेस्टी इंटरनेशनल तथा इस तरह के अन्य संगठनों से बातचीत कर उन्हें कश्मीर की गड़बड़ी में पाकिस्तानी हस्तक्षेप के सबूत दिखाए।

उन्होंने कहा कि उनकी अमरीका यात्रा शुरू होने से पहले ही पाकिस्तान समर्थक और कुछ कश्मीरी कार्यकर्ताओं ने उन्हें 'कश्मीर का कसाई' बताकर शोर किया और अमरीका में प्रवेश की अनुमति न दिए जाने की मांग की। उन्होंने अपनी पुस्तक 'माई फ्रोजेन टर्बुलेंस' इन कश्मीर से अनेकों उदाहरण दिए।

श्री जगमोहन ने पाकिस्तानी घुसपैठ का कारगर तरीके से मुकाबला नहीं कर पाने के लिए नई दिल्ली की वोट की राजनीति को जिम्मेदार ठहराया। श्री जगमोहन ने अपनी इस पुस्तक में इस माह एक और अध्याय जोड़ा है।

इसमें जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जे के एल एफ) के नेता अमानुल्ला खां को गत माह में हुई गिरफ्तारी संयुक्त राष्ट्र महासचिव को लिखे उनके उस पत्र जिसमें यूरोप और अमरीका के सैकड़ों सांसदों को उनके आंदोलन के समर्थन का दावा है, का विश्लेषण किया गया है। पत्र में पूरे कश्मीर पर पांच वर्ष तक संयुक्त राष्ट्र के नियन्त्रण के बाद जनमत संग्रह कराने का आग्रह है।

इस अध्याय में पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ द्वारा एक तकरीर में तीसरे विकल्प का जिक्र किए जाने का उल्लेख है।

इस बारे में श्री जगमोहन का कहना है कि पाक प्रधानमन्त्री का बयान सोचा समझा कदम है या जबान फिसलने का परिणाम। यह बताना मुश्किल है किन्तु कश्मीर के बारे में पाकिस्तान की शायद यह आखिरी चाल हो सकती है।

श्री जगमोहन की राय में तीसरे विकल्प से भले सिख और खालिस्तान के आन्दोलन को उत्साह मिले या न मिले किन्तु स्वतन्त्र इस्लामी कश्मीर गणराज्य की बात भारत के लिए उतनी ही घातक होगी जितनी कि कश्मीर घाटी का पाकिस्तान में विलय।

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्यसमाज ऊधाबाद मथुरा—श्री क्षेत्रपाल आर्य प्रधान, ज्ञानप्रकाश आर्य मन्त्री, श्री सत्यप्रिय आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज सुल्तानपुर पट्टी—श्री भूपसिंह प्रधान, श्री दुर्गासिंह मन्त्री, श्री डा० कृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज सिविल लाइन्स अलीगढ़—श्री शिवस्वरूप प्रधान, श्री रामदीन आर्य मन्त्री, श्री ओमप्रकाश शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज माडल टाउन अम्बाला—डा० देवराज गुप्ता प्रधान, श्री चन्दलाल बतरा मन्त्री, एम. एम मेहता कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज उदयपुर—श्री हनुमानप्रसाद चौधरी प्रधान, श्री हरिनारायण शर्मा मन्त्री, श्रीमती स्नेहलता गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज अशोकनगर दिल्ली—श्री भगतराम आर्य प्रधान, श्री दीनानाथ गुलाटी मन्त्री, श्री मिट्ठनलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज कोटद्वार गढ़वाल—श्री शालिगराम प्रधान, श्री महेन्द्रकुमार मन्त्री, श्री आनन्दप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज अशोकनगर म० प्र०—श्री सी एस. श्रीवास्तव प्रधान, श्री रोशनलाल कोहली मन्त्री, श्री वेदप्रकाश कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज काशीपुर—श्री रवीन्द्र शर्मा शास्त्री प्रधान, मा० गोपालदास मन्त्री श्री शान्तिप्रसाद गोयल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज बीकानेर—श्री मनमोहन भाटिया प्रधान, श्री मोहनलाल अग्रवाल मन्त्री, श्री नरसिंहदास जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर—श्री मेवालाल पिपराईच प्रधान श्री रमेशप्रसाद गुप्ता मन्त्री, श्री तेजप्रतापसिंह गोरखपुर कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज मन्दिर सोलापुर—श्री बलराज कुमार जुल्का प्रधान, श्री बाबूरामसिंह आर्य मन्त्री, श्री चन्द्रकान्त शिंदे कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज शिकोहाबाद जिला फिरोजाबाद उ० प्र०—श्री तोवरनसिंह प्रधान, श्री ब्रह्मानन्द मन्त्री, श्री राजेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज मन्दिर साऊथ मोतीबाग नई दिल्ली—श्री ज्ञानचन्द महाजन ई-७, आनन्द निकेतन प्रधान, श्री सुरेन्द्र कुमार सुराणा ६५/IV डा० वैस्ट मोती बाग मन्त्री, श्री सर्वजीत बजाज ई-८७, आनन्द निकेतन कोषाध्यक्ष चुने गए।

२० दिवसीय ध्यान योग शिविर

२५ मई से १५ जून तक

योगाभिलाषी साधक साधिकाओं को सहर्ष सूचित किया जाता है कि जिनकी योगाभ्यास में पूर्व से रुचि है, साथ ही ग्रीष्मावकाश में साधना में प्रगति चाहते हैं तथा जो ध्यानयोग एवं आसन-प्राणायाम का प्रशिक्षण देने की योग्यता प्राप्त करना चाहते है। उनके प्रशिक्षण हेतु स्वर्णिम अवसर प्रदान किया गया है। अतः आप इष्टमित्रों सहित शिविर में सम्मिलित होकर विशेष लाभ प्राप्त करें। शिविर के अन्त में परीक्षा होगी तथा प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे। यह प्रशिक्षण शिविर पातञ्जल योगधाम, आर्यनगर ज्वालापुर हरिद्वार में स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

शिविर की विशेषतायें—सम्पूर्ण योग दर्शन का क्रमिक पाठ आसन प्राणायाम का व्यक्तिगत निरीक्षण में प्रशिक्षण। यम नियम का व्यावहारिक प्रयोग। मौन-जप, धारणा, ध्यान का गुफाओं में अभ्यास। यौगिक चिकित्सा से रोग निवारण का प्रशिक्षण।

नित्य प्रातः—सायं गंगा स्नान का शुभ अवसर तथा पर्वतीय यात्रा।

विस्तृत जानकारी के लिये संयोजक पातञ्जल योगधाम आर्य नगर ज्वालापुर हरिद्वार से सम्पर्क करें।

—संयोजक

व वर्धमान प्रेस नारायणा नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- जो मुक्ति चाहे वह जीवन मुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि कर्म कर्मों का फल दुःख है उनको छोड़ सुखरूप फल को देने वाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूलकारण है।
- सज्जन लोगों को राग, द्वेष, अन्याय, मिथ्याभाषणादि दोषों को छोड़ निर्वैर प्रीति परोपकार सज्जनता आदि का धारण करना उत्तम है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक २१] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ अषाढ़ कृ० ७ सं० २०४९ २१ जून १९९२

आर्य समाज मन्दिर गिराये जाने पर
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की सरकार को कड़ी चेतावनी

दिल्ली १४ जून। दिल्ली के विकासपुरी स्थित आर्य समाज मन्दिर को दिल्ली विकास प्राधिकरण अधिकारियों द्वारा बिना नोटिस के गत २६ मई १९९२ को गिरा दिए जाने की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कड़ी निन्दा करते हुए कहा—आर्य समाज विकासपुरी के अधिकारियों और दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के बीच पत्राचार बहुत पहले से चल रहा था और डी०डी०ए० ने आर्य समाज के लिए जो शर्तें रखी थीं, समाज के अधिकारियों ने उन्हें पूरा करते हुए लिखित आश्वासन तथा बैंक में जमा राशि की सूचना भी दे दी थी। २४ जनवरी को डी०डी०ए० के कार्यालय से आर्यसमाज के प्रधान को सम्बन्धित भूमि को नियमित करने की सूचना का पत्र भी लिखा गया था। परन्तु अचानक २६ मई को बिना पूर्व सूचना के बुलडोजर लाकर पुलिस के संरक्षण में आर्य समाज मन्दिर तथा औषधालय को जबरदस्ती तोड़ दिया गया। यज्ञशाला के खम्भों को भी गिराने का प्रयत्न किया गया था, यदि वह गिर जाते तो उसके नीचे अनेक लोगों की मौतें हो सकती थीं।

आज विकासपुरी पहुंचकर स्वामी जी ने मामले की जांच करने के बाद एक सार्वजनिक सभा में उक्त विचार व्यक्त किए। उन्होंने यह भी बताया कि इस मन्दिर का शिलान्यास उन्होंने स्वयं किया था, उस समय सांसद श्री सज्जन कुमार और सनातन धर्म सभा के प्रधान श्री रमाकान्त गोस्वामी भी वहां उपस्थित थे।

स्वामी जी ने कहा दिल्ली में लगभग ४०० से अधिक ऐसे स्थल हैं, जहां लोगों द्वारा गैर कानूनी कब्जे करके कबरें और मजारें बनाई गई हैं, परन्तु डी०डी०ए० के अधिकारियों ने उन पर कभी भी नोटिस लेने का साहस नहीं दिखलाया लेकिन आर्य समाज मन्दिर विकासपुरी को जो कायदे कानून के अनुसार बनाया जा रहा था, उसे तोड़ दिया गया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सरकार से इस घटना की पूरी जांच करने और आर्य समाज मन्दिर की क्षति पूर्ति के लिए जोरदार मांग की। उन्होंने गृहमन्त्री भारत सरकार और दिल्ली के उपराज्यपाल से मन्दिर तोड़ने वाले अधिकारियों के खिलाफ भी तुरन्त कार्यवाही की मांग की। उन्होंने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा यदि आर्य समाज की मांग पर ध्यान नहीं दिया गया तो देशव्यापी आन्दोलन छेड़ दिया जायेगा। आर्य समाज हर बड़े से बड़ा बलिदान देकर भी अपने धर्म स्थल की रक्षा करेगा।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

कनाडा में द्वितीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

कनाडा में उत्तरी अमेरिका स्थित समस्त आर्य समाजों की ओर से १६-१७ मई १९९२ को द्वितीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन श्री अमरचन्द ऐरी के संयोजकत्व में हुआ।

१६ मई को प्रातः यज्ञ के पश्चात् झण्डारोहण हुआ उसके पश्चात् सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर ओण्टारियो विधान परिषद् के अध्यक्ष डेविड बारनर को श्री तारा जी द्वारा लिखित पुस्तक "रिलीवेंस आफ वैदिक फिलास्फी इन माडर्न टाइम्स" भेंट की गई। इस पुस्तक का विमोचन श्री ऐरी ने किया

(शेष पृष्ठ २ पर)

ईरान में बहाई मुसलमान को फांसी

हजरत मुहम्मद की आत्मा जहां भी होगी दुःखी होकर सोचती होगी कि आपने दुनिया को क्या इस्लाम दिया और इसके अनुयाइयों ने इसे क्या बनाकर रख दिया है। आज इस्लाम के यह नाम लेवा अलम्बरदार इस बात पर गर्व करने लग गए हैं कि इन्होंने दुनिया के लोगों को स्वतन्त्रता पूर्वक तथा बिना भेद-भाव के सोचने की अनुमति नहीं दी जो कोई इनके विचारों से सहमत नहीं होगा उसे हर प्रकार से तंग किया जायेगा और इतना अधिक कि उसका दम ही घुट जाए और दूसरे ही मिनट में उसकी मृत्यु हो जाए

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

चलो चलो हरिनगर

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के राष्ट्रीय शिविर का रोमांचकारी समापन समारोह

२१ जून रविवार प्रात: ९ बजे से

स्थान—महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मन्दिर, एल ब्लाक हरिनगर, दिल्ली-६४, निकट दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल

अध्यक्षता—**स्वामी आनन्दबोध सरस्वती** (प्रधान सार्वदेशिक सभा)

मुख्य अतिथि—**सुरेन्द्र आर्य** (जय भारत मारुती लि०)

विशिष्ट अतिथि—**महाशय धर्मपाल** (महाशिया दी हट्टी)

श्री सूर्यदेव जी (प्रधान दिल्ल आ० प्र० सभा)

यह अवसर चूक न जाना

आर्यसमाज के युवकों ने राष्ट्ररक्षा के लिए एक बार फिर अंगड़ाई ली आर्य समाज का स्वर्णिम इतिहास पुनः दोहराया जाएगा। शिविर में भाग ले रहे ८०० युवकों व कार्यकर्ताओं ने शपथ ग्रहण की समूचे राष्ट्र में आर्य समाज के कार्यों का जन जागरण होगा।

विशेष आकर्षण आधुनिकतम व्यायाम प्रदर्शन

शिविर में प्राप्त शिक्षण के प्रदर्शन योग आसन लाठी जूडो कराटे कुंगफू, जमनास्टिक, तलवार भाला फरसा, धनुषबाण युद्ध कला के अनूठे प्रदर्शन होंगे जिसे देखकर आप भुला न सकेंगे।

युवा शक्ति का अभाव नहीं रहेगा

आज आर्य वीरों ने सङ्गठित सेवा शक्ति को बढ़ाने का सङ्कल्प लिया है और आर्यवीर दल आर्य समाज में युवा शक्ति के अभाव को दूर करने के लिए दृढ़ सङ्कल्प है। आर्य जन भी अपने कर्त्तव्य का पालन करें इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार पधार कर युवकों को आगे बढ़ने का आशीर्वाद दें।

विराट ऋषि लंगर

समारोह के अन्त में देशी घी का ऋषिलंगर का प्रबन्ध है सभी अपनी अपनी आर्य समाजों से बसों, टेम्पो में बैनर झण्डे लगाकर समारोह स्थल पर पहुँचें।

महामन्त्री	प्रधान संचालक
ब्र० राजसिंह आर्य	डा० देवव्रत आचार्य एम ए बी. ए
अधिष्ठाता दिल्ली .	संचालक .
प्रियतम दास रसवन्त	डा० ओम प्रकाश शर्मा

आवश्यकता

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत आसाम के बोकाजान, डीफू कोपडाआरा और नागालैण्ड के दीमापुर स्थित केन्द्रों में कार्य करने के लिए एक योग्य आर्य समाजी पुरोहित की आवश्यकता है जो संस्कार, यज्ञ, हवन तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रवचन करने में निपुण हो। आवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। वेतन योग्यतानुसार। १५ दिन के अन्दर अन्दर अपना आवेदन पत्र योग्यता व अनुभव के साथ-महामन्त्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के पते पर भेजें।

कनाडा में सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

था। सम्मेलन मे अनेक संगोष्ठियों का भी आयोजन हुआ जिनमें आर्यसमाज का उत्तरी अमेरिका मे प्रचार, सत्सगो को सुरुचिपूर्ण बनाना तथा अन्य धर्मावलम्बियो के साथ आर्यसमाज का सम्बन्ध, इन पर विचार हुआ। आर्य समाज टोराण्टो के अन्तर्गत बनने वाले वैदिक सास्कृतिक केन्द्र का माडल भी प्रस्तुत किया गया और बाद मे लोगोने केन्द्र की भूमि को भी देखा। रात्रि मे सास्कृतिक कार्यक्रम मे बच्चो ने सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किए। १७ मई को आर्यसमाज और युवक, आर्य समाज के साहित्य का अंग्रेजी मे प्रकाशन और वैदिक पुरोहितो को ट्रेनिंग के विषय मे गोष्ठियां हुईं।

इस सम्मेलन मे भारत, दक्षिण अफ्रीका, लन्दन अमेरिका कनाडा तथा गयाना आदि देशो से बड़ी संख्या मे प्रतिनिधि पधारे थे। अन्त मे श्री अमरचन्द ऐरी ने इस सम्मेलन के समापन पर सबका धन्यवाद किया और अगला सम्मेलन १९९३ मे शिकागो में करने की घोषणा की।

मुसलमान को फांसी

(पृष्ठ १ का शेष)

इस्लाम के नाम पर कितने ही निर्दोषो का खून हो चुका है यह कहना कठिन है—तात्कालिक घटना ईरान मे बहाई धर्म के अनुयाई एक व्यक्ति की है जिसे १७ मार्च को अधिकारियो ने बुलाया और उसके पश्चात उसका कुछ पता न चला। इसकी धर्मपत्नी दर दर की ठोकरे खाती रही और अन्त मे ३ अप्रैल को अधिकारियो ने इसे इसके स्वर्गीय पति की वसीयत पकड़ा दी। तब इसे पता चला कि इसके पति को फासी लगा दी गई है क्यो? कोई इसे जवाब देता परन्तु अन्त मे इसे बताया गया कि इसका गुनाह यह था कि वह बहाई विचारधारा का था और ईरान का शिया इस्लाम इस बात की इजाजत नही देता कि कोई मुसलमान इनके ईरान के मान्यता प्राप्त इस्लाम को स्वीकार न करें।

इस कत्ल पर किसे अफसोस न होगा परन्तु प्रश्न यह है कि यह सब हो कैसे सकता है—२१वी सदी को चन्द दिन और हैं ईरान जैसे देश मे इतना अन्धेर हो सकता है कि एक बेगुनाह को इसलिए फासी दे दी जाए कि उसका दिमाग एक दृष्टिकोण को मानता है और दूसरे को नही ताज्जुब होगा कि आज इस आजादी के युग मे इतना कुछ हो सकता है। विचार यह था कि आयात उल्ला खुमैनी की मौत के बाद ईरान मे हकूमत कुछ इनसानियत का ख्याल करेगी। परन्तु देखना यह है कि मजहबी जनून आज भी ईरान मे आयतउल्ला के दिनो के मुकाबले मे कम नहीं हुआ। हकूमत बदल गई है परन्तु सकीर्णता और कट्टरपन्थ मे कोई अन्तर नही आया है, आज भी बेगुनाह इन्सानो को इस लापरवाही से काटकर रख दिया जाता है जैसे खेत मे गाजर मूली को काट दिया जाता है।

(क० नरेन्द्र "प्रताप के सौजन्य से")

सम्पादकीय

जातीय भेदभाव का अभिशाप

समाज न जाने कब से जातीयता की बीमारियों से जकड़ा हुआ है और उसमे बुरी तरह पिस रहा है। स्वतन्त्रता से पूर्व स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने समाज को अछूतोद्धार का नाम दिया था उनकी दृष्टि में हर वर्ग मे छुआछूत थी और आज भी है। हां अब इतना अवश्य है आर्य समाज के अछूतोद्धार के साथ म० गांधी का हरिजनोद्धार नया नारा देकर सामने आया। परिणामत: अछूतोद्धार में गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी को स्नातक बनने तक यह न जाना जा सकता था कि यह किस वर्गजाति विशेष का है। एक साथ खाना, पूजन, पास रहना सब मिलजुलकर रहने की पद्धति को एक अभिशप्त विधा से हटाकर सगठन के नवीकरण मे ढला गया।

लेकिन म० गांधी के हरिजनोद्धार मे गुरुकुल का स्नातक हरिजन बन कर सामने आ गया और अपनी हरिजन बिरादरी के नाम पर विधान सभा लोकसभा और नोकरियों में सुरक्षित सीट मागने लगा। मांगा ही नहीं, एक वैधानिक रूप प्रदान कर हर जगह पर उसे स्थान दिया गया। इतना ही नही सवर्ण के स्थान पर हरिजन स्थान पा सकता है परन्तु हरिजन की सीट खाली भले ही चली जाय। किन्तु उस सुरक्षित सीट पर सवर्ण नहीं बैठाया जा सकता है। सैंकड़ो हजारो वर्षो की मानसिकता मे सोचने विचारने का अवसर आया।

अछूतोद्धार तो हुआ नहीं। हां, हरिजनोद्धार अवश्य हुआ। कैसे? स्वामी दयानन्द मानव मस्तिष्क में अछूतपने को हटाकर शुद्धता के भाव भरना चाहते थे जब मानव में आन्तरिक व बाह्य शुद्धता रहेगी, तो नफरत की दीवार स्वयमेव टूट जायेगी।

अछूतोद्धार में बुद्धि व विवेक को जगाकर आगे सत्पथ पर ले जाना है। हरिजनोद्धार में विवेक का कोई सम्बन्ध नहीं है हां, कैसा भी गन्दा तन-मन-से हो उसके हाथसे खा लो बस हरिजनोद्धार हो गया। इस हरिजनोद्धार मे आज यह कुण्ठा जागी है कि सवर्ण तो क्या किसी हरिजन से कहो तुम्हारी कन्या का विवाह खान-पान योग्य पढ़े-लिखे बाल्मीकि के बालक से व बालिका से करा दिया जाय। वह बिदक कर दूर खड़ा हो जाएगा। फिर कहेगा कि हम नीच बिरादरी में सम्बन्ध करके अपना हुक्का पानी बन्द कराकर बिरादरी से क्यों निकाल दिए जायें। यही दशा सवर्णों में भी है, 'नौ कनोजिया तेरह चूल्हे'' 'जात-जात में जात, ब्राह्मण क्षत्रियो वैश्यों की हर वर्ग विशेष में हजार-२ बिरादरी फूट की भांति फूटी पड़ी हैं। प्रश्न है इन्हें कैसे जोड़ा जाय।

एक एक में हजार हजार बिरादरी बनी है जब जाति विद्वेष के भावो को घरो से निकाला जा रहा था महा पुरुषों की जातीय विघाई एकता के भावों को भरने की अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना सटीक व सामयिक है और स्वागत योग्य कदम है।

बाबा साहब डा० अम्बेडकर के प्रादुर्भाव के काल मे वह कैसे आगे आये मैं समझता हू उन पर तो कम बीती होगी। अछूतोद्धार के काम पर आर्य समाज के सवर्णों पर अधिक बुरी बीती थी। पुराने अभिशाप का भाण्डा फूटा और खान-पान सभी घरेलू काम बन्द, क्या विचित्र समय रहा। एक नये युग में प्रवेश—जब आर्य जन अछूतोद्धार का काम कर समाज में सुधार ला रहे थे तब हमें ईसाई मुसलमान के भाव जागृत कर अपने घरों में ले जाता है।

बिखरी कौम एक स्वर में बोलो।

अम्बेडकर जैसा राजनेता? आज ही क्यों पहले क्यों नहीं? क्या डा० अम्बेडकर से पहले नहीं हुए केवल डा० भीमराव ही समाज सुधारक हुआ अन्य नहीं?

शरीर से नहीं बुद्धि विवेक से ऊंचा-नीचा बनता है—योग्यता पाकर मनुष्य समाज में आगे बढ़ता है—भागीदारी दीजिये केवल विवेक से हाथापाई छीना झपटी से नहीं? बीते युग से बीसवीं सदी में हरिजन नहीं बल्कि अम्बेडकर कानून के विशेषज्ञ बने जगजीवनराम राजनेता बने।

सवर्णों ने नहीं उनकी योग्यता ने उन्हें आगे बढ़ाया। आज बड़े से बड़े पदों पर अनुसूचित जाति, जनजाति अछूत कहे जाने वाले वर्ग से आज समता के झण्डे के नीचे आकर भेदभावों को भुलाकर गले मिलें।

हरिजनोद्धार से नहीं अछूतोद्धार से नरदेव स्नातक स्वामी रामानन्द शास्त्री शंकरदेव विद्यालंकार गजेन्द्र शास्त्री मानव से मानवतर बने।

मण्डल आयोग से वैमनस्य बढ़ा—यदि देश को बचाना है तो मण्डल को दफनाकर मानव को समानता के आधार पर शासन में ही नही हर काम में भागीदारी दी गई हैं।

आज आर्य समाज के मन्दिरों मे तथाकथित पण्डित (हरिजन) पिछड़े वर्ग के लोग पौरोहित्य का काम कर रहे हैं। समय आने दीजिये यदि साधारण सा इन्सान हरिजन रक्षा मन्त्री गृहमन्त्री उपराष्ट्रपति अन्य नाना पदों पर सुशोभित हो सकता है तो समय को पहचानिये प्रधान मन्त्री भी बनेंगे।

श्रद्धा और प्रेम के साथ विश्वास को जगाइये—यही आत्मविश्वास बढायेगा—तुम्हे आगे लाने वाला ब्राह्मण स्वामी दयानन्द था, म० गांधी जन्मना वैश्य थे—पर कर्मणा ब्राह्मण थे—जिन्होंने जातीय भेद-भाव की हानि को पहचाना और समान वैदिक नव जागरण दिया।

मांगो नहीं जीतो—दलितों में पद से नही, आत्मगौरव के भावों को भरने की जरूरत है। समय को जानो वह दिन सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए गौरव का विषय होगा कि वह अभागा दिन जिसमे हम भेदभावों की भट्टी में जल रहे थे—फिर विकास का युग आया हम आगे बढ़े और उच्च से उच्च सम्मान जनक पदों की प्राप्ति की।

हमारे राजनीतिक नेता दलित राष्ट्रपति का मुद्दा उठाकर दलितों को अपमानित न कर उनमें स्वाभिमानपूर्ण योग्यता के भावो को भरें। ऊंचा से ऊंचा पद मिलेगा अवश्य मिलेगा।

विचारो—कि हम पहले कहां थे 'अब कहां पर है' तो फिर भविष्य भी महान होगा। विवेक को जगाओ?

सरदारो लाल वर्मा जो को करता रहेगा याद जमाना

जो नर सद्गुण सुगन्धि से सुरभित पुष्प खिलाते हैं।
करते पुरुषार्थ महान वही जग में सम्मान पाते हैं।।

नित कर्तव्य कर्म के प्रति वह मर्याद पुनीत निभाना।
आवश्यक अनिवार्य कार्य में आगे आगे कदम बढ़ाना।।

गुंजा गए चहुंदिशि दिल्लीमें सुकवि गायकों का मृदुगाना।
आमन्त्रित कर दूर दूर से आर्य पण्डित लोग बुलाना।।

शत यज्ञ कुण्डी हवन रचाना श्रद्धा स्नेह भाव बरसाना।
प्रिय पावन सन्देश वेद का सबके घर घर में पहुंचाना।।

सत्य सनातन वेद धर्म का मानव जाति को बतलाना।
नहीं भुलाया जा सकता है वा कितना वह समय सुहाना।।

तेरह मई उन्नीसो बानवें नाशवान तन छिन कर जाना।
सरदारी लाल वर्मा जी को करता रहेगा याद जमाना।।

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

वैदिक समाज व्यवस्था

डा० दिलीप वेदालंकार एम. ए, पी-एच. डी.

पूंजीवादी समाज-व्यवस्था एवं उसके भयंकर दुष्परिणाम

इस समय विश्व मे पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद, राष्ट्रीय समाजवाद आदि अनेक आन्दोलन चल रहे हैं। व्यक्ति स्वातन्त्र्यवादी कहते हैं कि व्यक्तियों से समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है। व्यक्ति की उन्नति से समाज और राष्ट्र की उन्नति होती है। अतः अपनी उन्नति करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। मनुष्य को स्वतन्त्रता न रही तो मानव व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो सकता। दूसरी ओर पूंजीवादी व्यवस्था है जिसमें समाज की व्यवस्था ऐसी है कि पूंजीपति मजदूर से मजदूरी कराते हैं और स्वयं निठल्ले रहकर भी उसकी कमाई का बड़ा हिस्सा स्वयं खा जाते हैं। एक ओर तो वे लोग हैं जो गगनचुम्बी राज-प्रासादों मे रहते हैं और दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं जिन्हें पौष की कड़कड़ाती सर्दी, ज्येष्ठ की तपती दुपहरी और सावन की झड़ी से सिर छिपाने के लिए फूस की झोंपड़ी भी नसीब नहीं होती। एक ओर वे लोग हैं जो चांदी और सोने के बर्तनों में दिन में कई बार राजसी आहार द्वारा अजीर्ण के शिकार बने रहते हैं तो दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं जिनको अपना पेट भरने के लिए मुट्ठी भर दाने भी नसीब नहीं होते। पूंजीवादी कहता है कि उसने पूंजी लगाई है और इसलिए कमाई का असली हकदार वह है। इस प्रकार की पूंजीवादी व्यवस्था मजदूर और पूंजीवादी इन दोनों की ही आत्मा का पतन करती है। इस व्यवस्था में जहां करोड़ों लोग गरीबी के अवर्णनीय कष्ट भोगते हैं, वहां अनेक बार वे गरीबी से तंग आकर धर्म, नैतिकता व सत्य का मार्ग छोड़ कर चोरी, डाके, ठगी व लूटपाट प्रारम्भ कर देते हैं। दूसरी ओर धनपति वर्ग अपनी पूंजी को निरन्तर बढ़ाने के वशे में अपनी विक्रय वस्तुओं की कीमतों को मनमाने ढंग से बढ़ाते जाते हैं। स्टाक जमा करके नकली अभाव और अकाल उत्पन्न करते है। जरूरतमन्द गरीब लोगों को ऋण देकर भारी ब्याज वसूल करते हैं। भौतिकतावादी समाज व्यवस्था में व्यक्ति की भांति ही समाज और राष्ट्र की वृत्ति भी इसी प्रकार शोषण द्वारा धन कमाने की होती है। धन के लोभी लोग राष्ट्र रूप में सगठित होकर दूसरे दुर्बल देशों पर आक्रमण करके उन्हें निरन्तर शोषण द्वारा सर्वथा पगु बना देते हैं। विजेता राष्ट्रों द्वारा विजित राष्ट्रों पर किये गये अन्याय और अत्याचारों की दुःख भरी कहानी से इतिहास भरा पड़ा है। सिकन्दर महमूद एव नैपोलियन का युग और बड़े-बड़े राज्यो का वाणिज्य व्यापार से रुपया कमाने का युग—ये दोनों पूंजीवाद के युग हैं। राजा लोगो का फौजें लेकर लूट के लिये निकल पड़ना और अंग्रेज व्यापारियो का उपनिवेशो द्वारा धन इकट्ठा करना, ये दोनों ही पूंजीवादी विचार धारा के प्रमाण हैं। पिछले दो महायुद्धों के मूल में भी वस्तुतः यही धन, लिप्सा एवं दूसरे को हड़प लेने की प्रवृत्ति रही।

साम्यवादी समाज-व्यवस्था

पूंजीवादी समाज व्यवस्था के भीषण वैषम्य और अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध जर्मनी के महाचिन्तक कार्ल मार्क्स ने आवाज बुलन्द की। कार्ल मार्क्स द्वारा बताए गए साम्यवाद या कम्यूनिज्म का उद्देश्य है मनुष्य जाति में वह अवस्था उत्पन्न कर देना जो कुटुम्ब में होती है। अर्थात् हर व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार काम करे, अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयोग करे, किसी की अपनी सम्पत्ति न हो और समस्त सम्पत्ति में सबका साझा हो। यह अवस्था कुटुम्ब की होती है, और जो सम्प्रदाय समस्त मानव जाति में यह अवस्था उत्पन्न कर देना चाहता है उसे कम्युनिस्ट या साम्यवादी कहेंगे।

साम्यवाद विश्व मे कुटुम्बवादी व्यवस्था उत्पन्न करना चाहता है। कुटुम्ब में उसका स्वामी दिन भर अथवा परिश्रम कर के पैसा कमाता है। उसकी पत्नी घर के कामो में दिन-रात लगी रहती है। उनके बूढ़े मां-बाप से कुछ होता ही नहीं। छोटा बच्चा भी असमर्थ होने के कारण कुछ नहीं करता। बड़ा भाई यह शिकायत नहीं करता कि उसका छोटा भाई तो दिन भर खेलता ही रहता है और कुछ नहीं कमाता है। कुटुम्ब के इस नियम को कहते हैं 'शक्त्यनुपातोश्रम' अर्थात् हर व्यक्ति को उतना काम अवश्य करना चाहिए जितना करने की उसमें शक्ति है। (From every body according to his capacity) आवश्यकतानुपाती और शक्त्यानुपाती श्रम (Enjoyment according to needs and work according to capacity) ये दो मौलिक नियम हैं जिन पर कुटुम्ब की आधार शिला रखी गयी। कम्यूनिज्म कहता है कि यह बात संसार भर की मानव जाति पर लागू होनी चाहिए। अर्थात् मानव जाति का एक बड़ा कुटुम्ब है। इसमें हर मनुष्य को उतना काम करना चाहिए जितनी उसमें शक्ति है। और उसके उपयोग की वह समस्त सामग्री उसके लिए उपलब्ध होनी चाहिए जो उसके सुखपूर्वक जीवन के लिए आवश्यक है।

कुटुम्ब में तीसरी बात यह है कि कोई किसी पर शासन नहीं करता। इस प्रकार कुटुम्ब के दो भाग नहीं होते—एक शासक वर्ग दूसरा शासित वर्ग। एक राजा, दूसरी प्रजा। एक प्रबन्धक तो होता है। वह कुटुम्ब की सम्पत्ति का प्रबन्ध करता है। सम्पत्ति समस्त कुटुम्ब की होती है, एक व्यक्ति की नहीं। इसी प्रकार हमारे मनुष्य-समाज में कोई साम्राज्य या सम्राट नहीं होना चाहिए। कोई व्यक्ति सम्पत्ति न रखे। सम्पत्ति राष्ट्र भर की हो। सम्पत्ति में से सब को आवश्यकतानुसार खाना कपड़ा मिलता रहे।

कुटुम्ब में चौथी बात यह होती है कि काम तो अपनी शक्ति और रुचि के अनुसार सब करते हैं, परन्तु उस काम का पारिश्रमिक समस्त कुटुम्ब का धन समझा जाता है, केवल कमाने वाले व्यक्ति का नहीं। कल्पना कीजिए कि कुटुम्ब मे चार भाई हैं। एक खेती करके १०० मन अन्न उत्पन्न करता है। दूसरा बजाज है और ५००/- मासिक कमाता है। तीसरा डाक्टर है और १०००/-, मासिक पा जाता है, चौथा क्लर्क है और उसे केवल ८०/- मिलते है। इन चारो की रुचि भिन्न-भिन्न, शक्ति भिन्न-भिन्न और कमाई भिन्न-भिन्न। परन्तु यह सब कमाई कुटुम्ब की है, किसी की अपनी नहीं। कम्यूनिज्म की मांग है कि यही अवस्था समस्त देश की या समस्त जगत् की होनी चाहिए। माल समस्त देश का हो, किसी एक का नहीं, काम सब करें और खायें भी सभी। परन्तु सम्पत्ति का स्वामी कोई एक न हो।

साम्यवादियों का कथन है कि पूंजी सब बुराइयों की जड़ है। अतः मनुष्य, जाति को पाप-पंक से मुक्त करना है तो इसका एक मात्र उपाय यह है कि सम्पत्तिशून्य, सम्प्रदायशून्य, वर्गशून्य, साम्राज्यशून्य, साम्यवादी समाज की स्थापना करनी चाहिए। (क्रमशः)

सन्ध्या से हो अन्नमय कोष का पोष

—देव नारायण भारद्वाज

(अंग स्पर्श प्रक्रिया)

आचमन के बाद सन्ध्या का दूसरा प्रकरण आता है, अंगस्पर्श। आचमन में जहां जल को पीते हुए उदरस्थ या कण्ठगत करते हुए प्रभु से प्रार्थना की थी, कि वह हमें जल के सदृश शान्ति या शीतलता प्रदान करें। अंग स्पर्श में जल को पीते नहीं हैं, अपितु ऊपर से ही अंगों को जल-स्पर्श कराते हैं। इसका आशय यह तो हो नहीं सकता है कि जल से शरीर को स्वच्छ किया जाए। यह तो हम पहले ही भरपूर स्नान से कर चुके हैं। यहां तो जल को प्रतीक मानकर शरीर के अंगों की बाहरी एवं भीतरी शक्ति की प्रभु से प्रार्थना की गई है। इसके लिए विनियुक्त मन्त्र का अध्ययन करें—

ओ३म् वाक् वाक्। ओ३म् प्राणः प्राणः। ओ३म् चक्षुः चक्षुः। ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम्। ओ३म् नाभिः। ओ३म् हृदयम्। ओ३म् कण्ठः। ओ३म् शिरः। ओ३म् बाहुभ्याम यशोबलम्। ओ३म् करतल कर पृष्ठे।

अर्थ :—हे प्रभु हमारे उपरोक्त अंगों के माध्यम से सम्पूर्ण शरीर को बल और इस बल से हमें यश प्राप्त होवे। आइए इस प्रकरण पर आगे विचार करें। जैसे कोई व्यवसायी प्रातः को अपना प्रतिष्ठान खोलता है, अथवा सायंकाल को बढ़ाता है—अर्थात बन्द करता है, तो अपनी सम्पदा की समीक्षा करता है, और उसे बढ़ाते रहना अथवा सुदृढ़ करते रहना ही उस का ध्येय होता है, दुकान को बन्द करने के लिये इसीलिये बढ़ाना शब्द कहा जाता है, बन्द करना नहीं कहा जाता है। वैसे ही उपासक को अपने शरीर के स्वास्थ्य एवं शौर्य की समीक्षा कर लेनी चाहिए और इस शरीर को सम्पुष्ट करना ही श्रेय है। जीवात्मा ही तो इन्द्र है, इन्द्र के जो शारीरिक साधन है वही इन्द्रियां हैं। यहां पर यह सभी अंग इन्द्रियों के रूढ़ अर्थ में नहीं यौगिक अर्थ में प्रयुक्त हुए है। ईश्वर की दी हुई जो ज्ञान की संसूचक सुख दुःख की बोधिका है—वहीं तो इन्द्रियां है। इनमें उस परम प्रभु की ही शक्ति कार्य करती है। उसी प्रभु से प्रार्थना की है कि वह इन इन्द्रियों की शक्ति को सक्रियता प्रदान करता रहे। इन अंग-इन्द्रियों के दो भाग होते है—एक उसके आकार-प्रकार के ऊपरी गोलक जो स्थूल और ऊपर से दिखाई देते हैं, दूसरा भाग है उनकी शक्ति स्वरूपी सूक्ष्मेन्द्रिय। इन मन्त्रों मे दोनो भागों के बलवान होने की प्रार्थना की गई है, और केवल बलवान ही नहीं उन्हें यशवान भी बनाना है।

वैसे भी उपरोक्त अंगों के स्पष्ट रूप से दो कार्य होते हैं, जो निम्न तालिका मे सूची बद्ध किए जाते हैं—

वाक् वाक्	प्रथम कार्य	वाणी	द्वितीय कार्य	रसना केन्द्र
प्राणः प्राणः	प्रथम कार्य	श्वांस	द्वितीय कार्य	उच्छ्वास
चक्षुः चक्षुः	प्रथम कार्य	दृष्टि	द्वितीय कार्य	अन्तर्दृष्टि
श्रोत्रम् श्रोत्रम्	प्रथम कार्य	श्रवण	द्वितीय कार्य	अन्तर्ध्वनि
नाभिः	प्रथम कार्य	प्रजनन	द्वितीय कार्य	कर्मेन्द्रिय केन्द्र
हृदयम्	प्रथम कार्य	रक्तसंचार	द्वितीय कार्य	ज्ञानेन्द्रिय केन्द्र
कण्ठः	प्रथम कार्य	रस ग्रहण	द्वितीय कार्य	रसीले शब्दों का उच्चारण
शिरः	प्रथम कार्य	बुद्धि	द्वितीय कार्य	ज्ञानेन्द्रिय एव कर्मेन्द्रिय के मूल केन्द्र
बाहुभ्याम्	प्रथम कार्य	यश	द्वितीय कार्य	बल
करतल कर पृष्ठे	प्रथम कार्य	सम्पन्नता	द्वितीय कार्य	दानशीलता

इस प्रकार प्रभु से प्रार्थना के साथ-साथ हमारा प्रयत्न भी होना चाहिए जिससे इन अंगों में पर्याप्त शक्ति रहे जिससे यह दोनों कार्य करती रहें। शरीर में कुछ अंग दो-दो हैं, कुछ अकेले हैं, जो ऊपर के सम्बोधन से स्पष्ट है। अंग स्पर्श का क्रम भी एक विचित्र उद्बोधन देता है। वाक्-वाक् से ऊपर उठकर प्राणः प्राणः पर आयें, प्राणः प्राणः से चक्षुः चक्षुः पर आयें, चक्षुः चक्षुः से ऊपर श्रोत्रम् श्रोत्रम् पर आ जायें। इस क्रम में हमें ऊपर ही ऊपर उठना है—प्रगति करना है गिरना नहीं है। जो वाणी और रसना में संयम से काम लेगा, वही प्राणवान हो जायेगा। यह प्राणवान् व्यक्ति संसार की वस्तुओं को ऊपर से तो देखे,, किन्तु उनकी आन्तरिक स्थिति को भी परखे, तभी सफल होगा। देखने में तो प्राकृतिक फलों से प्लास्टिक के फल कम सुन्दर नहीं लगते, किन्तु उन्हें खाया नहीं जा सकता है। इसलिए देखने वाले को सुनना भी चाहिए। देखने का भ्रम किसी से पूछकर उसके उत्तर को सुनकर ही दूर हो सकता है। केवल बकवाद ही न करो, प्राणों का संचय भी करो, प्राणवान बनकर उद्दण्ड न हो जाओ, संसार की समीक्षा भी करो, केवल अपनी दृष्टि-समीक्षा पर ही न निर्भर रहो, किसी अनुभवी की सुन भी लो, तभी सफलता प्राप्त होगी। आचमन मन्त्र मे जो 'अभिष्टये शब्द है अर्थात् इष्टानन्द का ज्ञान हम इन्हीं चार अंगों से कर सकते हैं। इसीलिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु हमें आपने इन अंगों को तो प्रदान किया है, इनमें अपनी शक्ति भी दी है। उस शक्ति को बनाये रखना प्रभू! अपवाद यह भी हो सकता है कि इनमे से किसी इन्द्रिय से प्रभु ने हमे वंचित कर दिया हो—हमारे कर्मों के फल के कारण, तो प्रभु उसकी शक्ति से तो वंचित मत कर देना।

यह ज्ञान चतुष्टय की बात हुई। अब कर्म चतुष्टय पर ध्यान दिया जाये। यहां भी ऊपर ही उठने का क्रम है—नीचे गिरने का कदापि नहीं। नाभि हृदय, हृदय से कण्ठ, कण्ठ से सिर तक एक-एक सोपान चढ़कर हम उच्च बन जायें। नाभि प्रजनन में सहायक तो हों, किन्तु गर्भधारण या अंकुरण से ही हमारे पोषण में भी सहायक बनी रहे। जननी माँ एव धरती माँ इस नाभि नाल से ही भ्रूण को पोषण देना प्रारम्भ कर देती है। यह कर्मेन्द्रियों का केन्द्र होने के कारण—यदि जरा भी नाभि अपने आसन से डोल जाती है तो शरीर के समस्त कार्यों में व्यवधान आ जाता है। हमारा हृदय जो तीन अक्षरों का सकुल है। 'हृ+द+य—हृ=हरण करना, द=दान करना, य=यान करना, अर्थात् शरीर के रक्त को अपनी ओर खींच ले, फेफड़ों मे शुद्धकरण के बाद वापस दान भी कर दे, यही नहीं जहां-जहां से खींचा था, वहां वहां पहुंचाने के लिये यान का काम भी करता रहे, ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों की समता में हृदय का अपूर्व योगदान है, हे प्रभु आप बनाये रखें। हृदय से ऊपर उठकर अगले सोपान कण्ठ पर आ जावें, मुख से जो पदार्थ हमने खाये हैं—उनका रस उदर भण्डार में भेजने की प्रणाली हमारा कण्ठ है। इन्हीं पदार्थों से ही तो रक्त बनता है। हे प्रभु—यह प्रणाली ही हमारी अवरुद्ध न हो जाए, स्वच्छ एव स्वस्थ रहते हुए यह अपना कार्य करती रहे। फिर शब्दों का उच्चारण भी बिना कण्ठ की सहायता के कहां सम्भव है, परन्तु इससे मधुर रस का ग्रहण ही नहीं मधुर शब्दों का उच्चारण भी बिना कण्ठ की सहायता के कहां सम्भव है, अस्तु इससे मधुर रस का ग्रहण ही नहीं मधुर शब्दों का उच्चारण भी होता रहे। कण्ठ से ऊपर अगले सोपान शिर पर हम पहुंच गये। कण्ठ एवं शिर के बीच में जो अंग हैं—उनका तो वर्णन पहले ही हो चुका है। शिर पर सुदृढ़ ढक्कन चढ़ा है, जिस के अन्दर बुद्धि तथा ज्ञान कर्मेन्द्रियों के मूल तन्तु भी सकलित हैं। यहीं से ज्ञानेन्द्रियों द्वारा भेजी गई सूचनाओं के आधार पर कर्मेन्द्रियों को आदेश दिया जाता है। हे प्रभु यह शिर हमारा स्वस्थ एव कार्यशील बना रहे। स्कूटर पर यात्री ने हेलमेट लगाकर यात्रा आरम्भ की है, वह तो कभी न कभी छूट भी सकता है। हे प्रभु! तू ही हमारा हेलमेट है तो इसकी रक्षा एवं कार्यशीलता के लिए आपके अतिरिक्त हम किस पर निर्भर रह सकते हैं। आचमन मन्त्र के 'पीतये' शब्द के प्रतीक रूप में ही तो यह चारों अंग उपस्थित होते हैं। इष्टानन्द का मान या ज्ञान या चयन जो हमने पहले चार अंगों से कर लिया था, अब इन चार अंगों से हम उस आनन्द का पान करते हैं। नाभि भी भ्रूण को रस का पान कराती है, हृदय भी शरीर को रक्त एवं प्राण वायु का पान कराता है, कण्ठ तो प्रत्यक्ष रूप से समस्त रसों को उदर भण्डार में पहुंचाते हुए दिखाई ही देता है। शिर में स्थित आज्ञा चक्र से सम्पूर्ण शरीर को इसी प्रकार मधुपान प्राप्त होता है।

(क्रमशः)

वेदों में एड्स रोग का उपचार

वेदमार्तण्ड स्वामी रमेश मुनि मानसरोवर जयपुर

वेदों में रोगों के उपचार व विज्ञान सम्बन्धी हम पिछले २० वर्ष से शोध कार्य कर रहे हैं। हमको वेदों में एड्स (AIds) रोग का उपचार मिल गया है। उदाहरणतया—इस रोग का नाम थोड़ा समझ लें तो इस रोग में शरीर की कोशिकाएं मल्टीप्लाई नहीं करती। जो भोजन शरीर में जाता है उससे क्रमश: रस, रक्त, मांस, मज्जा, मेदा, अस्थि एवं वीर्य बनता है। सब धातुए ३-३ दिन में एक के बाद एक स्वत: बनती चली जाती हैं और नई कोशिकाएं बनते बनते २८ दिन में मनुष्य का शरीर नया बन जाता है। चन्द्रमा भी एक मास में पूर्ण हो जाता है। अगर शरीर में नई कोशिकाएं नहीं बनें तो मनुष्य का शरीर विनाशको प्राप्त हो जाता हैं। इसको समझने के लिए हमको चन्द्रमा का संक्षिप्त अध्ययन करना होगा। हमारी पृथ्वी अपनी कीली पर पश्चिम से पूर्व की ओर २७.८३ कि० मी० प्रति मिनिट के हिसाब से घूम रही हैं और २४ घण्टे में अपनी कीली पर एक चक्कर कर लेती हैं। लेकिन वह उसी स्थान पर नहीं आती बल्कि वह सूर्य परिक्रमा पथ मे एक मिनट में लगभग १७८७-१४ कि० मी० के हिसाब से चलकर २४ घण्टे मे २५,७२ ४८२-६ कि० मी० दूर पहुंच जाती हैं। चन्द्रमा हमारी पृथ्वी से ३,८४,४०१ कि० मी० दूर हैं और हमारी पृथ्वी की परिक्रमा करता हुआ सूर्य की भी परिक्रमा कर रहा हैं। लेकिन चन्द्रमा में एक खास बात यह हैं कि वह अपना मुख सदैव सूर्य की ओर किये रहता हैं। चन्द्रमा की हमारी पृथ्वी के चारों ओर घूमने की कक्षा की लम्बाई २४,१५,२९३ कि० मी० हैं (Confirmed by Spherical Astronomy by Mr. W.M. Surart 6th edition) पूर्णमासी की पड़वा से प्रत्येक दिन चन्द्रमा की एक एक कला घटकर अमावस्या को बिलकुल अंधेरा हो जाता हैं। फिर इसी प्रकार अमावस्या की पड़वा से प्रत्येक दिन एक एक कला बढ़कर पूर्णमासी को चन्द्रमा पूर्णता को प्राप्त हो जाता हैं। थोड़ी देर को हम यहा समझ लें कि चन्द्रमा को भी एड्स जैसा हो रोग हैं लेकिन चन्द्रमा की नाभि में अमृत कुण्ड भी हैं। अमृत कुण्ड के अमृत से (Nectar) उसका शरीर फिर पूर्ण हो जाता है। यही इस रोग का विज्ञान हैं। अगर वही औषधि एड्स के रोगी को दे दी जाये तो वह Human Immunodeficiency Virus का समूल नाश कर देती हैं, एवं उसकी कोशिकाएं मल्टीप्लाई करना प्रारम्भ कर देती हैं, और वह स्वस्थ हो जाता है। हृदय रोग, तपेदिक रोगों के वैदिक उपचार एवं स्मृतिवर्धक औषधियां एवं वेदों के विज्ञान सम्बन्धी हमारे ४०-५० लेख प्रकाशित हो चुके हैं (वेद मन्त्रों की असीम शक्ति, पुत्रेष्टि एवं वर्षेष्टि सहित ४० कामना यज्ञानुष्ठानों के लिए कृपया लेखक की "वैदिक यज्ञानुष्ठान् विधि" नामक पुस्तक देखें जो मुन्शीराम मनोहरलाल बुकसेलर, ४४१६, नई सड़क दिल्ली या गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क दिल्ली से उपलब्ध हो सकती हैं) हमने लगभग ७ वर्ष पहले एड्स के उपचार को ज्ञात कर लिया था तदनुसार हमने ६ दिसम्बर, १९८५ को अमरीका के राष्ट्रपति श्री रोनाल्ड रीगन महोदय को सूचित किया जिन्होने लगभग ६ माह बाद १७ जुलाई, १९८६ के पत्र द्वारा हमारे पत्र की प्राप्ति स्वीकारी और हमारा पत्र मेडीकल औथोरिटीज को भेजा एव हमें धन्यवाद प्रेषित किया। उनकी एड्स प्रोग्राम पर कन्ट्रोल का शोध कार्य डाक्टर वाल्टर डाउडले डाइरेक्टर डिसीज कन्ट्रोल एटलान्टा जार्जिया कर रहे हैं। उन्होने अपने पत्र संख्या ४०४, ३२९-२८६, एफ० टी० एस० २३६-२८६१ दिनांक १८ मार्च, १९८७ एवं अपने दूसरे पत्र दिनांक २५ जून, १९८७ के द्वारा हमसे वेद की दवाई का नाम पूछा और हमें धन्यवाद दिया। इसके बाद ५ जनवरी, १९८८ के पत्र द्वारा हमको सूचित किया कि दवाई का ट्रायल करने के लिए उनका क्लिनिकल सेन्टर बाथेसडा मेरीलैण्ड में है जिसका पूरा पता हमें सूचित किया। बाथेसडा के क्लिनिकल सेन्टर के अधिकारी ने २९ अगस्त, १९८८ के पत्र द्वारा अमरीका की दवाई की कम्पनी से सम्पर्क करने को लिखा। अभी २ जनवरी, १९९२ के पत्र द्वारा अमरीका के उपराष्ट्रपति श्री डान क्वैल को हमने बास्केट बाल के चैम्पियन श्री इरविन जानसन को एड्स मुक्त करने की गारण्टी दी हैं। चूंकि यह रोग एक विकृत सैक्स भोगने का परिणाम हैं। इसलिए हमने इस उपचार को बताने की कीमत १० मिलियन डालर (लगभग ३० करोड़ रुपये) बताई हैं, जबकि वे लगभग ४०० करोड़ डालर प्रति वर्ष खर्च कर रहे हैं। इस रकम से हम अनेक स्थानों पर वैदिक शोध संस्थान बनायेंगे व वेदोक्त अनेक प्रकार के यज्ञ करके शोध कार्य को आगे बढ़ायेंगे। हमारे वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। उसमें सभी उपचार सत्य हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो नियम संख्या ३ में यह स्पष्ट घोषित किया हुआ है। वेदों के हृदय रोग के उपचार को ही विश्व की भाषाओं में उनके देशों के अखबारों में प्रकाशित करायें तो कुछ हजारों रुपयों के व्यय से ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अनन्य लाभ होगा और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" उद्देश्य सफल होगा क्योंकि करोड़ों व्यक्ति आर्य बन जायेंगे। अगर कोई संस्था एवं धनी मानी व्यक्ति हमारी इस कार्य में सहायता करें तो मानव समाज को बहुत लाभ होगा। कृपया सम्पर्क करें:—

लेखक का पता:—वेदमार्तण्ड स्वामी रमेश मुनि
अध्यक्ष, वैदिक शोध संस्थान रजि० २/८६-९०, शोप ११/७१/१२,
मानसरोवर, जयपुर-२०

संस्कृति का सन्देश

बहनो भाइयो सुनो ध्यान से, तुम्हें सुनाने आया हूं।
भूल गए संस्कृति अपनी, ध्यान दिलाने आया हूं॥
माता-पिता गुरु की सेवा में तत्पर रहना चाहिए,
अतिथि घर पर जो आ जाए, आदर करना चाहिए,
हर मानव को मानवता का, पाठ पढ़ाने आया हूं।
भूल गए संस्कृति अपनी··· ···
पोप पुजारी पण्डों ने यहा, भर्म का जाल बिछाया है,
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र को, जन्मानुसार बताया है,
कर्मों के अनुसार ये होते, तुम्हें बताने आया हूं।
भूल गए संस्कृति अपनी··· ···
ऋषि-महर्षियों की शिक्षा, घर-घर में फैलाऊंगा,
करो नियम से हवन व संध्या, तुमको विधि बताऊंगा।
बाल, वृद्ध, नर, नारी को मैं वेद पढ़ाने आया हूं।
भूल गए संस्कृति अपनी··· ···
अण्डे-मांस का भक्षण करते, पीते नित्य शराब को,
दूध, दही, घी, मक्खन छोड़ा, छोड़ा शुद्ध आहार को,
शुद्ध सात्विक महेश आर्य, तुम्हें बनाने आया हूं।
भूल गये संस्कृति अपनी ध्यान दिलाने आया हूं॥

—ब्रह्मचारी महेश आर्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

आयुर्वेद विश्व परिषद द्वारा आयुर्वेद पुनर्निर्माण योजना

आयुर्वेद विश्वपरिषद ने कुम्भ मेला उज्जैन के सार्वभौम आयुर्वेद सम्मेलन मे संकल्प लिया है कि आयुर्वेद को सार्वभौम जीवन विज्ञान के रूप में विश्व के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक है। आयुर्वेद केवल भारत का ही नहीं अपितु समस्त विश्व का है। परिषद ने निश्चय किया है कि कुम्भ मेला की ऐतिहासिकता को देखते हुए प्रत्येक कुम्भ पर्व पर एक सार्वभौम आयुर्वेद सम्मेलन आयोजित किया जाएगा तथा एक आयुर्वेद धन्वन्तरि कुम्भ मेला शिविर स्थापित कर मेला में पधारी जनता को आयुर्वेद सिद्धांतों का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

परिषद् जहां विश्व मे आयुर्वेद प्रचार के लिए शाखाएं खोल रही है तथा आयुर्वेद प्रचार योजना संचालित कर दी है। अभी तक ५० आयुर्वेद प्रचार केन्द्र शिक्षा संस्थानों में स्थापित किए जा चुके हैं।

छात्रायों को सदाचार रसायन, स्वास्थ्य विज्ञान वनस्पति विज्ञान आयुर्वेद का आध्यात्मिक पक्ष, स्वास्थ्य को स्वस्थ्य बनाए रखने के लिए उपाय आदि की शिक्षा दी जावेगी।

अध्यक्ष—आचार्य प्रभाकर मिश्र

मृत्यु का स्वरूप (२)

श्री पूर्णचन्द उपाध्याय

१—मनुष्य यह सीधा खड़ा होता है और इसका सिर ऊपर को होता है।

२—हाथी, घोड़े, गाय इत्यादि—इनका सिर नीचे झुका हुआ होता है परन्तु शरीर पृथ्वी से ऊपर उठा होता है।

३—सर्प इत्यादि—इनका सिर और शरीर दोनों पृथ्वी से मिले हुए होते है। यह रेंगकर चलते हैं।

४—वृक्ष—इनका सिर बिल्कुल नीचे होता है और हाथ-पैर ऊपर। इनको खाना-पीना नीचे से दिया जाता है जिसको हम जड़ कहते है। जब जीव के पाप-पुण्य बराबर या पुण्य अधिक होते हैं तो उसको मनुष्य योनि प्राप्त होती है। जब पाप ज्यादा होता है तो उसको पशु-योनि में जन्म लेना पड़ता है और जब जीव घोरतम पाप करता है तो उसे वृक्ष-योनि में डाल दिया जाता है। इसीलिए किसी से कहना कि तेरा सिर नीचे और पैर ऊपर कर दिये जायेंगे, गाली समझा जाता है। विकासवाद वाले इस शृंखला को नीचे से अथवा वृक्ष से देखना प्रारम्भ करते हैं और सब योनियों के शरीर-निर्माण की दशा को लक्ष्य में रखकर इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि नीचे से प्रतिकूल परिस्थितियो के कारण ऊपर तक उन्नति होती है। यह उनका भ्रम है। वे यह भूल जाते हैं कि इस सारे विकास में एक स्थायी अनादि सत्ता होनी चाहिये विकास नीचे से ऊपर तक हो। और वे यह भी भूल जाते हैं कि इस सारे विकास का कोई एक निमित्त कारण होना चाहिये, अपने आप विकास या उन्नति प्राप्त नहीं हो सकती। केवल शरीर-निर्माण की अवस्था को देखकर उनका यह कह देना कि छोटे से बड़ा शरीर धीरे-धीरे बना है, बच्चों की-सी भूल है। यदि हम बहुत से मकानात एक से बने हुए देखें, तो हमको यह कहना चाहिये कि इन मकानों को बनवाने वाला कोई एक इन्जीनियर है, जिसने सबका नक्शा एक-सा बनाया है और आवश्यतानुसार उनमें भेद कर दिया है। जैसे भालू ठंडे देश में होता है, तो उसके ऊपर बाल कम्बल की आकृति में लगा दिये हैं और ऊंट रेगिस्तान में होता है, तो उसके अन्दर पानी भरने का डोल है। विकासवाद ने यह सारी भूल वैदिक शिक्षा के लोप हो जाने से की। न पश्चिमी जगत् ने मृत्यु के स्वरूप को समझा और न यह समझा कि मृत्यु विकास का निमित्त अथवा साधन है।

मृत्यु सुन्दरता उत्पन्न करती है

सुन्दरता जगत् में भेद के कारण है। जहां ज्यादा काले रंग के होते हैं, वहां गोरे सुन्दर समझे जाते हैं। दो आंख वालों को सुन्दर अन्धों की अपेक्षा ही कहा जाता है। इसी प्रकार जीवन में आनन्द तो मृत्यु के भय से ही है। 'न हो मरना तो जीने का मजा क्या' यह उर्दू के प्रसिद्ध कवि गालिब का शेर है और इसके अन्दर बड़ा उत्तम भाव है। यदि मौत का डर न होता तो जान किसी को प्यारी न होती और जान प्यारी न होने से मनुष्य कोई काम नहीं कर सकता। फिर तो सारा जीवन ही निष्प्रयोजन और व्यर्थ हो जाता है। मौत के खटके से मनुष्य कर्म करने में तत्पर रहता है और जल्दी-जल्दी अपने जीवन के कार्यक्रम को पूरा करने के लिये उत्साह से कार्य करता रहता है। इस जीवनरूपी नाट्यशाला में मृत्यु ही एक ऐसा पट है, जिसने सारे नाटक में जान डाल दी है, नहीं तो न कोई लक्ष्य होता और न किसी लक्ष्य की पूर्ति।

मृत्यु मोक्ष का द्वार

मृत्यु की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि यह मोक्ष का द्वार अर्थात् मोक्ष की अवस्था में जाने का द्वार है। यह ठीक है कि जो मोक्ष के अधिकारी हैं और जिनके कर्म शुद्ध, पवित्र और धार्मिक हैं, उनको जीवन्मुक्त कहते हैं, परन्तु ऐसे जीवन्मुक्तों को भी वास्तविक मोक्ष इस स्थूल शरीर को छोड़कर ही प्राप्त होगा। यह स्थूल शरीर ही तो दुःख और सुख का कारण है और यही इच्छा, द्वेष और प्रयत्न का क्षेत्र है। मोक्ष की दशा में जब इस स्थूल शरीर से पीछा छूट जाता है, तो फिर दुःख प्राप्ति की कोई आशंका नहीं रहती और न सुख के लिये कोई प्रयत्न करना पड़ता है। मोक्ष में तो शरीर बन्धन से मुक्त होकर किये हुए कर्मों के फल भोगने के लिये जीवात्मा को ईश्वर की शरण में स्वच्छन्द विचरने का अवसर प्राप्त होता है। और इस शरीररूपी बन्धन से मृत्यु ही छुटकारा दिलाती है।

मृत्यु में अहिंसा की शिक्षा

जो चीज हम किसी को दे नहीं सकते, उसे हमें लेने का कोई अधिकार नहीं है। हममें किसी को जीवन प्रदान करने की शक्ति नहीं है। पदार्थ-विज्ञान वाले भी मृत्यु से हारे हैं। वह न किसी को जिला सके, न मरने से बचा सके और न मौत को समझ सके। उन्होंने पदार्थ विज्ञान के अन्वेषणों में अनेक पशु और पक्षियों को चीर-चीरकर देखा और उनके शरीर की बनावट को समझने का उद्योग किया, परन्तु वह सब सामग्री होते हुए भी, जो उन्होंने स्वयं किसी प्राणी को चीर फाड़कर एकत्र की है, वे पुनः न तो उस शरीर को ज्यों का त्यों जोड़ सके और न जीवित कर सके। मृत्यु के समय पर बड़े-बड़े डाक्टर और विज्ञान वाले हाथ पर हाथ धरे खड़े रह गए। मौत को रोकना तो क्या, मौत के कारणों को भी वे न समझ सके। इसलिये यह समझ लेना आवश्यक है कि मारना व जिलाना मनुष्यों के बस की बात नहीं है। अतः किसी की हिंसा करने का विचार हमें स्वप्न में भी नहीं करना चाहिए। यदि मृत्यु से इस शिक्षा को मनुष्य मात्र ग्रहण करे तो अहिंसा का प्रचार सुगमता से हो सकता है।

मृत्यु और साम्यवाद

मौत ने सबको बराबर कर दिया है। राजा रंक, अमीर गरीब, काले गोरे, हिन्दू मुसलमान, स्त्री पुरुष सब मरते हैं और मौत के रोकने में सब एक समान असमर्थ हैं। यदि मालदार और राजा मौत से बचे रहते तो दूसरे आदमी उनको राज्य शक्ति या धन शक्ति कभी न रखने देते। सबको मरना है, यह सबसे बड़ी सन्तोष दिलाने वाली बात है। और जो भेद भाव से उत्पन्न होने वाले मानसिक कष्ट है, उनको दूर करने वाली अमोघ औषधि है। इस मौत की तराजू ने सबकी तौल एक सी कर दी है।

(क्रमशः)

वेदभाष्य और पाश्चात्य विद्वान

—सत्य प्रकाश गुप्त, रुड़की

भारतीय परम्परा मे वेदो को ईश्वरीय ज्ञान, अपौरुषेय एव पवित्र माना जाता है। पुरातन समय मे वेदों के जितने भी भाष्यकार हुए उनकी भाषा एव भाष्य शैलियो मे अन्तर अवश्य रहा, पर वेद के सम्बन्ध मे उनकी मान्यताए एक सी रही। यास्क मुनि के अनुसार तो वेद मन्त्रो के अर्थों का साक्षात्कार ऋषि व तपस्वीजन ही कर सकते हैं। जब ऋषि इतर विद्वानो ने आर्ष परम्परा से हटकर अपनी मान्यताओ के अनुसार मनमाने अर्थ किये तो वेदो के नाम पर समाज में अनेक भ्रान्तियो व कुरीतियो ने जन्म ले लिया, परिणामत. उनके ईश्वरीय ज्ञान सम्बन्धी मान्यता की जड़े हिल गई। महात्मा बुद्ध की ईश्वर एव वेदो के प्रति उदासीनता व इन्हे नकारने का कारण उस समय समाज मे फैली भ्रान्तिया व कुरीतिया ही थी, क्योकि महात्मा बुद्ध ने परम्परागत रूप मे स्वय वेदो का अध्ययन नही किया था।

प्रारम्भ मे तो वेदार्थ के लिए याज्ञिक, आधिभौतिक एव आध्यात्मिक शैलिय' ही प्रचलित रही, पर शनै शनै. बाद मे वेदो के गूढ़ रहस्यो को सरल ढग से समझाने के लिए आख्यायिका एव ऐतिहासिक शैलिया भी प्रचलित हो गई। उत्तर काल के वेद व्याख्याकारो ने, वेद मन्त्रो के ऋषि, देवता (विषय) छन्द स्वर एव प्रकरण आदि का विशेष ध्यान न कर, यथार्थ शैली अगीकार कर वेदभाष्य करने आरम्भ कर दिए। परिणामतः कालान्तर मे इस शैली के कारण ही पाश्चात्य विद्वानो ने वेदों मे अनित्य इतिहास सिद्ध करने का बड़े सुचारु रूप से प्रयास किया।

भारतीय परम्परा मे वेद ऋषि प्रणीत ग्रन्थ नही है। वेदो के शब्द, अर्थ, सम्बन्ध एव अक्षरो का क्रम शाश्वत होता है। वेद के सभी शब्द यौगिक है और इनका अर्थ करने के लिए वैदिक व्याकरण वैदिक कोश का ज्ञान व आश्रय अपरिहार्य होता है जो दुरूह एव कष्ट दायक कार्य है क्योकि इसमे समय, धैर्य एव साहस की आवश्यकता होती है, अतः अधिकतर विद्वान इस झमेले मे न पड़कर वेद के स्थूल लौकिक सस्कृत मे अर्थ करके ही वेद विद्वानो की श्रेणी मे खड़ा होने का श्रेय लेना चाहते रहे हैं।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किया गया भाष्य व वेद सम्बन्धी मान्यताए स्वार्थमिश्रित से आबद्ध है क्योंकि उन्होने केवल अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए ही वेदो पर अपनी लेखनी उठाई। पाश्चात्य विद्वानो के भाष्यो के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इन विद्वानो की वेद सम्बन्धी मान्यताए व सिद्धान्त भारतीय परम्परा व परिवेश के एकदम विरुद्ध थी, क्योकि उनके द्वा। वेद सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करना तथा उस पर लेखनी उठाने का उद्देश्य केवल राजनैतिक था।

वर्तमान मे सोलहवी शताब्दि तक पूरा पाश्चात्य जगत वेद एव सस्कृत साहित्य से अनभिज्ञ था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा भारत मे पैर जमा लेने पर जब ब्रिटिश साम्राज्य की नीव का सूत्रपात हुआ तब उन्हें इसकी आवश्यकता निम्न कारणो से अनुभूत हुई .—

१. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के साथ शासन सम्बन्धी व्यवहारिक कठिनाइयो के कारण ब्रिटिश शासको का ध्यान वैदिक साहित्य के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुआ।

२ ब्रिटिश अधिकारियों की हार्दिक अभिलाषा व उद्देश्य भारतीय धर्म, रीति एव रीति रिवाजों की ओट लेकर भारत में ईसाई मतानुसार रीति रिवाज व सभ्यता की स्थापना कर भारतीय मानस पटल को उद्वेलित कर उसे मन, मस्तिष्क व हृदय से ईसाई सस्कृति का दास बना लेना था।

उपर्युक्त निष्कर्ष लार्ड मैकाले द्वारा अपने मित्र मिस्टर राउस को लिखे पत्र से स्पष्ट परिलक्षित होता है। यह पत्र १९५७ मे भारत मे प्लासी-युद्ध मे सफलता प्राप्त करने के बाद लिखा गया था।

"अब केवल नाम मात्र नहीं हमें सचमुच नवाब बनना है, और वह भी पर्दा करके नहीं, खुल्लम खुल्ला बनना है।" मैक्समूलर द्वारा अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय ग्रन्थों की सेवा में अर्पित करना वैदिक धर्म व साहित्य के प्रति उनका अनुराग न था अपितु उस अध्ययन की ओट लेकर भारत में ईसाईयत का प्रचार करना था। यह बात उन्होने १८६६ मे अपनी पत्नी को लिखे पत्र मे स्वीकार की है।

"मेरा यह सस्करण और वेद का अनुवाद कालान्तर मे भारत के भाग्य को दूर तक प्रभावित करेगा। यह उनके धर्म का मूल है। मेरा यह निश्चित मत उन्हे यह दिखाना है कि यह मूल कैसा है, गत तीन हजार वर्षों में इससे उत्पन्न होने वाली सब चीजो को जड़ समेत उखाड़ फेकने का एक मात्र उपाय है।"

भारत को अग्रेजियत व ईसाईयत से आच्छादित करने का मन्सूबा लार्ड मेकाले के इन विचारो से स्पष्ट झलकता है।

"अग्रेजी शिक्षा भारत मे एक ऐसे वर्ग को उत्पन्न करेगी जो रूप रग मे भारतीय होगा किन्तु दिमाग, कर्म और नैतिकता से अग्रेज होगा।'

ला० मैकाले की इस योजना के अन्तर्गत ही १८९९ मे आर्थर ए० मैकडानल ने सस्कृत साहित्य का इतिहास लिखा। मैक्समूलर का वेद भाष्य के प्रति अनुराग १८६८ मे भारत सचिव ड्यूक आफ आर्गाइल को लिखे पत्र की निम्न पक्तियो से भली भांति परिलक्षित होता है।

"भारत का प्राचीन धर्म अब नष्ट प्राय है, अब यदि ईसाईयत उसका स्थान नही लेती तो यह किसका दोष होगा।" मैक्समूलर के एक घनिष्ट मित्र ई० बी० पुसे ने उनके कार्य को सराहना करते हुए लिखा था।

'आपका कार्य भारतीयो को ईसाई बनाने के यत्न मे नवयुग लाने वाला होगा कि उसने आपको आश्रय देकर भारत को ईसाई बनाने के प्रथम और अत्यावश्यक कार्य को सुगम बना दिया। आपका यह कार्य हमे समर्थ बनायेगा कि हम पुराने झूठे धर्म की सच्चे धर्म के साथ तुलना का आनन्द ले सकें।

भारतीयों की मानसिकता को रौंदने का षड्यन्त्र लार्ड मैकाले ने मैक्स-मूलर के साथ रचा था, जिसको उसने मैकाले से भेंट होने के बाद इन शब्दों को कहकर कि 'मैं पहिले की अपेक्षा अधिक दुखी हू। किन्तु बुद्धिमान बनकर आक्सफोर्ड लौटा।"

आरम्भ में पाश्चात्योका सस्कृतसे परिचय होनेपर जर्मन सस्कृतज्ञ सस्कृत को आदिम एव भूल भाषा मानते थे किन्तु लार्ड मैकाले से प्रभावित विद्वान अब सस्कृत को ग्रीक, लैटिन एव ऐग्लो-सैकान का मूल मनाने की कोई कल्पना नही कर सकता। अग्रेजो ने भारतीय सस्कृति की जड़ो पर कूटनीतिज्ञता से प्रहार किया इतिहास को तोड़ मरोड़कर उन्होने भारतीयो के हृदय व मस्तिष्क मे यह बात बैठानी आरम्भ कर दी कि आर्य लोग भारत म मध्य एशिया से आए थे। इस प्रकार उन्होने अपने अनुरूप ही आर्य नाम से अभिहित जाति को विदेशी सिद्ध करने की चेष्टा की तथा इसके लिए वेदो का अनुवाद भी अपने उद्देश्य एव स्वार्थ सिद्धि के लिए उसी परिप्रेक्ष्य मे करना अभीष्ट था। अग्रेजो की तथा मैक्समूलर द्वारा कल्पित भावों की प्रतिपूर्ति राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत सदस्य श्री फ्रैंक एन्थोनी ने ४ दिसम्बर, १९७७ को ससद मे सस्कृत को विदेशी भाषा बता कर की थी।

यह बात विचारणीय है कि एक ओर तो मैक्समूलर वेदो को गडरियों के गीत तथा उसकी भाषा को बचकानी, निकृष्ट एव अत्यन्त साधारण कहता है, दूसरी ओर वेद एव वैदिक साहित्य के अनुवाद एव अध्ययन मे अपना जीवन समर्पित कर देता है। वेद के सम्बन्ध में इस प्रकार के विचारो वाला विद्वान वेदभाष्य के प्रति किस प्रकार न्याय कर सकता है। इससे भी आगे बढकर जब फ्रैंच विद्वान लुई जैकालियट द्वारा लिखित "ला बाइबल डान्स लिन्डे", जिसमे उसने आर्य विचारो की प्रशसा की है, मैक्समूलर ने अग्रेजी अनुवाद पढ़ा तो उसने अपनी खीज व झोंझलाहट "जैकालियट अवश्य ब्राह्मणो के बहकावे में आ गया है" कह कर प्रदर्शित की। उसे इतना कहने पर ही सन्तोष न हुआ तो उसने जैकालियट के पुत्री को पत्र लिखकर अपनी इस भावना को व्यक्त किया। (क्रमश)

आर्यसमाज के बढ़ते कदम

हिमाचल में साधना शिविर

उद्गीथ साधना स्थली (रजि०) हिमाचल मे अपनी प्रकार का प्रथम साधना स्थान बना है जो आचार्य आर्य नरेश उत्साही युवा वेद प्रवक्ता के अनथक प्रयास से निर्मित हुआ है। यह स्थान सोलन से राजगढ़ होकर हाब्बन मार्ग पर डोहर ग्राम के समीप 'ओम् वन" में बहुत ही सुन्दर और मनोरम वातावरण मे बनाया गया है। सोलन से ४८ कि० मी० की दूरी पर भवन निर्माण के लिए सामान सामग्री जुटाने के लिए बहुत ही कठिनाइयो का सामना करना पड़ा।

२५ मई से ३१ मई तक आचार्य जी के नेतृत्व मे साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमे लगभग २५० से ३५० तक आर्य बन्धुओं, परिवारो तथा युवको ने बहुत ही हर्ष उल्लास से भाग लिया। देहली पंजाब, यूपी, राजस्थान, बिहार, गुजरात, बम्बई तक से श्रद्धालु लोग भाग लेने के लिए आए थे। देहली विकासपुरी आर्य समाज से तो एक बस भर कर आई थी। शुद्ध, पवित्र तथा शीतल जलवायु मे (जबकि मैदानी इलाको में ग्रीष्म ऋतु का प्रकोप चल रहा है) यात्रियो को गर्म वस्त्रों तथा कम्बलों आदि का प्रयोग करना पड़ा। आगन्तुको के खानपान के लिए अत्यन्त सुचारु रूप से निरन्तर भण्डारे का आयोजन था। माताओ ने बहुत रुचि ली और सहयोग दिया। स्थानीय धर्मप्रेमी बन्धुओ ने भी बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। प्रतिदिन योग, साधना, सन्ध्या, हवन, मन्त्र पाठ संस्कृत भाषा प्रशिक्षण के लिए नियमित रूप से आचार्य आर्य नरेश जी स्वय आयोजन करते थे। दैनिक यज्ञ के लाभ और आज के दूषित वातावरण मे इसकी परम आवश्यकता पर लोगो को अवगत कराया गया। अन्य विद्वानो तथा विदुषियो ने विशेष कर श्री पण्डित विद्याव्रत शास्त्री एव आचार्या डा० अन्नपूर्णा देवी जी भाग लेने को पधारे थे। भजनीक विजय आनन्द फिरोजपुर से तथा प्रख्यात भजनोपदेशक हिमाचल सुन्दर नगर से प० हरिश्चन्द्र जी आए थे जिन्होने अपने भजनो से कार्यक्रम को रोचक बनाया। आध्यात्मिक प्रवचनो में भाग लेने वालो ने बहुत रुचि ली तथा लाभ उठाया।

प्रथम प्रयास की अपूर्व सफलता तथा श्रद्धालुओ का जोश देखकर संयोजको, ने यह निश्चय लिया है कि ऐसे शिविरो का नियमित रूप से आयोजन किया जायेगा।

साधना स्थली के प्राङ्गण मे ऊंची पहाड़ी पर भव्य यज्ञशाला के निर्माण का आयोजन हो रहा हैं जो कि शीघ्र ही बनकर तैयार हो जायेगी। धर्म प्रेमी बन्धुओ ने दिल खोलकर यज्ञशाला के निर्माण निमित्त योगदान दिया।

आज हमारे देश, समाज तथा जाति को ऐसी संस्थाओं तथा शिविरो की अत्यन्त आवश्यकता हैं। यद्यपि आचार्य आर्य नरेश जी के अटूट अनथक परिश्रम से यह साधना स्थली निर्मित हुई किन्तु वे स्वय यहा पर बहुत कम समय रहते है। उनके मन मे राष्ट्र और जाति के उत्थान के लिए सच्ची लगन तथा तड़प हैं। वे वेद प्रचार के लिए देश भर मे लगातार भ्रमण करते हैं। आज की भटकी हुई युवा पीढ़ी को अपने धर्म, भारतीय संस्कृति तथा वेद ज्ञान से अवगत कराने मे सर्वदा तत्पर रहते हैं।

वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

हरिद्वार १३ मई। आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। यह २ मई को आरम्भ हुआ। जिसका समापन २४ मई को सम्पन्न हुआ। यजमान माता शांति यादी ने आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार के ब्रह्मत्व में सम्पन्न कराया।

उक्त यज्ञ में आश्चर्य जनक बात यह थी कि इसमे वेदपाठी महिलाए थी। प्रतिदिन चार महिलाए वेदपाठ करती थी। पूर्णाहुति के दिन अर्थात् १२ मई को ११ महिलाओ ने सम्मिलित वेद पाठ किया। वर्णोच्चारण और स्वर की दृष्टि से यह प्रयास अत्यन्त श्रेष्ठ रहा। सम्मिलित मन्त्र पाठ की लयबद्ध मधुर ध्वनि से आश्रम वेदमय हो गया। इन महिलाओं को मन्त्रपाठ की शिक्षा आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार ने दी।

समस्त आश्रमवासी एव अतिथि अभ्यागत महानुभाव लाभान्वित हुए।

आगे बढ़ो !

राह कण्टक पूर्ण है फिर भी चलो। आगे बढ़ो॥
रुक गए तो अन्त जीवन का यहीं,
बिन बढ़े मंजिल मिली किसको कहीं,
सामने उफनता दरिया देखकर
तैरने वाला कोई रुकता नहीं,
विपद् झंझावात् से तुम मत डरो। आगे बढ़ो॥

कौन चलता साथ इसका सोचना क्या,
कौन रोके राह इसका देखना क्या,
जिन्दगी तो नाम बस चलने का है,
हाथ पर ही हाथ धर कर बैठना क्या,
हो विरोधी कुल जमाना तुम मत रुको। आगे बढ़ो॥

दिन सदा ही एक से रहते कभी है,
संसार मे तो मित्र या शत्रु सभी हैं,
बीज नफरत के यहा जो बो रहे हैं,
वार से उनके बचो, साथी नही हैं,
भाई होकर भाई से तुम मत लड़ो। आगे बढ़ो॥

एकता की शक्ति को पहचान लो,
एक रोटी भी परस्पर बांट लो,
दूसरो के सुख की खातिर स्वयं को,
संयमी जीवन मे थोड़ा ढाल लो,
क्षणिक भोगो के लिए तुम मत भिड़ो। आगे बढ़ो॥

—सन्तोष 'कण्व'

एकता ही आतंकवाद के विरुद्ध कारगर हथियार है

स्व० राजीव गांधी की पुण्य तिथि को आतंकवाद विरोधी दिवस के रूप मे मनाकर आज समाज कल्याण निदेशालय के सभी कर्मचारियों तथा कार्यालयों के कर्मचारियों तथा सहायिकाओं ने आतंकवाद के विरुद्ध शपथ करने एकजुट होकर इसका सामना करने तथा संगठित रहने की शपथ ली।

इस अवसर पर समाज कल्याण निदेशक एवं सचिव कु० गीता साली ने कहा कि हमें हर कीमत पर देश मे बढती हुई आतंकवादी गतिविधियो को रोकने के लिए मिल जुलकर काम करना चाहिए तथा विघटनकारी शक्तियों का संगठित होकर मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए।

समाज कल्याण निदेशालय द्वारा आतंकवाद विरोधी दिवस ५ मुख्य स्थानो पर मनाया गया। इस अवसर पर सभी आयु वर्ग के बच्चों तथा सभी वक्ताओं ने अपने विचारो मे एकता को आतंकवाद के विरुद्ध एक कारगर हथियार बताया और कहा कि हम सभी का कर्तव्य है कि अपने पड़ोस में होने वाली किसी भी राष्ट्र विरोधी गतिविधि पर नजर रख तथा आवश्यकता पडने पर देशहित में अपनी एकता का परिचय दें।

वैदिक रीत्यानुसार विवाह सम्पन्न

ग्राम मुडागांव के आर्य समाजी स्व० श्री मनबोध आर्य के सुपुत्र श्री बसन्त कुमार आर्य (कोषाध्यक्ष आर्य कुमार सभा मुडागांव) का विवाह दिनांक ८ ४ ९२ को सलखिया निवासी श्री कान्हूराम आर्य की सुपुत्री कुमारी गुरबारी आर्या के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार पौराणिकों के कट्टर विरोध के बावजूद श्री प० अमृतलाल जी शर्मा के सहयोग मे पूर्ण वैदिक रीति से हर्ष उल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

—बसन्त कुमार आर्य मन्त्री
आर्य कुमार सभा मुडागांव

दादरी में आर्यवीर सम्मेलन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे प० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी १५-१७ मई तक मनाई गई। अंतिम दिन आर्य वीर सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सञ्चालक ने की। इस अवसर पर श्री सत्यवीर आर्य सञ्चालक राजस्थान ने यह प्रस्ताव रखा कि प्रत्येक आर्य समाज मे आर्यवीर दल की ईकाई का अनिवार्यतः गठन होना चाहिए और समाज को अपनी आयका दशांश आर्य वीर दल के कार्यक्रमों पर खर्च करना चाहिए। श्री वेद प्रकाश आर्य मन्त्री आर्यवीर दल हरयाणा ने नवयुवकों को आर्य समाज मे कैसे लायें इस पर प्रकाश डालते हुए इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। श्री जसवंतसिंह आर्य कृषि राज्य मन्त्री हरयाणा डा० ओमदत्त डा० धर्मवीर आदि विद्वानो के भी प्रवचन हुए।

इस सम्मेलन मे सेवा तथा सुरक्षा का उत्तरदायित्व आर्य वीर दल हरयाणा के आर्यवीरो तथा अधिकारियो ने पूरा किया। शोभा यात्रा मे आर्य वीरो का व्यायाम प्रदर्शन भी हुआ।　—मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा

पीलीबंगा मण्डी (राजस्थान) मे पारिवारिक सत्संग

७ ५ ९२ को श्री डा० भीमसैन जी शर्मा MBBS की पुत्री कुमारी गरिमा रानी के जन्म दिन पर श्री ओम्प्रकाश जी वानप्रस्थी बठिण्डा द्वारा हवन यज्ञ करके पुत्री को सभी उपस्थित स्त्री पुरुषों ने पुष्पों द्वारा आशीर्वाद दिया—श्री वानप्रस्थी जी ने बच्चों की शिक्षा पर बल देते हुए उन्हें धार्मिक शिक्षा देने पर बल दिया श्री डाक्टर भीमसैनजी ने सब का चाय एवं मिठाई से सत्कार किया।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

पंचम वेद प्रचार समारोह

कमल ज्ञान विमल धर्मार्थ प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त स्थान वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम अशोक नगर रेलवे वर्कशाप रोड जमुना नगर (हरियाणा) में १६ से १८ ज्येष्ठ २०४९ (२९ से ३१ मई १९९२) शुक्रवार से रविवार तक मनाया गया।

—अध्यक्ष स्वामी सच्चिदानन्द

स्वास्थ्य सुधा—

शहतूत खाइए : लू गर्मी से बचिए

फलो मे जीवन शक्ति बढ़ाने की अनुपम तथा अद्वितीय शक्ति है। ऋषि-मुनि योगी तो फलाहार के बल पर सैकड़ो वर्षों तक स्वस्थ जीवन जीते थे एवं शारीरिक व मानसिक उन्नति के साथ ही आत्मिक विकास करते थे।

आजकल बाजार में शहतूत खूब आ रहे है। शहतूत बहुत ही ठंडा, रसीला, मीठा व सस्ता फल है लेकिन है अत्यन्त गुणकारी। पका शहतूत शीतल, रक्तशोधक एवं पित्त को शांत करता है। इसमें फल शर्करा होती है जो आंतो व गले की जलन आदि मे स्वास्थ्यप्रद रहती है। शहतूत का शरबत बनाकर दिन में तीन बार चाटने से टांसिल मे लाभकारी सिद्ध हुआ है। अनुभूत प्रयोग है। शहतूत मे ग्लूकोज व प्रोटीन काफी मात्रा मे होने से यह अपने आप मे एक पूर्ण हल्का भोजन है। इसके गुणो के बारे मे कहा जाता है कि "गागर मे सागर" भरा हुई है। यह स्वास्थ्यवर्द्धक होने के साथ ही कितने ही रोगो मे लाभकारी रहता है।

जो शहतूत का नियमित प्रयोग करते हैं उन्हें लू और गर्मी नहीं सताती है। स्वादिष्ट होने के कारण इसे बच्चे भी बहुत पसन्द करते हैं। बच्चो को आइसक्रीम, कुल्फी, बर्फ के स्थान पर स्वास्थ्यवर्द्धक शहतूत खिलाना या उसका जूस निकालकर शर्बत पिलाना अधिक गुणकारी रहता है। आप शहतूत के जूस मे नीबू अदरक, नाममात्र काला नमक व काली मिर्च डालकर स्वादिष्ट पेय का आनन्द लीजिए तथा गर्मी और लू मे बचे रहिये। शहतूत के अन्य बहुत से लाभ हैं। इसके नियमित प्रयोग से शरीर की सुन्दरता मे निखार आता है तथा गुर्दे, पेशाब एवं पेट की जलन दूर होती है।

महिलाओं के लिए, विशेषकर गर्भवती माताओ के लिए शहतूत अत्यन्त स्वास्थ्यप्रद फल है। उनके दूध मे भी इसके नियमित सेवन से वृद्धि होती है। कुछ भी हो ग्रीष्म ऋतु मे तो शहतूत गरीबो के लिए अंगूर से भी बढ़कर उपयोगी फल माना गया है। स्त्री-पुरुष, बाल वृद्ध सभी के लिये शहतूत प्रकृति का वरदान है।

—नृसिंह देव अरोड़ा चौक सौदागर मोहल्ला, अजमेर

भीलों में वैचारिक क्रान्ति पैदा की जायेगी

दिल्ली ११ मई।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से आयोजित वनवासी प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में संघ को मन्त्री श्रीमती प्रेमलता ने नव दीक्षित वनवासियो को आशीर्वाद देते हुए कहा—हम पिछले १० वर्षों से लगातार वनवासी क्षेत्रो के चुने हुए नव युवको के लिए आर्य समाज रानीबाग में प्रशिक्षण शिविर लगा रहे हैं। इस कार्यक्रम से अब तक कई सौ वनवासी युवक लाभ उठा चुके है। हमारा मुख्य लक्ष्य वनवासी क्षेत्रो के भीलो में वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करने का है। आजादी के ४७ वर्ष बाद भी भील लोगों का अराष्ट्रीय लाभ उठा रहे हैं। उन्हें थोड़ा सा प्रलोभन देकर ईसाई बना लिया जाता है। इसलिए संघ का यह मुख्य उद्देश्य है कि प्रशिक्षित वनवासी युवक अपने क्षेत्रो के भीलो मे राष्ट्रीय भावना को जागृत कर के वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करें। इन लोगो को अपनी संस्कृति, अपने धर्म और वेद प्रतिपादित वैदिक सभ्यता का ज्ञान हो, ताकि आने वाले कल के लिए ये लोग जाति, तथा राष्ट्र को सबल नेतृत्व दे सकें। मानव मात्र की सेवा सहायता मे जुट सकें, दीन हीनो के दु:ख में सहयोगी बन सकें।

समारोह की सफलता के लिए उन्होने आर्य समाज रानीबाग, आर्य-समाज अशोक विहार और श्री शान्ति अग्निहोत्री के सहयोग का विशेष रूप से धन्यवाद किया। इस समापन समारोह मे संघ के महामन्त्री श्री देवव्रत महता तथा सार्व० सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती भी उपस्थित थे।

—कार्यालय सचिव

अण्डा नहीं दूध दीजिये

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक वक्तव्य मे भारत सरकार के कृषि विभाग के राज्य मन्त्री के इस घोषणा पर कड़ी आपत्ति की है कि ग्रामीण क्षेत्र में मुर्गी पालन को बढ़ावा देने के लिये स्कूली बच्चो को दोपहर के भोजन में अण्डा दिया जायेगा।

श्री आर्य ने वक्तव्य मे कहा है कि कृषि विभाग का कार्य राष्ट्रीय चरित्र का हनन करेगा। सरकार को चाहिये कि विद्यार्थियो को तामसिक अण्डा के स्थान पर सात्विक भोजन दूध व फल की व्यवस्था करें।

—श्याम प्रकाश
केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

निर्वाचन

आर्यसमाज रावतभाटा वाया कोटा राज०—श्रीमती भागवन्ती मेहता प्रधान, देवेन्द्र कुमार मन्त्री, श्री ओमप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज अल्मोड़ा—श्री पूरनसिंह प्रधान, डा जयदत्त शास्त्री मन्त्री, श्री रघुवीरसिंह मेर कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज धामपुर जिला बिजनौर—श्री ओमप्रकाश गोयल प्रधान, श्री इन्द्रदेवसिंह विधायक मन्त्री, श्री अखिलेश कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज कृष्णनगर प्रयाग इलाहाबाद—श्री सन्तोषकुमार कुशवाहा प्रधान, श्री योगराज मन्त्री, श्री रामकृपाल शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्यसमाज वरगल आन्ध्र प्रदेश—श्री लक्ष्मण आर्य प्रधान, श्री बी० गोविन्द आर्य मन्त्री, श्री वि० रजमोली कोषाध्यक्ष चुने गए।

आवश्यकता है

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (अलीगढ़) के लिए आवश्यकता है (केवल महिलायें) नर्सरी ट्रेन्ड, सहायक पुस्तकालयाध्यक्षा, एम एस सी (रसायन, जीवविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान), बी. एस. सी. (गणित) एम ए (हिन्दी, अंग्रेजी) दर्शनशास्त्र, एम. ए, पी एच डी. (अंग्रेजी), आश्रमाध्यापिकाएं, आश्रमाध्यक्षा (छात्रावास हेतु)। दर्शनशास्त्र का प्रौढावस्था का पुरुष अध्यापक भी रक्खा जा सकता है।

—मुख्याधिष्ठात्री

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज, शामली के लिए एक विद्वान वानप्रस्थी अथवा गृहस्थी आर्य पुरोहित की आवश्यकता है जो विधिनुसार वैदिक संस्कार, यज्ञ करा सके तथा दैनिक, साप्ताहिक एवं अन्य समारोहों में प्रवचन कर सके। गायन विद्या मे निपुण को प्राथमिकता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार एवं निवास नि:शुल्क उपलब्ध होगा। शीघ्र सम्पर्क करें—

—योगेन्द्र कुमार
मन्त्री, आर्य समाज शामली-२४७७७६

साहित्य समीक्षा

वैदिक संस्कृति का विश्वकोष

लेखक—श्री पूर्णचन्द उपाध्याय
भूमिका—पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'
प्रकाशक—आर्य प्रकाशन मण्डल
९-२२१, मेन रोड, गांधीनगर, दिल्ली-११००३१
पृष्ठ संख्या—२०१, सजिल्द मूल्य—७० रुपये

भावना से कर्त्तव्य बडा है। कर्म सिद्धान्त की गूढ गुत्थिया सुलझाने वाली इस मार्मिक पुस्तक मे मानव जीवन के रहस्य को समझ कर जीवन को सफल बनाने के लिए महत्वपूर्ण उपायो पर प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक का विवेचन क्षेत्र इतना व्यापक तथा विशद है कि कोई भी समस्या विवेचित होने से छूटी नहीं है। आज के इस वैज्ञानिक युग मे जहा चारो ओर स्पर्धा की होड लगी है इस प्रकार की पुस्तक का प्रकाशन समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी एव स्पृहणीय है। पांच खण्डो में विभाजित यह ग्रन्थ एक अमूल्य निधि है अत पठनीय एव संग्रहणीय होने के साथ साथ उपहार स्वरूप देने के लिए भी उपादेय हैं।

—डा० शिवकुमार शास्त्री
धर्माधिकारी सार्वदेशिक धर्मार्य सभा

विदेश समाचार

आर्य समाज लंदन का वार्षिक निर्वाचन

दि० २४ मई १९९२ को आर्य समाज लंदन के बग्वे मास्टर भवन में कार्यकारिणी के पदाधिकारियो का चुनाव भूतपूर्व प्रधान प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज की अध्यक्षता में शान्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुआ जो निम्न प्रकार है—

प्रधान—श्री धीरेन्द्र वीर वर्मा
उप प्रधान—श्री प्रियव्रत चोपड़ा, श्री कुलबीर सिंह पुरी
मन्त्री—श्री राजेन्द्र चोपड़ा
उप मन्त्री—श्री आदर्श आर्य, श्री प्रभाकर शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार बेदी
उप कोषाध्यक्ष—श्री धर्मपाल मसीह
लोक सम्पर्क अधिकारी—श्री सतपाल बत्रा
पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती उषा मसीन

कार्यकारिणी के सदस्य—

श्री अरुण कहेर, श्री महेन्द्र पस्तावा, श्रीमती कान्तापुरी, श्री रवि खोसला, श्री यश देव मित्रा श्री राकेश भारद्वा।

दो मनोनीत सदस्यों का चुनाव आगामी बैठक में किया जायेगा

—डा० तावाजी आचार्य

आर्य ... निवार को स्थानीय निवासी श्री धारेन्द्र ... पूरेलाल गगवार तथा दिल्ली निवासी कु० शीला थोमस पुत्री श्री थामस ... विवाह संस्कार स्थानीय आर्य समाज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। तथा पारिवारिक रीतिके अनुसार श्रीमती शीला थोमस का नवीन नाम शीला गंगवार रखा गया।

—योगेन्द्रपाल आर्य
मन्त्री आर्य समाज बिसहरी

वीरांगना शिविर सम्पन्न

पीपाड़ शहर आर्य समाज पीपाड़ शहर के तत्वावधान में दिनांक २१-५-९२ से २८-५-९२ तक आठ दिवसीय वीरांगनाओ को सबल करने हेतु एक शिविर का आयोजन किया गया शिविर का संचालन श्रीमती सविता जी आर्य (अलवर) ने किया। शिविर में आसन, लाठी, प्राणायाम के साथ आध्यात्मिक कार्यक्रम भी रखे गये। शिविरावधि में प्रात यज्ञ, प्रवचन एव भजन का आयोजन किया जाता जिसमें सुबह शाम लगभग ३० महिलायें एव कन्याओ ने लाभ उठाया।

—चम्पालाल आर्य, मन्त्री
आर्य समाज, पीपाड़ शहर (राज०)

निर्वाचन

आर्य समाज अनाज मण्डी शाहदरा दिल्ली-३२ का वार्षिक चुनाव वर्ष १९९२-९३ के लिए २४-५ ९२ को सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न अधिकारी चुने गए।

प्रधान—श्री बनवारी लाल, उपप्रधान—ब्रह्मानन्द जी, उपप्रधान—मेवाकर आर्य, मन्त्री—श्यामसुन्दरलाल गुप्ता, कोषाध्यक्ष—हरपाल सिंह, उपमन्त्री—रमेश मसीन, कुलदीप शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष—रामपाल सिंह, प्रचार मन्त्री—विनोद पण्डित।

आर्य वीर दल द्वारा आर्य सम्मेलन

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आपके क्षेत्र हस्तिनापुर के ग्राम रहमापुर मे एक विशाल आर्य सम्मेलन दिनांक १६ व १७ जून १९९२ को होने जा रहा है। जिसमें सभी प्रान्तो से साधु सन्यासी एवम् नेतागण पधार रहे हैं। अत आप इष्ट मित्रो सहित पधार कर इस यज्ञ में अपनी आहुति देकर धर्म लाभ उठावें।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- लोगों ने चौका लगाते लगाते, विरोध करते कराते सब स्वातन्त्र्य, आनन्द, धन, राज्य विद्या और पुरुषार्थ पर चौका लगाकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। और इच्छा करते हैं कि कुछ पदार्थ मिले तो पाकर खावे।
- जब आर्यो का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नही मारे जाते थे तभी आर्य्यावर्त व अन्य भूगोल के देशो मे बडे आनन्द मे मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे क्योकि दूध, घी, बैल आदि पशुओ की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३ अंक ५ | दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ अषाढ कृ० १३ सं० २०४९ २८ जून १९९२

दिल्ली के आर्य समाजियों द्वारा उपराज्यपाल के कार्यालय पर धरना

दिल्ली १७ जून। दिल्ली मे आर्य समाज मन्दिर विकासपुरी को दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियो द्वारा बिना पूर्व सूचना के गत २६ मई को गिरा दिए जाने के विरोध मे दिल्ली के आर्य समाजियो की ओर से आज उपराज्यपाल के कार्यालय पर धरना दिया गया। धरने मे दिल्ली की आर्य समाजो तथा महिला सभा की ओर से लगभग ५-६ सौ नर नारी और युवा सम्मिलित थे। यह धरना लगभग ३ घण्टे तक चला। अन्त मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के नेतृत्व मे आर्य समाज के १० सदस्यो का शिष्टमण्डल उपराज्यपाल श्री दवे से मिला। स्वामी जी ने उपराज्यपाल महोदय को आर्य समाज मन्दिर को बिना पूर्व सूचना के गिरा दिए जाने पर आर्य समाज के प्रबल विरोध और भावी कार्य क्रम से अवगत कराया। स्वामी जी ने उपराज्यपाल महोदय को यह भी बताया कि १९७६ मे भी इसी तरह डी०डी०ए० ने आर्य समाज ग्रीन पार्क का मन्दिर गिराया था, बाद मे आर्य समाज का पक्ष सुनकर प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने मन्दिर के लिए दुगुनी भूमि निःशुल्क डी०डी०ए० से दिलवाई और मन्दिर निर्माण भी सरकार की ओर से करने का आश्वासन दिया।

स्वामी जी ने उपराज्यपाल को बताया कि विकासपुरी आर्य समाज मन्दिर की भूमि के विषय मे आर्य समाज और डी०डी०ए० के बीच काफी पहले से पत्राचार चल रहा था और बैंक सिक्योरिटी सम्बन्धी विवरण की जानकारी भी सम्बद्ध विभाग को दी जा चुकी थी। इस सबके बावजूद मन्दिर को बिना पूर्व सूचना के गिराना बहुत बडी साजिश का परिणाम है।

शिष्टमण्डल ने माग की कि डी डी ए के दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कडी कार्यवाही की जावें और आर्य समाज मन्दिर की क्षति पूर्ति तुरन्त की जाये। उपराज्यपाल महोदय ने शिष्टमण्डल को आश्वासन दिया कि मामले की शीघ्र जाच करके उनकी माग पर उचित रूप से विचार करेंगे।

शिष्टमण्डल मे सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्रीमती शकुन्तला आर्या, चौधरी लक्ष्मीचन्द और आर्य समाज विकासपुरी के अधिकारी सम्मिलित थे।

राष्ट्रपति पद के लिए भारतीय जनता पार्टी ने ईसाई नेता प्रो० जार्ज गिल्बर्ट स्वेल के नाम का समर्थन किया

राष्ट्रपति पद के लिए भारतीय जनता पार्टी ने ईसाई नेता प्रो० जार्ज गिल्बर्ट स्वेल के नाम का समर्थन किया हैं। ६८ वर्षीय प्रो० स्वेल मेघालय निवासी हैं। वह १९६९ से १९७७ तक लोक सभा के उपाध्यक्ष रहे चुके हैं। उन्होने १९४८ मे कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी मे एम०ए० किया। और वह १९६२ से ४ बार लोक सभा के सदस्य रहे। उन्होने चालीस के दशक मे असम के लिए पृथक राज्य की माग कर राजनीति की शुरुआत की। भारतीय जनता पार्टी के इस निर्णय से ऐसा प्रतीत होता है कि विश्वनाथ प्रतापसिंह का राष्ट्रीय मोर्चा और भाजपा दोनो विपक्षी दल एक दूसरे के निकट आ रहे हैं।

बबराला में आर्य महासम्मेलन

यज्ञ से राष्ट्र की खुशहाली और समृद्धि बढ़ती है
देश को बाहर से अधिक अन्दर से खतरा है

१८ जून। आर्य समाज बबराला (जनपद बदायू) के वार्षिकोत्सव मे प्रातः यज्ञ के उपरान्त स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने यज्ञ की महत्ता पर अपने प्रवचनो मे कहा—प्राचीन काल मे घर घर मे यज्ञ होते थे, जिससे प्रदूषण व बीमारी नही होती थी। लोग

शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय शिविर का समापन समारोह सम्पन्न

श्री बचनसिह आर्य का ओजस्वी भाषण

दिल्ली २१ जून।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय शिविर का समापन समारोह सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हर्षोल्लास केसाथ सम्पन्न हुआ। महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बालमन्दिर हरि-नगर मे ७ जून से चल रहे इस शिविर मे देश के विभिन्न भागो से आए ७०० युवको ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। तथा आर्य समाज, भारतीय संस्कृति तथा देश की अखण्डता की रक्षा करने का संकल्प लिया। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री देवव्रत आचार्य ने युवको को प्रशिक्षण प्रदान किया।

प्रात. ६ बजे श्री सत्यानन्द जी आर्य के ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ, इस समारोह मे दिल्ली तथा दूर-दूर से पधारे हुए हजारो स्त्री पुरुषो ने आर्य वीरो के द्वारा किये गये आश्चर्य जनक प्रदर्शन को देखा तथा सराहना की। जयभारत मारुति लि० के संचालक श्री सुरेन्द्र आर्य इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर हरियाणा के कृषि राज्य मन्त्री श्री बचनसिह ने आर्य वीरो को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज देश एक कठिन परिस्थिति से गुजर रहा हैऔर हर संकट के समय आर्यसमाज ने अपने शौर्य का प्रदर्शन किया है अत आज हर प्रदेश तथा हर आर्य समाज मे आर्यवीर दल की शाखा लगनी चाहिए तथा ऐसे नौ जवानो को तैयार करना चाहिए जो देश जाति और संस्कृति की रक्षा के लिए हर बलिदान देने को तत्पर रहें और यह कार्य केवल आर्यवीर दल के नौजवान ही कर सकते है। इस अवसर पर अनेको वक्ताओ ने आर्यवीरो के प्रदर्शन की सराहना की तथा अपना आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह मे प्रशिक्षण प्राप्त अनेको आर्यवीरो को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने प्रशस्ति पत्र तथा आशीर्वाद प्रदान किया। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ कार्य कर्ता श्री रामसिह राणा का सम्मान किया गया। श्री राणा को सार्व० आर्यवीर दल की तरफ से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रशस्ति पत्र तथा २१००) की थैली भेंट की तथा सार्व० सभा की तरफ से प्रतिमास ५००) की सहायता देने की भी घोषणा की। इस अभूतपूर्व समारोह की सफलता मे आर्य वीर दल के महामन्त्री श्री राजसिह आर्य ने महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। समारोह के अन्त मे हजारो स्त्री पुरुषो तथा आर्य वीरो ने भोजन ग्रहण किया।

आर्य महासम्मेलन

पृष्ठ १ का शेष)

आश्रम व्यवस्था का पालन करते थे। उनमे किसी प्रकार का दुर्व्यसन नहीं था। शराब आदि का पूर्ण निषेध था। इसी आधार पर रघुवंशी राजा अश्वपति ने अपने दरबार में ऋषि-मुनियों को सम्बोधित करते हुए कहा था—मेरे राज्य में कोई चोर, डकैत तथा पीड़ित नही है। सब लोग सदाचार पूर्वक यज्ञानुष्ठान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे है, जिससे राष्ट्र समृद्ध और खुश-हाल बन गया है। स्वामी जी ने जनपद के लोगों से अपील की कि सब व्यसनो का परित्याग करें और महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रचार करके राष्ट्र निर्माण तथा युवकों के चरित्र निर्माण के लिए आगे आये।

दोपहर को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी जी ने हजारो लोगों की विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए कहा-देश के ऊपर खतरों के काले बादल मंडरा रहे हैं। परन्तु हमारी सेनायें सशक्त और मजबूत हैं और आधुनिक प्रक्षेपास्त्रों से लंस हैं। कोई भी देश कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, वह भारत से लड़ने का साहस नहीं कर सकता है। भारत की सैनिक शक्ति का अनुमान लगाकर ही अमेरिका ने इसके अग्नि और त्रिशूल प्रक्षेपास्त्रों पर प्रतिबन्ध लगाने की बात की है। देश को वास्तविक खतरा बाहर से नही अन्दर के उन लोगों से विशेष रूप से है, जो वोटों की राजनीति मे देश को नष्ट करना चाहते हैं।

स्वामी जी ने कहा-यदि देश का पहला प्रधानमन्त्री सरदार पटेल होता तो आज कश्मीर जैसी कोई समस्या नहीं रहती और उसका हल उसी प्रकार हो गया होता जैसा हैदराबाद निजाम का हुआ। इस समय जो आंतरिक समस्यायें उत्पन्न हुई हैं, वह भी नहीं होती।

कार्यक्रम के अन्त मे आर्य जगत् के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री और स्वामी ब्रह्मानन्द वेदभिक्षु का क्षेत्र की जनता ने स्वागत किया और आनन्दबोध सरस्वती ने उन्हें शाल, प्रशस्तिपत्र और थैली भेंट की। ●

विदेश समाचार

कैलीफोर्निया लासएंजलेस में वैदिक धर्म समाज की गतिविधियां

प्रत्येक रविवार को प्रात नियमित रूप से सत्सग होता है। भारत का गणतन्त्र दिवस २६ जनवरी को बडे उत्साहपूर्ण ढग से मनाया गया। ८ मार्च रविवार को ऋषिबोध दिवस (शिवरात्री) बडी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बालकृष्ण शर्मा ने की तथा लासएंजलेस के हिन्दू नेता डा० महेश गुप्ता ने मुख्य अतिथि के रूप मे उत्सव की शोभा को बढाया बच्चों ने अग्रेजी तथा हिन्दी मे भाषण दिये तथा अन्य धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वैदिक धर्म समाज के हाल मे उपस्थित आर्य परिवारो ने करतल ध्वनि से बच्चों का उत्साह बढाया। मई मास मे अमरीका की परम्परा के अनुसार मदर्ज डे (Mothers day) मनाया गया। समाज की ओर से तीन माताओं को सम्मानित किया गया। पुरोहित मदनलाल गुप्ता ने सभी माताओं के स्वस्थ जीवन तथा दीर्घ आयु की प्रभु से प्रार्थना की।

भारत से पधारे हुए डा० दुर्गा सिह चौहान राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ कार्य कर्ता वाराणसी का महर्षि दयानन्द की जीवनी पर बहुत ओजस्वी भाषण हुआ।

आपने अपने भाषण के माध्यम मे बताया कि आर्य समाज ने पिछड़े हुए वर्ग को गुरुकुल के माध्यम से वेदो का ज्ञान देकर ब्राह्मण बनाया, परन्तु भारत सरकार की तुष्टिकरण की नीति के कारण आज हर व्यक्ति पिछडे वर्ग का सदस्य बनकर आर्थिक लाभ उठाना चाहता है। वैदिक धर्म समाज की ओर से समाज के भवन मे तथा आर्य परिवारो के निवास स्थान पर भी विविध सस्कार कराए जाते है। प्रचार का जो कार्य दिसम्बर १९९१ मे आरम्भ किया था आज भी जारी है, अन्य देशो मे सन्ध्या हवन मन्त्र पुस्तके, गायत्री मन्त्र के टीकर समाज की ओर से डाक व्यय करके निःशुल्क भेजे जाते है। भारत से गुजराती भाषा के सत्यार्थ प्रकाश मगवा कर गुजराती भाषी धर्म प्रेमियो को दिए है। सत्सग के अन्त मे ऋषि लगर का विशेष प्रबन्ध होता है।

मदनलाल गुप्ता

मृत्यु का स्वरूप (३)

श्री पूर्णचन्द्र उपाध्याय

मरों से बातचीत

सम्प्रति पश्चिमीय जगत में और भारतवर्ष में भी यह एक प्रसिद्ध विचार है कि मृत्यु के पश्चात मरे हुओं की आत्मा को हम बुलाकर उनसे बातचीत कर सकते हैं। मृतात्माओं को बुलाने के भिन्न भिन्न तरीके हैं। कहीं तीन पैर की मेज है और कहीं अन्य उपाय। बड़े बड़े आदमी इस प्रथा में विश्वास रखते हुए पाये जाते हैं और बड़े बड़े वैज्ञानिक वाले जैसे सर ओलीवर लौज इत्यादि उसकी पुष्टि करते हैं। इन सबके सम्बन्ध में यह कहना कि वे असत्य बोलते हैं अनाधिकार चेष्टा होगी। परन्तु हम यह लिखने का साहस अवश्य करेंगे कि वे भ्रम में हैं और मौत से परे की दशा का उन्हें कोई ज्ञान नहीं है। वे जीवात्मा के स्वरूप को भी नहीं जानते हैं इसलिए इस प्रथा में विश्वास कर लेते हैं। हर एक को अपने मरे हुए सम्बन्धी या मित्र से मोह और स्नेह रहता है। हमारे अन्दर मरे हुओं के अनेक प्रकार के चित्र उनके किये हुए काम और उनकी कही हुई बातों की स्मृति बनी रहती है। यदि हम एकाग्रचित होकर बैठें तो हम उन पुराने पृष्ठों को पलट सकते हैं और उनका स्वाध्याय कर सकते हैं। जब कोई मोह से बंधा हुआ आदमी इन बातचीत कराने वालों के सामने बैठ जाता है तो ये उसको एकाग्रचित्त होने के लिए सावधान करते हैं। जब वह एकाग्रचित हो जाता है तो उसके अन्दर की ही बातें स्मृति के आधार पर उनके सामने आती हैं और वह यह समझता है कि बाहर से किसी से बातचीत के आधार पर वह बात उसके मस्तिष्क में आई है। आवागमन के सिद्धांत में विश्वास रखने वाले इस प्रथा में विश्वास नहीं रख सकते। मृत्यु के पश्चात ही जीवात्मा अपनी कर्म व्यवस्था के अनुसार दूसरा शरीर धारण कर लेता है और उस शरीर में रहते हुए बातचीत करने में देश काल और अवस्था बाधक रहती है।

यदि किसी आत्मा ने पशु के शरीर में प्रवेश किया तो उससे बातचीत किस आधार पर हो सकती है? यदि किसी ने अमरीका में जाकर जन्म लिया तो वहां से बातचीत कैसे हो सकती है? बातचीत का जरिया वाणी है और वाणी शरीर का अंग है। भिन्न भिन्न शरीरों में वाणी का उपयोग भिन्न भिन्न प्रकार से होता है इसलिए दूसरी योनि में जाकर बातचीत नहीं हो सकती। यदि हम मृत्यु सम्बन्धी धर्ममूलक विचारों को अपने जीवन संदर्भ में रखकर उन पर विचार करें तो उनकी असारता सहज में समझ सकते हैं।

मृत्यु और भूत-प्रेत

भूत प्रेत वाली बात मनोरंजक भी है और भ्रममूलक भी। न केवल छोटे छोटे बच्चे और वृद्धा माताएं ही भूत प्रेत की सत्ता में विश्वास रखते हैं बल्कि बड़े बड़े पढ़े लिखे आदमी भी इस चक्कर में पड़े हैं। थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्यों में इस भूत प्रेत की बहुत चर्चा है वे भूतों की सत्ता को अनेक प्रकार से सिद्ध करते हैं यह बात भ्रममूलक है। प्रेत शव को कहते हैं अर्थात उस शरीर को जिसमें से आत्मा निकल गई हो। और भूत काल की दृष्टि से बीते हुए समय को कहते हैं। यह भूत प्रेत का विचार भी वाममार्ग के समय से चला है। आत्मा की सत्ता में वे विश्वास नहीं रखते थे। उनकी धारणा थी कि मरने के पश्चात कुछ दिनों तक मरी हुई आत्माएं भटकती फिरती हैं। जीवन क्या है—हम पता नहीं मौत क्या है—हम नहीं जानते। फिर हमारे अन्दर भूत प्रेत सम्बन्धी मिथ्या विचार फैलें तो क्या आश्चर्य है। ऋषि दयानन्द ने इस प्रकार के मिथ्या विचारों का प्रबल रूप से खण्डन किया है।

मृत्यु और स्वर्ग

स्वर्ग और नरक का प्रश्न भी मृत्यु से सम्बन्धित है। स्वर्ग कहां है और स्वर्ग सम्बन्धी विचार कैसे फैले यह समझ लेना आवश्यक है। स्वर्ग के सम्बन्ध में तीन बातें ध्यान में रखनी चाहिए

(१) क्या स्वर्ग किसी देशविशेष या कालविशेष का नाम है?

(२) क्या स्वर्ग अवस्था विशेष का नाम है

(३) स्वर्ग और नरक का वास्तविक रूप क्या है

क्या स्वर्ग ऊपर है

जब स्वर्ग का नाम लिया जाता है तो लोग आकाश की ओर उंगली उठाते हैं जिससे विदित होता है कि स्वर्ग भूगोल की दृष्टि से हमारे सिर से ऊपर की ओर आकाश में है या आकाश के समीप। इस मिथ्या विश्वास का भी एक मुख्य कारण है। स्व शब्द से सुख या उजाले का परिचय मिलता है। प्रकाश के साधन सूर्य चन्द्रमा और तारागण सभी हमें ऊपर दिखाई देते हैं और नीचे की दशा अंधकारमय या तम की दशा है। स्वर्ग से सम्बन्ध सुख या उजाले से है इसलिए स्वर्ग को ऊपर माना जाता है और नरक को नीचे। वास्तविक बात यह है कि स्वर्ग और नरक न कोई स्थान विशेष हैं और न किसी काल विशेष से उनका विशेष सम्बन्ध है यह तो सुख और दुःख को लक्ष्य में रखकर मनुष्य योनि की भिन्न भिन्न अवस्थाओं के नाम हैं। यही स्वर्ग है और यही नरक है स्वर्ग के स्वरूप को समझ लेने से हमारी यह बात बहुत सहज ही समझ में आ जाएगी।

स्वर्ग या मोक्ष सम्बन्धी भिन्न-भिन्न विचार

स्वर्ग या मोक्ष के सम्बन्ध में तीन प्रकार के विचार देखने में आते हैं

(१) स्वर्ग भोगवादियों का है। (२) स्वर्ग त्यागवादियों का है (३) स्वर्ग मर्यादावादियों का है।

जिनके जीवन का लक्ष्य अधिकतम भोगविलास है जैसे हमारे मुसलमान भाइयों का—वे स्वर्ग को इस जीवन का एक विकसित संस्करण मानते हैं। उनकी धारणा है कि जीवन में एक स्त्री से या चार स्त्रियों से सुख मिलता है तो स्वर्ग में लाखों अप्सराएं होंगी। यहां एक गिलास दूध से तृप्ति होती है, वहां दूध की नहर होगी यहां मिठाई अच्छी लगती है इसलिए वहां शहद के चश्मे होंगे। इसी प्रकार त्यागवादियों का हाल है। जैन और बौद्ध भाई इनमें प्रमुख हैं इनका जीवन का लक्ष्य इनमें महान त्याग है कम से कम कम से-कम खाना और नंगे रहना इनका आदर्श है इसलिए वे मोक्ष को निर्वाण या शून्य की दशा से उपमा देते हैं। इन दोनों से भिन्न मर्यादावादी वैदिक धर्मी हैं। न अत्यन्त भोग इनका आदर्श है। मानसिक बल और आत्मिक बल की प्राप्ति इनका लक्ष्य है। जिनका मन काबू में है उनको न गरीबी में विशेष कष्ट होता है और न अमीरी में कोई विशेष सुख। इस जीवन में एक मर्यादित जीवन रहता है इसलिए मोक्ष के सम्बन्ध में उनकी धारणा है कि मोक्ष प्राप्त जीव इस ब्रह्म की बनाई हुई सृष्टि में स्वच्छन्द बिना किसी बन्धन के विचरेगा। न तो यह मानने की आवश्यकता है कि वहां दुनिया के आराम के सामान के ढेर लगे हुए हैं और न यह मानने की कि वहां सामान बिल्कुल नहीं है। मोक्ष की दशा में तो इच्छापूर्ति का पूरा पूरा अनुभव और आनन्द है। उपर्युक्त विचारों से विदित हो गया होगा कि स्वर्ग और नरक कहीं ऊपर नीचे दाएं बाएं अथवा चौथे या सातवें आसमान पर नहीं है यह तो अवस्था विशेष के नाम हैं।

सत्य बात तो यह है कि सुख और दुःख अर्थात स्वर्ग रूपी अवस्था हमारे कर्मों के अनुसार ही प्राप्त होती है और सीमित कर्मों का फल सीमित ही होगा इसलिए मोक्ष की अवधि भी निश्चित और नियत है। सदा के लिए न मोक्ष है और न बन्धन है। यह बात बिल्कुल ठीक है कि मोक्ष की अवधि बहुत बड़ी और लम्बी है परन्तु है निश्चित।

हमारी सरकार को क्या हो गया है ?

वह पागल हो गई है—इसने विदेशो मे नाच गाने के कार्यक्रमो मे करोडो रुपये व्यर्थ गवा दिए—कहने को तो यह भारतीय सस्कृति का प्रदर्शन होना है पहले फ्रास मे फिर अमरीका मे—बरतानिया और जर्मनी मे भारत उत्सव के नाम से न जाने कितना रुपया व्यर्थ मे व्यय किया गया था—हमारे देश को इससे कोई लाभ नही पहुचा था—केवल मात्र इसके अधिकाश सरकारी अफसरो और सरकार के चहिते व्यक्तियो को हीरो बनने का अवसर प्राप्त हो गया—इस प्रकार देश की जनता की गाढी कमाई को बरबाद कर दिया गया था—अब भारत सरकार ने निर्णय किया है कि शहनशाह अकबर का ४५०वा जन्म दिन बडी धूम-धाम से मनाया जाए इसके लिए बडी योजना बनाई जा रही है। इस पर भी करोडो रुपये व्यय होगे—सरकार का कहना है कि अकबर भले ही मुसलमान था परन्तु सकूलर था। इसके सेकूलरिजम का ढिंडोरा पीटने के लिए सरकार करोडो रुपया बरबाद करेगी।

इसमे कोई सन्देह नही है कि इस देश मे जिन मुगल बादशाहों ने शासन किया है अकबर इन सबमे बुद्धिमान और न्यायप्रिय था। और कट्टरपन्थी न था—औरगजेब की तरह जनूनी न था यह सभी जानते है कि इसने कई हिन्दू राजाओ की मदद लेने के लिए इनकी बेटियो स विवाह कर लिया था—इस प्रकार वह अनेक हिन्दु सरदारो की वफादारी खरीदने मे सफल हो गया था—परन्तु इसके राज्यकाल मे विशेष वणन योग्य घटना तो हल्दी घाटी की लडाई थी जो इसके और महाराणा प्रताप के बीच हुई थी वह सारे राजपूताना को विजय करके इस पर शासन करना चाहता था—परन्तु महाराणा प्रताप इसके आगे झुकने को तैयार न हुए और अन्त मे यह कहते हुए इस ससार से विदा हो गए 'लडते-लडते मर गए—छोडा न अपनी आन को—आके देखो दोस्तो इस राजपूती शान को" हमारी सरकार इस राजपूती शान को अपने देशवासियो के सामन पेश नही कर रही और इस व्यक्ति को पेश करना चाहती है जिसन इस राजपूती शान को मिटाने का प्रयत्न किया था। आज इस देश की जनता अकबर को तो याद नही करती हा महाराणा प्रताप को जरूर याद करती है क्योकि वह अपने देश की आन शान को बचाने की कोशिश करते रहे अकबर इसे मिटाना चाहता था और हमारी सरकार अब अकबर की याद मे विशेष उत्सव मनाने जा रही है।

हमारे देश मे और भी अनेक मुस्लिम शासक हुए हैं जिन्होने नाम पैदा किया था—शाहजहा भी इनमे से एक था—इसने ताज महल बनाया था। जो विश्वभर म प्रसिद्ध हुआ है। अकबर बाद हमारी सरकार सम्भवत शाहजहा की भी जयन्ती मनायेगी परन्तु इसी शाहजहा के सम्बन्ध मे प्रसिद्ध कवि लुधियानवी ने लिखा था—

"एक शहशाह ने दौलत का सहारा लेकर—गरीबो की मेहनत का उडाया है मजाक" इसी प्रकार हमारी सरकार अब धन और पद का सहारा लेकर अकबर की याद मे करोडो रुपये बरबाद करने लगी है। यह वही अकबर है जिसने राजपूतो को चुनौती दी थी और अपनी तलवार के सहारे अनेको को झुकने पर विवश कर दिया था। इसके सामने नही झुक थे तो वह थे केवल महाराणा प्रताप और सरकार को इनकी जयन्ती मनानी चाहिए थी परन्तु वह तो अकबर की जयन्ती पर करोडो रुपये बरबाद किए जायेंगे इसलिए प्रश्न उठता है कि अगर अकबर की जयन्ती मनाई जा सकती है तो महाराजा रणजीतसिह की क्यो नहीं मनाई जा सकती वह तो सही मानो मे सैकुलर थे। इनके दरबार मे हिन्दू, सिख मुसलमान तीनो किस्म के वजीर थे। कट्टर गुरु सिह होते हुए भी इन्होने कभी मजहबी तासुब का मुजाहरा न किया था। वह इस देश मे उत्पन्न हुए थे और अपने देश का ध्वज इन्होने काबुल और कन्धार पर जाकर लहराया था। अकबर तो उस सिन्ध मे उत्पन्न हुआ था जो अब पाकिस्तान मे है। इस सम्बन्ध मे एक और प्रश्न भी उत्पन्न होता है कि आज हमारे देश मे प्रजातन्त्रीय शासन है। राजवाडाशाही समाप्त कर दी है परन्तु हमारी सरकार इसकी याद को पुन ताजा रखना चाहती है दरहकीकत शहशाह कोई हो इनके इकदार का महल देश की निर्धन जनता की हड्डियो पर ही खडा किया जाता है। विश्व के इतिहास मे एक भी मिसाल ऐसी नही जहा गरीबो का खून बहाए बिना किसी शहनशाह ने ऐसी हकूमत स्थापित की हो-इसलिए आजादी के साथ हमने सभी प्रकार की शहनशाहियत के तमाम चिह्न समाप्त कर दिए थे। हमारी सरकार अब इसे पुनः जीवित करने का प्रयत्न कर रही है। इसीलिए तो कहा है कि—

आता है नाखुदाओ की नीयत मे जब फतूर।
उठता है साहिलो से भी तूफान न पूछिए।।

(श्री वीरेन्द्र, प्रताप के सौजन्य से)

कैप्टन देवरत्न आर्य आर्य समाज के प्रधान निर्वाचित

आर्यसमाज सान्ताक्रुज की ४८वी वार्षिक साधारण सभा दिनाक ७ ६ ९२ को सम्पन्न हुई। जिसमे कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान एव श्री नरेन्द्र कुमार पटेल महामन्त्री निर्वाचित किये गये। श्री चन्द्रभान मल्होत्रा एव श्री कस्तूरीलाल मदान उपप्रधान एव श्री लालचन्द तथा श्री सदीपदत्त आर्य उपमन्त्री एव श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गए। इनके अतिरिक्त श्री ओकारनाथ आर्य श्री कातिभाई ज गबारी श्री मदन रहेजा श्री रणवीर भडारी, डा० सोमदेव शास्त्री श्री दीपक पटेल एव श्री गोवर्धनलाल छाबडिया तथा श्री आर के सहगल का अतरग सदस्य के रूप म चयन किया गया।

नव निर्वाचित प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने सभा को धन्यवाद देत हुए घोषणा की कि वर्ष १९९४ म इस समाज को स्थापित हुए ५० वर्ष पूर्ण हो रहे है। अतैव इस स्वर्ण जयन्ती की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु इस समाज द्वारा एक ऐसे गुरुकुल की स्थापना की जाएगी, जिसमे आर्य भाषा के अतिरिक्त अन्य वैदेशिक भाषाओ मे भी वैदिक वाङ्मय के प्रचारक तैयार किए जायेंगे। सम्पूर्ण विश्व मे इस गुरुकुल से शिक्षित विद्वानो द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया जाएगा। इस प्रस्ताव का सभा ने सहर्ष स्वागत किया।

प० ब्रह्मानन्द आजाद

डा० भवानोलाल भारतीय, मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष का श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार आर्य विद्वान एव अनेक ग्रन्थो के लेखक डा० भवानी लाल जी भारतीय को देने का निश्चय किया है। श्री मेघ जी भाई आर्यसाहित्य पुरस्कार प्रतिवर्ष एक ऐसे विद्वान लेखक को दिया जाता है जिसने आर्यसमाज की जीवन पर्यन्त आर्य साहित्य की रचना करके सेवा की हो। यह पुरस्कार समारोह रविवार ५ जुलाई १९९२ को प्रात १० बजे से १ बजे तक आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज के प्रागण मे होगा।

इस अवसर पर आर्य साहित्य प्रकाशक पुरस्कार से श्री विजयकुमार जी गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली को उनकी साहित्य प्रकाशक के रूप मे की गई सेवाओ के प्रति आभार व्यक्त करने के लिये मरणोपरान्त 'स्मृति उपहार' चान्दी की शील्ड के रूप मे भेंट की जाएगी।

कैप्टन देवरत्न आर्य, प्रधान
एव सयोजक—पुरस्कार समिति

वेदभाष्य और पाश्चात्य विद्वान (२)

सत्यप्रकाश गुप्त, रुड़की

वेद के अन्य पाश्चात्य विद्वान ग्रिफिथ के मतानुसार आर्यों ने वेदो के पर्याप्त सूक्तो की रचना अपने आदि निवास मध्य एशिया मे ही कर ली थी। उनके मतानुसार जब वेदो मे इतिहास है तो क्या पाश्चात्य विद्वान ऐसा सूक्त निकाल सकते है कि जिससे यह सिद्ध होता हो कि आर्यो का आदि निवास मध्य एशिया था। उनका यह भी अभिमत है कि आर्यो की एक शाखा भारत तथा दूसरी शाखा ने ईरान मे प्रवेश किया। मध्य एशिया से उनके पलायन के समय यह तो हो ही नही सकता कि वहा से उनका बच्चा-बच्चा पलायन कर गया हो। वहा पर भी अवश्य ही कुछ लोग रह गये होंगे। उनमे तथा उस स्थान पर आर्य संस्कृति व सभ्यता के चिन्ह अवश्य होने चाहिए थे। इस प्रकार आर्य सभ्यता के एव वेदो के वे सूक्त जो मध्य एशिया मे ही रचे जा चुके थे उनके चिन्ह शेष बचे निवासियो में अवश्य उपलब्ध होने चाहिए थे। साथ ही जो शाखा ईरान चली गई उसने पूर्व रचित सूक्तो को भूलाकर संस्कृत की अपभ्रंश भाषा मे "जन्द अवस्था' नाम से दूसरे ग्रन्थ की रचना कर डाली। जन्द अवस्था के रचयिता जरथुष्ट्र थे जो लगभग महाभारत के समकालीन (अब से ५००० वर्ष पूर्व) थे। महर्षि दयानन्द लिखते है महाभारत से लगभग एक सहस्र वर्ष पूर्व ही आर्य सभ्यता व संस्कृति मे ह्रास आरम्भ हो गया था।

भारतीयो को ईसाई मत की ओर आकृष्ट करने के उद्देश्य से मैक्समूलर ने अपनी सभ्यता, संस्कृति व धर्म को ध्यान मे रखकर वेदो का अनुवाद किया ताकि आर्य सभ्यता, संस्कृति एव धर्म उससे किसी भी प्रकार भी प्राचीन व श्रेष्ठ सिद्ध न हो। इसीलिए वेदो के समय निर्धारण मे उनकी अपनी मान्यताए आडे आती रही, इसीलिए कोई भी पाश्चात्य विद्वान वेदो का काल निर्धारण मे ४००० वर्ष ईसा पूर्व से पहिले नही जाना चाहते थे।

पाश्चात्य विद्वान वेद को विभिन्न ऋषियो की व विभिन्न समय की रचना मानकर चले है, किन्तु जब मन्त्रो की अन्त साक्षी उनकी मान्यताओ के विरुद्ध पडने लगी है तो दाए बाए झाकते दिखाई देते है। इस सम्बन्ध मे यह ध्यान देने योग्य बिन्दु है कि वेदो मे अनेक मन्त्र एक से अधिक बार आए है। यदि मन्त्र ऋषियो द्वारा रचित होते तो इस प्रकार के मन्त्रो के सर्वत्र एक ही ऋषि होना चाहिए था, परन्तु पुनरुक्त मन्त्रो के ऋषि परस्पर भिन्न है साथ ही एक ही मन्त्र के एक से अधिक ऋषि है। इस प्रकार एक ही मन्त्र के रचयिता अनेक ऋषि नही हो सकते। इसके साथ ही कोई मन्त्र उसी अथवा अन्य वेद मे पुन पठित होने पर उसके ऋषि, देवता आदि बदल जाने से विषय एव प्रकरणानुसार अर्थ भी अन्य हो जाते है। पाश्चात्य विद्वान इस बात को भी मानकर चले है कि आरम्भ मे आर्य जाति मे बहुदेवतावाद की उपासना प्रचलित थी और वे प्रकृति की प्रत्येक शक्ति को पृथक्-पृथक् देवता मानकर उनकी पूजा करते थे। इन विद्वानो की ऋग्वेद (१.१६४.४६ तथा यजुर्वेद ३२.४) के इन मन्त्रो पर उनकी दृष्टि नही गई जो स्पष्ट कह रहे है ईश्वर एक है तथा विद्वान लोग उसे विभिन्न नामो से पुकारते है। ऋग्वेद १०.१९.१ दर्शा रहा है कि वेद सृष्टि के आरम्भ मे ही आये न कि विभिन्न समय मे विभिन्न ऋषियो की रचना है। इसी सन्दर्भ मे वेदो के ये मन्त्र (ऋ० १०.९०.९ यजु० ३१.७ व ३४.५, अथर्ववेद १०.७.२० व ११.७.२४) पठनीय व दर्शनीय है।

इन विद्वानो द्वारा बड़े सुनियोजित ढग से भारतीय मस्तिष्क मे यह बात भी डालने का षडयन्त्र रचा गया कि भारत मे आर्य जाति के प्रवेश से पूर्व यहा के आदिम निवासी द्रविड थे। उन्होने अपने प्रवेश के समय उन्हे दक्षिण भारत मे धकेल दिया। आगे की चर्चा के पूर्व उन सभी विद्वानो से जो इस मत के पोषक है पूछना चाहूंगा कि जब आर्य लोग बाहर से आए उस समय जो लोग इस देश मे रहते थे, द्रविड कहलाते थे क्या ये विद्वान यह बताने की कृपा करेंगे कि उस समय इस देश का क्या नाम था, उनका क्या धर्म था, उनकी सभ्यता व संस्कृति कैसी थी तथा उनकी धार्मिक पुस्तक क्या थी। वेद की किन ऋचाओ मे आर्यों एव द्रविडो के मध्य हुए युद्ध एव उनकी जय पराजय का वर्णन है। भारत मे आर्यों एव द्रविडो का विवाद पाश्चात्य विद्वानो एवं ईसाई पादरियो द्वारा खड़ा किया ही जान पडता है, क्योकि इनका उद्देश्य भारत मे ऐसी विवादास्पद स्थिति खड़ी कर यहा के धर्म व संस्कृति को नष्ट कर अपना वर्चस्व स्थापित करना था।

इस मत के विद्वानो को यह भी ध्यान देना चाहिए कि वेद के विद्वान आज भी दक्षिण भारत मे ही उपलब्ध है उन्होने ही वेद की पवित्र ऋचाओ व ज्ञान को अक्षुण्ण बनाये रखने का अपरिमित कार्य किया। यदि वे मार भगाये होते तो वे यह कार्य बिल्कुल न करते। रावण स्वय वेदो का प्रकाण्ड ज्ञाता था और उसने वेदो का अनुवाद भी किया था यद्यपि इस समय यह अनुवाद उपलब्ध नही है।

पाश्चात्य विश्वासानुसार सृष्टि का आरम्भ अदन मे आदम हव्वा से हुआ, जिसको बाईबिल के उत्पत्ति अध्याय के अनुसार दस हजार वर्ष से अधिक नही होते। अत जो विद्वान आर्यों को मध्य एशिया से आया मानते है क्या वे इस बात का युक्तियुक्त एव सप्रमाण समाधान देंगे कि वे अदन से जाकर वे लोग कब मध्य एशिया मे बसे होंगे कितने वर्ष वहा रहे कब से वे आर्य नाम से पुकारे जाने लगे थे। संस्कृत भाषा अपनाने के पूर्व उनकी क्या भाषा थी तथा इस देश के वे निवासी जिनको पाश्चात्य विद्वान आदिवासी मानते है अदन से कब भारत मे आये किन्होने उन्हे द्रविड नाम दिया, तथा इस देश का उन्होने क्या नामकरण किया था।

विदेशी विद्वानो की संस्कृत विशेषत वैदिक वाङ्मय मे रुचि जातीय पक्षपात एव राजनैतिक स्वार्थ के कारण उपजी अथवा उपजाई गई थी यह बात आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी मे बोडन पीठ के संस्थापक कर्नल बोडन ने अपने स्वीकार पत्र (१५-८ १८११) मे इन शब्दो मे वर्णित की है उसकी इस विपुल राशि की भेट का मुख्य उद्देश्य यह है कि धर्म ग्रन्थो का अंग्रेजी मे अनुवाद किया जाय जिससे उसके देशवासियो को भारतीयो को ईसाई बनाने के काम मे आगे बढने मे सहायता मिले।' मोनियर विलियम्स लिखते है कि "जिस दिन ब्राह्मण धर्म के किले की दीवारे क्रास के सैनिको द्वारा आक्रान्त होकर ध्वस्त हो जाएगी, वह ईसाईयत की पूर्ण और अपूर्व विजय का दिन होगा।'

इस उद्देश्य पूर्ति हेतु हिन्दु धर्म के खण्डन मे लिखे गये सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ पर पुरस्कार देने की भी योजना बनाई गई थी जिसके लिए जान म्यूर ने दो सौ पौण्ड की राशि दी थी। पाश्चात्य विद्वानो ने अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए विकासवादी दृष्टिकोण से वेद भाष्य करने का ही अपना पूरा प्रयास किया क्योकि इससे इतर शैली अपनाकर भाष्य करने मे उनका स्वार्थ सिद्ध नही हो सकता था। वेदो के भाष्य यदि शुद्ध यौगिक व नैरुक्तिक प्रणाली के आधार पर किये जाते तो मत, सम्प्रदाय एव अन्धविश्वास से ऊपर उठकर मानव-मात्र के लिये ज्ञान चक्षु खोलने वाले बन जाते, क्योकि वेद मानव मात्र के लिए सृष्टि के प्रारम्भ मे प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान है जो सबके लिए समान रूप से समभाव रखने वाला है।

वेदो के यौगिक एव नैरुक्तिक प्रणाली पर भाष्य करने पर देववाची शब्द परमेश्वर या प्राकृतिक शक्तियो व गुणो के तथा ऋषिवाची शब्द उसमे छिपे रहस्य व भाव के परिचायक होते है, किसी व्यक्ति या स्थान विशेष के नही। महर्षि दयानन्द के भाष्य से नमूने के लिए कुछ शब्दो के अर्थ नीचे दिये जाते है—

अत्रि	तीनो प्रकार के दुखो से रहित व्यक्ति
भृगु	उत्कृष्ट मेधावी विद्वान
गौतम	अतिशय स्तुतिकर्ता
अथर्वा	हिंसादि दोष रहित
वसिष्ठ	धर्मादि कार्यो मे अतिशय स्थिर व्यक्ति
कण्व	मेधावी पुरुष
जमदग्नि	याज्ञिक, तपस्वी, चक्षु, अग्नि

(क्रमश)

वैदिक समाज व्यवस्था (२)

डा० दिलीप वेदालंकार एम. ए, पी-एच. डी.

साम्यवाद की उपर्युक्त धारणा आपातत बहुत उदात्त एव सुन्दर प्रतीत होती है। किन्तु साम्यवाद के प्रतिबन्ध केवल भौतिक है। वे केवल-मात्र कानून पर आधारित है। साम्यवाद का ध्यान केवल भौतिक धन सम्पत्ति पर है, मनुष्य की आत्मा पर नही। साम्यवाद का व्यक्तिगत स्वामित्व को स्वीकार न करना भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सर्वथा अव्यावहारिक है। साम्यवादी राष्ट्रो मे काम कम होता है, समय अधिक लगता है तथा निर्माण घटिया ढग का होता है। सम्पत्ति पर व्यक्तिगत स्वामित्व और अधिकार सर्वथा ही न रहने रहने देने का यह साम्यवाद का आदर्शवाद साम्यवाद के सबसे बडे पोषक रूस मे भी अपने शुद्ध रूप मे स्थिर न रह सका। पहले रूस मे कर्मचारियो को वेतन नही मिलता था। काम के बदले पर्चिया ही दी जाती थी, जिन्हे दुकानो पर देकर व्यक्ति उनके बदले मे अपनी खाने-पीने व पहिनने आदि की आवश्यकताओ को पूरा कर सकते थे। परिणाम यह हुआ कि कर्मचारी सामर्थ्य से कम काम करने लगे। अत रूस मे कर्मचारियो को फिर से वेतन देने की पद्धति प्रारम्भ करनी पडी और वेतन का आधार भी काम के महत्व तथा कर्मचारी की कुशलता को आक कर होने लगा। रूस मे आमदनी का अनुपात लगभग एक और अस्सी का है। इतना ही नही, कर्मचारियो से अधिक काम करान के उद्देश्य से आज रूस मे भी कर्मचारियो से ठेके पर भी काम करा लिया जाता है। अब वहा भी लोग बैंको मे अपना हिसाब रख सकते है अपने बचाय रुपये को उत्तराधिकार म देने की सुविधा भी वहा अब कर दी गई है।

साम्यवाद और प्रकृतिवादी है। किन्तु यदि जड प्रकृति के ही रूपान्तर का ही नाम जीवन है तो मनुष्य और पशु मे इतना ही भेद है जितना कुर्सी और मेज मे यदि सुख, दु ख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न तथा ज्ञान के लक्षण वाली कोई सत्ता सिद्ध नही होती तो दु खी सुखी मनुष्यो के दु ख निवारण और सुख प्राप्ति की ऊहापोह भी व्यर्थ है। जडवाद का पहला परिणाम यह है कि आचारशास्त्र की जड काट दी गयी। दया, क्या वस्तु है? जैसे किसी कुर्सी के चार पाए तोड देन से या उसको जला देने से कुर्सी की कोई हानि नही होती, इसी प्रकार प्राणी हत्या भी कोई दूषित कर्म नही। जिसको चाहो मार डालो जिसको चाहो जीवित रखो। इसी भौतिक दृष्टिकोण के कारण ही १९१७ की क्रान्ति के पश्चात लाखो जमीदारो को गोली के घाट उतार दिया। अनुमान लगाया गया है कि इस प्रकार मौत के घाट उतारे गये जमीदारो की सख्या ७० लाख तक पहुच गयी होगी और इस गडबड के कारण खेती ठीक न हो सकने से जो अकाल पडे उसमे भी लगभग ५० लाख व्यक्तियो की बलि हो गई। इसके अतिरिक्त रूस मे ५० लाख से भी अधिक ऐसे व्यक्तियो का सफाया कर दिया गया जो साम्यवाद से भिन्न राजनीतिक विचारधारा रखते थे। इसी प्रकार चीन मे भी भयकर नरसहार मे करोडो लोगो की बलि दी गई। साम्यवादी देशो मे लोगो को सोचने-विचारने, कहने और करने की स्वतन्त्रता का सर्वथा लोप किया जाता है। इस परम्परा मे अहिसा, सत्य, त्याग, न्याय, दया आदि नैतिक व चारित्रिक गुणो का सर्वथा लोप हो जाता है।

वैदिक वर्णाश्रम-व्यवस्था: व्यष्टि एवं समष्टि की उन्नति का उपाय

वस्तुत आज के पूजीवाद समाजवाद और साम्यवाद मे कोई मौलिक अन्तर नही है। य एक ही भौतिकतावादी व्यवस्था के चट्टे-बट्टे है। तीनो का उद्देश्य पैसा और अधिकार है। तीनो मनुष्य की अपनी समस्या को पैसे से सम्बद्ध समझते है। इसके विपरीत वैदिक सस्कृति द्वारा प्रतिपादित वर्णाश्रम की पद्धति पर आधारित समाज व्यवस्था व्यक्ति और समाज को भौतिक व आत्मिक दोनो प्रकार की भूख-प्यास शान्त करती है। हम जब तक भौतिकतावादी बने रहेंगे तब तक विश्व-शान्ति और विश्व-प्रेम का नाम भर लेते रहेगे, इन्हें प्राप्त नही कर पाएगे। वैदिक सस्कृति का आध्यात्मवाद यह नही कहता कि हमे शरीर को भूल जाना है या हमे मनुष्य की आर्थिक समस्या को हल नही करना। सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखने वाले ऋषि शरीर को घृणा की दृष्टि से कैसे देख सकते थे? वैदिक सस्कृति भौतिकवाद का तिरस्कार नही करती उसे विकास के मार्ग मे अपना साधन समझती है क्योकि इस सस्कृति के दृष्टिकोण मे शरीर आत्मा की तरफ से जाने का साधन है, प्रकृति परमात्मा की तरफ ले जाने का साधन है। हम शरीर से चले परन्तु तब रुक न जाए। प्रकृति से चलें परन्तु प्रकृति पर रुक न जाए—यही आज के युग की वैदिक सस्कृति का सन्देश है। इसी अभ्युदय और नि श्रेयस के लिए व्यष्टि और समष्टि के पूर्ण विकास के लिए वैदिक ऋषियो ने वर्णाश्रम व्यवस्था प्रारम्भ की थी। वेद सब मनुष्यो को उसी परमपिता परमेश्वर की सन्तान मान कर सब मे समदृष्टि रखन का उपदेश देता है। ऋग्वेद मे स्पष्ट रूप से कहा गया कि ये सब मनुष्य भाई हे, इनमे से कोई जन्म से बडा नही और कोई छोटा नही, इस समानता के भाव को धारण करते हुए सब ऐश्वर्य या उन्नति के लिए मिल कर आगे बढते है। वेद के अनुसार व्यक्ति समाज का एक अग है और इसलिए समाज की उन्नति के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्तियो को लगा देना उसका प्रधान धर्म है। वेद मे मनुष्य के लिए 'व्रात' शब्द का अनेक स्थानो पर प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ समुदाय अथवा सघप्रिय है। इससे मनुष्य सामाजिक प्राणी है इस प्रसिद्ध उक्ति का ही समर्थन होता है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के अन्तिम सूक्त मे सगतिकरण अथवा सघ बना कर उन्नति करन का अत्युत्तम उपदेश किया गया है, जिनमे मिल कर जाने अर्थात उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए सामूहिक यत्न करने, परस्पर मधुर वाणी बोलने और मन की उत्तम शिक्षा के द्वारा सुसस्कृत करन व ज्ञान सम्पन्न बनान का भाव पाया जाता है। वैदिक समाज-व्यवस्था का दूसरा आधार है त्याग-पूर्वक उपभोग। ससार के उपभोग के दो प्रकार हे, एक तो उसमे लिप्त होकर और दूसरा उससे अलिप्त रहकर। ससार मे लिप्त रहने से अन्त मे दु ख और उससे अलिप्त रहने से सुख मिलता है। इसलिए वेद कहता है अलिप्त रहकर उपभोग करो। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए वैदिक ऋषियो ने मानव जीवन को चार आश्रमो तथा मानव समाज को चार वर्णो म विभक्त किया था तथा इन आश्रमो और वर्णो के कर्त्तव्य निश्चित किये थे। यही वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था सब प्रकार के वर्ग भेदो को समाप्त कर लोक-सगृह और व्यक्ति के सर्वविध उन्नति के मार्ग खोलती है।

सन्ध्या से हो अन्नमय कोष का पोष

—देव नारायण भारद्वाज

इस प्रकार पहले चार 'अभीप्टये'—ज्ञान सूचक है दूसरे चार 'पीतये' सुख पूर्वक कर्म कारक हैं। शेष दो 'शम्'- इन दोनों के परिणाम प्रतीक है। 'बाहुभ्याम यशोबलम्'—उपरोक्त सभी अगो म सृजित बल का प्रदर्शन या प्रयोग हमारी बाहुओं से होता है। हम जो करते हैं जैसे लिखना, भोजन बनाना मकान बनाना, यन्त्र बनाना, कहा तक लिखे—सभी कार्य इन्ही से करते है। हे प्रभु! हमारी भुजाओं मे पर्याप्त बल बना रहे बल के प्रयोग से हमे निरन्तर यश प्राप्त हो। बल तो ऐसे कामो मे भी प्रयुक्त हो सकता है जो हमे घृणा का पात्र बना दे। हम कही कोई आतंकवादी, उग्रवादी हत्यारा, डाकू, चोर, भ्रष्टाचारी या व्यभिचारी न कहने लगे। हमारे बल से अज्ञान अन्याय-अभाव निवारण के कार्यों मे योगदान हो, जिससे हमे अपयश के स्थान पर यश प्राप्त हो। बल एव यश दोनो ही तो ज्ञान-कर्म मनुष्य के परिणाम है यदि गहराई से सोचें तो पता चलेगा कि इनका परिणाम तो बल ही है, यश तो बल का ही फल है। यह दोनो हम प्राप्त कैसे हो इसका भी तो भेद खुलना चाहिए। जैसे गर्म करने पर दुध के ऊपर मलाई की पर्ते जमने लगती है वैसे ही ज्ञान से कर्म को मिलाने से दुग्ध के समान हमे बल मिलता है और इसी बल के रायम से तपाने पर यश अपने आप ऊपर आ जाता है।

इस यश को प्राप्त करने का मौलिक सूत्र है करतल कर पृष्ठ। हमारी भुजाओ मे जिस बल का संग्रह होता है वह हमारे हाथ के इन्ही दोनो भागो—करतल एव कर पृष्ठ के द्वारा ही क्रियाशील होता है। आप या हम फावड़ा, लेखनी, खुरपी, तलवार या अन्य कोई भी अस्त्र शस्त्र चलाना चाहते है, वह भुजा के इसी भाग से चला सकते है। कन्धे मे बल है। किन्तु इसका प्रयोग कन्धा नही कर सकता, प्रयोग तो हाथ की हथेली को ही करना पड़ेगा। हथेली मे गहराई है, जो कहती है कि हम अपने परिश्रम से पुरुषार्थ से भरते रहे—भर-कर लाओ, भण्डार मे उलट दो। हमे भरी हथेली मे वह वस्तु दिखाई देगी—हथेली नही, किन्तु जब हम उसे पलटेगे तो कर पृष्ठ दिखाई देगा, वस्तु नही जैसे हवा आती है हमे प्राण प्रदान कर आगे बढ जाती है, रुकने पर वही पीड़ा जनक हो जाती है। वैसे ही इस हथेली से कमाया गया यह धन प्रवाहवान बना रहे। रुके पानी की भाति सडाध न उत्पन्न करने लगे। तो हाथ के सबसे ऊपर का भाग कौन सा हुआ—यही कर पृष्ठ। करतल आदान का, करपृष्ठ प्रदान का प्रतीक है। दान के लिये आदान यही यश का स्थाई सूत्र है। यद्यपि इसका रूप स्वत आदान के लिये दान बन जायेगा। पर इस पर भरोसा चाहिए। जैसे 'अभिष्टये' के चारो अग हमे ऊपर प्रगति की ओर ले गए जैसे 'पीतये' के चारो अग हमे उससे भी ऊपर ले गये, पहले हम वाक् मे श्रोत्र की ऊंचाई पर आये, फिर नाभि से सिर की ऊंचाई पर आये, किन्तु 'शम' के यह चार अग हमे और उत्कृष्ट ऊंचाई पर ले जाते है। दोनो भुजाओ के दो कर तल और दो कर पृष्ठ यही तो चार है, जो दूध की मलाई की भाति हमे कर्मों की भलाई से सर्वाधिक ऊंचाई पर पहुचा देते है। इस प्रसंग पर विचार करे, और पूछे कि शरीर का सबसे ऊंचा अंग कौन है, यदि आप सिर कहने जा रहे हो तो रुक जाइये और अपने हाथो को ऊपर उठा दीजिए तो आप पायेंगे कि हाथ तो सिर से ऊपर—बहुत ऊपर चले गये। सिर तो ज्ञान-कर्म-इन्द्रियो का मूल कार्यालय है, इन हाथो के प्रयोग से ही हम धन और यश की ऊंचाई पर पहुंच जाते हैं। हर समय हम हाथ ऊपर नही रख सकते हैं, क्योंकि इन्हे कर्म म प्रयोग भी करना है। इन्हे नीचे रखे। हमे ऊंचाई देने वाले यह हाथ नीचे बैठे रहते है। यह इस बात का संकेत है कि हमारी उपलब्धियां गर्व-गुमान का कारण न बन जाये, प्रत्युत नम्रता उदारता की स्रोत बनी रहे। कविवर रहीम के उठे हुए हाथो को देखकर किसी कवि ने उनसे पूछ लिया था

> सीखे कहा रहीम जू ऐसी दनी दन।
> ज्यों ज्यों कर ऊपर करो त्यों त्यों नीचे नैन॥

अधिकाधिक दान प्रक्रिया मे अपने उठे हुए हाथो को नीचे करते हुए रहीम जी ने अपनी अपार उदारता एव नम्रता का परिचय दे दिया

> देन हार कोई और है, देत रहत दिन रैन।
> लोग भरम हम पर करे, ताते नीचे नैन॥

इन्द्रियां हमारी है इनमे शक्ति देने वाला कोई और परमात्मा है। कहीं भ्रमवश इसका आधार हम स्वय को न समझने लगे। इसे ईश्वर की देन समझकर इस प्रकार उसी से शक्तिवान बनाये रखने की प्रार्थना करें। प्रार्थना के अनुसार पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ के फल को स्वार्थ मे ही नहीं परमार्थ मे भी दान करे तभी तो हमारी यश रूपी ऊंचाई स्थिर होगी। लम्बे हाथो या आजानुबाहु वाले पुरुष इसीलिए भाग्यशाली कहे जाते है—क्योंकि ज्ञान-कर्म और यश परिणाम से अपनी ऊंचाई बढाने मे वे समर्थ होते हैं। ●

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

वैदिक सिद्धान्त दर्शन	१२)
(ले०—प्रेमनाथ चड्ढा एडवोकेट)	
सन्ध्या अष्टांग योग	५)
(ले०—स्वामी आत्मानन्द सरस्वती)	

प्राप्ति स्थान —

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

स्वर्गीय पण्डित वासुदेव शर्मा

डा० महेशचन्द्र शर्मा

प्रख्यात आर्य समाजी नेता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान एव वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी पण्डित वासुदेव शर्मा के निधन पर शोक की लहर फैल गई। प्रस्तुत है उनका सक्षिप्त जीवन परिचय। —सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पण्डित वासुदेव शर्मा के निधन पर राज्य की आर्य समाजो मे शोक सम्वेदना व्यक्त की गई। ३ जून को उनके निवास स्थान पर ८६ वर्ष की आयु मे उनका निधन हो गया था उनके ज्येष्ठ पुत्र डाक्टर सुरेशचन्द्र शर्मा ने स्थानीय खाजेकला घाट म मुखाग्नि दी। इस अवसर पर सैकडो लोग उपस्थित थे। पूर्ण वैदिक रीति से उनका दाह सस्कार पण्डित रामचन्द्र शास्त्री एव पण्डित विन्ध्याप्रसाद के आचार्यत्व मे दाह सस्कार सम्पन्न हुआ। तीन दिनो तक हवन-यज्ञ के बाद ५ जून को उनकी कर्म भूमि आर्य समाज पटना सिटी मे शान्ति यज्ञ पूर्ण वैदिक रीतिसे सम्पन्न हुआ।



इस अवसर पर नगर के हजारो लोगा न अश्रु पूर्ण नेत्रा से शोक-व्यक्त किया। आर्य समाज का वातावरण हवन यज्ञ, वैदिक मन्त्रो स गूज उठा और प्रिय नेता के प्रति अपनी श्रद्धाजलि व्यक्त की।

पण्डित जी का जन्म १९०५ मे हुआ था और १९१८ मे पटना सिटी आर्य समाज की एक छोटी सी जगह मे कार्य प्रारम्भ किया। उनके प्रेरणा स्रोत के रूप मे राजगुरु पण्डित धुरेन्द्र शास्त्री (स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती, स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, स्वामी अभेदानन्द जी और स्वामी सर्वदानन्द जी जैसे अनेको आर्य नेताओ का प्रभाव पडा और १९२८ म पटना सिटी आर्य-समाजके मन्त्री तथा १९३५मे बिहार राज्य आर्यप्रतिनिधि सभाके प्रधान मन्त्री बने। वे १९५३ तक लगातार प्रतिनिधि सभा के सर्वसम्मति से प्रधान मन्त्री बनते रहे, पुन उनकी प्रशासनिक और सगठनात्मक क्षमता ने १९६० से १९६५ तक तथा पुन १९६८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री का पद स्वीकार करना पडा। वे १०वर्षो तक १९७२ से लगातार प्रधान निर्वाचित किये गये। राज्य की शैक्षणिक सस्था गुरुकुल वैद्यनाथ धाम के वे बीस वर्षो तक मन्त्री तथा गाधी आर्य कन्या विद्यालय (पटना सिटी) आर्य कन्या विद्यालय (नया टोला) डी० ए० वी० कालज सीवान, दयानन्द विद्यालय मीठापुर के सस्थापको मे थे। इसके अलावा तीन दर्जन मे अधिक सामाजिक शैक्षणिक और सास्कृतिक सस्थाओ से मृत्यु पर्यन्त जुडे रह।

राज्य मे उनका व्यक्तित्व एक विमल कीर्ति के रूप म निखरता रहा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के १९३७ मे अन्तरग सदस्य बने तथा लगातार १९९२ की ३ जून (मृत्यु तिथि) तक सदस्य उपमन्त्री तथा उपप्रधान की हैसियत से सेवा करते रहे। वे आर्य समाज की प्रतिमूर्ति के रूप मे जाने जाते थे।

एक व्यक्तित्व

१९०५ मे एक गाव मे जन्म लेन के बाद सात वर्ष की आयु मे पूरे परिवार को प्लेग महामारी मे खो बैठे। एक अनाथ बालक ने समाज मे आविर्भाव किया। उन्होने सात वर्ष की आयु म परिस्थितियो से मुकाबला कर राष्ट्रीय स्थान प्राप्त किया, यह उनकी लगन, कर्मठता का प्रतीक रहा। पटना सिटी आर्य समाज को एक कोठरी से परिवर्तित कर दो एकड की भूमि और विशाल भवन मे परिवर्तित कर कार्य कुशलता का परिचय दिया। आई० ए० की परीक्षा १९२८ मे पास करने के पश्चात एक विद्यालय की स्थापना की और १९३० से १९७४ तक प्रधानाध्यापक बन रहे ? यही उनकी जीविका का साधन रहा। १९३५ मे विवाह बन्धन मे जुडे और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अन्नपूर्णा देवी को शिक्षा देकर उन्हे भी १९४० मे शिक्षिका बनाया।

अल्प वेतन मे भी पूरे परिवार को शिक्षित किया और सबो को सस्कृत भाषा से जोडा। उनके ज्येष्ठ पुत्र डाक्टर महेशचन्द्र शर्मा कनिष्ठ प्रोफेसर (डाक्टर) सुरेशचन्द्र शर्मा, ज्यष्ठ पुत्री डा० सुधारानी शास्त्री (विभागाध्यक्षा, सस्कृत विभाग, मगध महिला कालेज), कनिष्ठ पुत्री डा० सुमेधारानी एम० ए०, एम० एड० पी० एच० डी० तथा दोनो दामाद डाक्टर बच्चूसिंह, कामेश्वर प्रसादसिंह, पुत्रवधू डाक्टर सरस्वती कुमारी एव डाक्टर चन्द्रप्रभा भी कालेजो म प्राध्यापक पद पर कार्यरत है। यह उनकी शिक्षा प्रेम की मिसाल है। इसके अलावा सकडो छात्रो को उन्होने पठन-पाठन मे मदद की और वे मृत्युपर्यन्त एक फकीर, सन्त की तरह रहे।

उन्होने देश के स्वतन्त्रता आन्दोलनो मे व्यापक रूप से भाग लिया। वे नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के प्रभाव म रहे तथा क्रातिकारी के रूप म पटना सिटी आर्य समाज को केन्द्र बनाया। अग्रेजो से टक्कर ली। तथा भूमिगत होकर वर्षो आजादी के लिए यातनाये सही। वे समाज सुधारक ही नही थे अपितु उन्होने आजादी क लिए भी प्रमुख भूमिका अदा की।

शोक सभा

बिहार राज्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री भूपनारायण शास्त्री, महा-मन्त्री प्रोफेसर योगेन्द्र नारायण डाक्टर श्यामनन्दन शास्त्री, डाक्टर सम्पति आर्याणी, डाक्टर रामाश्रयसिह, डाक्टर श्रीमती अन्नपूर्णा देवी सहित दर्जनो लोगो ने आर्य समाज मन्दिर म आयोजित सभा मे शोक सम्वेदना व्यक्त की।

श्रद्धाञ्जलि

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली की यह महति सभा शोक सभा सदस्य आर्य समाज के प्रमुख सन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपुत्र श्री यश जी के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है।

श्री यश जी प्रसिद्ध पत्रकार थे। आप दैनिक 'मिलाप' जालन्धर के सम्पादक थ तथा बचपन से ही स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुडे हुए थे।

श्री यश जी के निधन से सामाजिक राजनीतिक व साहित्यिक क्षेत्र की अपूर्णीय क्षति हुई है।

हम दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रार्थना करते हे तथा सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना व्यक्त करत हैं।

सूर्य देव
मन्त्री, आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

● प्रसिद्ध पत्रकार, देशभक्त, स्वातन्त्र्य सेनानी ऋषि दयानन्द के मिशन के प्रहरी आर्यवीर श्री यश जी (सुपुत्र खुशहालचन्द जी 'खुर्सन्द' म० आनन्द स्वामी) के निधन के समाचार को सुनकर हम आर्यसमाज अहमदाबाद के सदस्य अत्यन्त गहरे दुख का अनुभव करते है।

आपने अपने स्वनाम धन्य पिताश्री के सस्कारो को पूर्णतया आत्मसात करके अपना पूर्ण जीवन देश धर्म एव राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया था।

आपके निधन से देश-राष्ट्र और आर्य जगत ने अपना समर्पित सेवक खो दिया है।

सच्चिदानन्द स्वरूप दिवगत आत्मा को सत्य तेज एव अमृत के पथ पर ले जाने की कृपा करे। (हरिभाई पढारिया)
कार्यालय-मन्त्री

● आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली की यह महति सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के पूर्व प्रधान प० वासुदेव शर्मा के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवगत आत्मा को सदगति दे तथा उनके शोक सतप्त परिवार एव इष्ट मित्रो को इस महान दुख को सहन करने की शक्ति दे।

(सूर्य देव)
मन्त्री, आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली

आर्यसमाज के बढ़ते कदम

गढ़वाल में आर्यसमाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज एक सर्वांगीण सुधारवादी संस्था है। जहा वेदादि सच्छास्त्रो का प्रचार प्रसार इसका सर्वोपरि लक्ष्य रहा है वही समाज मे व्याप्त अविद्या, अन्धविश्वास कुरीतियो, कुप्रथाओ के उन्मूलनार्थ यह संस्था सदैव अग्रणी रही हैं। आर्य समाज बगार स्यू, गढवाल (उ०प्र०) यद्यपि अपने क्षेत्र की एक पुरानी समाज है परन्तु मटेला तलाई (बैजरो) मे इसका मन्दिर कुछ समय पूर्व ही बन पाया है। अत समाज के प्रथम वार्षिकोत्सव के उपलक्ष मे, निकटवर्ती ग्रामो मेलधार बासी, पोखरी एव मटेला मे प्रचार का कार्यक्रम निर्धारित किया गया। सभी केन्द्रो मे जनता की सुविधा को देखते हुए प्रचार कार्य सायकाल ही हुआ है परन्तु ग्राम पोखरी मे दूसरे दिवस दोपहर तक कार्यक्रम चला। ग्रामीण जनता ने बडे उत्साह और दत्तचित्त हो ऋषि सन्देश को सुना।

यह सर्वविदित ही है कि गढवाल ही नही, समूचा उत्तराखण्ड अब मद्यपान की चपेट मे है। अत उपदेशको ने जहा अन्य बुराइयो को त्यागने के लिए जनता का उद्बोधन किया वही मद्यपान न करने पर विशेष बल दिया। श्री रामचन्द्र जी शर्मा आर्य भजनोपदेशक (बिजनौर) के मधुर गीतो तथा ओजस्वी प्रवचनो द्वारा प्रचार कार्य को विशेष शक्ति मिली और सम्पूर्ण आयोजन अति सफल रहा। रविवार ७ जून को नव निर्मित मन्दिर प्रागण मे यज्ञ, मधुर भजनो, प्रवचनो और ऋषि लगर के पश्चात् समारोह सम्पन्न हुआ।

खेमसिंह रावत
(ग्राम मटेला) ६१/६ हिमालयन अपार्टमेन्ट
पटपड़गज विस्तार, दिल्ली-९२

वीर सावरकर समिति, दिल्ली

नई दिल्ली। कालका जी मे महान क्रान्तिकारी हिन्दू नेता प्रो० रामसिंह जी की नवी पुण्यतिथि वीर सावरकर समिति दिल्ली प्रदेश के उपाध्यक्ष श्री तेजबहादुर कौल की अध्यक्षता मे मनायी गयी। सवप्रथम हवन हुआ और उसके उपरान्त कु० सोनिया मल्होत्रा ने प्रो० रामसिह जी के जीवन पर एक गीत गाया गीत को सुनकर सभी श्रोताओ की आखो मे आसू भर आए। श्री नरेन्द्र अवस्थी, प्रो० लालसिंह चौधरी और वीर सावरकर समिति दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष प्रो० ए० के० मल्होत्रा ने प्रो० रामसिंह जी के जीवन पर प्रकाश डाला और कहा कि प्रो० रामसिंह जी न अपना सारा जीवन हिन्दू-हिन्दी-हिन्दुस्तान की सेवा मे अर्पित कर दिया। प्रो० मल्होत्रा जी ने श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि उनको सच्ची श्रद्धाजलि तभी होगी जब हम प्रतिज्ञा करे कि उनके दिखाए हुए मार्ग पर चलते रहेगे।

सभा मे सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर दिल्ली प्रशासन से अनुरोध किया गया कि उनकी प्रतिमा दिल्ली मे लगायी जाए।

प्रो० ए० के० मल्होत्रा
अध्यक्ष वीर सावरकर समिति दिल्ली प्रदेश

महाराणा प्रताप को याद किया

आर्य समाज मायापुरी नई दिल्ली मे

दिनाक २८ मई, १९९२ तथा ३ जून १९९२ को क्रमश वीर सावरकर जयन्ती एव महाराणा प्रताप जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। विद्वान वक्ताओ ने दोनो महापुरुषो के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। जहा एक ओर देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे वीर सावरकर के सक्रिय योगदान को रेखाकित किया गया वहा दूसरी ओर इस मान्यता को भी स्थापित किया गया कि महाराणा प्रताप सभी स्वतन्त्रता, सेनानियो के प्रेरणा-स्रोत थे। वक्ताओ ने दोनो महापुरुषो को अपनी-अपनी हार्दिक श्रद्धाजली अर्पित की। इन आयोजनो मे अनेक आर्यजन सम्मिलित हुए।

—सुरेन्द्रसिह मन्त्री
आर्य समाज मायापुरी नई दिल्ली-६४ (पजीकृत)

साहित्य समीक्षा

वैदिक विवेचन से सम्बन्धित एक प्रामाणिक तथा उच्चस्तरीय ग्रन्थ वेद और उसकी वैज्ञानिकता भारतीय मनीषा के परिप्रेक्ष्य मे–आचार्य प्रियव्रत की लेखनी से–

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के विगत कुलपति तथा आचार्य प० प्रियव्रत वेद वाचस्पति ने वेद व्याख्या और वैदिक विषयो की विवेचना के सम्बन्ध मे अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखे हैं। किन्तु आलोच्य ग्रन्थ उनके वर्षों के अध्ययन तथा चिन्तन का नवनीत है। वैदिक अध्ययन को एक नवीन तथा तर्क पूर्ण दिशा देने का श्रेय स्वामी दयानन्द को जाता है। प्रत्यक्ष तथा चाहे वैदिक प्राच्यविदो ने दयानन्द की देन को स्वीकार न किया हो किन्तु प्रकारान्तर से वे उन सभी विचारो से सहमत हो चुके हैं। जो स्वामी जी ने अपने वैदिक विवेचन मे लिखे हैं। आचार्य प्रियव्रत जी का यह ग्रन्थ महर्षि दयानन्द के वेदाध्ययन विषयक इसी दृष्टिकोण को पुष्ट करने के लिये लिखा गया है। पन्द्रह अध्यायो मे विभक्त इस ग्रन्थ मे प्राय वे सभी सिद्धान्त तर्क पूण तथा प्रमाणिक ढग से विवेचित हुए हैं। जिन्हे स्वामी दयानन्द ने स्वरचित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे उपस्थित किया था। ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता, वेद का ईश्वरीय ज्ञान होना, वेद के रचनाकाल या आविर्भाव काल का निश्चय, आदि मौलिक प्रश्नो की सारगर्भित-विवेचना प्रस्तुत करने के पश्चात विद्वान लेखक दयानन्द की वेद-भाष्य शैली तथा उसके औचित्य का विचार करते हैं। इस प्रसग मे उन्होने सायण तथा मध्यकालीन वेद भाष्यकारो की वेदार्थ प्रणाली का भी समीक्षण किया है।

वेद मन्त्रो के यज्ञपरक अर्थ के औचित्यानौचित्य की समीक्षा के प्रसग मे विनियोग वाद, यज्ञो मे पशु हिंसा आदि के जटिल प्रश्नो की भी मीमासा की गई है। वेदमन्त्रो के देवता, ऋषि छन्द आदि पर प्रसगोपात्त विचार करने के पश्चात लेखक ने वेद में इतिहास, जैसी जटिल किन्तु विवादास्पद समस्या का समाधान कारक विवेचन किया । दयानन्द द्वारा वेदो मे सर्वविद्याओ का मूल बतलाये जाने के आधार पर किया है। इसी प्रकार वेदो मे कथित अश्लीलता, जादू टोना, अभिचार आदि के आक्षेपो का निराकरण करने के पश्चात वेदो के पठन पाठन के अधिकार का तर्कपूण विवेचन किया गया है।

जैसा कि हम कह चुके हैं स्वामी दयानन्द के वेद विषयक परिश्रम को आधुनिक विद्वानो ने चाहे मुक्तकण्ठ से न स्वीकारा हो। लेकिन वे प्रकारान्त दयानन्द के वैदिक दृष्टिकोण की ही पुष्टि कर रहे हैं। लेखक के इस प्रकार वेद विषयक दयानन्दीय दृष्टि के व्यापक प्रभाव को स्पष्ट रूप से रेखाकित किया है। निश्चय ही आचार्य प्रियव्रत जी का यह ग्रन्थ वेद विषयक विवेचनात्मक साहित्य मे अपना विशिष्ट महत्व रखता है।

ग्रन्थ प्राप्त होने का पता —
व्यवसाय प्रबन्धक, श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तक का मूल्य ३००) रुपये

—प्रो० भवानीलाल भारतीय
रत्नाकर, नन्दनवन, जोधपुर

सामाजिक एकता सम्मेलन

नयी दिल्ली, १६ जून। अखिल भारत हिन्दू महासभा के पूर्व अध्यक्ष आचार्य बालाराव सावरकर ने कहा कि देश मे जातीय भेदभाव और साम्प्रदायिकता तथा अलगाववाद की समस्याओ के समाधान के लिए वेद की विचारधारा ही एक मात्र सशक्त माध्यम है।

श्री सावरकर ने दयानन्द सस्थान द्वारा वेद मन्दिर इब्राहीमपुर मे गत दिनो आयोजित सामाजिक एकता सम्मेलन मे उपस्थित सैकडो ग्रामीणो को सबोधित करते हुए यह भी कहा कि महर्षि दयानन्द और स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर ने जन्म के बजाए कर्म के अनुसार जाति की वैदिक विचारधारा पर ही जोर दिया था। यदि समाज न वेद के आह्वाहन को स्वीकार किया होता तो आज जातिवाद के विस्तार से भारत का सामाजिक जीवन अभिशप्त नही होता। इस अवसर पर श्री मागराम आर्य प्रो० रघुवीर वेदालकार श्री अभिविनय भारती तथा चौ० मौजीराम सहित अनेको वक्ताओ ने अपने विचार प्रकट किये।

दयानन्द सस्थान की अध्यक्षता पण्डित राकेश रानी न सस्थान द्वारा वेद प्रचार के लिए किये जा रहे कार्यों और योजनाओ पर प्रकाश डाला।

महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति प्रगति के पथ पर

महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति के अन्तर्गत सचालित सिलाई कढाई की परीक्षा जो म० प्र० तकनीकी शिक्षा मण्डल के द्वारा वर्ष १९९२ मे की गई थी, उसमे ४३ छात्राए सम्मिलित हुई। उनमे से प्रथम श्रेणी मे ३५ द्वितीय श्रेणी म एक, पूरक मे ४, अनुतीर्ण ३ हुई।

कु० शोभना शर्मा एव कु० वन्दना श्रीवास्तव ने प्रथम श्रेणी मे आनर्स प्राप्त किया इसके लिए श्रीमती पद्मा राठौर एवम श्रीमती रानीगगराडे इस सम्मान जनक परीक्षा परिणाम के लिए बधाई की पात्र है।

—कु० रमा दुबे व्यवस्थापिका

वर चाहिए

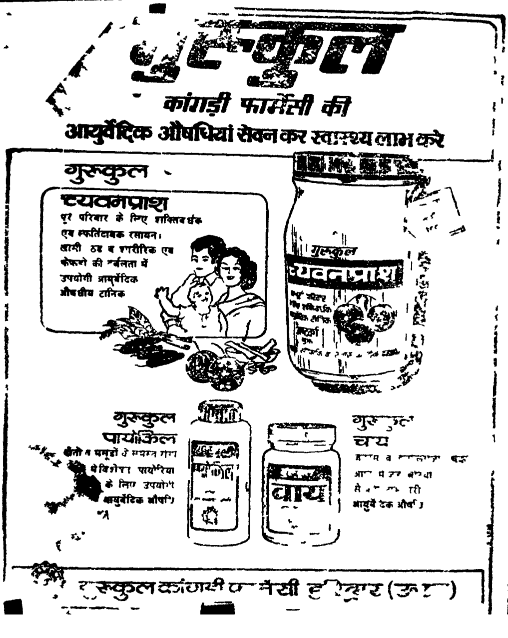
मेरी पोती सगीता आयु २१ वर्ष बी ए कर रही है कद पाच फुट एक इच, आकर्षक व्यक्तित्व गृह कार्य मे दक्ष अरोडा खत्री कन्या के लिये सुयोग्य वर की आवश्यकता है आर्य विचार वाले व्यक्ति ही पत्राचार करें।

वैद्य कन्हैयालाल ओमप्रकाश
अम्बा बाग, बी/५ पद्मनगर, दिल्ली-७

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश निम्न भाषाओं मे प्राप्त करें

सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी	२०)
सत्यार्थ प्रकाश उर्दू	२५)
सत्यार्थ प्रकाश फ्रेन्च	५०)
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी	५५)
सत्यार्थ प्रकाश मराठी जिल्द वाला	७०)
सत्यार्थ प्रकाश मराठी बिना जिल्द	५०)
सत्यार्थ प्रकाश मराठी जिल्द वाला	१००)
सत्यार्थ प्रकाश आसामी	५०)
सत्यार्थ प्रकाश तमिल	६०)
सत्यार्थ प्रकाश सस्कृत	६०)
सत्यार्थ प्रकाश मलियालम	१००)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २



दिल्ली के स्थानीय विक्रेता

(१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ३७७ चादनी चौक, (२) मै० गोपाल स्टोर १७१३ गुरुद्वारा रोड कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाडगज (४) म० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी गडोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात कैमिकल क० गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर लाल किशन लाल, मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल ११-शकर मार्किट दिल्ली।

शाखा कार्यालय —
६३, गली राजा केदार नाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली
फोन नं० २६१८७१

कहानी—

स्वर में मिठास

अकबर के दरबार मे एक गवैया था—तान सेन। कहते है जब मल्हार गाता तो वर्षा होने लगती जब वह दीपक राग गाना आरम्भ करता तो दीप जल जाते। एक दिन अकबर ने कहा तान सेन यह सब कुछ तुमने किससे सीखा है उसका गाना हमे सुनाओ।

तान सेन ने कहा—बादशाह ! मेरे गुरु स्वामी हरिदास है। आपके दरबार मे नही आयगे। मेरी तरह उन्हे आपसे कुछ लेना देना नही। वह जगल मे रहते है। पत्तो की झोपडी बनाकर। वही कही मौज आ जाय तो अपना दोतारा लेकर गाने लगते हैं। किसी के लिए वह गाते नही।

अकबर ने कहा वह नही आ सकते तो चलो हम उनके पास चले। दर्शन तो करले। तान सेन बादशाह को साथ लेकर उस जगल मे गये जहा हरिदास स्वामी रहते थे। देखा हरिदास कुटिया के बाहर ध्यान मे मग्न हुए बैठे है चुप चाप शान्त एक दोतारा उनके पास पडा है परन्तु वह भी बे-आवाज।

बादशाह ने धीरे से कहा तान सेन यहा आकर भी क्या हम प्यासे जायगे? क्या कोई ऐसा उपाय नही कि स्वामी हरिदास गाने लगे।

तान सेन ने कहा प्रयत्न करता हू शहनशाह। आप चुप चाप खडे रहिए। और अपनी सितार उठाकर उसने बजाना शुरू कर दिया। थोडा ठीक बजाया फिर जान-बूझकर गलत बजाने लगा। हरिदास ने सुना तो झुझला उठे बोले गलत बजाते हो तान सेन सुनो और अपनी दोतारा उठा कर बजाने लगे उसके साथ साथ गाने लगे। सारा आकाश गूज उठा। पेड पौधे झूम उठे। जगल के हिरण पास आकर खडे हो गये। वहा के पक्षी शान्त हो गये। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे चलती हवा भी ठहर गई है।

बादशाह भी मस्त हो गए कितनी देर हो गई यह भी उन्हे पता नही लगा। अन्तत जब हरिदास ने गाना बन्द किया तो बादशाह और तानसेन प्रणाम करके वापस आ गये रास्ते मे बादशाह बोल नही सके। उनके सगीत की ध्वनि अभी उनके कानो मे गूज रही थी। रात्रि के समय बादशाह ने तानसेन से कहा तुम अच्छा गाते हो फिर भी तुम्हारे गाने मे वह रस क्या नही वह मस्ती क्यो नही जो स्वामी हरिदास जी के गाने मे है।

तानसेन ने हाथ जोडकर कहा बादशाह मुझमे और हरिदास जी मे बहुत अन्तर है। मै हू एक शाही गवैया अपने बादशाह के लिए गाता हू स्वामी हरिदास जगतपति के गायक है। वह उसके लिए गाते है जो करोडो बादशाहो को उत्पन्न और नष्ट करता है। वह बडे दरबार के गायक है मैं छोटे दरबार का गायक हू। उनकी तुलना मुझसे कैसी।

अकबर ने सुना सोचा ओर चुप हो गया धीरे से अपने मन मे कहा जो भगवान के गुण गाता है उसकी वाणी मे तो रस होगा ही।

गा प्रभु के गीत पर मस्ती मे गा सिर सकल ससार का झुक जाएगा।
मुश्किल आये तो न घबरा कभी—द्वार एक दिन मोक्ष का खुल जाएगा।।

—स्व० महात्मा आनन्द स्वामी जी

कन्हैया लाल एडवोकेट का निधन

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता व प्रधान श्री कन्हैया लाल एडवोकेट का निधन २८ ५ १९९२ को प्रात हो गया। आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन मे प्रधान जी के असामयिक निधन पर दुख व्यक्त किया गया।

पूर्व प्रधान श्री राम प्रसाद जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए स्व० कन्हैया लाल जी के सामाजिक कार्य सक्षेप मे वर्णन किया। अन्त मे परम पिता परमात्मा से प्रार्थना किया गया कि परमात्मा दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा परिवार जनो को इस महान कष्ट को सहन करने की शक्ति दे।

राजीव कुमार आर्य
मत्री आर्य समाज आर्यनगर

आओ शिवसंकल्प निभाएं

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुल्तानपुर (उ० प्र०)

घनीभूत हो रहा धरा पर
आज अनय-अज्ञान अन्धेरा।
नही दिखाई देता किंचित
स्वर्णिम सा शुचि मना सबेरा।
वेद भानु की स्वर्ण रश्मिया—
चलो ! धरा पर लाए।
आओ ! शिव सकल्प निभाए।।

सत्य सनातन धर्म हमारा
पुन धरा पर फैले।
क्षत विक्षत हो भाव मनुज के
कलुषित जो मटमैले।
गीत सुमगल जन हितकारी—
आय जनो हे ! गाए।
आओ ! शिव सकल्प निभाए।।

आर्ष विचारो का धरती पर
हो नूतन उन्मेष।
वैदिक मन्त्रो का गूजे नव
वसुधा पर सन्देश
ओ३म ध्वजा भूमण्डल पर—
फिर आओ ! हम लहराए।
आओ ! शिवसकल्प निभाए।।

प्रदूषण से त्रस्त समार शीघ्र ही गाय का घी जलाने के महत्त्व को स्वीकारेगा

देहरादून १९ जून। वैदिक साधन आश्रम तपोवन मे १५ मई से चल रहा एक माम का वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर रविवार १४ जून को सफलता से सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी सत्यपति जी समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे और आपने ही सफल परीक्षार्थियो को प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस शिविर के ६५ प्रशिक्षार्थियो मे मौरीशस से आए दो ब्रह्मचारियो के अतिरिक्त भारत के विभिन्न प्रदेशो के युवक प्रौढ तथा वृद्ध सज्जन सम्मिलित थे।

शिविर के सचालक आचार्य वेदभूषण जी के अतिरिक्त महाविदुषी बहिन डा० सुनीति जी के भी व्याख्यान होते रहे।

समापन समारोह मे भाषण करते हुए वैदिक साधन आश्रम के मन्त्री प० देवदत्त बाली ने शुद्ध उच्चारण के महत्व पर प्रकाश डाला और पुरोहितो के लिए कुछ उपयोगी सुझाव भी दिए। आपने इस प्रकार के शिविरो को राष्ट्रीय एकता का भी महान साधन बनाया।

— देवदत्त बाली मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी तपोवन

स्थल रजिस्ट्रेशन न० डा०एन० ११०४९/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२८ ९ १९९३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस U न० ९३
R N 684/57 Licensed to post without Prepayment Licence No. U 93 Post I, N D P.S.O.on 25 26, 6-1993

शोक समाचार

स्वामी रामानन्द जी शास्त्री का निधन

आर्य समाज के मूक सेवक श्री स्वामी रामानन्द जी शास्त्री का २३-५-९२ को नानावटी हस्पताल बम्बई मे अकस्मात निधन हो गया। वे ९४ वर्ष के थे।

पूजनीय स्वामी रामानन्द जी ने जीवन पर्यन्त आर्य समाज के प्रचार प्रसार का कार्य किया। आपका जन्म १९०५ मे हुआ था, आपने स्वर्गीय समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण के साथ आजादी के आन्दोलन मे काम किया। स्वामी जी आचार्य नरेन्द्रदेव जी के आह्वान पर राजनीति छोडकर योग साधना म लग गय और तभी से आपका जीवन समाज के लिए समर्पित हो गया, आपने पूरे देश का भ्रमण किया। यौगिक क्रियाओ से विकलागो का उपचार तथा स्वास्थ्य की स्थिरता दीर्घ आयु की शिक्षा देकर ही नही अपितु नेत्रहीनो के जीवन को सुधारने का पूर्ण प्रयास किया।

स्वामी जी ने समय भारती चेरिटेबल ट्रस्ट बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, गीता योग केन्द्र बम्बई, श्री राम चेरिटेबल ट्रस्ट बम्बई हेल्थ लिंक लदन, एशियन फाउण्डेशन फार हेल्थ लदन तथा योग केन्द्र नवनाथ लन्दन को भी अपनी सेवाओ का पूरा पूरा लाभ प्राप्त कराया।

पूज्य स्वामी रामानन्द जी शास्त्री के देहावसान से आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है। ऐसा समर्पित जीवन सरलता सौम्य मूर्ति, तपस्वी सन्यासी मिलना निकट भविष्य म सर्वथा असम्भव है। हम पूज्य स्वामी जी के देहावसान पर हार्दिक शोक व्यक्त करते है और परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति और सदगति की प्रार्थना करते है।

स्वामी रामानन्द जी शास्त्री का सस्कार वदिक रीति अनुसार बम्बई के ओशीवारा शमशान भूमि मे किया गया। उनकी शवयात्रा म गोरेगाव से जोगेश्वरी तक भारी सख्या मे लोगो ने भाग लिया।

कैप्टिन देवरत्न आर्य, प्रधान
आर्य समाज साताकुज

—आज दिनाक १ - ९२ को साय ४ बजे से ५ बजे तक आर्य समाज मन्दिर, अशोक नगर नई दिल्ली-१८ मे उपप्रधान श्रीमान जसवन्तराय ढीगरा जी की धर्मपत्नी के स्वर्गवास होन के पश्चात अन्तिम विदाई हेतु श्रद्धाजलि का कार्यक्रम हुआ। अनेक लोगा ने श्रद्धाजलिया दी। और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवगत आत्मा को सद्गति मिले। और पीछे परिवार को इस दुख को सहन करन की शक्ति प्रदान कर।

आर्य समाज अशोक नगर की ओर से शोक प्रस्ताव भी दिया गया।

मन्त्री

—महाराष्ट्र प्रदेश मे आर्य समाज के कार्यकर्ता सिद्धान्तो एव वैदिक वाग्मय को प्रगति देन वाल श्री शिवमुनि जी वानप्रस्थी का १८-५ ९२ को प्रात ब्राह्म मुहूर्त म हृदय गति रुक जाने से देहान्त हो गया। आपका त्यागपूर्ण जीवन अनुकरणी रहा। आपन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा को सभा कार्यालय के लिए अपना स्थान दिया तथा सभा के मुख पत्र के प्रकाशनार्थ अपना मुद्रणालय प्रदान किया। आपने वैदिक सेवा आश्रम वाजगाव की १९७० म स्थापना की तथा वैदिक सेवा-आश्रम पाक्षिक का सचालन किया। आप को पचमहायज्ञो से विशेष लगाव था। वे बिना इन यज्ञो के कभी नही रह। उन्होने वैदिक सेवा आश्रम मे आर्ष गुरुकुल की स्थापना की जिसम अनाथ और निर्धन छात्रो को सस्कृत भाषा और वैदिक वाग्मय का यथा शक्ति प्रशिक्षण दे रहे थे।

ऐसे त्यागी तपस्वी तथा समर्पण की भावना से काम करने वाले श्रीशिवमुनि का अकस्मात चले जाना आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति है। हम प्रभु से प्रार्थना करते है कि उनकी दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्रदान करें।

कैप्टिन देवरत्न आर्य, प्रधान
आर्य समाज साताकुज

आर्य वीर दल मुरादाबाद

आर्यवीर दल मुरादाबाद का जनपदीय शिविर १-६-९२ से ७-६-९२ तक लगाया गया। जिसमे शारीरिक, वैदिक दोनो स्तर का प्रशिक्षण दिया गया समापन समारोह पर व्यायाम प्रदर्शन मे पी० टी० दण्ड, बैठक डबल जूडो कराटे, लाठी आदि का सुन्दर प्रदर्शन किया गया। वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक धर्मवीर आर्य ने वीरो को आवहान करते हुए कहा यदि आर्य सस्कृति की रक्षा करना चाहाते हो तो आर्य वीर दल की स्थापना प्रत्येक आर्य समाज मे होनी आवश्यक हैं। क्योकि—

जहाशस्त्र नही वहा शास्त्र पछताते या रोते है।
ऋषियो को तप से सिद्धि तब मिलती हैं जब पहरे पर
स्वय धनु धर राम खडे होते है॥

सचिव
सजीव आर्य आर्यवीर दल

श्रद्धांजली

आर्य वीर दल मु० नगर द्वारा आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर नगर म लगाया गया, जिसके सचालक डा० ईश्वर सिह जी थे। दिनाक २९ ५-९२ को साय ४ बजे शोभा यात्रा की तैयारी के लिए ट्रैक्टर गेट से अन्दर आ रहा था कि वह गेट टूटा गया, और बसन्त नाम का आर्य वीर जो उसमे बैठा था, उनकी गर्दन पर चोट लगने से उनका एव एक और आर्य वीर वीरगति को प्राप्त हो गया, समापन पर उस आर्यवीर को शहीद बसन्त कुमार के नाम से प्रमाण पत्र दिया गया हैं।

धर्मवीर आर्य व्यायाम शिक्षक
जिला सचालक (मेरठ)

सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार

६ मई ९२ को ग्राम आकोडा जनपद नागौर राजस्थान मे आचार्य शिरोमणि प० विश्वमित्र मेधावी कुलपति गुरुकुल सिराथू, प्रयाग के पौरोहित्य मे एक सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार सम्पन्न हुआ। जिसमे गाव के भूतपूर्व सरपच श्री मोटाराम जी मेघवाल एवम् गाव के प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री मोहनराम जी गोदारा एवम् ५ पाच अन्य लोगो ने यज्ञोपवीत धारण किया तथा वैदिक धर्म प्रचार की प्रतिज्ञा की।

यह कार्य प्रोफेसर दुर्गेश चौधरी उपप्रधान आर्य समाज हरजेन्दर नगर, कानपुर, की प्रेरणा व सहयोग से सम्पन्न हुआ। सस्कार के साथ साथ वैदिक धर्म प्रचार हेतु एक विशाल सत्सग का आयोजन किया गया, जिसमे मुख्य वक्ता प० विश्वमित्र जी मधावी, हरवशलालजी गेरा एवम् दुर्गेश चौधरी थे।

—सत्यनारायण मन्त्री
आर्य समाज हरजेन्दर नगर कानपुर

सावदशक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● उस समय सर्व भूगोल मे वेदोक्त का एक मत था उसी मे सबकी निष्ठा थी और एक दूसरे का सुख दुःख हानि लाभ सब अपने समान समझते थे तभी भूगोल मे सुख था।

● यह ससार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा मन असख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरुषार्थ रहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढता है। इससे देश मे विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ जाते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पसे
वर्ष ३० अक २३] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ अषाढ शु० ६ स० २०४९ ५ जोलाई १९९१

आइए, वेदाध्ययन का व्रत लें

प्राचीन परम्परा मे वेदाध्ययन द्विजमात्र का पवित्र कर्त्तव्य माना जाता था। मनु ने कहा है कि जो वेद नहीं पढता वह इसी जन्म मे शूद्रत्व को प्राप्त कर लेता है। पतजलि कहते हैं कि ब्राह्मण को चाहिए कि वह निष्कारण ही अर्थात् बिना किसी लाभ की आशा से छहो अगो से युक्त वेद का अध्ययन करे और उसका ज्ञान प्राप्त करे। तो आइये "वेद क्यो पढें ? इसका उत्तर खोजने का यत्न करें।

साहित्यिक दृष्टि

वेदो की गणना उच्चकोटि के साहित्यो मे की जाती है। वेद के ही शब्दो मे वेद एक ऐसा काव्य है जो न कभी मरता है न कभी पुराना होता हैं —

"देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।"

जो काव्य मे उत्कर्षाधायक तत्व अभिधा, लक्षणा, व्यजना, शब्दालकार, अर्थालकार आदि माने जाते हैं वे सब वेद काव्य मे उत्कृष्ट रूप मे विद्यमान हैं। वेद के शब्दो मे विविध अर्थों को देने की जसी शक्ति उपस्थित है, वैसी ससार की अन्य किसी भी भाषा मे नही है। वेद के अनेक मन्त्र जिस प्रकार अध्यात्म अधिदेवत अधियज्ञ, अधिराष्ट्र आदि विविध अर्थों को देने की क्षमता रखते है, वैसी क्षमता किसी अन्य भाषा के साहित्य म नही है। वेदो के मन्त्र कवीन्द्र रवीन्द्र की गीताञ्जलि के गीतो से अधिक भावपूर्ण हैं। यदि हम कालिदास भवभूति, भारवि, माघ हर्ष बाणभट्ट, आदि सस्कृत कवियो के साहित्य को पढने मे गौरव अनुभव कर सकते हैं, तो वेद का साहित्य तो उससे भी अधिक प्राजल है। यदि हम ग्रीक, लेटिन, अग्रेजी, पारसी, फ्रेंच, रशियन जर्मन, तमिल, मराठी, बगाली, गुजराती, हिन्दी आदि साहित्य को पढते समय यह प्रश्न नही उठाते कि इस साहित्य को क्यो पढ़ें, तो वैदिक साहित्य के लिए ही प्रश्नचिह्न क्यो ? साहित्य का अध्ययन स्वान्त सुखाय होता है, वह स्वान्त सुख वैदिक साहित्य के मर्म में प्रवेश करने वाले साहित्याराधक को वही अधिक प्राप्त हो सकता है।

—रामनाथ वेदालकार

पाक को परमाणु हमले की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी

—शरद पवार

नई दिल्ली २९ जून (भाषा) रक्षामन्त्री शरद पवार ने चेतावनी दी है कि अगर पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ परमाणु हमला करने की जुर्रत की तो उसे भारी कीमत चुकानी पडेगी।

श्री पवार ने एक इन्टरव्यू मे कहा कि मैं उम्मीद करता हू कि पाकिस्तान ऐसी भूल (परमाणु हमला) नही करेगा।

श्री पवार ने कहा कि अगर पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ परमाणु हमला करने की भूल की तो भारी नुकसान के अलावा पाकिस्तान की आगे की पुश्तो को भी इसका खामियाजा भुगतना पडेगा।

रक्षामन्त्री ने कहा कि देश की सुरक्षा तैयारी के बारे मे चिंतित होने की कोई बात नही है क्योकि सेना के तीनो अगो का मनोबल बहुत ऊचा है।

गृहमन्त्री एस बी० चौहान ने कहा कि सरकार पजाब और जम्मू कश्मीर के आतकवादियो द्वारा उत्पन्न चुनौती का मुकाबला करने के लिए एक नई कार्रवाई योजना को अन्तिम रूप दे रही है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

देश को बाहर से नहीं अन्दर से खतरा है

आर्य समाज सरस्वती बिहार में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

दिल्ली २८ जून। आर्य समाज सरस्वती विहार का वार्षिकोत्सव आज समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेको कार्यक्रमों के अतिरिक्त राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में किया गया। सम्मेलन मे अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने अपने विचार प्रकट किये।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे बोलते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि हमारे देश की सेनायें सीमाओं की रक्षा करने में हर प्रकार से सक्षम है परन्तु देश को बाहर से नहीं अन्दर से खतरा है। उन्होने कहा कि यदि लोगो ने स्वामी दयानन्द की बात मान ली होती और हिन्दू समाज ने स्वामी जी के शुद्धि आन्दोलन को सहयोग दिया होता तो आज कोई समस्या होती ही नही। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश कोहली डा० वाचस्पति उपाध्याय सहित अनेको विद्वानो ने राष्ट्र के अन्दरूनी खतरा की चर्चा की। उत्सव अत्यन्त सफल रहा।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

लाचारी का कोई दीन धर्म नहीं होता

नृशसता लालच और लाचारी का कोई दीन धरम नही होता। देश की राज धाना क इदिरा गाधी हवाई अडड पर कुछ दिनो पहले काबुल के एक अधेड जीलानी खान को उस वक्त गिरफ्तार किया गया जब वह अपनी कथित बीबी नाबालिग फातिमा के साथ अफगानिस्तान रवाना होने वाला था। अभी जब फातिमा के मामले का छानबीन चल हीरहा है कि एक और शमनाक खबर है कि पिछल रविवार को उसी हवाई अडड पर दो बाग्लादेशी नागरिको को हिरासत म लिया गया जब वे अटठाईस अबोध बच्चा को ऊटा की दौड मे शामिल करवान के लिय दुबई ले जा रह थ।

दोनो घटनाओ मे कुछ भी नया नही है। अभी अमीना के हैदराबाद पहु चन की खबर आ ही रही थी कि उसकी एक बहन फातिमा ठीक उसी किर दार मे हमारे सामने है। फर्क शायद इतना ही है कि फातिमा अमीना से बडी है और हालाकि उसके वाल्दैन अभी अपमानित होन के लिये दिल्ली नही लाये जा सके है लकिन वह कह रही है कि वह अपने शौहर के साथ काबुल जायेगी। अदालत मान रही है कि वह किसी के दबाव मे आकर ऐसा कह रही है। उधर जो अटठाईस मासूम बच्चे है न तो उनके मा बाप का पता है और न इस बात का कि वे बेचे गय थे या फिर उन्हे नौकरी देन के बहान दुबई भेजा जा रहा था।

वह कौन सी लाचारी है जो एक पन्द्रह वर्षीया किशोरी को पचास वर्ष के अधड के साथ बाधने पर बाध्य करती है? वह किस किस्म की गरीबी या साजिश है जो पाच छह साल के बच्चो को खाडी के मुल्को मे ऊटो पर बाधे जान और फिर एक बहशियाना मौत मरने के लिये बेच देती है? फातिमा के मामले को एक बार फिर शायद अमीना का मामला बनाने की कोशिश हो। नाबालिग किशोरियो की शादी लेकिन सिर्फ मुस्लिमा म ही एक स्कडल या मसला क्यो बने? इस समस्या को तटस्थता से देखने वाली निगाह भी मौजूद है लेकिन क्या वजह है कि हवाई अडड पर पकडा जान वाला ऐसा मुस्लिम जोडा तत्काल राष्टीय अखबारो की सुर्खिया बनता है लेकिन हर वष हो रहे लाखा हिन्दू नाबालिग विवाहो पर कोई विवाद नही उठता—उन पर कानूनी कारवाई की बात तो दूर उल्टे अखबार अबोध शिशुआ के विवाह की तस्वीर इस तरह प्रकाशित करते है जैसे कोई बहुत पवित्र और श्रयस्कर घटना घट रही हो। बशक अगर फातिमा नाबालिग है ता उस काबल नही न जाने दिया जाना चाहिये। लेकिन भारतीय समाज अपनी दूसरी हजारा नाबालिग किशो रियो के ब्याह क्या नही रोकता?

जो लोग फातिमा के बेमेल निकाह मे मुस्लिम समाज का एक चहरा देखते हैं व ऊट दौड के लिये कुर्बान किए जा रहे मुस्लिम बच्चा के मामन मे उसका दूसरा चेहरा भी देखें और फिर उन्हे शायद अहसास हो कि ममला धम का नही गरीबी का है। आखिरकार दुबई के अरबपति शेख मुस्लिम ही है फिर व मासूम मुस्लिम बच्चो का इस तरह कत्ल क्यो करते हैं! साफ हैकि एक ओर दौलत की इफरात ने उन्हे जानवर बना दियाहै तो भारत-बाग्लादेश-पाकिस्तान के बहुत सारे मुस्लिम अपनी गरीबी मे आदमियो से एक दर्जा नीचे रह रहे है। बशक यह मुमकिन है कि ये अभागे बच्च लावारिस हो और इन्हे बेचने वाले जरायमपेशा हो। लेकिन क्या आए दिन हम अखबारो मे हिन्दुओ द्वारा बच्चो किशोरियो और औरतो को ढोर डगरो की की तरह बेचने की खबरें नही पढते? यहा भी कही कलेजा चारने वाली मजबूरी होती है तो कही आदमी म छपी शैतानयत।

फातिमा और इन बच्चा की समस्या दक्षिण एशिया क मुस्लिम समाज की ही समस्या नही है वह सिर्फ दक्षिण एशिया की सभी कौमो की समस्या भी नही है बल्कि वह तथाकथित समूची तीसरी दुनिया या दक्षिण या विकासशील देशो की समस्या है। उसम गरीबी पिछडापन लालच अपराध कठमुल्लावाद पुरातनपथ सभी है। नारी देह से खलन वाले हो या मासूम बच्चो के जिस्मो से वे हर धम म एक जैसे ही है ठीक उसी तरह जिस तरह अभाव और भुख मरी और अन्याय मे जीने वाले लोग। हम एक फातिमा और दो दजन बच्चो को हवाई अडड पर रोक भी ल इसका अन्त नही होगा। अन्त होगा इस समूचे समाज को मानवीयता और प्रबुद्धता मे बदलने से। जो देश या समाज बदल नही पाएगा वह हमेशा हवाई अडडो और बन्दरगाहो से ऐसे हादसे देखने को अभिशप्त होगा।

पाक परमाणु हमला

(पृष्ठ १ का शेष)

उन्होने कहा कि सरकार अभी उस मुकाम पर नही पहुची है जहा वह कह सके कि उसने समस्या से निपटने के लिए अन्तिम उपाय कर लिए हैं। उन्होने कहा कि पाकिस्तान द्वारा आतक-वादियो को लगातार समर्थन देना और देश के अदरूनी मामलों में दखलन्दाजी करना भारत के लिए एक चिंता का विषय है।

श्री रामलाल मलिक अस्वस्थ

दिल्ली मे आय समाज के सुप्रसिद्ध कायकर्ता लाला रामलाल मलिक इन दिना अस्वस्थ चल रहे है। उपचार हेतु उन्हे जीवन नर्सिग होम करौलबाग मे दाखिल किया गया है।

सावदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव तथा श्री सजय कुमार व विमल वधावन एडवोकेट २८ ६ ९२ को मलिक जी को देखने अस्पताल गये थे। मलिक जी की स्मति जाती रही है। वह किसी को पहचान नही पा रहे है। नर्सिगहोम के डाक्टर बडी तत्परता से उनके उपचार पर लगे हुए है। स्वामी जी ने आर्य जगत की ओर से श्री मलिक जी के स्वास्थ्यलाभ के लिये कामना प्रकट की।

मातृ शोक

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री वेदव्रत महत्ता की माता श्रीमती लज्जावती का १६ ६ ९२ को चण्डीगढ मे ९२ वष की आयु मे निधन हो गया है। श्रीमती लज्जावती पूर्ण धार्मिक आर्य विचारो की महिला थी। वह अपने पीछ दो पुत्र और ४ पुत्रिया (सब विवाहित) छोड गई है।

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की सदगति और शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट करती है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पाठको से—

सावदेशिक साप्ताहिक क ग्राहको मे निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करे। शल्क भेजत समय अपना पूण पता तथा ग्राहक सख्या अवश्य लिख। सावदेशिक का वार्षिक शुल्क ३० रु तथा आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र ३०० रु० है। बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए एक बार ३०० रु० भेजकर सावदेशिक की आजीवन सदस्यता प्राप्त करे।

विदेश के लिए सावदेशिक का शुल्क निम्न प्रकार स है

हवाई डाक द्वारा	५०० रुपए
समुद्री डाक द्वारा	४००

सावदेशिक पत्रिका के अधिक स अधिक ग्राहक बनाकर आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार म अपना सहयोग प्रदान कर। नए ग्राहक शुल्क भेजत समय अपन पूरा पता स्पष्ट अक्षरो म अवश्य लिख।

सम्पादक

ईसाई नेता जी. जी. स्वेल का समर्थन करना राष्ट्रहित में नहीं है

मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी चकित एवं भ्रमित

मध्य प्रदेश मे विशेषकर वहा के हिन्दी भाषी क्षेत्र मे भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता अपने नताओ के इस निर्णय से काफी चकित तथा भ्रमित है जिसमे उन्होने जनता दल का समर्थन करते हुए प्रोफेसर जी जी स्वेल को राष्ट्रपति पद के लिए नामाकित किया है। इसके तीन प्रमुख कारण हैं—

१—श्री शकरदयाल शर्मा मध्यप्रदेश के केवल निर्माता ही नहीं हैं बल्कि भोपाल को इस प्रदेश की राजधानी बनाने मे भी उनका बडा हाथ रहा है। इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश का हर वर्ग और प्रत्येक व्यक्ति उन्हे बडी श्रद्धा व आदर की दृष्टि से देखता है।

२—दूसरी बात यह है कि अब तक तो भारतीय जनता पार्टी के शीर्षस्थ नेता ईसाई मिशनरियो का उनके राष्ट्र विरोधी कार्यो क लिए विरोध करते रहे हैं किन्तु अब अचानक पूर्वोत्तर राज्य के एक ईसाई व्यक्ति को राष्ट्रपति पद के लिए नामाकित करके उन्होने इस प्रान्त की पार्टी के कार्यकर्ताओ को एक अजीब तरह की परेशानी म डाल दिया है। कारण यह है कि यहा की पार्टी के नेता इस बात का प्रचार करते रहे हैं कि उन्होंने यहा के हजारों ईसाईयो को शुद्ध करके पुन हिन्दू धर्म मे दीक्षित कर लिया है। जिसका श्रेय वे स्वय को देते रहे हैं। शुद्धिकरण उन्होंने अपने प्रचार का एक खास मुद्दा बनाया हुआ था।

'अखिल भारतीय भारत देशम् पार्टी के नेता श्री सुरेन्द्रसिंह ने एक वक्तव्य मे भारतीय जनता पार्टी की इस दुहरी नीति की कडी आलोचना की है। उन्होने कहा कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा श्री जी जी स्वेल का राष्ट्रपति पद के लिए समर्थन करना राष्ट्र हित मे नही है, और यह अपने आप मे भी पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमो के विरुद्ध है। श्री परिहार ने कहा कि वे मध्य प्रदेश के सभी निर्दलीय विधायको से श्री शकर दयाल शर्मा का समर्थन करने के लिए कहेंगे।

स्थानीय सूत्रो के अनुसार भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय नेताओ का श्री शकर दयाल शर्मा के विरोध मे श्री स्वेल को समर्थन देना मध्य प्रदेश मे सत्ता धारी पार्टी के लिए अनेक समस्यायें पैदा कर सकता है। यहा की पार्टी के कार्यकर्ताओ के विचार मे कांग्रेस पार्टी से केवल इस बात पर विरोध प्रकट करने के लिए कि उसने उपराष्ट्रपति पद के लिए उनका समर्थन नहीं किया, पार्टी के केन्द्रीय नेताओ का स्वेल को समर्थन देना कोई बुद्धिमत्ता पूर्ण कार्य नहीं है। बहुतो का मत है कि श्री नरसिंह राव ने जो एक चतुर राजनीतिज्ञ भी हैं, अपनी चाल से भारतीय जनता पार्टी के सारे खेल को उखाड कर रख दिया है। भारतीय जनता पार्टी के नेताओ का यह निर्णय उनके लिये देश के हिन्दी भाषी क्षेत्रो मे विशेषकर मध्य प्रदेश में जहा का जनमत श्री शकर दयाल शर्मा के पक्ष मे है, बहुत हानिकारक सिद्ध होगा।

[हिन्दुस्तान टाइम्स से साभार]

ईसाई न बनने पर बांदा के पादरी ने नौकरी से निकाला

बांदा, २१ जून। ईसाई धर्म स्वीकार न करने पर यहा के सेंट पाल्स चर्च' के चौकीदार भजनी उर्फ इन्द्रपाल सिंह को नौकरी से निकाल दिया गया है। भजनी का आरोप है कि चर्च के पादरी ने करीब एक दर्जन हिन्दू युवको को नौकरी [और शादी का लालच देकर ईसाई बनाया है। उस पर भी दबाव डाला गया कि नौकरी करना है तो ईसाई बन जाओ, वरना निकाल देंगे। भजनी ने इसकी शिकायत लोकसभा मे विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी, मुख्यमन्त्री कल्याणसिंह और विश्व हिन्दू परिषद के नेताओ से की थी। प्रशासनिक अधिकारी मामले की जाच कर ही रहे थे कि इसी बीच भजनी को नौकरी से यह आरोप लगाकर निकाल बाहर किया कि वह अराजक है।

चौकीदार भजनी ने बताया कि चर्च के पादरी वाई रस्किन ने जिसका के दो युवको रम्मू और सेम्मू को शादी और नौकरी का लालच देकर ईसाई बना दिया है। अब इनके नाम रमुअल मसीह और सैमुअल मसीह हो गए हैं। दोनो की शादी ईसाई लडकियो से करा दी गई है। जो हमीरपुर जिले मे नौकरी करती हैं। बेरोजगार युवक रम्मू और सेम्मू अपनी बीवियो के पास रहकर गुलामी की जिंदगी जी रहे हैं। उत्तरी कस्बे के हरजन युवक नत्थू आजाद को नौकरी का प्रलोभन देकर ईसाई बनाया गया इसी प्रकार जसनी गाव के लेखपाल को शादी का लालच दिखाकर ईसाई धर्म स्वीकार करा दिया गया है।

श्री आडवाणी और कल्याणसिंह को लिखे पत्र में भजनी ने आरोप लगाया है कि उसे धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया जा रहा है। वह पिछले चौदह साल से चर्च का चौकीदार है। पादरी काफी समय से दबाव डालता चला आ रहा है। यहा तक कि चर्च के स्कूल मे पढने वाले उसके लडके सन्तोष के नाम के आगे पादरी ने बिना उसकी राय के सन्तोष मसीह दर्ज करा दिया। इसकी शिकायत जब उसने पादरी से की तो उसे मकान खाली कर भाग जाने को कहा गया। श्री आडवाणी और प्रदेश सरकार ने इस शिकायत को गम्भीरता से लिया और जांच के आदेश दिए। पुलिस क्षेत्राधिकारी जयप्रकाश सिंह इस मामले की जाच कर ही रहे थे कि इसी बीच एलडीटीए के सेक्रेटरी एम आर माल एसएसपी बादा को २१ मई १९९२ को लिखे गये पत्र मे चौकीदार भजनी को नौकरी से निकाले जाने की पुष्टि कर दी।

चर्च के चौकीदार भजनी पर अपराधी होने का आरोप लगाते हुए पादरी वाई रस्किन सफाई देते हैं, कि उन्होने कभी भी भजनी को ईसाई बनने के लिए नही कहा। उसकी आपराधिक गतिविधियो की वजह से नौकरी से अलग निकाल दिया गया है। भजनी के लडके सन्तोष के मामले मे पादरी चुप हैं। स्कूल मे सन्तोष का नाम सन्तोष मसीह कैसे दर्ज हुआ ? के सवाल पर पादरी रस्किन को कोई जवाब नही सूझ रहा। भजनी ने बताया कि धर्म परिवर्तन के लिये उसे वेतन बढाने और एक खूबसूरत युवती का लालच दिया जाता रहा है। लेकिन उसने साफ मना कर दिया। बांदा शहर के बलीगंज की एक कुआरी लडकी को बहला फुसलाकर ईसाई बनाए जाने की खबर भी है। दूसरे युवक और युवतियो पर भी डोरे डाले जा रहे हैं।

विश्व हिन्दू परिषद (अवध प्रांत) के अध्यक्ष गुलाबसिंह परिहार ने बादा मे हिंदुओ को ईसाई बनाये जाने के मामले में चिंता प्रकट करते हुए यहां के कलेक्टर को भजनी मामले पर कडी कार्रवाई करने के लिये लिखा है। जवाब मे चर्च के पादरी वाई रस्किन ने अपना पक्ष मजबूत करने के लिये कुछ अखबारो मे बयान छपवाने शुरू कर दिये है। इसमे चौकीदार भजनी को घोर अपराधी और हिस्ट्रीशीटर बताया जा रहा है। पादरी ने कहा है कि भजनी को नौकरी से निकाल दिया गया है। वह जबरन चर्च के कमरे मे कब्जा किए हैं। अगर उसे जल्दी बाहर नही किया जाता तो चर्च की सम्पत्ति को नुकसान हो सकता है।

भजनी का आरोप है कि पादरी वाई रस्किन ने पहले चौकीदार ऐरिक को पुलिस से पिटवाकर मरवा डाला था। क्योंकि उसने इनके गलत काम में सहयोग करने को मना कर दिया था। मेरे ऊपर धर्म परिवर्तन की तलवार भाजी जा रही है। वह कहता है कि अगर उसकी नौकरी चली गई तो वह भूखो मर जाएगा। विवश होकर उसने कहा है कि अगर कोई सुनवाई न हुई तो अपने बच्चो का पेट पालने के लिये उसे पादरी का कहना मानकर ईसाई धर्म स्वीकार करना ही होगा।

(जनसत्ता से साभार)

हे चिन्ता, मेरा पीछा छोड़

वर्तमान युग में कोई भी मनुष्य चिन्ता मुक्त नहीं है। कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि वह पूरी तरह चिन्ता मुक्त है। उसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है। छोटे बच्चे को दूध पीने की चिन्ता है, विद्यार्थियों को पढ़ाई करने की चिन्ता है, बेरोजगारो को रोजगार की चिन्ता है, नेता को कुर्सी की चिन्ता है आदि आदि। आज कोई भी व्यक्ति चिंता रहित नहीं है। भले ही वह चिन्ता छोटी-मोटी हो परन्तु हर व्यक्ति का किसी न किसी रूप में चिन्ता के साथ गहरा सम्बन्ध है और यही कारण है कि वर्तमान युवा पीढ़ी का स्वास्थ्य निरन्तर गिरता ही चला जा रहा है।

बच्चे जो कि नासमझ है, उनकी चिन्ताओ की मैं यहां चर्चा नहीं करूंगा किन्तु बड़ों की चिंताएं काफी गहन भी होती हैं। बच्चो की चिंताएं तो छोटी मोटी ही होती है जो जल्द ही सुलझ जाती है किन्तु बड़ों की चिंताएं सुलझने में प्रायः समय लगता है। अतः उनकी चिंता को शीघ्र खत्म करने का विकल्प ढूंढना बहुत जरूरी है। चिन्ता में इतनी शक्ति होती है कि वह अच्छे खासे मोटे तगड़े को भी घुन लगे गेहूं की तरह खोखला कर देती है। हम समझ नहीं पाते कि हमारा शरीर क्यो नष्ट हो रहा है। चिन्ता के सम्बन्ध में एक मशहूर लोकोक्ति है कि चिन्ता चिता से भी ज्यादा खतरनाक होती है। चिता मनुष्य को शीघ्र जला डालती है जब कि चिन्ता इंसान को धीरे-२ जलाती है।

चिन्ताओं की दो सीमायें हैं। पहली अगर चिन्ता पर काबू नहीं पाया गया तो चिन्तित मनुष्य पागल हो सकता है और वह आत्महत्या भी कर सकता है यह कथन मनोवैज्ञानिकों का ही है। मैं यह तो बिल्कुल नहीं कहता कि चिंताएं पूरी तरह नष्ट की जा सकती है किन्तु इतना अवश्य ही कहूंगा कि इन पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है। चिन्ता और स्वास्थ्य यह दोनो एक दूसरे के जानी दुश्मन है। यदि चिन्ता प्रबल हुई तो वह तो स्वास्थ्य का सत्यानाश कर देगी और यदि स्वास्थ्य अच्छा है उसमे चिन्ता से लड़ने की परमशक्ति हुई तो वह उसे अपने पास फटकने भी नहीं देगा और अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखेगा। इतना सब कुछ लिखने का मेरा तात्पर्य यह था कि हम चिन्ता की भीषणता और भयानकता को समझें और उन्हें अपने पास कभी न आने दें। हमेशा ही उनसे दूर रहें। अब आप यह जानने के लिए भी उत्सुक हो उठे होगे कि चिन्ताएं कैसे हटाई जा सकती हैं या उन पर कैसे काबू पाया जा सकता है।

मैं आपको एक घटना बताना चाहता हूं। एक बार मैं कहीं से पैदल आ रहा था। रास्ते में मुझे एक बूढ़ा रोता हुआ दिखाई दिया। मैंने रुककर उससे पूछा 'क्यो दादा क्या हुआ, आप क्यो रो रहे हैं। उसने जवाब दिया, बेटा, मेरा एक ही बेटा है जो रोज कमाता है और मुझे खिलाता है। उसकी कमाई पर मैं पलता हूं। सोचता हूं कि यदि कभी वह बीमार हो गया या मर गया तो मुझे कौन खिलायेगा। इसीलिये रो रहा हूं। तात्पर्य यह है कि कुछ लोग व्यर्थ की चिन्ताएं पालते है। इस चिन्ता का न सिर है और न ही पैर। एक दोस्त ने बताया कि यह बुड्डा बाबा पागल है। उसका लड़का अपने बाप की आदत से चिन्तित है।

आइए अब हम आपको बताएं कि चिंताओ को अपने से कैसे दूर रखा जा सकता है इन्हें अपने से दूर रखना बेहद जरूरी है।

सर्व प्रथम हमे यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि अमुक चिन्ता के पीछे क्या कारण है। कारण जानने के पश्चात उस कारण को नष्ट करने का प्रयास करना चाहिए जिससे चिन्ता उत्पन्न हुई। चिंतन में कोई बुराई नहीं है। याद रखिए चिंतन और चिन्ता मे जमीन-आसमान का फर्क है। जहां चिन्ता एक रोग की तरह है वहीं चिंतन एक तरह से दिमागी खुराक है। जब आप कारण जान जाएं तो फिर उस चिन्ता को ठीक ऐसे मसल डाले जैसे मच्छर को मसला जाता है या दूध से मक्खी को बाहर किया जाता है। फिर देखें आपकी चिन्ता कैसे दूर होती है।

यदि कोई विद्यार्थी चिन्ता करता है कि वह परीक्षा में कैसे पास होगा उसे तो कुछ नही आता तो उस के द्वारा इस प्रकार की चिन्ता करना बिल्कुल व्यर्थ है क्योकि वह सिर्फ चिन्ता कर रहा है। उसे चाहिए कि वह चिन्ता छोड़ पढ़ाई करे। जब वह पढाई करेगा तो निश्चित रूप से सफल होगा।

सभी चिन्ताएं व्यर्थ भी नहीं होती, कुछ फायदेमन्द भी होती हैं। उदाहरण के लिए जब कोई विद्यार्थी चिन्ता करता है कि उसे परीक्षा मे इस बार प्रथम आना है तो वह मेहनत करता है और फिर अवश्य सफल होता है। इस प्रकार उसकी चिन्ता उसके लिये फायदेमन्द होती है। यदि कोई नौकरी पेशा चिन्ता करता है कि यदि उसने रिश्वत ली तो पकड़ा जाएगा और उसकी नौकरी जायेगी। इस कारण वह रिश्वत नहीं लेता और ईमानदारी से नौकरी करता है और नौकरी जाने से बच जाता है।

चिन्ता नष्ट करने के लिए सबसे अधिक जिस चीज की जरूरत है वह है आत्मविश्वास। सबसे पहले चिन्ता ग्रस्त व्यक्ति को अपने में आत्मविश्वास पैदा करना चाहिए कि उसे व्यर्थ की चिन्ताएं ही नहीं पालनी बल्कि उन्हें दूर भी करना है। आत्मविश्वास धीरे-धीरे पैदा किया जा सकता है। आत्म-विश्वासी व्यक्ति सब कुछ कर सकता है बशर्ते कुछ करने की ठान ले। यदि आपने अपने में आत्म-विश्वास पाल लिया तो आपकी चिन्ताओं को रफूचक्कर होते देर नहीं लगेगी।

सवाल उठता है कि मन को नियन्त्रित कैसे किया जाये। इस सम्बन्ध में मेरी राय यह है कि आप योग करना सीखिये। योग मन को नियन्त्रण में लाने का अचूक नुस्खा है योग के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी आप बाजार से योग की कुछ पुस्तकें लेकर या किसी योग मन्दिर से प्राप्त कर सकते हैं। योग आपके स्वास्थ्य के लिए लाभकारी ही सिद्ध होगा।

अपने अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि मनुष्य का सारा सुख चैन व्यर्थ की चिन्ताए ही लूट लेती है। चाहे व्यक्ति राजा ही क्यों न हो मगर चिन्ता के सागर मे वह भी जब डूब जाता है तो उसका पतन हो जाता है। चिंता दूर करने के लिये सर्वप्रथम अपने मन को काबू में रखना जरूरी है। फिर अपने में उन्हें दूर भगाने का आत्म-विश्वास लाना होगा और आलस्य का त्याग करना होगा। आइये, आज ही हम अपनी-अपनी चिन्ताए दूर भगाने के लिये कमर कस लें।

—हीरा लाल प्रजापति

आर्य समाज न होता तो वेदों का मान कहां होता

निर्भय हाथरसी

सचमुच सद्गुण साथ न हो तो फिर गुणगान नहीं होता।
गुण-गरिमा के भान बिना पूजित इन्सान नहीं होता॥
जब तक ज्ञान रहे अनजाना, तब तक भान नहीं होता।
लक्ष्य प्रधान न हो तो कोई पुरुष प्रधान नहीं होता॥
आर्य समाज न होती तो, वेदो का मान नहीं होता।
सब कुछ होता, हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान नहीं होता॥

यह मत समझो उनको प्रभु की प्रतिमाओं से प्यार नहीं था,
नाम 'मूलशंकर' कि मूल में शंकर का आधार न था:
पूजन तो स्वीकार था, पौगापन्थ उन्हें स्वीकार न था॥
उनकी दृष्टि सुदृष्टि थी, जिसमें सार बिना विस्तार न था।
केवल पत्थर का पुतला ही तो भगवान नहीं होता॥
आर्य समाज न होती तो वेदों का मान नहीं होता।
सब कुछ होता, हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान नहीं होता॥

बिना विचारे अन्धे होकर अन्धी भक्ति निभाते हैं,
वे बेचारे भेड़चाल मे चल-चल कर मर जाते हैं।
जिज्ञासाओ की अन्तस्थल तक जब खोज कराते हैं॥
तभी मूलशंकर शंकर से दयानन्द बन पाते है।
जब तक निष्ठा दृढ़ न बने तब तक सद्ज्ञान नहीं होता॥
आर्य समाज न होती, तो वेदो का मान नहीं होता।
सब कुछ होता, हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान नहीं होता॥

धर्म-कर्म-गतियां, अपनी-अपनी राहो पर जाती है,
राह भले हो भिन्न, एक ही मंजिल पर पहुचाती है।
स्वामी दयानन्द की बातें यही सार समझाती है॥
समय-काल की आवश्यकता, सदा सफलता पाती है।
कर्म महान न हो तो कर्त्ता कभी महान नहीं होता॥
आर्य समाज न होती तो वेदो का मान नहीं होता।
सब कुछ होता, हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान नहीं होता॥

सन्ध्या से होता प्राणमय कोष का परिपोष

—देवनारायण भारद्वाज

(प्राणायाम प्रक्रिया)

अन्नादि पार्थिव पदार्थों से निर्मित हमारा अन्नमय कोष अर्थात शरीर स्वस्थ दीर्घायु एव शान्तिदायक हो—अभी पीछे इसी पर विचार किया था। इस स्थूल देह मात्र से ही तो सब कुछ नही होने वाला है इसके लिए प्राण शक्ति की अपरिहार्य आवश्यकता है। हम जिस वाहन पर बैठकर दूर-सुदूर की यात्रा करते हैं वह रबर के बने हुए सुदृढ टायर के ऊपर चलती है। टायर टयूब के ऊपर चलता है। ट्यूब एक पतला सा थैला मात्र होता है उसकी सुरक्षा के लिए एक मोटा टायर उसके ऊपर रहता है। इसी टयूब मे हवा भरी जाती है जो वाहन का चलन मे सहायक होती है। हवा के निकल जाने पर जहा एक ओर टायर टयूब निरर्थक हो जाते हैं वहा वह वाहन भी जहा का तहा खडा हो जाता है। यही स्थिति हमारे शरीर रूपी वाहन की है। इसकी प्राणशक्ति ही इसके सारे कार्य कलाप के लिए उत्तरदायी होती है। मस्तिष्क जो आदेश देता है तो प्राण शरीर की चेष्टा है प्राण जिधर जाते हैं मन उधर जाता है जिधर मन जाता है—इन्द्रिया भी उधर ही चल देती है। तो प्रश्न यह उपस्थित होता है कि पहले प्राण को ही अपने नियन्त्रण मे कर लिया जाये। प्राणायाम से अन्दर के श्वास को बाहर एव बाहर के श्वास को अन्दर रोकने का अभ्यास ही तो हम करते हैं। व्यायाम से शरीर मे अतिरिक्त भण्डारित बसा आदि को शारीरिक श्रम करके व्यय कर देते है वही प्राणायाम के अभ्यास से शरीर मे प्राण शक्ति का सचार करते है। मार्जन मन्त्रो के केन्द्र बिन्दु-सार शब्दो की पुनरावृत्ति प्राणायाम के समय की जाती है। स्थूल शरीर के लिए विस्तृत स्थूल मन्त्र हैं उससे सूक्ष्म प्राणमय कोष के लिए सूक्ष्म मन्त्र ही चाहिए जिससे हमारा ध्यान शनै शनै स्थूल से सूक्ष्म पर होता चला जाए और अत मे सबसे हटकर प्रभु पर केन्द्रित हो जाए। आइए प्राणायाम मन्त्र देखे—

ओ३म भू । ओ भुव । ओ स्व । ओ मह । ओ जन । ओ तप । ओ सत्यम।

इस मन्त्र और इसके अवयवो का अर्थ पिछले अध्याय मे कर दिया गया है। यहा पर तो इनके प्रयोग की बात है। जैसे जैसे हम प्राण वायु का आहरण प्राणेन्द्रिय के द्वारा अपने भीतर करे अथवा भीतर से बाहर निष्कासन करे वैसे वैसे इस मन्त्र के अवयवो का जाप करते हुए परमात्मा की उन्ही शक्तियो या गुणो पर ध्यान लगाए। यहा प्रयुक्त एक एक शब्द के ध्यान मात्र से परमात्मा के उससे सम्बन्धित गुण या कार्य कलाप का स्मरण हो आए और वही शक्ति हम स्वय मे अर्जित कर सके—यहा तो इसका प्रयोजन है जैसे ओ३म शब्द मात्र से परमात्मा के सृजन पालन एव सहार सम्बन्धी सभी गुणो एव स्वभावो का चित्र हमारे सामने खिच जाता है वैसे भू से ईश्वर की सत्ता का भुव से उसकी चेतना का स्व से प्रभु के आनन्द गुण का मह से उसकी महानता का जन से प्रभु की जनकता का तप से प्रभु की उद्यम शीलता का और सत्य से प्रभु की यथार्थता का पता चलता है। इनमे से तीन महाव्याहृतिया है—शेष सभी व्याहृतिया हैं। मन्त्र से अविच्छेद से बनता है वि+आ+हृ+ति अर्थात विशिष्ट रूपेण सभी ओर से स्थिति का हरण करके कही एकत्र कर दे—यह कार्य कौन करता है कोई शब्द या बात। प्रभु के गुणो का इन शब्दो के चिन्तन द्वारा हमारे मन मे प्रभु की धारणा बन जाती है मार्जन प्रक्रिया मे हमने इन शब्दो के साथ क्रमश सिर नेत्र कण्ठ हृदय नाभि पग एव पुन सिर का जोडा था। यहा भी यदि हम एक एक अग पर इन शब्दो का ध्यान जाय और विचार करे कि इन अगो के कार्यो से प्रभु के दर्शन होने लगते है कोई भव्य भवन हम देखते हैं तो भवन को देखने मात्र मे उस भवन के पीछे छिपे मार्ग निर्माण को हम जानना चाहते है। प्राचीन काल के विशाल मन्दिर किले मीनारे ताजमहल आदि जब हम देखने जाते हैं तो देखने मात्र मे सन्तोष नही हो जाता है हम यह भी जानना चाहते हैं कि इनका निर्माता कौन है। यह अग प्रत्यग भी इसी प्रकार इसके निर्माता की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। एक बार नेत्र कष्ट के निदान के लिए नेत्र चिकित्सक ने कहा कि मुझे नेत्र रक्त का परीक्षण कराइये। बडे घबडाते हुए मैं नमूने लेकर परीक्षक के पास गया। जिस समय परीक्षक से हमे वह परिणाम प्राप्त हुआ—और उसमे कोई दोष नही निकला तो मेरे मन ने सबसे पहले अपने पिता का स्मरण किया उनका आभार माना उन्हे नतमस्तक हुआ। मैंने विचार किया कि हमारी इस देह की यह जो आरोग्यता है—वह हम अपने पिता से ही मिली है क्योकि वे अति सयमी और स्वस्थ रहे अन्यथा हमने तो इसकी दीवालो को उत्थान के स्थान पर गिराने का ही काम किया है। इस प्रकार इन सभी अग अग पर आविष्ट इस एक-एक शब्द मे प्रभु एव उसकी परम प्रभुता का ध्यान हो जाता है।

प्राणायाम से ब्रह्माण्ड के सप्त लोको की शक्तिया को भक्त अपने अन्दर लाने का प्रयत्न करता है। ब्रह्माण्ड के तीन प्रमुख लोक भू भुव-स्व अर्थात पृथ्वी अन्तरिक्ष एव द्यौ लोक हैं इन तीनो का उप विभाजन करने के बाद इन लोको की सख्या सात हो जाती है। भू के दो लोक बन जाते हैं (१ भूरग्नये स्वाहा (२) भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। ३ भुववायिवे स्वाहा ४ भुववायिवेऽपानाय स्वाहा (५ स्वरादित्या व्यानाय स्वाहा ६ स्वारा दित्याय व्यानाय स्वाहा हो जाते है। इस प्रकार यह छ लोक हो गये और सातवा लोक सत्यम है। यदि मोटे तौर से विचार किया जाए तो पता चलता है कि भू लोक पृथ्वी से हमे १-अग्नि २ प्राण भुव लोक अन्तरिक्ष से हमे ३ वायु विद्युत ४-अपान स्व लोक द्यौ से हमे ५-आदित्य ६-ज्ञान तथा सर्वोच्च सत्य लोक से हमे सत्य रूपी शक्ति प्राप्त होती है।

प्रत्येक काम के बाद हम शान्ति पाठ करते है। इसमे भी सात लोक स्पष्ट दिखाई देते है १ द्यौ २ अन्तरिक्ष ३ पृथ्वी ४ आप ५ ओषधि ६-वनस्पति ७ विश्वेदेवा इन सभी लोको को महाव्याहृतिया मे जोड देने पर प्रसग अधिक मुखर हो उठता है —१-स्व २ भुव ३ भू ४-मह ५-जन ६-तप ७-सत्यम जो परमपिता के विशिष्ट गुण है जिनका ध्यान कर हम इन शक्तियो का आह्वान करते हैं। ऊपर व्यक्त ब्रह्माण्ड के सात लोको के सूक्ष्माश प्रतीक रूप मे हमारे इस देह रूपी पिण्ड मे भी बैठे हुए हैं जिनका वर्णन मार्जन मन्त्रो मे किया गया है स्व—कण्ठ भुव —नेत्र भू सिर मह—हृदय जन—नाभि तप—पैर तथा सत्यम—पुन सिर या सर्वाग देह। ब्रह्माण्ड के इन्ही लोको की शक्ति प्राणायाम के द्वारा ध्यानपूर्वक खीचकर हम अपने पिण्ड के इन्ही लोको मे भर लेना चाहते है। आशय यह है कि ब्रह्माण्ड की परमशक्ति से अपने पिण्ड की अल्प शक्ति को परिवेष्टित करना चाहते हैं जैसे कोई बैटरी चार्ज की जाती है। पिण्ड की शक्तिया या ब्रह्माण्ड की शक्तिया देखने मे पृथक पृथक लगती हैं उनके कार्य भी भिन्न लगते है किन्तु वे सभी शक्तिया परम प्रभु की महा शक्ति से ही सचालित होती है। उपनिषद की वह कथा इस सम्बन्ध मे अच्छा प्रकाश डालती है जिसमे कहा गया है कि देवासुर सग्राम मे देवताओ के विजयी हो जाने पर उन्हे घमण्ड हो गया। ब्रह्मा ने उन्हे शिक्षा देने के लिए बुलाया। देवता लोग अग्नि देवता को आगे कर ब्रह्मा जी के पास पहुचे उन्होने एक तिनका दिया और अग्नि से कहा कि इसे जलाओ उसने जलाने का पूर्ण प्रयास किया किन्तु वह जला नही पाये। ब्रह्मा ने वायुदेव से कहा आप इस तिनके को उडाओ। उन्होने भी पूरा जोर लगा दिया किन्तु वह तिनका टस से मस नही हुआ। सभी देवताओ की गर्दन नीची हो गई तब ब्रह्मा जी ने कहा कि आप लोग जिस शक्ति से कार्य करते हैं वह आपकी नही ब्रह्म की है।

क्रमश

वेदभाष्य और पाश्चात्य विद्वान (३)

सत्यप्रकाश गुप्त, रुड़की

चूंकि इन भाष्यकारों का उद्देश्य व मानसिकता वेद के गूढ़ रहस्यों को जानना कभी नहीं रहो अपितु भारत में ईसाईयत का प्रचार, भारतीयों के मन मे वेदों के प्रति अनास्था भाव उत्पन्न करना था, अतः उन्होंने वेदों को दिव्य ज्ञान एव विविध विद्याओं का भण्डार न मानकर केवल ऐतिहासिक संग्रह के दृष्टिकोण से वेदों मे आर्यों का इतिहास ही सिद्ध करने का प्रयास किया, जब कि वेदों का मानवीय इतिहास से कुछ लेना देना नही। वेदों में जो नाम आते हैं वे सब अलंकारिक है तथा प्राकृतिक व आकाशीय चमत्कारिक पदार्थों के लिए उनके गुणों के आधार प्रयुक्त किये गये हैं। बाद में ऋषियों,राजाओं ने वेद से उन शब्दों को लेकर नगरों, पर्वतो, नदियो, स्थानों एव स्वय अपने नाम रखे, जिनके आधार पर पाश्चात्य विद्वान वेदों मे इतिहाम सिद्ध करने का दुस्साहस करते हैं। अब तो भारतीय विद्वान भी अंग्रेजी भाष्य, अंग्रेजी पुस्तको के आधार पर उसी लीक मे अपनी गाडी चलाने लगे हैं।

वेदों का भाष्य वेद की अन्तः निहित भावना व साक्षी के आधार पर किया जाना अपेक्षित है, जिसके लिए वैदिक कोश व वैदिक व्याकरण के आधार पर ऋषि, देवता, छन्द, स्वर, प्रकरण तथा मन्त्र विनियोग का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। स्वयं वेद शब्द जिस धातु से बना है उमके चार अर्थ होते हैं—विद् ज्ञाने, विद् विचारे, विद् सत्तायाम, विद्लृ लाभे। इस प्रकार कौन सा शब्द कहा किम भाव व किम प्रकरण में प्रयुक्त हुआ है, का ज्ञान आवश्यक है ताकि तदनुरूप उस शब्द का वही अर्थ तत्सम्बन्धित स्थान पर किया जाये।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिख कर वेद भाष्य की प्राचीन आर्ष प्रणाली, प्रक्रिया एवं परम्परा की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया।

इस प्रकार जब ब्रिटिश सरकार व पादरियो ने भारतीय संस्कृति व सभ्यता पर मिलकर चहुं ओर से घात लगाना आरम्भ कर दिया तो उनके विद्वान किम रूप से वेदों के माथ न्याय कर सकते थे। १८७६ में गवर्नर लार्ड री ने प्रिंस आफ वेल्स के सामने पादरियों के मम्बन्ध मे कहा था "जितना काम आपके सिपाही, जज, गवर्नर और दूमरे अफसर कर रहे है, उससे अधिक ये पादरी लोग कर रहे हैं।" मिस्टर मोंगल्स ने तो ब्रिटिश पार्लियामेंट में यहां तक कहा था कि "विधाता ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंगलैण्ड के हाथो मे इसलिए सौंपा है कि ईसा ममीह का झण्डा इस देश के एक कोने से दूसरे कोने तक लहराये प्रत्येक ईसाई का कर्त्तव्य है कि समस्त भारतीयो को अविलम्ब ईसाई बनाने के महान् कार्य मे पूरी शक्ति के माथ जुट जाये।" १८५९ में इग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री लार्ड पामर्स्टन ने घोषणा की थी कि "यह हमारा कर्त्तव्य ही नहीं अपितु हमारा अपना हित इसी में है कि भारत भर मे ईसाईयत का प्रचार हो।"

अस्तु। यह तो चर्चा हुई उन शासकों, पादरियो व वेद भाष्यकारों की जिनका उद्देश्य ही केवल एक था, किन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी वेदो की नित्यता, अपौरुषेयता स्वयं सिद्ध है। वेद सर्वोपरि है, मानवमात्र के लिए समस्त आवश्यक ज्ञान वेदों में निहित है। जिन्होने इस सत्यता को परखा है उनमें से कुछ की यथार्थता नीचे दी जाती है।

दयानन्द की इम धारणा मे कि वेद मे धर्म और विज्ञान दोनों सच्चाइयां पाई जाती है, कोई उपहास्यास्पद या कल्पना मूलक बात नहीं है। इसके माथ में अपनी भी धारणा जोड़ना चाहता हूं कि वेदों मे विज्ञान की वे भी सच्चाईया हैं जिन्हें आधुनिक विज्ञान अभी तक नहीं जान पाया है। ऐसी अवस्था में स्वामी दयानन्द ने वैदिक विज्ञान की गम्भीरता के सम्बन्ध में अतिशयोक्ति से नहीं न्यूनोक्ति से काम लिया है।"

—योगीराज अरविन्द

"वेदों में भौतिकी और रसायन शास्त्र के तत्व स्पष्टतया पाये जाते हैं।" इनके अनुमार वेद शुद्ध वैज्ञानिक ग्रन्थ है।

—श्री पन्यम नारायण गौड

यह (भारत) उन वेदों की भूमि है जो अनुभूत ग्रन्थ है, जिनमें न केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी धार्मिक सिद्धान्तों का समावेश है, अपितु उन तथ्यों का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हें विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है। बिजली, रेडियम, इलेक्ट्रान, वायुयान आदि सभी कुछ वेदों के दृष्टा ऋषियों को ज्ञात प्रतीत होता है।"

—श्रीमती व्हीलर बिलौक्स

'वेद सम्पूर्ण ज्ञान का आदि स्रोत, ईश्वरीय प्रेरणा का मुख्य आधार, यहां तक कि दिव्य बुद्धि तथा नित्य सत्य का भण्डार है। इन्होंने वेदों मे भूगर्भ विद्या का मूल बताया है। वेदो मे बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनका अभी तक किसी को ज्ञान नहीं। वे उस साहित्यिक धन की अक्षय खान है जो अभी तक अज्ञात पड़ा है।

—नारायण भवानी राव पावगी

हमारा आजकल का नाडी सस्थान की रचना-सम्बन्धी ज्ञान ऋग्वेद के जगत् सम्बन्धी वर्णन से इतना मेल खाता है कि मन में यह प्रश्न उठता है कि वेद वास्तव में धर्म ग्रन्थ हैं या वे शरीर विज्ञान या नाड़ी सस्थान की रचना विषयक ग्रन्थ हैं जिन्हें पूरी तरह जाने बिना मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक विचारों को ठीक-ठीक नहीं समझा जा सकता।

—डा० वी० जो० रैले

वैदिक धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म और विज्ञान दोनों हाथ में हाथडालकर चलते है। यहां धार्मिक सिद्धान्त विज्ञान और दर्शन पर आधारित है।

—डब्ल्यू०डी० ब्राउन

आश्चर्य जनक तथ्य है कि एकमात्र हिन्दुओं का ईश्वरीय ज्ञान वेद हो है जिसके सिद्धान्त आधुनिक विज्ञान की मान्यताओं के अनुरूप है। —लुई जंकालियट

आभार प्रदर्शन—लेखक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, सुश्री डा० विमला, डा० रामनाथ वेदालकार, प० रघुनन्दन शर्मा एव आचार्य डा० श्रीराम आर्य का, जिनकी पुस्तकों से इस लेख लेखन में सहायता ली, हार्दिक आभारी है।

मृत्यु और आत्मघात

श्री पूर्णचन्द्र उपाध्याय

सम्प्रति समाचार-पत्रों के पढ़ने से पता चलता है कि जरा जरा से कारणों पर मनुष्य खुदकुशी करने के लिए अथवा अपनी जान देने के लिए तयार हो जाते हैं। प्रेम में निराशा होने पर कारोबार में घाटा होने पर और परीक्षा में फेल होने पर अनेक नवयुवक मरने के लिए उद्यत होजाते है। साधारणतया यह देखा जाता है कि जान सबसे प्यारी है परन्तु जब जान दुःखमय हो जाती है तो मौत जिससे सदव सबको डर लगता है जान से भी ज्यादा प्यारी हो जाती है। आत्मघात की प्रवत्ति मनोविज्ञान की दृष्टि से एक पहेली है। इसके अन्दर एक बडा भ्रम काम करता पाया जाता है यदि मनुष्य को यह निश्चित ज्ञान हो कि वह अपने कर्मों के फल से बच नहीं सकता उनको वे फल अवश्य भोगने होंगे इस जन्म में भोगे चाहे अगले जन्म में—तो वह कभी आत्मघात करने की भूल नहीं कर सकता। जिन जातियों और देशों में आवागमन के सिद्धान्त पर विश्वास है जो जीव को अमर समझते हैं और इस शरीर को जीवात्मा के लिए केवल कर्म करने का साधन मानते हैं वे कभी खुदकशी करने का विचार भी नहीं कर सकते पश्चिमी देशों में भारतवर्ष की अपेक्षा आत्मघात की प्रथा बहुत प्रचलित है। उन देशों में मनुष्य बहुत कुछ पढ़ लिख होने पर भी न आत्मा के स्वभाव को समझते हैं और न मृत्यु के रहस्य को इसीलिए वे अपने आपको मार डालने को अति शीघ्र उतावले हो जाते हैं। इसी प्रकार की मनोवृत्ति का परिणाम पशुओं को जो अत्यन्त रोगी या व्यथित होने की दशा में मार डालने की प्रथा है। अंग्रेजों में यह बहुधा देखा गया है कि यदि उनका प्यारा घोड़ा या कुत्ता रोग से बेचैन या व्याकुल हो तो वे उस पर दया करके उसको जहर देकर उसका जीवन समाप्त कर देते हैं। वे उसको अपनी दृष्टि में कष्ट से छुड़ा देते हैं बाह्य दृष्टि से वह ठीक ही प्रतीत होता है परन्तु इसकी तह में भी वही भूल है जो आत्मघात की वृत्ति में है। मेरी एक समय एक यूरोपीयन अफसर से जो इण्डियन सिविल सर्विस में थे और कुछ समय के लिए जेल के बड़े अफसर भी रहे बातचीत हुई। वह अपनी जाति की दया की और पशुओं से प्रेम की प्रशंसा करते हुए बोले कि भयंकर रोग की दशा में पशु को तड़पन से बचाने के लिए मार देना ही अच्छा है मैंने उनसे बड़ी सरलता से प्रश्न किया कि यदि कोई मनुष्य सरसाम की दशा में हो या रोग से अति बेचैन हो आप उस पर दया करके कोई उसे मार दे तो क्या आप उसको अपराधी नहीं ठहरायेगे वह इस प्रश्न को सुनकर चुप हो गये।

मनुष्य दूसरे मनुष्य को अपना समझता है इसीलिए उसे नहीं मारता। मनुष्यों में और पशुओं में आत्मा व पुनर्जन्म का सम्बन्ध न मानने से मनुष्य पशुओं को आत्मवत नहीं देखते और इसलिए उसके साथ मनमाना व्यवहार करने को तयार हो जाते हैं। यदि आज संसार में मृत्यु की उपयोगिता का और मृत्यु के सच्चे स्वरूप का ज्ञान हो जाए तो न आत्मघात की प्रथा प्रचलित रहे और न पशुओं पर झूठी दया दिखाने का

जीवात्मा और शरीर का सम्बन्ध

हम इस सम्बन्ध का पीछे कई प्रकरणों के सिलसिले में वर्णन कर चुके हैं। यहां केवल यह लिखना पर्याप्त है कि शरीर जीवात्मा के लिए रहने को मकान के समान है। प्राकृतिक होने से यह जीर्ण शीर्ण होता रहता है और एक नियत अवधि पर आकर जीवात्मा के लिए त्याज्य हो जाता है। इसे पुराने घर की तरह जीवात्मा खाली कर देता है पुराने कपड़े की तरह उतारकर फेंक देता है। प्राकृतिक होने से शरीर मारा जा सकता है गलाया और जलाया जा सकता है परन्तु आत्मा अनादि अविनाशी और अमर है। यदि मनुष्य को अपना और शरीर का सम्बन्ध ठीक ठीक ज्ञात हो तो वह बहुत बड़े दुःख से बच सकता है और जन्म मरण के चक्कर से मुक्त हो सकता है। उसको शरीर छोड़ने से इतनी भी तकलीफ नहीं होगी जितनी कि सांप को कैंचली उतार देने में या पके फल के पेड़ से गिर जाने में सम्भव है

मृत्यु और क्रियात्मक जीवन

मृत्यु का स्वरूप समझ लेने से और इस विश्वास से कि मरने के पश्चात जीवात्मा को पुनः-पुनः कर्म करने का अवसर मिलेगा मनुष्य के सदाचार और क्रियात्मक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

१) मृत्यु के स्वरूप समझ लेने से मौत का डर जाता रहता है और जिनको यह विश्वास है कि जीव अमर है और यह शरीर पुराने मकान या कपड़े की भांति छोड़ देने योग्य है वे मरने से न डरते हुए बड़से बड़े बहादुरी के काम करने के लिए तयार रहते है। कायरता उनके पास तक नहीं आती। प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो जातियां जीवात्मा के अमर होने में और आवागमन के सिद्धान्त में विश्वास रखती थी यह बहुत वीर थी। Seaso says abou Gaul They werde brave because they w re ot afra d of d a h सीजर ने गौल जाति के विषय में लिखा है कि वह जाति इस कारण से वीर थी क्योंकि वह मौत से नहीं डरती थी।

हमे मृत्यु के स्वरूप का ज्ञान आशावादी बनाता है।

३) हमे कर्म करने में सचेत और सदाचार में तत्पर बनाता है क्योंकि कर्मफल भोगने का विचार हमारे सामने रहता है।

(४) हमे मृत्यु का स्वरूप सच्चे साम्यवाद की शिक्षा देता है। मरने में राजा रंक गरीब अमीर सब बराबर है।

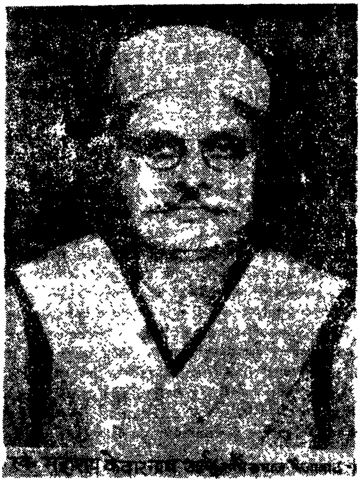
५ मृत्यु से हमारा प्राणिमात्र से सम्बन्ध निश्चित हो जाता है। यह धारणा दृढ़ हो जाती है कि हमारी सी ही आत्मा सारे प्राणी जगत के शरीरों में निवास करती है। इस प्रकार सार्वजनिक प्रेम का विस्तार इससे होता है। आत्मवत सर्वभूतेषु वाली बात चरितार्थ होती है।

६ मृत्यु का स्वरूप समझ लेने से हमे इस संसार के बड़ से बड़ दुःख भी भयभीत नहीं कर सकते।

७) मृत्यु का स्वरूप जान लेने से हमारे अन्दर से हिंसा के भाव निकल जाते हैं।

८ मृत्यु की पहेली सुलझ जाने से आत्मघात की प्रथा जाती रहती है।

महाशय केदारनाथ जी आर्य फैजाबाद के जीवन की एक झलक



महाशय केदारनाथ जी का जन्म फैजाबाद में एक स्वर्णकार वंश में हुआ था। इनका प्रारम्भिक जीवन बड़ा ही साधारण जीवन था। शिक्षा-दीक्षा अधिक नही हो पाई थी। सन् १९१४ ई० में फैजाबाद के अन्तर्गत मदरसा कस्बे में आर्य समाज और सनातन धर्मियो में एक शास्त्रार्थ हुआ और वाद-विवाद लगभग ३ दिनों तक चलता रहा। महाशय जी वहां दर्शक के रूप में गये थे। वहां पर सनातन (पौराणिक) धर्म की पोल तथा आर्य समाज की सत्यता का आपको आभास हुआ। वहां से लौटने पर आप आर्य समाज के क्षेत्र मे प्रविष्ट हुये और आर्य समाज फैजाबाद के सदस्य बन गये। यहीं से आपका सार्वजनिक जीवन भी आरम्भ हो गया।

'टेम्परेन्श सोसायटी' के संगठनकर्त्ता प्रयाग निवासी प० देवीदत्त जी के सम्पर्क मे आकर "मादक वस्तुओं का निषेध आर्य समाज के कार्यक्रम का एक अग है," यह समझकर महाशय केदारनाथजी उक्त संस्था के भी सदस्य बन गये और नक्शों, चित्रों आदि द्वारा मादक वस्तुओं के निषेध का प्रचार करने लगे।

सन् १९१४ से १९१९ तक महायुद्ध के पश्चात् सरकार के रोलेट ऐक्ट द्वारा भारत के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार तथा तत्कालीन राजनैतिक समस्याओं ने आपका ध्यान सन् १९१९ में कांग्रेस की ओर आकर्षित किया। फैजाबाद जिले के अन्तर्गत मौजा बसलारी में पुलीस के अत्याचारों के विरुद्ध एक बृहद् किसान आन्दोलन का आपने नेतृत्व किया और आपको २ वर्ष की जेल तथा ५००) जुर्माने की सजा भोगनी पड़ी। जेलयात्रा के अनन्तर १९२२ ई० में मालाबार में मोपलों द्वारा हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार होने के कारण जब स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपत राय जी तथा पं० मदनमोहन मालवीय आदि व्यक्तियों ने हिन्दू महासभा को जन्म दिया और उसका अधिवेशन लखनऊ में हुआ, तो महाशय जी भी उस सम्मेलन में सम्मिलित हुये और वहां से लौटकर फैजाबाद में आपने हिन्दु महासभा की स्थापना की। सन् १९२५ ई० में फैजाबाद में रामलीला के जुलूस के सम्बन्ध मे सरकार द्वारा लगाये प्रतिबन्धो के विरुद्ध कार्य करने के कारण आपको एक वर्ष के लिये जमानत व मुचलका देना पड़ा। सन् १९३०-३१ मे जिस समय सत्याग्रहसंग्राम प्रारम्भ हुआ, तब आपको इसमें भाग लेने के कारण चार वर्ष की सजा हुई, परन्तु गांधी अरविन्द सन्धि के अनन्तर छोड़ दिये गये। सन् १९३५ ई० मे अयोध्या के हिन्दू मुस्लिम संघर्ष के सम्बन्ध में हिन्दू नेता के नाम मे आपको पांच हजार रुपये की जमानत देना पड़ी सन् १९३८ ई० मे गोरखपुर में बाबा गोरखनाथ के मन्दिर और मुसलमानों में झगड़े के सम्बन्ध में भाषण देने के कारण विद्रोहात्मक भाषण का दोष लगाकर सरकार ने आपको एक वर्ष की जेल की सजा दी। वहां से छूटने के अनन्तर सन् १९४० ई० में भारत रक्षा विधान की १२९ धारा के अनुसार महाशय जी को फिर जेल यात्रा करनी पड़ी। जीवन भर मे भिन्न-भिन्न कारणों से आप कुल नौ बार जेल गये। एक बार आपने अपने एक भाषण मे कहा भी था कि "केदारनाथ या तो जेल में ही रहता है या फिर रेल मे।"

महाशय जी यद्यपि आर्य समाज, कांग्रेस तथा हिन्दू सभा आदि भिन्न-भिन्न संस्थाओं मे समय की गति तथा आवश्यकता के अनुसार कार्य करते रहे तथापि प्रगाढ़ प्रेम के कारण आपका सम्बन्ध आर्य समाज से अटूट रहा, क्योंकि महाशय जी के जीवन निर्माण का श्रेय आर्य समाज को ही था। सन् १९२९ मे आर्यसमाज फैजाबाद ने विधवाओं की समुचित व्यवस्था के लिये विधवाश्रम की स्थापना की। महाशय केदारनाथ जी ने इस क्षेत्र में बड़े ही उत्साह से सहयोग दिया। विशेषकर मुसलमानों के चंगुल से हिन्दू स्त्रियों को छुड़ाने मे आपकी निपुणता के कारण कभी-कभी अन्य स्थानों को भी इस कार्य के लिये आपके ही कौशल का सहारा लेना पड़ता था। आर्य समाज के प्रचार कार्य मे आपका सहयोग तथा उत्साह प्रशंसनीय रहा। अयोध्या की अन्धविश्वासपूर्ण सामाजिक व्यवस्था तथा धार्मिक अन्धकारमय वातावरण का निराकरण आपके जीवन का मुख्य लक्ष्य था, इसके लिये अयोध्या में १९०७ से १९३० तक आपने तीन बार वहां आर्य समाज की स्थापना की, किन्तु उन्हे इसमें सफलता न मिली। सन् १९२५ ई० में स्वामी त्यागानन्द जी ने जब गुरुकुल अयोध्या की स्थापना की, तब इसके प्रति आपका आकर्षण तथा सहयोग विशेष रूप से हुआ। गुरुकुल की प्रारम्भिक उन्नति तथा विकास में आपका प्रयत्न सराहनीय ही नही प्रत्युत् चिरस्मरणीय रहेगा।

महाशय केदारनाथ जी का जीवन किसी संस्था के एकाधिकार की वस्तु नही थी, किन्तु उनका जीवन सार्वजनिक रहा। वास्तव में आप एक विचित्र कर्मशील व्यक्ति थे। जब जहां अपनी सेवाओं को अर्पण करने का अवसर देखते, वही आप अग्रसर हो जाते। चाहे वह आर्य समाज का क्षेत्र हो, चाहे हिन्दुओं के अधिकारों की रक्षा का प्रश्न हो अथवा देश व कांग्रेस की पुकार हो। अधिकार लिप्सा अथवा पदलोभ आपको कभी न रहा। महाशय जी बड़े ही वाक् निर्भीक थे वे 'सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम्' के प्रथम पद को मानते हुए दूसरे पद को भी मानने को तैयार नही थे। वो कहते थे "सत्य ब्रूयात् प्रिय वा अप्रिय वा" स्पष्ट सत्य कहने मे कथन की प्रियता अथवा अप्रियता की चिन्ता उनको बाधित नही करती थी। अयोध्या मे रामजन्मभूमि और

(शेष पृष्ठ १० पर)

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारो व पर्वो से सम्बन्धित रचनाए कृपया अक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाज ! आर्य शिक्षण संस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

सभी रचनाए अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—अस्पष्ट लिखी अथवा देर से प्राप्त सामग्री का उपयोग करना सम्भव न हो सकेगा।

—पुस्तक समीक्षा हेतु पुस्तक की दो प्रतिया सभा कार्यालय मे भेजना अनिवार्य है। —सम्पादक

आर्य समाज भरुच का स्थापना शताब्दी महोत्सव सम्पन्न

भरुच मे आर्यसमाज की स्थापना दिनाक १२ ६ १८९२ के दिन हुई थी। अत दिनाक १० जून से १५ जून १९९२ तक स्थापना शताब्दी महोत्सव बडी धूमधाम से सफलतापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वानो के विभिन्न स्थानो पर कई वेद प्रवचन हुये। गुजरात के दो विद्वान श्री वेदमित्र जी ठाकोर एव श्री महेन्द्रनाथ जी वेदालकार का भरुच आर्य-समाज की ओर से सम्मान किया गया। इस समारोह मे ग्रन्थो का एक आकर्षक प्रदर्शन भी रखा गया था। दर्शको ने इस प्रदर्शन का बडी ही उत्सुकता से लाभ उठाया। गुजरात के समाचार-पत्रो म भी इस प्रदर्शन के बारे मे समाचार छपते रहे। गुजरात के विभिन्न प्रदेशो से पधारे हुए आर्यो ने इस महोत्सव मे उपस्थित रहकर ऋषि दयानन्द के मिशन के प्रति अपनी कटिबद्धता का परिचय दिया।

—भावेश मेरजा प्रधान
आर्य समाज भरुच

आकाशवाणी से हिन्दी वार्ता

हर्ष का विषय है कि आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री आचार्य दयानन्द जी शास्त्री एम०ए० प्राध्यापक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार की एक हिन्दी वार्ता आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से देववाणी कार्यक्रम के अन्तर्गत 'सस्कृत साहित्य मे शरद वर्णन' इस विषय पर आठ जुलाई को प्रात ७ २५ पर प्रसारित होगी।

इससे पूर्व भी आचार्य श्री की कई हिन्दी वार्तायें प्रसारित हो चुकी है अत आप बधाई के पात्र है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

शिविर सम्पन्न

११ ४ ९२ से १५-४-९२ तक आर्य वीरो का एक शिविर गाव गोगडीपुर मे लगाया गया। जिसमे ४० आर्य वीरो ने भाग लिया। आर्य वीर दल के मण्डलपति श्री जे० सी० मलोक मण्डलमन्त्री भोपालसिंह आर्य एव करनाल नगर की आर्य समाजो के अधिकारी निरन्तर वहा पहुंचते रहें। गाव के सरपच एव आर्य समाज गोगडीपुर के पदाधिकारियो ने पूरा प्रबन्ध कर सहयोग दिया। स्वामी गौरक्षानन्द जी ने न केवल चार दिन तक शिविर मे बौधिक प्रदान कर युवको का उत्साह बढाया अपितु सत्यार्थ प्रकाश एव गोकरुणानिधि आदि साहित्य का नि शुल्क वितरण भी किया। शिविर से न केवल अधिकारी वर्ग प्रसन्न हुए अपितु जन साधारण ने भी आर्य वीर दल से एक मास तक और शिक्षक गाव मे रखवाया तथा तीन आर्यवीरो को प्रशिक्षण करने हेतु पानीपत तथा कैथल मे उपशिक्षण शिविर मे भी भेजा। सारे गाव मे स्थान २ पर आर्य समाज एव स्वामी दयानन्द जी की सूक्तिया लिखवाई गई। पूरा गाव एक गुरुकुल सा लगता था। आर्यसमाज मन्दिर के नवनिर्माण का सकल्प भी लिया।

मण्डलपति,
आर्य वीर दल करनाल

महाशय केदारनाथ जी

(पृष्ठ ८ का शेष)

बाबरी मस्जिद का प्रकरण जो इस समय एक विश्वव्यापी चर्चा का विषय बना हुआ है और जिसके समाधान करने मे शासन प्रशासन तथा न्यायालय कतराते से दिखाई पड रहे हैं इस प्रकरण के श्री गणेश का श्रेय भी हमारे महाशय केदारनाथ जी को ही है। तथाकथित मस्जिद मे भगवान राम की मूर्ति का प्रकट कराया जाना महाशय जी के चमत्कारिक विलक्षण प्रतिभा का द्योतक है।

दिसम्बर १९४९ मे आधी रात के समय तथाकथित मस्जिद मे राम की मूर्ति प्रकट हुई और प्रात सारे नगर और जनपद मे यह प्रचार धूमधाम से होने लगा कि श्री रामलला तथाकथित बाबरी मस्जिद मे प्रकट हो गये और दर्शनार्थ जनता उमड पडी। तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री गोविन्दवल्लभ पन्त ने कहा था कि क्या महाशय जी अब भारत मे अल्पसंख्यको को भार नही रहने देंगे तो उन्होने बडी निर्भीकता से कहा था श्रीमान् प० जी यदि हम किसी समय दुबल रहे हों और हमारी ही लाठी लेकर हमारी भैंसो को कोई छीन ले गया हो और जब हम सशक्त हो तो उस अपहरणकर्ता से अपनी भैंसो को वापस लेना अनुचित है। पन्त जी से कोई जवाब न बन पडा और मामले को टाल गये। इस प्रकार से जब कभी हिन्दुओं के ऊपर मुसलमानो द्वारा कोई भी अत्याचार हुआ वह प्राण की बाजी लगाकर जुट जाते। उनकी धर्मपत्नी भी एक त्याग और तपस्या की मूर्ति थी और महाशय जी के इस कार्य मे पूर्ण सहयोग देती रहीं।

हमारा महान् क्रान्तिकारी आर्य नेता मई सन् १९९७ मे इस संसार से चल बसा। जाति देश और समाज के लिये उनकी सेवायें अब भी स्मरण की जाती है और भविष्य मे भी चिरस्मरणीय रहेगी।

माताप्रसाद त्रिपाठी
प्रधान
आर्यसमाज फर्रुखाबाद

स्वामी तत्वबोधानन्द जी द्वारा वेद प्रचार

दिनाक २४ ५ ९२ को अयोध्या गुरुकुल के कुलपति महान सन्यासी स्वामी तत्वबोधानन्द सरस्वती आर्यमगढ की पावन धरती पर पधारे।

स्वामी जी ने आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन मे आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्देशित वैदिक शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए अत्यन्त उपयोगी बताया तथा आधुनिक भारत के नवनिर्माण के लिए युवको को वैदिक शिक्षा को ग्रहण करने के लिए आह्वान किया।

अन्त मे आर्य समाज के प्रधान व आर्य विद्या सभा के अध्यक्ष ने सभा को सम्बोधित किया।

—राजीव कुमार आर्य मन्त्री
आर्य समाज आर्यमगढ

वैदिक विवाह सम्पन्न

दिनाक ५ मई १९९२ को ग्राम आकोडा जनपद नागौर राजस्थान मे प्रोफसर दुर्गेश चौधरी उपप्रधान आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर ६ के अनुज चि० रघुवीरसिंह का शुभ विवाह कु० मधुबाला सुपौत्री श्री नारायणराम बिडियासर ग्राम सोमणा जनपद नागौर मे आचार्य शिरोमणि प० विश्वमित्र मेधावी कुलपति गुरुकुल सिराथ प्रयाग के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

—सत्यनारायण मन्त्री
आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर

पाकिस्तान उच्चायोग पर विशाल प्रदर्शन

अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभ की ओर से पाकिस्तान उच्चा योग र विशाल प्रदशन श्री राजेश मित्तल के साथ किए गए दुर्व्यवहार के विरोध म अग्रवाल महासभ के अध्यक्ष श्री एम एम अग्रवाल व महामन्त्री श्री बशेशर नाथ गोटे वाल की अगवाही मे हजारा कायकर्ताओ द्वारा विशाल प्रद शन किया गया। प्रदशनकारी इस अत्याचार के विरोध मे तरह-तरह के बैनर लिए हुए थे।

श्री एम एम अग्रवाल व श्री बशेशर नाथ गोटे वाले के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मण्डल पाक उच्चायोग जाकर अपना मरोरडम पाक राजदूत को पश किया। प्रदशनकारिया ने दिल्ली की प्रमुख सडको पर भी नारे बाजी की।

महामन्त्री

महिलाओ ने शराब का ठेका हटवाया

पचायत पिरथी जिला यमुनानगर के ठके को बन्द करने हेतु ग्राम की महिलाआ ने १३ मई को धरना दिया तथा माग की कि इस ठक को बन्द किया जाय। स्थिति को दखते हुए डी एस पी जगाधरी ने मौक पर पहुचकर महिलाआ से बातचीत की तथा बडी सूझ बूझ से फैसला करा दिया तथा शराब की दूकान को उस स्थान से हटाने का आदेश दिया। शराब का ठका वहा से उठा दिया गया है तथा महिलाआ ने इस सराहनीय काय मे विजय प्राप्त की।

मन्त्री आ० समाज चबूतरो

प्रशिक्षण शिविर

हरियाणा आय प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे वदिक साधना आश्रम शादीपुर यमुनानगर मे २२ जून से ५ जुलाई ९२ तक १५ दिनो का वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर निशुल्क है।

शुभ विवाह

आय समाज मोकमा जि० पूर्णिया मे कु० माया आर्या पुत्री श्री रामेश्वर ठाकुर का शुभ विवाह पूर्णिया निवासी महावीर ठाकुर के पुत्र विजय कुमार के साथ पूर्ण वैदिक रीति से श्री वेनी प्रसाद आय के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेको व्यक्तियो ने वर वध को आशीर्वाद प्रदान किया।

नौगावखाल पौडी गढवाल मे वदिक धर्म प्रचार

गढवाल वेद प्रचार समिति देहरादून एव आय समाज कोटद्वार गढवाल के सहयोग से नौगावखाल (चादकोट पौडी गढवाल मे वदिक धम व सस्कृति क प्रचार प्रसार व आय समाज क विस्तार हेतु एक तीन दिवसीय आय सम्मे लन दि० ५ ६ ७ जून ९२ को हर्षोल्लास स सफलता पूवक सम्पन्न हुआ जिसमे उच्चकोटि के विद्वाना एव भजनोपदशका न वेदो की अमृतवाणी मे जन समुदाय को लाभान्वित किया। यहा की जनता ने यज्ञ व शोभायात्रा मे बढ चढकर भाग लिया। इस आय सम्मेलन के अन्तगत महिला सम्मेलन मद्यनिषध सम्मेलन राष्ट्रभाषा एव राष्ट रक्षा सम्मेलन भी आयोजित किये गये जिनमे आशातीत सफलता मिली। ७५ वष से अधिक की आयु वाल आय वृद्धो का सम्मान भी कया गया। इस अवसर पर श्री सत्यव्रत राजेश श्री विशम्भरदेव शास्त्री सत्यव्रत शास्त्री श्री शालगराम आदि ने अपने विचार प्रगट किये।

—ओ० पी० निमल
म त्री गढवाल वेद प्रचार समिति देहरादून

आय समाज राजापुर बर्दिया (नेपाल) प्रगति के पथ पर

आय समाज राजापर बर्दिया नेपाल आय समाज क सिद्धान्तो तथा वेद प्रचार के काय म महत्वपूण भूमिका निभा रहा है। प्रतिदिन यज्ञ तथा उप देशो के द्वारा जनमानस को आय विचारधारा का परिचय कराया जाता है तथा परिवारो मे सत्सग तथा सस्कारा द्वारा लोगो को प्रोत्साहित किया जाता है। पिछल दिना अनेको सस्कार कराय गय तथा शुद्धि सस्कार कर विधर्मियो को स्वच्छा से वैदिक धम की दीक्षा दी गई। उक्त समस्त काय श्याम लाल आय नानपारा बहराइच के पौरोहित्य मे सम्पन्न कराये गये।

मुरान फर्रुखाबाद मे वेद प्रचार

विकास क्षत्र मुहम्मदाबाद के अन्तगत ग्रामीण अचल मे स्थित ग्राम मुरान (फर्रुखाबाद मे तहसील आय महा सम्मेलन अत्यन्त धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको ने वैदिक सस्कृति के बारे मे प्रकाश डाला। स्वामी चेतनानन्द जी ज्ञानानन्द जी प० वेदानन्द जी व आत्मानन्द जी ने अपने उपदेशो से नीति योग व कमकाण्ड के प्रति निष्ठा जाग्रत की। कायक्रम के अन्त मे आयवीर दल एव आय वीरा गना दल के गठन की रूपरेखा बनाई गई। तहसील कन्नौज म १० से २० जून ९२ तक बहादुर पुर नामक गाव म परोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी किया गया।

आर्य समाज कागज नगर शाखा विसगाव

आय समाज कागजनगर शाखा विसगाव का काय प्रगति पर चल रहा है। आय समाज के नवीन भवन की स्थापना श्री शम्भू प्रकाश वर्मा जी द्वारा की गई थी जो कि कायकर्ताओ के अथक परिश्रम से आज प्रगति पर है। दो बीघा जमीन भी प्राप्त की जा चुकी है। समाज के प्रधान जी द्वारा अब तक १० विद्यार्थियो को गुरुकुल मे प्रवश दिया गया। वेद प्रचार का काय भी सन्तोष जनक ढग से चल रहा है। श्री शम्भूप्रकाश जी पूण निष्ठा के साथ आयसमाज के काय को आगे बढाने मे लगे हुए है।

हुतात्मा धम प्रकाश का ५४ वा स्मृति दिवस

आय समाज मन्दिर हुतात्मा नगर वसव कल्याण की ओर से हुतात्मा धम प्रकाश का ५४ वा बलिदान दिवस ३० ५ ९२ को समारोह पूवक मनाया गया इस अवसर पर एक शोभायात्रा का आयोजन भी किया गया था। समारोह की अध्यक्षता श्री रामचन्द्र जी एम पी ने की। इस अवसर पर आयजगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

माणिक राव लाड मन्त्री

डा० श्रुतिशील शर्मा का अभिनन्दन

वदिक विद्वान श्री डा० श्रुतिशील जी शर्मा एम० ए० शास्त्री तक शिरोमणि पी० एच० डी० का नागरिक अभिनन्दन आय समाज करौलबाग दिल्ली मे १४ ६ ९२ को किया गया। समारोह के स्वागत मन्त्री सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री अजय जी भल्ला थे।

श्री डा० श्रुतिशील जी शर्मा क प्रवचन के उपरान्त उनका अभूतपूव अभिनन्दन पुष्पहारो से किया गया। प्रमुख अतिथि आचार्य प्रभाकर जा मिश्र थे।

—वेदप्रकाश शास्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डा०एल० ११०४६/६२ सावदेशिक साप्ताहिक (५-७-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसस न० ६६।
R N 626/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 93 Post! N D P S.O.-ee 23-7-1992

निर्वाचन समाचार

आय समाज कपूरथला श्री रोशनलाल जी प्रधान श्री नरेन्द्र कुमार वद मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार सूद कोषाध्यक्ष चने गए।

आय समाज सागर श्री कृष्णदेव कोहली प्रधान मुशी बद्रीप्रसाद जी मन्त्री श्री बद्रीनारायण नेमा कोषाध्यक्ष चन गए।

आय समाज कायमगज श्री आलोक कुमार प्रधान श्री धर्मवीर आय मन्त्री श्री रामानन्द आय कोषाध्यक्ष चन गए।

आय समाज अम्बहटा सहारनपुर—डा रामपाल शर्मा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आय मन्त्री श्री आनन्द प्रकाश आय कोषाध्यक्ष चने गए

आय समाज रोहताश नगर दिल्ली—श्री सिद्धानन्द शास्त्री प्रधान श्री महाराज कृष्ण ववन मन्त्री श्री हसराज डडजा कोषाध्यक्ष चन गए।

आय समाज नकुड—श्री साधुराम जी प्रधान श्री मथेन्द्र कमार गोयल मन्त्री श्री मोहनलाल आय कोषाध्यक्ष चन गए

आय समाज कलकत्ता श्री सीताराम आय प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल मन्त्री श्री विश्वेश्वरी प्रसाद कोषाध्यक्ष चने गए।

आय समाज रेलवे कालोनी रतलाम श्री रामकिशोर मिश्र प्रधान श्री सत्यदेव पाण्डय मन्त्री श्री शिवाजी त्रिपाठी कोषाध्यक्ष चने गए।

आय समाज दिलशाद गार्डन—श्रीमती कृष्णा शर्मा प्रधान श्री रामचन्द्र मन्त्री श्री रवीन्द्र बजाज कोषाध्यक्ष चन गए।

आय उपप्रतिनिधि सभा आगरा श्री रोशनलाल गुप्त प्रधान श्री ओमप्रकाश मन्त्री श्री बादामसिह सिकरवार कोषाध्यक्ष चन गए

आय समाज रलवे कालोनी कोटा श्री ... गुप्त प्रधान श्री करनसिह मन्त्री श्री प्रेमसिह पार्ख कोषाध्यक्ष चने गए।

दो महात्माओ द्वारा सन्यासाश्रम में प्रवेश

देहरादन १६ जन। आर्य समाज मन्दिर डाक पत्थर मे कल वयोवद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और वदिक धम प्रचारक श्री प० तोताराम जी और वानप्रस्थी श्री आनन्दमुनि जी ने सन्यास आश्रम की दीक्षा ली सन्यास आश्रम प्रवेश सस्कार का यज्ञ जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान प० देवदत्त बाली ने कराया। ब्रह्मचारी चन्द्रप्रकाश जी ने उनका सहयोग किया।

दोना महात्माओ को सन्यास की दीक्षा लखनऊसे पधारे स्वामी परमानन्द जी ने दी और प तोताराम जी का स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती का नाम दिया तथा श्री आनन्दमुनि जी को स्वामी धर्मानन्द सरस्वती नाम दिया।

प० तोताराम जी ने स्वतन्त्रता सग्राम में लम्बी जेल-यातनाए सही थी जिसमे हैदराबाद का आय सत्याग्रह भी सम्मिलित है। आधी शताब्दी से भी अधिक समय से आप आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन या आर्य समाज के कमठ प्रचारक रहे है और आपने हजारो भटके हुए लोगो को पुन उनके पूवजो के वदिक धम मे प्रत्यावर्तित कराया था और सैकडो मरे हुओ का पतित होने से बचाया था।

—देवदत्त बाली प्रधान
आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला देहरादून

रतन फाम मे यज्ञानुष्ठान

आपको यह जानकर बडी प्रसन्नता होगी कि य० पी० के तराई अचल म ननीताल जिले के अन्दर रुद्रपुर से ४० कि० मी० दूरी पर (शक्ति फार्म) गाव रतन फार्म न ९ म पहला बार बडी धम धाम से आय समाज का प्रचार किया गया ह ना क प्रचार काय म काफी बाधाय तथा मुसीबत आई ... यहा तक कि लोगो न मारने की धमकी भी दी फिर भी हमने निभय होकर एक सज्जन ... पोद्दार क घर म प्रधान शास्त्री जी के पौरोहित्य म तथा विजय कुमार शास्त्री के सचालन व वचारिक क्रान्ति मे शान्तिमय वातावरण के अन्दर सम्पन्न हुआ उक्त कायक्रम म निखिलेश वि वर्जित और रामचन्द्र जी का विशेष सहयोग रहा

निखिलेश आय

वार्षिकोत्सव

मुगलसराय वाराणसी का ७४ वा वार्षिक ... व उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह मे मुख्य रूप से डा० सावित्री शर्मा आचार्य अशर्फीलाल के प्रवचन एव श्री रामप्रसाद जी पाण्डय एव श्री वीरेन्द्र जी के सुमधुर भजन हुए। इस अवसर पर राष्ट भाषा सम्मेलन महिला सम्मेलन का आयोजन बड अच्छ ढग से सम्पादित हुआ। ब्रह्मचारी भीम डिटौडा साध आश्रम खतौली द्वारा योग के सुन्दर कार्यक्रम जसे थाली चौरना सरिया मोडना आदि प्रदर्शित किया गया

इसके अतिरिक्त समारोह के अन्तिम दिन आर्य समाज के उन कर्मठ व त्यागी वद्ध आर्यो को सम्मानित किया गया जिनके तप व लगन से आर्य समाज का कार्य आगे बढा है।

योग शिविर

आर्य समाज नगर म दिनाक १ ५ ९२ से सावदेशिक आर्य वीर दल को मोगा का शिविर प्रारम्भ होकर १ ५ ९ को उसका समापन हुआ श्री विश्वम्भर दुबे शास्त्री देववन्द के सयोजकत्व और सचालक श्री जनेश्वर प्रसाद रहे कार्यक्रम प्रथम बार ही हुआ जिसमे उपस्थिति उत्साह जनक रही शुभारम्भ नगर पालिका अध्यक्ष श्री शशीधर भटट ने किया और समापन के मुख्य अतिथि पूव विधायक श्री सुरेन्द्रसिंह जी थे जिनके द्वारा विद्यार्थियो को पारितोषिक वितरण किया गया।

—महेन्द्र कुमार

गुजरात मे आय वीर दल शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय के स्नातक ब्रह्मचारी वीरेन्द्र जी ने विगत २ मासो मे पूर्वी उत्तरी गुजरात मे ५ आर्य वीर दल शिविरो का आयोजन किया आर्यवन मीठाखली-अहमदाबाद सबलपुर-मोडासा सोनी कम्पा तथा गायणनोमाल साबर-काठा मे सम्पन्न शिविरो मे युवको ने यज्ञ सन्ध्या के साथ साथ आसन लाठी तैरना धार्मिक शिक्षा व इतिहास की जानकारी प्राप्त की तथा जीवन को वदिक धर्मी बनाने की प्रेरणा प्राप्त की।

मावदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मद्रक और प्रकाशक सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिए है, न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिए। इसी मत मतान्तर के विवाद मे जगत् में जो-जो अनिष्ट फल हुए, होते और होंगे उनको पक्षपात रहित विद्वज्जन जान सकते हैं। जब तक इन मनुष्य जाति मे परस्पर मिथ्या मत-मतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा।
- धन एक उपयोग की वस्तु है। यह बड़े परिश्रम से प्राप्त होता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष . ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक २४]   दयानन्दाब्द १६९   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ अषाढ़   शु० १३   सं० २०४९   १२ जौलाई १९९२

आने वाला समय ईसाई और मुस्लिम देशों में एक बड़े संघर्ष का कारण बन सकता है

इस्लामी विस्तारवाद से यूरोप के सभी देशों को भारी खतरा

लन्दन ४ जुलाई। यूनान अनुभव करता है कि इस्लामी विस्तारवाद न सिर्फ इसके लिए है बल्कि सारे यूरोप को इससे बहुत बड़ा खतरा है। टर्की जो इसी की तरह पश्चिमी गठजोड नीतियों का सदस्य है। यूनानी विदेश मन्त्री लुइस दरस्यूट्स ने एक साप्ताहिक पत्र को एक साक्षात्कार मे कहा कि आखिरकार यूनान एक ऐसा इलाका बन जायेगा जिसके चारों ओर मुसलमान हों। मुझे डर है कि रोम सागर इस्लामी विस्तारवाद से घिर जायेगा। जरा देखिए अल्जीरिया और मास्को में क्या हुआ? लीबिया तो कट्टर इस्लामी देश है। मिश्र में सदरे मुबारिक अपनी तरफ से तो हर प्रकार की कोशिश कर रहे हैं लेकिन इसके नीचे और एक इस्लामी रियासत सूडान है। एक तरफ ईराक है तो दूसरी तरफ ईरान है। टर्की में जो चुनाव हुए उसमें भी १७ प्रतिशत लोगों ने इस्लामी विस्तारवादियों के हक में वोट दिया। फ्रांस के वर्तमान चुनाव के सम्बन्ध में उन्होने कहा कि वहां भी यही अवस्था है।

मुस्लिम नौजवान गाते हैं:—

मुस्लिम हैं हम वतन हैं, सारा जहां हमारा।

जब मुस्लिम नौजवान यह गाते हैं तो उनके दिमाग पर क्या असर होता है। यह आवश्यक नहीं कि उनकी शक्ति इतनी हो कि वह दुनिया भर के गैर मुस्लिमों को दबा सकें लेकिन वह इन्हें परेशान जरूर कर सकते हैं। यही कारण है जो अमेरिका को परेशान कर रहा है। अमेरिका में ऐसे लोगों की कमी नही थी जो इस्लाम और ईसाइयत के भाईचारे को मानते थे। दोनों धर्म अरब में पैदा हुए। दोनों के लोग अहलेकिताब हैं इसलिए कोई वजह नहीं कि यह दोनों आपसमें मिल न जायें। अमेरिका में कुछ दिन पहले ईसाई मुस्लिम भाई-भाई के नारे सुने जाते थे। किन्तु पिछले दिनों बदली हुई अवस्था ने अमेरिका के राजनेताओं को चौंकाकर रख दिया। आज अमेरिकी सरकार इस्लामी विस्तारवाद से इतनी ही डर रही है जितने यूरोप के दूसरे देश। फ्रांस और जर्मनी में मुस्लिम शहरियों की संख्या बढ़ती जा रही है और यह लोग वहां भी शरारत कर रहे हैं। ब्रिटेन में भी ऐसे लोग काफी हैं। इसलिए यूरोप के लिए आने वाला समय ईसाई और मुस्लिम देशों मे एक बड़े संघर्ष का कारण बन सकता है।

डा० शंकरदयाल शर्मा, भारी बहुमत से जीतेंगे

नई दिल्ली ५ जुलाई (एजेंसियां) कांग्रेस उम्मीदवार डा० शंकरदयाल शर्मा की ११ जुलाई के चुनाव में करीब ५६ प्रतिशत मत प्राप्त कर भारी बहुमत से जीत निश्चित है, जब कि भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय मोर्चा समर्थित प्रो० जी० जी० स्वेल को लगभग ३५ प्रतिशत मत मिलना निश्चित है।

निर्वाचक मण्डल का करीब छह लाख ३० हजार मत डा० शर्मा को मिलना निश्चित है। निर्वाचक मण्डल में लोक सभा, राज्य सभा तथा राज्य विधान सभा सदस्य शामिल हैं, जब कि प्रो० स्वेल को तीन लाख ६० हजार मत मिलेंगे।

सरकार द्वारा संस्कृत की उन्नति के लिए सराहनीय निर्णय

इस निर्णय के अनुसार सरकार ने ५० करोड़ रुपये से एक यूनीवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन नियुक्त करने का फैसला किया है, जिसके लिए हम सभी इसका हार्दिक स्वागत करते हुए धन्यवाद देते हैं। इस कमीशन की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि एक जांच पडताल समिति ने यह शिकायत की कि यूरोप के देश और

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

धर्मान्तरण सम्बन्धी बिल सरकार को परेशानी में डाल सकते हैं ?

लोकसभा के वर्षाकालीन अधिवेशन के तीसरे दिन अर्थात १० जुलाई को धर्मान्तिरण जैसे विवादास्पद और सवेदनशील मसले पर पहले भारतीय जनता पार्टी के सदस्य ललित उराव का बिल आ रहा है। दूसरा बिल जनता दल सदस्य जार्ज फर्नान्डीज का है, जो निजी बिलो मे पन्द्रहवें स्थान पर है।

अनुसूचित जाति और जन-जाति के धर्मान्तरण से जुडे ये दो निजी बिल इस बार लोक सभा की कायसूची मे पहले हफ्ते के लिए दज है। ये परस्पर विरोधी बिल हैं। इनका दलित राजनीति से सीधा सम्बध है। सरकार का इन पर तटस्थ रहना सम्भव नही हो सकेगा।

भारतीय जनता पार्टी के सदस्य ललित उराव लोकसभा को आज से २२ साल पहले की याद दिलायेंगे। उनके बिल से काग्रेम सदस्य कार्तिक उराव के उस बिल की याद ताजा हो जाएगी जिसने २५ नबम्बर १९७० के दिन इन्दिरागाधी की सरकार के लिए एक बडी मुसीबत खडी कर दी थी।

यदि ललित उराव का बिल कानून बन जाता है तो अनुसूचित जनजाति मे ईसाई बने जन समूह को आदि वासियो को मिलने वाली सरकारी सुविधाए बन्द हो जायगी। इनके निजी बिल का असली मम यही है। आदिवासियो मे से यह माग हमेशा उठती रही है। इस माग का एक प्रमुख कारण यह भी है कि ईसाई बने आदिवासियो को दोहरी सुविधाए हासिल हो जाती है। इस धारणा को ससद मे अनगिनत बार दोहराया गया है। कानून अनुसूचित जाति को जो सुविधाए प्रदान करता है वह धर्मान्तरित व्यक्ति को भी मिलती रहती है। उसे अल्पसख्यक समुदाय की भी सुविधाए मिलती हैं। इसके अलावा अन्य कारण भी है जिनके आधार पर यह माग की जाती रही है कि जो व्यक्ति आदिवासी से दूसरे धम मे जाता है उसे सरकार आदिवासी मानना बन्द कर दे।

आजादी के बाद सन् १९५० से ही सरकार से यह माग की जाती रही है कि अनुसूचित जनजाति की सूची मे देशव्यापी पैमाने पर सशोधन करे। सविधान के अनुच्छेद ३४२ म सरकार को अधिकार है कि वह अनुसूचित जन-जाति की राज्यवार सूची बनाए और सशोधन करे। इसके लिए सरकार १९६५ मे बी एन लोकुर की अध्यक्षता मे जो उन दिनो केन्द्र मे कानून सचिव थे एक समिति का गठन किया। इस समिति ने तीन महीन बाद अपनी रिपोट केन्द्र सरकार को सौंप दी। उसे अनुसूचित जाति और जन-जाति की सूची मे सशोधन क लिए सलाह देनी थी। समिति ने सशोधित सूची पेश की। लोक समिति की इस रिपोर्ट पर सरकार लगभग दो साल तक विचार करती रही और अन्त मे काफी सलाह मशविरे के बाद १२ अगस्त १९६७ को एक बिल लोकसभा म पेश हुआ जो आसानी से कानून बनने की दिशा मे आगे नही बढ सका। उसने समाज और सरकार म हलचल मचा दी। करीब सात महीने बाद सरकार ने यह बिल ससद की साझा समिति को सौप दिया।

ललित उराव का बिल साझा-समिति की सिफारिश पर अमल के लिए हैं। सरकार जहा अटक गयी थी वहा से वे उसे आगे ले जाना चाहते हैं। १९६८ मे बनी ससद की साझा समिति ने सिफारिश की थी कि जो आदिवासी ईसाई या मुसलमान हो जाएगा उसे अनुसूचित जन-जाति की सूची से निकाल दिया जाय। उसने अपनी इस सिफारिश पर अमल करते हुए एक सशोधित सूची भी बनाई। इस सयुक्त समिति मे लोकसभा के २० और राज्य सभा के १० सदस्य थे। श्री अनिल क चन्दा इसके अध्यक्ष थे। सयुक्त समिति ने १७ नवम्बर १९६९ को अपनी रिपोट पेश कर दी। लेकिन सरकार ने ससद की सयुक्त समिति की उस सिफारिश को मजूर नही किया जिसमे किसी आदिवासी के ईसाई या मुसलमान बनने पर उसे अनुसूचित जन जाति से बाहर निकाल देने के लिए कहा गया था। तत्कालीन मन्त्री श्री के हनुमतैया जिन्होने बिल को ससद म पेश किया था इस सिफारिश को अस्वीकार करते हुए बिल म शामिल न करने के पक्ष मे अनेक दलील पेश की।

(जनसत्ता से साभार)

दूरदर्शन से अण्डों के विज्ञापन तुरन्त बन्द किए जावें

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की सरकार से मांग

सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय द्वारा दूर दशन के माध्यम से अण्डा के विषय मे दिये जा रहे धु आधार विज्ञापनो के विरुद्ध जन भावनाओ का देखते हुए सावदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने केन्द्रीय सूचना एव प्रसारण उपमन्त्री डा० गिरजा व्यास को इन विज्ञापनो पर तुरन्त रोक लगाने की माग करते हुए पत्र लिखा है।

संस्कृत की उन्नति

(पृष्ठ १ का शेष)

अमेरिका गैर मामूली दिलचस्पी से इस भाषा की प्राचीन पाण्डुलिपि को प्राप्त करने का हर प्रकार से प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु हम लोग जिनकी यह भाषा है उससे बेपरवाह हैं हक यह है कि सस्कृत न सिर्फ ससार की सबसे बडी और सभी भाषाओ की जननी है अपितु इसलिए भी कि सस्कृत के ग्रन्थो में ऐसे ऐसे अनमोल हीरे और जवाहरात छिपे हुए हैं कि इस भाषा को नजरन्दाज करके हम अपनी ही हानि कर रहे है। जो लोग इस सस्कृत भाषा को जानते हैं उनका यह दावा है कि ससार का शायद ही कोई ज्ञान विज्ञान हो जो सस्कृत ग्रन्थो मे न हो। परन्तु हमारी सरकार ने भी इस तरफ ध्यान न देकर इसका लाभ उठाने से देश को वचित रखा। अब विदेशियो ने इस भाषाको अपनाना आरम्भ किया है, इससे हमारे शासको का भी ध्यान इस ओर जाने लगा है। सबसे महत्वपूर्ण और प्रशसनीय बात यह है कि सस्कृत को कम्प्यूटर पब्लिकेशन के लिए अति उचित तथा उपयुक्त पाया गया है। जिस भाषा मे इतनी विशेषताए हैं इसे हमने गलत नीतियो के कारण इतने वर्षों तक नजरन्दाज किए रखा है। इससे हमे ही घाटा हुआ है। एक इटालवी माहिर प्रवाज ने कहा था कि रामायण मे जो पुष्पक विमान का वर्णन आता है इसे यू ही न समझा जाए। अब यूरोप के विद्वान तथा वैज्ञानिक भी यह मानने लगे हैं कि ऐसी ऐसी जडी बूटिया हैं जो मरते हुए लोगो को भी बचा सकती हैं। जैसे रामायण काल मे रामभक्त वीर हनुमान को लक्ष्मण को बचाने के लिए हिमालय पवत से सजीवनी बूटी लानी पडी। उस समय इस बूटी को लाने का सुझाव देने वाले को ससार का उत्तम वैद्य माना जाता था। चरक ने जो सर्जरी का अनुसधान किया प्राचीन भारत मे वैज्ञानिको की कमी न थी। समय गुजर जाने के साथ साथ बहुत सी सच्चाइयो के साथ कहानिया बन जाती हैं। हजारो वष पूव भारत के वैज्ञानिको ने कमाल कर दिखाया था उस दिशा मे विदेशी अब कमाल प्राप्त कर रहे है। कौन न मानेगा कि अगर प्राचीन सस्कृत ग्रन्थो का अध्ययन किया जाये तो ससार को विज्ञान में अनेक नई-नई अविष्कारें प्राप्त होगी। अपने देशवासियो के लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि किसी उत्तरदायी व्यक्ति ने चाहे देर से ही सही इस तरफ ध्यान दिलाया है इसलिए हमे आशा है कि हमारी सरकार सस्कृत के प्राचीन ग्रन्थो के शोध की ओर ध्यान देगी।

ईश्वर कर्मफल-प्रदाता है

—पूर्णचन्द्र उपाध्याय—

इस दृश्य जगत् की उत्पत्ति जीव के भोग के लिए हुई है। ईश्वर अपने अटल सिद्धान्त से जीव के प्रयत्नो के परिणामस्वरूप उसकी भोग-शक्ति को मर्यादित कर देता है। और यही उसका कर्मफल-प्रदाता होना है। कर्म और फल मे सम्बन्ध स्थापित करने के लिये एक चेतन शक्ति और उसके अटल नियमो की आवश्यकता है। बहुतो का खयाल है कि कर्म स्वय फल देते हैं और दे सकते हैं, किसी शक्ति को फल-प्रदाता मानने की आवश्यकता नही। यह बात भ्रममूलक है। हमने यह बात जड जगत्मे बडी तीव्र विवेचनासे देखी कि प्रकृतिके जड परमाणु अपने आप न रूप धारणकर सकते हैं और न अपना नाम धर सकते है। परमाणुओ मे सयोग और वियोग की शक्ति है। परमाणु भी रहते है और उनमे यह शक्ति भी रहती है, परन्तु जब तक कोई चेतन शक्ति किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये उनके सयोग की शक्ति को काम मे नही लाती तो कोई चीज नही बन सकती—अर्थात् परमाणु रूप धारण नही कर सकते। इसी प्रकार जब उनकी वियोग की शक्ति को काम म लाया जा सकता है तो एक चीज अपने रूप को मिटाकर अरूप हो जाती है। इसको एक उदाहरण से हम और स्पष्ट करेग। एक कोश मे हजारो शब्द भरे पडे है। उन शब्दो से वाक्य बनाय जा सकत है, बडी-बडी पुस्तके रची जा सकती है, परन्तु उन शब्दो से भाषण देने व पुस्तक रचने के लिये एक चतन सत्ता चाहिये, जो उन शब्दो को प्रयोग मे लाये। ऐसा कभी नही हुआ कि कोश के शब्द अपने आप किसी ऐसे वाक्य का रूप धारण करें जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध हो। इसलिये यह मानना कि कर्म स्वय फल प्राप्त कर लेगे, ठीक नही है। परमात्मा ने जीव को कर्म करने के लिये क्षेत्र दे दिया है, भोग के लिये पदार्थ उत्पन्नकर दिये है। साथ ही कर्म करने तथा भोग भोगने के लिये नियम बना दिये है तथा कर्म और फल का सम्बन्ध जोडने के लिये भी नियम बना दिये है। इन नियमो के सहारे इस ब्रह्माण्ड मे जड-चेतन दोनो म कार्य होता रहता है, परन्तु नियम बिना नियम निर्धारित करनेवाले के कोई प्रभाव नही रखत। अग्रेज सरकार के न रहने पर ताजीराते हिन्द कुछ काम नही करेगा। दफा ३७८ रहेगी कागज पर लिखी हुई, चोरी करने वाले चोर रहेग, जेला के मकान रहेगे परन्तु वह कागज पर लिखी हुई दफा किसी चोर को जेल मे बन्द नही करा सकेगी। उस नियम को काम मे लान के लिये एक चेतन शक्ति चाहिये। यदि अग्रेज सरकार के चले जान पर कोई दूसरी सरकार उस दफा ३७८ को उसी रूप मे या किसी परिवर्तन के साथ फिर नियम रूप से सचालन करने के लिये उद्यत होगी, तो यही नियम प्रयोग म लाया जा सकेगा। इसलिए परमात्मा के कर्मफल प्रदाता होने से अभिप्राय यह है कि वह जीव का कर्म से भोग का सम्बन्ध मर्यादित कर देता है। परमात्मा उपहार और दण्ड इन्ही भोग्य वस्तुआ से देता है, इन्ही अग्नि, जल, वायु से सुख प्राप्त होताहै और इन्ही से दुःख। इसी पृथ्वी पर सुन्दर सुगन्धित वनस्पतिया उत्पन्न होती है और इसी पृथ्वी म विष। और फिर इसी पृथ्वी से पैदा हुआ विष आवश्यकता होने पर अमरफल का काम दे जाता है। इसी सूर्य से जाडो मे तापकर दिन गुजारत (गर्मी म इसके ही ताप से व्याकुल होकर प्राण त्यागने तक की नौबत आ जाती है। हम वायु के बिना एक क्षण भी नही रह सकत। वायु हमारे प्राणो का आधार है वायु ही जीवन है परन्तु इसी वायु को तूफान और प्रचण्ड आधी के रूप मे आने से जान के लाले पड जाते हैं। वायु को अग्नि से मिला दो तो प्रचण्ड लू चलने लगती है। वायु का शीतल जल से सयोग हो तो ठण्डी हवा चलने लगती है। ससार की जो अन्य वस्तुए हैं, वे इन्ही दैविक शक्तियो के सहारे निर्माण होती हैं। ईश्वर को कर्मफल प्रदान करन के लिये कही दूर नही जाना पडता, न उपहार देने या दण्ड देने के लिये अपने किसी गोदाम मे से कोई वस्तु निकालनी पडती है। ईश्वर तो केवल व्यवस्था करता है, और वह भी हमारे कर्मों के आधार पर। यदि इन वस्तुओ मे से भोग करने के लिये हमे इच्छित मात्रा मे कोई वस्तु नही मिलती तो हम दुःखी होने लगते हैं, यदि मिल जाती है तो सुखी होने लगते हैं। परमात्मा ने केवल व्यवस्था ही अपने हाथ मे नहीं रखी है, प्रत्युत उस परब्रह्म परमेश्वर ने इस सृष्टि म चीजो को रचा, जीव को कर्म करने की शक्ति दी, ज्ञान प्राप्त करने की सामर्थ्य दी और अपने अनादि एव अटल ज्ञान के भण्डार मे से ईश्वरीय ज्ञान प्रदान किया जिससे जीव अपने स्वाभाविक गुण-ज्ञान की सहायता से लाभ उठा सके। जब परमात्मा न ज्ञान का भण्डार प्रदान किया, कर्म करन की शक्ति दी और भोग करने के लिये पदार्थ उत्पन्न किये, तो उसको फल-प्रदाता मानने मे सकोच नही होना चाहिये। ईश्वर के स्वरूप को समझने के लिये ईश्वर को कर्मफल प्रदाता और सृष्टि का रचयिता मानना पर्याप्त है। ईश्वर के शेष सब गुण इनके अन्तर्गत आ जाते हैं। ईश्वर दयालु और न्यायकारी जीवो को कर्मफल प्रदाता होने की दृष्टि से है और सृष्टि का रचयिता जडजगत को उत्पन्न करने की दृष्टि से है। यहा जब हम जीव के कर्म और भोगो की विवेचना कर रहे हैं, तो प्रसगवश परमात्मा के सम्बन्ध मे एक बात और कह देना चाहते हैं। इस व्यक्त जगत् मे जितनी रूप धारण किये हुए वस्तुए हैं, वे सब परिवर्तन-शील है। उनमे ह्रासमय परिवर्तन होता रहता है और परमात्मा, जो इस सारे जगत् मे जीवात्माओ को उनके भोग की दृष्टि से भिन्न-भिन्न रूप धारण कराता है, उसका अपरिवर्तनशील होना अनिवार्य है। साथ ही चेतन होना भी आवश्यक है। चेतन जगत् मे सारी विषमताए भोग के दृष्टिकोण से है—अर्थात् सुख-दुःख के लिहाज से। जो परमात्मा सुख-दुःखो की व्यवस्था करता है उसका इनसे परे होना आवश्यक है, इसलिए परमात्मा आनन्दमय है।

परमात्मा सच्चिदानन्द है—अर्थात वह अनादि है, सदा एकरस रहने वाला है सदैव आनन्दमय है—अर्थात सुख-दुःख के झझटो से परे है।

जीवात्मा सत और चित् है—अर्थात अनादि और चेतन है। उनमे आनन्द की कमी है। वह आनन्द की प्राप्ति के लिये परमात्मा की शरण मे जाना चाहता है और वही पहुचने के लिये उद्योग करता है। इसी उद्योग क लिय यह दृश्य जगत् कर्म का क्षेत्र बनाया गया है। प्रकृति केवल सत् है—अर्थात् अनादि है, इसमे परिवर्तन किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिये, किसी चेतन शक्ति के द्वारा ही उत्पन्न होता है। वह चेतन शक्ति चाहे परमात्मा की हो चाहे जीवात्मा की। आशा है पाठको को ईश्वर के कर्मफल-प्रदाता होने की बात अब कुछ समझ मे आ जायेगी और ईश्वर का जीव और प्रकृति से सम्बन्ध भी समझ मे आ जायेगा।

जीवन वृत्त—

वन्देमातरम् वीरभद्र राव

—टी. नरहरिराव

केशवगिरि, जैसे आजकल गडवल के नाम से जाना जाता हैं, किसी समय एक छोटी सी रियासत थी। अठारहवीं शताब्दी मे राजा नल्ल सोमाद्रि भोपाल न इसकी स्थापना की थी। किले के बाहर चारो तरफ थोडे से मकानो की आबादी थी जहा पहले नल्ल सोमाद्रि के वशज रहा करते थे। आज उस स्थान पर कृष्णा नदी के किनारे एक बडा शहर आबाद है।

इसी शहर म किले के बाहर के मोहल्ल मे जो आजकल ब्राह्मण अग्रहरम के नाम से जाना जाता है एक मध्यवर्गीय वाविलालास परिवार रहता था। सन १९११ मे इसी परिवार मे एक बालक का जन्म हुआ। इस अवसर पर परिवार के बहुत से बन्धु-बान्धव भी वहा एकत्र थे। बालक का जन्म होने पर एक व्यक्ति न बाहर आकर सूचना दी कि "नवजात शिशु लडका है। अनेक दृष्टि से असाधारण लगता है। वजन भी अपेक्षाकृत अधिक है। लम्बे हाथ हैं (आजानबाहु) जो घुटनो तक पहुचते हैं। आखें सुन्दर हैं जिसके नीचे त्वचा मे पडे हुए बल देखने वाले को विशेष रूप से आकर्षित करते है।"

परम्परागत धार्मिक रीति-रिवाजो, तथा मगल उत्सव के समाप्त होने पर परिवार के सगे सम्बन्धी बालक के माता-पिता श्री राम तथा लक्ष्मी और दादी-मा को अकेला छोडकर अपने-अपने घर लौट गये।

धीरे-धीरे दिन बीतते गये और बालक ने अपनी आयु के पाच वर्ष पूरे कर लिए।

मैं यहा पर उन सस्कारो की चर्चा नही करना चाहता जो बालक के जन्म से पूर्व और जन्म के पश्चात पारिवारिक परम्परा के अनुसार किये गये थे, क्योकि वर्तमान सन्दर्भ मे उनका कोई विशेष महत्व नही है। इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यह सब धार्मिक अनुष्ठान और सस्कार बालक को एक "महा-मानव' बनाने के लिए ही किये गये थे।

हिन्दुओ मे प्रचलित प्रथा के अनुसार जन्म के दस दिन बाद बालक का नामकरण सस्कार किया जाता है। तदनुसार ११वे दिन माता-पिता ने बालक का नाम 'वीरभद्र' रखा। लकिन परिवार के पुरोहित ने बालक के जन्म का समय और दिन देखकर बालक का नाम "सेया' रखा। बाद का यह नाम तो केवल कागज पर ही रह गया और पूर्व नाम 'वीरभद्र' ही प्रचलित हुआ। कहा जाता है कि बालक की माता जो एक शिव-भक्त थी, केशवगिरि से लगभग एक कोस (तीन मील) दूर गडवल के शिवमन्दिर मे आकर भगवान शिव से पुत्र-प्राप्ति का वरदान मागा, जो स्वय उनके पुत्र "वीरभद्र' के समान बलशाली हो। जब बालक का जन्म हुआ तो माता को लगा मानो शिवजी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके उन्हे ऐसा पुत्र-रत्न दिया है जो आगे चलकर 'अपार वीरभद्र' होगा।

बालक के पिता रामाराव स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त थे। उन्होने उपनयन सस्कार के विषय मे "मनु" की बात स्वीकार नही की और अपने बहुत से मित्रो की इच्छा के विरुद्ध ही, पाचवें वर्ष मे उसका उपनयन सम्पन्न कराने का निर्णय लिया। मनु के अनुसार आठवें वर्ष मे बालक का उपनयन सस्कार करना चाहिए था। लेकिन पिता की इच्छा को मान्यता देते हुए यह सस्कार पाचवें वर्ष मे ही बडी धूमधाम से किया गया।

उपनयन सस्कार के बाद बालक वीरभद्र को शैव गुरू अशरण शरण के सरक्षण मे सोप दिया गया। यह शैव आचार्य कठोर अनुशासन प्रिय थे। उनका विश्वास था कि लाड प्यार से बच्चे बिगड जाते हैं। इसलिए जो भी विद्यार्थी उनके प्रश्नो का उत्तर तुरन्त न दे पाता, अथवा पढने लिखने म ध्यान न देता उसे वे बिना दण्ड दिए नही छोडते थे। तेलुगू और देवनागरी का थोडा अक्षर ज्ञान होने पर गुरुजी न वीरभद्र को अमर कोष कण्ठस्थ करने के लिए कहा। बालका के लिये यह बडा कठिन कार्य था, लेकिन इसे पूरा करना भी जरूरी था। न करन पर अशरण शरण द्वारा पिटाई से बचन का कोई चारा नही था। अमर कोष राजा विक्रमादित्य के 'नव रत्नो' मे से एक अमरसिंह द्वारा सम्पादित सस्कृत शब्दकोष है। स्वामी दयानन्द के मतानुसार यह एक बकवर की पुस्तक है और पढने योग्य नही है। लेकिन आज से लगभग ७० वर्ष पूर्व सस्कृत विद्वानो मे इसकी बहुत मान्यता थी और प्राय सभी ग्रामीण पाठशालाओ मे इसका अध्ययन अनिवार्य था।

अशरण शरण के शिष्यो मे वीरभद्र की गणना चोटी के शिष्यो मे की जाती थी।

१५ वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर उन्हे कुरनूल के म्युनिसिपल हाई स्कूल मे दाखिल कराया गया जहा वे दो वर्ष तक रहे। बाद मे उन्हे हैदराबाद स्थित एक हाई स्कूल मे प्रवेश मिल गया। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद उन्होने एक कालेज से "स्नातक' परीक्षा पास की।

हम यह पहले ही कह चुके हैं कि केशवगिरि एक छोटा सा राज्य था। नल्ल सोमाद्रि के वशजा के साथ वीरभद्रराव जी के माता-पिता की अच्छी जान-पहचान थी। इसी निकट सम्बन्ध के कारण नव-युवक वीरभद्र हैदराबाद के पुलिस ट्रेनिंग स्कूल से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उनके राज्य की पुलिस के अध्यक्ष का पद ग्रहण करने के लिए सोमाद्रि के वशजो का आग्रह नही टाल सके।

वविलालास परिवार के इस कुल दीपक ने हैदराबाद के पुलिस ट्रेनिंग स्कूल म प्रवेश प्राप्त किया। वहा उन्होने सर्वोत्तम प्रशिक्षार्थी के रूप मे अपना परिचय दिया। लेकिन दुर्भाग्य से उनकी यही श्रेष्ठता बाद मे, प्रकारान्तर से उनकी अयोग्यता सिद्ध हुई। घोर सम्प्रदायवादी निजाम की सरकार यह कैसे बर्दाश्त कर सकती थी कि एक स्वस्थ और शिक्षा मे सर्वश्रेष्ठ हिन्दू व्यक्ति केशवगिरि गडवल की पुलिस का अध्यक्ष नियुक्त हो? अत वीरभद्र राव को परीक्षा मे फेल कर दिया गया। जब उन्हे अपने फेल होने का समाचार मिला तो बडी निराशा हुई। उन्होने शारीरिक व्यायाम, घुड सवारी, बन्दूक की निशानेबाजी और सिद्धान्त शिक्षा आदि हर क्षेत्र मे अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया था। कोई भी दूसरा प्रशिक्षार्थी उनसे ऊपर नही जा सका था। फिर भी मुस्लिम नौकरशाही ने उन्हे अयोग्य ठहरा दिया। मुस्लिम प्रशासन के इस अन्याय ने नव युवक वीरभद्र की आखें खोल दी। उन्होने उस समय की देश की परिस्थिति का अध्ययन किया। मीर उस्मान अली, जिसे लोग औरगजेब का अवतार कहते थे, देश के इस प्रदेश को पूरी तरह इस्लामी राज्य बनाने के लिये हर तरह की चाले चल रहा था। भारत मे अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करने के लिए अग्रेज जिस तरीके से उस्मान अली का उपयोग करना चाहते थे, और अपनी रियासत के इस्लामीकरण की जो खुली छूट उन्होने दे रखी थी, उससे उस्मान अली का हौंसला बहुत बढ गया था।

कुछ दिनो के लिए वीरभद्र अज्ञातवास मे चले गए। इससे उनके पिता बहुत परेशान और क्षुब्ध हुए। उनके छोटे भाई और दो बहनें उनके इस प्रकार चले जाने का कारण नही समझ सके। बहुत खोज करने के बाद उनके पिता ढूढ कर उन्हे घर वापस लाए। घर लौट आने के बाद वीरभद्र राव इसी उधेडबुन मे रहे कि व क्या करे और क्या न करें? उन्हें सघर्ष और क्रान्ति का जीवन अच्छा लगता था। उन्होने जान लिया था एक गृहस्थ का निष्क्रिय जीवन जीना उनकी नियति नही है। पिता का गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करने का आग्रह उन्हे और भी क्रुद्ध कर देता था। उन्होने विवाह न करने का पक्का निश्चय कर लिया था। पिता और पुत्र के बीच इस मतभेद के कारण घर की शाति भग हो गयी थी। (क्रमशः)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के ज्येष्ठ भ्राता श्री वीरभद्रराव जी ने जीवन पर्यन्त अथक परिश्रम और साहस से अमीर जमीदारो और गरीब भूमिहीनो के बीच की खाई को पाटने के प्रयत्न किये। वन्देमातरम् बन्धुओ ने राष्ट्र रक्षा और राष्ट्रवासियो की सेवा के लिये किसी भी सकट और बलिदान का सामना करने मे कभी भी अपने कदम पीछे नही हटाये। बाल ब्रह्मचारी श्री वीरभद्रराव जी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे हठयोग के द्वारा प्रकृति पर विजय प्राप्त करक परमात्मा के सानिध्य मे पहुच कर परम सुख का अनुभव करना चाहते थे। —सम्पादक

इस्लामी महासंघ की अमरीकी कल्पना

—राधेश्याम यादव

अमरीका के बहुत भारी भरकम सासद लारी प्रसलर ने यह बात उठाई थी कि भारत को एक सभावित बड इस्लामी कट्टरवादी सघ से खतरा हो सकता है। इस सघ के सदस्यो के रूप मे उन्होने पाकिस्तान सोवियत सघ से स्वतन्त्र हुए इस्लामी गणराज्य तुर्की का कुछ हिस्सा अफगानिस्तान और ईरान का नाम लिया। लेकिन प्रसलर साहब ने भारतीय जनता को यह नही बताया कि आखिर इतना बडा इस्लामी सघ बनने की सभावना कैसे बनी और खद अमरीका का इस्लामी कटटरतावाद को उभारने म कितना हाथ रहा। भारत अगर अपने पडोस म ही देख तो पाकिस्तान और बगलादेश म भारत विरोधी कटटरतावाद को पनपाने मे अमरीका का अच्छा खासा हाथ रहा है और अमरीका के सहयोगी अरब देशो जैसे सऊदी अरब कतर बहरीन ओमान सयुक्त अरब अमीरात आबूधाबी वगैरह जिनसे भारी मात्रा मे धन धार्मिक सस्थानो और मुल्लाओ को एक लम्बे अर्से से आता रहा है और सिफ इस्लामी कटटरवाद ही नही सिंहली कटटरवाद को पनपाने का श्रय भी अमरीका और उसके सहयोगी ब्रिटेन तथा इजराइल का जाना है जो इस उप महाद्वीप म भारत के लिए समस्याए खडी करत रहे है।

अकेले इस्लामी कटटरवाद को ही नही पथकतावाद को भी अमरीका तथा अन्य यूरोपीय उप निवशवादियो ने पूरी तरह पाला पोसा है। अब यह बात छिपी नही रह गई है कि अमरीकी गुप्तचर सस्था सी आई ए न पूर्वी यूरोप तथा सोवियत रूस और चीन मे धार्मिक कटटरतावाद और अलगाववाद को काफी उभारा और अन्तत साम्यवादी किला तोड ही दिया। हर बड और अमरीकी मर्जी से न चलने वाले राज्य को तोडना या दबाव के जरिये अपन प्रभाव मे रखना अमरीकी विदेश नीति का स्थाइ लक्ष्य नजर आता है। और इसमे ब्रिटन भी उसका स्थायी साथी रहता है क्याकि पव उपनिवशवादी ब्रिटेन अपने साम्राज्य के द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ध्वस्त हो जाने पर अपने पूव उपनिवेशो मे अपने प्रभाव तथा व्यापार को बनाये रखने और बढाने जाने का इच्छुक रहा है। अगर शुद्ध भारतीय सन्दभ म देखा जाए तो भारत को तोडने की प्रक्रिया ही ब्रिटन ने इस्लामी कटटरवाद को बढावा देकर शुरू की जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप हिन्दू कटटरतावाद भी उसी मात्रा म पनपा और इसके बाद पाकिस्तान को हथियार बन्द करके भारत की बगल मे अडाई गई छुरी की तरह रखने मे भी ब्रिटिश अमरीकी हाथ कुछ कम नही रहा। भारत के अग बन चुके कशमीर पर पाकिस्तानी हमले म कितना हाथ आग्ल अमरीकी गुट का रहा यह किसी से छिपा नही और जब भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को कशमीर से निकालना शुरू कर दिया तो युद्ध विराम कराकर कशमीर का प्रभावी विभाजन करान मे और सयुक्त राष्ट्रसघ म भारत की बजाय पाकिस्तान के हडपू दावे का एक लम्बे अस तक समथन करने के पीछे कितना अमरीकी ब्रिटिश हाथ रहा है यह भी इतिहास के विद्यार्थियो से छिपा नही है। और अगर पूव सोवियत सघ का वीटो आग्ल अमरीकी प्रस्तावो पर हर बार लागू नही किया जाता तो निश्चय ही कश्मीर कब का पाकिस्तान के हाथ मे जाकर पाकिस्तान की तरह ही सोवियत सघ अफगानिस्तान चीन और भारत के खिलाफ एक अमरीकी फौजी अडडा बन गया होता।

यह ब्रिटिश अमरीकी दिमाग और धन का गठबन्धन ही है जिसने धार्मिक कटरवाद और अलगाववाद को अपने प्रभाव से बाहर के देशो को विखडित करने और मानवाधिकारो के हनन के मुद्द के जरिये इन पृथकतावाद और धार्मिक कटटरतावाद की समस्याओ से जूझ रहे देशो पर दबाव डालन का सफल धधा चला रखा है और दबाव भी इसलिये कि ये बड बाजारो वाले देश अमरीका ब्रिटेन तथा अन्य पश्चिमी देशोके माल की खपतके लिये उन्हे उपलब्ध ही नही हो जाए बल्कि पू जी निवेश के जरिए उनकी अथव्यवस्थाए राजनीति तथा प्राकृतिक साधनो पर उनका कब्जा हो जाए। लेकिन भारत और चीन जैसे बड़े देशो का अमरीकी नियन्त्रण म आना तब तक सभव नही है जब तक उनकी आर्थिक स्थिति घरेलू समस्याओ म लडते लडत कमजोर न हो जाये और इन देशो को पश्चिमी आर्थिक साम्राज्यवाद के प्रमुख औजार विश्व बक और अतराष्टीय मुद्राकोष के पास हाथ फैलाने न आना पड। इसलिये चीन रूस और भारत म इस्लामी कटटरतावाद को बढावा देना और उसे अलगाववाद के साथ जोडना अमरीकी ब्रिटिश नीति का प्रमुख अग है। भारत मे हर तरह स हिन्दू मुस्लिम टकराव चीन मे मुस्लिम हान टकराव सोवियत सघ मे मुस्लिम तथा स्लाव और पश्चिम एशिया म जहा इस्लाम ही मुख्य धम है शिया सुन्नी टकराव आग्ल-अमरीकी रणनीति रही हैं। और इन टकरावो को पदा करन और उन्ह हवा देने पर काफी धन एक लम्बे अरसे से खच किया गया है। (क्रमश)

हर बड और अमरीका मर्जी से न चलने वाल राज्य को तोडना या दबाव के जरिये अपने प्रभाव म रखना अमरीकी विदेश नीति का स्थाई लक्ष्य नजर आता है। और इसमे ब्रिटेन भी उसका स्थाइ साथी रहता है।

यह ब्रिटिश-अमरीकी दिमाग और धन का गठबधन ही है जिसन धार्मिक कटटरतावाद और अलगाववाद को अपन प्रभाव से बाहर के देशो को विखडित करने और मानवाधिकारो के हनन के मुद्द के जरिये इन पृथकतावाद और धार्मिक कटटरतावाद की समस्याओ मे जूझ रह देशो पर दबाव डालन का सफल धन्धा चला रखा है।



कब होगी मुक्ति अंग्रेजी—शिकंजे से?

बबलूराम गुप्त, सी-८/१० माडल टाउन, दिल्ली-११०००९

इसे देश का महादुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि कुछ अंग्रेजी भक्त लोग, विशेषकर तमिलनाडु वाले, अंग्रेजी-प्रयोग जारी रहना देश के लिए वरदान और उसके स्थान पर राष्ट्रभाषा हिन्दी का आ जाना एक अभिशाप समझते हैं। ऐसा कहते समय १३ अगस्त, १९९० को इन्दौर सम्मेलन मे चार हिन्दी भाषी राज्यो (मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान) के मुख्य मन्त्रियो के निर्णय (जिसके अनुसार शासन के कार्यो मे अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग होगा) और उन पर अंग्रेजी भक्तो की प्रतिक्रिया मेरे दिमाग मे गूज रही है।

हिन्दी के विरोध मे इस पूर्णतया अयाचित होहल्ला के बारे मे जो कुछ कहा जाए सो थोडा है। एक विदेशी भाषा हटाकर अपनी ही राष्ट्रभाषा को स्थान देना अगर 'थोपना कहा जाएगा तो इससे अधिक असगत और अनुचित क्या होगा ? ऐसी अन्धी सोच मूल्यो के प्रति विकृत भावना रखने वाले की ही हो सकती है।

वर्तमान स्थिति का अत्यन्त मूर्खतापूर्ण पहलू यह है कि लगभग सभी अहिन्दी भाषी राज्यो ने अपने प्रशासन की भाषा के रूप मे अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओ का प्रयोग आरम्भ कर दिया और देश के राजनीतिक वातावरण मे तनिक भी हलचल नही हुई। किन्तु जब किसी हिन्दी भाषी राज्य मे अपनी भाषा का प्रयोग होता है तब अंग्रेजी-भक्त काप जाते है और देश भर मे खतरे की घण्टी बजाने लगते हैं। इस प्रकार अहिन्दी राज्यो के प्रति पक्षपात की प्रवृत्ति और हिन्दी भाषी राज्यो के प्रति टकराओ जैसी स्थिति सभी लोकतन्त्रीय प्रतिमानो के विरुद्ध है। स्पष्ट है कि एक ही देश मे लोगो के लिए दो अलग-अलग मानक नही हो सकत।

अब बहुत हो चुका। आखिर हिन्दी भाषी राज्यो न कौन सा ऐसा पाप किया है कि वे अपना काम अपनी भाषा मे करने की उसी सुविधा से वचित रहे, जिसका उपयोग अहिन्दी-भाषी राज्य कर रहे है ? इन राज्यो के निवासियो ने ऐसा कौन सा अक्षम्य अपराध किया है कि वे द्वितीय श्रेणी के नागरिक बनाए जा कर अपने ही प्रशासन मे भाग लेने से वचित रखे जाए क्योकि प्रशासनिक कार्य आज भी एक विदेशी भाषा के महगे और बोझिल माध्यम से किया जा रहा है ? इन राज्यो के सारे के सारे विद्यार्थियो ने ऐसी कौन सी भूल की है जो माफ नही हो सकती और वे ऐसी असख्य मुसीबतें झेलन को बाध्य हैं जो शिक्षा सस्थाओ मे अंग्रेजी का एक अनिवार्य विषय पढाकर और उसे ही शिक्षा के माध्यम के रूप मे अपनाकर उनपर ढाई जाती है, और जिसके कारण ही वे कालेजो मे बहुतायत से असफल रहते है ? मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का मूलभूत मानव अधिकार सर्वमान्य है और न्याय की बात तो यह है कि छात्रो को उनके इस जन्म सिद्ध अधिकार से वचित नही किया जा सकता।

शिक्षा विशेषज्ञो की यह सुविचारित सम्मति है कि शिक्षा का उद्देश्य भली-भाति तभी पूरा हो सकता है जब वह मातृभाषा के माध्यम से दी जाए। कठिन विचार और दुस्साध्य तकनीकी अवधारणाए सदा अपनी भाषा के माध्यम से ही भली भाति ग्रहण की, समझी और समझाई जा सकती हैं। दुर्भाग्य से ऐसी कोई भी बात निष्ठुर राजनीतिज्ञो के हृदयो को प्रभावित या द्रवित नही करती। उन्हे तो हर हालत मे सत्ता से चिपके रहने की ही चिन्ता रहती है।

याद रहे कि राष्ट्रभाषा का प्रश्न ऐसा मौलिक और सारभूत प्रश्न है जिस पर किसी राष्ट्र की नियति अन्तत निर्भर होती है। इस प्रश्न का निर्णय लापरवाही से सरसरी तौर पर नही हो सकता। किन्तु खेद है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही हमारे नेतृत्व का रवैया प्रत्येक महत्त्वपूर्ण मामले मे ऐसा ही रहा है, चाहे वह धर्म निरपेक्षता का हो या समाजवाद का, गोवध-निषेध का हो या मद्य-निषेध का, एक समान नागरिक सहिता बनाने का हो या कश्मीर पजाब समस्या का हल हो। हमारे नेता आखिरकार कब तक राष्ट्र-भाषा के अहम सवाल को समझने की कोशिश मे लगे रहेंगे और समस्या से आमने-सामने होने से इनकार करते रहेगे ?

राष्ट्रभाषा को चेतना जगाएं !

"सस्कृति तब तक गूगी रहती है, जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नही होती राष्ट्रभाषा नही होती। राजनीतिक पराधीनता की हमारी हथकडी-बेडी जरूर कटी हैं, किन्तु अंग्रेजी और अंग्रेजियत के रूप मे हमारे मनोजगत मे जो दासता के चिन्ह विद्यमान है उन्होने हमे निष्क्रिय बना रखा है। भाषा परिधान-मात्र नही, राष्ट्र का व्यक्तित्व है। हमारे बहुभाषी देश के ही समान रूस भी बहुभाषी देश है जिसमे ४२ भाषाए बोली जाती है, किन्तु उनकी राष्ट्रभाषा रूसी है। हमारी सस्कृति के गोमुख से निकली हुई सब भारतीय भाषाए हमारी है किन्तु उनमे अपनी व्यापकता, आरम्भ से ही जनविद्रोह और जनसघर्ष की वाणी देते रहने के कारण एव जीवन के हर क्षेत्र को सम्हालने मे समर्थ होने के कारण हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार किया गया है। केवल सविधान मे लिख देने मात्र से यह बात पूरी नहीं हो पाती, इसे राष्ट्र के जीवन मे प्रतिष्ठित करना होगा, अन्यथा स्वतन्त्रता का क्या मूल्य है ? विश्व चेतना जगाने के पहले अपने देश मे राष्ट्रभाषा की चेतना जगाए।'

—महादेवी वर्मा

मूलभूत प्रश्न यह है कि अंग्रेजी म जन-सामान्य की दक्षता और क्षमता की वर्तमान वास्तविक स्थिति क्या है? तथ्य तो यह है कि लगभग दो सौ साल तक एडी चोटी का पसीना एक करन के बाद भी अंग्रेजी राष्ट्र के हाशिये से भीतर नही घुस पाई, यह मुश्किल से केवल दो प्रतिशत लोगो तक ही पहुच पाई है। ऐसी भाषा सदा-सदा के लिए लोगो के गले के नीचे कैसे उतारी जा सकती है ? हा, अगर सारे राष्ट्र को ही स्वत विदेशी बने पाश्चात्य बौद्धिक बौ.ा और अदना लोगा की भीड मे बदल देना चाहते हे तो और बात है।

ससार म कोई भी देश अपनी भाषा अपनाए बिना अपनी पहचान नही बना सकता। यह एक ऐसी सच्चाई है जिससे इनकार नही किया जा सकता तथा जिस पर बहस नही हो सकती। समग्र मानवता के विचार और सस्कृति की दिशा मे जो कुछ भी योगदान यह देश कर सका है अपनी भाषाओ के माध्यम से ही कर पाया है। राष्ट्र की श्रेष्ठतम प्रतिभाए अपनी भाषाओ के माध्यम से ही उभरी और चमकी है। कालिदास टैगोर तुलसी दास, सूर बकिम चन्द्र प्रेमचन्द ज्ञानदव और अन्य तमाम महामनीषियो की महान् साहित्यिक कृतियो के अनुवाद ससारकी अनेक भाषाओ मे हुए है और ससार भर के विद्वान उनका अध्ययन करते हैं रस लेते है और सराहना करते है। हाल मे दूरदर्शन द्वारा दिखाए गए दो प्रसिद्ध धारावाहिक रामायण और महाभारत अपनी कहानी आप कहते है। कोई ऐसी कृति, जो साहित्यिक उत्कृष्टता के अतिरिक्त, चल-चित्र-निर्माण एव प्रक्षेपण की उत्कृष्टता मे भी उनके बराबर की, पासग मे भी हो, प्रस्तुत कर सकना विश्व की मनीषा के लिए एक चुनौती है। अंग्रेजी के पक्षधर किसी भी कृति को डीग हाकते रहे, वह इनके आश्चर्यजनक रेकार्ड के सामने पानी ही भरती रहेगी।

एक बात और। अंग्रेजी के लिए उपलब्ध सभी टेको और बैसाखियो के होते हुए भी सारे देश मे इसके स्तर मे सर्वतोमुखी ह्रास हुआ है। शैक्षिक सस्थानो, कार्यालयो और अन्य स्थानो म बेचारी अंग्रेजी का जो स्वरूप बोला—सुना जाता है, वह किसी क लिए सम्मानप्रद नही है, बल्कि वह राष्ट्र के सुनाम पर निश्चित कलक है। किन्तु क्या कभी हमने जरा ठहर कर इस मनहूस हालात के कारणा पर विचार करनेका कष्ट किया है ? कारण खोजना मुश्किल नही है। सक्षेप मे कहे तो सारे के सारे विद्यार्थियो को अनिवार्यत कोई भी विदेशी भाषा प्रभावी ढग से और कुशलतापूर्वक सिखाना हर्गिज सम्भव नही है। यही समस्या का मूल है। आजादी मिलने के बाद देश मे शिक्षा का अत्यधिक विस्तार हुआ है, यहा तक कि वह लगभग बेकाबू और अत्यन्त कठिन काम हो गया है, और अगर इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति अपना दिल साफ रखते हुए सचाई बरतें तो कह सकते हैं कि समस्या का कोई सतोषजनक समाधान नही हो पाया। फिर भी स्वेच्छापूर्वक अंग्रेजी सीखने-सिखाने के बारे में कोई आपत्ति नही हो सकती और हमारे जैसे स्वतन्त्र देश मे यही अंग्रेजी का उचित स्थान हो सकता है। (शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य रत्न श्री प्रेमनाथ चड्ढा एडवोकेट का एक परिचय

सोमनाथ मरवाह एडवोकेट

पुराने आर्य समाजी से आशा की जाती थी कि वह आर्य समाज के प्रचार व प्रसार के लिए इतनी जानकारी रखे जिसमे कि वह आर्य समाज के उपदेशो का कार्य कर सके। चू कि शुरू मे आर्य समाज के प्रचारको की कमी थी। श्री चड्ढा जी इस कार्य मे अग्रर्णीय थे और सस्कृत मे उनका अधिकार था। वे आर्य समाज के दैनिक साप्ताहिक व वार्षिक उत्सवा पर उच्च कोटि के वक्ता के रूप मे भाषण दिया करते थे।



श्री चड्ढा जी के विषय मे यह कहा जाय कि वह आल राउण्डर थे, एक विधिवक्ता ही वह न थे किन्तु कानून के ऊपर लिखने मे एक कुशल अनुभवी विशेषज्ञ भी थे। वैदिक धर्म के ऊपर अग्रेजी मे बहुत से ग्रन्था का अनुवाद करना भी उनके लिए कठिन समस्या न थी इसी कारण उन्होने कानून के कई विषयो पर दर्जनो पुस्तके लिखी बल्कि स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो का अनुवाद भी किया।

उनके भरे पूरे परिवार मे चार पुत्र और छ सुपुत्रिया है जिन्हे उन्होने अच्छी शिक्षा प्राप्त करा कर योग्य बनाया। उनका बडा सुपुत्र प्रसिद्ध इकोनोमिक जनरलिस्टो मे गिना जाता है उससे छोटा केमिकल इन्जीनियर है और जर्मनी मे कार्यरत है तृतीय सुपुत्र एन० आ.ई० आर० जिसने बिजनस मैनेजमेन्ट की शिक्षा लन्दन से प्राप्त की और सबसे छोटा पुत्र मैकेनिकल इन्जीनियर है, जो अपना कारोबार करता है, उनकी पाच सुपुत्रिया की शादी हुई थी जिन मे से तीन एम० ए० है और एक मेडिकल इन्स्टीट्यूट चण्डीगढ मे सीनियर प्रोफेसर है। जिस सुपुत्री न शादी नही की वह एक प्रसिद्ध आर्टिस्ट है और वह चड्ढा जी के साथ ही रहती है उनके साथ चड्ढा जी के छोटे सुपुत्र भी एक ही मे रहते है।

चड्ढा जी के एक पुत्र न जो लन्दन व कनाडा मे रहता है उसने भी शादी नही की इस समय वह महात्मा गाधी की जीवनी लिख रहा है। अपने परिवार के इन बच्चो को चड्ढा जी ने केवल उच्च शिक्षा ही प्राप्त नही कराई बल्कि अपने पीछे उनके लिए अच्छी सम्पत्ति भी छोड गए। उनमे से उनका नीतिबाग वाला कीमती मकान भी है।

इस कार्य मे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ज्ञानदेवी भी पूरा सहयोग करती रही। चड्ढा जी के ससुर गुण्डामल उस समय के सिविल इन्जीनियर थे और उन्होन भी यह शिक्षा विदेशो मे जाकर प्राप्त की। वैसे वह जम्मू के निवासी थ। श्रीमती चड्ढा स्त्री आर्य समाज मे सक्रिय रूप से भाग लेती रही और जब उनकी मृत्यु १८ दिसम्बर १९७८ को मलकागज वाले मकान मे हुई तब भी वह स्त्री समाज की प्रधाना थी।

श्री चड्ढा जी का जन्म २२-१२-१९०२ को एक अमीर घराने इच्छा मे हुआ, जो कि लाहौर के नजदीक है। उनके पिता श्री स्वायाराम चड्ढा जी की बहुत सी जायदाद थी। वे ईटो के भट्टे का काम भी करते थे। जो कि बाद मे अपने दो छोटे बेटो को सौप दिया। श्री प्रेमनाथ चड्ढा के दो बडे भाई थे उनमे से एक प्रसिद्ध डाक्टर था और दूसरा पुलिस मे था।

श्री प्रेमनाथ चड्ढा ने गवर्नमेट कालेज लाहौर से बी० ए० की डिग्री बडे अच्छे नम्बरा से प्राप्त की (मैरिट डिस्टेकशन) उनकी इच्छा थी कि वे कैमिस्ट्री मे और बडी डिग्री प्राप्त करके दूसरो को सिखलाने के लिए अध्यापक बने। परन्तु उनके पिता की इच्छा थी कि वे वकील बने। इसलिए उन्होन वकालत की डिग्री लेकर लाहौर मे वकालत प्रारम्भ कर दी और कानून के ऊपर विद्यार्थियो के लिए पुस्तके भी लिखी और वे प्रकाशित हुई।

देश के विभाजन के कारण वे दिल्ली आये और अपनी वकालत शुरु की। और नौलिवार बैंक आफ लाहौर के आफीशियल लिक्विडेटर बनाये गए, तथा जिन लोगो का बैंक मे रुपया था और पाकिस्तान से भाग कर भारत मे आ गय उनको रुपये दिलवाने मे बडी सहायता की इसी कारण वे बाद मे जब दिल्ली हाईकोर्ट मे प्रैक्टिस करते थे, तो वे डालमिया ग्रुप के कानूनी परामर्शदाता बनाये गए।

दिल्ली मे आ जाने पर उन्होने उन लोगो के लिए जो पाकिस्तान से उजड कर भारत मे आए थे। उन सबकी जानकारी के लिए वे गवर्नमेण्ट से किस तरह सहायता प्राप्त कर सकते है और मुसलमानो की जायदाद जो पाकिस्तान चली गई थी प्राप्त कर सकते है, और जो जायदाद पाकिस्तान मे छोड आए हैं उसके विषय मे भारत सरकार से क्या सहायता प्राप्त कर सकते है इस सब पर जो एक्ट पजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया ने इस विषय मे बनाये उन सब पर चड्ढा जी ने बडी लगन व सूझ-बूझ के साथ बहुत समय लगा कर किताबे लिखी और बडे सस्ते दामो पर लोगो को प्राप्त कराई।

उपरोक्त विषया के अलावा उन्हान पार्टनरशिप एक्ट, कम्पनी एक्ट, हिन्दू ला, जैसे विषया पर भी कानूनी किताबे लिखी। यही तक नहीं बल्कि वे दिल्ली ला टाइम्स जिसमे दिल्ली हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के निर्णय प्रकाशित होते है और गवर्नमेट की तरफ से जो रूल्स व नोटिफिकेशन प्रकाशित होते है। इनका चड्ढा जी सम्पादन किया करते थे और अपनी मृत्यु तक उससे सम्बन्धित रहे।

एक वकील होने के अतिरिक्त उन्होने आर्य समाज के कार्य मे बढ चढकर भाग लिया। और आर्य समाज के धार्मिक ग्रन्थो को भी अग्रेजी मे अनुवादित किया। और छपाया। वे आर्य समाज से बचपन से ही प्रभावित थे और इसी कारण उन्होने सस्कृत पढने के लिए अपना निश्चय किया और सस्कृत मे उनकी इतनी अधिक जानकारी थी कि वे उपनिषदो का अग्रेजी मे अनुवाद कर सके। सस्कृत व्याकरण की उनको बहुत अधिक जानकारी थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के बहुत से ग्रन्थो जैसे व्यवहार भानु, गोकरुणानिधि, ईशोपनिषद और वैदिक मन्त्रो का अग्रेजी मे अनुवाद किया यहा तक कि उन्होने हिन्दी के शब्दो को जो कि कानून मे प्रयोग किए जाते है, इन कानूनी शब्दो की अग्रेजी मे डिक्शनरी भी बनाई। परन्तु ये अभी प्रकाशित होनी थी कि उनका देहावसान हो गया। एक पुस्तक को निरीक्षण के लिए सार्वदेशिक सभा मे भेजा ताकि सार्वदेशिक की स्वीकृति के पश्चात् उसको छपवा दिया जाये। यह पुस्तक सार्वदेशिक सभा ने ही अपनी ओर से छपवाने का विश्वास दिला दिया था।

जैसा कि ऊपर लिखा है कि श्री चड्ढा जी न आर्य समाज के प्रचार व शिक्षा के लिए एक गुरुकुल १९३४ म छोटे ब्रह्मचारियो के लिए अपने ही व्यय से चलाया और जैसे कि स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने दो सुपुत्रो को सबसे प्रथम प्रवेश कराया वैसे ही चड्ढा जी ने अपने सबसे बडे सुपुत्र को ब्रह्मचारिया के साथ प्रवेश कराया। इसके अतिरिक्त उन्होने मिडिल तक आर्य समाज का स्कूल चलाया यह उस समय की बात है जबकि वहा उर्दू भाषा का प्रयोग होता था और मौलवी उन स्कूला मे अध्यापक होते थे। चड्ढा जी न लडकियो के लिए भी गुरुकुल चलाए। और पढाने का माध्यम हिन्दी और सस्कृत के अतिरिक्त अग्रेजी के साथ दूसरी भाषाओ के लिए अपने स्कूल मे प्रबन्ध किया। इन सब विद्यालयो में वे ही अध्यापक व अध्यापिकाए रखी गई जो आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित ही नही थे बल्कि कट्टर आर्य समाजी थे। इस प्रकार वहा आर्य समाज का इतना प्रचार हुआ कि डी० ए० वी० मनेजिग कमेटी गुरुकुल की दृष्टि मे एक बहुत बडी वैदिक शिक्षा का प्रचार व प्रसार करने का माध्यम बना।

जहा चड्ढा जी एक विद्वान और एक विधिवक्ता थे वहा वे आर्य समाज ी छाप लोगो पर लगाने मे बहुत सफल हुए तथा उनकी आर्थिक सहायता करने म भी सबसे आगे रहे, इसके अतिरिक्त पहाडो की चोटियो पर भी चढने का शौक था। और उन दिनो बिना आक्सीजन के प्रबन्ध के वे हिमालय की ऊची से ऊची चोटी पर चढने की कोशिश करते रहे। जैसे कि तेनसिंह माउण्ट एवरेस्ट पर पहुचे। और वे यहा तक कहा करते थे कि अगर वे सारी सुविधायें जो तेनसिंह को प्राप्त हुई हैं अपने युवाकाल मे प्राप्त होती तो माउण्ट एवरेस्ट पर चढने मे सफल होते। वे इस प्रकार के दृढ विश्वासी थे।

मेरा उनसे सम्बन्ध तब हुआ जब मैं १९५३ मे अपने मलकागज वाले मकान मे रहने गया। चड्ढा जी उसी मकान के समीप किराये पर रहते थे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

संध्या से होता प्राणमय कोष का परिपोष-२

—देवनारायण भारद्वाज

मनु महाराज का कथन है कि जस अग्नि मे तपान से स्वण आदि धातुओं का मल नष्ट होकर व शुद्ध हो जाती है वसे ही प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियो के दोष क्षीण होकर वे निमल हो जाती है। ऋग्वेद भाष्य भूमिका मे महर्षि न उल्लेख किया है कि बारम्बार अभ्यास करने से प्राण उपासक के वश मे हो जाता है। प्राण के स्थिर होने से मन मन के स्थिर होने स आत्मा भी स्थिर हो जाती है। इन तीनो के स्थिर होन के समय अपने आत्मा के बीच मे जो आनन्द स्वरूप अतर्यामी परमेश्वर है उसके स्वरूप मे मग्न हो जाना चाहिए।

यहा पर हमारा प्राणायाम के विधि विधान एव प्रक्रिया के वणन का प्रयोजन नही है। हमारा तो यहा पर वणन करने का केवल इतना प्रयोजन है कि प्राणायाम एव इसके मन्त्रो म हम क्या लाभ प्राप्त होता है और इससे हम अपने प्राणायाम एव कोष का किस प्रकार परिपोष कर सकते है। अपन हाथो से जब हम कोई भारी वस्तु ऊपर उठाते है तो हमे अपने शरीर के अन्दर स्थित प्राण को केन्द्रीभत करके बल लगाना पडता है। ब्रह्मचारी इसी प्राणायाम के द्वारा सरिया मोडने छाती के ऊपर पत्थर तुडवान आदि के करतब दिखाते है। प्राणायाम से हमे मन की एकाग्रता प्राप्त होती है। यही हमारी उपलब्धि नही है। उपलब्धि ह कि एकाग्र मन को प्रभु चिन्तन म लगा देना। आपने घण्टी बजाई सेवक उपस्थित हो गया उसे बतान के लिये आपके पास कोई काम नही हैं वह चला जायेगा। मन रूपी सेवक आ गया है तो उसे प्रभु की ओर लगा दिया जाय। मन की एकाग्रता कोई अनहोनी वस्तु नही है। तीरदाज हो बन्दूक बाज हो अन्यथा अन्य कोई भी काय करने वाला व्यक्ति हो—वह काय तभी कर पाता है जब अपने मन को एकाग्र करके उस काय मे प्रवत कर देता है। चिडीमार भी यही करता है। इसलिय मन की एकाग्रता से अधिक महत्वपूण है एकाग्र मन से लिया जाने वाला काय।

अब तक हमने अन्नमय कोष और उसके अन्दर सन्निहित प्राणमय कोष को अपन पिण्ड मे ब्रह्माण्ड की शक्तियो के द्वारा परिपुष्ट करने का यत्न किया है। हमन पहल जो टायर ट्युब मे हवा भरकर वाहन चलान का उदाहरण दिया था। हाड माम का स्थल शरीर अन्नमय कोष है—यह हम जान ही गय हैं। उसमे जो रक्त सचार एव वायु का प्रचलन है वही प्राणमय कोष है। प्राण अपान उदान समान एव व्यान यह प्राण के पाच रूप है—पाच उपप्राण भी है। अधिक वर्गीकरण कर इनकी सख्या ४९ पवन तक न जाई जाती देखी गई है। ब्रह्माण्ड या पिण्ड के भिन्न भिन्न अगो मे जो प्राण की क्रिया होती है उसी के अनुसार उनका पथक नामकरण कर दिया जाता है किसी का काय ओषजन आक्सीजन) का एकत्रीकरण होता है। किसी का शरीर के मल पदार्थो को खिसका कर नीचे लाते हुए मल द्वार या मूत्र द्वार से बाहर निकालने का काय होता है। किसी का काय समान रूप से रक्त सचार करत रहने का होना है और किसी का काय ग्रीवा से ऊपर रक्त प्रवाह करने का होता है। रक्त के साथ आक्सीजन को शरीर के सभी अगो मे भेजकर सम्पूण शरीर का वम्र रखने का प्रयत्न ही प्राणमय कोष का काय है।

प्राणायाम के नियम शरीर मे पाणो के सुगम आहरण मे सहायक हैं। शौच शुद्ध होने पर ही कर भोजन के तुरन्त बाद न करे प्राणो के आहरण एव विसजन की क्रिया बहुत धीरे धीरे करे तथा प्राण को बाहर या भातर उतनी ही देर रोके जितनी देर सुखपूवक रोक सके और इस प्रकार वायु की आक्सीजन प्रत्यक्ष या रक्त के माध्यम से शरीर के सभी अगो मे पहुचती रहे। ★

श्री प्रेमनाथ चड्ढा

(पृष्ठ ७ का शेष)

और आय समाज सानगज के कई वर्षों तक प्रधान रहे और उसका उन्नति के लिए धन इकट्ठा करन म भी बडा सहयोग दिया। वे आयसमाज के विचारो के वक्ता भी थ। और आय समाज मे साप्ताहिक सत्सग म सत्याथ प्रकाश के प्रवाचक के रूप म विस्तार पूवक अपने विचार देत थे। इस प्रकार सत्याथ प्रकाश उस समाज म कई बार शुरू से अन्त तक विचार सहित विस्तार पूवक पढी गई।

वार्षिकोत्सवो मे धन एकत्रित करना तथा सारा प्रबन्ध करना भी वह अपना उत्तरदायित्व समझते थ। आय समाज के विषय म यदि कोई प्रचारक किसी त्रुटि अथवा अथ को गलत कर जाते थ तो व उसको उसी क्षण बता कर ठीक कर देत थ।

प्रेमनाथ चडढा जी एक कमयोगी थ। आय केन्द्रीय सभा म भी व कई वर्षों तक सदस्य रहे। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की ओर भी उनका ध्यान रहता था। पजाब प्रतिनिधि सभा के विभाजन से पहले उस सभा से भी सम्बन्धित थ। सावदेशिक सभा मे भी अन्तरग सभा के सदस्य रहे। इन सभी कारणो से जब यह निणय लना था कि दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा का प्रथम प्रधान कौन रहे तो चडढा जी का ही नाम इस पद को सुशोभित करन के लिए सब सम्मति से निश्चित हुआ। और व प्रथम बार प्रधान चने गए।

इन्डिया मेडिकल अस्पताल म जहा दो दिन तक वह बेहोशी म रहे ५ फरवरी १९९ को समय पूरा हुआ। मुझ उनके एक नजदीकी व्यक्ति जो कि उनका बतौर जूनियर वकालत करता था ने बतलाया कि चडढा जी बीमार हे और आल इण्डिया मेडिकल म भर्ती है। मैं जब हाईकोर्ट से निपट कर शाम को साढे चार बजे के करीब अस्पताल गया तो यहा से पता चला कि उनकी मृत्यु प्रात ११ बजे हो गई और अब घर आकर नीतिबाग से फोन किया तो पता चला कि चडढा जी के परिवार वाला न नमस्कार कर दिया और इस तरह मे उनके अन्तिम दशन स वचित रह गया। और रात का जब उनके घर गया तो उनकी बीमारी के सम्बन्ध म सारी जानकारी मिली। पता चला कि जस परमात्मा म दृढ विश्वास रखत थ और ओ३म गायत्री मत्र तथा अन्य मन्त्रो का उच्चारण करते थ। इसी प्रकार व आखिरी समय ओ३म करते हुए देहाश हो गये और उनकी शोक सभा ८ फरवरी ९२ को नीति बाग म हुई। जिसम सावदेशिक सभा के प्रधान आनन्दबोध जी ने चडढा जी के विषय म अनुभवपूण जानकारी देकर श्रद्धाजलि दी। आय समाज का महत्ती क्षति उनकी मृत्यु स बताई उनके जीवन के विषय म आय समाज के काय और पुस्तको के लिखन की जानकारी लोगो को बताई।

ऐसे व्यक्ति का जीवनी सभाओ के पत्रो मे दी जा रही है जिससे आय समाज और उनक पारिवारिक जनो को ऐसे व्यक्ति के जीवन से प्ररणा मिलती है और दूसरे व्यक्ति को भी आय समाजी व्यक्ति का कैसा जीवन है परिचय मिलता है। यह आश्चय की बात है कि चडढा जी ऐसा करने मे किस प्रकार समय निकालते रहे और अन्त म ९० वष की आयु प्राप्त कर वह हमे छोड गए। उनका जन्म २९ दिसम्बर १९०२ को हुआ।

प्रभु करे ऐसे महापुरुष से सबको प्ररणा मिले और उनके परिवार तथा दूसरे निकट सम्बन्धियो को उनके काय को पूरा करन मे सफलता मिले। वह अपने पीछे अपनी वसीयत म बहुत आय समाज की सस्थाओ को दान की राशि लिख कर छोड गये और इस तरह अन्त तक आय समाज के विषय मे प्रयत्नशील रहे।

कब होगी मुक्ति

(पृष्ठ ६ का शेष)

भाषा समस्या हल करने के लिए यदि अधिकारियो मे अपेक्षित इच्छाशक्ति और सकल्प शक्ति होती तो इतने वर्षों का समय निश्चय ही पर्याप्त था। सभी मोर्चो पर अत्यत हठधर्मितापूवक अपनाई हुई अन्यमनस्कता की वतमान नीति ने देश को वतमान दयनीय स्थिति मे ला छोड़ा है। अन्तिम विश्लेषण का परिणाम यह है कि यह सब सत्ता का खेल है। इतने सालो तक सत्ता का निर्बाध उपयोग करते रहने के बाद अग्रेजी-पढा विशिष्ट वग जिसने इस समय पतवार पकड रखी है उसे आसानी से छोड देगा ऐसी आशा नहीं की जा सकती। उसे राष्ट का ध्यान बिल्कुल नही है और वह अपनी पकड बनाए रखने के लिए अन्त तक लडेगा। उसके विरुद्ध दृढ निश्चय पूवक सघष हो तभी वह दब सकता है।

इस मामले मे गाधी जी ने जो कहा था उससे अधिक निर्णायक कुछ भी कहना सम्भव नही है। आइए जरा ठहरकर उनके दूरदर्शी विचारो पर ध्यान दें। उन्होन निर्णायक मोड देते हुए जोर देकर कहा था 'स्वराज्य की अपनी अवधारणाके ऊपरही हमारा निर्णय निभर है। यदि यह स्वराज्य केवल अंग्रेजी जानने वाल भारतीयोका और केवल उनके लिए ही है तो निस्सन्देह अग्रेजी सवसामान्य माध्यम है ही। किन्तु यदि यह करोड़ो भूखे निरक्षर स्त्री पुरुषो और दलित अछूतो का और उनके लिए है, तो केवल हिन्दी ही एक सव सामान्य भाषा हो सकती है।"

आर्य वीर दल की गतिविधियां

गुन्नौर में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल उपमण्डल गुन्नौर बदायू) के सयोजकत्व मे आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर १ जून न ७ जून १९९२ तक हरिबाबा जनता इण्टर कालिज गवा बदायू) म श्री क्षेत्रपालसिंह सरक्षक एव शिविराध्यक्ष के दिशा निर्देशन मे ऐतिहासिक सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर मे ६५ आर्य वीरो न भाग लिया। सुयोग्य शिक्षक श्री सजीव आर्य ने अपने सहयोगी शिक्षको के साथ आर्य वीरा को नित्य प्रति चरित्र एव शारीरिक विकास हेतु व्यायाम, योगासन, लाठी, भाला छुरी, जूडो, द्व दयुद्ध तथा लेजियम आदि का सराहनीय अभ्यास कराया।

६ जून १९९२ को गवा कस्वा मे आय वीरा द्वारा भव्य एव ऐतिहासिक पथ सचालन प्रदर्शन किया गया। पूर्ण गणवशधारी अनुशासित आर्य वीरो के द्वारा स्थान-स्थान पर लाठी, भाला छुरी लेजियम आदि के मनोहारी वीरतापूर्ण प्रदर्शन को देखकर अपार जन समुदाय मन्त्र मुग्ध हो गया तथा स्थान-स्थान पर आर्य वीरो का शीतल, पेय स्वल्पाहार एव पुष्प वृष्टि करके भव्य स्वागत किया। पथ सचालन का नेतृत्व शिविराध्यक्ष श्री क्षेत्रपालसिंह ने किया।

७ जून १९९२ को प्रात काल प० राजपाल जी शास्त्री द्वारा आर्य वीरो का यज्ञोपवीत सस्कार किया गया। सायकाल को समापन समारोह का आयोजन हुआ। जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज गवा के कोषाध्यक्ष श्री आनन्द स्वरूप अग्रवाल ने की। श्री जयनारायण आर्य सचालक आर्य वीर दल प० उ प्र मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर श्री रमेशचन्द्र जी सचालक आर्य वीर दल बदायू गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ गुरुकुल सूर्य कुण्ड बदायू के अतिरिक्त सुदूर ग्रामीण अचल से आये अनेक आर्यजन तथा कस्वा गवा के गण्यमान लोग भारी सख्या मे उपस्थित थे। —शिविराध्यक्ष

कोटद्वार में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल का शिविर आर्य समाज कोटद्वार म २१-५ ९२ से ३१-५-९२ तक लगा शिविरका सचालन आर्यवीर दल सहारनपुरके द्वारा हुआ समापन समारोह मे मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्रसिंह नेगी भूतपूर्व एम एल ए थे शिविर सचालन श्री विशम्भर देव शास्त्री व जनेश्वर प्रसाद मन्त्री आर्य वीर दल द्वारा सम्पन्न हुआ शिविर मे ५३ आर्य वीरो ने भाग लिया। लाठी, व्यायाम, दण्ड बैठक, यज्ञ, सन्ध्या, जूडो कराटे सभी आर्य वीरो को सिखाए गए।

—जनेश्वर प्रसाद मन्त्री
आर्य वीर दल जनपद सहारनपुर

आर्य वीर दल जीन्द द्वारा आयोजित तीसरा आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल जीन्द ने स्थानीय जाट उच्च विद्यालय मे ३१ मई १९९२ से ७ जून १९९२ तक अपने तीसरे आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। शिविर का भव्य उदघाटन रविवार ३१ मई को साय ५ ३० बजे माननीय डा० रामभक्त लाम्बा H C S. S D M जीन्द के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ और उदघाटन समारोह की अध्यक्षता सेठ लक्ष्मीनारायण जी बसल ने की। शिविर मे लगभग २० अलग-२ गावो और कस्बो से शिविरार्थी आये और ७ दिन तक बडा अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविरार्थियो की सख्या ८० रही। स्थानीय तीनो समाजो ने स्त्री आर्य समाज वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द ने तथा युवा सगठन गाव चोगढ़िया ने इस शिविर मे भरपूर सहयोग दिया। समापन ७ जून १९९२ को सुबह ७-३० से १२ बजे तक प्रीतिभोज के साथ सम्पन्न हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि नगर के युवा वकील तथा आर्य परिवार से सम्बन्धित श्री सुरेन्द्रसिंह जी चूघिया थे और अध्यक्षता जाने माने आर्य नेता श्री अभयसिंह जी आर्य भू० पू० अध्यक्ष म० पा० जीन्द ने की। आर्य वीर दल हरियाणा के प्रान्तीय अधिष्ठाता पूज्य स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती ने भी आर्य वीरो को अपना आशीर्वाद दिया।

—सुभाषचन्द्र आर्य सयोजक शिविर

पूर्व अंचल में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

गुवाहटी—आर्य प्रतिनिधि सभा असम एव आय समाज गुवाहटी द्वारा आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर दिनाक ४-६-९२ से १४-६-९२ तक आयोजित किया गया जिसमे शहरी एव ग्रामीण क्षेत्र के ३३ आर्य वीरो ने भाग लिया। सावदेशिक आर्य वीर दल की ओर से पानीपत (हरियाणा) से आये शिक्षक श्री अनिल कुमार आर्य ने आर्य वीरो को आसन, प्राणायाम, दण्ड बैठक लाठी, कराटे सैनिक शिक्षा एव बौद्धिक शिक्षण दिया। जिससे प्रभावित होकर कई आर्य वीरो ने मासाहार त्यागने एव प्रतिदिन व्यायाम करन का व्रत लिया। समापन समारोह की अध्यक्षता श्री किरन शर्मा उपप्रधानाचार्य बी० बरुआ कालेज न की। इस अवसर पर आर्य वीरा द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया गया जिसकी सभी उपस्थित सज्जनो ने प्रशसा की।

—नारायणदास प्रधान
असम आर्य प्रतिनिधि सभा

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज केराकत जौनपुर का वार्षिकोत्सव १४ से १७ मई तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको ने वैदिक सस्कृति को अपनाने तथा चरित्र निर्माण पर बल दिया। इस अवसर पर अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया।

आर्य समाज मुगल सराय का वार्षिकोत्सव १ से ४ जून तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य नरेश दिल्ली, अशर्फीलाल जी श्रीमती सावित्री देवी, रामप्रसाद पाण्डे, वीरेन्द्र जी सहित अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशको ने अपने विचारो से जन साधारण को भाव विभोर कर दिया। इस अवसर पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा युवा सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री योगेन्द्र कुमार जायसवाल ने की।

आर्य समाज घोसी का १० वा वार्षिकोत्सव ८ से १० मई तक समाज के प्रधान श्री रामप्रसाद वर्मा की अध्यक्षता मे सानन्द सम्पन्न हुआ। विद्वान वक्ताओ मे श्री प० सत्यमित्र जी शास्त्री ने आर्य समाज की उपलब्धियो की चर्चा करते हुए वर्तमान समय मे आर्य समाज की आवश्यकता पर बल दिया।

आर्य समाज भीकमपुर जैनी का १२ वा वार्षिकोत्सव दिनाक १७ से २० मई तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर वेद, आर्य वीर दल आधुनिक समस्या और आर्य समाज, समाज सुधार सभी समस्याओ पर विचार किया गया। विद्वानो के विचारो से जनता मे नई चेतना का उदय हुआ।

पं० क्षितीश वेदालंकार अस्वस्थ

आर्य जगत् के प्रमुख विद्वान आदरणीय प० क्षितीश वेदालकार जी पिछले १ वष से अस्वस्थ चल रहे हैं। आजकल आपका स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ है। सार्वदेशिक परिवार ने उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है।

शोक समाचार

गढवाल मण्डल के स्वतन्त्रता सेनानी आर्य समाज के जागरूक कार्यकर्ता और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त श्री शान्तिप्रकाश प्रेम १८ जून १९९२ को प्रेम कुटी कुणजोली, मात्ली, (पवपुरी) गढवाल मे अपनी सासारिक जीवन यात्रा को पूर्ण करते हुए दिवगत हो गये हैं। उनके निधन से उत्तराखण्ड मे आर्य समाज के प्रचार कार्य को अपूर्णीय आघात पहुचा है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री प्रेम जी के निधन को राष्ट्रीय क्षति बताते हुए अपने शोक सन्देश में कहा कि शान्तिप्रकाश जी ने सार्वदेशिक सभा के साथ हमेशा अपना सम्पर्क बनाये रखा और गढवाल मण्डल मे उन्होने कई बार आर्य सम्मेलनो का आयोजन किया था। उन्होने शोक सतप्त परिवार के लिए आर्य जगत् की ओर से हार्दिक सवेदनाए प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए कामना की।

—आर्यसमाज के महोपदेशक, वेदो के प्रकाण्ड पण्डित श्री वेद प्रिय शास्त्री आचार्य गुरुकुल सीनाबाडी, कोटा (राज०) की पूज्य माताजी के देहावसान पर आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवन्डी कोटा के समस्त सदस्य सवेदना प्रकट करते हैं। और परमात्मा से दिवगत आत्मा की शान्ति एव सद्गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को इस असह्य दुख को सहन करने की क्षमता करने की प्रार्थना करते हैं। यह शोक प्रस्ताव आज दिनाक २१-६-९२ के साप्ताहिक सत्सग मे पारित किया तथा दो मिनट के मौन के पश्चात् सभा की कार्यवाही समाप्त की गयी।

— हनुमानप्रसाद

—श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के ट्रस्टी, आर्य समाज के वयोवृद्ध प्रतिष्ठित नेता एव इरोज ग्रूप आफ कम्पनी के मालिक श्री रतनचन्द जी सूद का देहावसान १३ जून १९९२ को हो गया।

उक्त दुखद घटना के उपलक्ष्य मे दयानन्द स्मारक महालय मे एक शोकसभा का आयोजन किया गया, जिसमे शोक प्रस्ताव पारित करते हुए उपस्थित व्यक्तियो ने सद्गत आत्मा की शान्ति एव शोकाकुल परिवार को दुख सहन करने की शक्ति हेतु परमात्मा से प्रार्थना करते हुए, अपने-अपने श्रद्धा सुमन स्वर्गस्थ आत्मा को अर्पित किए।

—अरुण कुमार

—आर्यसमाज गाजीपुर के कर्मठ कार्यकर्ता एव अन्तरग सदस्य श्री गुलाबचन्द चौरसिया का निधन दिनाक १० ६-९२ को हो गया। साप्ताहिक सत्सग दिनाक १४-६-९२ दिन रविवार को दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये एव शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए भगवान से प्रार्थना की गई।

—मन्त्री आर्यसमाज गाजीपुर

दानवीर श्री रतनचन्द सूद नहीं रहे

दानवीर व अनेको आर्य सस्थाओ के पदाधिकारी, एरिज ग्रूप के मालिक माननीय श्री रतनचन्द सूद जी का देहान्त १३ जून १९९२ को लम्बी बीमारी के पश्चात् हो गया। अपने पीछे सस्कारित आर्य परिवार छोड गये हैं। उनके निधन से "आर्य जगत" की गहरी क्षति हुई है। सार्वदेशिक परिवार की तरफ से श्री सूद की मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया गया और परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सद्गति की कामना की गई।

विदेश समाचार—

ये संसार क्यों और किसने बनाया ?

आर्य प्रतिनिधि सभा नीदर लैण्ड वदिक धर्म के प्रचार प्रसार में निरन्तर अग्रसर हैं। वहा पर नित्यप्रति सत्सग का कार्यक्रम होता है। प्रस्तुत है वही से एक धर्मप्रेमी सज्जन द्वारा भेजा गया एक लघु लेख। —सम्पादक

(१) ये ससार क्यो और किसने बनाया ?

परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत की उत्पत्ति करके सब जीवो को असख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है। ईश्वर, जीव और प्रकृति अनादि है। जीव जो कर्म करता है उसके कर्मो को भोगने के लिए सृष्टि की रचना ईश्वर ने प्राणियो के लिए की है। जगत की उत्पत्ति स्थिति प्रलय करना ईश्वर का स्वभाव है। इसलिए परमात्मा प्राणियो के कर्मानुसार सृष्टि का सर्जन व सहार करता है। ईश्वर न समस्त सृष्टि प्राणियो के लाभ और हित के लिए बनाई है। सृष्टि के निर्माण का उद्देश्य है जीवो का विकास।

जीवो को ईश्वर ने उत्पन्न नही किया है परन्तु वह उन पर आधिपत्य रखता है अर्थात् उनकी भलाई के लिए सृष्टि को नियम मे रखता है। उनको शरीर देता है, सृष्टि के अनेक पदार्थों को उनके भले के लिए बनाता है, कर्म और फल की व्यवस्था करता है। इसलिए हम कहते है कि ईश्वर हमारा पिता है। ईश्वर द्वारा सृष्टि रचना का कारण, जिससे जीवो को कर्म करने का क्षेत्र मिल सके।

(२) ससार की उत्पत्ति कब हुई ?

१७ वी शताब्दी तक यह विश्वास किया जाता था कि सृष्टि का आरम्भ ईसा से ४००० वर्ष पूर्व (अर्थात अब से करीब ६००० वर्ष पहले) २९ अक्तूबर को सुबह ६ बजे हुआ था। अब से अर्थात सम्वत् २०४८ (ईसवी सन १८-३ १९९१)से १,९६,०८५३०९१ वर्ष (एक अरब छियानबे करोड आठलाख तिरपन हजार इक्यानवें) अर्थात वेद और जगत की उत्पत्ति मे हो गये हैं। २,३३३२२६९०९ वर्ष (दो अरब तैतीस करोड बत्तीस लाख छब्बीस हजार नौ सौ नौ) इस सृष्टि को भोग करने के बाकी रहे है।

(३) वेदो की उत्पत्ति ?

जो ज्ञान ईश्वर ने मनुष्य को दिया उसे ही वेद के नाम से पुकारा जाता है। यह वेद ज्ञान अन्तरिक्ष मे तरगो के रूप मे प्रवाहित होता है। और जो मनुष्य आदि सृष्टि मे होते है उनमे से कुछ ऋषि कोटि के विद्वान होते है जो इन तरगो का भावार्थ समझकर इसे अन्य मनुष्यो को समझाते है। प्रथम सृष्टि के आदि मे परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अगिरा, इन ऋषियो की आत्मा मे एक-एक वेद का प्रकाश ससार के उपकार के लिए दिया। इन ऋषियो न अन्य मनुष्यो मे इसका प्रचार किया।

(४) प्रारम्भ मे कौन सा धर्म था ?

अब से करीब ५००० वर्ष पहल ससार म वैदिक धर्म के सिवा और कोई दूसरा मत, पथ या मजहब ना था। इस प्रकार वैदिक धर्म ही सृष्टि के प्रारम्भ से है।

(५) अगर कोई किसी आर्य से पूछे कि आपका धम क्या है ?

हमारा मत वेद अर्थात जो कुछ वेदो मे कहा है हम उसको मानते है अर्थात वैदिक धर्म है।

प्रवेश सूचना

आपको जानकर हर्ष होगा कि आपके ही निकट के ग्राम विजयनगर (दलौता) पो० पीगरी जिला मथुरा मे कन्या गुरुकुन वर्ष १९९१ जुलाई से चल रहा है। और १ जुलाई १९९२ से इस वर्ष भी प्रवेश हो रहे है। वे छात्राए जो कक्षा ५ पास कर चुकी हैं। वे प्रवश हेतु आवेदन करने के लिये कन्या गुरुकुल से सम्पर्क करके प्रवेश दिलाए।

आवेदन शर्तें —

प्रवेश शुल्क ५००) रु० तथा भोजन की व्यवस्था का खर्च २००) रु० प्रति माह इसके साथ ही साथ मौसम के मुताबिक वस्त्र, भोजन के बर्तन आदि साथ लाने होंगे। व्यवस्थापक—स्वामी महानन्द सरस्वती

कन्या गुरुकुन विजयनगर (दलौता)

गुरुकुल येडशी (महाराष्ट्र) में प्रवेश

महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट आर्ष प्रणाली से शिक्षा देने वाले गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय येडशी (महाराष्ट्र) मे नवीन ब्रह्मचारियो का प्रवेश १० जून से प्रारम्भ हो चुका है। गुरुकुल मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की प्रथमा, मध्यमा शास्त्री व आचार्य की परीक्षाए दिलाई जाती हैं। गुरुकुल मे सस्कृत व्याकरण, वेद दर्शन साहित्य के अतिरिक्त हिन्दी, गणित, भूगोल, इतिहास, विज्ञान व अग्रेजी आदि विषय पढ़ाने की उत्तम व्यवस्था है।

गुरुकुल मे ५ वी कक्षा उत्तीर्ण छात्र जो निरोग, स्वस्थ व मेधावी हैं प्रवेश पा सकेंगे। गुरुकुल निसर्गरम्य पर्वतीय सुन्दर व विशुद्ध वायु मण्डल में स्थित हैं।

प्रवेशार्थी शीघ्रता करे, स्थान सीमित है। आचार्य जी से सम्पर्क करे।

आचार्य सुभाषचन्द्र सिद्धान्त शिरोमणि
प्रधानाचार्य गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय
येडशी (धाराशिव) महाराष्ट्र

प्रवेश आरम्भ

प्रिय आर्य बन्धुओ,

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आपके प्रिय गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल मे एक जुलायी से प्रवेश आरम्भ हो रहे हैं। यह सस्था गगा के सुरम्य तट पर स्थित है, जहा मा भागीरथी कल-कल निनाद करती ऋषिया की वेद वाणी सुनाती हुई बह रही है। यहा की अपनी अलग विशेषताए है जो निम्नलिखित है।

१—शिक्षण पाठ्यक्रम के साथ-साथ यहा यौगिक क्रियाए, आसन, व्यायाम तथा धार्मिक शिक्षा का भी उत्तम प्रबन्ध है।

२—शिक्षा एव आवास की नि शुल्क व्यवस्था है।

३—मध्यमा व शास्त्री के योग्यतम छात्रो को ७५ रुपये मासिक छात्र-वृत्ति प्रदान की जाती है।

४—यहा के आचार्यवृन्द योग्य कुशल व अनुभवी है।

आचार्य इन्द्रपाल
गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल मुजफ्फरनगर

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश आरम्भ

महर्षि दयानन्द मनोवाछित देश का सुप्रसिद्ध शिक्षणालय आपका चिर परिचित श्री आर्य गुरुकुल चित्तौडगढ अरावली की सुन्दर पहाडियो मे गभीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल पर अवस्थित है। वहा शिक्षा सर्वथा नि शुल्क है, यहा लगभग सभी प्रान्त के बालक बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहा की आश्रम प्रणाली सुनियोजित व अनुपम विशेषता सहित उल्लेखनीय है, यहा सुयोग्य एव विद्वान गुरुओ की देखरेख मे बालका का सर्वागीण विकास मुखरित होता है वेद वेदाग सस्कृत, साहित्य, व्याकरण, दर्शन उपनिषद आदि की पढाई को प्रमुखता दी जाती है, पहली से आठवीं तक सस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय अग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामाजिक, भूगोल, हिन्दी आदि विषय पाठ्यक्रम मे समाहित है। गुरुकुल सस्कृत शिक्षा विभाग राजस्थान से मान्यता प्राप्त है।

पढाई १ जुलाई से प्रारम्भ हो रही है, तथा नवीन बालको का प्रवेश २७ से अधिग्रहण है। प्रवेश व अन्य सम्बन्धी जानकारी के लिए सपर्क करें।

मुख्याधिष्ठाता
श्री गुरुकुल चित्तौडगढ, राज०-३१२००१

प्रवेश सूचना

श्री नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद (उ० प्र०) मे नवीन ब्रह्मचारियो का प्रवेश १५ जून १९९२ से ३१ जुलाई १९९२ तक होगा। जो महानुभाव अपने बच्चो को वैदिक एव सस्कृति के पोषक एवं वैदिक विद्वान बनाना चाहते हैं, वे उपर्युक्त तिथियो मे अपने बच्चो का प्रवेश करावे। यहां आर्ष पद्धति के साथ-साथ सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी का पाठ्यक्रम लागू है। रामजी शुक्ल मुख्याधिष्ठाता

श्री निश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या, फैजाबाद

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३-७-१९९२) ग्रि प्र टिकट भेजने का लाइसेंस नं० ११
R.N. 626/57 Licensed to post without Prepayment License No. U 99 Post I N D P.S.O on 9 10-7-1992

श्री देव शर्मा शास्त्री का निधन

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के बड़े भ्राता श्री देव शर्मा शास्त्री का २१ जून १९९२ को लखनऊ अस्पताल मे निधन हो गया है। वह लगभग ७५ वर्ष की आयु के थे और हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानी तथा दयानन्द इन्टर कालेज सुरसा (हरदोई) के प्रबन्धक थे। वह पिछले कुछ महीनो से स्वास्थ्य लाभ के लिए लखनऊ मे थे।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समूचे आर्य जगत की ओर से दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की है।

आर्य समाज कलकत्ता का निर्वाचन

आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक १७ मई १९९२ को आर्य समाज कलकत्ता, १९, विधान सारणी कलकत्ता-६ के सभागार मे आर्यसमाज कलकत्ता के प्रधान श्री सीताराम आर्य की अध्यक्षता मे प्रात ११ बजे से ४ बजे तक सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज कलकत्ता के मन्त्री श्री राजपाल वेदालकार द्वारा वार्षिक विवरण आय-व्यय का लेखा जोखा एव वर्ष १९९२-९३ के लिए बजट प्रस्तुत किया गया एव पास किया गया।

वर्ष १९९२-९३ के लिए निम्न पदाधिकारियो एव अन्तरग सदस्यो का निर्वाचन सर्व सम्मति से निम्न प्रकार हुआ —

प्रधान श्री सीताराम आर्य, उपप्रधान श्री सुखदेव जी शर्मा, श्री यशपाल वेदालकार, श्री छबीलदास सैनी, मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, उपमन्त्री श्री अवधेशकुमार झा श्री अशोककुमारसिंह, व श्री मन्शाराम वर्मा, कोषाध्यक्ष श्री बिन्देश्वरी प्रसाद जायसवाल, हिसाब परीक्षक श्री छोटेलाल सेठ, तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री घनश्याम मौर्य चुने गये।

शोक समाचार

आर्य समाज मच्छी के सस्थापक मच्छी ग्राम के स्वर्गीय श्री मोतीलाल यादव जी की धर्मपत्नि का देहावसान गत १० जून १९९२ को रात्रि मे हुआ, उनका अन्त्येष्टि सस्कार ११ तारीख को १० बजे दिन मे श्री योगनारायण ठाकुर जी के पौरोहित्य में वैदिक रीतिसे सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर उनके कनिष्ठ पुत्र श्री विपिन यादव ने आर्य समाज मन्दिर के निर्माण के लिए कीमती जमीन देने की घोषणा की। तीन दिन तक मृतक के स्थान पर शुद्धि यज्ञ किया गया।

योगनारायण ठाकुर प्रधान

गुरुकुल आश्रम बिठूर (कानपुर) में प्रवेश

गंगातट पर कार्तिकपूर्णिमा १९८४ ई० को स्थापित गुरुकुल आश्रम मे 'गुरुकुल कागड़ी' के पाठ्यक्रमानुसार जुलाई से कक्षा ६ मे छात्र प्रवेश पाते हैं। प्रवेश शुल्क चारसौ अस्सी रुपये हैं। बिस्तर, वस्त्र, पुस्तक लेखन सामग्री का व्यय अभिभावक पर रहेगा। छात्र के आवास, शिक्षण, भोजन, दुग्ध, मक्खन, तेल, साबुन हेतु कम से कम अठारहसौ रुपये के वार्षिक पालक सदस्य बनकर सहयोग देवें। नियमावली निम्नपते से मगावें —

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ (उ० प्र०) पिन-२६२५०१

शुभ विवाह

आर्य कन्या सदन पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली मे दिनांक २५-६-९२ को श्री योगेन्द्रसिंह एव रजनी का पाणिग्रहण सस्कार प० महेन्द्र कुमार शास्त्री की अध्यक्षता मे प० बालेश्वर जी एव प० उपेन्द्र शास्त्री के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री रघुवशी जी, श्री वीरेश प्रताप श्रीमती बाला चौधरी श्रीमती चित्रा चौधरी श्रीमती कुसुम श्री धर्मपाल गुप्ता सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियो ने नवदम्पति को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर सेठ श्री मनोहरलाल जी अग्रवाल चादनी चौक दिल्ली के सहयोग से विशेष भोज की व्यवस्था भी की गई।

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ प्र)

चुनाव समाचार

—आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के वार्षिक चुनाव में श्री शान्तिलाल सूरी एव श्री रामनाथ सहगल सर्वसम्मति से क्रमश प्रधान एव मन्त्री निर्वाचित हुए।

—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के चुनाव इस वर्ष ३१ मई को सम्पन्न हुए जिसमें श्री दरबारीलाल प्रधान एव श्री रामनाथ सहगल महामन्त्री पुन सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए तथा उन्हें अपनी कार्यकारिणी बनाने का अधिकार दिया गया।

—आर्य समाज राणाप्रताप बाग का वर्ष १९९२-९३के लिये अधिकारियो का चुनाव ३१ मई को साधारण सभा मे विधिवत किया गया।

प्रधान श्री जायसवाल साही उपप्रधान श्री तेजपाल महाजन, श्री रमेश चड्ढा, श्री जगोता जी, मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य, उपमन्त्री श्री रमेश डावर, कोषाध्यक्ष श्री देवराज तनेजा श्री विमल कपूर, पुस्तकाध्यक्ष श्रीमती बिमला गुलाटी, प्रचारमन्त्री श्री लीलाधर चौधरी चुने गये।

ओमप्रकाश आर्य मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मच्छी का ४५ वा वार्षिकोत्व गत १०, ११, १२ अप्रैल १९९२ को धूमधाम से मनाया गया। इसमे आर्य जगत के विद्वान एव भजनोपदेशक श्री प० सत्यव्रत वानप्रस्थ श्री पं० नवलकिशोर शास्त्री, आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती धर्मशीला आर्या एवं श्री ठाकुर महावीरसिंह जी, आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पधारे थे। प्रचारका व्यापक प्रभाव रहा।

छात्रवृत्तियां

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नये सत्र के लिए गुरुकुलो, स्कूलो, महाविद्यालयो, व्यवसायिक प्रशिक्षणालयो और अनुसधान संस्थाओं के सुयोग्य और सुपात्र छात्र/छात्राओ और स्पर्धात्मक परीक्षाओं के परीक्षार्थियों और प्रशिक्षार्थियो को छात्रवृत्तिया देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है।

इन छात्रवृत्तियो से लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थियो का चाहिए कि ट्रस्ट द्वारा निर्धारित आवेदन पत्र मगवा कर शीघ्र ही ट्रस्ट के आनरेरी सचिव के नाम निम्नलिखित पते पर भेजें।

गत सत्र इस कार्यक्रम पर ३१,००० रुपये व्यय किए गए हैं। इस सत्र के लिए यह राशि बढाकर ४०,००० रुपये कर दी गई है।

जोगेन्द्रनाथ उप्पल आनरेरी सचिव
श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट
सी-३२, अमर कालोनी
लाजपत नगर, नई दिल्ली-२४

वैदिक धर्म प्रशिक्षण पखवारा

आर्य समाज मन्दिर चौक गया में १ जुलाई से १४ जुलाई तक वैदिक धर्म प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर वैदिक धर्म के सिद्धान्तों, मन्त्रों के शुद्ध पाठ तथा सस्कारादि कराने का प्रशिक्षण दिया जायेगा शारीरिक एव मानसिक विकास के लिये योगासन, व्यायाम, प्राणायाम, ध्यान योग आदि के विशेष शिविर लगाने की व्यवस्था भी समय-२ पर की जायेगी।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

जो पाषाणादि मूर्तियों को न मानकर सर्वदा सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी परमात्मा को सर्वत्र जानता और मानता है वह पुरुष सर्वत्र, सर्वदा परमेश्वर को सबके बुरे भले कर्मों का द्रष्टा जानकर एक क्षण मात्र भी परमात्मा से अपने को पृथक् न जान के, कुकर्म करना तो कहां रहा किन्तु मन में कुचेष्टा भी नहीं कर सकता। क्योंकि वह जानता है, जो मैं मन वचन और कर्म से भी कुछ बुरा काम करूंगा तो इस अन्तर्यामी के न्याय से बिना दण्ड पाये कदापि न बचूंगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अङ्क ४५। दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ श्रावण कृ० ४ सं० २०४९ १९ जौलाई १९९२

पाकिस्तान के मुसलमानों में आपसी संघर्ष

शिया-सुन्नी दंगों में नौ मुसलमान मारे गये

पेशावर १२ जुलाई।

शिया जुलूस के दौरान पाकिस्तान के कई शहरो मे हुये दगो मे कम से कम नौ व्यक्तियो के मारे जाने तथा दर्जनो के घायल होने की खबर है।

सात व्यक्ति उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान के शहर पेशावर मे उस समय मारे गये जब अल्पसख्यक शिया और बहुसख्यक सुन्नी मुसलमानो ने स्वचालित हथियारों से एक दूसरे पर आग बरसानी शुरू कर दी।

मुहम्मद के पौत्र इमाम हुसैन के शहीदी दिवस पर शिया मुसलमानो का एक जुलूस सुन्नी मुसलमानो के इलाके से जब गुजर रहा था तो कुछ शरारती तत्वो द्वारा एक सुन्नी दरगाह मे कुर्सपंठ तथा नमाज की चटाइया तथा इस्लामी किताबो के जलाने से यह दगा शुरु हुआ। सुन्नी उग्रवादी सगठन "अजुमन सिपाहे साहावा" से सम्बन्धित छात्रो ने शिया मुसलमानो पर गोलियां चलाई और शिया मुसलमानो ने भी इसका मुकाबला किया।

केन्द्रीय पाकिस्तान के पजाब प्रान्त के बहावलपुर शहर मे भी इन्ही दोनो समुदायो मे छिडे दगे से कुछ और लोगो के मारे जाने की खबर है। भारत मे पहुची खबरो के अनुसार पाकिस्तान के कुछ अन्य शहरो मे भी इसी प्रकार के दगो की सूचना प्राप्त हुई है जिसमे मारे जाने वालो की सख्या का अभी तक पता नही चला है।

पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम दिनांक १०-६-९२ का अविकल पत्र

सेवा मे श्री स्वामी आनन्दबोध जी महाराज सरस्वती

सादर नमस्ते।

ईश्वर मे आपकी दीर्घ आयु तथा उत्तम स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करता हू। इस समय आर्यसमाज तथा देश की सामाजिक अवस्था अच्छी नही है। सभी ओर विघटन बढ रहा है। आपने बहुत कार्य किया है, जिसका सामान्य लोगो को पता नही है। आपने सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद से त्याग पत्र दे दिया है, आप कृपा करके इसे वापिस ले लीजिए।

कुछ समय के पश्चात् भविष्य मे फिर इस पर विचार हो सकता है। जो लोग आपका विरोध कर रहे है, उन्हे मैंने बहुत समझाया है, अब फिर उन्हे लिख रहा हू, आप लोगो का यह ढग अच्छा नही है इससे आर्य समाज की बदनामी है। आप कृपा करके सभा का कार्य पहले की भाति कीजिए, मैं सदा आपका यश चाहता हू। मैं आपसे सदैव प्रसन्न हू। शुभकामनाओ के साथ —

ह० सर्वानन्द सरस्वती

पत्र संख्या—२

अपने १-६-९२ के ही दूसरे पत्र मे स्वामी जी महाराज ने श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को लिखा है कि मैं इन सघर्ष करने वालो से बिल्कुल सहमत नही था, इन्होने अलग एक अपनी समिति इसलिए बनाई कि यति मण्डल के सन्यासी इनके अनुचित ढग से सहमत नही रहे। क्योंकि इससे आर्यसमाज की बदनामी है। यह जिस ढग से कार्य करते हैं, अनार्य शब्दो का प्रयोग करते हैं, मैंने उन्हे लिखा है कि आपका यह ढग बाजारों मे गालिया देते फिरना सर्वथा अनुचित है। इनमे मेरा कोई चेला नहीं है। मैं सदा आपका यश चाहता हू।

—सम्पादक

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक जी,
सार्वदेशिक साप्ताहिक

बन्धुवर, सादर नमस्ते।

३१ मई के सार्वदेशिक में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती अथवा आर्य समाज के नाम पर स्थापित व्यक्तिगत मठ, ट्रस्ट अथवा आश्रम खोलने तथा चलाने पर डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हू। कोई भी ऐसी संस्था खोलने से पूर्व सार्वदेशिक से आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक समझा जाये। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जिसके नियम तथा सिद्धान्त है। इसी कारण हर स्थान पर आर्य समाज के अधिकारी को भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। देश विदेश मे आर्य समाज की ख्याति बढती जा रही है, इस बात का लाभ उठाकर अवसरवादी पौराणिक लोगो ने यहां (USA) में आर्य समाज खोल लिये है, एक सज्जन तो आर्य-समाज के प्रधान भी है और स्वयं मन्दिर भी खोल रखा है, इनके कहने पर आर्य समाज के पुरोहित भी सत्संग में मूर्तिपूजा को बढ़ावा देते है। आज की जनता रूढ़िवाद से छुटकारा पाने के लिये आर्य समाज की ओर शीघ्रता से आकर्षित हो रही है। आज अमरीका में कितने ही आर्य समाज है। स्वामी आनन्दबोध जी से मैं पहले भी निवेदन कर चुका हूं कि वह विदेश की आर्य-समाजो को भी महर्षि दयानन्द के बताये हुये १० नियमों का कठोरता से पालन करने का आदेश दें तथा आर्य समाज की पत्रिकाओ में धन के लालच से शराब, मांस के विज्ञापन न छापें।

चालाक राजनैतिक सन्यासी नेता अपने आपको आर्य समाजी कहकर भी विदेश में जाकर भोली भाली जनता को लूटते है, इस विषय में भी सार्वदेशिक विचार करे। समय समय पर मैंने अमरीका के समाचार पत्रो के माध्यम से लेख लिखकर यहा की जनता को ऐसे नेताओ से सावधान किया है।

आदर सहित भवदीय

—मदनलाल गुप्ता
पुरोहित, वैदिक धर्म समाज
अलहम्बरा सी० ए०-९१८०१ यू० एस० ए०

२ ईसाई तथा १ मुसलमान युवती वैदिक धर्म में दीक्षित

आदर्श विवाह एवं शुद्धि मन्दिर भागीरथ पुरा इन्दौर मे कु० जूही बिसेन्ट की शुद्धि की गई और उनका हिन्दू नाम जूही आर्या रखा गया और उसका विवाह संस्कार हिन्दू युवक राजेन्द्र कुमार के साथ कराया गया इसी प्रकार—

कु० सिल्वी फिलिप्स की शुद्धि की गई और उसका हिन्दू नाम सरस्वती देवी आर्य रखा गया और उसका विवाह संस्कार भी हिन्दू युवक सुनीलकुमार साकले के साथ सम्पन्न कराया गया। कु० सलमा का शुद्धि संस्कार किया गया और उसका हिन्दू नाम ममता देवी आर्य रखा गया उसका विवाह संस्कार भी सुरेश धौलपुर के साथ सम्पन्न कराया गया शुद्धि एवं विवाह संस्कार आर्य पुरोहित पं० देवप्रकाशजी शर्मा द्वारा कराया गया इस आयोजन की सारी व्यवस्था शंकरसिंह आर्य के द्वारा कराई गई।

संचालक
आदर्श विवाह संघ शुद्धि मन्दिर इन्दौर

भूल सुधार

३१ मई १९९२ के सार्वदेशिक के पृष्ठ ९ पर 'उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धुओं से' शीर्षक से समाचार प्रकाशित हुआ था जिसमे कु० ध्रुवपालसिंह अटल को मुख्य निरीक्षक आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश (खरपरी) भूल से लिखा गया था। सूचनार्थ है कि वह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के निरीक्षक नहीं हैं। वह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश से निष्कासित हो चुके है।

सम्पादक

पड़ेगा वैदिक धर्म निभाना

हे नेताओ अगर देश को, चाहो आप बचाना।
कान खोलकर सुनो, पडेगा वैदिक धर्म निभाना॥
आदि सृष्टि मे परमेश्वर ने ऋषियों को सदज्ञान दिया।
आदित्य, अंगिरा, अग्नि, वायु, ने जग का कल्याण किया॥
लेकिन ऋषियो की शिक्षाओं, पर ना तुमने ध्यान दिया।
मत-मतान्तर पाखण्डो में, फंसकर कर नुकसान लिया॥
बने भिखारी दर-दर के, भूले इतिहास पुराना।
कान खोलकर सुनो, पड़ेगा वैदिक धर्म निभाना॥१॥
उग्रवाद-आतंकवाद बढ़, गया हमारे भारत में।
हत्याए हो रही रात-दिन देखो प्यारे भारत में॥
लेकर के बन्दूक घूमते, हैं हत्यारे भारत में।
आग फूट की लगी भयंकर दुःख है सारे भारत में॥
हमे मिटाना चाह रहा है, पूरी तरह जमाना।
कान खोलकर सुनो पड़ेगा, वैदिक धर्म निभाना॥२॥
हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख यहां जो रहते है।
ऋषियो की सन्तान सभी है, सुख-दुःख मिलके सहते है॥
अलग-अलग धाराओ में ये, बोलो फिर क्यो बहते हैं।
बात काम की सुनो हमारी, आज साफ हम कहते है॥
सबके लिए समान यहां, होगा कानून बनाना।
कान खोलकर सुनो पड़ेगा, वैदिक धर्म निभाना॥३॥
ऋषियो की प्यारी धरती भारत से जिनको प्यार नही।
देवो के भारत में उनको, जीने का अधिकार नहीं॥
गद्दारो का आप करोगे, जब तक ठीक सुधार नही।
याद रखो प्यारे भारत का, बेड़ा होगा पार नहीं॥
"निर्भय" होकर गाओ अब तो देश भक्ति का गाना।
कान खोलकर सुनो पड़ेगा, वैदिक धर्म निभाना॥

—पंडित नन्दलाल "निर्भय" सिद्धान्त शास्त्री
ग्राम पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज "हनुमान रोड" नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव इस वर्ष १२ अक्टूबर से १८ अक्टूबर १९९२ तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

१२ अक्तूबर से प्रात यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा, जिसकी पूर्णाहुति रवि-वार १८ अक्टूबर, १९९२ को होगी तथा रात्रि को ७.३० बजे से ९.०० बजे तक प्रवचन तथा मधुर भजन होंगे।

मेरी दिल्ली की समस्त आर्य समाजों से, विशेषकर चांदनी चौक एवं दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र की आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजों, गुरुकुलों तथा अन्य आर्य शिक्षण सस्थाओ, प्रतिष्ठित आर्य बन्धुओ से प्रार्थना है कि वे उपरोक्त तिथियां अभी से अंकित कर लें और इन दिनो अपने यहां अन्य कोई कार्यक्रम न रखकर उपरोक्त कार्यक्रम को सफल बनाने में अपने संगठन का परिचय दें। इससे हमें शक्ति और उत्साह मिलेगा। इसके लिए मै व्यक्तिगत रूप से आपका अत्यन्त आभारी रहूगा।

—वेदव्रत शर्मा
मन्त्री, आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

आर्य वीर दल कार्यकर्ता शिविर सम्पन्न

दिनाक २२ जून से २ जौलाई तक प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता मे गुरुकुल कण्वाश्रम मे कार्यकर्ता शिविर का आयोजन किया गया जिसमे चुने हुए व्यायाम शिक्षक तथा अधिकारियो ने आसन, प्राणायाम, ध्यान साधना के अतिरिक्त बौद्धिक का (योग दर्शन, स्वस्थवृत्त, क्रिया शरीर यौगिक चिकित्सा) प्रशिक्षण प्राप्त किया। ५ उपयोगाचार्य और २ उपशास्त्रा-चार्य घोषित किए गए। इस अवसर पर तैरने का प्रशिक्षण, वनभ्रमण तथा पर्वतारोहण के साहसिक कार्यों का भी समायोजन किया गया। आर्यवीर दल के पाठ्य क्रमानुसार नियुद्ध (करांटे, कुंगफू) की वीडियो फिल्म भी बनाई गई।

—हरिसिंह आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा ने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से त्याग पत्र वापस लेने की सर्वसम्मति से मांग की

स्वामी जी के नेतृत्व में पूर्ण विश्वास व्यक्त

दिल्ली १२ जुलाई। आर्य समाज मन्दिर दीवानहाल मे देश के सभी प्रान्तो से पधारे हुए आर्य नेताओ ने सर्वसम्मति से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी से प्रधान पद से त्याग पत्र वापस लेने की सर्वसम्मति से माग की। सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव ने की।

सभा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने अन्तर ग सभा मे स्वामी जी का त्याग पत्र पढकर सुनाया। देश की सभी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ के अधिकारियो तथा बैठक मे पधारे अन्य सभी सम्भ्रान्त आर्यो ने अगले दो वर्षो के लिए स्वामी जी से पूर्ववत् प्रधान पद पर बने रहने की प्रार्थना की। हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, बाबू सोमनाथ मरवाह एडवोकेट पजाब सभा के मन्त्री, श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट, राजस्थान से श्री छोटूसिंह एडवोकेट, बिहार सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री राजस्थान सभा के प्रधान श्री विद्या सागर शास्त्री, मध्यभारत से प० राजगुरु शर्मा, उडीसा सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, बम्बई के प्रसिद्ध आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य, प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री दरबारी लाल और मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, दिल्ली सभा के मन्त्री डा० धर्मपाल, उ०प्र० सभा के उप-प्रधान श्री जयनारायण अरुण और मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, बगाल सभा के प्रधान श्री वटकृष्ण बर्मन, तथा मन्त्री आनन्द कुमार, मध्यप्रदेश सभा के मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, आन्ध्रप्रदेश सभा के प्रधान क्रान्ति कुमार कोरटकर और मन्त्री श्री के० एन० रेड्डी, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री वेदव्रत महता महाराष्ट्र से श्री पाण्डुर ग तेरकर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक आचार्य देवव्रत आदि के अतिरिक्त उपस्थित अन्य सभी महानुभावो ने सवसम्मति से स्वामी जी का त्यागपत्र अस्वीकार करने की घोषणा करते हुए उनके नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास व्यक्त किया। स्वामी जी ने कई बार प्रार्थना की कि उन्हे पदमुक्त कर दिया जावे परन्तु सदन ने उनकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी। ●

श्रीमती गंगादेवी की गोली मारकर जघन्य हत्या

स्व० श्री रघुबीर सिंह शास्त्री की धर्मपत्नी तथा श्री सोमपाल जी एम, पी (राज्य सभा) की पूज्यामाता श्रीमती गगादेवी जी की एक विक्षप्त युवक न गोली मारकर हत्या कर दी। वे ७५ वर्ष की थी। उनके निधन से आसपास के क्षेत्र मे शोक की लहर फैल गई। उनका शान्ति यज्ञ १२-७-६२ को ग्राम ककोड (बडौत) मे सम्पन्न हुआ।

विशाल यज्ञ के उपरात शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, दिल्ली सभा के मन्त्री श्री डा० धर्मपाल हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह भी श्रद्धाजलि देने हेतु पहुचे। शोक सभा मे पूर्व प्रधान मन्त्री श्री वी पी सिंह, मुफ्ती मोहम्मद सईद, अनेको सासद तथा विधायक और आस पास के क्षेत्र के हजारो नर-नारियो ने अश्रुपूरित नेत्रो से गगादेवी जी को श्रद्धाजलि अर्पित की।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्रीमती गगादेवी जी के पुत्र श्री सोमपाल जी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आपके पिता श्री रघुबीर सिंह शास्त्री सस्कृत के उद्भट विद्वान तथा सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री भी रह चुके है, उन्होंने अपने कार्यो से सस्कृत तथा समाज की अत्यधिक सेवा की है आप भी उनके पदचिह्नो पर चलकर देश की सेवा करे। आप राज्य सभा के नव-निर्वाचित सदस्य है और अभी आपने शपथ नही ली है। अत आपसे मेरा आग्रह है कि आप संस्कृत मे ही शपथ ग्रहण करें।

डा० शंकरदयाल शर्मा विजय की ओर अग्रसर

नई दिल्ली १३ जुलाई।

देश के समस्त प्रान्ता से प्राप्त खबरो के अनुसार राज्यो की विधानसभाआ मे आज देश के राष्ट्रपति पद के लिए उत्साह पूर्वक वोट डाले जा रह है इस सर्वोच्च पद के लिए मुख्य मुकाबला काग्रेस के प्रत्याशी डा० शकरदयाल शर्मा तथा ईसाई नेता और भा०ज०पा० प्रत्याशी श्री स्वेल के बीच था। प्राप्त रिपोर्टो के अनुसार डा० शकर दयाल शर्मा को भारी मात्रा मे वोट डाले गए है जिससे उनकी जीत लगभग सुनिश्चित हो चुकी है। ससद भवन म हुए मतदान मे भी डा० शकर दयाल शर्मा को ही अत्यधिक मत डाले गए हैं।

दूसरी तरफ मतदान से एक दिन पूर्व ईसाई नेता श्री स्वेल ने क्रास वोटिंग की सम्भावनाओ के आधार पर अपनी जीत का दावा किया है। वही भाजपा की उपाध्यक्षा राजमाता सिन्धिया ने भी एक सम्मेलन मे यह आशा व्यक्त की है कि देश के अगले राष्ट्रपति श्री स्वेल ही होंगे।

"सत्यार्थ प्रकाश" क्यों पढ़ें !!

१ श्री सलमान रुशदी की बहुचर्चित पुस्तक द सटैनिक वर्सेज' का रहस्य जानने हेतु।

२ गुरुडमवाद, पाखण्डवाद अवतारवाद, बहुदेववाद पैगम्बरवाद सम्प्रदायवाद इत्यादि के रहस्य को जानने हेतु।

३ धर्म के यथार्थ स्वरूप, ईश्वर का स्वरूप, मोक्ष का स्वरूप तथा ईश्वर-जीव-प्रकृति के स्वरूपो को जानने हेतु।

४, ससार मे प्रचलित विभिन्न सम्प्रदायो के कल्पित गप्पो को जानने हेतु।

५ धर्म और विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन हेतु।

६ ३७७ ग्रन्थो के एकत्र अध्ययन तथा सन्दर्भ ग्रन्थो के अवलोकनार्थ।

७ विभिन्न ग्रहो एव नक्षत्रो मे जीवो का अस्तित्व है, का वैदिक प्रमाण जानने हेतु।

८ इस विश्व-कोष को मुस्लिम देशो मे ले जाने पर मृत्यु-दण्ड दिया जाता है का रहस्य जानने हेतु।

९ मानव जीवन को सार्थक एव देश-रक्षार्थ इस अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ-प्रकाश" का अध्ययन-अध्यापन अवश्य करे।

१ आप जितनी भी बडे डिग्रीधारी हो, इस ग्रन्थ को पढ़े बिना भूत-प्रेत जादूमन्त्र, झाड़ फूक फलित ज्योतिष, तागा-ताबिज के अन्धविश्वासो से कभी नही बच सकेंगे।

अध्यापक- कालीकान्त एम. ए उपप्रधान,
आ० स० मनिहारी टोला, जमालपुर
फुदकीपुर जमालपुर-साहेबगंज, बिहार
पिन-८१६१०८

अब सिर्फ मरम्मत होगी

—अनिल नरेन्द्र, सम्पादक वीर अर्जुन

अयोध्या से आय ताजा समाचारा से यह सकेत मिलता है कि भारतीय जनता पार्टी एव विश्व हिन्दू परिषद की श्रीराम मन्दिर निर्माण की रणनीति बदल गयी है। आज तक तो भाजपा एव विश्व हिन्दू परिषद विवादित ढाचे के बारे मे यह कहती आ रही थी कि इसको यहा से हटा लिया जाये ताकि श्रीराम मन्दिर बन सके। अब य लोग कहते है कि हम विवादित ढाच को गिरायेगे नही बल्कि उसी का जीर्णोद्वार करे गे। विश्व हिन्दू परिषद और मार्ग-दर्शक मण्डल की ६ जुलाई को हुई बैठक से यही पता चलता है। बैठक मे कहा गयाकि विवादित इमारत ही रामजन्म भूमिहै इसलिए इसे गिराने का अब कोई विचार नही है। बैठक मे बाकायदा एक प्रस्ताव पास कर रामजन्म भूमि मन्दिर निर्माण समिति का नाम बदलकर मन्दिर जीर्णोद्वार समिनि कर दिया गया है। इस अचानक बदलती हुई रणनीति पर सफाई देते हुए विश्व हिन्दू परिषद नेता श्री अशोक सिंघल ने कहा कि हमने कभी यह नही कहा कि जिस स्थान पर पिछरा चालीस साल से रामलला की मूर्तिया स्थापित हैं और जहा वर्षों से पूजा पाठ हो रहा है उसी स्थान को हम गिरायेंगे। रामलाल की मूर्ति और मन्दिर को गिराने का प्रश्न ही नही उठता।

भारतीय जनता पार्टी एव विश्व हिन्दू परिषद मन्दिर कभी बना पायेगी या नही इस पर अब बहुत से लोगो को सन्देह होने लगा है। मैं पाठको के समक्ष भारत के प्रख्यात ज्योतिषिया द्वारा की गयी इस मुद्दे पर भविष्यवाणिया बताना चाहता हू। २७ २८ जून वर्ष १९९२ को हरिद्वार म २१ वा राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन भारतीय ज्योतिष परिषद क अध्यक्ष के ए दुबे पदमेश की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे आधृ, कर्नाटक, गोवा, पश्चिम बगाल, असम, पजाब, महाराष्ट्र, राजस्थान, बिहार, उडीसा, मध्यप्रदेश, हरियाणा दिल्ली एव उत्तर प्रदेश के प्रमुख विद्वानो ने हिस्सा लिया। जिसमे १२६ भविष्य वक्ताओ ने भविष्यवाणी की कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री कल्याणसिंह रामजन्म भूमि मन्दिर निर्माण नहीं कर सकेंगे। प्रमुख भविष्य वक्ता श्री राधा-कृष्ण श्रीमाली के अनुसार इस सरकार का जीवन बहुत लम्बा नहीं है निर्धारित ५ वर्ष के कार्यकाल को भी पूरा न कर सकेगी। यह सरकार आपसी खीचतान तो करेगी लेकिन मन्दिर के निर्माण करने मे सफल नही होगी। महाराष्ट्र के तान्त्रिक दत्त राजन ने कहा कि कल्याण सिंह सरकार मन्दिर बनाना ही नही चाहती है और न ही बना पायेगी। कल्याण सिंह सरकार अपना निर्धारित कार्यकाल पूरा नही कर सकेगी। अजमेर के प्रख्यात भविष्य वक्ता पडित लक्ष्मीनारायण शर्मा का मानना हैं कि कल्याणसिंह सरकार दो वर्ष से अधिक नहीं चलेगी और न ही उस बीच मन्दिर का निर्माण कार्य पूरा हो सकेगा।

हरियाणा के एस रेखा शास्त्री का कथन था कि मन्दिर तो बनेगा, लेकिन यह सरकार मन्दिर नही बना सकेगी। आध्र के एस राजगोपालन के अनुसार कल्याण सिंह सरकार मन्दिर निर्माण का जोखिम नहीं उठायेगी और न ही उनके कार्यकाल मे मन्दिर का निर्माण होगा। जनता ही मन्दिर का निर्माण करेगी और उसमे अभी समय है। गोवा के प्रभात र जन का मानना है कि मन्दिर का निर्माण निश्चित रूप से होगा लेकिन इस सरकार द्वारा नही। सस्ती लोकप्रियता लेने के लिए मन्दिर के निर्माण का प्रदर्शन अवश्य करेगी, कर्नाटक के एस भक्तदर्शन के अनुसार मन्दिर का निर्माण आगामी पाच वर्ष तक कोई सरकार नही कर सकेगी और यह सरकार तो कुछ ही महीनो की मेहमान हैं। अगस्त १९९३ से पहले ही गिर जाएगी। कुछ भिन्नता के साथ देश के चारो कोनो से आये १२६ भविष्य वक्ताओ ने एक स्वर मे भविष्यवाणी की कि कल्याण सिंह की सरकार मन्दिर निर्माण का कार्य पूरा नही कर सकेगी। कुछ भविष्य वक्ताओ की राय है कि यह सरकार मन्दिर के ही निर्माण मे गिरेगी फिर भी मन्दिर का निर्माण पूरा न कर सकेगी।

इन भविष्यवाणियो मे कितना दम है यह तो आने वाला समय ही बतायेगा परन्तु भाजपा एव विश्व हिन्दू परिषद की नयी रणनीति अगर प्रभावी होती है तो विवादित स्थल को तोडना या गिराना टल जाता है। अभी मैं इस विषय पर इससे ज्यादा टिप्पणी करना उचित इसलिए नही समझता हू कि इस नई रणनीति के अभी तक प्रथम सकेत आये हैं अधिकृत रूप से न तो भाजपा की ओर से और न ही विहिप के किसी पदाधिकारी ने इस रणनीति की सार्वजनिक घोषणा की है। पर इतना जरूर है कि अगर अब केवल जीर्णोद्वार होना है तो यह भाजपा की ओर से बिल्कुल नई लाइन देने का प्रयास है। अब तो मरम्मत और रेनोवेशन की बात रह गई। इस मेजर रिएक्ट की जनता मे क्या प्रतिक्रिया होती है देखना बाकी है।

घर लौटना चाहती है फातिमा

अफगानिस्तान के एक नागरिक के साथ ब्याही गई नाबालिग फातिमा ने आज अदालत मे अपने परिवार वालो के पास वापिस जाने की इच्छा जताई। मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट एु के गर्ग ने पुलिस को फातिमा के कलकत्ता मे परिवार वालो को उसकी इच्छा के बारे मे खबर करने का निर्देश दिया है।

इन दिनो फातिमा दिल्ली प्रशासन के नारी निकेतन मे है। आज उसे मजिस्ट्रेट श्री गर्ग की अदालत में पेश किया गया। अदालत न फातिमा को वापस नारी निकेतन भेज दिया और पुलिस को ९ जुलाई तक इस मामले की रपट अदालत को देने का निर्देश दिया।

फातिमा को १९ जून को इन्दिरा गाधी अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर ५० साल के अफगानी जालानी खान के चगुल से छुडवाया गया। जालानी बच्ची से निकाह करके उसे काबुल ले जा रहा था। फातिमा ने अदालत के सामने बयान दिया कि उसकी मर्जी के बिना निकाह किया गया और अब वह अपने घर जाना चाहती है।

आर्यसमाज राष्ट्र का प्रहरी है

सुख चाहो तो आर्यसमाज का साथ दो

—आचार्य विशुद्धानन्द

आर्य समाज पनवाडी, बदायू (उत्तर प्रदेश) का वार्षिक उत्सव दिनाक ५, ६, ७ जून १९९२ को बडी धूमधाम से मनाया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी वेदमुनि परिव्राजक वैदिक साधना आश्रम नजीबाबाद ने की तथा मच सचालन श्री रामचन्द्र आर्य पुरोहित ने किया। उत्सव की कार्यवाही देवयज्ञ से की गई।

इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा, गौ रक्षा, पाखण्ड-खण्डन, स्त्री-शिक्षा आदि सम्मेलनो का आयोजन किया गया।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे बोलते हुए आचार्य गोपाल दत्त शर्मा व्याकरणाचार्य एटा ने आर्य समाज के स्वतन्त्रता युद्ध मे दिए गए योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला।

राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित आर्य जगत के महान वैदिक विद्वान आचार्य प० विशुद्धानन्द जी बदायू ने आर्य समाज को सच्चा राष्ट्र प्रहरी बताया तथा जनता से आर्य समाज का साथ देने की अपील की।

प० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्तशास्त्री ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा) ने देश पर छाये सकट का मूल कारण भारत के नेताओ का वैदिक पथ से भटक जाना बताया।

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक नजीबाबाद ने देश के नेताओ की अल्पसख्यको के तुष्टीकरण की नीति की जमकर निन्दा की। स्वामी जी ने भविष्य मे देशभक्त, चरित्रवान व्यक्तियो को अपना सहयोग देने की उपस्थित जन-समूह से प्रार्थना की। इसके अतिरिक्त इस सम्मेलन को श्री सियाराम आर्य, श्री रामस्वरूप आर्य, स्वामी विवेकानन्द, श्रीमती मनोरमा शर्मा अलीगढ ने भी सम्बोधित करके जनता को लाभान्वित किया। शान्ति पाठ के पश्चात उत्सव का समापन किया गया। इस कार्यक्रम की सभी जगह प्रशसा की जा रही है।

वेद प्रकाश आर्य, आ. स पनवाडी, बदायू

जीवन वृत्त—

वन्देमातरम् वीरभद्र राव (२)

—टी. नरहरिराव

श्री वीरभद्र राव के व्यक्तिगत जीवन की परिस्थितियो मे एक बदलाव तब आया जब एक लोकोपकारी परिवार उनके पास अपना एक प्रस्ताव लेकर पहुचा। उन्हे अपने गाव तथा आसपास के गावो की उन्नति के लिए चलाई जाने वाली योजना मे काम करने के लिए एक नव-युवक कार्यकर्ता की आवश्यकता थी। उन्होने वीरभद्र राव को इस कार्य के लिए राजी कर लिया।

श्री वीरभद्रराव जी ने प्रस्ताव को स्वीकृत करते हुए उनकी इस साहसिक योजना मे कार्य करना शुरू कर दिया। लेकिन यहा पर भी मुस्लिम नौकरशाही की तेज नजरें उनके हर कार्यकलाप पर लगी रहती थी। उन्हे शक था कि वीरभद्र राव उस परिवार को स्वतन्त्रता सेनानियो का अनुसरण करने के लिए उकसाते थे। फलस्वरूप उस परिवार के सदस्यो पर दबाव डाला गया कि वे वीरभद्र से कोई सम्पर्क न रखे। शायद भाग्य उन्हे किसी अन्य साहसिक कार्य की तरफ ले लाना चाहता था। इसी बीच उनके छोटे भाई रामचन्द्र राव गिरफ्तार कर लिए गये थे। जेल मे उन्ह भयकर यातनाए दी गयी। वन्देमातरम् राष्ट्रीय गीत गाने की हठ के कारण उन पर कोडे बरसाये गये।

सन् १६४० की बसन्त ऋतु का समय था। रात का अन्धकार घना होने पर हैदराबाद शहर की उपनगरीय पहाडियो मे एक स्थान पर कुछ नवयुवक एकत्र हुए। एकादशी का दिन था। वे लोग बहुत धीमी आवाज मे बाते कर रहे थे। चर्चा का विषय था कि ऐसे समय मे जबकि विदेशी शत्रु द्वारा देश तथा राष्ट्र की जनता के लिए विनाश का खतरा पैदा हो गया है, जिसमे निजाम धूर्त उसकी सहायता कर रहे है, नौजवान देशभक्तो की क्या भूमिका होनी चाहिए। अन्त मे यह निर्णय लिया गया कि निजाम की हिंसात्मक कार्यवाही का विरोध करने के लिए मौत को चुनौती देने वाले दस्ते तैयार किए जाए।

अब प्रश्न उठा कि इन दस्तो का नेतृत्व कौन करेगा, तो सबने एक स्वर से वीरभद्रराव के नाम का सुझाव दिया। निर्वाचित नेता उठकर खडे हो गए और उन्होने अपने छोटे भाई को टार्च जलाने के लिए कहा। तत्काल आदेश का पालन हुआ। वीरभद्र राव ने अपना खजर निकालकर बाये हाथ की कोहनी के पास के स्थान पर घोप दिया। खून बहने लगा। टार्च की मध्यम रोशनी मे उन्होने एक कागज पर अपने खून से प्रतिज्ञा लिखी कि जब तक उनकी मातृभूमि और राष्ट्र की जनता आततायियो के अत्याचारो से मुक्त नही हो जाती तब तक व चैन से नही बैठेंगे। उस रात को एक के बाद एक करके सबने यह प्रतिज्ञा ली।

उन दिनो देश भक्तो के साथ रहना खतरे से खाली नही था। फिर भी, कुछ दिनो के बाद जब मुझे उक्त शपथ-ग्रहण समारोह की सूचना मिली तो मैं उस स्थान पर गया। वहा पहुचने पर मुझे चेतावनी देती हुई एक तीखी आवाज सुनाई दी—

"सावधान देखो तुम कही उस पवित्र चट्टान पर पैर न रख देना जहा कभी हमारे नेता ने बैठकर देश के इस भाग म स्वतन्त्रता सग्राम के लिए सशस्त्र बल के सगठन की नीव डाली थी। और वास्तव मे वहा से एक सशस्त्र बल का उदय हुआ। बहुत जल्दी ही उसकी शाखाए तत्कालीन हैदराबाद रियासत मे सब जगह फैल गयी। श्री वीरभद्र राव जी को पुलिस ट्रेनिंग स्कूल मे जो प्रशिक्षण मिला था उसके अनुभव के आधार पर उन्होने सैकडो नवयुवको को शस्त्र चलाने मे प्रशिक्षित किया। उस स्थान पर जो उस समय सैनिक प्रशिक्षण के लिए चुना गया था वहा आज हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय सहित अन्य अनेक नई बस्तिया बस गयी है। इसी प्रकार सभी जिलो मे प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए थे जहा नव युवको को शस्त्र चलाने की शिक्षा दी जाती थी। इन सुरक्षा दस्तो ने कई अवसरो पर रजाकारो और निजाम की पुलिस द्वारा मन्दिरो और अन्य धार्मिक स्थलो को अपवित्र करने के प्रयासो को विफल किया था।

इन कार्यवाहियो के परिणाम स्वरूप वीरभद्र राव के छोटे भाई रामचन्द्रराव दुबारा गिरफ्तार किये गये और चचलगुडा जेल मे उन पर निजाम के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करन के अभियोग मे मुकदमा चलाया गया। अपने भाई तथा अन्य सहयोगियो के आग्रह पर श्री वीरभद्र राव बाहर रहकर निर्भीकता और दुगने उत्साह से अपना कार्य करते रहे।

सन १६४२ तक वीरभद्र राव द्वारा सगठित सुरक्षा-दस्तो के सदस्यो की सख्या तीन हजार तक पहुच गई थी। उन्होने अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया।

समय गुजरता गया। १५ अगस्त १६४७ को भारत आजाद हो गया लेकिन सत्ता छोडने से पहले अग्रेजो ने एक ऐसा विलय-पत्र तैयार किया था जिसके अनुसार देशी रियासतो को यह छूट दी गयी थी, वे अपनी इच्छानुसार भारतीय सघ अथवा पाकिस्तान मे अपना विलय कर सकते थे। अत भारत के आजाद होते ही निजाम ने यह दावा किया कि 'उसके राजवश की सत्ता एक स्वतन्त्र राज्य के रूप मे फिर से बहाल हो गयी है, इसलिए अब वह (अग्रेजो के जाने के बाद) स्वतन्त्र है। अपने आपको स्वतन्त्र राजा घोषित करते हुए उसन भारतीय सघ से अपने सारे सम्बन्ध तोड दिये।

हैदराबाद की जनता ने, विशेषकर राष्ट्रीय समुदाय(हिन्दू जाति) ने सोचा कि अब उनके लिए यह निश्चय करने का समय आ गया कि वे निजाम के इस्लामी शासन मे रहेगे अथवा उसे भारत मे विलय के लिए मजबूर करेंगे? देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए दूसरे विकल्प को ही उचित समझा गया। इसलिए जनता ने सघर्ष का मार्ग अपनाने का निश्चय किया।

श्री वीरभद्र राव ने सारी हैदराबाद रियासत का दौरा करके निजाम और उसके सैन्य बल के साथ, ध्येय की प्राप्ति तक, सघर्ष करने की एक योजना तैयार की। दूसरी ओर निजाम भी भारत की तरफ से हमला होने की दशा मे अपने राज्य की सीमाओ की सुरक्षा के लिये एक बडा सैन्यबल तैयार कर रहा था। नियमित सेना के अतिरिक्त उसने रजाकारो की सख्या मे भी बहुत वृद्धि की। सिडनी काटन जैसे अन्तर्राष्ट्रीय तस्करो की सहायता से उसने अपने शस्त्र के भडार भी भरने शुरू कर दिए। विमान-भेदी तोपें खरीदी गयीं। जापानियो की सहायता से ३०३ बन्दूके बनाने का एक कारखाना भी खोला गया।

श्री वीरभद्र राव और उनके भाई ने, जो उस समय तक वन्देमातरम बन्धुओ के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे, रियासत के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री विनायक राव विद्यालकार से परामर्श करके निजाम की सेना मे घुसपैठ करने का कार्यक्रम बनाया। इसके लिए सेना मे प्रमुख पदाधिकारियो से दोस्ती बढायी गयी। (इसकी विस्तृत जानकारी के लिए उनकी षष्ठिपूर्ति पर सन् १६७७ मे प्रकाशित 'श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव अभिनन्दन ग्रन्थ देखिए) इस क्रान्तिकारी समुदाय ने एक काम और किया। उन्होने कुछ शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ तथा बुद्धिमान युवको को डा० बी एस मुजे द्वारा सचालित नासिक स्थित "भोसले मिलीटरी स्कूल" मे जासूसी के प्रशिक्षण के लिए भेजा। सुरक्षा दस्ता को हमेशा चुस्त-दुरुस्त अवस्था मे रखा जाता था। जिससे आवश्यकता पडने पर वे कही भी और किसी भी समय अपना कार्य कर सकें।

यह कार्य बडा जोखिम भरा था। लेकिन हमारे नवयुवक हर अग्निपरीक्षा से विजयी होकर ही निकले। भारत द्वारा की गयी "पुलिस कार्यवाही" मे निजाम की सेना की पराजय के बाद हैदराबाद स्थित भारतीय एजेण्ट श्री के. एम मुशी ने उनके कार्यो की सराहना करते हुए कहा था—

"वन्देमातरम् बन्धुओ ने अपने आपको बडे सकट मे डालकर अपना काम पूरा किया है। मुझे प्रसन्नता है कि वे अपने प्रयत्नो की सफलता देखने के लिये आज स्वय भी जीवित हैं।"

अब मैं "पुलिस कार्यवाही" के बाद के समय मे श्री वीरभद्र राव जी के जीवन की कुछ घटनाओ की ओर ध्यान दिलाना चाहता हू।

(क्रमशः)

इस्लामी महासंघ की अमरीकी कल्पना (२)

—राधेश्याम यादव

यहां यह दर्शाना आवश्यक है कि साम्यवाद तथा तीसरी दुनिया की एकता को तोडने मे धन की कितनी बडी भूमिका रही है। अमरीका तथा अन्य यूरोपीय देश सोवियत सघ के यूरोप से हटने के लिए तब तक दबाव नही डाल पाये जब तक कि सोवियत रूस पश्चिम से लिए गए भारी कर्जों के बोझ से दब नही गया। वह दबाव, और दूसरा यह कि अगर आपे आर्थिक और टैक्नो-लाजिकल मदद लेनी है तो सोवियत सघ मे साम्यवाद समाप्त कर पश्चिमी दश का प्रजातन्त्र लाओ और समाजवादी अर्थव्यवस्था खत्म कर, पश्चिमी पूजीवाद को चलाने वाली, बाजारू अर्थव्यवस्था की स्थापना करो। इसके साथ ही रूसी गणराज्य मे, जहा अधिकाश ईसाई धर्मावलम्बी रहते हैं, और उक्रेन तथा बेलारूस वगैरह मे ईसाईयत को फिर से खुले रूप मे आने और पश्चिम के साथ मुक्त रूप मे सास्कृतिक आदान-प्रदान पर भी उतना ही जोर डाला गया। और जब गोर्बाचेव के नेतृत्व ने यह सब स्वीकार कर लिया तो प्रत्याशित रूप से सोवियत सघ के विघटन की प्रक्रिया शुरू हो गयी जो स्लाव नस्लवाद और ईसाईयत और स्लामी रूझान और नस्लवाद को बढावा न मिलने पर कदापि शुरू नही होती।

लेकिन इस परिदृश्य पर गौर करने के साथ-साथ इस बात की तरफ ध्यान देना जरूरी है कि इस्लामी कट्टरतावाद का एक ही रग नही है। इसके भी दो रग हैं ठीक उसी तरह जिस तरह लेबनान मे ईसाईयत के दो रग हैं जिनमे एक राष्ट्रवादी है और दूसरा इजराईल और अमरीका तथा फ्रास की तरफ देखने वाला है स्लामी कट्टरतावाद का एक अग वह है जो अरब बादशाहियतो अमरीकी तथा ब्रिटिश समर्थन के बल पर राष्ट्रीय देशा/ताकतो को तोडने की कोशिश करता है। यह इस्लामी आबादी के सुन्नी तत्वो के जरिये काम करता है। इसे अरब इस्लामी कट्टरतावाद का नाम भी दिया जा सकता है। दूसरा इस्लामी कट्टरतावाद ईरान द्वारा समर्थित शिया कट्टरतावाद है जो मूलतया अमरीकी-ब्रिटिश इजारेदारी के खिलाफ लडता है। ईरान को गुलामी से निकालन मे राष्ट्रवादी शिया कट्टरतावाद न एक अहम भूमिका अदा की है। और ईरान को अमरीका, सऊदी अरब तक ब्रिटिश समर्थित इराकी हमले से (आठ साल तक की लम्बी अवधि तक) बचान म। शिया इस्लामी कट्टरतावाद का राष्ट्रवादी सबूत यह भी है कि जहा सऊदी अरब तथा अमरीका समर्थित सुन्नी अफगान मुजाहिदीन काबुल पर कब्जा कर पाक अमरीकी प्रभाव काबुल तक पहुचा देना चाहते थे, वही शिया मुजाहिदीन अमरीकी-पाक-सऊदी अरब प्रभाव वाली किसी भी मुजाहिदीन सरकार के विरुद्ध थे और उन्होने गुलबुद्दीन हिकमतयार के साथ मिलकर सम्मिलित मोर्चा अफगानिस्तान पर कब्जा करने के लिए नही बनाया। पाक-अमरीकी-सऊदी अभियान अफगानिस्तान मे इसीलिए फेल हो गया।

लेकिन सीनेटर लारी प्रेसलर की स्लामी सघ के द्वारा सभावित खतरे की चेतावनी को उनके भारत तथा पाकिस्तान के बीच कैम्प डेविड जैसा समझौता कराने के सुझाव के साथ मिलाकर पढना चाहिए। दोनो को मिलाकर देखने पर लगेगा कि उनका अन्तनिहित सुझाव यह है कि अगर भारत ईरान की मुखालफत मे अमरीकी खेमे मे आ जाये तो पाकिस्तान की तरफ से की जा रही खुराफात से उसे छुटकारा दिलाया जा सकता है। लेकिन सवाल यह उठता है कि इस मूलभूत नीतिगत बदलाव से भारत को मिलना क्या है? आगल अमरीकी कूटनीति से गुट-निरपेक्ष आन्दोलन को पहल ही तोड-फोड दिया है ठीक उसी तरह जिस तरह तल-उत्पादक देशा का सघ गुट-निरपेक्ष आन्दोलन के दो अन्य सस्थापक सदस्यो मे से मिस्र पूरी तरह अमरीकी खेमे मे है और यूगोस्लाविया अब पूर्ण रूप मे टूट चुका है। अधिकाश अन्य देश भी विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की गिरफ्त मे आकर अमरीकी-योरोपीय कृपा के मोहताज हो चुके हैं।

भारत को, पूर्व सोवियत सघ से तेल आने मे अडचन पडने के बाद से अपने तेल की आपूर्ति के स्रोतो को भी देखना है। इराक पर लगे प्रतिबन्धो के बाद इराकी स्रोत तो लगभग बन्द ही हो गया। ईरान के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध है ही। इसलिए भारत ईरान की तरफ से न तो ऐसे किसी खतरे की आशका रखता है और न ही वह उसके खिलाफ ऐसी भावना पाल सकता है। फिर ईरान अफगानिस्तान म एक सन्तुलन बनाए रखना है, जो भारत के पक्ष म है। रही पूर्व सोवियत सघ के मुस्लिम गणराज्यो की बात, तो भारत के सामने यह विकल्प नही है कि उनके साथ सम्बन्ध बनाने से हाथ खीच ले। उल्टे, इन मध्य एशियाई गणराज्यो के साथ भारत को सम्बन्ध बनाने की अनिवार्यता-सी हो गई है+आर्थिक रूप से भी और राजनीतिक रूप से भी। पूर्व सोवियत सघ भारत को उपभोक्ता वस्तुओ के लिये बहुत बडा बाजार रहा है। भारत इतने बडे बाजार को छोड दे, ऐसा भी सभव नही है। और यह जरूरी भी नही है कि भारत और अमरीका के स्वार्थ एक ही हो और उनका इस्लामी देशो के प्रति दृष्टिकोण भी एक जैसा हो। लेकिन अमरीका जिस खतरे की आशका व्यक्त कर रहा है वह शायद इस बात से भी पैदा हो सकती है कि अगर इस्लामी देशा को अमरीकी दबदबे से खतरा है तो वे एक साथ आना चाहेगे ताकि वे मिलकर अमरीकी दबावो का प्रतिकार कर सके और इनमे ईरान सबसे अग्रणी है क्योकि अमरीका ने ईरान के अपने प्रभाव से बाहर चले जाने को अब तक स्वीकार नही किया है। और वह उसे एक ऐसा देश समझता है जिसके आसपास अब इस्लामी देश और जनता इकट्ठी हो सकती है (दरअसल सच तो यह है कि मुस्लिम ससार अब एक नेता की तलाश मे है जो अरब देशो, खासकर इराक की हार के बाद मुस्लिम ससार का नेतृत्व कर सके और अब ऐसा देश केवल ईरान रह गया है) और उसके साथ तुर्की तथा ईराक के कुर्द और शिया भी सद्भावना रखते हैं। फिर सोवियत सघ के पराभव के बाद उसके इस्लामी गणराज्यो का धार्मिक स्तर पर अन्य इस्लामी देशो के साथ सम्बन्ध बनाना स्वाभाविक ही है, जो वे साम्यवादी व्यवस्था के अन्तर्गत नही कर सकते थे। लेकिन अमरीका का अभी से ऐसे सम्बन्ध के खिलाफ एक वातावरण तैयार करना केवल उसके अपने स्वार्थ की पूर्ति हो सकती है, भारत के लिए खतरे या नुकसान की बात नही। फिर, अगर कूटनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो, भारत के लिए ही नही, किसी भी देश के लिए अन्य देशो से अच्छे सम्बन्ध बनाना ही टकराव की स्थितियो को टाल सकता है। फिर भारत का किसी भी पूर्व सोवियत इस्लामी गणराज्य से कोई टकराव नही है। अभी उनके साथ सम्बन्ध एक नये सिर से बनने है। अगर भारत ये सम्बन्ध अपने फायदे के स्तर पर बनाने मे सफल हो जाना है नो प्रेसलर साहब द्वारा बतलाया गया सभावित खतरा पनपने से पहले ही टल सकता है।

भेद-भाव कैसे मिटे

—पूर्णचन्द्र उपाध्याय—

भेद-भाव मिटान वाली बात क्रियात्मक जीवन की बात हैं। इस भाव के बने रहने से मनुष्य के सामाजिक जीवन मे बडी कठोरता आ जाती है जिसका प्रभाव उसके व्यक्तिगत जीवन पर पडता है और व्यक्ति तथा समाज दोनो की उन्नति म बाधा पड जाती है। इस बात को एक-दो उदाहरणो से स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है। भारतवर्ष मे आर्य जनता के लिये हरिजन उद्धार का प्रश्न एक जीवित प्रश्न है। २३ या २४ करोड हिन्दुओ म से सात करोड के करीब अछूत या हरिजन बताए जाने हैं, जिनके न उठाने से सारी जाति कलंकित व अपमानित होती है।

हरिजना मे सबसे नीच मेहतर समझे जाते ह। इनका कार्य सबसे कठिन और असाध्य है और उसका पुरस्कार सबसे न्यून है जब उच्च जाति कहलाने वाले समुदाया से यह कहा जाता है कि इन गरीब मेहतरो के साथ प्रेम का व्यवहार करो और इनको मनुष्य समझकर इनमे घृणा मत करो, तो बहुत से अपने को ऊचा समझने वाले व्यक्ति यह कहते ह कि ये मेहतर जन्म से मेहतर हैं, इन्होने ऐसे ही काम पूर्वजन्म मे किये होग, जिसका फल अब इनको भोगना पड रहा है। ये मेहतर ह तो इन्होने कोई हमारे ऊपर अहसान थोडे ही किया है। ये अपने किय का फल भोग रहे है। गिरे हुए को तकदीर के कारण गिरा हुआ मानना और उसको उठाने का उद्योग न करना बहुत अनुचित बात है। यह वैसी ही बात है जिसका उल्लेख हम खुदाई फौजदार और हवनक वाले प्रकरण मे कर आये है। यह बात ठीक होते हुए भी कि किसी की गिरी हुई दशा उसके पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर है, उसको वही पडे रहने देना और उठाने का उद्योग न करना तकदीर के प्रश्न का महान दुरुपयोग है। इस तसवीर का एक दूसरा पहलू भी है। अपने को ब्राह्मण कहने वाले अपने जन्मसिद्ध अधिकारा पर अभिमान करते और गर्व से कहते है—भैया, ब्राह्मण के कुल म जन्म लिया है, घर बैठे पर पुजाओगे। ब्राह्मण के घर मे जन्म पूर्वजन्म के पुण्य-प्रताप से मिलता है। हरएक थोडे ही ब्राह्मण बन सकता है। चाहे हम पढे या न पढे हम तो सबके सिरमौर है और शिरोमणि रहगे।

इस मिथ्या अभिमान ने, जो तकदीर के प्रश्न के दुरुपयोग के कारण है आर्य जाति को रसातल म पहुचा दिया है। ऊपर वाले अभिमान के कारण तकदीर के सहारे अपनी अवस्था की ठीक व्यवस्था क्रियात्मक रूप से नही कर सकते और नीचे वालो को इस मिथ्या विश्वास के कारण उन्नति करने का अवसर नही दिया जाता। ऊपर से भी गिरावट और नीचे से भी गिरावट। बीच वाले दोनो चक्की के पाट के दबाव से दबे चले जाते है। इस प्रकार इस भेद-भाव के कारण, जिसको तकदीर पर आश्रित मानकर दूर नही किया जाता, आर्य जाति अवनित की दशा मे पडी हुई है। यह मुसीबत केवल आर्य जाति पर ही नही है, वह तो सब देशो और सब जातियो मे विराजमान है, केवल नाम का भेद है। अमरीका मे नीग्रो जाति का प्रश्न है अफ्रीका मे गुलाम-प्रथा का रोना है। जहा Fudal Lords है वहा Helots है। राजाओ मे लोडी और गुलाम बहुतायत से होते हैं। इसलिये यह भेद-भाव मिटाने वाली बात एक महत्व (इम्पोर्टेंस) की बात है और इस पर गम्भीरता से विचार करना है। अब प्रश्न यह है कि यह भाव कैसे मिटे? इनको तीन प्रकार से मिटाना है —

(१) मस्तिष्क से, (२) मन से, (३) व्यवहार मे।

मस्तिष्क से हटाना बडा कडा प्रश्न है। इसके लिये बचपन में अभ्यास और शिक्षा की आवश्यकता है। इस शिक्षा और अभ्यास के सम्बन्ध मे आगामी खण्ड मे विचार किया जायेगा जिसका सम्बन्ध तकदीर- निर्माण से है। यहा यह लिखना आवश्यक है कि आरम्भ काल से व्यक्तियो के हृदयो पर यह बात अंकित करनी होगी कि वे इस भेद-भाव को अपने मस्तिष्क और मन मे स्थान न दें और व्यवहार मे इसको लेशमात्र न आने दे। ये बाते मनुष्य के लिये बहुत उपयोगी हैं। हम अपने व्यवहार से दूसरे को जन्म से नीचा मानकर उसके साथ मनुष्यता का व्यवहार नही करते और दूसरे हमारे साथ इसी आधार पर अच्छा व्यवहार नही करते। हम इस बात की शिकायत करते है कि दूसरे हमारे साथ दुर्व्यवहार करते है परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि हमारे साथ जो दुर्व्यवहार किया जाता है वह उस दुर्व्यवहार का परिणाम है जो हम दूसरो के साथ करते है। जन्म-सूचक जाति-भेद ने इसीलिए आर्य हिन्दू जाति को बडे झझटो म डाल दिया है।

क्रियात्मक जीवन की सफलता के लिए हमे सबको जन्म से एकसमान मानना चाहिये। हमारी दशा जन्म के कारण यदि नीची है तो उस पर सन्तोष करना चाहिये और अपने गिरावट का दोष दूसरा पर नही रखना चाहिये।

व्यवहार की दुनिया तदबीर की दुनिया है। सबको परस्पर मिलकर प्रेम से अपने और दूसरा के हित के लिए प्रयत्न करना है। प्रयत्न और तदबीर के समय तदबीर वाली बात ध्यान मे रखना भ्रम-उत्पादक और हानि कारक है। प्रयत्न के फल मिलते समय यदि फिर भी भेद न मिटे तो तकदीर की बात याद रखनी चाहिय। भेद यदि बना भी रहेगा, तो प्रेम-भाव का उत्पादक होगा, वैर-भाव उत्पन्न न करेगा। यह बात लिखने मे बहुत सरल प्रतीत होती है, परन्तु क्रियात्मक जीवनम इसको चरितार्थ करना बहुतकठिन है। कठिन अवश्य है, परन्तु असम्भव नही। सचाई से आख भी नही छिपानी है। केवल मन समझाने के लिये यह मान लेना भी पर्याप्त नही है कि सब बराबर है। भोग की दृष्टि से छोटाई और बडाई होते हुए भी हमारे उद्योग और प्रयत्न मे भेद के भाव न आये यह बहुत ही आवश्यक बात है। यह बात धार्मिक क्षेत्र मे ही पूरी हो सकती है।

सन्ध्या से मनोमय कोष मे प्रवेश

(अघमर्षण मन्त्र)

अग स्पर्श-मार्जन मन्त्रो मे हमने अपने स्थूल शरीर को सशक्त एव पवित्र कर लिया, इसको बलशाली, यशस्वी और तेजस्वी (शम्) भी बना लिया। हमने प्राणायाम मन्त्रो एव उसकी प्रक्रिया से शरीर मे प्रबल प्राण-संचार कर लिया। हमने शरीर मे शरीर से बाहर स्थित ब्रह्माण्ड के लोको की शक्तिया अपन अन्दर समेटने का यत्न किया। प्राणा को अन्दर ही तो लिया जाता है, बाहर से अन्दर लेने की क्षमता ही विकसित करना पर्याप्त नही, प्रत्युत अन्दर से बाहर जाने की प्रक्रिया भी हमे आनी चाहिए। अपने जीवन मे हम, शरीर से बाहर मन के द्वारा चले जाते है। प्राणा के द्वारा जहा हम ब्रह्माण्ड की शक्ति पिण्ड मे ले आते हैं, वही मनके द्वाग हम स्वय को पिण्ड से निकालकर ब्रह्माण्ड मे ले जाते है। पिण्ड की अधिष्ठात्री हमारी यह आत्मा है और ब्रह्माड की परम अधिष्ठात्री वह जगदम्बा है—वह परमात्मा है। आप कहेगे कि इस पिण्ड के हृदय स्थल मे बैठी आत्मा में ही परमात्मा रहता है, तो दूर जाने की आवश्यकता क्यो ? दूर जाना इसलिए है कि ब्रह्माण्ड के कण-कण मे प्रभु-का निवास ही नही कारीगरी भी है। जब उसकी कारीगरी देखकर हमे उसकी स्मृति आने लगेगी तो मन सृष्टिदर्शन से छक कर हृदय मे स्वय लौट आयेगा और उसका गुणगान भी करने लगेगा। भीतर भी तू—बाहर भी तू—सब ओर समाया तू ही तू। इस प्रकार से मिलन का आनन्द बढ सकेगा। मन की मलिनता-पापवृत्ति प्रभु दर्शन मे बाधक है, यही यदि दूर हो गई, तब तो दर्शन मे कोई अवरोध नही। जैसे पट हटा देने से बाहर वाला भीतर और भीतर वाला बाहर देखने लगता है, वैसे ही मन की पाप-वृति को हटा देने से बाहर भीतर सर्वत्र प्रभु की मनोहर सत्ता स्थापित हो जाती है। तो आइय। इस शरीर से बाहर निकलकर कुछ ब्रह्माण्ड मे विचरण कर लिया जाय।

ओम्-ऋत च सत्य चाभीद्धात्तप सोऽध्यजायत। ततो राम्यजायत तत समुद्रो अर्णव ॥ समुद्रा दर्णवादधि सवत्सरो अजायत। अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतोवशी ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत। दिव च पृथिवी चान्तरिक्ष मथो स्व. ॥ऋ० म० १०/१६०/१३

अर्थात-(ऋतम)=सृष्टि के सार्वभौम नियम या कारण रूप प्रकृति या वेदज्ञान (च)=और

(सत्यम्=कार्य रूप प्रकृति जिसका अस्तित्व स्थूल इन्द्रियो से दिखाई देता है।

(अभीद्धात)=अति प्रकाशित

(तपस)=तप-अनन्त सामर्थ्य से (अजायत)=उत्पन्न हुए।

(ततो)=उसी ईश्वर के सामर्थ्य से (समुद्र)—पृथ्वी और मेघमण्डल मे जो महासमुद्र है (अर्णव) लहरो वाला, उत्पन्न हुआ। इसी (अर्णवात=लहराते हुए (समुद्र)=समुद्र से (अधि=ऊपर (पश्चात) (सवत्सर—उत्पन्न होने वाले जगत का योनिरूप-महद अण्ड-क्षण, मुहूत, प्रहर आदि काल (अजायत—उत्पन्न हुआ। इस प्रकार (अहोरात्राणि)-जगत के रात-दिन (विश्वस्य=सम्पूर्ण (मिषत.=निमेषोन्मेष या हरकत करने वाले को (वशी) वश मे करने वाले प्रभु ने (विदधत्)=बनाया (धाता—सब जगत के धारण और पोषण करने वाले ने सूर्याचन्द्रमसी=सूर्य और चन्द्र को (दिवम=द्यौ को (च=और (पृथिवी=पृथ्वी को (अयौ)=और अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष को (यथापूर्वम्) पूव सृष्टि की भाति (अकल्पयत्) बनाया।

भावार्थ—सम्पूर्ण चेतन निमेषोन्मेष अर्थात हरकत करने वाले को वश मे रखने वाले धाता परमेश्वर के देदीप्यमान तप-प्रताप से यथार्थ ज्ञानवेद और त्रिगुणात्मक प्रकृति कार्य रूप मे पूर्व की भाति उत्पन्न हुए। उससे ही लहराता हुआ जल का समुद्र और मेघ उत्पन्न हुआ। लहर युक्त समुद्र के (ऊपर) बाद ब्रह्माण्ड के अण्डाकार लोक उत्पन्न हुए, जिनके कारण काल की गति-सम्वत्सर उत्पन्न हुआ। सम्वत्सर (सम+वत्सर) समतल बसाने वाले लोक बन गये। तदनन्तर उस विधाता ने पहले सृष्टि चक्रो की भाति सूर्य-चन्द्र की रचना की, और इस जगम गतिशील विश्व के दिन-रात्रि की रचना की। इस प्रकार उसने सुख रूप द्यु लोक, पृथ्वी लोक और अन्तरिक्ष लोक को बनाया।

सन्ध्या के इस भाग को अघमर्षण कहते हैं। कोई इसका अर्थ यह लगा बैठता है कि इस प्रक्रिया से एक व्यक्ति अपने किये हुए पापो को मीज देता है, नष्ट कर देता है। प्रभु के विधि विधान मे यह तो सभव है ही नही, हम जो करेंगे वह भरेंग। इससे बच नही सकते। तो इसका अर्थ हुआ पाप के परिणाम को सहन करना। सहने के बाद उससे मुक्ति पाना और आगे के लिये स्वय को स्वच्छ बना लेना। ससार मे मनुष्य अपने मन वचन और देह से असख्य प्रकार के पाप करता है। इन सभी पापो को मनीषियो ने दो वर्गों मे रख दिया है—

(१) अभिमान जन्य पाप (२) अवसाद जन्य पाप। जब उसको उपलब्धिया होती है, उसके पास शारीरिक बल, धनबल, वाक् बल अधिकाधिक होता है, वह सबको पीछे छोडकर आगे निकल जाना चाहता है, तब वह नियम उपनियम की चिन्ता किये वगैर भाति-भाति के अन्याय कर बैठता है। उसका अभिमानी स्वर न जाने कितने दीनो को प्रताडित कर बैठता है। इसके विपरीत यदि मनुष्य को जीवन मे असफलता पर असफलता मिलती है, तब वह अवसाद ग्रस्त होकर पाप करने को उद्यत हो बैठता है। ऐसी स्थिति मे वह आत्मा से भी बाज नही आता है। अभिमान मे जहा वह हत्या पर उतर आता है तो अवसाद म वह आत्महत्या तक गिर जाता है। यह दोनो ही भयकर पाप के रूप हैं।

सध्या के इन अघमपण मन्त्रा म दोना प्रकार के पापा के फल को सहन करके उनसे पार निकलन के उपाय सन्निहित है। वेद ने अभिमान को भस्म करने के लिये प्रलय, और अवसाद को हटाने के लिये सृष्टि रचना का चित्र मनुष्य के सामन प्रस्तुत कर दिया है। यदि उसके मन मे अभिमान-अहकार की हु कार जोर मारन लग तो वह यह सोच ले कि जिस प्रभु के क्षणिक सकेत मात्र से यह विराट ब्रह्माण्ड बुलबुले की भाति पलभर मे विलीन हो जाता है, उसके सामने तेरी गणना क्या है, चल अपने अहकार को ठण्डा करके नम्र हो जा। यदि मनुष्य को अवसाद आकर घेर ले-वह निराशा कूप मे डूब रहा हो, तब वह यह विचार कर ले कि प्रलय के बाद इस अदृष्ट प्रकृति-जहा कुछ प्रतीति न थी, उससे परमात्मा अपने सामर्थ्य से इतना विशाल ब्रह्माण्ड उत्पन्न कर देता है। उसमे समुद्र, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वृक्ष, वनस्पति सभी कुछ वही प्रकट कर देता है। ऐसे विश्वकर्मा के आदेश मे चलकर हम अपन जीवन का उद्धार भला क्या नही कर सकते है। यही प्रभु पर उसकी दृढ आस्था उसे अवसाद से ऊपर उठा सकती है। उसकी दुर्गति उसके बिगडे जीवन को सुधार सकती है। वह अच्छे आचरण और प्रभु भक्ति से पुनर्जीवन प्राप्त कर सकता है।

पिण्ड से बाहर ब्रह्माण्ड म आनन्द की धाराए बहती है। किसी को एक कोठरी म सारी सुविधाओ के साथ रख दिया जाए। खाने-पीन-रहने-सोने-नहाने-धोने आदि सभी के साधन दे दिय जाए, तो भी आप उसमे ही रहना पर्याप्त नही समझेंगे। वह रेडियो-ट्रांजिस्टर-दूरदर्शन यन्त्रा की माग करेगा उसे यह सब भी दे दिया जाय, तब भी उसको चैन नही मिलेगा। यह सब रहते हुए भी वह बाहर निकलकर ही चैन की सास लेगा। हमारा शरीर आश्रित है, भूमि के, भूमि आश्रित है, सौर्य-मण्डल के, सौर्य-मण्डल आश्रित है ब्रह्माण्ड के, ब्रह्माण्ड आश्रित है ब्रह्म के। हमारा पिण्ड हमारा निकटतम साधन है। इसी से प्रारम्भ करके ब्रह्माण्ड को समझा जा सकता है। ब्रह्माण्ड के ज्ञान से पिण्ड का समन्वय किया जा सकता है। जिस प्रकार जीवात्मा जब बैठना चाहता है, बैठ जाता है, जब खडा होना चाहता है तो खडा हो जाता है। शरीर के अन्दर जीवात्मा की इच्छा मात्र से सभी कार्य होते हैं। जीवात्मा को किसी अन्य साधन की आवश्यकता नही। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड मे व्यापक परमात्मा सृष्टि की रचना करता है। वह किसी साधन विशेष के बिना-ईक्षण मात्र सृष्टि की रचना कर देता है।

(क्रमश)

आर्य वीर दल की गतिविधियां

उड़ीसा तथा म० प्र० में आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

१ गुडूबहाल जिला रायगढ़ मे—
पत्थलगाव क्षेत्रीय आर्यसमाज के प्रधान श्रीमान महिपत जी आर्य के ग्राम गुडूबहाल हाल मे २२ अप्रैल से १ मई तक आर्य वीर दल का शिविर उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इसमे ३० आर्य वीरो ने अनेक प्रकार का शारीरिक बौद्धिक शिक्षण प्राप्त किया। ग्राम गुडूबहाल और पन्धुआ मे आर्य वीर दल का गठन भी हुआ।

२ ग्राम कटकलिया—
७ मई से १४ मई तक कटकलिया मे आर्य वीर दल का शिविर ग्रामवासियो के सहयोग से लगाया गया। इसम ३५ आर्य वीरो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अन्त मे आर्य वीर दल का यहा भी गठन किया गया। जिससे निरन्तर शाखा चलती रहे।

३ ग्राम शुकुलभटली—
श्री जैमिनी शर्मा जी की प्रेरणा पर ग्राम—शुकुलभटली मे १५ मई से २७ मई तक आय वीर दल का शिविर अत्यन्त उत्साहमय वातावण मे चला। इसमे अस्सी आर्य वीर २० आर्य वीरागनाओ ने भाग लिया। अन्तिम दिन दीक्षान्त समारोह मे लगभग ३० युवक युवतियो ने वैदिक-धर्म की दीक्षा ली। इस अवसर पर ब्रह्मचारी कर्णवीर आर्य गुरुकुल आश्रम आम सेना का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ।

उपरोक्त तीनो शिविरो मे प्रशिक्षण श्री कपिलदेव जी आय ने अत्यन्त श्रद्धा एव निष्ठा के साथ किया। इन कायक्रमा मे श्री बनसिंह आर्य का भी विशेष सहयोग रहा।

४ ग्राम कोतबा—
जहा अभी पिछले दिनो विशाल शुद्धि समारोह हुआ था उसी प्रभाव से प्रभावित होकर श्री देश बन्धु आर्य मुख्य अध्यापक के प्रेरणा पर ग्राम कोतबा मे आर्य वीर दल का प्रभावशाली शिविर लगा। इसमे ४० आर्य वीरो ने भाग लिया। ब्रह्मचारी सतेन्द्र जी आर्य ने अत्यन्त उत्साह एव प्रेम के साथ बौद्धिक एव शारीरिक प्रशिक्षण दिया।

५ ग्राम-किलाकिया जिला-फुलवाणी मे—
१४ मई से १८ मई तक ग्राम किलकिया मे श्री दाशरथी प्रधान की प्रेरणा पर आर्य वीर दल का शिविर अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमे ४६ आर्य वीरो ने भाग लिया। शिविर के अन्तिम दिन आर्य वीर दल का गठन भी किया गया।

६ ग्राम गुडकिया—
श्री मुन्दरा प्रधान (ग्राम-पचायत सरपच) के प्रेरणा व ग्रामवासियो के सहयोग से १७ मई से २२ मई तक ग्राम-गुडकिया मे आर्य वीर दल का शिविर लगाया गया जिसमे ६० आर्य वीरो ने भाग लिया। अन्त मे यहा भी आर्य वीर दल का गठन किया गया जिससे निरन्तर शाखा चलती रहे।

७ ग्राम गण्डगाव—
२३ मई से २६ मई तक ग्राम गण्डगाव मे आर्य वीर दल का शिविर निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। जिसमे २० आर्य वीरो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर के अन्तिम दिवस यहा भी आय वीर दल का गठन किया गया।

उपरोक्त तीनो शिविरो मे प्रशिक्षण ब्रह्मचारी हलधर आर्य ने उत्साहपूर्वक दिया। भास्कर आर्य और मिनिकेतन आर्य ने भी शारीरिक प्रशिक्षण मे सहयोग दिया। इन तीनो शिविरो मे श्री नारायण शास्त्री ने अपने स्वानीय भाषा में शिविरार्थियो को बौद्धिक प्रशिक्षण दिया।

प्रधान सचालक
उत्कल प्रान्तीय आर्य वीर दल
कार्यालय—गुरुकुल आश्रम आम सेना
खरियार रोड, जिला कालाहण्डी

हाटपीपल्या में आर्यवीरदल प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

आर्यसमाज हाटपीपल्या द्वारा पहली बार आयोजित आर्य वीर दल धार्मिक सस्कार शिविर दिनाक १० से १४ जून तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रशिक्षण शिविर म हाटपीपल्या, चापडा, वोहरी देवगढ, चीलाखी राऊ, इन्दौर, भोपाल, होशगाबाद के ५८ आय वीरो ने बडी उत्सुकता से भाग लिया।

प्रतिदिन प्रात ४ से रात्रि १० बजे तक सत्य सनातन वैदिक धम की व्यावहारिक शिक्षा सिद्धान्त, योग आसन व्यायाम, प्राणायाम सन्ध्या हवन, वेद प्रवचन, भजनोपदेश शस्त्र सचालन, एव आधुनिक कुग्फु आदि का व्यावहारिक ज्ञान बालको ने कठोर तप करके प्राप्त किया। सुप्रसिद्ध प्रान्तीय प्रशिक्षक ब्र० श्री अरुण कुमार जी आर्य होशगाबाद ने अस्वस्थ रहत हुए भी कठोर परिश्रम करके आर्य वीरो को सुसस्कारित किया। अन्तिम दिन बालको ने बडे उत्साह से प्रभावी रैली निकाली। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सचालन एव शिविर की सफलता पर सभी का आभार प्रदर्शन प० मधुसूदन शर्मा ने किया।

प्रशिक्षण शिविर की नागरिको ने मुक्त कण्ठ से प्रशसा की है। आगामी २५ दिसम्बर मे पुन शिविर लगान का निश्चय किया गया।

—दौलत कुमार तवर

आर्य वीर दल पूठ का प्रांतीय शिविर सम्पन्न

पूठ १० जून। गुरुकुल आश्रम पूठ (गाजियाबाद) मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वावधान मे १ से १० जूनतक उपव्यायाम शिक्षकशिविर का आयोजन किया गया जिसमे पूरे प्रान्त से लगभग १५० आर्य वीरो ने भाग लिया शिविर के समापन अवसर पर दीक्षान्त समारोह मनाया गया इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन कर सभी आय वीरो ने प्रतिज्ञाहुतियां देकर सकल्प लिया कि हम अपने धम एव राष्ट्र की रक्षा के लिये अपने जीवन को समर्पित कर देंगे। प्रतिज्ञा आय वीर दल उ० प्र० के मुख्य सचालक आचार्य धमपाल जी ने कराई। सभी आय वीरो ने शुद्ध जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया कि हम हिन्दी भाषा का प्रयोग दहेज रहित विवाह तथा नशाबन्दी का पूरे जीवन भर पालन करना है। समारोह के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री कृष्णवीरसिंह जी सिरोही ने विजेताओ को पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र वितरित किये और आर्य वीरो को आशीर्वाद दिया सिरोही जी ने आर्य वीरो का १० दिन के प्रशिक्षण शिविर का व्यायाम प्रदर्शन देखकर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि इतना बडा अभ्यास तो कई महीनो के परिश्रम के बाद हो पाता है। जो इन बच्चो ने सहज भाव से १० दिन मे ही पूरा कर लिया है। छुरी लाठी, भाला, सम्भ तथा आसम विशेष आकर्षण के केन्द्र रहे। बाद मे वीरपाल जी आचार्य का व्यायाम प्रदर्शन भी सुन्दर रहा, सस्था एव क्षेत्रीय सेवा के लिए वचन देते हुए सिरोही जी ने सभी को धन्यवाद दिया। गगा मेले पर आये लोगो ने बडे उत्साह के साथ सारे कार्यक्रम को देखा। व्यवस्थापक श्री प्रकाशचन्द्र आय एव शौदानसिंह आर्य तथा अध्यक्ष श्री ला० नारायणप्रसाद आर्य एव श्री जयप्रकाश आर्य ने भी आर्य वीरो को आशीर्वाद दिया, सभा मे अलीगढ मुरादाबाद, मेरठ जिला सचालको एव गाजियाबाद जिला सभा के अध्यक्ष श्री विजयपाल शास्त्री जी ने भी अपने विचार प्रकट किये अन्त मे आचार्य धर्मपाल जी सचालक ने शिविर की सफलता मे सभी के सहयोग हेतु धन्यवाद देकर भविष्य के लिये इसी प्रकार के सहयोग की अपील की।

—धर्मपाल आचार्य सचालक

प्रवेश सूचना

दयानन्द बाल सदन में प्रवेश

राज्य द्वारा सर्वश्रेष्ठ घोषित समाज कल्याण सस्था दयानन्द बाल सदन अजमेर मे १० वर्ष तक की आयु के अनाथ एव निराश्रित बालक-बालिकाओ के लिये २० स्थान रिक्त हैं।

प्रार्थी प्रमाण सहित मन्त्री के नाम शीघ्र आवेदन करें।

मैनेजर दयानन्द बाल सदन, अजमेर

प्रवेश सूचना

विगत वर्षों की श्लाघनीय उपलब्धियो के साथ गरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर का नवीन शिक्षा सत्र २ जुलाई ९२ से प्रारम्भ होने जा रहा है। पुराकालीन आश्रम पद्धति के अनुसार समग्र व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान देने वाली यह सस्था उत्तर प्रदेश शासन से प्रथम श्रेणी मे वर्गीकृत तथा अनुदानित है। सुविधा की दृष्टि से अध्यापन क्रम निम्न वर्गों मे विभक्त है।

१ बेसिक शिक्षा परिषद के नियत पाठयक्रम के साथ धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा कक्षा एक से पचम के छात्रा के लिए प्राविधान है।

२ प्रथमा (षष्ठ) से आचाय (एम ए) पर्यन्त सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के निर्धारित पाठयक्रम के अन्तगत प्राचीन तथा सभी आधुनिक विषयो (अग्रेजी गणित, विज्ञानादि) की उत्तम शिक्षण व्यवस्था है।

३ अनुसन्धेय विषयो के गहन अध्ययन तथा सस्कृत हिन्दी मे स्नातकोत्तर उपाधि हेतु स्वतन्त्र रूपेण सेवा निवत्त विद्वाना का सानिध्य सुलभ है।

ज्ञातव्य है कि उक्त सभी परीक्षाए राजकीय विभागो मे नियुक्ति, प्रशिक्षण एव तकनीकी सस्थाओ मे प्रवेश हेतु मान्य हैं।

बच्चे की अन्तर्निहित प्रतिभा को उददीप्त कर व्याक्तत्व का सर्वाङ्गीण विकास भारतीय सस्कृति के प्रति रुचि अनुराग स्वाभिमान एव स्वावलम्बन की भावना मुखरित करना गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की मौलिक विशेषता है।

प्रथम प्रवेश शुल्क ४००) रु० तथा भोजन शुल्क प्रतिमास १२०) रु० है। घृत दुग्ध, तेल, साबुन एव पाठ्य पुस्तको पर व्यय बच्चे की निजी आवश्यकता एव क्षमता के अनुसार पृथक से देय होगा।

विद्युत चालित उपकरणो से युक्त गुरुकुल का एकान्त शान्त सुरम्य, वातावरण अध्ययन मनन के लिए नितान्त उपादेय है।

प्रवेशार्थी सद्य सम्पर्क स्थापित करें।

प्राचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर तिलहर शाहजहापुर

श्रद्धाञ्जलि

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के ट्रस्टी श्री भगवानदेव जी आर्य का देहावसान दिनाक ५-६-९२ को एवं आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी आनन्द स्वामी जी के सुपुत्र सासद श्री यश जी का देहावसान दिनांक २-६-९२ को हुआ दोनों महानुभावो के स्वर्गवास से आर्यसमाज की हानि होना स्वाभाविक है। नियति को कोई टाल नही सकता।

टकारा स्थित दयानन्द स्मारक महालय मे एक शोक सभा का आयोजन दिनाक १६-६ ९२ को किया गया। जिसमे उक्त दोनों महानुभावो के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। एव परमकृपालु परमेश्वर से प्रार्थना की गई कि सद्गत आत्माओ को शान्ति प्राप्त हो तथा शोक सन्तप्त आर्य परिवारो को इस भयकर दुख को सहन करने की शक्ति मिले। —अरुणकुमार विदर्भीय

—छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा, राची की एक बैठक मैं बिहार के सुप्रसिद्ध आर्य नेता व स्वाधीनता सेनानी प० वासुदेव शर्मा (पटना) के ८६ वर्ष में हुए असामयिक व आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए इसे आर्य समाज के लिये गहरी क्षति बताते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति एवं शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये प्रार्थना की गई। स्मरणीय है कि स्व० प० वासुदेव शर्मा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के उपप्रधान थे। वे विभिन्न आर्य सामाजिक व शैक्षणिक सस्थाओ से सम्बद्ध थे। —दयाराम पोद्दार मन्त्री

वैदिक धर्म में समावेश

दिनाक १४-६-६२ को आर्य समाज मन्दिर स्टेशन रोड पीलीभीत की यज्ञ वेदी पर कु० हुसीन जहा ने सहर्ष एव स्वेच्छा से वैदिक धर्म अपनाया। मन्त्री आर्य समाज ने वैदिक मन्त्रो का उच्चारण कराकर शुद्धि के उपरात कु० हुसीन जहा का नाम कु० प्रीति रखा।

श्री मन्जीत सिह पुत्र श्री बलदेव सिंह जि० होशियारपुर ने सहर्ष कु० प्रीति का पाणि-ग्रहण कर पूर्ण वैदिक रीति से सप्त पदी पूरी की। सपत्नीक श्री मोहनलाल आर्य मन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा एव अन्य समाज के अधिकारियो व गणमान्य व्यक्तियो ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

—मोहन लाल आर्य, मन्त्री

नवीन आर्य समाज की स्थापना

दि० २२-३-६२ को आर्य उपप्रतिनिधि सभा पीलीभीत के तत्वावधान मे ग्राम सिमरिया ताराचन्द मे पूर्ण हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज की स्थापना हुई। उत्सव में ग्राम के सभी गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया।

आचार्य भगवान देव जी अरण्यावासी, श्री रामऔतार जी आर्य भजनोपदेशक एव श्री ओमप्रकाश जी आर्य, आय-व्यय निरीक्षक आर्य उप प्रतिनिधि सभा ने सम्मिलित रूप से ग्राम के बीस युवाओ को यज्ञोपवीत धारण कराकर वैदिक ऋचाओ से यज्ञ सम्पन्न कराया। प्रवचन, भजन, उपदेशो के उपरान्त नवयुवको ने वैदिक धर्म मे निष्ठा व्यक्त करते हुए आर्य समाज के नियमानुकूल आचरण का व्रत धारण किया। —मन्त्री

वैदिक धर्म प्रचार

गुरुकुल प्रभात आश्रम (मेरठ) द्वारा भोलाझाल पर लगने वाले गगादशहरा के मेले मे वेद-धर्म प्रचार का आयोजन किया गया। इसमे जहा यज्ञ प्रवचन एव सरस भजनो का कार्यक्रम था वही ब्रह्मचारियो द्वारा प्रदर्शित खेल प्रदर्शन का प्रेरणास्पद कार्यक्रम दिखाया गया। उल्लेखनीय है कि सन ८७ से ९१ तक किन्ही अज्ञात आशकाओ (दगे आदि) के रहते ग्रामीण एव शहरी जनता की उपस्थिति मेले मे बहुत कम रहती थी इस वर्ष निर्भयता के वातावरण से जन समूह सोल्लास सम्मिलित हुआ। ब्रह्मचारियो के व्याख्यान, अन्त्याक्षरी एव सैन्य प्रयास गीतिका आदि से लोग भावविभोर हो गये एव गुरुकुल को दान भी दिया।

अगले दिन स्नातको के प्रस्थान समारोह ने एक नया ही वातावरण उत्पन्न कर दिया। हर्ष एव विषाद से मिश्रित वातावरण मे ब्रह्मचारियो द्वारा पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी द्वारा निर्मित 'प्राणो से हमको प्यारा कुल हो सदा हमारा' इस गीतिका ने सभी लोगो को भाव विभोर कर दिया। अन्त मे गुरुकुल के आचार्य श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी के दीक्षान्त उपदेश के साथ सभा का समापन हुआ।

आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोलाझाल मेरठ (उ० प्र०)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज भटौली बदायू का वार्षिकोत्सव २३ से २५ मई तक बडी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर एक वृहद यज्ञ का आयोजन भी किया गया। उत्सव मे राष्ट्ररक्षा सम्मेलन तथा महिला सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको ने अपने विचारो से श्रोताओ को अत्यन्त प्रभावित किया।

गुरु विरजानन्द जयन्ती समारोह

वेद मन्दिर वृन्दावन मार्ग मथुरा मे ८ से १४ जुलाई तक विविध शिविरो के क्रम मे इस बार गुरु विरजानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य मे वैदिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन श्री प० अमृतलाल जी शर्मा गुरुकुल होशगाबाद के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वानो तथा नेताओ ने पधारकर अपने विद्वतापूर्ण विचारो से श्रोताओ को लाभान्वित किया।

संस्कृति रक्षा सम्मेलन

आर्य समाज वैदिक आश्रम ऋषिकेश का वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम के साथ मनाया गया। उत्सव मे चतुर्वेदशतक यज्ञ जिसके ब्रह्मा महात्मा आर्यभिक्षु और वेदपाठ वानप्रस्थाश्रम से आई माता यशोदा व चादरानी ने किया।

दिनाक २७-६ ६२ को सस्कृति रक्षा सम्मेलन मनाया गया जिसकी अध्यक्षता डा० सत्यव्रत राजेश प्रो० गुरुकुल कागडी वि० वि० ने की और मुख्य वक्ता महात्मा आर्यभिक्षु, आचार्य धर्मवीर वक्तालकार, दयाराम जी बसई प्रधान आर्य समाज औरगाबाद (महाराष्ट्र) रहे। सम्मेलन मे नगर के अनेक प्रमुख लोगो ने भाग लिया। दोपहर १२-३० ऋषि लगर हुआ। और नित्य प्रात प्रभात फेरी निकाली गई।

महीपाल त्यागी

प्रभावशाली वेदोपदेश

श्रीमान रासासिह जी रावत सासद जिला अजमेर दिनाक १ जून से प्रारम्भ सघ शिक्षा वर्ग मे सर्वाधिकारी बनकर शाहपुरा पधारे। दिनाक १४ जून एव २१ जून के साप्ताहिक सत्सगो मे आपका प्रभावशाली वेदोपदेश हुआ। दिनाक २१ जून को इनके सम्मान मे महिला शिक्षण केन्द्र भवन पर आर्य सभासदो ने प्रीति भोज का आयोजन किया जिसमे मच के प्रतिष्ठित प्रान्तीय सह प्रचारक श्री लक्ष्मणसिंह जी शेखावत आदि महानुभाव भी सम्मिलित हुए।

रामस्वरूप बेली मन्त्री
आर्य समाज शाहपुरा जिला भीलवाडा (राज०

आर्य समाज बेतिया का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बेतिया का ६३ वा वार्षिकोत्सव ४ से ६ जून १६६२ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको ने अपने विचारो से श्रोताओं को लाभान्वित किया। इस अवसर पर अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया तथा आर्य समाज का दृष्टिकोण, वैदिक धर्म मे ईश्वर का स्वरूप आदि विषयो पर प्रभावशाली भाषण हुए। उत्सव मे प्रतिदिन वृहदयज्ञ का आयोजन भी किया गया।

विज्ञप्ति

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार का वर्ष १६६२-६३ का शिक्षा सत्र ८ जुलाई १६६२ से प्रारम्भ हो रहा है।

महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार मे नैसर्गिक सुषमायुक्त गगानहर के तट पर स्थित है। यहा गुरुकुलीय पद्धति द्वारा कक्षा ६ से विद्या आरम्भ (बी ए) डिग्री के समकक्ष तक की वेदादि शास्त्रो की उच्चतम शिक्षा नि शुल्क दी जाती है साथ ही अग्रेजी विज्ञान व आधुनिक विषयो का शिक्षण भी अनिवार्य है। महाविद्यालय मे विद्याभूषण (कक्षा ८ समकक्ष), विद्यारत्न (हाई स्कूल), विद्यानिधि (इण्टर समकक्ष) तथा विद्याभास्कर बी ए) के निर्धारित पाठ्यक्रम की व्यवस्था है। इन सभी परीक्षाओ को भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। पाठ्य विषयो मे वैदिक साहित्य, भारतीय दर्शन, सस्कृत साहित्य व व्याकरण, हिन्दी साहित्य अग्रेजी साहित्य, धर्मशिक्षा गणित, विज्ञान व सामाजिक विज्ञान को सम्मिलित किया गया है।

शुद्ध स्वास्थ्यप्रद जलवायु के साथ-साथ शुद्ध सात्विक पौष्टिक आहार तथा योगासन भारतीय व्यायाम प्रचलित खेलो जूडो कराटे आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। सुन्दर छात्रावास सुयोग्य व अनुभवी शिक्षक तथा सुसज्जित शिक्षण सस्थान व अत्याधिक उपयोगी पुस्तकालय भी है।

यह महाविद्यालय भारतीय परम्परा के अनुसार शिक्षा प्रदान कर श्रेष्ठ नागरिको का निर्माण करता है। आप भी अपने बच्चो को कक्षा ६ से विद्याभास्कर तक की डिग्री प्राप्त करने के लिए इस महाविद्यालय की सेवाए प्राप्त करे, और बालको को इस सस्था मे प्रविष्ट करावे।

प्रधानाचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१९-७-१९९२), बिना टिकट भेजने का लाइसेंस ज नं० ६१
R.N 639/57 Licensed to post without Prepayment License No. U #3 Post I N.D P.S.O on 17,18-7-1992

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज बक्सर—श्री सुरेन्द्रनाथ जायसवाल प्रधान, श्री शम्भूनाथ आर्य मन्त्री, श्री ओमप्रकाश सर्राफ कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा दातागंज बदायूं—श्री हरिशंकर आर्य प्रधान, श्री जयप्रकाश आर्य मन्त्री, श्री नरसिंह आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

स्त्री आर्य समाज ग्रीनपार्क—श्री कौशल्यादेवी प्रधाना, श्रीमती आशा स्याल मन्त्राणी, श्रीमती सुधा गुप्ता कोषाध्यक्षा चुनी गई।

आर्य समाज हिरण मगरी—डा० भवरलाल पोरवाल प्रधान, डा० अमृत लाल तापड़िया मन्त्री, श्री लक्ष्मीस्वरूप कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज मन्दिर अशोक नगर नई दिल्ली—श्री भगतराम आर्य प्रधान, श्री दीनानाथ गुलाटी मन्त्री, श्री मिट्ठनलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली—श्री राममूर्ति कैला प्रधान, श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री, श्री भोलानाथ आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज परमानन्द बस्ती बीकानेर—डा० रवीन्द्र जी कुलश्रेष्ठ प्रधान, डा० शिवनारायण आर्य मन्त्री, श्री छगनलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य कुमार सभा किंग्ज़वे कैम्प दिल्ली—श्री धीरज मलिक प्रधान, श्री प्रवीण ग्रोवर सचिव, सत्यप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गए।

केन्द्रीय आर्य सभा यमुना नगर—श्री शूरवीर सेठ प्रधान, डा० गेन्दाराम आर्य मन्त्री, श्री मनोहरलाल विवान कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर—श्री रमेशचन्द्र भाटिया प्रधान, श्री सुखदेव गोयल मन्त्री, श्री दाऊलाल आतेरी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सोनीवाड़ा—श्री पुंजीराम जो० आर्य प्रधान, श्री राजेन्द्र कुमार क० आर्य मन्त्री, चतुरभाई आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज देहरादून—डा० सोमनाथ ढींगरा प्रधान, श्री ज्ञानचन्द गुप्ता मन्त्री, श्री प्रेमचन्द मित्तल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी—श्री जगत नारायण मौर्य प्रधान, श्री श्रीराम शास्त्री मन्त्री, श्री बुद्धदेव आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज चित्रगुप्तगंज लश्कर—श्री मनीराम गुप्त प्रधान, श्री डा० सुरेन्द्र भटनागर मन्त्री, श्री नरेन्द्र गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

सभा द्वारा प्रचारार्थ प्रकाशित साहित्य

(महर्षि स्वामी दयानन्द कृत)

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका हिन्दी	२८)००
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका अंग्रेजी	३०)००
संस्कार विधि हिन्दी	१६)००
संस्कार विधि अंग्रेजी	२०)००
गोकरुणा निधि हिन्दी	)५०
गोकरुणा निधि अंग्रेजी	२)५०
आर्याभिविनय हिन्दी	६)००
आर्याभिविनय अंग्रेजी	३)५०
आर्य उद्देश्य रत्न माला	)५०
(श्री लाला रामगोपाल शालवाले कृत)	
पूजा किसकी ?	)७५
धर्म के नाम पर राजनैतिक षडयन्त्र	१)००
आर्य समाज	)७५
ब्रह्माकुमारी ढोल की पोल	)७५
(श्री ओमप्रकाश त्यागी कृत)	
आस्तिक नास्तिक सम्वाद	२)००
संघर्ष ही जीवन है।	३)५०
हिन्दू धर्म विदेशी षडयन्त्र के घेरे में	३)५०
वैदिक धर्म की रूप रेखा	६)००
विदेशी देन अस्पृश्यता	१)००
एक ही मार्ग	१)००

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

१०५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, हरिद्वार (उ प्र)

शोक समाचार

—महाशय अयोध्या प्रसाद निवासी चितरी आसफपुर बदायूं का २२ जून ९२ को निधन हो गया। वे ७५ वर्ष के थे। आप चितरीआसफपुर आर्यसमाज के कई वर्ष तक पुरोहित रहे आपने कई आर्य समाजों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने लगभग ४० वर्ष तक निरन्तर आर्य समाज की सेवा की। आपके निधन से इस क्षेत्र की आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। महाशय जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दातागंज श्मशान भूमि में किया गया।

—आर्य समाज मोगरगा त० औसा जि० लातूर के मन्त्री श्री व्यंकटराव शामराव मुंरबे का १८-६-९२ को प्रातःकाल आकस्मिक निधन हो गया वे ७५ वर्ष के थे। उनके निधन से मोगरगा आर्य समाज की बहुत बड़ी क्षति हुई है। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री इन्द्रजीत गिरि के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के सेकड़ों व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

—आर्य समाज निजामाबाद के भूतपूर्व मन्त्री पं० नरसिंह राव जी का १९-६-९२ को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। शवयात्रा में नगर के सेकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। २१-६-९२ को सम्पन्न शोक सभा में नगर की अनेकों संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

—स्वतन्त्रता सेनानी श्री शान्ति प्रकाश प्रेम प्रभाकर ग्राम कुणजोली सावली पौड़ी गढ़वाल का २८-६-९२ को निधन हो गया। वे ७८ वर्ष के थे। आप आर्य समाज पंचपुरी गढ़वाल के निष्ठावान कार्यकर्ता तथा प्रसिद्ध समाज सेवी थे। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज बागपत का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बागपत के वार्षिकोत्सव (१७, १८, १९ जौलाई ९२) के शुभावसर पर हम आपको सादर आमन्त्रित करते हैं। उत्सव में यज्ञ, प्रवचन व भजनों के अतिरिक्त दिनांक १९-७-९२ (रविवार) को प्रातः ८ बजे से यमुना बाजार बागपत मे एक बृहद सामवेदी यज्ञ का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी, आर्य विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

कृपया समय पर कार्यक्रम में पधारकर धर्म लाभ उठावे।

—मा० सत्यप्रकाश गौड, मन्त्री

सुयोग्य वर चाहिए

सुप्रतिष्ठित वैदिक ब्राह्मण परिवार की २८ वर्षीया एम. ए. एल. एल. बी. एडवोकेट शिक्षिका पदेन कार्यरत सुन्दर-सुशील ग्रह कार्य में दक्ष कन्या हेतु समकक्ष सुयोग्य वर चाहिए। गोत्र सहित विवरण वांछनीय है। पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—पं० राजेन्द्र शर्मा
२७९७ इन्दौर रोड, महू (म० प्र०)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- मूर्ति के जडत्व धर्म आत्मा मे आने से विचार शक्ति छूट जाती है। विवेक के बिना न वैराग्य और वैराग्य के बिना विज्ञान, विज्ञान के बिना शान्ति नही होती।
- वेदादि सत्य शास्त्रो का पढना पढाना धार्मिक विद्वानो का सग, परोपकार धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट सत्यभाषण सत्य का मानना, सत्य करना ब्रह्मचर्य आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना, उपासना शान्ति जितेन्द्रिय, सुशीलता धर्मयुक्त पुरुषार्थ ज्ञान, विज्ञान आदि शुभ गुण कर्म दु खो से तारने वाले होने से तीर्थ है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष १२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पै०
वर्ष ३० अक २६]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   श्रावण कृ० ११   सं० २०४९   २६ जौलाई ११९

अयोध्या में भगवान राम का मन्दिर ही बनेगा

अग्निवेश का आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं है

आर्य जनता सावधान रहे !

दिल्ली २० जुलाई। शिमला से १८ जुलाई की प्रात दूरदर्शन से प्रसारित एक वक्तव्य मे अग्निवेश ने भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप मे कहा है कि अयोध्या मे रामजन्म भूमि के पूरे परिसर को सरकार अपने कब्जे मे ले ले और वहा कोई अस्पताल खोल दे जिससे हिन्दू-मुसलमान सबको लाभ पहुचेगा। उनके इस वक्तव्य पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने कडी आपत्ति प्रकट करते हुए कहा कि आर्य समाज अयोध्या म राममन्दिर के निर्माण का पूर्ण रूप से समर्थन करता है, क्योकि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र आर्य जाति की आस्था और प्राचीन सस्कृति के प्रतीक हैं। हमारे प्राचीन इतिहास भी अयोध्या मे ही उनका जन्म लेना सिद्ध करते हैं। इसलिए राम जन्म भूमि परिसर मे मन्दिर का ही निर्माण होना चाहिए। उसके बदले मे वहा किसी प्रकार का अस्पताल आदि का निर्माण करना देशवासियो की धार्मिक भावनाओ को आहत करना होगा।

स्वामी आनन्दबोध जी ने बताया कि अग्निवेश को आर्यसमाज के नाम पर इस प्रकार के भ्रान्तिपूर्ण वक्तव्य देने का कोई अधिकार नही है। समूचे आर्य समाज के सगठन मे भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा नाम का कोई सगठन नही है और न उसके निर्माण की सार्वदेशिक सभा ने कभी कोई अनुमति ही दी है। अग्निवेश साम्यवादी विचारधारा के अस्थिर राजनीतिक है जिसके कारण उन्हे १९७६ मे आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से अनिश्चित काल तक के लिए निष्कासित किया हुआ है। अत देश की जनता अग्निवेश के किसी भी वक्तव्य को आर्य समाज की राय न माने।

स्वामी जी ने कहा यदि मन्दिर निर्माण मे कोई रुकावट डाली तो आर्य समाज पूरी ताकत से इस आन्दोलन मे शामिल होगा। उन्होने सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय को भी अवगत किया है कि आर्यसमाज के विधान मे तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का कोई स्थान नही है और न ही अग्निवेश को आर्य समाज के नाम से कोई वक्तव्य देने का अधिकार है।

—प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

बाल ठाकरे ने शिवसेना से अलग रहने का फैसला बदला

बम्बई, १८ जुलाई। शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओ के अनुरोध पर पार्टी के काम-काज से अलग रहने के अपने फैसले को बदल दिया है।

श्री ठाकरे ने करीब पच्चीस वर्ष पहले शिवसेना की स्थापना की थी। पार्टी से अलग होने की उनकी घोषणा इसके मुखपत्र 'सामना' मे प्रकाशित हुई थी। इस घोषणा मे यह भी कहा गया था कि श्री ठाकरे के परिवार के लोगो ने भी पार्टी से अलग होने का फैसला किया है।

श्री ठाकरे की इस घोषणा का पता लगते ही पार्टी के कई वरिष्ठ नेता आज सुबह ही उनके उत्तर-पश्चिम बम्बई स्थित निवास पर पहुच गए। सर्वश्री प्रमोद नवलकर, मनोहर जोशी और सुधीर जोशी समेत कई नेताओ ने बन्द कमरे मे श्री ठाकरे के साथ काफी देर तक बातचीत की।

बातचीत के बाद ही यह बताया गया कि श्री ठाकरे ने अपना फैसला वापस ले लिया है। बाद मे श्री ठाकरे ने अपने निवास के बाहर एकत्र हुए करीब पाच हजार कार्य कर्ताओ को सम्बोधित करते हुए उनसे शिवसेना के 'गौरवशाली अतीत' को पुनर्जीवित करने का आह्वान किया।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

समस्त आर्य समाजों को निर्देश

सभा को ज्ञान हुआ है कि कुछ प्रान्तीय सभाओं से सम्बन्धित आर्य समाजें राजकीय प्रान्तीय सीमाओं के विभाजन एवं नवीनीकरण के परिणाम स्वरूप अलग प्रान्तों में चली गई है तथा वहां के रजिस्ट्रार फर्म एण्ड सोसायटीज के द्वारा आर्य समाजों को पृथक से रजिस्टरी कराने हेतु नोटिस दिया जाता है।

समस्त ऐसी आर्य समाजों व प्रान्तीय सभाओं को आदेशित किया जाता है कि वे अपनी समाज की रजिस्टरी आर्य समाज के नियम संख्या ८३ के अनुसार प्रान्तीय सभा से पृथक न करावे। अर्थात कोई भी आर्य समाज अपनी रजिस्टरी पृथक नही करा सकती। यदि कोई शासकीय कठिनाई हो तो अपनी प्रान्तीय सभा अथवा सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क करे।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली

आर्य समाज मदुरै का निर्वाचन

आर्य समाज मदुरै का चुनाव श्री एम० नारायण स्वामी की अध्यक्षता मे दिनांक २१ ६ ९२ को सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान- श्री आर० एन० रामलिंगम। उपप्रधान श्री जी० आर० गोपाल राव जी श्री जे० एम० राजाराम जी। मन्त्री—श्री क० मामलमणि। उपमन्त्री श्री रामभूर्ति जी, एवं तुलसाराम जी। कोषाध्यक्ष—श्री एस० वकट राम जी। पुस्तकाध्यक्ष—श्री सी० सा० बाल सुब्रह्मण्यम् जी।

ईश्वर प्रार्थना

मै तेरे प्रेम की धुन मे गाता हुआ जब कभी तेरे मन्दिर मे आया करू।
हे प्रभु मुझको इतना बतादो जरा कौन सी भेंट सेवा मे लाया करू॥
मूर्ति को तो घड़ता है यह आदमी, और फूलो को भगवान बनाता है तू।
इस तरफ आदमी की है कारीगरी, उस तरफ सारे जग का विधाता है तू।
किस तरह फूल है जो कि तेरी कृति आदमी की कृति पर चढ़ाया करू।
मै तेरे प्रेम की ॥१॥

आदमी ने बनाली तेरी मूर्ति तेरी सूरत कही भी नजर आती नही।
तू जो खाता नही प्रभु इसलिए, मूर्ति भी कोई चीज खाती नही।
मूर्ति को खिलाने से फायदा हुआ, फिर तुझे मैं किस तरह खिलाया करू।
मैं तेरे प्रेम की ।२।

मानता हू कि तू मूर्ति मे भी है, उसके बाहर भी तो तू ही मौजूद है।
घर के बाहर ही मझको मिले तू अगर, अन्दर से बुलाना तो बेसूद है।
मूर्ति मे पथिक तुझे जानकर एकदेशी तुझे क्यो ठहराया करू।
मै तेरे प्रेम की धुन मे गाता हुआ जब कभी तेरे मन्दिर मे आया करू।
हे प्रभु मुझको इतना बतादो जरा कौन सी भेंट सेवा मे लाया करू ।३।

प्रेषक—ब्रह्मचारी विदित्त आर्य

डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री का राज्य आयुर्वेद सलाहकार मनोनीत होने पर अभिनन्दन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश मे आयुर्वेद के सर्वांगीण विकास के सम्बन्ध मे, परामर्श देने के लिए महामहिम राज्यपाल श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी जी ने शासन द्वारा गठित आयुर्वेद विकास सलाहकार समिति मे भासी के सुप्रसिद्ध समाज सेवी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आयुर्वेद के मनीषी विद्वान आचार्य डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री जी को सम्मानित सदस्य मनोनीत किया है।



मनोनयन के उपरान्त मे नव सवत्सरारम्भ के शुभावसर पर रवीन्द्रालय लखनऊ मे प्रान्तीय सम्मेलन के तत्वावधान मे आयोजित समारोह मे आचार्य डा० सुरेश चन्द्र शास्त्री के पूर्ण स्वस्थ सुखी समृद्ध शाली दीर्घ जीवन हेतु हार्दिक मंगलमय शुभकामनाये समर्पित करते हुए उनका अभिनन्दन किया गया।

उल्लेखनीय है कि आचार्य डा० सुरेश चन्द्र शास्त्री जी ने विगत ३५ वर्षों से शासकीय सेवा मे रहते हुए भी आयुर्वेद के सर्वविध प्रचार प्रसार प्रशिक्षण, चिकित्सा औषध निर्माण अनुसन्धान साहित्य लेखन, प्रकाशन, स्वास्थ्य शिविर वैज्ञानिक सगोष्ठी सम्मेलन आदि की रचनात्मक सेवा प्रवत्तियो द्वारा विश्वभर मे एक अनुकरणीय आदर्श कीर्तिमान स्थापित किया है। प्रोफेसर डा० शास्त्री के द्वारा प्रशिक्षित कई हजार सुयोग्य चिकित्सा स्नातक, आज देश विदेश मे सरकारी तथा गैरसरकारी प्रतिष्ठानो मे, आयुर्वेद चिकित्सा, अनुसधान, अध्यापन प्रशासन आदि के जनका उच्चतम महत्वपूर्ण पदो पर कार्यरत होकर सराहनीय सेवाये कर रहे है। डा० शास्त्री जी ने जीवन भर तपस्या करके आयुर्वेद विज्ञान की प्राचीन परम्परा की उस आदर्श पीढी का सृजन करने का गौरव प्राप्त किया है।

राजकीय आयुर्वेद कालेज, भासी एवं गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के सेवा निवृत्त प्राचार्य, प्रो० डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री जी की सर्वहितकारी विभिन्न प्रकार की उत्कृष्ट सेवाओ को ध्यान मे रखते हुए, उन्हे स्थानीय जनपदीय प्रान्तीय राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तरो पर विभिन्न समारोहो मे सम्मानित करके भासी के ऐतिहासिक गौरव का सदैव बढाया गया है।

डा० शास्त्री ने भारत सेवक परिषद हिन्दी विश्व परिषद विश्व साहित्य संस्कृति सस्थान भारत सेवक समाज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अ० भा० आयुर्वेद महा सम्मेलन आदि सक्रिय सस्थाओ के माध्यम से विश्व मानवता की सराहनीय सेवा की है।

१९६७ ६८ मे भारतीय सस्कृति की दिग्विजय यात्रा के समय डा० शास्त्री को पश्चिम जर्मनी मे स्वर्ण पदक से विभूषित किया गया। अमेरिका मे द्वितीय विवेकानन्द की उपाधि से तथा इग्लैण्ड मे ग्रेट फिलास्फर आफ द वर्ल्ड की सम्मानित उपाधि से अलकृत किया गया था।

श्री शास्त्री ने सम्पूर्ण योरोप अफ्रीका तथा मारीशस वर्मा नेपाल आदि एशियाई देशो मे कई बार आयुर्वेद प्रचार यात्राये की है। आज विश्वभर मे निरन्तर बढती हुई आयुर्वेद की लोकप्रियता को देखकर विश्वास होने लगा है कि निकट भविष्य मे निरापद सर्वोपयोगी शाश्वत जीवन विज्ञान के रूप मे (आयुर्वेद, भावी विश्व का एक वैकल्पिक अन्तर्राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप मे अवश्य स्वीकार किया जायगा।

डा० शास्त्री जी का यह मन्तव्य एव विश्वव्यापी नारा है कि ससार भर मे पूर्ण होने के लिए वेद और पूर्ण स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद) के सिवा कोई भी दूसरा श्रेयस्कर मार्ग नही है।

उद्भट विद्वान, सक्षम प्रशासक, संवेदनशील मानव डा० शंकर दयाल शर्मा

नई दिल्ली १६ जुलाई। भारतीय गणराज्य के नौवे राष्ट्रपति डा० शकर दयाल शर्मा एक प्रखर न्यायविद और अनुभवी प्रशासक होने के साथ साथ इन गिने चुने राजनीतिज्ञो मे से है जिनकी शालीनता के सभी कायल हैं

७४ वर्षीय राष्ट्रपति डा० शर्मा विधि और अन्तरर्राष्टीय सम्बन्धो के प्रसिद्ध विद्वान हैं। पिछले चालीस साल से एक राजनीतिज्ञ की हैसियत से उन्हे प्रशासन चलाने का व्यापक अनुभव रहा है पूर्व भोपाल राज्य के मुख्यमन्त्री मध्य प्रदेश के मन्त्री केन्द्र मे संचार मन्त्री तथा आध्र प्रदेश पजाब और महाराष्ट मे राज्यपाल के रूप मे उन्होने अपनी प्रशासनिक दक्षता का सबूत दिया है।

डा० शर्मा का जन्म १९ अगस्त १९१८ को भोपाल म एक मध्यम वर्गीय परिवार म हुआ था उनके पिता का नाम खशीलाल शर्मा था मा का नाम सुभद्रा है। आगरा मे सट जान्स कालेज मे उनकी शिक्षा हुई उन्होने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अग्रजी साहित्य हिन्दी और सस्कृत मे एम ए किया उसके बाद उन्होने लखनऊ विश्वविद्यालय से एल०एल०एम० किया। १९३९ म वे तीन साल तक लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र संघ के पदाधिकारी रहे इसी दौरान उन्होने एथलेटिक्स नौकायन और तैराकी मे रुचि दिखाइ। वे तीन साल तक लखनऊ विश्व विद्यालय के तैराकी चपियन रहे। १९४० मे उन्होने लखनऊ की अवध मुख्य अदालत म वकील के रूप म प्रक्टिस शुरू की

डा० शर्मा न कम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी०एच डी० की और लन्दन विश्वविद्यालय से लोक प्रशासन म डिप्लोमा हासिल किया उन्होने लिंकन्स इन से बार एट ला की डिग्री हासिल की। १९४ से १९४७ तक उन्होने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे कानून पढाया। १९४७ से १९४८ तक वे अमेरिका के हारवड ला स्कूल के फलो रहे। भोपाल लौटने पर डा० शर्मा भोपाल रजवाड को भारतीय सघ म विलय कराने के आदोलन मे कूद पडे। उन्हे आठ महीने तक कारावास भुगतना पडा रजवाडो के विलय के बाद १९५० म वे भोपाल राज्य काग्रस के अध्यक्ष और दो साल बाद वे भोपाल राज्य के मुख्यमन्त्री बने वे अप्रल १९५ से नवबर १९५ तक मुख्यमन्त्री रहे

राज्यो के पुनर्गठन के साथ मध्य प्रदेश बनने के बाद व राज्य म मन्त्रिमंडल के सदस्य बने। उन्होने शिक्षा विधि आदि कई विभाग सभाले। १९६७ म उन्हे मध्य प्रदेश काग्रस का अध्यक्ष बनाया गया। इसी बीच राष्ट्रीय राजनीति के मच पर काग्रस के विभाजन की सुगबगाहट शुरू हो गई थी। तत्कालीन प्रधान मन्त्री इन्दिरा गाधी और शक्तिशाली सिंडकेट के बीच रस्साकशी चलने लगी। डा० शर्मा को १९६८ म अखिल भारतीय काग्रस का महासचिव बनाया गया। एक साल बाद काग्रस का विभाजन हो गया। १९७२ मे काग्रस का महाधिवेशन कलकत्ता म हुआ जिसमे डा शर्मा ने औपचारिक रूप मे पार्टी अध्यक्ष का कार्यभार सभाल लिया व १९७४ तक इस पद पर रहे

१९ १ मे लोकसभा चुनाव जीतने के बाद डा शर्मा को १९ ४ म इन्दिरा गाधी म मन्त्रिमण्डल म सचार मन्त्री बनाया गया। इमरजेन्सी के बाद १९ के आम चुनाव म काग्रस की हार तक व केन्द्र म सचार मन्त्री रहे। १९७७ म व चुनाव हार गये राजनतिक घटना क्रम ने तीन साल बाद फिर करवट ली और डा० शर्मा १९८० के चुनाव म जीतकर लोकसभा म आए। व अगस्त १९८४ तक लोकसभा सदस्य रहे

इसी बीच आन्ध्र प्रदेश म भास्कर राव के दल बदल के बाद एन टी० रामराव की सरकार को बर्खास्त कर दिया गया और खास विवाद उठ खडा हुआ। तब डा० शर्मा को राज्यपाल बना कर आन्ध्र प्रदेश भेजा गया उन्होने राजनतिक सूझबूझ के साथ विवाद को सुलझाया और श्री रामराव दोबारा मुख्यमन्त्री बने १९ ५ म डा शर्मा को पजाब का राज्यपाल बनाकर भेजा गया अगले साल उन्हे महाराष्ट्र का राज्यपाल बनाया गया १९८७ म डा शर्मा उपराष्ट्रपति के चुनाव म काग्रस के उम्मीदवार बने तीन सितम्बर १९८७ को उन्होने उपराष्ट्रपति का पद सभाला

डा शर्मा इस समय दिल्ली पजाब और पाडचेरी विश्वविद्यालयो के कुलाधिपति भी हैं व गाधी ग्राम ग्रामीण सस्थान के भी कुलाधिपति है

भारतीय सास्कृतिक सम्बन्ध परिषद और भारतीय लोक प्रशासन सस्थान के वह अध्यक्ष है शाति निरस्त्रीकरण और विकास के लिये दिये जाने वाले इन्दिरा गाधी पुरस्कार की अतर्राष्टीय ज्यूरी के वह अध्यक्ष है

डा० शर्मा जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल फड के उपाध्यक्ष तथा इन्दिरा गाधी राष्टीय कला केन्द्र के सदस्य है।

उन्होने पाच पुस्तके लिखी है जिनमे क्राति दृष्टा काग्रस एप्रोच ट इटरनेशनल अफेयर्स जवाहरलाल नेहरू द मेकर आफ माडन कामनवेल्थ प्रमुख है। १९७१ से १९७४ तक उन्होने सोशलिस्ट इडिया क भी सपादन किया। इल्म ओ नर (उर्दू) और ज्योति पत्रिकाओ का भी उन्होने सम्पादन किया।

डा० शर्मा और उनकी पत्नी विमला के परिवार मे दो पुत्र और एक पुत्री है। उनकी एक अन्य पुत्री गीताजलि की हत्या १९८५ म हुई थी। आतकवादियो ने गीताजलि और उनके पति ललित माकन को गोली मार दी थी।

राष्ट्रपति चुने जाने के बाद पहला सन्देश

नई दिल्ली। डा० शकर दयाल शर्मा ने राष्ट्रपति चुने जाने के बाद आज यह सन्देश दिया— मै ससद और राज्य विधानसभाओ के विभिन्न दलो के सदस्यो का हृदय से आभारी हू कि उन्होने मुझे राष्ट्रपति पद के योग्य मानकर मेरे प्रति यह विश्वास व्यक्त किया है जो जिम्मेदारी दी गई है उसे मै भली भाति महसूस करता हू।

मै प्रार्थना करता हू कि ईश्वर मुझे शक्ति दे जिससे मै म क क प्रति अपना कर्तव्य निभा सकू और बापू के आदर्शो और सिद्धान्तो के अनुरूप चल सकू

आज हमे उन तमाम स्वतत्रता सेनानियो और राष्ट्रीय नेताओ को याद करना है जिनके त्याग और बलिदान के कारण हम ससार के सबसे बडे और कामयाब लोकतत्र बने है। मै भारत को शाति सौहार्द सम्पन्नता और सामाजिक न्याय की भूमि के रूप मे देखने की गहरी ललक रखता हू—एक ऐसे देश के रूप म जो समूची मानव जाति के सुखद भविष्य के लिए उचित योगदान करे

मै मानता हू कि इस चुनाव म सभी सम्बन्धित लोगो ने हमारे लोकतत्र की उच्च परम्परा के अनुरूप भाग लिया है।

इस्लामी देश में गैर इस्लामी ड्रामा पर गिरफ्तारियां

शारजा (अमीरात) में १० भारतीय गिरफ्तार

नई दिल्ली १७ जुलाई। शारजा म १० भारतियो को जेल म ठूस दिया गया है क्योकि वहा के स्थानीय अधिकारियो के कथनानुसार इन्होने जो ड्रामा खेला वह गैर इस्लामी था। इन्डियन एसोसिएशन शारजा के दो अधिकारियो केरल आर्ट एसोसिएशन के चार सक्रिय सदस्यो और सूर्य आटस एसोसिएशन (सामायनी) क चार कलाकारो को गत १६ जून ९२ को गिरफ्तार किया गया। पालियामेट क ११ सदस्यो न इसी सम्बन्ध मे भारतीय प्रधान मन्त्री श्री पी०वी० नरसिंहराव को एक पत्र भेजकर इन पर जोर दिया कि वह शारजा के प्रमुख अधिकारी से सीधा सम्बन्ध स्थापित करके इन १ भारतीयो को रिहा कराया जाए। यह घटना मई ९२ की है। जब इन्डियन एसोसिएशन शारजा ने अपना एडीटोरियम केरल आटस का अपना वार्षिक उत्सव (साल गिरह) मनाने के लिए किराए पर लिया जहा सूय आटस सोसायटी के कलाकारो ने एक मलियालम ड्रामा (लाश खाने वाले कीड) प्रस्तुत किय दोष यह लगाया है कि इस ड्रामे म कुछ एसे रिमाकस कहे गय है जिन्हे वहा के अधिकारी हजरत मुहम्मद की शान मे गुस्ताखी मान रहे है— भारतीयो मे आ कुछ ऐसे थ जिन्होने इस रिमाकस का नोटिस लिया और इन्होन दूसरे लोगो विशेषकर पाकिस्तानियो को भडकाया कि वह सी०आई०डी० पुलिस और वक्फ बोड को एसोसिएशन के विरुद्ध शिकायत करे। शारजा के हाकिमो ने जाच पडताल कर इण्डियन ऐसोसिएशन शारजा क प्रधान और अन्य १ व्यक्तियो पर इस्लाम के विरुद्ध 'षडयन्त्र" का केस बना दिया, शारजा ने ६० हजार भारतीयो का प्रतिनिधित्व करने वाली उपरोक्त सस्थाओ की मान्यता समाप्त कर दी है।

फातिमा का दूसरी बार तलाक

नई दिल्ली १७ जुलाई।

अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपालिटन मजिस्ट्रेट के०मी० लोहिया की अदालत मे आज फातिमा और जलाली खान ने तलाकनामा पर अगूठे का निशान लगा दिया। इस प्रकार १८ साल की अल्प आयु म फातिमा का दूसरी बार तलाक हो गया। फातिमा को कल उसकी मा सुपुर्द कर दिया जाएगा।

कल ही श्री लोहिया ने जलाली खान के वृद्ध चाचा नूर मोहम्मदको तलाकनामातैयारकराकर लानेकोकहाथा लेकिन आज तलाकनामा प्रस्तुत नही हो सका। नूर मोहम्मद ने अदालत को बताया कि दिल्ली स्थित एक मस्जिद के काजी ने तलाकनामा तयार करने से यह कहते हुए मना कर दिया कि जिसने निकाहनामा तैयार किया है वही तलाकनामा तैयार करेगा। निकाहनामा कलकत्ता मे तैयार हुआ है। आज जलाली के पुराने वकील भी उपस्थित नही हुए। उसकी ओर से आज जोगिन्दर यादव ने वकालत की।

श्री लोहिया ने फातिमा से पूछा कि क्या वह जलाली के साथ जाना चाहती है इस पर फातिमा का जवाब था कि वह अपनी मा के साथ कलकत्ता जाना चाहती है। किसी मस्जिद से तलाकनामा नही ला पाने पर अदालत मे ही तलाकनामा तैयार किया गया। मैं अपनी इच्छा से अपनी पत्नी फातिमा को तलाक दिया। तलाकनामे पर लिखे इस वाक्य पर जलाली ने अगूठे का निशान लगा दिया। फातिमा ने भी अगूठे का निशान लगाकर इसकी पुष्टि कर दी।

जलाली की जमानत पर कल विचार होगा। डाक्टरी प्रमाण पत्र से इस बात की पुष्टि हो गई कि फातिमा की उम्र अठारह वर्ष है। कल अदालत मे यह भी बताया गया था कि फातिमा की चार साल पहले किसी अन्य व्यक्ति से शादी हुई थी। उस व्यक्ति ने दो साल पहले फातिमा को तलाक दे दिया था। कल सम्भवत फातिमा अपनी मा के साथ कलकत्ता चली जाएगी। इस प्रकार करीब एक माह तक कानूनी अडचनो मे फसी फातिमा घर पहुच जाएगी।

पुत्र की सफलता पर वे विह्वल हैं

भोपाल, १६ जुलाई। विश्व के विशालतम प्रजातन्त्र के विशालतम राज्य मध्यप्रदेश की ताल तलैयो और शैल शिखरियो वाली राजधानी भोपाल के व्यस्ततम क्षेत्र चौक बाजार के पास गुलिया दायीवाली तग गली म स्थित शकर आयुर्वेदिक औषधालय की दीवार पर १९११ के दिल्ली दरबार वाला एक दुलभ रगीन चित्र टगा है। ब्रिटिश भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली जाने की स्मृति दिलाने वाली इस तस्वीर मे तब के सर्वोच्च शासक जाज पचम का चित्र भी है।

इसी औषधालय के सस्थापक तथा विख्यात वैद्य स्व० पण्डित खुशीलाल वैद्य के ज्येष्ठ पुत्र डा० शकरदयाल शर्मा को आज आजाद भारत के सर्वोच्च पद पर निर्वाचित घोषित किया गया है।

दिल्ली दरबार वाले बडे चित्र के ठीक नीचे एक छोटा फोटो टगा है, जिसमे युवा डा० शकरदयाल शर्मा दो नवजातसिंह शावक लिए एक पुलिस अधिकारी से बतिया रहे हैं।

और इन चित्रो क नीचे बिछे दीवान पर आसीन श्रीमती सम्पद देवी अपने स्व० पति के औषधालय का सचालन करती है।

अपने पुत्र के राष्ट्रपति चुने जाने पर वे फूली नही समा रही। एक बीमार किशोर को दवा थमाते हुए वे अपने भरे-पूरे हैं। परिवार के साथ उन लोगो के अभिवादन स्वीकार कर रही हैं। जो इस नगरी के लाडल सपूत की उच्चतम उपलब्धि पर उन्हें बधाई देने पहुचे हैं।

वे बताती हैं कि बचपन मे शकरदयाल सवेरे-सवेरे तालाब मे तरने और कसरत करने के बाद दूध ,जलेबी और कचौरियों का जमकर नाश्ता किया करते थे। उन्होने कहा कि जब वे ऊची पढाई के लिए विदेश जाने लगे तो लोगो ने हमे बार-बार डराने की कोशिशें की कि वे किसी मेम को ब्याह लावेंगे और मास-मदिरा का सेवन करने लगेगे मगर पूरे परिवार को भरोसा था कि

(शेष पृष्ठ १० पर)

जीवन वृत्त—

वन्देमातरम् वीरभद्र राव (३)

—टी नरहरिराव

श्री वीरभद्र राव जी को आशा थी कि स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद जीवन मे शाति मिल सकेगी। लेकिन उनकी आशाए धूल म मिल गयी जब उन्होने बहुत से अवसरवादी कागलसा को गव के साथ नेता बन घमन देखा जो वास्तव मे दुष्ट व्यक्ति से अधिक कुछ नहा थ ग्रामीण क्षत्रो मे रहने वाले लोगो मे जमीन हडपने की भख बढ गयी साम्यवा दया न अपनी भख मिटाने की आड म राज्य म आतक फलाना शुरू कर दिया। उनके इस आतक के कारण गरीबो को जमीन दिलाने का वीरभद्र राव का उद्दश्य परा नही हो सका सकडो निरपराध व्यक्ति मारे गय तत्कालीन हैदराबाद रियासत के तेलगाना क्षत्र क अनेक जिले आतकवादी आग की चपेट म आ गये

वन्देमातरम बन्धुओ ने एक योजना पर विचार किया। पहल उनकी धारणा थी कि यदि जमीदारा से शा त पूवक प्राथना की जाय तो वे अपनी जमीन का थोडा सा भाग पटटे पर ऐसी सहकारी कृषि समितियो को दे दग जिसके सदस्य भूमि हीन मजदूर हो। लेकिन उनका यह विश्वास उस समय टूट गया जब उन्हे मालूम हुआ कि उनकी योजना को नष्ट करने वाले भमि हीन गरीब लोग नही बल्कि बड बड जागीरदार और उनके कुछ सत्ताधारा चमचे थे। उनकी योजना की असफलता का चर्चा करत हुए करीमनगर जिले के कलक्टर श्री दबे ने कहा था—

दोस्तो अमीर जमीनदारो और गरीब भमिहीन लोगो के बीच बढती हुई खाई को पाटने के लिए आपके प्रयत्नो की मै सराहना करता हू आप अपने प्रयत्नो से उस क्षत्र मे शान्ति लान की आशा करत हैं शायद साम्य वादी आपके इस दृष्टिकोण को मानल कि वतमान परिस्थितिय मे हिंसा से उन्हे सफलता नही मिलेगी लेकिन जागीरदारो और उनके सत्ताधारी गुर्गो से आप लोग सावधान रहना मेरा अनुमान है कि आप उनके षडयन्त्रो का मुकाबला नही कर सकगे।

यह बात उस समय सत्य प्रमाणित हुई जब वन्देमातरम बन्धुओ ने नलगोन्डा जिला के रामन्नापेट तालुका मे मलकापुर गाव म अपनी सहकारी कृषि योजना के कार्यान्वयन का प्रयत्न किया। व उस गाव के विभिन्न जाति और धम के लोगो को एक सहकारी कृषि फाम स्थापित करने के लिए एक मत बनाने के प्रयत्न मे सफल भी हो गये तीन हजार चार सौ एकड भमि भी पटटे पर लने मे उन्हे सफलता मिल गयी। इस पडती भमि का आधा भाग ठीक करके खती योग्य बनाया गया था। इस काय म वीरभद्र राव जी को कठिन परिश्रम और अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा। उन्होने भमि हीन गरीब लोगो की जो सेना तयार की थी वह नियम से प्रतिदिन नियत समय पर फाम पर जा कर मशीन की तरह खती के काम मे जुट जाती थी यह देखने लायक दृश्य था। यहा तक कि छोटे किसानो (कृषको) ने भी इस काम मे उनकी सहायता की। लेकिन जागीरदारो ने शासनतन्त्र के साथ साठ गाठ करके शुरू से ही उनके इस काय मे बाधा पहुचानी शुरू कर दी थी। परन्तु ये बाधाए भी लोगो का उत्साह कम नही कर सकी। फिर वह समय आया जब मुकदमेबाजी का सहारा लेकर अडचन डाली जाने लगी। मगर देश के सर्वोच्च न्यायालय ने गरीब ग्रामवासियो के पक्ष मे ही फसला दिया। दुख तो इस बात का हैं कि इस फसले के बाद चार दशको तक निरन्तर सघष करने पर भी आज हम यह देखते है कि इस जन आन्दोलन को जागीरदार नही अपितु साम्यवाद के पक्षधर ही पराजय की ओर ले जा रहे हैं।

श्री वीरभद्र राव जी उन व्यक्तियो म नही थे जो किसी विशेष कायक्षत्र मे सफलता प्राप्त करके अपने निजीस्वाथ के लिए उस पर अपना आधिपत्य जमाने लगते हैं। वे जो कुछ करते थे दूसरो की भलाई के लिए ही करते थे। जब उन्हे लगता था कि उनका काम पूरा हो चुका है तो वे लोगो को अपने पैरो पर खडा करके उनसे विदा ले लेते थे। इसका यह अर्थ नही था कि वे इन योजनाओ से सदा के लिए अपना नाता तोड लेते थे। आवश्यकता पडने पर जब कभी भी लोग उन्हें बलाते तो वे वहा जाकर उनकी समस्याओ को हल करने मे सहायता करते थे।

सहकारी सगठनो द्वारा आर्थिक विकास की दिशा मे काय करने के पश्चात श्री वीरभद्र राव जी ने शिक्षा के क्षत्र मे पदापण किया। केवल निरक्षरता निवारण ही उनका उद्देश्य नही था अपितु गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली द्वारा व लोगो को चरित्र निर्माण की तरफ ले जाना चाहते थे। दस वष के लम्बे समय तक उन्होने इसके लिए काय किया। लेकिन इस कार्य मे भी उनको अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा। अन्त मे समाज के बड बड मगर मच्छो के जिनका एक मात्र उद्दश्य शिक्षा सस्थाओ का पसा खाकर अपना पेट बढाना था दुष्प्रयासो के विरुद्ध सघर्ष करत-करत वे स्वय अपने प्राण ही खो बठ ये समाज के मगरमच्छ करोडो रुपया हजम कर गए और इस तरह दक्षिण भारत मे एक हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना का उनका स्वप्न चर चर हो गया

वीरभद्र राव जी एक धार्मिक प्रवत्ति क व्यक्ति थे योग और प्राथना की उपादेयता म उनका विश्वास था उन्होन हठ योग सीखने का एक प्रोग्राम बनाया हुआ था। जिसके द्वारा वे प्रकृति पर विजय प्राप्त करके पर मात्मा के सान्निध्य मे पहुच कर परम सत्य का अनुभव करना चाहते थे। योगाभ्यास के समय उनके कई अभिन्न मित्रो ने उन्हे बिना किसी सहारे के जमीन से लगभग ४ फुट ऊपर हवा म उठते हुए देखा था लेकिन एक दिन प्राण वायु को सिर के उपर स्थित ब्रह्म रन्ध्र मे ले जाने समय उनके नाडी सस्थान पर आघात पहुचा और वे अस्वस्थ हो गये। ८ दिन के लम्बे समय तक वे मृत्यु से लडते रहे। व जीना चाहते थ। लेकिन जब उन्हे मालम हुआ कि गुरुकुल को बचाने के उनके प्रयत्न असफल हो गये तो उन्होने स्वेच्छा से अपने प्राण त्याग दिये

दुर्भाग्यवश उनके स्वर्गारोहण के समय मे मैं उनके पास नही था उन दिनो मैं अपने पुत्र भीष्म के साथ अमेरिका मे था बाद मे मुझे उनके मित्रो से मालम हुआ कि अपनी मृत्यु से एक दिन पहले उन्होने सकेत दे दिया था कि वे उन्हे सदा के लिए छोडकर जाने वाले हैं। मृत्यु के कुछ घण्टे पहले व अच्छी चेतनावस्था मे थे १४ जन सन १९८८ बुधवार की रात्रि को ११ बजे उन्होने आख खोलकर पास बठे मित्रो को देखा और फिर एक दीघ श्वास लेकर प्राण त्याग दिये।

मृत्यु के समय भी श्री वीरभद्र राव जी ने यह सिद्ध कर दिखाया कि व जन-साधारण से ऊपर एक सच्चे महा मानव थे। ●

पृथ्वी के बाहर भी जीवन है

—विश्वनाथ प्रसाद, विद्यावाचस्पति, कोरबा

महाभारत युद्ध के पश्चात ससार मे अविद्या का अ धकार ऐसा फैला कि लोगो के सोचने का ढग ही बदल गया। सच्ची बात झूठी और झूठी बात सच्ची और तक पूण प्रतीत होती थी। मूर्खो के बीच मे सत्य बात करने वाला महामूख समझा जाने लगा। वाक्य पटुता के धनी लोग सबको अपन विचारो से प्रभावित करते थे। कन्फ्यूशियस ने ठीक ही कहा है कि अज्ञानता एक ऐसी रात्रि के समान है जिसमे न चाद है न तारे।

ऐसी दशा मे लोग चाद तारो आदि से अपना व्य क्तगत लगाव स्थापित करने लग। कोई चाद को मामा मासा (मौसी समझने लगा तो कोई तारो के गुलाम बन गए अथात ज म पत्र बनवाने लगे ग्रहो को शान्त कराने लगे ज म पत्र के आधार पर बच्चो का विवाह होन लगा और मूर्खो पर राहू और केतु के आक्रमण होने लगे। ऐसे ही कुछ उदाहरण ज्ञान वद्धि हेतु दिए जा रहे हैं—

१) फिर उसने एक और स्वप्न देखा और अपन भाइया से उसका भी या वणन किया कि सुनो मैने एक और स्वप्न देखा है कि सूय और च द्रमा और ग्यारह तारे मुझ दण्डवत कर रहे उत्पत्ति ७।६

२ हेरोदेस राजा के दिनो मे जब यह दया के बतल हमम यीशु का ज म हुआ तो देखो पूव से कई ज्योतिषी यरुशलेम मे जाकर पूछने लगे कि यहूदियो का राजा जिसका ज म हुआ है कहा है ? क्यो क हमन पूव मे उसका तारा देखा है मत्ती २।६ २) जो तारा उन्होने पूव मे देखा था वह उनके आगे आगे चला और जहा बालक था उस जगह के ऊपर पहुचकर रुक ठहर गया। उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए मत्ती २।६ १०

सम्भवत यहोवा परमेश्वर न हो जो कहके एक खास तारा पूव मे इस हेतु पदा किया हो कि उसके एकलौते बेटे ईसा की पहचान ससार को करादे। इस घटना के पश्चात उस विशेष तारे के बारे मे बाइबिल चप है। अत यह स्पष्ट नही हो पा रहा है कि वह तारा वापस पूरब को चला गया वही पर अब भी स्थित है या उद्द श्य पूर्ण करने के पश्चात सदव के लिए लुप्त हो गया ससार से।

(३) यहोशू ने कहा—

हे सूय तू गियोन पर और हे चन्द्रमा तू अय्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह॥ और सूर्य उस समय तक थमा रहा और च द्रमा उस समय तक ठहरा रहा जब तक उस जाति के लोगा न अपने शत्र ओ से पलटा न लिया। यहोश १० १३

४ और देखो झील म एक ऐसा बडा तूफान उठा कि नाव लहरो से ढपन लगी और वह (ईसा सो रहा था। तब उन्होने पास आकर उसे जगाया और कहा हे प्रभ हम बचा हम नाश हुए जान है। उसने उनस कहा हे अल्प विश्व वासियो क्यो डरत हो ? तब उसने उठकर आधी और पानी को डाटा और सब शात हो गया मत्ती ८।२४ से २६

५ माकण्डय पुराण की समीक्षा करत डा० शिवपूजन सिह कुशवाहा पथिक पृष्ठ १ पर एक घटना शान पर चढाकर विश्वकर्मा द्वारा सूय का तज कम करना का उल्लेख निम्न प्रकार करन है

त्वष्टा की पुत्री सज्ञा का विवाह सूय से हुआ। उससे दो पुत्र हुए। एक ववस्वत मनु और दूसरे यम। एक कन्या यमुना का ज म भी सज्ञा से हुआ। सूय का तज अ य धक था। उसे न सह सकन के कारण सज्ञा दु खी रहती थी।

उसने अपने पिता प्रजापति त्वष्टा के घर जाने का निश्चय किया और अपन स्थान मे अपना छायामय शरीर रखकर उसने कहा कि तुम बच्चो के साथ और सूय के साथ मेरे समान ही यवहार करना और पू छने पर भी मेरे जान की बात न कहना। छाया ने ऐसा ही आश्वासन दिया।

सज्ञा अपन पिता के घर जब कुछ दिन रह चकी तो त्वष्टा ने कहा— तुम्हारे धम का लोप हो रहा है। ब धु बा धवो के यहा स्त्रियो का अधिक दिन रहना ठीक नही। तुम मेरे लिए पूज्य हो और मैं तुमसे प्रस न भी हू पर तुम्हारा पतिगह मे जाना ही उ चत है। सज्ञा पिता की बात मानकर वहा से चल दी पर सूय के यहा न जाकर वह उत्तर कुरुदेश मे चली गई और घोडी का रूप धारण करके तप करन लगी।

इधर सूय ने छाया मे दो पुत्र और एक पुत्र उत्प न किया छाया का व्यव हार मनु औ यम यमा के साथ अच्छा न था। इस पर सूय ने उसका कारण पूछा और बात खुल गई। तब सूय त्वष्टा के यहा गए और सज्ञा के सम्बन्ध मे प्रश्न किया। त्वष्टा ने कहा—हा वह आई अवश्य थी पर मैंने तो उसे आप ही के यहा भेज दिया। इस पर सूय ने ध्यान धर कर देखा और सज्ञा को उत्तर कुरु देश मे घोडी के रूप मे तप करते पाया। सज्ञा की इच्छा थी कि मेरे पति किसी प्रकार सौम्य रूप को प्राप्त हो जावें। इस लक्ष्य को जान सूय ने प्रजाप त त्वष्टा से कहा—आप मेरे तेज को कम कर दीजिए। विश्वकर्मा ने सवत्सर रूपी खराद पर चढाकर सूय के अधिक तज को छाट दिया जिससे सूय का रूप अ य त सुन्दर और दशनीय बन गया। यह देखकर देवता और देवर्षि सूय की स्तुति करन लग

अन तर सूय ने अपन तेज का षोडस भाग मात्र धारण किया। विश्वकर्मा ने उसको भी फिर पन्द्रह बार छीला। इसके पीछ सूय न अश्वरूप धारण कर उत्तर कुरु वष मे जाकर वडवा रूप धारिणी सज्ञा को देखा। उसी स्थान मे दोनो की ना मका मिलने पर घोडी के मुख से नासत्य और दस्र नामक पुत्र उत्पन्न हुए और उस वीय के शेष भाग से चर्म (ढाल कवच व खडगधारी बाणतूणमुक्त अश्वारूढ रेव त नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके बाद सूय ने इस अश्विनी को अपना अतुल रूप दिखाया। तब वडवा रूप धारिणि सज्ञा ने उनका यथाथ स्वरूप देख प्रस न हो अपना स्वरूप धारण किया तब भास्कर अपनी भार्या को घर लाये। इसका ज्येष्ठ पुत्र ही ववस्वत नामक मनु हुआ दूसरे पुत्र यम शाप के कारण धम दष्टि हुए।

उपरोक्त माककण्डय पुराण की समीक्षा मे डाक्टर शिवपूजन सिह कुश वाहा लिखते है कि सज्ञा का घोडी रूप धारण करना विश्वकर्मा द्वारा सूय को शान पर चढाकर छीलना पुन मना के नथनो से दो पुत्रो का उत्पन्न होना सब गप्प है।

जब सज्ञा मे घोडी का रूप धारण करन की शक्ति थी तब क्या वह सूय के तेज को सहन नही कर सकती थी ? आकाश म स्थिर सूय से विवाह होना भी असम्भव ही है। विश्वकर्मा का सूय पर चढना भी गप्प है। क्या सूय भी कभी शान पर चढाया जा सकता है ? जब शान पर चढाकर छीला जा रहा था तब सवत्र अ धकार ही हो गया होगा वह शान कितना बडा था ? क्या वह पाप जी के घर मे रखा गया था ?

घोडा रूप सज्ञा के नथन म दो पुत्रो का उत्पन्न होना भी सृष्टिक्रम के विरुद्ध है क्या वीय नाक म डाला जाता है ? क्या शेष वीय से ढाल कवच बाण तलवार धारण किए तथा अश्व पर चढ हुए पुत्र का उत्पन्न होना सृष्टि क्रम के अनुकूल है पशु के गभ स मनुष्य की उत्पत्ति का होना असम्भव है।

६ बाल समय रवि भक्षि लियो तब तीनहुलोक भयो अ धियारो।
ता ह स त्रास भयो जग को यह सकट काहू सो जात न टारो।
देवन आन करी बिनती तब छाडि दियो रवि कष्ट निवारो।

हिन्दू समाज के एक हिस्से की मान्यता है कि नष्ठिक ब्रह्मचारी हनुमान ने बाल काल मे सूय को अपन मु ह म रख लिया था जिसके कारण तीनो लोक मे अ धियारा छा गया। जब देवताओ ने प्राथना बिनती की तब उन्होने रवि को मु ह से निकाल दया और जग के अपार कष्ट को दूर किया।

क्रमश

उसके पास वेदार्थ की कुंजी थी

डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

वेद के विषय मे भारत की आस्था रही है कि इसमे जीवन के रहस्य निहितहैं। जब-जब इस खजाने को खोलनेकी कोशिशकी गई जनता वेदार्थ न जानने के कारण पथ भ्रष्ट हो गई। अन्त मे ऐसा भी समय आया जब वेदों के बन्द ताले की कुंजी ऋषि दयानन्द के हाथ लगी। दयानन्द युग आते ही य, सर्वं विदित हो गया कि इस बन्द सदूक मे वह अमृत भरा है जिमसे हमारा देश ससार भर का मार्गदर्शन कर सकता है। आज यह समय आ गया है, और देखना है कि कौन वेद के आधार पर विश्व का पथ प्रदर्शन करता है। वेद का स्वय कहना है कि अब छिपाकर रखी हुई निधि की चाबी मिल गई है, ताले मे बन्द खजाना सामने आ पडा है, अब इसे लेकर देश विदेश मे बखेर दो – 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"।

आज के युग मे अगर कोई वेद-मन्त्रो के बल पर यह सिद्ध कर दे कि वेद मे रेल गाडी या हवाई जहाज के निर्माण की विधि का उल्लेख है तो वैदिक-धर्मी बल्लियो उछल पडेगे और चिल्लाते फिरेंगे कि देखो-वेद कितने उच्च-कोटि के ग्रन्थ है, उनमे रेल, तथा हवाई जहाज के निर्माण का वर्णन मिलता है। प्राचीन-काल का वैदिक-युग का ऋषि इस दृश्य को देखकर हस देगा और कहेगा कि कितने मूर्ख है ये लोग जो रेल और तार का नाम सुनकर अपनी बपौती को भूल जाते हैं क्या रखा है इन रेल, तार, हवाई जहाज मे जिनके रोज एक्सीडेंट होते है और जिनमे असहाय बाल-बच्चे मौत के घाट उतरत है। वेद का ज्ञान इन भौतिक बातो के लिए नही दिया गया। ये मनुष्य के खिलौने हैं जो नित बनते-बिगडते हैं। वेदो का ज्ञान उस आध्यात्मिक सत्य का उद्घाटन करने के लिये दिया गया है जिसके लिये स्वय वेद ने कहा है "पश्य देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति"—भगवान् के उस काव्य को देखो जो न कभी बुढाता है, न क्षीण होता,। वह अध्यात्म-ज्ञान मानव के प्रयत्न से प्राप्त नही होता, वह भगवान् के देने से ही प्रसाद रूपमे मिलता है। हम पिछले लेखो म इस बात पर बल देते आ रहे है कि ईश्वरीय-ज्ञान की कुंजी छिपी पडी है—उसे खोज करने की जरूरत है। जो खोजेंगे वे पायेंगे। वह खोज भौतिक न होकर आध्यात्मिक है। उपनिषदो की परिभाषा मे जो कुछ हम दुनिया मे टक्करे मार-मार कर पाते है और जिसे पाकर हम अपना जीवन धन्य मानते है, वह "अविद्या है, और जिसे हम भूले हुए हैं, जिसकी तरफ हमारा ध्यान ही नही दिया जाता, वही वास्तव मे "विद्या" है। अविद्या बेकार नही है, उससे मनुष्य मृत्यु को लाघ जाता है, दुनिया के अन्दर रहने लायक बना रहता है, परन्तु "विद्या" को पाकर वह मृत्युको ही नहीं लाघता, वह अमर होजाता है, अमृतको प्राप्त करता है। वेद-ज्ञानसे उन्हे सनातन-सत्य हाथ लगता है जो सदा टिकने वाला तथा स्थिर है। यह सत्य क्या है ?

ऋग्वेद मे सत्य-ज्ञान के दो पक्षो का उल्लेख किया है—"अद्वय' तथा 'वर्धमान । "अद्वय' वह ज्ञान है जिसमे दो पक्ष नही होत, 'वर्धमान वह ज्ञान है जिसमे दो पक्ष होन है वह बढता ही रहता है, उसमे परिवर्तन होता रहता है, बढेगा ता परिवर्तन ही तो हागा। जितना ज्ञान है वह अगर सत्य है तो उसमे परिवतन नही हो सकता, परिवतन नही होगा ता वह वर्धमान भी नही होगा बढेगा नही एक जगह टिके रहने से तालाब के जल की तरह सडन लगेगा। जा ज्ञान वर्धमान होगा, परिवर्तित हाकर बढता रहेगा वह बढते-बढते ऐसी स्थिति मे पहुच जायगा जहा बढना बन्द हा जायगा और वहा स्थिर हो जायगा, वही टिक जायगा। इस दृष्टि से प्रत्येक वर्धमान ज्ञान "अद्वय' की तरफ आ रहा है। दूसरे शब्दो मे हमे कहना होगा कि 'सत्य-ज्ञान सदा "अद्वय है। इसका अर्थ यह है कि 'सत्य' सदा एक होता है, दो नही होता—इसीलिये इसे 'अद्वय' कहत हे अर्थात् दो नही।

यहा यह स्पष्ट कर देना असगत न होगा कि आधिभौतिक ज्ञान 'वर्धमान होता है, और आध्यात्मिक ज्ञान "अद्वय होता है। उदाहरणार्थ, चिकित्सा-शास्त्र मे, जो आधिभौतिक है, कब्जके लिए एक औषधि तजवीजकी जाती है। सगत रोग को तो वह ठीककर देता है परन्तु उसके आफ्टर इफैक्ट होने लगन हे जिस कारण चिकित्सा-शास्त्र उस औषधि को छोड किसी *अन्य* औषधि को तजबीज करता है। कुछ दिन बाद उसके भी दुष्परिणाम सामने आने लगते हैं। तब तीसरी दवा सुझाई जाती है। यह सिलसिला आगे आगे बढता जाता है --इसे "वर्धमान" कहते है। भौतिक सत्य सदा वर्धमान है। आज यह, कल वह परसो कुछ और भौतिकवाद मे आगे-आगे का यह सिलसिला जारी रहता है। "अद्वय" मे दो नही एक का सिद्धान्त काम करना है। यह आध्यात्मवाद की भौतिकवाद से भिन्नता तथा विशेषता है। अगर हम सत्य की खोज करना चाहते है, तो "वर्धमान" के मार्ग को जो भौतिक-जगत् का है, छोडकर "अद्वय' के मार्ग को, जो अध्यात्मिक-जगत् का है पकडना होगा।

हमे "वेद" की ईश्वरीय-ज्ञानता को जानने और सिद्ध करने के लिये यह नहीं जानना कि इसमे रेल, तार, मोटर आदि का जिक्र है या नही—ये सब भौतिकवादी वस्तुएं हैं और "वर्धमान" हैं, आज हैं कल नही, वेद के ईश्वरीय ज्ञान होन के लिये हमे यह देखना होगा कि इसमे अपरिवतनीय, सत्य अद्वय के तत्व ह या नही। जो लोग "वेद को भौतिकवाद की दृष्टि से देखत है वे इसमे भौतिक विज्ञानो को ढूढने लगन ह जबकि ऋषि दयानन्द के हाथ मे जिस कुंजी को श्री अरविन्द ने देखा था उसने वेदा के विषय मे सारा दृष्टि-कोण ही बदल दिया। वेदा मे से भौतिकवादी रग से रगी हुई बाते ढूढने के स्थान मे ऋषि दयानन्द न उन तत्वो को ढूढना शुरू किया जो सत्य हैं सनातन है जिन्हे मनुष्य अपने ज्ञान से नही पा सकता जिन्हे ईश्वर की तरफ से ही दिया जा सकता है। वे तत्व क्या है ?

ईश्वर की सत्ता —सबसे बडा तत्व जिसे मनुष्य नही खोज सकता जो भगवान की ही देन हो सकता है, वह स्वय भगवान् का अस्तित्व है। वेदा ने स्पष्ट घोषणा की कि भगवान एक हे उस एक को अनेक नामा से कहा गया है---यह खुद वेद का कथन है— 'एक सत विप्रा बहुधा वदन्ति। पाश्चात्य विद्वान् यही समझते थे कि ससार की भिन्न भिन्त शक्तियो को देखकर आदि मानव समझता होगा कि ये भिन्न-भिन्न शक्तिया स्वतन्त्र शक्तिया है—इसलिये विकासवादी दृष्टिकोण म बहुदेवतावाद एक स्वाभाविक कल्पना थी। किसन आदिमानव को बतलाया कि असीम-शक्ति-वाली सत्ताए अनेक नही, स्वतन्त्र नही, एक ही सत्ता है, उसी को भिन्न-भिन्न नामो से पुकारा जाता है। या तो आदिमानव न यह परिणाम स्वय निकाला, या यह सत्य उसे दिया गया। ऋषि दयानन्द के हाथो मे जा वेदार्थ की कुंजी आ गई थी उसने बुद्धि के सब दरवाजे खोल दिये और वेदा के आधार पर ही ऋषि ने दो घोषणाये की, पहली घोषणा यह थी कि सृष्टि का रचयिता परमेश्वर है, और दूसरी घोषणा यह थी कि सृष्टि के रचयिता अनेक नही, एक ही है। यह सत्य मनुष्य द्वारा परीक्षणो से पाया नही जा सकता, भगवान द्वारा दिया जा सकता हे।

आचार के नियम—आध्यात्मिक जीवन का आधारभूत सत्य एकेश्वर की सत्ता को स्वीकार करना है जो वेदा म प्रतिपादित है। इसके अतिरिक्त जीवन के ऐसे नियम हैं जिन्हे अपन अनुभव के आधार पर निर्मित नही किया जा सकता, परन्तु जो विश्वभर मे एक से व्यवहृत होन है। उदाहरणार्थ, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह य ऐसे चारित्रिक नियम हे जो मनुष्य व्यवहार मे तभी ला सकता है जब उसे इस प्रकार का जीवन बिताने की कही से प्रेरणा मिले। 'अहिंसा को ही लीजिये। मार धाड कौन नही करता। यह मार-धाड सृष्टि के शुरू से चला आ रही है जो मनुष्य के स्वभाव मे ओत प्रोत है। परन्तु सृष्टिके आदि-काल स ही वेद न मानव को "अहिंसा' का उपदेश दिया है। इसी तरह 'सत्य को लीजिये। वेद का कथन है किसृष्टि की उत्पत्ति ही "सत्य से हुई है सृष्टि की स्थिति भी सत्यके आधार पर है। वेद मे जीवन के मूल मे जो नियम काम कर रहे है उनका विशद वर्णन किया है। ये सत्य ससार के सब धर्मों तथा सब देशा मे मूलभूत तत्वो के रूपमे एक समान विद्यमान है। सब जगह ये आध्यात्मिक-सूत्र कैसे गये और कहासे फैले? अगर ये भिन्न भिन्न देशवासियो ने स्वय, अपने-आप उनका निर्माण किया हो

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आशा की किरण फूटी आर्य समाज में

—स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, गवां (बदायूं)

हमको यह शिकायत थी कि आर्य समाज के सदस्य अपने पुत्र पुत्रियो को आर्य समाज के सत्सग मे नही लाते है अत आर्यसमाज के सत्सग मे केवल वृद्ध जन मात्र ही दिखाई देन है हमारा यह अनुमान था कि बीस-पच्चीस वर्ष मे इन वृद्ध सदस्यो के न रहने पर आर्य समाज मन्दिरो मे ताले लग जायेंगे। परन्तु ईश्वर की गति को कौन जानता है। कुछ स्वार्थी व्यक्ति आर्य समाज मे झगडे खडे करके आर्य समाज के हरे-भरे वृक्ष को काटकर ठूठ बना चुके थे। परन्तु वाह रे ऋषि दयानन्द आपकी तपस्या, त्याग ने आर्य समाज मे कुछ ऐसे विचार शील व्यक्ति उत्पन्न किए कि उन्होने वह मन्त्र पढा कि आर्यसमाज के उस ठूठ वृक्ष मे फिर से नए अकुर कोपले शाखायें उत्पन्न होने लगी। आर्य समाज के इन मनीषी व्यक्तियो ने विचारा कि आर्य समाज को बचाने का एक मात्र मार्ग आर्यवीर दल को बढाना है आर्य वीर दल के माध्यम से ही देश की युवा नई पीढी को आर्यसमाज से जोडा जा सकता है। आज कल देश के विभिन्न भागो मे आर्य वीर दल शिविरो का जो क्रम सोत्साह चल पडा है हम आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि ऋषि का लगाया हुआ वृक्ष आर्य समाज पल्लवित, पुष्पित एव फलित होगा। आर्य समाज मे यदि इसी प्रकार सोत्साह आर्य वीर दल शिविरो का क्रम चलता रहा तो देश की युवा पीढी आर्य समाज मे जुडेगी और आर्य समाज की शक्ति भी बढती जाएगी। तथा विश्वास के साथ कह सकते है कि दस बरस के भीतर ही आर्य समाज देश की एक राजनैतिक शक्ति बन जाएगा और देश का शासन आर्यसमाज के हाथ मे होगा।

सघ के व्यक्तियो ने यही तथ्य विचार कर देश की युवा पीढी को अपने साथ जोडा उसी कार्य का परिणाम यह है कि भाजपा का शासन उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा हिमाचल प्रदेश मे है। हिन्दू महासभा के एक प्रसिद्ध नेता डा० मुंजे हुए है उन्होने एक नारा दिया था "जिसकी फौज उसका राज्य" बिल्कुल सत्य है। आर्य वीर दल आर्य समाज की सेना है। उस सेना की सख्या शक्ति बढने से ही आर्य समाज की शक्ति बढेगी। आर्य समाज का कर्तव्य है कि अपने धन को आर्य समाज के उत्सवो के साथ-साथ आर्य वीर दल के शिविरो पर भी व्यय करे। आर्यसमाज के विद्वान देश,काल, पात्र को न जानकर आर्य समाज मे अपनी विद्वता की धाक जमाने का प्रयास करते हैं। आर्य समाज के विद्वान मन ही मन मे आर्य वीर दल शिविरो को अपने स्वार्थ को सिद्ध न करने वाला मानते है। आर्य समाज के विद्वान वैदिक धर्म और भारत देश के समक्ष जो समस्यायें है उनकी ओर आर्य समाज का ध्यान केन्द्रित न करके अन्य-अन्य विषयो की ओर करते है। अर्थात आर्य समाज को पथभ्रष्ट करते आ रहे है। आज भारत मे अनार्य शासन के साथ-२ देश मे दूसरे पाकिस्तान, खालिस्तान,ईसाई स्थान का बनना सुनिश्चित सा हो गया है, इनका बनना कैसे रोका जावे इस बात का गम्भीर चिंतन आर्यसमाज मे चल ही नही पाता है। देश की एकता अखण्डता को जो भय आज दिखाई दे रहा है वह सौ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द जी महाराज को भी दिखाई दिया था तथा उस भय से मुक्त होने के लिए उन्होने आर्यसमाज को "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का मन्त्र दिया। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास से चौदहवे समुल्लास तक अवैदिक जैन, बौद्ध, सिख, इस्लाम, ईसाइयत मतो का खण्डन किया है वह इस आशय से किया है कि भविष्य मे मेरी आर्य समाज इन अवैदिक मतों को समाप्त करे और सबको वैदिक धर्मी आर्य धर्मात्मा बनावे। ससार का उपकार करना आर्यसमाज का उद्देश्य है तो आर्य समाज के इस साध्य का साधन 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' ही है। आर्यसमाज के मनीषी विचारक प० लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हसराज जी से आप लोग परिचित हैं। प० लेखराम जी को मुस्लिमो ने शुद्धिकार्य करने के कारण ही छुरा घोप कर मार डाला। उनके पश्चात शुद्धि के कार्य को प्रमुखता देने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सन् १९२३ मे भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की थी तथा सन् १९२३ मे ही ५० हजार मलकाने मुस्लिमों को हिन्दू बनाया। उनकी इस प्रगति को देखकर मुस्लिम जगत को इस्लाम खतरे मे दिखाई देने लगा तथा सन् २६ मे उस महामानव को गोली मारकर मुस्लिमो ने ठण्डा कर दिया। सन २६ मे महात्मा हसराज जी भी थे उन्होने अपने वीर सैनिक श्रद्धानन्द को शत्रुओ द्वारा मारा जाता देखा। तत्पश्चात उन्होने तथा अन्य आर्यो ने सन् १९२९ ई० मे आर्यवीर दल की स्थापना की थी कि शुद्धि कार्य को सशस्त्र आर्य वीरो के माध्यम से कराया जावे। परन्तु आर्य जाति के दुर्भाग्य के कारण आर्यवीर दल के माध्यम से शुद्धि कार्य करने वाला कोई योग्य नेता आर्यसमाज को न मिला।

आज आवश्यकता है कि आर्य वीर दल के माध्यम से देश की युवा पीढी को हम आर्य समाज के साथ जोडे तथा इसी आर्य वीर दल के माध्यम से शुद्धि कार्य को दिन दूना रात चौगुना बढावे। आज भारत के हिन्दुओ को ईसाईपादरी विदेशो से आकर ईसाई बनाकर हिन्दूसमाज का विरोधी शत्रु बना रहे है विधर्मी लोग हिन्दू समाज पर एक प्रकार का आक्रमण कर रहेहैं हिन्दुओ को मुस्लिम तथा ईसाई बनाकर। परन्तु हिन्दू नेताओ का कोई प्रयास ही नही है मुस्लिमो ईसाइयो के आक्रमण का उत्तर देने के लिए। अग्रेजी मे एक कहावत है "कि आक्रमण ही सर्वोत्तम सुरक्षा है।' अर्थात हिन्दू समाज की सुरक्षा इसी मे है कि अवैदिक मुस्लिम, ईसाई, जैन, बौद्ध, सिख आदि को येन केन प्रकारेण वैदिक धर्म मे दीक्षित करके हिन्दू आर्य बनाया जावे। भारत के जिन जिलो मे हिन्दू बहुसख्या मे है तथा मुस्लिम ईसाई अल्प सख्या मे है वहा उन अल्पसख्यको को हिन्दू बनाकर पूर्ण हिन्दू जनसख्या क्षेत्रो का निर्माण करना तथा उन पूर्ण हिन्दू जनसख्या क्षेत्रो मे वेदमनुस्मृति के अनुसार शिक्षा, शासन, अर्थ एव दड व्यवस्था लागू करना आर्य समाज की राजनीति होनी चाहिए।

आर्य समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र, सब वर्णो की सम्मलित सस्था है। आर्य समाज को ऋषि दयानन्द जी के निर्देशानुसार धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा और राजार्य सभा मे विभक्त करना चाहिए। आर्य समाज के समस्त योग्य सन्यासियो को धर्मार्य सभा मे प्रविष्ट किया जावे तथा भारत के समस्त गुरुकुलो तथा आर्य समाज के विद्यालयो के प्रतिनिधियो को विद्यार्य सभा मे लाकर सस्कृत वेद के पठन पाठन की ओर ध्यान देना चाहिए तथा आर्य हिन्दू प्रजा की रक्षा मे उत्सुक आर्य क्षत्रियो को राजार्य सभा मे प्रविष्ट किया जावे। तथा आर्य वीर दल को राजार्यसभा के साथ सयुक्त किया जावे।

वेदार्थ की कुंजी

(पृष्ठ ७ का शेष)

तो य बिल्कुल एक-समान क्यो हैं। उनकी एक समानता से ज्ञान होता है कि इन तत्वो का उद्भव-स्थल भी एक ही है। इतना ही नही कि इनका रूप एक-सा है, परन्तु सब धर्मों तथा देशो मे इन सत्यो को नित्य, अपरिवर्तनीय तथा "अद्वय'—इसका विकल्प और कुछ नही—यह भी माना जाता है। ये आध्यात्मिक-तत्व ऐसे है जिनका कोई विकल्प नही है, सृष्टि के आदि मे ही ऐसे नित्य तथा सत्य नियमो को अगर हम कही पाते हैं तो वेद मे।

हमने जो कुछ लिखा उसका थोडे शब्दो मे भाव क्या है। हमारे कथन का अभिप्राय यह है कि भारत वह देश है जिसे वेद जैसे आध्यात्मिक ग्रन्थ के प्राप्त होने का गौरव मिला है। वेद के विषय मे भारत की आस्था रही है कि इसमे जीवन के रहस्य निहित हैं। चिरकाल से वेदो के ज्ञान का लोप रहा था फिर भी इसका अर्थ न जानते हुए इनकी रक्षा की गई। देश मे अनेक राज्य आये, चले गये, परन्तु वेदार्थ न जानते हुए भी ब्राह्मणो ने इनकी रक्षा की। जब-जब इस खजाने को खोलने की कोशिश की गयी, जनता वेदार्थ न जानने के कारण पथ भ्रष्ट हो गई। अन्त मे ऐसा भी समय आया जब वेदो के बन्द ताले की कुजी ऋषि दयानन्द के हाथ लगी। 'दयानन्द-युग' आते ही यह सर्व-विदित हो गया कि इस बन्द सन्दूक मे वह अमृत भरा है जिससे हमारा देश ससार भर का मार्गदर्शन कर सकता है। आज यह समय आ गया है, और देखना है कि कौन वेद के आधार पर विश्व का पथ प्रदर्शन करता है। वेद का स्वय कहना है कि अब छिपाकर रखी हुई निधि की चाबी मिल गई है, ताले मे बन्द खजाना सामने आ पड़ा है, अब इसे लेकर देश-विदेश मे बखेर दो—'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'।

डा० भवानीलाल भारतीय एवं श्री विजय कुमार आर्य (मरणोपरान्त) सम्मानित

बम्बई दिनाक ५ जुलाई १९९२ को आर्य समाज मंदिर सांताक्रुज के विशाल सभागृह में श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान श्री ओंकार नाथ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ यह समारोह बुधवार १ जुलाई ... सम्पन्न हुआ और ५ जुलाई को सम्पन्न हुआ

५ जुलाई को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात ... मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार समारोह आरम्भ हुआ। समारोह में बम्बई की समस्त आर्य समाज ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभ दास डा० राममनोहर त्रिपाठी श्री ... मेघजी भाई मस्कत आदि बम्बई के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित

पूर्व ... हिन्दी साहित्य अकादमी महाराष्ट्र के अध्यक्ष डा० राममनोहर त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि ... भाषण ... कहा कि आर्य समाज ... उनका ... मूल्यांकन कोई ... आर्य समाज सांताक्रुज ... महत्व को जानकर ... भवानीलाल जी भारतीय का सम्मान किया है यह सम्मान बहुत महत्वपूर्ण है ... साहित्य सृजन ... अमर होगा। आर्य समाज ... धन्यवाद ... पुरस्कार की प्रशंसा की

डा० भवानीलाल ... आर्य साहित्य पुरस्कार के रूप में उनका आर्य ... के क्षेत्र में की गई सेवाओं के प्रति आभार ... रुपये ग्यारह हजार की थैली अभिनन्दन पत्र शाल ... चांदी की ... भेंट की गई

कैप्टन देवरत्न आर्य ... आर्य समाज सांताक्रुज तथा संयोजक पुरस्कार समिति ने पुरस्कारों की श्रृंखला का परिचय देते हुए बताया कि हमने यह योजना सन् १९८५ में वेदवेदांग पुरस्कार से आरम्भ की थी। दो वर्ष पश्चात ... पुरस्कार का सम्मानित किया गया गत वर्ष से यह ... आरम्भ की गयी है। इस वर्ष हमने ... साहित्य प्रकाशक पुरस्कार देने का भी विचार किया है। जिसके



कैप्टन देवरत्न आर्य ... डा० ... भारतीय ... डा० राम मनोहर त्रिपाठी मुख्य अतिथि।

अन्तर्गत इस वर्ष श्री विजय कुमार आर्य ... गोविन्दराम हासानन्द ... को यह पुरस्कार दिया जा रहा है

विजयकुमार जी को मरणोपरान्त ... स्मृति उपहार ... साहित्य प्रकाशक पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिसे उनका ... सुशीला ... अजय कुमार ने ग्रहण किया। श्रीमती ... देवी जी को शाल भी भेंट किया गया।

... पटेल मन्त्री आर्य समाज सांताक्रुज ने ५ दिवसीय समारोह का संयोजन किया

भवदीय

कैप्टन देवरत्न आर्य

स्व० श्री शान्ति प्रकाश "प्रेम" के निधन पर श्रद्धांजलियां



गढ़वाल के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी क्रांतिकारी देशभक्त महान समाज सुधारक एवं अनेक आर्यसमाजों के संस्थापक स्व० श्री शान्ति प्रकाश प्रेम प्रभाकर का ७९ वर्ष की आयु में रविवार दिनांक २८ जून १९९२ को अपने पैतृक निवास स्थान प्रेमकुटी कणजोली सावली गढ़वाल में देहान्त हो गया। उनके निधन पर स्थानीय जनता एवं आर्य समाजों के कार्यकर्ताओं ने उन्हें अश्रुपूर्ण विदाई दी। अपने प्रिय नेता के निधन पर स्थानीय आर्य समाजों द्वारा ओ३म के झण्डे झुका दिए गए। शव यात्रा से पूर्व उनका ... तिरंगा एवं ओ३म के झण्डे में ढका दिया गया जिस पर अनेक ... जनता ने फूल मालाओं से ... श्रद्धांजलियां दी। उनके सिर पर परम्परागत सफेद टोपी थी अमर सपूत अमर रहे शान्ति प्रकाश अमर रहे जनता नारे लगा रही थी। वेद मन्त्रों के उच्चारण द्वारा उनका पार्थिव शरीर पंचराड ढंगा नदियों के संगम पर पंच तत्वों में विसर्जित किया गया।

शोक संतप्त परिवार ने शुद्धि-शान्ति प्रार्थना कार्यक्रम वादक यज्ञ द्वारा बुधवार दिनांक ८ जुलाई १९९२ को प्रेमकुटी कणजोली सावली गढ़वाल में रखा जिसमें ... शुभचिन्तक समस्त स्थानीय आर्य जनता आर्यसमाजों के कार्यकर्ता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष समाजसेवी एवं प्रसिद्ध उद्योगपति ... मुंजाल लुधियाना ... सम्मिलित हुए। यज्ञ में स्व० ... धर्मपत्नी श्रीमती नीमा देवी प्रेम ने ... से सादर स्वीकार करते हुए सबका धन्यवाद किया। यज्ञ पश्चात दो मिनट का मौन धारण करते हुए स्व ... की आत्मा की शान्ति के लिए मौन प्रार्थना की गयी

तत्पश्चात श्री ... मुंजाल की अध्यक्षता में शोक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें दिवंगत आत्मा को अपनी अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की गयी। प्रवक्ताओं में सर्वश्री दीनदयाल आर्य लुधियाना स्वरूप कुमार शास्त्री ... प्रधान आर्य समाज पचपुरी वासुदेव विमल मन्त्री आर्य समाज पचपुरी ... अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य बुद्धिसिंह आर्य ... आर्य समाज थलीसैण बिजयराम प्रधान आर्य समाज बगारस्य-डौण्डियालस्यूं रमेशचन्द्र प्रेमी विश्वबन्धु भास्कर मन्त्री जयानन्द भारतीय स्मारक निधि दिल्ली कालूराम जयदेव आर्य घोरजसिंह पटवारी मणीलाल एवं बच्चीराम जी भजनोपदेशक प्रमुख थे

निस्वार्थ महान समाजसेवी, प्रखर आर्य नेता निपुण कवि-लेखक एवं साहित्यकार संस्थाओं के संचालक दलितों एवं गरीब बच्चों के हितैषी दिव्य गुणयुक्त मानव स्वतन्त्रता संग्राम के वीर त्याग और साहस के प्रचण्ड उदबोधक वीर जयानन्द की जीवनी को प्रकाशित करने वाले स्व० प्रेम जी को सबने अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

शेष पृष्ठ १० पर

पुत्र की सफलता

(पृष्ठ ८ का शेष)

ऐसा कुछ भी नही होगा और वे मन लगाकर पढाई करते रहेगे। हमारा भरोसा सही साबित हुआ।

श्रीमती सम्पत देवी ने बताया कि डाक्टर साहब की धर्म मे गहरी आस्था है। वे हर दिन करीब तीन घण्टे पूजापाठ करते है। यात्रा के समय पूजा की सामग्री साथ ले जाते है। मगर स्वभाव मे कोई कट्टरता नही है।

उन्होने बताया कि डाक्टर साहब ने अपनी पुत्री गीताजली और दामाद सासद ललित माकन की कुछ समय पूर्व आतकवादियो द्वारा दिल्ली मे हत्या कर दिये जाने पर एक वर्ष तक अन्नग्रहण नही किया। वह भी वे लम्बे समय तक उपवास रखते रहते है।

शर्मा परिवार के सदस्य शपथ ग्रहण समारोह मे उपस्थित रहने हेतु अगले सप्ताह दिल्ली जाने की योजना बना रहे है। हर्षातिरेक मे वे अधिक बातचीत नही कर पा रहे है। बधाई धन्यवाद मुबारक शुक्रिया का दौर चल रहा है।

स्व० शान्ति प्रकाश

(पृष्ठ ६ का शेष)

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा अनेक लोगो द्वारा भेजे गए सवेदना पत्रो को भी पढकर सुनाया गया।

सभाध्यक्ष श्री मुजाल जी ने सभी वक्ताओ का धन्यवाद देते हुए स्व० दिवगत के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री प्रकाश जी प्रकाश के पुज प्रेम के भण्डारी एव शक्ति के पुजारी थे उनके निधन से जो क्षति हुई पूर्ण नही हो सकती। उन्होने कहा कि हमे उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उनके सम्पूर्ण कार्यो की समीक्षाकर पूर्ण करना होगा उनके प्रति हम सबकी यही सच्ची श्रद्धाजलि होगी। अन्त मे शान्ति पाठ के पश्चात श्रद्धाजलि सभा विसर्जित की गई।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जिला जालौन ग्राम गूढाखास का प्रथम आर्य वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम के साथ ब्रह्मचारी नरेन्द्र कुमार आर्य के सरक्षण मे सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता प० रणजीत आर्य ने की। तीन दिवसीय कार्यक्रम मे यज्ञ के ब्रह्मा युवा सन्यासी स्वामी ब्रह्मावेश जी ने सैकडो युवाओ एव युवतियो से अण्डा मास शराब बीडी सिगरेट आदि दुर्व्यसन छुडाकर उनको यज्ञोपवीत धारण कराया।

इस सम्मेलन मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान व भजनोपदेशको ने अपने विचारो से जनता को लाभान्वित किया। जिसमे श्री धनीराम बेधडक श्री रणधीर आर्य श्री बलबीर आर्य स्वामी वेदानन्द सरस्वती उपदेशिका शर्मिला आर्य आदित्या आर्या आदि ने भी अपने विचार जनता को दिये उक्त प्रथम आर्य वार्षिकोत्सव दिनाक ३ ४ एव ५ जून १९९२ को सम्पन्न हुआ।

—तुलाराम आर्य मन्त्री

आर्य समाज गौंच्छी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गौच्छी मे २१ जून रविवार से २८ जून रविवार तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ वेद कथा एव सम्मेलन सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य हरिदेव जी वेद कथा श्री विद्यादेव जी तथा भजनोपदेशक महाशय खेमसिंह जी प्रियव्रत शास्त्री और श्री चन्द्रदेव शास्त्री थे। लगातार सात दिन तक यज्ञमय वातावरण रहा चारो तरफ वेद प्रचार की धूम रही हजारो लोगो ने इसका लाभ उठाया गाव मे लोगो की श्रद्धा देखने लायक थी अन्तिम दिन २८ जून रविवार को पूर्णाहुति एव सम्मेलन हुआ जिसमे हजारो लोगो ने भाग लिया तथा ऋषि लगर भी हुआ। प्रधान श्री लोकराम जी आर्य ने घोषणा की कि इस प्रकार के कार्यक्रमो का भविष्य मे भी आयोजन किया जाता रहेगा। इस अवसर पर वैदिक सस्कार प्रशिक्षण सस्थान की स्थापना भी की गई।

—आचार्य श्यामलाल आर्य

पुस्तक-समीक्षा

वैशेषिक दर्शन मे पदार्थ निरूपण

लेखिका—डा० शशिप्रभा कुमार

प्रकाशन विभाग ज्ञान मार्ग
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
मूल्य ४५० रुपये

वशेषिक-दशन मम्मत पदाथ धम विवचन मे सुश्री डा० कुमार न वचारिक और ऐतिहासिक तत्वो का ध्यान रखते हुए पदाथ धम सम्बन्धी मौलिक सिद्धान्तो का पूर्ण विमर्श का सम्यक विवचन किया है।

यह दशन मुख्यत पदाथ धम मीमासा म प्रवत्त हआ है और इसमे अभ्युदय और नि श्रेयस ही परमसाध्य है।

प्राचीन और अर्वाचीन परम्परा मे वशेषिक दशन के प्रतिपाद्य विषय के महत्व का परिचायक है

प्रस्तुत ग्रन्थ को १५ अध्यायो म विषय प्रतिपादनाथ रखा है —

१ प्रथम अध्याय म वशेषिक दशन का सामान्य परिचय व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दी है

२ द्वितीय अ म पदाथ विषयक परिकल्पना एव वशेषिकाभिमत पदाथ स्वरूप सख्या विचार

३ मे—द्रव्य एव द्रव्यत्व जातकी सिद्धि लक्षण स्वरूप साधम्य द्रव्यके नव सख्या पर प्रकाश

४ म—चारा अनित्य द्रव्या की सिद्धि स्वरूप लक्षण भेदो की चर्चा।

५ म—तीन नित्य द्रव्यो आकाश काल दिशाकी सिद्धि स्वरूपका विवेचन

म—आत्मा मन दो नित्य द्रव्याकी सिद्धि स्वरूपगत सिद्धान्त निरूपण है

म—गुण की सिद्धि लक्षण सख्या एव चौबीस गुणा का विभाजन सन्निविष्ट है।

८ म—भूत द्रव्य का गुण आत्म के गुण विशेष द्रव्य का ववचन है

९ म—अवशिष्ट सामान्य गुणो का स्वरूप वणन

१० म कम पदाथ के वशेषिकाभिमत का स्वरूप

११ सामान्य पदाथ का सिद्धि दाशनिक सम्प्रदाय द्वारा तत्सम्बन्धी क्रमश

१२ दर्शन की नतन उदभावना पदाथ का स्वरूप साधन।

१३ समवाय नामक सम्बन्ध रूप पदार्थ की सिद्धि

१४ अभाव की पदार्थ रूप मे स्वीकृति व भेद प्रभेद का वर्णन

१५ अत म—शोध काय की उपलब्धिया निष्कर्ष दिया गया है।

परिशिष्ट म—परमाणु वम एव सृष्टि सहार प्रक्रिया बताई है

इस प्रकार यह शोध प्रबन्ध—वशेषिक पदाथ परिकल्पना की दृष्टि से समग्र-अध्ययन कहा जा सकता है।

वेदागो के अनन्तर—उपागो की महत्ता है जिन्हे हम अपने दशन-शास्त्र कहत है। भारतीय परम्परा म तीन वर्गो मे विभक्त उपाग निम्न है।

१—वशेषिक और न्याय

२—साख्य और योग

३—उत्तर मीमान्सा अर्थात शारीरिक सूत्र वेदात और पूव मीमान्सा।

इन सभी दशनो पर विभिन्न आचार्यों की वत्तिया और भाष्य है।

महर्षि दयानन्द ने अध्ययन-न्याय का सकेत करके स्पष्ट कहा है कि इन दशन शास्त्रो मे कोई विरोध नही है और ये वेदो के तत्व ज्ञान को अपने २ क्षत्रो मे व्यक्त करते है।

महर्षि कणाद गौतम ने जिन परम सूक्ष्म पृथिव्यादि भूत तत्वो को जगत का मूल उपादान माना है उनका नाम भारतीय दशन शास्त्र मे विशेष है।

इसी आधार पर इस शास्त्र का नाम वशेषिक है।

विशेष नामक पदाथ को मूल मानकर प्रवत्त हुए शास्त्र का वशेषिक नाम उपयुक्त ही है।

रसायन-शास्त्र के पचमहाभूत अथवा वशिष्य के नव द्रव्यो के स्थान पर तत्वो की सख्या १ ९ या ११० तक पहुची है। नेटयनियम और प्लटेनियम को छोडकर प्रकृति मे ये तत्व नही पाये जाते है। वशषिक विचारधारा के परमाचाय प्रशस्त पाद ने एकाणक द्वयणक त्र्यणक आदि की कल्पना की है।

जसके आधार पर ससार महर्षि कणाद को अणु सिद्धान्त का जन्मदाता स्वीकार करता है किन्तु वायल और डाल्टन के वाद परमाणु और अणु के भेद को समझने का प्रयास रसायनज्ञो ने किया

वज्ञानिक विचारो की प्रामाणिकता उपादेयता का मूल्याकन हतु ऐतिहासिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है कपिल व कणाद का अपन युगो मे वही विशिष्ट स्थान था जो आज क समय मे वज्ञानिको का है

वशेषिक दशन सम्मत पदाथ धम विवेचन मे डा शशिप्रभा कुमार ने व्यापक और दुर्लभ सामग्री का सश्लेषण विश्लेषण किया है तथा अनेक ऐसे आचार्यो का उल्लेख किया है जो अद्यावधि अज्ञात प्राय थ

भारतीयमनीषियो ने न्याय वशेषिक परम्परा के ग्रन्थो का अध्ययन सुदीर्घकाल से अविकल रूप म प्रवाहित हो रहा है पिछली शताब्दी म विदेशी विद्वानो ने भी इन दशनो की मौलिक उदभावनाओ के प्रति अपनी अभिरुचि प्रकट की है।

उसी परम्परा का निवहन—

डा शशिप्रभा कुमार की प्रस्तुत कृति म व्याख्याकार आचार्यो की दृष्टि से प्रथम बार उनीय तत्वो पर अपनी लेखनी चलाकर अभिनन्दनीय काय किया है

यशस्विनी शोध छात्रा डा शशिप्रभा की भाति गुरुकुल निवाकर आचाय वाचस्पति उपाध्याय जसे विद्वान की छत्रछाया मे इस प्रकार क शोधकाय हो—तो मानना ही है कि—

शेष पृष्ठ १२ पर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एन० ११०४१   सार्वदेशिक साप्ताहिक (२०-७-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० ८१
R.N. 080/57   Licensed to post without Prepayment License No. U 93 Post I.N.D P.S.O.on   23,24-7-1992

पांच सौ कन्याओं के पिता

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान तथा नारी सेवा संस्थान उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य का विस्तृत व भावपूर्ण साक्षात्कार आज के अनिधि कार्यक्रम मे प्रसारित किया गया। जिसकी लाखा दशका ने सराहना की।

महान महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य ने अब तक तीन हजार से अधिक अपहृत कन्याओ को असामाजिक तत्वो व वेश्यालयो से अपने प्राण संकट मे डाल कर मुक्त कराई है तथा श्री आर्य ने ५०० पाच सौ से अधिक ऐसी कन्याओ के पिता बनकर कन्यादान करके विवाह कराए है। क्योकि इन कन्याओ को पतित बताकर उनके परिवार वालो ने लेने से इकार किया था। यद्यपि श्री आर्य के द्वारा दूरदर्शन पर बताए गए अनुभव के अनुसार ऐसी पतित लडकियो से विवाह करने वाले सौभाग्यशाली युवक धन धान्य से सम्पन्न हो गये है। उनका दाम्पत्य जीवन सुखमय है।

राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित श्री आर्य ने महिला उद्धारक के कार्य मे सफलता के लिये आर्य समाज व महर्षि दयानन्द को प्रेरणा स्रोत बताया। इसके अतिरिक्त उन्होने आर्य समाज की सेवाओ व सत्याग्रह का भी चित्रण किया।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्सग दिनाक १२-७-९२ मे उपस्थित समस्त आर्य नर-नारी कर्मवीर डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के बडे भ्राता श्री देव शर्मा शास्त्री के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं। श्री देव शर्मा शास्त्री जी एक सच्चे कर्मनिष्ठ आर्य थे। अपने जीवन के अन्तिम क्षणो तक आर्य सस्थाओ के कार्य को देखते रहे। उनके देहावसान से आर्यसमाज को जो क्षति पहुची है उसकी पूर्ति असम्भव है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्रदान करें तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति तथा सगे-सम्बन्धियो को सात्वना प्रदान करे।

—वदव्रत शर्मा मन्त्री
आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

पुस्तक समीक्षा

(पृष्ठ ११ का शेष)

सूर्य की प्रभा-शशि पर पडकर ही विधा की वृद्धि होगी और ऐसा विशद कार्य करके एक नयी विधा देकर वैशपिक का पद प्राप्त किया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है विद्वान वाचस्पति के सान्निध्य मे शशि की प्रभा मे निखार आयेगा और इसकी चादनी की शीतलतासे सुधीजन लाभान्वित होगे।

मेरा निवेदन है इस शोधकार्य मे—

गुरु और शिष्य दोनो अभिनन्दनीय हैं आर्यजन इस अमूल्य ग्रन्थ से लाभान्वित हो—इस कामना के साथ—

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सम्पादक

गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल होशगाबाद (म० प्र०) एक शिक्षण सस्था है। यहा पर मान्यता प्राप्त मध्यमा शास्त्री की परीक्षाए दिलाई जाती है। जो क्रमश उच्चतर माध्यमिक एव बी० ए० के समकक्ष है। इस वर्ष ५ वी एव छठी उत्तीर्ण छात्रो को प्रवेश दिया जा रहा है। शिक्षण सर्वथा निःशुल्क है। प्रतिमाह भोजन व्यय २००) दो सौ रुपए देना होता है। प्राकृतिक रमणीय वातावरण सबके साथ समानता का व्यवहार एव उत्तम शिक्षको द्वारा अध्यापन यहा की विशेषताए हैं। परीक्षाए आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर एव महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से सम्बद्ध है। शीघ्र सम्पर्क करें—

—जगदेव नैष्ठिक

१०१५० —पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ प्र)

आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

आर्य समाज नेपियर टाउन जबलपुर तथा जी०सी०एफ० आर्य समाज जबलपुर मे क्रमश २५ से ३० जून तक तथा १ से ५ जुलाई तक स्थानीय आर्य समाज के सहयोग से आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया गया। इन दोनो शिविरों मे आर्य वीरो ने अनुशासनपूर्वक रहकर शिविर के नियमो का पालन किया। प्रातः साय आर्य वीरो को कूंगफू पीटी दण्ड बैठक, आसन, प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया गया, इसके अलावा उनको बौद्धिक शिक्षा भी दी गयी। समापन समारोह के दिन प्रथम, द्वितीय, तृतीय आर्य वीरो को साहित्य देकर पुरस्कृत किया गया। इन दोनो शिविरो से नगर मे आर्य समाज के प्रति जागृति की भावना आ गयी है।

जी०सी०एफ० आर्य समाज मे आर्य वीर दल का गठन हुआ।

शाखानायक—	विहारीलाल
उपशाखानायक—	वेदप्रकाश, सजय नेमा
मन्त्री —	आशिष कुमार
कोषाध्यक्ष —	आनन्द कुमार

—जनक राम आर्य शिक्षक

पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरण समारोह

दिनाक ५-७-९२ रविवार को आर्य समाज मन्दिर, सान्ताक्रुज, बम्बई मे उपनिषदो के पत्राचार पाठ्यक्रम मे उत्तीर्ण होनेवाले व्यक्तियो को प्रमाण-पत्र श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने वितरित किये। सर्वप्रथम द्वितीय और तृतीय आनेवाले परीक्षार्थियो को क्रमश २०१) १५१) तथा १०१) रुपये के पुरस्कार श्री ओकारनाथजी आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने दिये। वैदिक साहित्य के स्वाध्याय के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिये तथा वैदिक मान्यताओ का ज्ञान कराने के लिये डा० सोमदेव शास्त्री ने गत तीन वर्षो से स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर रखा है। जो सफलता पूर्वक चल रहा है। जिसमे प्रतिवर्ष ५०० व्यक्ति भाग लेते है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● परोपकार करना धर्म और परहानि करना अधर्म कहाता है इसलिए विद्वान् को यथायोग्य व्यवहार करके अज्ञानियों को दुख सागर से तारने के लिए नौकारूप होना चाहिए। सर्वथा मूर्खों के सदृश कर्म न करने चाहिये किन्तु जिनसे उनकी और अपनी दिन प्रति दिन उन्नति हो वैसे कर्म करने चाहियें।

● जब आर्यावर्तस्थ मनुष्यों मे सत्यासत्य का यथावत् निर्णय करने वाली वेद विद्या छूटकर अविद्या फैल के मतमतान्तर खड़ हुए यही जैन आदि के विद्या विरुद्ध प्रचार का निमित्त हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष। ३३७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३ अंक २७]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   श्रावण शु० ४   सं० २०४६   २ अगस्त १९९०

प्रधानमन्त्री श्री नरसिंहराव स्वयं अयोध्या जाकर स्थिति का जायजा लें

आर्य समाजी नेता प्रधानमन्त्री से मिले

नई दिल्ली २३ जुलाई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, वरिष्ठ उप-प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के साथ प्रधानमन्त्री श्री पी०वी० नरसिंह राव से मिले।

देश की बिगड़ती हुई स्थिति और राजनेताओं द्वारा जनता को भ्रमित करने की प्रक्रिया पर चिन्ता व्यक्त करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री जी को स्वयं अयोध्या जाकर वस्तुस्थिति की जानकारी लेकर राम मन्दिर निर्माण कार्य को मूर्त रूप दिये जाने के लिए कहा। प्रधानमन्त्री जी ने आर्य नेताओं को जल्दी ही अयोध्या जाकर स्थिति को सम्भालने का आश्वासन दिया। आर्य नेताओं ने श्री राव से यह भी अनुरोध किया कि उत्तर प्रदेश सरकार को इस समय भंग करना भी देश हित में नहीं है।

पण्डित वन्देमातरम् जी ने प्रधानमन्त्री जी को सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापित "महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन दुग्ध केन्द्र" की जानकारी देते हुए बताया कि यह दुग्ध केन्द्र दिल्ली के गाजीपुर में ११.५ एकड़ भूमि पर स्थापित किया गया है और वहां १००० दूध देने वाली गायों का आधुनिक ढंग से पालन-पोषण तथा दुग्ध उत्पादन का कार्य प्रगति पर है। श्री पण्डित जी ने दीपावली के अवसर पर इस "महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन दुग्ध केन्द्र" का उद्घाटन करने के लिए श्री प्रधानमन्त्री जी से प्रार्थना की। प्रधानमन्त्री जी ने प्रसन्नता पूर्वक इस प्रस्ताव को स्वीकार किया।

उच्चतम न्यायालय की वकील शबनम लोन टाडा अधिनियम के तहत गिरफ्तार

दिल्ली २४ जुलाई।

जम्मू-काश्मीर के नेता अब्दुल गनी लोन की पुत्री और उच्चतम न्यायालय की वकील २९ वर्षीय शबनम लोन को दिल्ली पुलिस ने जम्मू-कश्मीर मे जगजुओं की सहायता करने के अभियोग मे आतंकवाद एवं तोड़ फोड़ गतिविधि निरोधक अधिनियम (टाडा) के तहत, उसके लाजपत नगर दिल्ली स्थित निवास से गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार कथित जगजू मोहम्मद अनीस और शशिकुमार जिन्हें पुलिस ने २२ जुलाई को गिरफ्तार किया था, से प्राप्त जानकारी के आधार पर कि शबनम पाकिस्तान से धन प्राप्त करके जम्मू-कश्मीर के जगजुओं तक पहुचाती थी। उसके घर से पुलिस ने २ लाख ८६ हजार ६ सौ रुपये बरामद किए। शबनम उच्चतम न्यायालय मे वकालत करती है और उच्चतम न्यायालय के विख्यात वकील के०के० वेणुगोपाल की सहायिका भी है। उसके पिता अब्दुल गनी लोन कश्मीर के पीपुल्स कांग्रेस के अध्यक्ष हैं। १९९० मे श्री लोन को जम्मू-कश्मीर नागरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया था। दो माह पूर्व ही उन्हे रिहा किया गया। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश आर० पी० गुप्ता की अदालत ने शबनम को २० हजार रुपये के मुचलके पर जमानत दे दी है।

मोहम्मद अनीस तुर्कमान गेट निवासी (दिल्ली) और श्री शशि कुमार (दिल्ली) के कब्जे से भी बड़ी सख्या मे पाकिस्तानी और भारतीय मुद्रा जप्त की गई है।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

राष्ट्रपति का चुनाव और राजनीतिक दलों के अन्दर की स्थिति

(१ डा० शकरदयाल शर्मा (उपराष्ट्रपति अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी प्रो० जाज गिलवट स्वेल को भारी मतो क अतर से पराजित करके भारत के नौव राष्ट्रपति चने गए।

२ भाजपा ने प्रो० स्वेल को उम्मीदवार बनाकर ८का को विभाजित करने की योजना बनाई थी मगर यह योजना सिरे तो क्या चढनी थी उलटे भाजपा ही अपने जाल मे फस गई। उसके दो दजन सासदा न स्वल को वोट नही दिए।

(३ काग्र सियो का जो धडा राम जन्म भूमि और भाजपा काग्रस के अन्दरूनी गुप्त या अप्रत्यक्ष सहयोग गठजोड और चाय पानी मिलन का विरोधी रहा है उसे इस चनाव मे लाभ हुआ।

(४) अब राम जन्म भूमि की समस्या और टेढी हो गई है। आने वाले दिन काफी कठिनाई भरे हो सकते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार का अस्तित्व भी खतरे मे पड सकता है।

(५) राष्टीय मोर्चा और वाम मोच मे जबरदस्त दरार पडी है। काग्रस (एस) और झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने राष्ट्रीय मोर्चा छोड दिया सजपा ने भी डा० शकरदयाल शर्मा के समथन की घोषणा कर दी।

(६ तेलगूदेशम के एक धड ने पी० उपद्र के नेतत्व मे काग्रसी उम्मीदवार डा० शकरदयाल शर्मा को डटकर वोट दिए।

(७) मार्क्सी कम्युनिस्ट पार्टी ने पहले श्री वी०पी० सिह का साथ छोड फिर भाकपा भी उनसे टूट गई।

(८ वी० पी० सिंह जो भाजपा को साम्प्रदायिक पार्टी करार देत रहे और काग्रस के साथ उसके गुप्त गठजोड को अनतिक बताकर उसे चिमट से भी छने को तयार नही थे इस चुनाव मे उसी भाजपा के साथ गठजोड करके खड हो गये।

(९) जनता दल के अनक नताओ न वी पी० सिंह क इस गठजोड की तीखी आलोचना की। श्री रामकृष्ण हेगड न तो यहा तक कहा दिया कि वी० पी० सिंह क बयानो और नातियो से जनता दल का कोइ भ वष्य नही दिखाई देता।

१० जठमलानी ने कहा कि वह पार्टी नतृत्व से पृथक हो रहा हूँ परन्तु पार्टी नताओ ने इसे इकार कर दिया।

(११) अन्त रात्मा की आवाज पर वोट देने की माग करन वाल जनता दल के सासदा का कहना था कि पार्टी नेताओ न स्वल का समथन करके गलती की है।

(१२) डा० शकर दयाल शर्मा को काग्रस तथा उसक सहयोगी दला के ४८९ सासदा के वोट मिलने की आशा थी जबकि ससद के दोना सदनो के ५१० सासदा ने उन्हे वोट दिए। २१ सासदो ने क्रासिंग वोट की। अर्थात पार्टी के अनुशासन को तोडा है।

(१३) रामज म भूमि के मामले मे भाजपा तो फसी ही फसी है परन्तु काग्रस भी फस गई है।

(१४) बहरहाल काग्रस इस चुनाव मे अपने उम्मीदवार को विजयी बनाने मे सफल हो गई हैं परन्तु श्री नरसिम्हाराव की अल्पमत सरकार मण्डल कमण्डल बोफोस हर्ष मेहता काण्ड आदि के मामले मे फस गई है।

(१५) देश के प्रथम नागरिक बनने का जो गौरव डा० शर्मा को मिला है वह अपने आप मे काफी चुनौती भरा हुआ है। निवर्तमान होने वाले राष्ट्रपति श्री वकटरामन निश्चित ही यह सोच रहे होगे कि भले ही विगत वर्षों मे अनेक सवैधानिक समस्याओ का सामना उन्हे करना पडा और तीन सरकारें उनके समय मे बदली परन्तु वह अपना कायकाल पूरा करके जा रहे हैं।

सकलन—रामसिंह मेहरा

वेदो के प्रकाण्ड विद्वान

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति सम्मानित

दिनाक १३ जौल २ को निधन निकेतन खडखडी हरिद्वार मे एक विशाल सन्त सम्मेलन मे आचाय प्रियव्रत जी वदवाचस्पति को उनके वैदिक साहित्य की सतत सेवा करन के उपलक्ष्य मे स्वामी केशवानन्द जी ने इक्कीस सौ रुपये एक शाल गगाजली तथा अभिनन्दन-पत्र द्वारा सम्मानित किया। इस सम्मान से विद्वान जगत मे प्रसन्नता की लहर व्याप्त हुई। आचाय प्रियव्रत जी वदो के मूधन्य विद्वान एव लेखक हैं उनका समग्र जीवन वेदाध्ययन मे ही तपस्या पूवक व्यतीत हुआ है। इस समय ९४ वष की अवस्था मे भी वे वैदिक साहित्य की आराधना मे लग रहे हैं। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय जैसी राष्ट्रीय शिक्षण सस्था के आचाय एव उपकुलपति पद पर लगभग तीस वर्ष काय करन के बाद आचाय जी इस समय विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा है।

—वेदप्रकाश शास्त्री

चारो वेदो का पारायण

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि स्वर्गीया पूज्या माता रामप्यारी जी की प्रेरणानुसार १६ अगस्त स ३० अगस्त तक वद सप्ताह के उपलक्ष्य मे चारो वेदो का पारायण मरे निवास श्रीराम रोड सिविल लाइन्स निकट एक्सचज स्टोर दिल्ली म स्वामी जीवनानन्द जी त था श्री लखपति जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा। इस अवसर पर नित्य प्रति प्रात ८ ३० स साय ५ बजे तक वद पाठ का कायक्रम होगा तथा स्व० स्वामी प्रभु आश्रितजी महाराज क निश्चित उपदेश तथा अन्य विद्वानो तथा भजनोपदेशको के प्रवचन भी हुआ करगे। पूण आहुति ३० अगस्त को सम्पन्न होगी। अधिक से अधिक सख्या म सपरिवार पधार कर धर्म लाभ उठाय।

—अजु नदेव खन्ना विजय लक्ष्मी

पूज्य स्वामी मोक्षानन्द जी दुर्घटनाग्रस्त

पूज्य स्वामी मोक्षानन्द ज सरस्वती महाराज सीढियो से गिर कर घायल हो गये हैं। पर का हड्डी टूट जान से प्लास्टर चढा हुआ है इस समय वेद कथा यज्ञ उत्सव आदि मे कही आ जा नही सकते। प्लास्टर मास अगस्त म कटेगा। उनकी कुशल क्षेम जानने हेतु निम्न स्थान पर पत्र-व्यवहार कर सकते है

मन्त्री आय समाज बाजना मथुरा २८१२०१

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता

—आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

आर्य समाज हमारे देश की उन क्रान्तिकारी संस्थाओं है, जिसने पराधीनता के दिनो मे यहा की जनता को सास्कृतिक और धार्मिक जागृति का पावन सन्देश देने के साथ-साथ उसे साहित्यिक तथा राजनीतिक क्षेत्र मे आगे बढाने के लिए ऐसे अनेक कार्यकर्ता प्रदान किए, जिन्होने अपने उज्ज्वल अतीत के स्वर्णिम सपनो को सजोकर हमारे वर्तमान को सभाला और इस देश को सुखद भविष्य के आलोकमय पथ पर अग्रसर किया। हमे यह लिखने मे तनिक भी सकोच नही है कि भारतीय स्वतन्त्रता के जनक राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने हमारे देश को पराधीनता के पाशविक पाश से मुक्ति दिलाने के लिए जो-जो कार्यक्रम निर्धारित किये और जो साधन उन्होने इसकी सम्पूर्ति के लिए अपनाए वे सब महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत 'सत्यार्थ प्रकाश' और उनके द्वारा सस्थापित 'आर्य समाज' के युगान्तकारी आन्दोलन के ही मूल प्रेरणा बिन्दु थे। महर्षि दयानन्द ने अपनी घनघोर तपस्या तथा अनन्य कर्तव्य-निष्ठा से जहा देश को सास्कृतिक दृष्टि से सुपुष्ट और समृद्ध किया वहा महात्मा गाधी ने राजनीतिक दृष्टि से उसे आगे बढाया। हमारी तो ऐसी भी मान्यता है कि यदि इस पुण्य भूमि पर महर्षि दयानन्द-जैसा दूरदर्शी युग-पुरुष अवतरित न हुआ होता और उसके द्वारा सस्थापित आर्य समाज' ने विभिन्न क्षेत्रो मे अपने कर्मठ कार्यकर्ता न झोके होते तो कदाचित आज भारत की स्थिति कुछ और ही होती। इसका ज्वलन्त प्रमाण उनके अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे लिखे गये ये विचार हैं—"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।' स्वामी जी के इन शब्दो मे सर्वप्रथम 'स्वराज्य' की भावना प्रकट हुई थी।

देश और समाज मे प्रचलित अनेक रूढियो और कुरीतियो को देखकर महर्षि दयानन्द ने अपने क्रान्तिकारी विचारो के द्वारा जो प्रबल एव अभूतपूर्व नवजागरण किया उसी का मूल रूप 'आर्य समाज' है। आर्य समाज ने न केवल धार्मिक तथा सास्कृतिक क्षेत्र मे अनेक कार्यकर्ता उत्पन्न किये, प्रत्युत साहित्यिक तथा राजनीतिक आन्दोलनो मे भी उसने बढ-चढकर भाग लिया। अतीत काल के भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनो के इतिहास पर यदि हम दृष्टि डाले तो ऐसी अनेक विभूतियो के नाम हमारे समक्ष उभरकर आयेगे जिन्होने न केवल इस देश के सास्कृतिक उन्नयन मे उल्लेखनीय योगदान दिया अपितु राष्ट्रीय स्वाधीनता-सग्राम के इतिहास मे भी उनका नाम स्वर्णाक्षरो मे अकित है। ऐसे महापुरुषो मे स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपतराय आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ऐसे भी अनेक क्रान्तिकारी विचारक और कार्यकर्ता आर्य समाज ने देश को दिये जिन्होने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए विदेशो मे जाकर उल्लेखनीय कार्य किया। ऐसे महानुभावो मे सर्वश्री भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, राजा महेन्द्रप्रताप भवानीदयाल सन्यासी तोताराम सनाढ्य आदि के नाम हमारे सामने एक उदात्त आदर्श प्रस्तुत करते हैं। सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा जिन आर्य तरुणो ने स्वाधीनता के पावन यज्ञ मे अपने प्राणो की अमर आहुति दी उनमे भी अधिकाशत आयसमाज के सुधारवादी आन्दोलन से ही प्रेरित थे। ऐसे बलि-पथियो म अमर शहीद सरदार भगतसिह के अतिरिक्त रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद और रोशनलाल जैसे क्रान्तिकारियो के नाम वरेण्य है।

आर्य समाज एक ऐसी सर्वतोमुखी विकासशील सस्था है जिसके द्वारा राष्ट्र मे न केवल धार्मिक तथा राजनीतिक क्षेत्र मे अभूतपूर्व जागरण हुआ, प्रत्युत शिक्षा तथा समाज-सुधार के क्षेत्र मे भी इसकी देन अनन्य है। इसके द्वारा जहा विधवा-विवाह, बाल विवाह-निषेध, हरिजनोद्धार तथा स्वदेशी-प्रचार के अनेक क्रान्तिकारी कार्यक्रम सचालित हुए वहा इसके गुरुकुलो और डी०ए० वी० कालिजो ने भी शिक्षा के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य किया। यहा तक कि इन शिक्षा-सस्थाओ मे प्रशिक्षित और दीक्षित स्नातको ने न केवल भारत के विभिन्न प्रदेशो मे जाकर सास्कृतिक क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य किया, प्रत्युत विदेशो मे भी भारत और भारतीयता के गौरव की अभिवृद्धि की। राष्ट्रभाषा हिन्दी के सर्वांगीण विकास मे योगदान देने के साथ-साथ उन्होने साहित्यिक क्षेत्र मे भी अपनी ज्वलन्त प्रतिभा का परिचय दिया। यह निर्विवाद सत्य है कि यदि आर्य समाज के द्वारा वैचारिक क्षेत्र मे ऐसे क्रान्तिकारी परिवर्तन न हुए होते तो हिन्दी साहित्य को सर्वश्री प्रेमचन्द, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, यशपाल और राहुल साकृत्यायन जैसे प्रखर और मेधावी कथाकार कैसे उपलब्ध होते। पत्रकारिता के क्षेत्र मे अतीतकाल मे जिन्होने राष्ट्र का सही मार्ग प्रदर्शन किया उनमे भी ऐसे ही महानुभाव अग्रगण्य रहे जो आर्य समाज तथा महर्षि स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तो के कट्टर अनुयायी थे। ऐसे पत्रकारो मे स्वामी श्रद्धानन्द के अतिरिक्त सर्वश्री रुद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचार्य, पदमसिंह शर्मा, राधामोहन गोकुलजी, गणेशशकर विद्यार्थी विजयसिह पथिक, इन्द्र विद्यावाचस्पति सत्यदेव विद्यालकार, सत्यकाम विद्यालकार और हरिशकर शर्मा आदि के नाम विशेष परिगणनीय है।

जिन दिनो हमारे देश मे आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का अवतरण हुआ था उन दिनो यहा सन् १८५७ की अमर क्रान्ति के उपरान्त मुगल साम्राज्य सर्वथा ध्वस्त हो चुका था और अग्रेजी शासन की जड मजबूती से जमन के साथ महारानी विक्टोरिया की घोषणा से देश मे विचार-स्वातन्त्र्य की भावना उद्भूत हो गई थी। देश के कोने-कोने मे ईसाइयो ने जहा अपने धर्म के प्रचार के लिए अनेक केन्द्र स्थापित कर लिए थे वहा बगाल मे राजा राममोहनराय और केशवचन्द्र सेन निरन्तर हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्थान की आवाज ऊची कर रहे थे। दुर्भाग्यवश ये दोनो महानुभाव क्योकि सस्कृत के पण्डित न थे, अत इन्होने अपने-अपने धार्मिक आन्दोलनो की नीव पाश्चात्य जीवन प्रणाली के आधार पर डाली थी। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के द्वारा आयभावना मूलक सस्कृति का प्रचार करने की दिशा मे देश का उल्लेखनीय नेतृत्व किया था। उक्त दोनो महानुभावो का झुकाव जहा ईसाइयत और पाश्चात्य जीवन-पद्धति की ओर था वहा महर्षि दयानन्द भारतीय सस्कृति की प्रतिष्ठापना की ओर अग्रसर थ। यदि हम यह कह तो कदाचित् अप्रासगिक न होगा कि केशवचन्द्र सेन की पश्चिमोन्मुखी विचार-धारा को पूर्वाभिमुख करने का श्रेय भी महर्षि दयानन्द को ही है। इसी प्रकार हमे यह मानने म भी कोई सकोच नही है कि केशवचन्द्र सेन से हुए सम्पर्क के कारण ही महर्षि दयानन्द ने जहा हिन्दी म व्याख्यान देना शुरू किया वहा उनके आग्रह पर ही उन्होन वस्त्र-धारण करना प्रारम्भ किया था। महर्षि स केशवचन्द्र सेन की भेट सन् १८७२ मे जब कलकत्ता मे हुई थी तब स्वामी जी सस्कृत म ही भाषण दिया करते थे और शरीर पर कोई वस्त्र धारण न करके 'कौपीनवन्त खलु भाग्यवन्त' के अनुसार केवल कौपीन ही पहनते थ। श्री सेन प्राय अपन विचार अग्रेजी के द्वारा ही प्रकट किया करते थ। व स्वामी जी की विचार धारा को जानना-समझना चाहते थे किन्तु सस्कृत भाषा से सर्वथा अपरिचित होने के कारण वे उससे वचित थ। स्वामी जी के अग्रेजी-ज्ञान से विहीन होने के प्रति उन्होने जो भाव प्रकट किय थ वे इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होने कहा था —"शोक है कि वेदो का अद्वितीय विद्वान अग्रेजी नही जानता अन्यथा इगलैण्ड जाते समय वह मेरा इच्छानुकूल साथी होता।' इस पर स्वामी जी ने जो भाव प्रकट किये थे उन्होन भी श्री सेन को हतप्रभ कर दिया था। स्वामी जी ने कहा था— शोक है कि ब्रह्मसमाज का नेता सस्कृत नही जानता और लोगो को उस भाषा मे उपदेश देता है जिसे वे नही समझते। इन दोनो महानुभावो को यह स्नेह सम्पर्क देश के लिए यहा तक लाभकारी सिद्ध हुआ कि उसके कारण स्वामी जी ने पूर्णत हिन्दी को अपना लिया और अपने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' की रचना सस्कृत मे न करके हिन्दी मे की।

१ अगस्त—पुण्य तिथि स्मरण

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है के उद्घोषक लोकमान्य तिलक (१८५६-१९२०)

ब्रह्मदत्त स्नातक भारतीय सूचना सेवा (रिटा०)

बम्बई के समुद्र तट पर चौपाटी के मैदान मे तिलक महाराज का ज्यो ही शव चिता पर रखा गया एक मुस्लिम युवक आगे बढकर चिता प्रज्वलित होने ही छलांग मारकर उसमे यह कहकर कूद पड़ा— तिलक महाराज आप कहा चल गये? युवक की आयु २०-२२ साल थी और वह उनके शव के साथ भस्म हो गया। पूरे ७२ साल पहले आज के ही दिन भारत के यशस्वी योद्धा लोकमान्य बलवन्त गगाधर तिलक को श्रद्धाजलि देने पाच लाख नर नारी एकत्र थे।

बाल गगाधर क सक्षिप्त नाम से इतिहास मे विश्रुत और अपने राजनैतिक अभ्युदय के काल मे प्रख्यात त्रिमूर्ति बाल (बालगगाधर तिलक पाल (विपिन चन्द्र पाल लाल लाला लाजपतराय के अग्रगण्य इस महापुरुष को स्वाधीनता सग्राम का प्रथम सेनानी कहना सच्ची श्रद्धाजलि होगी। तब वर्तमान इतिहास के प्रख्यात गाधी युग का राष्ट्रीय क्षितिज पर उदय पूरी तरह नही हो पाया था। राजनीति म वचस्व उन दिना सर फीरोजशाह मेहता और गोपाल कृष्ण जैसे दिग्गज कामरेड नेताओ के हाथो म था। उन्ही के सरक्षण एव परामर्श गोखले पर दक्षिण अफ्रीका म बैरिस्टर मोहनदास करमचन्द गाधी सावजनिक क्षेत्र म प्रवेश कर चुक थ। प्रथम विश्व महायुद्ध के कुछबाद ही १९१५ई म जब प्रथम विश्व युद्ध के बादल गहरा रहे थ, व भारत लौट आय थे और दक्षिण अफ्रीका मे जातिभेद के प्रश्न पर सविनय अवज्ञा आदोलन एव बोअरो के खिलाफ गाधी जी अग्रेज सरकार को भारतीयो का सहयोग देने के लिए कैसर-ए-हिन्द तमगा स्वीकार कर चुके थे। उनके इन पहले परीक्षणो पर भारत म चर्चा तब शुरु हो गयी थी परन्तु प्रख्यात गाधी युग का सूय अभी मध्याह्न काल म प्रवेश नही कर पाया था।

राष्ट्रीय महासभा की बागडोर तब नरमदलियो के हाथो मे थी। धारा-प्रवाह भाषण। एव लेखो मे सवैधानिक प्रगतिकी माग अग्रेज शासकासे व लोग किया करत थ। पूर्ण स्वराज्य अथवा औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए नही, अपितु होमरूल क अन्तगत अग्रेजो के सरक्षण मे रहकर ऊची नौकरियो मे भारतीयो के प्रवेश की सुविधा, कतिपय आर्थिक सुधारो के श्रीगणेश करन के लिए विदेशी शासको से मनुहार करने की प्रणाली उन दिना प्रचलित थी। इस शताब्दी के दूसरे शतक तक वर्तमान राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस का ढाचा इसी नीव पर खडा हुआ था।

काग्रेसके जन्मदाता ओ पी ह्यूम एक अग्रेज कलक्टर रहनेके बाद भारतीयो को शासन व्यवस्था एव आर्थिक ढाचे मे सहयोगी बनाने के पक्षधर बने थे। उनके परवर्ती दादा भाई नौरोजी सर, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले आदि काग्रेस के नेता उन्ही माडरटो की श्रेणी मे से थे। तब तक कर्मवीर विशेषण से पुकारे जाने वाले मोहनदास कर्मचन्द गाधी के प्रारम्भिक राजनैतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले भी इसी वर्ग के नेता थे। कोटि-कोटि भारतीय जनो द्वारा बाद मे महात्मा नाम से समावृत और कर्मपथ पर निरन्तर बढत अहिसक क्रातिकारी गाधी न अपन जीवन पर गोखले के कर्तृत्व की छाप के सस्मरण अपनी आत्मकथा म बड भावभीने शब्दो मे अनेक स्थलो पर किये हैं, परन्तु गाधी जी के सहयोगी हेनरी पोलक न अपने सस्मरणो मे स्पष्ट लिखा है कि दक्षिण अफ्रीका से भारत मे १९१५ म बम्बई से आने क बाद गाधी जी पूना म लोकमान्य का आशीवाद लेने गए थे।

प्रसिद्ध अग्रेज पत्रकार बेत्सफोर्ड ने अपन सस्मरणो म राजभक्त गाधी को क्रातिकारी बनाने का श्रेय तिलक को दिया है। पराधीनता पर आक्रोश की अभिव्यक्ति काग्रेस म गरमदलियो के नेतृत्व के बावजूद भारतीय मानस बराबर करता ही रहता था। इन गरमदलियो मे अग्रणी महाराष्ट्र एव बगाल का एक वर्ग था जो शासको की भक्ति करने से दूर था। वह अगरेजो से बलपूर्वक अपने अधिकारो की माग करता था। इसी वर्ग के अगुआ थे बालगगाधर तिलक, जिनका प्रथम उदघोष था — 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' यह एक क्रातिकारी आह्वान था जिसने भारत की राजनीति मे एक नई वेगवती धारा को राजनैतिक मच पर लाकर खडा किया था। उनसे पूर्व पाश्चात्य शिक्षा से मण्डित अन्य माडरेट राजनैतिक नेता हरबर्ट स्पैंसर और एडमण्ड बर्क जैसे विचारको के उद्बोधक प्रेरणाप्रद नेत्रो को पढकर भी बलपूर्वक यह बात नही कह पाते थे। हा, धार्मिक एव सामाजिक स्तर पर बगालके सन्यासी विद्रोह एव स्वामी दयानन्द द्वारा विदेशी पराधीनता के विरुद्ध अभियान चालाने के जैसे छुटपुट प्रमाण भारतीय इतिहास मे अवश्य मिलते है।

देश मे अनक स्थला पर किसान आन्दोलन एव धार्मिक पुनर्जागरण के बाद बगबग चाफेकर बन्धुओ द्वारा हिंसल के प्रतिशोध आदि कार्रवाईया के कारण जन मानस के क्षोभ समय-समय पर उभरते रहे और उनको एक मुखर स्वर तिलक महाराज के स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है के उस उद्घोष से मिला था। महाराष्ट्र और बगाल के इस वर्गमे बाद मे पजाब से शामिल हुए थे लाजपतराय। बाल पाल-लाल का यही तिगड्डा तत्कालीन भारतीय जनता की सजीव आकाक्षाओ की उन दिनो आराध्यस्थली था।

केरल और महाराष्ट्र में साम्प्रदायक दंगे

इस्लामी सेवा संघ के हमलों की सभा में गूंज

नई दिल्ली, २१-७-९२। ससदीय कार्य मन्त्री श्री गुलाम नबी आजाद ने आज लोकसभा मे कहा कि महाराष्ट्र और केरल के कुछ भागो मे दगे अयोध्या के वाकियात से देश म पैदा हुई कशीदगी का ही परिणाम है—आज प्रश्नोत्तर काल के फौरन बाद भारतीय जनतापार्टी के सदस्यो ने यह मामला उठाया था—पार्टी के नेता श्री अडवानी का कहना था कि दगे इस्लामी सेवा सघ ने भडकाये हैं जिसका आका पाकिस्तान की इन्टर सर्विस इन्टैलीजैन्सी है—इन्होने मुस्लिम फन्डामेन्टसे की ताडना करते हुए वजीर दाखिला से आज ही जबाब देने का मुतालबा किया—इसी बीच भाजपा-काग्रेस-जनता दल (अजीत) झारखण्ड मोर्चा की भडपें होती रही—नेशनल फ्रन्ट और लेबर पार्टियो के सदस्य उपस्थित नहीं थे क्याकि वह बाहर गेट पर धरने पर बैठे हुए थे—श्री आजाद ने कहा कि इस समय दगोकी वजह राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद का विवाद मे अदालती अहकाम की खिलाफ वर्जी है—भाजपा के सदस्यो ने सरकार के लबो लहजो (कथन का तरीका) के विरुद्ध सख्त प्रौटैस्ट किया इसके बावजूद श्री आजाद कहते रहे कि हम मुस्लिम फिरकापरस्ती के उतने ही विरुद्ध है जितना हिन्दू फिरकापरस्तीके हम इस्लामी सेवा सघ की मुस्मत करते है परन्तु यह नाम आया कहा से है? मैं समझता हू कि "आर-ऐस-ऐस' और आई एस एस चचेरी बहने हैं—यह दोनो ही कशीदगी फैला रही हैं और उत्तर प्रदेश की सरकार इसके लिए उत्तरदायी है—भा-ज-पा के रामनायक का कहना था कि आर-ऐस-ऐस को अपनी शाखाए लगाने का पूरा हक हासिल है।

आखिर आर्य समाज का अपराध क्या है ?

ब्रह्मचन्द शरर

आय जगत आय समाज का एक प्रमुख पत्र है। श्री भाई क्षितीश जी के परिश्रम से यह प्रगति पथ पर अग्रसर है। प्राय स्कूलो तथा कालेजो मे भी इसका प्रवेश हो चुका है। श्री क्षितीश जी के सम्पादकीय न इसकी शोभा तथा महिमा को चार चाद लगा दिये। परन्तु इसी आय जगत म मान्य कौशिक जी के सात जून के सम्पादकीय से पूरी निराशा हुई। लगता ा कि लखक कोई आय समाज का विरोधी न सही परन्तु हितैषी भी नही है। जाने कहा कहा से आरोप इकटठ करके आय समाज तथा आर्यो पर थोपे है।

जरा बानगी देखिय महर्षि न पुराणो का खण्डन किया उनको फाडकर जलाया नही आज का आय समाजी पुराणो क स्पश स स्वय को अपवित्र मानता है क्या हम पुराणो की ऊलजलूल कथाओ का खण्डन पुराणा के पटन के बिना करत है ? क्या आज आर्यसमाजी पुराणो को जला रहा है ? आखिर सम्पादक महोदय को गिला क्या है ? रहा पौराणिक कथाए तथा इतिहास की बात ता क्या सम्पादक महोदय को भागवत के कृष्ण का इतिहास स्वीकार है ? जहा कृष्ण १६१०८ स्त्रियो से विवाह रचाता है। और लाख से ऊपर बच्चे पैदा करता है जहा रास लीला की छीछालेदर है जहा चीर हरण का इतिहास है ? क्या इसी की सुरक्षा के लिय आर्य जगत का सम्पादक कटिबद्ध है ?

लखक न आर्य समाज की राष्ट्रसेवा को भी नकारा है। काश उसे ज्ञात होता कि बिसमिल हो या चन्द्रशेखर आजाद सरदार भगतसिंह या स्वय सावरकर जी सभी आय समाज के सेवको की विचारधारा से अनुप्राणित होकर राष्ट के लिय सब कुछ होम कर गये। लाला लाजपतराय की घटना को उछालन से पूव वे स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा उनकी वीरता का वर्णन भी पढ पात। मैं नही जानता वे किस राजनीतिक प्रप के पुजारी है परन्तु आज के तथाकथित राजनैतिक दल आय समाजो के निष्काम सवस्व त्याग की तुलना मे सूय के सम्मुख रज कण के तुल्य भी नही है। मैं नही चाहता कि हिन्दुत्व का घोर मचाने वाली पार्टी का पोस्टमाटम करू प्राय सब को ज्ञान है कि राम सेवा के पर्दे म कितना चारित्रिक हनन हो रहा है।

काश ओ गैर पे उगली को उठाने वाले —अपनी सूरत कभी आईन म देखा होती। जिस हिन्दुत्व का दद आय जगत के सम्पादक महोदय को आय समाज जसी राष्ट्रसेवी सस्था की भत्सना के लिये विवश कर रहा है वह है क्या ? उसका स्वरूप देखना है ता कभी पानीपत पधारिय जहा हर वीरवार को हिदु नामधारी जीव मुहम्मद के गीत गाता है कब्रो से जाकर बच्च मागता है मिया जी की झूठन लेता है जो गो भक्षको को पूजता है और फिर भी हिदु है और गोरक्षक है। कानपुर मस्टन रोड के उत्सव पर यज्ञ क सम्मुख R S S की शाखा मे हिन्दुओ के तथाकथित पहरेदारो ने वह हुल्लड मचाया कि श्री राम की यज्ञ रक्षा का स्मरण हो आया। महोबा के आगे एक ग्राम मे हिदु धर्म क रक्षको ने आज भी हारजना को दिया यज्ञोपवीत तोड दिया और उन्हे पीटा। महोदय ! यदि हिदु धम की रक्षा करनी है तो इसकी बुराइयो को ढापिये नही ऋषि दयानन्द और आर्यो के समान उनका खण्डन कीजिये। फोडा जब तक चीरा न जाएगा उसका मवाद नही निकलेगा और यह काय आय समाज का है जिसे आ बुरा भला कह रहे है।

आय समाज के विरोधियो की एक शला है कि स्वामी दयानन्द की प्रशसा के दो शब्द कहो और फिर कहोकि आयसमाज तो मर चका है कहा है आय समाज ? अब आय व नही रहा। लक्ष्य इस षड्यन्त्र का एक है कि आर्यो को निरुत्साहित करो उनके सदस्य बनकर उनके मन्दिरा पर अधिकार करो सगठन के प्रतीक नमस्ते के स्थान पर नमस्कार और स्वामी दयानन्द के स्थान पर स्वामी विवेकानन्द का महत्व बढाओ। आज आयबन्धु इस षडयन्त्र को जान गये हैं और वे इस प्रकार के छदमवश धा रया से सावधान हो चुके है अत अब यह चाल अधिक न चल सकेगी। सम्पादक महोदय आय समाज के वरिष्ठ नेताओ को अपमानित करने पर तुला है परन्तु क्या उन्होने उनके गुणो समाज सेवा और हिन्दी की सुरक्षा के प्रयासो पर भी दृष्टि डाली है। यह वही है जिन्होन काशमीर के मन्दिरो की रक्षा के लिय सरकार को विवश किया जिन्होने सरकारी स्थलो पर मसजिद न बनन दी जिन्होने सिकन्दर बख्त राज शर्मा कान्त म हिदुओ के आत्म सम्मान को जगाया परन्तु सम्पादक महोदय को सब निकृष्ट लगते है उनके शब्दो म उनको आर्यो को यह भ्रम है कि आय समाज तर सस्थाओ मे जो कुछ ह वह सब कुछ नकृष्ट है और आयसमाज मे जो है वह सब श्रष्ठ है यदि कोई यह कहे क ि यति बिल्कुल इसके विपरीत ह ता वह बहुत गलत न होगा। सम बन्कर आय समाज की शत्रुता का प्रमाण क्या होगा कि स्वय एक ा ो लग या जाना हैऔर पुन स्वय उसका पात्र आय समाज को दव शब्दो म ठहराया जाता है

पजाब क सम्बन्ध म आय समाज हिन्दी के प्रचार क रूप म कठनाईयो और यातनाओ के समुद्र को चीरता रहा कर्मवीर जलो म शहीद हो गय उसका परिणाम है कि आज पजाब म हिन्दी का कुछ अस्तित्व है। यार लोगो ने तो हवा क रुख को देखकर पजाबी को गुरुमुखी लिपि म प्रचारित करन का ठका ल रखा ा आय समाज तपस्या की अग्नि म कन्दन परन्तु लखक को यह पसन्द ही नही व लिखते है आय समाज ा का हिन्दी का पक्षधर मानता है। हिन्दी के प्रति गलत नीतियो के कारण सन पजाब को दाव पर लगा दिया है जिसम आज भी पजाब की दुदशा हो रही है आय जगत का सम्पादक यह अकालियो की भाषा बोलना कब से सीख गया ? आज भी सारे हिदु हिन्दी को तिलाञ्जली दकर अकाल पथ को स्वीकार कर ल तो सहज मे शान्ति हो जाय शायद वीर हकीकत को सम्पादक महोदय जसे पथप्रदशक नही मिले थे नही तो वह भी चोटी के दो बाल कटा कर सहज शा न का वातावरण उत्पन्न कर पाता। यदि सम्पादक महोदय के आदेशानुसार आय समाजी अपन कतव्य को पहचान तो सवप्रथम पुराणो का पाठ प्रारम्भ कर स्वय को आय के स्थान पर हिदू कहे पजाब म गुरुमुखी लिपि मे पजाबी भाषा को अपनी मातृ भाषा मान ल मूर्तिपूजा आदि पाखण्डो के विरुद्ध कुछ न कहे शायद तभी व स्वामी दयानन्द के सच्चे भक्त हो सकग यदि वेदो के कल्पित अर्थो को जो सायण आदि ने किय है स्वीकार कर ल तब तो हिदुत्व जी उठगा ? क्या विचित्र विडम्बना है ऐसे विच ग के प्रचारक आय जगत जैसे पत्रो के सम्पादक है ?

बागबा न आग दी जब आशयाने को मेरे
जिन प तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे ॥

पृथ्वी के बाहर भी जीवन है (२)

—विश्वनाथ प्रसाद, विद्यावाचस्पति, कोरबा

७— क हमने दुनिया के आकाश [निकटवर्ती आकाश] को शोभा से सुशोभित किया तारो से। और इस तरह उसे हर सरकश शैतान से सुरक्षित भी कर दिया। (अस साफ्फात ३७।६ ७)

ख और हमने दुनिया क आकाश (निकटवर्ती आकाश) को प्रदीपका तारा और नक्षत्रो से सजाया और उनस शैतानो को मार भगाने का काम लिया और उन (शतानो के लिए हमने दहकती आग (जहन्नम) की यातना तयार कर रखी है अल मुल्क ६७। ५)।

कुरान मजीद के उपरोक्त आयता के अनुसार आकाश को तारा से सजाया है सुशोभित किया है। इस प्रकार शतानो की पहुच से सुरक्षित भी है।

ग) यहा तक कि वह सूर्यास्त की जगह पहुचा उसने उस एक कृष्ण सागर म अस्त होते पाया अर्थात उस एसा दिखाई दे रहा था कि सूय काल गदले पानी म डूब रहा है और उसके निकट उसे एक जाति मिली। हमने कहा ह जलकरनन तुम्हे इसकी शक्ति प्राप्त है कि चाहे तुम इन्हे तकलीफ दो और चाहे इनके साथ अच्छा व्यवहार करो अल कहफ ८६।

घ यहा तक कि सूर्योदय के स्थान पर जा पहुचा उसने उसे एक ऐसी जाति पर उदय होते पाया जिनके लिए हमने उनके सूय के और उनके बीच कोई आड नहा रखी अर्थात यह जाति बिल्कुल असभ्य थी उस घर खमा आदि बनाना नहीं आता था अल कहफ १८। ९०।

दोना पूव का रब है और दोना पश्चिम का रब (रहमान ५५ म सूय जस जगह स उदय होता और जिस जगह अस्त होता है गीष्म ऋतु म वह उससे भिन्न स्थान से उदय होता और उससे भिन्न स्थान पर अस्त होता है। इस तरह उसे उदय और अस्त होने के दो स्थानो का ही नही बल्कि उस उदय और अस्त होने क अनेक स्थानो का रब भी कहा जा सकता है।

(अर रहमान ५५।१७)

वक्तव्य सूरज आसमान मे इस जमीन से १३ लाख गुना बडा व ९ करोड मील ऊचा (दूर) है। न तो वह किसी कुण्डी या तालाब मे से निकलता है और न किसी तालाब म डूबता है। न उसके किनारे पर कोई जाति बसी है। कुरान बनाने वाले का खगोल विद्या का ज्ञान कितना था वह इसी से प्रगट है कि वह सूरज निकलने और डूबने की जगह भी मानता है।

(कुरान की छानबीन डा० श्री राम आय)

वही है जिसने सूय को प्रकाशमान किया और चन्द्रमा को उजियाला बनाया और चन्द्रमा के घटने बढने) की मजिल ठहराई ताकि तुम वर्षो की गिनती और हिसाब मालम करो। अल्लाह ने ये सब कुछ हक (उद्देश्य) के साथ ही पैदा किया है। (यूनुस १७।५)

और उनके बीच चन्द्रमा को प्रकाश बनाया और सूय को प्रदीप ?

(नूह ७१।१६)

उसने सूय और चन्द्रमा को काम मे लगा दिया है। हर एक एक नियत समय तक चला जा रहा है (फातिर ३५।१३)

और सूरज और चाद और तारो को ऐसे तौर पर पैदा किया कि व उस के हुक्म से काम म लगे हुए हैं (अल आराफ ७।५४)

न सूय के वश म है कि वह चन्द्रमा को जा ले और न रात दिन मे आगे बढने वाली है और सब एक एक कक्षा (ग्रह-पथ) मे तैर रहे ह।

(यासीन ३ ।४०)

वक्तव्य—चन्द्रमा को रोशन बनाना विद्या के विरुद्ध बात है। चाद को रोशनी सूरज से मिलती स्वत उसम कोई प्रकाश नही है यह बात विज्ञान से सिद्ध हो चुकी है तथा वैज्ञानिक लोग चाद पर जाकर देख भी चुके है कि चाद को खुदा ने रोशन बनाया ह।

चाद सूरज व तारे जानदार नही है वे जमीन है (लोक है) फमा बरदार वह होता है जो समझ रखता हो और समझ कर हुकम का पालन करता हो। अत इन जड लोको का फर्मा बरदार रहना भी खुदा का सही नही है।

चाद और सूरज का दौड लगाना और एक दूसरे को पकड न सकने की बात कहना अज्ञान है। चाद जमीन से दो लाख अडतीस हजार मील दूर है जबकि सूरज नौ करोड मील हमारी जमीन से दूर है। सूरज अपने ही स्थान पर घूमता है और चाद हमारी जमीन के साथ घूमते हुए अपने दायरे मे घूमता रहता है। तब सूरज और चाद का एक दूसरे को पकड सकने की बात कहना भी बेतुकी सी बात है।

कुरान का उक्त वणन विद्या एव विज्ञान के विरुद्ध है।

(कुरान की छान बीन लेखक डा० श्रीराम आय)

कवि और शायरो के विषय मे कहा जाता हे कि जहा न पहुचे रवि वहा पहुचे कवि अर्थात बहुत ही खोजपूण बात वे समाज के सामने रखते हैं और लोगो का ज्ञान वद्धन करते ह। देखने और सुनने मे आता है कि चाद और तारा की उपमा देकर वे लोगो का मनोरजन मात्र ही करते है भले ही इन उपमाओ का विज्ञान से कोई दूर का भी सम्बन्ध न हो।

कभी वे अपनी प्रमिका को प्रसन्न करने के लिए चाद और तारो को तोडकर उपहार स्वरूप अपण करना चाहते है तो कभी तारो को (चमेली के फूल समझ के) तोड के उनके जुल्फो व बालो म लगाने की बात करत है। इसी दशा म प्रसन्न होके उनकी प्रमिका कहने लगती है कि तारे फलक से तोड के लाए मेरे लिए।

ऊपर के दृष्टान्तो से यही ज्ञात होता है कि ये चाद तारे इसान के आधकार मे है। कोई चाद के दो टुकड करने की बात करता है तो कोई सूरज को अपन मुख मे रख लने की बात। तारे तो मानो चमेली के फल हो जिन्हे जब चाहा आसानी से तोड के प्रमिका के बालो मे सजा दिया। यथाथ म ये क्या है इनकी वास्त वकता जानने के लिए हमे विज्ञान की शरण मे जाना होगा। आइए देख वज्ञानिक इनके बारे मे क्या और कितनी महत्वपूण जानकारी देते है —

लगभग बारह वप पूव वाइकिंग अन्तरिक्ष यान से सग्रहित आकडो के विश्लेषण से ऐसा आभास होता है कि ब्रह्माड मे अन्यत्र भी बुद्धिशील प्राणी है। इन आकडो के विश्लेषण का काम पिछले पाच वर्ष से चल रहा है। आकडो मे मगल ग्रह पर ऐसी आकृतियो की उपस्थिति के प्रमाण मिलते है जो यह सिद्ध करत है कि वहा किसी प्राचीन सभ्यता के अवशेष मौजूद है। पचभुजीय पिरामिडो का एकदम ज्यामितीय ढग से स्थित होना बहुत ही चकराने वाली खोज है। (मगल ग्रह पर प्राचीन सभ्यता के प्रमाण नवभारत बिलासपुर २४ जुलाई १९८८)

प्रश्न किया गया कि सूय चन्द्र और तारे क्या वस्तु है और उनमे मनुष्यादि सष्टि है या नही ? तो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उत्तर दिया कि ये सब भूगोल लोक और इनमे मनुष्यादि प्रजा भी रहती है क्योकि

एतषु हीद सव हित मेते हीद सव वासयन्ते तद्यदिद सव वासयन्ते तस्माद्वसव इति ।।शत० का० १४ (प्र० ६। ब्रा० ७ क० ४)

पृथिवी जल अग्नि वायु आकाश चन्द्र नक्षत्र और सूय इनका वसु नाम इसलिए है कि इन्हा म सब पदाथ और प्रजा बसती है और ये ही सब को बसाते है। जिस लिए वास के निवास करने के घर है इसलिए इनका नाम वसु है। जब पृथिवी के समान सूय चन्द्र और नक्षत्र वसु है पश्चात उनमे इसी प्रकार प्रजा के होने म क्या सन्देह ? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्यादि सष्टि से भरा हुआ है तो क्या यह सब लोक शून्य होगे ? परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नही होता तो क्या इतने असख्य लोको म मनुष्यादि सष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है। इसलिए सवत्र मनुष्यादि सष्टि है (सत्याथ प्रकाश)

आज के वैज्ञानिको ने अपने खोज के आधार पर महर्षि के विचारो की पुष्टि निम्न शब्दो मे की है —

खगोल शास्त्रियो के अनुसार स्वच्छ आकाश मे हमे तारो के दशन इस प्रकार होने है

साधारण आख द्वारा—४५०० तारे

दूरवीक्षण यन्त्र द्वारा—२ ००० ००० तारे

(क्रमश)

योगी फार्मेसी के संचालक—

डा० विजय शास्त्री की स्मृति मे

मातृ संस्मरण

—वैद्या पुष्पावती

विजय कुमार अकस्मात ८ अगस्त १९९१ को हमे छोडकर इस ससार से चल बसे। उसके बियोगजनित दु ख के का ण मुझ उसका बाल्यजीवन स्मरण हो आया। जब मेरी आयु ४ वष की थी। मेरे पिता श्री रामलाल जी का देहावसान हो गया था। उस वक्त मेरी माता श्रीमती लक्ष्मी देवी ने बड धय व प्यार के साथ पारिवारिक सदस्यो को सहयोग दिया और सभी को व्यवस्थित किया। हम लोग ५ बहन तथा ३ भाई थे। मैं अपने पिता की पाचवी सन्तान थी। पिता की मृ यु के पश्चात मेरा एक भाई दो वष का होकर तथा दूसरा भाई ७ वष का होकर नही रहा। इस प्रकार मेरे तीसरे भाई डा० कृष्ण गापाल के ऊपर ही सारा पारिवारिक भार आ पडा जिसको बडी धीरता के साथ उसने वहन किया और सारा जीवन आय समाज की सेवा मे लगा दिया। उसकी धमप नी आय समाज कस्बा रजोया की प्रिंसिपल थी। वह मेरा भावज थी और पढाई के नाते मेरी गुरु भी थी। आय स्कूल मे शिक्षा दीक्षा होन के कारण मुझको ईश्वर मे सदव दृढ विश्वास रहा है। मेरे भाई न १५ वष ३ मास की आयु होने पर २० ९ ३६ को मेरा विवाह महाशय बडीराम जी के सुपुत्र श्री योगराज जी के सा मगन परिवार मे कर दिया। इम प रवार मे मुझ हर प्रकार से सुख स्नेह व आदर प्राप्त हुआ जो एक नववधू का मिलना चाहिय। परिणामत व नी प्रसन्नता रही दिनाक १८ ७ ९ को मेरी कोख से इस बालक का ज म हुआ जिसका विजय कुमार नाम रखा गया दुर्भाग्यवश इसके पिता जी टाईफायड बखार के कारण दिनाक १० ३९ को हमारा साथ छोडकर ससार मे चले बसे और सारा प वार प्रभ क सहारे छोड गए। उस वक्त मेरी आयु १८ वष १० दिन थी और शिशु (विजय कुमार २३ दिन का था। परिणामत दाह सस्कारम मुझही अग्निदान करना पडा। च कि ईश्वर म सदा से ही मेरा वि व स हा है। वह जो करता है उसी म भला है। ऐसा सोचकर मैन धय नही छोडा और इस घोर विपत्ति के समय उसी प्रभ पर अटल विश्वास रखा। मनुष्य अपने पूवज म के कर्मानुसार ही फल भोगता है। ऐसा सोचकर स तोष किया। अब परिवार मे दादी सास श्वसुर महाशय बडीराम जी उनकी धमप नी मेरी सास तथा उनका पुत्र मेरा देवर राजपाल था। मेरी दादी सास व अपन पुत्र योगराज के दुनिया से चले जान के कारण अत्यधिक मे रोत रोत अधी हो गई थी। इन्ही सबकी सेवा मे समय व्यतीत होता रहा। इधर बेटा विजयकुमार भी बडा होता जा रहा था। वह बचपन मे ऐसी ऐसी बात करता जिनके स्मरणमात्र से मन विचलित हो जाता है। एक बार पण्डित जी ने आय समाज के उ सव मे एक धार्मिक फोटो दिखाया और बोल ...

बेटा विजयकुमार सुबह उठा हमारी एक परिचित बहिन थी उसके घर गया और बोला मासी जी आप इतनी अच्छी चीज है जो सौ चाचो के बराबर पण्डित जी ने बोला है। उस वक्त इसकी आयु ४ वष की होगी। उस औरत न आकर मेरी दादी सास से कहा—इसके सामन इसके पिता जी की कोई बात न किया करो यह अब महसूस करता है। मेरी दादी सास ने इसे गोद मे लेकर कहा— अच्छा हुआ तेरे पिताजी गुजर गये है तेरी मा को न उनके कपड धोने पड न रोटी बनानी पडी इस पर विजयकुमार ने उत्तर दिया दादी यदि मेरे पिताजी होत तो घर मे रुपया भी तो कमाकर लाते। ऐसी २ कितनी ही बड दिमाग की बात करता था। तत्पश्चात दो चार दिन बाद बोला माताजी आप सबको पत्र लिखती हो मेरे पिताजी को भी एक पत्र लिखो और मुझ थल मे डालकर दो मैं डाकखान मे डाल आऊगा और मेरे पिताजी आ जायगे। जब यह बात उसके दादा पिता को मालम हुई तो वह मुझसे कहने लगे रानी इसके लिये एक थला सी दो और नौकर के साथ शाम का इसे दुकान पर भेज दिया करो जो सामान मगाना हो उसको लिखकर द दिया करो यह ले आवेगा। फिर मैंने ऐसा ही किया यह छोटी छोटी चीज ल आता था। जब यह ५ वष का हुआ तो इसे स्कल म डाल दिया बड शौक से पढने जाता था। जो बात इसको समझाई जाती थी फौरन समझ जाता हर काम मे बडा निपुण था सबसे प्यार के साथ बात करता था। बाल्यावस्था से ही मैं और इसके दादा पिता इसको धार्मिक बात सिखात थे ताकि बडा होने पर अच्छे विचारो वाला बन सके और अपने परिवार का नाम रोशन करे।

कुछ साला बाद पाकिस्तान बन गया। उस समय विजय आठ वष का था और मेरी आयु २५ वष की थी। सन १९४७ मे मेरी दादी सास व सास मैं तथा विजय कुमार कई सज्जनो के साथ अमृतसर पहुचे। मेरे श्वसुर तथा देवर राजपाल उस वक्त चकझमरा लायलपुर) मे थे। विजय मुझसे बोला माताजी मुझ रुपए दो मे अपन दादा पिता और चाचा जी को टेलीफोन करूगा। मैंने किसी के साथ इसको भेजा और १४ रुपए देकर यह टेलीफोन कर आया। व लोग अमृतसर आ गय और उनके आन के दो दिन बाद दादी सास ने शरीर छोड दिया। अमृतसर मे एक महीना रहने के बाद दिल्ली होत हुए हम सब गुरुकुल कागडी हरिद्वार आ गए यहा एक हम लोगा की धमशाला बनी थी उसी म हम लोग तथा कुछ अ य परिवार रहे। छ साल वहा रहन के बाद हम सब कृष्णनगर कनखल आकर रहन लग। विजयकुमार को कनखल स्कल मे दाखिल किया पाचवी कक्षा उत्तीण करने के बाद उसे आय इण्टर कालिज मे दाखिल कराया गया यहा स उसने सेकण्ड डिवीजन म हाई स्कल उत्तीर्ण किया। तत्पश्चात मे गुरुकुल कागडी मे दाखिल कराया। विजय पढने के साथ साथ खेलने म भी बडी रुचि रखता था। कई कई घण्टे खेला करता। इसके बाद इसे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर म आयुवदिक हेतु दाखिला दिलाया यहा से उसने आयुवद भास्कर शास्त्री तथा आयुवदाचाय प्रथम श्रेणी म उत्तीण किया बाद मे आयुवद मे डी० लिट भी कर लिया।

घर र ज गाल क विवाह के ३ महीने बाद मेरी सास ने शरीर छोड दिया जो समय उनकी सेवा म बीतता था वह खाली हो गया सोचा सारा दिन क्या करूगी। यदि स्कल म पढान जाती हू तो यह छोटा बच्चा कही कराग त म न पड जाये घर म यदि कोई आवेगा तो ताला देखकर चला जायगा अत यह विचार छोड दिया फिर मैंन पिताजी स कहा मुझ आप अपना आयुवद का काम ही सिखा दो घर म करती हूगी बच्चे की भी देखरेख करती रहूगी। उन्होन कहा यह काम मुश्किल है इसम कटना पीसना पडता है मेरी आयु वृद्ध है तुम यह काम न कर पावोगी। मैंने आग्रह किया कि मैं करूगी। बच्चे को भी इसी लाइन मे डालना है आगे यही काम सभालेगा। मे इसकी सहायता करती रहूगी और मेरा समय भी कट जायगा। पिताजी का यह बात पसन्द आई वे मान गए। क्रमश

स्वास्थ्य चर्चा—

महौषधि है—आंवला

—डा० वी के राघव

भारतीय चिकित्सा पद्धति मे आवल का एक विशेष महत्व है। यह स्वास्थ्य के लिए जहा रामबाण है वही विभिन्न रोगो की महौषधि भी है। यह एक ऐसा फल है जिसकी हर मौसम मे माग रहती है।

आवला स्वाद मे कसला व खट्टा होता है। यह एक ऐसा रसायन है जिसे चाहे कच्चा खाया जाए या पकाकर अथवा सुखाकर इसके विटामिन हमेशा इसमे विद्यमान रहते हैं। इसलिए आवले को लोग नित्यप्रति सब्जी अचार मुरब्बे और चर्ण के रूप मे सेवन करते है। इससे जहा शरीर निरोग रहता है वहा पाचन क्रिया सुदृढ रहती है। शरीर मे उत्पन्न अकस्मात रोगो के विरुद्ध मुकाबला करने की शक्ति उत्पन्न करने के साथ साथ मन मस्तिष्क म शान्ति व शरीर की गर्मी व रक्त उष्णता को शात करता है। इसके निरन्तर प्रयोग करने से जहा भूख बढती है वही वृद्धावस्था मे धमनिय व शिराओ को पूरी शक्ति प्रदान करता है यह एक सस्ता फल होने के साथ अत्यधिक मूल्य वान एव अनेक गुणा से युक्त महौषधि है जिसका प्रयोग अनेक रोगो मे कर स्वय को निरोग करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

पायरिया—ताजे कच्चे एक-दो आवले को नित्य प्रति खाया जाय तो जहा दातो की विशेष रक्षा होती है मसूडो से खून बन्द हो जाता है मुख की गर्मी शात हो जाती है वही पायरया जसी बीमारियो को जड से समाप्त कर देता है।

मोतियाबिन्द—दो चाय के चम्मच ताजे आवले के रस को एक चम्मच शहद मे मिलाकर नित्य प्रति सेवन से जहा नेत्र ज्योति मे वद्धि होती है वही मोतिया बिन्द के रोगा मे काफी आराम पहुचता है।

कब्ज—रात्रि मे नित्य प्रति आवले के चूण को ताजे पानी से लेने पर कब्ज दूर हो जाती है। अधिक कब्ज की अवस्था मे ताजे पानी के स्थान पर गम पानी लेना अधिक लाभदायक है।

नकसीर—नाक से नकसीर आने की अवस्था मे भी आवल का चूण अति गुणकारी है। नित्यप्रति एक चम्मच आवल का चूण ताज पानी से लेने पर नकसीर आना बन्द हो जाती है।

वायुरोग—वायुरोग अथवा पेट म गस बनने की अवस्था मे आवल का प्रयोग रामबाण है।

गठिया रोग—गठिया रोग जसा निसहाय बीमार म आवल का उपयोग अति लाभकारी है। एक चम्मच आवल के रस को शहद मे मिलाकर चाटने पर गठिया रोग मे काफी लाभ प्रतीत होता है।

बालो की सुरक्षा—बालो के घन एव लम्बे तथा सुरक्षित रखने म भी आवल का प्रयोग अति उत्तम है। रात्रि म थोड सूख आवले लेकर उन्हे लोहे के बतन म भिगोकर अगले दिन प्रात उसम रीठ व शिकाकाई का चूण मिला कर बाल धोने से बाल घने व चमकदार होते है। बालो का झड़ना भी दूर हो जाता है।

खूनी बवासीर—नित्य प्रति आवले का चूण गाय के दूध से सेवन करने पर खूनी बवासीर को दूर किया जा सकता है।

जबलपुर मे अष्टांग योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

जबलपुर नगर की महिला व आय समाजो के सयुक्त तत्वावधान मे दि० १५ से २४ जन ९२ तक बालकाओ का तथा २५ स ३० जन ९२ तक बालको के लिए अष्टाग योग प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन आयसमाज नेपियर टाऊन जबलपुर के भव्य परिसर मे आयोजित किया गया।

शिविर का शुभारम्भ दि० १५ ६ ९२ को श्री जयसिंह गायकवाड वरिष्ठ उपप्रधान आय प्र०स०म०प्र० व विदभ के करकमलो से ओ३मध्वज उत्तोलन के साथ हुआ।

शिविरो म अन्तिम दिनो म परीक्षाय भी ली गई। बालिकाओ मे कु० सपना गाडा तथा बालको मे पवन कुमार शुक्ला प्रथम स्थान पर रहे। इन्हें तथा अन्य सफल प्रतियोगियो को पुरस्कार दिए गए।

शिविर के समारोह दिवस की अध्यक्षता श्रीमती कौशल्या देवी पूव प्रधान आ०प्र०म०म०प्र० व विदभ द्वारा की गई। बालको द्वारा व्यायाम प्रदशन सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया गया।

शिविर का सचालन सुश्री पदमावती गायकवाड न बहुत ही योग्यतापूण ढग स किया। समारोह के अवसर पर उनके योगदान की प्रशसा की गयी।

शिविर के लिए सवश्री हृदय स्वरूप गुप्ता जगदीश ग्रोवर जगदीश मिश्र कुमार मनोहर जागर के० पी० पाठक सतीश सेठी श्रीमती राजेश हाण्डा आदि न कड़ा परिश्रम किया। स्थानीय सभा आय समाजो के सभी पदाधिकारियो एव अनक सदस्यो न लगातार योगदान दिया जिससे शिविर सफल हुआ।

सिर मे चक्कर—गर्मियो म सिर चकराने एव घबराहट की अवस्था मे आवल का शबत रामबाण औषध है। इसके सेवन से न सिर मे चक्कर आयगे और न घबराहट होगी तथा न ही दिल की धडकन तीव्र होगी।

जलन पेशाब—पेशाब मे जलन की अवस्था मे नित्यप्रति एक-दो आवले सेवन करने से लाभ पहुचता है।

सफेद बाल—सफेद बाल होने की अवस्था मे आवल का पानी लगाने स बाल काले होने आरम्भ हो जाते ह।

कफ की अधिकता—कफ (बलगम) की अधिकता मे आधा चम्मच आवला चूण का आधा चम्मच मुलहठी चूण के साथ गम पानी से नित्यप्रति लने से आराम पहुचता है।

जुकाम—जुकाम जस रोग म नित्यप्रति आवल का प्रयोग अति लाभ कारी है।

छूतरोग—छूत रोगो म भी आवला अति गुणकारी है। यह छूत के रोगो से रक्षा करता है क्योकि आवल के रस के सेवन से विष तक का प्रभाव कम हो जाता है।

खुजली—चमेली के तेल म आवल के चूण को मिलाकर बने मरहम के लगाने से खुजली मे आराम पहुचता है।

उदर रोग—उदर के सभी विकार बदहजमी डकार पेट फूलना आदि म आवला चूण महौषधि है।

शक्तिवधक—आवले का हर प्रकार से सेवन करना बल वीय एव शक्तिवधक है।

सौन्दय वधक—आवल का प्रयोग जहा शरीर को निरोगी बनाता है और नई शक्ति व नई चेतना जागत करता है वही चेहरे की काति बढाकर सौन्दयवधक भी है।

अत आवला वास्तव म ही एक जीवनदायी फल है जिसका किसी भी रूप मे कैसे भी सेवन किया जाए लाभ ही लाभ पहुचता है। सबसे बडी विशेषता यह है कि यह मल साफ करके आतो की क्रिया को सचालित करता है जिससे भूख बढती है रक्त साफ होना है और स्वास्थ्य मे दिन प्रतिदिन वृद्धि होती है तथा शरीर हृष्ट पुष्ट होता है। साभार—जनसन्देश

साधना की एक आवश्यक लड़ी

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव : यद्भद्रं तन्न आसुव ।। यजुर्वेद

जो अपनी सहायता आप करता है, भगवान उसकी ही सहायता करते हैं। जब पुरुषार्थ से ही पदार्थ मिलते है, तो क्या है अर्थ प्रार्थना का ? हम जैसा कर्म करते है वैसा ही भगवान फल देते हैं। जैसा कर्म वैसा ही फल देना यह एक महानता है। क्या आप नही जानते कि न्यायाधीश या न्यायमूर्ति की प्रशसा इसी मे रहती है कि वह अपराधी को उसके अपराध के अनुसार ही हुक्म सुनाये। परीक्षा देने वाला स्वय अक नही ले सकता, परीक्षक ही अक देगा। आपका कर्म मे अधिकार हैं, फल मे नही।

प्रार्थना एक प्रेरणा

महर्षि दयानन्द ने भगवान को हृदय से इतने नामो से सम्बोधित किया है, जितने सृष्टि के आदि से लेकर आज तक कोई नही कर सका। मनुष्य, मनुष्य से प्रार्थना कर के भी अपना काम निकालते है, कृपालु कहकर काम करवा ही लेते है। परन्तु यह तो उसकी सम्पत्ति नही। कृपालु तो कोई और है जो कि अकारण ही कृपा करता रहता है। तू उससे भी प्रार्थना करके देख। क्योकि प्रार्थना का अर्थ केवल भीख मागना नही, अपितु "प्रार्थना' प्रेरणा बनकर 'साधना' का रूप धारण कर लेती है। प्रार्थना से पुण्य हो या न हो सकट टले या न टले, परन्तु दिव्य शक्ति के ध्यान से दिव्यता और पवित्र शक्ति के ध्यान से पवित्रता आती ही है। मन को प्रसन्न वलवान, उत्साही, और निर्भय बनाने का क्या यह उत्तम उपाय नही ? कि अपने अपराधो का प्रायश्चित और कष्टो का निवेदन करके सुमति, सदगति और शान्ति मागना। मानव तो कितना अभागा है कि अपना दुख बन्धुओ और मित्रो को सुनाता है जो पहले ही इस दुख से दुखी होते है। परन्तु दुखनाशक-परमपिता परमात्मा को अपना दुख नही सुनाता, कल्याण की कामना करने वाले को कल्याण का मार्ग ढूढना चाहिए।

दुखो को मिटाने वाले की शरण पहुचना चाहिए। यदि प्यास बुझाने के लिए तुझे सरोवर मिल जाये, तो यह तेरा परम सौभाग्य होगा। रोग का उपचार वैद्य ही कर सकता है।

प्रार्थना में एकता

प्रार्थना का एक अर्थ यह भी है कि अपने हित को दूसरो के साथ मिला देना। सभी सुखी हो, निरोग हो, भद्र दृष्टि युक्त हो, सभी के सब दुर्गुण दूर हो यही है प्रार्थना का सच्चा स्वरूप। क्या राजा, क्या रक, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, साधु, विद्वान, भक्त सभी प्रार्थना करते है। अपनी-अपनी अभीष्ट सिद्धि की सभी इच्छा करते है। सभी मागते हैं—क्योकि उससे मागने मे लज्जा नही आती, भय नही लगता तथा वह देकर भूल जाता है। वह राजाओ का राजा' बनियो का 'धनपति', सुख-शान्ति-आनन्द का भण्डार अर्थात सभी ऐश्वर्यों का निर्माता और दाता है। दाता से भिखारी मागते है, भगवान के दर के सभी भिखारी हैं। भिन्न-२ होते हुए भी यहा आकर सब एक है। मानो मानव की एकता प्रार्थना मे ही है।

प्रार्थना एक आत्मध्वनि

हे दुखभजक परोपकारिन, अकारण कृपालु हमारी प्रार्थना सुनो। हम तेरे साथ रहना चाहते हैं, रख ले हमे अपने साथ। क्योकि आपकी भक्ति की एक कोपल, आपके प्रेम का एक अश, आपके ज्ञान को एक किरण, आपकी कृपा का एक कण और आपके प्रकाश की एक झलक हमारे सम्पूर्ण जीवन को ज्योतिर्मय बना सकती है।

—म० प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी,
आर्य कुटिया, घूरी-१४८०२४

पुस्तक-समीक्षा

आर्य समाज की पांच महाविभूतियां

लेखक—श्री प० जगतराम जी
आर्य प्रकाशन मण्डल, ९/२२१ गाधीनगर, मेन बाजार, दिल्ली-३१
मूल्य—१५ रुपए

इस पुस्तक मे जिन पाच महापुरुषो का जीवन दर्शन आर्य जनो के सामने रखा गया है वह आर्य समाज के महाप्राण है।

—युग पुरुष महर्षि दयानन्द ने जो जागृति निष्प्राण आर्य जाति मे डाली उन सबका समावेश यहा पर सुन्दर ढग से किया गया है।

—स्वामी श्रद्धानन्द जैसे नास्तिक ने आस्तिक बनन तथा शिक्षा क्षेत्र मे गुरुकुलो की स्थापना, शुद्धि प्रचार, अछूतोद्धार के कार्यों की उपलब्धिया।

—प० लेखराम जी का सम्पूर्ण जीवन ही समाज को समर्पित था। ऐसा व्यक्तित्व आर्य समाज का दीवाना उनके बाद अभी तक देखने को नही मिला।

—गुरुदत्त विद्यार्थी अपने थोडे से जीवन मे ही समाज मे किये गये कृत्यो से सदा सदा के लिए स्मरणीय रहेगे।

म० हसराज का जीवन-त्याग-सेवा का जीवित ज्वलन्त प्रमाण है डी० ए० वी० के रूप मे बोया गया बीज आज विशाल वट-वृक्ष बनकर खडा है।

जो जाति, समाज आत्म विस्मृति के कगार पर खडा है उसे मानवीय जीवन की यह उपलब्धिया ही उन्नति पथ पर आगे बढाती है। इस लघु-पुस्तिका मे ५ महापुरुषो की जीवनिया, बाल बुद्धियुक्त बालको को सद-प्रेरणा देती रहेगी। वर्तमान मे दूषित शिक्षा नीति ही हमे विकृति की ओर ले जा रही है। ऐसे वातावरण मे यह लघु पुस्तिका हमारी मनोदशाओ को सुधारने मे सहायक सिद्ध होगी।

मुझे आशा व विश्वास है कि जनमानस मे जहा २ यह पुस्तक पहुचेगी परम उपयोगी सिद्ध होगी।

(२)

संगीत महोदधि

रचनाकार—श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
सम्पादक—श्री गुलाबसिह राघव
एफ-२७१-सी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-९५
मूल्य—४० रुपए

"सगीत महोदधि नामक पुस्तक मे सुन्दर हृदयग्राही भजनो की रचना एव सकलन के कर्ता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती आर्य समाज के पुराने महोपदेशक गायक, जनता जनार्दन के पुराने परिचित व्यक्ति हैं।

आपके द्वारा समय-समय पर रचेगए उत्तम गीतो से जनता लाभ उठाती रहती है। आपका काव्य क्षेत्र मे फिर इसी के द्वारा सगीत क्षेत्र मे पुस्तक रूप मे प्रस्तुति बनी ही रहती है। इस समय यह गीतो का आकलन, "सगीत महोदधि जनता के हाथो मे आ चुकी है।

इस वृहद ग्रन्थ के प्रकाशक भी सगीत क्षेत्र के प्रसिद्ध गायक श्री गुलाब-सिह राघव है। आपने जनता व आर्य परिवारो मे अच्छे गीतो का प्रचलन हो इस कारण इस वृहद ग्रन्थ को प्रकाशित करके महिलाओ, बच्चो पुरुषो मे नयी चेतना भरन का प्रयास किया है। श्री स्वामी जी बधाई के पात्र है जो सदा ही काव्यमय गीतो का लाभ सभी को देते ही रहते हैं। स्व० अमरस्वामी जी के शब्दो मे—

है सगीत प्रचार का साधन अमर अतौल।
गीत-महोदधि मे मिले गीत रत्न अनमोल ।।

पुस्तक मे धार्मिक, सामाजिक, सुधारवादी, भजनो का सकलन घर-घर पहुचे ऐसा सद्प्रयास हो तभी लेखक व प्रकाशक का प्रयास सार्थक होगा।

पूज्य स्वामी जी स्वस्थ दीर्घायुष्य को प्राप्त होकर गुलाब और उनकी कलियो को खिलाकर सुरभित करते रहे।

राघव गीत प्रसून, ठुकराया वीर, गुलाब के फूल भी आपके नवीन प्रकाशन है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

सही शिक्षा न देने पर पब्लिक स्कूल पर जुर्माना

आर्य वीर दल के युवा कार्यकर्ता श्री रूपचन्द नागर के ३ बच्चे गाजियाबाद के ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल मे पढ रहे थे पिछले दिनो श्री नागर ने अपने बडे पुत्र महेशचन्द नागर जो छठवी कक्षा का छात्र है की कापी देखी तो पाया कि स्कूल की अध्यापिका ने जितने भी सवाल कापी मे बच्चे ने कर रख थे सब पर सही तथा गुड मार्क लगाया हुआ था। जबकि उनमे से एक भी सवाल न तो विधिपूर्वक सही किया गया था और न ही उत्तर सही था। इस पर श्री नागर ने डिस्टिक उपभोक्ता फोरम गाजियाबाद मे मुकदमा दायर किया। अदालत ने श्री रूपचन्द नागर द्वारा लगाए गए आरोपो को प्रमाण के साथ सही और ग्रीन फील्ड की शिक्षण व्यवस्था को पूर्ण रूप से दोषी पाने पर दिनाक ८ ७ ९२ को ५००० रु० का जुर्माना ठोक दिया।

श्री नागर इस जुर्माने से सन्तुष्ट नही है वह इस मामले को आगे की अदालत मे उठाने की तैयारी कर रहे है। उनका कहना है कि इस विद्यालय मे अथवा इसी तरह के अन्य पब्लिक स्कूलो मे दाखिले के नाम पर १० १० हजार से अधिक रुपये की राशि अभिभावको से डोनेशन स्वरूप मागी जाती है और इस सबके बावजूद बच्चो को सही शिक्षा न देकर उनके भविष्य के साथ खिलवाड हो रहा है। वह चाहते है कि सरकार की ओर से ऐसे तमाम पब्लिक स्कूलो के कार्यो और शिक्षण व्यवस्था की समय समय पर जाच की जाती रहे और ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल गाजियाबाद को तुरन्त बन्द कर दिया जावे। क्योकि उनके बच्चो की तरह वहा अन्य पढ रहे दो हजार के लगभग बच्चे भी इसी दूषित शिक्षा व्यवस्था से प्रभावित है। इससे राष्ट्र का कितना अहित हो रहा है सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उनकी माग है कि मेरे बच्चे की तरह स्कूल के हर बच्चे को मुआवजा राशि दी जाय।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पर पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रन्थ 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" पर पत्राचार पाठ्यक्रम जुलाई से प्रारम्भ हुआ है। इस पाठ्यक्रम का विमोचन मस्कत निवासी श्री कनकसिंह जी ने अपने पूज्य पिता श्री मेघजी भाई नेनसी की स्मृति मे किया है। इसमे प्रति महीने ग्रन्थ मे विद्यमान विषयो पर लिखित सामग्री १६ पृष्ठ की छोटी पुस्तक के रूप मे डाक से भेजी जायगी। पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर पाच प्रश्न होगे जिनका उत्तर पुस्तक मे से ढूढकर देना होगा। सबसे अधिक सही उत्तर देने वाले प्रथम तीन व्यक्तियो को २०१ १५१ तथा १०१ रुपये के पुरस्कार एव प्रमाण-पत्र दिये जायेगे चालीस प्रतिशत सही उत्तर देने वालो को प्रमाण पत्र दिया जायगा। पुस्तक डाकव्यय प्रमाण-पत्र आदि का वार्षिक शुल्क २५ रुपये है। नीचे लिखे पते पर वार्षिक शुल्क भेजकर सदस्यता प्राप्त करके वेद के ज्ञान से लाभ प्राप्त करे।

—डा० सोमदेव शास्त्री

डी ३० मिस्टन रोड अपार्टमेन्ट आजाद रोड

जुहू कोलिवाडा बम्बई ४९



महाराष्ट्र वेद प्रचार यात्रा

(औरंगाबाद से हिंगोली)

प्रमुख वक्ता डा० ओमदत्त जी शर्मा मेरठ)

आय भजनोपदेशक प० नरेश जी निमल (मुजफ्फर नगर)

महाराष्ट्र आय प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान म श्रावण मास के शुभ अवसर पर वेद प्रचार यात्रा का विस्तृत कायक्रम रखा गया है जो निम्न प्रकार से है।

	आय समाज	दिनाक
१	औरगाबाद	३०-३१ जुलाई १ अगस्त
२	जालना	२ ३ अगस्त
३	किल्ले धारूर	४ ५ ६ ७ व ८ अगस्त
४	परली बैजनाथ	९ १० ११ १२ व १३ अगस्त
५	गगाखेड	१४ अगस्त
६	रेणापुर	१५ १६ अगस्त
७	लातूर (गाधी चौक)	१७ १८ १९ अगस्त
८	लातूर (रामनगर)	२० २१ अगस्त
९	गु जोटी	२२ २३ अगस्त
१०	उदगीर	२४ २५ अगस्त
११	धर्माबाद	२६ २७ २८ अगस्त
१२	हिंगोली	२९ व ३० अगस्त

विशेष —धम प्रेमी आय बन्धुआ व आय समाजो से अनुरोध है कि वे अपने ग्राम के निकटस्थ उपरोक्त सार्वजनिक श्रावणी कायक्रमो का सपरिवार लाभ उठाय।

दानवीर डा० बलदेव कौशल का निधन

लन्दन निवासी डा०बलदेव कौशल जो कटटर आर्य समाजी थे ८७वष की आयु मे लन्दन मे उनका निधन हो गया है। डा० कौशल लुधियाना मे जन्मे थे और एम बी बी एस तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने अग्र जी सरकार का एम बी ई तमगा भी प्राप्त किया था। १९६२ से स्थाई रूप म लन्दन मे रहने लगे थे। डा० कौशल ने आय समाजो तथा विभिन्न समाज सेवी सस्थाओ विद्यालयो औषधालयो आदि को दिल खोलकर दान दिया है। उन्होंन अपन हाथो से लगभग ४६ लाख रु० इन सस्थाओ को दिया है। डा० कौशल आजीवन ब्रह्मचारी थ। उनके निधन से आय समाज का एक प्रमुख कायकर्ता और दानवीर हमेशा के लिए आय जगत से बिछुड गया है।

डा० कौशल के निधन पर सावदेशिक सभा तथा समूच आयजगत की ओर से दिवगत आत्मा की सदगति के लिए परमात्मा से प्राथना की जाती है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजा की शिरोमणि सस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एव कमचारी दयानन्द इण्टर कालेज सुरसा, हरदोई के प्रबन्धक सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा से महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री के बडे भाई श्री देव शर्मा जी शास्त्री क अकस्मात देहावसान पर गहरा दुख एव शोक व्यक्त करते है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे शोक सन्तप्त दुखी परिवार एव सगे सम्बन्धियो को इस दारूण दुख को सहने की शक्ति तथा सामथ प्रदान करे। —डा० धमपाल महामन्त्री

आर्य समाज धोरी के भूतपूव उपप्रधान एव पुरोहित प० शालीग्राम के बडे भ्राता जी की आयु ८० वष एव डा० सजय मित्रशास्त्री के पिता जी रामकेश्वर शर्मा जी का देहान्त दिनाक २२ ५ ९२ को हो गया। अन्त्येष्ठि सस्कार २३-५-९२ को सुबह ९ बजे पूर्ण वैदिक पद्धति से किया गया।

आर्य समाज धोरी राजपुर बाका (भागलपुर) मे एक शोक सभा आयोजित कर परमपिता परमात्मा से दिवगत पुण्यात्मा की सदगतिके लिए प्राथना की गई। तथा उनके परिवार के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—दयानन्द शर्मा, मन्त्री

आर्य समाज धोरी पत्रा० राजपुर (भागलपुर)

गुरु विरजानन्द जयन्ती पर्व सम्पन्न

दण्डी विरजानन्दजी के ११४वें जयन्ती पर्व के उपलक्ष्य मे गुरु विरजानन्द (वै० मि०) आय गुरुकुल मथरा मे ८ जूलाई से १४ जुलाई तक श्री आचाय अमृतलाल जी शर्मा के निदशन मे वैदिक पुरोहित शिविर तथा श्री अमद मुनि जी वानप्रस्थ एव ब्र० धर्मेन्द्र जिज्ञासु के निर्देशन म आय वीरदल शिविर सम्पन्न हुए। दोनो शिविरा मे ५६ पूण कालीन तथा ५० अल्पकालीन शिक्षार्थियो ने भाग लिया। अथववेद आशिक यज्ञ आचाय श्री प्रेमभिक्षु जी के आचायत्व मे निष्पन्न हुआ। श्री महिपाल जी शास्त्री न वेदपाठ किया।

ब्रह्मचारियो द्वारा प्रस्तुत बौद्धिक कार्यक्रम को विशेष रूपसे सराहा गया। अष्टाध्यायी सूत्राक्षरा प्रतियोगिता मे ब्र० प्रेमनाथ को प्रथम पुरस्कार ००) रु० का ब्र० राजेन्द्र आय को द्वितीय पुरस्कार ४०० रु० का तथा ब्र० गजेन्द्र आय को तृतीय पुरस्कार २७० का प्रदान किया गया। श्रद्धेय श्री आचार्य राजवीर जी शास्त्री सम्पादक—दयानन्द सन्देश को इस के विद्वद अभिनन्दन क्रम म सम्मानित किया गया। वैदिक मिशनरी श्री देवमुनि जी वानप्रस्थ एव माता सुलक्षणा जी को भी सत्कृत किया गया।

आचार्य स्वदेश जी ने नवीन ब्रह्मचारियोको प्रवेश दीक्षा दी। श्री पूणचन्द्र जी आय आगरा (स्वागताध्यक्ष ने सभी को सत्कृत किया। श्री रमेशचन्द्रजी नन्दा आगरा विशिष्ट अतिथि थे। जयन्ती सभा म ब्र० सत्यप्रकाश जी ब्र० प्रदीप आय जी ब्र० दक्षनानन्द जी श्री अशोक आय श्री स्वामी ओमानन्द जी श्री स्वामी नित्यानन्द जी एव श्री आचाय स्वदेश जी ने ओजस्वी विचार दिये और गहन निष्ठा का प्रकाशन किया। डा० शान्तिजा नागर की कविताओ ने समा बाध दिया। श्री वशीधर जी अध्यक्ष टस्ट न सभी का धन्यवाद किया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/६२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२ ८ १९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U 93Post in N D P S O on 30,31 7 1992

शतपथ ब्राह्मण (द्वितीय काण्ड) के भाष्यका लोकार्पण

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी समर्पण शोध-संस्थान की ओर से शनिवार १ अगस्त १९९२ को हिमालय भवन नई दिल्ली मे दोपहर ३ से ६ बजे तक श्री स्वामी पूर्णानन्द जी (पूर्व प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार) के जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे उन्ही के द्वारा रचित शतपथ ब्राह्मण द्वितीय काण्ड के भाष्य का सम्माननीय श्री विद्याचरण शुक्ल केन्द्रीय मन्त्री के कर कमलो द्वारा लोकार्पण किया जाएगा

सभा की अध्यक्षता श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष समर्पण शोध संस्थान एवं दयानन्द मठ दीनानगर करेगे।

इस अवसर पर आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

—स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
हिमाचल भवन नई दिल्ली

अथर्ववेद पारायण महायज्ञ धूम-धाम से सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना मे स्त्री आर्यसमाज की महामन्त्री श्रीमती जनकरानी आर्या तथा श्रीमती सन्तोष गुप्ता एवं माता श्रीमती मीरा जी मल्हन आदि सभी ने मिलकर के एक अथर्ववेद पारायण महायज्ञ का आयोजन महात्मा सुमना यति जी की अध्यक्षता मे ८ से १२ तक आयोजित किया। यह महायज्ञ आर्य समाज के सुयोग्य पुरोहित आचार्य श्री प० राजेश्वर जी शास्त्री ने सम्पन्न करवाया

महामन्त्री श्रीमती जनकरानी जी आर्या ने कुछ दिन पूर्व ऋग्वेदपारायण महायज्ञ भी सम्पन्न करवाया था। विश्व कल्याण की भावना से ही महायज्ञ सम्पन्न किये जाते हैं।

पूर्णाहुति के उपरान्त महात्मा सुमना यति जी ने एक वेदमन्त्र की बहुत अच्छी व्याख्या की तत्पश्चात डा बालकृष्ण जी शास्त्री एम ए पी एच डी ने अथर्ववेद के महत्व पर सुरूचिपूर्ण प्रकाश डाला। श्रीमती सन्तोष जी गुप्ता ने सभी विद्वानो एव कार्यकर्ताओं को ससम्मान दक्षिणा और दान प्रदान किया। अन्त मे महामन्त्री श्रीमती जनकरानी जी आर्या ने सभी का धन्यवाद किया तथा आभार और कृतज्ञता प्रकट की। विशेष प्रसाद वितरण के साथ अथर्ववेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

—जनकरानी आर्या महामन्त्री

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश निम्न भाषाओं में प्राप्त है

सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी	२०
सत्यार्थ प्रकाश [illegible]	२५
सत्यार्थ [illegible]	३०
[illegible]	१५
[illegible]	[illegible]०)
[illegible]	[illegible])
सत्यार्थ प्रकाश मराठी जिल्द वाला	१००
सत्यार्थ [illegible]	२०
सत्यार्थ प्रकाश [illegible]	६
सत्यार्थ [illegible]	८०)
[illegible]	[illegible])

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली -

बेअन्तसिंह महापंजाब के पक्ष मे बोले

संगरूर १६ जुलाई। पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह ने कल पंजाब और हरियाणा को मिलाने की तजवीज का खुलकर समर्थन किया, ताकि महापंजाब के निर्माण की योजना बनाई जा सके। यह सुझाव हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने प्रस्तुत किया था ताकि दोनों प्रदेशो के दरम्यान तमाम झगडो का हल निकाला जाए। यहा एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए श्री बेअन्तसिंह ने कहा कि दोनो प्रदेशो की जनता को आपस मे नजदीक लाने की कोशिश का हर प्रकार से स्वागत करते हैं। इन्होने कहा कि मैं पुराने पंजाब को देखना चाहता हू जिसमे शान्ति और एकता थी।

उन्होने कहा कि राजनतिक नेताओ ने राजनैतिक लाभ उठाने के लिए जनता को पृथक किया। श्री बेअन्त ने अकालियो पर नुकताचीनी की और कहा कि वह पंजाब मे फैली हुई तमाम बुराइयो की जड हैं—इन्होने कहा कि अकालियों ने पंजाबी भाषी स्टेट की मांग की है और यही समस्त तमाम समस्याओ की जड बन गई है। यदि यह लोग यह माग न करते तो हरियाणा का निर्माण कभी न होता यदि हम एक होते तो दोनो प्रदेशो के मध्य सीमा तथा आपसी तनाव न पैदा होते। उन्होने आगे कहा कि संयुक्त पंजाबी भाषी इलाके हरियाणा और हिमाचल मे चले गए। मुख्यमन्त्री ने अपनी राय प्रकट की कि अकालियो ने पंजाब की जनता को एक दर्द और तकलीफ मे डाल दिया है। उन्होने पुरजोर शब्दो मे कहा कि अब वह घडी आ गई कि वह दिलेर बनकर प्रदेश सरकार की इन कोशिशों का समर्थन करें जो हालात को बहाली के लिए की जा रही है।

वेद जयन्ती सप्ताह

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली वेद जयन्ती सप्ताह १३ अगस्त से २१ अगस्त १९९२ तक बड़ी धूम धाम से मना रहा है। आचार्य जैमिनी जी शास्त्री के वेद प्रवचन तथा संगीताचार्य श्री विजय भूषण जी आर्य एवं स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती के मधुर भजन होंगे। समय प्रात ७ से ८१० बजे तथा रात्रि ७१० से ९ बजे तक। यज्ञ तथा धर्म प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे सपरिवार तथा इष्ट मित्रो सहित समय पर पधार कर धर्मलाभ उठाए।"

—वेदव्रत शर्मा, मन्त्री

शोक समाचार

आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी के प्रधान अभिमन्यु कुमार जी के पूज्य पिता श्री अर्जुनसिंह जी स्वतन्त्रता सेनानी का निधन दिनाक २८ ६ ९२ को हो गया उनके निधन से राष्ट्र एव आर्य समाज को अपूर्णनीय क्षति पहुची है। उनका अन्तिम संस्कार गुरुकुल प्रभात आश्रम के पुरोहितो द्वारा सम्पन्न कराया गया उनकी रस्म पगडी दिनाक १२ ७ ९२ को सम्पन्न हुई इस अवसर पर श्री रामचन्द्र विकल (अध्यक्ष अखिल भारतीय किसान कांग्रेस एवं श्री शान्ति त्यागी ससद सदस्य एव कौकब हमीद भू० पू० मन्त्री उ०प्र० चौ० साहबसिंह भू० पू० विधायक चौ० धनपालसिंह महामन्त्री जिला कांग्रेस कमेटी एव आचार्य फूलसिंह जी प्रधानाचार्य चौगामा इण्टर कालिज एव अनेक आर्य व राजनेता एव हजारो नागरिकों ने भाग लिया एव श्रद्धाजलि अर्पित की।

—ओमप्रकाश आर्य मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

जब विद्वान् लोगो मे सत्यासत्य का निश्चय नही होता तभी अविद्वानो को महा अन्धकार मे पडकर बहुत दुःख उठाना पडता है इसलिए सत्य की जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता के वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है यदि ऐसा न हो तो मनुष्यो की उन्नति कभी न हो।

● बहुत मनुष्य ऐसे है जिनको अपने दोष तो दीखते नही किन्तु दूसरे के दोष देखने मे अत्युद्युक्त रहते है यह न्याय की बात नही क्योकि प्रथम अपने दोष देख निकालने के पश्चात् दूसरो के दोषो मे दृष्टि देके निकाले।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक २८।   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   श्रावण शु० ११   स० २०४९   ९ अगस्त १९९२

आर्य समाज द्वारा महा पंजाब के गठन के सुझाव का स्वागत

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह और हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के महा पंजाब के गठन के प्रस्ताव का जोरदार समर्थन करते हुए कहा—पंजाब का विभाजन एक अदूरदर्शिता पूर्ण निर्णय था। इस विभाजन की गलती को स्व० प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने स्वयं भी स्वीकार किया था। भाषाई आधार पर पंजाब राज्य की स्थापना के बाद अकाली दल के राजनतिक सत्ता मे आने के साथ ही पंजाब मे अलगाववादी और पृथकतावादी ताकतो को फलने फूलने का अवसर मिला। इसी के परिणाम स्वरूप वर्तमान मे खालिस्तान की मांग तथा विदेशी ताकतो के इशारे पर आतंकवाद, उग्रवाद तथा भाषाई विवाद से पंजाब का जन जीवन त्रासदी पर खड़ा है। हजारों हिन्दू परिवार वहां से देश के अन्य भागो मे पलायन कर चुके हैं।

स्वामी जी ने कहा कि विभाजन की भूल को सुधारने के लिए वर्तमान मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह ने महा पंजाब की स्थापना का जो प्रस्ताव किया है वह दूरदर्शिता पूर्ण सुझाव है। इसी तरह हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने भी 'महा पंजाब" के गठन का सुझाव दिया है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव को अपने एक विशेष पत्र द्वारा अनुरोध किया है कि भारत सरकार मजबूत राष्ट्र के लिए महा पंजाब के एकीकरण की प्रक्रिया को मूर्त रूप दे। स्वामी जी ने आशा प्रकट की कि महा पंजाब के गठन से देश के पृथकतावादी और अलगाववादी शक्तियो को जहां जबरदस्त शिकस्त होगी वहीं देश के अन्दर जगह-जगह भाषाई आधार पर उठ रही राज्यो की मांग भी स्वतः समाप्त हो जायेगी।

स्वामी जी ने 'महापंजाब" के गठन के प्रस्ताव का आर्यसमाज की ओर से जोरदार स्वागत करते हुए आश्वासन दिया कि एकीकरण के कार्य मे आर्य समाज यथा शक्ति अपना सहयोग देगा।

श्रावणी पर्व और वेद प्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाएं

इस अवसर पर समस्त आर्य जन धर्म प्रचार, पाखण्ड-खण्डन, राष्ट्र रक्षा, चरित्र निर्माण, जाति उत्थान, गोपालन तथा विश्व को आर्य बनाने का प्रयत्न करे।

सार्वदेशिक सभा की देश-देशान्तर की आर्य जनता से अपील

आर्यों के सामाजिक और नैतिक जीवन मे पर्वों का सदा से स्थान रहा है। इस पृथ्वी पर मानव जातियां किसी न किसी प्रकार का पर्व अवश्य मनाती हैं। श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वों मे एक महान् पर्व है। यह वैदिक पर्व है। इसका सीधा अर्थ अध्ययन और अध्यापन करने वालो से होता है। महर्षि दयानन्द ने वेद के अध्ययन के मार्ग को प्रशस्त किया था, अतः उनके द्वारा प्रसारित वेद प्रचार के कार्य को आर्य समाजें अपना कर्तव्य जानकर आगे बढाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश-देशान्तर की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि वह श्रावणी पर्व जो इस वर्ष श्रावण शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार १३ अगस्त १९९२ को है अत्यन्त, पवित्रता, गम्भीरता एवं शालीनता के साथ आर्य समाज मन्दिरो संस्थाओ तथा अपने गृहो मे आर्य पर्व पद्धति के अनुसार सम्पन्न करें। श्रावणी के दिन यज्ञ व्रत ग्रहण, वेद प्रवचन आदि के कार्यक्रम करें तथा सामूहिक यज्ञोपवीत कराने का आयोजन करके अधिक से अधिक व्यक्तियो विशेषकर युवको को यज्ञोपवीत धारण कराये जाये। इसी दिन हैदराबाद

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता (२)

—आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

इस प्रकार हम यह नि.संकोच कह सकते है कि केशवचन्द्र सेन देश के ऐसे पहले राष्ट्रीय नेता थे जिन्होने 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' के महत्व को समझकर स्वामी जी को हिन्दी लेखन और भाषण के प्रति उन्मुख किया था। श्री सेन की राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति कितनी निष्ठा थी, उसका परिचय आप उनके 'सुलभ समाचार' नामक बंगला पत्र मे प्रकाशित इन शब्दो से भली भांति प्राप्त कर सकते है—"बिना एकता के भारतवर्ष का उद्धार नही हो सकता। भारत वर्ष की उस एकता का उपाय क्या है। इस समय भारतवर्ष मे जितनी भाषाएं प्रचलित है, उनमें हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सर्वत्र प्रचलित है—सबसे अधिक बोली और समझी जाती है। इसलिए यदि हिन्दी को सारे भारत की एक-मात्र भाषा बना दिया जाय तो सारे देश की एकता सम्पन्न हो सकती है। एक भाषा के बिना एकता नहीं हो सकती।"

श्री केशवचन्द्र सेन तथा राममोहन राय से हुई भेंट के उपरान्त स्वामी जी ने जब ७ अप्रैल, सन १८७५ को बम्बई में 'आर्य समाज' की स्थापना की थी उस समय भी उन्होने हिन्दी को 'आर्य भाषा का पावन अभिधान देकर आर्य समाज के ३५ वें उपनियम मे अपनी हिन्दी निष्ठा इस प्रकार अभिव्यक्त की थी—"सब आर्यो और आर्य समाजियो को संस्कृत व आर्य भाषा (हिन्दी) जाननी चाहिए।" स्वामी जी द्वारा संस्थापित आर्य समाज ने जहा समस्त देश में भारतीयता तथा राष्ट्रीयता का प्रबल प्रचार किया वहा हिन्दी-प्रचार के क्षेत्र मे उनकी देन स्वर्णाक्षरो में उल्लेखनीय है। हिन्दी साहित्य के विगत इतिहास पर यदि हम दृष्टि-निक्षेप करें तो इसी निष्कर्ष पर पहुचेगे कि हिन्दी की वर्तमान प्रगति में स्वामी जी तथा उनके द्वारा संस्थापित आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान है। क्योकि उन्होने यह अनुभव किया था कि हिन्दी ही सारे देश में समान रूप से बोली और समझी जाती है इसलिए उन्होने हिन्दी को ही सर्वथा अपनाकर अपने ग्रन्थ भी इसी भाषा में लिखने प्रारम्भ कर दिये थे। आपने पुरानी सधुक्कड़ी हिन्दी को अपनाकर उसे सर्वथा नई विचारभूमि प्रदान की थी। वे भाषा को साहित्यिक दृष्टि से अलकृत नही करते वे, बल्कि एक समाज-सुधारक का दृष्टिकोण ही उनकी भाषा मे परिलक्षित होता है। उनके 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय संस्करण की भूमिका के इन शब्दो से उनकी इस मान्यता पर और भी व्यापक प्रकाश पड़ता है—"जिस समय मैंने यह ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' बनाया था उस समय और उससे पूर्व संस्कृत भाषण करने, पठन-पाठन मे संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण मुझको इस भाषा का विशेष परिज्ञान नही था, इसमे भाषा अशुद्ध बन गयी थी। अब भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास हो गया है। इसलिए इस ग्रन्थ को भाषा-व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है।" स्वामी जी के हिन्दी प्रेम का परिचय हमे उस पत्र से भी मिल जाता है जो उन्होने प्रख्यात थियोसोफिस्ट मैडम ब्लेवेट्स्की को लिखा था। उस पत्र में स्वामी जी ने स्पष्ट रूप से यह संकेत किया था कि—"जिस पत्र का हमसे उत्तर चाहे, उसकी नागरी कराकर हमारे पास भेजा करें।" इसी प्रकार एक बार १३ जुलाई सन १८७९ को आपने अपने एक विदेशी मित्र कर्नल अल्काट को अपनी भावनाएं इस प्रकार लिखी थी—"मुझे सुनकर खुशी हुई कि आपने नागरी पढ़ना आरम्भ कर दिया है।" यहां यह स्मरणीय है कि स्वामी जी अपने सम्पर्क में आने वाले प्रायः सभी व्यक्तियों को हिन्दी पढ़ने की प्रेरणा देते रहते थे। यह स्वामी जी द्वारा संस्थापित आर्य समाज के अनेक कर्मठ कार्यकर्ताओ का ही प्रताप था कि सारे देश मे हिन्दी का प्रचार तथा प्रसार तेजी से हो गया। स्वामी जी के समकालीन प्रायः सभी नेताओं, सुधारकों और साहित्यकारो ने उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर हिन्दी प्रसार को अपने जीवन का प्रमुख ध्येय बनाया।

(क्रमशः)

सार्वदेशिक सभा द्वारा पंजाब के विस्थापितों की सहायता

नई दिल्ली ११ जुलाई। पंजाब से आये हुए सैकड़ों लोग नई दिल्ली के वोट क्लब के पास दयनीय स्थिति में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सार्वदेशिक सभा पंजाब के विस्थापित लोगों के कल्याण तथा उनके पुनर्वास की व्यवस्था में बराबर सहयोग करती रही है। इस कार्य में सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाजों, धार्मिक संगठनों तथा भारत सरकार और दिल्ली प्रशासन के द्वारा बराबर उन्हें सहायता पहुंचाई है।

आज पंजाब के विस्थापितों का एक शिष्टमण्डल स्वामी जी से सभा कार्यालय में मिला और उनसे सभा की ओर से राशन आदि सामग्री की सहायता देने की प्रार्थना की। स्वामी जी ने तुरन्त सभा की ओर से उन्हें आटा, चीनी, दाल और घी आदि सामान बाजार से मंगाकर भिजवा दिया है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

वेदों की फिर विजय पताका

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

आज धरित्री पर छाई है, अज्ञानो की गहन तमिस्रा।
वेदों के पावन सुज्ञान को, धरती का मानव है बिसरा॥

तम ही तम है आज चतुर्दिक, नहीं कहीं दिखता आलोक।
नही लजाता भू का मानव, धरती की दुर्दशा बिलोक।

ऋषियों का सन्देश सुपावन, हमने ही विस्मृत कर डाला।
अपने ही हाथो से हमने, नष्ट किया है शिक्षा माला।

हा हा कार मचा जो जग में, वेद भुलाने के कारण है।
इतने नीचे गिरे सभी हम, त्याग दिए अपने सब प्रण हैं।

भू पर समरसता की खातिर, वेदालोक परम आवश्यक।
सुख-समृद्धि सफलता जिससे, आए भू पर बनें सुकारक।

वेदो की फिर विजय पताका, अवनी-अम्बर में लहराएं।
शांति शुचिरता के आंगन मे, मानव भू का कदम बढ़ाएं।

वेद पथो पर चलें सभी हम, करें धरित्री का कल्याण।
शोषित पीड़ित मानवता को, दे हम नूतन पावन त्राण॥

ऋषिवर दयानन्द के स्वप्नों को हम सब साकार करें।
महिमण्डल पर वेद-ज्ञान का पावनतम् विस्तार करें।

मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

श्रावणी पर्व उत्साह पूर्वक मनायें

(पृष्ठ १ का शेष)

सत्याग्रह के शहीदों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाये। सप्ताह भर विद्वानों के वेदों पर प्रवचन कराये जायें, तथा समस्त आर्य बन्धु वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय और सामाजिक कुरीतियों यथा दहेज, बाल विवाह, मद्य पान, पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण आदि के निवारण का व्रत भी लें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

क्या नासूर बन चुकी पंजाब समस्या का हल 'महा-पंजाब' से संभव है ?

—कैलाश भवर—

पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्त सिंह ने पहली बार यह सुझाव दिया है कि एक लम्बे समय से लटकती आ रही पजाब समस्या का हल केवल यह है कि १ नवम्बर १९६६ के पहले वाले पजाब को इकटठा कर दिया जाए। उनका कहना था कि पजाब समस्या की जड १९६६ मे पजाब का पुनर्गठन है जिसके कारण प जाब हरियाणा व हिमाचल के मध्य दावे व प्रतिदावे होने लगे। चण्डीगढ क्षत्रीय विवाद व नदी जल विवाद प जाव के पुनर्गठन के कारण ही उत्पन्न हुए।

हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल भी कई बार यह प्रस्ताव कर चुके है। बास्तव मे यह सुझाव ही उनका है। अब श्री बेअन्त सिह ने पहली बार यह बात कही है।

चौधरी भजनलाल और श्री बअन्त मिह के सुझावो पर ठडे दिल से विचार करने की जरूरत है। कुछ राजनीतिक नेताओ को इस पर आपत्ति हो सकती है पर आम लोग इसका स्वागत ही करे गे। आमतौर पर जो राज्य जितना बडा होता है उसे उतना ही शक्तिशाली ममझा जाता है। पेड जितना बडा हो उतना ही अधिक ाया देता है। हम अगर १९६६ से पहले के पजाब पर नजर डाले तो यह देश के सबसे खुशहाल तथा शक्तिशाली राज्यो मे से एक था। देश के सारे प्रदेश इस पर ईर्ष्या करते थे। उस समय के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू देश के अन्य प्रदेशो को प जाब का अनुसरण करने को कहा करते थे।

उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने २२ दिसम्बर १९५३ मे भाषा के आधार पर राज्या का पुनगठन करने के लिए एक आयोग बनाया था। उस समय काग्र स जनसघ (अब भाजपा) आय समाज आदि ने महा प जाब (उस समय के प जाब पैप्सू हिमाचल जम्मू तथा राजस्थान के कुछ भागो को मिलाकर) बनाने का सुझाव दिया था। अकाली दल ने प जाबी सूबे की माग की थी। जिसमे कि जिला गुरदासपुर (डलहौजी उस समय इसी जिले का भाग था) अमृतसर जालधर लु धयाना होशियारपुर (वत मान ऊना जिला उस समय इसी जिले का एक भाग था) अम्बाला हिसार करनाल तथा थानेसर तहसील और पटियाला बरनाला भटिंडा फतहगढ कपूरथला सगरूर जिले व राजस्थान के गगानगर जिले को शामिल किये जाने की उन्होने माग रखी थी। यह प्रस्तावित सूबा ३५४५८ वगमील क्षेत्रफल तथा १ २० करोड की जनसख्या वाला बनता था। जिसमे सिखो की जन सख्या ४० प्रतिशत बनती थी कमीशन ने अपनी रिपोट अक्तूबर १९५५ मे दी थी और प जाबी सूबे को माग पूरी तरह रद्द कर दी। इसके उलट आयोग ने पैप्सू, पजाब तथा हिमाचल को मिलाकर महा प जाब बनाने की सिफारिश की थी। इसी सिफारिश के आधार पर पैप्सू को प जाब मैं मिला दिया गया। उस समय डा० यशवन्त सिंह परमार और तत्कालीन केन्द्रीय गृहमन्त्री पडित गोविन्द बल्लभ पन्त के विरोध के कारण पुराना हिमाचल प्रदेश प जाब मे नही मिलाया जा सका। हा प जाब के पहाडी इलाके—जिला कागडा (जिसमे हमीरपुर एक तहसील होती थी), कुल्लू, लाहौल-स्पीति, शिमला तथा सोलन का काफी भाग था प जाब मे ही रहे। प जाबी सूबे की माग को लेकर अकालियो द्वारा दी जाने वाली धमकियो व मोर्चो से त ग आकर श्रीमती इन्दिरा गाधी ने जो २४ जनवरी १९६६ को नई नई प्रधानमन्त्री बनी थी ने २४ मार्च १९६६ को अकालियो की यह माग स्वीकार कर ली और पजाब समस्या की बुनियाद रख ली।

प जाब मे उस समय प जाब रीजन हिन्दी रीजन त था पहाडी रीजन हुआ करते थे। जिनके लिए सलाहकार कमेटिया थी। अब महा प जाब ब ने की स्थिति मे प जाब हरियाणा तथा हिमाचल को मिलाकर तीनो के लिए डिवैलपमेट एडवाइजरी कोमिल बनाई जा सकती है। जिन्हे इन इलाका के विकास के लिए पूरे अधिकार व फड दिये जा सकते है यह कौसिल उसी प्रकार की हो सकती है जिस प्रकार पश्चिम बगाल मे दार्जिलिग पवतीय परिषद बनाई गई है और बिहार मे झारखण्ड के लिए प्रस्तावित है। विधान परिषद का गठन करके उसमे इन तीनो इलाको के प्रमुख राजनीतिक नेताओ जो चुनाव नही लडना चाहते है और बुद्धिजीवियो को प्रतिनिधित्व दिया जा सकता है।

अगर श्री बेअन्त सिंह तथा श्री भजनलाल के महा प जाब के सुझाव को स्वीकार कर लिया जाता है तो चण्डीगढ क्षत्रीय विवाद तथा नदी जल के मामले अपने आप समाप्त हो जायग। इस नए प जाब और अ य प्रदेशा को और अधिक अधिकार दिये जाने चाहिए जिसकी माग अकाली तथा अन्य कई और पार्टिया कर रही है।

इस प्रस्ताव का विरोध केवल अकाली ही करग क्योकि इस समय सभी अकाली धड (सिवाय लोगोवाल धड के खालिस्तान की माग कर रहे है। इनकी स्थिति तो यह है कि अगर खालिस्तान बन भी जाए तो भी उन्होने किसी न किसी बहाने मोर्चा लगाये रखना ही है। देश के व्यापक हित म महा प जाब का निर्माण ही प जाब समस्या का एकमात्र हल है। इससे अनेक छोटी मोटी ममस्याए भी हल हो जाएगी।

हिमाचल प्रदश मे अपनी नदिया स जल विद्युत उपादन की इतनी क्षमता है कि उससे सार उत्तर भारत को बिजली की जरूरत पूरी की जा सकती है लकिन हिमाचल के पास इन जल विद्युत योजनाओ के निर्माण के लिए आर्थिक साधन नही है। इसी प्रकार हिमाचल को भारत का स्विटजरलैड भी बनाया जा सकता है। इसे कश्मीर से भी बडा पयटन केन्द्र बनाया जा सकता है। प जाब व हरियाणा के पास साधन व पैसा है लेकिन उनके पास पहाडी इलाके नही हैं। इस तरह सब की समस्याए हल हो सकती है।

यह एक वास्तविकता है कि सिख हरियाणा व हिमाचल म अब अल्पसख्यक बन गए हैं और हिन्दू प जाब मे। महा प जाब बनने से इन तीनो राज्यो मे हिन्दू सिख जो सदियो से एक परिवार की तरह रहते आए हैं वह पुन एक साथ भाइयो की तरह वी खिचडी की तरह रह सकेंगे। इन राज्यो के लोगो के मन मे नदी जल विवाद व केन्द्रीय विवाद के कारण जो कटुता उत्पन्न हो गई है वह दूर हो जायेगी।

रहा मसला भाषा का। अकाली हरियाणा व हिमाचल प्रदेश मे प जाबी को दूसरी भाषा का दर्जा दिलाये जाने की माग कर रहे है। १ नवम्बर, ८६

(शेष पृष्ठ १० पर)

भाजपा बनाम पंजाब के आतंकवादी गोली के बदले गोली पालीसी

बेअन्तसिंह ने खण्डन किया

चण्डीगढ २२ जुलाई। पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअ तसिह ने भाजपा के उपप्रधान श्री कृष्णलाल शर्मा के इस इलजाम का खण्डन किया है कि उनकी सरकार प्रदेश मे पेचीदा समस्या का राजनैतिक हल तलाश करन की बजाए इसके सफाया करने के लिए गोली के बदल गोली पालीसी पर अमल कर रही है। वरिष्ठ भाजपा के नेता क विचारो पर अचम्भा प्रकट करते हुए मुख्यम त्री जी ने एक बयान मे कहा कि एक तरफ तो भाजपा दहशत गर्दी पर बाबला करती है और दूसरी तरफ इस प्रकार के बेबुनियाद और गैर जिम्मेदाराना नियानात देती है जिसस जनता मे गलत फहमी फलती है। जो श्री बेअन्तसिह के विचारानुसार कातिलो को बेनकाब करके उन्ह अलग थलग करने के लिए प्रथम बार आगे आए है। अपनी हकूमत को उचित ठहराने हुए श्री सिह ने भारतीय जनता पार्टी के नेताओ को याद दिलाया कि खलूसी अदालत म जो हालिया चुनाव हुए है भारतीय जनता पार्टी के सम्ब ध मे वाज पालिमी पेश नही कर सकी इसलिए बोटरो ने उसका साथ नही दिया।

—प्रताप दनिक २९ जुलाई ९२

ललित उरांव के बिल से रांची के ईसाइयों में हड़कंप मचा

राची २८ जूलाई। भारतीय जनता पार्टी के सासद ललित उराव के लोकसभा मे अनुसूचित जाति और जनजाति सशोधन विधयक पेश करने से छोटानागपुर के ईसाईयो मे तीखी प्रतिक्रिया हुई है। इस विधेयक का जबरदस्त विरोध करने के लिए ट्राइबल सालिडैरिटी नामक एक कमेटी बनाई गई है। इस कमेटी ने प्रधानमन्त्री पी वी नरसिंह राव को एक ज्ञापन भेजकर इस बिल को सविधान के खिलाफ करार दिया है।

आदिवासियो को मिलने वाली सरकारी सुविधाए धर्मान्तरित आदिवासियो को न दी जाए इस बाबत १९७० मे एक बिल लोक सभा मे आया था। आदिवासियो के नता कार्तिक उराव ने यह बिल ससद म रखा था। २५ नवम्बर १९७० को इस पर जोरदार बहस हुई और इसे स्थगित कर दिया गया। केन्द्र सरकार न तब इस बारे मे गठित सयुक्त ससदीय समिति की सिफारिशो को नामन्जूर कर दिया था।

पिछली १० जूलाई को भाजपा सासद ललित उराव ने यह बिल लोकसभा मे रखा। जो बहस के लिए स्वीकृत हो गया। पश बिल मे ललित उराव ने कहा है कि सविधान के उपबन्धो और दूसरी व्यबस्थाओ मे कहा गया है कि अगर कोई अनुसूचित जाति का व्यक्ति धम परिवतन करता है तो उसे अनुसूचित जाति को प्राप्त होने वाली तमाम सुविधाओ से वचित होना पडता है। पर अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति के साथ यह प्रावधान लागू नही होता है। प्रस्तावित बिल म कहा गया है कि मिशनरिया धर्मान्तरण के काम मे सलग्न है। अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति ईसाई होने के बाद भी जनजातियो को मिलने वाली सुविधाओ का लाभ उठा रहे हैं। जब कि हरिजन अगर धम बदल ले तो उसे हरिजनो को मिलनवाली सुविधाओ से वचित होना पडता है।

सासद ने पूछा है कि किस आधार पर जनजातीय सस्कृति और परम्पराओ से अलग थलग होकर धर्मान्तरित आदिवासी जनजाति की सुविधा पा रहे हैं?

आदिवासियो का प्रतिनिधित्व करने वाले जयपालसिंह के प्रयासो से धर्मान्तरित आदिवासियो को जनजातियो को दी जाने वाली विशेष सुविधा देने का प्रावधान किया गया था। यह मामला आदिवासी इलाको के सामाजिक जीवन का तनावग्रस्त बनाता रहा है। इस बाबत लोकसभा मे विधयक पेश करने से विभिन्न चर्चो के धर्माध्यक्ष और इसाई समुदाय के बड सरकारी अधिकारी सक्रिय हो उठ ह।

१० जुलाई को यह विधेयक पेश हुआ और ११ जुलाइ को ट्राइबल सालिडैरिटी का गठन भी हो गया। १३ जुलाई को इस कमेटी के नेताओ ने प्रधानमन्त्री को ज्ञापन भेज दिया। बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य कर्मा उराव हजारीबाग के डी आर जी ईमीई कुजुर और बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा० रैफल केरकेटटा ने प्रधानमन्त्री को भेजे ज्ञापन म कहा है कि सविधान की धारा २५ और दूसरे उपबध भारत के नागरिका को धार्मिक स्वतन्त्रता की गारण्टी और सभी को अपन अत करण के अनुसार धर्माचरण करने की अनुमति दता है। साथ ही ससद और न्यायालय भी इसाई आदिवासियो को अनुसूचित जनजाति को प्राप्त होने वाली सुविधाओ से वचित नही करता। छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम भी इसाई और आदिवासियो की जमीन सम्बन्धी अधिकारो की रक्षा समान रूप से करता है। सम्पत्ति के कानूनी प्रावधान भी इसाई और आदिवासियो के लिए समान है। यह बताते हुए इन्होन लोकसभा मे प्रस्तुत विधयक को सविधानिक व्यवस्थाओ के खिलाफ बताया है।

पंजाब में हिन्दी की घोर उपेक्षा पर गहरी चिन्ता

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पजाब की वर्तमान सरकार द्वारा हिन्दी की पूर्ण उपेक्षा पर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए बताया कि पजाब के वतमान मुख्यमन्त्री राज्य मे भाषाके मामले मे वही सब कुछ कर रहे हैं जैसा उग्रवादी चाहते हैं। वहा आज ८० प्रतिशत काम पजाबी मे और २० प्रतिशत हिन्दी के स्थान पर अग्रेजी म हो रहा है। सरकारी दफ्तरो मे नाम पटट केवल पजाबी अग्रेजी मे है और स्कूल कालेजो मे भी पजाबी मे ही सब कुछ पढान पर विवश किया जा रहा है। यह स्थिति १९६७ से भी अधिक शोचनीय है। क्योकि उस समय की अकाली सरकार ने भाषा के विषय मे जो कानून बनाया था उसमे हिन्दी के महत्व को स्वीकार किया गया था परन्तु आज की सरकार वह भी करने को तैयार नही है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा आय समाज बातचीत से इस मामले के हल का प्रयास करेगा यदि सफलता न मिली तो देश के करोडा हिन्दी प्रेमियो को गम्भीरता से इस पर विचार करना पडगा। —सम्पादक

केन्द्र ने विदेशों से पैसा पाने वाले संगठनोंकी जानकारी मांगी

नई दिल्ली २९ जलाई। केन्द्र सरकार ने कहा है कि अगर कोई सगठन देश म साम्प्रदायिक तनाव या विद्वेष फैलाता पाया गया तो उसक खिलाफ कडी कारवाई की जाएगी। उस पर रोक लगाई जा सकती है। इसके साथ ही गृह मन्त्रालय ने सभी राज्य सरकारो से उन सभी साम्प्रदायिक सगठनो के बारे म जानकारी मागी है जिन्ह विदेशो से धन मिलता है।

गृह राज्यमन्त्री एम एम जैकब ने यह जानकारी आज राज्यसभा म दी। वे पिछले दिनो महाराष्ट्र के मालेगाव और केरल के तिरुवनन्तपुरम म हुए दगो पर सदस्यो के स्पष्टीकरणो का जवाब दे रहे थे। इन दगो पर श्री जैकब ने कल सदन म बयान दिया था।

गृहराज्यमन्त्री ने बताया कि सभी राज्य सरकारो से कहा गया है कि वे साम्प्रदायिक सगठनो को विदेशो म आने वाले पैसे पर निगाह रखे। अगर यह पता लग जाता है कि इन सगठनो का साम्प्रदायिकता फैलाने मे हाथ है तो उनके खिलाफ कारवाई करनी होगी और सरकार इसमे हिचकिचाएगी नही।

किसी भी सगठन का नाम लिए बिना उन्होने कहा कि सरकार के पास सूचना है कि कुछ सगठनो को देश मे साम्प्रदायिक तनाव फैलानेके लिए विदेशो से पैसा मिल रहा है। यह ऐसे ही चलते नही रहने दिया जा सकता। श्री जैकब ने कहा कि केरल मे वे कुछ सगठनो की गतिविधियो से खुश नही हैं। पर हाल ही म वहा हुए दगे अयोध्या विवाद का नतीजा लगते हैं। बस जुलाई को सभी राज्यो को निदश भेजे गए थे कि अयोध्या के घटनाक्रम के कारण तनाव फैल सकता है इसलिए विशेष सावधानी बरती जाए। दोनो राज्यो मे हुए दगो से साफ है कि वहा की सरकारें पहले से दगो का अनुमान नहीं लगा सका। काग्रेस इ और गैर भाजपा विपक्षी दलो के सदस्यो की दलील थी कि अयोध्या मसले से सम्बन्धित सरगर्मियो के कारण ये दगे हुए। पर भाजपा सदस्यो न इन आरोपो का खण्डन किया।

जोधपुर मे डा० दीनबन्धु का स्वागत

अमेरिका म वैदिक प्रचार मिशन के सचालक और अप्रवासी भारतीय डा० दीनबन्धु चन्दोरा का उनके मूल निवास स्थान जोधपुर आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। इस उपलक्ष्य म आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर मे २२ जुलाई को साय प्रो० भवानीलाल भारतीय के सभापतित्व मे एक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। आय समाज के प्रधान श्री रमेशचन्द्र भाटिया तथा मन्त्री श्री सुखदेव गोयल ने डा० दीनबन्धु को माल्यापण किया तथा नगर की आय समाजो की ओर से उनका अभिनन्दन किया। आप के प्रस्ताविक भाषण म डा० भारतीय ने विदेशो और विशेषत अमेरिका महाद्वीप मे आर्य समाज की बढती हुई गतिविधियो की चर्चा की तथा डा० दीनबन्धु के प्रचार काय की प्रशसा की तत्पश्चात आगन्तुक अतिथि ने अमेरिका मे धर्मप्रचार मे आने वाली कठिनाइयो का विवरण दिया तथा भारत के आर्यों से निवेदन किया कि वे पाश्चात्य देशो मे आय समाज के सिद्धान्तो का प्रचार करने मे वहा के लोगो को सहयोग प्रदान करे। श्री सुखदेव गोयल ने आभार प्रदर्शित किया और अल्पाहार के पश्चात कायक्रम समाप्त हुआ।

—मन्त्री आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर

श्रावणी पर्व पर विशेष

उत्तिष्ठत, जाग्रत

(आचार्य राजेन्द्र शर्मा)

श्यामल, श्वेत, पयोद गगन मण्डल को आच्छादित कर रहे हैं, गम्भीर घोर गर्जन से दिशायें व्याप्त हो रही हैं। चचला, चपला, अपने नृत्य से मनमुग्ध कर रही हैं। आकाश से शुभ्र धारायें गिरकर धराधाम को तृप्त कर रही हैं। हरित मखमली चादर सम्पूर्ण पृथ्वी को आच्छादित किए हुए हैं। पेड़, पौधे, लता, वनस्पतियां, हरेभरे सप्रसन्न लहलहा रहे है। वर्षा सुन्दरी के यौवन पर मुग्ध हो समस्त जड़ चेतन रस सिक्त मानस से अपने उल्लास को प्रकट कर रहे हैं। ऐसे सुरम्य काल मे श्रावणी का पर्व आता है, और हमारे हृदय मे उस अनुपम सौन्दर्य के विधाता का स्मरण दिला देता है। जिसकी असीम कृपा और करुणा का गुणगान वेदादि शास्त्र निरन्तर करते रहते है।

धन्य हैं हमारे पूर्वज, जिन्होने मानव समाज के सर्वांगीण विकास के हेतु इस स्वाध्याय पर्व का इस सुरम्य काल म प्रचलन किया। कृषि प्रधान भारत देश का प्रत्येक जन कृषि सम्बन्धी समस्त कार्यों का सम्पादन कर तथा अन्य वर्ण भी अपने-अपने कार्यों से विरत होकर वर्षा काल को व्यतीत करने के लिए ग्राम और नगर के समीप आगत वेद-वेदाग, प्रवीण विद्वतजनो के चरणो मे बैठकर उनके ज्ञान और अनुभव से लाभान्वित होकर अपने जीवन को आदर्श बनाने का प्रयास करते थे। ऋषि प्रवचन कर रहे हैं श्रद्धा वनत श्रद्धालु श्रोता तन्मयता से उसका श्रवण कर रहे हैं। भक्तो की शकाओं का निराकरण हो रहा है, तत्वज्ञान का अनुभव कर परब्रह्म का साक्षात्कार किया जा रहा है ऐसी ही ज्ञान गोष्ठी का एक शब्द चित्र प्रस्तुत किया है—

मार्गे-मार्गे निर्मल ब्रह्मवृन्द वृन्दे-वृन्दे तत्वचिन्तानुवाद।
वादे-वादे जायते तत्वबोध बोधे-बोधे भासते चन्द्रचूड.।

आज कहा हैं वे दुर्लभ ज्ञान गोष्ठिया और कहा है वह ज्ञान की प्यास, वेद प्रचार सप्ताह के नाम पर किसी प्रकार किसी को बुला कर आर्यसमाज मे वेद की कथा का आयोजन कर देना मात्र ही हमने अपना कर्तव्य मान रखा है। वेद के नाम पर कही रामायण और गीता की कथा हो रही है अथवा सिनेमा की तर्ज पर निर्मित गीतो से जनता को एकत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है। वेद के मन्त्रो के रहस्य को सुनने की न हृदय में तड़प है और न है वेद के स्वाध्याय की दृढ लालसा। 'वेद प्रचार सप्ताह' के नामोच्चारण से वेद का शब्द हमारे मुख से निकल भी जाता है, अन्यथा इस सप्ताह के पश्चात् हम वेद का नाम भी नही लेते है। साप्ताहिक सत्सगो मे वेद का ग्रन्थ शोभा के लिये भले ही रख लें उसके पाठ मात्र करने को भी कोई व्यक्ति उठने को तत्पर नही होता है, उसके रहस्य पर प्रकाश डालना तो दूर की बात है। हमारे वार्षिकोत्सवो पर वेद की महत्ता और गरिमा पर धुआंधार व्याख्यान होते हैं परन्तु एक भी व्यक्ति वेद के स्वाध्याय का व्रत नही लेता है। क्योकि न वक्ता के हृदय मे वेद के स्वाध्याय की लगन है और न श्रोता उस वाचिक कथन से प्रभावित ही होता है। विद्वता पूर्ण व्याख्यान भी यदि हृदय से न निकल रहा हो तो वह बकवास बनकर रह जाता है।

एक प्रसग स्मरण आ रहा है। आर्य समाज के उत्सव मे अनेक विद्वान व्याख्याता तथा भजनोपदेशक वेद की महिमा का बखान कर रहे थे। कार्यक्रम की समाप्ति पर एक वृद्ध विद्वान कुछ खोजने लगे। कभी किसी का झोला देखते कभी किसी का। पूछने पर उन्होने कहा कि कुछ खो गया है मैं आप सबके पास इसी को खोज रहा हूं। सब व्याख्याताओ तथा भजनोपदेशको का सामान देख लिया गया, परन्तु उन वृद्ध विद्वान का चेहरा निराशा से आच्छादित था। सबने पूछा कि महाराज क्या खो गया है? जिसकी खोज मे आप लगे हैं। उन्होने वेदनापूर्ण वाणी मे कहा कि वेद की महिमा उसके स्वाध्याय की महत्ता पर आप सब स्टेज को हिला देने वाला भाषण देते हैं। परन्तु आप मे से किसी के पास, भी एक भी वेद की पुस्तक नही है, जिसका स्वाध्याय आप प्रतिदिन कर सकें। यह है हमारी दयनीय स्थिति। "पर उपदेश कुशल बहुतेरे" जे आचरहिं ते नर न घनेरे।

उठो आर्य वीरो उठो श्रावणी का सन्देश ग्रहण करो श्रावणी स्वाध्याय पर्व है वेद के स्वाध्याय का पर्व है। आओ हम व्रत लें कि हमारी यह दृढ मान्यता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और उसका पढना-पढाना सुनना सुनाना हम आर्यों का परम धर्म है। यह केवल नियमो मे लिखने के लिए ही नही था अपितु अपने जीवन मे साकार करने के लिए महर्षि का आदेश था। आज हम वेद के स्वाध्याय को भूल चुके हैं, हमे जागना है और जन जन को जगाना है। गुरुकुल वृन्दावन के प्रतिष्ठित आदि स्नातक स्वर्गीय श्री विजेन्द्रनाथ शास्त्री ने कल्पना की थी कि—

प्रभो, वेद वीणा बजे विश्व भर मे
सुने मन्त्र झन्कार प्रत्येक घर मे।

आओ, हम जगत के कोने कोने को मधुर वेद झकार से निनादित कर द। परन्तु मेरे बन्धुओ सर्वप्रथम हमे अपने हृदय मन्दिर के प्रत्येक कोने को उस झकार से भरना होगा। हमे अपने घरो के प्रत्येक कोने को उस झकार की गूज से गुजाना होगा और अपने परिवार के प्रत्येक व्यक्ति मे वेद स्वाध्याय की लगन पैदा करनी होगी, अन्यथा हमारा समस्त प्रयास मात्र मखौल बनकर रह जाएगा और हम वर्तमान की भांति जड मात्र बनकर रह जायेंगे।

वेद हमारे जीवन से दूर चले गए हैं सुदूर चले गए हैं। किसी समय सनातनी भाई कहा करते थे कि वेदो को तो असुर उठा ले गया। महर्षि ने स्मरण दिलाया कि वह असुर कोई नही केवलमात्र तुम्हारी अज्ञानता ही है। जो हमको वेदो से दूर किये हैं। हमे इस अज्ञानता को नष्ट कर वेदो की शरण मे आना ही होगा। अन्यथा हमारा विकास अवरुद्ध हो जाएगा। वेद के स्वाध्याय के अतिरिक्त पुरुषार्थ चतुष्टय को प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग नही, मनु महाराज की इस घोषणा को स्मरण रखिए कि यदि आप वेद का स्वाध्याय नही करते और इधर उधर की पुस्तको के जजाल मे फसे रहते हैं तो आप शूद्र है।

योऽनधीत्य द्विजो वेद अन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्व आशु गच्छति सान्वय॥

—अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य
आर्य समाज हापुड

हम तुम्हारे समीप आ रहे हैं

—डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, गोरखपुर

उप त्वाग्ने ! दिवे दिवे,
दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमो भरन्त एमसि ॥ऋ० १.१.७ साम० १.१.४

(अग्ने) हे अग्ने (वयं) हम (दिवे दिवे) प्रतिदिन (दोषावस्तः) रात और दिन के समय (सांझ सवेरे) (धिया) बुद्धि व कर्म से (नमो भरन्त) नमस्कार की भेंट लाते हुए (त्वा) तेरे (उप) समीप (एमसि) आ रहे हैं।

यह वेद मन्त्र अत्यन्त भावना मय है। हम प्रभु के समीप जाने का यत्न कर रहे है परन्तु वहा खाली हाथ जाना सम्भव नहीं। संसार के ऐश्वर्य ले जाने का विचार आता है पर वह स्वयं ऐश्वर्य लुटा रहा है, धन दौलत, धन धान्य, फल-फूल सब का दाता तो वही है तब मैं चिन्ता मे पड़ जाता हू, उस समय मुझे वेद मार्ग दर्शन कराता है और कहता है, उपासक तू क्यो चिन्तित खड़ा सोच रहा है उसके चरणो मे क्या चढ़ाऊं ? देख उसके पास जाते हुए तू एक चीज ले जा और कह नमस्कार की भेंट है। यह भेंट उसे समर्पित कर दे तब तू उसका हो जाएगा वह तेरा हो जाएगा। उसमें तुझमे अन्तर शेष नहीं रहेगा। चल पड़ता हू, यह भेट लेकर। मेरे मुख से निकल पड़ता है—

"तेरी स्तुतियो से मुखरित कर दे हम नभ का वक्ष स्थल,
तेरी महिमा गा गाकर हम कर दे मूक विश्व यह चंचल,
न जाने बेबस हू कितना फिर भी इसमे रस है इतना,
आजा मेरे दिल के राजा आखो मे बन ज्योति समाजा,
दो शरीर हो एक प्राण हो दो होकर भी एक जान हो।"

मन्त्र पर चिन्तन करते हुए संस्कृत भाषा के 'अनुराग' शब्द पर ध्यान चला जाता है। संस्कृत भाषा की महिमा, पूर्णता तथा लालित्य एवं प्रसाद गुणमयी यह भाषा कितनी सार्थक है, दीखने लगता है। 'अनुराग' शब्द का अर्थ है किसी का हो जाना किसी को अपना लेना, किसी के लिए सर्वस्व अर्पण कर देना। यदि यह समर्पण गुरु के लिए, विद्वान के लिए, कलाकार के लिए होता है तो हम इसे 'श्रद्धा' कहते हैं। यदि यह समर्पण माता पिता के मन मे अपने पुत्र या पुत्री के लिए हो तो उसे 'स्नेह' या 'वात्सल्य' कहेगे। यदि यह समर्पण भक्त के मन मे भगवान के लिए हो तो इसे 'भक्ति' कहते है। भक्ति, वात्सलय, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा, एक जैसी वस्तुएं हैं और पात्र भेद से उनके नाम में भेद हो जाता है। यह अनुराग जिसके भी प्रति हो यह अध्यात्मिकता की ऊंचाई पर तभो ले जाता है जब इसमें स्थिरता आती है। यह अथाह और बेअन्त हो जाता है। जब मनुष्य के मन में आठो पहर और चौबीसों घड़ी अपने प्रियतम से लौ लगी रहती है वह ही सच्चा प्रेम है, सच्ची भक्ति है। कवि ने कहा है—

आठ पहर चौसठ घड़ी लगा रहे अनुराग,
हृदय पलक न बीसरे तब साचा बैराग।

उस समय भक्त अपने प्रियतम के पास पहुच जाता है। सर्वत्र उसकी पताकायें दृष्टिगोचर होने लगती हैं। ऋग्वेद २।१३।७ मन्त्र के रूप मे वह सोचने लगता है—

यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणाधिदाने व्यवनीरधारयतः ।
यश्चासमा अजनोदिद्युतो दिव उरुरूर्वा अभितः सास्युक्थ्यः ॥

अर्थात देख, भोले मनुष्य देख ! इस रंग बिरंगी भूमि को देख। कहीं बेल बूटे हैं, कहीं फूलो की क्यारियां हैं, कहीं फूलदार वृक्ष झूम रहे हैं। इन सबको किसने बनाया है ? खेत मे किसान ने लगाया किन्तु वन में किसने सजाया। सजाने वाला महान है ? उस सजाने वाले के पास पहुचने पर ही शान्ति मिलती है। सुख मिलता है। आनन्द का उल्लास होता है। उपनिषद कहती है—

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानाम् ।
एको बहूनां यो विदधाति कामान् ।
तमात्मस्थं येऽनु पश्यन्ति धीराः,
तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् ॥

प्रभो ! आप नित्यस्वरूप हे, चेतन रूप हैं, आप एक हैं आप भक्तो की कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं। आपको जो लोग अपनी आत्मा मे देखते हैं उनको वास्तविक तथा निरन्तर शान्ति प्राप्त होती है।

अणोरणीयान् महतो महीयान् ।
आत्मा गुहायाम् निहितोऽस्य जन्तोः ।
तमक्रतुं पश्यति वीत शोकने ।
धातु प्रसादान्महीमानमीशम् ॥

उस समय हमारे मुख से बरबस निकल पड़ता है हे प्रभो ! आप सूक्ष्म से सूक्ष्म है। आप महान से महान है। जीवात्मा के भीतर छिपे हुए हैं। दयामय आपकी दया से ही आपके शुभदर्शन हो सकते हैं अन्यथा नही।

उस प्रभु के दर्शन के लिए दिन रात अपने हृदय मे उसके पास पहुचने की, प्रियतम के सामीप्य की इच्छा जागृत करो। दृढ़ संकल्प करो तो मार्ग और लक्ष्य प्राप्त होगे ? उस प्रभु के दर्शन के लिए उसकी पताकाओ झण्डियो को देखें। क्या अद्भुत नजारा है, ऊपर नीचे, अन्दर-बाहर, इधर उधर सब जगह प्रभु की झण्डिया फहरा रही है। प्रातःकाल के मनोरम दृश्य का दर्शन करो, सूर्योदय का दिव्य और तेजस्वी रूप देखो। जब रात्रि के अन्धकार के पश्चात प्रात काल पूर्वाकाश मे अपनी दिव्य छटा छटकाते हुए तथा दिग्-दिगान्त को अपने अपूर्व तेज से आलोकित करते हुए, रश्मि मण्डल से नभो-मण्डल को लालिमामय बनाते हुए सूर्य देव अपनी सहस्रों सुनहली रश्मियों के साथ पहाड़ो की शुभ्र और श्याम वर्ण की गगनचुम्बी चोटियों के पीछे से उदय होते है तो हृदय भगवान की अद्भुत लीला पर मुग्ध हो जाता है, अरे यह कैसा दृश्य है ? हाथ जुड़ जाते हैं और उस तेजस्वी प्रभु के आगे नमस्कार की भेंट लेकर भक्त आलोकित हो जाता है। भक्त के हृदय गुहा का कोना-कोना भगवान के दिव्य प्रकाश से जगमगा उठता है। अन्त.-करण भगवान की उज्ज्वल और देदीप्यमान आभा से चमक उठता है और उस समय उसके मुख से स्वतः यह उद्गार निकल पड़ता है—

'चित्रम चित्रम्' यही भक्ति का आनन्द है। क्या उपस्थान मन्त्रो से की जाती हुई संध्या के चारो मन्त्रो पर आपका ध्यान नहीं गया। "चित्रं देवाना-मुदगादनीकं" उस भक्ति के आनन्द का अनुभव शब्दो में वर्णन योग्य नहीं। वह तो 'स्वय तदन्त करणेन गृह्यते' वह तो अन्त.करण से स्वय अनुभव किया जा सकता है। अन्त.करण मे परमात्मदेव के आने से आत्मा मे नवीन शक्ति प्राण व जीवन का सचार होता है। वह शान्तिमय हो जाता है।

सूक्ष्माति सूक्ष्म कलिलस्य मध्ये, विश्वस्य स्रष्टारमनेक रूपम् ।
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारम्, ज्ञात्वाक्षयं शान्ति मत्यन्तेमेति ॥

प्रभो ! आप ससार मे सूक्ष्म से भी सूक्ष्म हैं। आप महान से महान हैं। जीवात्मा के भीतर छिपे हुए है। दयामय आपकी दया ही से आपके शुभ और शिव दर्शन हो सकते है। आपको जानकर ही हमे सच्ची शान्ति प्राप्त होती है।

नमस्ते सते ते जगतकारणाय, नमस्ते चित्ते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैत तत्त्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिते शाश्वताय ॥

हे सदा रहने वाले प्रभु ! तुम्हें प्रणाम हो, मुख स्वरूप मुक्ति के दाता तुम्हें प्रणाम हो, सर्वलोक के आश्रय चेतन स्वरूप तुम्हें प्रणाम हो, हे सर्वव्यापक परब्रह्म तुम्हें हमारा बार-बार प्रणाम है।

त्वमेकं शरण्य त्वमेकं वरेण्य, त्वमेकं जगत्पालक स्वप्रकाशम ।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहृतृ, त्वमेकं पर निश्चल निर्विकल्पम् ॥

प्रभो ! आप ही हमारी रक्षा करने वाले हो। आप ही श्रेष्ठ हो, आप ही जगत के पालक और स्वप्रकाश हो, परमात्मन आप ही अकेले जगत्कर्ता आप ही सबसे बड़े, अचल और विकार रहित हैं। अतः हम आपकी शरण में आए हैं "अग्ने ! हम प्रतिदिन रात और दिन के समय (सांझ-सवेरे) बुद्धि और कर्म से नमस्कार की भेंट लाते हुए तेरे समीप आ रहे हैं। हमें तुम स्वीकार करो—हमे अपनी शरण मे लो।

योगी फार्मेसी के संचालक—

डा० विजय शास्त्री की स्मृति में

मातृ संस्मरण (२)

—वैद्या पुष्पावती

सन् १९४९ मे गुरुकुल मे रहते हुए ही यह काम शुरूकर दिया। एक दिन पिताजी कहने लगे। यह धर्मशाला दान रूप मे बनवाई गई थी। अत इसमे मेरा शरीर नही छूटना चाहिए। कई जगह देखी। पसन्द न आई। इसी बीच कृष्णनगर (कनखल) के चौधरी पिता जी के पास आए व कहने लगे—

हम आपको कही न जाने देंगे। एक क्वार्टर आपके लिए एलाट करवा दिया है, आप लोग उसमे आकर बस जाओ'। दूसरे ही दिन हम लोग गुरुकुल छोडकर इस क्वार्टर मे आ गए। इसमे ८ वर्ष रहने के बाद फार्मेसी के रूप मे यह कोठी (वर्तमान निवास) बन गई और हम लोग १९६३ मे इस कोठी मे आ गए। सन १९६० मे विजयकुमार भी पढाई पूरी करके मेरे व पिता जी के साथ इसी काम मे लग गया।

२३ वर्ष ८ मास की आयु मे इसका विवाह लुधियाना निवासी श्री चिमनलाल कपूर की बेटी प्रेमलता के साथ तय हुआ। कपूर साहब ने पूछा—आपकी कोई मांग हो तो बताओ। फौरन विजय ने उत्तर दिया, "मेरी माग है मेरी माता की सेवा", इस प्रकार की मातृ भक्ति उसमे थी। बडी धूमधाम के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। उसके आते ही हमारे घर की श्रीवृद्धि होने लगी। घर धन-धान्य से निरन्तर भरपूर होन लगा। हमारी नववधु घर की शोभा बनी। अत हमने उसका नाम ही "शोभा' रखा। "शोभा' बहुत ही समझदार व घर के अनुकूल चलन वाली तथा सबकी आज्ञाकारिणी रही। सेवाभाव तो उसम कूट-कूटकर भरा है। उसके छ सन्ताने हुई। एक बच्चा कुछ समय बाद न रहा। शोभा ने अपनी पाच सन्तानो को पाल पोष एव पढा लिखा कर ग्रेजुएट बना, दुनिया के सामने किया। इधर विजय कुमार अपने कारोबार म ऐसी लगन से लगा कि उसका पुरुषार्थ "योगी फार्मेसी' के रूप मे आप सबके सामने है। वह प्रात ३ बजे उठकर रात ११ बजे तक काम करता रहता था। सेवाभाव एव आतिथ्य उसके रोम-रोम मे व्याप्त था। किसी दुखी को वह देख नही सकता था। उसके कष्ठ को दूर करने का वह भरसक प्रयत्न करता। निर्धन आदमी से वह दवाओ के कोई दाम न लेता। बहुत से योग्य एव निर्धन छात्रो को छात्रवृत्तिया देता तथा आवश्यकतानुसार उनका पूरा योगक्षेम वहन करने की कोशिश करता। परिवार के सभी लोगो को बडा प्यार करता। जब कही बाहर जाता तो कोई न कोई चीज हरेक के लिए लाता। रात मे चाहे जितनी देर से घर आये, अपन दादा पिता के शरीर की मालिश अवश्य करता। इसे तो उसने अपना धर्म ही समझ रखा था। अपने परिवार की मर्यादा एव परम्पराओ के अनुकूल ही उसने सदैव कार्य किया। जब विजय लगभग ३८ वर्ष का था। सन १९७६ मे उसके दादा पिता ने मरने से १० दिन पहले विजय को यह सीख दी थी कि यदि मेरा शरीर छूट जाय और कोई दुखिया उस वक्त आ जाय तो मेरा सस्कार बाद मे करना, पहले उसको दवा देना। जीवन मे किसी की जमानत न करना, यज्ञ करना कभी न भूलना। तुम्हारे साथ तुम्हारी माता हैं, इस पर कभी नाराज मत होना। अपने दादा पिता के इन निर्देशो का उसने जीवनभर पालन किया। विजय ने अपने काम को हमेशा बडी लगन और उत्सह से किया। रात दिन कठिन परिश्रम किया, कन्धो पर बोरिया उठायी और योगी फार्मेसी को अपने पुरुषार्थ स वर्तमान स्वरूप प्रदान किया। वह औषध निर्माण मे किसी दूसरे कर्मचारी का विश्वास न करके स्वय अपने निरीक्षण-परीक्षण मे करवाता था। अपनी मृत्यु की पूर्व सध्या मे भी वह हीरे के शोधन मे लगा था। उसके इस समर्पण भाव के कारण ही योगी फार्मेसी' अपनी औषधियो की गुणवत्ता व प्रभावोत्पादकता के लिए देश-विदेश मे जानी जाने लगी। फलत इसकी औषधियो का निर्यात होने लगा। अपनी आयुर्वेदिक सेवाओ एव निष्ठा के ही कारण उसको सन १९८२ मे 'ट्रास वर्ल्ड ट्रेड फेयर' स्वर्णपदक तथा सन १९८५ मे इण्टरनेशनल ट्रेड फेयर स्वर्णपदक प्रदान किए गए थे। "योगी फार्मेसी प्रतिष्ठान का हर सदस्य इस गुणवत्ता व प्रभावोत्पादकता को बनाए रखने के लिए सतत प्रयत्नशील रहता था। बहुत से प्रवासी भारतीयो/विदेशियो ने इस फार्मेसी द्वारा निर्मित औषधियो की भूरि-भूरि प्रशसा की है। वह दादा पिता के निर्देशानुसार नित्य प्रात साय सध्योपासना एव हवनादि करता था और उसकी प्रेरणा व इच्छा से परिवार के सभी सदस्य सोल्लास उसम भाग लेते रहते। आज भी इस पुनीत कर्तव्य का पालन करन मे उसका यह परिवार प्रयत्नशील है। यदि कदापि अस्वस्थता आदि तथा अन्य अपरिहार्य कारणो से वह यज्ञ मे शामिल न हो पाता तो उस वक्त गायत्री मन्त्र का पाठ ही करता रहता। प्रतिवर्ष ५ ७ दिन तक किसी न किसी वेद अथवा गायत्री मन्त्र का पाठ करवाता और समापन/पूर्णाहुति वाले दिन भण्डारा होता था जिसमे सभी प्रकार के सत्यपुरुष व सम्बन्धी आकर शोभा बढाते थे।

विजय नाराज होना तो जानता ही न था। कोई काम उसे करना होता, सबकी राय से करता था। पहले मुझसे पूछता सब पारिवारिक जनो से पूछता, तब उस काम को सहमति से करता था। उसका सेवाभाव बहुत ही अनुकरणीय था। दो बार मेरी रीढ की हड्डी टूट गई। डाक्टरो ने एक बार मुझे सीधा लेटे रहने को कहा। उस वक्त मलमूत्र त्याग भी मैं चारपाई पर ही करती। जो नौकरानी मेरी सेवा मे थी वह अकस्मात २ दिन के अवकाश पर बाहर गई हुई थी। बेटा विजय कुमार ने बिना किसी घृणा भाव के इन दिनो अपन हाथो मेरे मलमूत्र आदि की सफाई की। मैने उससे कहा 'विजय, तुम यह काम करते हो, मैं यह भार कहा उतारूगी, मुझे बडी शर्म लगती है। इसका उसने उत्तर दिया 'माता जी, जब मैं छोटा था आपने कितनी ही बार मेरा मल-मूत्र साफ किया है। मैंने इतना सा कर दिया तो क्या हुआ। मेरे पास इसका कोई उत्तर नही था। यह जो भी काम करता बडे शौक से दिल लगाकर करता। उसने एक कृषि फार्म बनाया, उसमे बडी दिलचस्पी से भाति-भाति के औषधीय पेड पौधे लगवाए। फार्म बहुत बडा, अत उसमे तमाम खाद्यान्न भी पैदा करवाता था।

विजय को गाय का दूध बहुत पसन्द था। परिवार मे कई गायें थी। उनको अपने सामने चारा दिलवाता, नानाविध उनकी सेवा करता, तभी उसके मन को शान्ति व सन्तोष होता। अतिथि सत्कार को तो वह परमधर्म मानता था। घर मे कोई व्यापारी भी जाता, तो उसका भी खूब आदर करता। ऋतु अनुकूल फल-दूध देता, भोजन कराता और बडी मधुरता से उससे बातचीत करता। इस प्रकार सब पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड देता था। विजय बहुधा तीर्थयात्रा पर भी जाता था और मुक्तहस्त से दानादि करता था। अविनाश के विवाह पर उसने २१०००) रुपए दान किया था। जहा भी वह दान देता था माता के नाम से देता था, अपना नाम सामने कभी नही आने दिया। वह मेरे (अपनी माता के) प्रति इतना प्यार व आदर भाव रखता था कि लन्दन मे होने वाले आर्य समाज के उत्सव मे शरीक होने के लिये मुझे ही भेजा था। केवल आठ दिन के भीतर दौड-धप करके पासपोर्ट व वीसा आदि बनवा दिया और एक मास की योरोप यात्रा पर भेज दिया। जब मैं वहा से स्वदेश वापस लौटी तो अपनी धर्मपत्नी व बच्चो को साथ लेकर दिल्ली हवाई अड्डे पर मौजूद था। अधिक क्या कहू, उसके अन्दर इतनी खूबिया थी कि उन्हे लेखनी से नही लिखा जा सकता। अब तो वह हमे बिलखता हुआ छोडकर चला ही गया, ईश्वर से प्रार्थना है कि वह अपने सूक्ष्म शरीर से जहा भी हो, जिस रूप व योनि मे हो सर्वथा सुखी रहे। उसकी आत्मा को पूर्ण शान्ति मिले।

पृथ्वी के बाहर भी जीवन है (३)

—विश्वनाथ प्रसाद, विद्यावाचस्पति, कोरबा

अत्याधुनिक विद्युतीय यन्त्र द्वारा—१८६,००० × ६० × ६० × २४ × ३६५ मील के घेरे मे व्याप्त निहारिकाये।

प्रसिद्ध खगोलविद हार्लो शेपले के अनुसार प्रति एक हजार तारो मे से केवल एक तारे मे जीवन के अस्तित्व की सम्भावना हो सकती है। इसकी गणना करने पर करीब १०,०००,०००,०००,०००० तारो मे यह सम्भावना हो सकती है। अब यदि पुन एक हजार तारो मे से केवल एक तारे मे हमारी पृथ्वी के समान वातावरण की कल्पना करे तो ऐसे तारा की सख्या होगी १००,०००,००० ००० । इसके बाद अब यदि प्रसिद्ध जीव-रसायन शास्त्री डा० स्टिनलेमिलर के जीव उत्पत्ति के सिद्धान्तो के परिपेक्ष्य मे सूक्ष्म जाच की जाय तो पता चलेगा कि करीब १००,००० ऐसे तारे इस ब्रह्माण्ड मे मौजूद है जिनमे 'जीवन के अस्तित्व की सभावना से इन्कार नही किया जा सकता।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्व० विलीले के अनुसार ब्रह्माड मे व्याप्त असख्य निहारिकाओ मे उपर्युक्त कल्पना के आधार पर की गई गणना के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि अन्तरिक्ष मे कम से कम १८० तारे हमारी पृथ्वी के समान वातावरण वाले हो सकते हैं एव उनमे प्राणियो का अस्तित्व हो सकता है।

इस बात मे कोई शक की गुजाइश नही है कि पृथ्वी के समान वातावरण वनस्पति एव जीव वाला तारा ब्रह्माण्ड मे मौजूद है किन्तु क्या यह आवश्यक है कि जीवन के लिए जरूरी वातावरण जैसा हमारी पृथ्वी पर है, वैसा ही उस तारे पर भी हो।

वैज्ञानिक अनुसन्धानो ने इस बात को नकार दिया है कि 'जीव' के फलने फूलने के लिए केवल पृथ्वी का वातावरण ही उपयुक्त है। यह तथ्य अब झूठा साबित हो चुका है कि 'जीव' बिना पानी व आक्सीजन प्राप्त किए पनप नही सकता। हमारी पृथ्वी पर ही 'जीव' की अनेक ऐसी किसमे है जिन्ह जीवित रहने के लिए आक्सीजन की आवश्यकता नही पडती है। इन्हे वैज्ञानिको की भाषा मे वातनिरपेक्षित कीट कहते है।

(श्री आर०बी०सी० लाल के लेख ब्रह्माड मे भी है मानव जैसे प्राणी ?)

प्रकाशित—नवभारत, बिलासपुर दिनाक १३-९-८७

बाहरी अन्तरिक्ष मे जीवन होने की सभावना होने का सकेत उडन तश्तरिया भी करती है। उडन तश्तरियो का दिखाई देना अब काफी सुपरिचित घटना हो गयी है। इनके जो चित्र खीच गए है उसम इनकी रचना अन्तरिक्ष यान के वैज्ञानिक मण्डल पर की गई लगती है। जिस तरह मे य आती और रुक जाती है, उससे लगता है कि इनका नियन्त्रण कता कोई बुद्धिमान प्राणी होना चाहिए। गत वर्ष महाबलिपुरम् मे एक उडन तश्तरी गिरी थी। उसका ज्यादा तर हिस्सा तो राख हो गया था पर एक-दो अज्ञात धातु के टुकडे मिले थ जिन पर अज्ञात लिपि मे कुछ लिखा था। यह धातु कुछ ताम्बे जैसी थी पर इसका घनत्व इतना अधिक था कि उसका रासायनिक भञ्जन या परीक्षण नही किया जा सकता।

(नवभारत, रायपुर दि० ४ सितम्बर १९८३ मे प्रकाशित लेख 'जीवन धरती के बाहर भी है' रचयिता—सुश्री सुमिता चक्रवर्ती)

इसी विषय पर पुन प्रश्न पूछा गया कि जैसे इस देश मे मनुष्यादि सृष्टि की आकृति अवयव है वैसे ही अन्य लोको मे होगी या विपरीत ? इस का उत्तर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने दिया कि कुछ कुछ आकृति मे भेद होना सम्भव है। जैसे इस देश मे चीन, हबशी और आर्यावर्त्त, यूरोप मे अवयव और रग रूप आकृति का भी थोडा-थोडा भेद होता है, इसी प्रकार लोक लोकान्तरो मे भी भेद होते है परन्तु जिस जाति की जैसी सृष्टि इस देश मे है वैसी जाति ही की सृष्टि अन्य लोको मे भी है। जिस-जिस शरीर के प्रदेश मे नेत्रादि अग हैं उसी उसी प्रदेश मे लोकान्तर मे भी उसी भाति के अवयव भी वैसे ही होते है, क्योकि—

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वम कल्पयत्।
दिवं च पृथिवी चान्तरिक्षमथो स्व ॥

ऋ० म० १० । सू० १९० ।:

(धाता) परमात्मा ने जिस प्रकार के सूर्य, चन्द्र, द्यौ, भूमि, अन्तरिक्ष और तत्रस्थ सुख विशेष पदार्थ पूर्व कल्प मे रचे थे, वैसे ही इस कल्प अर्थात इस सृष्टि मे रचे है तथा सब लोक लोकान्तरो मे भी बनाये गये हैं।

सुश्री सुमिता चक्रवर्ती लिखती हैं कि बर्लिन अन्तरिक्ष क्लब ने अन्य स्थितियां ध्यान मे रखकर वहा जीवन के विभिन्न आकारो की सभावित कल्पना की है। मगलग्रह पर सर्वाधिक विकसित प्राणी, वहा के अत्यधिक गुरुत्वाकर्षण के कारण अधिक से अधिक तीन फुट ऊचा, चपटा और बडे सिर वाला होगा। बृहस्पति के प्राणी मास विहीन तथा अत्यन्त कमजोर होगे पर उनकी बुद्धि ज्यादा तेज होगी। शनि के निवासियो का रग नीला होगा, उनके शरीर पर बाल नही होगे तथा शुक्र के प्राणियो का शरीर रेडियो धर्मिता से युक्त होगा। उनके अन्दर गन्धक की मात्रा होगी।

इस धरती के अन्तरिक्ष वैज्ञानिक १९३० से लगातार इस प्रयत्न मे लगे हैं कि अन्य ग्रहो के लोगो से सम्पर्क करे। सुश्री सुमिता चक्रवर्ती ने इस विषय पर डा० स्टेन फोर्ड के अनुसधान की बात लिखी है। डाक्टर स्टेनफोर्ड ने अब तक की अन्तरिक्ष उडानो के रिकार्ड राष्ट्रीय अन्तरिक्ष उडान सगठन (नासा) तथा मास्को से लिए और उनका सिल-सिलेवार अध्ययन आरम्भ कर दिया। डाक्टर स्टेनफोर्ड ने अपोलो की उडान का रिकार्ड देखते समय पाया कि अपोलो-१३ के अन्तरिक्ष यात्री जब चन्द्रमा की कक्षा मे प्रवेश करने को ही थे तो उन्हे अपने रेडियो सेट पर लगातार ध्वनि सकेत मिलने लगे। उन्होने सकेत लिपि मे जवाबी सकेत भेजे। ऊपर से भी जवाबी सकेत आये, जिनका अर्थ कोई नही समझ पा रहा था, पर वे इतने नियमित तथा क्रमबद्ध थे कि बिना किसी मस्तिष्क के उनका अपने आप ही पैदा हो जाना सभव नही था।

चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र मे पहुचते ही इन सकेतो का आना रुक गया। इस जानकारी से उत्साहित डाक्टर स्टेनफोर्ड ने बाकी सब उडानो के नतीजो का अध्ययन किया और मिलते-जुलते परिणाम आए। एक और समानता यह पायी गई कि किसी खास ग्रह के पास, एक खास किस्म की ही लय मे सकेत मिलते थे। जैसे मगल के पास सकेत दो, दो के जोडे मे आते थे और चन्द्रमा के पास पीय पीय की लम्बी आवाजे आती थी। इन सकेतो के अलावा बाह्य अन्तरिक्ष मे जीवन के होने के और भी प्रमाण मिले है। सेल्यूज ७ और सेल्यूज ११-१२ से खीचे गये अन्तरिक्ष के चित्रो मे से कई ऐसे है जिनमे अतरिक्ष मे कई सुगठित आकार के यान जैसी वस्तुए दीखती है। सेल्यूज ने मगल ग्रह से मिलने वाली रोशनी का स्पेक्ट्रम लिया तो यह ठीक वैसा ही निकला जैसा बिजली के प्रकाश का होता है।

दूसरे ग्रहो से सम्पर्क स्थापित करने की बात अब कोरी कल्पना नही रह गई है। ताशकन्द स्थित अनुसधान केन्द्र ने इस अभिलाषा को साकार कर दिया है जिसका विवरण निम्न प्रकार है—

ताशकन्द स्थित एक अनुसधान व विकास सस्थान की टीम प्रमुख कलारा मालिकोवा को ६ जुलाई का दिन अच्छी तरह से याद है। उस दिन अचानक उनकी दाहिनी बाह बेहद भारी हो गई और सुन्न पड गई। शीघ्र ही उनका हाथ कापने लगा और उनके मन मे सिर्फ इतना ही आया कि वे जल्दी से कोई पेंसिल उठाले। कलारा ने एक सफेद कागज भी सामने रख लिया। पेंसल तुरन्त ही कागज पर घूमने लगी और कुछ ही क्षणो मे अनेक प्रतीक चिन्ह उस कागज पर उभर आए जिन्हे समझ पाना कठिन था। इस चित्रलिपि के फलस्वरूप एक रेखाचित्र उभर आया। भिन्न आकार वाले काले रग के वृत्त और उनके बीच आडा रेखाच्छादन जो तारक पावर लाइनो के व्यवस्थित रेखाचित्रो से मिलता-जुलता था, जो खगोल-विज्ञान की पुस्तको मे पाए जाते है। कलारा मालिकोवा का अपने जीवन मे इस तरह का यह पहला अनुभव था।

(क्रमश)

स्व० श्री "प्रेम" जी की स्मृति में श्रद्धांजलि

रविवार दिनाक २६ जुलाई १९९२ को स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी महान क्रांतिकारी देशभक्त आर्यनेता दिवगत श्री शाति प्रकाश प्रेम के सम्मान मे श्री जयानन्द भारतीय स्मारक निधि, दिल्ली एव अनक सामाजिक सस्थाओ की ओर से श्रद्धाजलि सभा आर्य समाज किदवई नगर नई दिल्ली मे २ बजे अपा० आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की।

इस अवसर पर स्वामी जी ने दिवगत विभूति श्री प्रेम जी को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनको भारतमाता का सच्चा सपूत बताया जिसन हाथो म हथकडी पहन ली किन्तु अग्रेजी सरकार के आगे घुटने नही टेके और जेल क ऊचे सीकचो मे बन्द किए गए तथा नाना प्रकार की यातनाए उन्हे दी गयी। वे जीवन पर्यन्त सामाजिक विषमता एव रूढिवादिता को समूल नष्ट करने के लिए सघर्ष करते रहे। उन्होने कहा कि अग्रेज गवर्नर मालकम हेली को पौडी मे तिरगा झण्डा बताकर भगाने वाला जयानन्द भारतीय एव पेशावर काड क वीर सेनानी जिसने अग्रेजो का हुकम न मानकर अपने भाइया पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया। इन तीनो वीरो के भक्ति और साहस का श्रोत और कोई नही आय समाज और स्वामी दयानन्द का प्रकाश था।

स्व० श्री शाति प्रकाश प्रेम की स्मृति मे स्वामी जी ने आर्य उपप्रतिनिधि सभा गढवाल मे खोलने के प्रस्ताव का स्वागत करते हुए कहा कि इसके द्वारा गढवाल मे रूढिवादिता की प्रवृति का अन्त होगा। उन्होने गढवाल के ब्राह्मण वग से कहा कि वे आर्य समाज को अपनाकर रूढिवादी प्रवृति को छोडें। उन्होने कहा आर्य समाज कोई मजहब नही, चलते फिरते लोगो की समाज है।

उन्होने गढवाली वीरो को ललकारा कि वे दिवगत विभूति स्व० प्रेम की कुरबानियो को यादकर रूढिवादी एव सामाजिक असमानता को समूल दूरकर अपने पैरा पर खड हो जाय। सावदेशिक सभा की ओर से उन्होने पूर्ण सहायता देन का वचन दिया।

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा की उपलब्धियो की चर्चा करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताय कि प्रधानमन्त्री श्री नरसिंह राव साधु सन्यासियो से अयोध्या विवाद पर बातचीत करक एव नेपाल के महाराजा न आर्य सस्कृति शब्द अपने सविधान मे जोडकर उनक प्रस्ताव का जो आद किया है उनके लिए वे धन्यवाद के पात्र हे।

इस अवसर पर अनेक वक्ताओ ने दिवगत विभूति प्रेम जी को अपनी अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि दी और उनकी सेवाओ का गुणगान किया जिनमे मुख्य वक्ता सर्वश्री विश्वबन्धु भास्कर गोबर्द्धन, खेमसिंह रावत, छविलाल ओमप्रकाश शास्त्री आदि प्रभृति थे।

श्री विश्वबन्धु भास्कर मन्त्री जयानन्द भारतीय स्मारक निधि दिल्ली ने दिवगत विभूति श्री प्रेम की शुद्धि शान्ति प्रार्थना सभा प्रेमकुटी कुणजोली गढवाल मे समाज सेवी उद्योगपति श्री सत्यानन्द जी मु जाल के भाग लने एव गढवाल पहुचने पर तथा इस श्रद्धाजलि सभा मे आय जगत के महान नेता स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के पहुचने पर हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होन इन दोनो प्रभृतियो से निवेदन किया कि उनका आशीर्वाद समय समय पर पहुच की भाति हम मिलता रहे। गढवाल की आय समाजो की दुदशा उनसे छिपी नही है। आय उपप्रतिनिधि सभा की गढवाल म स्थापना का और इसकी समिति दिल्ली मे बनाकर जो भार आज इस समिति को दिया हम विश्वास दिलाते हैं कि उनका अशीर्वाद समय समय पर मिलते रहन पर हम इस काय को पूर्ण करने की कोशिश करेंगे।

इस अवसर पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा का गठन दिवगत श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम की स्मृति मे निम्न प्रकार हुआ —सर्वश्री दीनदयाल आर्य, खेमसिंह रावत, विश्वबन्धु भास्कर जीवनलाल गोबर्द्धन ओमप्रकाश शास्त्री अमरदत्त आय गोबिन्दराम गणेशलाल विद्यावाचस्पति सोहनसिंह एव सुरेश चन्द्र।

अन्त मे श्री विश्वबन्धु भास्कर न स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती एव सभी श्रद्धालु सज्जना का जिन्होन दिवगत प्रेमजी की श्रद्धाजलि सभा म भाग लिया धन्यवाद किया। दो मिनट का मौन धारण कर दिवगत विभूति को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। तत्पश्चात शान्ति पाठ के बाद सभा विसर्जित की गई।

अहमदाबाद मे उग्रवादियों की देशद्रोही योजनाएं

अहमदाबाद मे २ फ्लैटों से भारी मात्रा मे अस्त्र-शस्त्र तथा बारूद बरामद

अहमदाबाद की पुलिस ने एक खतरनाक सिख मनजीत सिंह उर्फ लाल सिंह की तरफ से दी गई सूचना के आधार पर कायवाही की। किश्क हवाई हादसे के सम्बन्ध म पुलिस उसे गिरफ्तार करने के प्रयास मे लगी थी और उसे १६ जुलाई को बम्बई पुलिस न पकड लिया था। उसने पुलिस के सम्मुख अनेक चौकाने वाली बात बताई ह। उसने कहा कि पाकिस्तान की शय पर कश्मीरी जगजु और खालिस्तानी समथक भारत मे इस्लामा तहरीक बिद्यार्थियो मे अपना प्रभुत्व जमाने म लग हुए है। और फ्लैटो के सम्बन्ध मे पूरी पूरी जानकारी दी कि वहा स्थायी तौर पर कोई रहता नही। पुलिस द्वारा अभी उससे पूछताछ जारी है।

आर्य वीरो का साहसिक कदम

सवसाधारण को सूचित करते हुए अपार हष हो रहा है कि जनकपुरा क्षत्र के आ वी द संचालक श्री विजयकुमार जी के नेतृत्व मे लगभग ५० आयवीरो न तिलकनगर चौक पर २५ जोलाई को अश्लीलता के विरुद्ध प्रदशन किया तथा वहा लगे अश्लील चित्रो को काले र ग से पोत दिया गया।

उत्सव समाचार

आय समाज मन्दिर रेलवे रोड उभानी का ८०वा वार्षिकोत्सव १ स ३ अगस्त १९९२ तक समारोह पूवक मनाया गया। इस अवसर पर आय जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने अपने विचारो से जनता को लाभान्वित किया। इस अवसर पर अनेका अन्य कायक्रमा का भी आयोजन किया गया।

वेद प्रचार अभियान

आय वेद प्रचार मण्डल जनपद अयोध्या फैजाबाद के तत्वावधान मे वेद प्रचार का विस्तृत आयोजन २० मई स ४ जून तक जनपद क विभिन्न क्षेत्रो मे सफलता पूर्वक किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य देश मे उत्पन्न नास्तिकता अराजकता तथा पर्यावरण प्रदूषण को समाप्त करना तथा ससार मे सुख शान्ति समद्धि वेदो के अनुरूप चलने से होगी यह बताना था। इस अवसर पर अनेका विद्वानो तथा भजनोपदेशको न अपने विद्वतापूर्ण उपदेशो से जनता को अत्यन्त प्रभावित किया।

पंजाब समस्या का हल

(पृष्ठ २ का शेष)

से पहले इन दोनो इलाको मे प जाबी दूसरी भाषा के रूप मे पढाई जाती थी। इन तीनो राज्या के विलय क बाद यह पुरानी परम्परा बहाल की जा सकती है। अभी भी पजाब म दसवी मे हिन्दी व पजाबी अनिवाय विषय है। यह व्यवस्था महा पजाब मे जारी रखी जा सकती है।

पजाबी हिन्दी तथा पहाडी भाषा के विकास के लिए अकादमिया बनाई जा सकती है। केन्द्र पैसे मे इसके लिए सहायता कर सकता है।

अकालिया द्वारा इस प्रस्ताव का विरोध तो होगा ही क्योकि प जाबी सूबा बनाने की उनकी माग वा मन्तव्य ही यह था कि वे इस सूबे पर राज कर सकगे लेकिन उन्होने देख लिया है कि १९६७ १९६९ तथा १९७७ के चुनावो म वे जनसघ व जनता पार्टी क सहयोग से ही अपनी सरकार बना सके थे। सितम्बर १९८५ क चनावो म ही उन्ह पहली बार विधान सभा से स्पष्ट बहुमत मिला था लेकिन इसका मुख्य कारण सत हरचन्द सिंह लोगोवाल की शहादत तथा हिन्दुओ द्वारा पजाब मे शान्त की बहाली के लिए अकालियो को दी गई वोट थी। महा प जाब बनने पर भी अकाली अन्य गैर काग्र सी पार्टियो की सहायता से सत्ता म आ सकते है।

उक्त सभी वाता के द ष्टगत चौधरी भजनलाल और स बअन्तसिह द्वारा दिय गये महा प जाब के सुझाव का स्वागत किया जाना चाहिए।

अयोध्या विवाद कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का परिणाम है

जोधपुर २६ जुलाई, आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर मे आयोजित आर्य समाजो की स्थानीय सभा मे डा० भारतीय ने स्पष्ट घोषणा की कि अयोध्या विवाद को बढाने के लिए वे व्यक्ति तथा दल जिम्मेदार है जो धर्म निरपेक्षता का झूठा नारा लगा कर भारत की सस्कृति के जीवन्त प्रतीक भगवान राम के किसी स्मारक के निर्माण का विरोध करते है। डा० भारतीय ने यह स्पष्ट किया कि यद्यपि आर्य समाज न तो मूर्ति पूजा मे विश्वास करता है और न उसकी उपासना प्रणाली मे किसी स्थान विशेष का महत्त्व स्वीकार किया गया है तथापि वह सभी मतावलम्बियो के अपने अपन धर्म स्थानो के निर्माण तथा सचालन के सविधान प्रदत्त मौलिक अधिकार को स्वीकार करता है न केवल बाबर ने अपितु अन्य भी औरगजेब आदि अनेक असहिष्णु मुस्लिम शासको ने हिन्दुओ तथा अन्य धर्मावलम्बियो के पूजा स्थलो को ध्वस्त किया किन्तु इतिहास के उन विस्मृत पृष्ठो को पुन टटोलने का यह समय नही है। आवश्यकता इस बात की है कि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर आज देश के बहुसख्यक समाज की निरन्तर जो अवहेलना, अवमानना तथा उपेक्षा हो रही है उसका समाधान किस प्रकार किया जाये। डा० भारतीय ने इस सन्दर्भ मे हिन्दू धम मे प्रचलित अनेकता, पूजा उपासना प्रणालियो की विधविता तथा धर्माचार्यों तथा मठाधीशो द्वारा एक ही समस्या पर अलग अलग प्रकार की बोलिया बोलने का भी उल्लेख किया और महर्षि दयानन्द के इस कथन पर जोर दिया कि जब तक एक ही प्रकार के भाव, भाषा विचार और राष्ट्र जीवन की मामान्य प्रणाली का हम अनुसरण नही करेगे तब तक इस प्रकार की पेर्चीदी समस्याओ का समाधान निकालना कठिन होगा। आज ससार मे कट्टर मुस्लिम सम्प्रदायवाद का जो उफान आया है उसकी चुनौती को पश्चिम के ईसाई देशो की ही भाति सम्प्रदाय निरपेक्षता की राह पर चलने वाले भारत को भी स्वीकार करना पडेगा। यही कारण है कि भारत की एक अपनी समस्या मे जब कोई उतार चढाव आता है तो पडौसी देश पाकिस्तान और बगला देश भी उस पर तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट करने का साहस कर बैठते हैं जबकि उन देशो मे अल्प सख्यको की कैसी दुर्दशा है यह किसी से छिपी नही है। डा० भारतीय ने अयोध्या के सन्त महात्माओ तथा प्रधान मन्त्री के बीच हुई वार्ता को एक अच्छा दिशा सकेत माना तथा आशा प्रकट की कि एक सजीदा प्रकृति के प्रधान मन्त्री के होने हुए इस विवाद का समाधान निकालना कठिन नही होगा।

वैदिक संस्कृति का विश्व कोश

सार्वदेशिक पत्रिका के विभिन्न अको मे ईश्वर प्रकृति, मृत्यु, मोक्ष आदि विषयों पर अत्यन्त सरल तथा रोचक शैली मे जो विचार प्रकाशित किए गए है यह प्रसिद्ध विद्वान ... "आर्य प्रकाश मण्डल सरस्वती भण्डार, गाधीनगर दिल्ली द्वारा किया गया है तथा इस विश्व कोश नामक पुस्तक से लिए थे। इस पुस्तक का प्रकाशन अमूल्य पुस्तक का मूल्य मात्र ७०) रखा गया है। प्रत्येक क्षेत्र मे सुख, शान्ति, सन्तोष तथा सफलता के लिए इस पुस्तक का स्वाध्याय अत्यन्त लाभप्रद होगा।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल की आवश्यक बैठक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के सभी अधिकारियो, प्रान्तीय सचालकों, प्रान्तीय मन्त्रियो तथा शिक्षक बन्धुओ को सादर सूचित किया जा रहा है कि सा० आर्यवीर दल की बैठक १५वें आर्यवीर महासम्मेलन हरियाणा पान्त के शुभ अवसर पर १९, २० सितम्बर १९९२ को नरवाना शहर जनपद जीन्द के आर्यसमाज मन्दिर मे आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

आप सभी की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। उचित समय पर पधारकर दल की प्रगति हेतु विचार प्रकट करे।

—मदनपाल राठी, प्रचार विभाग,
सा० आर्यवीर दल

छप रही है ! छप रही है !!

संस्कार चन्द्रिका

लेखक—स्व० प० भीमसेन शर्मा एव स्व० प० आत्माराम जी अमृतसरी

प्रकाशक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री एम ए पी एच डी

१५ दिनो मे अग्रिम धन देने पर ६०) रु० तथा पश्चात मूल्य १००) रु०

प्राप्ति स्थान

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली २

आर्य वीर महासम्मेलन

१९-२० सितम्बर १९९२ नरवाना (जीन्द मे)

आर्य वीर दल हरयाणा की प्रान्तीय बैठक २५ जुलाई को श्री डा० देवव्रत जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज नरवाना मे सम्पन्न हुई। जिसमे यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। आर्य वीर दल हरयाणा का १५वा आर्यवीर महासम्मेलन आर्य समाज मन्दिर नरवाना के प्रागण मे मनाया जायेगा। इस समारोह मे स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प० बालदिवाकर जी हस, डा० देवव्रत जी आचार्य (प्रधान सचालक) प्रो० उत्तमचन्द जी शरर डा० रामप्रकाश जी (राज्य मन्त्री हरयाणा सरकार) श्री बच्चनसिह आर्य (राज्य मन्त्री हरयाणा सरकार), प्रो० शेरसिह जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) तथा अन्य क्रान्तिकारी आर्य नेताओ को आमन्त्रित किया जा रहा है।

अत आपसे निवेदन है कि आप अपने परिवार तथा इष्ट मित्रो सहित इस समारोह मे पधारे और तन मन धन से अपना सहयोग देकर आर्य वीरो को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

भवदीय
वेदप्रकाश आर्य
महामन्त्री, आर्य वीर दल हरयाणा

वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कीजिए

सामवेद भाषाभाष्य (श्री प० हरिशरण सिद्धान्तालकार) पूर्वार्चिक ७०) उत्तरार्चिक १३०) कुल	२००)
जीवन सुख सोपान (श्री प० देवनारायण भारद्वाज)	१५)
मूर्तिपूजा ? (डा श्रीराम ...)	३०)
ईश्वर सिद्धि (डा श्रीराम आर्य) बडे टाईप मे	२०)
वैदिक सस्कार रहस्य प्रथम भाग (महात्मा आनन्द मुनि) (प्रथम आठ सस्कारो की सरल भाषा मे व्याख्या)	२५)
वैदिक सस्कार रहस्य द्वितीय भाग (महात्मा आनन्द मुनि) (शेष आठ सस्कारो की सरलतम भाषा मे व्याख्या)	१५)
वैदिक विवाह सस्कार विधि (श्री प० महेन्द्र कुमार शास्त्री)	२२)
वैदिक नित्य कर्म विधि (श्री प० हरिदेव आर्य)	१०)
स्वामी विवेकानन्द और उनके विचार (स्वामी विद्यानन्द जी)	१०)
गायत्री चालीसा २००) सैकडा, आर्य समाज के प्रवेश पत्र सैकडा	२००)
सगठन सूक्त और आर्य समाज के नियम (दो रगो मे छपाई) सैकडा	२००)

विशेष—हमारा बडा पुस्तक सूची पत्र नि शुल्क प्राप्त करें। अपना पता साफ-साफ हिन्दी मे ही लिखें। चौथाई धन अग्रिम भेजें।

वैदिक प्रकाशन

७११५-गली पहाड़वाली, पहाड़ीधीरज, दिल्ली-६

फोन ७५११२०६ ३२६८२३१

R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U 93Post in N D P S.O.on 6, 7-8-1992

महा पंजाब बने तो बेअंत सिंह के लिए मुख्यमन्त्री का पद छोड़ दूंगा : भजन लाल

नई दिल्ली २९ जुलाई। हरियाणा के मुख्यमन्त्री भजन लाल ने कहा कि 'महा पंजाब' बनने की हालत मे वे बेअन्तसिंह के पक्ष मे मुख्यमन्त्री पद तक छोडन को तैयार है। उन्होने कहा कि राज्य सभा चुनाव मे उनके दिल के सामने ओम प्रकाश जिंदल की दौलत हार गई।

मुख्यमन्त्री भजन लाल ने महा पजाब बनाने की मुख्यमन्त्री बअन्तसिंह की माग का स्वागत करते हुए कहा कि सबसे पहले मैंने ही यह सुझाव दिया था। यह खुशी की बात है कि बेअन्तसिंह भी इससे सहमत है। उन्होने कहा कि अगर महा पजाब बनता है तो वे बेअन्तसिंह को ही मुख्यमन्त्री बनाए रखना चाहेगे। मै तो तीन बार मुख्यमन्त्री बन लिया। उनका पहला मौका है। भजनलाल ने मुस्कराते हुए कहा।

उन्होने बताया कि अब तक उनकी बअन्तसिंह के साथ आधा दजन मुलाकाते हो चुकी है। पजाब मे जारी आतकवाद मे खासी कमी आई है। हालाकि अभी तक हम लोग किसी नतीजे पर नही पहुचे हैं फिर भी पूरी आशा है कि आपसी मामले एक साथ हल हो जायगे। उन्होने पजाब के सिचाई और बिजली मन्त्री हरचरणसिंह बराड के बयाना पर यह कहते हुए कोई भी टिप्पणी करने से इकार कर दिया कि वे बवजह कोई विवाद खडा नही करना चाहते।

स्वतन्त्रता सेनानी स्वागत समारोह

श्रावणी पर्व बृहस्पतिवार दिनाक १३ अगस्त १९९२ को प्रात ८ बजे आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली मे उन सभी स्वतन्त्रता-सेनानियो का अभिनन्दन किया जायेगा जिन्होने सन् १९३९ ई० मे हैदराबाद निजाम की तानाशाही तथा धर्मान्धता के विरुद्ध आर्यसमाज द्वारा चलाये गये "हैदराबाद आर्य सत्याग्रह" मे भाग लेकर भारी यातनाओ को सहते हुए राष्ट्रीय-एकता की नींव मजबूत की तथा हिन्दुओ के स्वाभिमान की रक्षा भी की।

स्मरण रहे कि आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली "हैदराबाद आर्य सत्याग्रह" का मुख्य सचालन केन्द्र था।

समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे।

—मूलचन्द गुप्त, प्रधान
आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ प्र)

आर्य समाजो के निर्वाचन

आर्य समाज शाहपुरा भीलवाडा—श्री बशीलाल जी सोनी प्रधान, श्री रामस्वरूप बेली मन्त्री, श्री सत्यनारायण कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी—श्री कल्याणदास जी प्रधान, श्री श्रीकृष्ण जी आर्य मन्त्री श्री कमल कुमार गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज मन्दिर धमापुर जबलपुर—श्री मुरारीलाल आर्य प्रधान श्री श्री रामस्वरूपसिंह आर्य मन्त्री, श्री टीकमसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज सुधराईन समस्तीपुर—श्री ओमजयण जी आर्य प्रधान, श्री सोमाकान्त आर्य मन्त्री, श्री मनोज कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज माडल टाउन यमुना नगर—श्री मदनलाल वासुदेवा प्रधान, श्री मनोहरलाल साहनी मन्त्री, श्री मनोहरलाल दीवान कोषाध्यक्ष चुने गए।

केन्द्रीय आर्य सभा यमुना नगर—श्री शूरवीर सेठ प्रधान, डा० गेन्दाराम आर्य मन्त्री, श्री मनोहरलाल दीवान कोषाध्यक्ष चुने गए।

नगर आर्य समाज साहबगज गोरखपुर—प्रो सत्यदेव आर्य प्रधान, श्रीमती श्रगारवती आर्य मन्त्री, श्री [illegible]प्रतापसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज [illegible] पानीपत—श्री रामकिशन आर्य प्रधान, श्री राजेश आर्य मन्त्री, श्री [illegible] कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज [illegible] रोड, नई दिल्ली

अगस्त मास के रविवारीय साप्ताहिक सत्सगो मे निम्नलिखित आर्य विद्वान प्रवचनार्थ पधार रहे है। प्रात ९-३० बजे से १०-३० बजे तक पधार कर प्रवचनो से [illegible] उठाए सभी आर्य जन कृपया अकित कर लें।

२ अगस्त, ९२	डा० महेश विद्यालकार
९ अगस्त, ९२	श्री नेत्रपाल शास्त्री
१६ अगस्त, ९२	आचार्य जैमिनी जी शास्त्री
२३ अगस्त, ९२	आचार्य वेद प्रकाश श्रोतीय
३० अगस्त, ९२	वेद बन्धु अभिविनय भारती

वेदव्रत शर्मा (मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

> **महर्षि दयानन्द उवाच**
>
> ● मनुष्यो को धर्म विषयकज्ञान बढाकर यथायोग्य सत्यासत्य मत और कर्त्तव्य अकर्त्तव्य कर्म सम्बन्धी विषय विदित होकर सत्य और कर्त्तव्य कर्मो का परित्याग करना सहजता से हो सकेगा।
>
> ● परमात्मा सब मनुष्यो पर कृपा करे कि सब सबसे प्रीति, परस्पर मेल और एक दूसरे की उन्नति करने मे प्रवृत्त हो।
>
> ● मास का खाना किसी मनुष्य को उचित नही। दयालु परमेश्वर ने वेदो मे मास खाने व पशु आदि मारन की विधि नही लिखी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष ३३७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अक २६]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१   भाद्रपद कृ० ३   स० २०४९   १६ अगस्त १९९०

आर्य जगत् ने हैदराबादके शहीदोंको याद किया

श्रावणी के महापर्व पर सम्पूर्ण आर्य जगत् ने हैदराबाद के आर्य शहीदो को याद किया जिन्होने जाति धर्म और राष्ट्रीय एकता के लिए आज से ५३ वर्ष पूर्व हैदराबाद के निजाम के अत्याचारो के विरुद्ध आर्य समाज द्वारा सचालित सत्याग्रह आन्दोलन मे भाग लिया था।

श्रावणी पर्व पर विश्व की अनेक आर्य समाजो मे शहीदो की स्मृति मे श्रद्धाजलि सभाए हुई और सत्याग्रह आन्दोलन के स्वतन्त्रता सेनानियो का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर आर्य समाज के शहीदो के बलिदान का आदर करते हुए आर्य जनो ने सकल्प लिया कि जब भी जाति धर्म और राष्ट्र पर सकट आयेगा, उन शहीदो का बलिदान हमेशा याद किया जायेगा और आर्य समाज बडे से बडा बलिदान देने को सदैव तत्पर रहेगा।

श्रावणी महापर्व अनेक प्रकार की मान्यताओ से युक्त होते हुए भी एक दूसरे की रक्षा के विश्वास और सकल्प को बढाता है, हम सभी आर्य जन अपने बलिदानी शहीदो की पावन स्मृति मे इसी विश्वास के साथ श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

> ## उदयपुर का नौलखा महल आर्य समाज को शीघ्र हस्तांतरित होगा
>
> **राजस्थान सरकार का निर्णय**
>
> आर्य समाज उदयपुर के प्रधान श्री के०के० कालिया ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को तार द्वारा सूचित किया है कि राजस्थान सरकार ने सम्पूर्ण नौलखा महल शीघ्र ही आर्य समाज को सौंपने का निर्णय ले लिया हैं। विदित हो कि इसी महल मे बैठकर आर्य समाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की १८८१ मे रचना की थी।
>
> महल के हस्तातरण की तिथि का शीघ्र निर्णय होने पर विस्तृत जानकारी दी जायेगी।

राजनैतिक संरक्षण में मेवात की समस्याओं में भारी वृद्धि

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात अपनी परिधि के अचलो मे अल्प सख्यक हिन्दुओ का गत ३५ वर्षो से प्रतिनिधित्व कर रहा है तथा मेवात क्षेत्र की सभी आर्य समाजो की सम्पदा एव सस्कृति का रख रखाव तथा सरक्षण करता आ रहा है।

आर्य वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री भानीराम मगला ने सूचित किया है कि पिछले कुछ समय से क्षेत्र मे धर्म परिवर्तन, अपहरण, गोवध तथा अन्य आपराधिक प्रवृत्तिया निरन्तर जोर पकडती जा रही है। और इन सबके पीछे "राजनैतिक सरक्षण" एक मुख्य कारण है। उन्होंने कहा कि इन आपराधिक कृत्यो को रोकने के लिये एक विस्तृत योजना तैयार की जायेगी तथा आर्य वीर दल के शिविर, शाखाओ एव जनसम्पर्क के माध्यम से गोरक्षा, अपहरण, धर्म परिवर्तन जैसे घृणित कार्यों को रोकने का प्रयास किया जायेगा।

उन्होने बताया कि मेवात क्षेत्र मे मेवात की समस्याओ के निदान के लिये एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन शीघ्र ही किया जायेगा तथा नये प्रचारको की नियुक्तिया भी की जायेगी।

—राजेन्द्र आर्य पत्रकार

आर्य समाज मदुरै द्वारा शुद्धि कार्य

आर्य समाज मदुरै द्वारा शुद्धि का कार्य प्रगति पर चल रहा है। श्री एम० नारायण स्वामी ने सूचित किया है कि जुलाई १९९२ मे १२ ईसाइयो तथा तीन मुस्लिम सज्जनो की शुद्धि कर उन्हे वैदिकधर्म मे प्रविष्ट किया गयाहै। ११-७ ९२ को लगाये गये शिविर मे ३ ईसाई, १८-७ ९२ को टूटी कोरम के शिविर मे ४ ईसाई तथा ३ मुस्लिम और २५-७-९२ को मद्रास मे ५ ईसाइयो को शुद्ध कर वैदिक धर्म मे प्रविष्ट कराया गया। श्री एम० नारायण स्वामी का यह कार्य प्रशसनीय है।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पुस्तक समीक्षा

स्वामी दयानन्द का आर्थिक चिन्तन

ले० डा० रामकृष्ण आर्य
प्रकाशक—आर्य परिवार प्रकाशन समिति
विज्ञान नगर कोटा राज०
मू० २००)

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पुरुषार्थ चतुष्टय को महत्ता देकर अर्थ की प्राप्ति हेतु आश्रम-व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया था। जिसमे 'श्रम" के बिना आश्रमी नही था।

स्वामी जी न अर्थ के बिना मानव जीवन व्यर्थ माना है। तभी वह "अर्थकरी विद्या से जीवन की सार्थकता समझी थी। अत महर्षि ने धर्म के द्वारा अर्थ की शुचिता पर ध्यान दिया था। और चिरकाल से मानव की सिकुडी-भूखे-पट की अन्तडिया को देखकर ही" जो कृष्यादि रक्षिणी सभा का निर्माण किया था। उनकी दृष्टि मे एक स्वस्थ समाज का मानचित्र था जो धार्मिक के साथ आर्थिक दृष्टि से भी समुन्नत हो।

लेखक ने महर्षि दयानन्द को प्राच्य और पाश्चात्य अर्थशास्त्र की जानकारी से जिन अध्यायो मे अर्थ का चिन्तन किया है। उनम स्वामी दयानन्द के समस्त ग्रन्थो मे उल्लिखित आर्थिक विचारो को एकत्र कर क्रमश लिखा है।

यह महर्षि दयानन्द के आर्थिक विश्लेषण की दिशा मे एक सफल प्रयास ही समझता हू। आज भारतीय विद्यामन्दिरो मे महर्षि के विभिन्न पहलुओ पर शोध कार्य किये जा रहे है। उनमे स्वामी जी का एक पक्ष आर्थिक पहलू भी है।

बुद्धिजीवी वर्ग ने स्वामी दयानन्द को एक पक्षीय व एकागी धार्मिक समाज सुधारक के रूप म देखा है।

लेखक ने महर्षि दयानन्द के इस पहलू को भी आर्थिक दृष्टि से विशद अध्ययन करके लिखा है।

वेद का उद्धरण देकर लिखा कि मानव को उचित है कि पुरुषार्थी और यशस्वी होकर विद्या राज्य और लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु उपाय करे। जिसमे कृषक और मजदूरो का शोषण न होकर पुत्रवत पालन करे।

इस आर्थिक चिन्तन पर बुद्धिजीवी वर्ग का चिन्तन लेखन का कार्य होना चाहिये था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद समाज की दिशा बदली है उस समय पर शोधकर्त्ता विद्वान थे।

महर्षि की आर्थिक विचारधारा को स्पष्ट करने म उनके ग्रन्थो का सही आकलन कर प्रमाण रूप म दिया है।

लखक धन्यवाद के पात्र है जिन्होने आर्थिक चिन्तन पर महर्षि दयानन्द को विश्व के आर्थिक चिन्तको की प्रथम पक्ति म वह स्थान दिया है जिसके कि वह पात्र थे।

आवश्यकता के अनुरूप इस आर्थिक चिन्तन का बुद्धिजीवी वर्गमे विचारणीय स्थान मिलेगा। साथ ही उचित जन सहयोग की भी अपक्षा है तभी लेखक का प्रयाम स्तुत्य होगा।

पुनश्च श्री डा० रामकृष्ण को इस कार्य हेतु बधाई है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सम्पादक

हैदराबाद के आर्य शहीदों को श्रद्धांजलि

श्रद्धाजलि अर्पण करते है हम करके उन वीरो का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होने निज बलिदान ॥
परिवारो के सुख को त्यागा, देश के अनेको वीरो ने।
कष्ट अनेको सहन किए पर, धर्म न छोडा वीरो ने ॥
ऐसे सभी धर्म वीरो के, आगे शीश झुकाते है।
उनके उत्तम गुण गण को हम, निज जीवन मे लाते हैं ॥
अमर रहेगा नाम जगत मे, इन वीरो का निश्चय से।
उनका स्मरण बनाएगा फिर वीर जाति को निश्चय से ॥
करे कृपा प्रभु आर्य जाति मे कोटि कोटि हो वीर।
धर्म देश हित जो कि खुशी से, प्राणो की आहुति दे वीर ॥
जगदीश का साक्षी जानकर यही प्रतिज्ञा करते है।
इन वीरो के चरण चिन्ह पर चलने का व्रत करते है ॥
सर्व शक्ति दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बने।
पर उपकार परायण निश दिन, शुभ गुण धारी आर्य बने ॥

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी महादेव जी राम जी श्री परमानन्द।
माधव राव विष्णु भगवन्तर श्री स्वामी कल्याणानन्द ॥
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेद प्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी, पाडुरग श्री शान्ति प्रकाश ॥
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मण राव सुनेहरा वेकटराव।
भक्त अरुडा मातूराम जी नन्हू सिह जी गोविन्दराव ॥
बदन सिह जी रतिराम जी मान्य सदा शिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटे लाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीर चन्द ॥
राधा कृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरो का।
स्मरण करे विजयो सव के दिन, सब ही वीरो धीरो का ॥

प्रिय पावन पन्द्रह अगस्त

स्वतन्त्रता का प्रभात लाया प्रिय पावन पन्द्रह अगस्त।
अग्रेजी शासन का गढ ढाया, प्रिय पावन पन्द्रह अगस्त ॥
भव्य भूमि भारत माता के शेरो ने लीनी अगडाई।
देश प्रहरी जाग उठे विदेशियो को दिया भगाई ॥
भारत से अगरेजी शासन कर दिया सदा के लिए अस्त।
स्वतन्त्रता का प्रभात लाया, प्रिय पावन पन्द्रह अगस्त ॥१॥
भूखे रहकर जेले काटी तन पर भीषण कष्ट उठाये।
तूफानो मे घिरी हुई आजादी की नैया तट पर लाये ॥
दहल उठे गोरे छोरे सघर्ष देखकर जबरदस्त।
स्वतन्त्रता का प्रभात लाया, प्रिय पावन पन्द्रह अगस्त ॥२॥
अमित त्याग तप बल विक्रम से देशभक्त योद्धा मरदाने।
औरगजेबी सेना भागी अपने अपने करने लगे ठिकाने ॥
प्रण पालन हेतु वीर योद्धा मानी न कभी रण मे शिकस्त।
स्वतन्त्रता का प्रभात लाया, प्रिय पावन पन्द्रह अगस्त ॥३॥
फासी के तख्ते पर झूले भारत को आजाद कराया।
लाल किले पर आजादी का जाय तिरगा ध्वज फहराया ॥
गूज उठा राष्ट्रीय गान मिल गाते नर नारी समस्त।
स्वतन्त्रता का प्रभात लाया, प्रिय पावन पन्द्रह अगस्त ॥४॥
दुर्भाव द्वेष सब नष्ट करे सब भारत मा से प्यार करे।
मुस्लिम, सिख, ईसाई, हिन्दू मिलकर सद् व्यवहार करे ॥
जय नायक वीर धुरन्धर सचि वादिक होवे विश्वस्त।
स्वतन्त्रता का प्रभात लाया, प्रिय पावन पन्द्रह अगस्त ॥५॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सम्पादकीय

वीरता और अस्तित्व की पहचान ? मां का दूध !

समय-समय पर पारस्परिक विरोध होने पर एक दूसरे को चेलेन्ज की भाषा म ललकारते हुये बोला जाता है कि—

आजा अगर तूने मा का दूध पिया हो ? अन्यथा बस फिर क्या था। मा के दूध की ललकार से विपक्षी का स्वाभिमान जागा और बोला — तूने मा के दूध को ललकारा है। जा अगर मैने अपनी मा का दूध पिया है तो मैं निपट ल गा। देखा

यह है बात वीरता और असलियत की पहिचान मा के दूध की

सौगन्ध खाकर मा के दूध को देख ल गा। मा क दूध का चुनाता दा ह अपनी मा का दूध पिया है तो बदला ल गा। अन्यथा किसी और का दूध पिया है यह मा के दूध की पहिचान स्वाभिमान की मात्रा म बदला और बदला ल ही मा के दूध की रक्षा की ?

मा तून मेरे दूध की लाज रखी ?

स्वाभिमानी मा भी अपने बेटे से यही उम्मीद रखती है बेटे दूध की लाज रखना जन्म से लकर बच्चा जब तक अन्न ग्रहण करने की क्षमता नही प्राप्त करता है तब तक मा के दूध पर ही बच्चा पलता है।

जीवनीय परम्परा का उल्लघन मानव द्वारा ही किया जाता है शेष प्राणी ईश्वरीय व्यवस्था पर जीवन यापन करते है। आज एक घोषणा इसी बात की की जा रही है कि मा के दूध मे जो शक्ति है वह अन्य के दूध मे नही ? बच्चा जन्म के साथ मा का दूध छोडकर बोतल (ऊपर का दूध पीना शुरू करता है कारण अपनी मा के पास दूध इतना नही है जिससे बच्चो का पेट भरसके। दूसरे कामकाजी महिलाय ऊपर के दूध पर बच्चो का छोड नौकरी पर गई। इस प्रकार मा का अपना दूध छूट गया और बोतल का दूध चल पडा बच्चा बीमार क्यो पडा। उसे ऊपर का दूध मिला उस पाउडर के दूध म किस २ प्रकार के गाय भ स बकरा आदि का दूध था पता नही ? बच्चे मे उसे हजम करने की शक्ति है या नही ?

जिन बच्चो को मा का दूध(स्तनपान पिलाया जाताहै उन्हे बीमारिया कम होती है क्योकि मा के दूध मे रोग प्रतिबन्धक त व होत है फिर बड होने पर उन्हे लीवर की एलर्जा उच्च रक्तचाप दिल की बीमारी की आशका कम होती है।

ग्रामीण अञ्चलो मे ८० प्रतिशत माताय आज भी अपने बच्चे को अपने ही दूध पर पालती है। हममे नकल करने की बीमारी है।

पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव मे अपना दूध छोड ऊपर के दूध पर बच्चे पालने शरू किए तो कहा कि ऊपर के दूध मे सभी पौष्टिक तत्व है ? आज एक नया दिवस एक अगस्त को स्तनपान दिवस मनाया जाता है इस दिन मा के दूध के गुणो का बखान किया जाता है।

दूसरो ने कहा तब हमने भी माना कि मा का दूध ही पिलाना चाहिए। क्योकि बोतल के दूध से न जाने कितने बच्चे बीमार होकर मौत के मुह मे जा चुके हैं।

दूध का पाउडर बनाने वाल उद्योग पतियो व सरकारो ने मा के दूध के खिलाफ काफी लम्बी लडाई लडी और प्रचार करते वे हारे नही ह।

बोतल के दूध से रोग के कीटाणु बच्चो के शरीर मे पहुचना बहुत आसान है। पाउडर के दूध मे पानी ज्यादा मिलाकर बच्चो को देने से बच्चे कमजोर हो जाते हैं। वास्तविकता यह है कि मा का दूध प्रकृति ने बच्चे के लिए बनाया है अत वह लाभप्रद है।

महत्वपूर्ण यह है कि जो प्राकृतिक चीजें हैं वे बेहतर और सन्तुलित हैं अनुभव सिद्ध बात है कि जिन बच्चो ने मा का दूध लिया है वे अत्यधिक आत्म विश्वासी और स्वस्थ व्यक्तित्व के मानव बनते हैं। आत्मविश्वास की ही बात है सामने-सामने की चुनौती देना कि मा का दूध पिया है तो सामने आओ ? एक वैदिक रूप से विकसित समाज के जो सास्कृतिक लक्षण प्रतीक और अभि व्यक्ति होती है वह भी ज्यादा सहज और नैसर्गिक होती है।

मा का दूध बच्चाके लिए बेहतर होता है ऐसा ही नही दूध पिलाना मा के स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है क्योकि प्रकृति ने उसके शरीर की रचना ऐसी ही निर्मित की है उदाहरणत स्तनो या अण्डाशय का कसर प्रकटत उसमे कुछ बीमारयो का होना सम्भव है। आवश्यक है कि जो जीवन नसर्गिक और पुरातन प्राकृतिक नियमो पर रचे गए हैं उन्हे समाप्त न करके सम्मान की दृष्टि मे देख परम्परा व विधान की दृष्टि से उसे निभाया जाय।

परमुखापेक्षी समाज जब अपनी मर्यादाओ से हटकर नकल करने लगता है तो हानि ही उठाता है। पाश्चात्य जगत मे जो नई वस्तु पदा की जाती है उसका परीक्षण हम गरीब देशो पर किया जाता है हमारे अनुभव शून्य चिकित्सक भी उसी भाषा मे बोलना प्रारम्भ कर दते हैं। उसके बाद जब हानि लाभ का परीक्षण कर लिया तो घोषणा कर दी कि दवा हानिकारक है। ठीक इसी प्रकार दूध का परीक्षण भी हुआ। विदेशो मे दूध की अधिकता ने पाउडर बनाकर उसे गरीब देशो मे वितरित किया और हमने पैसा भी खोया और स्वास्थ्य भी गवाया।

अब हम कहते हैं कि मा के दूध मे जो शक्ति है वह अन्य के दूध मे नहीं है अत बच्चो को मा का ही दूध देकर बालको को स्वाभिमानी आत्मविश्वासी बनाकर शक्तिशाली बनाया जाये। तब हम कहेगे कि आ जा—

जिसने मा का दूध पिया है।

आर्यसमाज मन्दिर से ओ३म् ध्वज उतारने के अपराध मे २२ वर्षीय मुस्लिम युवक को १ वर्ष ३ माह की सजा और १५००) रु० का नकद जुर्माना

मुधौल कर्नाटक २४ जन

कर्नाटक आय प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सत्यव्रत ने एक पत्र के द्वारा सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा को यह सूचित किया है कि आयसमाज मधोल के गुम्बद से एक २ वर्षीय मुस्लिम युवक अहमद को ओ३म ध्वज उतारकर अपमान करन के जुम म भारतीय दण्ड सहिता २ ५ तथा ५० क अन्तगत एक साल ३ माह की कद तथा १५००) रु० जुर्माना अदा करने की सजा दी है। जुर्माना अदा न करन पर ४ माह की अतिरिक्त कद का प्रावधान है किया गया [illegible] आयसमाज मधोल के प्रधान जी को सादर वापस करने के लिए कहा गया।

१ १२ ८६ को रात्रि लगभग ११ बजे आयसमाज कार्यालय से उक्त २२ वर्षीय मुस्लिम युवक अहमद पुत्र श्री हाशिमस व न ओ३म ध्वज उतारने की कुचेष्टा की और कुछ चश्मदीद आय समाजियो द्वारा आपत्ति किये जान पर उस युवक न चाकू निकाल लिया और उन्हे जान से मारन की धमकी दी और तेजी से ध्वज सहित घटना थल से भाग गया इसकी सूचना आय समाज मुधोल के प्रधान श्री वकटराव को दी गई जिन्होने इस आशय की रिपोट पुलिस स्टेशन मधौल मे दज कराई। इस रिपोट के आधार पर तथा सव श्री नरेश और वकट रेड्डी की गवाही के आधार पर पुलिस न पूरी जाच की तथा मुस्लिम युवक को हैदराबाद मे गिरफ्तार किया गया।

मुकदमे का निणय देने हुए विद्वान न्यायाधीश ने कहा कि अभियुक्त के इस कुकृत्य के कारण क्षेत्र मे साम्प्रदायिक तनाव भडक सकता था क्योकि ओ३म पताका आय समाज का पवित्र ध्वज है जिसे सभी आय समाज मन्दिरो और कार्यालयो के ऊपर फहराया जाता है अभियुक्त ने जान बूझकर आय समाज की धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचाने के उददेश्य से आय समाज मन्दिर से रात्रि ११ बजे यह ध्वज उतारा विद्वान न्यायाधीश ने अपने निणय दिनाक २४ ९२ के अन्त मे यह भी कहा कि समाज म धार्मिक सदभाव बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार के घिनौने कुकृत्यो की पुनरावृत्ति हर हालत मे रोकी जाये। इस लए यह अभियुक्त किसी प्रकार की दया का पात्र नही है

इस समस्त मुकदमे की पैरवी के लिए आय समाज मधौल के सभ अधिकारीगण तथा कर्नाटक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आय मित्र व मन्त्री श्री सत्यव्रत धन्यवाद के पात्र है।

सीमान्त क्षेत्र में रहस्यमय धर्मान्तरण

मदन अरोड़ा

हनुमानगढ पाकिस्तान से सटे राजस्थान के सीमान्त जिले श्रीगगानगर मे पिछले काफी समय से ईसाई मिशनरी द्वारा प्रलोभन देकर मजहबी सिखो एव हरिजनो का धर्मान्तरण करने का काम तेजी से चल रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ईसाई मिशनरी जिले के सवेदनशील क्षेत्रो को धर्मान्तरण के लिए अपना निशाना बनाए हुए है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा महसूस होने लगा है। इस वर्षके आरम्भ म ईसाई प्रचारको (बजीर मसीह भटटी तथा पी० एम० लाल) ने सीमावर्ती क्षेत्र करणपुर एव केसरी सिहपुर के गावो मे सिखो का धर्म परिवर्तन कराया। इन परिवारो के स्त्री पुरुषो को नहर पर ले जाकर उन्हे बपतिस्मा दे ईसाई बनाया गया।

भेद खुला

ईसाई मिशनरी — [illegible] जुटा है। इस रहस्य का खुलासा हिसार मे फ्रेडशिप मिशनरी प्रार्थना बेंड उत्तर-दक्षिण जोन की ओर से गत १३ जून को प्रेषित पत्र सूचना से होता है। जैकब प्रदीप कुमार को सम्बोधित इस पत्र मे कहा गया है कि आपको नेतृत्व प्रशिक्षण के लिए पीलीबगा व हनुमानगढ क्षेत्र के लोगो को लाने के लिए कहा गया था, लेकिन आपकी ओर से कोई सूचना नही दी गई है। अब पुन: सूचित किया जाता है कि नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर (नई दिल्ली) मे भाग लेने के लिए एक व्यक्ति अवश्य पहुचे। पत्र मे यह भी कहा गया कि पीलीबगा व हनुमानगढ क्षेत्र मे धर्म परिवर्तित करने वालो को भी शिविर मे लाया जाए।

ईसाई मिशनरी धर्मान्तरण के साथ-साथ स्कूलो को भी माध्यम बना जिले मे स्थापित सैन्य छावनियो मे भी घुसपैठ कर रही है। इसके लिए मुख्यत श्रीगगानगर एव सूरतगढ को कार्यक्षेत्र बनाया गया है। इन स्थानो पर भारतीय सेना की तीन बडी छावनिया है। ईसाई मिशनरी इन छावनियो मे घुसपैठ के लिए सैन्य अधिकारियो के रिश्तेदारो को अपने यहा प्राथमिकता के आधार पर नौकरी पर रख रही है।

यही नही सूरतगढ मे जिला प्रशासनकी मनाही के बावजूद ईसाई मिशनरी सैन्य छावनी के समीप सरकारी जमीन पर स्कूल की इमारत खडी करने लगी है। समझा जाता है कि सैन्य छावनी के समीप स्कूल अपने इन्ही उद्देश्यो की पूर्ति के लिए बनाया जा रहा है।

श्री बेअन्तसिंह का 'महापंजाब'

यह बात उन दिनो की है जब पजाब म आतकवाद की अभी शुरूआत हुई थी उस समय हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल न यह कहा था कि पजाब समस्या का एक ही अन्तिम हल है कि हरियाणा, पजाब और हिमाचल को दोबारा जोड कर 'महा पजाब' बना दिया जाए। चौ० भजनलाल भी अपनी इसी पुरानी राय पर कायम है लेकिन चौ० भजनलाल की उक्त सोच को बेतुका और व्यर्थ समझा जाता रहा। खासतौर पर पजाब के अकालियो को चौ० भजनलाल की इस घोषणा पर घोर आपत्ति थी। उस समय पजाब, हरियाणा और हिमाचल के विपक्ष समेत काग्रेसी नेता भी चौ० भजनलाल के उपरोक्त कथन का शायद मजाक उडाते थे लेकिन चौ० भजन लाल की राय मे चण्डीगढ, पानी और इलाको की समस्या पजाब के एकीकरण के अलावा कभी भी हल नही हो सकती थी। चौ० भजनलाल उस समय से आज तक अपने इस कथन पर कायम है।

अब चौ० भजनलाल के महापजाब के इस सुझाव का समर्थन करने वाला एक और महत्वपूर्ण व्यक्ति उठ खडा हुआ है। पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्त सिंह न भी पिछले दिनो यह सुझाव दिया है कि पजाव की समस्या का स्थायी हल ढू ढने के लिए पजाब के पुन एकीकरण पर विचार किया जाना चाहिए। ऐसा लगता है कि पजाब के मुख्यमन्त्री स० बेअन्तसिंह को भी अब यह बात समझ मे आने लगी है कि नदी जल बटवारे, चण्डीगढ के हस्तातरण के साथ अबोहर-फाजिल्का के हस्तातरण के मुद्दे हरियाणा के साथ आपसी समझ-बूझ और बातचीत से शायद हल नही हो सकेंगे। इसीलिए श्री बेअन्तसिंह अब ऐसा सोचने पर मजबूर हो गए है कि अगर यह सभी मसले मिल-बैठ कर हल नही हो सकते तो कम से कम एक राज्य बन जाने के बाद तो यह समस्या नही रहेगी। अगर हरियाणा पजाब और हिमाचल को दोबारा मिला कर पुराने पजाब का रूप प्रदान कर दिया जाता है तो राजधानी चण्डीगढ, पानी के बटवारे और अबोहर-फाजिल्का के हस्तातरण के मुद्दे अपनी मौत खुद मर जायेंगे। पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह का उक्त सुझाव विचारणीय है और इस पर राष्ट्रीय स्तर पर बहस होनी चाहिए। इसके साथ ही साथ अकालियो की उस पुरानी माग का हल भी हो सकता है जो अमृतसर को एक धर्मिक शहर का स्थान देन की माग है।

पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह एक भले मानस व्यक्ति है। महा-पजाब का सुझाव देकर उन्होने एक राष्ट्रवादी और राष्ट्रभक्त होने का ही प्रमाण दिया है। श्री बेअन्तसिंह इस बात को भली-भाति समझते है कि अगर हिमाचल हरियाणा और पजाब का एकीकरण हो जाता है तो वह मुख्यमन्त्री पद पर नही रहेगे। इसके बावजूद देश हित मे उन्होने यह सुझाव दिया है।

ऐसे समय पर जब पजाब एक कठिन दौर मे से गुजर रहा है, पिछले एक दशक के आतकवाद और उग्रवाद ने पजाब की प्रगति को तहस-नहस करके रख दिया है, पजाब मे कभी शाति होगी इस सम्बन्ध मे आशा की कोई किरण नजर नही आ रही है। प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हाराव भी अभी तक इस उलझन मे फसे बैठे हैं कि 'पजाब पैकेज' को लागू करें तो किस ढग से? इस विवादपूर्ण माहौल मे श्री बेअन्तसिंह ने महापजाब का सुझाव देकर पजाब समस्या के हल के लिए एक नया रास्ता दिखाया है।

मेरी व्यक्तिगत राय म महापजाब के इस सुझाव पर चौ० भजनलाल और श्री बेअन्तसिंह को पहले मिल बैठकर बातचीत करनी चाहिए, इसके बाद प्रधानमन्त्री और केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के प्रमुख मन्त्रियो को भी इस सम्बन्ध मे विश्वास मे लिया जाना चाहिए। उसके बाद तीनो प्रदेशो पंजाब, हरियाणा और हिमाचल के मुद्दे पर सर्वदलीय बैठके की जानी चाहिए। आम जनता मे इस सुझाव के बारे मे प्रचार किया जाना चाहिए। इन प्रदेशो के समाचार-पत्र और पत्रिकाए भी इस मुद्दे पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं। तीनो प्रदेशो की जनता अगर इस मुद्दे को स्वीकार करे और इसके पक्ष मे अगर जनमत तैयार हो तो फिर इस मुद्दे को ससद मे उठा कर राष्ट्रीय दलो को भी इस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। हो सकता है कुछ राजनीतिक दल इस सुझाव का विरोध भी करें लेकिन एक अच्छा काम करने मे यदि बाधाए आती है तो उनका सामना किया जा सकता है। इस विचार का विरोध करने वाल यह जरूर कहेगे कि पजाब मे एक समुदाय को अल्पमत मे लाने के लिए ऐसी चेष्टा हो रही है लेकिन पजाबके वर्तमान अल्पसख्यको को जिस निर्मम ढग से मारा जा रहा है और उन्हे अपने ही देश मे पलायन करने पर मजबूर किया जा रहा है इसका जवाब किस के पास है? पिछले अर्से मे दुनिया का स्वरूप बदल चुका है। चार दशक पहले दो टुकडे हुआ जर्मनी अब एक हो चुका है। जमाना बदल गया है। इस बदले हुए जमाने म अगर पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी का एकीकरण हो सकता है तो फिर देश के हित म महापजाब की स्थापना क्यो नही हो सकती? —अश्वनी कुमार

देश के पहरेदारों से

वेदवागीश स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

सन् १९८५ मे मौलाना ओबेदुल्ला खा आजमी के भाषण का कैसेट समूचे भारत और भारत के प्रत्येक नगर के उस मौहल्ले और उस क्षेत्र मे जहा मुस्लिम आबादी है, बहुत दिनो तक बजाया जाता रहा। उस कैसेट मे उक्त मौलाना का जो भाषण है, उसमे उन्होने भारतीय न्यायालय और वह भी सर्वोच्च न्यायालय का अपमान उसके निर्णय को "जूते की नोक पर रक्खेंगे' कहकर किया है। मौलाना ने अपने उस भाषण मे यह भी कहा है कि कुरान को चैलेंज देने वाला होशियार रहे या उसे मुसलमान होना पडेगा या उसके बाप को या उसकी औलाद को।"

हमारी जानकारी मे जब यह कैसेट आया तो हमने "कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो' शीर्षक से एक लेख विविध पत्रो मे भेजकर मौलाना की मजहब-ए-इस्लाम की दावत स्वीकार कर ली। उस लेख मे हमने लिखा था कि "कोई व्यक्ति तथा कोई वर्ग किसी पुस्तक को बलात दूसरे लोगो से न तो ईश्वरीय ग्रन्थ के रूप मे मनवा सकता है और न किसी को उसका मान ही करने को बाध्य कर सकता है जब तक उसे मान के योग्य और ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध न कर दे।' हमारे इस लेख के उत्तर में होना चाहिये था कि जिन मुसलमान बन्धुओ ने इसे पढा था या तो वह स्वय या मौलाना ओबेदुल्ला खा को बुलाकर हमसे शास्त्रार्थ कराते और जब कुरान ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध हो जाता तो इस सिद्धान्त के अनुसार कि "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। न केवल हम ही अपितु अनेका व्यक्ति कुरान को ईश्वरीय पुस्तक मानकर उसका सम्मान करने को तैयार हो जाते। उन कुरान को ईश्वरीय पुस्तक मान लेने वालो के बाप और औलाद तो मुसलमाम होते या न होते किन्तु वह स्वय तो हो ही जाते। परन्तु खेद है कि हमारे इस निमन्त्रण का उत्तर शास्त्रार्थ के लिये स्वीकृति मे न दिया जाकर सैकडो पत्रो द्वारा धमकियो मे दिया गया।

जिन लोगो को यह पूर्ण विश्वास है कि कुरान ईश्वरीय पुस्तक है और जो कोई उसे चैलेंज करेगा अन्ततोगत्वा उसे मुसलमान होना पडेगा, तब तो उन्हे चूकना ठीक नही अपितु कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करके खुदा की कुरबत (निकटता) प्राप्त करनी चाहिये और अनेक मेरे जैसे भटके हुए कुरान, हजरत मौहम्मद की पैगम्बरी और इस्लाम से मुनकिर काफिरो को हजरत मौहम्मद की उम्मत और दीने इलाही मजहबे इस्लाम मे लाने का सवाब हासिल करना चाहिये। ऐसा न करके धमकियो पर उतर आना तो ओबेदुल्ला खा और उसके अनुयायियो तथा समर्थको की सैद्धान्तिक निर्बलता है और यह सिद्ध करता है कि उन्हें स्वय ही कुरान के ईश्वरीय होने का विश्वास नही अपितु केवल अपनी मान्यताओ के पक्षपात के कारण वह धमकिया देते है।

इसके लिये मेरा मुसलमान बन्धुओ से यह निवेदन है कि वह अपने इन मजहबी प्रवक्ताओ को यह कहे कि वह इस प्रकार की सार्वजनिक घोषणाये न किया करे और अपनी मान्यताओ को अपने तक ही सीमित रक्खे। घोषणाये और चैलेंज करेंगे तो उन घोषणाओ को सिद्ध करना पडेगा और चैलेंज के उत्तर मे मिलने वाली दावत को सच्चे मन से स्वीकार कर शास्त्रार्थ के लिये तैयार होना और अपनी घोषणा को सत्य सिद्ध करना होगा। धमकिया देना समझदार और शिष्ट लोगो का कार्य नही है, यह तो बर्बर और जगली लोगो का कार्य है।

हम लोग वेद को ईश्वरीय ज्ञान का ग्रन्थ मानते है तो प्रत्येक समय उसे सिद्ध करने के लिये तैयार रहते है और इसके लिये अत्यन्त स्पष्ट शब्दो मे यह घोषणा करते है —

नगाडा धर्म का बजता है, आये जिसका जी चाहे।
सदाकत वेद अकदस आजमाये, जिसका जी चाहे॥

सदैव ही आर्य जनो ने शास्त्रार्थ के लिये खुले मच पर अन्य मतावलम्बियो का आह्वान किया है। हमारी तो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दो मे स्पष्ट घोषणा है कि "मनुष्य का जन्म ही सत्यासत्य के निर्णय के लिये है।" यह घोषणा नितान्त आधुनिक भी नहीं है अपितु उपनिषदो मे इस प्रकार के शास्त्रार्थों का स्पष्ट वर्णन है। मण्डन मिश्र तथा आचार्य शकर का शास्त्रार्थ तो इतिहास प्रसिद्ध है ही इसके अतिरिक्त भी आचार्य शकर के अनेकानेक शास्त्रार्थ जैनो और बौद्धो से हुए थे।

हम आर्य समाजी लोग तो बिना तर्क की कसौटी पर कसे हुए कुछ भी मानने को तैयार नही होते। यहा तक कि जिस वेद को हम ईश्वरीय और स्वत प्रमाण-ग्रन्थ मानते है, उसके लिये भी हमारी मान्यता तर्क पूर्वक खोज करने की है। यस्तर्केण वेदानुसन्धत्ते। परन्तु अब तो विज्ञान का युग है। आजकल कोई भी शिक्षित व्यक्ति किसी बात को भी विज्ञान की कसौटी पर कसे बिना मानने को तैयार नही। मुसलमानो मे भी बहुत बडी सख्या ऐसे लोगो की है किन्तु मुस्लिम समाज के वातावरण मे वह अपने विचारो को प्रगट करते हुए घबराते हैं। सत्यता यह है कि विचार और तर्क करने को वही रोका जाता है, जहा मान्यता भ्रान्त तथा मिथ्या होती है। अन्य पक्ष वाले तर्क पूर्वक विचार करने को प्रतिबन्धित नही करते अपितु सराहते अथवा प्रोत्साहित करते है।

मुसलमानो की तो दशा यह है कि दूसरो को तो मौलाना ओबेदुल्ला खा की भाति चैलेंज करे और स्वय दूसरो की सदभावना पूर्ण अपील पर भी भलमनसाहत के साथ विचार करने को तैयार न होकर धमकिया पर उतर आये। पिछले दिनो हमने एक लघु पुस्तिका 'मुसलमान बन्धुओ विचार करो, अयोध्या मे रामजन्म मन्दिर या मस्जिद शीर्षक से प्रकाशित की जिसे पढकर किसी मुसलमान की मजहबी कढी मे उबाल आया और उसने एक लम्बा पत्र हम लिख मारा किन्तु अपना नाम पता न देकर अपने आपको 'बाबरी मस्जिद का एक सिपाही लिखा।

हमने उस पत्र की चित्र प्रतिलिपि कराकर एक पत्र प्रधान मन्त्री को भेजा। सवश्री राष्ट्रपति महोदय, लोक सभा अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री को भी प्रधान मन्त्री को लिखे पत्र की प्रतिलिपि के साथ उस पत्र की प्रतिया भेजी। साथ ही वह पत्र प्रेस को भी भेज दिया गया। बिजनौर के साप्ताहिक प्रसाद के फून मे वह छपा तो किसी दीनदार ने इस पत्र के प्रधान सम्पादक और उनके पुत्र को भी गोली मार देने की धमकी से भरा पत्र भेजा। इसका अर्थ यह है कि वह चाहे जो कहे और करे किन्तु हम अपील भी न करे और शासन तथा देशवासियो को इस प्रकार की गतिविधियो से

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता (३)

—आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

स्वामी जी की विचार-धारा से जहां महात्मा गांधी ने प्रबल प्रेरणा ग्रहण की थी वहां भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने भी उनके सुधारवादी आन्दोलन में खुलकर साथ दिया था। भारतेन्दु जी तो स्वामी जी से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने उनका नाम अपनी 'कवि बचन सुधा' नामक पत्रिका के सम्पादक-मण्डल में भी समाविष्ट कर लिया था। इस पत्र में स्वामी जी के कार्यों का विवरण भी यदा-कदा प्रकाशित होता रहता था।

महर्षि दयानन्द ने जिन दिनों आर्यसमाज की स्थापना की थी, तब देश में उर्दू का बोल-बाला था और पत्र-पत्रिकाएं भी प्राय उर्दू में ही प्रकाशित होती थीं। सर्व प्रथम आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही देश में हिन्दी के प्रचार और प्रसार को विशेष सहयोग मिला। इसका सुपुष्ट प्रमाण डा० रामरत्न भटनागर के शोध प्रबन्ध के इस उद्धरण से मिलता है—"उर्दू के मध्य में हिन्दी की नींव दृढ़ करने वाली संस्था थी आर्य समाज। अपने मासिक पत्रों तथा समाचार पत्रों के प्रकाशन के द्वारा उसने हिन्दी के प्रभावशाली पृष्ठपोषण का कार्य किया।

सर्व प्रथम सन १८७० में शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश) से मुन्शी बख्तावर सिंह ने 'आर्य दर्पण' नामक साप्ताहिक पत्र प्रारम्भ किया और उसके बाद से अनेकों पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आर्य समाज की ओर से होता चला आ रहा है।" इस उद्धरण से यह सिद्ध होता है कि आर्य समाज की संस्थापना से लगभग ५ वर्ष पूर्व ही महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित होकर मुन्शी बख्तावरसिंह ने इस साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। इन्हीं बख्तावर सिंह ने सन १८७५ में 'आर्य भूषण' नामक मासिक भी निकाला था। 'वैदिक यन्त्रालय' अजमेर के व्यवस्थापक और महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य श्री मनीषी समर्थदान ने अजमेर से सन १८८९ में 'राजस्थान समाचार' पत्र का सम्पादन और प्रकाशन भी किया था। महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को 'आर्य भाषा' के गौरवपूर्ण अभिधान से अभिषिक्त करके उसे सर्वथा नई विचार-भूमि प्रदान की थी। वे अपनी भाषा को साहित्यिक दृष्टि से अलंकृत नहीं करते थे, प्रत्युत एक समाज-सुधारक का दृष्टिकोण ही उनकी समस्त कृतियों में परिलक्षित होता है।

एक बार पंजाब के किसी सज्जन ने उनके समस्त ग्रन्थों का उर्दू में अनुवाद करने की उनसे अनुज्ञा मांगी तो उन्होंने बड़े प्रेम से जो उत्तर उसे दिया था, वह आज भी हिन्दी की स्थिति को अत्यन्त दृढ़तापूर्वक प्रस्तुत करता है। उन्होंने लिखा था—"भाई, मेरी आंखें तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा को समझने और बोलने लगेंगे। जिन्हें सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी वे इस आर्य भाषा का सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे। अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करते हैं।"

वास्तव में महर्षि दयानन्द की यह भावना अक्षरशः चरितार्थ हुई और देश के कोने-कोने में उनके क्रान्तिकारी विचारों को जानने और समझने के लिए ही उनके अनेक भक्तों ने आर्यभाषा पढ़ी थी। हिन्दी के व्यवहार, प्रचार तथा प्रसार के प्रति वे कितने जागरूक रहते थे इसका ज्वलन्त प्रमाण उनका वह पत्र है जो उन्होंने ७ अक्तूबर, १८७८ को दिल्ली से श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को लिखा था—"अब की बार भी वेदभाष्य के लिफाफे पर देवनागरी नहीं लिखी गयी, इसीलिए तुम बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि से कहो कि अभी इस पत्र के देखते ही देवनागरी जानने वाला एक मुन्शी रखलें। जिससे कि काम ठीक-ठीक से हो, नहीं तो वेदभाष्य के लिफाफों पर रजिस्टर के अनुसार ग्राहकों का पता किसी देवनागरी जानने वाले से लिखवा लिया करें।"

महर्षि के उक्त शब्द लगभग एक शती पूर्व के हैं। यह सही है कि देश की जनता ने महर्षि दयानन्द की इस भावना का सच्चे हृदय से आदर किया, किन्तु राजनीति से आक्रान्त वातावरण में आज भी जहां तहां हिन्दी विरोध का स्वर उभरता रहता है। जो लोग अहिन्दी भाषियों की असुविधा की दुहाई देकर हिन्दी के विकास का मार्ग अवरुद्ध करते रहते हैं वे यह कैसे भूल जाते है कि १८६९ के काशी शास्त्रार्थ के अनन्तर आर्य समाज की स्थापना से तीन वर्ष पूर्व सन् १८७२ में महर्षि दयानन्द जब कलकत्ता गये थे तब राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, जस्टिस शारदाचरण मित्र और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर प्रभृति सज्जनों ने उनसे संस्कृत में अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने के बजाय हिन्दी को अपने प्रचार का माध्यम बनाने का अनुरोध किया था। महर्षि दयानन्द उस समय विश्व-कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के विशेष अनुरोध पर कलकत्ता गये थे।

५ फरवरी, सन १८७० को प्रयाग के कुम्भ मेले में उनसे महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर की भेंट हुई थी। अपने कलकत्ता प्रवास में महर्षि दयानन्द ने अन्य सभी सज्जनों के समक्ष वहां पर एक 'वेद विद्यालय' की संस्थापना का प्रस्ताव भी रखा था, जो सन १८८३ में स्थापित हो सका था। किन्तु कुछ दिन बाद ही वह बन्द हो गया। यह भी एक विचित्र संयोग की बात है कि महर्षि दयानन्द ने इन सज्जनों के अनुरोध पर अपनी योग-साधना का जो विशद वर्णन प्रस्तुत किया था, उसे हम उनकी प्रथम जीवनी कह सकते हैं। यह कहानी महर्षि ने उस समय कलकत्ता में सुनाई थी जब वे सन १८७२ में कलकत्ता गये थे। उस समय तक आर्य समाज की स्थापना भी नहीं हुई थी। आर्य समाज की स्थापना के पश्चात सन १८७५ में पूना के कुछ सज्जनों के आग्रह पर भी स्वामी जी ने अपना परिचय संक्षेप में प्रस्तुत किया था। इसे हम स्वामी जी की द्वितीय जीवनी कह सकते हैं।

महर्षि की तृतीय जीवनी बंकिमचन्द्र चटर्जी के 'बंग दर्शन' नामक पत्र में सन १८७८ में प्रकाशित हुई थी। इसके अनन्तर हिन्दी भाषा में लिखित स्वामी जी की 'आत्मकथा' अंग्रेजी में अनुदित होकर १८७९-८० में 'थियोसोफिस्ट' नामक पत्र में प्रकाशित हुई थी।

स्वामी जी के निधन के उपरान्त सन १८८४ में प्रोफेसर मैक्समूलर के 'बायग्राफिकल एस्सेज' नामक-संग्रह में भी उनकी यह जीवनी समाविष्ट की गई थी। उसी वर्ष इंगलैण्ड के 'पाल माल गजट' में भी उनकी एक जीवनी छपी थी। यह सब स्वामी जी के विचारों से अवगत होने के लिए उन महानुभावों के प्रयत्नों से ही सम्भव हो सका था, जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं थी।

(क्रमशः)

स्वातन्त्र्य गौरवम्

(गीतिका)

—'पद्मश्री' डा० कपिलदेव द्विवेदी
निदेशक विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी)

(१)

स्वतन्त्राप्तिरेषा सदा सौख्य-दात्री,
भयाना प्रहर्त्री गुणाना प्रदात्री ।
त्वमेवासि लोके सदा मानदात्री
सदा कीर्तिदात्री सदा मोददात्री ॥ स्वतन्त्रा०॥

हिन्दी अनुवाद — देश की स्वतन्त्रता सदा सुख देने वाली है, यह सकट को दूर करती है और गुणो की बृद्धि करती हैं, इससे ही ससार का सम्मान होता है। यह यश और प्रसन्नता देने वाली है।

(२)

न त्वत्त पर मानद लोकमध्ये,
न त्वत्त पर सौख्यद किंचिदस्ति ।
त्वमेवासि लोकस्य चैतन्य-दात्री,
सदा प्रेरणाम् सदा शक्ति-स्रोत ॥ स्व० ॥

इस स्वतन्त्रता से बढकर ससार म और कोई वस्तु सम्मान देने वाली नही है और न इसके अतिरिक्त कोई सुख देने वाला है। यह स्वतन्त्रता ही देश मे चेतना भरती है, देशवासियो को प्रेरणा देती है और सदा शक्ति का स्रोत है।

(३)

विना त्वा नृणा जीवन मोघमेव
विना त्वा गति सर्वदा दु खदैव ।
विना त्वा शिरस्थ सदा मृत्युरेव
विना त्वा विकासो न हर्षाप्तिरेव ॥ स्व० ॥

स्वाधीनता के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है, इसके बिना मनुष्य की दु खद गति होती है। इसके अभाव मे मृत्यु सदा शिर पर सवार रहती है। इसके बिना न विकास होता है और न जनता म हर्ष होता है।

(४)

न यत्रास्ति ते दीधिति सौख्यमूला
न यत्रास्ति ते श्री सदा कीर्तिशीला ।
न राष्ट्र न देश प्रदेशो विशेषो
विना त्वा श्रित कीर्तिमिष्टा श्रिय वा ॥ स्व० ॥

जहां स्वतन्त्रता की सुखद किरणे नही होती है और कीर्ति देने वाली इसकी श्री नही होती है वह राष्ट्र, वह देश और वह प्रदेश कभी अभीष्ट कीर्ति प्राप्त नहीं कर सकता है।

(५)

त्वमेवासि सौख्यस्य मूल समन्तात
त्वमेवासि कीर्त्यादिमूल पुरस्तात् ।
त्वमेवासि मानस्य शक्तेश्च हेतु
त्वमेवासि शस्त्र त्वमेवासि हेति ॥ स्व० ॥

स्वतन्त्रता ही सभी सुखो का मूल है। यही देश की कीर्ति का आधार है। यही देश के सम्मान और शक्ति का साधन है। यही देश के लिए महान् शस्त्र और अस्त्र हैं।

(६)

त्वदीये पदाब्जे मुदा देशभक्ता
बलिं दत्तवन्तो मुद प्राप्तवन्त ।
त्वदर्चापरा ये नरा मातृ-भक्ता
सदा स्वास्तु तेषां यशो राजतेऽत्र ॥ स्व० ॥

स्वतन्त्रता के लिए देशभक्तों ने प्रसन्नता के साथ अपने जीवन की आहुति दी और प्रसन्नचित्त हुए। मातृभूमि की पूजा में जो न्यौछावर हुए हैं, उनका यश संसार मे सदा अमर रहेगा।

(७)

त्वमेवासि दुर्गा, त्वमेवासि लभ्या
अधृष्या त्वमेवासि दुर्धर्षरूपा ।
सदा स्नेह स्रोत, सदा शक्तिस्रोत,
त्वदीया कृपा याचते सर्व लोक ॥

यह स्वाधीनता अजेय है यही प्राप्य है। यही अधर्षणीय है और उग्ररूप है। यह प्रेम और शक्ति का स्रोत है। सारा ससार इस स्वाधीनता की कृपा दृष्टि चाहता है।

(८)

सदा भारते ते कृपा सतता स्यात,
त्वदर्चापरा भारतीया भवेयु ।
विहाय स्वक स्वार्थजात जघन्य
मुदा जीवन तेऽर्पयेयु पदाब्जे ॥ स्व० ॥

यह स्वाधीनता भारत भूमि मे सदा विद्यमान रहे। सभी भारतीय इस स्वाधीनता की पूजा करें। वे अपने तुच्छ स्वार्थ भाव को छोडकर प्रसन्नतापूर्वक स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपना जीवन अर्पण कर दे।

पृथ्वी के बाहर भी जीवन है (४)

—विश्वनाथ प्रसाद, विद्यावाचस्पति, कोरबा

अन्त में पेंसिल ने अपनी अन्तिम रेखा खींची और वह उस प्रकार रुक गई जैसे प्रिंटर किसी डिस्क से वांछित फाइल को प्रिंट करने के बाद रुक जाता है। उसके बाद उसकी बांह कंधे से लेकर उंगलियों तक फिर से सामान्य हो गई।

"आप को डर नहीं लगा ?"

"नहीं ! मुझे तो कागज पर पेंसिल का चलना भी पूरी तरह सामान्य लग रहा था।"

चन्द एक घंटे बाद रेखांकन का यह सिलसिला पुनः शुरू हो गया। फिर से कागज अकल्पनीय चिन्हो और सितारो से रेखाचित्रो से भर गया। लेकिन इसका अन्तिम दौर अप्रत्याशित था। कागज पर बच रहे खाली स्थान पर रूसी भाषा के अक्षर उभरने लगे—के, ओ, वी—। इन अक्षरो को जोड़ने पर कोवेस्पुल शब्द बन गया। "आखिर इस का क्या अर्थ है ? कलारा सोचने लगी। कोई देश या कोई नगर, कोई वस्तु अथवा कोई नाम ?" हां, उसे प्रत्युत्तर मे सुनाई पड़ा।

"कलारा, आपको इस सबके बारे में कैसे पता चला ?

"यह सब जानकारी अत्यन्त साधारण ढंग से प्राप्त की गई थी"—क्या तुम इंसान हो ?" 'नहीं'—तुम कहां हो ? "बहुत दूर"। क्या तुम अपने ग्रह से बोल रहे हो ?

'जी हां, तुम्हारे ग्रह का क्या नाम है ?

'पुआतोस्तोन'।

कोवेस्पुल प्रतिदिन 'आने' लगा। वह कलारा से उसके कार्यालय मे या घर पर रेखांकन करवाता और कभी कभी तो यह काम घंटों चलता रहता।

—मैंने कोवेस्पुल से यह पूछने की कोशिश की कि वे लोग ऐसी तीव्र पारस्परिक क्रिया किस प्रकार सम्पन्न करते है। उसने संक्षेप में उत्तर दिया "हम गुरुत्व का इस्तेमाल करते हैं।

—कोवेस्पुल ने उत्तर दिया 'हम न केवल तुम्हारे बारे में जानना चाहते हैं बल्कि यह भी चाहते हैं कि तुम भी हमारे बारे में जानकारी प्राप्त करो।" यह पता चला कि वे लोग अन्य दूसरी सभ्यताओ के साथ बातचीत करने के लिए इस चित्रलिपि का इस्तेमाल करते है। मैंने पूछा—क्या ऐसी अनेक सभ्यताएं हैं ? उत्तर मिला "ऐसी चन्द एक सभ्यतायें है।'

—कोवेस्पुल ने बताया कि सम्पर्क-सूत्र स्थापित करने के लिए उन्होने काफी समय तक सम्पूर्ण ग्रह (पृथ्वी) पर उपयुक्त पात्र की खोज की थी। ऐसा लगता है कि ऐसे व्यक्ति में भिन्न विशेषताओ का होना इसके लिए आवश्यक शर्तों में से है।

—कलारा ने बताया कि दूसरे ग्रह के ये निवासी साक्षात्कारो के विरुद्ध न थे।

—कलारा ने कोवेस्पुल से प्रश्न किया—क्या तुम्हारे किसी प्रकार के स्टेशन और उपकरण पृथ्वी पर कार्यरत हैं ?

—हा, वे पर्वतीय क्षेत्रो मे स्थित है।

—क्या हम इन्हे खोज सकते हैं ?

—इसकी कोई जरूरत नहीं।

—क्या दूसरे ग्रहो के प्रतिनिधि भी हमारे ग्रह पर नजर रखते हैं ?

—वे आप के ग्रह पर मौजूद हैं।

मुझे हड़बड़ाए और ऐसे नागरिकों से कई बार बातचीत करने का मौका मिल चुका है जो आप की बांह पकड़कर आपसे घर में विचरण करने वाली प्रेतात्मा को देखने का आग्रह करते हैं या अज्ञात उड़नशील वस्तुओं की चर्चा करने के आरोप से अपना बचाव करने के लिए दौड़कर सीधे सम्पादकीय कार्यालयो में आ धमकते हैं या फिर मास्को के आकाश में किसी उड़न-तश्तरी के दिखाई दे जाने की प्रतीक्षा करते है और मुझे इन लोगो से निपटना आता है।

(मानें या न माने दूसरे ग्रह से सन्देश प्राप्ति, भेंटवार्ता ए० पोलिका पौव, प्रकाशित सोवियत भूमि, अगस्त १९९१)

वह समय दूर नहीं जब अनेक ग्रहो के अन्तरिक्ष वैज्ञानिको की खोजो से सारी सृष्टि को लाभ होगा। उस समय समाज की समस्यायें आसानी से सुलझ जायेंगी और मानव का सम्पूर्ण विकास हो जायेगा वह सक्षम होगा कि ईश्वर की इस विशाल सृष्टि में थोड़े समय में आ जा सके। विश्व भर में सुख शांति रहेगी और ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना प्रत्येक व्यक्ति अनिवार्य रूप से करता रहेगा। ■

देश के पहरेदारों से

(पृष्ठ ५ का शेष)

भी अवगत न करायें। हम अपनी सरकार और समाज को स्पष्ट शब्दो मे कह देना चाहते है, वह सावधान हो और अपनी जागरूकता का परिचय दें, नहीं तो निकट भविष्य में ही भारत को भयंकर दुर्दिन देखने पड़ेंगे।

बात यहीं तक नही है। यदि हिन्दू काफिरो तक ही हो तो भारत के नेता अपनी धर्मनिरपेक्षता का परिचय देते रहें। हमारे जैसे साम्प्रदायिको को मार डाला जाय तो कोई बात नहीं, नेताओ की धर्मनिरपेक्षता सुरक्षित रहे किन्तु बात बहुत आगे तक जा चुकी है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, मुसलमानो में भी पर्याप्त संख्या मे ईमानदार और विचारक लोग है किन्तु मुस्लिम समाज के घोर साम्प्रदायिकता से भरे वातावरण मे वह लोग मुंह खोलने का साहस नही कर पाते। यदि करें तो उनको भी धमकियां तथा मौत का भय प्रस्तुत कर दिया जाता है।

सन् १९८५ मे ही नजीबाबाद के एम० सुहेल. 'शाद' का एक पत्र १० नवम्बर, ८६ ई० को 'बिजनौर टाईम्स' मे पाकिस्तान के खिलाफ उठाओ सख्त 'कदम' शीर्षक से प्रकाशित हुआ तो नजीबाबाद के ही एक वकील ने उन्हें बुरा-भला कहा और धमकियां दी। इससे यह स्पष्ट है कि वकील साहब 'पंचमागी' गिरोह के सदस्य हैं। यह तथ्य है कि नजीबाबाद मे 'पंचमागियों का एक संगठित गिरोह है, जो पाकिस्तान के विरुद्ध और भारत के हित में एक भी शब्द सुनने को तैयार नहीं। शासन को इस विषय मे सावधान रहना चाहिये। साथ ही नगर की देशभक्त जनता भी सचेत रहे। कभी भी विस्फोट सम्भव है।

इससे पहले सन् १९७१ ई० में बंगला देश के युद्ध के समय भी मैंने इस विषय मे लेखनी उठाकर शासन को सावधान किया था, जिस पर मेरे विरुद्ध नजीबाबाद मे मुसलमानो की एक महती सभा हुयी थी और अब मैं निशाने पर हू ही। यह बात केवल नजीबाबाद की ही है, ऐसी बात नहीं। न्यूनाधिक सम्पूर्ण भारत मे बिरादराने वतन की सब स्थानो पर ऐसी ही गतिविधियां है। इसलिये :—

एक बात कहनी है हमको देश के पहरेदारो से।
संभल के रहना अपने घर में, छिपे हुये गद्दारों से।।

वैदिक चिन्तन और श्रावणी उपाकर्म

डा० महेश विद्यालंकार

भारत ऋषि और कृषि प्रधान देश रहा है। यहां के पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैयक्तिक जीवन में पर्वों का विशेष महत्त्व रहा है। यहां के मनीषियों ने पर्वो का विकास और सम्बन्ध ऋतुओं, फसलों, महापुरुषों के जीवनों, ऐतिहासिक घटनाओं तथा सामाजिक संगठनों से जोड़ा है। पर्व जीवन में आए हुए नैराश्य, थकान, एकरसता, शिथिलता, उत्साहहीनता आदि को दूर करते हैं। साथ ही जीवन को सुखमय, प्रेममय, उल्लासपूर्वक एवं संगठित होकर जीने की प्रेरणा और सन्देश देते हैं। इसीलिए भारत उत्सवों व पर्वों का देश कहलाता है।

वैदिक चिन्तन परम्परा में श्रावणी पर्व का महत्वपूर्ण स्थान व उपयोगिता है। यह वैदिक पर्व है। इसका सम्बन्ध पूर्वकालिक समय में वेद स्वाध्याय तथा अध्ययन अध्यापनसे रहाहै। वर्षाकालीनचतुर्मास में कृषि कर्म विशेष नहीं होता था। व्यापार और आवागमन स्थगित रहते थे। तपोवनों एवं आश्रमों से साधक, ऋषि-मुनि, वानप्रस्थी, साधु-संन्यासी आदि वर्षा के कारण गृहस्थियों के पास आजाते थे। गृहस्थियों को विद्वानजन धर्मोपदेश, ज्ञानचर्चा परिवार निर्माण, ईश्वर भक्ति आदि के उपदेश देकर जनता का मार्ग प्रशस्त करते थे। वेद परायण यज्ञ, पाठ चिन्तन-मनन चलता रहता था। श्रावणी के दिन से स्वाध्याय-यज्ञ का आरम्भ होता था। इसी कारण इसको उपाकर्म भी कहते हैं। बाद को ऋषि-मुनि तपस्वियों के सहयोग से चलने वाले इस कार्यक्रम का नाम ऋषि तर्पण भी पड़ गया। ऐसी मंगलमयी, जीवनोपयोगी परम्परा से मानव को स्वाध्याय एव सत्संग करने का अवसर मिल जाता था। स्वाध्याय और सत्सग मानव-जीवन निर्माण के मूलभूत विधायक तत्व हैं। इसकी महिमा से शास्त्र और व्यक्ति भरे पड़े हैं। तपस्वी, त्यागी, साधुजनों के पास बैठकर मानव-जीवन को सच्ची सुख-शान्ति प्राप्त होती है। इसी के लिए जीवन अनन्तकाल से भटक रहा है।

वैदिक चिन्तन मे स्वाध्याय की महत्ता उपयोगिता और प्रभाव की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है। स्वाध्याय प्रत्येक वर्णाश्रम के व्यक्ति के लिए अनिवार्य है। स्वाध्याय मन-बुद्धि और आत्मा का भोजन है। विद्या समाप्ति पर आचार्य शिष्य को स्वाध्याय परम्परा को जीवित रखने का उपदेश और सन्देश देता है—स्वाध्यायान्मा प्रमदः स्वाध्याय में कभी प्रमाद न करना। स्वाध्याय को जीवन अग बनाकर ही सन्मार्ग पर चल सकोगे। स्वाध्याय का सम्बन्ध अपने को पढ़ना, जानना और अपने दुर्गुणों, दुर्व्यसनों तथा दुःखों को जानने से भी है। स्वाध्याय की महिमा शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में बड़े विस्तार से दी गई है। स्वाध्यायशील व्यक्ति सदा सुख की नींद सोता है। स्वाध्याय से व्यक्ति की प्रवृत्ति अन्तर्मुखी हो जाती है। मन एकाग्र होने लगता है। स्वाध्याय करने वाला आत्मचिकित्सक बन जाता है। उसकी इन्द्रिया संयम की ओर चल पड़ती हैं। स्वाध्यायशील को भौतिक सुख साधन प्रभु आनन्द के समक्ष तुच्छ जान पड़ते हैं। स्वाध्याय करने वाला शूद्रत्व से ब्राह्मणत्व की ओर अज्ञान से ज्ञान की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर निरन्तर अग्रसर होने लगता है। स्वाध्याय से आत्मबोध होता है। इस प्रकार स्वाध्याय परम्परा को जीवित, सार्थक तथा व्यावहारिक बनाए रखने में श्रावणी उपाकर्म का वैदिक चिन्तन में विशेष महत्व रहा है।

कालान्तर में श्रावणी का विकृत एवं बाह्यरूप रक्षाबन्धन के रूप में दृष्टिगोचर होने लगा। राजपूत काल में कुलीन नारियां अपनी रक्षा के निमित्त वीरों के हाथ में राखी बांधा करती थी। वीर पुरुष उन्हें अपनी बहन मानकर जीवन पर्यन्त उनकी रक्षा किया करते थे। आज भी उसी रस्म, और लोकाचार के कारण सम्पूर्ण भारत में बहिनें भाइयों को राखी बांधती हैं। किन्तु आज बदल गए, धागे बदल गए, जीवन दृष्टि बदल गई, परिस्थितियां बदल गई। आज इन पर्वों में पूर्व जैसा उल्लास, प्रेम, अपनत्व और भावना नजर नहीं आती है। इसके मूल में कारण है कि आज का व्यक्ति अहंवादी, भोगवादी स्वार्थी और व्यावसायिक बनता जा रहा है। इसी कारण जीवन सौन्दर्य क्षीण होता जा रहा है।

इस पर्व की एक भावना और प्रेरणा यह भी रही है कि हम भारतीयों पर वेद और परम्परा जीवित रखने का भार है। यह दुर्लभ, असम्भव, अमूल्य प्रभु वाणी भारतभूमि को वरदान के रूप में मिली है। इस वेद वाणी का चिन्तन-मनन, उपदेश, सन्देश और जीवन दर्शन, अपने मे सर्वांगीण एवं कायाकल्प करने वाला है। किन्तु दुर्भाग्य और महापतन है कि हम भारतीय इस दैवी धरोहर से अनभिज्ञ तथा उदासीन होते जा रहे हैं। आज यत्किंचित् कोई वेद की बात करता है तो वह आर्य समाज है। जो कि वेदकथा, वेदों द्वारा यज्ञ, वेद मन्दिर वेद सम्मेलन आदि के द्वारा रक्षा और परम्परा का निर्वाह कर रहा है। ऋषि ने जो आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य वेद प्रचार एवं अज्ञानता, पाखण्ड गुरुडम जड़ता आदि दूर करना दिया था। उससे आज आर्यसमाज हट तथा भटक गया है। परिणाम सामने है कि ईंट पत्थर, भवन, पद, प्रदर्शन, जलसे, जलूस आदि सीमित होता जा रहा है। यही मूल में भूल हो रही है। यह स्थिति चिंतनीय है। मात्र रूखे सूखे सत्संगों में वाचिक वेद की ज्योति जलती रहे" को नारा लगाकर अपने उद्देश्य को पूरा समझ रहे हैं। ठोस, व्यावहारिक, प्रगट रूप में, वेद प्रचार के लिए, वेदों के चिन्तन को जीवन से जोड़ने के लिए, वेदों को जीवित रखने के लिए, वेदो के सन्देश को जनमानस तक पहुंचाने के लिए हम आर्य समाजी कहलाने वाले महत्वपूर्ण एवं स्मरणीय कार्य नहीं कर पा रहे हैं। इसके लिए सभी संगठनो को, समाजों को, गुरुकुल व डी०ए०वी० संस्थाओं को, आर्य समाज मन्दिरों को, ऋषि भक्तों को मिल बैठकर, ऋषि के दर्द को महसूस करने का दृढ़ संकल्प ले सकें तो श्रावणी उपाकर्म की सार्थकता होगी। नहीं तो जाने कितनी श्रावणियां आई और चली गई।

यही इस पर्व की प्रेरणा और सन्देश है कि उठो, जागो और वेदों की ओर लौटो ? वेद का चिन्तन ही मानव को मानव बनाने में पूर्ण सफल और उपयोगी है। मानव बिना आध्यात्म-चिन्तन के अधूरा है। वेद का चिन्तन मानव को पूर्णता की ओर ले चलने में समर्थ है। इसलिए वेदों के प्रति हम भारतीयों का विशेष कर्त्तव्य तथा दायित्व है। वेदों की रक्षा, परम्परा, चिन्तन उद्देश्य सन्देश आदि को आगे बढ़ाना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है।

स्व० लाजवन्ती भगवानदास परावर्तन स्थिर निधि



दिल्ली के प्रमुख समाज सेवी श्री राजेश्वर जी ने अपन स्व० माता पिता की स्मृति को स्थायी बनाय रखने के लिए सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे १ लाख नौ हजार दो सौ रुपए मे एक स्थिर नि ध स्थापित की है। इस निधि के ब्याज से परावतन के कार्यों को जारी रखा जायेगा। श्री राजश्वर जी का यह सकल्प प्रशसनीय है।

शोक समाचार

सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य और कट्टर आयसमाजी श्री रामअवतार आर्य का लम्बी बीमारी के उपरान्त ३० ७ ९२ को बरेली मे निधन हो गया है। श्री रामअवतार के निधन से आयसमाज को गहरी क्षति पहुची है। सार्वदेशिक परिवार दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रार्थना करता है।

मन्त्री—सार्वदेशिक सभा दिल्ली

आर्य समाज मदुरै का निर्वाचन

दि० २१ ६ ९२ को रविवार के दिन सवेरे १० ३० बजे विल्लापुरम, अरूप्पुक्कोटटै रोड पर स्थित आर्य समाज भवन म यज्ञ तथा श्री गायत्री महा मन्त्र आप के साथ साधारण सभा प्रारम्भ हुई। श्री आर एन रामलिगम न अध्यक्षासन ग्रहण किया। दक्षिण भारत आर्य समाज के सगठक स्वामी नारायण स्वामी जी ने अग्रस्थान ग्रहण किया। वार्षिक रिपोट तथा आय व्यय के हिसाब के उपरात स्वामी नारायण स्वामी जी ने स्वय निर्वाचन-अधिकारी हु कर १९९२-९३ का नए पदाधिकारियो का निर्वाचन चलाया और निम्नलिखित नए पदाधिकारी चुने गए।

अध्यक्ष श्री आर एन रामलिगम उपाध्यक्षगण—श्री जी आर गोपाल राव श्री जे एस गगाराम सचिव—श्री के मासलामणि। उपसचिवगण—श्री एम एस राममूर्ति श्री एम एस तुलसीराम। कोषाध्यक्ष—श्री एस वेकटेश। पुस्तकपाल—श्र जी धनजयन।

पडित वन्देमानरम रामचन्द्रराव जी को मदुरै आय समाज के प्रतिनिधि के रूप मे दिल्ली सावदेशक आय प्रतिनिधि सभा के लिए चुना गया।

—जी आर गोपालराव सचिव

आवश्यकता है

आय समाज अनाज मण्डी शाहदरा दिल्ली ११००३२ के लिए एक सुयोग्य अनुभवी पुरोहित। भजनीक की शीघ्र आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार पारश्रमिक तथा रहने की व्यवस्था समाज की ओर से होगी। शीघ्र मिलें अथवा पत्र द्वारा सूचित कर।

मन्त्री आयसमाज अनाज मण्डी शाहदरा

मधुमेह और प्राकृतिक चिकित्सा

डा० सुमेरचन्द गुप्ता

मधुमेह के विषय मे हम यह समझ बैठे है कि यह रोग जाने वाला नही है। प्रकृति की ओर लौटने से इस रोग से कैसे छुटकारा मिलता है यह पढिये इस लेख मे

आज के इस युग मे मधुमेह का रोग बहुत बढता जा रहा है। यह रोग गावो तथा शहरो मे इतना बढ रहा है कि लोग इससे तग आ गये है। आज से कुछ समय पहले इस रोग का इतना बोल-बाला नही था, कभी सुनने मे भी नही आता था लेकिन आज के इस युग मे ज्यो-ज्यो विज्ञान तरक्की कर रहा है। भयकर रोगो का जन्म होता जा रहा है। और इतनी तेजी से यह रोग बढ रहे है कि डाक्टरो के पास इन रोगो को जड से खत्म करने का इलाज है ही नही। यह रोग इतना भयकर है कि इसके कारण आदमी अन्धा व नपु सक तक हो जाता है। और जिस व्यक्ति को यह रोग हो जाता हैं, डाक्टर उसे जीवनपर्यन्त इन्सुलीन लेने का परामर्श देते है। और यही कहते है कि यदि एक दिन भी रोगी ने यह बन्द कर दी, तो उसके अनेको दुष्प्रभाव शरीर पर पड सकते है। इस रोग के कारण व्यक्ति अपने को कमजोर महसूस क ना है।

चक्कर आना, आखो के आगे अन्धेरा आना, पैरो पर सूजन आना, बार-बार पेशाब आना, नजर कमजोर हो जाना, कोई फोडा फुन्सी हो जाये, उसका जल्दी ठीक न होना, बदन मे खुश्की आ जाना, सिर के बालो का कम हो जाना, भूख का अधिक लगना, यह सभी इस रोग मे विशेष तौर से होते हैं।

यह रोग अधिक भोजन करने, चीनी, मेवे, मिठाईया मास-मछली अथवा शराब आदि पीने से हो जाता है। जो व्यक्ति बार-बार खाते हैं, बिना भूख के खाते है, चाय अधिक पीते है शरीरश्रम से नफरत करते है व देर से उठते है, धूप व ताजी हवा शरीर को नही लगने देते या सदैव चिन्ता से ग्रस्त रहते है, व कब्ज शरीर मे घर कर गई, इन सब कारणो से यह रोग पैदा होता है। इन किसी भी कारण से मधुमेह क्यो न हुआ हो, उसका विशेष मतलब क्लोम ग्रन्थि दुर्बल या शिथिल हो जाती है। यह ग्रन्थि इन्सुलिन बनाना बन्द कर देती है। इसलिए इन्सुलिन इन्जैक्शन के रूप म लेना पडता है।

इस रोग के विशेष लक्षण है—प्यास लगना, मूत्र का बार-बार आना, पेशाब का रग गढा पीला हो जाना पेशाब मे गन्ध आना। यह रोग विशेषतौर पर चर्बी के अधिक बढ जाने के कारण होता है।

इस रोग को प्राकृतिक खान-पान व रहन-सहन से बडी ही सुगमता के साथ ठीक किया जा सकता है। इसमे दो राय नही हो सकती कि यह रोग प्राकृतिक साधनो से अवश्य चला जाता है। इसके सैकडो रोगियो का इलाज मैन स्वय प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा किया है। यह रोग अवश्य जा सकता है, इसमे चिन्ता करने की कोई गुन्जाईश है ही नही।

अनेक दवाइया करा लेने के बाद भी जब रोगी को आराम नही हुआ, तो प्राकृतिक चिकित्सा से लाभ हुआ है, और सदा के लिए इस रोग से छुटकारा हो जाता है। इस रोग की परेशानी का कारण एलोपैथिक चिकित्सा स्वय इनसुलिन के सहारे जीवन भर भोगते है।

यदि हम इससे अपने आपको निराश कर बैठे, और यह मान बैठे कि यह रोग जाने वाला नही है, तो हम प्राकृतिक चिकित्सा की शरण लेकर रोग से छुटकारा प्राप्त करें।

इसके लिए योगासन, सुबह व साय की सैर तैराकी व नगे पाव घास पर चलना अति उत्तम है। घूमने का तरीका गहरा लम्बा सास लेते हुए, तेजी से टहले, मु ह बन्द रखे, नाक से सास ले, खुली हवा मे टहलें, प्राणायाम पीपल के पेड के नीचे बैठ कर करे आसनो मे चक्रासन, भुजगासन, शलभ आसन, मयूरासन, धनुरासन, पश्चिमोतान आसन, अर्धमत्स्य आसन, वज्र आसन, सर्वांगासन आदि विशेष लाभकारी है। आसनो को करने से क्लोम ग्रन्थि विशेष रूप से सबल होती है। इस रोग मे गर्म ठण्डा कटिस्नान, गर्म ठण्डा सेंक व लपेट, पाच मिनट गर्म तीन मिनट ठण्डा, एक समय मे तीन बार। मिट्टी की पट्टी, रीढ स्नान, एनिमा व मालिश भी अतिलाभकारी है। एनीमा कभी-कभी नीबू पानी मे भी लिया जा सकता है, ताकि आतो का सडा हुआ मल साफ हो जाए। (क्रमश)

ऋषि दयानन्द विद्या भवन की स्थापना

आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र मे आरम्भ से ही अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। जोधपुर मे भी आर्य समाज द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओ की अनेक उपलब्धिया रही है। नगर की बढती जनसख्या तथा भारतीय सस्कृति नैतिक मूल्यो तथा बालको के सर्वागीण विकास को महत्व देने वाली किसी ऐसी शिक्षण सस्था की आवश्यकता अनेक दिनो से अनुभव की जा रही थी।

इसी आवश्यकता को ध्यान मे रखकर आर्य समाज सरदारपुरा द्वारा आर्य समाज शास्त्री नगर शाखा (पी० एण्ड टी० कालोनी के पीछे) मे ३१ जुलाई १९९२ से ऋषि दयानन्द विद्या भवन नाम के विद्यालय का आरम्भ किया गया। इसमे अनुभवी प्रशिक्षित तथा योग्य अध्यापको के द्वारा पूर्व प्राथमिक स्तर की शिक्षा की स्तरीय व्यवस्था की गई है। हिन्दी तथा अग्रेजी दोनो भाषाओ के शिक्षण की सुचारू व्यवस्था के साथ साथ बालको के खेल कूद तथा उनके स्वस्थ्य मानसिक एव बौद्धिक विकास के लिए सर्वागीण प्रयास किये जायेग।

—सुखदेव गोयल
मन्त्री ऋषि दयानन्द शिक्षण सस्थान, जोधपुर

वैदिक धर्म स्वीकार किया

श्री शफातुल्ला निवासी मोहल्ला मोहम्मद बामिल पीलीभीत ने अपनी पत्नी खुशनूदी एव सात बच्चो के परिवार सहित, स्वच्छा से इस्लाम धर्म त्यागकर दिनाक ५-७-९२ को आर्य समाज स्टेशन राड पीलीभीत के तत्वावधान मे नगर के सैकडो गणमान्य व्यक्तियो के बीच शुद्धि करा कर वैदिक धर्म स्वीकारा। आर्य समाज के पदाधिकारियो श्री प्रकाश वीर जी, प्रधान, श्री रामप्रसाद जी आर्य उप प्रधान, श्री अश्वनी कुमार जी आर्य, श्री कृष्ण गोपाल जी मेहरोत्रा दोनो उपमन्त्री व अन्य आर्य विद्वानो ने परिवार को वैदिक अनुष्ठान करा कर वैदिक धर्म एव आर्य समाज के नियमो मे दीक्षित किया। एव तदनुसार आचरण हेतु परिवार के सदस्यो को व्रत धारण कराया।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व परिवार की वरिष्ठ पुत्री प्रीति बनकर इसी समाज की वेदी पर श्रीमती मजीत सिंह बनी थी।

सभी उपस्थित गण मान्य व्यक्तियो एव आर्य समाज के पदाधिकारियो द्वारा परिवार को सदभाव बचन द्वारा इस कृत्य हतु सराहा गया।

—मोहन लाल आर्य, मन्त्री

पं० क्षितीश वेदालंकार को जीवनपर्यन्त पैंशन

नई दिल्ली, १५-७-१९९२। प० क्षितीश वेदालकार जो लगभग १२ वर्ष आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मुख्य साप्ताहिक पत्र 'आर्य जगत्' के सम्पादक रहे पिछले एक वर्ष से अस्वस्थ चले आ रहे हैं इसलिये इन्होने आर्य जगत् मे कार्य करने की असमर्थता प्रकट की। इस समय उनकी आयु ७७ वर्ष है।

दिनाक १४-७-९२ मगलवार को सभा प्रधान श्री दरबारीलाल एव सभा-मन्त्री श्री रामनाथ सहगल उनके निवास स्थान पर उनको मिले। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री दरबारीलाल जी ने उन्हे दोशाला और उनकी धर्मपत्नी को एक साडी भेंट की। इसके साथ ही जून मास की पैन्शन भी उन्हे भेंट की। प्रधान जी ने कहा कि आपने आर्य जगत की जो सेवा की है, उसके प्रति हम कृतज्ञ है। हम आपको आपकी सेवाओ के प्रति हर मास की पहली तारीख को जीवन पर्यन्त आपके वेतन का ५० प्रतिशत भाग पैन्शन के रूप मे भिजवाते रहेगे।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एस० ११०४६/६२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१६-८-१६६२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ६३
R N 62('7 Licensed to post without prepayment License No U 93Post in N D P S O on 13, 14-8-1992



नेपाल में स्थित गुरुकुल विराटनगर का सामूहिक चित्र
(सार्वदेशिक सभा के सहयोग से आर्य समाज नेपाल द्वारा सचालित)

चारों वेदों का पारायण

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि स्वर्गीया पूज्या माता रामप्यारी जी की प्रेरणानुसार १६ अगस्त से ३० अगस्त तक वेद सप्ताह के उपलक्ष्य मे चारो वेदो का पारायण मेरे निवास ८ श्रीराम रोड सिविल लाइन्स (निकट एक्सचेंज स्टोर) दिल्ली मे स्वामी जीवनानन्द जी तथा श्री लक्षपति जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा। इस अवसर पर नित्य प्रति प्रात ८ ३० से साय ५ बजे तक वेद पाठ का कार्यक्रम होगा तथा स्व० स्वामी प्रभु आश्रित जी महाराज के लिखित उपदेश तथा अन्य विद्वानो तथा भजनोपदेशको के प्रवचन भी हुआ करेंगे। पूर्ण आहुति ३० अगस्त को सम्पन्न होगी। अधिक से अधिक सख्या मे परिवार सहित पधार कर धर्म लाभ उठाये।

—अर्जुनदेव खन्ना विजय लक्ष्मी

यज्ञोपवीत का संदेश

यज्ञोपवीत के तीन तार देते हैं सन्देश अपार।
देव पितृ और ऋषिऋण तीन ऋणो का हम पर है भार॥
कैसे ये ऋण चुका सकोगे इस पर करो जरा विचार।
मात पिता और गुरुजनो का, करते रहो आदर सत्कार॥
ईश्वर जीव और प्रकृति आधारित इन पर ससार।
सत रज और तम गुणो का,सृष्टि मे चलता है व्यवहार॥
ज्ञान कर्म और उपासना भव सागर से कर देंगे पार।
देव पूजा, सगति करण दान इन मे है यज्ञ का सार॥
वात पित और कफ शरीर मे सम रहे ऐसा करो आहार।
छल कपट और झूठ को त्यागो, करो सचाई का व्यापार॥
भू भुव स्व के अर्थो का, जन-जन मे होवे सचार।
जीवन को शुद्ध सरल बनाओ मनुर्भव का करो प्रचार॥
द्यो अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर, वैदिक धर्म की हो जयकार।
प्रतिज्ञा और पवित्रता का, ध्यान रहे करो उपकार॥

—देवराज आर्य मित्र
आर्य समाज बल्लभगढ़, फरीदाबाद

भूल सुधार

२६ जुलाई के सार्वदेशिक मे पृष्ठ ६ पर आर्यसमाज बगारस्यू डौंडियालस्यू (गढवाल) के प्रधान का नाम भूल से श्री घनश्याम जी के स्थान पर श्री विजयराम प्रकाशित हुआ है। पाठक इसे सुधार ले।

—सपादक

सूचना

समस्त दिल्ली प्रदेश के आर्यसमाज व आर्य वीर दल की शाखाओ को सूचित किया जाता है कि आर्य वीर दल (यमुना-हिण्डन मध्य क्षेत्र) पूर्वी दिल्ली के सचालक श्री रूपचन्द नागर हैं। विश्व बन्धु आर्य के नाम की सूचना मे सुधार करलें व उन्हे निरस्त समझें।

कार्यालय मन्त्री
सा० आ० वीर दल

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● जो मैं निरनिरी ससार ही का भय करता और सवज्ञ परमात्मा का कुछ भी नही कि जिसके अधीन मनुष्य के जीवन मृत्यु और सुख दुःख हैं तो मैं भी ऐसे ही अनर्थक वाद विवादो मे मन दे देता परन्तु क्या करू ? मैं तो अपना तन मन धन सब कुछ सत्य के ही प्रकाशार्थ समर्पण कर चुका । मुझसे खुशामद कर अब स्वार्थ का व्यवहार नही बन सकता किन्तु ससार को लाभ पहुचाना ही मुझको चक्रवर्ती राज्य के तुल्य है

मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार वेद का उपदेश करता हू विचार उपकार के और मैं कुछ अधिकार नहीं चाहता।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र ... ७४३७ वार्षिक मूल्य १०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३ अंक ... दयानन्दाब्द ... १६०, १६१ ... भाद्रपद कृ० ... सं० २०४१ २१ अगस्त १९८४

पाकिस्तान सैनिक कार्रवाई से नहीं अपितु भारत को भीतर से कमजोर करना चाहता है

कश्मीरी घुसपैठियों और सिख आतंकवादियों में समन्वय

भारत पर पाकिस्तानी सैनिक हमले की सम्भावना कम है परन्तु उससे अधिक खतरनाक है पाकिस्तान की भारत को भीतर से कमजोर करने की नीति। वर्तमान स्थिति ऐसी बन गई है कि भारतीय सेना को ही नही अपितु भारतीय राजनीतिकों को भी चौकस रहना पडेगा, क्योकि कश्मीरी घुसपैठियों और सिख आतकवादियो ने आपस मे समन्वय स्थापित करके सगठित रूप से भारत के विरुद्ध अपनी कार्रवाईयो को नया मोड दे दिया है। भीतरी कार्रवाई से पाकिस्तान भारत मे साम्प्रदायिक अलगाववाद और जातीय दगो से एक नही अनेक बटवारे करना चाहता है। उसकी यह नीति १९४७ की याद दिलाती है जिसमे मुस्लिम लीगियो ने नारे लगाए थे—लड के लिया है पाकिस्तान हसकर लेगे हिन्दुस्तान। आज भारत के नेताओ को आपसी सूझ बूझ से इस चुनौती को सही मायने मे समझना चाहिए।

पाकिस्तान से सैनिक जय की अपेक्षा कम हो सकती है, क्योकि अमेरिकी रणनीति मे इस्लामी कट्टरवादिता के विरुद्ध विश्व भर मे कारगर कदम उठाना है। अमेरिका तथा पाश्चात्य विशेषज्ञो की यह स्पष्ट मान्यता है कि यदि इस समय इस्लामी कट्टरवादिता के विरुद्ध कारगर कार्रवाई नहीं की गई तो आगे चलकर इस्लामी कट्टरवाद विश्व के लिए एक नया खतरा बन जाएगा। इसी आधार पर पाकिस्तानी सेना के पूर्व अध्यक्ष असलम बेग यह स्वीकार करते हैं कि कश्मीर और अन्य किसी मुद्दे को लेकर यदि पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई की तो भारत को सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत का लाभ मिलेगा और जनमत भारत के साथ हो जायेगा। इसलिए वह अफगानिस्तान मे पाकिस्तान की मजबूत पकड और सोवियत सघ से अलग हुए ५ इस्लामी राष्ट्रो के साथ पाकिस्तान के मजबूत सम्बन्ध स्थापित होने तक एक तरफ भारत के साथ सम्वाद जारी रखना चाहता है परन्तु दूसरी ओर भारत को अन्दर से कमजोर और विघटित करना चाहता है।

पाकिस्तान मे इस समय अफगान मुजाहिदीन और कश्मीरी छापामारो को भी साथ साथ प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिसके दो केन्द्र हैं प्रथम अलिहाबाद नामक गाव मे जो हाजी पीर के इलाके मे आता है और ताशकद समझौते के अन्तर्गत पाकिस्तान को वापिस किया गया था दूसरा केन्द्र कोहमरी इलाके

(शेष पृष्ठ २ पर)

मजहबी सिखो और हरिजनो मे—

धर्मान्तरण का षड़यन्त्र विफल

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने पाकिस्तान से सटे राजस्थान की सीमा पर बसे गगानगर तथा पीलीबगा क्षेत्र मे ईसाइयो द्वारा मजहबी सिक्खो तथा हरिजनो का धर्मान्तरित करके ईसाई बनाने के षडयन्त्र पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुये राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री को विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु पत्र लिखा था।

राजस्थान सभा के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने विस्तृत जाच करके स्वामी जी को सूचित किया है कि दो युवको ने इस क्षेत्र मे कार्य प्रारम्भ किया था तथा राजस्थान बैंक की स्थानीय इकाई मे उन्होने खाते भी खोल रखे थे तथा मद्रास से उनके पास बैंक ड्राफ्ट आते थे। पीलीबगा के समीप दुलमानी गाव मे उन्होने कुछ हरिजनों तथा मजहबी सिक्खो को धन व नौकरी का प्रलोभन देकर ईसाई बनाने का प्रस्ताव रखा था। परन्तु उसी समय गाव वालों को इस षडयन्त्र का पता चल गया तथा उन्होने पत्र द्वारा मुझे सूचित किया मैं गृहमन्त्री श्री दिग्विजयसिह जी से मिला तथा कलेक्टर को तुरन्त कार्यवाही के आदेश दिलवाये। पुलिस ने जाच पडताल प्रारम्भ की। परिणाम स्वरूप ईसाई कार्यकर्त्ता रात्रि मे अपना सामान आदि लेकर भाग गये। पुलिस उनकी तलाश कर रही है। धनूर, १६ एफ एव चालीस एफ मे भी कुछ लोग आये थे परन्तु पुलिस कार्यवाही के कारण अब उनका आना बन्द है। इस प्रकार आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की जागरुकता से यह षडयन्त्र विफल कर दिया गया।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

योगीराज श्रीकृष्ण— एक विचार

जीवन की पूर्णता कर्म ज्ञान और भक्ति के समन्वय में है। साधना किसी भी प्रकार की हो, साधक की पूर्ण सत्ता के साथ होनी चाहिए। ऐसी अवस्था मे मनुष्य के जीवन में लेशमात्र भी अहंकार नहीं रहता।

योगीराज श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन कर्म ज्ञान और भक्ति का समन्वय था निष्काम कर्मयोगी बनने का जो उपदेश युद्ध क्षेत्र में उन्होने अपने सखा अर्जुन को दिया। उसी को उन्होंने अपने जीवन में घटाया। उनका जीवन गीता ज्ञान का जीता जागता स्वरूप था। उन्होने इस लोक में यावज्जीवन दीन-दुखियो की सेवा और न्याय की रक्षा मे अन्याय को दूर करने का संकल्प भी लिया। जीवन में इसके लिए कभी विश्राम नहीं किया। आवश्यकतानुसार समय का सदुपयोग सदा करते रहे। कारण उस समय अज्ञान-अन्याय उत्पीड़न का युग था। बड़े राजा छोटे राजाओ पर तथा प्रजा का शोषण कर रहे थे।

धर्म संस्थापनार्थ योगीराज कृष्ण अपने समक्ष ऐसा अन्याय कैसे सहन कर सकते थे। उन्होने प्रजा के कष्ट निवारणार्थ अत्याचारियों को दण्ड दिया और धर्म की स्थापना की। मथुरा पर १७ बार चढ़ाई करने वाले दुष्ट जरासन्ध को मृत्यु के घाट उतार दिया। और उसके पुत्र को राज्य का भार सौंपा।

द्वारिकापुरी पर आक्रमण करने वाले शाल्व का पीछा कर उसका वध किया। शिशुपाल व कालयवन के दुष्कर्मों को बढते हुए देखकर सुदर्शन चक्र से सिर काट दिया। समस्त कार्यों को उन्होंने निज बुद्धि पराक्रम के द्वारा धैर्य पूर्वक सम्हाला। सदैव कार्य व्यस्त रहने पर उनका मुख मण्डल कभी चिन्ता ग्रस्त नहीं हुआ।

श्री कृष्ण सर्वात्म भावापन्न पुरुष थे निर्धन-धनी, छोटे-बड़े सभी के साथ वह प्रीति का व्यवहार किया करते थे।

बचपन में उन्होंने गोकुलवासियों के साथ गौएं चराई और वन मे पशु-पक्षियों के साथ क्रीडा करके एकता का भाव दिखाया।

निर्धन मित्र सुदामा के आने पर सूचना पाते ही उनसे मिलने सिंहासन छोड़कर नंगे पैर दौड़कर उनसे मिले।

नरोत्तम कवि ने हृदय ग्राही चित्रण किया है।

हाय महा दुःख पाये सखा तुम आये इते न किते दिन खोये।
पानी परात को हाथ छुओ नहि नैनन के जल से पग धोये॥

उनके कच्चे चावलो का प्रेम से भोग लगाया। अनेक दास-दासियों के होते हुए भी उन्होंने स्वयं मित्र का स्वागत किया। यह था चरित्र नायक का चरित्र जिसे हिन्दू-समाज के पोगा-पण्डितों ने गोपिया वल्लभ कहकर चरित्र पर लांछन लगाया। किन्तु कहना यह था कि वह चंचल (गो) इन्द्रियो को वश मे करके—सुदामा वल्लभ थे। उन्होंने सुदामा को उत्कृष्ट भोजन कराया। साथ ही बिदा करते समय अनेक प्रकार के बहुमूल्य द्रव्य देकर उन्हें सत्कृत कर विदाई दी।

श्री कृष्ण ने जीवन में जो कार्य किए उनमें उनका व्यक्तिगत स्वार्थ न था अपितु परोपकार की भावना में किए थे। उनकी किसी में आसक्ति न थी।

ऐसे महामानव चरित्रनायक महापुरुष का हम प्रतिवर्ष ही कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के रूप मे जन्मदिन मनाते हैं। इस चहल-पहल के दिन को जनता मनोरंजन का साधन अवश्य मानती है परन्तु यदि इस उत्सव मे जनता ने श्रीकृष्ण के चरित्र को समझकर अपने जीवन में न उतारा तो योगिराज कृष्ण के उज्ज्वल चरित्र की इससे भद्दी अभिव्यक्ति और क्या हो सकती है, जनता पर कृष्ण के जीवन की अमिट छाप दृष्टिगोचर नहीं होती है। कौन सहृदय होगा जिसके मन मे अपने जननायक कृष्ण के दारुण वीभत्स दृश्य देखकर पीड़ा न होती हो।

आइए अपने प्रिय महापुरुष जिसे हम भगवान की संज्ञा देते हैं उसके चरित्र से हम अपने जीवन को सार्थक बनायें।

हारे हुए जीवन को पौरुषमय बनाने का जो दिव्य सन्देश अर्जुन को दिया उससे हारा थका मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त अर्जुन पौरुष वाला होकर कह उठा— करिष्ये वचनं तव ?

महाराज श्रीकृष्ण का संदेश

भगवान कृष्ण के जन्माष्टमी के दिन यदि हम उनके दैवी और आसुरी सम्पद के सन्देश को मानकर चले तो हमारी बहुत सी समस्याओ का समाधान हो सकता है।

दैवी सम्पद् विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुच सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव॥

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार आवश्यक पदार्थ माने गए हैं। हमारा जीवन धर्म से प्रारम्भ होता है और मोक्ष इसकी अन्तिम श्रेणी है। दूसरे शब्दों में जिस वृक्ष का मूल धर्म है उसका फल मोक्ष है।

धर्म से ही अर्थ की प्राप्ति हो सकती है वा अर्थ वही कल्याणप्रद होता है जो धर्मपूर्वक कमाया जाय। अर्थ की धर्म पूर्वक प्राप्ति पर धर्म पूर्वक काम का उपयोग किया जाना चाहिए।

आज हमारे जीवन मे चार पदार्थों के स्थान में दो पदार्थ रह गये हैं— अर्थात अर्थ और काम। सुख की सामग्री जुटाओ चाहे धर्म से या अधर्म से और सुख भोगो। यही आज कल की रीति बनी हुई है। श्रीकृष्ण ने इसी को आसुरी सम्पद कहा है इसका फल बन्धन है मोक्ष नहीं। मोक्ष के लिए दैवी सम्पद का ही दूसरा नाम धर्म है।

व्यक्ति जीवन में सामाजिक जीवन में, नैतिक जीवन मे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में सबमे दैवी सम्पद् की कमी है परिणामतः एक बन्धन को काटते हैं तो दस नए उत्पन्न हो जाते है।

दम्भोदर्पोऽभिमानश्च क्रोध: पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्॥

सर्वत्र पाखण्ड दर्प अभिमान और अज्ञान का साम्राज्य है। जिसे हम धार्मिक जीवन कहते है उसकी पाखण्ड सीमा का अतिक्रमण करता हुआ देख पड़ता है। क्या पाखण्डी दुकानदार धर्म की वास्तविक उपलब्धि कर सकता है ?

क्या पाखण्डी राजा राज्य का समुचित रीति से संचालन कर सकता है। क्या पाखण्डी ब्राह्मण आत्मिक उन्नति कर सकता है ? क्या हमारे सुधारक और उपदेशक इस आसुरी सम्पद् मे वृद्धि नहीं करते ?

आगे श्री कृष्ण ने १६-१०३ मे दैवी सम्पद् की संज्ञा दी है वह निम्न प्रकार है।

अभयं सत्वं सत्व संशुद्धि ज्ञान योग व्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥
अहिंसा सत्य मक्रोधस्-त्यागः शान्तिर पैशुनम्।
दया भूतेष्व लोलुप्त्व मार्दवं ह्रीर चापलम्॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नाति मानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत॥

यही दैवी सम्पद् के गुण मनु के धर्म के दस लक्षणों में प्रायः समाविष्ट है। बिना इस दैवी सम्पद् के धारण किये हम धर्म के किसी भी विभाग मे उन्नति नहीं कर सकते।

हमें उचित है कि हम दैवी सम्पद् को धारण करें और आसुरी सम्पद से बचे रहें।

कश्मीरी घुसपैठियों से समन्वय

(पृष्ठ १ का शेष)

मे खिरात नामक स्थान पर है।

पाकिस्तान ने पिछले दिनो अकारण सीमा पर अंधाधुन्ध गोलाबारी की है इसमें पाकिस्तान के दो लक्ष्य हैं—

(१) भारतीय सेना को नियन्त्रण रेखा पर जवाबी गोलाबारी में इतना व्यस्त रखा जावे कि पाकिस्तान में प्रशिक्षित घुसपैठिए भारी संख्या में जम्मू कश्मीर क्षेत्र मे प्रवेश कर सकें।

(२) कश्मीरी मुसलमानो को इस भ्रान्ति में डालना कि पाकिस्तान उनकी आजादी के लिए भारत से सैनिक टक्कर लेने को तैयार है ताकि वे लोग जोश में आकर भारत विरोधी कार्रवाई में सक्रिय होकर छापामारों और घुसपैठियों का साथ दे सकें तथा जम्मू क्षेत्र के हिन्दुओं को भी अपना घर छोड़ने को मजबूर कर सकें।

पंजाब नई राह पर

पजाब मे श्री बेअन्त सिंह की सरकार के सत्ता मे आन के कुछ ही समय बाद ४ अप्रैल को तरनतारन मे ४० आतकवादियो ने सामूहिक रूप से आत्म समपण किया और उसके बाद भी १९ मई को लुधियाना मे ६ २७ मई को फिरोजपुर मे १३ २६ जून को भटिण्डा मे १० और २७ जुलाई को फिरोज पुर मे ६ आत कवादियो ने अपने आपको पुलिस के हवाल किया। उस समय दो प्रकार की बाते आत्मसमपण के बारे मे कही गई—कुछ लोगो का कहना था कि आत्मसमपण करने वाले सही अर्थो म आत क्वादी है मगर कुछ का कहना था कि ये दुर्दान्त आत कवादी नही बल्कि साधारण किस्म की घटनाओ मे सलिप्त लोग है।

बहरहाल जो लोग भी हिसा हत्याओ आत कवाद और अलगाववाद का रास्ता छोडकर राष्ट्र की मुख्यधारा मे शामिल होना चाहे उनका स्वागत होना ही चाहिए। बरनाला सरकार के समय मे इसी उददेश्य से बैंस कमेटी की सिफारिश पर बहुत से लोग छोडे गए मगर कोई विशेष लाभ उनका नही हुआ। कुछ लोगो ने व्यक्तिगत रूप से भी कुछ आत कवादियो को मुख्यधारा मे लान की कोशिश की। श्री अविनाशी सिंह डा० बराड और ग्रीन पाक जालधर की बीबी हरभजन कौर आदि ऐसे ही लोगो मे थे जिन्होने आत क वादियो को गलत रास्ते से हटाकर सही रास्ते पर लान की कोशिश की मगर अतत आत कवादियो ने उन्हे ही अपने रास्ते से हटा दिया।

बहरहाल १२ अगस्त को तरनतारन मे ६ एरिया कमाडरो सहित ७१ आत कवादियो ने सेना के आगे और इगलैंड मे सक्रिय बब्बर खालसा इन्टर नेशनल की बिदेशी शाखा के प्रमुख गुरदीप सिंह सीबिया ने चण्डीगढ मे मुख्य मन्त्री श्री बेअन्त सिह के सामने जो आत्म समपण किया है उसके बारे मे निश्चित ही यह नही कहा जा सकता कि आत्मसमपण करन वालो मे दुर्दान्त आत कवादी शामिल नही हैं। यह बात निश्चित ही दृष्टिविगत नही की जा सकती कि इस सबसे बडे आत्मसमपण करने वालो मे जहा सीबिया जैसा महत्त्वपूर्ण आत कवादी शामिल है वहा ३७ सूचीबद्ध आत कवादी भी शामिल है और यह पहला अवसर है जब २७ आत कवादियो ने अपने हथियार भी सेना के हवाले कर दिये हैं जिनमे ६ ए के ४७ राइफल तीन थ्री नोट थ्री की राइफल ११ पिस्तौले एक कारबाइन और १२ बोर की ६ बन्दूक शामिल है।

हो सकता है कि आत्मसमपण करन वाला मे स कुछ लोग ऐस भी हो जो आत कवादियो को किसी न किसी रूप मे केवल सहायता दो करत रहे हो और कटटरपथी न हो परन्तु उनका आत्मसमपण करना भी गलत नही है क्योकि अक्सर ऐसे लोगो पर भी जब पुलिस का शिकजा कसा जाता है तो शोषण मचना शुरू हो जाता है और कई बार तो हडताला तक की कान दे दी जाती है अत उनके आत्मसमपण का भी स्वागत होना चाहिए।

यह कहना तो मुश्किल है कि इस आत्म समपण का अन्य लोगो पर क्या प्रभाव पडता है परन्तु आत्म समपण से पूव जो भावुकतापूर्ण भाषण ४० मिनट तक गुरदीप सिंह सीबिया ने दिया और अन्य आत कवादियो से भी आत्म समपण करने की अपील की उनसे कुछ महत्वपूण बात बहुत ही स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आई है—

—पजाब क लोग खून खराबे स तग आ गए है और वे पजाब म शाति चाहत हे ताकि समस्या का राजनीतिक समाधान निकल सके।

—पजाब मे जो खून खराबा पिछले एक दशक से हो रहा है उसम पाकि स्तान का पूरा हाथ है वह आतकवादियो को हथियार और प्रशिक्षण दे रहा है और आत कवादी नताओ पर दिल खोलकर रुपया खच कर रहा है क्योकि एक तो वह भारत से बगलादेश बनाने का बदला ले रहा है और दूसरा वह १९४७ की घटनाओ का सिखो से बदला चुका रहा है।

—आतकवादी जिस राह पर चल रहे हैं, उस पर चलत रहने मे कोई बुद्धिमत्ता नही है क्योकि इस राह ने सिखो को कही का नही छोडा उलटा लगभग ७० हजार लोग मारे गये हैं, हजारो परिवार बेसहारा हो गये हैं और अनेक बहने निराश्रित हो गई है।

—यदि आतकवादी यह सोचते है कि अमरीका इग्लैड अफगानिस्तान या पाकिस्तान उनकी मदद को आएगा तो उनकी यह सोच गलत है—पाकिस्तान तो कश्मीर के मुद्दे पर हो भारत के विरुद्ध जग नही छेड सका खालिस्तान के मुद्दे पर वह क्या लडाई छेडेगा?

—एमनेस्टी इटरनेशनल जैसे मानवाधिकार सगठन भी यदि भारत सरकार के विरुद्ध रिपोट पेश करत ह तो इसका यह अथ कदापि नही है कि वे खालिस्तान की माग का समथन करत हे।

—जिन क्षेत्रो को खालिस्तान का आधार माना जाता है उनम सिखो और गैर सिखो का अनुपात ६० और ४० का हे। अगर ४० प्रतिशत गैर सिख भी खुश न होने के आधार पर खालिस्तान स अलग होना चाहे तो फिर खालिस्तान का क्या बनेगा?

—सिखो को स्वय को सीमाओ मे नही बाधना चाहिए और भारत के विशाल क्षेत्र का लाभ उठाना चाहिए। भारत हमारा है और हमे बराबर के अधिकार प्राप्त है सिख खुशहाल ह और सम्मानजनक जीवन बिता रह है—दिल्ली के सिख भी १९८४ क सदमे से उबर चुके है।

—अब समय आ गया है जब पुरानी बात भुला दी जाए और राष्ट्र की मुख्यधारा मे शामिल होकर लोकतात्रिक ढग से अपनी माग मनवाई जाए।

हम समझत है कि यह कहना तो समयपूर्व की बात होगा कि इस आत्म समपण के कुछ विस्मय जनक नतीजे निकलग और इमस खून खराबे का अन्त हो जायगा क्योकि जिन लोगो के मुह को हथियारो क बल पर कुछ प्राप्त करने का खून एक बार लग जाए तो वह आसानी से छूटा नही करता मगर इस आत्मसमपण मे दृष्टिकोण मे परिवतन का एक आभास अवश्य मिलता है और इससे एक छोटा सी राह अवश्य खुली ह जिस पर अन्य लोग भी आने वाले समय मे चल सकते है या चलने की बात सोच सकते है।

विजय
सम्पादक पजाब केसरी दिल्ल

स्वतन्त्रता सेनानियो की पेशन बढ़ाई

नई दिल्ली १२ अगस्त। सरकार न भारत छोडो आन्दोलन की स्वण जयन्ती के अवसर पर स्वतन्त्रता सेनानियो की मासिक पेशन मे २५० रुपये प्रति माह की वृद्धि की है।

प्रधानमन्त्री पी वी नरसिंहराव न आज लोकसभा म यह घोषणा की। यह वृद्धि तत्काल प्रभाव से लागू होगी।

भारतीय संस्कृति के परिचय के लिए संस्कृत पढ़ना जरूरी —अर्जुन सिंह

नई दिल्ली १३ अगस्त। संस्कृत के अध्ययन के बिना भारतीय संस्कृति का परिचय सम्भव नही है—अपने राष्ट्र की महत्वपूण निधि संस्कृत का ज्ञान सभी भारतीयो को प्राप्त हो इसके लिये आवश्यक प्रयास किये जाने चाहिये—ये उदगार मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री अर्जुन सिंह ने यहा संस्कृत दिवस समारोह का उदघाटन करने हुए व्यक्त किये। समारोह का आयोजन मानव ससाधन विकास मन्त्रालय राष्ट्रीय संस्कृत सस्थान श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ एव दिल्ली संस्कृत अकादमी के सयुक्त तत्वावधान म किया गया। श्री अर्जुनसिंह ने इस अवसर पर संस्कृत के महत्व की चर्चा करत हुए कहा कि वतमान युग मे संस्कृत साहित्य की उपयोगिता विशेष रूप से सिद्ध हुई है। जब कम्प्यूटर के लिए संस्कृत भाषा को सर्वाधिक उपयोगी माना गया। विश्व के सभी विद्वान स्वीकार करत है कि आधुनिक ज्ञान विज्ञान का मूल स्रोत संस्कृत साहित्य मे छिपा है। संस्कृत विद्वानो का कर्तव्य है कि इस ज्ञान विज्ञान को जन जन तक पहुचावे। संस्कृत को केवल कमकाड मात्र

(शेष पृष्ठ १० पर)

निष्काम कर्म ही मानव धर्म है

विमल वधावन एडवोकेट

उपरोक्त दोनो कथनो को विशेष रूप से लिखने का एक मात्र उद्देश्य यही है कि योगिराज कृष्ण के जीवन चरित्र में कुछ भी ऐसा नहीं जो आर्यत्व का प्रतीक न हो, और दूसरी तरफ इस चरित्र को ईश्वरीय अवतार कह कर ऐसी धारणा भी नहीं पनपने देनी चाहिए कि उस चरित्र को साधारण लोग अपने जीवन मे अपना ही न सके या तदनुसार आचरण न कर सकें।

परिस्थितिया तथा परमात्मा की विशेष कृपा कुछ मनुष्यो मे ऐसा बल तथा बुद्धि उत्पन्न कर देती हे जिससे उन परिस्थितियो का अपने तथा समाज के हितार्थ मुकाबला किया जा सके।

जन्म जेलखाने मे हुआ, शिक्षा अज्ञातवास मे नन्दगोप के घरमे हुई, बचपन मे ही कस के अत्याचार तथा अधर्म पूर्वक आचरण की गाथाएं मस्तिष्क पटल पर एक ऐसा गुस्सा और विद्रोह का दृश्य बना चुकी थी जिसे परमात्मा की कृपा से आगे भी ऐसा ही वातावरण मिला कि कृष्ण महाराज की उत्तरोत्तर सफलता इन भावनाओ को और अधिक दृढ करती गई।

कस भारत मे गोहत्या का प्रवर्तक था और गोहत्या का सबसे अधिक प्रभाव ग्वालो पर पड़ना निश्चित था। ग्वालो की एक गुप्त मण्डली बनी जिसका नाम राधा रखा गया। यह राधा (मण्डलो) प्रत्यक्षत तो नाच-गा कर प्रभु आराधना का प्रचार करती, परन्तु गुप्त रूप से कस के विरुद्ध विद्रोह की भावनाएं पैदा करने और भडकाने का काम करती थी। इस मण्डली का नेतृत्व यशोदा का कोई रिश्ने का भाई करता था जिसके मरने पर कृष्ण की विलक्षण प्रतिभा को देखने हुए इस मण्डली का नेतृत्व कृष्ण को सौपा गया। अब इन्ही घटनाओ को लेकर कृष्ण की राधा के साथ रास लीलाएं बड़े घृणित ढंग से पुराणकारो ने प्रचारित की। राधा तो इस मण्डली का नाम था। रास शब्द रस से बना है। ऊपर से तो यह श्रंगारमय भक्ति रस था, परन्तु वास्तविकताओं में यह राधा मण्डली के माध्यम से विद्रोह भड़काने हेतु वीर रस था।

कंस के वध के पश्चात मथुरा छोड़ी, राज्य मुकुट छोड़ा और आचार्य सन्दीपनी की कुटिया पहुचे। क्षत्रिय को सच्चा गुरु मिला जो चिल्ला-२ कर कह रहा था कि धर्म से ही अर्थ और काम प्राप्त होता है परन्तु मेरी सुनता कोई नहीं।

कृष्ण ने निश्चय किया, मैं सुनूंगा और सुनाऊंगा भी। उन्होंने क्षत्रियों का मार्ग चुना। उस समय महाभारत तो एक तरफ, भारत भी नहीं रहा था। वह भी सैकड़ों छोटे-२ राज्यों में बंट चुका था। उन्होंने निश्चय किया कि मैं खण्ड भारत को अखण्ड भारत और फिर महाभारत बना कर ही रहूंगा।

श्रीकृष्ण को युधिष्ठिर से बड़ी आशाएं थीं। इसीलिए राजसूय यज्ञ में स्वयं श्रीकृष्ण ने ब्राह्मणो के चरण धुलवाने का कार्य अपने हाथों से किया। इस अवसर पर जिस एक छत्र साम्राज्य की स्थापना का निश्चय किया गया उसके सम्बन्ध में शिशुपाल जैसे अभिमानी ने भी कहा था कि हम इस महात्मा युधिष्ठिर को कर (टैक्स) देते हैं तो किसी भय, लोभ या खुशामद से नहीं अपितु इसलिए कि पृथ्वी पर एकछत्र साम्राज्य की स्थापना को साकार करने हेतु ये सर्वश्रेष्ठ धार्मिक प्रकृति से प्रजा का पालन करने वाले हैं इसलिए हम इसे अपना राजा मानते हैं।

परन्तु युधिष्ठिर की यह धार्मिक प्रकृति जुए के कारण ऐसी नष्ट हुई कि बना बनाया महाभारत नष्ट हो गया। वेदज्ञ श्रीकृष्ण जुए के घोर विरोधी थे, उन्होने कहा कि युधिष्ठिर जब तुम लोग जुआ खेल रहे थे, मैं एक युद्ध पर गया था, नही तो बिना बुलाए पहुचकर धृतराष्ट्र को समझाता और यदि वह न मानता तो बल का भी प्रयोग उसी वक्त करता।

युद्ध मे पहले भी श्रीकृष्ण ने हर सम्भव प्रयत्न किया परन्तु हठी दुर्योधन न माना। यहां तक कि कृष्ण को या उनकी सेना में से एक चीज को चुनते समय भी दुर्योधन शारीरिक ताकत बढाने के उद्देश्य से कृष्ण के साथ से वंचित रह गया।

साधारणत: लोगों की यह धारणा भी पूर्णत: निराधार और अज्ञानता पर आधारित है कि महाभारत युद्ध की आग को भड़काने का काम श्रीकृष्ण ने किया। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि श्रीकृष्ण एक न्यायकारी और

"देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है, उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण तक या कुछ भी बुरा काम किया हो, ऐसा नहीं लिखा।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

"श्रीकृष्ण के समानपूर्ण पुरुष को कोई ईश्वर अथवा अवतार की श्रेणी में ढकेल कर हम ऐसी धारणा कर लेते हैं कि उनके गुणों का अनुशीलन हमारी शक्ति के परे है। —डा० केशवराव हेडगेवार

धर्मपूर्वक चलने वाले एकछत्र महाभारत की स्थापना का संकल्प लिए हुए थे। इस बात को उन्होने अर्जुन को युद्ध के समय पहले धैर्यपूर्वक आत्मा की जानकारी के आधार पर समझाने की कोशिश की और फिर उसी संकल्प को अपनी आखो मे केन्द्रित कर एक विकराल विश्व रूप अर्जुन के मस्तिष्क पर पर फिल्माया जिसमे दुर्योधन के समस्त अनैतिक समर्थको की मृत्यु को देखकर राक्षस भाग रहे थे, देवता प्रसन्न हो रहे थे। यह विश्व रूप था जो आखो आंखों में ही श्रीकृष्ण ने अर्जुन के समर्थ रखा था।

श्रीकृष्ण जब दुर्योधन के पास शान्ति सन्देश लेकर जा रहे थे तो जगह-जगह उनका बहुत स्वागत हुआ। कृष्ण ने स्वयं कहा कि यदि तुम मेरे भक्त बनना चाहते हो तो मेरे सदृश बनो, जैसे मैं अपने चुने हुए कर्म को निष्काम भाव से पूरा करके प्रभु भक्ति का संकल्प पूरा करता हू।

कृष्ण-कृष्ण की तोता रटन्तको कृष्ण की भक्ति नहीं मानी जा सकती यदि कृष्ण के सच्चे भक्त, अनुयायी बनना हो तो जीवन को शयन क्षेत्र या आराम गाह न समझकर कुरुक्षेत्र अर्थात कर्मक्षेत्र समझना पड़ेगा।

कुर्वन्नेव इह कर्माणि जिजीविषेत शतं समाः।

एवं त्वयि न अन्यथा इत: अस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ यजु० ४०-२

अर्थात मनुष्य शुभ कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जी सकता है, मनुष्य के लिए इससे श्रेष्ठ मार्ग और कोई नहीं है। परन्तु किसी कर्म में लिप्त न हो अर्थात सकामता को निष्कामता में परिवर्तित कर दे।

श्रीकृष्ण के जीवन पर एक दृष्टि

स्व० श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

हिन्दू जगत मे श्रीराम और श्रीकृष्ण के समान आदर का पात्र कदाचित ही कोई दूसरा व्यक्ति होगा। हिन्दू समाज की रक्षा की उपमा इन्हीं दोनो महापुरुषो के नाम पर दी जाती हैं। इन दोनो मे भगवान कृष्ण अधिक उच्च समझे जाते हैं। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि महात्मा राम ने ससार मे कर्त्तव्य और सदाचार को प्रतिष्ठित किया परन्तु कोई युगान्तकारी कार्य उनके हाथो से नही हुआ।

अवश्य ही उन्होने अपने आचरण से ससार को कर्त्तव्य मार्ग दिखाकर धर्म राज्य की सस्थापना की थी। परन्तु श्री कृष्ण जी के समान उनकी सर्वागीणता पूरी नही उतरी। श्रीकृष्ण ने धर्म राज्य और धर्मक्षेत्र की स्थापना की थी। उन्होने राज्यक्रान्ति के साथ-साथ धर्म और समाज मे भी क्रान्ति की। राम राजपुत्र थे और कृष्ण कारागृह में उत्पन्न हुए एक सरदार के पुत्र थे। जिस वातावरण मे वे पले, वह बिल्कुल सीधा सादा और ग्रामीण जनो का था। उन्होने अनेक राज्य क्रान्तिया कराई फिर भी स्वय राजा नही हुए। सर्वत्र व्यवस्था निर्माण मे लगे रहे।

भगवद्गीता के उपदेश द्वारा उन्होने ज्ञान और कर्म का ऐसा उदात्त रूप प्रस्तुत किया है जिसकी गौरव गरिमा आज से हजारो वर्ष बीत जाने पर भी आज अक्षुण बनी हुई हैं और न मालूम कब तक बनी रहेगी गीता मे जिस निष्काम कर्म और यज्ञमय जीवन का प्रतिपादन किया गया है महाराज कृष्ण उसके साक्षात प्रतिबिम्ब थे।

योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन और जीवन के लक्ष्य को भली भाति समझने के लिए हमे उनके समय की राजनैतिक और सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना चाहिये। उस समय भारतवर्ष बहुत से स्वतन्त्र राज्यो मे विभक्त था। इन राज्यो को एकत्व मे बाधने और उनको नियन्त्रण मे रखने के लिये कोई चक्रवर्ती राजा न था। यही कारण था कि बहुत से राजा स्वेच्छाचारी और विलासी बन गये थे और अपनी प्रजा को दुःखी रखते थे।

मथुरा मे राजा कस और मगध के राजा जरासध के अत्याचार तो जगत प्रसिद्ध है ही। कस तो अपने अत्याचारो मे यहा तक बढ गया था कि उसने अपने देवता स्वरूप पिता राजा उग्रसेन को भी बन्दीगृह मे डाल दिया था। उधर जरासध ने बहुत से छोटे छोटे राजाओ को भी कारागृह मे डाला हुआ था। कौरवो और पाडवो मे गृह कलह छिडा हुआ था। राज शक्ति पर ब्राह्मणो की शक्ति का प्रभाव नाम मात्र को था। धार्मिक प्रवृत्ति के लोगो का एक पृथक समुदाय बन गया था जो निवृति मार्ग के पथिक बनकर ससार से उदासीन रहने मे सुख मानते थे ब्राह्मण वर्ग के घोर निवृतिवादी होने से राजसूत्र ऊल जलल ढग पर उद्देश्य रहित घूमता था। प्रजा खाने पीने आदि की दृष्टि से सुखी होने के कारण विलासी बन गई थी। इस निरुद्दश्य राजसूत्र के कारण राजाओ का विलासी और अत्याचारी तथा प्रजा का पतित होना अवश्यम्भावी था।

सामाजिक स्थिति खराब होने लग गई थी। यद्यपि वैदिक व्यवस्था का पूर्णतया लोप नही हुआ था। तथापि इसका ह्रास अवश्य होने लग गया था। उन दिनो क्षात्रधर्म का प्राधान्य हो गया था। हम देखते हैं कि द्रोणाचार्य कृपाचार्य ब्राह्मणो ने ब्राह्मणवृति को छोडकर अधिकतर क्षात्रवृति ग्रहण कर ली थी। यादव वश वाले क्षत्रिय प्रवृति को छोडकर गोपालन आदि वैश्यो का धन्धा करते थे और समाज उन्हे शूद्र समझने लग गया था। वर्ण व्यवस्था मे प्राय जन्म का प्राबल्य माना जाने लगा था। हम महाभारत मे पढते हैं एकलव्य नामक एक व्यक्ति को द्रोणाचार्य के चरणों मे

भगवद्गीता के उपदेश द्वारा उन्होंने ज्ञान और कर्म का ऐसा उदात्त रूप प्रस्तुत किया है जिसकी गौरव गरिमा आज से हजारों वर्ष बीत जाने पर भी आज अक्षुण बनी हुई है और न मालूम कब तक बनी रहेगी गीता मे जिस निष्काम कर्म और यज्ञमय जीवन का प्रतिपादन किया गया है, महाराज कृष्ण उसके साक्षात् प्रतिबिम्ब थे।

बैठकर धनुर्विद्या के सीखने का इसलिये सौभाग्य प्राप्त नही हो सका था कि वह जन्म से शूद्र समझा जाता था।

अवश्य उन दिनो स्त्रियो मे गिरावट प्रारम्भ नही हुई थी। उदाहरणार्थ कौरवो की माता गधारी को लीजिये। अपने पति जन्मान्ध महाराज धृतराष्ट्र के प्रति उन्होने जिस निष्ठा का परिचय दिया वह सब जानते हैं।

एक शब्द मे उस समय राजसूत्र अत्याचारी और आततायी राजाओ के हाथ मे था स्त्री शूद्र और वश्यो के लिये ज्ञान मार्ग का द्वार बन्द सा हो गया था। वर्ण व्यवस्था का रूप विकृत होने लग गया था। धर्मजीवी व्यक्तियो का एक पृथक समाज बन गया था वह समाज निवृति मार्ग का पथिक था। दूसरी ओर अधर्म का प्राबल्य हो रहा था जो धर्म जीवी सज्जन धर्म से प्रेम रखते और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

यदि आज श्री कृष्ण आ जावें तो ?

—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद

श्रीकृष्ण ऐसे महामानव थे कि जो युगो के बाद जन्म लिया करते हैं। फिर भी यदि यह कल्पना कर ली जाये कि श्रीकृष्ण आज आ जावे तो वे क्या सोचेगे ? एव क्या करेगे । हमारी तुच्छ मति मे तो यदि श्रीकृष्ण आज आ जावे तो सबसे पहले यह देखकर अन्यन्त आश्चर्य प्रकट करेगे कि आज सर्वत्र जिस कृष्ण की जय-जयकार हो रही है, क्या वस्तुत वह मैं ही हू ? फिर वह यही सोचेगे कि नही निश्चय ही वह कृष्ण कोई और होगा जिसकी यह लोग जय जयकार कर रहे है।

युगपुरुष श्रीकृष्ण ऐसे महामानव थे जिस पर भारत समुचित रूपेण गौरव का अनुभव कर सकता है। वे आदर्श मानव एव मानवता के आदर्श थे। शेक्सपीयर ने एक स्थान पर लिखा है कि—"कुछ जन्मजात महान होते है, कुछ महत्ता प्राप्त करते है और कुछ पर महत्ता लाद दी जाती है। किन्तु वैदिक मान्यता इससे थोडी सी हटती हुई है। केवल इन्ही अर्थों मे कि कोई भी व्यक्ति जन्मजात महान नही होता। क्योकि जन्म से तो प्रत्येक व्यक्ति शूद्र होता है, सस्कारो से ही वह द्विज बनता है। अत महत्ता दो प्रकार की ही शेष रह जाती है। एक वह जो स्वय अर्जित की जाती है और दूसरी वह जो कि उसपर लाद दी जाती है। मनुष्य महान कैसे बनता है ? इसका उत्तर सुकरात के शब्दो मे इस प्रकार है कि

'मनुष्य ठीक उसी मात्रा मे महान बनता है कि जिस मात्रा मे वह मानव मात्र के कल्याण के लिए श्रम करता है। किन्तु महर्षि दयानन्द इससे भी एक कदम आगे जाकर कहते हैं कि मानव मात्र का ही क्यो ? प्राणी मात्र का क्यो नही ? इसीलिए ससार के उपकार करने की बात उन्होने आर्य समाज के छठे नियम मे लिखी। तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति जितना ससार का उपकार करेगा, वह उतना ही महान होगा। पाश्चात्य लेखक ट्र्योनवी के अनुसार "विकट परिस्थिति आने पर प्रत्येक व्यक्ति उस परिस्थिति से निकलने के लिए जूझना चाहता है, परन्तु स्वार्थ अथवा भीरुता के कारण जूझ नही पाता। उस समय कोई महापुरुष होता है जो सबकी पीडा को अपने हृदय मे खीचकर परिस्थिति की विषमता से लडने के लिए उठ खडा होता है। और जब कोई ऐसा महापुरुष आता है तब सबके सिर उसके ऊपर झुक जाते है।

महामानव श्रीकृष्ण ऐसे ही थे। वे न तो जन्मजात महामानव थे एव न ही उन पर यह लादी गई थी अपितु यह महत्ता उन्होने स्वय अर्जित की थी।

डा० भवानीलाल भारतीय के शब्दो मे—"मनुष्य अपनी विविध प्रवृतियो की उन्नति के सर्वोच्च सोपान पर पहुच कर किस प्रकार एक साधारण व्यक्ति से महामानव एव युगपुरुष के उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है, इसका श्रेष्ठ उदाहरण कृष्ण का जीवन है। कारागार की विवशतापूर्ण परिस्थितियो मे जन्म लेकर भी कोई मनुष्य ससार का महानतम नेता बन सकता है, यह कृष्ण का चरित्र देखने से स्वत ही विदित हो जाता है। बकिम के अनुसार श्रीकृष्ण न अपनी ज्ञानार्जनी, कार्यकारिणी तथा लोकरजनी तीना प्रकार की प्रवृतिया को विकास की चरम सीमा तक पहुचा दिया था, तभी उनके लिए यह सम्भव हो सका कि वे अपने समय के महान राजनीतिज्ञ और समाज व्यवस्थापक के गौरवान्वित पद पर आसीन हो सके। (श्रीकृष्ण पृष्ट २३२)

श्रीकृष्ण ऐसे महामानव थे कि जो युगो के बाद जन्म लिया करते हैं। फिर भी यदि यह कल्पना कर ली जाये कि श्रीकृष्ण आज आए तो वे क्या सोचेगे ? एव क्या करेंगे ? हमारी तुच्छ मति म तो यदि श्रीकृष्ण आज आ जावें तो सबसे पहले यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य प्रकट करेगे कि सवत्र जिस कृष्ण की जय जयकार हो रही है, क्या वस्तुत वह मैं ही हू ? फिर वह यही सोचेगे कि नही निश्चय ही वह कृष्ण कोई और होगा जिसकी यह लोग जय-जयकार कर रहे है।

"क्योकि मैं तो केवल एक मानव था, विशुद्ध मानव ! पर इन्होन तो मुझ पर ईश्वरत्व आरोपित कर मेरी सहज स्वाभाविक मानवता को नानाविध कलकित कर न जाने कहा तिरोहित कर दिया है ?'

और जब राधा का नाम अपने नाम के साथ जुडा पावेगे तो एक बार फिर सोचेगे कि क्या सचमुच यह मैं ही हू जिसके नाम के साथ एक परस्त्री का नाम हठात जोडा जा रहा है। अरे ! मैंने तो रुकमणी के साथ विवाह किया था। यह राधा कहा से आ गई ? और फिर सोचेंगे कि यदि कही आज रुकमणि आ जाये और यह देखे कि मेरे नाम के साथ राधा नाम की स्त्री का नाम जुडा हुआ हैं तो वह मेरे बारे मे क्या सोचेगी ? क्या यह वही कृष्ण है कि जिसने स्वप्न मे भी परनारी का कभी चिन्तन तक नही किया था और जिसने गृहस्थ मे भी सयम की मर्यादा स्थापित की थी और जिसने एक पुत्र रत्न की प्राप्ति के लिए १२ वर्ष तक घोर ब्रह्मचर्य स्वय भी और मुझे भी पालन का व्रत निभाया था। हाय ! आज इसकी १६ हजार रानिया हैं ?

अपने नाम के साथ चोर, जार, शिखामणि तथा अन्य अनेक गालियो को लगते हुए सुनकर श्रीकृष्ण कब तक चुप रहेगे ? शिशुपाल की भी सौ गाली सहन की थी फिर चक्र सुदर्शन उठाना ही पडा था। तो आज इन गाली देने वाले भक्ता को छोड देगे ? कदापि नही। कृष्ण दुष्टो को दण्ड देने मे विश्वास रखते है। और जब उन्हे यह बताया जायेगा कि यह सब तो आपके भक्तजन है तो फिर वे सोचन के लिये बाध्य होगे कि यह मेरे भक्त है या शत्रु ? मैंने तो सम्पूर्ण जीवन कोई पाप कर्म किया ही नही था फिर इन भक्तो ने चोर, जार शिखामणि मुझे कैसे कह दिया ? यह रासलीला मेरे नाम से कैसे सम्बद्ध हो गई ? यह कृष्ण दासी के साथ व्यभिचार से कैसे जुड गया ?

श्रीकृष्ण यदि आज आ जावे तो अवश्यमेव सोचेंगे और कहेगे कि इन्होने नाहक मुझे भगवान बना दिया। काश ! यदि यह मुझे मानव ही रहने देते तो मेरी सहज स्वाभाविक मानवता तो लुप्त न होती। मैं व्यर्थ को कलकित तो न होता ? शिशुपाल ने मुझे सौ गाली दी थी किन्तु ऐसी गाली जैसी यह भक्तजन दे रहे हैं, किसी ने भी न दी थी। परदादा, भाभी, छि छि छि। कृष्ण यह तू क्या सुन रहा है ' क्या यही है तू जिसे श्रेष्ठतम व्यक्ति होने के नाते सर्वप्रथम अर्घ्य दिया गया था। ' अरे ! तेरे नाम के साथ यह 'योगीराज शब्द क्यो लगा है ? तब क्या कृष्ण अपने इन मूर्ख भक्तो की करनी पर आसू नही बहायेगे ?

यदि आज श्रीकृष्ण आ जावे तो यह देखकर अत्यन्त दुखी होगे कि उस समय तो द्रौपदी की लाज लुटी थी पर अब तो हर द्रौपदी की लाज लुट रही है। तब तो एक कस था पर आज तो सभी कस दीख रहे हैं। तब तो दुर्योधन था पर आज सभी दुर्योधन ही दुर्योधन दिखाई दे रहे है। आज न कोई अर्जुन दिखाई दे रहा है और न ही धर्मराज युधिष्ठिर। आज न भीष्म है न द्रौण। और सत्य तो यह है कि आज कोई मानव भी तो कही दिखाई नही दे रहा। क्या हो गया है मेरे भारत को ?

और यदि गोपाल कृष्ण भारत मे गोवध होता सुन लेवे तो फिर उनके मन्यु का क्या ठिकाना ' एक भी गोहत्यारा न बचे भारत मे यदि गोपालकृष्ण आ जावे तो। और यदि गोपाल कृष्ण को यह पता चल जावे कि आज भारत मे दूध घी आदि बाजार म बिक रहा है तो उन्हे कितना दुख होगा ? और फिर पानी मिला दूध जब पीकर देखेगे तो सोचेगे कि गऊ को कुछ हो गया है या ग्वालो की नीयत को ?

और यदि वे कही राधाकृष्ण के मन्दिर मे पहुच जावे तो फिर उनके क्रोध का क्या ठिकाना ? प्रथम तो अपने नाम के साथ राधा जुडा होने पर, फिर अन्दर अपने पहलू मे राधा की मूर्ति खडी देख कर और फिर भक्तो को राधे राधे कृष्णा-कृष्णा की रट लगाते देखकर कि मेरा नाम ही बिगाड दिया। कृष्ण (पुलिंग) से कृष्णा (स्त्री लिंग) बना दिया। और फिर क्या एक क्षण को भी वहा वह रह पायेगे ? हा अलबत्ता आर्यसमाज मन्दिर मे जहा नित्य हवन-यज्ञ एव सन्ध्या तथा वेद पाठ होता है अवश्यमेव अपने नित्य कर्मों के सम्पादनार्थ पहुच जायेगे।

और जब उन्हे पता चलेगा कि आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द ने उन्हे यथार्थ रूप म समझा एव वर्णित किया है तो दयानन्द ऋषिराज की जय जयकार करने लगेगे और जब उन्हे यह पता चलेगा कि उन आर्यश्रेष्ठियो को जो मेरा यथार्थ स्वरूप जनता जनार्दन के सम्मुख उपस्थित करते हैं और तब लोग उन्हे नास्तिक आदि कहने लगते हैं तो फिर वे उदास हो जायेंगे कि कैसे नादान लोग हैं वे जो मेरे भक्त कहे जाते हैं ? और फिर फटकार लगायेंगे उन्हे कि जो उनके चित्र की पूजा करते हैं।

क्या श्री कृष्ण की भावनाओ को कोई समझ पायेगा ? जब पाच हजार साल से भी अधिक समय मे नही समझे तो अब भला क्या समझेंगे ? और जब नही समझेंगे तो फिर कृष्ण को क्या पडी है, वह क्यो आने लगा ? धर्म की हानि होती रहेगी, अधर्म दनदनाता रहेगा, और कृष्ण ???

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता (४)

—आचार्य क्षमचन्द्र सुमन

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट विचारो को साकार रूप देने के लिए जहा अनेक डी०ए०वी० कालिजो और गुरुकुलो की सस्थापना हुई वहा सैद्धातिक भावनाओ के प्रचार के लिए अनेक ऐसे विद्यालयो की स्थापना भी हुई, जहा प्रखर तार्किक वक्ता तैयार किए जा सके। ऐसे विद्यालयो मे गुरुकुल कागडी और डी० ए० वी० कालिज लाहौर के अतिरिक्त 'आय मुसाफिर विद्यालय आगरा, दयानन्द उपदेशक विद्यालय तथा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर के नाम उल्लेखनीय है। इसके बाद तो देश मे गुरुकुलो का जाल ही फैल गया और कई स्थानो पर ऐसी सस्थाओ का सूत्रपात हुआ। इन सस्थाओ मे स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती द्वारा सस्थापित गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर और गुरुकुल वृन्दावन के नाम विशेष महत्व रखते है।

इन सभी सस्थाओ ने जहा आर्य समाज को अनेक उच्चकोटि के विद्वान, वक्ता प्रचारक और उपदेशक प्रदान किए वहा भारत तथा विदेशो मे प्रचलित विभिन्न धर्मो सम्प्रदायो और मतो के सिद्धातो की जानकारी रखने वाले अनेक शास्त्राथ महारथी भी तैयार किए। शिक्षा के क्षेत्र मे यह नया प्रयोग करने के साथ-साथ अपने सिद्धातो का प्रचार करने के लिए आर्य समाज के माध्यम से पत्रो के प्रकाशन की दिशा मे जो क्रान्तिकारी कार्य हुआ उससे जहा हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचलन का कार्य देश मे प्रचुरता से आगे बढा वहा उससे अनेक सुलेखक और पत्रकार भी उत्पन्न हुए। पहले तो आर्य पत्र-पत्रिकाए उर्दू मे ही प्रकाशित होती थी परन्तु धीरे-धीरे ज्यो-ज्यो उक्त सस्थाओ और क्रियात्मक व्यवहार के कारण हिन्दी का प्रचलन हुआ त्यो-त्यो इस दिशा मे भी प्रगति होती गई।

स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा एव प्रोत्साहन से सन् १८७८ मे उदयपुर के महाराणा सज्जनसिह ने भी 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया था। इस पत्र पर मेवाड का 'राज्य चिह्न' प्रकाशित हुआ करता था और यह पत्र अनेक वर्ष तक अत्यन्त सफलता पूर्वक प्रकाशित होता रहा था। लगभग ५० वर्ष तक चलने के उपरान्त यह केवल सरकारी गजट हो गया था और इसमे अग्रेजी तथा हिन्दी मे शासकीय विज्ञप्तियो की ही भरमार रहने लगी थी। जब स्वामी जी अजमेर मे परोपकारिणी सभा' को ले गए थे तब उनकी प्रेरणा पर आर्य समाज अजमेर के प्रथम प्रधान मन्त्री श्री मुन्नालाल शर्मा के सम्पादन मे वहा से सन् १८८१ मे 'देश हितैषी' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन भी हुआ था। इस पत्र के प्रत्येक अक म आर्य विचार-धारा को अपनाने की प्रेरणा जिस कविता द्वारा दी जाती थी वह इस प्रकार है

'अप्रीति रीति कुरीति छोडो, आर्य्यपन मे चित धरो।
बहुदिवस सोये मत्त हो, अब सभ्यता मे रुचि करो॥
यह देश हितैषी है चली, तुम देश-हितैषी जन रहो।
पर-प्रीति-उन्नति देश चाहो, देश-हितैषी कर गहो॥"

आर्य समाज के आन्दोलन के प्रारम्भिक वर्षो मे मेरठ का वही महत्त्व था जो किसी समय पजाब मे लाहौर का था। फलत सबसे पहले यहा सन् १८७८ मे (आर्य समाज की स्थापना के पश्चात्) 'आर्यसमाचार' नामक साप्ताहिक पत्र श्री कल्याणराय के सम्पादकत्व मे प्रकाशित हुआ। स्वामी जी ने मेरठ मे ही १६ अगस्त, सन् १८८० को 'परोपकारिणी सभा' की स्थापना की थी और उसकी रजिस्ट्री विधिवत् १६ अगस्त को हुई थी। मेरठ को इस बात का सौभाग्य प्राप्त है कि स्वामी जी सर्वप्रथम मार्च सन् १८६६ मे उस समय यहा पधारे थे जब कि वे हरिद्वार के कुम्भ के मेले मे सम्मिलित होने के लिए जा रहे थे। दूसरी बार वे जनवरी १८७७ मे और तीसरी बार २६ अगस्त, १८७८ को पधारे थे। उन दिनो एक मास से अधिक अवधि तक उन्होंने यहा निवास किया था। अपने इसी निवास-काल मे उन्होंने यहा २९ सितम्बर १८७८ को आर्यसमाज की स्थापना की थी। चौथी बार १२जनवरी १८७९ को वे दिल्ली से मेरठ पधारे और १८ दिन तक यहा निवास किया। यहा पर उन्होने कुम्भ मेले मे वितरित करने के लिए विज्ञापन आदि छपवाए थे। पाचवी बार ३ मई, १८७९ को वे हरिद्वार-कुम्भ से लौटते हुए कर्नल अल्काट और मैडम ब्लेवेट्स्की को सहारनपुर से अपने साथ लेकर मेरठ पधारेथे। यहा सार्वजनिक सभा मे इन दोनो ने ईसाई धर्म के महत्त्व पर अपने विचार प्रकट किये थे और स्वामी जी ने वैदिक धर्म की महत्ता प्रतिष्ठापित की थी। छठी बार स्वामी जी ४ जुलाई १८८० को पधारे थे और १५ सितम्बर तक ठहरे थे। इसी समय स्वामी जी ने पण्डिता रमाबाई को (जो उनसे वैशेषिक दर्शन पढना चाहती थी) कलकत्ता से यहा बुलाया था। स्वामी जी चाहते थे कि रमाबाई आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर स्त्री जाति मे शिक्षा और वैदिक धर्म का प्रचार करें। परन्तु स्वामी जी की यह इच्छा पूर्ण न हो सकी और कलकत्ता वापिस लौटने के कुछ दिन बाद ही वे ईसाई धर्म मे दीक्षित हो गई। मेरठ से विदाई के समय रमाबाई को १२५ रुपये और कपडे का एक थान आर्यसमाज की ओर से भेट किया गया था।

स्वामी जी के मेरठ मे निरन्तर पधारने के कारण वहा की जनता मे आर्यसमाज और उसके सिद्धान्तो के प्रति जो अनन्य अनुराग जगा था उसी का सुपरिणाम यह हुआ कि सन् १८७८ मे यहा से 'आर्य समाचार साप्ताहिक निकला था। सन् १८९७ मे श्री तुलसीराम स्वामी ने 'वेद प्रकाश' नामक मासिक पत्र यहा से प्रारम्भ किया और इसमे धारावाहिक रूप से उन्होने 'सामवेद' का भाष्य प्रकाशित किया। बाद मे उन्होने सन् १९०७ मे 'दयानन्द पत्रिका' नामक और एक मासिक पत्रिका भी निकाली। श्री रघुवीरशरण दुबलिश के भास्कर प्रेस से सन् १९१२ मे भास्कर' तथा १९११ मे 'भारत महिला' नामक मासिक पत्र प्रकाशित हुए। बाबू घासीराम एम०ए० ने सन् १९१७ मे 'आर्य समाचार' को फिर से मासिक रूप मे निकाला। इसके प्रत्येक अक के प्रथम पृष्ठ पर वेद-मन्त्रो की व्याख्या दी जाती थी। इन पत्रो के अतिरिक्त श्री विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी' द्वारा सम्पादित मासिक 'तपोभूमि' और 'मातृभूमि' (साप्ताहिक) तथा श्रीमती उर्मिला शास्त्री द्वारा सम्पादित 'जन्म भूमि' (साप्ताहिक) और सत्यवती स्नातिका का 'किसान सेवक' (साप्ताहिक) भी अपनी उल्लेखनीय विशेषता रखते थे। 'तपोभूमि' का भारतीय सभ्यता अक' उल्लेखनीय सामग्री से परिपूर्ण था। आजकल श्री विश्वम्भरसहाय विनोद भी अपने दैनिक प्रभात' के माध्यम से आर्यसमाज के सिद्धान्तो के प्रचार मे अग्रणी कार्य कर रहे है। इस प्रसग मे यह तथ्य भी विशेष रूप से उल्लेख्य है कि हिन्दी के ख्याति-लब्ध साहित्यकार महापण्डित राहुल साकृत्यायन का पहला हिन्दी-लेख सन् १९१९ मे मेरठ से श्री रघुवीरशरण दुबलिश के सम्पादन मे प्रकाशित होने वाले 'भास्कर' नामक पत्र मे छपा था। उन दिनो राहुल जी आगरा के 'आर्य मुसाफिर विद्यालय' मे पढा करते थे और केदारनाथ विद्यार्थी' के नाम से जाने जाते थे। प्रख्यात आर्य विद्वान् पण्डित गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र' के सम्पादन मे प्रकाशित 'बाल मनोरजन' (१९१४) 'हिन्दी सर्वस्व (१९१५) तथा चन्द्र प्रभा (१९१७) भी अपने समय के अच्छे पत्र थे।

(क्रमश)

स्वास्थ्य चर्चा—

मधुमेह और प्राकृतिक चिकित्सा (२)

डा० सुमेरचन्द गुप्ता

मालिश-धूप मे करनी उत्तम रहेगी। सुबह की धूप हो, ताकि विटामिन डी भी धूप से मिलती रहे और शरीर की खुश्की भी दूर हो जाये। सप्ताह मे एक दिन स्टीम बाथ व गीली चादर की लपेट लेना भी उत्तम होगा। सबेरे व साय १० मिनट मेहन स्नान लेना भी उपयोगी रहेगा। बदन को भीगे तौलिया से भी १० मिनट रगडना चाहिये।

आहार—भोजन मे परिवर्तन धीरे-धीरे करना चाहिये, तुरन्त नही करना चाहिये। पहले से ही रोगी को चीनी गुड और मिठाईया आदि बन्द कर देनी चाहिये। मास, अण्डा, घी, दाल व गरिष्ठ भोजन का त्याग करना चाहिए। इसके प्रयोग करने से शरीर मे पित्त बढ जाता है, और चर्म रोग व फोडे-फुन्सी होने की शका रहती है। रोगी को अधिक मात्रा मे वह फल प्रयोग करने चाहिये, जिनमे मीठे की मात्रा कम हो, विटामिन सी की मात्रा अधिक हो जैसे नीबू, मौसमी, सन्तरा, नारगी, जामुन, टमाटर, अनानास, हरा आवला, बेल, अनार, माल्टा ये लाभ करने वाल है।

भरपूर मात्रा मे सब्जियो का प्रयोग करना चाहिये। इस रोग मे जो पित्त पैदा हो जाती है, हरी सब्जियो से वह नम हो जाती है। सब्जिया छिलके सहित प्रयोग करे। बथुआ, मेथी, सरसो, चौलाई का साग व हरे धनिये की पत्ती, पोदीना मूली, खीरा, ककडी, सलाद के रूप मे प्रयोग किया जा सकता है। घीया, तोरी, परमल टिडा, बेगन व काली गाजर की सब्जी भी प्रयोग करनी चाहिये।

जिस प्रकार बाजार की मिठाइयो मे हानि होती है, प्रकृति के मुताबिक ताजे पके फल लेने से हानि नही होती। यदि नीम का या जामुन का शहद लिया जाये, तो वह भी नुकसान नही करेगा। इस दौरान दूध बन्द रखना चाहिये, उसकी जगह मटठा लिया जा सकता है। रोग के ठीक हो जाने पर दूध का कम मात्रा मे प्रयोग किया जा सकता है। जामुन के मौसम मे जामुन के पत्तो का, बेल के पत्ता का, दूब का रस व गेहू के ज्वारे का रस अति उत्तम है। रोटी हमे अकुरित अनाज, गेहू, चना, जौ की चौकर सहित उपयोग करनी चाहिये।

चिकित्सा के दौरान मे मास-मछली, घी, मिठाईया, शराब, बीडी-सिगरेट, चाय-काफी तली चीज, मिर्च-मसाला सभी बन्द रखनी चाहिये यदि इन्हे हमेशा के लिये त्याग दिया जाय तो अति उत्तम है। इन सभी को आप छोडे रखेगे, तो हमेशा सुखी जीवन व्यतीत कर सकेगे। मानसिक चिन्ता से दूर रहकर प्रभु का ध्यान अवश्य ही करना चाहिये। ●

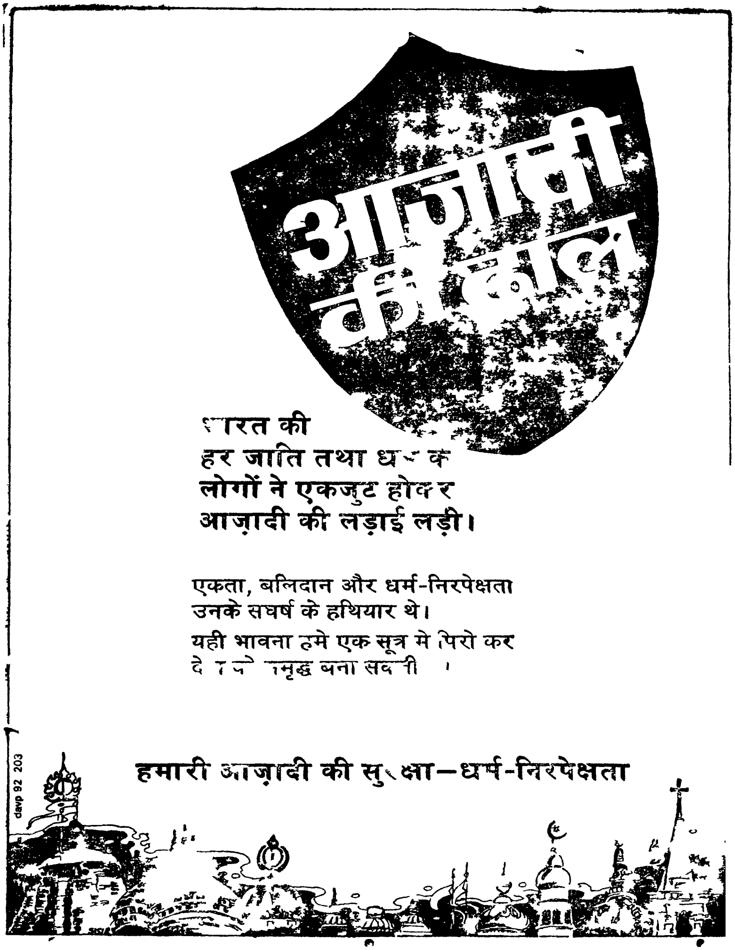
श्रीकृष्ण

(पृष्ठ ५ का शेष)

सांसारिक कार्यों में भी प्रेम रखते थे अत्याचारी राजाओं के क्रीत-दास बन गये थे। फिर अधर्म के नाश और धर्म की प्रतिष्ठा का सुयोग किस प्रकार सम्भव था। उस समय धर्म की प्रतिष्ठा और अधर्म विध्वंस की परम आवश्यकता थी। उसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए श्री कृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ था, ऐसा कहेंगे तो अत्युक्ति न होगी। महाराज कृष्ण का सबसे पहला कार्य कंस जरासंध आदि आततायी राजाओ का वध समझा जाता है। उन्होंने इन राजाओं को नष्ट करके प्रजा को उनके अत्याचारों से मुक्त किया। विशेषता यह है कि इन राज्यों को सदाचारी और सुयोग्य उत्तराधिकारियो को ही सौंपा वे स्वय राजा न बने।

इन छोटे-मोटे राज्यो की व्यवस्था ठीक कर के उन्होंने युधिष्ठिर को चक्रवर्ती सम्राट बनाने का उद्योग प्रारम्भ किया। अपने इस कार्य में वे सफल भी हुए परन्तु दुष्ट दुर्योधन के कपट जाल से विलम्ब हुआ और अन्त मे शान्ति स्थापना का भरसक यत्न करने ~ पश्चात् इस कार्य की पूर्ति और उसके लिए धर्म राज्य की स्थापना के लिये उन्हे महाभारत सग्राम का पांडवो द्वारा सूत्रपात कराना पड़ा।

महाभारत से भारत का सर्वनाश हुआ ऐसा समझदार देशवासी मानते हैं और उनकी धारणा ठीक भी है परन्तु महाभारत के द्वारा हुए सर्वनाश के लिये भी कोई भी महाराज कृष्ण को दोषी नहीं ठहराता। महाभारत की समाप्ति पर केवल १० व्यक्ति शेष बचे थे। अखिल भारत का राज्य युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ था। दुःख है कि ऐसे महापुरुष के उदात्त जीवन को विलासी और कलुषित बनाने और प्रस्तुत करने मे हमारे हिन्दू समाज को लज्जा नहीं आती। श्री कृष्ण शूरवीर थे, तेजस्वी और यशस्वी थे। व्यभिचार का उनके मत्थे दोषारोपण करना उनका अपमान करना है। सबसे बड़ा दुःख यह है कि हिन्दी साहित्य ने जितना इस महापुरुष के चरित्र के साथ अन्याय किया है उतना और किसी के साथ नहीं किया। आज की राजनैतिक और सामजिक स्थितियो की श्री कृष्ण के काल की इन स्थितियों के साथ तुलना की जाए तो जमीन और आकाश का अन्तर देखना पडेगा आज संसार मे आसुरी प्रवृतियों का बोलबाला है और प्रजा नाना प्रकार के कष्टों और बन्धनो से पीड़ित हैं आज का राजसूत्र भी प्रकृति वादियो के हाथ में है और लक्ष्यहीन गति से चल रहा है। आज भी प्रकृति और निवृति बाद के समन्वय पूर्वक राजसूत्र के सचालन और धर्म राज्य की स्थापना की परम आवश्यकता है, वर्तमान महासंग्राम के पश्चात ऐटलांटिक चार्टरों आदि के द्वारा ससार को सुखधाम बनाए जाने की योजनाएं प्रकाश मे आ रही हैं। देखें इनका क्या फल होता है। परन्तु इस समय तो लक्षण शुभ नही देख पाते है। आज संसार को श्रीकृष्ण के सन्देश को सुनने और क्रिया में लाने की आवश्यकता है। उनका सन्देश यही है कि अधर्म का नाश और धर्म का प्रसार करो इसमे व्यक्ति और समष्टि का कल्याण है। 卐


आज़ादी
भारत की
हर जाति तथा धर्म के
लोगों ने एकजुट होकर
आज़ादी की लड़ाई लड़ी।
एकता, बलिदान और धर्म-निरपेक्षता
उनके संघर्ष के हथियार थे।
यही भावना हमे एक सूत्र मे पिरो कर
हमारी आज़ादी की सुरक्षा—धर्म-निरपेक्षता
davp 92 203

जनपद फीरोजाबाद में आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुए

श्री ब्रजपाल सिंह आर्य जिला सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल जनपद फिरोजाबाद आदर्श जनता इण्टर कालिज जसराना (फिरोजाबाद), श्री विद्या भिक्ष जी वानप्रस्थी सिरसागज, श्री नेमसिंह चिरावली के अथक प्रयासो एव कठोर परिश्रम द्वारा जून मास मे जनपद फिरोजाबाद के ११ स्थानो पर आर्य महा सम्मेलन समायोजित किए गये ।"

संस्कृत पढ़ना जरूरी

(पृष्ठ ३ का शेष)

तक सीमित न रखा जाय तथा इसे दैनिक उपयोग की भाषा बनाना चाहिए ।

राष्ट्रीय सग्रहालय मे सम्पन्न इस सस्कृत दिवस समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय उप शिक्षामन्त्री कुमारी शैलजा ने की । अपने अध्यक्षीय भाषण मे कुमारी शैलजा न सस्कृत की व्यापकता का उल्लेख करते हुए बताया कि सस्कृत साहित्य की समृद्धि मे भारत के सभी प्रातो के निवासी विद्वानो ने योगदान किया ।

समारोह के प्रारम्भ मे श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ के कुलपति डा० मडन मिश्र ने सस्कृत साहित्य को राष्ट्र की अमूल्य निधि बतात हुए विद्यालय शिक्षा मे इसको उपयुक्त स्थान देने का अनुरोध किया । डा० मिश्र न कहा कि सभी पढने के इच्छुक छात्रो को सस्कृत भाषा के अध्ययन की सुविधा प्रदान की जाए ।

पूर्व सासद डा० लोकेश चन्द्र ने इस अवसर पर कहा कि योरोप मे वर्तमान युग मे सस्कृत के अध्ययन के प्रति बहुत रुचि बढी है—योरोप के विद्वान इसे विश्वबधुत्व की भाषा मानते है ।

समारोह के अन्त मे श्रीमती उषा नारायण ने भारत नाट्यम शैली मे सस्कृत सगीत प्रस्तुत किया ।

दसवां श्री घूडमल आर्य पुरस्कार पं० क्षितीश जी वेदालंकार को

हिण्डौन सिटी । स्थानीय आर्यसमाज द्वारा प्रतिवर्ष आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य लेखन के लिये दिया जाने वाला श्री घूडमल आर्य साहित्यिक पुरस्कार इस बार २१ अगस्त योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर सुविख्यात पत्रकार सम्पादक प० श्री क्षितीश जी वेदालकार को चयनिका पुस्तक पर दिया जा रहा है ।

१३ से २१ अगस्त तक चलने वाले श्रावणी यज्ञ व वेद प्रचार के अन्तर्गत यह सम्मान आपको नागरिक सम्मान सहित प्रदान किया जावेगा । विख्यात आर्योपदेशक प० श्री सत्यपाल जी पथिक के भजनोपदेश प्रारम्भ से अन्त तक प्रतिदिन होगे । स्वामी सत्यानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित प० क्षितीश जी के लेखो के सकलन का विमोचन विख्यात जुझारू पत्रकार तथा पी०टी०आई० मे निदेशक डा० वेदप्रताप जी वैदिक द्वारा किया जावेगा ।

एक आर्य वीर को आर्य भूषण से सम्मानित कर रजत पदक, शाल व साहित्य भेंट किया जावेगा । कार्यक्रम के अन्त मे प्रीतिभोज का आयोजन रखा गया है ।

विवाह सस्कार

श्री राजू गुप्ता, निवासी खिदिरपुर, कलकत्ता का वैदिक विवाह आयुष्मती अन्जू साहू, निवासिनी ४।२ रामकमल स्ट्रीट, कलकत्ता-५३ के साथ स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर मे दिनाक २१-७-९२ को श्री ध्रुव नारायण आर्य, सिद्धान्त शास्त्री के पौरोहित्य मे पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ । उपस्थित सभी नर नारियो न वर वधु को आशीर्वाद दिया ।

—स० प्र० रजन प्रधान
आर्य समाज लहेरिया सराय (दरभगा)

यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद के तत्वावधान मे शुक्रवार २१ ८ ९२ को प्रात ८ बजे आय समाज मन्दिर आर ५।५० ए राजनगर मे नवनिर्मित यज्ञशाला का उदघाटन सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कर-कमलो द्वारा सम्पन्न होगा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे श्री बालेश्वर त्यागी राजस्व राज्य मन्त्री उ० प्र० भी पधार रहे है। समारोह की अध्यक्षता प्रो० वाचस्पति उपाध्याय जी करेंगे। प्रसिद्ध उद्योगपति श्री बी० पी० कौडा स्वागताध्यक्ष तथा डा० गणेशदत्त शर्मा और आचार्य छविकृष्ण शास्त्री मुख्य वक्ता रहेगे। २२ एव २३ अगस्त को रात्रि ८ बजे योगीराज श्री कृष्ण के आदश एव गीता के दशन पर सारगर्भित व्याख्यान तथा भजनोपदेश होगे।

वेद गोष्ठी

श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री स्मारक समिति ने २५ अगस्त ९२ को अप० २ बजे से कक्ष स० २२ कला सकाय मौरिस नगर दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली मे एक वेद गोष्ठी का आयोजन किया है। इस समारोह की अध्यक्षता डा० नित्यानन्द जी शर्मा करगे। गोष्ठी मे अथर्ववेद मे जादू-टोना विषय पर डा० रघुवीर वदालकार अपने विचार प्रकट करगे। इस अवसर पर शका समाधान एव जलपान का आयोजन भी किया गया है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर आयोजन को सफल बनायें।

—जितेन्द्र कुमार

आर्य समाज सिकन्दराबाद में वेद प्रचार

आर्य समाज सिकन्दराबाद—का कार्य नये सिरे से प्रारम्भ किया है। जो कि १२ वर्षों से बिना चुनाव के ही शिथिल दिशा मे चल रहा था।

नवीन निर्वाचित अधिकारी नये उत्साह के साथ आय समाज के प्रचार मे लगे हैं। उक्त सिकन्दराबाद आर्य समाज की गतिविधि के केन्द्र बिन्दु हैं—आर्य नेता श्री प० रामचन्द्र राव बन्देमातरम।

पूरा सिकन्दराबाद आर्य समाज प० बन्देमातरम के साथ विश्वास और निष्ठा पूवक उनके साथ है। ५ दिन के श्रावणी सप्ताह के कायक्रम मे प्रात यज्ञ और प० बन्देमातरम जी के नेतृत्व मे तथा श्री नारायण प्रधान की अध्यक्षता मे कार्यवाही होती रही है।

जनता का उत्साह बढा हुआ था।

सगारेड्डी जिला मेदक मे भारी उत्साह पूवक उत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमे प बन्देमातरम जी को मानपत्र भट किया गया और आगन्तुक अतिथियो का सम्मान किया गया। विभिन्न कायक्रमो में विद्यार्थियो अध्यापको ने भी विचार व्यक्त किये।

सभी स्कूल कालिज के अध्यापको ने प० रामचन्द्र राव बन्देमातरम मे विश्वास व्यक्त किया और उनके निर्देशन मे कार्य करने का आश्वासन दिया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/६२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२३-८-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U 93Post in N D P.S O on 20, 21-8-1992

आर्य समाज दीवान हाल द्वारा

हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों को सम्मानित किया गया

दिल्ली १३ अगस्त। दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज दीवान हाल की ओर से भारत छोडो आन्दोलन के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष मे स्वतन्त्रता सेनानियो को सम्मानित किया गया। समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हुआ। इस अवसर पर स्वामी जी ने प्रत्यक स्वतन्त्रता सेनानी को एक शाल और नकद राशि से सम्मानित किया।

स्वामी जी ने अपने सन्देश म कहा भारत छोडो आन्दोलन १९४२ मे हुआ था जबकि इससे पूर्व आय समाज ने १९३८ ३९ म हैदराबाद निजाम के क्रूर अत्याचारो के विरुद्ध आर्यसत्याग्रह आन्दोलन चलाया था। आप सभी स्वतन्त्रता सेनानिया न उसमे भाग लिया था। आज हम इस आन्दोलन मे शहीद हुए आय वीरो को भी श्रद्धा पूर्वक याद करत हु जिन्होने राष्ट्रीय एकता अखण्डता और स्वतन्त्रता के जागरण म अमूल्य योगदान दिया था।

स्वामी जी न कहा भारत छोडो आन्दोलन म भी आय समाज के हजारो राष्ट्र भक्तो ने भारत से अग्रेजी राज्य को जड़ से उखाड फेंकने के लिए अनेक प्रकार के कष्ट सहे और जेलो में गए थे। आज समूचा राष्ट्र उन सभी स्वतन्त्रता सेनानिया के त्याग और बलिदान के लिए कृतज्ञता प्रकट करता है।

समारोह के अन्त म आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त ने सभी महानुभावो का धन्यवाद करते हुए बताया कि आगामी २१ अगस्त ९२ को दिल्ली की समस्त आय समाजो की ओर से योगीराज श्री कृष्ण का जन्म दिवस समारोह प्रात १० बजे आय समाज दीवान हाल मे मनाया जायेगा, जिसमे केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड के अतिरिक्त अन्य कई नेता भी पधारेंगे। उन्होने सभी महानुभावो से इस अवसर पर उपस्थित होने की अपील की।

आर्य समाज द्वारा [illegible] मेले में प्रचार

वाराणसी। आर्यसमाज जिला सभा के तत्वावधान मे दि० ६-८-९२ को वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन सभा के प्रधान श्री शकरलाल पोद्दार जी की अध्यक्षता मे हुआ। यज्ञोपरान्त वैदिक प्रचार के इस अवसर पर आर्य वीर दल वाराणसी के संयोजन मे स्वर्गीय श्री जीवित राम आर्य स्मारक कबड्डी प्रतियोगिता श्री अमरनाथ जी के सरक्षण मे हुयी। प्रतियोगिता का सचालन आर्य वीर शिक्षक श्री विद्यासागर जी द्वारा किया गया।

उपर्युक्त कार्यक्रमो से मेले की छटा मे एक अनूठा समावेश हुआ जिससे लोगो पर अच्छा प्रभाव पडा। अन्त मे सामूहिक सहभोज एव शान्तिपाठ के साथ वैदिक जय घोष व उत्साहमय वातावरण मे कार्यक्रम का समापन हुआ।

—अमरनाथ आर्य, सचालक
आर्य वीर दल, वाराणसी

स्थापना दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार महोत्सव

आप लोगो को जानकर हर्ष होगा कि आपके प्रिय गुरुकुल पूठ का स्थापना दिवस समारोह कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर २१ २२ २३ अगस्त ९२ दिन शुक्र शनि, रविवार को कुलभूमि मे मनाया जा रहा है। अत आप लोगो से करबद्ध विनम्र प्राथना है कि अपने इष्टमित्रो एव परिवार सहित अधिक से अधिक सख्या म पधार कर बच्चो को आशीर्वाद प्रदान कर धर्म लाभ उठाव। इस शुभ अवसर पर—

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान सन्यासी नेतागण भजनोपदेशक पधार रहे है। जिनके उपदेश, प्रवचन भजन सुनकर आप लाभान्वित होगे। सामवेद पारायण यज्ञ श्री आचार्य वरुणीत जी शास्त्री की अध्यक्षता मे २१ ता० से उत्साह पूवक प्रारम्भ होगा जिसकी पूर्णाहुति २३ ता० को प्रात १० बजे होगी। श्री प्रदीप व प्रकाश जी सयोजक रहेंगे। नवीन छात्रो का वेदारम्भ सस्कार भी इसी अवसर पर होगा। २३ अगस्त को साय चार बजे ब्रह्मचारियो द्वारा शक्ति प्रदशन का कार्यक्रम होगा।

यह कैसी आजादी है

सचमुच चकनाचूर कर दिया बापू के हर सपने को।
लडा दिया लीडर लोगो ने अपने ही से अपने को॥
न अब नजरे रही स्वदेशी, न अब सोच स्वदेशी है।
क्या कपडे क्या भाषा भैया सब कुछ आज विदेशी है॥
न अब सिर पर गाधी टोपा न अब तन पर खादी है।
कई बार सोचा करता हू यह कैसी आजादी है॥
सब कहते है बैर-भावना मजहब नही सिखाता है।
लेकिन यह दुर्भाग्य देखिए मजहब हमे लडाता है॥
अब दहेज के कारण जलती रोजाना अबलाए है।
हाय! चगावा तक के अन्दर हिंसा है, हत्याए हैं॥
मानवता की हर मर्यादा अपने आप मिटा दी है।
कई बार सोचा करता हू यह कैसी आजादी है॥
अब सेवा कर रहे रात दिन हम दुश्मन की चालो को।
प्यारे भाई खुली छूट है देश तोडने वालो को॥
तडप रहा पजाब कही तो तडप रहा कश्मीर कही।
पल भर सास चैन की ले ले भारत की तकदीर नही॥
खून-खराबा है, लूटमार है, बदअमनी, बर्बादी है।
कई बार सोचा करता हू यह कैसी आजादी है॥

—विजय निर्बाध

आत्म शुद्धि आश्रम

आत्म शुद्धि आश्रम के रजत जयन्ती वर्ष १९९२ पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ व ध्यान योग शिविर दिनाक १ सितम्बर मगलवार से २ अक्टूबर शुक्रवार तक यज्ञ ब्रह्मा—पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, वेदपाठ—गुरुकुल गौतम नगर एव आत्म शुद्धि आश्रम के ब्रह्मचारियो द्वारा। ध्यान, योग शिविर साधना करवाने के लिए आमन्त्रित विद्वान—

श्री पूज्य स्वामी सत्यपति जी सरस्वती, श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती, श्री स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती।

श्री डा० आर्य नरेश जी वैदिक प्रवक्ता श्री आचाय अखिलेश्वर जी।

यजमान स्थान ग्रहण करने एव ध्यान योग साधना मे भाग लेने के लिए इच्छुक बन्धु एव माताए सम्पर्क करें।

स्वामी धर्ममुनि (मुख्याधिष्ठाता) दू० ८३१०१६५
डा० शिवकुमार शास्त्री (सयोजक) दू० ५५९६२०७

आत्म शुद्धि आश्रम (प० म्यास) बहादुरगढ़
रोहतक हरियाणा पिन—१२४५०७

मासिक सामूहिक सत्संग प्रारम्भ

कोटा नगर की समस्त आर्य समाजो का सामूहिक सत्संग क्षेत्रीय प्रधान श्री राजेन्द्र आय के प्रयास स प्रारम्भ हुआ। इस क्रम मे प्रथम मासिक सत्सग श्रावणी अमावस्या दि० २२ ७ ९२ को साय ६ बजे से आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा म रखा गया। जिसमे कोटा नगर के सभी आर्य समाजो से आर्य नर-नारी बच्चे भारी सख्या म उपस्थित हुए। बूदी के विद्वान श्री पीताम्बरम शर्मा ने आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द द्वारा क्यो व किन परिस्थितियो मे की गई, बताया। प्रधान श्री राजेन्द्र आर्य ने यज्ञ व कर्मकाण्डो मे सभी समाजो मे एक पद्धति हो यह सभी नर-नारियो को बताया। अगला सत्सग आर्य समाज श्रीमगज मण्डी कोटा म दि० २८-८ ९२ को साय ६ बजे से होगा। [illegible] प्रधान मन्त्री हाडौती आर्य उपप्रतिनिधि सभा कोटा

सार्वदेशिक प्रेस द रयागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी 'सत्य' और दूसरे विरोधी मत वाले के 'सत्य' को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है।

● जिनका सहाय धर्म है उन्हीं का सहाय परमेश्वर है। जब बुरे बुराई न छोड़ें, तो भले भलाई क्यों छोड़ें ?

● चाहे कोई हो, जब तक मैं उसमे न्यायाचरण देखता हूं तब तक उसके साथ मेल करता हूं और जब अन्यायाचरण प्रकट होता है फिर उससे मैं मेल नहीं करता, इसमे चाहे कोई हरिश्चन्द्र हो व अन्य कोई हो।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष। ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक ३१] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ भाद्रपद शु० ३ सं० २०४९ ३० अगस्त १९९२

भारत बचाओ--भारत बनाओ

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

हैदराबाद। भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर अभ्युदय सान्ध्य महाविद्यालय हैदराबाद में आयोजित एक समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान और दक्षिण भारत के क्रान्तिकारी आर्य नेता प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने मुख्य अतिथि के रूप मे महाविद्यालय के छात्रों और युवा पीढ़ी को प्रेरणा करते हुए कहा कि देश की आजादी को स्थाई रखने के लिए इसकी रक्षा तथा इसके निर्माण की नितान्त आवश्यकता है। स्वतन्त्रता सेनानी अच्युत पटवर्द्धन के प्रति उन्होने कहा कि उनके साथ १९४२ में भागनपुर स्टेशन पर उनकी भेंट हुई थी। पंण्डित जी ने कहा कि आज अंग्रेज तो इस देश से चले गये हैं लेकिन विरासत में देशवासियों को बेरोजगारी, धर्मान्धता, प्रान्तीयता, क्षेत्रीयता और साम्प्रदायिकता, जैसे शत्रु दे गये हैं जिन्हें भारत भूमि से हमेशा के लिए खदेड़ना हमारा मुख्य कर्तव्य है।

इस अवसर पर आचार्य श्री केशवराव डा० विश्वनाथमय्या आचार्य जी० आर० नरसिंहा राव, श्री एल० नरसिंह राव और डा० रमेशकुमार जाधव ने भी भारत छोडो आन्दोलन के इतिहास पर विशेष रूप से जानकारी दी।

भाजपा को मन्दिर राजनीति छोड़ देनी चाहिए : अटल

भोपाल, २३ अगस्त। यद्यपि भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने आज अयोध्या मन्दिर विवाद के बारे में कोई प्रस्ताव पारित नहीं किया, लेकिन इस मसले पर प्रस्ताव पारित किए जाए या नहीं, इस मसले पर काफी वाद-विवाद हुआ। भाजपा कार्य समिति के कुछ सदस्य प्रस्ताव रखने के पक्ष मे थे, वहीं श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्पष्ट व तगडा रुख इस पक्ष मे रखा कि इस मसले पर कोई प्रस्ताव पारित नहीं किया जाए। एक समय तो अटल जी ने यहां तक कह दिया कि भाजपा को अब मन्दिर की राजनीति छोड़ देनी चाहिए, नही तो आज अयोध्या के मंदिर की लड़ाई लड़ रहे हैं, तो कल मथुरा की लड़ाई लड़नी पड़ेगी।

कार्य समिति के एक सदस्य के अनुसार आज करीब एक घण्टे तक कार्य समिति में उक्त प्रस्ताव पारित करने या न करने पर बहस छिड़ी रही। अन्ततः श्री वाजपेयी की बात मानी गई और मन्दिर विवाद सम्बन्धी प्रस्ताव को तिलांजलि देनी पड़ी।

(हिन्दुस्तान २४ अगस्त से साभार)

यज्ञशाला का उद्घाटन एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव सम्पन्न

२१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आर्यसमाज राजनगर, गाजियाबाद की नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस यज्ञशाला का शिलान्यास भी स्वामी जी के द्वारा ही हुआ था। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने आर्यसमाज राजनगर के अधिकारियों को इतने थोड़े समय में यज्ञशाला के निर्माण पर बधाई दी तथा आशा व्यक्त की कि इस यज्ञशाला से उच्चारित वेदमन्त्रों की ध्वनि राजनगर के प्रत्येक घर में पहुंचेगी और यह आर्यसमाज वैदिक धर्म के प्रचार एव प्रसार में निरन्तर अग्रसर रहेगा। योगीराज श्रीकृष्ण के निष्कलंक जीवन चरित्र की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि क्योंकि श्रीकृष्ण गोपालक थे, अत: मेरी यह उत्कट इच्छा है कि प्रत्येक आर्यसमाज के अन्तर्गत एक-एक गोशाला भी सचालित हो।

समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान डा० वाचस्पति उपाध्याय ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण मे उन्होंने योगीराज श्रीकृष्ण के आदर्शों को जीवन में ढालने पर जोर देते हुए महर्षि दयानन्द के प्रति इस बात के लिये आभार व्यक्त किया कि उन्होंने योगीराज श्री कृष्ण का वह वास्तविक रूप हमारे सम्मुख रखा जिस पर समूचा राष्ट्र व हिन्दू जाति सदैव गर्व करती रहेगी। इस अवसर पर पं० रामप्रसाद वेदालंकार, डा० गणेशदत्त शर्मा, आचार्य छविकृष्ण शास्त्री व सनातन धर्म के नेता पं० चन्द्रप्रकाश कौशिक के भी योगीराज के जीवन चरित्र व गीता की शिक्षाओं पर व्याख्यान हुए। श्रोतागणों में उपस्थित पौराणिक बन्धुओं ने श्री कृष्ण सम्बन्धी आर्य विद्वानों के विचारों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

—श्रद्धानन्द मन्त्री

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

योगीराज श्रीकृष्ण सामाजिक समानता के अग्रदूत थे

—डा० बलराम जाखड़

भारतीय वैदिकसंस्कृति के आप्त पुरुषो मे योगीराज श्रीकृष्णका नाम सर्वव अमर रहेगा। वह भारत मे पाडवो के माध्यम से रामराज्य की स्थापना करना चाहते थे। उन जैसा कर्मयोगी और वैदिक संस्कृति का महान विदूषक आर्य जाति के लिए गौरव पूर्ण रहा। उन्होने व्यक्ति को कर्म से ऊपर उठने की प्रेरणा की इसीलिए गीता जैसे पवित्र ग्रन्थ मे उन्होने कर्मयोग पर विशेष बल दिया। उन्होने मनुष्य मात्र को कायरता और दुबलता का जीवन त्यागकर मनुष्य मात्र की सेवा और जीवन मे अच्छे कार्य करके ससार मे आदर पाने की प्रेरणा की। श्रीकृष्ण सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। उनके मित्रो मे धनी से धनी और निर्धन से निर्धन सब लोग थे। उन्होने अपनी मित्रता को सदैव धर्म पूर्वक निभाया। सुदामा जैसा मित्र भी उनके आशीर्वाद और स्नेह से गौरवान्वित हुआ। यह शब्द केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड ने आज दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य समाज दीवानहाल मे आयोजित योगीराज श्रीकृष्ण महाराज के जन्मोत्सव पर आयोजित समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे प्रकट किये।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि श्रीकृष्ण परम गोभक्त और गोपालक थे। उन्होने अपनी बहन सुभद्रा को गऊ चराने वाली ग्वालिन के वेश मे ससुराल जाने की प्रेरणा की थी। स्वामी जी ने यह भी बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने १००० दूध देने वाली गायो से युक्त 'महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन दुग्ध केन्द्र' की स्थापना दिल्ली मे कर दी है। जिसका उद्घाटन भविष्य मे शीघ्र ही भारत के प्रधानमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव जी करेगे।

समारोह मे प्रकाण्ड वैदिक विद्वान आचार्य यशपाल सुधांशु, आचार्य राम किशोर, डा० धर्मपाल, प० महेन्द्र कुमार शास्त्री आदि ने योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए मानव जाति से उनकी शिक्षाओ और सन्देशो को ग्रहण करने की प्रेरणा की।

आर्य समाज के मन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने सभा का सचालन किया। इस अवसर पर बाबू सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, आर्यसमाज दीवानहाल के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पूर्व प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस, और महिला आर्य प्रान्तीय सभा से माता सरला मेहता के अतिरिक्त अनेक विद्वान उपस्थित थे।

—प्रचार विभाग

महर्षि दयानन्द सरस्वती वक्तृत्व स्पर्धा

आर्य विद्या मन्दिर पिंपरी की ओर से २९ से ३१ जुलाई तक महर्षि दयानन्द सरस्वती वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन किया गया। स्पर्धा मे ५६ स्पर्धको ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दीपकचन्द जी वेरी ने की तथा विजेताओ को पारितोषिक मुख्य अतिथि श्री शकरराव जी पाटिल भूतपूर्व लोकसभा अध्यक्ष ने अपने कर कमलो द्वारा प्रदान किये। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन का श्रेय प्राध्यापक श्री एकनाथ नानेकर को जाता है

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव

धर्म प्रेमी भाइयो, बहिनो!

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी पर्वत शृंखलाओ की गोद मे पवित्र रावी नदी के सुरम्य तीर पर स्थित आपके प्रिय सस्थान दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव १३ सितम्बर ९२ से २७ सितम्बर १९९२ तक आश्रम के अध्यक्ष वीतराग सन्त पूज्यपाद गुरुदेव श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री वीरेन्द्र वर्मा भी इस वार्षिकोत्सव मे पधारेगे। २५, २६, २७सितम्बर को मुख्य उत्सव होगा।

डा० भवानीलाल भारतीय सार्वदेशिक सभा के धर्माधिकारी

आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान तथा महर्षि दयानन्द अनुसधान पीठ, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के पूर्व अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय, अब सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के नए धर्माधिकारी नियुक्त किए गए है। उनका वर्तमान पता 'रत्नाकर, ८-४२३, नन्दनवन, चौपासनी आवासन, मण्डल, जोधपुर (राज०) है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

आर्यसमाज के बढ़ते कदम

आर्यसमाज सिकन्दराबाद आन्ध्र प्रदेश में, प्रचार कार्य—

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री जी एवं श्री शिवकुमार जी शास्त्री का तूफानी दौरा

हैदराबाद १० अगस्त। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री एव श्री शिवकुमार जी शास्त्री ८ अगस्त को रात्रि ८-४५बजे आन्ध्रा एक्सप्रेस से सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन पहुचे गाडी के पहुचते ही सारे स्टेशनका वातावरण आर्य समाज तथा वैदिक धर्म और स्वामी दयानन्द जी के जयघोषो से गूज उठा तदुपरान्त आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री कातिकुमार कोरटकर जी एवम् महामन्त्री के० नरसिम्हा रेड्डी जी श्री ओम् प्रकाश जी, गगम श्री निवासराव जी अध्यक्ष आर्य समाज रा०प० रोड सिकन्दराबाद मन्त्री श्री पन्डरीनाथ मरीपल्ली जी एवम् कोषाध्यक्ष श्री पी० रामलू जी आचार्य अरविन्द 'मयाचारी' अध्यक्ष आर्य सेवा समिति हैदराबाद आर्य समाज लाला गुडा के मन्त्री एवम् अन्य अधिकारी तथा समस्त नगरद्वय के आर्य समाजो से पधारे आर्य सदस्यो के द्वारा पुष्पमालाओ से स्वागत किया गया। तत्पश्चात् ९ अगस्त मे १३ अगस्त तक आर्य समाज राष्ट्रपति रोड सिकन्दराबाद मे श्रावणी वेद प्रचार सम्पन्न हुआ। विशेष यज्ञ का ब्रह्मत्व आचार्य अरविन्द मयाचारी ने निर्वहन किया इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी वरिष्ठ उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने की। इसके पश्चात् १० ८-९२को श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी के मार्ग दर्शन मे दोनो विद्वानों ने यथा हैदराबाद और सिकन्दराबाद के गणमान्य विद्वानो के साथ आर्यसमाज सगारेड्डी की प्रचार यात्रा की वहा पर दोनो विद्वानो का पुष्पहारो तथा शालो से आर्यसमाज सदाशिव पेठ, आर्य समाज जोगी पेठ आर्यसमाज कोहीर के गणमान्य आर्यो द्वारा स्वागत किया गया। उसी कार्यक्रम मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् जी का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ और श्री वन्देमातरम् जी को प्रशस्ती पत्र एव शाल भेंट की गई। ११-८-९२ को सिकन्दराबाद हिन्दी विद्यालय हैदरबस्ती हैदराबाद मे दोनो का छात्रोमे वेदप्रचार हुआ तत्पश्चात् १२-८-९२ को सरस्वती कन्या विद्यालय मे प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ दोनो विद्यालयो के अधिकारियो एवम् प्रधानाचार्याओ ने दोनो विद्वानो का पुष्पमालाओ से स्वागत किया जिसमे लगभग २ हजार, छात्र-छात्राओ ने विद्वानो को सुना १३ ८-९२ को रात्रि मे आर्यसमाज नाथ लालागुडा हैदराबाद मे श्रावणी उपाकर्म एवम् यज्ञोपवीत पर विद्वानो ने प्रकाश डाला जिसे नर-नारियो ने तथा बालको ने सुनकर लाभ उठाया। १४-८-९२ को दोनो विद्वानों ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। विदाई समारोह मे सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन पर नगर द्वय के आर्यो ने उत्साह पूर्वक विदाई दी।

पाकिस्तान के विनाश का कारण अफगानिस्तान बनेगा व भारत पुन: अखण्ड होगा

श्री अन्तराल म ाक

१५ अगस्त, १९४७ को भारत अथवा हिन्दुस्तान का दो राष्ट्रो के सिद्धान्त के आधार पर विभाजन हुआ था। भारत के पश्चिम और पूर्वी भाग का मुस्लिम बहुल क्षेत्र, भारत से कट कर अलग इस्लामी राष्ट्र और राज्य बन गया। ससार की नजरो मे तब खण्डित भारत हिन्दू इण्डिया रह गया और पाकिस्तान मुस्लिम इण्डिया बन गया। सारे हिन्दुस्तान की १९४१ की जनगणना के अनुसार उस समय ब्रिटिश भारत मे मुसलमानो की सख्या का अनुपात २३ प्रतिशत था और इण्डियन इण्डिया यानि देशी राज्यो मे दस प्रतिशत। सारे हिन्दुस्तान की जनसख्या मे उनका अनुपात २० प्रतिशत के लगभग था परन्तु भारत की धरती का जो भाग पाकिस्तान के रूप मे उन्हें दिया गया, वह कुल भारत के क्षेत्रफल का ३० प्रतिशत था। इस प्रकार मुसलमानो को उनकी जनसख्या के अनुपात से भूमि अधिक मिली।

यह विभाजन बिल्कुल अप्राकृतिक था, इसके कारण भारत पूर्व और पश्चिम मे अपनी प्राकृतिक सीमाओ से वचित हो गया।

महर्षि अरविन्द ने उस समय भविष्यवाणी की थी कि यह विभाजन स्थायी नही होगा और शताब्दी के अन्त तक भारत पुन एक हो जाएगा। उस समय उनकी इस भविष्यवाणी को बहुत कम लोगो ने गम्भीरता से लिया था परन्तु गत कुछ समय के पाकिस्तान और अफगानिस्तान के घटनाचक्र से लगने लगा है कि सम्भवतया उनकी भविष्यवाणी साकार होगी इसलिए उस घटनाचक्र का विश्लेषण और मूल्याकन प्रासगिक हो गया है। पाकिस्तान के विघटन की पहली कडी १९७१ मे हुए पाकिस्तान के विभाजन और बगला देश के उदय को माना जाता है। यदि बगला देश मे वास्तव मे इस्लामी राष्ट्रवाद के स्थान पर बगला राष्ट्रवाद का उदय होता तो इस विभाजन से पाकिस्तान के वैचारिक आधार के अन्त की शुरुआत माना जा सकता था परन्तु ऐसा हुआ नही। १९७५ मे शेख मुजीब की हत्या के बाद बगला देश ने पुन पाकिस्तान की इस्लामी राष्ट्रवाद की विचारधारा को अपनाना शुरू किया। अब बगला देश पाकिस्तान से भी अधिक कट्टरपथी इस्लामी राज्य बन चुका है। इसलिए बगला देश बनने से पाकिस्तान टूटा अवश्य परन्तु उसका आधार खत्म नही हुआ।

पाकिस्तान की विचारधारा को वैचारिक चुनौती इसके सिन्ध प्रान्त मे उभरे 'जिए सिन्ध आदोलन' से मिलने लगी है। इस आदोलन के प्रणेता जी एम सैयद ने ७१ इस्वी मे सिन्ध पर अरबो की विजय और वहा इस्लामी राज्य की शुरुआत को ही नकारना शुरू किया है। श्री सयद की मान्यता है कि सिन्ध की अपनी सस्कृति है, जो पाच हजार वर्ष पुरानी सिन्धु घाटी सभ्यता से जुडी हुई है। उनके अनुसार महाराजा दाहिर सेन जिसने अरब आक्रान्ता मुहम्मद बिन कासिम से सिन्ध की आजादी की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की, सिन्ध के वास्तविक महापुरुष और सिन्धी राष्ट्रवाद के प्रेरक बिन्दु थे। स्पष्ट है कि यह पाकिस्तान की विचारधारा को लिए पाकिस्तान के अन्दर से खुली चुनौती है इसलिए पाकिस्तान के शासकों को 'जिए सिन्ध आन्दोलन से पाकिस्तान के अस्तित्व को खतरा महसूस होने लगा है, सिन्धी राष्ट्रवाद की काट के लिए पाकिस्तानी शासक १९४७ के बाद भारत से सिन्ध मे आकर बसे मुस्लिम मुहाजिरो का इस्तेमाल कर रहे हैं। इनकी जनसख्या सिन्ध की आबादी का लगभग ३० प्रतिशत है और कराची, हैदराबाद तथा सक्खर जैसे बडे नगरों में इनका बाहुल्य है। यह सिन्ध का विभाजन करके एक अलग उर्दू भाषी राज्य की माग करने लगे हैं। इन्हे पजाबियो का समर्थन प्राप्त है। पाकिस्तान मे पजाबी मुसलमान लगभग ६० प्रतिशत है और सिविल सेवाओ व सेना पर पजाबी और मुहाजिर छाए हुए हैं। इसलिए 'जिए सिन्ध आदोलन' को अधिक सफलता नही मिली परन्तु सिन्धी राष्ट्रवाद और सिन्ध को पाकिस्तान से अलग करके अलग राज्य बनाने का आदोलन पाकिस्तान के अस्तित्व के लिए एक चुनौती अवश्य बन गया है।

सिन्ध के साथ लगे हुए बलोचिस्तान की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। क्षेत्रफल की दृष्टि से बलोचिस्तान पाकिस्तान का सबसे बडा प्रदेश है। विभाजन से पूर्व यह दो भागो ब्रिटिश बलोचिस्तान जिसकी राजधानी क्वेटा थी और कलात राज्य मे बटा हुआ था। अब दोनो को मिला कर एक प्रदेश बना दिया गया है। बलोचो की जनसख्या कम है। सारे पाकिस्तान मे इनकी जनसख्या का अनुपात ५ प्रतिशत से भी कम है परन्तु जैसा कि इनके नाम बल—उच्चबलोच से स्पष्ट है, ये शारीरिक दृष्टि से पजाबियो और पठानो से कम नही।

बलोचिस्तान मे बलोच राष्ट्रवाद का उदय हो रहा है। इस समय बलोच क्षेत्र तीन देशों मे बटा हुआ है। एक भाग पाकिस्तान मे है और दूसरा ईरान मे है। अफगानिस्तान मे भी थोडा सा बलोच क्षेत्र पडता है। बलोच राष्ट्रवादी चाहते हैं कि सारे बलोच क्षेत्र को मिलाकर एक सशक्त बलोच राष्ट्र बने। पजाबियो और पठानो से उनकी पटती नही है। पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार का दमनचक्र बलोचिस्तान मे चलता रहता है। बहुत से अफगान शरणार्थी भी क्वटा और अफगानिस्तान के साथ लगने वाले क्षेत्र में बस गए है। क्वेटा नगर मे उनका बाहुल्य हो गया है। इसलिए बलोचो और पठानो मे तनाव पैदा हो गया है। जिसका लाभ पाकिस्तान सरकार को बलोचो को दबाने के लिए मिल रहा है लेकिन सिन्धी राष्ट्रवाद की तरह बलोच राष्ट्रवाद भी पाकिस्तान के अस्तित्व के लिए एक चुनौती बन रहा है।

परन्तु पाकिस्तान के अस्तित्व के लिए सबसे बडा खतरा और चुनौती पख्तून राष्ट्रवाद है अफगानिस्तान में घटे घटनाक्रम और उससे लगते पाकिस्तान के पश्तो भाषी प्रदेशो के लोगो की महत्वाकाक्षाए पाकिस्तान के लिए एक खतरे का कारण बन सकती है। अफगानिस्तान मे पश्तो भाषी अथवा पख्तूनो की सख्या देश की कुल जनसख्या का लगभग ५५ प्रतिशत है। शेष अफगान ताजिक, उज्बेक, बलोच फारसी भाषा भाषी ईरानी मूल के लोग है।

गत दो वर्षो से काबुल पर पख्तूनो का वर्चस्व रहा है। पख्तूनो की पश्तो भाषा कश्मीरी और पजाबी की तरह वैदिक सस्कृति की सतति है। वे अपने आपको आर्य कहते गर्व अनुभव करते हैं तथा अपने देश को आर्याना भी कहते है। इसलिए अफगानिस्तान की विमान सेवा का नाम 'आर्याना विमान सेवा' है। पख्तून अधिकाशतया सुन्नी मुसलमान है। इसके विपरीत ताजिक और उजबेक जो अफगानिस्तान की कुल जनसख्या का ४० प्रतिशत हैं, जातीय दृष्टि से तुर्क और धर्म की दृष्टि से शिया मुसलमान है। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल पर इस समय उनका वर्चस्व है। काबुल की नई सरकार का सुरक्षा मन्त्री मसूद ताजिक है। प्रमुख सेनापति जनरल दोस्तम उजबेक है, जब कि पाकिस्तान समर्थक पख्तून नेता गुलबदन हिकमतयार चाहता है कि काबुल से

(शेष पृष्ठ ४ पर)

हजारों हेमू आज भी मौजूद हैं

वचनेश त्रिपाठी साहित्येन्दु

सन् १९४२ में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन के शहीद हेमू कालाणी से सिन्ध के मुस्लिम छात्र-छात्राएं किस सीमा तक प्रेरित होकर सिन्ध को पाकिस्तानी जबड़ो से स्वतन्त्र करने के लिए प्रवृत्त हैं—इसकी ज्वलन्त साक्षी उस समय प्राप्त हुई, जब सन् १९९० के मार्च महीने में मुस्लिम सिन्धी छात्रों के एक सम्मेलन ने हैदराबाद में यह घोषणा की कि 'भारतीय वाङमय में सिन्धु नदी और जिस सिन्धु देश का उल्लेख है उस पर और वेदो पर हमें गौरव का अनुभव होता है। एक राष्ट्र के रूप में हमारी अपनी अलग भाषा (सिन्धी), साहित्य तथा सांस्कृतिक विरासत है। मोहन जोदड़ो और राजा दाहिरसेन की विरासत। हम सिन्ध के लोग मोहन जोदड़ो की (आर्य) सभ्यता के वारिस हैं। राजा दाहिरसेन हमारे राष्ट्रीय नायक (राष्ट्र पुरुष) हैं और मुहम्मद बिन कासिम हमारी नजरों में एक हमलावर था। हम हर साल अपने राष्ट्रीय नायक राजा दाहिरसेन की बरसी मनायेंगे और अपने बच्चो के नाम दाहिरसेन, हेमू कालाणी रखेंगे।

इस पर पाकिस्तान के उर्दू अखबारो ने बहुत शोर मचाया। लिखा गया ऐसी बातो पर कानूनी रोक लगाई जाए। तब सिन्ध में इस नवजागरण की ध्वज वाहिका एक मुस्लिम सिन्धी छात्रा यास्मीन सिन्धी ने बाँगो साप्ताहिक उर्दू के सम्पादक आबिद को यह चिट्ठी लिखी कि—

जनाब,

आबिद साहब! आपने इस बात पर एतराज किया है कि सिन्ध के तुल्बा (छात्र-छात्राओं) के सम्मेलन में एक हिन्दू हेमू कालाणी को शहीद और हीरो की हैसियत से क्यो पेश किया गया। खूब समझ लीजिए सिन्ध की नई नस्ल (पीढ़ी) के लिए राजा दाहिर एक सिन्धी था, चाहे वह हिन्दू ही या मुसलमान—वह हमारा हीरो है आज भी सिन्ध में हजारों हेमू कालाणी मौजूद हैं।' वक्त आने पर यह साबित हो जाएगा।

हम सिन्धी लोग हमलावर मुहम्मद बिन कासिम पर लानत भेजते हैं और शाह लतीफ को सलाम करते हैं। जी०एम० सैयद को सलाम करते हैं। सिन्ध की अजमत मोहन जोदड़ो से है। हमारा नारा है मासूँ माधू सिन्धन देसू। (हम भर भले ही जाएं पर सिन्ध न देंगे।) हम लड़कियो ने यह तय किया है कि अपने बच्चो के नाम दाहिर, हेमू कालाणी शेख आयाज और दोधू रखेंगी। 'उर्दू अखबार 'बांगो' ने इसे 'यह जहालियत, यह गुस्ताखी' शीर्षक से छापा था। इस पत्र की लेखिका यास्मीन सिन्धी हैदराबाद (सिन्ध) के गवर्नमेंट कालेज में उन दिनों इन्टर की छात्रा थी और इसकी इन्हीं विचारों वाली अन्य छात्राएं साथिनें हैं—अफरम सुलताना, कु० अख्तर बलोच, सहरा मारुई, रियाजमेमन। इन छात्राओं ने 'जिए सिन्ध' आन्दोलन में पाकिस्तानी दमनकर्ताओं द्वारा बड़ी यातनाएं झेली। उन्हें चाबुको से पीटा गया।

पाकिस्तान के विनाश का कारण

(पृष्ठ ३ का शेष)

जनरल दोस्तम की उजबेक मिलीशियों को हटाया जाए तथा काबुल पर पख्तूनो का वर्चस्व पुन कायम हो। शिया, ताजिक, उजबेक और ईरानी मूल के लोग उसके इरादों को जानते हैं तथा उसे काबुल में पांव नहीं जमाने देना चाहते हैं। गत तीन महीनों से काबुल में चलने वाली तोपो की दनादन और मारकाट का यही कारण है। पिछले कुछ दिनों से हिकमतयार समर्थक छापामारों व अफगान सेना के मध्य भीषण युद्ध छिड़ा हुआ है।

पाकिस्तान की अफगानिस्तान में रुचि का सबसे बड़ा कारण डूरंड रेखा है। १८९३ में ब्रिटिश सरकार ने अफगानिस्तान के अमीर पर दबाव डाल कर अफगानिस्तान का कुछ पख्तून भाषा भाषी पूर्वी क्षेत्र अपने भारतीय साम्राज्य में शामिल कर लिया था। ब्रिटिश भारत और अफगानिस्तान की नई सीमा कर्नल डूरंड ने तय की थी। तब से इसे डूरंड रेखा कहा जाता है। पेशावर समेत कुछ पश्तो भाषी क्षेत्रो को महाराजा रणजीत सिंह ने अपने पंजाब राज्य में शामिल किया था। १८४८ में पंजाब के ब्रिटिश साम्राज्य में विलय के बाद यह क्षेत्र भी ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बन गया। १९०४ में ब्रिटिश सरकार ने सारे पश्तो भाषा-भाषी क्षेत्रो को अलग करके सीमा प्रांत के नाम से एक अलग प्रांत बना दिया। पेशावर इसकी राजधानी बनी।

जब अंग्रेज १९४७ में हिन्दुस्तान को छोड़कर जाने लगे तो काबुल सरकार ने मांग की कि पख्तून क्षेत्र इसे वापस कर दिया जाए। ब्रिटिश सरकार ने इस मांग को नहीं माना। फलस्वरूप विभाजन के बाद डूरंड रेखा पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच की सीमा बनी रही परन्तु अफगानिस्तान ने इस सीमा को मानने से इन्कार कर दिया और पख्तून क्षेत्र पर अपना दावा कायम रखा। इस कारण अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच तनाव पैदा हो गया और अफगानिस्तान भारत की ओर झुकने लगा। वर्षों से पाकिस्तान की अफगानिस्तान के प्रति नीति का मुख्य उद्देश्य काबुल में ऐसी सरकार को प्रस्थापित करना रहा है जो डूरंड रेखा को मान्यता दे और पाकिस्तान के साथ इस्लाम के नाम पर मित्रता करे। पाकिस्तान को उम्मीद थी कि काबुल में नजीबुल्ला सरकार के पतन के बाद जो भी इस्लामी सरकार बनेगी वह डूरंड रेखा को मान्यता दे देगी परन्तु पाकिस्तान की यह इच्छा पूरी होती हुई नहीं दिखाई देती।

अफगानिस्तान के अन्दरूनी मजहबी और जातीय टकराव के कारण इसके विघटन की सम्भावनाएं पैदा हो गई हैं। यदि गुलबदन हिकमतयार को काबुल पर अपना वर्चस्व कायम करने में सफलता न मिली तो वह अलग पख्तूनिस्तान बनाना चाहेगा। पाकिस्तान के अन्दर सीमा प्रांत के पख्तून भी एक बड़ा स्वतन्त्र पख्तूनिस्तान चाहते हैं। उनका पख्तून राष्ट्रवाद बलोच राष्ट्रवाद से अधिक प्रबल है क्योंकि उसके पीछे गत पचास वर्षों का इतिहास है।

सीमा प्रांत में अफगानिस्तान से आए लगभग तीस लाख शरणार्थियों जिनमें अधिकांश पख्तून हैं, के बस जाने से पाकिस्तान में पख्तून राष्ट्रवाद को और बल मिला है। पख्तूनों के पास शारीरिक बल भी है और हथियार भी। इसलिए यदि अफगानिस्तान के विघटन की प्रक्रिया शुरू हुई और पख्तूनिस्तान बना तो पाकिस्तान का पख्तून क्षेत्र उसके साथ मिलने के लिए प्रभावी पग उठा सकता है। पाकिस्तान का शासक वर्ग और सैनिक अधिकारी इस सम्भावना से चिन्तित हैं।

ऊपर दिए गए घटनाचक्र और तथ्यों से स्पष्ट है कि पाकिस्तान के विघटन को अधिक समय तक टाला नहीं जा सकता। भारत के प्रति पाकिस्तान का शत्रुतापूर्ण रुख उसके अपने विघटन को टालने का एक उपाय है। परन्तु यह उपाय उसे उल्टा पड़ सकता है।

पाकिस्तान का विघटन भारत को पुनः अखण्ड करने का मार्ग प्रशस्त करेगा। पख्तूनिस्तान और बलोचिस्तान चाहे दूर चले जाएं परन्तु सिन्ध और पंजाब भारत के साथ अपने पुराने रिश्ते कायम करेंगे। इसका क्या होगा यह कहना अभी कठिन है।

हैलो-हे आर्य !

लेखक—स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल

हैलो (Hullo) अंग्रेजी भाषा मे सम्बोधनकारक शब्द है। अंग्रेजी के शब्दकोश मे इसकी कोई धातु या व्युत्पत्ति नही दी है क्योकि अंग्रेजी मौलिक भाषा नही है। हिन्दी म इसका उच्चारण आजकल हैलो है। अंग्रेजो का साम्राज्य सारे विश्व मे फैला होने के कारण तथा टलीफोन के आविष्कार से यह शब्द सार विश्व मे लोकप्रिय हो गया है। एक बार मेरे मन मे विचार आया कि यह शब्द कैसे बना होगा। मुझ स्फुरणा हुई कि इसके मूल मे हे आय ! है। उससे विकृत होकर ही यह शब्द बना है क्यकि सस्कृतभाषा ही विश्व की सब भाषाओ की जननी है।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के एक छात्र नरेशकुमार से मेरी बातचीत हो रही थी। मैने कहा विश्व मे सब से पहल सस्कृतभाषा ही थी। अन्य भाषायें उसकी बोलिया है उससे बिगडकर बनी है। नरेशकुमार ने कहा मैं इस बात को नही मानता क्योकि जब हम भूगोल अर्थशास्त्र मनोविज्ञान विज्ञान आदि विषयो का अध्ययन करते है तो प्रत्येक अंग्रेजी के शब्द की उत्पत्ति ग्रीक या लैटिन भाषा से बताई जाती है। मैंने कहा लैटिन और ग्रीक भाषाये भी तो सस्कृत से बनी है—साख्य (दर्शन शब्द लैटिन मे साइशिया बना उससे अंग्रेजो म साइस शब्द बना। द्यौपितर (वैदिक देवता) से रोमन मे ज्युपिटर (देवता) शब्द बना। सुक्रतु स सुकरात ग्रीक म सोक्रेटीज बना। कम्बुग्रीव से अंग्रेजी मे Congreve तथा लुप्तहसा से लुप्तयासा (जमनी की वायुयान सेवा) बना।

भारतीय सस्कृति का विश्व मे प्रचार करन के लिए एक शब्द हैलो ही काफी है। जिस प्रकार भारत की प्रान्तीय भाषाय सस्कृत के विकृत रूप है—अग्नि-आगि अग्ग आग उसी प्रकार विश्व की अन्य भाषाय। भाषा विज्ञान बडा रोचक विषय है। शब्द का उच्चारण और अथ किस तरह बदलता है यह देखकर आश्चर्य होता है। शब्द के अथ ओ उच्चारण के परिवतन की दिशाओ मे प्रमुख है—प्रयत्न लाघव S v i c of c Effo सम शब्द छोटा होता जाता है। उपाध्याय से बिगडकर पाली भाषा मे उवझ्झायो बना। उससे ओझा और अन्त मे झा रह गया। बगाल और उडीसा म कृष्ण का उच्चारण कृष्ट होता है। इससे विकृत होकर क्राइस्ट (ईसा का नाम) बना।

साहित्य मे र और ल का अभद माना गया है। ग्रामीण व्यक्त केन को केरा मध्यप्रदेश मे) तथा अन्धरे को अन्धला कहना है। आय से विकृत होकर आरय बना। जन साहित्य मे आता है णमो अरियाणम आर्यो को नमस्कार है। यहा आय को अरिय कहा है। पजाबी मे आय और आर्या से अडया और अडिये शब्द बन। अरय से अरे! रे! सम्बोधन बन। अरय स अलय बना हे आय! से हरय हेरयो हलयो और उसमे अंग्रेजी का सम्बाधन हैलो बना। आय शब्द से अय्यर अय्य अजी जी आयन इरान आयरिश एरिक आरज शब्द बने।

निरुक्तशास्त्र के अनुसार

आय ईश्वरपुत्र अर्थात जिसमे ईश्वर क समान कुछ गुण हो। चतना दयालुता न्यायकारिता अजन्मापन आन द ज्ञान प्रकाश आदि। इसी आधार पर ईसा को Son of God कहा गया।

आजकल हमारी जाति का नाम आय की बजाय हिन्दू पड गया इसका कारण अज्ञान एव राजनीति है। विश्व म आदि सृष्टि उत्तर भारत म कुरुक्षत्र के आस पास हुई कुछ विद्वानो के मतानुसार तिब्बत म हुई। उस समय अमरीका और आस्ट्रेलिया महाद्वीप यूरोप और एशिया के साथ जुड हुए थ। अत आय लोग पैदल चलकर ही सारे विश्व मे फल गय। आ सभ्यता और सस्कृति के चिह्न विश्व म आज भी मिलत है। बाद मे भूकम्प क कारण अमेरिका और आस्ट्रेलिया अलग हो गये। आस्ट्रेलिया बगाल की खाडी के स्थान मे था। अंग्रेजो ने उत्तर और दक्षिण भारत के लोगो मे फूट डालने के लिए ऐसा इतिहास लिखवाया कि आय लोग बाहर स आकर भारत मे बसे। पहले यहा द्रविड लोग रहते थे। इस विषय मे वे इन्द्र को ऐतिहासिक व्यक्ति मानते हुए इन्द्र सूक्त का यह मन्त्राश भी उदधृत करते है— यो दास वणमधर गुहाक' अर्थात इन्द्र ने द्रविडो को पराजित करके दक्षिण भारत मे धकेल दिया। जो व्यक्ति वेदो का गहराई से अध्ययन नही करत वे इस षडयन्त्र का शिकार हो जाते है। आज तक स्कूलो और कालेजो म अंग्रेजो का लिखा हुआ इतिहास पढाया जाता है परन्तु यह गलत है। यदि द्रविड लोग यहा रहते थ तो उस समय इस दश का नाम द्रविड स्थान होना चाहिये था परन्तु आरम्भ से ही हमारे देश का नाम आर्यावत्त और भारतवष है। सृष्टिसम्वत केवल भारत मे ही चलता है अन्य किसी देश मे नही। किसी विदेशी इतिहासकार ने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए यह माना है कि आदि सृष्टि भारत मे हुई होगी।

मुसलमान आक्रमणकारी भारत आये तो वे सिन्धु नदी का उच्चारण हिन्दू करते थे। सिन्धु के इस पार रहने वाल लोगो को हिन्दू कहन लग उनकी भाषा हिन्दी और देश हिन्दुस्थान कहलाया। स का उच्चारण ह के रूप मे होता है। जैसे सप्ताह से बिगडकर उर्दू का शब्द हफ्ता बना। पजाबी म पैसे को पैहा कहते है तथा असम के लोग असम को अहम कहते है। हिन्दू का उच्चारण अंग्रेज लोग इन्डू करत थे। उससे हमारे दश का नाम इण्डिया पड गया। स्वामी विवेकानन्द न भी अपने साहित्य म लिखा है—

When musl n came over t India the word Sindhu was turd red i to n du—अर्थात जब मुसलमान लोग भारत आये तो सिन्धु शब्द विकृत होकर हिन्दू बन गया। विश्व हिन्दू परिषद इस सस्था के इस नाम म हिन्दू शब्द इसलिए रक्खा गया है कि इससे उत्तर और दक्षिण भारत के सभी लोगो को सगठित किया जा सकता है। दक्षिण भारत के लोग उत्तर भारत के ही लोगो को आय समझते है। स्वय को द्रविड मानते है।

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता (५)

—आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

आर्य समाज की स्थापना के बाद सन् १८७६ मे स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा पर फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश मे 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसका नाम पहले 'भारत कुदशा प्रदर्शक' था, बाद मे स्वामी जी ने नाम बदल दिया था। इस पत्र का सम्पादन कुछ समय तक पण्डित गणेश प्रसाद शर्मा न भी किया था। इन्ही दिना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने (जब वे महात्मा मुन्शीराम थे) कन्या महाविद्यालय जालन्धर के सस्थापक लाला देवराज के सहयोग से 'सद्धर्म प्रचारक' (साप्ताहिक सबसे पहले उर्दू मे निकाला। इसका पहला अक १६ फरवरी, १८८६ को प्रकाशित हुआ था। एक दिन एक व्यक्ति ने महात्मा मुन्शीराम मे ताना कसते हुए कहा—"दयानन्द के इतने कट्टर शिष्य बनते हो पर महर्षि ने तो सारा साहित्य हिन्दी मे लिखा है। आपका 'सद्धर्म प्रचारक उर्दू मे क्यो निकलता है? महात्मा मुन्शीराम के पास इसका कोई उत्तर नही था। पर 'कार्यं वा साधयेयम्, शरीर वा पातयेयम्' के दृढ विश्वासी मुन्शीराम जी ने अगले ही दिन पत्र मे यह घोषणा कर दी—'सद्धर्म प्रचारक' अब हिन्दी मे प्रकाशित होगा।' मित्रो, हितैषिया तथा आत्मीयो सभी ने समझाया कि 'हिन्दी मे कौन पढेगा? पजाब मे तो केवल हिन्दी स्त्रिया ही पढती हैं। पत्र घाटे मे पहले ही चल रहा है। अब यह और घाटा कैसे पूरा करोगे?" मुन्शीराम जी का उन सबको एक ही उत्तर था—"देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए हिन्दी का ज्ञान और व्यवहार अनिवार्य बताया गया है। अगर गुजराती होते हुए महर्षि दयानन्द हिन्दी मे ग्रन्थ लिख सकते हैं और भाषण दे सकते है तो हम उनके अनुयायी क्या तनिक भी त्याग नही कर सकते? फलत 'सद्धर्म प्रचारक की सामग्री रातो रात उर्दू से हिन्दी मे कर दी गई। अब 'प्रचारक' नियमित रूप से हिन्दी मे निकलने लगा। वस्तुत पजाब मे उस समय हिन्दी का सबसे पहला और एक मात्र हिन्दी साप्ताहिक पत्र था।

इसके बाद तो महात्मा मुन्शीराम मे हिन्दी के प्रति इतनी अनन्य निष्ठा जगी कि उन्होने 'गुरुकुल कागडी' की स्थापना करके उसके माध्यम से राष्ट्रीयता, राष्ट्रभाषा और वैदिक साहित्य के उन्नयन मे उल्लेखनीय कार्य किया, और एक दिन वह भी आया जब वे अपनी इस हिन्दी सेवा के कारण 'अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के भागलपुर अधिवेशन के अध्यक्ष मनोनीत हुए। उन्होने गुरुकुल कागडी के द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से उच्च से उच्च वैज्ञानिक शिक्षा देन का सकल्प भी पूर्ण किया। मेरी तो ऐसी मान्यता है कि यदि महात्मा मुन्शीराम गुरुकुल कागडी की स्थापना न करते तो हिन्दी पत्रकारिता' का जो रूप हम आज देख रहे है, वैसा कदापि न होता।

गुरुकुल कागडी से शिक्षा ग्रहण करके निकले हुए अनेक स्नातको ने हिन्दी-पत्रकारिता को विकसित करके उसका पथ प्रशस्त करने मे प्रशसनीय एव अभिनन्दनीय योगदान दिया है। महात्मा मुन्शीराम जी ने न केवल स्वय 'आदर्श पत्रकार के रूप मे अपने गौरव को प्रतिष्ठित किया, प्रत्युत अपने दोनो पुत्रो (हरिश्चन्द्र वेदालकार और इन्द्र विद्या वाचस्पति) को भी इस कटकाकीर्ण पथ का पथिक बनने की प्रेरणा दी और जब वे 'महात्मा मुन्शीराम से 'स्वामी श्रद्धानन्द' बन गये और पूर्णत गुरुकुल के कार्यों मे ही व्यस्त हो गए तो 'सद्धर्म प्रचारक' का सम्पादन अनेक वर्षो तक इन्द्र जी ने ही किया था। 'सद्धर्म प्रचारक' के सम्पादन का भार अपने पुत्र को सौंपकर उन्होने गुरुकुल कागडी से 'श्रद्धा' नाम से एक साप्ताहिक भी प्रकाशित करना प्रारम्भ किया था।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रतिष्ठित देखने की भावना उनमे इतनी प्रबल हो गई थी कि उन्होने अपनी आत्म-कथा भी 'कल्याण मार्ग का पथिक' नाम से हिन्दी मे ही लिखी। सन १९११ के दिल्ली-दरबार के समय स्वामी श्रद्धानन्द ने 'सधर्म-प्रचारक' को लगभग एक मास तक 'गुरुकुल कागडी' से ही दैनिक रूप मे निकाला था। साप्ताहिक की पत्रकारिता की उन्होने अपने पुत्र प्रो० इन्द्र को जो दीक्षा दी थी, वह इस प्रकार फलवती हुई कि उनकी प्रेरणा पर न केवल उन्हाने दिल्ली से दैनिक 'विजय' प्रकाशित किया, बल्कि कालान्तर मे अर्जुन, 'वीर अर्जुन, 'नवराष्ट्र और 'जनसत्ता' दैनिक के सम्पादक के रूप मे 'हिन्दी पत्रकारिता की जो नीव डाली उसी पर आज उसका यह भव्य भवन खडा है।

स्वामी जी के द्वारा सस्थापित 'गुरुकुल कागडी' के स्नातको ने इन पत्रो मे पत्रकारिता की विधिवत दीक्षा लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रो मे फैलकर जो हिन्दी पत्र निकाले बाद मे वही राष्ट्रभाषा के प्रचार और प्रसार का सशक्त माध्यम बने। यहा तक कि सन १९१९ मे अमृतसर मे हुए काग्रेस के अधिवेशन का जब स्वामी जी को स्वागताध्यक्ष बनाया गया तब काग्रेस के मच से कदाचित सबसे पहले हिन्दी मे भाषण देने वाले वे ही अकेले व्यक्ति थे। उससे पूर्व काग्रेस की सारी कार्यवाही अग्रेजी मे ही हुआ करती थी। उनका स्वागत भाषण भी बिल्कुल निराला था। उसमे उन्हाने देश के भविष्य की कल्पना इस प्रकार की थी—"यदि जाति को स्वतन्त्र देखना चाहते हो तो स्वय सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी सन्तान के सदाचार की बुनियाद रख दो। जब सदाचारी ब्रह्मचारी शिक्षक हो और शिक्षा-पद्धति राष्ट्रीय हो तभी जाति की आवश्यकताओ को पूरा करने वाले नौजवान मिलेंगे। नही तो इसी तरह आपकी सन्तान विदेशी विचारो और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनी रहेगी। ... मै अपने सब भाई-बहनो से एक याचना करूगा। इस पवित्र जातीय मन्दिर मे बैठे हुए अपने हृदयो को मातृभूमि के प्रेम-जल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो और मुझे आशीर्वाद दो कि परमेश्वर की कृपा से मेरा यह स्वप्न पूरा हो।"

बम्बई मे सन १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना के बाद वहा की प्रतिनिधि सभा की ओर से 'आर्य प्रकाश' नाम से एक मासिक का प्रकाशन सन १८८६ मे प्रारम्भ हुआ था। उन्ही दिना लाहौर से गुरुदत्त विद्यार्थी और आर्य पथिक लखराम के सम्पादन मे 'वैदिक मैगजीन (१८८१) और 'धर्मोपदेश' (१८८२) नामक मासिक प्रकाशित हुए थे। इनमे से पहला पत्र अग्रेजी मे निकाला था। यह समय ऐसा था जबसब ओर मे हिन्दी पत्रो के प्रकाशन मे प्रगति होने लगी थी। प्रख्यात तार्किक विद्वान पण्डित कृपाराम शर्मा (बाद मे स्वामी दर्शनानन्द) ने काशी मे सन १८८२ मे तिमिर नाशक प्रेस की स्थापना करके उसकी ओर से 'तिमिर नाशक' पत्र का सम्पादन-प्रकाशन किया था। यह पत्र अन्य मतावलम्बियो के लिए बमका गोला था। सन १८८० मे जहा अजमेर से 'परोपकारिणी सभा' ने 'परोपकारी (१९०१ तथा अनाथ रक्षक' (१९०२) का प्रकाशन प्रारम्भ किया वहा राजस्थान और मालवा की 'आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 'आर्य मार्तण्ड' नामक मासिक १८९५ मे अजमेर से प्रकाशित हुआ। इसमे से पहले दोनो पत्रो के सम्पादक पण्डित पदमसिंह शर्मा थे और दूसरा श्री रामसहाय आर्योपदेशक (बाद मे ओमभक्त वानप्रस्थ) के सम्पादकत्व मे निकला था। आजकल 'आर्यमार्तण्ड का प्रकाशन बन्द है और 'परोपकारी' का सम्पादन डा० धर्मवीर बडी ही दक्षता मे कर रहे हैं। पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ की 'दयानन्द पीठ' का अध्यक्ष होने से पूर्व इसका सम्पादन डा० भवानीलाल भारतीय किया करते थे। १८९० मे इटावा से महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी प० भीमसेन शर्मा के सम्पादकत्व मे 'आर्य सिद्धान्त का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। यही भीमसेन शर्मा बाद मे सनातनधर्मी हो गये और 'ब्राह्मण सर्वस्व नामक मासिक निकालने लगे थे। सन १८८७ मे कलकत्ता मे 'आर्यावर्त' नामक जो साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुआ था वह १८९७ मे राची चला गया था और बाद मे १८९८ मे वह दानापुर (पटना) से प्रकाशित होने लगा था। उन दिनो इसके सम्पादक रुद्रदत्त सम्पादकाचार्य थे। कुछ दिन तक यह पत्र भागलपुर से भी निकला था। सन १८९१ मे इसके सम्पादक श्री क्षेत्रपाल शर्मा थे, जो बाद मे 'सुख सचारक कम्पनी मथुरा' के अधिपति बने थे।

(क्रमश)

कैसे बनेगा ऋण मुक्त भारत

डा० मुरली मनोहर जोशी, अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी

ऋण के बोझ से दबे भारतवर्ष की समस्या को समझने के लिए आजादी के १०० वर्ष पूर्व की स्थिति पर विचार करना होगा। भारत हमेशा कर्जदार नही रहा है। इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। लोग इसकी सम्पत्ति को लूटने का प्रयास करते थे। इस देश को अनेक बार लूटा गया। मथुरा, सोमनाथ, दिल्ली, काशी और दक्षिण में श्रीरंगपट्टनम को लूटा गया। उसके बाद नादिरशाह, चगेज खां आदि ने भी इसे लूटा। तख्तेताऊस यहां से चला गया, कोहिनूर चला गया। उस जमाने की करोड़ों दीनार की मूर्तियां सोने-चांदी, हीरे-जवाहरात सब चले गए।

ऐसा कहते हैं कि जब गजनी मे हिन्दुस्तान की लूट की प्रदर्शनी लगाई गई तो उसमें बड़े-बड़े शीशे के बर्तनों में लाल रग के माणिक को भरकर उस पर हीरों को सजाकर रखा गया था। उसे देखकर ऐसा लगता था मानो शीशे के बर्तनों मे लाल शराब पर बर्फ तैर रही हो। मुस्लिम लुटेरों द्वारा लूटी गई देश की सम्पत्ति का यह हाल था। लेकिन ईस्ट इण्डियां कम्पनी द्वारा तो राजनीतिक आर्थिक-दृष्टि से भारत को पगु बनाने के लिए सोच-समझकर लूटा गया। पहली लूट में तो विदेशी आए, एक बार लूट कर चले गए। लेकिन लूट का दूसरा तन्त्र इस देश में हमेशा के लिए आ गया। जिसमे ऐसी व्यवस्था बनाई गई कि इस देश की पूंजी निरन्तर इग्लेण्ड को जाती रहे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नौकर सालाना २५ करोड़ रुपये की पूंजी उस जमाने में भारत से इगलेण्ड को स्थानांतरित करते थे। प्लासी और वाटरलू की लड़ाई के बीच ५५ साल में लगभग एक हजार मिलियन पौण्ड (१५ अरब रुपये) ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने यहां से स्थानांतरित किए और २५ करोड़ रुपए सालाना तो उसके कर्मचारी यहा से ले ही जाते थे। कुल मिलाकर लूट का यह तन्त्र इस तरह शुरू हो गया कि लूटने की एक व्यवस्था बन गई जो बाद मे नियमित और सुव्यवस्थित पूंजी स्थानांतरण के रूप मे विकसित कर ली गई। उदाहरण के लिए किसानों के लगान लगातार बढ़ते चले गये।

मुगल शासन के अन्त और अग्रेजी शासन की शुरूआत (१७६५-६६) से द्वितीय विश्वयुद्ध (१९३६-३७) के बीच लगान मे हुई वृद्धि के आंकड़े ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा एक वर्ष मे ही लगान मे की गई वृद्धि और उसके बाद लगातार लगान बढ़ाते चले जाने से पता चलता है कि मुगलो की तुलना मे अंग्रेजों ने भारतीय किसानों का खून कितनी निर्ममता से चूसा।

वर्ष		राशि पौण्ड मे
१७६४-६५	मुगल शासन	८१,८१०
१७६५-६६		१,४७०,०००
१७९३-९४		३,०९१,०००
१८५२-५८		१५,०३०,०००
१९००- १		१७,०५०,०००
१९११-१२		२०,०००,०००
१९३६-३७		२३,९००,०००

आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि किस तरह मुगलकाल के अन्तिम वर्ष से लेकर अंग्रेजों के भारत छोड़ने से कुछ पहले तक किसानो से लगान वसूलने की मात्रा बढ़ती चली गई। लगान में बेतहाशा वृद्धि और भारत के कृषि और अन्य उद्योगों मे किसी पूंजी का निवेश न होना, इससे भारत में आर्थिक विकास की प्रक्रिया पर ही प्रतिबन्ध लग गया। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है और हमे इसको अच्छी तरह से समझना चाहिए कि अगर प्लासी की लड़ाई के बाद अंग्रेज यहां से लूटकर पूंजी का स्थानांतरण नहीं करते तो न तो उनके यहां औद्योगिक क्रान्ति हो सकती थी और न जेम्सवाट का इंजन आ सकता था। इन सबके लिए पूंजी भारत से गई। यह आज सिद्ध किया जा सकता है कि जिस वर्ष प्लासी की लड़ाई हुई उस वर्ष वहा एक उद्योग लगा। जब यहा के किसी राज्य को हस्तगत किया तो वहां दूसरा उद्योग खुला। जब उन्होने यहां लगान बढ़ाया तो वहां विकास का प्रमुख कार्य हुआ। इस प्रकार यदि पूरा हिसाब लगाएं तो हम देखेंगे कि इंग्लैण्ड जब हमारे ऊपर राज करने आया था, तो उद्योग और तकनालाजी की दृष्टि से उसकी हालत बहुत विकसित नही थी। लेकिन हमारे अर्थतन्त्र पर उनका शिकंजा कस जाने के बाद, यहा से पूंजी का पलायन वहां होने लग जाने के कारण सुनियोजित ढगसे भारतका खून चूसा गया। कई बार यह कहा जाता था कि यह जो रेलगाड़ियां चलाई जा रही है, सडकें बनाई जा रही हैं ये भारत की आम जनता के विकास के लिए नही, बल्कि यहा से कच्चे माल को सुविधापूर्वक बाहर ले जाने के लिए हैं, तो यह गलत नही कहा जाता था। यह उनका एक बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्य था। बाकी संचार व्यवस्था का विकास और लोगो की सुविधा के काम तो भारत के ही उत्पादन थे। अर्थात् डेढ़ सौ वर्ष तक एक ऐसी शोषक शासन व्यवस्था रही, जिसमे १८४७ से १९४७ तक का जो सौ वर्ष है वह सीधा ब्रिटिश ससद और वहा के तन्त्र के माध्यम से सुनियोजित रूप से चलता रहा और यहां से पूंजी का पलायन होता रहा। यह हमारे अविकसित होने या गरीब होने का एक कारण था। लेकिन तब भी देश, विदेश का कर्जदार नही था। सरकार के ऊपर घरेलू जिम्मेदारियां तो थीं लेकिन विदेशी कर्ज की देनदारी नहीं थी। (क्रमशः)

अम्बेडकरवाद समाज में विघटन उत्पन्न करेगा

(डा० अम्बेडकर द्वारा आर्यों की समाज व्यवस्था की आलोचना का समीक्षण)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

डा० भीमराव अम्बेडकर महाराष्ट्र के एक तथाकथित दलित कुल (महार जाति) में उत्पन्न किन्तु, अत्यन्त प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। हिन्दुओं में प्रचलित जाति प्रथा के विषम परिणामों, दलित और अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों की दुर्दशा तथा इस वर्ग के लोगों के प्रति किये जाने वाले अमानुषिक और बर्बर व्यवहार का कटु अनुभव उन्हें अपनी छात्रावस्था में हो गया था। इस प्रकार तथाकथित उच्च जातियों द्वारा किये जाने वाले इस अपमानजनक व्यवहार को न तो उन्होंने भुलाया और न ही क्षमा किया। आगे चलकर वे उच्च शिक्षा के लिये विदेश गये, वकालत का अध्ययन किया तथा स्वदेश लौट कर वे दलित जातियो के नेता और उनके राजनैतिक एवं सामाजिक हितो के निर्विवाद प्रवक्ता बन गये। जब अंग्रेज शासकों ने अछूतों को हिन्दुओं से पृथक गिनने की बात की तो महात्मा गांधी को हिन्दू समाज के दो विशाल समुदायों मे ऐक्य स्थापित करने के लिये उपवास करना पड़ा। धीरे-धीरे डा० अम्बेडकर का सवर्ण हिन्दुओं तथाकथित उच्च जातियो तथा आर्यों की वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रति आक्रोश बढ़ता ही गया और वे आर्य धर्म तथा समाज व्यवस्था पर अभिशापों एव कटूक्तियों की वर्षा करने मे अधिक मुखर तथा वाचाल होते गये। उन्होंने मनुस्मृति को सामाजिक विषमता के लिये दोषी ठहराया, वर्ण व्यवस्था को समाज में असमानता, भेदभाव तथा अत्याचार का कारण माना तथा ब्राह्मणवाद को इस सबके लिये उत्तरदायी घोषित किया। इस तथाकथित ब्राह्मणशाही का सबसे बड़ा समर्थन उन्हें मनुस्मृति में ही मिला इसलिये उन्होंने मनुस्मृति के विरोध मे अभियान चलाया तथा इस प्राचीन धर्मशास्त्र के पन्ने जलाये गये। उनके ही कुछ अधिक उग्र किन्तु अन्धानुयायियों ने कई वर्ष पहले भारत की ससद मे मनुस्मृति के पन्ने फाड़े और अपनी असहिष्णुता-जन्य नाटकीयता का परिचय दिया।

डा० अम्बेडकर तो गम्भीर तथा अध्ययनशील प्रकृति के पुरुष थे किन्तु उनके तथाकथित-चेलों चाटों में इतना धैर्य, गाम्भीर्य तथा सदाशयता कहां से आती। अत: वर्षों बाद आज शरद यादव और रामविलास पासवान जैसे नितान्त अगम्भीर नेता ब्राह्मणशाही, सवर्णों की तानाशाही जैसे चालू मुहावरों का प्रयोग कर समाज मे विघटन के बीज बो रहे हैं। देश के स्वाधीनता प्राप्त करने की घड़ी मे डा० अम्बेडकर पर कुछ अन्य जिम्मेवारियां आ गईं। कानून के उच्च विद्वान् होने तथा संसार के अनेक राष्ट्रों के संविधानों के अध्येता होने के कारण भारत की संविधान निर्मात्री परिषद् ने उन्हे स्वतन्त्र भारत का संविधान बनाने का दायित्व सौंपा जिसे उन्होने सम्पूर्ण निष्ठा तथा तत्परता से निभाया। किन्तु भारत के कानून मन्त्री के उच्च पद पर रह कर भी वे अपने छात्रकाल की उन घटनाओं को नहीं भूल सके जब उन्हे वर्ण वैषम्य तथा निम्न कुल में उत्पन्न होने के कारण अपमान का शिकार होना पड़ा था।

अब उन्होने बौद्ध धर्म का अध्ययन किया और वे इस नतीजे पर पहुंचे कि महात्मा बुद्ध ही सामाजिक समता का पाठ पढ़ाने वाले अद्वितीय महापुरुष थे। बुद्ध के इस समतावाद ने उन्हें इतना प्रभावित कर लिया कि वे हिन्दू धर्म को छोड़कर बौद्ध प्रव्रज्या लेने का विचार बना बैठे। उन्होने कहा भी कि वे हिन्दू धर्म में जन्मे हैं, किन्तु उनकी मृत्यु हिन्दू रहते नहीं होगी। इस कथन को सत्य सिद्ध करने के लिये उन्होंने बौद्ध मत को स्वीकार किया और अपने सहस्रों अनुयायियों के साथ त्रिरत्न (बुद्ध, धर्म और संघ) की शरण ली। कहते हैं कि उस समय महाराष्ट्र के सैकड़ों दलितो ने अम्बेडकर का अनुकरण करते हुए हिन्दू धर्म का त्याग कर सौगत धर्म को स्वीकार किया था।

यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि डा० अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म ही क्यों ग्रहण किया। वे ईसाई या मुसलमान क्यों नहीं बन गये, जब कि भारत मे तो यह एक रिवाज ही बन गया था कि जो भी व्यक्ति हिन्दू धर्म से ऊब जाता वह ईसाई अथवा इस्लाम को ही ग्रहण करता। बात यह थी कि अम्बेडकर सुपठित तथा चिन्तनशील व्यक्ति थे। सेमेटिक मजहबों (ईसाइयत और इस्लाम) की कट्टरपन्थी विचारधारा उनके स्थूल कर्मकाण्ड तथा प्राय: दर्शन विहीन खोखले अध्यात्म में उनके लिये कोई आकर्षण नहीं था। वे इन मतों की परमत असहिष्णुता तथा कट्टरपन्थी धारणाओं से भी अभिज्ञ थे इसलिये उन्होंने मुसलमान या ईसाई बनने की अपेक्षा तथागत बुद्ध का धर्म ही स्वीकार किया। हिन्दुओं को तो इसके कारण कोई गिला या शिकवा था ही नहीं कि डा० अम्बेडकर बौद्ध क्यों बन गये? उनके अनुसार तो बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म की एक ऐसी ही शाखा है, जैसी जैन या सिख। इसके अतिरिक्त बुद्ध को तो सनातनी हिन्दुओं ने विष्णु के दशावतारोंमें परिगणित कर लिया तथा कर्मकाण्ड मे बोले जाने वाले संकल्प मे वे कलियुग में बुद्धावतार को ही आराध्य मानते है।

तथापि डा० अम्बेडकर ने Who were the Shudrq ? तथा अपने अन्य ग्रन्थो मे वैदिक धर्म, आर्यों की धार्मिक मान्यताओं, उनके समाज सगठन तथा उनकी आस्थाओं पर अनेक कठोर निर्मम किन्तु निर्मूल आक्षेप भी किये हैं। इस लेख का शीर्षक देने का हमारा अभिप्राय यह बताना है कि अम्बेडकर के आज के अनुयायियों में तो अपने इस नेता जैसी उदारता, गम्भीरता तथा अध्ययनशीलता भी नहीं है। इसलिये वे सामाजिक विषमता का विरोध तथ अनुसूचित और पिछड़ी जातियों के अधिकारों की मांग करते-करते इतने अनुदार और उग्र हो जाते है, जिससे ऐसा लगता है मानो यदि यह अम्बेडकरवाद चलता रहा तो निकट भविष्य में सवर्णों तथा अनुसूचित जातियो के बीच विद्यमान सौहार्द भाव सर्वथा समाप्त हो जायेगा और यह वर्ण द्वेष वर्ग द्वेष मे बदल जायेगा। ईश्वर करे वह दुर्दिन न आये किन्तु पासवान और यादव जैसे सकीर्ण मन के लोग तो सामाजिक विषमता को सामाजिक घृणा मे बदल देना चाहते हैं, जिसका परिणाम वर्ण युद्ध और अन्ततः विनाश के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता।

(क्रमश:)

स्वास्थ्य चर्चा

दांतों की सुरक्षा कैसे करें?

श्री देवराज आर्य वर्ज विशारद
आर्य समाज बल्लभगढ़, फरीदाबाद

दात अनमोल मोती है। चेहरे की सुन्दरता मे दातो का बहुत बड़ा योगदान है। दातो की उपेक्षा न करें। यदि इनसे जीवन भर काम लेना है तो इनकी रक्षा करें। परमपिता ने भोजन को अच्छी तरह चबा-चबा कर खाने के लिये दात दिये हैं। जो भोजन को जल्दी-जल्दी बिना चबाये सटक जाते हैं वे आतो के साथ अन्याय करते हैं। दातो का काम आतो को करना पड़ता है अर्थात भोजन पचाने मे आतो को कष्ट होता है और भोजन देर मे पचने के कारण गैस बनकर पीड़ा देता है।

दातो का निर्माण उस तत्त्व या धातु से होता है जिससे हमारे शरीर मे अस्थि (हड्डी) बनती हैं। इसे चूना (कैलशियम) कहते है। यदि हमारे शरीर मे इस तत्त्व की कमी होगी तो दातो की जड़ कमजोर हो जाती है, दात हिलने लगते हैं और दातो मे खोखलापन होने लगता है। डाक्टरों का भी यही कहना है कि विटामिन डी की कमी के कारण दातो मे अनेक रोग हो जाते हैं। दातो की सुरक्षा के लिये निम्नलिखित क्रियायें, पथ्य, अपथ्यो का ध्यान रखें।

१ दातो को प्रतिदिन प्रात उठते ही शौच आदि से निवृत्त होकर कुछ खाने पीने से पूर्व अच्छी तरह साफ करें। दातो को साफ करने के लिये ब्रुश, दातुन या मंजन का प्राय प्रयोग किया जाता है। यदि आप ब्रुश का प्रयोग करते हो तो वह अच्छी क्वालिटी का नम बालो का होना चाहिये और उचित ढग से दातो पर फेरना चाहिये। हमने देखा है बहुत से लोग ब्रुश को दातो पर गलत ढग से मारते है, जिससे मसूड़े छिल जाते है और दातो की जड़ें कमजोर होने लगती हैं। यदि आप दातुन करते हो तो उसे भी पहले चबा-चबाकर नर्म कूची-सी बनाओ और दातो पर जोर से न रगड़े, बल्कि धीरे-धीरे फेरें। दातो को साफ करने के लिये एक स्थान पर किसी बर्तन मे पानी लेकर बैठें। दो तीन मिनट मे दात साफ हो जाते हैं जब कि हमने देखा बहुत से लोग दातो पर ब्रुश या दातुन को आधा-आधा घण्टे तक कस कसकर रगड़ते रहते हैं और चलते-फिरते इधर-उधर थूक-थूककर गन्दगी फैलाते हैं। ऐसा करना शोभा नही देता। यदि आप मजन का प्रयोग करते हैं तो वह बहुत बारीक कूटकर कपड़े मे से छना हुआ हो। मोटा मजन मसलने से मसूड़ो को हानि होती है।

२ दातो की जड़ो को मजबूत रखने के लिये ऐसी चीजो का सेवन करें जिनमे कैलशियम की मात्रा अधिक है जैसे पालक, बथुआ, दूध, दही इत्यादि।

३ मास खाने से, शराब पीने से और बार बार अधिक चाय पीने से दातो की जड़ें कमजोर हो जाती है।

४ बहुत खट्टे एसिड (तेजाब) वाले पदार्थ खाने से दातो को नुकसान पहुचता है।

५ हर समय कुछ न कुछ खाते रहने की आदत दातो के लिये हानिकारक है। दातो के डाक्टर का कहना है कि भोजन के बाद दातो को ब्रुश से साफ करो।

६ गर्म गर्म भोजन करते समय प्यास लगने पर बर्फ का ठण्डा पानी पीने से दातो को नुकसान पहुचता है।

७ अधिक मीठा खाने से दांत खराब हो जाते है।

८ उड़द की दाल, गोभी, कढ़ी इत्यादि वायु पैदा करने वाले पदार्थ लगातार खाते रहने से मसूड़े फूल जाते हैं। उस समय काली मिर्च, सोठ, पीपल का चूर्ण बनाकर सेवन करे। फिटकरी के पानी से कुल्ले करें।

९ कोई चीज खाने के बाद दाता मे फसे हुये अंश को निकालने के लिये सख्त पिन से बार-बार कुरेदना हानिकारक है।

१० दात केवल खाने और चबाने के लिये है। किसी ठोस चीज को काटने या चीरने के लिये नही हैं। हमने देखा है बहुत से लोग दातो से कैंची, चाकू का काम लेते हैं। आपके दात चाहे कितने ही मजबूत हैं, परन्तु इनका दुरुपयोग न करे। जसे दातो से नाखून काटना, तार काटना, बादाम तोड़ना आदि बल्कि सख्त गन्ने को छीलने से भी दातो की जड़ो को नुकसान पहुचता है।

११ दातो का दारोमदार मसूड़ो पर है, जिनमे दातो की जड़े पोषण प्राप्त करती हैं। जब तक मसूड़े दृढ़ है तब तक दात भी मजबूत हैं। मसूड़े रक्त पर निर्भर हैं। यदि शरीर मे शुद्ध लाल रक्त प्रवाहित होता है तो मसूड़े निरोग रहते हैं। रक्त दूषित होने पर मसूड़े नीले पड़ जाते हैं। शराब पीने से तम्बाकू खाने से और अधिक चाय पीने से खून काला हो जाता है।

१२ अधिक मैथुन तमाम कमजोरी का कारण है।

१३ लगा हुआ तम्बाकूवाला पान खाते रहने से दातो का एनामल (चमक) खत्म हो जाती है और दात भद्दे हो जाते हैं।

दातो की नित करो सफाई। इसमे है दातो की भलाई।
चने चबाओ, रेवड़ी खाओ यह दातो का काम है भाई।
चाकू कैंची और जम्बूर का, दातो से लो काम न भाई।

कट्टरपंथी मुस्लिमों ने राहत दल पर गोली चलाई

बेलग्राद, १७ अगस्त (तानयुग-यूल)। सरायेवो के उपनगर डोबरिजा के मुसलमान इलाको मे कल मानवीय सहायता वितरित करने के दौरान मुसलमान कट्टरपंथियो ने सयुक्त राष्ट्र सरक्षण बल के सैनिकों पर गोली चलाई।

बोसनिया सर्ब की सवाद समिति के अनुसार ये सैनिक राहत दल की रक्षा के लिए भेजे गये थे।

संवाद समिति के अनुसार सर्ब सैनिक सयुक्त राष्ट्र सरक्षण बल पर हल्के हथियारो से गोली नही चला सके क्योकि सरायेवो का यह भाग आसपास चारो तरफ इमारतो से घिरा हुआ है।

इस बीच बाइलेका से प्राप्त समाचार के अनुसार मुसलमान सैनिको ने कल उत्तरी हेरजेगोविना के कालीनोविक के पाच सब गावो को आग लगा दी और जो गाव वाले भाग नही सके उनकी हत्या कर दी। इनमे अधिकतर वृद्ध और बच्चे शामिल हैं। बाइलेका पूर्वी हेरजेगोविना मे बोसनिया हेरजेगोविना की सेना कमान ने एक विज्ञप्ति मे यह जानकारी दी।

प्राप्त समाचार में यह नही बताया गया कि इन गावो मे कितने व्यक्ति मारे गये। मुस्लिम सेना के इन गावो मे पहुचने से पूर्व सर्ब सेना की हेरजेगोविना कोर के सात सैनिक सघर्ष मे मार गए।

इस बीच बोसासकी से प्राप्त समाचार के अनुसार क्रोशिया मे एकत्र २५ बोसनियाई शरणार्थिया न सर्ब गणराज्य की सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

सास्कृतिक उत्थान मे दक्षिण का भारी योगदान : सिंधिया

नई दिल्ली १७ अगस्त। केन्द्रीय नागरिक उड्डयन एव पयटन मन्त्री श्री माधवराव सिंधिया ने कहा कि भा त की महान् सभ्यता एव सास्कृतिक धरोहर के उत्थान मे दक्षिण भारत का बडा योग दान है। श्री सिंधिया ने ये उद्गार आज यहा सुप्रसिद्ध सगीतज्ञ श्री तिरुमिगु कृष्णाकुडी वधनाथन को पुरस्कृत क रत हुए व्यक्त किये।

उन्होने कहा कि कोई भी देश अपनी पारम्परि सभ्यता एव चरित्र को सजोक रखे बिना वास्तविक रूप से उ नति नही कर सकता।

श्री सिंधिया ने कहा कि आज भारत का जो समृद्ध सास्कृतिक स्वरूप देखने को मिलता है इसके निर्माण मे बहुत स धर्मो सभी भाषाओ एव परम्पराओं का सामान योगदान है।

इस समारोह का आयोजन तमिल यूथम कलचरल एसोसिएशन द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री जी०के० मूपनार सासद श्री रामबाबू सरोदवादक उस्ताद अमजद अली खान श्री एम गोपाल कृष्णन (अध्यक्ष इण्डियन बैक), तथा डा० एन० पी शेषाद्रि (अध्यक्ष नेशनल कल्चरल आर्गेनाइजेशन) ने भी अपने विचार प्रकट किए।

प्रा० राजेंद्र जिज्ञासु महाराष्ट्र की वेद प्रचार यात्रा पर

(१६ अगस्त से १६ सितम्बर १९९२ तक)

	आर्य समाज	दिनांक	वार
१	धुल	१६ १७ १८ अगस्त	रवि सोम मगल
२	देवलाली कम्प	१९ अगस्त	बुध
३	नासिक	२० अगस्त	गुरू
४	भगूर	२१ अगस्त	शुक्र
५	पिंपरी पुण	२२ २३ अगस्त	शनि रवि
६	नानापेठ पुण	२४ २५ अगस्त	सोम मगल
७	वारजे मालवाडो पुण	२६ २७ अगस्त	बुध गुरू
८	शोलापुर	२८ २ अगस्त	शुक्र शनि
९	धाराशव	३० ३१ अगस्त	रवि सोम
१०	निलगा	१ २ ३ सितम्बर	मगल बुध गुरू
११	औराद (शाहाजानी)	४ ५ सितम्बर	शुक्र शनि
१२	बोरूल। नुहगीर (शामलाल)	६ ७ सितम्बर	रवि सोम
१३	श्यामलाल स्मारक शिक्षण सस्था उदगीर	८ ९ १० सितम्बर	मगल बुध गुरू
१४	वदिक सेवा आश्रम वाजेगाव	११ १२ सितम्बर	शुक्र शनि
१५	नादेड	१३ १४ १५ १६ सितम्बर	रवि सोम मगल बुध

—कुशलदेव आर्य

बेटी के लिए पूरा परिवार हिन्दू बना

पीलीभीत, ५ जुलाई। अपनी लड़की का प्रेम विवाह दूसरे समुदाय में कर देने की कीमत एक मुस्लिम परिवार को धर्म परिवर्तन कर चुकानी पड़ी।

इस परिवार ने आज विधिवत हिन्दू धर्म अपनाकर नाम आदि सब कुछ परिवर्तन कर लिया। यह परिवार मुहल्ला मोहम्मद वासिल का है, जो अब मुहल्ला इनायत गंज में किराये पर एक मकान लेकर बस गया। परिवार के मुखिया सफरत उल्ला ने अपने परिवार के नौ सदस्यों सहित खुशी-खुशी आर्य समाजियों की मौजूदगी में शुद्धि हवन के उपरान्त हिन्दू धर्म स्वीकार कर अपना नाम सत्यपाल आर्य रख लिया। उनकी पत्नी खुशनूदी जहां ने नया नाम खुशबू रख लिया। उनकी छह पुत्रियों ने अपने नामों में परिवर्तन इस प्रकार किया हसीन जहां (प्रीति), शमीम (सन्ध्या), नसीम (निधी), कल्लो (कमला), बेबी (बिमला), फूल बी (पुष्पा)। इस परिवार के दो लड़के आबेद व हमन ने क्रमशः जितेन्द्र व रंजीत कुमार नाम कर लिये गये हैं।

धर्म परिवर्तन समारोह होली के चौराहा स्थित खूबचन्द मंदिर में हुआ, जिसमें आर्य समाज के प्रधान प्रकाशवीर, विक्रमसिंह, लाला रामप्रसाद शिवसेना के जिला प्रमुख संजीव मिश्रा आदि अनेक हिन्दू समाज के प्रमुख लोगों ने हिस्सा लिया। इस मुस्लिम परिवार के धर्म परिवर्तन के पीछे मुस्लिम परिवार की लड़की का हिन्दू धर्म के लड़के से प्रेम विवाह करना ही एक बड़ा कारण रहा इस विवाह को लेकर अपने ही नजदीकियों व समाज के लोगों से मिली प्रताड़ना ने इस परिवार को धर्म परिवर्तन पर विवश कर दिया।

इस मुस्लिम परिवार का कहना है कि इस नये धर्म को अपना कर हम खुश हैं। इस समाज मे उन्हें लोगों में अपनापन महसूस हुआ है।

इस परिवार से मिलने वालों का इनके किराये के आवास पर तांता लगा हुआ है। अनेक हिन्दू संगठनों के प्रमुख व्यक्तियों ने इस परिवार से मिलकर मदद व सुरक्षा दिलाने का आश्वासन दिया। (अमर उजाला से साभार)

आर्य वीर दल मालवीय नगर मंडल में स्वतन्त्रता दिवस उत्साह पूर्वक सम्पन्न

आर्य वीर दल मंडल मालवीय नगर में गीत संगीत द्वारा क्रान्तिकारियों देशभक्तों की याद को ताजा किया गया। जिसमें सारस्वत मोहन मनीषि जी ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को अभिभूत कर दिया। श्री गुलाबसिंह जी राघव ने भी अपनी कविताओं से युवकों में जान फूंक दी। आर्य वीर दल के युवा संगीतकार नरेन्द्र आर्य ने "मेरी मां शेरां वाली है" गीत गाकर भारत मां के मस्तक को ऊंचा किया। गार्गी वर्मा ने देशभक्ति की भावनाओं को जागृत किया दिल्ली आर्य वीर दल के संगठन मन्त्री विनय सिंघल तथा लोकेन्द्र आर्य ने "ऐ वतन के नौ जवां, जा रहा है तू कहां" गीत-गाकर युवाओं मे एक नई चेतना पैदा की। श्रोताओं से हॉल खचाखच भरा हुआ था सभा को दल के बौद्धिकाध्यक्ष श्री ओमवीर जी शास्त्री ने भी सम्बोधित किया और कहा कि देश का भविष्य आर्य समाज है तथा आर्य समाज का भविष्य आर्य वीर दल है। कार्यक्रम की जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। सभा मे सभी श्रोता वक्ताओं ने देश की आजादी और अखण्डता के लिए अपना संकल्प दोहराया।

- राजसिंह आर्य मन्त्री
दिल्ली आर्य वीर दल

असम के आदिवासी क्षेत्र में नए गुरुकुल की स्थापना

असम आर्य प्रतिनिधि सभा के सूत्रों से प्राप्त एक समाचार के अनुसार असम के आदिवासी क्षेत्र बैरंग जौली में एक नए गुरुकुल की स्थापना की गई है। आर्य प्रतिनिधि सभा असम की ओर से इसी स्थान पर पिछले ७ वर्षों से डी०ए०वी० विद्यालय और छात्रावास भी चलाया जा रहा है। अब वहां मभी ही गुरुकुल की भी स्थापना की गई है। इस महान् यज्ञ मे पहली आहुति असम आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० नारायणदास जी ने २० हजार रुपया अपनी ओर से देकर की है। उन्होने ५० हजार रुपया और अपनी ओर से गुरुकुल को देने का निर्णय किया हुआ है।

इस आदिवासी क्षेत्र में बोरो समुदाय के लोग रहते हैं। इस विद्यालय के अध्यक्ष स्वयं एक बोरे व्यक्ति हैं। इस नए गुरुकुल का नाम दयानन्द सेवाश्रम संघ गुरुकुल रखा गया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गुरुकुल की स्थापना पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य वनवासी, आदिवासी, गिरिजन और पर्वतीय अंचलों मे मानव समाज की सेवा करते हुए उन्हें अपनी प्राचीन सस्कृति व सभ्यता की जानकारी देना रहा है। इसके लिए आर्यसमाज के अन्तर्गत दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से अनेक स्थानों पर आश्रमों, विद्यालयो, छात्रावासों, औषधालयों, बालवाड़ियों, गुरुकुलों और सिलाई कढ़ाई केन्द्रों की स्थापना करके इस दिशा मे सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। इस सफल प्रयास के लिए उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा असम के प्रधान डा० नारायण को बधाई सन्देश भी भेजा है।

विश्वशान्ति महायज्ञ

हमें सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी डी०सी०डब्ल्यू० के "कम्यूनिटी हाल" में दिनांक २८-८-९२ शुक्रवार को वैदिक विद्वानों द्वारा प्रवचन एवं भजनोपदेश होंगे और अन्त मे शंका समाधान भी होगा। इस अवसर पर पं० वासुदेव जी आर्य स्वामी ब्रह्मवेश जी, बहन राजेश रानी जी तथा सत्यपाल पथिक आदि अनेकों विद्वान पधार रहे हैं।

चतुर्वेद पारायण महा यज्ञ एवं ध्यान योग शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम (प० न्यास) बहादुरगढ़ रोहतक (हरि०) के रजत जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य मे अखण्ड गायत्री अनुष्ठान चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं ध्यान योग शिविर का दिनांक १ सितम्बर से २ अक्टूबर ९२ तक आयोजन किया गया है। समारोह की अध्यक्षता प० सत्यानन्द जी वेद वागीश अलवर करेंगे। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी होंगे। इस अवसर पर स्वामी सत्यपति जी सरस्वती, स्वामी दिव्यानन्द जी ब्रह्मचारी आर्य नरेश, स्वामी ओमानन्द जी, श्री जैमिनि जी शास्त्री सहित अनेकों विद्वान पधार रहे हैं। हर वर्ष की भांति निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन भी किया गया है।

आवश्यकता

मध्यप्रदेश की प्रमुख आर्य समाज नेपियर टाउन जबलपुर के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। अनुभवी एवं सस्कृतज्ञ पुरोहित के लिए निवास स्थान एवं योग्यतानुसार मासिक वेतन का प्रावधान है। कृपया प्रार्थना पत्र मन्त्री, आर्य समाज नेपियर टाउन, जबलपुर ४८२००१ के नाम पूर्ण विवरण सहित प्रेषित करें। आवेदन उपाधि, अनुभव, उम्र, पारिवारिक जानकारी एवं अपेक्षित मासिक राशि की पूर्ण जानकारी दे। —मन्त्री

रोहिणी आर्य वीर दल में स्वतन्त्रता दिवस एवं वृक्षारोपण समारोह सोल्लास सम्पन्न

रोहिणी आर्य वीर दल शाखा के तत्वावधान में 'स्वतन्त्रता दिवस एवं वृक्षारोपण समारोह उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण वैदिक विद्वान् श्री उमाशंकर जी साहू द्वारा किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने दिल्ली में आर्य वीर दल के बढ़ते कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आर्य समाज में युवा पीढ़ी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए आर्य वीर दल ही एक मात्र संगठन है। रोहिणी आर्य वीर दल शाखा के कार्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए राष्ट्र एकता यज्ञ पर प्रकाश डाला और कहा कि विश्व में पर्यावरण समस्या का यह बहुत ही उपयुक्त साधन है। जनता के क्षेत्रीय प्रतिनिधि अपने साथ लगाने के लिए एक-एक पेड़ लाए और उन्हें आर्य समाज में लगाया। —नरेशपाल आर्य

कोषाध्यक्ष दिल्ली आर्य वीर दल

जहांगीरपुरी आर्य वीर दल द्वारा स्वाधीनता दिवस सम्पन्न

जहांगीर पुरी आर्य वीर दल शाखा ने उत्तर दिल्ली में स्वतन्त्रता दिवस उत्साहपूर्वक मनाया। दिल्ली आर्य वीर दल के खेल मन्त्री श्री प्रकाशचन्दजी आर्य ने अपने आर्य वीरों के साथ एक बेहद गन्दे पड़े पार्क को स्वच्छ किया। यहां समारोह में मुख्य अतिथि उत्तर दिल्ली क्षेत्र के पुलिस उपायुक्त श्री दीपचन्द जी ने श्रोताओं को सम्बोधित किया। जहांगीरपुरी थाने के प्रभारी श्री चौधरी भी कार्यक्रम में भाग लेने आए। इस पुनर्वास बस्ती में बड़ी मेहनत से इकट्ठे किए गए पैसों से तैयार ऋषि लंगर (सहभोज) तो अपनी अलग ही मिसाल था। कार्यक्रम की बहुत सराहना हुई।

—जयप्रकाश आर्य बन्धु प्रैस एवं सूचना सचिव
दिल्ली आर्य वीर दल

आर्य वीर दल की बैठक सम्पन्न

आर्य वीर दल जनपद अलीगढ़ की बैठक दिनांक १६-८-९२ को मध्याह्न ११ बजे से वैदिक आश्रम रामघाट रोड अलीगढ़ पर जनपद संचालक श्री रघुराजसिंह जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक मे निश्चय किया गया कि १८ अक्तूबर १९९२ को एक वृहद आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा जिसमें जनपद के समस्त आर्यजन तथा लगभग ५०० आर्य वीर भाग लेंगे।

—जीवनसिंह आर्य मन्त्री

आर्यसमाज पाली हरदोई का निर्वाचन

श्री सुरेन्द्रकुमार वाजपेई प्रधान, श्री धर्मेन्द्रकुमार मन्त्री, श्री वेदप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

सिकन्दराबाद में महिला समाज

श्रीमती सुलक्षणा राखड़ा जो कि स्त्री आर्यसमाज की अध्यक्षा है गायत्री महायज्ञ और आर्य समाज के प्रचार में विशेष रुचि लेती हैं आपके निर्देशन मे आर्यसमाज प्रगति पथ पर बढ़ रहा है। साथ ही श्री यशवीर ढाढा व श्री रमेश ढाढा बड़े ही उत्साही नवयुवक व्यक्तित्व के व्यक्ति हैं। आपके पिताश्री ही आर्यसमाज के संस्थापक थे। जिनके प्रयास से आज विशाल रूप से भवन बनकर खड़ा है। सरस्वती कन्या विद्यालय माता जी के नाम से चल रहा है।

दोनों परिवार बड़े भाग्यशाली हैं यह अपनी आर्य परम्परा को श्रद्धा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। प्रभु इन सभी को ऋषि के मिशन में और श्रद्धा व भक्ति दें। —सम्पादक

श्रावणी तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज पीलीभीत—में १३ अगस्त से २१ अगस्त ९२ तक श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान स्वामी ओमानन्द योगतीर्थ अलीगढ़ एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० मंगलदेव आर्य ने अपने ओजस्वी भाषणों से जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। २१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाने के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य समाज सैक्टर-२२ ए, चण्डीगढ़—श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में आर्य समाज सैक्टर-२२ ए, चण्डीगढ़ में दिनांक १०-८-९२ से १६-८-९२ तक वेद सप्ताह का सफल आयोजन किया गया जिसमें स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अमृत वर्षा से आर्यजनो ने लाभ प्राप्त किया।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा—के तत्वावधान में दिनांक १३-८-९२ बृहस्पतिवार को श्रावणी उपाकर्म का कार्यक्रम प्राध्यापक श्री अरुण कुमार विदर्भीय के प्रधानत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपदेशक महाविद्यालय में नये ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार एवं वेदारम्भ संस्कार महाविद्यालय के प्राध्यापक सर्वश्री अरुण कुमार विदर्भीय एवं श्री सुरेश कुमार पाटिल द्वारा सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज न्यू मोती नगर का रजत जयन्ती समारोह

आर्यसमाज न्यू मोतीनगर नई दिल्ली अपना रजतजयन्ती समारोह ९ अक्तूबर से १८ अक्तूबर तक मनाने जा रहा है। इन ही तिथियों में महर्षि दयानन्द शिशु/बाल मन्दिरका वार्षिकोत्सव भी सम्मिलित है। जयन्ती समारोह में चतुर्वेद शतक महायज्ञ वेद कथा एवं भजनोपदेश, विशाल शोभा यात्रा, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य वीर सम्मेलन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, वेद सम्मेलन एवं अन्य कार्यक्रम आयोजित होंगे। कार्यक्रम में देशभर के विख्यात संन्यासी विद्वान एवं भजनोपदेशक भाग लेंगे। प्रतिदिन सायंकाल कथा के बाद श्रोताओं के लिये ऋषिलंगर का आयोजन भी किया गया है। पूर्ण आहुति पर भी ऋषि लंगर आयोजित है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक ३२]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   भाद्रपद शु० १०   सं० २०४९   ६ सितम्बर १९९२

महर्षि दयानन्द उवाच

● जो सब जगत् का कर्ता सबका इष्ट सबके उपासना के योग्य सबका धारण करने वाला सबमें व्यापक और सबका कारण है, जिसका आदि अन्त नहीं, और जो सच्चिदानन्द स्वरूप है जिसका जन्म कभी नहीं होता और जो कभी अन्याय नहीं करता इत्यादि विशेषणों से वेदादि शास्त्रों में जिसका प्रतिपादन किया है उसी को इष्ट देव मानना चाहिए और जो कोई इससे भिन्न को इष्टदेव मानता है उसको अनाथ अर्थात् अनाड़ी कहना चाहिए

इजराइल से फौजी सहयोग चाहता है भारत

न्यूयार्क २१ अगस्त। भारत अपने फौजी सामान को आधुनिक बनाने की खातिर अब इजराइल से सहयोग चाहता है। यह दावा अमेरिकी पत्रिका 'टाइम' ने एक रपट में किया है। पत्रिका ने भारत को इस बार अपनी आवरण कथा बनाया है और वह रिपोर्ट नई दिल्ली से भेजे गए डिस्पैच का ही एक हिस्सा है।

रपट में सोवियत संघ के बिखराव के बाद की घटनाओं का हवाला दिया गया है। इसके अनुसार प्रधानमन्त्री पीवी नरसिंह राव ने भारत की विदेश नीति का रुझान तेजी से पश्चिमी देशों की ओर किया है। इस सिलसिले में अमेरिकी नौ सेना के साथ भारतीय नौ सेना के साझे अभ्यास व भारत के इजराइल के साथ पूर्ण राजनयिक सम्बन्ध बनाने का जिक्र किया गया है।

'टाइम' ने नरसिंह राव सरकार के आर्थिक उदारता के उपायों के नतीजों की भी समीक्षा की है। पत्रिका का कहना है कि मौजूदा सरकार ने विदेशी मुद्रा भंडार की 'तकरीबन आशाहीन' स्थिति से शुरुआत की और अब यह भंडार साढ़े छह अरब डालर तक पहुंच गया है। भारत की ओर विदेशी निवेश का बहाव बढ़ा है। इस साल ९१ करोड़ डालर विदेशी निवेश हुआ। पिछले वर्ष के निवेश का यह पन्द्रह गुना है।

अमेरिका की फोर्ड, आईबीएम और जनरल इलेक्ट्रिक, यूरोप की बीएम डब्ल्यू दक्षिण कोरिया की लकी गोल्ड स्टार और जापान की फुजीत्स और सी इतोह जैसी नामी कम्पनियों समेत कई विदेशी फर्में भारत की ओर [illegible] बढ़ा रही है। पत्रिका ने एक भारतीय विश्लेषक के हवाले से कहा है कि श्री राव का लक्ष्य चीन में सत्तर के दशक के अन्तिम वर्षों और अस्सी के दशक के शुरुआत में हुई आर्थिक उन्नति की बराबरी करना और पूंजीवादी पूर्वी एशिया की उपलब्धियों के बराबर आना है।

'टाइम' का कहना है कि श्री राव ने जवाहरलाल नेहरू इन्दिरा गांधी और राजीव गांधी के नेतृत्व में वंशगत उत्तराधिकार की निरंकुश शैली में शासन करती आ रही कांग्रेस पार्टी के अन्दरूनी मामलों का लोकतन्त्रीकरण किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर कोई चीज इस क्रान्ति को थामने की आशंका पैदा कर रही है तो वह प्रतिभूति घोटाला है। इसके अनुसार अमेरिका के साथ सम्बन्धों के बारे में यह धारणा है कि उसने श्री राव के किए परिवर्तनों को पूरी तरह नहीं सराहा है। दूसरी ओर अमेरिका से सम्बन्धों की पेचीदगियों को लेकर भारत जरूरत से ज्यादा संवेदनशील रहा है।

नई दिल्ली में एक राजनयिक के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया कि नरसिंह राव सरकार यह दिखाना चाहती है कि उसे अब नाजुक सरकार के रूप में न देखा जाए। पत्रिका का मानना है कि श्री राव के विरोधी उनकी सफलता को महज भ्रम समझते हैं। उसने पूर्व प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के हवाले से कहा कि शिखर पर तो शान्ति दिखाई दे रही है लेकिन अन्दर ही अन्दर गम्भीर समस्याएं हैं। (जनसत्ता २६ अगस्त १९९२)

श्रीराम रोड, दिल्ली में—

चारों वेदों के यज्ञ की पूर्णाहुति

दिल्ली ३० अगस्त।

आज श्री अर्जुनदेव खन्ना एवं श्रीमती विजय लक्ष्मी के घर पर वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में चारों वेदों का यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती भी सम्मिलित हुए। और उन्होंने उपस्थित पारिवारिक जनों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ का संचालन श्री स्वामी जीवनानन्द जी महाराज एवं पं० लखपति शास्त्री जी ने कराया। इस वेद सप्ताह के कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः ८.३० बजे से सायं ३ बजे तक वेद पाठ के पश्चात् ३ से ५ बजे तक भजन व उपदेश होते थे और आज ३० अगस्त को १२ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ समापन के पश्चात् ऋषि लंगर का भी प्रबन्ध किया गया जिसमें हजारों लोगों ने भोजन किया।

श्री सोमाश्रित जी (लोकनाथ) ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञस्थल पर विद्वानों का स्वागत किया।

धारा-३७० समाप्त की जाए : जगमोहन

भोपाल, २६ अगस्त। सांसद एवं जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल जगमोहन ने कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली संविधान की धारा-३७० को समाप्त किए जाने की अपील की है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि आतंकवाद से निपटने के लिए [illegible] कड़े उपाय किए जाने चाहिए।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार—

आर्य सभा मौरिशस

आर्य भवन मे राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति का स्वागत

रविवार ता० २६ जुलाई १९९२ को आर्य भवन मे देश के नव नियुक्त राष्ट्रपति श्री कासाम उत्तिम और उपराष्ट्रपति सर रवीन्द्र घरभरण का भव्य स्वागत हुआ। इस अवसर पर देश के प्रधान मन्त्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी को 'देश रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया तथा उनके दस साल से प्रधान मन्त्री पद को सभालते हुए देश के सफल नेतृत्व के लिए एक स्वर्ण पदक देकर उनका सम्मान किया गया। राष्ट्रपति की पत्नी बेगम जोहरा उत्तम और उपराष्ट्रपति की पत्नी लेडी पदमा घरभरण को भी फूलो के गुच्छे देकर सम्मान किया गया। आर्य भवन जनता से खचाखच भरा हुआ था। देश के कोने कोने से आर्य जन मोटरो और बसों से आए हुए थे। कार्यारम्भ दो बजे शाम को आरम्भ हुआ।

आर्य सभा के प्रधान माननीय राजनारायण गति जी ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि गर्व की बात है कि देश के सर्वोच्च पद भारत से आए हुए मजदूरो के वंशज सभाल रहे हैं।

उपराष्ट्रपति सर रवीन्द्र घरभरण का भाषण हिन्दी मे कवित्वमय था। उन्होने कहा कि वे आर्य सभा के आजन्म सदस्य है और किसी समय करीब तीन वर्षों तक आर्य सभा मौरिशस का प्रधान पद भी संभाला था।

राष्ट्रपति कासाम उत्तिम ने कहा कि आर्य समाज ही वह पहली सस्था है जिसने मेरे राष्ट्रपति नियुक्त होने पर मेरे सम्मान मे स्वागत का आयोजन किया है। उन्होने कहा कि देश के उत्थान मे आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने पण्डित काशीनाथ किष्टो, मणिलाल डाक्टर आदि आर्य समाज सेवियो का जिक्र किया। उन्होंने खेद प्रकट किया कि आर्य समाज के कार्यों से गैर हिन्दू अनभिज्ञ हैं। मुझे जब आर्य समाज का आमन्त्रण मिला तो मौरिशसीय आर्य समाज की थोड़ी जानकारी प्राप्त करने के लिए मुझे कुछ पुस्तकें खोजकर पढ़नी पढी। तब मुझे थोड़ा सा आर्य समाज के कार्यों का ज्ञान हुआ। जब मेरा यह हाल है तो औरो के सम्बन्ध मे क्या कहा जाए। आर्य समाज को चाहिए कि वह अपने कार्यों का प्रचार अपने घेरे से बाहर भी करे।

राष्ट्रपति न एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही जिसका जिक्र प्राय सब दैनिक फ्रेंच अखबारो ने किया। उन्होने कहा कि हम एक विद्वत् मण्डली (comi te de sages) कायम करेंगे जिसका प्रधानत्व वे स्वय करेंगे। उस कमेटी मे यह विचार किया जाऐगा कि कैसे भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बियो मे पारस्परिक प्रेम और सौहार्द पैदा किया जाएगा जिससे देश अधिक से अधिक प्रगति करे ताकि सारी जनता सुख और शान्ति से रहे।

वयोवृद्ध आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित, ओ बी ई, आर्य रत्न ने प्रधान मन्त्री सर अनिरुद्ध जगनाथ को "देश रत्न' उपाधि का प्रमाण-पत्र और स्वर्ण पदक प्रदान करते हुए मौरिशसीय आर्य समाज का इतिहास संक्षेप मे बयान किया। उन्होने कहा कि मणिलाल डाक्टर की प्रेरणा से मौरिशस मे आर्य समाज की स्थापना हुई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द, डा. भारद्वाज आदि मनीषियो ने कठिन परिस्थिति मे कार्य करते हुए आर्य समाज को जीवित रखा जिसने मोरिशस मे सामाजिक क्रान्ति की। उन्होने डा. शिवसागर रामगुलाम का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होने स्वतन्त्रता दिलायी। उन्हीं के पद चिन्हो पर चलत हुए सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने देशकी काया पलट दी। देश मे खुशहाली छा गई है।

सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने "देश रत्न" की उपाधि स्वीकार करते हुए कहा कि आर्य समाज ही वह पहली संस्था है जिसने एक राजनीतिक नेता और प्रधान मन्त्री को उपाधि प्रदान की है। आर्य समाज, समाज और देश सेवा मे हमेशा अग्रणी रहा है। आर्य समाजी सेवक अनासक्त भाव से सेवा कार्य करते हैं।

वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी कृष्णानन्द का भी आशीर्वाद के रूप मे एक छोटा सा भाषण हुआ। उन्होने कहा कि उनके प्रथम चालीस अनुयायियों मे से राजनारायण गति और सत्यदेव प्रीतम भी थे। प्रसन्नता की बात है कि आज वे आर्य समाज के प्रधान और मन्त्री के रूप मे सेवा कार्य कर रहे हैं।

माननीय डा रुद्रसेन नीऊर ने आगन्तुको को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम समाप्त होने पर सब आगन्तुको का जल-पान से सत्कार किया गया।

—सत्यदेव प्रीतम
सभा मन्त्री

धारा-३७०

(पृष्ठ १ का शेष)

वह यहां पर मगलवार को मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा अनुदान आयोग द्वारा आयोजित सभा में 'कश्मीर समस्या व हल' विषय पर बोल रहे थे।

जगमोहन ने सुझाव दिया कि कश्मीर मे आतंकवाद से निपटने के लिए छापामारो का सामना उन्हीं के तौर तरीकों से किया जाना चाहिए।

उन्होने कहा कि कश्मीर में पाक समर्थक तत्वों के सफाए तथा वहां की धरती पर नियन्त्रण कर लिए जाने तक न तो चर्चा का मार्ग अपनाया जाए और न ही वहां चुनाव कराए जाएं। वहां सीमा सुरक्षा बल आदि के परम्परागत तरीकों से काम चलने वाला नही है।

उन्होने कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले संविधान के अनुच्छेद ३७० की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि ऐसी व्यवस्था किसी भी सभ्य देश के लिए उपयुक्त नहीं कहीं जा सकती।

जगमोहन ने कहा कि कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली धारा-३७० के बारे में सबसे बड़ी गलतफहमी यह है कि वह कश्मीर के आम आदमी के हित में है। उन्होंने कहा कि सच्चाई तो यह है कि इससे केवल राज्य के अमीर लोगों का ही भला होता है जिन्हें धारा-३७० के तहत धन कर व उपहार कर से छूट हासिल है।

उन्होंने कहा कि इसी धारा के कारण करीब तीन लाख कश्मीरियों को अपने ही देश में विस्थापितों का जीवन जीना पड़ रहा है। पूर्व राज्यपाल ने आरोप लगाया कि केन्द्र सरकार इस समस्या को अनदेखा कर रही है और विस्थापितों के लिए चिन्तित ही नहीं है। जब कि दूसरी ओर यही सरकार दक्षिण अफ्रीका में अश्वेतों तथा फिलिस्तीनियो के अधिकारों के लिये प्रयास कर रही है।

श्री जगमोहन ने कहा कि कश्मीर के सम्बन्ध में हमारे राजनेता आजादी के बाद से ही गलतियां करते रहे। इसी कारण वहां की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया। १९७१ के युद्ध के समय हमें कश्मीर समस्या सदा के लिए हल कर लेने का अच्छा अवसर मिला था, जिसे शिमला समझौता कर गंवा दिया गया।

इससे पूर्व भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामन्त्री कुशाभाउ ठाकरे ने कहा कि पण्डित नेहरू ने शेख अब्दुल्ला को महत्व न दिया होता तो समस्या कभी की सुलझ गई होती। उन्होंने भारतीय जनसंघ के संस्थापक श्यामाप्रसाद मुकर्जी की बातें मानी होती तो आज स्थिति यह न होती।

मुख्यमन्त्री सुन्दरलाल पटवा ने कहा कि सरदार बल्लभ भाई पटेल ने बड़ी सख्या मे रियासतो का आसानी से भारत में विलय करा लिया जब कि पण्डित नेहरू ने केवल कश्मीर का मामला ही अपने हाथ में लिया था उसे भी हल नहीं कर पाए। परिणामस्वरूप यह समस्या आज भी बनी हुई है।

सम्पादकीय

संस्कार-विधि का विश्लेषण संस्कार-चन्द्रिका

अमूल्य उपलब्धि

वैदिक कर्मों के सैकड़ो भेद है वे विशेष अवस्थाओ मे किये जाते है। परन्तु मानवमात्र को अपने शरीर और मन की शुद्धि के लिये सोलह सस्कार अवश्यमेव करने चाहियें। मनु ने लिखा है कि —

कार्यं शरीर सस्कार पावन प्रेत्य चेह च ॥ मनुस्मृति

परलोक और इस लोक मे पवित्रता देने वाला शरीर का स्थूल और लिंग शरीर का सस्कार करना चाहिय।

कैसे करना चाहिये ? किन वस्तुओ से करना चाहियें !

इन सब बातो का विचार प्राचीन महर्षियो ने स्वबुद्धयानुसार किया है। इन्ही के विचारित ग्रन्थो का नाम गृह्यसूत्र अथवा कल्प नाम कहा है।

गृह्यसूत्र बनाने वाले आचाय पृथक पृथक समयो मे हुए है। उन्होने वेद और ब्राह्मण ग्रन्था मे सोलह-सस्कारा को देखकर सस्कार-पद्धतियो की कल्पनाये की है। मुख्य-मुख्य बाता मे भेद न होने पर भी साधारण बातो मे कही-कही भेद दिखलायी देता है। मुख्य बातो मे मतभेद नही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती —

१९ वी शताब्दी के महान् विचारक वेदो के अपूर्व व्याख्याता ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने गृह्यसूत्रो तथा अन्यान्य ग्रन्थो का अवलोकन कर षोडश सस्कारा का जिनको वैदिक आचार्यो ने स्वीकार किया है। उसी भाग से अनुपादेय भाग को छोड़कर सोलह सस्कारो की रीति आदि का प्रदशक एक ग्रन्थ बनाया जिसका नाम सस्कार विधि है।

सस्कार क्या है और उसकी विधि फिर उस पर विशेष व्याख्यान यदि हो जाय तो साधारण या असाधारण मानव के लिये यही सस्कार बुद्धिगम्य बन जाता है।

इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु आर्य विद्वान स्व० प० भीमसेन जी शर्मा तथा व्याख्यान वाचस्पति स्व० प० आत्माराम जी अमृतसरी ने सस्कार विधि की विशेष व्याख्या तथा सरलीकरण कर शकाओ का निवारण भी किया है।

इस महान काय को सम्पादन करने के पूव सस्कार विधि मे आये मन्त्रा का अथ कर ऐसे जिम्मेदारी पूण कार्य निभाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत पुस्तक के कई सस्करण बहुत पहले प्रकाशित हुए थे। इस ग्रन्थ की उपयोगिता को देखते हुए आवश्यक समझा कि इस अलभ्य पुस्तक का नवीन सस्करण छापकर आय जनता को भेट किया जाय।

विज्ञान एक प्रकार का प्रकाश है वह मलिनान्त करणा मे नही प्रकाशित हो सकत है सूय की किरण मलिन पत्थर पर नहा चमकती है। अत कर्म-काण्ड का विधिवत साधारण जन तक को सही ज्ञान हो जाय इसलिये सस्कार विधि को—

सस्कार चन्द्रिका नाम से प्रकाशित किया।

आज समाज को कम काण्ड के विधि विधान की सही जानकारी उपलब्ध करान हेतु एक अच्छे प्रकाशन की आवश्यकता है।

पुस्तक के आकार प्रकार को देखत हुए व्यय भार को वहन करना भी अति दुष्कर काय है।

आप तक दो शब्द पहुचाकर इच्छा प्रकट की है आप तक पुस्तक पहुच जाय और आप से कुछ सहयोग राशि प्रकाशन हेतु मिल जाय। तो इस अकिंचन साधनहीन सम्पादक को आर्थिक सहयोग मिल जायेगा। फिर क्या पुस्तक तो छपेगी ही।

कर्म के दो भेद हैं – सकाम व निष्काम—

मै सकाम कम का इच्छुक होकर निष्काम प्रे रक काम करने लगा हू।

यदि यह काम शुभ है तो आप आय भाइ अविलम्ब १००) सौ रुपये मूल्य की पुस्तक ६०) साठ रुपय अग्रिम देकर प्राप्त कर। डाकव्यय पृथक रहेगा।

पुस्तक प्राप्ति एक मास मे उपलब्ध करा दी जायगी। सम्पादन मे सहयोग करके इस अमर ग्रन्थ को जन जन तक आर्य समाज व आय विद्यालयो आदि धन देकर पुस्तक सुरक्षित कराय। इस मास के बाद पुस्तक का मूल्य १००) सौ रुपय होगा।

इस ग्रन्थ की उपयोगिता चिरकाल से थी अब अल्प समय मे ही आपके हाथो मे होगी।

मुख पृष्ठ आकषक कागज व छपाई सुन्दर होगी। सस्कारो के महत्त्व को जानना ही सस्कारवान बनना है अत महर्षि प्रणीत सस्कार विधि की चन्द्रिका हर घर मे छिटके तो तुरन्त आदेश देकर पुस्तक प्राप्त करें।

—सम्पादक

अग्निवेश का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है

पश्चिमी अमेरिका के लास एजिल्स नगर से प्रकाशित होने वाले अग्रेजी दैनिक एल० ए० इडिया के २२ मई ९२ मे प्रकाशित अविकल समाचार— (अग्रेजी)

Swami Agnivesh is not in Arya Samaj

This is with reference to the L A INDIA dated April 17 news item 'Rally to Demand Next Indian President from Among Delits Among the various speakers it is mentioned Swami Agnive h as an Arya Samaj leader

It is clarif ed for the informat on of the readers that Swami Agnivesh is no longer associated w th the Arya Samaj in any way though he still claims to be an Arya Samaj leader He has since been debarred from the Arya samaj by the International Aryan League the supreme body of Arya samaj headed by Swami Anand Bodh Saraswati Ram Gopal Shalwale ex Member of Parliament) for his activities found against the principles of Arya samaj These day his activities are more political than religious

—Madan Lal Gupta
Purohit Vedic Dharma Samaj
Bellflower CA

लास एजिल्स मे १७ अप्रैल १९९२ को भारत का नया राष्ट्रपति दलित वग का हो की माग के समथन म एक रैली का आयोजन हुआ। कई प्रमुख वक्ताओ के साथ स्वामी अग्निवेश ने भी आय समाजी नेता के रूप मे रैली को सम्बोधित किया।

पाठको की सूचनाथ यह स्पष्ट किया जाता है कि स्वामी अग्निवेश का अब आय समाज से कोई सम्बन्ध नही है। आय समाज के सिद्धान्तो के विरुद्ध आचरण करने के कारण आय समाज के सर्वोच्च सगठन सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (जिसके वतमान प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती हैं) ने उन्हे आय समाज से निष्कासित कर दिया है। इस समय स्वामी अग्निवेश की गतिविधिया धार्मिक कम अपितु राजनैतिक अधिक है।

—मदन लाल गुप्ता
पुरोहित वैदिक धर्म समाज
बैल फ्लोवर कैलीफोर्निया

इराक को जार्ज बुश का अल्टीमेटम—

शिया इलाकों में उड़ने वाले इराकी विमान मार गिराये जाएंगे

वाशिंगटन, २६ अगस्त। अमेरिका ने घोषणा की है कि अगर इराक के सैनिक विमान और हेलीकाप्टर दक्षिणी इराक के शिया बहुल इलाकों पर से उडान भरते पाए गए तो उन्हें मार गिराया जाएगा। इस कार्रवाई में अमेरिका का साथ उसके दो प्रमुख सहयोगी देश ब्रिटेन और फ्रांस देंगे। अमेरिका की इस कार्रवाई का मकसद दक्षिण इराक में शिया आबादी के लिए शान्ति क्षेत्र का निर्माण करना है। अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने आज यह घोषणा की। उन्होंने कहा कि इराक सरकार को खाड़ी युद्ध के सहयोगी देशों के इस फैसले की जानकारी दे दी गई है। यह फैसला २४ घण्टे बाद अमल में आ जायेगा।

जार्ज बुश ने कहा कि सहयोगी देशों के लड़ाकू विमान इस क्षेत्र की निगरानी के लिए उड़ाने भरेंगे। अगर इराक का कोई सैनिक विमान ३२वे पैरेलल क्षेत्र से दक्षिण में उड़ता हुआ पाया गया तो वह मार गिराया जाएगा और भी तमाम जरूरी कदम उठाये जायेंगे। बुश ने कहा कि यह फैसला इराक में मानवाधिकारों की हिफाजत के लिए किया गया है। वे शिया मुसलमानों पर सैनिक हमले रोकना चाहते हैं। अमेरिका और उसके सहयोगी देश ३६वें पैरेलल क्षेत्र से आगे के कुर्द इलाकों में भी मानवाधिकारों के संरक्षण के नाम पर इराक पर काफी बंदिशें लगा चुके हैं। वहां १९९१ में खाड़ी युद्ध खत्म होने के बाद से ही उडान रहित क्षेत्र (नो फ्लाई जोन) बना हुआ है।

अमेरिकियों का कहना है कि इराक को १९९१ को युद्धविराम समझौते के तहत इराकी सैनिकों के परिवहन के लिए हैलीकाप्टरों की उड़ानों की इजाजत दी गई थी। पर उसने इसका इस्तेमाल शिया बहुल दक्षिणी इलाकों में लड़ाकू विमान उडाने में किया।

बुश ने इस बात का खण्डन किया कि अमेरिका इराक का बटवारा करना चाहता है। कई अरब देशों ने इस तरह की आशंका जताई थी। उन्होंने कहा कि अमेरिका इराक की क्षेत्रीय अखण्डता और एकता का समर्थक है। लेकिन अगर इराकियों ने अपनी ही जनता पर बर्बरता और जुल्मोसितम जारी रखे तो 'दूसरे उपाय' किए जायेंगे। ये दूसरे उपाय क्या होंगे, यह राष्ट्रपति ने साफ नहीं किया। अलबत्ता यह जरूर कहा कि जब तक बगदाद में नई सरकार सत्ता में नहीं आ जाती, इराक पर अमेरिकी दबाव बना रहेगा।

बुश ने कहा कि अमेरिका इराक में ऐसी सरकार चाहता है जो अपने ही लोगों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार नहीं करे और मूलभूत कायदों का उल्लंघन न करे। बुश ने इस बात का खण्डन किया कि उन्होंने यह घोषणा चुनावी फायदा उठाने के लिए की है।

बगदाद से मिली खबरों के मुताबिक इराक सरकार ने बुश की घोषणा की निन्दा की है। (जनसत्ता २४ अगस्त)

महेश योगी ने पार्टी बनाई, समस्याएं हल करने का दावा

वाशिंगटन, २५ अगस्त। महर्षि महेश योगी ने अमेरिका में एक नए राजनैतिक दल का गठन किया है। 'प्राकृतिक कानून पार्टी' नाम से बने इस दल का दावा है कि उसके पास अमेरिका की शहरी, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को हल करने के सभी मन्त्र हैं। उन्होंने यह पार्टी रास पेरोट के चुनाव मैदान से हटने के कुछ हफ्ते बाद ही बनाई है। अमेरिका में राष्ट्रपति का चुनाव होने जा रहा है।

महर्षि योगी के अनुसार रिपब्लिकन व डेमोक्रेट दोनों दलों के पास इन समस्याओं के हल नहीं हैं। पत्रकारों से बातचीत में पार्टी के सम्भावित अध्यक्ष जान हैगेलिन ने कहा 'गूढ ध्यान' राष्ट्र की सभी सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का बना बनाया हल है। करों में कमी, स्वास्थ्य सेवाओं का राष्ट्रीयकरण और बजट को सन्तुलित करना ये सभी समस्याएं भी उसी से हल हो सकती है। हैगेलिन ने कहा कि गूढ ध्यान का पहले अमेरिकियों को अभ्यास करना होगा। शरीर की सभी इन्द्रियों को एकचित्त व तनाव रहित कर मन्त्रों का उच्चारण करने से दिमागी तनाव घटता है। अमेरिका जब तक अपनी ऊर्जा का सकारात्मक इस्तेमाल नहीं करता तब तक वहां के समाज को फिर से गतिशील नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि यह ऊर्जा 'सामूहिक चिन्तन' कन्द्र से पैदा होगी।

कैसे बनेगा ऋण मुक्त भारत (२)

डा० मुरली मनोहर जोशी, अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी

'नेहरू माडल' का कुपरिणाम—

जब अंग्रेजों ने देश छोड़ा, उस समय देश साहूकार था। ३ हजार करोड़ रुपए से अधिक की विदेशी मुद्रा उस समय देश में थी। उस समय की अर्थ व्यवस्था को देखने से पता चलता है कि अपनी विदेशी मुद्रा की क्रय शक्ति उस समय बहुत बड़ी थी। अगर उसका सदुपयोग ठीक ढग से करते तो शायद काफी कुछ किया जा सकता था। मगर देश के नेताओ को इसका ज्ञान नही था कि हमारी गरीबी का कारण क्या है? उन्होने केवल पश्चिमी अन्धानुकारण में ही इसका उपाय खोजा कि .जिस रास्ते से पश्चिम के देश आगे बढ़ रहे हैं उसी रास्ते पर चलकर देश का भला किया जा सकता है। इसलिए जो आर्थिक नीति नेहरू जी के समय मे अपनायी गई, उसमे ऐसे आर्थिक उपायो का सहारा लिया गया जिसमे अधिक पूंजीनिवेश हो। लेकिन पूंजी तो थी नही। बहुत सारी पूंजी बाहर चली गई थी। अब पूंजी निर्माण के बगैर आप पूंजी कहां से ला सकते हैं? पूंजी निर्माण कैसे कर सकते हैं? इसके लिए इस देश की क्षमताओं सम्भावनाओं, संसाधनो और यहां के इतिहास को जानना बहुत जरूरी था। मगर दुःख तो यही है कि नेहरू जी इन सारे मामलों को नही जानते थे। उस समय यहा का जो प्रशासन तन्त्र था वह भी ऐसे लोगों के हाथ में था, जो भारत की मुख्यधारा से ज्यादा नहीं जुड़े थे। भारतीय नागरिक सेवा (आई० सी० एस०) के अधिकारियो की शृंखला इस देश के शासन तन्त्र को संभाले हुए थी और उनमे से बहुत कम लोग ऐसे थे जो इन बातों को समझते थे। नतीजा यह हुआ कि हमारे देश में पंचवर्षीय योजनाओ का सिलसिला शुरू किया गया और पचवर्षीय योजना शुरू होते ही, यानी १९५१-५२ मे ही देश मे जो ३ हजार करोड की विदेशी मुद्रा थी वह सब उसमें खर्च कर दी गई। इतना ही नही, विदेशी कर्ज की शुरूआत भी हो गई। पहली बार १० करोड़ के लगभग विदेशी कर्ज लिया गया और फिर धीरे-धीरे कर्ज लेने की प्रक्रिया बढती ही गयी। वह इन आंकड़ो से ही स्पष्ट हो जाता है।

कर्ज का चक्र—

पहली योजना के अन्त मे २०१ करोड़ रुपए का विदेशी ऋण था। उसमे से २४ करोड़ रुपया ब्याज भुगतान या किस्त भुगतान मे चला गया लेकिन दूसरी योजना मे यही कर्ज राशि १४२० करोड़ रुपए हो गई, और ११९ करोड़ का ब्याज भुगतान किया गया और फिर तीसरी योजना के अन्तर्गत उपयोग हुआ विदेशी ऋण २८७७ करोड़ रुपए था उसमे से ५४२ करोड़ रुपए ब्याज भुगतान मे चले गए। फिर १९६६ से १९६९ तक की तीन वार्षिक योजनाएं थी। उसमे विदेशी ऋण जिसका 'सहायता' नाम गलत है वह ३२३० करोड़ रुपए हो गया और उसमे से ९८३ करोड़ रुपए ब्याज भुगतान मे चले गए। चौथी योजना मे यह राशि ४१८४ करोड थी, उसमे से ब्याज और परिशोधन का मुगतान २४४५ करोड था। इस प्रकार कुल कर्ज का लगभग ५८ प्रतिशत हमने ब्याज या किश्त चुकाने के लिए दिया केवल ४२ प्रतिशत ही हम वास्तव मे अपनी योजना के कार्य मे लगा पाए। फिर पांचवी योजना के अन्त मे कर्ज ७२५९ करोड हो गया और उसमें से ३६८३ करोड़ अर्थात् ५० प्रतिशत के लगभग ब्याज मे चला गया। फिर छठी योजना के अन्तर्गत ११२५६ करोड़ रुपए विदेशी ऋण हो गया। और उसमें से भी ५ हजार करोड़ रु० ब्याज भुगतान और परिशोध मे चले गए। अतः कुल मिलाकर यह राशि बढ़ती चली गई। यानी योजना का जो आकार है वह इस बात का सबूत है कि योजना को पूरा करने के लिए कर्जा लिया और कर्ज चुकाने के लिए फिर कर्जा लिया। और कर्ज पर बढ़ते ब्याज और फिर ब्याज चुकाने के लिए फिर कर्ज। इस प्रकार हमारे कर्ज की राशि लगातार बढ़ती चली गई। स्वतन्त्रता के बाद जो दूषित अर्थव्यवस्था अपनाई गई यह उसी का परिणाम था।

दोषपूर्ण नीतियों का असर—

इस प्रकार के कर्ज का मौजूदा आयाम यदि देखा जाए तो यह बहुत ही भयानक है इस समय भारत पर जो विदेशी कर्ज है वह सन ९२-९३ में २ लाख ४० हजार करोड़ हो जाएगा। और स्वदेशी यानी घरेलू ऋण कुल मिलाकर ३ लाख १८ हजार करोड़। भारत सरकारकी कुल देनदारी इस समय ५ लाख ५८ हजार करोड़ रुपए है। इस समय भारत की जनसख्या ९० करोड मान लें तो हर भारत वासी ६ हजार रुपए का कर्जदार है। जो बच्चा कल पैदा होगा वह ६ हजार रुपए का कर्जा अपने सिर लेकर पैदा होगा।

भारत सरकार पर १९८०-८१ मे जो अन्दरूनी कर्ज ३१ करोड था वह ९१-९२ मे बढकर एक लाख ३० करोड यानी छह गुना हो गया। इसी प्रकार इसके अन्तर्गत अगर और अन्दरूनी देनदारिया जोडी जाएं तो ४८ हजार करोड तो भविष्यनिधि और छोटी बचत आदि का है। शेष उधार १७ हजार करोड़ का है सन ८०-८१ मे ४८ हजार करोड़ रुपए की स्वदेशी देनदारिया थी। जो आज बढकर ३ लाख १८ हजार करोड हो गई। इस प्रकार जो पहले कर्ज था वह सकल घरेलू उत्पाद का ३५ प्रतिशत था, किन्तु आज यह बढकर ५२ प्रतिशत हो गया। इसी तरह मे सन १९९०-९१ मे सरकार के हिसाब से यह कर्ज ६६ हजार करोड रुपए था। पिछले साल यह बढ़कर १ लाख ३५ हजार करोड रुपए होगया और रुपए के अवमूल्यन से तो बिना कुछ लिए दिए ही यह २ लाख ४० हजार करोड रुपए हो गया।

डालर का चक्कर—

अब अगर डालर में यह कर्ज दिखाया जाए तो ज्यादा नही लगता। सरकार यही घपला करती है कि वह अपना हिसाब डालर मे दिखा देती है। डालर का तो अवमूल्यन होना नही। और रुपएका अवमूल्यन होजानेके कारण उतनेही डालर चुकाने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है पहले डालर का मूल्य १८ रुपए प्रति डालर था, अब यह लगभग ३० रुपए प्रति डालर हो गया है। रुपए के अवमूल्यन से ही इसका मूल्य बढ़ गया। इसके अनुसार पहले जो विदेशी ऋण सकल घरेलू उत्पाद का १० प्रतिशत था, आज सकल घरेलू उत्पाद का ४० प्रतिशत है। अत. ४० प्रतिशत यह और ५२ प्रतिशत का उल्लेख पहले किया गया है। अर्थात कुल ९२ प्रतिशत। यानी हमारे आर्थिक कर्ज की मात्रा आयतन के रूप मे देखें तो उतनी ही है जितनी रूस की अर्थात रूस का जैसा विध्वंस हुआ, हम भी उसी ओर बढ़ रहे हैं। और आज भी भारत की वर्तमान अर्थव्यवस्था के कारण हमें जो कर्जों की आवश्यकता पड़ेगी वह कम भयानक नही है। आने वाले ५ वर्षो तक हमे प्रतिवर्ष १० बिलियन डालर कर्ज लेना पड़ेगा। यानी ५० बिलियन डालर का कर्ज तो कम से कम लेना ही पड़ेगा हमको बाहर से। इस प्रकार देश पर सन १९९७ तक कुल १३० बिलियन डालर या ४ लाख करोड़ रुपए का विदेशी कर्ज लद जाएगा। आज स्वदेशी और विदेशी मिलाकर ५ लाख ५८ हजार करोड़ का कुल ऋण है जो १९९७ तक सामान्य तौरपर १० लाख करोड़ रु० तक पहुच जाएगा। अर्थात भारतवर्ष के सामान्य आदमी पर कर्ज आज से दो गुना हो जाएगा। इससे ऐसा लगता है कि नीति निर्धारको द्वारा देश की अर्थ व्यवस्था मे पूंजी जुटाने का जो उपक्रम किया गया है वह काफी दोषपूर्ण रहा है। इसका मौलिक कारण है पश्चिमी जीवन. पश्चिमी सस्कृति और पश्चिमी जीवन मूल्यो को भी पश्चिमी ऋण के साथ-साथ लोगों के जीवन में उतारना, जिसके परिणाम स्वरूप एक उपभोक्तावादी समाज का रूप धारण करने के लिए देश मजबूर हो गया है। (क्रमशः)

अम्बेडकरवाद समाज में विघटन उत्पन्न करेगा

(डा० अम्बेडकर द्वारा आर्यों की समाज व्यवस्था की आलोचना का समीक्षण)

प्रो० भवानीलाल भारतीय

श्री रामविलास पासवान ने न्यायचक्र नामक एक पत्र निकाला है, इसके एक अंक (१५ अप्रैल १४मई) मे डा० अम्बेडकर का अन्तिम किन्तु अपूर्ण लेख प्रकाशित किया है। इसमे आर्य सभ्यता तथा आर्यों की सामाजिक व्यवस्था एवं रीति-रिवाजो पर अनेक मिथ्या आक्षेप किये गये हैं। यद्यपि डा० अम्बेडकर की अनेक धारणाये इतिहास के ठोस तथ्यो पर आधारित होने के कारण निर्विवाद भी है, किन्तु उनका प्रस्तुत लेख लिखने का प्रयोजन आर्य वैदिक सभ्यता को असभ्य अनैतिक व्यभिचार की जननी तथा सदाचार की विनाशक ठहराना ही है। यह तो सत्य है कि बुद्ध के काल तक आते आते आर्यों की धार्मिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक स्थिति बहुत कुछ निकृष्टता को प्राप्त हो चुकी थी। किन्तु उसके लिये आर्यों के मूल ग्रन्थो तथा उनमे वर्णित आदर्श विधि विधानो को दोषी नही ठहराया जा सकता। द्यूत क्रीडा मदिरा पान व्यभिचार आदि ऐसी वैयक्तिक और सामाजिक बुराइया है जो न्यूनाधिक रूप से सभी वर्गों और समाजो मे पाई जाती है, किन्तु इसका यह अर्थ नही कि तत् तत् धर्म या समाज के पुरस्कर्ता शास्त्र या महापुरुष इन बुराइयो को करने की आज्ञा देते हैं अथवा उन्हे अच्छा मानते हैं।

यदि युधिष्ठिर ने जुआ खेला और अपने राज्य और पत्नी को दाव पर लगाया तो किसी ने इसके लिये उसकी प्रशसा नही की। राजा नल का जुआ खेलना भी कभी प्रशसा का कारण नहीं बना। आर्यों ने द्यूत प्रथा की सर्वत्र निन्दा कर उसे कही भी आचरणीय नही बताया। डा० अम्बेडकर की दृष्टि मे जुये की लत केवल आर्यों मे ही पाई जाती है। किन्तु उनका यह निरा भ्रम ही है। जुये और किसी धर्म का कोई समवायी सम्बन्ध नही होता। जुआरी तो जुआरी ही होता है उसका हिन्दू या मुसलमान होने से कोई मतलब नही। अक्षसूक्त मे जुए की लत से तबाह हुए एक व्यक्ति का जो विलाप ऋग्वेद मे दिखाया गया है वह भी मनुष्य के लिये यही उपदेश देता है कि जुआ बुरा है, इसके विपरीत कृषि कर्म को वहा श्रेयस्कर कहा गया है।

मैं एक बात और स्पष्ट कर दू कि जुआ, शराब या व्यभिचार जिस किसी समाज मे जिस युग मे प्रचलित रहे हों उन्हे कोई अच्छा नही मानता। आर्यों का भी समाज था। उसमे सभी देवी आचरण वाले ही रहे हों, ऐसा नही है। अच्छे और बुरे सयमी और असयमी सभी युगो मे सभी समाजों मे रहते आये हैं किन्तु का ... [illegible] ... प्रशसा नही करता। कौटिल्य के युग मे यदि लाइसेंसयाफ्ता जुआघर थे तो यह राजा का ऐसे व्यसनियो से भी राजस्व लेने का एक तरीका ही सूचित करता है। क्या आज की सरकार शराब को प्रोत्साहन देकर राजस्व अर्जित नही करती? कौटिल्य ने जुए को नियन्त्रित करने की ही बात की है उसकी प्रशसा तो नही की। सोम और सुरा नाम से शराब का द्विविध वर्गीकरण लेखक की मन प्रसूत कल्पना ही है। वेदो मे जिस सोम का उल्लेख है, वह कोई भौतिक नशा नहीं है। वह तो वह आध्यात्मिक नशा है, जिसके बारे मे गुरु नानक ने कहा था—

> भाडा नशा शराब दा उतर जाय परभात।
> नाम खुमारी नानका चढी रहे दिन रात॥

भागवद्भक्ति की यह खुमारी, भगवन्नाम का यह नशा एक दिव्य अनुभूति है। वेदो मे सर्वत्र इसी पवमान सोम की चर्चा है। जिसे पीकर भक्त अमर हो जाता है अपाम सोम अमृता अभूम/इस सोम से ही दिव्य ज्योति प्राप्त होती है। आर्य शास्त्रो मे सुरापायी ब्राह्मण की सर्वत्र निन्दा की गई है। सुरा पान को सप्त पातको मे गिना गया है। पुराणो मे वर्णित कल्पित कथायें तथा ऐतिहासिक ग्रन्थो के उपाख्यान न तो आदर्श होते हैं और न धर्मशास्त्रवत् मान्य। अत शुक्राचार्य का मदिरापान विराट पत्नी का शराब पीना या इसी प्रकार के अन्य प्रसग किसी तथ्य का उद्घाटन भले ही करते हो मान्य तो नही हो सकते।

आर्यों की यौन आचरण विषयक निरकुशता अथवा आचार शैथिल्य का उदाहरण देने के लिये अम्बेडकर ने वेद तथा तत् सदृश अन्य साहित्य मे उल्लिखित कुछ सदर्भ तो दिये, किन्तु इन प्रसगो की व्याख्या मे काम आने वाली आलकारिक शैली की नितान्त उपेक्षा ही कर दी। तभी तो वे ब्रह्मा के स्वदुहिता गमन, यम यमी सूक्त, सूर्य और उषा आदि के ऐसे उदाहरण देते है जो वास्तव मे ऐतिहासिक पात्र या घटनाये है ही नही। उपर्युक्त प्रसगो की व्याख्या के लिये वेदार्थ की ब्राह्मण तथा निरुक्त वर्णित पद्धति की जानकारी आवश्यक है। किसी युग मे यौन स्वच्छाचारिता का यदि कोई उदाहरण मिलता है तो वह कोई सार्वजनीन या शाश्वत विधान नही है और न आचरणीय ही है। व्रत पराशर सत्यवती कुन्ती का कौमार्यावस्था मे गर्भ धारण आदि प्रसगो को आदर्श और अनुकरणीय कोई नही मानता। लाजा होम और सप्तपदी पर डा० अम्बेडकर की टिप्पणिया भी कपोल कल्पित है।

निश्चय ही सामाजिक और आचार सम्बन्धी नियमो मे सतत परिवर्तन होता रहता है। नियोग की प्रथा किसी युग मे श्लाघ्य समझी जाती थी किन्तु कालान्तर मे उसे पशुधर्म कहकर गर्हित मान लिया गया। इसलिये किसी काल या देश-विदेश मे प्रचलित किसी सामाजिक या नैतिक नियम के आधार पर किसी जाति या धर्म को लांछित नही किया जा सकता।

न्यायचक्र के इसी अंक मे रामविलास पासवान की ससद मे प्रस्तुत किसी वक्तृता को भी दिया गया है। इसमे वक्ता का सारा क्रोध मनुस्मृति मे वर्णित ब्राह्मणो की महिमा पर उतारा गया है। मन्वादि स्मृतिकारो ने यदि ब्राह्मण की श्रेष्ठता, सर्वोपरिपूज्यता आदि का बखान किया है तो वह विशिष्ट अभिप्राय से है। यहा किसी धर्म या वर्ण की महत्ता द्योतित करना स्मृतिकार का उद्देश्य नही है, अपितु वह ब्राह्मणत्व के गुणो और आदर्शो का ही प्रशस्ति-पाठ करना है। बिना इस अभिप्राय को समझे यदि मनुस्मृति मे वर्णित ब्राह्मण प्रशसा के श्लोको को हम पढ़ेंगे तो हम स्मृतिकार के आशय से दूर हो रहेंगे। मनु की तो स्पष्ट घोषणा है।

> सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।
> अमृतस्येव चाकांक्षदवमानस्य सर्वदा।" (२।१६२)

अर्थात् ब्राह्मण सम्मान प्राप्ति से तो इस प्रकार दूर रहे मानो वह उसके लिये विष ही है। इसके विपरीत वह अपमान को अमृत समझे। अत. ब्राह्मण का महिमा गान वास्तवमे ब्राह्मणत्वकी प्रशसा है। इसी प्रकार शूद्र भी किसी वर्ग का वाचक न होकर गुणकर्म हीन व्यक्ति का सूचक है। ऐसा व्यक्ति तो समाज के श्रेष्ठ पुरुषो की सेवा ही करेगा। अन्य कुछ करने की उसमे क्षमता ही कहा है? और यदि आगे बढने की उसमे शक्ति और सामर्थ्य है तो उसे रोकने तथा उसका मार्ग अवरुद्ध करने का विधान भी किसी शास्त्र मे नहीं है। इसके विपरीत ब्राह्मणों के स्वकर्म हीन होने के कारण निम्न वर्णो मे जाने तथा हीनवर्णस्थ लोगो के ऊचे उठने के अनेक दृष्टान्त आर्ष ग्रन्थो मे मिलते हैं। (शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता (६)

—आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक पत्र 'आर्यमित्र' सन् १८८८ मे सबसे पहले मुरादाबाद से निकला था। बाद मे अनेक वर्षों तक यह आगरा से प्रकाशित होता रहा और आजकल यह लखनऊ से निकल रहा है। इसके आदिसम्पादक सम्पादकाचार्य पण्डित रुद्रदत्त शर्मा थे। 'आर्यमित्र' मे आने से पूर्व उन्होने 'आर्य विनय' (१८८४) नामक पाक्षिक पत्र का सम्पादन भी किया था। इस पत्र का सम्पादन कुछ समय तक पण्डित बद्रीदत्त जोशी ने भी किया था। यह पत्र पहले आर्य समाज मुरादाबाद की ओर से प्रकाशित होता था और बाद म वह आर्यमित्र' के रूप मे बदलकर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का साप्ताहिक मुखपत्र हो गया। इसका नामकरण पण्डित बदरीदत्त जोशी ने किया था। यह सौभाग्य की बात है कि 'आर्यमित्र' को ऐसे कितने ही कुशल सम्पादक मिले जिनकी सम्पादन-पटुता और लेखन-शैली आज भ। हिन्दी-साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। प्रख्यात वैदिक विद्वान् श्री रामदत्त शुक्ल के पिता श्री नन्दकुमार देव शर्मा सन् १९०८ मे इसके सम्पादक थे। इस प्रसग मे यह भी स्मरणीय है कि जिन दिनो पण्डित हरिशकर शर्मा इसका सम्पादन करते थे उन दिनो 'आर्यमित्र' की गणना उच्चकोटि के साप्ताहिक पत्रो मे की जाती थी। 'आर्यमित्र' ही आर्य जगत् का ऐसा अकेला पत्र है जिसके सम्पादन मे अनेक ऐसे सज्जनो न सहयोग दिया है जो हिन्दी-साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखते है। प्रख्यात लेखक श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी ने कई वष तक 'सर्वानन्द नाम न इसका सम्पादन किया था। 'विशाल भारत' और 'मधुकर' के भूतपूर्व ख्याति प्राप्त सम्पादक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने भी कलकत्ता जाने से पूर्व उसे कृतार्थ किया था। सुप्रसिद्ध आलोचक डा० सत्येन्द्र और कहानीकार श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव चन्द्र ने जहा इसके सम्पादन मे सहयोग दिया था वहा इन पक्तियो का लेखक भी १९३६ मे इसका सहकारी सम्पादक रहा था। उन दिनो श्री बाबू राम एम०ए० इसके सम्पादक थे और हैदराबाद मे छिडे 'आर्य सत्याग्रह के कारण यह अर्धसाप्ताहिक हो गया था। 'कल्पना हैदराबाद के सम्पादक-मण्डल क एक सदस्य और हैदराबाद से प्रकाशित होने वाले 'सकल्प' नामक मासिक पत्र के आदिसम्पादक मधुसूदन चतुर्वेदी ने भी काफी समय तक इसका सम्पादन किया था। सस्कृत के विद्वान् डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्कशिरोमणि भी अपने जीवन के किशोर-काल मे कुछ दिन तक इसके सम्पादक रहे थे। चतुर्वेदभाष्यकार श्री जयदेव शर्मा विद्यालकार न आर्य मित्र का सम्पादन उन दिनो किया था, जब इसका प्रकाशन 'आर्य साहित्य मडल लिमिटड अजमर' के श्री मथुराप्रसाद शिवहरे के निर्देशन म आगरा से होता था।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा पुरस्कृत श्री ऋषिदेव विद्यालकार उन दिनो इसके सम्पादक थे, जब आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का मुख्य कार्यालय लखनऊ म बन जाने के कारण वह आगरा की बजाय वहा से प्रकाशित होने लगा था। गुरुकुल कागडी के प्राचीन स्नातक श्री धर्मपाल विद्यालकार भी कुछ दिन तक इसके सम्पादक रहे थे। महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक श्री गोपाल दत्त जोशी ने भी उन दिनो लगभग पाच वर्ष तक इसका सम्पादन किया था, जब वे लखनऊ मे रहते थे। गुरुकुल ज्वालापुर के दूसरे स्नातक श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी थोडे दिन इसके सम्पादन मे सहयोग दिया था। समय-समय पर कई बार गुरुकुल वृन्दावन के स्नातक श्री उमेशचन्द्र आयुर्वेद शिरोमणि न भी इसका सम्पादन किया था और आचार्य रमेशचन्द्र एम.ए भी इसके सम्पादक रहे हैं। श्री हरिशकर शर्मा के सम्पादन के दिनोमे इसकी साज-सज्जा तथा सामग्री की प्रशसा उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द ने भी की थी। 'आर्यमित्र' ही हिन्दी मे अकेला ऐसा पत्र है जो अपने जीवन के प्रारम्भ से आज तक अत्यन्त सफलतापूर्वक प्रकाशित हो रहा है। दो बार यह बीच मे दैनिक रूप मे भी प्रकाशित हुआ था। एक बार श्री हरिशकर शर्मा सम्पादन करते थे और दूसरी बार लगभग आठ मास तक श्री भारतेन्द्रनाथ साहित्यालकार ने भी इसके सम्पादन मे अपना सहयोग दिया था। 'आर्यमित्र' ने अपनी शक्ति, सामर्थ्य और सीमाओ के अनुरूप आर्य सिद्धा तो का प्रतिपादन एव प्रचार करने के अतिरिक्त आर्य जगत् मे साहित्यिक जागरण लाने की दिशा मे भी पर्याप्त सहयोग दिया था। हिन्दी के लेखको मे बहुत से ऐसे हैं जो अपने साहित्यिक विकास के प्रारम्भिक काल मे आर्यमित्र' म ही लिखा करते थे हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानी-लेखिका श्रीमती चन्द्रकिरण सोनरेक्सा की पहली कहानी भी उस समय आर्य मित्र म प्रकाशित हुई थी जब कि मैं सन् १९३६ मे उसमे कार्य करता था। श्रीमती सोनरेक्सा को उनकी आदमखोर' नामक कृति पर अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'सेकसरिया पुरस्कार' प्राप्त हो चुका है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल कागडी, महाविद्यालय ज्वालापुर और गुरुकुल वृन्दावन के अनेक स्नातक भी 'आर्यमित्र' के माध्यम से ही आगे बढे थे। डा० मुन्शी-शर्मा सोम' और डा० सूर्यदेव शर्मा किसी समय आर्यमित्र' के विशिष्ट कवियो मे थे।

(क्रमश)

वर्ण व्यवस्था की अनिवार्यता

जगदीश प्रसाद मिश्र विद्यावाचस्पति, नरौरा

विश्व में कुछ ऐसे शाश्वत तत्व एवं सिद्धान्त हैं जिन्हें कभी निषेध नहीं किया जा सकता है उन्हीं तत्वों मे से एक है वेद संस्कृति अथवा वेदमार्ग। वेद विश्व के आदि ग्रन्थ अथवा अपौरूषेय माने जाते हैं। वेद में संसार की रचना, संचालन व्यवस्था, परिपालन व्यवस्था का सत्य ज्ञान दिया हुआ है। उसी में से हम आज वेद सम्मत वर्ण व्यवस्था पर विचार करेंगे। वेदमत के अनुसार मानवीय समाज में सामाजिक व्यवस्था को सुचारू एवं सभी के कल्याण हेतु विविध मनुष्यों के गुण कर्म की उपयोगिता अनुसार चार भागों में व्यवस्थित किया जिन्हें हम वेदबाणी संस्कृत मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र कहते हैं। जैसा कि यजुर्वेद मन्त्र ३१-११ के अनुसार—

> ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्‌ बाहु राजन्य कृत।
> उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्‌भ्याम शूद्रो अजायत:॥

जिस प्रकार शरीर में मुख सर्वोपरि श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्णहै उसी प्रकार समाज में ब्राह्मण अपने गुण एवं कर्म के कारण ही सर्वोपरि श्रेष्ठ तथा माननीय है। बाहु का अर्थ भुजा, बल, वीर्य आदि हैं। राजसत्ताधीश व्यक्ति विद्वान के साथ बल वीर्य से समपुष्ठ होने चाहिये तभी वह प्रजा के हितों को रक्षा न्याय पूर्वक कर सकता है अन्यथा नहीं। सामर्थ्य एव बल से ही अन्यायी एवं मानवता शत्रुओं का दमन कर एवं शान्ति स्थापित कर सकता है। इसीलिये राज्याधिकारी(क्षत्रिय)की तुलना शरीर के अंग भुजा से की गयी है वैश्य वर्ण को विद्या आदि मे निष्णात हो खेती, व्यापार, पशुपालन आदि में संलग्न हो वैभव, धन अर्जित कर राजसत्ता एवं अपना पालन करते हुये समाज के शेष वर्गों का परिपालन करना चाहिये। जिस प्रकार शरीर में उस प्रदेश (पाचन एवं परिवहन संस्थान) भोजन प्राण वायु आदि प्राप्त कर उसे ऊर्जा रूप में परिवर्तित कर शरीर के समस्त अंगों को वितरित कर देता है। यदि वितरित नहीं करे तो रुग्ण हो जाता है। उसी प्रकार वैश्यवर्ग यदि अर्जित वैभव को वितरित नहीं करे तो रुग्णता को प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार पैर सम्पूर्ण शरीर का भार वहन कर गमनागमन किया करता है उसी प्रकार मानव समाज का वह वर्ग जो ज्ञान शून्य है वह समाज के अन्य तीन वर्गो की सेवा आदि कर कार्य निर्वाहन करता है। गुण कर्म के अनुसार पैर मुख का स्थान नहीं ले सकते अथवा मुख पैर का स्थान नहीं ले सकता किन्तु समस्त शरीर की व्यवस्था के संचालन मे मुख एवं पैर का समान दायित्व एवं योग है। अत: सामाजिक व्यवहार की उन्नति में सभी वर्णदाय भागी हैं अत: उपलब्धि का भी फल समान रूप से सभी को मिलना चाहिये। यही वैदिक समाजवाद हैं जो स्व अनुशासित एवं ईश्वर प्रेरित है।

उक्त वैदिक व्यवस्था विश्व के प्रत्येक राष्ट्र में और समाज में अनवरत प्रवाह से विद्यमान है तथा रहेगी भले ही शब्द एवं भाषा की अभिव्यक्ति माध्यम भिन्न हो अर्थ एक ही है। उदाहरणार्थ आज के युग में कर्मचारी एवं अधिकारियो का वर्गीकरण प्रमुखत: चार ही भागों मे है प्रथम श्रेणी कर्मचारी द्वितीय श्रेणी कर्मचारी तृतीय श्रेणी कर्मचारी और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी। सामाजिक रूप से विद्वान दार्शनिक अन्वेषक प्रथम श्रेणी सत्ताधारी राज्याधिकारी द्वितीय श्रेणी, व्यापारी तृतीय श्रेणी तथा सेवक, अनुचर, श्रमिक चतुर्थ श्रेणी इस प्रकार वेद सम्मत यह व्यवस्था विश्व में वर्तमान है।

वेद सम्मत व्यवस्था को चलाने में प्रमुखत: ब्राह्मण वर्ण का दायित्व अन्य वर्गों की अपेक्षा ज्यादा रहा है रहेगा भी क्योंकि समाज में विभिन्न बौद्धिक स्तर के प्राणी होते हैं एवं बौद्धिक स्तर एकसा हो भी नही सकता क्योंकि यह एक ईश्वरीय व्यवस्था है जो गुण कर्म के आधार पर संस्कार रूप से प्रेरित है। हम समाज में देखते हैं कि समाज का नेतृत्व दिशा बोध विद्वान पुरुषों द्वारा ही होता है। इसी स्तर के लोग समाज के प्रणेता होते है। आज के परिपेक्ष मे वैज्ञानिक दार्शनिक अन्वेषक, समाज शास्त्री, अर्थशास्त्री प्रशासक इसी कोटि मे आते हैं। यही ब्राह्मण वर्ण का द्योतक है। हमारे भारतवष में जब से इस वर्ग में नैतिकता, दायित्व बोध राष्ट्रभाव आदि मूल्यों का ह्रास हुआ तभी से हमारे देश का पतन प्रारम्भ हो गया तथा आज हम जिस दयनीय स्थिति में पहुंचे हैं वह सर्वविदित है। अत: वेद सम्मत वर्ण व्यवस्था जो गुण कर्म एवं न्याय पर आधारित है पुन: स्थापित करने में ही हित है।

अम्बेडकरवाद

(पृष्ठ ६ का शेष)

तथापि हमें यह स्वीकार करने में कुछ भी विप्रतिपति नहीं है कि मध्यकालीन स्मृतियों, धर्मशास्त्र के निबन्ध ग्रन्थों तथा अन्य विधि ग्रन्थों में सामाजिक वैषम्य को बढ़ाने वाली, वर्णो के बीच विद्वेष तथा घृणा उत्पन्न करने वाली बातें भी प्रचुर मात्रा में हैं। किन्तु आर्य समाज जैसी सामाजिक सौहार्द को प्रचारित करने वाली संस्था तथा उसके संस्थापक ऋषि दयानन्द ने ऐसे धर्मग्रन्थों को न तो प्रामाणिक माना और न उन्हें कभी महत्त्व दिया। हमारी विनम्र सम्मति में ब्राह्मणशाही का हौवा खड़ा करना सामाजिक विषमता शोषण तथा अत्याचार से पीड़ित वर्तमान समाज में और अधिक अराजकता को आमन्त्रण देना है।

गढ़वाल में आर्य समाज व स्व० श्री शान्ति प्रकाश "प्रेम"

धर्मसिंह कोली, डबल एम.ए.

स्व० श्री शान्तिप्रकाश जी "प्रेम" का जन्म १२ दिसम्बर १९१४ में ग्राम कुणजोली साबली, पौड़ी गढ़वाल में हुआ। स्व० भारतीय जी की प्रेरणा पर सन् १९२७में स्व० श्री दुर्गालाल भिक्षु ने अपने छोटे भाई श्री प्रेम जी को भटिण्डा के गुरुकुल भेजा जहां पर उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। वैदिक शिक्षा का अधिकाधिक ज्ञान अर्जित करने के बाद श्री प्रेम जी आर्य समाज की सेवा के लिए समर्पित हो गए। तब से गढ़वाल-उत्तराखण्ड में आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार तथा समाज सुधार के कार्यों में उनका निस्वार्थ जीवन बीता। देश की आजादी के युद्ध मे भी भाग लेकर उनके हाथों में अंग्रेजी सरकार द्वारा हथकड़ी पहना दी गई, वे दो बार जेल गए। अंग्रेजी सरकार ने कई यातनाएं दी किन्तु देश की आजादी के लिए वे अपने कर्त्तव्य पर डटे रहे।

समाज की रचना और उसकी व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं बल्कि कर्म के आधार पर होनी चाहिए, वेद ईश्वर का ज्ञान है जिसे बिना भेद-भाव के मनुष्यमात्र प्राप्त करता है, कर्मों से मनुष्य ऊंच-नीच बनता है जिनके द्वारा जीवन सुधार के लिए सही मार्गदर्शन मिलता है, हिन्दू होते हुए गढ़वाल में जिन्हें वेद पढ़ने-लिखने, यज्ञोपवीत धारण करने, मन्दिरों में प्रवेश, वर-वधू को डोला-पालकी में जाने का अधिकार नहीं था, इन सभी आंदोलनों में श्री प्रेम जी स्व० भारतीय जी के सेनापति बनकर रहे। उनके मार्गदर्शन पर चलकर श्री प्रेम जी ने गढ़वाल में समाज सुधार, दलितोद्धार सेवा आजनक तेजी से किया और सामाजिक अत्याचारों से जूझते हुए सेवा आहुतियां दीं। जीवन पर्यन्त सामाजिक विषमता एवं रूढ़िवादिता को समूल नष्ट करने के लिए संघर्ष करते रहे। आर्य समाज पचपुरी को एक पुत्र की भांति पालकर अपनी छाती से चिपकाए रखा। उनके सामाजिक व धार्मिक कार्यों के प्रमाण आज हमारे सामने हैं। सन् १९५२ में उन्होंने स्व० भारतीय जी के जीवन पर सुन्दर ललित पदों में "जयानन्द गौरव गान" एक पुस्तिका के रूप में लोकप्रिय बनायी। भारतीय जी की मधुर स्मृति में १९५२ से ही पचपुरी मे कन्या विद्यालय, पुस्तकालय, १९८१ से धर्मार्थ औषधालय, स्यूंसी में आर्य समाज मन्दिर आदि की स्थापना के प्रमुख संचालक बनकर अपनी अमूल्य सेवाओं की आहुतियां दीं। उनका तप-त्याग उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय था।

उन्होंने कई लोगों को अपनी व्यथा सुनाई कि स्व० भारतीय जी की जीवनी अधूरी लिखी हुई है, मैं उसे पूर्ण नहीं कर सकता हूं क्योंकि उनकी नेत्रज्योति मोतियाबिन्द आने के कारण चली गयी थी। १९८९ में नेत्रचिकित्सा संस्थान, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में उनके दोनों नेत्रों का आपरेशन सुप्रसिद्ध दक्ष डाक्टरों द्वारा किया गया। उन्हें पुनः नेत्र ज्योति प्राप्त हुई, भारतीय जी की जीवनी उन्होंने पूर्ण लिख डाली और उनकी कई वर्षों की अभिलाषा पूर्ण हुई। सितम्बर १९९० में "कर्मवीर जयानन्द भारतीय" नामक पुस्तक के प्रकाशन से उन्होने समाज को एक अमूल्य भेंट प्रदान की। लम्बी अस्वस्थता के बाद २८ जून १९९२ को उनका निधन हो गया।

स्व० विभूति श्री "प्रेम" जी एक निस्वार्थ समाजसेवी, उत्कृष्ट आर्य नेता, दानवीर, गौरवशाली मानव, वीर व धीर व्यक्ति तथा पंचपुरी के शुभचिन्तक थे। दिल्ली में उपचार की अवधि के दौरान उनसे भेंटवार्ता में वे कहते थे कि "सामाजिक धार्मिक कार्यों से गढ़वाल में बड़ी उन्नति हुई है, ये कार्य निरन्तर चलते रहने चाहिएं थे, मेरी कुछ नई योजनाएं थीं, मुझे स्वास्थ्य लाभ नहीं हो रहा है, मैं कैसे पूर्ण कर पाऊंगा।" गढवाल में आर्य समाजों के द्वारा उनके अधूरे व नए सुधार कार्यों को पूर्ण करने के लिए गढ़वाल के विशिष्ट आर्य समाजी व्यक्तियों को आगे आकर सीना तानकर खड़ा होना होगा।

स्वास्थ्य चर्चा—

यकृत रोगों का इलाज

हमारे शरीर में यकृत बहुत महत्वपूर्ण ग्रन्थि है। इसे उर्दू में जिगर और अंग्रेजी में लिवर (Liver) कहते हैं। यह ग्रन्थि शरीर में दाहिनी ओर पसली के नीचे स्थित है। इसका काम है जो कुछ हम खाते हैं उसको पचाने के लिये गैसट्रिक जूस (पाचक रस) प्रदान करना है। जब यह ग्रन्थि ठप हो जाती है अर्थात् जिगर पाचक रस छोड़ना बन्द कर देता है तो शरीर में भारीपन सा महसूस होता है और शिथिलता आ जाती है। खाया-पिया हजम नहीं होता है। यदि लापरवाही से कई दिनों तक यह ठप पड़ा रहे तो शरीर में नया खून बनना बन्द हो जाता है और कमजोरी आने लगती है। पीलिया जैसा भयकर सूखा रोग हो जाता है।

२—इसके ठप होने के कई कारण हैं जैसे अधिक गरिष्ठ भोजन करना, तले हुये पदार्थ अधिक मात्रा मे खाना, बर्फ और चाय का अधिक सेवन करना धूम्रपान और मद्यपान इसके पाचक रस को शुष्क (खुश्क) कर देते हैं। अधिक मैथुन से लिवर निर्बल होकर बन्द हो जाता है।

(३) चिकित्सा—दवाई से पहले परहेज करना परम आवश्यक है। गरिष्ठ भोजन और तले हुये पदार्थ बन्द करो। धूम्रपान व मद्यपान करते हो तो उसे भी छोड़ो। ब्रह्मचर्य का पालन करो। प्रातः सूर्य उदय पूर्व उठकर भ्रमण करने जाओ। पपीता, सन्तरा, अनार, मोसमी, नीबू और गन्ने का रस सेवन करने से जिगर काम करना चालू कर देना है। आम के रस में थोड़ी काली मिर्च, सोंठ, चीनी और सेन्धा नमक मिलाकर सेवन करने से भी जिगर ठीक हो जाता है।

(४) जिनको जिगर की दायमी (पुरानी) बीमारी है उन्हें उत्तम प्रकार से बनाया गया गुआरपाठा (घृतकुमारी) का आसव भोजन के बाद प्रयोग करना चाहिये। भोजन में मूंग की दाल का पानी, तोरी का रैसा ही पियें। एक घरेलू टानिक है इसे बनालो। नीबू के रस में बढ़िया अदरक की पतली-पतली फांकें बना कर डालो। इसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर हिलाकर ढककर रख दो। दो तीन घण्टे बाद इसमें से चमचा भर कर पियो। नन्हें-मुन्ने बच्चों को तीन चार बून्द करके पिला सकते हो जिनका जिगर खराब है।

(५) जिगर को ठीक करने की अनेक औषधियां हैं परन्तु मैं नहीं चाहता कि घर मे महगी-महंगी दवाइयों की शीशियां जमा होती रहें। यकृत के सम्बन्ध में आजमाये हुये प्रयोग ही बताये हैं। यदि परहेज करोगे तो अवश्य लाभ होगा। कोई शंका हो तो पत्र-व्यवहार द्वारा उसका समाधान कर सकते हैं।

—देवराज आर्य मित्र वैद्य विशारद
आर्यसमाज वल्लभगढ़ जि० फरीदाबाद

इन बच्चों मे ईश्वर की झलक देखी —टाईटलर

नई दिल्ली २६ अगस्त ९२। आर्य अनाथाल से सम्बन्धित सस्थाओ आर्य बाल गृह, आर्य कन्या सदन, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली २ के ६७ वे वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि पद से देर रात बोलते हुए केन्द्रीय जल भूतल, परिवहन राज्य मन्त्री (स्वतन्त्र प्रभार) श्री जगदीश टाईटलर ने बोलत हुए ये शब्द कहे। इन बच्चो के रख-रखाव, निराश्रित इन बच्चो के चेहरो पर मुस्कान, हर्षोल्लास देखते हुए उन्होने यहा के प्रबन्ध समिति की सराहना की और कहा कि मैंने यहा आकर पाया और देखा कि लोग मन्दिर-मस्जिद, चच एव गुरुद्वारा मे परमात्मा की खोज के लिए जाते है। असली ईश्वर का रूप तो इन बच्चो मे झलकता हुआ रहा ह।

परमात्मा को छोडकर जिनका इस दुनिया म कोई सहारा नही है ऐसे हजार के लगभग निराश्रित अनाथ बच्चो को नि शुल्क पाल पोस कर उनकी रूचि अनुसार उनको उत्तम शिक्षा प्रदान कर ये सस्थाए निश्चित ही एक पुण्य काय कर रही है—१८-२० वर्ष की आयु होने पर सस्था द्वारा यहा की बच्चियो की शादी भी सस्था द्वारा कर दी जाती है।

समारोह की अध्यक्षता दिल्ली नगर निगम के आयुक्त श्री पी वी जय-कृष्णन ने की तथा इस अवसर पर वयोवृद्ध नेता एव पूर्व सासद श्री अमरनाथ चावला जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

मच सचालन सस्थाओ के मुख्य अधिष्ठाता श्री वीरेश प्रताप चौधरी जी तथा सचिव श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने किया।

बालक बालिकाओ ने इस अवसर पर देशभक्ति एव धार्मिक मूल्यो पर आधारित अनेक सास्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जिनका सचालन अधिष्ठाता श्री रघुवशी ने किया।

—हमीर सिह रघुवशी, अ धष्ठाता

दयानन्द शोधपीठ के लिए अध्यक्ष की आवश्यकता

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोधपीठ के लिए प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद के लिए एक सुयोग्य आर्यविद्वान की आवश्यकता है। जो सस्कृत मे एम ए तथा पी एच डी हो और ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तो के प्रति पूर्ण जानकारी एव निष्ठा रखते हो। वेतन श्रृखला ४५००-७३०० मे प्रारम्भिक वेतन रु० ६९८५) देय होगा। आवेदन पूर्ण विवरण सहित प्रो० दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य, निदेशक, दायनन्द शोधपीठ दयानन्द महाविद्यालय अजमेर के नाम शीघ्र प्रस्तुत करे।

न संस्कृत मृत है न हम मृत हैं

एकलव्य संस्कृत माला (भाग १-२)

४५०० सरल वाक्यो तथा ६०० धातुओ के कोष की सहायता से बहुत कम समय मे सस्कृत सीखन की अनुपम तथा चमत्कारी पुस्तके। सस्कृत प्रेमियो तथा विद्यार्थिया दोना को उपयोगी। अन्य सरल पुस्तको के लिये भी सम्पर्क कर।

मूल्य--भाग १-२० रु। भाग २-४० रु. (दीपावली तक ३२)

वैदिक सगम
४१, दादर डिपार्टमेंट स्टोर्स
एम सी जावल माग
दादर, बम्बई ४००२

अन्य प्राप्ति स्थान
गोविन्दराम हासानन्द
४४०७, नई सडक
दिल्ली-६

पुस्तक समीक्षा

वेद भक्तों तथा काव्यानुरागियों के लिए अनुपम प्रसाद

श्रुति पर्णा

वेद मन्त्रों का काव्यानुवाद

लेखक—डा० विष्णुदत्त राकेश

"इन्द्र मित्र वरुणमग्निमाहुरथो दिव्य मातरिश्वानमाहु
तत्व के स्रष्टा मनीषी एक सद बहुधा बताते,
मातरिश्वा अग्नि यम हो वरुण या ऋत का नियम हो,
इस प्रकार ७८ वेद मन्त्रो का हिन्दी काव्यान्तरण

बढिया कागज, सुन्दर छपाई आकर्षक जिल्द गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के सस्कृत विभागाध्यक्ष महाकवि डा विष्णुदत्त राकेश द्वारा चारो वेदो के चुने हुए मन्त्रो का काव्यात्मक अनुवाद राष्ट्रभाषा मे वेदो को लोकप्रिय बनाने का प्रथम प्रयास है।

प्रकाशक —

श्री स्वामी श्रद्धानन्द अनुसधान प्रकाशन केन्द्र

गुरुकुल कागडी हरिद्वार (उ० प्र०)

(२)

योग दर्शनम्

(सरल हिन्दी भाषा मे सूत्रार्थ तथा भावार्थ)

लेखक श्री ज्ञानेश्वरार्य एम ए दर्शनाचार्य

ईश्वर प्राप्ति का सम्पूर्ण विधिविधान

प्रकाशक विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास

मुख्य कार्यालय ६६ ई० कमला नगर दिल्ली ११०००७

मूल्य ३) रुपये

न्याय दर्शन की पन्चावयव से ईश्वर का खण्डन तथा मण्डन

लेखक ज्ञानेश्वरार्य एम ए दर्शनाचार्य,

दर्शन योग महाविद्यालय

आर्य वन विकास रोजड पो सागपुर,

जिला—साबर मोठा (गुजरात ३८३३०७)

वेद जयन्ती सप्ताह पर ६ कुण्डी महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे वेद जयन्ती सप्ताह (श्रावणी उपाकर्म से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक) दिनाक १३ से २१ अगस्त ६२ तक बडे हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर डा० कर्णदेव शास्त्री ने यज्ञ के ब्रह्मा तथा रात्रि को वेद कथा का दायित्व बडी कुशलता से सम्पन्न किया। प्रात एव रात्रि को स्वामी स्वरूपानन्द जी के मधुर भजन होते रहे। रात्रि को सगीताचार्य श्री विजय भूषण आर्य का सगीत आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा।

१६ अगस्त रविवार को हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस के भव्य समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तथा स्वतन्त्रता सेनानी डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री और श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक ने निजाम हैदराबाद की जेल मे बिताये हुए दिनो का रोमाचकारी वृत्तात सुनाया।

२१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर ६ कुण्डी महायज्ञ हुआ। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उप-कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार ने यजमानो को आशीर्वाद दिया। ६ कुण्डी यज्ञो की शोभा देखते ही बनती थी। इस अवसर पर दिल्ली एव नई दिल्ली के सीनियर सैकेण्डरी स्कूलो एव गुरुकुलो के कक्षा ६ से १२ तक के छात्र-छात्राओ ने भाषण प्रतियोगिताओ में भाग लिया।

विश्वनाथ प्रतापसिंह, करुणानिधि ने राजीव की हत्या के लिए लिट्टे को भड़काया

नई दिल्ली ३१ अगस्त। (भाषा)

तमिलनाडु कांग्रेस (इ) समिति ने आरोप लगाया है कि श्रीलका के राष्ट्रपति रणसिंह प्रेमदास, पूर्व प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, द्रमुक अध्यक्ष एम करुणानिधि तथा लिटटे के सर्वोच्च नेता वेल्लुपिल्लई प्रभाकरण के लिए राजीव गाधी समान दुश्मन थे और इसलिए इन लोगो ने उनकी हत्या के लिए लिटटे को भडकाया तथा उसकी मदद की।

जैन आयोग के समक्ष आज दायर शपथ पत्र मे तमिलनाडु कांग्रेस (इ) अध्यक्ष के० राममूर्ति सासद ने आयोग मे आग्रह किया कि इन पक्षो की जाच उन लोगो का पर्दाफाश करें, जो लोग गत साल २१ मई को पेरूम्बुदूर मे श्री राजीवगाधी की हत्या की साजिश मे लगे षडयन्त्रकारियो के पीछे थे।

श्रीराममूर्ति ने अनेक उदाहरण देकर कहा कि श्री गाधी की जान को न सिर्फ लिट्टे बल्कि अल्फा और पजाब तथा कश्मीर के उग्रवादियो से भी खतरा था।

भूल सुधार

अगस्त १६६२ के अक मे पृष्ठ ५ पर 'हैलो—हे आर्य" नाम से एक लेख छपा है जिसके लेखक का नाम भूल से स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल छप गया है। इस लेख के लेखक स्वामी निगमानन्द जी हैं कृपया शुद्ध करके पढ़ें।

असुविधा के लिये खेद है। —सम्पादक

आर्यसमाज गोविन्दपुरी में वेदप्रचार सप्ताह

आर्य समाज गोविन्दपुरी नई दिल्ली मे वेद प्रचार सप्ताह ३१ ८ ६२ से ६ ६ ६२ तक बडे ही हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विशाल यज्ञ का आयोजन ३१ अगस्त से ५ सितम्बर तक प्रात ६ बजे से ८ बजे तक प० श्याम नारायण मिश्र के ब्रह्मत्व मे किया गया है। प्रति दिन रात्रि ८ बजे से १० बजे तक भजन तथा प्रवचन होगे। ६ अगस्त ६२ का विशेष कार्यक्रम सम्पन्न होगा। इसी दिन यज्ञकी पूर्णाहुति भीहोगी। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा नेता पधार रहे है अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाये। कार्यक्रम के अन्त मे ऋषि लगर का आयोजन किया गया है।

पास्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९२ सावदेशिक साप्ताहिक (६-९-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U 93Post in N D P S O on 3, 4-9-1992

श्रावणी तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक सम्पन्न

—आय ममाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली म वेद प्रचार सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पव २१ अगम्त से २३ अगस्त तक समारोह पूवक मनाया गया। समारोह के अन्तगत प्रतिदिन श्री ओमवीर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य कार्यक्रम २३ अगस्त को मम्पन्न हुआ। इसीदिन यज्ञ की पूर्णाहुति भी सम्पन्न हुई। इस अवसर पर शकरपुर क्षेत्र की समस्त आर्य समाजा के आधकारीगण तथा अनेको गणमान्य व्यक्तयो सहित सकडा श्रोताओ न उपस्थित होकर विद्वानो के प्रवचनो को सुनकर लाभ उठाया। आय जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री गुलाबसिह राघव ने अपने सुमधुर भजना से श्रोताओ को भावविभोर कर दिया। आयोजन को सफल बनाने म श्री मिश्रीलाल गुप्ता प्रधान तथा श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य मन्त्री का विशेष योगदान रहा।

—आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल म १३ अगम्त से २१ अगस्त ९२ तक वद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। कायक्रम के अन्तगत प्रतिदिन प्रात ७ बजे से बृहद यजुर्वेदीय यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा रात्रि म भजनोपदेश तथा वद प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर सवर्ण-हरिजन सामूहिक यज्ञोपवीत श्रावणी उपाकर्म एव हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस भी मनाया गया। २१ अगम्त को वृहद यज्ञ की पूर्णाहुति तथा योगिराज श्री कृष्ण जन्मोत्सव हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण मे मनाया गया।

—आर्य समाज इन्दुर निजामाबाद आ० प्र० मे ७ से १३ अगस्त तक श्रावणी तथा वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात तथा साय बृहदयज्ञ तथा भजन एव प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर प्रो० डा० भवानीलाल भारतीय, सुश्री एन [illegible]ता, प्रणव कुमार तथा श्री टी०बालकिशन आर्य आदि विद्वानो ने भजन तथा प्रवचनसे श्रोताओ को लाभान्वित किया। अन्तिम दिन सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्र रामचन्द्रराव वन्देमातरम तथा आचार्य वेदव्रत मीमांसक जी ने सभा को सम्बोधित किया।

—आर्य समाज सुल्तानपुर जनपद रायसेन म० प्र० मे श्रावणी पर्व से जन्माष्टमी तक वेदसप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमे प्रति दिन यज्ञ उपदेश भजन, वेद पारायण का कार्यक्रम दि० १३ से २१ अगस्त तक निरन्तर चलता रहा। आयोजन मे वेद प्रचार पर भारी जन समूह ने भाग लिया और समाज की भूरि-भूरि प्रशसा की।

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महाविद्यालय का शुभारम्भ

इन्टर नेशनल आर्यन फाउण्डेशन बम्बई द्वारा उनके प्रधान श्री देवेन्द्रकुमार ट्रस्ट के अथक प्रयत्न स्वरूप १ जून १९९२ से पूना शहर मे "अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महाविद्यालय का प्रारम्भ किया गया है। जिसमे प्रारम्भ मे देश विदेश की भाषाओ म १०विद्वान तैयार करने की योजना है। महाविद्यालय के आचार्य डा० धर्मवीर जी विद्यावारिधि होगे।

विद्यार्थियो के लिए पष्ठ वर्षीय पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। जिसके अन्तर्गत आर्य ग्रन्थो का अध्यापन, विदशी भाषा का ज्ञान, वैदिक सिद्धान्तो पर विश्लेषणात्मक अध्ययन, दर्शनो का समीक्षात्मक अध्ययन शामिल है।

प्रवेशार्थी का कक्षा १०, मध्यमा, शास्त्री या बी ए होना आवश्यक है। नियमावली के लिय लिखें—

—श्री [illegible] कपूर
अध्यक्ष—इन्टर नेशनल आर्यन फाउण्डेशन
१०२ [illegible], [illegible] रोड,
बान्दरा पश्चिम, बम्बई ४०००५०

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक वृहद अधिवेशन

अन्तरग सभा दिनाक ९-८-९२ के निश्चयानुसार मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक वृहदअधिवेशन दिनाक २६ व २७ सितम्बर १९९२ शनिवार एव रविवार को आर्य समाज मन्दिर गुना मे सम्पन्न होने का निश्चय हुआ है। दिनाक २६-९-९२ शनिवार सायकाल ४ बजे निर्वाचन सम्पन्न होगा। अत आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार निश्चित समय तथा स्थान पर अपनी आर्य समाज के प्रतिनिधि के रूप मे पधारे।

निर्वाचन स्थल
आर्य समाज मन्दिर (गुना म प्र)

शोक समाचार

श्री रामकृष्ण आर्य दिवंगत

काशी मे आर्य ममाज आन्दोलन के स्तम्भ, वयोवृद्ध आर्यसमाजी कायकर्ता एव प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रामकृष्ण आर्य का दिनाक १७-८-९२ को प्रात १० बजे उनके लल्लापुरा स्थित आवास पर निधन हो गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो से अनुप्राणित होकर रामकृष्ण जी आर्य ने एक उत्साही युवक के रूप में सन १९३५ई० में आर्य नवयुवक सभा की स्थापना तथा अपनी प्रौढावस्था में सन १९४१ मे आर्य समाज की स्थापना लल्लापुरा जैसे सवेदनशील क्षेत्र मे की थी। आय समाज लल्लापुरा का भव्य भवन निर्माण कराने मे उनका योगदान विशेष उल्लेखनीय है। आर्य समाज के अतिरिक्त आप कई दशक तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यकर्ता के रूप मे क्रियाशील रहे। जाति-पाति के भेदभाव के विरुद्ध आपने आजीवन सघर्ष किया तथा अस्पृश्यता निवारण तथा शुद्धि आन्दोलन को गतिशील बनाने मे आपका योगदान समाज मे विशेष रूप से स्मरणीय है।

श्री रामकृष्ण आर्य का अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीत्यानुसार साय ४ बजे मणिकर्णिकाघाट पर सम्पन्न हुआ, जिसमे सैकडो लोगो ने भाग लिया।

साय आर्य समाज लल्लापुरा मे आर्यजनो की वृहद शोकसभा का आयोजन श्री जगत नारायण मौर्य की अध्यक्षता मे हुआ, जिसमे नगर के अनेको गण-मान्य व्यक्तियो ने श्री रामकृष्ण आर्य के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए अनेक सस्मरण सुनाये तथा श्रद्धाजलि अर्पित की।

—श्री राम शास्त्री, मन्त्री

वैदिक व्याख्यान

डा० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति की ओर से डा० प्रहलाद कुमार की ४७ वी जयन्ती पर ११ सितम्बर को तीन बजे कक्ष सख्या २२ कला सकाय दिल्ली वि० वि मे वदिक व्याख्यान का आयोजन किया गया है।

डा० श्रीमती शशिप्रभा गोयल इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करेगी। डा० [illegible] जम्मू वक्ता तथा डा० वाचस्पति उपाध्याय मुख्य अतिथि होगे।

—आर्य समाज मन्दिर, अल्मोडा मे श्रावणी पूर्णिमा के अवसर पर श्रावणी उपाकर्म विधि पूवक सम्पन्न हुआ। जिसमें वृहद्यज्ञ आयोजित किया गया डा० जयदत्तशास्त्री ने श्रावणी के इस पर्व पर प्रकाश डाला तथा वेदो का पठन-पाठन करते रहने पर बल दिया।

—मन्त्री, आर्यसमाज, अल्मोडा उ० प्र०

सार्वदेशिक प्रस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● जब तक तुम लोग जीते रहो, तब तक सदा सत्य कर्म मे ही पुरुषार्थ करते रहो, किन्तु इसमें आलस्य कभी मत करो, ईश्वर का यह उपदेश सब मनुष्यो के लिए है।

● वीर्य और रज को अमूल्य समझें। जो कोई इस अमूल्य पदार्थ को पर स्त्री, वेश्या या दुष्ट पुरुषो के सग मे खोते है व महामूर्ख होते है, क्योकि किसान व माली मूर्ख होकर भी अपने खेत व वाटिका के बिना अन्यत्र बीज नही बोते।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ३१०४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अङ्क ३१]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१   आश्विन कृ० १   स० २०४९   १३ सितम्बर १९..

जम्मू के निकटवर्ती क्षेत्रों में उग्रवाद

जम्मू को बचाओ

हिन्दू युवकों का सैनिकीकरण करो

नई दिल्ली ६ सितम्बर।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के तत्त्वावधान मे आयोजित हिन्दू राजनैतिक सम्मेलन मे मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने "हिन्दुओ के सैनिकीकरण" आन्दोलन का समर्थन करते हुए कहा कि पिछले इतिहास को देखते हुए आज की वर्तमान राजनैतिक तथा समाजिक परिस्थितियो से देश को उभारने का यही एकमात्र रास्ता है स्वामी जी ने इस सन्दर्भ में डा० बी० एम० मुन्जे द्वारा स्थापित भोसले सैनिक विद्यालय की सराहना की।

स्वामी जी ने कहा कि हिन्दू समाज जब तक पाखण्डवाद, रूढिवाद और कुरीतियो को पूर्णतया त्याग नही देता तब तक राजनीति का हिन्दूकरण भी फलदायक नही होगा। इसीलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी आर्य समाज की स्थापना के पश्चात् सर्वप्रथम हिन्दू समाज मे व्याप्त कुरीतियो को दूर करने के लिए प्रयत्न किए।

स्वामी जी ने जम्मू-काश्मीर के तत्कालीन मुख्यमन्त्री शेख अब्दुल्ला द्वारा सत्यार्थ प्रकाश और गीता पर लगाये गये प्रतिबन्ध की चर्चा करते हुए बताया कि जब यह प्रतिबन्ध लगाया गया था उसी समय मैं स्व० प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से मिला था और उनको लगाये गये प्रतिबन्ध से अवगत कराते हुए यह बताया था कि आर्य समाज इसके विरोध मे ऊधमपुर मे सत्याग्रह करने जा रहा है। इस पर प्रधानमन्त्री ने कहा था कि आपको कोई गिरफ्तार नही करेगा। जब हमारा यह काफिला ऊधमपुर के नीचे वाले चौक पर पहुचा तो पुलिस ने वहा रोक दिया और कहा कि श्रीनगर से एक जीप आ रही है तभी आपको जाने दिया जायेगा। कुछ समय के पश्चात् जब वह जीप आई तो उसमे बैठे पुलिस अधिकारियो ने एक पत्र मुझे दिया जिसमे लिखा था कि शेख सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश तथा गीता से प्रतिबन्ध हटा लिया है अब चाहे आप सत्याग्रह करें या न करें। इस घटना से साफ जाहिर है कि जब तक बडे राजनीतिक नेताओ का इशारा नहीं होता तब तक सफलता नही मिलती है। स्वामी जी ने अपने भाषण को आगे जारी रखते हुए कहा कि वी०पी० सिह सरकार की मूर्खतापूर्ण नीतियो के कारण कश्मीर हिन्दुओ से खाली हो गया और अब कश्मीरी उग्रवादी जम्मू मे भी अपनी आतकवादी गतिविधिया बढाने लगे हैं। उन्होने हिन्दू महासभा के नेताओ का आह्वान करते हुए कहा कि जम्मू की रक्षा के लिए वे एक शिष्ट-मण्डल प्रधानमन्त्री से भेट हेतु तैयार करें, आज यदि जम्मू की रक्षा के प्रयत्न न किए गए तो उसका भी कश्मीर वाला ही हाल होगा।

स्वामी जी ने कहा कि आज इस राष्ट्र की रक्षा के लिए एक ऐसे प्रचण्ड हिन्दू सगठन की आवश्यकता है जिसमे सब प्रकार के राष्ट्रवादी लोग इकट्ठे बैठकर विचार करे तथा तदनुसार प्रयत्नशील होवे।

धरती पर सबसे ऊंचे स्थान—

मनीमहेश में गायत्री महायज्ञ

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी ने सूचित किया है कि दयानन्द मठ चम्बा के द्वारा धरती पर सबसे ऊचे स्थान मनि महेश, चम्बा तीर्थ ऊचाई १३००० फीट पर प्रथम बार यज्ञ तथा वेद प्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। हमारी प्रचार मण्डली पूरे जोर-शोर से वहा प्रचार कार्य कर रही है। वहा पर सैकडो भेडों की बलि भी दी जाती है, हमारा मुख्य उद्देश्य धर्म स्थान पर बलि प्रथा को रोकने का है।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

१४ सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनायें ?

आजादी की प्राप्ति के पश्चात अभी राष्ट्रभाषा की समस्या बनी हुई है— जो अभी तक राजनेताओ के मस्तिष्को को परिपक्व नही कर सकी हैं कि अपने देश के लिये एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है।

सर्वप्रथम हमे यह स्मरण रखना चाहिये कि सब इस बात को स्वीकार करते हैं कि सामान्य कार्यों के लिये एक राजभाषा होनी चाहिये न कि अकेली "राष्ट्रभाषा"। भारत की सभी १४ भाषाये राष्ट्रभाषाये है और इनमे से किसी एक के लिये प्रधानता का दावा दूसरी के द्वारा स्वीकार न किया जायेगा।

इनमे से प्रत्येक की अपने क्षेत्र मे असदिग्ध प्रधानता है। अत यह प्रश्न है ! कि १४ भाषाओ मे से राजभाषा बनने की सर्वश्रेष्ठ योग्यता किसकी है। सम्विधान सभा ने पर्याप्त विचार के बाद हिन्दी के पक्ष मे निर्णय लिया वस्तुत अन्य कोई विकल्प भी न था।

एक सामान्य भाषा का क्या कार्य होगा। जो समस्त भारत मे बोली व समझी जाने वाली भाषा होगी, यह स्पष्ट है कि अग्रेजी या अन्य कोई भाषा इसका स्थान नही ले सकेगी। क्योकि उन लोगो की सख्या बहुत कम है दक्षिण मे भी हिन्दी का अध्ययन सुगम सिद्ध हुआ है अत वहा भी कोई विवाद नही था केवल क्षेत्रीय भाषा को न छेड़ा जाय।

न्याय और कानून

दूसरा उद्देश्य भारत के लिये एक ऐसी राजभाषा की व्यवस्था करना है जिसमे विधि के प्रयोगार्थ-शब्दो का चयन किया जा सके। यह आवश्यक कार्य है जो आज तक लगभग पूरा किया जा चुका है। इसी प्रकार उसका अनुवाद दूसरी भाषाओ मे किया जा सके। राष्ट्रभाषा के साथ काम काज क्षेत्रीय भाषा या प्रादेशिक भाषा मे किया जा सकेगा। उच्चतम न्यायालय में कार्य केवल राष्ट्रभाषा हिन्दी मे सम्पन्न हो। इसके लिये समय की अवधि होनी चाहिये। १९ वी शताब्दी के अन्त तक उच्च न्यायालयो में अग्रेज बैरिस्टर कार्य करते थे अब वहा भी अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग होने लगा है। अन्य क्षेत्रो मे विज्ञान सुरक्षा सैनिक सेवा मे भी अब हिन्दी मे कार्य होने लगा है केवलमात्र बढावा देकर प्रमुखता हिन्दी को देनी है। वस्तुत कार्य प्रणाली मे देखा जाय तो हिन्दी सभी क्षेत्रो मे स्थान लेती जा रही है।

समस्त भारत के विश्वविद्यालयो मे भी कुछ प्रान्तो को छोड़कर हिन्दी का स्थान प्रमुख है। जापानादि देशो की भाति यदि भारत मे भी उच्च शिक्षा तकनीकी उद्योग मे हिन्दी भाषा को प्रमुखता दी होती तो आज सभी क्षेत्रो मे हिन्दी राष्ट्रभाषा बन चुकी होती।

विश्वविद्यालय स्तर पर भारतीय भाषाओ के माध्यम से शिक्षा का प्रचलन हो जाय तो विज्ञान-पक्ष भी हिन्दी का प्रबल हो सकता है।

जहा तक केन्द्रीय सरकार के कार्य और विभिन्न देशो के साथ पत्राचार का प्रश्न है हिन्दी को ही निश्चित रूप से सामान्य भाषा का स्थान देना होगा जैसा कि सभी देश की सरकारे करती है।

प्रादेशीय भाषाये राज्यो की शासन कार्य की भाषायें रहनी चाहिये तथा विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषा के साथ हिन्दी समस्त विश्वविद्यालयो मे रखी जाय।

व्यवहार पक्ष मे हमारा कार्य राष्ट्रभाषा के रूप मे करने की आवश्यकता है जहा पर हमारी मानसिकता इतनी नीचे स्तर तक जा चुकी है। पत्राचार निमन्त्रण-पत्र दूकानो मकानो आफिसो मे अपने पट्ट पता आदि अपनी भाषा मे न करके अग्रेजी मे ही करते हैं। इस गिरी हुई मानसिकता से व्यवहार पक्ष मे हमे जागरूक होना है।

१४ सितम्बर हमे स्मरण कराता है कि हम अपनी राष्ट्रीयता का स्वरूप कहा तक अपना चुके है।

आज भी उत्तर प्रदेश का आर्यसमाज पं० इन्द्रराज जी के साथ

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ का निर्वाचन हुआ जिसमे जिले के समस्त आर्यो ने श्री प्रि० माधवसिंह जी का समर्थन कर उन्हे प्रधान तथा श्री ब्रह्मसिंह जी को मन्त्री घोषित किया। ताजे समाचारो ने प्रकट किया है कि मेरठ के साथ मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून, बिजनौर, मुरादाबाद, बुलन्दशहर, अलीगढ का समूचा आर्य एकजुट होकर प० इन्द्रराज जी के साथ हैं।

वह एक वर्ष से कमर की हड्डी के टूटने से बिस्तर पर पड़े है यही दशा श्री मनमोहन तिवारी की है वह भी ६ मास से ऊपर से रूग्ण है इस पर भी आर्यों का सगठन उ०प्र० मे उन्हें अपना नेता मानता है और उनके नेतृत्व मे विश्वास रखता हैं। सगठन की एक झाकी देखिए

मेरठ जिला आर्य समाज का विधिवत चुनाव वर्ष (१९९२-९३) के लिए शहर आर्य समाज बुढाना द्वार पर सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता राजकुमार (टटीरी) ने की सभा सचालन जिला उपमन्त्री ब्रह्मसिंह (छपरौली) ने किया।

इस चुनाव म जिले की ६० मे से ४८ आर्य समाजो ने भाग लिया जिनमे प्रतिनिधियो की सख्या १७५ परन्तु उपस्थिति १४९ प्रतिनिधियो की रही, जिसमे मेरठ की स्त्री व पुरुष समाज लालकुर्ती, साकेत, सूरज कु ड, बुढाना द्वार, जवाहर नगर, दयानन्द पथ (सदर), थापरनगर सदर व स्त्री समाज मवाना आदि जिले की ४९ आर्य समाजो ने भाग लिया। शहर आर्य समाज का पूरा हाल भीड से खचाखच २०० से ऊपर की सख्या मे भरा हुआ था, जिनमे ४० स्त्री प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

इस अवसर पर प्रारम्भ मे मन्त्री आर्य समाज साकेत सत्य प्रकाश गोयल ने दो प्रस्ताव पढ़े। २३ अगस्त को साकेत आर्य समाज मे हुआ तथाकथित चुनाव अनियमित व गैरकानूनी था, जिसमे वास्तविक प्रतिनिधि न होकर मात्र राजनीतिज्ञो की भीड एकत्रित की गई थी और सोची समझी साजिश के अनुकूल जिला मन्त्री श्योदान सिंह स्वयम्भू नेता पुन जिला मन्त्री चुन लिए गये। दूसरे प्रस्ताव मे कहा गया कि आज की साधारण सभा घोषित करती है कि जिले की वास्तविक उपसभा यही है जिसमे आज ४९ आर्य समाजो का प्रतिनिधित्व है।

इन दोनो प्रस्तावो का अनुमोदन शहर आर्य समाज मन्त्री ओम प्रकाश जौहरी ने किया। जौहरी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि पूर्व जिला मन्त्री व वर्तमान मे तथाकथित जिला मन्त्री श्योदानसिंह द्वारा दिया गया हिसाब भी बिना हस्ताक्षर गड़बडी से भरा था। उन्होने कहा कि श्योदान का यह आरोप निराधार है कि जिला अध्यक्ष इन्द्रराज ने उन्हे कोई सहयोग नही दिया बल्कि उन्होने २३ अगस्त का चुनाव बिना अध्यक्ष की अनुमति के कराया।

'सुमेधा' सम्पादक स्वराज्य चन्द्र ने कहा कि वर्तमान मे आर्य समाज को बचाने के लिए सिद्धातो की रक्षा कर इसे राजनीति के पचड़े से बचाना है। हमे आर्य समाज के लिये निर्वाचन करना है न कि अमुक दल के लिए। उन्होंने कहा कि जब तक हम अपनी नीतियो व सिद्धातो पर नही चलेंगे तब तक आर्य समाज प्रगति नही कर पायेगा।

सभा मे पूर्व जिला अध्यक्ष माधव सिंह भी उपस्थित थे। जिला उपमन्त्री ब्रह्म सिंह ने कहा कि जिला मन्त्री श्योदान सिंह ने जिलाध्यक्ष इन्द्रराज से बिना पूछे ६ अगस्त की अतर ग सभा के आदेश का उलघन कर २३ अगस्त को साकेत मे राजनीतिक लोगो की भीड एकत्रित कर एक तरफा चुनाव कराकर स्वय पुन जिला मन्त्री बन बैठे जो अनियमित व गैर कानूनी था। अत: प्रस्ताव पारित हुआ कि तथा- कथित स्वय भू जिला मन्त्री श्योदान सिंह के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाये, जिसका सभी उपस्थित आर्य समाजियो ने एक स्वर मे समर्थन किया। शहर आर्य समाज मन्त्री ओमप्रकाश ने बताया कि खर्चे के लिए उन्हे १४,०००) दिया गया, जिसका अपव्यय किया गया। मार्च मे बैंक एफ.डी. (जमा योजना पूंजी) भी तोड़ी गयी जिसके लिये बैंक का प्रमाण पत्र भी सभा को दिखाया गया।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सांसद प्रो० रासा सिंह द्वारा भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की कड़ी निंदा

आर्य समाज से निष्कासित तथा सगठन विरोधी लोगो ने तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का असवैधानिक सगठन बनाकर अपनी कार्य कारिणी मे आर्य समाज के कुछ प्रमुख महानुभावो का नाम भी सम्मिलित कर लिया था। यह सूची जब सार्वदेशिक सभा को प्राप्त हुई तो सभा की ओर से ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों से उनकी सम्मति मागी गई थी।

इसी प्रसग मे लोकसभा के सदस्य अजमेर प्रो० रासासिंह का अविकल पत्र निम्न प्रकार है जो उन्होने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को भेजा है—

ओ३म

प्रो० रासा सिंह
ससद सदस्य
(लोक सभा)

६२ नार्थ एवेन्यू
नई दिल्ली
दि० २७ ८ १९९२ ई०

पूज्य स्वामी जी

सादर नमस्त।

आप द्वारा प्रेषित दि० १८-८ ९२ ई० का पत्र प्राप्त हुआ। मुझे इस पत्र द्वारा ही यह जानकारी प्राप्त कर अत्यन्त आश्चय हुआ कि तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी की सूची म विशष आमन्त्रित सदस्यो मे मेरा नाम भी अ कित किया गया है।

पूज्य स्वामी जी मैं तो तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की किसी भी बैठक या अधिवेशन अथवा सम्मेलन म कभी भी सम्मिलित नही हुआ हू। मुझे इस सभा मे विशेष निमन्त्रित सदस्य बनाने की भी कोई सूचना नही है तथा न ही इस सम्बन्ध मे मेरे से कभी पूछा गया है और न ही कोई जानकारी दी गई है। फिर इस प्रकार की सभाओ या किसी भी प्रकार का कोई सदस्य बनने का कोई प्रश्न ही नही उठता। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ही आर्यसमाज का शिरोमणि सगठन है और हम सबका कर्तव्य है कि उसी शिरोमणि सगठन को सर्वोपरि मानकर आर्य समाज के अनुशासित सेवक के रूप में अपने दायित्व का निर्वाह करते रहें।

यह सर्वथा सत्य है कि मेरा नाम मेरी सहमति के बिना ही प्रकाशित किया गया है जिस पर मुझे घोर आपत्ति है। अनार्य विचारधारा के लोग ही इस प्रकार का अवैधानिक कार्य कर सकते हैं। आर्यों के सर्वोपरि सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में ही हमारा सदैव विश्वास था है, और रहेगा। भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के इस प्रकार के निराधार एव भ्रांतिपूर्ण प्रचार प्रसार तथा बिना स्वीकृति के नाम अ कित करने की मैं घोर निन्दा करता हू। मेरा ऐसे सगठन से कोई सम्बन्ध नही है। सादर।

भवदीय
रासा सिंह

मद्रास हाईकोर्ट का फैसला—

गायत्री मन्त्र और धर्म निरपेक्षता

मद्रास हाईकोर्ट के जज श्री जस्टिस डी० राजू ने इन्हीं दिनो एक फैसला दिया है, जिससे इन नाम निहाद धर्म निरपेक्षताओ की आखें खुलनी चाहिए और इन्हें यह पता चलना कि वह कौन सी मूर्खो की दुनिया मे रह रहे हैं। हुआ यह कि मद्रास की यूनाईटेड इन्डिया इन्श्योरेन्स क० ने दीपावली के अवसर पर पाच हजार कार्ड छपवाकर लोगों को भेजे। इस पर कम्पनी का २५ हजार रु० व्यय हुआ। कार्डों पर तमिल भाषा मे गायत्री मन्त्र छपा हुआ था। तमिल नाडु के द्रविड कडगम पार्टी के सदस्य ने मद्रास हाईकोर्ट मे प्रार्थना पत्र दिया कि इन्श्योरेन्स कम्पनी एक सरकारी सस्था है इसलिये इसको हक नही कि अपनी तरफ से लोगो को ऐसे कार्ड भेजे जिन पर गायत्री मन्त्र छपा हुआ है। यह सरकार की धर्म निरपेक्षता की नीति के खिलाफ वरजी है।

जज राजू ने इस प्रार्थना पत्र को यह कहकर रदद कर दिया कि गायत्री मन्त्र ऋग्वेद से लिया गया है और यह कहना सरासर गलत है कि यह मन्त्र किसी खास फिर्का या धर्म से सम्बन्धित है। सदैव से यह माना गया है कि वद किसी विशेष तबका के न होकर प्राणी मात्र के ग्रन्थ है। किसी खास धर्म या सम्प्रदाय या जाति के यह नही है। जज महोदय ने यह प्रश्न भी रद्द कर दिया कि यह मन्त्र केवल ब्राह्मणो की मलकियत है। यह दलील एकदम से बेबुनियाद है। रकार्ड पर ऐसी कोई चीज मौजूद नही है जो प्रमाणित कर सके कि यह मन्त्र किसी खास फिर्का तबका या किसी जाति का चीज है। ऐसे बेहूदा दावे की हर कदीमी ग्रन्थ तरदीद कर देगा। आगे चलकर मननीय जज ने यह फरमाया कि धर्मनिरपेक्षता का मतलब हरगिज एन्टी धर्म नही होता। इसका मतलब सिर्फ यह है कि सरकार अपने आपको किसी एक धर्म से सम्बन्धित न कर ले, अपितु सब धर्मों से एक ही तरह पेश आए।

क्या आशा की जा सकती है कि दिन रात जाहिलो की तरह धर्म निरपेक्षता की दुहाई देने वाले नाम निहाद बुद्धि जीवी जस्टिस राजू के निर्णय को समझने की कोशिश करेंगे कि धर्मनिरपेक्षता क्या है और इसका मतलब यह नही कि देश के ८७ प्रतिशत हिन्दुओं की भावनाओ तथा विचारो को त्रिवह करके चन्द वोटो की खातिर दूसरो की जूतिया चाटी जाए।

—के० नरेन्द्र

बरेली जंकशन से भारी मात्रा मे गोवंश की निकासी से गो भक्तों मे गहरा रोष

दिल्ली ३ सितम्बर।

विश्वस्त सूत्रो के अनुसार पिछले दो तीन महीनो से बरेली जकशन से प्रतिदिन भारी मात्रा मे गोवश रेलवे द्वारा राज्य से बाहर कलकत्ता आदि नगरो को भेजा जा रहा है। स समाचार से समूचे आर्य जगत और गोभक्त जनता म गहरा रोष फैल गया है। यद्यपि उ० प्र म गोवश की निकासी पर पहल से ही प्रतिबन्ध है और मुख्यमन्त्री श्री कल्याण सिंह ने भी गोरक्षा के प्रति अपनी सरकार की वचनबद्धता दोहराई है परन्तु गोवश की निकासी के वतमान घटनाक्रम को देखते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने रेल मन्त्री श्री जाफर शरीफ और मुख्य मन्त्री श्री कल्याण सिह से गोवश की इस निकासी को तुरन्त रोकने की माग की है।

स्वामी जी ने कहा कि इतनी बडी मात्रा मे गोवश की निकासी के पीछे बहुत बडा षडयन्त्र लगता है। उन्होने सरकार से माग की है कि दोषी रेलवे अधिकारियो और इस कार्य मे लिप्त सम्बद्ध व्यक्तियो के विरुद्ध कड़ी से कडी कार्यवाही की जाय। उन्होने चेतावनी दी कि अगर गोवश की निकासी पर तुरन्त रोक नहीं लगाई गई तो सरकार को आर्यसमाज और गोभक्त जनता के प्रबल विरोध का सामना करना पडेगा।

१४ सितम्बर पुण्य तिथि पर विशेष—

महर्षि दयानन्द के प्रेरणा स्रोत गुरु विरजानन्द

—विमल वधावन एडवोकेट

भारतीय सन्तान अपने युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचार शक्ति के प्रेरणा स्रोत गुरु विरजानन्द को कभी नही भुला सकती। भले ही गुरु विरजानन्द अधिक प्रसिद्धि मे न आए हो, भले ही उनकी मृत्यु का समाचार भारत के अबालवृद्ध, नर-नारियो तक न पहुचा हो परन्तु महर्षि दयानन्द जैसे शिष्य को पैदा करके वे सदैव के लिए अमर हो गए हैं।

महर्षि दयानन्द ने जहा गुरु विरजानन्द के समक्ष पढने की इच्छा रखी तो सबसे पहला प्रश्न था कि जो मनुष्य कृत ग्रन्थ तुम्हारे पास हैं उन्हे यमुना नदी मे बहा दो और उनके ज्ञान को भूल जाओ क्योकि वह भ्रमपूर्ण है। दयानन्द जी को इस अन्धे गुरु की बातें विचित्र लगी, उन्होने सोचा कि आज तक जितने विद्वान और आचार्यों से मै मिला हू किसी ने इस प्रकार की बात नही कही, सम्भव है मेरे मन की अभिलाषा 'पूर्ण सत्य की खोज' शायद यहा पूरी हो जाए। उस वक्त क्या पता था कि ये गुरु ही नही अपितु शिष्य भी उतना ही विचित्र निकलेगा।

गुरु विरजानन्द जी ने बाल अवस्था से ही अन्धे होते हुए भी अत्यन्त कुशलता से अपनी बुद्धि को विकसित किया और शायद भारतीय संस्कृति के इतिहास मे पहली बार किसी व्यक्ति ने आर्ष और अनार्ष ग्रन्थो का भेद करके अपने पढाए हुए शिष्यो की एक टीम तैयार की जिससे भोली-भाली जनता के समक्ष सत्य को उजागर किया जाए। उसी गुरु की शिक्षा को जनता मे फैलाते हुए ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने अपने अनुपम ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा वेद भाष्य इत्यादि अन्य अनेक छोटे-बडे ग्रन्थो की रचना की।

गुरु विरजानन्द जी ने धर्म-शास्त्रो के विशुद्ध रूप को उजागर करने के उद्देश्य से ही आर्ष और अनार्ष अर्थात ऋषि प्रणीत तथा मनुष्य प्रणीत ग्रन्थो को पृथक करने के लिए कुछ लक्षणो का प्रतिपादन किया।

प्रथम लक्षण उन्होने बताया कि ऋषियो द्वारा रचे ग्रन्थो का आरम्भ ओ३म् या अथ शब्द द्वारा होता है।

दूसरा—मनुष्य प्रणीत ग्रन्थो मे साम्प्रदायिक विद्वेष भरा रहता है जैसे पुराणो को ही देखे कोई पुराण किसी देवता के गीत गाता है कोई किसी के और यही नही एक पुराण मे दूसरे पुराणो के देवताओ की निन्दा भी कही गई है, जबकि ऋषियो द्वारा रचित ग्रन्थ इन सब दुराभावो से सर्वथा दूर है उनमे प्रत्येक स्थल पर सार्वभौमिकता दिखाई देती है प्राणि मात्र के उत्थान का सन्देश प्राप्त होता है उनका मानना था कि जितना लाभ सत्य ग्रन्थो से समाज को होता है उससे अधिक हानि असत्य ग्रन्थो के प्रचलन से होती है।

गुरु विरजानन्द जी को यह पूर्ण विश्वास हो गया था कि भारतवर्ष के पतन का मुख्य कारण यही मनुष्य रचित ग्रन्थ हैं जिन्होने धार्मिक और सामाजिक जीवन मे भिन्नता और बुराईया पैदा की है इसी उद्देश्य को लेकर वे सदैव जनमत परिवर्तन करने के लिए उत्सुक रहते थे। गुरु जी की प्रबल इच्छा थी कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक सार्वभौम सभा की स्थापना की जाए जो कि संस्कृत शिक्षण शास्त्र मर्यादा आर्यों के वर्ण और आश्रम की दुर्दशा मे पूर्णतया सुधार लाने का प्रयत्न करे। इस आशय का प्रस्ताव उन्होने तत्कालीन जयपुर नरेश श्री रामसिंह जी के समक्ष भी रखा था परन्तु पौराणिक पण्डितो ने इस प्रस्ताव का यह कह कर विरोध किया कि इससे धर्म की हानि होगी। स्पष्ट है कि ऐसा उन्होने इसीलिए किया क्योकि इस प्रकार की सभा से यदि बुद्धिवाद का उदय हो गया तो इन अल्प बुद्धि पौराणिक पण्डितो को कौन पूछेगा। गुरुजी के मन को इससे बहुत ठेस लगी।

गुरु विरजानन्द ने अपने जीवन मे अनेको शास्त्रार्थ भी किए और कई प्रान्तो राज्यो के राजा गुरु जी के सम्पर्क मे थे और उनमे श्रद्धा रखते थे। अलवर नरेश श्री विनयसिंह ने तो गुरु जी को तीन-चार वर्ष लगातार अलवर मे ही रखा और नियमित रूप से उनसे संस्कृत तथा आर्ष ग्रन्थो का अध्ययन करते थे। परन्तु गुरु जी का मन इस राजसी ठाठ बाट मे कदापि नही लगा और राजा विनयसिंह के एक दिन गैरहाजिर होने पर उन्होने इसी बात को बहाना बनाया और अलवर छोडने की तैयारी कर ली।

गुरु विरजानन्द जी की पठन-पाठन प्रणाली भी बिल्कुल अनौपचारिक तरीके से तथा पूर्ण समानता के आधार पर चलती थी, उन्होने अपने आश्रम मे किसी प्रकार के कक्षा विभाग या पढने का समय निश्चित नही कर रखा था, जिसकी जब इच्छा हो गुरु जी से पढने बैठ जाता था। गुरु जी पढते वक्त अपने आश्रम का दरवाजा सदैव बन्द रखते थे और केवल पढने के उद्देश्य से ही किसी को अन्दर आने की अनुमति देते थे। वे विद्यार्थियो के साथ उन्ही के समान आसन पर बैठ कर उन्हे पढाते थे। विद्यार्थियो के आग्रह पर भी विशेष गद्दी पर नही बैठते थे। वे प्राय इसी मे गद्दी को गधी कहा करते थे। गुरु जी लोभ लालच मान सम्मान से सदैव दूर रहे। उन्होने कभी किसी भी मिलने वाले राजा या अन्य बडे व्यक्तियो से कोई भेट स्वीकार नहीं की।

उन्होने व्याकरण पद्धति मे सुधार लाने की दृष्टि से "शब्द बोध" नामक ग्रन्थ की रचना की, वे किसी भी प्रकार से सिद्धान्त, भाषा या उच्चारण की त्रुटियो को सहन नही करते थे।

गुरु विरजानन्द के जीवन दर्शन से यह स्पष्ट होता है कि ऋषि दयानन्द ने स्वय तथा आर्य समाज की स्थापना के माध्यम से शास्त्रार्थ पद्धति के द्वारा सत-असत्य ग्रन्थो के अन्तर्युद्धको लडा, लोगो के धार्मिक और सामाजिक उत्थान के प्रयत्न किए। गुरुकुल पद्धति के द्वारा शिक्षा मे समानता का प्रचार किया इन सब विचारो के प्रेरणा स्रोत गुरुवर विरजानन्द जी ही थे, प्रकाण्ड पण्डित गुरु विरजानन्द की मृत्यु का समाचार सुनते ही वो दयानन्द जो सगे सम्बन्धियो धन-दौलत विवाह आदि के बन्धन से भी कभी विचलित न हुआ था, इस समाचार पर मुरझा गया और उनके मुख से यह शब्द निकले "आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।

हिन्दी गीत

भारत जननी एक हृदय हो,
एक राष्ट्र भाषा हिन्दी मे।
कोटि-कोटि जनता की जय हो॥
भारत जननी

स्नेह-सिक्त मानस की बाणी,
गूजे गिरा हो कल्याणी।
चिर-उदार भारत संस्कृति
सदा अभय हो, सदा अजय हो।
भारत जननी···

मिटे विषमता सर से समता,
रहे मूल मे मीठी ममता।
तमस कालिमा को विदीर्ण कर,
जन जन का पथ ज्योतिर्मय हो।
भारत जननी

जाति धर्म भाषा विभिन्न स्वर,
एक राग हिन्दी मे सजकर।
झकृत करे हृदय तन्त्री को,
स्नेह भाव प्राणो मे लय हो।
भारत जननी···

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के सौजन्य से

जब सुभाष ने हिन्दी प्रचार का नारा दिया

महात्मा गांधी के सभापतित्व मे २९ दिसम्बर १९२८ को कलकत्ता मे राष्ट्रभाषा सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था। श्री सुभाषचन्द्र बोस स्वागत-समिति के अध्यक्ष थे। हिन्दी मे दिए गए उस भाषण को अक्षरशः रिपोर्ट यहा प्रस्तुत है।

हिन्दी प्रेमियो,

बड़ी खुशी के साथ नगर मे हम लोग आपका स्वागत करते हैं। जो सज्जन कलकत्ता से वाकिफ हैं उनको यह बतलाने की जरूरत नहीं कि कलकत्ता मे पाच लाख हिंदी-भाषा-भाषी रहते हैं। शायद हिन्दुस्तान के किसी भी प्रान्त मे—जो प्रान्त हिन्दी वालों के घर है, उनमे भी कही इतने हिन्दुस्तानी जबान बोलने वाले नहीं पाये जाते। साहित्य की दृष्टि से भी कलकत्ता का स्थान हिन्दी के इतिहास मे बहुत ऊचा है। मैं हिन्दी भाषा का पण्डित नहीं हू। बड़े खेद के साथ यह बात मुझे स्वीकार करनी पड़ेगी कि मैं शुद्ध हिन्दी बोल भी नही सकता। इसलिए मुझ से आप उम्मीद नहीं कर सकते कि मैं हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक इतिहास के विषय मे कुछ कहू। अपने मित्रो से मैंने सुना है कि आजकल के हिन्दी गद्य का जन्म कलकत्ता मे ही हुआ था। लल्लूजीलाल ने अपना 'प्रेमसागर' इसी नगर मे बैठकर बनाया और सदल मिश्र ने 'चन्द्रावली' की रचना यहीं पर की। और ये ही दोनो सज्जन हिन्दी गद्य के आचार्य माने जाते हैं। हिन्दी का सबसे पहला प्रेस कलकत्ता मे ही बना और सबसे पहला अखबार 'निहार बन्धु' यहीं से निकला। इसलिए हिन्दी सम्पादन कला के इतिहास मे कलकत्ता का स्थान बहुत ऊचा है। सबसे पहले कलकत्ता विश्वविद्यालय ने हिन्दी को एम० ए० मे स्थान दिया। आजकल भी हिन्दी के लिए जो काम कलकत्ता मे हो रहा है, वह महत्वपूर्ण है। इसलिए जिनकी मातृ भाषा हिन्दी है, कलकत्ता उनके लिए घर जैसा ही है। कम से कम वे तो हमारी स्वागत की त्रुटियों या अभाव के लिए हमे क्षमा कर ही देंगे।

सबसे पहले मैं एक गलतफहमी दूर कर देना चाहता हू। कितने ही सज्जनो का ख्याल है कि बगाली लोग या तो हिन्दी के विरोधी होते है या उसके प्रति उपेक्षा करते हैं। बेपढे लोगो मे ही नहीं, बल्कि सुशिक्षित सज्जनो मे भी इस प्रकार की आशका पाई जाती है। यह बात भ्रमपूर्ण है और इसका खण्डन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हू।

मैं व्यर्थ अभिमान नही करना चाहता पर इतना तो अवश्य कहूगा कि हिन्दी साहित्य के लिए जितना काम बगालियो ने किया है उतना हिन्दी-भाषी प्रान्त छोड़कर और किसी प्रान्त के निवासियो ने शायद ही किया हो। यहा मैं हिन्दी प्रचार की बात नही कहता उसके लिए स्वामी दयानन्द ने जो कुछ किया और महात्मा गाधी जो कुछ कर रहे हैं, उसके लिए हम सब उनके कृतज्ञ हैं।

बिहार मे हिन्दी-भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार के लिए स्वर्गीय भूदेव मुकर्जी ने जो महान् उद्योग किया था, क्या उसे हिन्दी-भाषा-भाषी लोग भूल सकते हैं? और पजाब मे स्वर्गीय नवीनचन्द्र राय ने हिन्दी के लिए जो प्रयत्न किया क्या वह कभी भुलाया जा सकता है? मैने सुना है कि यह काम इन दोनो बगालियो ने सन् १८८० के लगभग ऐसे समय मे किया था, जब कि बिहार और पजाब के हिन्दी-भाषा-भाषी या तो हिन्दी के महत्व को समझते ही न थे अथवा उसके विरोधी थे। ये लोग उत्तरी भारत मे हिन्दी आन्दोलन के पथ-प्रदर्शक कहे जा सकते हैं।

सयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश-स०) मे इण्डियन प्रेस के स्वामी स्वर्गीय चिन्तामणि घोष ने प्रथम सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका 'सरस्वती' द्वारा और पचासो हिन्दी ग्रन्थो को छापकर हिन्दी साहित्य की जितनी सेवा की है। उतनी सेवा हिन्दी-भाषी किसी प्रकाशक ने शायद ही की होगी। जस्टिस शारदाचरण मित्र ने एक लिपि-विस्तार-परिषद को जन्म देकर और देवनागर पत्र निकाल कर हिन्दी के लिए प्रशसनीय कार्य किया था। 'हितवार्ता' के स्वामी एक बगाली सज्जन ही थे और 'हिन्दी बगाली' अब भी इसी प्रान्त के एक निवासी द्वारा निकाला जा रहा है। आजकल भी हम लोग थोड़ी बहुत सेवा हिन्दी साहित्य की कर ही रहे हैं। कौन ऐसा कृतघ्न होगा जो श्री अमृतलाल जी चक्रवर्ती की जो ४५ वर्ष से हिन्दी पत्र-सम्पादन का ही कार्य कर रहे हैं हिन्दी सेवा को भूल जावे? श्री नागेन्द्रनाथ वसु लगभग १५ वर्ष से हिन्दी विश्वकोष द्वारा हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। श्री रामानन्द चटर्जी 'विशाल भारत' द्वारा हिन्दी की सेवा कर रहे है। हमारी भाषा के जिन पचासो ग्रन्थो का अनुवाद हिन्दी मे हुआ है और उनसे हिन्दी-भाषियो के ज्ञान मे जो वृद्धि हुई है उसकी बात मैं यहा नहीं कहूगा।

मैं शेखी नही मारता व्यर्थ अभिमान नही करता। पर मैं नम्रतापूर्वक आपसे पूछना चाहता हू कि क्या यह सब जानते हुए भी कोई यह कहने का साहस कर सकता है कि हम लोग हिन्दी विरोधी हैं। मैं इस बात को मानता हू कि बगाली लोग अपनी मातृभाषा से अत्यन्त प्रेम करते हैं और यह कोई अपराध नहीं है। शायद हम मे से कुछ ऐसे आदमी भी है जिन्हे इस बात का डर है कि हिन्दी वाले हमारी मातृभाषा बगला को छोड़कर उसके स्थान मे हिन्दी रखवाना चाहते हैं। पर यह भ्रम निराधार है। हिन्दी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि आजकल जो काम अग्रेजी से लिया जाता है, वह आगे चलकर हिन्दी से लिया जाये। अपनी माता से अधिक प्यारी मातृभाषा बगला को तो हम कदापि नही छोड़ सकते। भारत के भिन्न भिन्न प्रान्तों के भाइयो से बातचीत करने के लिए हिन्दी या हिन्दुस्तानी तो हमको सीखनी ही चाहिए और स्वाधीन भारत के नवयुवको को हिन्दी के अतिरिक्त जर्मन, फ्रेंच आदि योरोपियन भाषाओ मे भी एक-दो सीखनी पड़ेगी नही तो हम अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे दूसरी जातियो का मुकाबला नही कर सकेगे। लिपि का झगड़ा मैं नही उठाना चाहता। महात्मा जी की इस बात से मैं सहमत हू कि हिन्दी और उर्दू लिपि दोनो का जानना जरूरी है। आगे चलकर जो लिपि अधिक उपयुक्त सिद्ध होगी वही उच्च स्थान पायेगी। इसके लिए झगड़ा करना व्यर्थ है। सरल हिन्दी और सरल उर्दू दोनो एक ही है।

महात्मा जी से और आप लोगो से मैं प्रार्थना करूगा कि हिन्दी प्रचार का जैसा प्रबन्ध आपने मद्रास मे किया है, वैसा बगाल और आसाम मे भी करें। स्थायी कार्यालय खोलकर आप लोग बगाली छात्रो तथा कार्यकर्ताओ को हिन्दी पढाने का इन्तजाम कीजिए। इस कलकत्ता मे कितने ही बगाली छात्र हिन्दी पढने को तैयार हो जायेंगे। पढ़ाने वाले चाहिए। बगाल धनवान प्रान्त नही है और न यहा के छात्रो के पास इतना पैसा है कि वे शिक्षक रखकर हिन्दी पढ सके। यह कार्य तो अभी आप लोगो को ही करना होगा और कलकत्ता के धनी-मानी हिन्दी-भाषा-भाषी सज्जन इधर ध्यान दें, तो कलकत्ता मे ही नही, बगाल तथा आसम मे भी हिन्दी का प्रचार होना कोई बहुत कठिन कार्य नही है। आप बगाली छात्रो को छात्रवृत्ति देकर हिन्दी प्रचारक बना सकते हैं। बोलचाल की भाषा चार-पाँच महीने मे पढ़ाकर और फिर परीक्षा लेकर आप लोग

(शेष पृष्ठ १० पर)

जय हिन्दी, जय हिन्द

—गोपाल प्रसाद व्यास

हिन्द स्वतन्त्र होकर भी आज मानसिक गुलामी में जकड़ा है और हिन्दी राजभाषा होकर भी राजकीय कृपा की अभिलाषिणी है। जब तक हिन्द और हिन्दी अपने पांवों पर खुद खड़े नहीं होंगे, तब तक दोनों परमुखापेक्षी रहेंगे, जब तक दोनों अपने तेज को धारण नहीं करेंगे, तब तक दीन और त्रस्त ही बने रहेंगे। न विदेशी पूंजी, हथियार और भाषा हिन्द की आजादी की रक्षा कर सकते हैं और न सरकार के कानून या आदेश हिन्दी को राजभाषा बना सकते हैं। हिन्द और हिन्दी दोनों को आज जनता के वरदान की अपेक्षा है।

हिन्दी भी सकट मे है आज और हिंद भी। हिन्दी को विदेशी भाषा ने दबा रखा है और हिंद को विदेशी शक्तिया चारो ओर से घेरे हुए हैं। हिन्दी पर आरोप है कि वह साम्राज्यवादी है और हिन्द के दुश्मन भी हिन्द को साम्राज्यवादी ही कहते है। हिन्दी के विरोधी उसे राज-काज के लिए असमर्थ और अयोग्य कहते समझते हे और हिन्द के विरोधी भी हिन्दी सरकार को असमर्थ और अयोग्य समझकर घात लगाये हुए है। जैसे विदेशी ताकतो के एजेण्ट हिन्द मे तोड फोड की ओर हैं, शासन को बदनाम करने की साजिश करते देखे जाते हैं, उसी प्रकार विदेशी भाषा के एजेण्टो का भी हिन्दी के विरुद्ध अभियान जारी है। विदेशी लोगो के एजेण्ट जैसे सभी बडी-बडी जगहो और सरकारी संस्थानो मे घुसे हुए है, उसी प्रकार हिन्दी के दुश्मन भी सभी जगह और खासकर सरकार मे भरे पडे है। जिस प्रकार हिन्दी सरकार सुमति सदाशा और राष्ट्र की एकता के नाम पर कोई कडा कदम उठाने मे हिचकती है, उसी प्रकार हिन्दी वाले भी राष्ट्रकी एकता और सुमति सहयोग की खातिर चुपचाप सब कुछ सहन किये जा रहे हैं। इस प्रकार हिंद और हिंदी दोनो इस समय त्रस्त है, दुविधा मे है और परिस्थितियो से अपने को विवश पा रहे है।

इस सकट का कारण यह है कि हिन्द और हिन्दी दोनो अपनी ताकत को नही जानते। हिन्द धन के लिए बाहर देखता है, बल के लिए दूसरो से अपेक्षा करता है और ज्ञान तथा भाषा मे भी उसका मुह पछाह की ओर है। यही हाल हिन्दी का भी है। वह अपने विकास के लिए राज की ओर देखती है, प्रचार के लिये सरकार की अपेक्षा करती है और प्रतिष्ठा के लिए भी उसका अपना कोई कर्त्तव्य नही रह गया। वह भी उसकी समझ मे राज-कर्तव्य बन गया है। हिन्द स्वतन्त्र होकर भी आज मानसिक गुलामी मे जकडा है और हिन्दी राजभाषा होकर भी राजकीय कृपा की अभिलाषिणी है। जब तक हिंदी और हिंद अपने पावो पर खुद खडे नही होगे जब तक दोनो परमुखापक्षी रहेंगे, जब तक दोनो अपने तेज का धारण नही करेंगे, तब तक दीन और त्रस्त ही बने रहेगे। न विदेशी पूजी, हथियार और भाषा हिंद की आजादी की रक्षा कर सकते है और न सरकार के कानून या आदेश हिन्दी को राजभाषा बना सकते हैं। हिन्द और हिन्दी दोनो को आज जनता के वरदान की अपेक्षा है। शासको के आशीष से न हिन्द चलेगा, न हिन्दी। दोनो का कल्याण जनता जनार्दन के आशीर्वचन मे ही निहित है। यह कामना राजा या राजभाषा का गर्व लेकर नही, सेवा का व्रत धारण करके ही पूरी हो सकती हैं।

हिन्द को अपनी आजादी तलवार के बल पर नही मिली। न वह राजनीतिक षडयन्त्रो की ही देन हैं। यह राष्ट्र जागरण का सुफल है और सन्त-महात्माओ की धरोहर है। यह आजादी शुद्ध सकल्प और पवित्र साधनो से प्राप्त हुई। अखण्ड राष्ट्रीयता ही इस जागरण और प्राप्ति का अमोघ मन्त्र रहा है। हिन्दी की आजादी भी छल-बल की राजनीति या सत्ता के षडयन्त्रो मे टिकने वाली नही है। यह गान्धी की गद्दी है। इस पर कोई त्यागी-तपस्वी ही स्थिर रह सकता है। घर-घर राष्ट्रीयता का अलख ही हमारी आजादी का अभय कवच बन सकता है। बागियो के तुष्टीकरण, या अग्रेजी की अनिवार्यता से एक नही रह सकता। देश की एकता शुद्ध सकल्प और अखण्ड राष्ट्रीयता पर ही अवलम्बित है।

हिन्दी भी राजाओ की बोली नही, सन्तो की झोली का प्रसाद है। सन्तो की यह शकुन्तला तो हमेशा राज-सत्ता से अपमानित और लाछित ही हुई है। यह तो सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, स्वामी दयानन्द और महात्मा गाधी की पालिता है। राजा टोडरमल से लेकर राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद तक तथा राज-राजेश्वर राधाकृष्णन जी से लेकर चक्रवर्ती राजाजी तक की राज-कृपा इसे कहा सुलभ हुई? राजनीतिक हेतु से युग के दशरथ ने इसके राजतिलक की घोषणा भी की, तो कैकेयी के वर और मन्थराओ के कुचक्र से इसे निष्कासित कर दिया गया। राजा राम चौदह वर्ष बाद राजगद्दी पा गये थे, मगर चौदह वर्ष बाद भी हिन्दी का राज्याभिषेक नही हुआ। क्योकि तब के भरत को राज-लोभ नही था, मगर आज के भरत तो राजमद मे डूबे है।

हिन्द देश नही, दर्शन है दर्शन मरण का नही, जीवन का। जीवन अपना नही, जन-जनका। जीवन ह्रास का नही, विकास का। जीवन अधिकार का नहो, प्यार का, यानी सहअस्तित्व का। भारत के पुराने ऋषियो ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मन्त्र दिया था और आज भी इसके सन्त 'जय जगत' का उद्घोष करते है।

हिन्दी भाषा नही, वाणी है। वाणी शासन की नही, जन-जन की। वाणी तन की नही, मन की। वाणी अधिकार की नही, प्यार की। यह अधिकार की भाषा नही, राष्ट्र के सुख दुख की अभिव्यक्ति है। सन्तो की अनुभूति है। राष्ट्र का स्वर है। हिन्दी भाषा नही नाद है जो कबीर मे अनहद के रूप मे व्यक्त हुआ था और मैथिलीशरण और प्रेमचन्द मे आरत-भारत के रूप मे।

हिन्दी भारत की तीसरी क्रान्ति है। पहली क्रान्ति गाधी जी ने देश की स्वतन्त्रता के लिए की थी, जब जनता विदेशी शासन से मुक्त हुई थी। दूसरी क्रान्ति तब हुई, जब राजा जमीदार और जागीरदारो को जनता और शासन के बीच से हटाया गया। तीसरी क्रान्ति जनता और शासन के बीच भाषा-भेद को समाप्त करने की है। अग्रेजी जनता और शासन को अलग किये हुए है और स्वराज्य के सुख को जनता तक पहुचाने मे दीवाल बनी हुई है। यह क्रान्ति विफल हुई, तो समाजवाद कागजी रहेगा और जनतन्त्र नाम को रह जाएगा।

गाधी जी ने हिन्द के विजय रथ को सत्यशील दृढ ध्वजा-पताका से युक्त किया था। शौर्य और धैर्य के पहियो पर चलने वाला यह धर्म-रथ परतन्त्रता की मजिल पार कर गया।

और हिन्दी! यह तो जगन्नाथ जी का रथ है, जो कभी नही रूका, क्योकि इसे राजा के घोडे नही, जनता खीचती है। यह रथ चाबुक सेनही श्रद्धा मे चलता है। इस रथ पर राजा नही, देवता आए है। वह देवता शाहो की दिल्ली और नवाबो के लखनऊ मे नही, जनता की मोक्षदायिनी जगन्नाथपुरी मे निवास करते है। इन्हे दक्षिण का निर्मालय और पूर्वके राजा की चाकरी प्राप्त है। यह रथ उत्तर से दक्षिण की ओर विजय करने नहीं चला। यह रथ राजपथगामी नही, जनपथगामी है।

हिन्दी श्रद्धा का रथ है और हिन्द धर्म का, इन दोनो की जय इसी मे है कि दोनो की सेवा श्रद्धा और धर्म की भावना से करें। श्रद्धा जो स्वार्थ से रहित और धर्म जो अज्ञानान्धकार का नाश करता है।

जय हिन्दी। जय हिन्द!!

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता (७)

—आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

आयमित्र के आदि सम्पादक पण्डित रुद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचाय हिन्दी के उन स्वनामधन्य पत्रकारो मे थे कि हिन्दी का कोई ऐसा नामी पत्र नही जिसका सम्पादन उन्होने न किया हो। आयमित्र के अतिरिक्त उन्होने 'आर्यावत और भारत मित्र का भी सम्पादन किया था। अपने पत्रकार जीवन का प्रारम्भ उन्होने आगरा के प्र मपत्र नामक पाक्षिक के सम्पादन से किया था और जिन दिनो व भारत मित्र (कलकत्ता) म थे उन दिनो उसके २२ जून १-७९ के अक मे एक चिटठी इस आशय की भी छपी थी कि स्वामी दयानन्द से वेद पढने के लिए कई एक अमरीकन पादरी बम्बई आये हुए है। स्वामी ज के लेख भी उन दिनो यदा कदा भारत मित्र मे प्रकाशित हुआ करते थे और ३० अक्तूबर सन १८८३ को जब स्वामीजी का देहावसान हुआ था तब उसके २ नवम्बर के अक मे यह समाचार भी प्रकाशित हुआ था। महर्षि म्वामी दयानन्द सरस्वती के देहावसान के उपरा त सन १८९५ मे बरेली से आय पत्र (मासिक) और सन १८९६ मे खीरी (उत्तर प्रदेश) से आय भास्कर नामक पत्र भी प्रकाशित हुए थे। इनमे से पहले पत्र के सम्पादक श्री पूरणमल थे।

जिन दिनो महर्षि स्वामी दयानन्द देश मे सामाजिक जागरण का अपना अभूतपूव अभियान चला रहे थे उन दिनो जिन अनेक राज परिवारो मे उनके क्रान्तिकारी विचारो का अमर आलोक पहुचा था उनमे कालाकाकर (उत्तर प्रदेश) का परिवार अ यतम था। वहा के राजा रामपालसिंह ने लन्दन से सन १८८३ मे जो हिन्दी पत्र हिन्दोस्थान नाम से निकाला था उस उन्होने भारत मे आकर सन १८८५ मे दनिक रूप दे दिया और उसके प्रथम सम्पादक का दायि व महामना मदनमोहन मालवीयको सौपा। जब उन्होने कलकत्ता काग्र म मे मालवीय जी का धारावाहिक भाषण सुना तो व उन पर मुग्ध हो गए और उन्होने मालवीय जी को वहा पर ही हिन्दोस्थान का सम्पादन भार सभालने को सहमत कर लिया था। बाद मे हिन्दोस्थान के सम्पादन मे श्री बालमुकु द गुप्त और प० प्रतापनारायण मिश्र न भी सहयोग दिया था। राजा रामपालसिंह के पौत्र कु० सुरेशसिंह ने भी १९३८ ३९ मे कालाकाकर स कुमार नामक युवकोपयोगी मासिक पत्र प्रकाशित किया था। उनकी प्र रणास ही उन्ही दिना श्री सुमित्रानन्दन प त के सम्पादन म रूपाभ नामक एक साहित्यिक मासिक पत्र भी प्रकाशित हुआ था। अमेठा राज्य (उत्तरप्रदेश) म भी आयसमाज का काफी प्रचार था। वहाके राजकमार रणजयसिंह द्वारा सचालित मनम्वी नामक मासिक पत्रिका का मैंने सन १९३९ ४० म आठ मासतक सम्पादन किया था। काशी के दनिक आज और ज्ञानमण्डल लिमिटेड के सचालक श्री शिवप्रसाद गुप्त भी आय समाज के सुधारवादी आन्दोलन स पयाप्त प्रभावित थ और कदा चत उससे प्र रित होकर ही उन्होन बाद म आज दनिक का प्रकाशन किया था। इसका ज्वलन्त प्रमाण हम इस बात मे मिलता है कि जब वे वि श यात्रा पर जा रहे थे तब अपने निजी सचिव के रूप म व श्री हरिशकर शर्मा (सुपुत्र कविवर नाथराम शकर शर्मा को अपन साथ ले जाना चाहते थ।

इस शताब्दी के प्रारम्भ मे एक ओर जहा सन १ ०० म आय प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश की ओर से आय सेवक नामक पाक्षिक श्री गणशप्रसाद शर्मा के सम्पादन मे प्रकाशित हुआ था त । आय समाज कलकत्ता की ओर से आर्यावत (१९२२) का प्रकाशन हुआ था। इस शती के तीसरे दशक मे जहा बगाल बिहार की आय प्रतिनिधि सभा न सन १९२४ म श्री जयदेव शर्मा के सम्पादकत्व मे आय जीवन नामक पत्र का प्रकाशन कया था वही आय प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर मे भी सन १९१४ मे आय नामक मासिक पत्र प्रकाशित हुआ था। इस पत्र के आदि सम्पादक श्री चमूपति एम ए थे। बाद मे लगभग ६ वष तक श्री अवनी द्र कुमार विद्या लकार ने इसका सम्पादन किया और फिर श्री प्रियव्रत वेद वाचस्पति भी इसके सम्पादक रहे थे। बहुत दिन बाद न जाने किस कारण से प्रतिनिधि सभा की ओर से आय की बजाय 'आर्योदय प्रकाशित होने लगा और इसके सम्पादक कई वष तक श्री भारतेन्द्र नाथ साहित्यालकार रहे थे। जब प्रतिनिधि सभा का विभाजन हरियाणा और पजाब के रूप मे अलग अलग हो गया तब एक की ओर से आयमर्यादा प्रकाशित होने लगा और दूसरी ने आय ज्योति का प्रकाशन प्रारभ किया। आय मर्यादा का सम्पादन श्री जगदेवसिंह सिद्धाती किया करते थे और आय ज्योति के सम्पादक श्री हरिप्रकाश आयुर्वेदालकार रहे थे श्री सिद्धाती जी के सम्पादन-काल मे आय मर्यादा' मे पर्याप्त सुपुष्ट सामिग्री समाविष्ट रहती थी। यहा यह भी स्मरणीय है कि श्री सिद्धान्ती जी ने श्री रघुवीरसिंह शास्त्री के सहयोग से सम्राट नामक एक साप्ताहिक पत्र भी स्वत त्र रूप से दिल्ली से प्रकाशित किया था जो कई वष तक आय जगत की प्रशसनीय सेवा करता रहा। आजकल यह पत्र मासिक रूप मे श्री च द्रमोहन शास्त्री के सम्पादन मे अच्छी साज सज्जा मे प्रकाशित हो रहा है। श्री भारते द्रनाथ ने आर्योदय से पृथक होकर स्वत त्र रूप स दयानन्द सस्थान नामक सस्था की स्थापना करके उसकी ओर से जनज्ञान नामक जो मासिक प्रारम्भ किया था उसका सम्पादन श्री भारते द्रनाथ जी की जीवन सगिनी श्रीमती राकेश रानी कर रही हैं। यदि यहा पर आय सभा के साप्ताहिक पत्र राजधम का उल्लेख न किया गया तो यह विवरण अधूरा ही रह जायगा। इस सन्दभ मे बिहार प्रान्तीय आय प्रतिनिधि सभा के पत्र आय सकल्प तथा मध्य दक्षिण आय प्रतिनिधि सभा का आय जीवन मासिक) भी पिछले २० वष से नियमित रूप से निकल रहा है। गुरुकुल कागडी के प्राचीन स्नातक श्री विनायकराव विद्यालकार ने १९४६ मे हैदराबाद दक्षिण) से आय भानु नामक जो पत्र प्रकाशित किया था वह उस राज्य का पहला हिन्दी पत्र था। इस पत्र के सहायक सम्पादक श्री कृष्णदत्त थे। इस सन्दभ मे सन १९३८ ३९ के आय सत्याग्रह के अवसर पर श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी के सम्पादन म शोलापुर से प्रकाशित दिग्विजय का नाम भी उल्लेख्य है। (क्रमश)

कैसे बनेगा ऋण मुक्त भारत (३)

डा० मुरली मनोहर जोशी, अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी

दिशा और दृष्टि में परिवर्तन—

वर्तमान परिस्थितियो म यदि भारत को कर्जमुक्त होना है तो आर्थिक विकास की दिशा और दृष्टि दोनो बदलनी पडेगी।

इस समय दुनिया के धनी देशो ने जो जीवन स्तर प्राप्त कर लिया है उसे बनाए रखने के लिए उन्हे पूजी ऊर्जा और कच्चा माल चाहिए। उन्होने इसका एक रास्ता भी निकाल लिया है। वह यह कि कही से कच्चा माल जुटाकर माल तैयार किया जाए और बेचा जाए। उस तैयार माल को बेचने के लिए बाजार बनाना चाहते हैं तीसरी दुनया के गरीब देशा को।

अर्थात उनकी अर्थ व्यवस्था का सीधा नियम है सस्ता कच्चा माल प्राप्त करके सस्ते दर पर पूजी लगाकर तीसरी दुनिया के देशो मे ऊचे दर पर अपने माल की बिक्री करना। इस प्रकार उनका टर्म्स आफ ट्रेड (व्यापारिक शर्तें) गरीब देशो के विरुद्ध काम करती है। आज स्थिति यह है कि तीसरी दुनिया के देशो पर १९६९ मे केवल ५४ बिलियन डालर का कर्ज था, १९८५ म यह बढकर ८०० बिलियन डालर हो गया है और इस समय १९९१-९२ मे यह कर्ज कुल मिलाकर लगभग १५०० बिलियन डालर हो गया है। यह जो १५०० बिलियन डालर या इससे भी अधिक रुपया अविकसित देशो से विकसित देशो मे चला गया है वह कभी वापस होने वाला नही है। अविकसित देशो से पूजी विकसित देशो की तरफ जा रही है। इस अर्थतन्त्र मे गरीब या अविकसित देश हमेशा ऋणग्रस्तता के चक्कर मे पडे रहेगे। वे इससे मुक्त हो ही नहीं सकते। बन्धुआ मजदूरो वाली पुरानी परिपाटी अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही है।

जब तक इस बात को नही समझा जाएगा और देश के अर्थतन्त्र को इस कुचक्र से मुक्त नहीं कराया जाएगा, तब तक भारत विकसित देश का रूप नही ले पाएगा। इसलिए पहली बात तो यह कि भारत को अपना अर्थतन्त्र सुदृढ करना होगा, जब तक देश का आन्तरिक अर्थतन्त्र सुदृढ नही होगा, तब तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खडे होने लायक स्थिति नही हो सकती। यह देखा गया है कि भुगतान सन्तुलन को ठीक करने के नाम पर आर्थिक नीति नियताओ द्वारा कर्ज लेने को उचित ठहराने के कुतर्क दिये जाते है। परन्तु सवाल उठता है कि ये भुगतान असतुलन हुआ क्या? इसके जबाब मे वे कहते है कि हमारे दश से निर्यात कम होता है आयात अधिक हाता है इसलिए भुगतान असतुलन की स्थिति पैदा हुई। उनकी इस बात पर आम आदमी भी यही सोचता है कि ठीक है निर्यात बढाने से यह समस्या दूर हो जाएगी इसलिए निर्यात बढाओ। लेकिन जब तक इस बात की छानबीन नही की जानी कि किस वस्तु की खपत विदेशी बाजार मे है तब तक निर्यात बढाने की बात केवल आत्म-सन्तोष ही मानी जाएगी। इससे देश की अर्थव्यवस्था पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पडने की उम्मीद नही है। इस तरह की बातो से ऋणजाल से मुक्त होना सम्भव भी नही है।

इस आयात-निर्यात की प्रक्रिया को ध्यान से देखन पर पता चलता है कि आयात और निर्यात म जो अन्तर है, उसका बहुत बडा कारण पेट्रोलियम पदार्थो का आयात है। १२००० करोड से लेकर १८००० करोड रुपयो की रकम पेट्रोलियम पदार्थो की खरीद पर खर्च होती है। इतना खर्च इस मद पर क्या किया जाता है? क्या पेट्रोलियम पदार्थो का कोई विकल्प नही हो सकता? आखिर इस देश मे इतनी ज्यादा मात्रा मे गन्ना पैदा होता है और बहुत अधिक मात्रा मे गन्ने का शीरा बरबाद जाता है।

पिछले दिनो बिहार के वैशाली जनपद मे गोरोल चीनी मिल द्वारा ६० हजार क्विंटल गन्ने का रस सिर्फ इसलिए बहा दिया गया क्योकि पेराई के बाद उससे चीनी का उत्पादन नही किया जा सका। यह तो मात्र एक उदाहरण है।

गन्ने के रस से और इसके शीरे से भी हम पावर एल्कोहल बना सकते हैं। पावर एल्कोहल से बहुत अच्छी तरह गाडिया चल सकती है। ब्राजील इसी विधि से अपने यहा गाडिया चला रहा है। ब्राजील भी उसी सकट मे फसा है जिसमे भारत है।

गन्ना भारत की कृषि उपज है, और भारत दुनिया का सबसे बडा गन्ना उत्पादक देश है। उत्तर-प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र मे बहुत बडी मात्रा मे गन्ना पैदा होता है। कई बार तो किसान का गन्ना खराब हो जाता है जल जाता है। यदि सरकार ने इस तरफ ध्यान दिया होता, और आज भी दे तथा लोगो को यातायात व्यवस्था मे पेट्रोलियम पदार्थों के बजाय पावर एल्कोहल का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित करे तो दो-तीन वर्ष मे ही आयातित पेट्रोल पर देश की निर्भरता काफी कम हो सकती है। यदि इस प्रकार यह खर्च ५० प्रतिशत भी घट गया तो ८-९ हजार करोड रुपए वार्षिक की बचत आसानी से हो सकती है। यह बहुत बडी बचत होगी। क्योकि पेट्रोलियम पदार्थो को खरीदने के लिये हमे विदेशी मुद्रा मे ही सारी कीमत चुकानी पडती है। इन तथ्यो से एक बात तो साफ हो गई कि जब तक देश की समस्याओ का विश्लेषण करके ऐसे समाधान नहीं खोजे जायेंगे तब तक देश को भुगतान के सकट से मुक्त नही कराया जा सकता।

भुगतान सतुलन का दिखावा—

जब कर्ज मुक्त भारत की परिकल्पना करते हैं तो कई और सवाल भी उपस्थित होते है जैसे क्या देश का भला श्रृंगार प्रसाधनो और बडी-बडी मशीनो के आयात से होगा? और जिन बडे उद्योगो के लिए बडी-बडी मशीनें बाहर से आई उनमे बने माल का कितना प्रतिशत निर्यात हुआ? यदि विदेशी पूजी लगाकर यहा कोई उद्योग लगाया गया तो उससे कितनी विदेशी मुद्रा अर्जित हुई? यदि नही, तो क्यो? वास्तव मे देश आज भी अपने पुराने परम्परागत निर्यात द्वारा ही विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है। प्रमुख रूप से कपडा उद्योग चर्म उद्योग आभूषणो, कृषि उत्पादन और कच्चे माल पर ही सम्पूर्ण निर्यात का ७० प्रतिशत निर्भर करता है। इन सभी क्षेत्रो मे बहुत सम्भावनाए भी है। यदि इन सभावनाओ पर रचनात्मक दृष्टि से विचार करके इन क्षेत्रो को सुदृढ किया जाए तो देश की आर्थिक स्थिति मजबूत करने मे इनका बहुत लाभ उठाया जा सकता है। यदि देश के कृषि क्षेत्र को सुदृढ किया जाएगा तो निश्चित ही अर्थ व्यवस्था भी सुदृढ होगी, लोगो को रोजगार भी मिलेगा और साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय बाजारो मे एक प्रतिस्पर्धी के रूप मे देश खडा हो सकेगा। इसी प्रकार भारी मात्रा मे मत्स्य उत्पादन करके निर्यात कर विदेशी मुद्रा कमा सकते है। देश के पास इतना बडा समुद्री तट है, इतनी नदिया है, इतना जल है कि इस क्षेत्र मे बहुत लाभ कमाया जा सकता है। ऐसे तमाम क्षेत्र हैं, जिनके आधार पर हम अपना निर्यात पक्ष मजबूत कर सकते है।

(क्रमश)

पुस्तक समीक्षा

योग-दर्पण

लेखक—स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

प्राप्ति स्थान—गोविन्दराम हासानन्द नई सडक दिल्ली

मूल्य १००) रुपये

प्रकाशक—यौगिक शोध सस्थान

योगधाम—आर्य नगर ज्वालापुर हरिद्वार (उ० प्र०)

आज भारत मे ही नही—अपितु विश्व के कोने-२ मे योग की दुकानें चल रही हैं और सभी अपनी दुकान की विशेषता बताकर स्वय योगीराज बनना चाहते हैं। जनता में योग के प्रति आस्था है—पर नौटकी-कारो के कारण श्रद्धा का भाव विनष्ट किया जा रहा है।

योग के आठ-अग हैं—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

यम-नियम-आसन- प्राणायाम प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि। इस प्रक्रिया मे एक तत्व है आसन—'स्थिर-सुखमासनम्"

जीवन को उत्साह पूर्वक आगे ले चलने की प्रक्रिया है स्थिरता यानि एक चित्त बैठना। जब बैठने की प्रक्रिया मे स्थिरता होगी - तभी ध्यान लगेगा और तब होगा—

योग से चित्त की वृत्तियो का निरोध, मन चचल है इसे काबू करने के लिये ज्ञानेन्द्रियो को वशीभूत करना। तब होगा—"योगकर्मसुकौशलम्।"

यम-नियमादि को कुशलता से अभ्यासादि द्वारा स्थरत से धारणा ध्यान फिर समाधि की स्थिति आयेगी। समाधि तक जाने मे प्रथम यम-नियम दो उत्कृष्ट तप हैं जिनके तपने से सभी अवरोध हट जायेगे।

प्रथम-अवरोध-निरोगी-काया—यदि शरीर स्वस्थ है "शरीर माद्य खलुधर्म साधनम्" प्रथमधर्म शरीर का स्वस्थ रखना—

'योग-दर्पण' विकृत मानस के लिये दर्पण का कार्यकर-आसनो द्वारा काया निरोग बनाना है। विद्वान् सन्यासी स्वामी दि यानन्द सरस्वती ने अपने को साधना की भट्टी मे तपाकर योग की सही दिशा दी है।

योग की सर्वागीणता को पहचाने बिना साधक उसके बहिरग तक ही सीमित है। अत आज आवश्यकता है—योग की, यह सयोग ही है कि उच्छृखल विकृत-समाज को टुकडो मे कौन बाट रहा है उसे योग (२+२ ४) ५/ मिलाना हैं जो सात्विक परम्परा से कट रहा है जोडना है।

दर्पण का काम है—भूल को सुधारकर स्वच्छ बनाना।

आइये इस योग-दर्पण को देखे और हम अपने विकृत मानस को सुधारे योगी का तभी प्रयास सफल होगा—जब हम बदलेंगे तो जग बदलेगा—

हम जागेंगे—सब जागेंगे—

—सम्पादक

प्रवेश प्रारम्भ

'गुरुकुल वैदिक सस्कृत महा विद्यालय, सिराथू इलाहाबाद" का नवीन सत्र १ जुलाई ९२ से प्रारम्भ हो गया है। अपने बच्चो के उज्जवल भविष्य तथा राष्ट्र के योग्य नागरिक बनाने के लिए, सिराथू क' वर्गीय प्रथम श्रेणी मे राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है प्रवेश करायें। यहा सुयोग्यतम आचार्यों द्वारा प्रथमा (कक्षा ६) से आचार्य (एम० ए०) तक की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है। विद्यालय पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्यार्थियो की दैनिक दिनचर्या प्रात साय हवन, व्यायाम, योगासन, नैतिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, धनुर्विद्या, सगीत आदि के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया जाता है।

विशेष जानकारी के लिए कार्यालय से शीघ्र सम्पर्क करे।

प्राचार्य—डा० रमामित्र शास्त्री

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू, इलाहाबाद (उ० प्र०)

श्रावणी तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक सम्पन्न

—आर्य समाज ह० खडगपुर मुगेर, बिहार द्वारा १३ अगस्त से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (२१ अगस्त ९२) तक प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। इस प्रभात फेरी मे आर्य समाज के सदस्यगण, म० दया० शि० वि० आर्य समाज के सभी शिक्षको एव छात्रो ने भी भाग लिया। प्रतिदिन सायकाल मे घर-घर जाकर हवन यज्ञ एव वेद प्रचार का कार्य अत्यन्त पवित्रता, गम्भीरता एवं शालीनता के साथ सम्पन्न हुआ। —महादेव प्रसाद आर्य

—आर्य समाज बम्बई (काकडवाडी) मे १३ से २१ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन हुआ। श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन रात्रि को डा० वागीश शर्मा प्रधानाचार्य आर्षगुरुकुल, एटा तथा प० विश्वदेव शर्मा व्याकरणाचार्य, गुरुकुल एटा के प्रेरणादायक प्रवचन हुए।

इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का भी आयोजन हुआ जिसमे नगर के गणमान्य महानुभावो ने अति उत्साह और श्रद्धा के साथ भाग लिया।

—उपदेशक महाविद्यालय टकारा मे २१-८-९२ को श्रीकृष्ण महाराज का जन्मदिवस मनाया गया। प्रात काल वृहदयज्ञ सम्पन्न हुआ। रात्री मे ८-३० से ११ बजे तक आचार्य पूरनमल जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सभा का आयोजन किया गया। जिसम ब्रह्मचारियो ने श्रीकृष्ण जी के विषय मे भाषण दिए एव रोचक भजन प्रस्तुत कर वातावरण को कृष्णमय बना दिया।

—'वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष मे दिनाक १३ से १९ अगस्त तक आर्य समाज मन्दिर भोलेपुर फतेहगढ (यू० पी०) मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य राजेन्द्र कुमार शास्त्री पुरोहित, आर्य समाज सदर, मेरठ के पुरोहितत्व में बडी धूमधाम से मनाया गया।

आर्य समाज लखीमपुर खीरी ने वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी उपाकर्म दि० १३ से २१ अगस्त ९२ तक मनाया। इसमे उपदेशक श्री विश्वम्भर दत्त शास्त्री भजनोपदेशक श्री जुगल किशोर, ढोलकवादक श्री हरिश्चन्द्र ने भाग लिया। प्रात कार्यक्रम आर्य समाज मन्दिर मे एव सायकाल विभिन्न परिवारो मे सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज मन्दिर सान्ताक्रुज बम्बई मे रविवार दि० ९ से १६ अगस्त तक सामवेद पारायण महायज्ञ तथा वृष्टियज्ञ का आयोजन किया गया एव वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा डा० सोमदेव जी शास्त्री ने नित्य प्रात ७ से ९-३० बजे तक यह महायज्ञ कराया तथा यज्ञ के महत्व पर निरन्तर आठ दिन तक अपने व्याख्यान दिये।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित आर्य समाजो मे श्रावणी पर्व तथा वेदप्रचार सप्ताह अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया गया।

आर्य समाज आर्यनगढ, वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात, आर्य समाज उत्तरी घोण्डा दिल्ली आर्य समाज शामली, आर्य समाज माडल टाउन दिल्ली, आर्य समाज सीतापुर, आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी मेरठ, आर्य समाज बीसनपुर, आर्य समाज गोविन्दपुरी नई दिल्ली आर्य समाज बिसवा सीतापुर आर्य समाज मन्दिर चौक पटियाला, आर्य समाज अकोला, वेद प्रचार मण्डल यमुनापार क्षेत्र मौजपुर दिल्ली, आर्य समाज मोगा, आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवडी कोटा, आर्य समाज गया, आर्य समाज ऋषिकुज पक्का बाग जालन्धर, आर्य समाज ब्रह्मपुरी, आर्य समाज अम्बाला छावनी, आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी नैनीताल, आर्य समाज रामपुरा कोटा, आर्य समाज मुखर्जी नगर ईस्ट दिल्ली, आर्य समाज मन्दिर नेमदार गज नवादा बिहार, आर्य समाज मुजफ्फरनगर।

हिन्दी प्रचार का नारा

(पृष्ठ ५ का शेष)

हिन्दा का कोई प्रमाण-पत्र दे सकते हैं। मेरे जैसे आदमी को भी, जिसे बहुत कम समय मिलता है आप हिन्दी पढाइए और फिर परीक्षा कीजिये। हम लोग जो मजदूर आन्दोलन मे काम करते हैं हिन्दुस्तानी भाषा की जरूरत को हर रोज महसूस करते हैं। बिना हिन्दुस्तानी भाषा जाने हम उत्तरी भारत के मजदूरो के दिलो तक नहीं पहुंच सकते। अगर आप हम सबके लिए हिन्दी पढाने का इन्तजाम कर देंगे, तो मैं यह विश्वास दिलाता हू कि हम लोग आपके योग्य शिष्य होने का भरपूर प्रयत्न करेंगे।

अन्त मे बंगाल के निवासियो और खास तौर से यहा के नवयुवकों से मेरा अनुरोध है कि आप हिन्दी पढे। जो लोग अपने पास से शिक्षक रखकर पढ सकते हैं, वे वैसा करें। आगे चलकर बगाल मे हिन्दी प्रचार का भार उन्हीं पर पडेगा यद्यपि अभी हिन्दी प्रान्तों से सहायता लेना अनिवार्य है। दस-बीस हजार या लाख-दो लाख आदमियो के हिन्दी पढ लेने का महत्व के ल पढने वालों की सख्या पर ही निर्भर नहीं है। यह काय बड दूरदर्शिता पूर्ण है और इसका परिणाम बहुत दूर आगे चलकर मिलेगा। प्रान्तीय ईर्ष्याविद्वेष को दूर करने मे जितनी सहायता इस हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नही मिल सकती।

अपनी-अपनी प्रान्तीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए। इसमे कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन ही कर सकते हैं पर सारे प्रान्तों की सार्वजनिक भाषा का पद हिन्दी या हिन्दुस्तानी को ही मिलना चाहिये। नेहरू रिपोर्ट में भी इसकी सिफारिश की गई है। यदि हम लोगो ने तन-मन धन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नहीं है जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी 'हिन्दी'।

[(प० बनारसीदास चतुर्वेदी के निजी संग्रहालय से प्राप्त)

(दैनिक हिन्दुस्तान १४-९-८७ से साभार)

स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

पटना १५ अगस्त। स्वतन्त्रता दिवस के शुभ अवसर पर माडर्न आर्यन्स सेन्ट्रल स्कूल अशोक नगर कंकडबाग के निदेशक डा० राजेश्वर "जिज्ञासु" ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। छात्र-छात्राओ को सम्बोधित करते हुए डा० 'जिज्ञासु' ने राष्ट्रीय एकता, अखण्डता बनाये रखने के लिए अमर शहीदो की कुर्बानी से प्रेरणा लने एव देश की रक्षा हेतु मर-मिटने के लिए आह्वान किया अमर शहीदो के प्रति अपनी श्रद्धाजलि भी अर्पित की।

इस अवसर पर छात्र छात्राओ ने रगारग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

अनिल कुमार प्राचार्य

आर्यसमाज गोविन्दपुरी के निकट से मांस की दुकानें हटवाने की मांग

पुस्तकालय, औषधालय तथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का उद्घाटन

नई दिल्ली, ६ सितम्बर।

आर्य समाज गोविन्दपुरी दिल्ली के वेद प्रचार सप्ताह के समापन समारोह मे आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि लोकोपकार के कार्य आर्य समाज की स्थापना के मुख्य स्तम्भ है। यज्ञ द्वारा पर्यावरण की शुद्धि करना तथा इसके अतिरिक्त दीन दु खियो, निर्बलो तथा असहाय वर्गों की सहायता के लिए सतत् प्रयत्नशील रहना आर्य समाज के कार्यकर्ताओ का स्वभाव है। आर्य समाज गोविन्दपुरी द्वारा नव सचालित तीन योजनाओ का एक मुश्त उद्घाटन करते हुए स्वामी जी ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा महामानव महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति धन्यवाद प्रकट किया, जिनकी कठी तपस्या तथा प्रयत्नो से आर्य समाज का जन्म हुआ। इन योजनाओ मे एक वैदिक पुस्तकालय, होमियोपैथिक औषधालय तथा व्यायाम एव प्रौढशिक्षा केन्द्र शामिल थे। इसके अतिरिक्त महिला सिलाई शिक्षा केन्द्र का उद्घाटन स्त्री आर्य समाज की प्रधाना ने किया।

इस अवसर पर आर्य समाज गोविन्दपुरी द्वारा मन्दिर के निकट से अवैध रूप से खुली मास की दुकानो को हटवाने हेतु सकल्प प्रस्ताव के विषय मे बोलते हुए स्वामी जी ने आर्य समाज के अधिकारियो को यह आश्वासन दिया कि शीघ्र ही दिल्ली के उपराज्यपाल से मिलकर इन दुकानो को हटवाने का प्रयत्न करेंगे। इस सम्बन्ध मे अन्य हिन्दू सगठन भी सहयोग करेंगे।

समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या के अतिरिक्त अनेको गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थ।

मेरठ जिला आर्योपसभा के निर्वाचन मे माधवसिंह प्रधान तथा ब्रह्म सिंह मंत्री

मेरठ जिला आर्योपसभा का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—माधव सिंह (बड़ौत) उपप्रधान—शकुन्तला गोयल (मेरठ शहर आर्य समाज), कांति प्रसाद (मवाना), धर्मपाल (बडावत), बनवारी लाल भारती (सूरज कुड आर्य समाज) जिला मन्त्री ब्रह्म सिंह (छपरौली), जिला उपमन्त्री राजकुमार आर्य (टटीरी), श्रीमती सरोज (साकेत) विद्या सागर (सरधना), कार्यालय मन्त्री नन्द लाल पाहवा (बापरनगर-कार्यालय मन्त्री), जिला कोषाध्यक्ष—ओमप्रकाश जौहरी (मन्त्री शहर आर्य समाज) जे पी गोयल प्रचार मन्त्री।

उपमन्त्री शहर आर्यसमाज की ओर से अशोक सुधाकर ने भोजन व्यवस्था करायी तथा उपमन्त्री सोमप्रकाश ने कार्य सहयोग दिया।

उत्तर प्रदेश का आर्य समाज

(पृष्ठ २ का शेष

पूर्व जिलाध्यक्ष माधवसिंह ने बताया कि पहले आर्य शताब्दियो, ऋषि बोध सप्ताह मनाये गये जिसमे आर्य समाज का प्रचार भी होता था और एक एक रुपया बचाकर कोष बढाया जाता था, परन्तु अब आर्य समाज विपरीत दिशा मे है। प्रदेश मे खाने-पीने की राजनीति हावी तो है ही, साथ ही जिले मे भी यह विघटनकारी नीति हावी हो चुकी है। सच्चे कार्यकर्ताओ को नकारा जा रहा है। उन्होने कहा यदि पडित इन्द्रराज १ वर्ष से शैय्या पर रूग्णावस्था मे न होते तो देखें कैसे जिला मन्त्री स्योदान सिंह राजनीतिक प्रभाव मे आकर हावी हो पाते। परन्तु अभी सच्चे आर्य समाजी प० इन्द्रराज के इशारे पर आज भी पूर्ण शक्ति व नीति से कार्यरत हैं। जिन को तोडने वाले के हौंसले अब बुलन्द नहीं होगे बल्कि वे पस्त ही होगे। आर्य समाज पर राजनीति कदापि हावी नहीं होगी।

सभा को सभासद (शास्त्री नगर) कैप्टिन देवदत्त आर्य ने भी चुनाव प्रक्रिया पर मार्ग दर्शन किया।

चुनाव से पूर्व पत्रकार व शहर आर्य समाज सदस्य अन्तरग सभा जे पी गोयल ने आर्य समाजियों का उद्बोधन करते हुए एक सारगर्भित कविता पढ़ी जिसकी सर्वत्र सराहना की गयी।

परम दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का १०८ वां जन्म दिवस समारोह

२० सितम्बर रविवार को प्रात आठ बजे आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली मे परम दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का १०८वा जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर यज्ञ, सगीत प्रवचन एव श्रद्धाजलि के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। समारोह मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, लाला इन्द्र नारायण, प० महेन्द्र कुमार शास्त्री सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति लाला दीवानचन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालेंगे। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह मे सफल बनायें।

सूर्यदेव — मन्त्री
मूलचन्द गुप्त — प्रधान

आर्य समाजों के निर्वाचन

—हाडोती आर्य उप प्रतिनिधि सभा, प्रधान-श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, उप प्रधान-श्री पीताम्बर शर्मा श्री ओ३म प्रकाश मन्त्री श्री कवरलाल सुमन, कोषाध्यक्ष—रघुवीर जी।

—आर्य समाज जौनपुर, प्रधान-श्री नागनाथ जी सिद्धात भास्कर, मन्त्री सुरेन्द्र कुमार जी कोषाध्यक्ष-पन्नालाल सिद्धान्त रत्न।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग भीलवाडा (राज०) प्रधान—प० वेदव्रत शास्त्री मन्त्री—अशोक कुमार टोडावाल, कोषाध्यक्ष—भीमसिंह गहलौत।

—आर्य समाज हापुड, प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री-श्री राधारमन माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष—श्री आनन्दप्रकाश आर्य।

—आर्य समाज पुन्सीकर (रेवाडी), प्रधान-श्री ब्रह्मप्रकाश, मन्त्री-लालसिंह कोषाध्यक्ष-मनोहर लाल।

—आर्य समाज किशनगज (मिल एरिया) दिल्ली, प्रधान-डा० एस. एल. कामरा, मन्त्री-श्री चमनलाल मदान, कोषाध्यक्ष-श्री रामचन्द्र आमेठा।

—आर्य समाज मन्दिर कुबेरनगर, प्रधान-श्री रामनदास हिंडवाणी, मन्त्री-रतनलाल कृपाणी, कोषाध्यक्ष-सुन्दरदास अमितराव।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३-९-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U 93Post in N D.P.S.O.on 10, 11-9-1992

तांत्रिक के कहने पर भाई की बलि चढ़ा दी

नई दिल्ली, ३ सितम्बर। अपने बेटे को मौत से बचाने के लिए एक व्यक्ति ने तान्त्रिक की सलाह पर अपने भाई की हत्या कर दी। इस मामले मे पुलिस ने तान्त्रिक सहित चार व्यक्तियो को गिरफ्तार किया है।

उत्तर पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त दीपक मिश्र के अनुसार ३० वर्षीय जीवत राम की गला घोटकर हत्याकर दी गई थी। हत्या के बाद उसके भाई राधेकिशन झा, स्वर्ण कुमार तथा पवन कुमार ने उसे एक बोरी मे बन्द कर दिया और एक सूखे तालाब के निकट गड्ढा खोदकर दबा दिया। पुलिस ने शव को बरामद कर पोस्टमाटम के लिए भेज दिया है।

श्री मिश्र के अनुसार राधेकिशन झा के तीन बच्चे पन्द्रह दिनो के भीतर विभिन्न बीमारियो से मर गए थे। उसके दो अन्य बच्चे भी पिछले तीन वर्ष के दौरान मर चुके थे। इस सम्बन्ध मे उसने एक तान्त्रिक सूरज भगत से सलाह की, जिसने उसे बताया कि जीवत राम की मा ने जादू टोना कर दिया है। इसी कारण बच्चे मर रहे है। किसी व्यक्ति का बलि चढाकर ही इसे रोका जा सकता हैं। तब राधेकिशन ने जीवत राम की बलि चढाने का फैसला किया। इसी सम्बन्ध मे उसने श्रवण कुमार तथा पवन कुमार से मिल कर षडयन्त्र रचा। और राधेकिशन ने फासी लगाकर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद तीनो ने उसे दफना दिया और रेत से ढक दिया।

श्री दीपक मिश्र के अनुसार इस सम्बन्ध में किसी को कुछ पता नही चला। २८ अगस्त को गोकुलपुरी थाना मे जीवतराम के लापता होने की रिपोट लिखाई गई। जाच के दौरान आज श्रवण, पवन तथा राधेकिशन से पूछताछ की गई तो उन्होंने अपना अपराध कबूल कर लिया। बाद मे तान्त्रिक सूरज भगत को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हे अदालत मे पेश कर दिया गया है।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के उत्तर पूर्वी भारत के केन्द्रों का निरीक्षण

भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ १९६८ से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे उत्तर पूर्वी भारत के आदिवासी क्षेत्रो, उडीसा, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के वनवासी क्षेत्रो मे मानवीय सेवा सहायता का शानदार काम कर रहा है। पूर्वोत्तर भारत मे नागालैण्ड, दीमापुर, बोकाजान, सारूपत्थर डीफू जापडा जान आदि अनेक स्थानो पर इस समय स्कूल, छात्रावास तथा कुटीर उद्योग केन्द्र स्थापित हैं।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री वदव्रत महत्ता, मन्त्री श्रीमती प्रेमलता शास्त्री तथा श्रीमती ईश्वर रानी ७ सितम्बर १९९२ से २३ सितम्बर १९९२ तक पूर्वोत्तर भारत के केन्द्रो के निरीक्षण पर सघ के पूर्व महामन्त्री स्व० पृथ्वीराज शास्त्री के निधन के पश्चात प्रथम बार दयानन्द सेवाश्रम सघ के पूर्वोत्तर भारत के सयुक्त मन्त्री श्री लीलाबोरा के निमन्त्रण पर वहा गए हैं।

इन पदाधिकारियो के वहा जाने से सघ के कार्य मे और अधिक तेजी आएगी ऐसा अनुमान किया जाता है। आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० नारायणदास तथा आसाम के अन्य गणमान्य आर्य नेता भी गोहाटी से आगे इनके साथ जायेंगे।

श्री रासासिंह जी (सांसद) के पूज्य पिता जी का निधन

अजमेर (राजस्थान) से लोकसभा के लिये दूसरीबार निर्वाचित आर्य सासद तथा आर्य समाज अजमेर के उपप्रधान प्रो० रासासिंह के पिता श्री भूरासिंह का ७५ वर्ष की आयु मे नई दिल्ली के राममनोहर लोहिया होस्पीटल मे चिकित्सा करवाते हुए श्रावणी पर्व के दिन रात्रि मे देहावसान हो गया। श्री भूरासिंह अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड गये हैं। उनका अन्त्येष्टि सस्कार सासद के पैतृक निवास स्थान मे वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज अजमेर तथा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रो के लोग भारी सख्या मे सम्मिलित हुए।

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ प्र)

दो ईसाई युवकों ने वैदिक धर्म ... ...

देहरादून, २२ अगस्त। भारतीय जल सेना मे सेवारत श्री अगस्तीन जेम्स पुत्र श्री जयमोहनसिंह ने श्री पूर्णानन्द जी से वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण करके १८ अगस्त को स्वेच्छा से आर्य समाज मन्दिर, डाकपत्थर, जिला देहरादून मे प० प्रकाशचन्द्र जी के पौरोहित्य मे शुद्धि-सस्कार के बाद हिन्दू समाज मे प्रवेश पाया। तथा २० अगस्त को इसी स्थान पर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की शिक्षाओ से प्रेरित होकर पौडी गढवाल के कृषक युवक श्री डेनियल उपनाम पप्पू ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया। यह शुद्धि-सस्कार भी प० प्रकाशचन्द्र जी ने कराया। शुद्धि के बाद श्री डेनियल का नाम दिनेश रखा गया।

—देवदत्त शास्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला देहरादून

उपनयन एवं वेदारम्भ सस्कार

श्रावणी के पावन पर्व पर 'ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर वेदोपदेश महाविद्यालय मे आचार्य जी द्वारा उपनयन तथा वेदारम्भ सस्कार सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर कुलाधिपति श्री प० ब्रह्म प्रकाश शास्त्री तथा सस्थापक और अधिष्ठाता स्वामी वेदानन्द जी ने ब्रह्मचारियो को आजीवन श्री सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार के लिये प्रेरणा व आशीर्वाद दिया। अन्य आनेवाले ब्रह्मचारियो का सस्कार अगले मास किया जायेगा अत प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी शीघ्र सम्पर्क करे। पत्र-व्यवहार का पता —

स्वामी वेदानन्द वैदिक
ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर
वेदोपदेशक विद्यालय
ब्रजघाट जि० गाजियाबाद (उ० प्र०)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अङ्क ४४) दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ आश्विन कृ० ८ सं० २०४९ २० सितम्बर १९९२

महर्षि दयानन्द उवाच

● मनुष्य को उचित है कि काम से अर्थात् झूठ से कामना सिद्ध होने के कारण से व निन्दास्तुति आदि के भय से भी धर्म का त्याग कभी न करे और न लोभ से चाहे झूठ (और) अधर्म से चक्रवर्ती राज्य भी मिलता हो, तथापि धर्म को छोडकर चक्रवर्ती राज्य को भी ग्रहण न करे।

● सब जगत् की प्रतिष्ठा धर्म ही है। धर्मात्मा का ही लोक मे विश्वास होता है, धर्म से ही मनुष्य लोग पापो को छुडा देते हैं, जितने उत्तम काम हैं वे सब धर्म मे ही लिए जाते हैं, इसलिए सबसे उत्तम धर्म को ही जानना चाहिए।

मन्दिर निर्माण में आने वाली बाधाओं का आर्यसमाज कड़ा मुकाबला करेगा।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

रामजन्म भूमि पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति

गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा सस्वर वेदपाठ

अयोध्या, ११ सितम्बर।

विश्व चर्चित रामजन्म भूमि मन्दिर परिसर मे चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति विशेष समारोह के साथ सम्पन्न हुई, गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के २२ विद्वान् ब्रह्मचारियों के सस्वर वेदपाठ से वायुमण्डल गुञ्जायमान हो उठा। स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने इस यज्ञ मे ब्रह्मा के पद को सुशोभित किया।

समापन समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मुख्य अतिथि थे। अपने उद्बोधन मे स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यो की चर्चा करते हुए कहा कि स्वामी जी ने हिन्दू जाति और इस राष्ट्र की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर किया था और आज राम जन्म भूमि विवाद के साथ हिन्दू जाति और इस राष्ट्र की प्रतिष्ठा का प्रश्न जुड गया है। इसलिये यदि आवश्यकता पड़ी तो अयोध्या मे राम मन्दिर निर्माण के मार्ग मे आने वाली किसी भी बाधा का आर्य समाज पूर्ण शक्ति के साथ मुकाबला करेगा। स्वामी जी ने कहा कि मुझे विश्वास है कि वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री नरसिंहराव राम मन्दिर निर्माण की बाधाओ को दूर करने का गम्भीर प्रयास करेंगे।

दूसरी तरफ स्वामी जी ने मुस्लिम समुदाय की आपत्तियों को निराधार बताते हुये कहा कि जिस स्थान पर पिछले ४० से अधिक वर्षों से नमाज अदा न की गई हो और जहां दीवारो और खम्भों मे मूर्तियां खुदीं हो वह स्थान मस्जिद किस प्रकार हो सकता है।

स्वामी जी ने मुस्लिम समुदाय का आह्वान करते हुये कहा कि उन्हे उदारता पूर्वक इस स्थान को हिन्दुओ को सोप देना चाहिये।

स्वामी जी ने आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन की चर्चा करते हुये कहा कि वर्तमान परिस्थितियो मे समस्त हिन्दू समाज को राष्ट्र रक्षा के लक्ष्य को ध्यान मे रखकर तथा पाखण्डो और कुरीतियो को छोडकर आर्य समाज का शुद्धि कार्यों मे सहयोग करना चाहिये।

समारोह मे बोलते हुये विश्व हिन्दू परिषद् के महामन्त्री श्री अशोक सिंहल ने महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के कार्यों की भूरि भूरि प्रशसा करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू जाति को जागृत किया है, उनकी सेवाओ का शब्दो मे वर्णन नही किया जा सकता है। यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती न आते तो मै नही कह सकता कि आज हिन्दू जाति की क्या अवस्था होती? (शेष पृष्ठ ११ पर)

पश्चिम मिडलैंड में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

पश्चिम मिडलण्ड, ९ सितम्बर,

आर्यसमाज पश्चिम मिडलैण्ड की मासिक पत्रिका "आर्यन वायस्" के द्वारा सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे यह सूचना दी गई है कि गत मास पश्चिम मिडलैण्ड नगर मे बृहद् गायत्री महायज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेको यज्ञ वेदियो पर ५६ परिवारों ने बैठकर बडी श्रद्धा के साथ गायत्री मन्त्र के पाठ के साथ आहुतिया दी। प्रात १० बजे यह यज्ञ प्रारम्भ हुआ, जिसकी पूर्णाहुति मध्याह्न १-४५ पर सम्पन्न हुई। इस यज्ञ मे श्री कृष्ण चोपडा तथा श्री जी० चन्द्रा जी ने ब्रह्मा का आसन ग्रहण किया। श्रीमती विभा कोली ने गायत्री महायज्ञ के उद्देश्य को बताते हुये उपस्थित जन समुदाय का मार्ग दर्शन किया। इस कार्यक्रम का समापन श्री शुक्ला जी के सुरीले भजनो तथा श्री चोपडा जी के उत्साह वर्धक वैदिक प्रवचन के साथ सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम मे लगभग ३०० स्त्री पुरुषो ने भाग लिया तथा प्रत्येक महानुभाव ने यथायोग्य आर्यसमाज के कार्य को जारी रखने के लिये आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

सम्पादकीय

साधुओं घर से निकलो ? आओ काम करो ?

साधु और संन्यासी गणों का जीवन आध्यात्मिक भावना की उपज है, जो मोक्ष की सिद्धि के लिये आवश्यक रूपेण त्याग पर बल देता है। सदा ही त्याग भावना का उदय आध्यात्मिक प्रेरणा से होता है अथवा अन्य किसी भावना से भी वैराग्य की वृत्ति जागती है। जैसे तुलसीदास को ?

परन्तु यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि देश मे साधुओं और संन्यासियों की कमी नहीं है बड़े-बड़े मठाधीशों के अतिरिक्त जो राजसी जीवन व्यतीत कर रहे हैं इसके अलावा हजारों साधु ऐसे भी हैं जो देश मे घूमकर जनसाधारण के दान पर आश्रित हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो कार्य करते हैं पर त्याग-भाव के बिना अपने घर बसाने व सजाने में व्यस्त हैं।

अब चातुर्मास बीत रहा है सांप चातुर्मास में बिलों से बाहर आ जाते हैं और फिर जाड़ों मे बिलों मे चले जाते हैं ?

सन्यासी बरसात में बिलो में रहता है फिर बाहर निकल कर भ्रमण करता है। साधुओं के विविध बहुसंख्यक सम्प्रदाय हैं और आत्मसिद्धि के उनके तौर तरीके उपाय भी विविध प्रकार के हैं। समाज में सभी प्रकार के साधु-सन्तों की मान्यतायें भी हैं। यदि देखा जाये तो इनमें से लोगों की दृष्टि में अनाधिकारी साधु भी हैं उनकी भी मान्यतायें हैं जब कि वे समाज मे मान-सम्मान के वास्तविक अधिकारी नहीं हैं। ऐसे साधु-सन्यासियों की गणना अत्यधिक है।

प्रमाण रूप में ऐसे ईमानदार साधुओं की गणना है तो कम, परन्तु सन्मार्ग की प्रेरणा देने मे भारतीय सन्तों का विशेष योगदान रहा है।

इस कोटि में—

जगद्गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस आध्यात्मिक विजय के प्रतीक हैं।

मुगलो के विरुद्ध मराठों को विद्रोह की प्रेरणा साधुओं से ही प्राप्त हुई थी १८५७का सन्यासी द्वारा विद्राह कराना कल की ही तो बात है। आज भी यदि सन्यासी जागरूक होकर घर से निकल पड़ें तो क्या समाज मे जागृति नहीं आ सकती है।

स्वामी दयानन्द को प्रेरणा मिली गुरुवर विरजानन्द से और गुरुवर को मिले स्वामी पूर्णानन्द जी जिन्होंने स्वामीजी को सन्यास की दीक्षा दी थी। उसी परम्परा से निकले—

१—स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज—जो अध्यात्म व शिक्षा क्षेत्र में तथा राजनीति में नया मोड़ दे गये।

२—दूसरे स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती म० हंसराज, पं० लेख राम जैसों ने घर-बार का मोह छोड़कर समाज हित में अपनी महान् आहुति दी थी।

इस परम्परा मे एक स्वस्थ परम्परा सन्यासियों-साधुओं व वीतराग-वैरागियों ने दी। जिससे क्षेत्रों में जागृति आई और उनमें रचनात्मक कार्य दिखाई देने लगे।

मेरा कहना यह है कि—

मठों-मन्दिरों और घर-गृहस्थी का मोह छोड़कर एक विशाल दयानन्दी योजना बनाकर निकल पड़ो। असम्भव क्या चीज है। उसे सम्भव बनाओ और यह शिकायत मत करो मुझे सम्मान ही नहीं मिला, मुझे किसी ने पूछा नहीं ? अरे दयानन्द को किसने पूछा था ? आप काम करने से पहले सम्मान चाहते हो ? सम्मान समाज करेगा, आप इसके योग्य बनो ?

जर-जोरू जमीन के ऐश्वर्य का मोह छोड़कर मैदान मे उतरो ? और समाज के पुनर्निमाण के कार्य में योगदान दो। यदि साधुओं की यह प्रेरणा विविध बुद्धिवादियो को मिल जाये तो आज राष्ट्र से विघटन की प्रवृत्ति, धर्म परिवर्तन का डिमडिम नाद, सम्प्रदायिकता को मिटाना और पिछड़े वर्ग को सेवा का व्रत लिया जाये, निस्वार्थ सेवियों की सेना सगठित की जाय। जैसे—

बिनोवा जी ने त्याग भाव से देश का परिभ्रमण करके भूमि-दान, ग्रामदान, बुद्धिदान जैसे कार्य कर बेकारों को काम दिया. डकैतों को रास्ता दिखाया और स्वयं सबसे अलग ही रहें।

आर्य समाज एक जागरूक प्रहरी है। इसकी जिम्मेदारी अधिक है सन्यासियों ? चातुर्मास बीत चुका है अब मठ व मन्दिरों का मोह त्याग कर भूली-भटकी जनता का मार्ग प्रशस्त करो।

समय-समय पर आने वाले सकट काल में जब यह वीतराग बनें साधु जनता की सेवा मे नहीं आयेंगे तो जनता इन्हें माफ नहीं करेगी। समाज सेवकों मे जो विशेषतायें होनी चाहिये।

वह यदि हममें नही है तो क्यों सन्यास का ढोंग रचते हो कहीं-कहीं पर सीधे-साधे गैरिक वस्त्रो वाले साधु इन पढ़े-लिखों से ज्यादा काम करते है। यदि कोई भी योजना हाथ में ले ले तो काम होगा ही। यदि हम अन्य मतावलम्बी सन्यासियों की शिकायत न करके केवल आर्य सन्यासी हमारे भगव वस्त्रधारी ग्रामीण जनों के मध्य काम करने और उनकी सेवा करने का व्रत लें तो सहज ही जागृति उत्पन्न हो सकती है। साथ ही जनता में श्रद्धा के भाजन भी बन सकेंगे।

विगत समयो मे देखा गया कि समाज के संकटों में यह साधु बाहर निकल र नही आयें। जैसे—

१—गढ़वाल भूकम्प पीड़ित सहायता कार्य में।
२—गुरुकुलों की शिक्षा की उन्नति में आगे आना।
३—मीनाक्षीपुरम् के साथ-साथ सारे देश में एक आग लगी, उसे सुधारने।
४—बढ़ते हुए अराष्ट्रीय, अनैतिक कार्यों के सुधार क्रम में।
५—दहेज, शराब, जलती कन्याओं के उत्पीड़न में।

ऐसी अनेक ज्वलन्त समस्यायें मुंह फैलाये खड़ी हैं यदि हमारा सन्यासी काम को हाथ में लेकर आगे आयेगा तो—

समाज में श्रद्धा के पात्र बन सकते हैं न कि समाज में भार बनेंगे।

अतः आर्य सन्यासियों उलाहना नहीं, आग्रह पूर्वक निवेदन है माया-मोह छोड़कर समाज में उतरो—

साधुओं के लिये बहुत काम है।

पृथक झारखंड राज्य बनने से अनेक नई समस्यायें खड़ी होगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव को एक विशेष पत्र लिखकर "झारखण्ड समस्या" राष्ट्रीय हित को ध्यान मे रखकर तथा सावधानी पूर्वक सुलझाने का आग्रह किया है। स्वामी जी ने अपने पत्र मे लिखा है कि अलग झारखण्ड की माग के पीछे ईसाई मिशनरी कार्य कर रहे हैं। उन्होने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यो मे राजनीतिक सत्ता हथियाने के बाद अब विदेशी ईसाई मिशनरी बिहार, उड़ीसा और मध्य प्रदेश के बनवासी क्षेत्रो को मिलाकर भारत के मानचित्र मे एक विशाल ईसाई राज्य की स्थापना के प्रयत्न में लगे हुये है, ताकि भारत की राजनीति को वह पूरी तरह से प्रभावित कर सकें। स्वामी जी ने कहा कि इस मामले की तह मे जाकर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है।

- स्वामी जी द्वारा प्रधानमन्त्री को लिखा गया पत्र अविकल रूप से अगले अंक मे प्रकाशित किया जायेगा।

चीन से एक चौंकाने वाला निमन्त्रण

—मधुसूदन आनन्द—

यह खबर काफी चौंकाने वाली है कि साम्यवादी चीन ने धुर दक्षिणपंथी मानी जाने वाली भारतीय जनता पार्टी को नवम्बर मे अपने यहा आने का निमन्त्रण भेजा है। इस निमन्त्रण को यह कहकर महत्वहीन साबित नही किया जा सकता कि चीन ने तो कांग्रेस, जनता दल मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को ही नही तेलुगू देशम जैसी छोटी और क्षेत्रीय पार्टी तक को निमन्त्रित किया है। कुछ लोग यह भी कह सकते है कि चीन तो रिटायर फौजी अफ़सरो की एसोसियेशन को भी निमन्त्रण भेज रहा है, इसलिये इसमे चौंकाने वाली बात क्या हुई। मगर थोडा गहराई मे जाकर देखें तो इसमे चौकाने वाली बात है।

भारतीय जनता पार्टी की चीन के बारे मे नीति सुस्पष्ट है। वह इस बात पर जोर देती रही है कि चीन ने हमारी जिस जमीन पर कब्जा किया हुआ है उससे उसे तत्काल हटना होगा। तिब्बत के प्रश्न पर भी उसका दृष्टिकोण साफ है और वह दलाई लामा की इस माग का समथन करती है कि तिब्बत एक स्वतन्त्र देश होना चाहिए। यह बात अलग है कि जनता पार्टी की सरकार मे शामिल तत्कालीन भारतीय जनसघ घटक के वरिष्ठ नेता और विदेश मन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी तिब्बत को चीन का अविभाज्य हिस्सा कहकर शीर्षासन करने लगे थे। तब उनकी निश्चय ही कुछ सीमाए और विशेषताए रही होगी। लेकिन उनकी चीन यात्रा के दौरान ही जब लाल फौज वियतनाम को सबक सिखाने के लिए कूच कर गई तो उन्होंने यात्रा बीच मे ही छोड अपना सार्थक विरोध दर्ज करा दिया था। इससे साफ हो गया था कि अटल बिहारी वाजपेयी स्टैंड लेना जानते है। सवाल यह है कि फिर उसी जनसघ के नये सस्करण भारतीय जनता पार्टी के नेताओ को चीन क्यो न्यौता दे रहा है ?

भारतीय जनता पार्टी की निगाह से देखे तो कह सकते है कि चीन ने प्रमुख विपक्षी दल के रूप मे उसके महत्व को स्वीकार किया है। पर सत्तर के दशक मे भी मध्य प्रदेश हिमाचल और राजस्थान मे भाजपा या भूतपूर्व जनसघ की सरकारे थी लेकिन तब चीन ने भाजपा का ऐसा आकलन नही किया था। चीन शायद अन्दर ही अन्दर यह स्वीकार करने लगा है कि भारत की भावी राजनीति म भाजपा और भी अधिक निर्णायक साबित हो सकती है अत इस पार्टी के साथ अभी स सवाद कायम कर लेना चाहिए। भाजपा इस निमन्त्रण को स्वीकार करेगी या नही यह समय बतलाएगा। वैसे आज की कूटनीति का तकाजा यह है कि ऐसे निमन्त्रण स्वीकार किए जाए और वहा जाकर अपना पक्ष भी मजबूती के साथ पेश किया जाए। चीन और भारत की दोस्ती से न केवल दोनो देशो को फायदा है, बल्कि उन तमाम देशो का भी इससे मनोबल बढेगा, जो नई बन रही अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था मे अमेरिका और उसके पश्चिमी मित्रो द्वारा सताये गये हैं।

चीन निश्चय ही इस आयाम को नही देख रहा होगा। वह सिर्फ यह जिज्ञासा शांत करना चाह रहा होगा कि अगर भाजपा भारत मे सत्ता मे आई तो उसे चलाने वाले लोगो की नीति क्या होगी। पर इस निमन्त्रण मे निश्चय ही यह शंका भी छिपी है कि भाजपा के सत्ता मे आने पर कहीं भारत-चीन सम्बन्ध खराब तो नहीं हो जायेंगे। कूटनीति मे कोई भी स्थाई मित्र या शत्रु नहीं होता। उसमे प्रधान होते हैं—राष्ट्रीय हित और उन्ही हितों को मद्दे नजर रखकर पार्टिया काम करती है। चीन का दूसरा डर यह है कि आने वाले समय मे कही अमेरिका तिब्बत मे मानवाधिकार का प्रश्न उठाकर उस को तोडने की कोशिश न करे। चीन ने इधर अपनी भारत नीति मे हल्का सा विक्षेप किया है और वह कश्मीर का मसला शिमला समझौते के तहत हल करने का हामी है। उसके मन मे कही यह बात भी है कि खाडी के देशो पाकिस्तान और भूतपूर्व सोवियत सघ के मुस्लिम बहुल गणतन्त्रो का एक परिसघ न बन जाए। हमारे सामने हमारी कहने वाला ईरान आज कश्मीर को एक इस्लामी प्रश्न बना रहा है और अफगानिस्तान मे लडाई बन्द करने की अपील की जा रही हैं ताकि आस पास शान्ति रहे और परिसघ के गठन मे कोई बाधा न हो। चीन अपने सीक्यांग प्रान्त की मुस्लिम समस्या से वाकिफ है। उसे यह एहसास भी है कि ७० वर्षो के कठोर अनुशासन के बावजूद साम्यवाद धार्मिक आग्रहो को निर्मूल नहा कर पाया है सोवियत सघ नामक साम्यवाद के सशक्त दुर्ग के ढहने के साथ ही ये आग्रह अपने बिलो से बाहर आ गये हैं। पूर्वी यूरोप के देशो और युगोस्लाविया जैसे गुट निरपेक्ष देश म भी आज धार्मिक आग्रह प्रबल है और गृहयुद्ध का एक कारण बने हैं।

दूसरी ओर यह भी लगता है कि चीन एक विशुद्ध कूटनीतिक अभ्यास के तहत भाजपा को बुला रहाहै। आज उसके राष्टीय हित इतने प्रबल है कि वह उत्तरी कोरिया को उतनी तरजीह न देते हुए दक्षिण कोरिया के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध बना रहा है और उस जापान के सम्राट को अपने यहा निमत्रित कर रहा है जिसके लिए चीनी समाज मे घृणा भरी हुई है क्योकि विश्व युद्ध के दौरान जापानी सेना ने चीन मे भयानक अत्याचार किये थे। चीनी मनोविज्ञान एसे सम्राट से पहले खेद व्यक्त करवाना चाहता होगा। लेकिन सरकार ने अपनी ओर से कोई शर्त नही जोडी है। चीन को ताइवान से डर नही उसे डर अमरिका से है जो ताइवान को एफ १६ विमान दे रहा है। चीन चाहता है कि उसके चारो ओर शाति रहे ताकि वह निर्विवाद अपनी मास पेशिया मजबूत कर सके।

जो भी हो अगर भाजपा ने चीन जाने का फैसला कर लिया तो फिलहाल सबसे ज्यादा आघात कम्युनिस्ट पार्टियो को लगेगा जो इस सवाल का जवाब अपने लाखो समर्थको को नही दे पाएगी कि भगवे झण्डे मे ऐसा क्या है कि लाल झंडा फहरा लहराकर उसे पुकार रहा है।

(नवभारत टाइम्स ९ सितबर)

सभी विश्वविद्यालयों मे संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था होनी चाहिए

दिल्ली ७ नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने जवाहरलाल नहरू विश्वविद्यालय तथा इन्दिरा गाधी ओपन विश्वविद्यालय नई दिल्ली के कुलपतियो को विशेष पत्र लिखकर अनुरोध किया हैं कि अपने अपन विश्वविद्यालयो मे संस्कृत के अध्ययन के लिए उचित व्यवस्था करावें।

स्वामी जी ने कहा देव वाणी संस्कृत अनेक भाषाओ की जननी है। हमारे प्राचीनतम वेद तथा वेदाग सब ग्रन्थ संस्कृत मे ही है। वर्तमान वैज्ञानिक युग मे पाश्चात्य विद्वानो ने भी कम्प्युटर प्रणाली के विकास के लिए संस्कृत भाषा को सबसे अधिक उपयोगी माना है। इससे यह सिद्ध होता है कि संस्कृत भाषा अनेक भाषाओ की सयोजक है जिसमे प्राचीन ज्ञान विज्ञान का विशेष भण्डार है।

स्वामी जी ने भारत सरकार से अनुरोध किया है कि उन तमाम विश्वविद्यालयो मे जहा संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था नही है यह व्यवस्था सुलभ कराय।

गौगांवा खरगौन केउपद्रवों पर भारी चिंता

दिल्ली ३ सित०। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत से मिली जानकारी के अनुसार मध्य प्रदेश का गौगावा क्षेत्र जिला खरगौन बहुत सवेदनशील क्षेत्र बन गया है। मुसलमानो द्वारा यहा बराबर किए जा रहे साम्प्रदायिक उत्पात से हिन्दुओ की जान और माल की भारी क्षति की जा रही है। गत ८ जनवरी १९९२ को यहा मुसलमानो ने हिन्दुओ की अनेक दुकानो और मकानों को लूटने के अतिरिक्त ६ हिन्दुओ को एक मकान मे बन्द करके जिन्दा जला दिया था। गत वर्ष १६ मई को भी इसी तरह की वारदात की गई थी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने मुख्यमन्त्री श्री सुन्दरलाल पटवा को विशेष पत्र लिखकर इस क्षेत्र के दगा पीडित लोगो को प्रशासन से अधिक सहायता और मुआवजा देने के अतिरिक्त सुरक्षा के लिए उचित व्यवस्था करने की माग की है।

मुख्यमन्त्री के सचिव सी०आई०ए० एजेंट ?

क्या उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री के निजी सचिव नृपेन्द्र मिश्र का अमरीकी खुफिया विभाग सी०आई०ए० से कोई गहरा सम्बन्ध है ? प्रदेश के राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में इस बात की खासी चर्चा है। इसे बल मिला १९ जनवरी ९२ की एक घटना से। इसी दिन नृपेन्द्र मिश्र अमरीकी दूतावास की एक महिला अधिकारी के साथ उन्ही की सी०डी० कार से खुर्जा आए थे और कुछ खरीदारी करके शाम को वापस चले गए। इस गुपचुप दौरे की पुष्टि पुलिस लाग बुक में दर्ज ब्यौरे से की जा सकती है जिसे श्री मिश्र के बुलन्दशहर और खुर्जा दौरे के दौरान दर्ज किया गया। जब कि पुलिस को सचिव के दौरे की अधिकारिक सूचना नही प्राप्त थी।

एक अन्य घटना है १० अप्रेल, ९२ को वाराणसी के दौरे की जिसमे वाराणसी के स्थानीय बड़े व्यापारी नन्हे खान की मर्सिडीज कार का उपयोग किया गया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जनवरी मे खुर्जा मे जिस अमरीकी महिला को श्री नृपेन्द्र मिश्र के साथ देखा गया था वही महिला वाराणसी मे भदोही और विन्ध्याचल दौरेमे भी साथ थीं। दो दिनो तक साथ-साथ रहने के बाद १२ अप्रल को वह अमरीकी महिला बाबतपुर हवाई अड्डे से दिल्ली के लिए उड़ चली और उसी दिन श्री मिश्र वाराणसी से लखनऊ कार से लौट आए।

अमरीकी महिला के साथ खुर्जा, वाराणसी, भदोही, विन्ध्याचल के दौरे से श्री मिश्र की गतिविधियो के बारे मे सन्देह व कई सवाल पैदा होते हैं। मुख्यमन्त्री के निजी सचिव,को अमरीकी दूतावास की सी०डी० कार में अमरीकी महिला के साथ संवेदनशील जिलों मे गुपचुप तरीके से दौरा करने की क्या जरूरत आ पड़ी थी ? क्या दूतावास की कार मे महिला के साथ विभिन्न क्षेत्रों मे जाकर श्री मिश्र ने सरकारी कर्मचारियों के लिए बनी आचार संहिता का उल्लंघन नही किया ? क्या श्री मिश्र ने प्रदेश के संवेदनशील क्षेत्रों के दौरे के समय अमरीकी महिला के साथ रहकर अपने विशेषाधिकारो का उपयोग महिला की सुरक्षा के लिए नहीं किया ? क्या श्री मिश्र राज्य सरकार के प्रतिनिधि के रूप मे अमरीकी महिला के साथ दौरे पर गए थे, अगर नहीं तो वे किस हैसियत से उनके साथ थे ?

यदि सरकारी प्रतिनिधि के रूप में श्री मिश्र अमरीकी महिला के साथ गए थे तो उन्होंने अमरीकी दूतावास की सी०डी० कार तथा वाराणसी मे एक व्यापारी की निजी मर्सिडीज कार का उपयोग क्यों किया ?

श्री नृपेन्द्र मिश्र अपनी गतिविधियों से आज पहली बार चर्चित नही हुए हैं। येन-केन प्रकारेण मुख्यमन्त्री के खास बनने मे माहिर श्री मिश्र १९७६-७७ मे सहकारिता विभाग मे विशेष सचिव और रजिस्ट्रार थे। १९७७ में जनता पार्टी के शासन के दौरान वे मुलायम सिंह के नजदीक आए जिसके फलस्वरूप जब १९८९ मे मुलायमसिंह मुख्यमन्त्री बने तो उन्होने निजी सचिव बनाया। ऐसा कहा जाता है कि मुलायमसिंह के कार्यकाल के दौरान श्री मिश्र ने नजूल जमीन के पट्टे तथा आबकारी ठेके से धन अर्जित कर मुलायम सिंह को दिया।

मुलायम सिंह के इस्तीफा देने के बाद नृपेन्द्र मिश्र को यह आभास हो गया कि पुनः श्री यादव मुख्यमन्त्री नहीं बनेंगे, तो उन्होंने झूठी अफवाहे फैलाकर यह प्रचारित कराया कि श्री मिश्र से मुलायम सिंह नाराज हैं और उन्हें दण्डित करने का कुचक्र चलाया है।

दरअसल, नृपेन्द्र मिश्र की प्रताड़ना नहीं की जा रही थी बल्कि श्री मिश्र की प्रदेश मे सत्तारूढ़ होने वाली भाजपा सरकार में महत्त्वपूर्ण पद, प्राप्त करने की यह एक योजना थी।

ईमानदारी का ठप्पा लगाए और मुलायमसिंह यादव से प्रताड़ित अधिकारियों पर सरकार की कृपा होगी ही, इसी सम्भावना पर यह अफवाह फैलाई गई। इसी कारण नृपेन्द्र मिश्र वर्तमान मुख्यमन्त्री के निजी सचिव का महत्त्वपूर्ण पद हासिल करने में कामयाब हुए। (पाञ्चजन्य १३ सितम्बर ९२ से साभार)

विश्वभर में वैदिक संस्कृति फल-फूल रही है

नई दिल्ली। डा० प्रशान्तकुमार वेदालंकार ने 'वेदों में काम तत्व' विषय पर आयोजित एक गोष्ठी में कहा कि सम्पूर्ण विश्व में वैदिक संस्कृति फलफूल रही है। डा० प्रशान्त हाल ही में दक्षिण एशियाई देशों की यात्रा कर लौटे हैं। कार्यक्रम का आयोजन डा० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति की ओर से किया गया था। समारोह की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो० वाचस्पति उपाध्याय ने की।

जम्मू विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० राम प्रताप वेदालंकार ने वेदों के सामयिक महत्व पर विस्तार से चर्चा की और कहा कि वेदों का हमारी संस्कृति पर विशेष महत्व है।

इस अवसर पर डा० सत्यदेव चौधरी डा० नगेन्द्र, दयानन्द वत्स, रामदत्त भारद्वाज और के०के० मित्तल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समारोह मे डा० प्रहलाद कुमार की स्मृति मे दिल्ली विश्वविद्यालय की चार छात्राओं को छात्रवृत्तियां दी गईं।

इस्लामी समस्या क्या होती है

हालांकि ईरान के राष्ट्रपति अली अकबर हाशमी रफसंजानी ने अपनी पाकिस्तान यात्रा के दौरान भारत के खिलाफ कोई कड़ा वक्तव्य न देकर पाकिस्तान को निराश तो किया लेकिन कश्मीर को इस्लामी समस्या' करार देकर उन्होने निश्चय ही भारत और ईरान के बीच बढ़ते सम्बन्धोंमे अविश्वास के बीज बो दिएहैं। पाकिस्तानी संसद को सम्बोधित करते हुए जहां एक ओर वे प्रभुत्वकारी शक्तियों के खिलाफ एकजुटताका उद्घोष कर रहेथे वही कश्मीरको इस्लामी समस्या करार देकर वे इस एकजुटता को स्वयं ही ध्वस्त भी कर रहे थे। यह तो रफसंजानी ही जाने कि इस्लामी समस्या क्या होती है और वे कौन सी इस्लामी शक्तियां हैं जो इस तरह की समस्या को हल करने का सामर्थ्य रखती हैं। जहा तक भारत का सवाल है, कश्मीर शुद्ध रूप से एक आन्तरिक समस्या है और इससे बढ़कर यह पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद की समस्या है। अगर कश्मीर पर भारत पाकिस्तान से कोई बात करता है तो केवल इसलिए कि वहा आतंकवाद को पाकिस्तान समर्थन और मदद दे रहा है।

रफसंजानी को कश्मीर को इस्लामी समस्या करार देने से पहले यह भी साफ करना चाहिए था कि अफगानिस्तान, इराक, बोस्निया, अल्जीरिया, सोमालिया जैसे अनेक मसलों को वे इस्लामी मसलों के रूप में कैसे श्रेणीबद्ध करते हैं। अफगानिस्तान और इराक मे जब शियाओं के दमन का सवाल आता है तो ईरान के लिए यह 'इस्लामी' नहीं 'शिया' मसला हो जाता है और तब वह इराक के खिलाफ 'प्रभुत्ववादी' अमेरिका की कार्रवाइयों पर प्रसन्न होता है, वही अफगानिस्तान मे जब पाकिस्तान-परस्त हिकमतयार के मुजाहिदीन शियाओ पर अत्याचार करते हैं तो वह पाकिस्तान से नाराजगी बताता है। (शेष पृष्ठ १० पर)

अनादि सत्ताएं और ऋषि दयानन्द

ब्रह्मचारी प्रदीपार्य नैष्ठिक, मथुरा

"आर्य मित्र" साप्ताहिक, लखनऊ का श्रावण शुक्ला ११ सं० २०४९ तदनुसार ९ अगस्त १९९२ का अंक पढ़ा । इसमे श्री प्रो० रत्नसिंह जी अधिष्ठाता उपदेश विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र के लेख "सत्यार्थ प्रकाश मे सृष्टि विषयक प्रतीयमान विरोध" पर संक्षेप मे मेरा निम्नानुसार विचार है । यद्यपि यह विषय अधिकारी विद्वानो के विचार का है पुनरपि मैं अनाधिकार चेष्टा कर रहा हू -

प्रोफेसर जी के लेख का निष्कर्ष है—ऋषि दयानन्द दृढता से ईश्वर, जीव एवं प्रकृति के अनादित्व रूपी त्रैत को स्वीकार करने के बाद भी काल, आकाश और परमाणुओ को अनादि मानकर अपनी ही मान्यता को अस्पष्ट कर बैठे हैं अथवा वदतो व्याघात दोष सिद्ध हो रहा है ।

महोदय, यो तो आचार्य कणाद के अनुसार तो दिशा भी नित्य है । और इस पर भी सभी एक मत होगे कि वेद भी नित्य है तथा वेद सृष्टि निर्माण का सिद्धान्त है तथा सृष्टि उसका प्रयोगात्मक रूप । तब तो ईश्वर जीव, प्रकृति, काल, आकाश, परमाणु और वेद आदि कई अनादि सत्ताए सिद्ध होती हैं । आचार्य कपिल दिशा और काल को "दिक्कालावाकाशादिभ्य ॥ सा० २/१२ कह कर आकाश मे ही समाहित कर देते हैं । वेद स्वयं ईश्वर मे है ही। अब आकाश और परमाणु शेष रह जाते हैं । प्रथम आकाश पर ही विचार करते हैं—

आचार्य कणाद आकाश को सृष्टि का समवाय अथवा असमवाय कारण दोनो रूपो मे अस्वीकार करते हैं । "निष्क्रमण प्रवेशनमित्याकाशस्य लिंगम्" । वै०द० ६८ ॥ से स्पष्ट करते हैं कि आकाश मात्र अवकाश है । ऋषि भी इसे नित्य मानकर अवकाश मात्र ही बतलाते हैं । प्रकृति,ईश्वर और जीव आकाश मे ही स्थित हैं । वर्तमान के भौतिक विज्ञानी आकाश को ईथर नाम देकर उसे सम्पूर्ण अवकाश को भरने वाला पदार्थ विशेष बतलाते हैं । इसी प्रकार आकाश ईथर तो नही बल्कि प्रकृति रूपी कारण- द्रव्य अवश्य ही सम्पूर्ण अवकाश रूपी आकाश को पूर्णत भरे रहता है अथवा अवकाश किंचिन्मात्र भी नही रहता । अत व्यवहार मे आकाश की उत्पत्ति बाद मे होती है । इसी कारण ऋषि ने त्रैतवाद पर विचार करते समय 'आकाश" की उपेक्षा कर दी है । मेरे विचार से सृष्टि निर्माण मे आवश्यक कारणो मे आकाश, काल और दिशा का विशेष महत्व रहता भी नही । लोक मे व्यवहृत होता है कि घट का कारण कुम्भकार, मृतिका, चक्र दण्ड एवं सूत्रादि हैं । परन्तु कुम्भकार की इच्छा आवश्यकताए, उसका खाना पीना उठना बैठना श्वास आदान-प्रदान, काल आकाश दिशा मृतिका और जल लाने का उद्योग करना उसे गूथना, पकाने मे लकडी, अग्नि जलाना अग्नि जलाने हेतु उपयोग मे लाए गये सभी साधन दियासलाई आदि, फिर उसके कारण आदि कितने ही कारण हैं जिनमे से एक के भी अभाव मे घटनिर्माण सम्भव नही । इसी प्रकार की भाषा मे ऋषि ने कहा—जगत् की उत्पत्ति से पूर्व परमेश्वर, प्रकृति, काल, आकाश और जीवो के अनादि होने से इस जगत् की उत्पत्ति होती है । यदि इसमें से एक भी न हो तो जगत् भी न हो । (सत्यार्थ प्रकाश)

अब यदि "तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः (तैत्त०उ०ब्र०) अथवा "पञ्च तन्मात्रेभ्यः स्थूल भूतानि" १ २६/१ सांख्य से आकाश की उत्पत्ति बहुत बाद में सिद्ध होती हो तो मेरे विचार से अहंकार की उत्पत्ति से पूर्व व्यवहार में आने योग्य व्यक्त करने योग्य आकाश द्रव्य की कल्पना उचित नहीं । सांख्यकार्यो के बहुत से भी पूर्व प्रकृति से "सोऽग्नी सूर्य .." । १३।३४ यजु० । से विन्दु की उत्पत्ति होती है। "अग्निमीळेपा अग्नीमिन्धते"

१०।१२।८ ऋग्वेद । मे अग्नि की उत्पत्ति सर्व प्रथम कही है । निस्सन्देह यह अग्नि पच भूतो का अवयव नही है । इस क्रम से लगभग वर्तमान विज्ञान का परमाणु (एटम) तक बहुत सी निर्माण प्रक्रियायें चलती हैं । उसके बाद व्यवहारिक आकाश के सृजन की कल्पना आचार्य कपिल की । असगत नही है । इस प्रकार ऋषि दृष्टिकोण दर्शनो तथा वर्तमान विज्ञान के अनुकूल ही है । इस प्रकार आकाश मे नित्यत्व तथा अनित्यत्व दोनो गुण है ।

अब रही परमाणु समस्या । आचार्य कणाद इसे 'नित्यपरिमण्डलम्" (वै० द० २७६) कहकर नित्य मानते हैं । इसके अनुकूल ही ऋषि मान्यता है । 'परमाणु कभी नये पुराने नही होते ।" (द्वादश समुल्लास) उधर ऋषि आठवे समुल्लास मे "प्रकृति और परमाणु आकाश बिना कहा ठहर सके' ऐसा कहकर सकेत कर रहे हैं, मानो परमाणु और प्रकृति अलग-अलग हो । तब मूल प्रकृति क्या है ? यदि परमाणु अनादि तथा प्रकृति से अलग है तो ये जगत् का उपादान होने से आकाश काल आदि की भांति उपेक्षणीय नही हो सकते । इसका समाधान यह है कि प्रकृति और परमाणु समानार्थक होते हुए भी "प्रकृति और परमाणु' ऐसा लिखना असगत नही । प्रकृति जो "सत्वरजस्तमसाम " [सा० २६।१] अथवा 'त्रितस्यधारया "[९।१०२।३ ऋ०] के अनुसार त्रिगुणात्मिका है तथा उपादान कारण की सूक्ष्मतम अवस्था होने से परमाणु नाम से व्यक्त की जा सकती है । दूसरा पक्ष 'प्रकृति और परमाणु 'लिखने का यह हो सकता है कि परमाणु प्रकृति के विकार है । वस्तुत प्रकृति का जो प्रलयावस्था का रूप है उसे भगवान मनु के शब्दो मे "अप्रतर्क्यमविज्ञेयम्" [मनु०] ऋग्वेद की दृष्टि मे "तमसापगूढम्" [१० ८८।२] तथा "अप्रकेतम् सलिलम्" १ ।१२९।३ अर्थात् इसे व्यक्त करना, जानना असम्भव है । तब इस प्रकृति को परमाणु रूप होने पर भी किसका और कैसा परमाणु कहे ? यह अव्यक्त प्रकृति [परमाणु] तो अनादि अविनाशी है परन्तु आधुनिक विज्ञान द्वारा परिभाषित द्रव्य या ऊर्जा किसी का भी व्यक्त करने योग्य सूक्ष्मतम् रूप उस परमाणु रूप प्रकृति को कह नही सकते । द्रव्य या ऊर्जा मे सम्भवत द्रव्य पूर्व है परन्तु बिना आवेश द्रव्य के मूल कण इलेक्ट्रोन, प्रोटोन, पाजिट्रान, क्वार्क आदि भी तो वर्तमान नहीं रह सकते और फिर इनके विभाजन का क्रम वर्तमान विज्ञान कब रोक कर मूल प्रकृति को जान सकेगा?इस कारण ही सम्भवत ऋषि वर्तमान विज्ञान अथवा मानव मस्तिष्क से ज्ञेय सूक्ष्मतम् कण(परमाणु)को अनित्य स्वीकारकर लेकिन उसका विकार बतलाते हैं । भूमिका के सृष्टि विद्या प्रकरण मे ऋग्वेद के मन्त्र नासीद्रज. की व्याख्या मे ऋषि कहते हैं उस समय परमाणु भी नही थे यहा रज शब्द का अर्थ परमाणु किया है । आचार्य यास्क ने "ज्योतीरज उच्यते उदक रज उच्यते" (निरुक्त ४।१९) आदि से ज्योति तथा जल को रज कहा है उणादि कोष मे ऋषि सूक्ष्म धूल कण को रज कहते हैं तब निश्चित ही इन व्यक्त सूक्ष्यतम कणो । ज्योति, धूल जल को अनादि नही कहा जा सकता तथा व्यक्त जगत् के ये सूक्ष्यतम रूप हैं ही । तब इसे ऋषि ने परमाणु नाम देकर कोई भूल नही की है अपितु यह तो उनकी वैज्ञानिकता का ही परिचायक है । इस प्रकार जहा ऋषि ने परमाणु को नित्य कहा वहा परमाणु रूप प्रकृति का ही ग्रहण होना चाहिये तथा जहां परमाणु अनित्य तथा प्रकृति का विकार माना वहा व्यक्त जगत् का सूक्ष्यतम रूप स्वीकार करना योग्य है । इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ऋषि के मन्तव्यो में विरोधाभास देखना हमारी अल्पज्ञता का द्योतक है । आशा है कि सभी आर्यजन इस सत्य पर विचार करेंगे । प्रोफेसर जी का चिन्तन, अपनी समस्याओं को सार्वजनिक कर समाधान की इच्छा करना श्लाघनीय ही माना जायेगा ।

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता (८)

—आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के पत्र 'भारतोदय' (१९०९) का नाम हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उसके सम्पादन के दिनो मे समालोचक-मूर्धन्य पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने अनेक साहित्यिक समस्याओ और आन्दोलनो पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला था। उन दिनो का हिन्दी का ऐसा कोई प्रमुख साहित्यकार या कवि नही था, जो इसमे न लिखता हो।

यहा पर यह उल्लेख कर देना भी अप्रासगिक न होगा कि भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद का 'समाज-सशोधन' शीर्षक से बिल्कुल पहला लेख 'भारतोदय' के सितम्बर १९२० के अक मे 'राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय के नाम से प्रकाशित हुआ था। उस अवसर पर उन्होने पण्डित पदमसिंह शर्मा को जो पत्र लिखा था उससे उनकी शालीनता और विनम्रता का परिचय मिलता है। उन्होने लिखा था—'सरस्वती' मे जो लेख देने की आज्ञा की गयी सो अनुल्लघनीय न होने पर भी लेखक के असामर्थ्योपहत होने से विलम्बसाध्य होगी। प्रथम तो ऐसा विषय नही सूझता जिस पर हिन्दी-रसिको का अनुराग हो। द्वितीयत हिन्दी लेख म भी सामर्थ्य नही। आप कुछ विषय निर्देश करे तो कुछ यत्न हो। समाज सशोधन' वाला आपको इतना लेख पसन्द होगा, यह मुझे कभी धारणा नही थी, यदि उधर 'भारतोदय' कृतार्थ हुआ तो इधर में भी कृतार्थ हुआ।' राजेन्द्र बाबू का वह लेख स्त्रियो की शिक्षा और सामाजिक स्थिति के सम्बन्ध मे था। पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने जहा पत्रकारिता के क्षेत्र मे नये मानदण्ड स्थापित किये, वहा 'भारतोदय के माध्यम से उन्होने जो अनेक लेखक बनाये थे राजेन्द्र बाबू भी उन्ही मे से एक थे। शर्मा जी द्वारा दिये गए इस प्रोत्साहन का उल्लेख उन्होने सार्वजनिक रूप से सन १९५९ मे उस समय किया था जब वे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के 'स्वर्ण जयन्ती समारोह मे सम्मिलित होने वहां गये थे। उन्होने तब न केवल पद्मसिंह शर्मा के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित किया था, अपितु 'गुरुकुल' को भी अपनी 'मातृ सस्था' मानते हुए यह उद्गार प्रकट किए थे।

इस सस्था के अनन्य सूत्रधार पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने ही मेरा हिन्दी का सबसे पहला लेख यहा के मासिक मुखपत्र 'भारतोदय' मे प्रकाशित किया था, अत इस नाते यह शिक्षण सस्था मेरी भी है और मैं इस भूमि मे आकर अपने को धन्य अनुभव कर रहा हू।" कविताकामिनीकान्त नाथूराम शकर शर्मा जैसे उत्कृष्ट कवि को हिन्दी जगत के समक्ष प्रस्तुत करना पद्मसिंह शर्मा जैसे गुण-ग्राहक सम्पादक का ही काम था। आचार्य पद्मसिंह शर्मा के सम्पादन मे भारतोदय' इतना सुन्दर निकलता था कि सम्पादकाचार्य अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने अपने 'समाचार पत्रो का इतिहास' नामक ग्रन्थ मे यह लिखकर उसकी प्रशसा की थी 'मासिक पत्रो मे भाषा और विचारों की दृष्टि से ज्वालापुर के गुरुकुल महाविद्यालय का 'भारतोदय, सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है।"

पण्डित पद्मसिंह शर्मा के बाद आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ ने भी इसका सम्पादन किया था। उनके समय मे भी वे इसके सयुक्त-सम्पादक रहे थे। यहा यह विशेष रूप से उल्लेखनीय तथ्य है कि सुप्रसिद्ध आर्य कवि श्री नाथूरामशकर शर्मा ने भी 'भारतोदय' का कुछ दिन तक सम्पादन किया था। महाविद्यालय के स्नातक श्री प्रेमचन्द्र शास्त्री काव्यतीर्थ ने उन दिनो इसका सम्पादन किया था जब यह मुरादाबाद के 'शर्मा मैशीन प्रिंटिंग प्रेस' मे मुद्रित होता था। इसके बाद यह सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री भीमसेन शर्मा (आगरा वाले) के सुपुत्र डा० हरिदत्त शास्त्री के सम्पादन मे सस्कृत और हिन्दी मे प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ था, जो आजकल केवल सस्कृत मे निकल रहा है।

इस प्रकार जहा आर्य समाज के लिए कार्य-क्षेत्र तैयार करने का पुनीत कार्य यह सभी पत्र कर रहे थे वहा गम्भीर सैद्धान्तिक लेखो के द्वारा वैदिक धर्म के महत्व को बढाने और वेदो के अनुशीलन को निरन्तर गतिशील बनाने के लिए मेरठ के सामवेद-भाष्यकार श्री तुलसीराम स्वामी का पत्र 'वेदप्रकाश' (मासिक) अत्यन्त प्रशसनीय कार्य कर रहा था। पहले यह साप्ताहिक रूप मे कानपुर से सन् १८८४ श्री राधाकृष्ण गुप्त के सम्पादन मे प्रकाशित होता था। मेरठ के 'वेदप्रकाश' के कुल १८० अक प्रकाशित हुए थे, जिनकी पृष्ठ सख्या ३८७७ है।

'वेदप्रकाश' मे यज्ञ, शास्त्रार्थ, मृतक दाह, मृतक श्राद्ध, वेदार्थ, विधवा-विवाह, क्षमा, दया, प्रायश्चित्त, खान-पान, छुआछूत, कर्मकाण्ड, उपासना, भूत-प्रेत, पुराण, तन्त्र तथा भागवत-खण्डन आदि लगभग २०० विषयो पर शोध सामग्री से परिपूर्ण अत्यन्त प्रामाणिक और गम्भीर लेख प्रकाशित हुए थे। ये लेख आर्य-सिद्धान्त-सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने के लिए बडे ही उपयोगी है। विरोधियो के प्रश्नो के उत्तर देने तथा सम्पादकीय टिप्पणियो द्वारा आर्य समाज को उपयोगी दिशा-निर्देश देने आदि मे इसके सम्पादक श्री तुलसीराम स्वामी बडी रुचि लेते थे। आर्य समाज मे साहित्यिक चेतना उत्पन्न करना जहा 'भारतोदय का लक्ष्य था वहा 'वेदप्रकाश' का उद्देश्य उसमे बौद्धिक तथा वैदिक भावना बढाना था। हर्ष का विषय है कि आजकल भी 'वेदप्रकाश' प्रख्यात आर्य प्रकाशक 'गोविन्दराम हासानन्द' दिल्ली की ओर से प्रकाशित हो रहा है और इसके आदरी सम्पादक श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द (जगदीशचन्द्र विद्यार्थी) हैं। इस प्रसग मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा के पिता श्री गोवर्धन बी० ए० द्वारा सम्पादित और सन् १९१५ मे दिल्ली से प्रकाशित 'प्रह्लाद' साप्ताहिक का नाम भी विशेष महत्त्व रखता है।

प्रख्यात आर्य पत्रकार श्री विश्वम्भर प्रसाद शर्मा के सम्पादकत्व मे 'विकास' नामक जो साप्ताहिक पत्र सहारनपुर से प्रकाशित हुआ था उससे भी विशेषत. पश्चिमोत्तर भारत और सामान्यत समस्त देश मे 'आर्य विचार-धारा' के प्रचार एव प्रसार मे उल्लेखनीय सहयोग मिला था। अजमेर मे सन् १९३३ मे सम्पन्न हुई 'दयानन्द-निर्वाण अर्ध शताब्दी' के अवसर पर प्रकाशित उसका 'आर्यसमाज अक' आज भी अपनी विशिष्टता के लिए याद किया जाता है। इस विशेषाक का सम्पादन गद्यरत्न आत्माराम अमृतसरी ने किया था। श्री विश्वम्भरप्रसाद शर्मा बाद मे नागपुर चले गए और उन्होने मध्यप्रदेश को अपनी कर्मभूमि बनाया। कई वर्ष तक मध्यप्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री रहे और उसकी ओर से प्रकाशित होने वाले 'आर्य सेवक' का सफल सम्पादन भी किया था। इन्होने वहा से स्वतन्त्र रूप से 'आलोक नामक एक साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित किया था और आजकल 'भारत गो सेवक समाज' के पत्र 'गोधन' का सम्पादन कर रहे है। कई वर्ष तक शर्मा जी ने 'माहेश्वरी' साप्ताहिक और 'आर्यकुमार' का भी सम्पादन किया था। 'आर्यकुमार' का प्रारम्भ उस समय हुआ था जब कि आर्यसमाज के पुराने कर्मठ नेता डा० केशवदेव शास्त्री ने अपने घनघोर प्रयत्न से सन् १९०९ मे 'आर्यकुमार परिषद्' को स्थापना करके उसका पहला अधिवेशन सहारनपुर मे किया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता लाला लाजपतराय ने की थी। डा० केशवदेव शास्त्री ही उसके आदिसम्पादक थे। पहले यह पत्र साप्ताहिक रूप मे प्रकाशित होता था, कुछ दिन तक द्वैमासिक भी रहा था, और बाद मे मासिक हो गया था। मेरठ के श्री विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी' और दिल्ली के डाक्टर युद्धवीरसिंह ने भी कई वर्ष तक 'आर्यकुमार' का सम्पादन किया था। सन् १९१९ मे भी फतहपुर (उत्तर प्रदेश) से 'आर्यकुमार' नामक एक और पत्र प्रकाशित हुआ था और इसका सम्पादन श्री मथुराप्रसाद करते थे। (क्रमश)

कैसे बनेगा ऋण मुक्त भारत (४)

डा० मुरली मनोहर जोशी, अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी

आत्मनिर्भरता का उदाहरणः—

आज भी होजरी वस्त्र के मामले में तिरूपुर जैसा छोटा कस्बा ९०० से १०० करोड़ की विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है और विदेशी मुद्रा का खर्च उनके पास बहुत कम है। जब कि तिरूपुर वालों को पानी तक बाहर से खरीदना पड़ता है। ५०,००० रुपए का पानी जिस कारखाने को खरीदना पड़ता हो, इसके बावजूद वह स्पर्धा में रहता हो तो यदि ऐसे केन्द्रों को हम सुदृढ़ करें तो बहुत अधिक मात्रा में हम विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकते हैं। यदि तिरूपुर केन्द्र को ही हम मजबूत करें तो यहां से प्राप्त होने वाली विदेशी मुद्रा १००० करोड़ तक पहुंच सकती है। लुधियाना, सूरत आदि से भी बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त हो सकती है। यदि इस प्रकार के ८-१० केन्द्रों को मजबूत कर दिया जाये तो ८-१० हजार करोड़ का घाटा इन क्षेत्रों से पूरा किया जा सकता है। इस प्रकार भुगतान संतुलन तो बराबर हो ही सकता है। बल्कि और कर्ज लेने की स्थिति से भी देश को बचाया जा सकता है। फिर धीरे-धीरे इस प्रक्रिया को उलट भी सकते हैं।

दृढ़ संकल्प की जरूरत—

किन्तु इसके लिए पहले सरकार को यह संकल्प लेना होगा कि अब हम कर्ज नहीं लेंगे। आगे कर्ज न लेने के बारे में राष्ट्र की दृढ़ इच्छा शक्ति प्रकट होनी चाहिए। फिर इस कर्जे को न लेने के लिए चाहे जितने कठोर उपाय करने पड़ें वह करना चाहिए। फिर तीसरी बात यह आती है कि हम इस कर्जे का भुगतान करना शुरू करें। और यह योजना भी देश के सामने स्पष्ट होनी चाहिए कि हम दो, तीन, पांच या दस वर्षों में देश को कर्ज से मुक्ति दिला देंगे। और फिर आने वाले दस वर्षों मे इस देश को और ऊंचाई पर ले जायेंगे। राष्ट्र के सामने आत्मविश्वास भरा एक चित्र जब तक नहीं आएगा, तब तक देश इस कर्ज से मुक्त नहीं हो सकता।

कर्ज तो अफीम है। एक बार आदत पड़ गई कि मुझे तो देना नहीं है अगली पीढ़ी को देना है तो वह कर्जमुक्त नहीं हो सकता। बहुत से लोगों का विचार है कि भारत शायद बहुत गरीब देश है, किन्तु ऐसा नहीं है। हमारा देश तो बहुत धनी है, किन्तु नेतृत्व बहुत निर्धन है। सामान्य तौर पर जिस देश के पास १०,००० टन से २०,००० टन के बीच सोने की मुद्रा होने की बात की जाती हो उस देश को गरीब कैसे कहा जा सकता है? जिस देश की भूमि का ३०-३२ प्रतिशत भाग कृषि योग्य हो वह गरीब कैसे रह सकता है? जिस देश के पास पयस्विनी नदियां, शस्य-श्यामला भूमि और बहुत ही ऋतम्भरा, प्रज्ञा, रत्नगर्भा वसुन्धरा और देव दुर्लभ मनुष्य हों—"गायन्ति देवा किल गीतकानि धन्यास्तुते भारतभूमि भागे" और जिसके पास तकनीक और विदेशी व्यापार का हजारों वर्ष पुराना इतिहास हो, जो अभी दो-ढ़ाई सौ वर्षों पूर्व तक दुनिया के सबसे धनी देशों में था—"सोने की चिड़िया" कहा जाता था, वह गरीब और कर्जदार रहेगा?

घिनौनेपन की हद

यदि इस बात का अपमान लोगों को महसूस न हो, और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का ऋण मिल गया है इस खुशी में पांच सितारा होटल में नृत्य हो और शराब के जाम टकराए जाएं तब तो देश कर्ज से मुक्त नहीं हो सकता। लेकिन यदि यह दृढ़ संकल्प हो कि इस देश को कर्ज से मुक्त कराना है तो उसके लिए कठोर नियन्त्रण करने पड़ेंगे। जनसंख्या पर भी नियन्त्रण करना होगा। क्योंकि इतनी बड़ी जनसंख्या का जो जीवन स्तर आज है, वह औसत जीवन स्तर भी यह देश लोगों को नहीं दे पाएगा।

देश को कर्ज मुक्त कराने के लिए दृढ़ संकल्प की जरूरत है। नियोजन में जो गलतियां की गई हैं, उन्हें सुधार करके कृषि और परम्परागत उद्योगों को सुदृढ़ कर भारत की तकनीकि मुख्यधारा का आविष्कार करके, राष्ट्र के आत्म सम्मान को जगाकर, अपने वैभव की ठीक-ठाक पहचान करके और सबसे बड़ी बात यह कि अपनी जनसंख्या को सीमित दायरे में रखकर यदि इस तरह के उपाय हम करें तो भारत को कर्ज मुक्त किया जा सकता है।

९ अगस्त १९४२ के 'भारत छोड़ो" आन्दोलन का उद्देश्य था विदेशी साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध संग्राम। उस समय देश का आर्थिक शोषण इसलिए हो रहा था क्योंकि तब देश राजनीतिक दृष्टि से बहुत कमजोर था उस समय यह परिकल्पना की गई थी कि देश के स्वतन्त्र होने के बाद फिर से अपना तन्त्र स्थापित होगा। परन्तु आन्दोलन के ५० वर्ष और स्वाधीनता के ४५ वर्ष बाद भी देश आर्थिक आजादी की सांस नहीं ले पा रहा है क्यों? यह एक विचारणीय विषय है।

विदेशी साम्राज्यवाद से मुक्ति पाने के बाद भी यदि भारतीय दृष्टि केवल परावलम्बन की बात सोचे तो यह भी विचार करना होगा कि क्या ये राष्ट्र के घोषित उद्देश्यों के अनुकूल है?

"भारत छोड़ो" आन्दोलन का यह "स्वर्ण जयन्ती" वर्ष है। इस अवसर पर राष्ट्र को सन् ४२ में लिए गए संकल्प "अंग्रेजों की गुलामी नहीं सहेंगे" की पुनरावृत्ति इस शपथ से करनी होगी कि "भारत को ऋण मुक्त बनायेंगे, ऋणग्रस्त भारत नहीं। ●

जीवित पितरों का श्राद्ध करें

विद्याभास्कर पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी महोपदेशक अस्वस्थ

पुरानी पीढी के लोग धन्य थे—जिन्होने अपने पुत्रो को गुरुकुलो मे पढने भेजा, नौकरी के लिए नही बल्कि देश जाति धर्म समाज सेवा के लिये संस्कृत अध्ययन हेतु गुरुकुलो मे पढने भेजा था।

प० ओम् प्रकाश जी शास्त्री के परिवार की स्थिति भी यही थी उन्होने ओम् प्रकाश जी को स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के चरणो मे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार पढने भेजा था।

ओम् प्रकाश जी प्रारम्भ से ही कुशाग्र बुद्धि थे, आचार्य शुद्धबोध तीर्थ की विद्या आचार्य नरदेव शास्त्री के सान्निध्य ने उन्हे आर्य समाज के मिशनरी के रूप मे तैयार किया।

गुरुकुल महाविद्यालय से स्नातक विद्याभास्कर की और वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। स्नातक होने के बाद आप आर्य-समाज के मच पर आ गये।

महाविद्यालय के बाद आपने प० रामचन्द्र जी देहलवी के निकट बैठकर एक नयी विद्या पाई वह थी इस्लाम और ईसाइयत, बौद्ध और जैन धर्म को समझने की। उन्होने उसे समझा ही नही बल्कि उनके विद्वानो से शास्त्रार्थ भी किये और मु हतोड उत्तर भी दिय।

आपकी विशेषता थी मन्च पर खडे होकर जनता को मन्त्र मुग्धकर लेना। शैली मे माधुर्य ओज गर्वीली वाणी—

लम्बा कद छरहरा बदन हसमुख चेहरा गेहुआ गौरवर्ण पर धोती कुर्ता शोभायमान बाले श्री शास्त्री की अपनी विशेषता रही है सादा जीवन गम्भीर चिन्तन उच्च विचार।

प्रारम्भिक जीवन मे श्रद्धानन्द ट्रस्ट के द्वारा बिहार के राची क्षेत्र मे क्रिश्चियन मिशन का मुकाबला कर शुद्धि प्रचार मे जीवन लगाया। उस समय ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार का दिल्ली मे विशेष स्थान था, उनका उन्हे आशीर्वाद प्राप्त था।

आर्य समाज के क्षेत्र मे श्री शास्त्री जी व्यापक स्थान रखते हैं। भाषण शैली मन्त्रमुग्ध करनेवाली कथा वेदमन्त्रो की व्याख्या मे विशेष सिद्धहस्त रहे हैं।

जब आप आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के महोपदशक थे आप इतने व्यस्त रहते थे, उत्सवो कार्यक्रमो से अवसर ही नहीं मिलता था आपकी राशि सभा के वतन से अधिक हो जाती थी। ऐसे व्यक्तित्व के धनी का सिद्धान्त मे कही पर उलझाव भी रहता है। "वृक्षो मे जीव" नही है इस पर आप स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती क प्रतिपादक हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे वृक्षो मे जीव "विषय पर स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती और प० गणपति शर्मा जी का शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है परन्तु बाद मे प० रुद्रदत्त शास्त्री और प० ओम्प्रकाश जी शास्त्री का भी इस विषय पर म० वि० के उत्सव पर शास्त्रार्थ हुआ था। दोनो विद्वान वक्ता अपने-२ विषय को गहन चिन्तन के साथ रख रहे थे।

सारा जीवन व्यक्तित्व के बनाने मे कृतित्व पर ध्यान दिया है। आज प० ओम प्रकाश जी शास्त्री खतौली मुजफ्फर नगर मे कई वर्षो से अस्वस्थ होकर घर पर लेटे है। मैंने इसलिये लेखनी उठाई है कि आर्य जगत को ध्यान रहे कि हमारे मच का पहलवान आज कहा है और किस स्थिति मे है।

अन्त मे घर तो काम आता ही है परन्तु हमारी एक स्वस्थ परम्परा रही है अपनी मर्यादा मे रहकर अपने जीवित पितरो का श्राद्ध करें। तो श्राद्ध क्या है—यही न कि

हम उनके कष्टप्रद जीवनीय क्षणो मे उनको देखें पूछें और उनकी सेवा मे यदि कुछ बन सकता है तो पत्र पुष्प भेंट करें—

आज प० ओम् प्रकाश शास्त्री अखाडे के (मच) पहलवान खाट पर पड़े हैं—चिन्तनीय घडी पर हमारा कर्तव्य है कि उनकी सेवा करें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महोपदेशक पं० सत्यमित्र शास्त्री एक व्यक्तित्व

शास्त्रार्थ महारथी आचार्य पं० सत्यमित्र जी शास्त्री वेदतीर्थ

गुरुकुल अयोध्या के पुराने स्नातक है वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण है। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान सागोपाग वेदाध्ययन करके आर्य समाज के क्षेत्र मे ६० वर्ष से ऊपर महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार किया है। वैदिक सिद्धान्तो के प्रतिपादन मे विपक्षी विधर्मियो का मान मर्दन जनता जनार्दन के समक्ष किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के ४० वर्ष से ऊपर महोपदेशक पद पर रहकर उत्तर प्रदेश तथा देश के कोन कोन मे ऋषि मिशन का नाद बजाया है। आज वृद्धावस्था मे आप बडहलगज गोरखपुर मे अपने निवास पर विश्राम करते हुए स्वाध्यायरत है।

आर्य समाज सदा ही वेद प्रचार हेतु विद्वानो की माग करता रहता है। प० सत्यमित्र शास्त्री हल चलाकर खेत नही जोत सकते हैं शारीरिक श्रम भी नही कर सकते है कारण यह है कि

विद्याव्यसनी बौद्धिक विवेक पूर्ण कार्य का काम कर सकता है श्री शास्त्री जी इस योग्य है कि वह आर्य समाजो मे जाकर (वैदिक यज्ञ) पारायण यज्ञ प्रवचन कथा व्याख्यान दकर मानव मात्र के कल्याणार्थ समय दे सकते है।

विद्वान की उपयोगिता भी यही है और आर्यो का परमधर्म भी यही हैं विद्वान का लाभ लेकर पण्डित की सेवाशुश्रुषा भी करे। आर्य समाज की पुरानी पीढी या नवीन शिक्षा क्या मागेगी वेद पढना और वेद पढाना जाना है।

धारा प्रवाह सस्कृत सम्भाषण आपकी विशेषता है सिद्धान्त पक्ष पर प्रमाणो की झडी लगाकर विषय प्रतिपादन करना आपकी विशेषता है।

आज ऐसे विद्वान का आर्य जगत उपयोग कर ज्ञान वर्धन करे—

जीवन का कुछ पता नही? बडे-बडे महारथी काल के गाल मे चले गये, श्री शास्त्री जी के जीवन का अन्तिम चरण है समय का कुछ पता नही—

आर्यो ऐसे विद्वान की सेवा करो मुफ्त मे नही कुछ काम लेकर ही सही? आवश्यकता तो उनको घर बैठाकर भेंट पूजा कर सेवा करने की है—भगवान उन्हे स्वास्थ्य लाभ देकर दीर्घायु करें, और वह हम सबका शेष जीवन मे मार्ग दर्शन करते रहे।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पुस्तक समीक्षा

मनुस्मृति भाषानुवाद

लेखक—स्व० प० तुलसीराम स्वामी

प्रकाशक—भारतीय प्रकाशन

३०० स्वामीपाडा मेरठ

मूल्य ८०)

स्मृति ग्रन्थो मे मनु की स्मृति का प्रमुख स्थान है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद और ब्राह्मण गृह्य सूत्रो के बाद प्रमाण कोटि मे यदि स्थान किसी ग्रन्थ को दिया है तो वह मनु की स्मृति ही है।

वस्तुत यदि देखा जाय तो जहा वेद शास्त्र पुराणेतिहास ग्रन्थो मे मिलावट प्रक्षेप भरा पडा है— तो मनुस्मृति भी उस प्रक्षेप से अछूती नही रही है। यह विद्वान बुद्धिजीवी वर्ग का काम है कि नीर क्षीर विवेक' अर्थात दूध मिले पानी को पृथक् कर सत्य स्वरूप को पहचाने।

धर्म जिज्ञासुओ के लिये मनु के भाषानुवाद और उसके साथ जो प्रक्षेप रूप अलग से सम्मिलित किये है उन्हे सत्य के परखने मे विवेक से काम लें।

परिणामत —

स्वर्गीय प० तुलसीराम स्वामी ने अत्यन्त विवेक से काम लिया है कि मनु० के सत्य सिद्धान्त को उजागर करते हुए उन उन स्थलो को भी स्पष्ट किया है। जिनका साम्य के साथ वैषम्य है।

पूज्य स्वामीजी ने जिन्ह अपने ग्रन्थो मे मान्यता प्रदान की है उनमे से किसी को प्रक्षिप्त नही माना है। परन्तु ३० प्राचीन ग्रन्थो का अवलोकन कर—

पाठान्तर, पाठाधिक्य, श्लोकाधिक्य आदि ग्रन्थो को देखकर विद्वान लेखक ने अपनी सम्मति बनाई है—लेखक को प्रमाण कोटि मे रखते हुए जो विचारणीय है

उससे चिन्ह युक्त अध्याय क्रम से—

३४।४।१ ७।।२।४१-३-१९-४६-२२-४ सब ३८२ श्लोक प्रक्षिप्त प्रतीत हुए फिर भी अभी बहुत से श्लोक विचारणीय है।

वर्तमान मे जो मनुस्मृति उपलब्ध है वह मनु प्रोक्त नही किन्तु अन्य की मिलावट से प्रतीत होती है।

भाष्यकार की यह विशेषता है कि सत्य-असत्य को पृथक् न कर एक स्थान पर ही दिग्दर्शन कराया है। जिससे पाठकवृन्द पढते हुए जान ले कि प्रकरण भेद पाठ भेद और अर्थ भेद कहा पर है।

इस विकृत दोष का ही परिणाम है सवर्ण असवर्ण के भेद को सामने रखकर एक वर्ग विशेष द्वारा मनु की स्मृति की चौराहो पर होली जलाई जा रही है।

सस्कारात् द्विज उच्यत' के पाठ को कोई नही पढता है। जहा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी सिद्धान्त पक्ष को प्रमाण कोटि मे रखा है उसे भी कोई नही देखता समाज के वर्गवाद का थोथा डिम-डिम नाद सारे समाज मे विषमता पैदा कर रहा है।

अत ऐसे समय मे यह मनुस्मृति का भाषानुवाद नीर क्षीर विवेक का काम करेगा।

श्री लक्ष्मीचन्द्र अग्रवाल एक आर्य सज्जन श्रेष्ठी है उन्होने इस ग्रन्थ को प्रकाशित कर आर्य जनता के लिये अत्युपकार किया है। लेखक मार्ग दर्शन कराता है —प्रकाशक लालटेन का काम करके रास्ता दिखाता है। सूझबूझ के साथ चलना जनता का काम है—वह पथ भ्रष्ट न हो —इसके लिये भारतीय प्रकाशन मेरठ बधाई के पात्र हैं—आशा है इस अलभ्य प्रकाशन से आर्य जनता लाभान्वित होगी।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादक

समरथ को नहिं दोष गोसाईं

मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार की सकारात्मक धर्म-निरपेक्षता के नमूने

१ उर्दू प्रोत्साहन के लिए ९१-९२ का इकबाल पुरस्कार श्री मजरूह सुल्तानपुरी का देने की घोषणा। (ज्ञात रहे कि श्री इकबाल ने पाकिस्तान नागरिकता ले ली थी।)

२ नव गठित मानवाधिकार आयोग का अध्यक्ष जिस मुस्लिम को बनाया गया उसकी विशेषताए निम्नलिखित हैं —

१ मुस्लिम लीग के प्रत्याशी के रूप मे चुनाव लड चुका है।

२ मुस्लिम त्योहार कमेटी के अध्यक्ष के नाते हिन्दुओ को काफिर कहकर अपमानित करता रहा।

३ आयोग का अध्यक्ष बनने तक जमीयत उल उलेमा से सम्बन्धित रहा।

३ भोपाल के शहर काजी की बेवा को दो हजार रुपए मासिक की पेंशन खुद मुख्यमन्त्री पटवा जी उनके मकान पर जाकर भेंट करते हैं।

४ भोपाल के गाधी नगर मे मस्जिद के लिए मुफ्त जमीन दी गई।

५ एक अन्य मस्जिद को हिफाजत के लिए जमीन का आवटन किया गया।

६ नवाब सिद्दक हसन खा के शानदार मकबरे का उद्धार किया गया।

७ इन्दौर की ईदगाह के सचिव श्री बशीर मसूरी को पटवा जी द्वारा कोरा चैक देने की पेशकश।

८ प्रदेश के मुस्लिम सन्तुष्ट है क्योकि भाजपा सरकार से कदाचित वे कांग्रेस सरकार की अपेक्षा अधिक लाभ उठा रहे हैं।

९ श्री कुशाभाऊ ठाकरे द्वारा मुस्लिमो के बडी सख्या मे भाजपा सदस्यता ग्रहण करने पर प्रसन्नता व्यक्त करना।

उपरोक्त कार्य आपको कैसे लगे ? कृपया अपनी प्रतिक्रिया प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें।

यदि हिन्दू महासभाइयो ने मन्त्री पदो पर रहते हुए इस प्रकार के कार्य किए होते तो हिन्दू सगठक वीर सावरकर ने उन्हे निश्चित रूप से पदो से हटाने के लिए आदेश दे दिए होते क्यो कि उनका कहना था कि मन्त्री भी तब तक ही रहो जब तक हिन्दू हित के कार्य कर सकते हो। निश्चित भविष्य के लिए हिन्दू महासभा का साथ दीजिए।

महेश चन्द

हिन्दू महासभा, बुलन्दशहर

(हिन्दू सभा वार्ता ३१ अगस्त से साभार)

इस्लामी समस्या

(पृष्ठ ४ का शेष)

ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि रफसजानी भारत की लोकतान्त्रिक व्यवस्था और धर्मनिरपेक्ष सविधान से वाकिफ नहीं है। ऐसा मानने का भी कोई कारण नही है वे यह न जानते हो कि भारत के मुसलमानो की हालत उन देशो के आम मुसलमानो की हालत से कही बेहतर है जो बहुत बडा इस्ला ी होने का दावा करते हैं। इस्लामी सवाल अगर इतना ही प्रबल है तो पश्चिम एशिया के अनेक इस्लामी देश क्यों एक दूसरे के खून के प्यासे बने हुए हैं ? क्यो सऊदी अरब और कुवैत अमेरिका के जरिए इराक को ध्वस्त कर देना चाहते हैं ? फिर स्वय ईरान क्यो वर्षों तक इराक के खिलाफ विनाशकारी युद्ध लडता रहा ? इस्लाम के नाम पर दूसरे देशो के आतरिक मामलो मे दखलदाजी करने से वह एकजुटता कायम नही हो सकती जिसके लिए प्रयत्नशील रहने का दम रफसजानी भर रहे हैं। रचनात्मक रास्ता यही है कि ईरान भारत-पाकिस्तान के बीच अपनी टाग न अडाए। (नवभारत टाइम्स ९ सितम्बर ९२)

शोक प्रस्ताव

रविवार १९ जुलाई को प्रात साप्ताहिक सत्सग के पश्चात समाज प्रधान प० रामकृष्ण एडवोकेट की अध्यक्षता मे एक शोक सभा हुइ जिसमे समाज के पूव प्रधान लाला नौहरिया राम जैरथ के निधन पर गहरे शोक की अभिव्यक्ति की गयी और स्वर्गीय आत्मा की शाति एव सदगति के लिए मौन धारण कर प्रार्थना की गयी सभा ने उनकी सेवाओ की प्रशसा की।

—पवनकुमार, मन्त्री आ स बस्ती शख जालधर

—मालेगाव, आर्य समाज के प्रधान श्री शाताराम राधाकिशन आर्य इनके परमपूज्य पिताजी श्री राधाकिशन जी आय चव्हाण का निर्वाण दि० ६ ८ ९२ को दोपहर ९-३० बजे हुआ। इनका जन्म १९२० को हुआथा। अपने कार्यकाल मे व धार्मिक तथा सदाचरणी विचारो के अग्रणी रहे।

इनके तीन पुत्र तथा दो पुत्रिया तथा पौत्र व पौत्रिया हैं। ईश्वर इस महान आत्मा को शाति प्रदान करे। —श्री शाताराम राधाकिशन चव्हान

लोढा भवन, सटाना रोड, मालेगाव नासिक, (महा०)

तो कोई बात बनें

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

भूल व्यसनो की झाडो, तो कोई बात बनें।
अविद्या दूर लताडो, तो कोई बात बने॥
वृक्ष पाखण्ड का दिन दिन पनपता जा रहा हैं।
मूल से इसको उखाडो, तो कोई बात बनें॥
हूर कोई बैठा है यहा भगवान बनकर।
इनकी करतूते उघाडो, तो कोई बात बनें॥
अकड कर घूमते है भक्त बनकर देश द्रोही।
पजम्मा इनका फाडो, तो कोई बात बने॥
यहा बरसाती मेडक जोर से चिल्ला रहे है।
शेर सम आप दहाडा तो कोई बात बन॥
अनेको मिथ्यावादी आगे बढ रहे हैं।
पकड कर पाव पछाडो, तो कोई बात बने॥
बगुला भगतो ने गुरुडम का जाल बिछा रखा है।
बाग इनका उजाडो तो कोई बात बने॥
विश्व कल्याण के साधन सभी मिलकर सजोये।
पताका ओम की गाडो तो कोई बात बने॥
ईर्ष्या द्वेष और अभिमान तज करके राघव।
सगठन को न बिगाडो तो काई बात बने॥

विभागीय आयुक्त (स्काऊट) पद पर बसंत काले नियुक्त

अकोला। महाराष्ट्र राज्य स्काऊटस व गाइडस मुबई द्वारा अकोला जिला प्रशिक्षण आयुक्त (स्काऊट) श्री बसत काले को सहायक राज्य आयुक्त के पद पर नियुक्त करके उन्हे अमरावती विभाग हेतु विभागीय आयुक्त पद की जिम्मेदारिया सौंपी गई हैं।

श्री बसत काले राज्य वित्त समिति मुबई (स्काऊट) के सदस्य है। वे प्रातीय आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ नागपुर के प्रातीय उपाध्यक्ष एवम् आर्य समाज अकोला द्वारा सचालित डी ए वी कान्वेन्ट के सचिव भी है।

उनकी इस नियुक्ति पर भारत स्काउट गाइड जिला सस्था आर्यसमाज डी ए वी कान्वेन्ट सहित अन्य सस्थाओ व उनके अनेक मित्रो व परिचितो ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया है।

—शातिकुमार, प्रधान
आर्य समाज अकोला

सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर द्वारा दि० ७, ८ ९ अगस्त ९२ को आर्य समाज मन्दिर खुरजा मे आर्य सिद्धान्तो की विस्तृत जानकारी देने के लिए "सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में जिले भर के आर्य समाजो क प्रतिनिधियो ने भारी सख्या मे भाग लिया। शिविर का उद्‌घाटन मान्य श्री प्यारेलाल गुप्त, एम ए ने किया। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान श्री आचार्य राजवीर जी शास्त्री तथा आचार्य धर्मेन्द्र जी शास्त्री ने अनेकानेक शकाओ का अति सरलता से समाधान किया।

इस शिविर मे ईश्वर, जीव, प्रकृति, अवतार, पुनर्जन्म, नमस्ते, अकाल मृत्यु, यज्ञोपवीत, पञ्चमहायज्ञ, श्राद्ध व तर्पण, त्रैतवाद, आर्य, धर्म आदि अनेक विषयो पर आर्य समाज की मान्यता के अनुरूप प्रकाश डाला गया।

समापन शिक्षाविद पूर्व प्रधानाचार्य श्री शिवध्यानसिंह चौहान द्वारा हुआ। सभी लोगो ने इस आयोजन की सराहना की। आर्य समाज खुरजा का प्रबन्ध सराहनीय रहा।

– महेन्द्रपालसिंह (शिविर-सचालक)

निःशुल्क विशाल नेत्र चिकित्सा शिविर

आर्य समाज नैनीताल, उत्तर प्रदेश सरकार के चिकित्सा एव स्वास्थ्य विभाग, सीतापुर आई हौस्पिटल, आपरेशन आई साइट यूनिवर्सल कैलगिरी कैनाडा के सहयोग से १० से १६ अक्तूबर तक निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन कर रहा है। आपरेशन नेत्र रोग विशेषज्ञो के द्वारा १२-१३ अक्तूबर १९९२ को प्रात १० बजे से चार बजे तक किये जायेंगे। जाच, दवाइया, आपरेशन, रहने, भोजन तथा चश्मे आदि की निशुल्क व्यवस्था होगी। आर्य समाज मन्दिर नैनीताल से सम्पर्क करे।

मन्दिर निर्माण

(पृष्ठ १ का शेष)

समापन समारोह के अवसर पर बडी सख्या मे उपस्थित जन समुदाय को उत्तर प्रदेश सरकार के मन्त्री श्री लाल जी टण्डन तथा महन्त नित्य गोपालदास आदि महानुभावो ने भी सबोधित किया। ●

आर्यवीर महा सम्मेलन

आर्यवीर दल हरियाणा अपना १५वा आर्यवीर महा सम्मेलन नरवाना मे आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना के प्रागण मे १९ २० सितम्बर १९९२ को सम्पन्न करने जा रहा है। इस सम्मेलन मे सार्व० सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती स्वामी ओमानन्द जी महाराज डा० आचार्य देव व्रत जी, प्रो० शेर सिंह जी सहित अनेको विद्वान तथा नेता पधार रहे है। अत देव दयानन्द की सेना मे दीक्षित होकर युवा शक्ति को धर्म एव राष्ट्रोन्मुख बनाने के लिये सम्मेलन मे अधिक से अधिक सख्या म पहुचे।

आर्यसमाज चित्रगुप्तगज लश्कर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चित्र गुप्त गज लश्कर ग्वालियर का ८६वा वार्षिकोत्सव एव वेद कथा का कार्यक्रम २१ से २५ सितम्बर १९९२ तक उत्साहपूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन तथा बाल प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया है। समारोह मे प्रतिदिन प्रात यज्ञ उपदेश तथा सायकाल को भजन तथा वैदिक व्याख्यान के कार्यक्रम रखे गये है। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको के उपदेशामृत का पान कर आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

बाबूराम गुप्त
मन्त्री

शोक समाचार

आर्य समाज मोगरगा (तह० औसा, जिला लातूर) महाराष्ट्र के उपप्रधान, श्री रगराव दौलतराव जी सोनवणे के द्वितीय बन्धु, प्रेमनाथ दौलतराव जी सोनवणे का रविवार दिनाक २३ ८-९२ को दो बजे देहावसान हुआ। वे ७३ वर्ष के थे।

उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से, श्री इन्द्रजीत गिरी, श्री शुक्राचार्य पाचाल व श्री शिवाजीराव निकम के पौरोहित्य मे सपन्न हुआ। दिवगत प्रेमनाथ की चिता को उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री मनोहर जी ने अग्नि दी।

उपस्थित सैकडो जनसमूह ने परमपिता परमात्मा से प्रार्थना कर दिवगत आत्मा को भावभरी श्रद्धाजली दी।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/६२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२०-६ १९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N (2C/57 Licensed to post without prepayment License No U 93Post in N D P S O on 17 18 9-1992

ग्राम बोदीवाली मे पूर्ण शराबबन्दी

गत दिनो ग्राम बोदीवाली के पचायत घर मे बढती हुई नशावृत्ति को ध्यान मे रखते हुए सवसम्मति से प्रस्ताव पास किए गए। इसके अन्तर्गत शराब बेचने वाले तथा शराब पीकर घूमने वाले व्यक्ति पर आर्थिक दण्ड निश्चित किया गया है। निश्चित समय मे जुर्माना अदा न करने पर केस को कोर्ट या बी० डी० ओ० के पास भेज दिया जावेगा। इस निर्णय को न मानने और जुर्माना न देने वाले व्यक्ति को बिरादरी से बाहर करके उसका हुक्का पानी बन्द करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर अन्य ग्रामो मे भी इसी प्रकार शराब बन्दी लागू करने की अपील भी की गई।

—मनीराम आर्य ग्राम बोदीवाली

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव १३ से २७ सितबर ९२ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात तथा साय गायत्री यज्ञ तथा भजन एव उपदेश के कार्यक्रम होगे। मुख्य समारोह २५ से २७ सितम्बर तक होगा इसमे अन्य कार्यक्रमो के अतिरिक्त ब० कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचन भी होंगे। २७ सितबर को समापन समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल श्री वीरेन्द्र जी वर्मा करेंगे तथा आशीर्वाद सन्त शिरोमणि श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज देंगे। इस अवसर पर श्री वीरेन्द्र जी, श्री किशारीलाल जी उद्योग मन्त्री हि प्र के अतिरिक्त अनेकों विद्वान अपने विचार प्रकट करेंगे।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज मन्दैवड़ा के सस्थापक कर्मवीर म० मगाराम जी आर्य की स्मृति में ... २८ अगस्त १९९२ तक श्री वैद्य हरीशचन्द्र भास्कर के पौरोहित्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दूर-दूर के गावो से आए सैकड़ो व्यक्तियो ने बडी श्रद्धा के साथ यज्ञ मे भाग लिया।

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अस्वस्थ

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक सस्थान नजीबाबाद बिजनौर, २४ अगस्त से निरन्तर अस्वस्थ चल रहे हैं उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। ज्वर निरन्तर बना रहता है। भूख लगती नही, शरीर मे प्राय अकड़ छूट रहती है। कास प्रतिश्याय का प्रकोप है। किसी समय उठकर बैठ भी जाते हैं तो फिर थोडी देर मे लेटना अनिवार्य हो जाता है। पिछली कुछ रातो से तो उन्हें नीद भी कभी-कभी आयी और ३० ३१ अगस्त की मध्य रात्रि को वह एक मिनट के लिए भी न सो पाये।

इन परिस्थितियो मे आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि अक्तूबर माह तक कोई भी कार्यक्रम भेजने का कष्ट न करें। रोग मुक्त होने के पश्चात भी उन्हे लम्बे विश्राम की आवश्यकता होगी।

—मनोज कुमार
वैदिक सस्थान नजीबाबाद, जि० बिजनौर

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर अशोकनगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव १७ से २० सितम्बर तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन ५ ४५ से ७ ३० तक वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया है इसके अतिरिक्त प्रात तथा साय भजन उपदेश तथा वेद कथा का कार्यक्रम भी रखा गया है। १८ ९ ९२ को विशाल शोभा यात्रा निकाली जाएगी जिसमे गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो द्वारा शारीरिक प्रदर्शन किया जायगा। इस अवसर पर महिला सम्मेलन कवि सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है। २० ९ ९२ को यज्ञ की पूर्णाहुति भजन तथा प्रवचन के उपरात राष्ट्रीय एकता सम्मेलन सम्पन्न होगा। इस अवसर पर सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त अनेको नेताओ के विचार सुनने को मिलेंगे। अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर कार्यक्रम को सफल बनाव।

डा० ...व्रत सिद्धान्तालंकार का निधन

आर्य जगत का एक महाधन और चला गया

आर्य समाज के प्रखर वैदिक विद्वान, स्वतन्त्रता सेनानी, पूर्व संसद सदस्य और गुरुकुल के प्राचीन स्नातक व गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एव ... डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार का रविवार १३ सितम्बर को उनके निवास स्थान दिल्ली मे ९५ वर्ष की आयु मे निधन हो गया है।

उनके निधन पर सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार भारतीय दर्शन, सस्कृति धर्म समाज शास्त्र और वेदो के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने अनेक उपयोगी ग्रन्थों की रचना करके भारतीय सस्कृति को पुनर्जीवित करने का महान प्रयत्न किया था। भारत मे ही नहीं विदेशों में भी उनकी विद्वता व योग्यता का बड़ा आदर व सम्मान था। उनकी प्रमुख कृतियो मे एकादशोपनिषद गीता भाष्य, वैदिक सस्कृति के मूलतत्व सस्कार चन्द्रिका वैज्ञानिक व्याख्या, बुढापे से जवानी की ओर, समाजिक शास्त्र, होम्योपैथिक औषधियो का सजीव चित्रण, रोग तथा उनकी होम्योपैथिक चिकित्सा समाज शास्त्र के मूल तत्व, ब्रह्मचर्य सन्देश आदि प्रमुख हैं।

स्वामी जी ने कहा आज आर्य जगत के इस महान विद्वान के निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति होना असम्भव होगा।

स्वामी आनन्दबोध जी ने शोक सतप्त परिवार के प्रति समूचे आर्य जगत की ओर से सवेदना प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

दिवगत का अन्तिम सस्कार १३ ९-९२ को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ और शान्ति यज्ञ १९ ९-९२ को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश—नई दिल्ली ११००४८ मे होगा।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

सावदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक,सावदेशिक आर्य

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- वीर्यादि धातुओं की शुद्धि और रक्षा करना तथा युक्ति पूर्वक ही भोजन आदि तथा वस्त्र आदि का जो धारण करना है, इन अच्छे नियमों से आयु को सदा बढ़ाओ।
- उत्तम कर्म के आचरणों से नाम की प्रसिद्धि करनी चाहिए जिससे अन्य पुरुषों का भी श्रेष्ठ कर्मों में उत्साह हो।
- श्रेष्ठ गुणों के ग्रहण के लिए परमेश्वर के गुणों का श्रवण और उपदेश करते रहो जिससे तुम्हारा भी यश बढ़े।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अङ्क ३५]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   आश्विन शु० १   सं० २०४९   २७ सितम्बर १९९२

आर्यों को आक्रमणकारी कहना अब इतिहास की बात नहीं

पाठ्य पुस्तकों से ऐसी बातें तुरन्त निकाल दी जायें

गर्हित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रजातीय शब्दों का प्रयोग दुर्भाग्यपूर्ण

जाने माने इतिहासकार प्रोफेसर अजय मित्र शास्त्री ने कहा कि सच्चाई और ऐतिहासिक तथ्यों का यह तकाजा है कि आर्यों का आक्रमण और सिन्धु घाटी की नगर सभ्यता का आर्यों द्वारा विनाश जैसे सिद्धान्तों को इतिहास की पाठ्यपुस्तकों से फौरन निकाल दिया जाए। प्रो० शास्त्री ने राष्ट्रीय मानव संस्कृति शोध संस्थान की शोध पत्रिका, के नए अंक में छपे अपने लेख में कहा कि नए पुरातात्विक और भाषा वैज्ञानिक साक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य में आर्यों के आक्रमण के सिद्धान्त को काफी पहले नकारा जा चुका है। पर यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारी इतिहास की पुस्तकों में अभी तक पुरानी बात ही दुहराई जा रही है। उन्होंने अपना मत जताया कि इन गलत सिद्धान्तों से बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

प्रो० शास्त्री ने जो नागपुर विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष हैं, कहा कि ज्यादातर विद्वान इस बात का खण्डन करते हैं कि सिन्धु घाटी की सभ्यता के निर्माता गैर आर्य थे। आगंतुक आर्यों से उनका संघर्ष हुआ।

सर्वविद्वानों का मानना है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता के निर्माता वैदिक लोग ही थे और वह सभ्यता वैदिक सभ्यता के ही एक निश्चित काल का प्रतिनिधित्व करती है। आर्य और द्रविड़ शब्दों की प्रजातीय व्यवस्था का विरोध करते हुए उन्होंने कहा कि प्राचीन भारतीय साहित्य में आर्य शब्द का प्रयोग सांस्कृतिक अर्थ में किया है, जब कि द्रविड़ एक भौगोलिक शब्द मात्र था। उन्होंने पश्चिमी विद्वानों पर आरोप लगाया कि अपने गर्हित उद्देश्यों के लिए उन्होंने इन शब्दों को प्रजातीय अर्थ प्रदान किया।

प्रो० शास्त्री के मुताबिक नामकरण के नजरिए से सिन्धु घाटी की सभ्यता के बजाय हड़प्पा सभ्यता ज्यादा उपयुक्त संबोधन है। अब इस सभ्यता के करीब दो सौ स्थलों का पता चल चुका है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में दूर-दूर तक फैले हैं। इनमें से भारतीय क्षेत्र के कुछ प्रमुख स्थल कालीबंगा, आलमगीरपुर, लोथल, बनावली, रंगपुरा और बेट द्वारका हैं। उन्होंने कहा कि इस सभ्यता का विस्तार करीब १५ लाख वर्ग किलोमीटर तक था और यह प्राचीन विश्व की सबसे बड़े क्षेत्रफल में फैली सभ्यता थी।

उन्होंने कहा कि हड़प्पा सभ्यता ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से लेकर १७५० ई० पूर्व तक फैली और प्राकृतिक तथा मानव निर्मित कारणों से इसका विनाश हुआ। प्रो० शास्त्री के मुताबिक हड़प्पा सभ्यता के एकाएक अन्त के लिए आर्यों के आक्रमण को जिम्मेदार मानना सरासर गलत है और फिर हड़प्पा सभ्यता का कोई समापन हुआ ही नहीं, बल्कि इस सभ्यता में परिवर्तन मात्र हुआ। उन्होंने कहा कि कालीबंगा और लोथल आदि में यज्ञवेदियों का मिलना इस बात का प्रमाण है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग वैदिक लोगों के समान धार्मिक-आचार-व्यवहार मानते थे। (जनसत्ता १९ सितम्बर से साभार)

तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन १२ नवम्बर ९२ को पटना में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी १२ नवम्बर १९९२ को पटना में आयोजित हो रहा है। इसकी जोर-शोर से तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी हैं। स्वागत समिति का गठन भी किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका भी निकाली जाएगी। इस सम्मेलन में दक्षिण भारत के प्रमुख विद्वान, आर्य समाज और देश के प्रमुख शिक्षा शास्त्री बिहार के मुख्य मन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव तथा कई अन्य राजनेता भी भाग लेंगे। इससे पूर्व प्रथम भारतीय भाषा सम्मेलन, दिसम्बर ९१ में हैदराबाद में और द्वितीय मई, १९९२ में दिल्ली में सफलता पूर्वक सम्पन्न हो चुके हैं।

—सम्पादक

सम्पादक डा० सच्चिदानन्दशास्त्री

विदेश समाचार

लास एंजलस मे श्रावणी तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया

वैदिक धर्म समाज लास एंजलस म बाल दिवस रक्षा बन्धन स्वतन्त्रता दिवस जन्माष्टमी पव १६ अगस्त को श्री बालकृष्ण शर्मा जी की अध्यक्षता मे बडे उत्साह पूण ढग से मनाया गया। बच्चो ने पील वस्त्र पहनकर यज्ञ के आसनो पर सुशोभित होकर यज्ञ की क्रिया को स्वय स्वतन्त्र रूप से पूर्ण किया इनके पीछे बैठे हुए वेद शिरोमणि प० सत्यपाल शर्मा जी, पुरोहित मदन लाल गुप्ता वैदिक मिश्नरी श्रीमती कमला शर्मा ने बच्चो का उत्साह बढाया। सभी बच्चो के माता पिता भी अपने प्यारे पुत्रो-पुत्रियो को आशीर्वाद देने के लिए वैदिक धम समाज के विशाल हाल मे उपस्थित थे। विशेष आहुतियो द्वारा प० सत्यपाल जी ने बच्चो के स्वस्थ जीवन व दीर्घायु की प्रभु से प्रार्थना की। यज्ञ के पश्चात पुरोहित मदन लाल गुप्ता ने अपने देश भारत की स्वतन्त्रता को बनाए रखने के लिए उपस्थित भारतीय जनता को अपना कर्त्तव्य याद दिलाया तथा यह जानकारी भी दी कि इस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने मे ८५ प्रतिशत बलिदान आर्य समाज तथा आर्य कार्यकर्ताओ का है।

श्रीमती निर्मला गुप्ता के सरक्षण मे बच्चो ने देश भक्ति भगवान कृष्ण के भजन तथा अन्य धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा एक लडकी ने भाई के रूप मे एक लडके को उपस्थित जन समूह के सामने राखी बाधी और चन्द्र कान्ता शर्मा ने राखी का भजन गाया। श्रीमती सुनीता शर्मा ने अपने कला के अनुभव से वैदिक धर्म समाज के हाल को दुल्हन की तरह सजाया। डा० राजु ने अपने भाषण मे गर्व पूर्ण घोषणा की कि भारतीय बच्चे नशीली वस्तुओ के सेवन में, मार पीट, कत्ल जैसे छोटे बडे अपराधो मे शामिल नही है जबकि उनकी कक्षा मे १२ से १८ वर्ष की आयु के अमरीकन तथा विदेशी बहुत से ऐसे बच्चे है, जो कि किसी न किसी अपराध के कारण जेल मे सजा काट रहे है, डा० राजु ऐसे ही बच्चो के साथ काम करते हैं। पडित सत्यपाल शर्मा जी ने इस्लामिक सघ ISS को देश के लिए घातक बताया। डा० कृष्णा मुख्य अतिथि ने प्रत्येक को अपना जीवन सुखी बनाने के लिए शाकाहारी भोजन तथा प्रभु चिन्तन पर बल दिया। अन्त में पुरोहित मदन लाल गुप्ता ने कार्यक्रम म भाग लेन वाले बच्चो का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के अन्त में सभी परिवारो न ऋषिलगर का आनन्द लिया।

—मदन लाल गुप्ता

आर्य समाज वैस्ट मिडलैंडस का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान—श्री गोपाल चन्द्र उपप्रधान—डा० जी एम सिंगल

मन्त्री—श्री चन्द्रकान्त प्रिजा उपमन्त्री—डा० नरेन्द्र कुमार

कोषाध्यक्ष—श्री आनन्द व्रत चन्दन

अन्तरग सदस्य—श्री ओमप्रकाश कपूर, श्रीमती चन्द्रप्रभा स्नातक, श्रीमती गार्गी देवी प्रिजा श्रीमती बृजबाला दुग्गल श्रीमती रेणुका चन्दन।

अतिरिक्त अन्तरग सदस्य डा० उमेशचन्द्र कथूरिया श्रीमती एस सिंगल, श्रीमती विभा कोल श्रीमती सरिता भारद्वाज श्रीमती शामा कुमार।

आडीटर (निरीक्षक)—श्री राजीव बाली

ट्रस्टी बोर्ड—सर्वश्री गोपाल चन्द्र, डा उमेशचन्द्र कथूरिया राममूर्ति वर्मा, चन्द्रकान्त प्रिजा, सर्वजीत दुग्गल, आनन्दव्रत चन्दन, अमृत लाल भारद्वाज।

—गोपाल चन्द्र

८ मुस्लिम संगठन मसजिद के स्थानांतरण को तैयार

इलाहाबाद, २० सितम्बर। देश के आठ मुस्लिम सगठनो ने बाबरी मस्जिद को उसके वर्तमान स्थान से स्थानातरित करने की पेशकश की है। इंडियन मुस्लिम यूथ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष मुख्तार अब्बास नकवी के अनुसार ये सगठन राम जन्म भूमि मन्दिर से १० किलोमीटर दूर नई मस्जिद बनाने पर भी सहमत है।

यहा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति मे श्री नकवी ने कहा कि इन आठो मुस्लिम सगठनो ने सदभावना प्रदर्शित करने तथा बाबरी मस्जिद के स्थानातरण के बारे मे प्रधानमन्त्री तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री दोनो को पत्र लिखा है। पत्र मे हिन्दू समुदाय से यह अपेक्षा की गई है कि नई मसजिद बनाने के लिए वह जमीन की पेशकश करे हस्ताक्षर करने वाले मुस्लिम नेता है सर्वश्री अयूब सैयद (अध्यक्ष मुस्लिम फार प्रोग्रेस), शरीफ अमाल कुरैशी (अध्यक्ष मुस्लिम सघर्ष वाहिनी श्रीमती नफासा (अध्यक्ष महिला मडल), मोहम्मद आलम कोया अध्यक्ष मुसलमीन हिंद केन्द्र) डा० शफी शेख (अध्यक्ष राष्ट्रवादी मुस्लिम फ्रट) डा० अब्दुल हकीम खान, असद अन्सारी तथा मुख्तार अब्बास नकवी।

"आइडेन्टेटी कार्ड" पुस्तक को दिया गया पुरस्कार वापस लिया जाये

दिल्ली (३० ८ ९२) आर्य राष्ट्रीय मच के अध्यक्ष डा प्रशान्त वेदालकार ने बताया कि आर्य राष्ट्रीय मच की बैठक मे साहित्य अकादमी से माग की गई है कि उर्दू के लेखक अलाउद्दीन परवेज के "आइडेन्टेटी कार्ड' को दिया गया पुरस्कार वापस लिया जाय —

(क) इसमे वर्णित स्वातन्त्र्य समर के महान सेनापति आर्य समाज के गौरव अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का अपमान समूचे हिन्दू व राष्ट्र भक्ति का अपमान है।

(ख) इसमे राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान है और इतिहास को झुठलाया गया है।

(ग) इस पुस्तक मे जहा हिन्दुओ की उदारता को झूठा साबित करने की कुचेष्टा की गई है वहा भारत सरकार को भी बदनाम किया गया है।

सदस्यो ने यह भी अनुभव किया कि गत वर्षों से साहित्य अकादमी ऐसी पुस्तको को पुरस्कृत कर रही है जो आपत्तिजनक हैं जिनसे राष्ट्रीय गौरव, एकता व साम्प्रदायिक सदभाव को चोट पहुचती है।

बैठक मे यह भी निर्णय लिया गया यदि साहित्य अकादमी ने उक्त पुरस्कार वापस नहीं लिया तो आर्य राष्ट्रीय मच उसके विरुद्ध एक बडा आन्दोलन चलाने के लिए बाध्य होगा।

भारतीय भाषाओ के प्रश्न को अत्यन्त प्रभावी ढग से जनता के सन्मुख रखने के उद्देश्य से २० सितम्बर को सायकाल चार बजे आर्य राष्ट्रीय मच के तत्वावधान मे एक बैठक का आयोजन किया गया है। इस बैठक मे विभिन्न राजनैतिक दलो तथा सामाजिक सगठनो के प्रमुख व्यक्तियो को आमन्त्रित किया गया है। इस आयोजन को सफल बनाने मे लिये अधिक से अधिक सख्या मे पहुचे।

अध्यक्ष
आर्य राष्ट्रीय मच

सम्पादकीय

डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार एक मनस्वी एवं चिन्तक

गुरुकुल कागडी के प्राचीन स्नातको मे डाक्टर साहब का अग्रणी स्थान था। लुधियाना प जाब मे जन्म पाकर अपनी साधारण पारिवारिक स्थिति मे रहने वाले परिवार को लेकर पुरातन भूमि कागडी ग्राम मे अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी (तत्कालीन म० मुन्शीराम जी) के चरणो मे सौंपकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आधार पर गुरु के कुल में अर्पित कर दिया। १४ वर्ष इस शिक्षा प्रणाली मे पले और फूले और फले। स्नातक उपाधि सिद्धान्तालकार लेकर कार्य क्षेत्र मे उतरे।

आपका प्रारम्भिक कार्यक्षेत्र बगलौर मद्रास-मैसूर आदि स्थानो पर रहा। तीन वर्ष तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदेशानुसार वैदिक धम प्रचार (हिन्दी प्रचार) किया।

१९३० मे राजनीति मे प्रवेश कर हरिद्वार से काग्रेस का नेतृत्व करते हुए एक वष का कठोर कारावास भोगा। डाक्टर साहब की धर्म पत्नि स्व० श्रीमती चन्द्रावति लखनपाल एम०ए०बी०टी० ने भी उन्ही दिनो एक वर्ष की जेल यात्रा सम्पन्न की।

गुरुकुल में अधिकारी के रूप मे—

१९३५ से पाच वर्ष तक तथा पुन १९६० से पाच वर्ष तक गुरुकुल के गौरवपूर्ण उपकुलपति और आचार्य पद पर सोभायमान हुए। इसी उपकुलपति पद पर सुशोभित होने के कारण आपको सरकार ने 'फर्लस' की उपाधि से विभूषित किया। जिसका गजट भी किया गया। आप विश्वविद्यालय कागडी के परिद्रष्टा (विजिटर) ६ साल के लिए नियुक्त हुए। यह गुरुतर काय की जिम्मेदारी वहन की।

दयानन्द सेवा सदन के भी आजीवन सदस्य रहे। यह सस्था धर्म प्रचार के निमित्त श्री गोखले की 'सर्वेन्टस आफ इण्डिया सोसाइटी की भांत प्रचारार्थ बनी थी।

लेखक एव विचारक—

वैदिक साहित्य की सरचना मे आपका योगदान महान है आपने अनुपम ग्रन्थो की सरचना की।

आपके ग्रन्थ हिन्दी अ ग्रेजी में अनेक विषयो पर अत्यधिक है। आपने होम्योपैथिक समाजशास्त्र, शिक्षा शास्त्र एव ससार के विचारको का इतिहास आदि विषयो पर ग्रन्थ लिखकर साहित्य क्षेत्र मे यशस्वी बने हैं। जो ग्रन्थ आर्य जगत मे प्रामाणिक माने जाते हैं।

१ एकादशोपनिषद, २ उपनिषद प्रकाश ३ सम्स्कारचन्द्रिका, ४ वैदिक सस्कृति का सन्देश, ५ वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार, ६ गीता भाष्य ७ चतुर्वेद गगा लहरी ८ सत्य की खोज। ब्रह्मचर्य सन्देश, वैदिक सस्कृति के मूलतत्व तथा अ ग्रेजी भाषा मे लिखी अनेको पुस्तके आपकी विद्वता की साक्षात कृति है।

विदेशो मे भ्रमण—

(१) १९७८ मे आय समाज नैरोबी पूर्वी अफ्रीका म सावदेशिक आय महा, सम्मेलन आपकी ही अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ था।

(२) इग्लेंड मे आपने उनके निमन्त्रण पर वेद धर्म पर व्याख्यान दिए।

जीवन की सांझा पर विशेष सम्मान

(१) १९६० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'समाज-शास्त्र नामक पुस्तक पर मगलाप्रसाद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

दिल्ली राजधानी मैं

२ १९७५ तथा १९७९ मे सार्वदेशिक सभा न तथा दिल्ली प्रशासन की साहित्य कला परिषद ने डा० साहब को २००१) रु० से सम्मानित किया।

३ ८१ वें जन्म दिवस पर १९७९ मे वद मनीषी उपाधि दी गई। यह समारोह लाला लाजपतराय भवन मे लोकसेवक मण्डल ने आयोजित किया।

४ इलाहाबाद मे १९७, मे गगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार द्वारा आपको वैदिक विचार धारा का वैज्ञानिक आधार पुस्तक पर पुरस्कृत किया गया।

५ उत्तर प्रदेश सरकार मे १९७७ मे हिन्दी सस्थान द्वारा वैदिक विद्वान के रूप मे आप सम्मानित किए गए।

६ राष्ट्रपति द्वारा विशिष्ट सम्मान।

१६ अगस्त १९८१ को भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी ने डाक्टर साहब को वैदिक विद्वान के रूप मे 'सार्टिफिकेट आफ आनर प्रदान किया। और आजीवन ५ हजार रुपये प्रति वर्ष प्रदान करने की घोषणा की थी। फिर यह राशि ५ हजार से बढाकर दस हजार कर दी गई।

आपके जीवन की उपयोगिता का मूल्याकन किया जाय और उस पर आपको जो कुछ दिया जाए वह थोडा ही है।

सादा जीवन उच्च विचार के हामी सीधे सरल धोती कुर्ते मे पुरातन सस्कृति क सच्चे प्रतीक थे डा० सत्यव्रत जी सिद्धातलकार आपका जीवन गुरुकुलीय ढाचे मे ढला हुआ एक ऋषि तुल्य था आपका अभाव आर्य जगत के लिए महान दु खदायी साबित होगा। आप वृक्ष के पके फल थे आयु की पूर्णता को प्राप्त कर स्वर्गवासी हुए। आपका जीवन अनुकरणीय था।

प्रभु आपको सद्गति प्रदान करे।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

झारखण्ड आन्दोलन के पीछे ईसाई राजनीति

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रधानमन्त्री पी वी नरसिह राव को भेजा गया अविकल पत्र

मान्यवर पी० वी० नरसिह राव जी
प्रधानमन्त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

सेवा मे सम्मान पूवक नमस्ते।

आशा है ईश कृपा से आप आनन्द पूर्वक होगे।

आजकल बिहार प्रान्त का बटवारा कराने के लिए झारखण्ड मुक्ति मोर्चा की ओर से आन्दोलन किया जा रहा है। आप जानते है कि उस क्षेत्र मे ईसाई मिशनरियो न विदेशी धन के बल पर बडी सख्या म बनवासी जनजाति उराव मुण्डा खैरया कौणवा, असुद आदि लोगो की गरीबी का नाजायज फायदा उठाकर उनका धर्म परिवर्तन करके ईसाई बनाया है। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ईसाइ मिशनरियो द्वारा किए जा रहे धर्म परिवर्तन का सकुचित एव साम्प्रदायिक सगठन हैं। झारखण्ड की वही स्थिति है जो नागालैण्ड की थी।

बिहार मे अलग प्रान्त के बनने से केन्द्र सरकार के सामन अनेको नये सकट खडे होगे जिससे समूचे देश में भयानक स्थिति उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इन लोगो के हाथ म राजनीतिक सत्ता आने से यह विदेशी ईसाई मिशनरी समूचे देश पर प्रभावी होग। मेरा निवेदन है कि आप इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें, जिससे देश भावी सकट मे फसने से बच जावे।

कृपया आप मेरे इस पत्र को देखकर पूरे मामले की जाच करायें तभी कोई निर्णय लेवे। मैं इस सम्बन्ध मे आपसे मिलकर बातचीत करना चाहता हू। अपनी सुविधानुसार समय देकर अनुगृहीत करे।

शुभकामनाओ सहित,

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

'चनां दी रात' पर अब कानूनी युद्ध शुरू होगा

—शैलेश

नई दिल्ली १५ सतम्बर।

पंजाबी की पुस्तक चना दी रात को साहित्य अकादमी पुरस्कार दिए जाने को लेकर अब कानूनी युद्ध शुरू होगा। पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के चुनाव क्षेत्र अमठी के सक्रिय कांग्रेस कार्यकर्ता और पत्रकार जगदीश पीयूष ने चना दी रात को पुरस्कार देने के मामले मे इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ म चुनौती देन का फैसला किया है।

चना दी रात के लेखक हरिन्दरसिंह महबूब है। इस किताब मे दो कविताओ में पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी पर अपमानजनक बातें लिखी गई है। श्रीमती गांधी की हत्या करने वाल लोगो को शहीद और महान बताया गया है। कविता के अन्त मे टिप्पणी देकर यह स्पष्ट भी किया गया है कि कविता श्रीमती गांधी और उनके हत्यारो के बारे म ही है।

श्री पीयूष १० जनपथ और श्रीमती सोनिया गांधी और अमेठी के सासद सतीश शर्मा के काफी करीबी है। इस प्रकरण को अदालत म ले जाने के मामले मे १० जनपथ और कैप्टन सतीश शर्मा की सहमति है या नही यह अभी स्पष्ट नही है। श्री पीयूष इन दिनो दिल्ली म है। कैप्टन शर्मा से उन्होने पिछले दिनो मुलाकात भी की थी।

श्री पीयूष ने इस सवाददाता को बताया कि मुकदमा दायर करने का फैसला व्यक्तिगत है लेकिन उन्होने यह बताने से इनकार किया कि उन्हें राजनीतिक समर्थन प्राप्त है या नही। श्री पीयूष ने बताया कि मुझे दिल्ली और उत्तर प्रदेश के अनेक साहित्यकारो का समर्थन प्राप्त है। हाल ही मे साहित्यकारो की एक बैठक हिन्दी की लेखिका श्रीमती कृष्णा सोबती के आवास पर हुई थी। लेखको ने श्री पीयूष को पूरा समर्थन देने का वादा किया।

श्री पीयूष ने बताया मैंने वकीलो की राय ले ली है। इस पुस्तक को पुरस्कृत करने के लिए साहित्य अकादमी के नियमो का स्पष्ट उल्लघन किया गया है। यह पुस्तक श्रीमती इन्दिरा गांधी को अपमानित करती है, इसलिए भी कानूनी मामला बनता है। श्री पीयूष ने कहा कि चनादी रात के लेखक हरिन्दरसिंह महबूब के खिलाफ श्रीमती इन्दिरा गांधी की मानहानि का मामला बनता है। लेकिन मैं महबूब को पार्टी नहीं बनाऊगा। इस किताब को पुरस्कृत करके साहित्य अकादमी ने भी श्रीमती गांधी की मानहानि की है। मेरे लिए यही ज्यादा महत्वपूर्ण पक्ष है।

कानून की राय म किसी के खिलाफ मानहानिपरक बाते लिखनेवालो के साथ साथ उन्हे प्रचारित, प्रसारित और सम्मानित करन वाल भी मानहानि के भागीदार होन है। इस पुस्तक मे आतकवादियो का महान बनाने की कोशिश की गई है। साहित्य अकादमी ने पुस्तक को पुरस्कृत करके आतकवाद को गौरवान्वित करने की कोशिश की है। यह आतकवाद विरोधी कानून का उल्लघन है। साहित्य अकादमी पर आतकवाद विरोधी कानून के उल्लघन का मामला भी बनता है। उन्होने कहा मै इस किताब को पुरस्कृत करने से सम्बन्धित अकादमी के सभी अधिकारियो को मुकदमे म पार्टी बनाऊगा।

उल्लेखनीय है कि चना दी रात को पुरस्कृत करन वाली समिति की सयोजक प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती अमृता प्रीतम थी। श्री पीयूष का कहना है कि श्रीमती प्रीतम ने खुद स्वीकार किया है कि उन्होने पुस्तक को पूरी तरह पढे बिना ही पुरस्कृत करने की सिफारिश कर दी। यह अकादमी के नियमो का उल्लघन है। अकादमी के दस्तावेज बताते है कि पुरस्कार का फैसला एकतरफा ढग से किया गया। अन्य पुस्तको और अन्य निर्णायको के फैसलो की उपेक्षा की गई। यह सब अकादमी के नियमो के खिलाफ है। इसमे यह भी स्पष्ट होता है कि श्रीमती गांधी को अपमानित करने वाली इस किताब को पुरस्कृत करन का फैसला पहले ही कर लिया गया था।

उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक को पुरस्कृत करने के मामले पर साहित्य अकादमी सकट मे फसी हुई है। लेखक दो समुदायो मे बट गए हैं। अकादमी की स्वायत्तता खत्म किए जान की आशकाए भी व्यक्त की जा रही है। अकादमी ने भविष्य मे इस तरह की गलतियो को रोकने के लिए पुरस्कारो के मामल मे कायकारणी के सदस्यो का विशेषाधिकार खत्म करन का फैसला किया है। श्रीमती प्रीतम ने अकादमी की कार्यकारिणी के सदस्य की हैसियत से पुरस्कार समिति के दो सदस्यो की सिफारिशो को दरकिनार करके इस पुस्तक को पुरस्कृत करन की सस्तुति की।

श्री पीयूष का कहना है कि अकादमी और श्रीमती प्रीतम दोनो जिम्मेदार हैं। दोनो के खिलाफ कानूनी मामला बनता है। अकादमी ने पुरस्कार वापस ले लिया होता तो मैं मानता कि अनजाने मे गलती हुई थी। सब कुछ सोच-समझ कर हुआ है। इस अपमान को बर्दाश्त नही किया जा सकता। इस प्रकरण पर मानव ससाधन मन्त्रालय मे काफी दिनो से गर्मागर्मी चल रही है। मानव ससाधन मन्त्री अर्जुनसिंह के कुछ करीबी अधिकारी झक्सर समिति की रिपोर्ट लागू करान की कोशिश कर रहे है। लेकिन ज्यादातर बडे साहित्यकार इसके खिलाफ हैं। झक्सर समिति ने अकादमी में सरकार का दखल बढाने की पेशकश की है। अदालत म जान के बाद इस विवाद मे नया मोड आएगा।

आवश्यकता

मध्यप्रदेश की प्रमुख आर्य समाज सागर के लिये एक सुयोग्य पुरोहित की शीघ्र ही आवश्यकता है। योग्यता शास्त्री या उसके समकक्ष माध्यमिक स्तर तक सस्कृत पढाने की क्षमता आवश्यक। यदि धर्मपत्नी की शैक्षणिक योग्यता स्नातक तक हो तो आर्य कन्या विद्यालय मे शिक्षिका का पद दे सकते हैं। निवास विद्युत तथा जल का प्रावधान है। वेतन योग्यतानुसार।

आवेदन मे उपाधि, अनुभव आयु, तथा पारिवारिक जानकारी दें।

गुरुकुल आश्रम आमसेना (कालाहाण्डी) के लिए
अपील

इस वर्ष २८ से ३१ दिसम्बर १९९२ को गुरुकुल आश्रम आमसेना का रजत जयन्ती महोत्सव अत्यन्त समारोह के साथ मनाया जायेगा। यह जयन्ती केवल उत्सव न रहकर आर्य समाज वैदिक धर्म तथा देश की उन्नति के लिए एक प्रेरणा सद समारोह बने, आर्य जगत मे नयी आशा का सचार हो, इसके लिए आप सब का हार्दिक आशीर्वाद एव स्नेह सहयोग चाहिए। यह गुरुकुल गत २५ वर्ष से असहाय, निर्धन, वनवासियो की सेवा मे लगा हुआ है। अब तक अनेक सुयोग्य स्नातक यहा से निकल कर विभिन्न कार्यो म सलग्न हैं। सत्यार्थ प्रकाश भाष्य भूमिका आदि पचासो ग्रन्थ उडिया भाषा मे प्रकाशित हो चुके है। २४ हजार म अधर्म विदेशी मत मे गए हमारे बन्धु पुन शुद्ध होकर वैदिक धर्म मे आ चुके हैं।

इस प्रकार गुरुकुल वैदिक धर्म की रक्षा का विशेष स्तम्भ बना हुआ है। ये सब कार्य उत्तरोत्तर बढते जाए यहा के अधिकारी निश्चिन्त होकर इस उद्देश्य साधन मे लगे रहे। यह गुरुकुल मध्यप्रदेश एव उडीसा के वनवासी क्षेत्रो म वैदिक धर्म की रक्षा एव प्रचार का सुदृढ केन्द्र बने। यहा विद्यालय, छात्रावास, चिकित्सालय आदि भवनो की सुव्यवस्था हो जाये, इसके लिए २५ लाख रुपये सग्रह की योजना बनाई है। आशा है धर्म प्रेमी, उदार दानी महानुभाव इस महत्कार्य मे सहयोग देकर पुण्य एव यश के भागी बने, गुरुकुल को दिया गया दान आय कर से मुक्त होगा।

—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
प्रिंसिपल आचार्य

आर्य समाज और राजनीति

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

१५ अगस्त सन १९४७ को भारत का विभाजन होने के पश्चात समाजवादी दृष्टिकोण के लोग श्री जयप्रकाश नारायण सहित तथा साम्यवादी श्रीपाद अमृत डांगे ए. के. गोपालन और नम्बूदरीपाद आदि अपनी विचारधारा के लोगों को लेकर कांग्रेस से पृथक अपना दल बनाकर राजनीति करने लगे किन्तु आर्य समाजी जो कांग्रेस द्वारा संचालित आन्दोलनों में ८५ प्रतिशत तक जेलों में जाते थे कांग्रेस में ही बने रहे। इनका कहना था कि आर्य समाज धार्मिक संस्था है इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं।

आर्य समाज के क्षेत्र में स्व० महाशय कृष्ण का स्थान उस समय के आर्य समाज के विचारकों में प्रमुख था वह चिन्तक ही नहीं लेखनी के भी धनी थे उनके पास दैनिक समाचार-पत्र भी थे किन्तु वह आर्य समाज के राजनीति में भाग लेने के विचार के प्रमुख विरोधी थे अतएव आर्यसमाज की राजनीति की बेल सिरे नहीं चढ़ पायी। श्री पंडित प्रकाशवीर शास्त्री के राजनीति में चले जाने तथा संसद का प्रतीव विचारक प्रगल्भ वक्ता होने और अपनी योग्यता के प्रभाव से आर्यसमाज के दृष्टिकोणके अनेक कार्य सरकारसे करा लेने के पश्चात महाशय जी वीर अर्जुन और प्रताप दैनिकों में अपने लेखों में यह स्वीकार किया कि यद्यपि मैं आर्यसमाजके राजनीतिमें भाग लेने के विरोधियों में प्रमुख रहा हूं और मैं यह स्वीकार करता हूं कि मेरे ही कारण से आर्यसमाज राजनीति में अभीतक भाग नहीं ले सका किन्तु प्रकाशवीर शास्त्री के संसद में जाकर अकेला होते हुए भी हमारे अनेक काम हो जाने से मैं यह सोचने लगा हूं यदि हमने सामूहिक रूप से राजनीति में भाग लिया होता तो जिन समस्याओं पर हम लोग लिख और प्रस्ताव पास करके रह जाते हैं अब तक उनमें से अनेक हल हो जाती किन्तु यह सब सोचते हुए भी मैं यह नहीं समझ पाया हूं कि आर्यसमाज राजनीति में किस प्रकार से भाग ले?

सम्भवत ४९ या ५० की बात है कि जब श्री पंडित बुद्धदेव जी विद्यालंकार ने भारतीय लोक संघ नाम से आर्य सामाजिक दृष्टिकोण के राजनीतिक संगठन के लिये नियमावली का निर्माण किया और स्थान-स्थान पर तद्विषयक प्रचार भी किया।

सन १९५१ में मेरठ में सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन था। उस समारोह में एक राजनीति सम्मेलन श्री पंडित भगवद्दत्त की अध्यक्षता में रखा गया। उस सम्मेलन से जो वातावरण बना उसके परिणाम स्वरूप एक समिति आर्यसमाज का राजनीतिक दल बनाने विषयक निर्णय लेने के लिये बनायी गई। श्री बुद्धदेव जी ने मंच पर ही माइक पकड़ कर कहा कि सार्वदेशिक की समिति क्या करेगी? जब सार्वदेशिक सम्मेलन उपस्थित है। आर्य समाज के राजनीति में भाग लेने के विरोधियों सर्वश्री घनश्यामसिंह गुप्ता राजगुरु श्री पंडित धुरेन्द्र जी शास्त्री आदि ने कहा कि सार्वदेशिक क्योंकि आर्यों की शिरोमणि सभा है अतएव उसे समिति गठित करने और उसकी संस्तुति पर विचार कर निर्णय करने का अधिकार है। पंडित बुद्धदेव जी ने प्रश्न किया कि सार्वदेशिक सभा बड़ी है या सार्वदेशिक सम्मेलन यह निर्णय अभी कर लिया जाय। उनका कहना था कि यह सम्मेलन केवल सार्वदेशिक सभा से ही बड़ा नहीं अपितु सर्वदेशीय आर्य जनता का प्रतिनिधित्व करता है जिसने इसे निर्वाचित किया है उससे भी बड़ा है क्योंकि इस समय यहां बैठे आर्य जन ही उन प्रतिनिधियों के निर्वाचक हैं जो सार्वदेशिक को बनाते हैं। सम्मेलन की सम्मति ली गयी और निश्चय हुआ कि सम्मेलन सार्वदेशिक सभा से बड़ा है। इसके परिणाम स्वरूप सम्मेलन को यह कार्य सौंपा गया कि वह आर्यसमाज का राजनीतिक दल बनाने अथवा आर्यसमाज के राजनीति में सीधे आने के विषय में आर्य जनता की सम्मति जानकर सार्वदेशिक सभा को सूचित करे। बाद में जब पंडित बुद्धदेव जी विद्यालंकार से वार्तालाप हुआ तो उन्होंने बताया कि जहां-जहां जाकर मैं वातावरण बनाता हूं मेरे पीछे-पीछे सार्वदेशिक के चौधरी पहुंच जाते हैं और मेरे किये कराये पर मिट्टी डाल आते हैं।

सन १९५९ या ६० की बात है जब महाशय कृष्ण जी ने अपने दोनों दैनिकों वीर अर्जुन हिन्दी और 'प्रताप उर्दू' में वह लेख लिखे थे जिनकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है तभी से मैंने इस दिशा में प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया था। नई दिल्ली में सर्वश्री महाशय कृष्ण प्रकाशवीर शास्त्री और महेन्द्रदेव शास्त्री व चमनलाल एम. ए. दरियागंज वासुदेव वर्मा पटेलनगर सरदारीलाल वर्मा हनुमान रोड तथा भगवद्दत्त जी वैदिक अनुसंधानकर्ता आदि अमृतसर में कप्तान शिवचन्द्र से मेरा विस्तारपूर्वक वार्तालाप हुआ। कप्तानजी उन दिनों पंजाब जनसंघ के प्रधान थे उन्होंने ७ दिस. सन १९६० को मुझसे स्पष्ट कह दिया था कि यदि आप कुछ बना सके तो मैं जनसंघ छोड़ कर आपके साथ हो जाऊंगा दस मास लगातार प्रयत्न करने के पश्चात भारतीय लोक समिति नाम से एक संगठन खड़ा किया गया उसका ध्वज भी बना लिया गया और दिसम्बर १९६१ में उसका विधिवत उद्घाटन भी हो गया था उसके प्रमुख अधिकारी अर्थात प्रधान वन्देमातरम जी रामचन्द्र राव तथा महामंत्री श्री रामगोपाल शालवाले श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) निर्वाचित हुए थे।

वह दल किस प्रकार समाप्त हुआ अब उस इतिहास में जाने से कोई लाभ नहीं। अपनी लम्बी बीमारी के पश्चात जब महाशय कृष्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे थे तो उन्होंने वीर अर्जुन और प्रताप में अनेक लेख लिखे जो आर्य समाज और जनसंघ आर्य समाज और भारतीय लोक समिति तथा भारतीय लोक समिति और जनसंघ शीर्षक में थे सम्भवत मेरी पत्रावली में अब भी कहीं उनकी प्रतियां हैं। महाशय जी को यह इसलिए लिखने पड़े थे क्योंकि जनसंघ की पूरी शक्ति उन दिनों आर्य समाज और भारतीय लोक समिति का विरोध करने में लगी हुई थी। इस सन्दर्भ में मैंने महाशय जी से पत्र व्यवहार किया। महाशय जी का अन्तिम पत्र मुझे जब मिला तो उसके ७-८ दिन बाद ही उनका देहावसान हो गया और वह अध्याय यहीं समाप्त हो गया।

अब कुछ मास पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज राजनीति में भाग ले या नहीं एतद्विषयक विचार के लिए एक समिति बनायी है। वैसे तो भारत में समितियां प्रायः किसी समस्या को ठण्डे बस्ते में डालने के लिए बनायी जाती है। ईश्वर कृपा करे कि इस समिति का ऐसा इतिहास न बने। परन्तु यह तो निश्चित है कि इस समय भी हमारे नेता सूझ-बूझ से काम नहीं लेते तो रहा सहा आर्य समाज भी समाप्त हो जायगा जिनकी समाप्ति के लिए विरोधी पूरी शक्ति के साथ प्रयत्नशील हैं।

ध्यान रहे कि अशोक सिंहल का कभी ऋषिवर दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की ओर इंगित कर ऋषिवर और आर्यसमाज पर आक्रमण करना तथा कभी ऋषिवर को मूर्तिपूजक और हीन व निकृष्ट वृत्ति का सिद्ध करने के लिए वक्तव्य देना उसी श्रृंखला की कड़ियां हैं जिसने भारतीय लोक समिति बनने पर उस समिति और आर्य समाज के विरुद्ध जनमत निर्माण के लिये प्रबल वेग से प्रचार आरम्भ किया था। यदि आर्य समाज का राजनीतिक दल होता तो यह लोग इस प्रकार के अनर्गल प्रलाप कदापि नहीं कर सकते थे। आर्य समाज का राजनीतिक दल बन जाने पर यह झुक झुक कर नमन करेंगे। संसार में शक्ति की ही पूजा होती है। तब यह स्वयं दक्षिण पंथी मोर्चा बनाने के लिये प्रयत्नशील होंगे हिन्दू महासभा तो तुरन्त तयार हो जायगी। भारतीय लोक समिति के उद्घाटन के समय भी उस समय के हिन्दू महासभा के प्रधान श्री देशपांडे ने वहीं जाकर सार्वजनिक रूपसे यह घोषणा की थी कि आज मेरे भाई का जन्म हुआ है। अच्छा होता यदि आर्यसमाज ने यह पग कुछ वर्ष पहले उठा लिया होता किन्तु जहां आंख खुली वहां दिन निकला के अनुसार अब भी यह बहुत अच्छा पग आर्य समाज ने उठाया है। अन्त में उन्होंने कहा था मुझे अपने इस भाई के जन्म लेने पर हार्दिक प्रसन्नता हुई है। मैं आर्य समाज के इस पग का स्वागत करता हूं।

एक और बात यह है कि आर्य समाजों और सभाओं में जो झगड़े हैं वह उन लोगों द्वारा खड़े किये जाते हैं जो राजनीतिक महत्वाकांक्षी है और जो आर्य समाज के माध्यम से अपने लिये राजनीतिक क्षेत्र तयार कर लेना चाहते है। आर्य समाज का अपना ही राजनीतिक दल होने से यह झगड़े लगभग समाप्त ही हो जायेंगे अन्यथा आज जो कुछ जितना कुछ आर्य समाज है, उसे मिटाने को यही झगड़े पर्याप्त हैं।

अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद उ०प्र०

आर्य समाज और हिन्दी पत्रकारिता (९)

—आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

आर्य समाज की पत्रकारिता के इतिहास में डा० केशवदेव शास्त्री का नाम विशेष महत्त्व रखता है। इन्होंने आर्य युवकों में वैदिक धर्म के प्रति आस्था जगाकर उनका नैतिक चरित्र उठाने की दृष्टि से सन् १९१० में नवजीवन नामक एक और मासिक पत्र का सम्पादन प्रकाशन काशी से किया था। वास्तव में शास्त्री जी ने इसका उपयोग धर्मपाल बी ए और सुनीति देवी (गुजरान वाला गुरुकुल के हेडमास्टर श्री सखदयाल एम ए की बहन) के विवाह सम्बन्ध के प्रचार साफल्य और तत्सम्बन्धी आन्दोलन में बढ़ चढ़कर किया था। इस विवाह समारोह में देश विदेश के लगभग ५० से अधिक आर्य परिवार सम्मिलित हुए थे।

डा० केशवदेव शास्त्री के सहसा अमरीका चले जाने के कारण जब इसका प्रकाशन स्टार प्रेस प्रयाग की ओर से होने लगा था तब इसका सम्पादन श्री चन्द्रशेखर वाजपेयी किया करते थे। किन्तु यह इनसे चल नहीं सका और फिर बन्द हो गया। बाद में यह पत्र श्री द्वारकाप्रसाद सेवक के सम्पादन में सन् १९१५ में इन्दौर से कई वर्ष तक बड़ी सफलतापूर्वक प्रकाशित हुआ। सेवक जी बड़े ही कर्मठ और अध्यवसायी पत्रकार थे। उन्होंने अजमेर से भी वैदिक सन्देश नामक एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया था। इसमें बड़े क्रान्तिकारी लेख प्रकाशित होते थे। राज्यरत्न मास्टर आत्माराम अमृतसरी के सम्पादन में सन् १९१८ में कोल्हापुर से प्रकाशित वैदिक मार्तण्ड नामक द्विमासिक पत्र भी अपने समय में अत्यन्त उल्लेखनीय था। किसी समय प्रख्यात आर्य नेता श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय के सम्पादन में प्रकाशित वेदोदय नामक मासिक पत्र भी इलाहाबाद से बड़े ठाट बाट से निकला करता था। बाद में उपाध्याय जी के सुयोग्य पुत्र श्री विश्वप्रकाश के निरीक्षण में यह सन् १९३४ तक बराबर प्रकाशित होता रहा और फिर आर्थिक क्षति के कारण इसे स्थगित कर देना पड़ा।

इस पत्र में उपाध्याय जी के अतिरिक्त अनेक आर्य विद्वानों के बड़े गम्भीर लेख प्रकाशित हुआ करते थे। दिल्ली के मासिक श्रद्धानन्द और शुद्धि समाचार भी अच्छी सामग्री देते थे। इन दोनों पत्रों का सम्पादन स्वामी चिदानन्द सन्यासी किया करते थे। काशी के श्री सनातन धर्म नामक पत्र के प्रत्युत्तर में प्रख्यात पत्रकार श्री राधामोहन गोकुल जी ने नागपुर के प्रणवीर साप्ताहिक और सागर के वैभव नामक दैनिक का भी सम्पादन किया था।

उन दिनों आर्य सिद्धान्तों को व्यापक रूप से जनता के समक्ष प्रस्तुत करने की दिशा में जो अनेक आर्य पत्रकार अपना योगदान दे रहे थे उनमें प्रख्यात वैदिक विद्वान श्री पाद दामोदर सातवलेकर की सेवाएं सर्वथा अविस्मरणीय हैं। उन्होंने स्वाध्याय मंडल औंध (सातारा) से वैदिक धर्म नामक मासिक पत्र के द्वारा आर्य जगत की बहुत सेवा की थी। उनके द्वारा किये गये वेद भाष्यों और आर्य मान्यता सम्बन्धी टिप्पणियों को पढ़ने के लिए लोग लालायित रहा करते थे। यह उल्लेखनीय है कि अनेक विघ्न बाधाओं से जूझते हुए वैदिक धर्म इसी वर्ष धाम से निकला तथा सातवलेकर जी के निधन के बाद भी कई वर्ष तक उनके सुपुत्र श्री वसन्त श्रीपाद सातवलेकर द्वारा निर्विघ्न रूप से प्रकाशित किया।

यह खेद का विषय है कि दिसम्बर १९८५ के अंक में अपनी विनम्र निवेदन शीर्षक पंक्तियों में इसके संचालकों ने इसे बन्द करने की घोषणा इस प्रकार की थी—...इस वर्ष से वैदिक धर्म का प्रकाशन प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण बन्द करना पड़ रहा है। इसलिए हम दुःख के साथ निरन्तर ५ वर्ष तक चलते रहने के बाद आर्य समाज के इतने पुराने पत्र का अचानक इन दिनों में इसका बन्द होना निश्चय ही एक भारी आघात है। इसी प्रकार की सामग्री से परिपूर्ण अजमेर के वर्तमान स्थान की पत्रिका सविता भी अपनी उल्लेखनीय विशेषता रखती है। इसका सम्पादन स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के कनिष्ठ पुत्र श्री अभयदेव शर्मा करते हैं और इसका प्रकाशन अब भी नियमित रूप से हो रहा है।

रामलाल कपूर ट्रस्ट वाराणसी की ओर से प्रकाशित होने वाली वेदवाणी नामक पत्रिका का भी अपना उल्लेखनीय स्थान रहा है। इसका सम्पादन ... ओर अब यह पत्रिका श्री युधिष्ठिर मीमांसक के सम्पादन में सोनीपत हरियाणा से प्रकाशित होती है जहां पर ट्रस्ट का कार्यालय वाराणसी से स्थानान्तरित हो गया है। श्री गुरुदत्त वद्य के निरीक्षण में प्रकाशित अखिल भारतीय शाश्वत संस्कृति परिषद् की मासिक पत्रिका शाश्वत वाणी में भी अच्छी सांस्कृतिक सामग्री रहती है। इसका सम्पादन श्री अशोक कौशिक करते हैं। श्री राजपाल शास्त्री का दिल्ली से प्रकाशित मधुर लोक और श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम का तपोभूमि भी अच्छे मासिक पत्र हैं।

इन पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त मेरे सम्पादन में सन् १९३७-३८ में सहारनपुर से प्रकाशित होने वाला साप्ताहिक आर्य भी अपनी अल्पकालीन जीवन-यात्रा में आर्य जगत में पर्याप्त समादृत हुआ था। इसके संचालक और आदि सम्पादक श्री शीतलप्रसाद विद्यार्थी थे जिन्होंने सन् १९२४ में श्री प्रियरत्न आर्ष (बाद में स्वामी ब्रह्ममुनि) के सहयोग से शान्ति नामक मासिक पत्रिका भी प्रकाशित की थी। इस पत्रिका में वैदिक वाङ्मय और आर्यसमाज से सम्बन्धित प्रचारात्मक सामग्री रहा करती थी। अजमेर से सन् १९३८-३९ में श्री दत्तात्रय बाब्ले के सम्पादन में प्रकाशित अजय (मासिक) और विजय (साप्ताहिक) का भी आर्यजगत में अत्यन्त उल्लेखनीय स्थान रहा था। ऐसी ही सामग्री से परिपूर्ण आर्य सन्देश नामक एक साप्ताहिक पत्र आगरा से स्वामी परमानन्द के संरक्षण में सन् १९३९ में प्रकाशित हुआ था जो ६-७ मास ही जीवित रह सका। इसका सम्पादन श्री हरिशंकर शर्मा किया करते थे। मैं भी इस पत्र में सहकारी सम्पादक रहा था। वास्तव में पं० हरिशंकर शर्मा के निरीक्षण में इस पत्र से ही मैंने पत्रकारिता की विधिवत दीक्षा ली थी। गुरुवर पद्मसिंह शर्मा के पवित्र सान्निध्य और आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ के आचार्यत्व में पत्रकारिता की जो वर्णमाला मैंने अपने शिक्षण काल में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में सीखी थी उसका अभ्यास सहारनपुर में किया और श्री हरिशंकर शर्मा के पुण्य पुनीत निरीक्षण में मैं वहां विधिवत पत्रकार बना। श्री शर्मा जी ने आर्य मित्र से त्यागपत्र देकर उसका सम्पादन करने से पूर्व निराला और प्रभाकर नामक पत्रों का सम्पादन भी किया था। कुछ दिन तक वे आगरा के गया प्रसाद एण्ड सन्स प्रकाशक की ओर से संचालित एवं प्रकाशित साधना नामक पत्रिका के सम्पादक भी रहे। इन्होंने आगरा से प्रकाशित आध्यात्मिक मासिक कर्मयोग का भी सम्पादन किया था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से डा० केशवदेव शास्त्री के सम्पादन में सन् १९२७ में प्रकाशित सार्वदेशिक मासिक हिन्दी के उन पत्रों में था जिसके पाठक भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी थे। सार्वदेशिक के एक सम्पादक ... को उनका कथात्मक मनोविज्ञान नामक पुस्तक पर अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगलाप्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हुआ था। श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक सार्वदेशिक के सहकारी सम्पादक थे। ... महाशय ... ने इसे पौष्टिक सामग्री और प्रखर विचारों से परिपूर्ण करके सर्वांगपूर्ण बनाया था। आजकल यह डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के सम्पादन में साप्ताहिक रूप से प्रकाशित हो रहा है।

मृत्यु से डरो नहीं

—श्रीमती सुशीला राजपाल

मृत्यो पद योपयन्तो यदैत, द्राघीय आयु प्रतर दधाना ।
आप्यायमाना प्रजया धनेन, शुद्धा पूता भवत यज्ञियास ॥
ऋग्वेद १०-१८-२

मनुष्यो ! मृत्यु (के सिर) पर पाव रखते हुए उत्कृष्ट दीघ आयु धारण करते हुए चलो । [चल कर] सुसन्तान और धन से युक्त होकर शुद्ध, पवित्र और यज्ञिय बनो ।

प्रत्येक मनुष्य जीने की इच्छा करता है और जीने के लिए अनेक साधन जुटाता है परन्तु मरना न चाहते हुए भी मर जाता है। उसे यह भी बोध नहीं होता कि किस क्षण प्राण चले जाएंगे । वह इतना अवश्य कहता है कि भगवान की इच्छा से ही जन्म-मृत्यु का क्रम चलता है। सचमुच यह विधान शक्तिमान के हाथ मे है । मृत्यु के रहस्य को आज तक कोई नही जान पाया है। विज्ञान के इतने आविष्कार हुए, पर मानव इस गुत्थी को नहीं सुलझा पाया । बुद्धि का विकास सीमित है । आत्मा स्वतन्त्र है । जब मानव अपरा प्रकृति के बन्धन से मुक्त होकर दिव्य प्रकृति को अधिगत कर लेता है तब वह स्वतन्त्रता का अधिकारी बन जाता है । तभी वह मृत्यु के सिर पर पाव रखकर दीर्घजीवन प्राप्त करने मे समर्थ होता है ।

मृत्यु के अनेक रूप होते हैं । भौतिक मृत्यु का सम्बन्ध इस शरीर से होता है। बुढापा, रोग, अक्षमता, उदासीनता, अनिच्छा, आलस्य आदि शरीर से सम्बन्धित विकार है पर इनका मन पर पहले प्रभाव पडता है । २५ वर्ष का युवक वृद्ध हो सकता है जबकि ७५ वर्ष का व्यक्ति नवयुवकों को मात कर सकता है । ५० वर्ष के बाद व्यक्ति हार जाता है मृत्यु की बाते करने लगता है। ऐसा करना मृत्यु को निमन्त्रण देना है। मृत्यु को आगे धकेलना चाहिए ।

दूसरे प्रकार को मृत्यु प्राणिक होती है । निरुत्साह निराशा, अवसाद, व्याकुलता मानसिक असन्तुलन, आवेग, आवेश आदि इसके लक्षण हैं । इनसे रोगग्रसित होकर मनुष्य मर जाता है । मानसिक समस्वरता पहले नष्ट होती है । मानसिक दुर्बलता का शरीर और प्राणवत्ता पर असर पडता है । भयानक व्याधियो से जकडी अवस्था मे जीना वास्तविक जीवन नही है । मृत्यु भय से भी होती है। ३६५ प्रकार के भय राम रोम मे समाए होते है । चोर-भय, अधकार-भय, रोग-भय, युद्ध-भय, शत्रु-भय आदि से अभय होने के लिए ईश्वर भक्ति, आत्म-विश्वास, ध्यान आदि साधन हैं। वीर, योगी ज्ञानी, ध्यानी मुनि, ऋषि आदि स्वभाव से ही निर्भीक होते हैं।

तीसरे प्रकार की मृत्यु मानसिक होती है । चिन्ताग्रस्तता ही इसका कारण है। शिक्षित-अशिक्षित, सभ्य असभ्य—सभी चिन्ता की आग मे फसे रहते हैं। चिन्ता के कारण ज्ञात हो तो चिंता से मुक्त हो । अतीत के सुख दुखो की स्मृति, आत्मविश्वास का अभाव सन्देह शील प्रकृति पराश्रित जीवन इच्छाओ और कामनाओ की वृद्धि भविष्य की आशका आदि चिन्ता के कारण है। ज्ञानाभाव मे चिन्ता होती है। आत्मज्ञान से ही चिन्ताए नष्ट हो सकती है। भ्रमभाराक्रान्त लोग कष्टो की दलदल से निकल नही पाते ।

भौतिक, प्राणिक और मानसिक मृत्यु हमारे आध्यात्मिक विकास मे बाधक होती है । इनके कारण शक्ति क्षीण हो जाती है, गुण प्रभावहीन हो जाते हैं। भोगो मे रुचि विषयासक्ति व्यामोह, मानसिक कठोरता दुराग्रह पक्षपात, विद्रोही प्रकृति मन प्राण शरीर का आत्मा से एकत्व न होना, वैश्व प्रकृति से एकत्व का अभाव, स्वार्थपरता, अहकार—इस प्रकार के अनेक प्रतिरोध दीर्घ जीवन मे बाधक बन जाते हैं । 'जीवेम शरद शतम' कहते हुए भी हम काल के गाल मे चले जाते है ।

उपनिषद का कथन है प्राण ही भूख है, भूख ही मृत्यु । इस मृत्यु से भौतिक सृष्टि हुई है । मृत्यु ने अपने लिए मन की रचना की जिससे वह आत्मवान हो जाए । पशु मन न होने से एक दूसरे को खाते है भूख मिटाने के लिए मानवी सृष्टि हुई तो बुद्धिजीवी मानव ने अमृतत्व की इच्छा की । मरणधर्मा होते हुए भी अमृतत्व की ओर अभिमुख हुआ । जन्म और मृत्यु के कारणो का अन्वेषण किया । सभी धर्मों मे निर्वाण या मोक्ष की अभीप्सा की गई है। अविद्या, अज्ञान, कामना परिसीमित होना ही जन्म-मृत्यु का कारण है । अविद्या और अज्ञान से मुक्त होने पर मृत्यु जीती जा सकती है । जिस दिन आत्मा के प्रति सचेतन हो जायेंगे उसी दिन अज्ञानजनित मृत्यु से मुक्त हो जायेंगे । उपनिषद मे कहा है कि मनुष्य अन्न खाता है अन्न मनुष्य का भक्षण करता है। मृत्यु से अभिभूत मत होओ । उसे दूर धकेल कर दीर्घजीवी बनो । यज्ञ करो । शुद्ध पवित्र बनो । मृत्यु से डरोगे तो मृत्यु तुमको डराती रहेगी ।

वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली

कब तक अश्रु बहेंगे, मातृ भाषा हिन्दी के !

—लक्ष्मीकान्त गुप्ता कोटा

देश की स्वतन्त्रता से पूर्व भारतवासियों ने यह प्रण लिया था कि आजादी के पश्चात हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप मे सम्मानित किया जावेगा। वह जन जन की भाषा है एव सम्पूर्ण भारत मे अंग्रेजी का स्थान ले सकती है। उस समय राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने कहा था— यदि मैं एक दिन के लिए भी तानाशाह बन जाऊ तो घोषणा कर दूगा कि गाधी अंग्रेजी भूल गया। देश की जन जन की भावना के अनुरूप ही १४ सितम्बर १९४९ को मातृ भाषा हिन्दी को राजभाषा का सिरमौर पहनाया गया। वह दिन था जब भाषा विहीन गूगे राष्ट्र को चेतना का आभास हुआ एव मानस पट पर प्रसन्नता की लहर दौड गई। दुर्भाग्य यह रहा कि राजनीति ने इधर भी अपनी घुसपैठ मचाई तथा तुरन्त ही विकल्प खोज निकाला। संविधान के अनुच्छेद ३४३ तथा ३४५ के अनुसार हिन्दी को सघ की तथा हिन्दी भाषी राज्यो की राजभाषा घोषित किया गया तो दक्षिण के अनेक राज्यो मे विरोध खडा हुआ एव १९६३ मे एक अधिनियम जारी हुआ ताकि हिन्दी के प्रयोग के साथ अंग्रेजी के प्रयोग को भी अनुमति दी गई।

आज वर्षों पूर्व की योजनाओ एव भाषा प्रेम मे शिथिलता आ गई। क्षेत्रीय एव जातीय भावनाये जोर पकड गई। राष्ट्रीय भावना का स्थान प्रादेशिकता ले बैठी। वैज्ञानिक एव तकनीकी शिक्षा मे कठनाई जता अंग्रेजी माध्यम से प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयो मे भी शिक्षा देने की होड लग गई। सरकारी कार्यालयो मे संविधान की घोषणाओ को अनदेखा किया जाने लगा तथा मातृ भाषा के प्रति छलाव किया गया। व्यापारिक संस्थाओं मे अंग्रेजी अथवा प्रादेशिक भाषा को अधिक तर्जी दी जाने लगी। परिवारो मे अंग्रेजी बोलना शिशुओ को अंग्रेजी के शब्दो को रटाना घरो के पालतू पशुओ को भी अंग्रेजी नामो से सम्बोधित करना एक फैशन सा बन गया। किसी परिवार मे उत्थान का एक माप दण्ड अंग्रेजी का अधिकतम प्रयोग समझा जाने लगा। संविधान मे स्थान पाने के इतने वर्ष पश्चात हिन्दी आज क्षीण-काय अवस्था को प्राप्त है। इसी दशा का अवलोकन करने हेतु हम १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप मे मनाते हैं। खाशया मनाते हैं परन्तु मातृ भाषा के अश्रुपूरित नेत्रो को उसकी डबडबाई आखो के प्रति हम किंचित भी द्रवित नही है। दयनीय बात है कि इतनी लम्बी अवधि के पश्चात भी मात्र १४ सितम्बर के दिन केवल हिन्दी मे कार्य करने की शपथ लेगे एव उस दिन भर हिन्दी मे हस्ताक्षर करेगे। अहिन्दी भाषी क्षेत्रो से तो आशा ही क्या उत्तर भारत के हिन्दी भाषी क्षेत्र मातृ भाषा के प्रति उदासीन है। किसे कहे हिन्दी भाषी क्षेत्र के साहित्यकारो ने भी मातृ भाषा को प्रतिष्ठित करने का दम नही भरा।

अंग्रेजी भाषा ज्ञानी माना तीन प्रतिशत भारत मे है जो हिन्दी की सार्थकता को चुनौती देते हैं। चिकित्सा अभियान की एव तकनीकी क्षेत्र मे अधिकाश शब्द लेटिन अथवा ग्रीक मे है अंग्रेजी मे नही है। यदि विश्व रूस जापान एव जर्मनी अपनी २ भाषा मे पढा सकते है तो भारत में क्यो नही

भ्रम फैलाने वाले अंग्रेजी के विद्वान को यह नही भूलना चाहिये कि हिन्दी ससार की सरलतम भाषा है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्रो मे अपना पहुच मे पूर्णतया समर्थ है। भारतीयता का स्रोत इसी के प्रवाह मे है। देववाणी इसी माध्यम से सुनी जाती है। मानव जीवन का सारगर्भित सन्देश इसी वाणी मे है। वेद मन्त्रो से पूजा अर्चना का विस्तार मातृ भाषा मे ही है। सूर और तुलसी का भक्ति ध्वनि स्वामी विवेकानन्द एव महर्षि दयानन्द के उपदेश इसी वाणी मे है। लोकमान्य तिलक एव राष्ट्रपिता गाधी ने इसी भाषा मे राष्ट्रीय आन्दोलन को हवा दी। हिन्दी दिवस की इस पवित्र वेला पर राष्ट्र अपनी मातृ भाषा के प्रति अपने कर्तव्यो का आत्म चिन्तन करे एवम शपथ ले देश की भाव एकता हेतु हिन्दी के प्रति रचनात्मक कार्यों की। तभी पूर्ण होगा हमारी स्वतन्त्रता के पूर्व का प्रण

प्रो० रामसिंह महान् प्रेरणापुञ्ज

नई दिल्ली। २९ ८ २ को पहाडगज मे हिन्दुओ के गौरव कर्मयोगी वीर हिन्दू नेता प्रो० रामसिह जी का ९७ वा जन्म दिवस वीर सावरकर समिति दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष प्रो ए के मल्होत्रा की अध्यक्षता मे धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम तेजबहादुर कौला सुनीता गुप्त और प्रो लालसिंह चौधरी ने प्रतिमा पर फूल चढाते हुए श्रद्धाजलि दी।

समिति के अध्यक्ष प्रो ए के मल्होत्रा ने प्रो रामसिंह जी के जीवन पर प्रकाश डाला और कहा कि प्रो० साहब मार्शल ला मे लाहौर मे बन्दी बनाये गये थे और उन्हे फासी की सजा दी गयी बाद मे उनको एक कुर्ता और एक पायजामा मे दिल्ली रेलवे स्टेशन पर छोड दिया गया। क्योंकि हण्टर कमेटी ने इस आधार पर उन्हे दोषमुक्त करार दिया कि एक ही व्यक्ति एक समय पर पाच स्थान पर नही हो सकता है। तब से आपका कार्यक्षेत्र दिल्ली हो गया आप हिन्दू महासभा के टिकट से १९३६ से १९५१ तक नगर पालिका के ११ वर्षों तक सदस्य रहे। और १९५२ मे विधान सभा के लिए हिन्दू महासभा के टिकट पर चुने गये।

आपने कश्मीर आन्दोलन गोआ आन्दोलन विश्वनाथ मन्दिर सत्याग्रह चाउ एन लाइ का विरोध प्रदर्शन हिन्दी रक्षा आन्दोलन और गोरक्षा आदोलन मे बढ चढ कर भाग लिया। प्रो साहब अखिल भारतीय हिन्दू महासभा पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक वर्ष तक अध्यक्ष रहे और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के भी कुलपति ५ वर्ष तक रहे।

आज हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए प्रतिज्ञा करते है कि हम भी उनके दिखाये मार्ग पर चलते हुये हिन्दुओ के हित के लिए कार्य करते रहेगे। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजंलि होगा।

—प्रो ए के मल्होत्रा अध्यक्ष

चुनाव समाचार

आर्य समाज मन्दिर मगोलपुरी दिल्ली ८३ का वार्षिक चुनाव शनिवार दिनाक १५ ८ १९९२ को दोपहर तीन बजे श्री रामसिंह आर्य की अध्यक्षता मे एफ ६४५ मगोलपुरी दिल्ली ३ मे सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न अधिकारी सर्वसम्मति से मनोनीत किये गये।

श्री उपेन्द्र कुमार प्रधान श्री धर्मपाल आर्य मन्त्री श्री दयालसिंह मनराल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—धर्मपाल आर्य मन्त्री

कुछ अपनी—कुछ उनकी

देश-विदेश की कई हजार आर्य समाजो की सर्वोच्च सस्था होने के नाते सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे समस्त आर्य जगत की विभिन्न गतिविधियो की जानकारी प्राप्त होती रहती है। इस प्रक्रिया से एक न फ तो इस बात का स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि आर्यसमाज केवल मात्र धर्म का उपदेश करने के लिये ही नहीं बना एव उपदेशो का क्रियान्वयन एक सुदृढ समाज बनाने के लिये किस प्रकार किया जा सकता है यह सुनिश्चित करना भी आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है।

हाल ही मे कानपुर के स्वरूप नगर आर्यसमाज की वार्षिक रिपोर्ट प्राप्त हुई। इस आर्यसमाज द्वारा सामाजिक कार्यों के लिये एक विशेष सेवा समिति का गठन किया गया है। जो कि पिछले तीन वर्षों से अपने क्षेत्र मे सेवा कार्यों का झण्डा उठाये दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। आठ विशेषज्ञ डाक्टरो की एक टीम इस आर्यसमाज के प्रधान डा० आर्० एस० सोढी के नेतृत्व मे प्रतिवर्ष सैकडो रोगियो का मुफ्त इलाज तथा उन्हे दवाइया उपलब्ध कराती हैं। गत वर्ष इस समिति द्वारा १५ विद्वानो को लगभग दो हजार रुपये प्रतिमाह का राशन वितरित करने के अतिरिक्त, निर्धन छात्राओ को छात्रवृत्ति असहाय लडकियो के विवाह मे सहायता, तीन नि शुल्क महिला सिलाई केन्द्रो का सचालन, चालीस निर्धन बच्चो के लिये प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की गई है। इन सबके अतिरिक्त राजकीय महिला आश्रम मे १४ कन्याओं के सामूहिक विवाह मे भी इस समिति द्वारा योगदान किया गया है। यह समिति प्रतिवर्ष नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर भी लगाती है तथा आपरेशन के बाद प्रत्येक रोगी को एक एक कम्बल भी प्रदान किया जाता है। इस समिति द्वारा आर्य नगर इन्टर कालेज मे एक ट्यूबेल तथा एक अन्य विद्यालय मे बच्चो के लिये हैण्ड पम्प भी लगवाया गया है। एक नि शुल्क होमियोपैथिक औषधालय भी इस समिति द्वारा चलाया जा रहा है जिसमे लगभग छ सात सौ रोगी प्रतिमाह लाभ उठाते हैं। इन सब कार्यों के अतिरिक्त समिति ने कई स्थानीय व्यक्तियो तथा सस्थाओ की मदद भी की है। टिहरी गढवाल मे गत वर्ष भूकम्प पीडितो की सहायता के लिये लगभग चालीस हजार रुपये का सामान भी इस समिति ने वितरित किया है।

इन उपरोक्त कार्यों को देखते हुये आर्य समाज को केवल मात्र धार्मिक सस्था कहना उचित नही होगा। यह सब लिखने का मेरा उद्देश्य कवल उन गैर आर्य समाजी लोगों के समक्ष स्पष्टीकरण प्रस्तुत करना ही नही है जो आर्यसमाज को कवल धार्मिक सस्था समझते हैं अपितु आर्यसमाज के उन महान् सेवको और अधिकारियो की सेवा मे भी मेरा निवेदन है कि अपने अपने क्षेत्र मे बैठकर वे यह साबित करें कि आर्य समाज की गतिविधियां समाज सेवा के कार्यों मे भी अग्रणी है। क्योंकि इस समाज का मुख्य उद्देश्य ससार का उपकार करना है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति मे अपना उन्नति समझनी चाहिये। आर्यसमाज का यह नौवा नियम भी इसी के समर्थन में लिखा गया प्रतीत होता है। आर्य समाज राजनीति में एक प्रेरणा स्रोत बने ऐसी मेरी कामना है। (क्रमश)

—विमल वधावन एडवोकेट

आवश्यकता है

एक सुयोग्य सेवा निवृत आर्यसज्जन की जो अतिथि भवन एव आयसमाज के दिन प्रतिदिन के कार्यों का प्रबन्ध सुचारू रूप से चला सके। उचित वेतन तथा आवास व्यवस्था समाज मन्दिर परिसर मे ही। पूर्ण विवरण सहित आर्य समाज, सैक्टर २२ ए चण्डीगढ के प्रधान अथवा मन्त्री को तुरन्त आवेदन दें।

—बुधराम आर्य, मन्त्री

मंजिल को चूमने की यहां होड़ मचा दो!

—सन्तोष 'कण्व'

सन्देश दयानन्द का धरती पे गुजा दो।
सोए पड़े हैं लोग जो अब उनको जगा दो॥
घर मे घुसे बैठे हैं जो इस घर के ही शत्रु।
उत्पात मचा पाए न पहले ही भगा दो॥
मिल जुल के रहो प्रेम से सकट की घडी है।
नित पाठ प्रेम स्नेह का जन जन को पढा दो॥
मुक्ताओ की माला रही ये टूट न जाए।
मोती सभी अनमोल इन्हे क्रम से पिरो दो॥
उन्नति के मार्ग पर बढा अ मन को छोडकर।
मजिल को चूमने की यहा होड मचा दो॥
सुख चैन से रहो मगर दुख दो न किसी को।
छलक जो अश्रु भाई के झट उनको हटा दो॥
जो भी दिया भगवान ने मिल बाट के खाओ।
दूरी न बढे बीच की पहले ही घटा दो॥
हसता व खेलता सदा परिवार यह रहे।
यज्ञो की प्रथाए यहा अब फिर से चला दो॥
भटका है आज विश्व सब मिलती नहीं दिशा।
त्रेतादि-नष्ट साधना इस जग को बता दो॥
भूलो न कभी उनको जो इस देश पर मिटे।
भारत को पुन विश्व का सरताज बना दो॥

आर्य भवन के लिये सेवक की आवश्यकता

आर्य भवन विभवनगर आगरा के लिये एक कर्मचारी सेवक जो पुरुषार्थी और सेवा भाव मे रुचि रखता हो, की आवश्यकता है। अकेले अथवा पति पत्नी निवास बिजली पानी की पूर्ण सुविधा है। वतन सात सौ रुपया मासिक।

—इन्द्रमोहन मेहता
२८ सैक्टर ३ विभवनगर आगरा

सार्वदेशिक आर्य वीर दल कोटा

दिनांक २५-८-९२ को सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक हरीसिंह आर्य कोटा सभाग के सचालक श्री कमल नयन के निमन्त्रण पर कोटा नगर म २६-८-९२ मे पहुचे तथा वहा के आर्य वीर दल के मुख्य कार्यकर्त्ताओ की एक बैठक ली। जिसमे वहा के अधिकारियो न पूरे हाडौती क्षेत्र म पुन सक्रिय होकर काम करन का वचन दिया। तथा कोटा नगर सचालक श्री लालचन्द आर्य न कहा कि मैं कोटा के प्रत्यक समाज मे आर्य वीर दल की शाखा पुन प्रारम्भ करूगा। वर्तमान मे रामपुरा आर्य समाज मे श्री विरधीचन्द के नेतृत्व मे एक शाखा चल रही है। जिसमे लगभग दोनो समय २० आर्य वीर आते है। हाडौती आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा प्रधान उत्साही और जुझारू श्री राजेन्द्र आर्य ने कहा कि पूरे हाडौती क्षेत्र की सभी समाजो मे आर्य वीर दल की शाखा ही लगेगी अन्य किसी सगठन की नही। और मैं इस कार्य मे कोटा सभाग के सचालक एव हाडौती उपप्रतिनिधि सभा मे आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री कमल नयन आर्य का तन-मन व धन से पूरा सहयोग करूगा। और भावी आर्य वीर दल का कार्य युद्ध स्तर पर बढायेंगे।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

गुरुकुल कालवा मे शिविर सम्पन्न

गुरुकुल कालवा (जीन्द) मे आसपास के ग्रामो के आर्य वीरो का व्यायाम प्रशिक्षण शिविर १ से १३ अगस्त तक डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता मे लगाया गया जिसमे १०० आर्य वीरो ने भाग लिया। अन्तिम दिन श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य मे आर्यवीरो को यज्ञोपवीत प्रदान किये गये। व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम की सभी दर्शको ने प्रशसा की। इस अवसर पर डा० देवव्रत जी ने ग्राम कलावती पिल्लूखेडा गामोली कालवा तथा गुरुकुल मे ५ आर्य वीर दल की शाखायें स्थापित की।

—हरीसिंह आर्य, कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

गुरुकुल कुम्भाखेडा (हिसार) म १७ से २८ अगस्त तक डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सचालक के मार्ग दर्शन मे आर्य वीर दल शिविर का आयोजन किया गया जिसम २५० आर्य वीरो ने शारीरिक एव बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। स्मरण रहे इस गुरुकुल मे गत २ वर्ष से नियमित शाखा चलती है। गुरुकुल के कुलपति स्वामी रत्नदेव जी इस क्षेत्र मे आर्य वीर दल के कार्यक्रम को आगे बढाने के लिये कृत सकल्प है। १९-२० सितम्बर को नरवाना मे होने वाले प्रान्तीय सम्मेलन मे यहा से १०० आर्य वीर भाग ले रहे है।

—हरीसिंह आर्य, कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

योग शिविर

अलवर। आर्य वीर दल अलवर के तत्वावधान म १ से १५ सितम्बर तक डा० देवव्रत आचार्य के मार्ग दर्शन मे योग शिविर का आयोजन किया गया है जिसमे आसन प्राणायाम द्वारा ब्लडप्रेशर दमा मधुमेह, गैस बनना, अजीर्ण कब्ज नजला, जुकाम वायु विकारो को दूर करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण एव मानसिक शान्ति के लिये प्रत्याहार का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया। शिविर सयोजक श्री सत्यवीर आर्य सचालक आर्यवीर दल राजस्थान ने बताया कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी शिविर म नगर प्रतिष्ठित नागरिक, प्रशासनिक अधिकारी एव बुद्धिजीवी लोगो न शिविर मे सोत्साह भाग लिया।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज नजफगढ आर्य समाज नजफगढ नई दिल्ली का ५८ वा वार्षिकोत्सव ६ से ११ अक्तू० तक बडी धमधाम से मनाया जा रहा है इस अवसर पर ६ अक्तूबर को एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया है। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आर्य समाज सक्टर १९ फरीदाबाद का ३५ वा वार्षिकोत्सव २६ से २७ सितम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर २१ से २५ सितम्बर तक वेद कथा एव पारिवारिक सत्सगो का आयोजन भी किया गया है। समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त अनेका विद्वान भजनोपदेशक तथा नेता पधार रहे है इस अवसर पर वेद सम्मेलन युवा सम्मेलन नशाबन्दी सम्मेलन राष्ट्ररक्षा सम्मेलन आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं अन्तिम दिन ऋषि लगर का भी प्रबन्ध है।

गुरुकुल आर्य नगर हिसार का वार्षिकोत्सव ३ से ४ अक्टूबर तक सम्पन्न होने जा रहा है १ अक्टूबर से विशाल यज्ञ प्रारम्भ होगा जिसकी पूर्णाहुति ४ अक्टूबर को सम्पन्न होगी इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान उपदेशक तथा गणमान्य व्यक्ति पधार रहे है।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक करतार पुर जालन्धर का वार्षिकोत्सव २१ से २७ सितम्बर ९२ तक उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर ब्र० अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व मे सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। इस अवसर पर वैदिक गोष्ठिया एव कथा तथा अनेको सम्मेलनो के अतिरिक्त वेद अष्टाध्यायी सस्कार विधि कण्ठस्थीकरण परीक्षायें भी आयोजित की गई है। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक तथा अनेका गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

नि:शुल्क नेत्र शिविर

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि आपकी सस्था आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी मेरठ की ओर से छठा नि शुल्क नेत्र आपरेशन शिविर का आयोजन दि० २ से ६ १० ९२ तक ती एवी इटर कालिज अग्रवाल मण्डी टटीरी मे किया जा रहा है शिविर मे गूजरमल मोदी नेत्र चिकित्सालय मोदी नगर के प्रभारी डा० वी के तिवारी एव सहयोगी चिकित्सक नेत्र रोगियो की जाच एव आपरेशन आधुनिक यन्त्रो द्वारा करेगे। मरीजो को भोजन दूध दवाई एव आपरेशन के बाद नि शुल्क चश्मे आर्यसमाज की ओर से दिये जायेगे।

अभिमन्यु कुमार प्रधान

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

वेद धर्मपाल यज्ञ समिति सांपला कलां रोहतक के तत्वावधान मे यजुर्वेद महापारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती पातजलि योगधाम आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार (यू० पी०) होगे। यह यज्ञ दि० ४ से ११ अक्तूबर तक गान्धीजी एव शास्त्री जी की जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रकल्याण हेतु कराया जा रहा है इस यज्ञ मे अनेक धार्मिक सामाजिक एव प्रदेश तथा राष्ट्रीय नेता भाग ले रहे है अत सभी आर्य सज्जनो से प्रार्थना है कि यज्ञ मे आहुति डालकर पुण्य के भागी हो एव साधु महात्माओ के उपदेशो से लाभान्वित होवे।

महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन एव अथर्ववेद पारायण यज्ञ

जगदगुरू महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन स्मृति मे महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर के तत्वावधान मे २९ सित० से १० अक्तूबर १९९२ तक द्वादश दिवसीय अथर्ववेद पारायण महायज्ञ का विशाल आयोजन किया गया है। इस अवसर पर ७ से १० अक्तूबर तक महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन का भव्य आयोजन भी किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान साधु तथा महात्माओ सहित अनेको नेताओ को भी आमन्त्रित किया गया है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर आयोजन को सफल बनायें। —मन्त्री



आर्य समाज लोअर परेल सस्था के वार्षिक कार्यक्रम मे नोट बुक और बक्षिस समारम्भ मे सस्था की ओर से एस एस सी परीक्षा मे प्रथम स्थान हुई कुमारी सुप्रिया सभा जा गवाणकर को बधाई देते हुए श्री ओकारनाथ जी आर्य प्रधान मुम्बई प्रदेश प्रतिनिधि सभा श्रीमती शिवराजवती आर्या और सस्था के प्रधान श्री शांताराम गावणकर।

आर्य समाज लोअर परेल की तरफ से नोटबुक वितरण एव सम्मान कार्यक्रम

आर्य समाज लोअर परेल सस्था की तरफ से रविवार को नोटबुक वितरण एव सम्मान कार्यक्रम बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकारनाथ जी आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सस्था के अध्यक्ष श्री शाताराम गोवलकर ने उपस्थित सदस्यो एव मेहमानो का स्वागत करते हुए समिति के कार्य का विवरण दिया। श्री ओकारनाथ जी आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे समिति के सदस्यो का आभार प्रदर्शन करते हुए कामयाब विद्यार्थियो को बधाई दी। और इमारत के बांधकाम के लिए सभी तरह की मदद करने का आश्वासन दिया श्रीमती शिवराजवती आर्या ने गायत्री मन्त्र का गायन करके श्री कृष्ण चरित्र का गीत गाकर सुनाया। कार्यक्रम के दौरान नगरसेवक श्री वेड आयरे का सम्मान किया गया। एव सदस्यो के २३४ बच्चो को नोट बुक का वितरण किया गया। विशिष्ट श्रेणी मे पास हुए ३७ विद्यार्थियो को पारितोषक एव स्कालरशिप देकर श्री ओकारनाथ जी आर्य के शुभ हस्ते सत्कार किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान उद्योगपति श्री कल्याणदेवभाई आर्य व उद्योगपति श्री लल्लाभाई पटेल ने भी सस्था को सभी तरह की सहायता करने का आश्वासन दिया। नगरसेवक श्री वेड आयरे और श्री अशोक शिन्दे ने भी सभा के दौरान भाषण दिया

उपर्युक्त कार्यक्रम को सफल करने मे सस्था के मुख्यमन्त्री श्री मधुकर वि० यादव उपमन्त्री श्री अरुण चिपलणकर श्री विश्राम देवलेकर कोषाध्यक्ष श्री शिवराम देवलेकर व श्री सातारास ताम्हनकर ने बहुत सहयोग दिया।

अन्त मे उपाध्यक्ष श्री रमेश वामणकर ने उपस्थित सभ्यो को धन्यवाद दिया। मधुकर व यादव मुख्य सचिव

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

वैदिक सिद्धान्त दर्शन १२)

(ले प्रमनाथ चड्ढा एडवोकेट)

सन्ध्या अष्टांग योग ५)

(ले०—स्वामी आत्मानन्द सरस्वती)

प्राप्ति स्थान —

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन

रामलीला मैदान नई दिल्ली ११०००२

पोस्टल राजस्ट्रशन न० डी० एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२० ९ १९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 676 57 Li ensed to post without prepayment License No U 93Post n N D P S O on 24 25 9 1992

श्रावणी ~ तथा वेद प्रचार सप्ताह
धूमधाम से सम्पन्न

देश तथ ~ न ~ आर्य समाजो से श्रावणी वेदप्रचार सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाये जाने के समाचार बहुत बडी संख्या मे निरन्तर प्राप्त हो रहे ० अवसर पर यज्ञ वेद प्रवचन गोष्ठिया प्रभात फेरी शोभायात्रा तथा अन्य व ~ कार्यक्रम आयोजित किये गये स्थानाभाव के कारण ~ तन समाचार प्रकाशन करने मे असमर्थ है अत आर्य समाजो के नाम प्रकाशित किय जा रहे ~ सम्पादक

आर्य समाज ~ आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर आर्य समाज रामग ~ र्वी चम्पारण आर्य समाज नोरियाहू ~ कटिहार आर्य समाज मुल्तान पु ~ ननीता ग्राम शिकमली जि० मेरठ आर्य समाज इन्दर आर्य सम ~ पजाबी दिल्ला अन्य समाज बीमनपुर आर्य समाज त्रिकटानगर जम्मू अन्य समाज ~ आर्य समाज मोगरगा आर्य समाज गया आर्य समाज महाराजपुर छतरपुर आर्य समाज रीवा आर्य समाज सिविल लाइन्स अलीगढ ।

दमा श्वास की नि शुल्क औषधि का वितरण

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी शरद पूर्णिमा शनिवार दिनाक १० १० ९२ को दमा की वातनाशक औषधि आर्य समाज लातूर महाराष्ट्र द्वारा म० डागा चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से नि शुल्क वितरित की जायगी ।

दमा श्वास पुराना खासी यादि कफ विकारो पर इस वातनाशक औषधि का अच्छा लाभ होते देखा गया है । अत इच्छुक व्यक्ति इस नि शुल्क औषधि वितरण का लाभ उठाये । तदर्थ निम्न स्थानो मे से किसी एक से सम्पर्क कर ।

१ मन्त्री आर्य समाज लातूर महाराष्ट्र पी ४१२ ५१२

२ वैद्य राजकृष्ण व्यास मेन रोड लातूर

३ डागा चैरिटेबल ट्रस्ट क्लाथ लाइन लातूर

नोट —दूर दराज के रुग्ण जो लातूर आने मे असमर्थ है वे पत्र द्वारा सूचित कर तो उन्हे डाक द्वारा औषधि तथा औषधि लेने का विवरण आदि नि शुल्क भेजने की व्यवस्था की जायगी । अत रोगी अपना पता लिखा हुआ पोस्ट लिफाफा भेजे जिससे नि शुल्क औषधि भेजने मे सुविधा होगी ।

मन्त्री—आर्य समाज लातूर

तपोवन (देहरादून) का शरदोत्सव ३० सितम्बर से

देहरादून सितम्बर । वदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून) म प्रति वर्ष अप्रैल मे होने वाला ग्रीष्मोत्सव और अक्तूबर मे होने वाला शरदोत्सव अब प्रभूत लोक प्रियता प्राप्त कर चुके है और इन अवसरो पर आयोजित वृहद यज्ञो की पूर्णाहुति वाले दिन तो दूरस्थ स्थानो से आगत श्रद्धालुओ का मेला सा हो जाया करता है । इक्के दुक्के आने वाले यात्रियो के अतिरिक्त दिल्ली आदि नगरो से बस बस यात्रा समूह विशेष बसो से भी आते हैं ।

इस वर्ष का शरदोत्सव ३० सितम्बर से आरम्भ होकर ४ अक्तूबर को सम्पन्न होगा । योग साधना शिविर का मार्गदर्शन पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज करग और यज्ञ के ब्रह्मा होगे मथुरा के महात्मा प्रेमभिक्षु जी महाराज । महात्मा चयनमुनि जी यज्ञ मे सहयोगी रहेंगे । प्रवचन कर्ताओ मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के आचार्य राम प्रसाद वेदालकार और विदुषी माता प्रकाशवती जी के नाम विशेष रूप स उल्लेखनीय है ।

महोत्सव की तैयारिया श्रद्धा और उत्साह के साथ चल रही हैं ।

देवदत्त बाली

ध्यान योग शिविर

योग प्रेमी साधक और साधिकाओ को सूचित किया जाता है कि पातजल योगधाम ज्वालापुर हरिद्वार मे शीतकालीन योग शिविर ११ से १८ अक्तूबर १९९२ तक स्वामी दिव्यानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगा । यथासमय पहुचकर लाभ उठायें ।

कृष्ण देव कपूर प्रचार मन्त्री योगधाम

वेदमन्त्र और याज्ञिक अनुष्ठान के साथ भा० मन्दिर मे स्वतन्त्रता दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी की ओर से वेद प्रचार सप्ताह के क्रम मे समाज के मन्त्री काशी विद्यापीठ के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष श्री श्रीराम शास्त्री द्वारा भारतमाता मन्दिर पर स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर भव्य आयोजन किया गया जिसमे सैकडो लोगो ने इस पावनपर्व पर याज्ञिक अनुष्ठान के साथ राष्ट्र रक्षा और उसकी जन खुशहाली के लिए सकल्प लिया । इस अवसर पर प्रसिद्ध गाधीवादी विचारक स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी अर्थशास्त्री काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डा डी एन चतुर्वेदी ने भारत माता मन्दिर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया ।

इस अवसर पर डा चतुर्वदी जी ने भारतमाता मन्दिर के निर्माण की कहानी के साथ ही राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य सग्राम मे महापुरुषो के योगदान और बलिदानियो की कहानी को स्मरण दिलाते हुए आज राष्ट्र रक्षा और खुशहाली के लिए उनसे प्रेरणा लेने को कहा ।

इस अवसर पर काशी विद्यापीठ के डा रामचन्द्रसिंह एव डा इन्द्रजीतसिंह तथा आर्य पुरोहित श्री राजेन्द्रप्रसादसिंह के भी प्रवचन हुए ।

मेवात क्षेत्र मे वेद प्रचार की धूम

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के तत्वावधान मे मेवात क्षेत्र मे पहली बार ४३ स्थानो पर धूआधार वेदप्रचार का कार्यक्रम ३१ अगस्त से ५ अक्तू० तक आयोजित किया गया है । इस अवसर पर पर आर्य जगत के अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशक विभिन्न क्षेत्रो मे प्रचार हेतु जायेंगे ।

मेवात क्षेत्र मे प्रमुख रूप से गोवध धर्मपरिवर्तन तथा कुछ असामाजिक तत्वो द्वारा तरह तरह के आतक पूर्ण कृत्य होते रहते है । जिनका उन्मूलन आर्य समाज द्वारा ही सम्भव है । उक्त विचार मण्डल के महामन्त्री श्री सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम ने व्यक्त किय । गत दिनो आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात की बैठक आर्य समाज मन्दिर पहाना म हुई थी । जिसमे अनेक महत्व पूर्ण मुद्दो पर विचार हुए ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष . ३३७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पै०

वर्ष ३ अंक १६] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ आश्विन शु० सं० २०४६ ४ अक्तूबर १९९०

महर्षि दयानन्द उवाच

- जो मनुष्य विद्या पढने का सामर्थ्य तो नहीं रखते और वह धर्माचरण किया चाहे तो विद्वानो के संग और अपने आत्मा की पवित्रता और अविरुद्धता से धर्मात्मा अवश्य हो सकता है, क्योकि सब मनुष्यो का विद्वान् होना तो सम्भव नहीं, परन्तु धार्मिक होने का सम्भव सबके लिए है।
- उन्ही की सन्तान विद्वान् सभ्य और सुशिक्षित होते हैं, जो पढाने मे सन्तानो का लाडन कभी नही करते।

कश्मीर भारत का और केवल भारत का है

संयुक्त राष्ट्रसंघ में पाकिस्तान को मुंहतोड़ उत्तर

सयक्त राष्ट सघ ७ मित० । गत गत मयुक्त राष्ट्र सभा म भारत ने पाकिस्तान को उस ममय खूब सुनाई जब इस्लामाबाद न नई दिल्ली पर उनके कथनानसार विवादास्पद स्थान पर भारत पर दोषारोपण करते हुए कश्मीर का प्रश्न उठाया था । उत्तर दने के अपने अधिकार का प्रयोग करत हुए भारत क स्थायी प्रतिनिधि ने जनरल एसेम्वली मे घोषणा की कि कश्मीर के सम्बन्ध मे विचारणीय प्रश्न केवल यह है कि पाकिस्तान को वह इलाक खाली करन है जिस पर उसने बल पूवक अनुचित कब्जा कर रखा है। इस विवाद मे झडप उस समय हुई जब पाकिस्तान के विदेश मन्त्रालय के राज्य मन्त्री मुहम्मद सद्दीक खान कजू न ऐसेम्बली के ४७व वार्षिक अधिवेशन से खिताब करत हुए कश्मीरियो के लिए अपने अधिकारो के प्रयोग की बात की । कश्मीर के प्रश्न पर नई दिल्ली से शीघ्र परस्पर बातचीत की माग करते हुए श्री कजू न अलमी बादरी से प्राथना की कि भारत को भारतीय रियासत मे जुल्म वा सितम की पालीसी से वाज रखा जाए । भारतीय प्रतिनिधि श्री सुधीर व्यास न तब पुर जोर शब्दो म पाकिस्तान से कहा कि वह लाजमी यह बात अच्छी प्रकार समझ ले कि जम्मू व कश्मीर भारत का अटूट अग है और पाकिस्तान इस सम्बन्ध म कितनी ही बात बनाव या चालबाजी कर यह हमेशा के लिये भारत का अटूट अग बना रहेगा । श्री व्यास ने जो भारत की तरफ से सयुक्त राष्ट्र मे स्थायी सलाहकार है सभी प्रतिनिधिया को वताया कि जम्मू और कश्मीर मे मानव अधिकारो के विरोध का कारण वह दहशत गर्दी है जिसकी पुश्त पनाही पाकिस्तान कर रहा है।

लद्दाख केलिए स्वायत्तपरिषद आरम्भ करने का अनुरोध

नई दिल्ली २७ मितम्बर । गृह मन्त्रालय के राज्य मन्त्री श्री एम० एम० जैकब न केन्द्र मे अपील की है कि वह लद्दाख के लिए पर्वतीय परिषद के लिय विचार विनिमय कर । श्री जकव न कल रात वादी कश्मीर और लद्दाख क तीन दिन की यात्रा सेवापसी के बाद आज प्रात गृहमन्त्री श्री चौहान म मिलकर अनुरोध किया । श्री जैकब न यू० एन० आई० को वताया कि सभी फरीका ने श्री चौहान के सामन भी यह प्रस्ताव रखा है कि कश्मीर म राजन तक उत्थान के लिए इस गडबड वाले इलाके की राजनैतिक विचारो का गूढ अध्ययन किया जाये। इन्होने ४० मिनट की बातचीत म श्री चौहान का अपन कश्मीर के दौरे के सम्बन्ध म विस्तार पूवक विवरण दिया । तीन फरीका सम्मेलन पिछले मास मई मे हुये । फिर जुलाई मे होने वाले थ परन्तु कई बार स्थगित किए गए। क्योकि केन्द्र अयोध्या और झारखण्ड जैसे महत्वपूर्ण विषयो पर उलझा हुआ था । सरकारी सूत्रो के अनुसार यह बैठक अगले महीन रखन की सम्भावना है । वादी कश्मीर मे अपने तीन दिवसीय दौरे मे श्री जैकब ने श्रीनगर लेह और कारगिल मे, भिन्न २ राजनैतिक पार्टियो के प्रतिनिधियो से भी बातचीत की । जहा शाति व कानून की स्थिति पर भी विचार विमश किया गया । श्री जैकब ने बाढ से प्रभावित क्षेत्रो के एक स्थान रोजी मे एक आम जनसभा को भी सम्बोधित किया । यह पहला अवसर था कि केन्द्रीय शासन के वजीर ने वादी मे एक आम सभा म सम्बोधन किया ।

मेरी अच्छाइयां आर्य समाज की देन हैं और बुराइयां राजनीति की

—श्री वीरेन्द्र वर्मा

चम्बा २७ सितम्बर

दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिकोत्सव म देश के विभिन्न भागा से आये हुए आर्यो ने भाग लिया । १५ दिवसीय गायत्री महायज्ञ के समापन समारोह मे हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री वीरन्द्र वर्मा मुख्य अतिथि थे । ममारोह की अध्यक्षता हि० प्र० आर्य प्रतिनिधि मभा के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने की । यति मण्डल के प्रधान स्वामी सर्वानन्द सरस्वती ने अपने अशीर्वचन दिए ।

राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा ने अपन उदबोधन मे कहा कि मै आर्य समाज मे इसलिए हू क्योकि आर्य समाज ने अछूतोद्धार तथा महिलाओ का रक्षा तथा अन्ध विश्वास के विरुद्ध जो सुधारात्मक आन्दोलन चलाये उनके कारण मैं अकेला ही नही अपितु समस्त हिन्दूसमाज आर्य ममाज का ऋणी रहेगा । अपन पारिवार की आर्य परम्पराओ का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि राज भवन म भी प्रतिदिन उनके द्वारा यज्ञ किया जाता था । मेरे गाव म भी ४ परिवारो मे नित्य यज्ञ होता था ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा न कहा कि मेरे अन्दर यदि कोई छोटी सी भी अच्छाई किसी को नजर आती हो तो वह आर्य समाज की देन है और जितनी भी बुराइया नजर आती हो वे सब राजनीति की देन है । श्री वर्मा ने कहा कि राजनीति मे भी मैंने आर्य समाज के एक सिपाही की तरह कार्य करने का पूरा प्रयत्न किया है । (शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

गृहस्थ आश्रम ही सबका आश्रित आश्रम है ?

आय समाज) धर्म प्रचार का समारोह हो रहा था सभी वक्ता महोदय (भावी आने वाली पीढी के लिये बाहे उठा उठा कर जोर जोर से आवाज देकर नव जवानो को सम्बोधित कर रह थ। नव साथियो। आपको आगे बढना है—आगे बढकर देश का भविष्य आपके हाथो ही उज्ज्वल होना है।

बात भी ठीक है—जो काम सस्कारवान नयी पीढी ने किया है वही व्यक्ति भविष्य मे महा पुरुषो की कोटि मे गिना गया है।

नयी पीढी अपने भविष्य वक्ताओ के प्रेरणाप्रद वक्ताओ को सुनकर जहा गदगद हो रही थी।

उन्ही मे से कुछ नव-युवक भविष्य की प्रेरणा से परशान और चिन्तित भी हो रहे थे। एक से रहा न गया और उठकर बोला महाशय जी व महात्मा जी।

महाराज ! सब कुछ हम नव जवानो को ही करना है—यह बूढ खागड गेरुये वस्त्रधारी जनो की जो भीड खडी है उन्हे कुछ नही करना है ! बस फिर क्या था—

महात्माओ के प्रवचनो ने अपनी शैली बदली और बोले ऐ गृहस्थियो यदि आप लोग पारिवारिक जन सम्हल जाय तो यह भावी पीढी भी सम्हल सकती है आपकी नेक नीयती हो इनको सही दिशाबोध करा सकती है। आपकी नेक कमाई (आमदनी) से सबका हो भला होता है।

नयी पीढी से चलकर महात्माओ नेताओ तक की आवाज बस गृहस्थ आश्रमी जनो पर टिक गई है मानो सारे अपराधो की जड यही गृहस्थी है ? बात भी ठीक है—

गृहस्थ एव धर्माणा सर्वेषामेव मूल मुत्तमम् ॥

सारे कर्त्तव्य कर्मों का आश्रम स्थान (केन्द्र गृहस्थाश्रम ही है। ब्रह्मचारी वानप्रस्थी सन्यासी जिससे भी बात करो तो यही कहता है कि हम तो विरक्त हो चुके हैं हमे क्या समझाना ? जाओ गृहस्थियो को समझाओ ! जो पुत्र पौत्रो के माया जाल मे पडे है ?

मैंने विचार किया, कि एक वह है जो सबके आश्रय स्थान है। तो मायाजाल मे पड गृहस्थी को समझाना कैसा बस गृहस्थ व्यक्ति को सब कुछ करना है बाबा जी का कुछ नही ? वस्तुत मेरी मान्यता है कि

यथा नदी नदा सव सागरे यान्ति सस्थितम्।
तथैवाश्रमिण स्व गृहस्थे यान्ति सस्थितम ॥

सच्चे विरक्त थ स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके पूज्य गुरुवर विरजानन्द जी दण्डी।

इनके भी अनुयायी थ स्वामी श्रद्धानन्द स्वामी दर्शनानन्द प० लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी म० हसराज आदि इन्होने गृहस्थ आश्रम का उपभोग भी किया फिर वैराग्यवृत्ति धारण कर समाज सेवा म जीवन लगा दिया। यह है अनुकरण की प्रवृत्ति। जिससे समाज बनता है केवल यह कहने से काम नही बनता कि घर परिवार वालो को समझाओ ? हम तो विरक्त हो चुके हैं ?

इन विरक्त जनो का बुरा हाल है पर विरक्ति है कहा ? ब्रह्मचारी अध्ययन मे रत है पर वृत्ति उसकी भी माया पर ही है पढकर नौकरी करें।

वानप्रस्थ सन्यास की आश्रम व्यवस्था भी लचर ही है। कहा हैं स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी म० नारायण स्वामी जी म० आनन्द स्वामी जी स्वामी केवलानन्द जी स्वामी त्यागानन्द जी यह थ वैरागी।

आज हम चाहते हैं कि वानप्रस्थी सन्यासी रामगढ नैनीताल आश्रम मे बैठकर व्यवस्था करो और गावो मे प्रचार करो ? हम तो पेन्शनर है स्वाध्याय करते है आराम कर रहे हैं।

कैसे काम चलेगा। सब आराम तलब बन रहे है महर्षि दयानन्द का वानप्रस्थ सन्यासी इन्द्रियनिग्रह का परिवार बने २ दिन से अधिक न ठहरें। वह भी काम नही करेंगे तुम भी काम नही करोगे फिर काम कैसे चलेगा आज का वैरागी गहस्थी बना हुआ है ? अरे गहस्थियो—

इनसे तो आप ही भले हो—

सारा दिन अर्थ का चिन्तन और कमाओ खाओ तथा दूसरे आश्रमी व्यक्तियो को भी खिलाओ। प्रात से शाम तक सोने तक—

गहस्थ धर्म का पालन करके व्यवसाय भी चलाये और अपनी व पराई चिन्ता को भी दूर करे। घर के बाहर—

धर्म कर्म की भी चिन्ता उत्सव हेतु दान मागना। सबको निमन्त्रित करना। मन्त्री जी मैदान को सजाने म व्यस्त है।

व्यवसाय भी कर धन इकटठा करके सचित कर सही उपयोग मे लाना।

स्वय खाओ और फिर सबका खिला कर आत्म स तुष्टि के लिये कुछ उपाय भी करो।

आर्य समाज का वास्तविक स्वरूप यदि देखना है तो यह गृहस्थ आश्रम है जो स्वय को रक्षित कर सारे समाज की सरचना करता है।

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव ११ अक्टूबर ९२ को सूरत मे होगा

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मगलसेन चोपडा ने एक विशेष पत्र सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को लिखकर प्रार्थना की है कि उनकी सभा के त्रैवार्षिक चुनाव ११ १० ९२ को हो रहे है। अत सार्वदेशिक सभा के प्रधान अपने निरीक्षण मे यह चुनाव करा देवे।

उनके अनुरोध को स्वीकार करते हुए सभा प्रधान जी ने सभा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री और न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट को वहा चुनाव के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के पर्यवेक्षक के रूप मे भेजने का निर्णय लिया है। शास्त्री जी तथा वधावन जी १० अक्टूबर को नई दिल्ली से सूरत के लिए प्रस्थान करेंगे।

वेद ज्ञान के अगाध भंडार तथा काव्य के उत्कृष्ट निदर्शन है

दिल्ली १९ सितम्बर ९। वेद ज्ञान का अगाध भडार होने के साथ साथ एक उत्कृष्ट काव्य भी है जिसमे देश और काल की सीमाओ से परे मानव मात्र का प्रेरित करने की सामर्थ्य है।" सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एव जम्मू विश्वविद्यालय मे सस्कृत विभागाध्यक्ष डा० रामप्रताप वेदालकार ने ये शब्द दिल्ली विश्वविद्यालय मे एक विद्वत् सभा मे व्यक्त किये।

'डा० प्रह्लाद स्मारक समिति के तत्वावधान मे 'वेदो मे काव्य तत्व" विषय पर व्याख्यान करते हुए उन्होने बताया कि वेद रस व अलकार सहित काव्य के सभी श्रेष्ठ तत्वो से परिपूर्ण है। इस सन्दर्भ मे उन्होने अनेक ऋचाओ को उद्धृत किया तथा देशी-विदेशी विद्वानो के विचार अपने अभिमत की पुष्टि मे प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा० वाचस्पति उपाध्याय सभा के अध्यक्ष प्रो० केवल कृष्ण मित्तल, पूर्व महानगर पार्षद डा० प्रशान्त वेदालकार, समिति के महामन्त्री डा० कृष्णलाल, समिति के अध्यक्ष डा० सत्यदेव चौधरी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय की वेद विकल्प लेने वाली एम०ए० की चार छात्राओ को छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई।

दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर मे आयोजित इस सभा में काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् डा० नगेन्द्र, अनेक विद्वान् लेखक, समाजसेवी और प्रमुख नागरिक उपस्थित थे।

—डा० कृष्णलाल सचिव

हजार घोड़ों का सवार सीरियल पर आर्य समाज को कड़ी आपत्ति : प्रसारण से पूर्व उचित संशोधन की मांग

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं व आर्य समाजो को निर्देश

दिल्ली दूर दर्शन निकट भविष्य में एक नया सीरियल हजार घोड़ो का सवार प्रसारित करने जा रहा है। मनोरमा में इसकी पटकथा का थोड़ा अंश पढ़ने पर ज्ञात हुआ है कि इसमे आर्य समाज के मन्दिरों की पवित्रता पर चोट की गई है। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस सीरियल को प्रसारित करने से पूर्व उसमें उचित रूप से संशोधन करने को प्रधान मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंहराव सूचना व प्रसारण मन्त्री श्री अजीत पांजा और दूरदर्शन के निदेशक को विशेष पत्र भेजा है। समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं व आर्य समाजो को भी निर्देश दिया गया है कि वह इस सीरियल में आर्य समाज विरोधी प्रसंगो पर अपना कड़ा विरोध प्रकट करते हुए संशोधन की जोरदार मांग करें। निदेशक दूर दर्शन को भेजा गया पत्र निम्न प्रकार है

सेवा में—
निदेशक महोदय
प्रायोजित कार्यक्रम दूरदर्शन
मण्डी हाउस नई दिल्ली ११०००१

सादर नमस्ते ! दि० २५ ९ ९२

सितम्बर १९९२ के मनोरमा पाक्षिक के पृष्ठ ९२ पर दूरदर्शन द्वारा भविष्य में प्रसारित किये जाने वाले सीरियल हजार घोड़ो का सवार के विषय में विवरण पढ़कर आश्चर्य हुआ। कहानी के पैरा तीन में लिखा है कि— गीधू धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने की कसम खाता है और साधु बनकर आर्य समाज के मन्दिर में रहने लगता है। परन्तु वह देखता है कि यहां के महन्त हो औरतो के साथ कुकर्म व अनाचार करते हैं। गीधू इसका विरोध करता है, लेकिन उसे ही जेल की हवा खानी पड़ती है।'

धारावाहिक में आर्य समाज के प्रसंग पर आर्य जनता को कड़ी आपत्ति है क्योंकि आर्य समाज मन्दिरो में महन्त नही होते हैं। आर्य समाज मठ और महन्तो के अस्तित्व का स्वीकार नही करता है इसलिए आर्य समाज के साथ महन्त जोड़कर इस धारावाहिक द्वारा पटकथा के लेखक और सीरियल के निर्माता ने जान बूझकर आर्य समाज की छवि को अपमानित करने का प्रयास किया है।

आपको यह बताना आवश्यक है कि आर्य समाज ने ही सर्वप्रथम हरिजनो व दलितो को ऊंचा उठाने छुआछूत मिटाने और समाज में उन्हें समानता का व्यवहार दिलाने के लिए अनेक कार्य किये। आर्य समाज ने ही उन्हें यज्ञोपवीत देकर वेद पढ़ने तथा पढ़ाने का अधिकार दिया है। आज आर्यसमाज मन्दिरो में प्रधान व मन्त्री के पद पर हजारो हरिजन सम्मानित हैं और हजारो लोग आर्य समाज में दर्जनो में पण्डित बनकर पुरोहित का कार्य कर रहे हैं।

हमारा आपसे निवेदन है कि इस सीरियल से आर्य समाज सम्बन्धी सभी प्रसंग को तुरन्त निकाल दिया जावे। यदि ऐसा नही किया गया तो आर्य समाज को प्रदर्शन के विरुद्ध देश व्यापी आन्दोलन करना पड़ेगा। हम नहीं चाहते कि देश के सामने कोई नई समस्या खड़ी करें। अतः प्रसारण से पूर्व इस सीरियल में उचित संशोधन करके हमें सूचित करने का कष्ट करें।

भवदीय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा **स्वामी आनन्दबोध सरस्वती**
दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २ प्रधान

मस्जिद मे नवम सदी का संस्कृत शिलालेख मिला

झज्जर ८ सितम्बर। हरयाणा प्रांतीय पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल झज्जर के संग्रहपाल श्री विरजानन्द दैवकरणि ने एक बयान में बताया कि उन्होने दिल्ली की कुतुबमीनार के पास स्थित कुव्वत उल मस्जिद में नवम शती के एक संस्कृत लेख का पता लगाया है। यह लेख मस्जिद के दक्षिण पूर्व कोने में एक लाल पत्थर के खम्भे पर खुदा हुआ है इसके नीचे मूल मन्दिर का १३वां स्तम्भ स्थित है यह मस्जिद २७ हिन्दू ज्योतिष के मन्दिरो को तोड़कर बनाई गई थी।

९ पंक्ति के इस शिलालेख से यह भी सिद्ध हो गया है कि कुतुब मीनार कुतुबुद्दीन एबक ने नही बनवाई थी। क्योंकि उसमें लगभग ८०० वर्ष पूर्व इन मन्दिरों और मीनार की स्थिति का पता इस शिलालेख से लग जाता है। चन्द्रगुप्त के लौह स्तम्भ के पश्चात उपलब्ध लेखो में यही लिख सबसे पुराना है। यह शिलालेख रेही लग जाने से अत्यन्त जीर्ण शीर्ण होता जा रहा है। श्री दैवकरणि जी ने इसकी सूचना भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक श्री मुनीशचन्द्र जोशी को दे दी है। उन्होने ११ सितम्बर को अपने अधिकारियों की एक टीम भेजकर इस बात की सत्यता की जांच कराई और पुष्टि की है।

अपनी भाषा अपनी ही है

—पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

१४ सितम्बर १९९२ को दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने नई दिल्ली के फिक्की सभागार में यशस्वी साहित्यकार पदम श्री यशपाल जैन की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया। भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी मुख्य अतिथि थे। ज्ञानी जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमें किसी भाषा से द्वेष नही है अंग्रेजी फारसी फ्रांसीसी आदि कोई भी भाषा आप सीखें अच्छा है किन्तु अपनी भाषा अपनी ही है। उसका उचित सम्मान होना ही चाहिए। उन्होंने देश को सावधान किया कि यदि अगले दस वर्ष में हिन्दी अपना उपयुक्त स्थान नही पा सकी तो फिर वह कभी नही पा सकेगी और यह देश का महा दुर्भाग्य होगा। इसलिए हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए हमे संगठित होकर संघर्ष करना पड़ेगा केवल साहित्य-सृजन से काम नही चलेगा।

इसी अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति महोदय ने गुप्त बन्धु कृत महाकाव्य अनल प्रकाश का लोकार्पण भी किया।

सम्मेलन मे श्री 'गुप्त-बन्धुओं' सहित अनेक विशिष्ट हिन्दी विद्वानो का सम्मान भी किया, जिन्हें पूर्व राष्ट्रपति जी के कर-कमलो से सरस्वती चित्रांकित स्वर्णिम पट्टिकाएं प्रदान की गई।

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता चौ० थानसिंह का दुःखद देहावसान

दिल्ली २६ सितम्बर। आर्य समाज कृष्ण नगर के पूर्व प्रधान तथा प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता चौ० थानसिंह का गत रात्रि २ ३० पर जमुनापार के एक नर्सिंग होम में निधन हो गया। उन्होने जीवन पर्यन्त आर्य समाज की निष्ठावान कार्यकर्ता के रूप में सेवा की। जमनापार की आर्य समाजो में वे एक सर्वप्रिय नेता के रूप में जाने जाते थे। आर्य समाज के समस्त आन्दोलनो में उन्होंने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था। उनके निधन के समाचार को सुनकर जमनापार की आर्य समाजो में शोक की लहर दौड़ गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस दुःखद समाचार को सुनकर गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि थानसिंह जी के निधन से आर्य समाज की जो महान क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना कठिन है। उन्होंने कहा कि एक एक करके आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ता हमसे बिछड़ रहे हैं यह अत्यन्त कष्टप्रद स्थिति है।

आज ३ बजे गीता कालोनी के श्मशान घाट पर उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से वेद मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हजारो की संख्या में आर्य समाज के कार्यकर्ता व अनेक संस्थाओं के संचालक एवं अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

जहां इंसान की पाशविकता पर पशु भी रो रहे हैं

बम्बई के देवनार कत्लखाना के आस पास बडा ही अजीब दृश्य होता है। हृदय विदारक और घृणित माहौल शोकाकुल नजर आता है। पशुओं की ददभरी चीख सुनाई पडती है और उनकी आंखों से आंसू टपकते है। यहा गन्दगी और दुर्गन्ध का साम्राज्य है। पशुओं के साथ खुलेआम हिंसा के निष्ठुर दृश्य यहा आम है। यहा वहा चील गिद्ध और कौवो के झुण्ड पशुओ के मास को नोचते नजर आते है।

देवनार मे हर रोज कानून की हत्या होती है। प्रशासन की नाक के नीचे और कानून की निगाहो के सामने गैरकानूनी करार दिए गए बर्बरतापूर्ण तरीको से इन मूक प्राणियों के साथ व्यवहार किया जाता है। बूढ़े बैलो के नाम से गाय कटती हैं।

देवनार कत्लखाना कभी न मिटने वाली कातिल भूख लिए खडा है। यहा पशुओ के रोगटे खडे हो जाते है। और अन्दर आते ही इन मूक पशुओं की जिन्दगी कुछ मिनटो की ही बचती है। अगर किसी कारण वश कई घण्टो का जीवन दान मिल भी गया तो चारे और पानी बिना छटपटाते और दर्द से रंभाते नजर आते है।

गोमास का निर्यात अरब देशो मे होता है और वे लोग मुलायम और उत्तम मास की माग करते है। इसलिए कई गलत तरीको से जवान और उपयोगी गाय बैल और बछडो का वध भी यहा किया जाता है। जवान और अच्छे जानवरो को कत्ल लायक बनाने के लिए उन्हे लगडा या अंधा कर दिया जाता है इस तरह से इन पशुओं को क्रूरता से वध के योग्य बनाया जाता है जवान और स्वस्थ बछडो को भी काटने योग्य का प्रमाण पत्र पशु चिकित्सा विभाग के अधिकारी कई कारणो से देते है। नाम नहीं बताने की शर्त पर एक व्यक्ति कहता है कि रात मे ज्यादातर जवान और कोमल बछडो को काटा जाता है। कानून से सार्टिफिकेट लेने के लिए वे मार मार कर इन पशुओ के पैर तोड देते है या आखो मे नुकीला लोहा डालकर उन्हे अंधा बना देते है। ऐसा करने के पीछे पशु व्यापारियो का यह उद्देश्य रहता है कि वे जानवर अब कृषि कार्य लायक नही रहे हैं। यह अपराध विशेष तौर पर रात्रि १२ बजे से प्रात ४ बजे तक किया जाता है।

मरे हुए गाय बैलो का चमडा कडा हो जाता है। चमडा नरम रहे इसके लिए जिन्दा जवान गाय बैल को कत्ल किया जाता है। मुलायम चमडे के लिए इन मूक पशुओ पर इन्सानो का भी दिल दहला देने वाले जुल्म होते है।

देवनार कत्लखाना से जुडे एक व्यक्ति ने यहा तक कहा कि कत्लखाना मे अस्सी प्रतिशत उपयोगी जवान बैल कट रहे है।

अधिकाश राज्यो मे यह कानून है कि उनके प्रदेशो से कत्ल के लिए पशुओ की निकासी नही होगी लेकिन ठीक इसके विपरीत हो रहा है। गुजरात मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश और राजस्थान से देवनार कत्लखाना मे नियमित मवेशी वध के लिए आते है। गुजरात सरकार ने कत्ल के बैलो की उम्र बढा कर सोलह साल कर दी है। वहा यह भी कानून है कि गुजरात की सीमा के गाय बैल कटने के लिए बाहर नही जाएगे। इन कानूनो के बावजूद प्रति दिन लगभग ५ ट्रक जवान बैल बम्बई आ रहे हैं। एक ट्रक मे आठ बैल लादने की इजाजत है पर एक एक ट्रक मे १८ से २० बैल निश्चित ठूसे जाते है। रास्ते मे दम घुटकर दो चार मर जाते है एक दो आपस मे सीग टकराने से लहूलुहान हो जाते है।

कत्लखाना परिसर मे कुछ लोग बर्तन लिए घूमते रहते है। कत्ल से पूर्व मवेशियों के रक्त की आखिरी कतरा तक निकालने के लिए।

वैसे तो जो भी मवेशी देवनार पहुच गया उसे कत्ल के योग्य का प्रमाण पत्र मिल ही जाता है पर कानूनी बचाव और सन्तोष के लिए दो चार पशुओ को प्रमाणपत्र नही भी दिया जाता है। ऐसे पशु भी जिन्दा नही रहते बल्कि अंधेरी गलियो मे कट जाते हैं। एक कसाई ने ऐसा कहा। देवनार कत्लखाना के आस पास बहुत से ऐसे मजदूर घूमते रहते हैं जिनका काम यहा नही कटने वाले बैलो को दूसरे कत्लखाने तक पहुचाने का होता है।

देवनार कत्लखाना एशिया का सबसे बडा और विश्व का दूसरे नम्बर का कत्लखाना है। यहा चौबीस घण्टो मे ग्यारह हजार जानवरो को काटने की व्यवस्था है। एक हजार बैल एक हजार भैंस एक हजार सूअर तथा आठ हजार भेड बकरे। दुनिया मे इससे बडा शिकागो (अमेरिका) का कत्लखाना है। देश मे प्रतिदिन अनुमानत तीस हजार गाय बैल काटे जाते है।

वर्तमान कानून आर्थिक लाभ तथा भ्रष्टाचार के कारण गोवध हत्या को प्रोत्साहन दे रहा है। गाय बैल खरीदने बेचने वाले व्यापारी दलाल परिवहन वाले कत्लखानो से जुडे हुए छोटे बडे लोग सरकारी कर्मचारी देश विदेशो मे गोमास और चमडे का व्यापार करने वाले लोग सब के सब आर्थिक स्वार्थवश गोहत्या से जुडे है।

देवनार कत्लखाना के आस पास कई सुवाक्य लिखे है। मूक प्राणियो के लिए असीम करुणा की जरूरत है। गाधी जी कहा करते थे। गाय बैल दया धर्म की मूर्तिवत कविता है। इस गरीब और शरीफ जानवर मे केवल दया ही उमडती है। यह लाखो करोडो हिन्दुस्तानियो को पालने वाली माता है। इस गाय बैल की रक्षा करना ईश्वर की सारी मूक सृष्टि की रक्षा करना है। गाधी जी के अनुसार गोरक्षा हिन्दुस्तान की संस्कृति की दुनिया के लिए बख्शीश है।

पशुधन के जानकार कातिभाई शाह बताते हैं कि गोवध से देश की कितनी अपार हानि होरही है। केवल देवनार कत्लखाना मे १९८५ ८६ मे १६५६२६ पशु काटे गये थे। १९८९ ९० मे इनकी संख्या बढकर २०४७६२ होगई थी। जब कि गाय-बैलो का वध केवल पजीकृत बूचडखानो मे ही नही होता है। इस कारण यह अन्दाज कठिन है कितने उपयोगी पशु वास्तव मे काटे जाते है। अनुमान है कि पचास हजार से अधिक दूध देनेवाली गाय भैंस केवल कलकत्ता मद्रास और बम्बई मे ही काटी जाती है।

दो हजार टन गोमास १९७३ ७४ मे निर्यात हुआ था वही १९६९ ७० ४५ हजार टन गोमास विदेश भेजा गया था। १९८१ ८२ मे एक लाख ६० हजार टन गोमास का निर्यात हुआ था। यह गोमास मुख्यत स्वस्थ्य पशुओ का रहा है। समय के साथ विदेशी मुद्रा की लालच मे सरकार इस गोमास निर्यात को लगातार बढावा देती रही है।

कई गोरक्षा प्रेमियो का मानना है कि आज देश मे खेती के कामों के लिए जरूरी पशुओ की संख्या मे खतरनाक कमी आ रही है।

गोरक्षा सत्याग्रह की सदस्य हसाबेन कहती है कि महाराष्ट्र मे कानून द्वारा प्रतिबन्धित होने के बावजूद मालेगाव जलगाव धुलिया औरगाबाद आदि जिलो मे गोवध का कत्ल होता है।

कृषि और गौसेवा के एक विशेषज्ञ डा० योगेश कुमार अरोरा के अनुसार जिस गाय बैल के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है वह सुबह शाम सही समय पर दूध देने के लिए खुद तत्पर रहती है। अगर उस परिवार से किसी की मृत्यु हो जाए तो वह भी शोक मैं शामिल हो जाता है। तथा उनकी आखो मे आसू देखे जा सकते हैं।

किसी ने कहा है बैल को बचाओ तो मनुष्य बचेगा देश बचेगा देश की आत्मा बचेगी यह सुवाक्य याद आने और स्मृति से विलीन हो जाने के पूर्व ही निर्बाध रूप से बैलो का समूह देवनार कत्लखाना मे प्रवेश कर जाता है कत्ल होने के लिए

—सुनील शर्मा

आर्य समाज और अयोध्या मन्दिर

—दत्तात्रेय बाव्ले (आर्य) अजमेर

जब से अयोध्या मे राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद के विवाद को सार्वजनिक विवाद का रूप प्राप्त हुआ है तभी से उसके सम्बन्ध मे आर्य समाज की स्थिति पर समय-समय पर विचार होता रहा है। आर्य समाज के शीर्षस्थ सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इस आन्दोलन मे मन्दिर निर्माण की माग का समर्थन किये जाने के बाद अनेक क्षेत्रा म और विशेषकर अग्रेजी के दैनिक समाचार पत्रो मे यह प्रश्न भी उठाया गया कि क्या आर्य समाज अब मूर्तिपूजा का समर्थक हो गया है। इस विवाद मे जहा धर्म निरपेक्षता,सम्प्रदायिकता आदि के सम्बन्ध मे अपने-२ निहित दृष्टिकोण के आधार पर पर्याप्त भ्रम प्रसार किया जाता रहा है, वही आर्य समाज के दृष्टिकोण के सम्बन्ध मे भी इस प्रकार की गलत फहमी उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

मूर्तिपूजा नहीं राष्ट्रभक्ति

राम जन्मभूमि के सम्बन्ध मे चल रहे हिन्दुओ के आन्दोलन का समर्थन करने का यह अर्थ कदापि नही है कि आर्य समाज मन्दिरो और मूर्तिपूजा का भी समर्थन करता है। हिन्दुओ को बुतपरस्त कहने वाले इस्लाम के अनुयायी वास्तव मे मन्दिर और मूर्तियो का भजन या खण्डन करने है न कि वास्तविक अर्थों मे मूर्तिपूजा या बुतपरस्ती का। जबकि आर्य समाज मन्दिर और मूर्तियो के तोडने मे विश्वास नही करता अपितु पूजा का वैचारिक और सैद्धान्तिक विरोध करता है और वह भी वेद के आधार पर। अयोध्या मे बाबरी मस्जिद का निर्माण स्पष्ट रूप से एक पुराने राम मन्दिर को तोडकर किया गया है। इस सम्बन्ध मे कुछ मतभेद होने पर भी न केवल जन परम्परा अपितु ऐतिहासिक प्रमाण भी इस तथ्य को निर्विवाद सिद्ध करते है। अभी पुरातत्व विभाग द्वारा तथाकथित बाबरी मस्जिद के आसपास जो खुदाई की गई उसमे प्राप्त विखण्डित मूर्तियो, स्तम्भो तथा अन्य अवशेषो से इस विश्वास या जनमान्यता की पुष्टि होती है। इतना ही नही भारत मे इस्लामी आक्रमण का सारा इतिहास भी यह बताता है कि इन विदेशी और विधर्मी आक्रमणकारियो का एक मुख्य उद्देश्य बुतपरस्त हिन्दुओ के मन्दिरा और मूर्तियो को तोडना था। आधुनिक धर्म निरपेक्षता के विचार को मध्ययुग की मान्यताओ पर लादने को उत्सुक कुछ इतिहासकार इसे गलत साबित करने के लिये कुछ अपवाद या तथ्य भले ही प्रस्तुत करे किन्तु वे मथुरा, काशी ही नही परन्तु देश के प्राय सब प्रान्तो मे उन टूटे हुए मन्दिरो के स्पष्ट दिखाई देने वाले अवशेषा या उनके स्थान पर बनी मस्जिदो मे लगे देवी देवताओ की खडित मूर्तिया के खम्बो और पत्थरो से किस प्रकार और क्या कहकर आख मीच सकते है।

धर्मान्धता बनाम धर्म निरपेक्षता

हमारे देश के स्वाधीनता आन्दोलन और उसके बाद राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने की होड मे कुछ राजनैतिक दल और तथाकथित बुद्धिवादी लेखक और विचारक सबसे बडी भूल या बौद्धिक बईमानी यह करते हैं कि १९ वी और २० वी सदी की आधुनिक धर्म निरपक्षता को सर्वथा नवीन ही नही अपितु पाश्चात्य विचारधारा को पुरान और मध्य युग के उस काल मे रोपित करना चाहते है जब राजनीति और धर्म या राज्य तथा मजहब मे किसी प्रकार से विरोध तो दूर भिन्नता तक की कल्पना नही की गई थी और यही कारण है कि ईसाई युग मे रोम का धर्माध्यक्ष पोप अपन आप को समस्त ईसाई राज्यो और राजाओ का अधिपति समझता था जैसे अनक देशो मे फैले मुस्लिम राज्या का एक मात्र अधिपति इमाम या खलीफा होता था। स्वय मोहम्मद साहब के काल मे भी यह परम्परा प्रारम्भ हो चुकी थी वे धर्म सस्थापक होने के साथ राज्य सस्थापक भी थे। भारत मे तुर्क अफगान, अरब, ईरानी और मगोलियन जितन आक्रामक आये उन्होने यहा अपन राज्य के साथ एक धर्माध्यक्ष को नियुक्त किया, जो न केवल बादशाह को इसलामी शरीयत के अनुसार राज्य व्यवस्था चलाने की सलाह देता था बल्कि गैर मुस्लिम और विशेषकर हिन्दू-बहुमत के अनुयायिओ की धार्मिक मान्यताओ और रीति रिवाजो को भी सरकारी नियन्त्रण मे रखता था यहा तक कि उदारवादी अकबर के उत्तराधिकारी जहागीर और शाहजहा तक के काल मे इस प्रकार का सरकारी धर्म विभाग होता था जिसका अध्यक्ष कोई काजी जैसा इस्लाम का अधिकृत व्यक्ति होता था।

"हिन्दू समाज के हित मे आर्य समाज का भी हित है किन्तु हिन्दू धर्म मे उसका विलय होना दोनो के लिय अहितकर है।

—लाला लाजपतराय

इस्लाम या मौत

युद्ध मे पराजित हिन्दुओ को काफिरो के लिए राज्य द्वारा धर्म निर्धारित इस्लाम और मृत्यु के अतिरिक्त कोई और विकल्प नही दिया जाता था उनके स्त्री और बच्चे को तो विजेता अपनी सम्पत्ति समझकर उनका धर्म परिवर्तन करना अपना प्रथम कर्तव्य समझते थे। उस समय के ऐतिहासिक प्रमाणो से यह भी सिद्ध है कि यदि कोई अपराधी इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले तो उसे मुक्त कर दिया जाता इसी प्रकार नोकरी, सेना तथा राज्य के पदो पर नियुक्ति ही नही अपितु सम्पत्ति के क्रय-विक्रय मे भी यही परम्परा थी। कहने का तात्पर्य यह है कि जो लोग आज मुसलमानो का वोट प्राप्त करने के लिए इन ऐतिहासिक तथ्यो को झुठलाना चाहते हैं वे धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त और उद्देश्य को भी हानि पहुचाते हैं। यदि ऐसा करने के स्थान मे वे और विशेषकर भारतीय मुसलमान जिनमे से ९०प्रतिशत उन्ही धर्म परिवर्तित हिन्दुओ की सतानें हैं जिन्हे बलपूर्वक या प्रलोभन से इस्लाम कबूल करने के लिए विवश किया गया था सभी मध्यकालीन युग के इस अप्रिय सत्य को स्वीकार ले तभी वे इमानदारी से धर्म निरपेक्षता के हमारे आधुनिक आदर्श को व्यवहार मे निभा पायेगे। यह कहना कि यदि इन या अन्य मुसलमानो के पुरखो ने सदियो से पूर्व धर्मान्धता का परिचय देकर हिन्दुओ के मन्दिर और मूर्तिया तोडी तो उसके लिए वर्तमान वशजो को दोषी नही ठहराया जा सकता तभी तक उपयुक्त होगा जब उनके ये वर्तमान वशज अपने पूर्वजो की इस भूल को कबूल करे और गलती मानकर उससे अपना स्पष्ट मतभेद व्यक्त करें किन्तु दुर्भाग्य से ऐसा करने के स्थान मे उनमे से अधिकाश आज भी अयोध्या के मन्दिर को तोडकर बनाई गई बाबरी मस्जिद का समर्थन करके उसकी रक्षा करना चाहते है और साथ ही धर्म निरपेक्षता की दुहाई भी देते हैं।

आर्य समाज की स्थिति

आर्य समाज की इस सम्बन्ध मे इसीलिए यह स्पष्ट मान्यता हैं कि अयोध्या के मन्दिर का विवाद मूर्तिपूजा के समर्थन या विरोध का प्रश्न नही है अपितु मध्य युग मे विदेशी आक्रमणकारियो द्वारा धर्म निरपेक्षता का व्यवहारिक विरोध और धर्मान्धता के समर्थन का प्रश्न है। इसलिये वास्तविक धर्म निरपेक्षता की हमारी वर्तमान मान्यता की दृष्टि से भी यह आवश्यक है कि धर्मान्धता का यह अवशेष स्वतन्त्र भारत के माथे पर रखे और उनकी आने वाली पीढियो को उस दुर्भाग्यपूर्ण काल का निरन्तर स्मरण कराने के लिए सुरक्षित न रखा जाय। (क्रमश)

दुराग्रह से क्या लाभ ?

—उत्तम चन्द्र 'शरर'

एक मास तक वेद सप्ताह के कार्यक्रमो मे निवृत होने के पश्चात घर आया तो जहा सार्वदेशिक मे अपने लिखे लेख की प्रशंसा मे पत्र पाए वहा आर्य जगत के एक अक मे एक सधी आर्य समाजी का लेख भी विरोध मे देखने का मिला। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे हिन्दुत्व का कवच पहन कर आर्य समाज के संगठन को तोडने का प्रयास करने वाले इन बन्धुओ ने लेख के प्रभाव को अनुभव किया है नही तो उत्तर देने के विफल प्रयास को व न करते। लेखक महोदय का कहना है कि मेरे लेख मे लिखे मुद्दे तर्क शून्य है। मै उन्हे निमन्त्रित करता हू कि वे स्वय तर्क द्वारा इन बाता को सत्य सिद्ध करे। कौशिक जी आर्य जगत के सम्पादक है। आर्य जगत् आर्यो का प्रमुख पत्र है आर्य प्रादेशिक सभा ने आर्य समाज के प्रचार के लिए इसे चलाया हुआ है। श्री प० क्षितीश जी जैसे विद्वानो के सफल प्रयास तथा योग्यतापूर्ण लेखो से पत्र का महत्व बढा है। आर्य समाज के सिद्धातो को अवस्थी जी खूब जानते है व जरा इन शब्दा तथा वाक्याशो की व्याख्या करे तो कृपा होगी।

"महर्षि ने पुराणो का खण्डन किया, परन्तु उन्हे जलाया तो नही, आज का आर्य समाजी ?) पुराणो को स्पर्श करने मे भी स्वय को अपवित्र मानता है पुराणो मे हमारी सस्कृति तथा सभ्यता का जो इतिहास है वह अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। क्या अवस्थी जी ने पुराणो की उन अश्लील कथाओ को नही पढा जो हमारे महापुरुषो के अपमान का कारण है और ऋषि ने जिन से दुखी हो कर लिखा 'वाह रे भागवत के बनाने वाले लाल बुझक्कड ' तुमको ऐसी बाते लिखते तनिक भी लज्जा और शर्म न आई (सत्यार्थ प्रकाश) पुराणो मे बहुत सा बातें झूठी हैं और जो घुणाक्षर न्याय मे सच्ची भी हैं वह वेदादि सच्छास्त्रो की ओर जो झूठी है वे इन पोपो के पुराण रूप घर की है (सत्यार्थ प्रकाश)। क्या इन्ही पुराणो की वकालत करते हुए कौशिक जी स्वय को आर्य समाजी कहलाने का गौरव भी लेना चाहते हैं ?

मूर्ति पूजा का विरोध तो ऋषि दयानन्द ने जम कर किया है और यह भी सत्य हैं कि राष्ट्र की अवनति मे मूर्तिपूजा सबसे बडा कारण रहा है। आज भी इसी पाप के कारण हिन्दू उन लोगो की मजारो पर चढावा चढाता है जो आर्य जाति के घातक रहे है। अवस्थी जी को पानीपत मे होने वाला यह कुत्सित कृत्य अपवाद लगता है, शायद उन्होने दिल्ली मे तथा अजमेर मे होने वाले उर्स नही देखे जहा हिन्दू सबसे बडा कब्र का पूजक होता है प्राय सभी नगरो मे यह दुष्कृत्य होता है और इनका मूल कारण मूर्तिपूजा का पाप ही है परन्तु कौशिक जी का तर्क देखिये "स्वामी दयानन्द ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया, परन्तु उनके प्रवास काल मे अधिकाश आश्रम स्थान वे मन्दिर ही थे जिनमे मूर्तिया स्थापित थी' क्या बढिया दलील है इस प्रकार सोचें तो कुमारिल भट्ट का बौद्ध मत का खण्डन व्यर्थ था क्योकि वे पढे स्वय बौद्धो की पाठशाला मे थे।

लेख के अधिक लम्बा होने के भय से हम अन्य विवादास्पद वाक्यो का उद्धरण नही देते, परन्तु हिन्दुत्व के विरोध मे आर्यो को बदनाम करने के प्रयास की निन्दा किए बिना नही रह सकते। कौशिक जी तथा अवस्थी जी को गिला है कि आर्य समाज हिन्दुत्व का विरोधी है। हमारी प्रार्थना है कि पहले वो व यह बतावे कि क्या ऋषि दयानन्द ने हिन्दु राष्ट्र स्वीकार भी किया है ? वे शास्त्रा के आधार पर आर्य शब्द के पक्षधर हैं क्या आर्य समाज के प्रचारक पत्र मे यह आर्यत्व विरोधी प्रयास नही जो हमारे मित्र करने लगे है? क्या आर्य जगत विश्व हिन्दु परिषद का पत्र है या आर्यो का ? रही हिन्दुत्व के विरोध की बात। आर्य समाज ने इस संगठन को स्थिर रखने के लिए शिव मन्दिर के सत्याग्रह मे साथ दिया, स्वामी श्रद्धानन्द तथा प० लेखराम ने शुद्धि के पवित्र मिशन मे अपनी बलि दी जिसे तथा कथित हिन्दू अब भी नहीं अपना रहा है इस पर भी हम हिन्दुत्व के विरोधी हैं।

मर मिटे हम तो मुहब्बत मे तुम्हारी लेकिन
तुम ने इतना भी न पूछा कि तमन्ना क्या है।

हा हिन्दुओं के व कृत्य जो इस सगठन के विरोध मे है जैसे जन्मगत जात-पात छुआछूत विवाद गुरुडम, मूर्तिपूजा आदि आर्य समाज इनका विरोधी है और हिन्दू सगठन के तथाकथित अलम बरदारी से हमारा कहना है कि इन पापो के रहते यह सगठन कभी नही हो सकता, इससे ईटे तो पूजी जा सकती है, न गाजल बेचकर लोगो को लटा जा सकता है। सुना है अब खडाओ का पूजन तथा पाखण्ड का सूत्रपात होने वाला है), इसमे भाजपा को वोट भी मिल सकते है परन्तु सगठन न हो सकेगा तुम्हारी तहजीब अपने खंजर से आप ही खुदकशी करेगी।

आर्य जगत के इस लेख मे आर्य नेताओ का अपमान भी एक बडा तमाशा है। गुरुडम के यह पक्षधर क्या पाच जन्म मे श्री मशोक को सघ के वर्तमान रूप पर लिखने की आज्ञा देगे ? क्या वहा जो कुछ आचार्यो और सन्यासिया मे चारित्रिक पाखण्ड पनप रहा है उसका पर्दा खोलने की आज्ञा है ? कृपया अपने घर को सम्भालिए आर्य समाज मे प्रजातन्त्र है और यहा के नेता आप की प्रशसा के प्रमाणपत्र के इच्छुक नही है, आप उनमे पदलोलुपता का दोष पाते हैं जो अपने नेता को आजन्म गुरु की सज्ञा देकर गुरुडम के पुजारी है। आर्य समाज ने जो किया है वह किसी से छुपा नही और यह समय समय पर आने वाले नेताओ के पथ प्रदर्शन का परिणाम है आप इसे न देख सके तो "नैव स्थाणोर पराधो यदेन – न पश्यति" सुना है अब तो आर्य जगत मे अपने से मतभेद रखने वाले आर्य नेताओ के लेख भी नही छप सकते मैं यह बात पुष्ट प्रमाणो से प्रस्तुत कर सकता हू। प्रादेशिक सभा के कर्णधारो मे प्रार्थना हैं कि वे इस पत्र को विवादो के घेरे से निकाले ताकि श्री क्षितीश जी जैसे योग्य आर्य नेताओ का परिश्रम जो पत्र को सवारने मे हुआ है व्यर्थ न जाए।

एक सत्य मै उनका स्वीकार करता हू कि आर्य समाज मे छद्मवेशधारी घुस गये है। हम उन्हे पहचान चुके है वे चाहे सन्यासी वेश मे हो अथवा सम्पादक या अधिकारी के रूप मे, अब आर्यो को धोखा न दे सकेगे "ताडने वाले कयामत की नजर रखते है।'

वाणी का महत्व

तुलसी मीठ वचन सो सुख उपजत चहु ओर ।
बशीकरण एक मन्त्र है तज द वचन कठोर ।।

जीवन मे वाणी का महत्व अति विशेष है । वाणी मानव का प्रकृति की विभूति अथवा अदभुत देन है । इसके प्रयोग म मनुष्य को अत्यन्त सावधान रहना चाहिए । वाणी मनुष्य को सकट म भी डालती है और सकट से उबारती भी है । वाणी सहज ही दूसरा को शत्रु बना सकता है ।

महापुरुषा का कहना है कि उत्तम वाणी का प्रमुख लक्षण है—सत्य प्रिय और हितकर बोलना । अति महत्वपूण आवश्यकता यह है कि कोई बात किसी के मन मे उद्वेग उत्पन्न कराने की दृष्टि म न कही जाय । किसी की दुष्टता से मन म क्षोभ उत्पन्न होने पर भी दृढतापूवक सभलकर बोलना वाणी का तप है । मन की कटुता एव उत्तजना का निग्रह करके सयमित मृदुभाषण वाणी का श्रृगार है किसी को तीख शब्द कहना वाणी से आघात पहुचाना है । वाणी के घाव अत्यन्त गम्भीर होते है और मर्मान्तिक वेदना उत्पन्न करते है । सरल शान्त मधुर शब्द कहना वाणी की साधना है । हम सदा यह प्रयास करते रहना चाहिए कि हमारी वाणी अमृतमय हो ।

यह भी एक तथ्य है कि मनुष्य को आवश्यकता से अधिक बोलकर अपनी शक्ति का क्षय नही करना चाहिए । उत्तम वाणी दुग्ध और मधु की भाति सत्य तथा प्रेम का उचित सम्मिश्रण होने पर अमृतमय हो जाती है । तलवार के वाणो के घाव भर जात हैं, किन्तु वाणी का घाव नही भरता । थोडा और सारयुक्त बोलना वाणी की कुशलता है । महापुरुष स्वभाव से मितभाषी होत है । शास्त्र कहता है कि अप्रिय सत्य नही बोलना चाहिए । हितकारी और मनोहर वाणी मनुष्य को सुशोभित करती है ।

वाणी का भूषण ही सच्चा भूषण है । हम सब कई बातो मे चूक जाते हैं । जो अपनी बातो म नही चूकता, और सारी देह पर नियन्त्रण रख सकता है वही सिद्ध पुरुष है यदि हम घोडो को अपने वशमे करने के लिए मुह में लगाम लगाए तो हम उसके सारे शरीर को नियन्त्रण मे रख सकते हैं । जहाज भी इतने बडे होते है तीव्र वायु द्वारा चलाये जात ह फिर भी एक छोटी सी पतवार द्वारा नाविक के इच्छानुसार चलते है । वैसे ही जीभ भी यद्यपि शरीर का एक छोटा सा अग है फिर भी हमारे मानसिक सन्तुलन पर नियन्त्रण करती है । एक छोटी सी चिंगारी कितने बडे वन मे आग लगा देती है । अनियन्त्रित वाणी भी अग्नि सदृश है । यह एक ऐसी बुराई है जो कभी शान्त नही होती जो विष से भरी है । इससे हम प्रभु के गुण गाते है और इससे दूसरो को भी शाप देते है । एक ही मुह से आशीर्वाद और शाप दोनो निकलते है ।

प्रत्येक जाति के पशु पक्षी, जीव जन्तु मानव ने अपने वश मे कर लिए हैं । पर अपनी जिह्वा को कोई बिरल ही वश म कर पाते है । हमे जब बोलना आवश्यक हो तभी बोलना चाहिए । सत्य बोलो, थोडे शब्दो मे कहो, उपयुक्त समय पर बोलो । (१) सुहितकर (२) सक्षिप्त (३) सत्य विवाद रहित (४) और मधुरता वाणी के चार आभूषण है । वाणी म पोषण अमृत होता है तथा विध्वसक विष भी । अनर्गल अनर्थकारी बचन कहने की अपेक्षा मौन धारण करना अधिक अच्छा है । कहते हैं—मौन धारण अर्थात शान्ति धारण कर लेने से मनुष्य अशुभ प्रभाव से बच जाता है । अन्यथा व्यर्थ के बाद विवाद मे फस कर नाना क्लेश उठाता है ।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोए ।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय ।।

मीठा बोलना सदाशयता एव सज्जनता की निशानी है ।

—रामनाथ भार्गव
१८।५३, माल रोड, कानपुर

स्मैक के लिए गुर्दा बेचा, अब आंख बेचने की तैयारी

हर चीज की आदत बुरी होती है

जीवन मे नशे की आदत अत्यधिक बुरी है

नशे मे सकडा व्यक्ति मरते है । परन्तु फिर भी होश मे न आकर प्रति दिन मादक द्रव्यो का सेवन बढता ही जा रहा है । आज मौ मरे कल पडा दूसरे सौ मरे ? आज नशे की आदत से परेशान व्यक्ति ने जीवन को ही दाव पर लगा दिया । खोकर भी पश्चाताप न किया और इस बुराई से छुटकारा पाने का प्रयास भी न किया—फिर स यानाश ही है ?

स्मैक के लती एक नौजवान प्रदीप कुमार ने स्मैक खरीदने के लिये अपना गुर्दा बेच दिया और अब वह अपनी आख बेचने की तैयारी कर रहा है । उसने गुर्दा बचकर मिल ३० हजार रुपये धुए म उडा दिये । अब वह अपनी आख ६० हजार रुपये मे बेचने जा रहा है ।

तीस साल के प्रदीप की कहानी एक जिंदा मुर्दे की कहानी है । छह साल से उसे स्मैक की लत है । उसने अपने लिए बर्बादी का रास्ता खुद चुना । वह पश्चिमी दिल्ली की एक एक्सपोर्ट फर्म को बटन सप्लाई करता था । तभी उसे इस जानलेवा नशे की लत लगी । स्मैक की पुडिया पाने के लिये रोज दो सौ रुपये खर्च करता था । हर हफ्ते वह जनकपुरी के डी ब्लाक के पास सागर पुर जाकर स्मैक खरीदता था । प्रदीप पिछले छह साल से क्नाट प्लेस के एक ब्लड बैंक म खून बेच रहा है । हर बार के उसे ६० रुपये मिलते है ।

शुक्रवार को भी वह ब्लड बैंक मे खून बेच कर लौटा । कमपुरा के जी ६४ नंबर के अपने मकान म नशा कर लेने के बाद वह बडे फख्र से बताने लगा कि स्मैक खरीदने के लिए उसने कैसे कैसे तरीके अपनाये । एक बार ब्लड बैंक जाने पर उसे कुछ लोग मिले जिन्होने उसे बताया कि कैसे वह ३० हजार रुपये तक पा सकता है । प्रदीप का सिर चकरा गया । इतने पैसो से वह कितनी ज्यादा स्मैक खरीद सकेगा वह सोचने लगा । उसने पूछा—लेकिन इतने पैसे मुझे कैसे मिलेंगे । जबाव मिला 'बहुत आसान है । अपना गुर्दा बेच दो । प्रदीप को सोचने म थोडा वक्त ही लगा और फिर उसने तय कर लिया कि स्मैक पाने के लिए वह कुछ भी करेगा, गुर्दा भी बेच देगा ।

गुर्दा बेचने की सलाह देने वाले युवक ने उसे स्मैक खरीदने के लिए कुछ पैसे तुरन्त दिये । इसके बाद जब भी प्रदीप को जरूरत पडी उसे ५०-१०० रुपये मिलते रहे । बाद मे यह रकम बढती गई । इसके बाद उसे परमार्थ मिशन को गुर्दा बेचने के लिये कहा गया और बताया गया कि उसे ३० हजार रु० मिलेंगे इतने मे वह पाच माह तक स्मैक खरीद सकेगा ।

प्रदीप ने एक दिन उस शपथ पत्र पर दस्तखत कर दिये कि आपरेशन सफल या नाकाम होने की जिम्मेदारी उस पर ही होगी । वह आपरेशन के लिए सात मई को अस्पताल गया और ११ दिन बाद तीस हजार रुपये लेकर वहा से लौटा । उसका अस्पताल का खर्च उन लोगो ने ही वहन किया जिन्हे उसके गुर्दे की जरूरत थी ।

इस रकम का दो तिहाई उसके पिता ने तुरन्त फिक्स डिपाजिट करा दिया जो स्वतन्त्र भारत मिल मे काम करते हैं । इस सवाददाता से आधे घंटे की बातचीत मे प्रदीप ने वादा किया कि वह नशा छोड देगा । प्रदीप की मा अभी अपनी बेटी की दहेज हत्या के सदमे से ही नही उबर पाई है । उधर प्रदीप का गुर्दा लेने वाले लोग ६० हजार मे उसकी आखे खरीदने की आस लगाये बैठे हैं । प्रदीप नशा छोडना चाहता है लेकिन वे लोग उसकी आख खरीदना चाहते है । क्या वह फिर इस चक्कर मे पड जायेगा ?

(जनसत्ता से साभार)

स्वास्थ्य चर्चा—

वाइरल बुखार : बचाव और उपचार

इन दिनो वाइरल फीवर या ज्वर से बहुत से व्यक्ति पीडित होकर डाक्टरो के पास परामर्श के लिए आ रहे है। अधिकाश रोगी अत्यधिक कमजोरी तीव्र सिर और बदन दर्द की शिकायत करते है। कुछ रोगी कहते है कि बुखार तो उतर गया लेकिन खासी नही जा रही है। कुछ रोगी टायफायड की आशका भी प्रकट करते है। प्राय सभी रोगी भोजन के बारे मे जानकारी चाहते है। आपकी जानकारी के लिए यहा प्रस्तुत है कुछ सवाल और उनके जवाब भी।

वाइरल फीवर क्यो होता है और कैसे फैलता है ?

यह बुखार एक प्रकार के बहुत ही सूक्ष्म जीव वाइरस के कारण होता है जो रोगी के श्वसन तन्त्र के ऊपरी भाग के स्राव मे मौजूद होता है। जब रोगी खासता या छीकता है तो यह वाइरस वायु द्वारा पास मे मौजूद व्यक्तियो के श्वसन तन्त्र की कोशिकाओ मे पहुचकर अपनी सख्या मे बढोत्तरी करके रोगी मे विभिन्न लक्षण पैदा कर देते है। सिनेमा घरो मे स्कूलो मे हास्टल मे बस या ट्रेन मे तथा अन्य भीड वाले स्थानो मे जाने या रहने वाले व्यक्ति इस रोग को आसानी से पकड लेते है।

इस रोग के मुख्य लक्षण क्या हैं ?

रोगी को अचानक तेज बुखार चढता है जो १०५ या १०६ डिगरी फरनहाइट तक भी हो सकता है। बुखार के अलावा रोगी प्राय भयकर सिर दर्द हाथ पैरो मे तथा बदन मे दर्द की शिकायत करते है। कुछ रोगी गले मे खराश जुकाम खासी आखो मे जलन भूख नही लगना उल्टिया होना और अत्यधिक कमजोरी की शिकायत करते हैं। कुछ रोगी आमाशय की म्यूकस झिल्ली मे तीव्र सूजन हो जाने के कारण अत्यधिक पेट मे दर्द की शिकायत करते हैं। बुखार उतर जाने के बावजूद कुछ रोगी कई हफ्तो तक लगातार कमजोरी बने रहने की शिकायत करते हैं जिससे वे अपना कार्य ठीक प्रकार से नही कर पाते। ऐसा मुख्यत वृद्धावस्था के रोगियो मे होता है।

क्या वाइरल फीवर जटिल भी हो सकता है ?

हा यह रोग कभी कभी जटिल होकर गम्भीर रूप भी धारण कर सकता है। इस रोग की मुख्य जटिलता न्यूमोनिया है जिसमे रोगी के फफडे मे सूजन हो जाती है। ऐसे रोगी का बुखार या तो उतरता नही है अथवा उतरने के बाद दोबारा चढ जाता है। रोगी खासी छाती मे दर्द और सास मे तकलीफ बताता है। रोगी को बलगम आने लगता है। कुछ रोगियो की जीभ तथा नाखून नीले पड जाते है जो एक गम्भीर दशा है जिसमे डाक्टर से अविलम्ब परामर्श ले। वैसे तो यह जटिलता वाइरल फीवर के किसी भी रोगी को हो सकती है लेकिन मुख्य रूप मे यह उन रोगियो मे देखने को मिलती है जिनमे हृदय फफडे अथवा गुर्दो की पुरानी बीमारी पहले से ही मौजूद हो अथवा जिनको डाइबिटीज की बीमारी हो। वाइरल फीवर हो जाने पर डाइबिटीज के रोगियो मे उसका कन्ट्रोल बिगड सकता है अत ऐसे रोगी अधिक सावधान रहे और अधिक कमजोरी होने पर विशेषज्ञ से परामर्श ले। न्यूमोनिया के अलावा इस रोग की अन्य जटिलताओ मे हृदय की मासपेशी एव हृदयावरण की सूजन मस्तिष्क की सूजन तथा स्पाइनल कार्ड की सूजन मुख्य है। आमाशय की म्यूकस झिल्ली की सूजन हो जाने पर रोगी पेट मे तीव्र दर्द उल्टिया भूख नही लगने की भी शिकायत करते है।

वाइरल फीवर का उपचार क्या है ?

बुखार सिर दर्द बदन दर्द जैसे लक्षणो के लिए परासिटामौल क्रोसिन मर्गामिन कलपोल जैसी दवाए उपयोगी मानी जाती है यह दवाए सस्ती भी है और अपेक्षाकृत सुरक्षित भी मानी जाती है। लेकिन फिर भी इसे चिकित्सक के सलाह से ही लेना चाहिए क्योकि कभी कभी कुछ रोगियो मे प्रतिकूल प्रभाव भी देखे गये है। वाइरल फीवर मे एस्प्रिन भी कारगर रहती है लेकिन बच्चो को दमा के रोगी को और पेप्टिक अल्सर के रोगी को यह दवा नही लेनी चाहिए। यह दवा खाली पेट कभी न ले। शराब पीने वाले व्यक्ति भी वाइरल फीवर मे इसे न ले क्योकि उनमे आमाशय से रक्तस्राव हो सकता है जो एक गम्भीर दशा होती है।

जीवाणु जनित न्यूमोनिया होने पर फिर कौन सी दवा ले ?

अच्छा तो यह रहेगा कि बलगम की जाच कराके यह पता लगाया जाय कि कौन से जीवाणु जिम्मेदार है और उन पर कौन सी दवा कारगर सिद्ध होगी और फिर ऐसी कारगर दवा ले जो अधिक से अधिक सुरक्षित हो।

खासी से राहत के लिए क्या दवा ले ?

कोडीन वाले कफ सिरप प्राय ठीक रहते हैं लेकिन इनकी मात्रा चिकित्सक द्वारा सुझाई गयी मात्रा से अधिक न ले। क्योकि इससे कब्ज हो सकता है जो वृद्धावस्था के रोगियो मे परेशानी का कारण बन सकता है।

वाइरल फीवर के रोगी क्या भोजन करे ?

हल्का सुपाच्य ताजा भोजन पर्याप्त रहता है मौसमी तथा अन्य फलो के रस मे बच।

उल्टिया होने पर क्या करे ?

साफ सुथरे तरल पदार्थ जैसे दूध पतली खिचडी पतला दलिया उल्टी रोकने की दवा जैसे डोमपेरीडोन एव एंटएसिड दवाओ जैसे डाइजान पोलीक्रोल इत्यादि लाभदायक सिद्ध हो सकते है। लेकिन यह भी देखना होगा कि उल्टी किसी अन्य कारण से तो नही है जैसे दवाओ के दुष्प्रभाव से गेस्टोएटराइटिस से पीलिया जाडिस या हिपेटाइटिस से मेनिनजाइटिस या ब्रेन ट्यूमर से गुर्दो की खराबी से आन्त मे रुकावट से एपेन्डसाइटिस इत्यादि से ?

वाइरल फीवर मे कैसे बचें ?

जैसा कि पहले बता चुके है कि रोगी खासते या छीकते समय मुह और नाक पर रुमाल रखे। जब रोग व्यापक रूप मे फैला हो तो जहा तक सभव हो भीड मे जाने से बचे। अब रोग निरोधक टीके (वक्सीन) भी उपलब्ध है। जिन रोगियो को हृदय फफडे गुर्दे की पुरानी जटिल बीमारी हो डायबिटीज हो रक्त की कमी हो या दमे की बीमारी हो उनमे वेक्सीन लगवाने मे प्राथमिकता देते हैं।

—डा० बी. डी अग्रवाल
मेडिकल कालिज कानपुर

विदेश समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका ने श्रावणी पर्व धूमधाम से मनाया

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका ने १६ अगस्त ९२ से ३० अगस्त ९२ तक श्रावणी पर्व दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न आर्य समाजो तथा संस्थाओ मे जिनमे वदिक टेंपल अबोका कल्चरल सैण्टर आर्य भवन, श्री रामायण सभा आर्य समाज प्लेमिसलियर डिवाइनरोड हाविक, आइजीवर्नआश्रम ३१३ सिलवरग्लेन क्रोसि येण्ट आर० ए० मूडी होम, टपल हाल तथा वी० जे० काराहाल मुख्य हैं समारोह पूर्वक मनाया।

समारोहो के मुख्य अतिथि श्री एस० रामभरोस श्री जे० बलवन्त, श्रीमती एस० सत्यदेव श्रीमती बी० लोटन, श्रीमती रेशमा श्री श्यामल कुमारी रोशनी श्री मोनीलाल श्री बी० बेहादार, डा० रेशमा बादल श्रीमती उषालल्ला तथा श्रीमती ए० रामबरन आदि थे। इन्होने वेद, वेदो के अध्ययन, समाज मे नारी का स्थान, धर्म के आदि स्रोत वेद आदि विषयो पर अलग अलग समारोहो मे उपस्थित होकर विस्तार से प्रकाश डाला। —मन्त्री

आर्यसमाज लंदन का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

दिनांक २४ मई १९९२ को आर्यसमाज के वन्देमातरम् भवन मे कार्यकारिणी के पदाधिकारियो का चुनाव भूतपूर्व प्रधान प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज की अध्यक्षता मे शान्तिमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज पुरानी पीढी के आर्य समाजी हैं आपने अपने नवयुवको को समाज मे अधिकारी बनाकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। चुनाव निम्न प्रकार रहा।

प्रधान श्री वीरेन्द्र वीर वर्मा मन्त्री श्री राजेन्द्र चोपडा उप-प्रधान श्री प्रियव्रत चोपडा व श्री युद्धवीरसिंह सूरी, उपमन्त्री श्री आदर्शवीर व श्री प्रभाकर शर्मा कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार वेदी, उपकोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल भसीन, लोक सम्पर्क अधिकारी श्री सत्यपाल वत्रा ग्रन्थालयाध्यक्ष श्रीमती उषा भसीन।

आर्य सभा मोरिशस

गयासिंह आश्रम मे बहुप्रयोजन हाल का उद्घाटन

आर्य सभा मोरिशस द्वारा सचालित ५० वर्ष पुराने गयासिंह आश्रम मे डेढ लाख रुपये की लागत से बने बहुप्रयोजन भवन का उदघाटन बुधवार ता० २९ जलाई १९९ को ठीक ४ बजे शाम मे देश के प्रधान मन्त्री की धर्मपत्नी लेडी सरोजनी जगन्नाथ ने अपने कर कमलो द्वारा किया। समारोह मे भाग ले रहे थे समाज कल्याण मन्त्री माननीय काल ओफमान जिनके मन्त्रालय की ओर से एक लाख रुपये की मदद मिली। मन्त्री महोदय ने आश्रम के १२० आश्रितो के कपडे धोने के लिए बिजली द्वारा चालित एक मशीन देने का वादा किया।

आर्य सभा मोरिशस के नवनिर्वाचित प्रधान माननीय राजनारायण गति ने आगन्तुक लोगो को सम्बोधित करते हुए बताया कि बहुत ही निकट भविष्य मे पुरुषो के लिए मे पाल वाक्वा नगर मे एक आश्रम बनाने का नक्शा बनकर तयार हो गया है।

अभी हाल मे बना गणराज्य बडे वेगसे औद्योगिकीकरण की ओर बढ रहा है। समाज का ढाचा बदल रहा है। समाज मे परिवर्तन से हमारे समाज के वयोवृद्धो की समस्या भी बढ रही है। इसी बात को ध्यान मे रखते हुए हम आश्रम खोल रहे हैं। —सत्यदेव प्रीतम सभा मन्त्री

कुछ अपनी—कुछ उनकी

गताक से आगे

आय समाज को ममभन म प्राय गर आय समाजी लोग इस प्रकार की मल करत होरहत है । परन्तु हमारा यह कत्तव्य है कि आयसमाज के क्रांति कारी जनसेवक आध्यात्मिक स्वरूप को आवाम के समक्ष सही रूप मे प्रस्तुत कर सन १९९० मे अन्तर्राष्ट्रीय आय महासम्मेलन के अवसर पर मै स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ तत्कालीन रेलमन्त्री श्री जनेश्वर मिश्र से मिला और उनके समक्ष प्रार्थना प्रस्तुत की कि आगामी अन्तर्राष्ट्रीय आय महासम्मेलन के अवसर पर लाखो की सख्या मे भारत के कोने कोने से आने वाले आय जनता के लिए विशेष आरक्षण तथा अन्य सविधाओ के अतिरिक्त रेल किराये म आधी छट की सविधा भी दी जाए रेल मन्त्री द्वारा यह पत्र सम्बन्धित कार्यों के प्रशासनिक अधिकारियो को आवश्यक कार्यवाही हेतु भेज दिया गया । और मेरा उनसे मिलन का समय नियत करवा दिया । प्रशासनिक अधिकारियो के साथ बैठक मे उन्होने समस्त अन्य सविधाए देना स्वीकार कर लिया परन्तु किराये मे छट के विषय पर उन्होने आपत्ति कर दी कि यह छट केवल सास्कृतिक शक्षणिक एव जनसेवी सस्थाओ को ही दी जाती है । धार्मिक सस्थाओ को नही । आय समाज एक धार्मिक सस्था है इसलिए किराय की छट आय समाज के सम्मेलन के लिए नही दी जा सकती इस पर मैंन उन्हे बताया कि लगभग हर आय समाज का जनसेवा का अपना रिकाड है और आय समाजी सस्थाए अपने-अपन क्षत्र म अग्रणी जनसेवी सस्थाए हैं तथा समस्त विश्व मे लगभग आधी आय समाजो म किसी न किसी रूप मे शक्षण व्यवस्था की गयी है और यही नही सर्वोच्च न्यायालय तथा कई प्रान्तो के उच्च न्यायालयो न भी आय समाज को शक्षणिक सस्था मानत हुए भारतीय सविधान क अन्तगत कई सुविधाय देन हेतु निणय दिय है। मैन उन्ह यहा तक कह दिया कि अब केवल रेल किराय की छट का ही प्रश्न नही रहा अपितु यह प्रश्न अब आय समाज के वास्तविक स्वरूप का बन गया है इसलिय अब चाहे इसी बात क लिय न्यायालय का द्वार खटखटाना पड लकिन सरकार के रिकाड मे आय समाज के वास्तविक स्वरूप को प्रतिष्ठित करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है

इस गहम गहमी के बाद एक बार पुन रलमन्त्री श्री मिश्र जी से मिल और उनसे निवदन किया कि आप तो राममनोहर लोहिया जी के अनुयायी और पक्के समाजवादी है। क्या आपके होन हुए भी आपके प्रशासनिक अधिकारियो को समाजसेवी और शक्षणिक सस्थाओ की परिभाषा भाहम बनानी पडगी प्रशासनिक अधिकारियो के साथ हुई चर्चा का वत्तान्त सुनने के पश्चात उन्होन एक बड प्रशासनिक अधिकारी को बुलाया और सख्त आदेश देत हुए उसी दिन रलवे छट का आदेश जारी करने को कहा । रेल मन्त्री न यह भी कहा कि मैं स्वय आय समाजी विद्वानो स पढा हू और आय समाज के समाजसेवी तथा शिक्षण कार्यों स पूणतया परिचित हू । इस प्रकार रेलमन्त्रालय क अधिकारियो को फाइल पर यही लिखना पडा कि आय समाज एक समाजसेवी तथा शक्षणिक सस्था है ।

अक्सर यही देखने मे आया है कि जहा पौराणिक मन्दिर म जितन कमरे बनते है लगभग उतनी ही मूर्तिया प्रतिष्ठापित कर दी जाती है और बेचारे गरीब आय समाजी अपने मन्दिरो म जितन भी कमरे बनात है लगभग उतनी या कभी कभी उससे भी अधिक समाज सेवा की स्कीम शुरू कर देते हैं । अभी लगभग दो सप्ताह पूव आय समाज गोविन्दपुरी के वेद प्रचार सप्ताह के समापन समारोह पर जाने का अवसर मिला तो देखा कि एक हाल और यज्ञशाला के अतिरिक्त पहली बार चार कमरे बनाये गये और उन चारो कमरो मे एक एक समाज सेवा योजना शुरू कर दी गई । एक मे पुस्तकालय दूसरे मे औषधालय तीसरे मे सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र तथा चौथे मे व्यायाम तथा प्रौढ शिक्षा केन्द्र आरम्भ किया गया ।

—विमल वधावन एडवोकेट

मेरी अच्छाइया आर्यसमाज की देन हैं

पृष्ठ १ का शेष

इस समारोह से पूव श्री वीरेन्द्र वर्मा ने गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति मे सपत्नीक भाग लिया और अपनी तरफ से ११०० रुपये यज्ञ के लिए भेंट किए इस समारोह मे सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के उप कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार हि० प्र० सभा के प्रधान श्री प० विद्याधर जी सस्कृत महाविद्यालय शिमला के आचार्य रामानन्द जी तथा सार्व सभा के उप प्रधान श्री सत्यानन्द जी मुंजाल भी उपस्थित थ

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री न अपन उदबोधन म श्री वीरेन्द्र वर्मा के परिवार की जानकारी देते हुए कहा कि परमात्मा की असीम कृपा से श्री वीरेन्द्र वर्मा अपनी सत्यता और कत्तव्य निष्ठा के दम पर ही आज हि० प्र० के राज्यपाल के पद तक पहुचे है इस पर आय समाज को गव है। डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने महामहिम राज्यपाल को इस सर्वोच्च पद का आय समाज के सुधारवादी आन्दोलन को बढाने म सदुपयोग करने हतु प्ररणात्मक भाषण दिया डा०सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि जिस गुरुकुलीय परम्परा म महाभारत काल के समय विकृतिया पदा हो गई थी स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा उनके अनुयायियो न उन विकृतियो को दूर कर प्राचीन आर्ष गुरुकुलीय परम्पराओ का पुनस्थापन किया उन्होन कहा कि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज न हि० प्र० म पहाडियो के सुदूर क्षेत्र म इस दयानन्द मठ की स्थापना करके ऋषि परम्परा का इस क्षेत्र मे प्रतिस्थापन किया है जिसके लिए वे अभिनन्दन के पात्र है

प० विद्याधर जी न हि० प्र० आय प्रतिनिधि सभा तथा स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा जारी सुधार तथा सेवा कार्यो का ब्यौरा उपस्थितजन समुदाय के समक्ष रखा ।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/६२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (४-१०-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U 93Post in N D P.S O on 2, 3-10 1992

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा का शिष्ट मण्डल उत्तर भारत के दौरे पर

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भव्य स्वागत

आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक के ४२ सदस्यो का एक शिष्ट मण्डल उत्तर भारत के सास्कृतिक तथा धार्मिक स्थलो के दर्शनार्थ २ १० ९२ को ११ बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुचा। हजारो की सख्या मे दिल्ली की आर्य समाजो के सदस्या आर्य वीर दल के कार्यकर्ताओ तथा अनेको गणमान्य व्यक्तियो न उनका भव्य स्वागत किया। यह शिष्टमण्डल लगभग १० दिन तक आर्य समाज दीवान हाल म रहेगा तथा यहा से आस पास के क्षेत्रो के गुरुकुलो सस्थाओ तथा प्रमुख आर्य समाजो की गतिविधियो की जानकारी प्राप्त करेगा। १० दिवसीय कार्यक्रम निम्न प्रकार है।

२ अक्टूबर को दोपहर दो बजे कन्या गुरुकुल के लिए प्रस्थान तथा रात्रि को वापसी। ३ अक्टूबर को प्रात ८ बजे से सायकाल ६ बजे तक दिल्ली के ऐतिहासिक तथा सास्कृतिक स्थलो का दर्शन। ४ से ६ अक्तूबर तक झज्जर नूरगढ तथा रामपुर के गुरुकुलो की यात्रा। ५ से १० अक्तूबर तक हरिद्वार देहरादून तथा मसूरी के दर्शनीय स्थल एव गुरुकुलो के दर्शन तथा वानप्रस्था श्रम ज्वालापुर तथा ऋषिकेश आदि क्षेत्रो का भ्रमण तथा रात्रि को दिल्ली वापसी। ११ अक्तूबर को गोसम्वर्धन दुग्ध केन्द्र दिल्लीका भ्रमण १२अक्तूबर को दिल्ली के अन्य स्थल की यात्रा तथा १४ अक्तूबर को दोपहर तीन बजे बगलोर क लिए प्रस्थान।

शोक समाचार

आचार्य सुरेन्द्र कुमार विद्यालकार का देहावसान

मद्रास आर्य समाज क मन्त्री डी० ए० वी० स्कूल के उपाचार्य वैदिक विद्वान कवि लखक श्री सुरेन्द्र कुमार विद्यालकार का ९ सितम्बर को मद्रास के विजया अस्पताल म हृदयगति अवरोध से देहान्त हो गया है।

श्री सुरन्द्र जी के निधन से मद्रास आर्य समाज अनाथ निबल हो गया है। उन्होने अपना सारा जीवन दाक्षिण मे आर्य समाज की उन्नति मे लगा दिया। उनकी अन्तिम शव यात्रा मे मद्रास के सभी सस्थाओ के प्रति निधियो न बडी सख्या म भाग लकर अश्रुपूर्ण नेत्रो से उन्हे विदाई दी।

उनकी स्मृति म आयोजित शोक सभा म नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियो न भावभीनी श्रद्धान्जलि अर्पित की। परम पिता प्रभु से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति व सदगति प्रदान कर।

त० शि० क० कण्णन

श्री रामचन्द्रराव कल्याणी दिवगत

श्री रामचन्द्र राव जी कल्याणी हैदराबाद का दिनाक १३ सितम्बर ९२ को आकस्मिक निधन हो गया। उनको श्रद्धान्जलि अर्पित करने हेतु २० ९ ९२ को साय चार बजे एक शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा मे अनेको व्यक्तियो न उनका भावभीनी श्रद्धान्जलि अर्पित की तथा प्रभु न शोक सतप्त परिवार को धैर्य तथा उनको सदगति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

न सस्कृत मृत है न हम मृत हैं

एकलव्य संस्कृत माला (भाग १-२)

४५०० सरल वाक्यो तथा ८०० धातुओ के कोष की सहायता से बहुत कम समय म सस्कृत सीखने की अनुपम तथा चमत्कारी पुस्तक। सस्कृत प्रेमियो तथा विद्यार्थियो दोनो को उपयोगी अन्य सरल पुस्तको के लिये भी सम्पर्क कर।

मूल्य—भाग १-२० रु। भाग २-४० रु. (दीपावली तक ३२)

वैदिक सगम	अन्य प्राप्ति स्थान
४१, दादर डिपार्टमेंट स्टोर्स	**गोविन्दराम हासानन्द**
एम सी जावले मार्ग	४४०७, नई सडक
दादर बम्बई ४००२	दिल्ली ६

श्री रामशरण दास आर्य पुन

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का दो वर्षीय चुनाव दिनाक ६ ९ ९२ को लाला इन्द्र नारायण जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज आर० के० पुरम सैक्टर ९ मे सम्पन्न हुआ।



अधिकारियो का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ—

१ सरक्षक लाला इन्द्रनारायण श्री कृष्णलाल सूरी तथा प० राम कृष्ण जी।

२ प्रधान श्री हरबन्स लाल कोहली।

३ उपप्रधान श्री लखीराम कटारिया श्रीमती सुशीला त्यागी श्री भूपसिंह गुप्ता।

४ महामन्त्री श्री रामशरण दास आर्य।

५ उपमन्त्री श्री गणेशदास ग्रोवर श्री खैरातीलाल श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री।

६ कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्रनाथ सहगल।

७ लेखा निरीक्षक श्री देशराज जुनेजा।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज ब्यावर राजस्थान का ७० वा वार्षिकोत्सव ३ से ६ अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेको सम्मेलनो के अतिरिक्त अभिनन्दन समारोह तथा विशाल शोभा यात्रा का भी आयोजन किया गया है। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे है। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाव।

आर्य समाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर १५ हनुमान रोड नई दिल्ली का ७० वा वार्षिकोत्सव १२ से १८ अक्टबर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ वेद प्रवचन सगीत के अतिरिक्त भाषण प्रतियोगिता महिला सम्मेलन वेदगोष्ठी तथा सस्कृति रक्षा सम्मेलन आदि का आयोजन भी किया गया है। समारोह म आर्यजगत क प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

युवा जागृति सम्मेलन

२ अक्तूबर ९२ को सी० आर० पब्लिक स्कूल टी० ब्लाक खुशीराम पार्क उत्तम नगर नई दिल्ली मे ३ बजे से साय ६ बजे तक भजन सध्या तथा युवा जागृति सम्मेलन का आयोजन किया गया है। समारोह मे सार्व० सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता चौ० लक्ष्मीचन्द जी बिमल वधावन एडवोकेट के अतिरिक्त आर्य समाज के अनेको नेता युवाओ को सम्बोधित करगे।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- जो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्य-भाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदो से अविरुद्ध है उसको धर्म और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण, मिथ्य भाषणादि, ईश्वराज्ञा भंग, वेद विरुद्ध है उसको अधर्म कहते हैं।
- जिनसे विद्याभ्यास सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्म हैं वे सब तीर्थ कहाते हैं, क्योंकि इनको करके जीव दुःख सागर से तर सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक ३७) दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ आश्विन शु० ३० सं० २०४९ ११ अक्तूबर १९९१

इतिहास की पुस्तकों में संशोधन करने पर उ.प्र. सरकार को सार्वदेशिक सभा द्वारा धन्यवाद

केन्द्रीय सरकार तथा अन्य प्रान्तीय सरकारों से भी इसका अनुकरण करने का अनुरोध

नई दिल्ली ६ अक्तूबर। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इतिहास की पुस्तकों मे समुचित परिवर्तन करने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री कल्याणसिंह तथा शिक्षामन्त्री को एक विशेष पत्र लिखकर समूचे आर्य जगत् की तरफ से हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद किया है।

अपने पत्र मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उत्तर प्रदेश की वर्तमान सरकार की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि ७५० वर्ष की मुगलों की दासता तथा २०० वर्ष की अंग्रेजी गुलामी और लार्डमैकाले द्वारा की गई दूषित विकृतियों ने भारत के इतिहास को बिगाड़ कर जिस प्रकार कोमल मस्तिष्क के बच्चों के मन को विकृत किया जा रहा था, इससे यही आभास होता था कि हिन्दू चिरकाल तक मुसलमानों के गुलाम रहे। इस प्रकार भावी पीढ़ी में स्वाभिमान की भावनाओं को समाप्त करने का एक षड्यन्त्र पूर्णप्रयास किया जा रहा था।

स्वामी जी ने इस पत्र में यह भी लिखा है कि सबसे पहले इन ऐतिहासिक बुराइयों की तरफ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से जन-सामान्य का ध्यान आकृष्ट किया था। अंग्रेजी शासन द्वारा शिक्षा पद्धति में पैदा की गई विकृतियों को उसी प्रकार विगत ४० वर्षों से ढोया जा रहा था और बच्चों के मस्तिष्क पर विदेशी दासता के अंकुर जमाए जा रहे थे।

स्वामी जी ने श्री कल्याण सिंह को अनेकशः धन्यवाद तथा आशीर्वाद देते हुए लिखा है कि इस कार्य को सम्पन्न करके उन्होंने स्वयं तथा अपनी सरकार को अमर कर लिया है

(शेष पृष्ठ ११ पर)

कुवैत में महिलाओं ने प्रदर्शन किया

कुवैत सिटी। चुनाव मे भाग लेने के लिए लड़ रही कोई १०० महिलाओं ने यहां एक मतदान केन्द्र पर शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया। उल्लेखनीय है कि कुवैत मे महिलाए न केवल चुनाव नहीं लड सकती बल्कि उन्हे वोट देने का अधिकार भी नही है। इससे पहले ४०० महिलाओं ने पिछले दिनो एक बैठक करके इस मुद्दे को उठाया था।

महि[illegible] ई [illegible] मे थी। उन्होने हाथ मे तख्तियां ली हुई थीं जिन पर लिखा हुआ था कि आज नहो तो चार वर्ष बाद १९९६ मे होने वाले चुनावों में उन्हें भाग लेने का मौका दिया जाना चाहिए। महिलाओं का कहना था कि वे राजनैतिक रूप से अपरिपक्व नही है।

अमेरिकी कन्या का वैदिक धर्म में प्रवेश तथा हिन्दू युवक के साथ विवाह

नई दिल्ली, ४ अक्तूबर। आर्य समाज दीवान हाल मे एक अमेरिकी कन्या का विवाह हिन्दू परिवार के युवक के साथ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। अमेरिका के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री विलमोट रीड हैस्टिंग की सुपुत्री सुश्री क्लेयर हैस्टिंग्स ने इस विवाह से पूर्व स्वेच्छापूर्वक वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। सुश्री क्लेयर का शुद्धि संस्कार उनके माता पिता की उपस्थिति तथा स्वीकृति से हुआ। इस शुद्धि सस्कार के प्रणेता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती थे। शुद्धि सस्कार के बाद सुश्री क्लेयर ने अपना नाम पूनम स्वीकार किया। तदुपरात उनका विवाह श्री परमात्मा दयाल के सुपुत्र श्री आत्मा दयाल के साथ सम्पन्न हुआ। श्री आत्मादयाल की शिक्षा तो भारत मे ही हुई है परन्तु विगत पन्द्रह वर्षों से वे अमेरिका में ही रह रहे हैं और अब वहां के स्थायी नागरिक हैं।

यह शुद्धि तथा विवाह सस्कार चार वैदिक विद्वानो सर्वश्री वाचस्पति उपाध्याय, नेत्रपाल जी शास्त्री, महेन्द्र कुमार जी शास्त्री तथा दिवाकर शास्त्री जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट भी उपस्थित थे।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की प्रगतियां

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ देश के पूर्वोत्तर भाग मे पिछले दो दशको से शानदार कार्य कर रहा है। सितम्बर १९९२ मे सघ के महामन्त्री के नाते मैं मन्त्री श्रीमती प्रेमलता जी उपमन्त्री श्रीमती ईश्वर रानी ने वहा चल रहे विभिन्न आश्रमो तथा विद्यालयो का निरीक्षण किया। इसमे कोई सन्देह नही है कि वहा पर कार्य प्रगति पर है, परन्तु अभी भी उस क्षेत्र की जनता रूढिवाद और अन्धकार मे फसी हुई है जिसका मुख्य कारण निर्धनता तथा अज्ञानता ही है। उनकी इन कमजोरियो का विदेशी व अलगाववादी तत्व अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न करते आ रहे है जिसका परिणाम भारत के भविष्य के लिए शुभ नही कहा जा सकता है।

सघ की ओर से दयानन्द विद्या निकेतन के नाम से उस क्षेत्र मे ३ विद्यालय, पाच आश्रम, दो (होस्टल) चल रहे है। नागालैंड, बोकाजान व साल्पथार के विद्यालयो मे ३५०के लगभग विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। इन विद्यालयो मे वैदिक सस्कृति के मूल सिद्धातो को छात्रो मे प्रचारित व प्रसारित करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

डीफू, बोकाजान, साल्पथार, झापडाजान तथा दीमापुर के आश्रमो मे स्थापित होस्टलो मे लगभग २५० छात्र निवास करते है। आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० नारायणदास जी समय समय पर वहा भजनीक व उपदेशक भेजकर प्रचार कराने का प्रयत्न करते रहते है। अब यह प्रयत्न किया गया है कि वहा एक स्थायी पुरोहित जो हिन्दी तथा वैदिक सिद्धातो का ज्ञान रखता हो और व्यायाम आदि प्रशिक्षण तथा धार्मिक व नैतिक शिक्षा दे सके वहा नियुक्त किया जावे। इस कार्य के लिए एक कर्मठ व्यक्ति श्री बैरागी तिवारी की नियुक्ति की गई है। आशा है उनकी नियुक्ति के परिणाम लाभकारी होगे।

धनाभाव के कारण साल्पथार विद्यालय व डीफू आश्रम अभी तक घास-फूस के झोपडो मे ही चलाये जा रहे है, जिन पर हर दूसरे अथवा तीसरे वर्ष साठ सत्तर हजार रुपये व्यय किये जाते है। इनकी ईटो की दीवार बनाकर टीन की चादरो से ढकने का विचार किया जा रहा है। इसके लिए लगभग चार लाख रुपयो की आवश्यकता है। आशा है आर्य जनता इस ओर ध्यान देकर सघ को आर्थिक सहयोग देकर काम को आगे बढाने मे सहायता करेगी।

उन विद्यालयो, आश्रमो तथा होस्टल आदि को चलाने मे निम्न महानुभावो तथा प्रधानाचार्यो का सराहनीय सहयोग प्राप्त हो रहा है।

(१) श्री नीला वोरा (सयुक्त सचिव द० सेवाश्रम सघ उ० पू० भारत
(२) श्री डी० एन० मैक (प्रशासक द० विद्या निकेतन, दीमापुर)
(३) श्रीमती विजयलक्ष्मी प्रधानाध्यापिका द० व निकेतन दीमापुर
(४) श्री भिवाजीराय (प्रि० दयानन्द विद्या निकेतन, साल्पथार)

यह सब सस्थाए स्व० श्री ओमप्रकाश जी त्यागी व स्व० श्री पृथ्वीराज शास्त्री जी द्वारा स्थापित व सचालित की गई थी।

हाल ही के इस विशेष दौरे पर श्रीमती प्रेमलता जी तथा श्रीमती ईश्वर रानी ने बोकाजान निवास के दौरान वहा आश्रम मे रहने वाले छात्रो को वैदिक सध्या सिखाने का सराहनीय कार्य किया है।

इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के अन्तर्गत बादला झाबुआ, रतलाम, कुशलगढ, बासवाडा और उडीसा के कालाहाण्डी आदि अनेक क्षेत्रो मे विद्यालय, छात्रावास, आश्रम, औषधालय और बालवाडियो के माध्यम से व्यापक कार्यक्रम चल रहे है। इन सबका भी हम समय-समय पर निरीक्षण करते रहते हैं।

आशा है आर्य जनता सघ के कार्यो को ध्यान मे रखते हुए देश व जाति की रक्षा के प्रति अपने कर्तव्य पालन मे पीछे नही रहेगी। कृपया अपनी सहयोग राशि-अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के नाम से चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट बनाकर-महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२ के पते पर भेजने की कृपा करें।

—वेदव्रत महता, महामन्त्री

आर्य धर्मार्य सभा के धर्माधिकारी - डा० भवानी लाल भारतीय का आर्य जनता से निवेदन

आर्य समाज के धार्मिक और सैद्धान्तिक वाद-विवादो का निर्णय करने तत्सम्बन्धी उपयोगी परामर्श देने तथा वेद विरुद्ध प्रचार का प्रतिरोध करने की दृष्टि से कई वर्ष पूर्व सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे आर्य धर्मार्य सभा का गठन किया गया था। विगत मे महान आर्य विद्वान तथा शास्त्रज्ञ पण्डित इसके अधिकारी तथा सभासद रहे। स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, प० बुद्धदेव विद्यालकार, प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड आचार्य विश्वश्रवा, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री जैसे आर्य जगत के मूर्धन्य आर्य विद्वान विगत मे आर्य धर्मार्य सभा का नेतृत्व और मार्गदर्शन करते रहे। गत दिनो सार्व० सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने मुझे धर्माधिकारी का पद सौपकर आदेश दिया है कि सैद्धान्तिक समस्याओ के निराकरण तथा तत्सदृश अन्य प्रश्नो पर धर्मार्य सभा आर्य समाज का मार्गदर्शन करे और मैं इस कार्य के सयोजन मे अपना योगदान करू।

स्वामी जी महाराज का आदेश प्रकाशित होने पर आर्यसमाज के विभिन्न गण्यमान्य विद्वानो ने मुझे बधाई दी है तथा आशा रखी है कि मैं इस कार्य का सम्यक् रूप से निर्वाह करूंगा। धर्मार्य सभा के विधान और आर्य प्रक्रिया का मै अध्ययन कर रहा हू किन्तु इस विज्ञप्ति के द्वारा आर्य जगत से अनुरोध करता हू कि वह अपनी कोई सैद्धान्तिक समस्या या कठिनाई से मुझे अवगत कराए ताकि आर्य पत्रो के माध्यम से उसका निराकरण किया जा सके। मैं स्वकर्तव्य पालन मे अपने अग्रज विद्वानो के आशीर्वाद तथा अन्यो की शुभकामना की अपेक्षा रखता हू।

— भवानीलाल भारतीय
८।४२३ नन्दनवन, जोधपुर-३४२००८

आर्यसमाज कृष्णानगर के पूर्व प्रधान चौ० खानचन्द जी का देहावसान

गताक मे चौ० खानचन्द जी के देहावसान का समाचार पृष्ठ ३ पर छपा था जिसमे भूल से चौ० थानसिंह छप गया था। यह प्रेस की गलती से हुआ। इसका हमे खेद है।

सम्पादक

नवलखा महल उदयपुर के समर्पण के अवसर पर विशाल आर्य सम्मेलन

दिनाक २८, २९ नवम्बर ९२ को

सभी आर्य सज्जनो को यह जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उदयपुर स्थित जिस भवन मे बैठकर अपना अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" लिखा था, महर्षि की वह कर्म भूमि-आर्यो का गौरव स्थान "नवलखा महल" राजस्थान सरकार ने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को दे दिया है। आर्य-समाज इस पवित्र स्थल को महर्षि की पावन स्मृति मे भव्य स्मारक बनाने के लिए कृत सकल्प है।

इस अवसर पर दो दिवसीय विशाल आर्य सम्मेलन करने का निर्णय लिया है जिसमे देश विदेश से हजारो की सख्या मे आर्यजन भाग लेंगे। राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोसिंह शेखावत, २९ नवम्बर को इस भवन के सम्पूर्ण कागजात एव चाबी आर्य समाज को सौंपेंगे। इस पुनीत अवसर पर अधिकाधिक सख्या मे पहुचे तथा इसकी सफलता के लिए आर्थिक सहयोग देकर पुण्य लाभ उठावें।

मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

सम्पादकीय

बाबरी मस्जिद पृथक निर्माण के लिए १ करोड़ रुपए देने की पेशकश ?

यह हुई विजयादशमी पर राम की विजय

बडे दिनो से सुन रहे थे कि बाबरी मस्जिद यहा से हटा दी जाय और मस्जिद अलग से बनवा देंगे। यह समाचार पजाब केसरी मे पढकर मेरी बुद्धि ठिकाने पर लग गई कि विहिप मस्जिद बनाने के लिए एक करोड रुपया देने की पेशकश कर रहा है।

पिछले दिनो कुछ मुस्लिम सस्थाओ की ओर से भी यह माग हुई थी कि हम पृथक मस्जिद निर्माण के लिए तैयार है।

यह हुई न बात—प्याज भी खाई और पचास जूत भी खाये।

प्रधानमन्त्री जी की राय (आग्रह) पर विहिप एव बाबरी समिति की होने जा रही टेबल वार्त्ता मे विहिप एव सन्तो की ओर से जो फार्मूला पेश कर नीति तय की गई है उसमे मस्जिद के ढाचे को अयोध्या से करीब दस किलोमीटर दूर "सहनवा" ग्राम मे हस्तान्तरित करने तथा वहा नई बाबरी मस्जिद निर्माण हेतु एक करोड रुपया खर्च करने की पेशकश करेगी।

मजेदार बात यह है कि विशिष्ट सूचनानुसार राम के ठेकेदार भाजपा के राष्ट्रीय नताओ डा० मुरली मनोहर जोशी तथा अटल बिहारी वाजपेयी सहित पार्टी उच्चकमान ने भी इस समस्या के समाधान हेतु इस प्रस्ताव को हरा सिगनल दिखा दिया है।

गेद किसके पाले मे पडेगी यह तो समय बतायेगा। पर खोदा पहाड निकली चुहिया भी नहीं।

विहिप की सदभावना अच्छी रही। सहनवा ग्राम मे मस्जिद के निर्माण म [illegible] करने का प्रस्ताव भी अपनी ओर से रखकर सदभाव रखकर विहिप व भाजपा मामले का समाधान सद्भाव से चाहत हैं।

इन ठेकेदारो से पूछो ? कि तुम कौन होते हो हिन्दू जनता का एक करोड रुपया देकर एक नया 'ताजमहल मस्जिद बनवाने वाले मस्जिद हटनी चाहिए, बनवाने म सरकार जान या मुस्लिम समितिया। अभी तो पुराना ढाचा खडा है कब धराशायी हो जाये, पता नही।

परन्तु यह राम के ठेकेदार एक करोड देकर नये स्थान पर नयी मस्जिद बाबर के नाम पर बनाकर कौन सा श्रेय प्राप्त करेंगे।

यह सन्त भी क्या है इनके घर से क्या जायगा, इन्होने भी अपनी सहमति दे दी है। फिर मीरबाकी के वशज तुम्हारे कौन से रिश्तेदार है जो तुम उस मस्जिद क मुतवल्ली घोषित कराओगे।

बाबरी एक्शन कमेटी बाजी हाथ से निकलती देखकर जहा अपना दावा छोडने को तैयार हैं वहा हिन्दुओ को ढाचा भी सौपना नही चाहते हैं।

हर आदमी वाहवाही लेना चाहता है।

श्री कुलदीप नैय्यर के नतृत्व मे बुद्धिजीवियो की बनी कमेटी भी ऐक्शन कमेटी का ही पक्ष ले रही हैं।

साक्ष्यो को कौन देखता है प्रमाण सिद्ध बात है कि भारत मे एक-दो नही सैकडो धर्म स्थानो को तोडकर उसी मलब और पत्थरो को जोडकर मस्जिदे बनाई गई हैं।

विश्वनाथ के मन्दिर को तोडकर मस्जिद बनी तो उसके पीछे का मन्दिर द्वार आज भी प्रमाण के लिये साक्षी है। धर्म स्थल तीर्थ स्थानो को ही क्यो ले, चप्पा-चप्पा धर्म स्थानो को तोडकर कब्रिस्तान बना दिये गये। यह मकबरे और मजार देश की धरती को मिटाने के लिए पर्याप्त हैं। भारत के इतिहास को चाटुकार इतिहासकार ही ऐसा बालब गलत प्रमाण देकर सिद्ध कर रहे है बाबरी मस्जिदो के सही प्रमाण।

एक प्रश्न है ?

विजयादशमी पर्व पर—राम ?

कौन से राम ? जो मर्यादा पुरुषोत्तम थ या वे जिनका राज्य रामराज्य आदश राज्य माना जाता था ? या उस राम की—

जिनके नाम पर आदमी आदमी के बीच दीवार खडी की जा रही है ? वस्तुत —

राम इन प्रश्नो से बहुत ऊपर है—राम अगर आज होते तो ?

विजयादशमी के अवसर पर यह प्रश्न पूछते भिन्न भिन्न वर्गों के सामान्य और विशिष्ट जनो से—

म० गाधी के राम यह दशरथ नन्दन नही वह राम थे जो विश्व मे रमे हुए थे। उसे ही भगवान माना और कहा—

आज राम को समझने पर—

दशरथ नन्दन राम की पादुकाओ के चरण वन्दन से नही उनके आदर्श मर्यादा भक्त वात्सल्य भ्रातृ व मातृप्रेम पिता की आज्ञा गुरुभक्ति शिक्षा प्राप्ति—

मानना ही दशमी पर विजय प्राप्ति है। आओ हम राम बनें—तब बोले श्रीराम ! की जय—

इन राम के ठेकेदारो से पूछो कि जब यही करना था तो इतने वर्षों से यह नौटकी क्यो रचाई जा रही थी और सैकडो व्यक्तियो की बलि क्यो चढाई गई। करोडो रुपया भी क्यो बर्बाद किया गया।

साक्षी के लिए नौटकी फिर इतिहासकार अब तक प्राप्त मूर्तियो व अन्य साक्ष्या का शोध करेंगे और सच्चाई प्रकट करेंगे।

ईट पत्थरो से क्या, आज यह मुसलमान हमारी पाच सौ सालो की मूर्खता का परिणाम है। वही भूल हम पुन दोहरा रहे है कश्मीर की घाटी मे आज एक भी हिन्दू नही है वहा के मन्दिरो का क्या बनेगा ? चाहे वहा नमाज अदा करे या कट्टी खाना बनाये।

भारत का पूर्वाचल भी खतरे मे हैं।

हमारी नेतागिरी रहनी चाहिये। घुसपैठिय बाहर से आते जाये और भारत पुन मुस्लिमस्तान बन जाये।

आज देश खतरे मे हैं और हम राजनीति की गोटी सेंक रहे हैं। सदभाव के भावो ने देश को मिट्टी मे मिला दिया है।

स्वामी दयानन्द ने कहा था कि 'सबसे प्रीतिपूर्वक और धर्म के अनुसार यथा योग्य व्यवहार ?' तुम तो गद्दी सत्ता पा जाओगे पर देश का क्या बनेगा।

अब राम पर रावण की विजय हो रही है।

स्वतन्त्रता सेनानी स्व० भवानी दयाल सन्यासी पर डाक टिकट निकालने की मांग

दिल्ली २२ सितम्बर। दिल्ली की प्रमुख आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली म आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान श्री एम० रामभरोस की अध्यक्षता मे स्व० स्वामी भवानी दयाल सन्यासी की जन्म शताब्दी मनाई गई। साथ ही स्व० लाला दीवानचन्द जी का १०८वा जन्म दिवस भी सम्पन्न हुआ।

विशाल सभा मे दक्षिण अफ्रीका मे वेद तथा वैदिक धम की पताका फहराने वाले महान् स्वतन्त्रता सेनानी, वैदिक सस्कृति, भारतीयता तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित स्व० भवानी दयाल सन्यासी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु भारत सरकार से माग की गई कि उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर सरकार विशेष डाक टिकट जारी करे और उनके जीवन पर डाक्यूमेण्टरी फिल्म का निर्माण तथा उनके द्वारा रचित समस्त साहित्य का प्रकाशन सरकार द्वारा किया जाय।

इस अवसर पर बाबू सोमनाथ मरवाह, श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल श्री मूलचन्द गुप्त न भी अपने-अपने विचार प्रकट किए।

श्रीराम का सन्देश

डा० महेश विद्यालंकार शालीमार बाग

श्रीराम भारतीय सस्कृति के ऐसे वटवृक्ष है, जिनकी छाया मे मानव युग-युग तक जीवन की प्रेरणा और उपदेश लेता रहेगा। जब तक श्रीराम जन-जन मे जीवित है तब तक भारतीय सस्कृति के मूल तत्व अजर, अमर रहेगे। राम भारतीय जन-जीवन मे धर्म भावना के प्रतीक है। उनमे मानवोचित और देवोचित गुण थे। इसीलिए वे "मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। कोटि कोटि जनमानस के वे प्रात स्मरणीय एव वन्दनीय हैं। उनका जीवन चरित्र भारत की सीमाओ को लाघकर विदेशियो के लिए शान्ति प्रेरणा और नवजीवन दायक बनता जा रहा है। आज शिक्षित अशिक्षित सभी उठते बैठते, सोते जागते राम का नाम लकर अपनी धार्मिक भावना प्रकट करते है। श्रीराम का यहा तक महत्त्व है कि शव को श्मशान भूमि तक ले जाते समय भी उनके नाम का उच्चारण किया जाता है। वे धर्म के साक्षात स्वरूप हैं। धर्म के किसी अग को देखना हे तो राम का जीवन देख लो। धर्म की असली पहिचान हो जायेगी। धर्म की पूर्णता उनके जीवन मे आद्यन्त घटित हुई है। राम जैसा चरित नायक आज तक धरती पर नही आया। श्रीराम एक आदर्श महामानव थ। उन्होंने लौकिक धरातल पर स्थित रहकर, धर्म मर्यादा का पालन करते हुए, मानव को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, अन्याय से न्याय की ओर चलने की प्रेरणा दी है। कर्तव्य की वेदी पर अपने व्यक्तिगत सुख-प्रलोभना की आहुति राम की जीवन कहानी का सार है।

ससार मे महापुरुष अपने जीवन गुण, कर्म, स्वभाव, कर्त्तव्य बुद्धि, तप-त्याग और तपस्या से जो अमर जीवन सन्देश देत है। वही मानवता की स्थायी धरोहर होती है। हमारा सौभाग्य है कि हम ऐसे दैवीय गुणो के धनी मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र की सन्तानहै। प्रतिवर्ष रामनवमी और विजयादशमी का पर्व मानते हैं। किन्तु उनके आदर्श चरित्र से जीवन, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए कोई प्रेरणा सन्देश एव सकल्प नही लेते हैं। उनकी शिक्षाए, आदर्श तथा जीवन मूल्य, आज जगत जीवन मे व्याप्त दुख, चिन्ता अतृप्ति, असन्तोष, सघर्ष, वैर विरोध आदि का सुन्दर समाधान दे सकते हैं। श्रीराम का प्रेरक चरित्र भूली भटकी मानव जाति को नवजीवन चेतना का सचार कर सकता है। उनके जीवन की घटनाए आज के भोगी विलासी मानवता का गला घोटने वाले, नामधारी मनुष्य को बहुत कुछ सोचने, करने और जीने की प्रेरणा दे सकती है। उनके जीवन के प्रत्येक क्रिया-कलाप से अमर सन्देश मिलता है।

श्रीराम के द्वारा दर्शित आदर्शों एव जीवन मूल्यो का भारतीय समाज मे बहुत ऊचा स्थान है। किन्तु दुर्भाग्य इस हिन्दू जाति का जो राम जैसे आदर्श चरित्र का विकृत भौंडा और भद्दा प्रदर्शन रामलीलाओ पिक्चरो एव नाटको मे प्रदर्शित कराके अपना गौरव समझ रही है। आज राम के सच्चे आदर्शों एव मान्यताओ की ससार को महती आवश्यकता है। तभी मानव समाज मे सुख शान्ति तथा प्रसन्नता आ सकती है। यदि हम सबक लेना चाहे तो रामायण की प्रत्येक घटना से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। उदाहरण के लिये कुछ घटनाओ का सक्षेप सकेत दे रहा हू। राम के राज्याभिषेक मे मूल विघ्न कैकेयी थी। कैकेयी की सलाहकार मन्थरा थी। कैकेयी की सोच स्वार्थ भावना से प्रेरित थी। इस घटना से हमे प्रेरणा मिलती है कि बुरे विचार वाले, कुसस्कारी पापी अधर्मात्मा, कामी क्रोधी लोभी व्यक्तियो का साथ सदा दुखदायी और पतन का कारण बनता है। कैकेयी ने अपना परिवार छिन्न-भिन्न किया। सुहाग नष्ट किया, जगत मे अपयश लिया। आज मानव को अच्छे विचार और अच्छी सगति न मिलने के कारण आज का मनुष्य दुख चिन्ता और अशान्ति मे घिरा है। सीता का राम के साथ वन जाना। ससार के इतिहास मे एक नया अध्याय जोड देता है। वनवास राम को मिला था, सीता को नही। नारी की परीक्षा सम्पत्ति म नही विपत्ति मे होती है। भोग विलास श्रृगार मे फसी नारी को सीता का चरित्र युग युग तक प्रकाश और जीवन दे सकता है। आज नारी अपने मूल धर्म और स्वरूप से हट रही है। इसी कारण अनेक दुख व वेदना देने वाली अनेक समस्याए हमारे सामने आ रही हैं। लक्ष्मण का राम के साथ वन-गमन करना, भरत का राज्य को ठुकराना, पादुका रखकर शासन-व्यवस्था चलाना, परस्पर भाइयो की प्रीति का श्रेष्ठ उदाहरण है। आज भाई भाई एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो रहे हैं। परिवार परस्पर की कलह के कारण टूट रहे है। सर्वत्र स्वार्थ अहकार और अकेले भोगने की भावना उद्दाम हो रही है। रामायण हमे शिक्षा देती है कि नश्वर सुख-भोग और धन-धाम धरा के लिए परस्पर लडो नही। पद सम्मान एव कुर्सी के पीछे अपने धर्म-कर्त्तव्य न्याय और सत्य के मार्ग को मत छोडो। परस्पर प्रेम त्याग व सहयोग से उन्नति करो।

चित्रकूट प्रवास-काल मे शूर्पणखा का श्रीराम को अपनी ओर आकर्षित करना, विवाह का प्रस्ताव रखना। राम का दृढता से प्रताडित करना, प्रेरणा देता है कि यदि जीवन को सुखी, शान्तिमय बनाना है तो एक पत्नीव्रत का आचरण करना चाहिए। आज के सभ्य समाज मे भोग-विलास और परस्त्री भोग का रोग तेजी से फैल रहा है। आए दिन अखबारो मे घटनाए आती है, परस्त्री भोग के कारण उसे जीवन से हाथ धोना पडा। न बुझने वाली भोग और काम वासना की आग से न जाने कितने परिवार व्यक्ति, जल चुके है। राम हमे सन्देश देते हैं कि एक पत्नी व्रत बनकर कामवासना को धीरे धीरे सयमित करने मे ही मानव का कल्याण निहित है।

स्वर्णमृग को देखकर सीता का उसे पाने की इच्छा करना। राम का मायावी मृग को पाने के लिए पीछे दौडना, सीता का हरण हो जाना। यह घटना आज के जीवन प्रसगो को बहुत कुछ प्रेरणा दे सकती है। आज का मनुष्य धन की मृगतृष्णा के पीछे पागलो की तरह दौडा जा रहा है। जो प्राप्य है उससे सन्तुष्ट नही हो पा रहा है। विज्ञान की चमकीली, भडकीली, दिखावटी, बनावटी चीजो के पीछे दिन-रात अधर्म-असत्य, छल-प्रपच का सहारा लेकर दौडा जा रहा है। इससे हानि यह हुई है कि आत्मारूपी सीता छिन गई है। भौतिकवादी व्यक्ति सिर्फ शरीर के लिए जीने लगा है। इसी मृग तृष्णा मे जीवन का अन्त कर लेता है। रामायण कहती है दुनिया मे आखे खोलकर चलो। सभी चमकने वाली चीजे सोना नही होती है। चमक दमक मे व्यक्ति हमेशा धोखा खाता है। इसी धोखे मे सीता का रावण द्वारा हरण होता है। राम रावण का निर्णायक युद्ध चलता है।

रामायण की शिक्षा रही है जो पर नारी पर दृष्टि रखता है। उसका रावण की तरह विनाश हो जाता है। जो मनुष्य अपनी इन्द्रियो को अपने वश मे नही रखता। यदि इन्द्रिया मालिक बन गई तो "दशहरा" दस इन्द्रिया द्वारा हरा जाने वाला रावण बनकर विनाश को प्राप्त होता है। आज समाज मे गली गली नगर नगर, घर घर, रावण बढ और पल रहे हैं। हमारे मनो मे भी रावण बस रहा है। हमारे चेहरो पर अतृप्ति वासना और कामुकता का डेरा है। रोज न जाने कितनी सीताओ का भगाना, उठाना, चुराना, और बलात्कार हो रहे है? क्या हमने यही रामायण और राम से सीखा है? यदि सीखना है तो रामायण और रामलीला से सीखो, चरित्र निर्माण, विचारो की उच्चता भावो की शुद्धता पवित्रता तथा जीवन को धर्म-मर्यादा एव उच्चादर्शों की ओर ले चलना।

आज के मानव समाज मे रावण वृत्ति बडी तेजी से फैल रही है। मानव दानव बनकर मास, मदिरा, परस्त्री गमन, छल-प्रपच अधर्म आदि बुराईयो को जीवन का अग बनाता जा रहा है। किन्तु भूल रहा है कि गलत आचरण और मान्यताओ का अन्त रावण की तरह होता है। अन्याय, अधर्म असत, राक्षसभाव आदि पहले तो रावण की तरह फलते-फूलते है। किन्तु अन्त मे समूल ही नष्ट हो जाते हैं। रावण के चरित्र पतन से आज के मानव को शिक्षा लेनी चाहिए। हमारा खान पान आचरण, जीविका और विचार चिन्तन शुद्ध पवित्र और धार्मिक होना चाहिए।

सक्षेप मे राम और रामायण का अमर जीवन सन्देश आज के भूले भटके राक्षसवृत्ति मे फसे मानव समाज को यही है कि अपने जीवन को पवित्र और सुन्दर बनाओ। खान-पान, रहन सहन मैं सादगी, सरसता और सात्विकता लाओ। परमात्मा की सत्ता पर विश्वास करके, उसके बताये मार्ग पर चलकर मानव जीवन को सफल बनाओ।

आर्य वानर और राक्षस संस्कृति

—क्षितीश वेदालंकार

बाल्मीकि रामायण को पढने से पता लगता है कि उस समय आर्यावर्त मे तीन प्रकार की सस्कृतिया विद्यमान थी—आय वानर और राक्षस सस्कृति। इन तीनो की जहा अपनी-अपनी विशेषताए है वहा इनमे कुछ अन्तर भी है आय सस्कृति के सबसे उत्तम प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम है तो वानर (वनवासी) सस्कृति के प्रतीक हनुमान बाली और सुग्रीव हैं तथा राक्षस सस्कृति के प्रतीक लकापति रावण हैं।

श्री राम के लिए कहा गया है— रामो विग्रहवान धम राम साक्षात शरीर धारी धम (नतिकता की मर्यादा) है। राम कितने स्थित प्रज्ञ है इसका वणन भी स्वय बाल्मीकि ने कर दिया है वे कहते है—

आहूतस्याभिषकाय ह्य् सष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रम ॥

जब राम को राज्याभिषक के लिए बुलाया गया और जब राम को १४ वष के बनवास के लिए कहा गया तब इन दोना सवथा विपरीत पारस्थितियो म मैन राम के चेहरे पर जरा सी सिकन तक नही देखी। सुख दु ख समेकृत्वा लाभालाभो जयाजयौ गीता मे स्थित प्रज्ञ के लक्षणो मे यही तो कहा गया है कि सुख और दु ख तथा लाभ और हानि मे स्थित प्रज्ञ अपने मन का सतुलन नही खोता। इसी का नाम तो मर्यादा है मर्यादाओ के पालन मे तथा नैतिकता के आदश को निभाने मे राम और उनके भाइया तथा पत्नी ने जो आदश उपस्थित किया है उसकी तुलना ससार के इतिहास मे नही है।

राम का समस्त व्यक्तित्व ऋषियो के द्वारा साचे मे ढाला गया है। पहले महर्षि वशिष्ठ ने गुरुकुल म शास्त्र शिक्षा दी उसके बाद महर्षि विश्वामित्र ने शस्त्र विद्या सिखाई और उसके बाद वनवास के समय महर्षि अगस्त्य न उन्हे राक्षसा के विनाश क लिए तयार किया।

इसीलिये हम देखते हैं कि आय सस्कृति मे सवत्र आश्रमो की प्रचुरता है और ऋषियो का वचस्व है। ऋषि लोग जसा उचित समझते है उसी दिशा म समाज को चलने की प्र रणा दत ह और वही आय सस्कृति का व्यावहारिक रूप बनता चला जाता है इस आय म त म वद दि आय शास्त्रा म णित माननाय उन्नात के उपदेशो को क्रियान्वित करने की परम्परा है

वान सस्कृति म आ श्रमो का सवथा अभाव है हालाकि वनादि त व भी पन्न राम का हनमान म प म भट हान त राम व कार किय क बना वद और अ य प वो ना की वाणी नी बोल सकता। परन्तु वान स कृ त मे वाली अपन भा सुग्रीव को पत्नी को उससे छीनकर अपनी प नी बना लता औ व ला क मारे जा क प चा सुग्रीव अपनी पत्नी तारा के साथ वाली की का भ अपनी पत्नी ना लेता है। इसका अथ यह हुआ कि वान स त म न ता एक पत्नीव्रत का आदश है और न ही सदाचार के नियमो का वसा पालन है जसा आ य स कृ त मे दिखाई देता है

न जाति जिस ऋष्यमूक पवत पर ह वही ऋष्यमूक मुगलकाल मे आकर बिजयनगर साम्राज्य की राजधानी बना पत्रकारो के साथ यात्रा म इस विजयनगर साम्राज्य क वारह मील की दरी तक फले अवशेषा को हमन अपनी आखो स देखा है यह विजयनगर साम्राज्य हालाक चा तरफ सात मुगल राज्या से घिरा था पर अपने समय म बडा समृद्ध राज्य था और उसके व्यापारिक सम्ब ध तत्कालान पुतगाल आदि यरोपीय देशो के साथ थे। अब भी विजयनगर साम्राज्य के अवशेष के रूप म वहा कई चीज विद्यमान हैं जिन्हे देखकर उस समय के वैभव की कल्पना की जा सकती है। उदाहरण के लिए उस समय क महल तथा अन्य राजसी इमारत विद्यमान है जो उस वभव के साक्षी हैं। वानर सस्कृति के अवशेष के रूप मे वहा अभी तक पम्प सर मौजूद हैं।

राक्षस संस्कृति आय सस्कृति और वानर सस्कृति से भिन्न है। वानर सस्कृति की तरह लका मे भी आश्रमो का सवथा अभाव है। रावण के मन म यद्यपि वेदो के प्रति आदर है और वह वेद का पडित भी है कहा जाता है कि सबसे पहल वेद भाष्य की परम्परा रावण ने ही प्रारम्भ की थी।

हम इससे पहल यह कल्ना भल गय हैं कि विजय नगर साम्राज्य के अधिपति कृष्णदेव राय मन्त्री सायण और विद्यारण्य थ। कुछ लोग कहत है कि ये दोनो भाई भाई थे और अन्य कहते है कि ये दोना एक ही व्यक्ति के नाम हैं। वदो का अध्ययन करन वाल जानत है कि सायण का भाष्य आज भी उपलब्ध है और पाश्चात्य वेदविदो ने जिनम मक्समूलर ग्रिफिथ और मक्डानल आदि मुख्य ह अग्रजी मे वेदो का भाष्य करते हुए सायण के वेद भाष्य को ही अपना आधार बनाया था सायण का वेद भाष्य जहा यज्ञपरक है वहा उसके समय मे प्रचलित अश्वमेधादिक यज्ञा की पौराणिक परम्परा का भी पोषक है, चाहे वह आधु नक विद्वाना को कितना ही वीभ स क्यो न प्रतीत हो। अन्त म विजयनगर साम्राज्य के चारो ओर घिरे मुस्लिम राज्यो न मिलकर कृष्णदेव राय के इस वभवशाली राज्य को नष्ट कर दिया।

रावण वेद का विद्वान होन पर भी उसके सवथा विपरीत आचरण करता है। वह पर स्त्रियो का अपहरण करता है। सती सीता का अपहरण करने मे भी उसकी यही प्रवत्ति उजागर हुई है। लका मे आश्रमा का तो नाम है ही नही वहा आय सस्कृति के तप त्याग और सयम प्रधान जीवन मे को भी कोई स्थान नही है। आय सस्कृति सतोगुण प्रधान है ता राक्षस सस्कृति तमोगुण प्रधान है। उसके लिए अनतिक काय अनुचित नही है। इसलिय आय सस्कृति के प्रतीक और धम की मयादाओ को पालन करन वाले श्रीराम को उसे मारन के लिए बाध्य होना पडा। आखिर सज्जनो की रक्षा और दुजना का विनाश यही ता धम है। परित्राणाय च साधुनाम विनाशाय च दुष्कृताम गीता क इस कथन के अनुसार सज्जना का परित्राण और दुजनो का बिनाश धम नही तो क्या है रावण आधुनिक उपभोक्तावादी और बलासितापूण सस्कृति का प्रतीक है और खाओ पीओ मौज उडाओ की जीवन पद्धति को उचित मानता है जबकि आय सस्कृति जीवन को ब्रह्मचय गहस्थ वानप्रस्थ और सन्यास इन चार आश्रमो क द्वारा जीवन मे तप त्याग सयम और परोपकार को महत्व देती है

शेष पृष्ठ १० पर

आर्य समाज और अयोध्या मन्दिर (२)

म स्जिद न र ?

सन १९४९ से इस तथाक त म स्जद म न्यायालय क आदेश पर राम लला आद की मूर्तिया र नी ह है और नरन्तर उनकी नियमानसार पूजा अचना होती है। यह भी सवसम्मत तथ्य है क इस भवन मे लगभग एक सदी से नमाज आदि नही पढी गई ऐसा स्थिति म इस मस्जिद कहना स्वय अपने आप मे एक सव ा नराधा और उपहास्पद बात है इसलए जब धम नि पक्षता के आधार पर मस्जिद के रूप मे म नाचे की सुर ना की बात कही जाती है तो उसके पीछ कोई तथ्यात्मक आधार नहा है ब कि केवल क ज नाति है दुर्भाग्य की बात तो यह ह क इस पष्ठभूमि मे स्लम दाय के कट्टर प ा लोगो को इस न म त के आधार पर समझाने के स्थान म उन्ह उकसा ा का काय और वह भी क थत बु द्धवादी ग मुसलमान करत है जो अपन को धम निरप ता क समथक कहत है

मु म ा के ा न

पाकिस्तान और यह क कि अब जसे कट्टरप थी मुस्लिम देशा म क देसा म ज सडक चौड करा द के ह मे एक ान से हटाकर द स थ न प तर गई है न नय मत रूप स नमाज पढने के म आती ो जब ब ा मस्जिद नामक म के सहा अ ों म म स्जद नहा वहा जा स न जमा य या या मसर क य म भी मी का के ह म ण जब इन अ क व न मे वहा पा ा च चव ान न म यु क बाद ब पौल स्वतन्त्र हुआ तो उन्होने इस चच को म ल नष्ट कर दिया क वह पौल प स्म आक्रमण और आ धपत्य का तीक ा जसा बाबरी म जद ा भवन वदेशी बाबर द्वारा भारत पर आक्रमण का प्रतीक है ऐसी त म न के न प्रयव हू ब ल्क देशभक्त मुसलमान को भी इस विदेशी दासत और धर्मा धता के अवशष वा हटाय जाने का समथन करना चाहिये।

हिन्दू म म र प्र

सभवत भारत ही एक म श है जहा राष्ट्रीय एकता का आधार भिन्न धर्मो के अनुयायियों की एकता पर निभर समझा जाता है यही कारण है क अन्य देशा के सम न इस देश के त्र सी भारतीय या हिन्दुस्तानी क यह कहने के थान र स व हिन्दू मु स्लिम सिक्ख ईसाई सब एक है ऐसा कहते हैं और इस ार एकता की भावना क प्रदर्शित करन के लिए सदा इन धमा की भिन्न आ ा स्मरण कराते है म देश म रहने वाल अ धकाश सनमान क मस्त म यह धारणा ह कि व दश भागा ल क एकता के ान म अपनी धार्मिक एकता को अपन राष्ट्रीयता का आधार मानन है प र ा वरूप उनके लिए पाकिस्तान तथा अ य म स्ल म देशो के धमब धु उनके नक कट है। व तत इसा आधार पर दो राष्ट्र के सिद्धान्त की रहा द लश का वभाजन किया गया है ह म म ता और धम न रप ता क समझता ी यह स यत ही ह क पाकि तान क निर्माण क ब द स रहन वाले सब मुसलमान अब धम न प ता मे विश्वास करत है ज ारत को ही अपनी जन्मभू म और मातभू म समझत है यदि ऐसा है तो रामजन्म भू म स ा वतमान ववाद एक ऐस अवसर ा जिस पर वे इस मा यता वा स कर सकत थ विशेषकर सलिए क यह स्थान वास्त क अ म म जद न होकर केवल एक वदेशी आक्रमण का प्रतीक मात्र है सलक न देश क मसलमाना वा भी वही दृष्टकोण होना चाहिय था जो हिन्दुआ का है

ट य का ा ता

प्रसिद्ध इतिहासक आनल्ड टायनबी ने अपने आजाद स्मृत व्याख्यान मे इसलिए यह कहा था क जहा रूस और पोलण्ड के लोगो ने विदेशी आक्रामक रूस के स्मृति चिन्ह को हटाकर अपन देशाभिमान का प्रमाण दिया वहीं इस देश के निवासी अभी तक औरगजेब आदि द्वारा मन्दिर तोड़कर बनाई गई म स्जदो को यथावत बन ये रखकर अपनी तथाकथित उदारता ा निबलता का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

ह समाज के हित म आय सम ज का भी हित है किन्तु हिन्दू धम म उसका विलय होना दोनो के लिए अहितकर है।

लाला लाजपतराय

धर्म या देश—

इ लाम के अनसार उसके अनुयायियो की पहली निष्ठा उसके धम के त होना चाहिय न क ज मभू म या देश के त। भारत का विभाजन और पाकिस्तान की थापना इसका पष्ट उद हरण है किन्तु जब राम ज म भू म औ बाबर मस्जिद क ववाद म छ भारतीय मुस्लिम नेता धम न प ता की दुहाई देत हैं तो उनका वा प व श्वास करना कसे सम्भव है।

ीर का उदाहरण—

इसी प्रकार यह देखकर भी आश्चय होता है कि कस उत्तरदायी भा तीय मु लम नता न कश्मीर म हि म दरो के विध्वस तथा वहा क प्राय सब ह दुओ के निष्कासन पर किसी प्रकार का विरोध या आन्दोलन करन का अपन मुस्लिम अनुयायियो क आहवान नहीं किया य द उनकी म नरप ता म नष्ठा होती तो इसका उस अपन ही देश के राज्य मे धम त न म पर होन वाली इस प्रकार की नदम वपूण घटनाओ का वसा ही विरोध न जसा अयोध्या क प्र न पर क ह ।

म न मोर र ि र —

न केवल गत हजार वष का इतिहास वरन आधुनिक तिह स भी म बात ा स है कि जिस म ममलमान का बहुमत या राज्य है वहा म निरपेक्षत क अप ा ममन न क वहा धामा य ा स्लामी ा यत क व ा उदाहरण के लए अभी दुब म भारतीय ने एक नाटक क न यह प्रदर्शित करन का प्रयत्न किया कि सब धर्मो के अनय ा मान है परिणामस्वरूप नाटक म भाग लेन वाले १ प्रमुख भारतीय स्ल अपमान करन का मुकदमा चल रहा है जिसम दोषी म बत हो मृ युदण्ड तक द ा सकता है इसी ओर जम है म मसलम न म ध म है व वहा म निरपेक्षता का दुहाई देत है और वह भी सलि क म निरपेक्षता के नाम पर वे अपनी भिन्न इस्लामी पहचान बनाय स न ा अ पस ख्यक होने के नाते कुछ विशष अधि क भी प्राप्त कर म जो ा क मत के लोगो तक को प्राप्त नहीं है

——दत्तात्रेय बले

धान आय समाज अजमेर

वैदिक विद्वान् पं० सत्यव्रत विद्यालंकार नहीं रहे

—क्षितीश वेदालंकार

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा—ससार का सबसे बडा आश्चय क्या है ? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया—

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीह यमालयम ।
शेषा स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यमत परम् ।

काल का चक्र ही ऐसा है कि रोज प्राणी ससार म विदा होते हैं फिर भी मनुष्य का जिजी वषा इतनी प्रबल है कि वह मृत्यु की छाती पर पाव रखकर भी जीने की इच्छा करता रहता है। काल का चक्र यद्यपि किसी को नही छोडता न योगियो को, न म त महात्माओं को न राजाओ को और न बड से बड अपने समय के महान राजनैतिक नेताओ को। एक दिन सबको जाना ही होता है। धीरे धीरे सब स्मृति शेष होते जाते हैं।

सव यस्य वशादगात् स्मृति पथ कालाय तस्मै नम ।

अनेक पुरस्कारो स आदृत और राष्ट्र विद्वान के रूप मे सम्मानित अपन जीवन मे लगभग साठ ग्रन्थो के रचयिता वैदिक विद्वान् श्री प० सत्यव्रत सिद्धातालकार भी अब स्मृति शेष हो गये। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने गुरुकुल म जिन स्नातको को अपने उपदेशो और अपने आचरण मे एक खास साच मे ढाल कर तैयार किया था। उन स्नातको की पीढा का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र प० सत्यव्रत सिद्धातालकार के रूप मे इसी १३ सितम्बर को अस्त हो गया।

सत्यव्रत जी अपने जीवन के अ तिम क्षणो तक जिस प्रकार सक्रिय रहे उसे देखकर उनकी काय क्षमता पर आश्चय होता है। उनके अ दर एक आग थी जा दिन रात उनको कुछ न कुछ लिखने और करन के लिये प्र रित करती रहती थी अपने देह विलय के कुछ समय पूव तक भी व जनन म क्रय रह वह आश्चय जनक है उ होने होम्योपथी पर पुस्तक लिखी जा सारे देश मे समादृत हुई। उन्होंने मनोविज्ञान और समाज विज्ञान पर हि दा में स्तरीय पुस्तक लखा जबकि लोग यह समझा करत थे कि इन विषयो का पुस्तक तो कवल अग्र जी मे हा लिखा जा सकता हैं सत्यव्रत जी का जीवन बहुआयामा था वे हि दी सस्कृत और अग्रजी तीनो के समान रूप स लेखक और वक्ता थ। उ होने अग्रजी मे अपनी जीवनी भी लिखी थी जो डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति स प्रकाशित हुई थी। ऊपर हमने उनके अन्दर की जिस आग का उल्लेख किया है उसका आभास स्वय उन्होने अपने उपनिषद प्रकाश नवग्र थ की भू मका म किया है। उस भूमिका के अ तम अनुच्छेद मे वे लिखते ह— मैंन अभी तक वैदिक स हित्य पर बहुत कुछ लखा है अब मैं जीवन के ८३ वष पूरे कर ८४व वष मे प्रवेश कर रहा हू। कौन ज नता है जीवन कितना शेष है। साचता हू जितना समझा है जाना है, उसे मानव समाज के हित के लिये पाछे छोड ज ऊ किसका काम पूरा हुआ है पर फिर भी रात रात जागकर जो कुछ अधूरा है उसे पूरा करने का चेष्टा मे लगा हू य पक्तिया भ मैं रात के बारह बजे लिख र ा हू। जिस भावना से मेरी लेखनी को विराम नही मिलता उस एक काव ने बड मार्मिक शब्दो मे रख दिया है—

शमा क मा न द जला रहा हू जि दगी।
बुझ ता जाऊगा पर सुबह तो कर हो ज ऊगा ।

—स व्रत सिद्धातालकार २४ १ १९८१

इसस पहले ८० वष का आयु मे उ होने बु प म जवानी का ओर नामक पुस्तक लिखी थी जिसमे उ होने अपने द र्घायु होने के अनुभवो के आधार पर अपने घषण सिद्धात का प्रतिपादन किया था इस सद्धान का अ भप्राय यह था कि अपने शरीर के प्रत्येक अग को कम स कम १०० बार रगडा जाये तो उससे शरीर मे एक दम नई ताजगी भर जाती है

ऊपर हमने सन् १९८१ में लिखे एक वक्तव्य का उद्धरण दिया है परन्तु सत्यव्रत जो [redacted] के बाद भी ९७वें वर्ष की आयु तक जीवित रहे

अन्त मे हाल में ही दिवगत भारत के पूव उपराष्ट्रपति और प्रसिद्ध न्याय वेत्ता श्री हिदायतुल्ला के द्वारा दिये गये बजामिन फ्र कलिन के इस पद को उद्धृ त करना चाहते हैं—

It you would not be forgotton
As soon as you are dead and rottor

Eighter writer th g
worth read ng
or do things worth
wr ting

Benjamin Franklin



हमारे मित्र श्री दत्तात्र य नवारा न इस क वता का भी अनुवाद करक हमें भेज दिया है जो इस प्र क र है

न तुम नही चाहत म यु के ब द होना क्षीण
और विस्मृति क गहन गत म

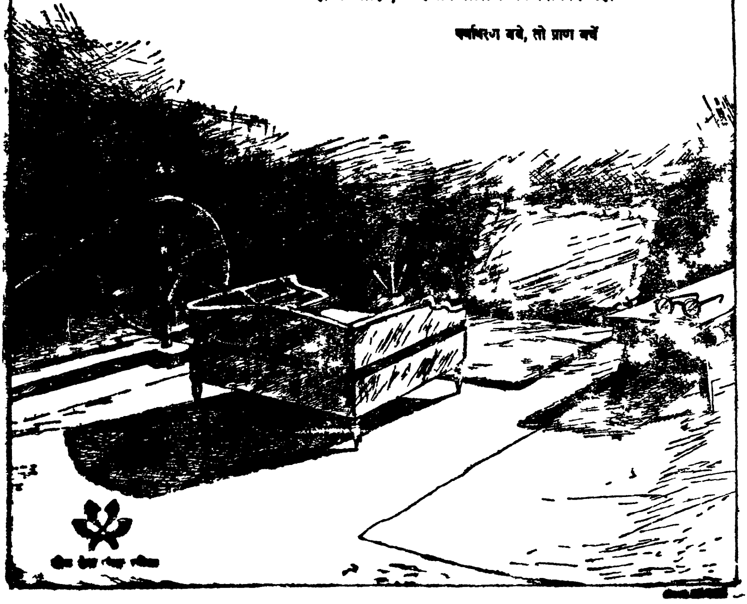
सत्यव्रत विद्यालकार

विलीन।

तो ऐसा कुछ लिखो जो हो पठनाय
या एसा करो जो हो लेखनीय ।।

प० सत्यव्रत जा पठनाय भा बहुत लख गए ह और इतना काय कर गये हैं कि आने वाली पीढ़ा न क मो को लेखनाय भी मानेगी। हमे ऐसे गुरु के शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जससे हम अपने आपको धन्य समझते हैं। तस्म श्री गुरवे नम अपने गुरु के चरणो मे श्रद्धा सहित नमन।

डी ८१ गुलमोहर पार्क नई दिल्ली



छात्रों का जबरन धर्मान्तरण कराने में लगे हैं इमानुल स्कूल के अधिकारी

जयपुर २८ सितम्बर। राजस्थान विधानसभा में आज भाजपा विधायक मदन दिलावर ने आरोप लगाया कि कोटा स्थित ईमानुल स्कूल के अधिकारी छात्रों को जबर्दस्ती धर्मान्तिरण कराने में लगे हुए हैं। श्री दिलावर ने अपने विशेष उल्लेख में पूरी घटना का उल्लेख किया है।

श्री दिलावर के अनुसार कोटा रेलवे स्टेशन क्षेत्र के पास स्थित ईमानुल स्कूल के अधिकारियों द्वारा श्री उमाशंकर पुत्र स्व० श्री बजरंगलाल मीणा, निवासी बागरस्या, तहसील सांगोद जिला कोटा इस ईसाई स्कूल की अनाथ बालकों को फ्री लिखाई-पढ़ाई भोजन इत्यादि की सेवा प्रशंसा सुनकर इस विद्यालय की कक्षा नवीं के बालक को बहला फुसला कर प्रवेश दिलवाया गया था। परन्तु प्रवेश के दूसरे ही दिन उक्त विद्यालय में कार्यरत एम०ए० थोमस/आंगस्टन छात्रावास अधीक्षक तथा थोमस के पुत्र श्याम् के द्वारा बालक को जबरदस्ती चर्च भेजने बाईबल पढ़ने प्रचार करने के लिए बालक को बाध्य किया गया, बालक के प्रतिकार करने पर उसको मुर्गा बनाकर जूतों-चप्पलों से पिटा नीच जाति के तेरे बाप तो हैं नहीं तुझे ईसाई धर्म स्वीकार करना पड़ेगा। उसके पश्चात भी बालक के द्वारा हनुमान चालीसा पढ़ने की जिद की तो उसकी हनुमान चालीसा की किताब फाड़कर श्यामू ने पेशाब किया।

उक्त बालक के बयान को पढते हुए श्री दिलावर ने कहा कि "मैं उमाशंकर मीणा आत्मज स्व० श्री बजरंग लाल मीणा निवासी ग्राम बगारस्या त० सांगोद का रहने वाला हूं। मेरे माता-पिता का बचपन में ही स्वर्गवास हो गया। मेरे आगे-पीछे कोई नहीं है। मेरी पढाई की इच्छा थी इस कारण लोगो ने मुझे बताया कि कोटा जंक्शन पर इमनुएल स्कूल जो ईसाईयों का है वहां पर मुफ्त पढ़ाई-लिखाई व रहने-खाने की व्यवस्था है। इस कारण मैं वहीं जाकर ७ जुलाई ९२ को भर्ती हो गया। प्रवेश के एक-दो दिन बाद से ही मुझे छात्रावास का एम०ए० थामस जो इस स्कूल का बड़ा अधिकारी है, ने छात्रावास के वार्डन आगस्टन से कहा कि चर्च ले जाकर बाईबल पढाया करो।

उसने मुझे दूसरे दिन से ही चर्च में भेजना चालू किया व बाईबल पढ़ाने का प्रयास किया। मैंने कहा कि मैं तो जाति से मीणा हूं व रोजाना हनुमान चालीसा पढता हूं तो उन्होंने मुझे मुर्गा बनाया तथा एम०ए० थामस आगस्टन ने मुझे जूते चप्पल से मारा तथा बाहर नहीं जाने दिया और कहा कि अब तू ईसाई है, मीणटा वीणटा कुछ नहीं। मैं डर की वजह से कुछ दिन तो चर्च जाने लगा परन्तु मुझे बार-बार हनुमान चालीसा पढ़ने की याद आती थी। तो एम०ए० थामस के लड़के श्यामू ने मेरे पास से हनुमान चालीसा निकाल कर फाड़ दी व उस पर मेरे सामने पेशाब करने लगा और कहा कि अब देखते हैं कि तेरे हनुमान जी क्या करते हैं। श्रीमान इस कारण से वह लोग मुझे एक ही समय का भोजन कराते तथा बाहर भी नहीं जाने देते और कहते कि जब तक तू बाइबल नहीं पढ़ेगा और चर्च नहीं जाएगा तब तक तुझे खाना पूरा नहीं दिया जाएगा और इसी प्रकार पीटा जाएगा। छात्रावास में मुझ जैसे अनेक बालक हैं एक बार मुझे पीटते हुए गणेन्द्र दाधीच व मनोज पुरी जो छात्रावास में आते रहते थे, ने भी देखा है।

फिर मैं चार सितम्बर को वहां से गुपचुप भाग कर आया तथा गांव जाकर मेरे मामा छीतरलाल जी को सारी घटना बताई तथा मुझे जब पीटते थे तो धमकी दी जाती थी कि यदि तूने किसी से यह बात कह दी तो तुझे इतनी दूर भेज देंगे कि तू वापस नहीं आ सकेगा। इस कारण श्रीमान वहां मेरी जान का खतरा है वहां मेरे जैसे अनेक बालक हैं जो डर के कारण बोलते नहीं हैं। यदि उन्हें एक माह तक खुला छोड दिया जाए तो वह सारी बात बता सकते हैं। यह लोग मेरी हत्या भी करवा सकते हैं। इसलिए रिपोर्ट दर्ज कर कानूनी कार्यवाही करने की कृपा करें।

श्री दिलावर ने कहा कि क्या इस स्वतन्त्र भारत मे अभी भी अनसूचित जाति, जनजाति के व्यक्तियों को डरा धमकाकर रोटी का प्रलोभन देकर क्या उनका धर्मान्तिरण कराया जाता रहेगा। श्री दिलावर ने कहा कि पिछले सत्र में भी इसी विधान सभा के सदन के सामने इस प्रकार कोटा से धर्मान्तरण का मुद्दा उठाया था जिसके सम्बन्ध में सरकार द्वारा इस प्रकार का जवाब दिया गया था कि कोटा या पूर्ण राजस्थान में कहीं पर भी प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन नहीं कराया जा रहा है।

श्री दिलावर ने कहा कि इस सम्बन्ध में मुकदमा २११/९२ थाना भीमगंज मण्डी जिला कोटा शहर में २४-९-९२ को दर्ज हुआ है सदन का एक सदस्य एवं अध्यक्ष सदन के बाहर जाकर बलपूर्वक धर्मान्तिरण करवानेकी कोशिश की उस बालक से प्रत्यक्षरूप से बात कर सकते हैं। धर्मान्तिरण परिवर्तन नहीं करने पर उक्त बालक पर अमानवीय अत्याचार किए गए एवं अभी उक्त बालक को डर है कि उसकी हत्या कर दी जाएगी।

ब्रिटेन पाक को आतंकवादी देश घोषित करे : चव्हाण

लन्दन २३ सितम्बर। भारत के गृहमन्त्री शंकरराव चह्वाण ने ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री जान मेजर से आग्रह किया है कि वह पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करे क्योंकि पाकिस्तान भारत में आतंकवाद को उकसावा दे रहा है और उग्रवादियों की मदद कर रहा है।

श्री चह्वाण ने यह आग्रह कल भारत-ब्रिटेन प्रत्यर्पण संधि और मादक पदार्थों की तस्करी करने वालों की सम्पत्ति जब्त करने सम्बन्धी समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद किया। गृहमन्त्री ने श्री मेजर के साथ ३५ मिनट की बैठक के दौरान कहा कि मादक पदार्थों की तस्करी की ही तरह आतंकवाद भी एक विश्वव्यापी समस्या बन चुका है। श्री चह्वाण प्रधानमन्त्री श्री मेजर से भेंट करने वाले पहले भारतीय मन्त्री है।

श्री मेजर ने श्री चह्वाण को बात को स्वीकार करते हुए कहा कि उनकी सरकार भारत की चिन्ता को यूरोप के अपने साथी देशों के समक्ष भी रखेगी।

श्री मेजर ने कहा कि भारत और ब्रिटेन आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष में पूरा सहयोग करेंगे। इसके पूर्व श्री चह्वाण ने कहा कि भारत ने आतंकवाद को शह देने के प्रश्न पर लीबिया की निन्दा करने में पश्चिमी देशों का साथ दिया था। हालांकि भारत और लीबिया दोनों गुट निरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य हैं।?

भारत के गृहमन्त्री ने श्री मेजर का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट किया कि आतंकवाद को शह देने के मामले में लीबिया और पाकिस्तान के बीच समानता है और कहा कि लीबिया की तरह ही पाकिस्तान की भी अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा निन्दा की जानी चाहिए।

श्री चह्वाण की कल श्री मेजर और गृहमन्त्री केनेथ क्लार्क दोनों से बातचीत हुई थी। दोनों ब्रिटिश नेताओं ने भारत की ओर से एमनेस्टी इंटरनेशनल के प्रतिनिधिमण्डल को भारत आमन्त्रित किए जाने का स्वागत किया।

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा प्रतिवर्ष दिये जाने वाले पुरस्कारो की राशि मे वृद्धि की घोषणा

आय समाज सा ताक्रु ज बम्बई न अपनी पुरस्कारो की शृखला वेद वेदाग पुरस्कार वेदोपदेशक पुरस्कार तथा मेघजी भाई आय साहि य पुरस्कार जो प्रनिवष वेद वेगाग के अनुसधानकर्ता आय समाज क प्रचार प्रसार मे समर्पित जीवन तथा आय साहित्य के उत्कृष्ट लेखको को दिये जाते हैं उनकी राशि मे वद्धि की घोषणा की है।

सन् १९९३ आय समाज सान्ताक्रु ज का स्वण जयन्ति वष होने के कारण वद वदाग पुरस्कार की राशि को १००० रुपये से बढाकर २५ ००१ रुपये वदोपदेशक पुरस्कार की राशि को ११ ००० रुपये से बढाकर १५ ००१ रुपये एव मघजी भाई आय साहित्य पुरस्कार की राशि ११ ००० रुपये से बढाकर १५ ००१ रुपये कर दिया गया है। —कप्टिन देवर न आय

आय वीर दल का गठन

आय समाज जगीगज वाराणसी की देखरेख मे दि० ५ व ६ सितम्बर १९९२ को आयवीर दल का विधिवत गठन किया गया आयवीर दल की आव श्यकता शारीरिक शिक्षा तथा योगासन आदि विषयो पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। आय समाज जगीगज के प्रधान श्रीरामराज आय रामफरन शास्त्री तथा श्री ब्रज नारायण कुशवाहा न भी उपस्थित लोगो के समक्ष अपने विचारो को व्यक्त किया। —विजयनाथ आय

मन्त्री आय समाज जगीग ज वाराणसी

आर्य वानर और राक्षस सस्कृति

(पृष्ठ ५ का शेष)

हमारी दृष्टि म आय सस्कति वानर सस्कृति और राक्षस सस्कृति मे यही अन्तर है

विजेत या लका चरण तरणीयो जलनिधि ।
विपक्ष पौलस्त्य रणभूवि सहायाश्च कपय ।।
तथाप्येको राम सकलम वधीद राक्षस कुलम।
क्रियासिद्धि सत्वे सति महता नोपकरण।

लका जसे समुद्र से घिरे दुजेय राक्षस राज्य पर विजय प्राप्त करनी है और समुद्र को भी बिना किसी नाव के नल-नील के द्वारा रखी गई पाषाण शिलाओ पर चलकर समुद्रा माग को पार करना है विपक्ष मे महर्षि पुलस्य के पोते और अपने बलवान योद्धाओ से घिरे रावण से लोहा लेना है और रण क्षत्र मे सहायता करने वाले केवल वानर अर्थात वनवासी लोग है—कोई प्रशि क्षित सेना साथ नही है तथापित अकेले राम न सारे राक्षस कुल को ऐसे नष्ट कर दिया कि यह कहावत चल पडी है—सवा लक्ष पोते सवा लक्ष नाती ताके घर न दिया न बाती। महापुरुषो के सत्व मे अर्थात आत्मिक बल मे कार्य सिद्धि का मन्त्र छिपा होता है फिर उनको साधनो की चिन्ता नही होती।

—सुपर्णा डी ८१ गुलमोहर पाक नई दिल्ली ११००४९

सामवेद पारायण राष्ट्रोत्थान महायज्ञ

ग्राम पथरी (हमीरपुर) उ० प्र० मे ८ से ११ अक्तूबर तक सामवेद पारायण राष्ट्रोत्थान महायज्ञ का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ के सुयोग्य ब्रह्मचारी अपने मधुर कण्ठ से वेद मन्त्रो का पाठ करेंगे। यज्ञ के ब्रह्मा तप व ज्ञान की सजीव मूर्ति स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक होग। इस अवसर पर आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदशक मधुर कणप्रिय हृदयग्राही उपदेशा से आपको लाभान्वित करगे। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाव।

पुस्तक समीक्षा

स्वामी दयानन्द का आर्थिक चिन्तन

लेखक—डा० रामकृष्ण आर्य

मूल्य—दो सौ रुपये

आर्य परिवार प्रकाशन समिति ४ भ २७ विज्ञान नगर कोटा (राज०

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय विश्वविद्यालयो मे स्वामी दयानन्द सरस्वती के भिन्न भिन्न विषयो पर विभिन्न प्रकार से उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध कार्य किया जा रहा है।

डा० रामकृष्ण आर्य द्वारा पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ से स्वामी दयानन्द का आर्थिक चिन्तन विषय पर शोध कार्य किया गया है।

यह सत्य है कि महर्षि दयानन्द ने अपने शोध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश या ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका जैसे विशद प्रबन्धो मे अर्थ पर कोई स्वतन्त्र अध्याय नही लिखा है।

जबकि मानव जीवन की उपयोगिता का मूलाधार यदि केवल धर्म काम से मोक्ष प्राप्ति है तो बिना अर्थ के प्राणी मात्र का काम नही चलता है। प्राचीन काल मे अर्थ शास्त्र केवल भौतिक सम्पदा का अध्ययन अथवा शास्त्र नही था व्यापक क्षेत्र के कारण पृथ्वी से प्राप्त खनिज पदार्थ आदि सम्पदा का कार्य शासक करता था।

इसका भाव यह नही कि स्वामी दयानन्द का अपना कोई आर्थिक चिन्तन नही था स्मरण रहे कि महर्षि के ग्रन्थो को पढ़कर दयानन्द का आर्थिक दर्शन उनकी राष्ट्रीय एव राजनीतिक विचारधारा से ही सम्बद्ध रहा है। उन्होंने मानव की घोर दरिद्रता कृषक वर्ग का शोषण मध्यम स्तर के नागरिको को देखकर व्याकुलता प्रकट की।

देश को आर्थिक दृष्टि से देखना स्वामी दयानन्द का सुन्दर सपना था अत इस विषयक कुछ योजनाये भी उनकी थी।

कला कौशल ज्ञान विज्ञान वाणिज्य व्यवसाय मे सर्वविध विकास के पक्षधर थे।

गोरक्षा के प्रश्न की भाति भेड बकरी भैस आदि सभी पशुओ का वे सरक्षण चाहते थे। गौ को अर्थ का आधार माना और कहा उक्षाधार पृथिवीम पृथ्वी कृषि का आधार गौ है जो मरते दम तक हजारो मानवो को अयसी पूरित करता है गोरक्षा के पीछे उनकी विशुद्ध आर्थिक चिन्ता है देहि मे ददामि ते तुम पर अधिक अन्न है मुझ दो और मुझ पर अधिक धन है मै तुम्हे दे दू। कृषि को भारत जीविका के साधना मे उद्योग का स्थान महत्वपूर्ण है।

उत्पादन के लिए परमेश्वर ने निशुल्क सम्पदा प्रदान की है। जमीन जगल पहाड खनिज पानी प्रकाश ऊर्जा वनस्पति पशु पक्षी आदि मानव को मिले है। अत अर्थशास्त्र मनुष्य के साधारण जीवन के सामान्य व्यवहारो का अध्यापन शास्त्र है।

अर्थशास्त्र वह शास्त्र है जो असीमित आवश्यकताओ तथा वैकल्पिक प्रयोग के सीमित साधनो से मानवीय आचरण का अध्ययन कराता है।

अत स्वामी दयानन्द का अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक चिन्तन विशद है जिसे आश्रम के साथ जोडा है। गहन अध्ययन करने से प्रकट होता है—

डा० रामकृष्ण जी ने जिन महर्षि ग्रन्थो मे जाकर महर्षि के आर्थिक चिन्तन पर लेखनी उठाई है वह अपने मे पूर्ण सक्षम है जन साधारण को स्वामी दयानन्द के विभिन्न पक्षो के साथ आर्थिक समाधानो को भी समझाने मे यह ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध होगा। इस दिशा मे और शोध करने की आवश्यकता है।

—सम्पादक

आर्य समाज बारा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बारा राज० अपना १६ वा वार्षिकोत्सव ८ से ११ अक्टूबर ९२ तक हर्षोल्लास के साथ मना रहा है। समारोह मे आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान नेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे है। इस अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया है।

इतिहास की पुस्तको मे सशोधन

पृष्ठ १ का शेष

और आर्य समाज के समस्त विद्वान सन्यासी तथा जागरूक जनता इस महान कार्य मे आपके साथ रहेगी।

स्वामी जी ने केन्द्रीय सरकार तथा देश की अन्य प्रान्तीय सरकारो से भी यह आग्रह किया है कि वे भी अपने-अपने स्तर पर शिक्षा पद्धति मे समुचित सशोधन के इस महान कार्य को सम्पन्न करे। इस सिलसिले मे आर्यसमाज का एक शिष्ट मण्डल मानव ससाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह से शीघ्र ही भेट करेगा।

आर्य समाज जोगिपेठ का निर्वाचन

२४ ६ ९२ के दिन स्थान विलक्षण प्रसाद की अध्यक्षता मे आर्य समाज जोगिपेट का चुनाव निम्न प्रकार हुआ तथा वार्षिक हिसाब कार्यक्रम मे सुनाया गया। प्रधान श्री वि० लक्ष्मण प्रसाद जी उपप्रधान सव न अरम आशय्या मन्त्री भूसय्या धुलप्पा जी म श्री श्रा जामिनी वीरप्पा जी उपमन्त्री श्री पल्ले बागय्या जी कोषाध्यक्ष श्री रगमपेट चिन्ना वेनय्य जी पुस्तकाध्यक्ष श्री अयप्पा गगय्या जी सदस्य सर्वश्री बस्वा शकरय्या अल्ल चिनमल्लय्या चद्दर बिठल नाकुर माणय्या पटनम पटय्या और आर लिगोमा जी। श्री आशय्याजी ने धन्यवाद समर्पित किया।

भारत छोडो आन्दोलन व विद्यालय का स्वर्ण जयन्ती समारोह

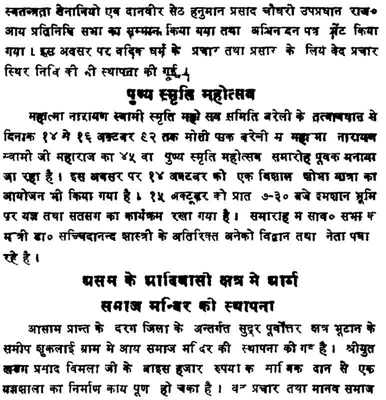
आर्यसमाज छोटी सादडी द्वारा १४ अगस्त ९२ को भारत छोडो आन्दोलन व आर्यसमाज द्वारा सचालित श्री ओकार उच्च प्रा० विद्यालय का स्वर्ण जयन्ती समारोह उल्लास पूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेको स्वतन्त्रता सेनानियो एव दानवीर सेठ हनुमान प्रसाद चौधरी उपप्रधान राज० आर्य प्रतिनिधि सभा का सम्मान किया गया तथा अभिनन्दन पत्र भेट किया गया। इस अवसर पर वैदिक धर्म के प्रचार तथा प्रसार के लिये वेद प्रचार स्थिर निधि की भी स्थापना की गई।

पुण्य स्मृति महोत्सव

महात्मा नारायण स्वामी स्मृति महोत्सव समिति बरेली के तत्वावधान मे दिनाक १४ से १६ अक्टूबर ९२ तक मोती पार्क बरेली मे महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज का ४५ वा पुण्य स्मृति महोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर १४ अक्टूबर को एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन भी किया गया है। १५ अक्टूबर को प्रात ७-३० बजे श्मशान भूमि पर यज्ञ तथा सतसग का कार्यक्रम रखा गया है। समारोह मे सार्व० सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के अतिरिक्त अनेको विद्वान तथा नेता पधार रहे है।

असम के आदिवासी क्षेत्र मे आर्य समाज मन्दिर की स्थापना

आसाम प्रान्त के दरग जिला के अन्तर्गत सुदूर पूर्वोत्तर क्षेत्र भूटान के समीप शुकलाई ग्राम मे आर्य समाज मन्दिर की स्थापना की गई है। श्रीयुत सुगन प्रसाद विमला जी के बाइस हजार रुपयो के मासिक दान से एक यज्ञशाला का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। वेद प्रचार तथा मानव समाज की सेवा करते हुये आर्यसमाज के कार्यकर्ता इस प्रचार के कार्य मे लगे हुये हैं।



पाम्टल रजम्ट्रेशन न० डी एन० ११०८६ ६२ सार्वदेशिक साप्ताहिक ११ १० १९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ६३
R N l d t hou nepaym t Lice No U 93 Post in N D P S O on 8, 10 1992

आय समाज आर्यम गढ मे वेद प्रचार

आय समाज आयनगर के त वावधान म दिनाक १३ से १७ अग न तक वेद प्रचार का कायक्रम सफलता पूवक सम्प न हुआ। प्रात सा का कायक्रम आयसमाज म तर ना मायकाल का अग्रवाल धमशाला म आय जगत के विद्वान आचाय प्रम भ जी तथा म यप्रकाश आय के द्वारा सम्पन्न हुआ। आचाय प्रम भिक्ष जी द्वारा देश की ज्वलत समस्याओ का वेद की विचारधारा से समाधान करन पर बल दिया गया।

रजत जयन्ती महोत्सव

आय समाज न्य मोतीनगर का रजत जयन्ती समारोह ६ से १८ अक्तूबर १९९२ तक बड धमधाम से मनाया जा रहा है। इस समारोह मे यजुर्वेद महायज्ञ वेदकथा भजनोपदेश आय महिला सम्मेलन आय वीर सम्मेलन वैदिक सिद्धात रक्षा सम्मेलन महर्षि दयानन्द शिशु मन्दिर का वार्षिकोत्सव एव अन्य कायक्रम भी आयोजित होग। जिसमे देश भर के विख्यात सन्यासी विद्वान महात्मा पधार रहे है।

११ अक्टूबर को दोपहरबाद २ बजे से विशाल शोभा यात्रा का आयोजन है। इसे शानदार एव शोभायमान बनाने के लिए आप अपन-अपने वाहन भजन मण्डलियो तथा विद्यालयो के बच्चो के साथ सम्मलित होव।

सभी आय समाजो आर्य विद्यालयो और आयजनो स विनम्र निवेदन है कि इस जयन्ती के कायक्रमो को सफल बनाने हेतु तन मन धन से सहयोग देकर यश के भागी बने। जो महानुभाव यज्ञ मे यजमान बनना चाहते ह वे शीघ्र आय समाज न्य मोती नगर मे पधार कर अपना नाम आरक्षित करवाये। —तीथराम आय प्रधान

अम्बाला छावनी मे केन्द्रीय आर्य सभा का गठन

आय समाज रजमन्ट बाजार अम्बाला छावनी मे समस्त आर्य समाजो एव शिक्षण सस्थाओ के प्रतिनिधियो एव पदाधिकारियो की एक सभा केन्द्रीय आय सभा के गठन हेतु सम्पन्न हुई। सब सम्मति से श्री सतीश मित्तल भू पू अध्यक्ष हरियाणा खादी ग्रामो बोर्ड को प्रधान तथा श्री वेदमित्र हापुड वाले को महामन्त्री चुना गया। तथा अन्तरग सभा के अन्य पदाधिकारियो का चयन करने का दोनो को अधिकार दिया।

यह भी निश्चित हुआ कि प्रत्येक आय समाज मे सामूहिक रूप से अलग अलग पव मनाये जायें। एक विशाल आर्य सम्मेलन प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाए ताकि प्रत्येक व्यक्ति को आय विचार धारा की ओर आकर्षित किया जा सके। इससे सगठन को भी बल मिलेगा और सगठन शक्तिशाली बनेगा। —वेदमित्र हापुड वाले महामन्त्री

पचकुण्डी यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

स्त्री आय समाज च दौसी ने ६ से ११ अक्तूबर तक एक पचकुण्डी यजुवद परायण महायज्ञ करने का निश्चय किया है। इस उपलक्ष म एक शोभा यात्रा दिनाक ८ अक्तूबर १९९२ को साय ३ बजे स प्रारम्भ होगी। इस अवसर पर आय जगत क प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। कृपया अपनी समाज के समस्त सदस्यो सहित पधार कर इस शोभा यात्रा को सफल बनान म हम सहयोग देन की कृपा करे। —ओमवती आर्या

अयोध्या प ... को सराहा

जबलपुर ५ अक्तूबर। भा तीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष कृष्णलाल शर्मा ने मन्दिर मस्जिद विवाद के निपटारे के लिए प्रधानमन्त्री पी०वी० नरसिंह राव के प्रयासो की सराहना की है।

श्री शर्मा ने आज यहा सवाददाताओं से बातचीत मे कहा कि अयोध्या मे राम मन्दिर निर्माण के मुद्दे पर निर्णय लेने मे विलम्ब से प्रधानमन्त्री नरसिंह राव की साख पर प्रतिकूल प्रभाव पडेगा। उन्होने कहा कि सरकार सहित सभी पक्षों को श्रीराम जन्मभूमि से सम्बन्धित तथ्यो की वास्तविकता स्वीकार करनी चाहिए। श्री शर्मा ने इस प्रश्न को टाल दिया कि यदि बात-चीत से मन्दिर मस्जिद विवाद का निपटारा नहीं हुआ तो क्या अदालत के फैसले को सभी पक्षो को मानना चाहिए? उन्होने कहा कि यह विवाद अदालत के विचार करने योग्य मामला नहीं है, क्योंकि मन्दिर निर्माण से असख्य हिन्दुओ की भावनाए जुडी हुई हैं।

वार्षिकोत्सव

आय समाज कोसा कला का ५१ वा वार्षिकोत्सव ७ से १० अक्टूबर ६२ तक सुभाष गज (पुरानी अनाज मण्डी) में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आय जगत के प्रकाण्ड विद्वान महात्मा तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर समारोह को सफल बनाय।

वार्षिकोत्सव

आय समाज राजनगर गाजियाबाद का ८ वा वार्षिकोत्सव सोमवार दिनाक १२ १० ६२ से रविवार दिनाक १८ १० ६२ तक बडी धूमधाम से मनाया जायेगा। प्रतिदिन प्रात यजुर्वेदीय यज्ञ तथा प्रवचन व रात्रि को वेदोपदेश। मुख्य समारोह १६ १० ६२ को महिला सम्मेलन मे हस्त शिल्प कला प्रदशनी १७ १० ६२ आय युवा सम्मेलन मे छात्र छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता तथा योगासन प्रतियोगिता तथा रविवार १८ १० ६२ को यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद समापन समारोह मे देशभक्ति का अनूठा कायक्रम राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा इस अवसर पर पधारने वाले प्रमुख विद्वान हैं— डा उत्तमचन्द शरर प्रो वाचस्पति उपाध्याय श्री प्रमचन्द श्रीधर डा गणेशदत्त शर्मा। —श्रद्धानन्द मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

● जब उत्तम उपदेशक होते हैं, तब अच्छी प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं। और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नही रहते, तब अन्य परम्परा चलती हैं।

❀ जो मनुष्य नित्य प्रात और साय सन्ध्योपासना को नही करता, उसको शूद्र के समान समझ कर द्विज कुल से अलग करके, शूद्र कुल मे रख देना चाहिए। वह सेवा कम किया करे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अक ३८] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ कार्तिक कृ० ७ सं० २०४९ १८ अक्तूबर १९९२

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा का शिष्टमण्डल उत्तरभारत की आर्य संस्थाओं तथा वेद प्रचार से प्रभावित

दस दिवसीय भ्रमण सम्पन्न

नई दिल्ली १२ अक्तूबर।

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के लगभग ५० सदस्यो का एक शिष्टमण्डल गत १० दिनो से उत्तर भारत की यात्रा पर था जिसका नेतृत्व कर्नाटक सभा के युवा मन्त्री श्री सत्यव्रत आर्य तथा स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती कर रहे थे। इस शिष्टमण्डल मे विदुषी देवियो बच्चो तथा आर्य विद्वानो के अतिरिक्त कर्नाटक के एक ब्रह्मचारी कृष्णभट्ट भी थे। ब्र० कृष्णभट्ट को सम्पूर्ण ऋग्वेद कठस्थ है। अपनी इस विलक्षण प्रतिभा का परिचय उन्होने वेदपाठ करके कई स्थानो पर दिया। कर्नाटक की विदुषी देवियो ने भी कई स्थानो पर सस्वर वेद मन्त्रो का उच्चारण आर्य जनता के समक्ष किया। यह शिष्ट मण्डल रात्रि मे बगलोर के लिये रवाना हुआ।

इससे पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित एक साधारण विदाई समारोह मे सदस्यो को सम्बोधित करते हुये सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि इस प्रकार की यात्राओ से विभिन्न प्रान्तो के आर्यों मे जहा परस्पर मेल-मिलाप बढता है वही वैदिक प्रचार मे भी सहायता मिलती है। स्वामी जी ने कहा कि आज भारतवर्ष मे तथा समस्त ससार मे जो परिस्थितिया उत्पन्न होती जा रही हैं उनसे यह स्पष्ट होता जा रहा है कि एक बार फिर समूचे विश्व को वैदिक धर्म की मान्यताओं को स्वीकार करना पडेगा। ऐसी परिस्थिति मे समस्त आर्यों को लक्ष्यबद्ध होकर लोगो के जीवन स्तर को सुधारने तथा आर्यसमाज के सगठन को मजबूत बनाने के लिये कर्तव्य निष्ठा से जुटे रहना चाहिये।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने शिष्ट मण्डल का आह्वान करते हुए कहा कि उन्हे इस यात्रा मे यह सकल्प लेना चाहिये कि स्वामी दयानन्द द्वारा पुनर्स्थापित गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का शुभारम्भ कर्नाटक प्रान्त मे भी करेंगे। उल्लेखनीय है कि कर्नाटक प्रात अभी तक गुरुकुलीय शिक्षा

(शेष पृष्ठ २ पर)

अफ्रीका के मुसलमानों पर ओ३म् के उच्चारण का प्रभाव

पिछले एक दशक से भी अधिक समय से अफ्रीका के मुसलमानो द्वारा आध्यात्मिक उत्थान के लिये ओ३म् के उच्चारण को अपनाया गया है। सस्कृत शब्द ओ३म् अब तो इतना प्रसिद्ध हो चुका है कि हाल ही मे एअर अफ्रीका के विज्ञापन पर सबसे ऊपर ओ३म् छपा पाया गया। यह पोस्टर अफ्रीका से मक्का तक के तीर्थ यात्रियो को आकर्षित करने के लिये निकाला गया था।

• एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम बाहुल्य देशो सेनिगाल, माली जीनिया तथा अफ्रीका आदि देशो मे जितने भी योग प्रशिक्षण केन्द्र चल रहे हैं उनकी तरफ भी बहुत बडी सख्या मे मुस्लिम समुदाय के लोग आकर्षित हो रहे हैं। इन मुसलमानो का कहना है कि बदलती परिस्थितियो मे वे अपने आपको परिस्थितिनुसार बदलने को तैयार है।

(हिन्दुइज्म टुडे सितम्बर ९२ से साभार)

रामनगर में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा आर्य वीरों को आशीर्वाद

अमेठी ८ अक्तूबर।

आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह राजा रणञ्जय सिंह राजकीय महाविद्यालय रामनगर के मैदान मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह से एक दिन पूर्व आर्य वीर दल का पथ सचलन रामनगर से अमेठी तक हुआ। इस पथ सचलन मे सैकडो आर्य वीर गणवेश मे आश्चर्य जनक करतब दिखाते हुये चल रहे थे। हजारो व्यक्तियो ने इस अभूतपूर्व पथ

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका प्रगति के पथ पर अग्रसर

हिन्दू धर्म व संस्कृति तथा विशेषरूप से वैदिक मान्यताओं के प्रति समर्पित आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका, डरबन के तत्त्वावधान में परम्परागत पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं।

स्मरण रहे कि आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका से सम्बन्धित मान्यता प्राप्त सामाजिक धार्मिक संस्थाओं तथा आर्य समाजों की संख्या ६० है जो पूरे नटाल प्रान्त में फैली हुई हैं। कार्य सुविधा के लिये तथा वैदिक धर्म के प्रचार को अधिक बल प्रदान करने के लिये सभा ने इन संस्थाओं को विभिन्न ६ क्षेत्रिय परिषदों में समन्वित कर रखा है। वेद प्रचार महोत्सवों में उन सभी की उत्साहजनक सक्रिय सहभागिता रहती है। सभा के अन्तर्गत विद्यमान धार्मिक सेवा समिति ने गतवर्ष वेदसप्ताह कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन तथा संयोजन किया। समिति की सभापति पंडिता सरोज रामावतार तथा सचिवद्वय श्री नारायण किसुन तथा डा० सुशीला कामबरन के अनथक परिश्रम तथा सभा के अध्यक्ष श्री शिशुपाल रामभरोस एवं सभा के धर्माध्यक्ष वयोवृद्ध विद्वान् पण्डित नरदेव वेदालंकार के सुयोग्य निर्देशन तथा परामर्श के फल-स्वरूप यह बृहद् महोत्सव सुसम्पन्न हो सका है। जब कि सभा से सम्बन्धित प्रत्येक संस्था तथा उस के सदस्य तो कार्यक्रम की पूर्ण सफलता के लिये प्राणपण से जुटे हुए थे ही। वेद सप्ताह महोत्सव विभिन्न स्थानों में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। प्रत्येक कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण थे—मुख्य वक्ता का वेदों के विभिन्न आयामों पर अंग्रेजी में सारगर्भित भाषण कालेज आव वैदिक स्टडीज दक्षिण अफ्रीका (आ०प्र०स० द्वारा संचालित शैक्षिक संस्था) के छात्र-छात्राओं द्वारा वेदमन्त्रों का विशुद्ध पाठ तथा उसका अंग्रेजी में अनुवाद और आर्यसमाज व ईश्वरभक्ति के भजनों का सुमधुर संगीतमय गायन।

चैत्स्वर्थ डरबन में कार्यक्रम का प्रारम्भ हवन तथा ईश्वरोपासना से हुआ। पं० रामदत्त के पौरोहित्य में सम्पन्न इस यज्ञ में उपस्थित सभी सज्जनों ने भक्तिपूर्वक भाग लिया। वेद सप्ताह महोत्सव का समुद्घाटन आ०प्र० सभा के माननीय अध्यक्ष सुविख्यात समाज-सेवी श्री शिशुपाल रामभरोस ने अपने संक्षिप्त सारगर्भित एवं प्रेरणादायी भाषण से किया। मुख्य वक्ता थे, श्री जे० बलवन्त जो आ०प्र०स० अन्तर्गत धार्मिक परीक्षाओं की संचालक संस्था "वेद-निकेतन" के रजिस्ट्रार हैं। उनके भाषण का शीर्षक था "वेदों में वर्णित मानव धर्म"। उत्तर समुद्र तट क्षेत्रिय परिषद्, एम सी० बर्गन स्कूल हाल, लेडीस्मिथ। दोनों स्थानों पर क्रमशः वक्ता थे श्रीमती डा० प्रमदा रमेसर तथा श्री दशरथ बन्धु। समाजशास्त्र में विद्यावारिधि श्रीमती डा० प्रमदा के भाषण का शीर्षक था "वेदों में नारी का स्थान"। प्रसिद्ध समाज सेवक श्री बन्धु के भाषण का शीर्षक था "वेदों का त्रैतवाद"।

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त भाषण प्रतियोगिता तथा पुरस्कार वितरण के अतिरिक्त वेदों से सम्बधित अनेक भाषण विद्वान वक्ताओं द्वारा दिये गये। समय समय पर अन्य समारोह भी उत्साह पूर्वक मनाये जाते है।

सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन

विश्वशान्ति एवं मानव कल्याण हेतु आर्यसमाज महाराजपुर जिला छतरपुर द्वारा स्वामी सत्यानन्द जी के पौरोहित्य मे दिनांक २९ सितम्बर से ३ अक्तूबर तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के असख्य व्यक्तियों ने यज्ञ की पूर्णाहुति में भाग लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका द्वारा

स्वामी भवानी दयाल जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका १७ से १८ अक्टूबर ९२ को स्व० स्वामी भवानी दयाल सन्यासी का जन्म शताब्दी समारोह धूमधाम से आयोजित कर रहा है। दिनाक १७ अक्तूबर को सास्कृतिक कार्यक्रम हिन्दी शिक्षा संघ(दक्षिण अफ्रीका) की ओर से होगा इसके मुख्य अतिथि श्रीएस. राम भरोस और डा० हेमराज होंगे। १८ अक्तूबर को ध्वजारोहण श्रीमती सुधामणि लाल राम रथन (भवानी दयाल सन्यासी की पौत्री) के द्वारा सम्पन्न होगा। ३ बजे शताब्दी समारोह आर्यन हाल स्वामी दयानन्द बिल्डिंग डर्बन मे आर्य विद्वान पं० नरदेव वेदालंकार की अध्यक्षता मे प्रारम्भ होगा समारोह मे मुख्य अतिथि श्री जे. एन. सिंह तथा स्व० भवानी दयाल संन्यासी के पौत्र श्री एम. आर. दयाल तथा स्वागताध्यक्ष श्री एस रामभरोस होंगे।

श्री बच्चनसिंह आर्य प्रगति पथ यात्रा पर

फिरोजपुर। हरियाणा सरकार के कृषि राज्य मन्त्री श्री बच्चनसिंह आर्य २ अक्तूबर से प्रगति पथ यात्रा पर है। उनकी इस यात्रा मे लगभग एक हजार कार्यकर्ता दिन रात उनके साथ रहेगे। यह यात्रा १६ अक्तूबर को रोहतक में समाप्त होगी। फिरोजपुर के मेवात क्षेत्र से यह पद यात्रा प्रारम्भ हुयी जो कि एक मुस्लिम बहुल क्षेत्र है। यहा के लोग औरंगजेब के समय मे उसके धर्म-परिवर्तन अभियान का शिकार होकर मुसलमान बन गये थे। श्री बच्चन सिंह आर्य ने यहा के निवासियों को उनके इतिहास का स्मरण कराते हुए कहा कि तुम सब राम और कृष्ण की सन्तान हो, आज चाहे किसी भी मत या पन्थ को स्वीकार करो, परन्तु आपको अपनी मूल वैदिक संस्कृति को नहीं भूलना चाहिये। इसी वैदिक संस्कृति का प्रचार करते हुये श्री बच्चनसिंह के शराब विरोधी तथा सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक बुराइयो को समूल उखाड़ फेकने हेतु दिये गये भाषणों की हरियाणा की जनता द्वारा मुक्त कण्ठ से प्रशसा की जा रही है।

श्री बच्चनसिंह आर्य की यह यात्रा नूह, सोना, गुडगावा, फारुक नगर इत्यादि क्षेत्रो से होती हुयी १६ अक्तूबर को रोहतक मे एक रैली के रूप मे परिवर्तित हो जायगी। प्रत्येक पडाव पर स्थानीय विधायक तथा कांग्रेस के अन्य नेता लगभग पन्द्रह से बीस हजार तक की जनता के साथ श्री बच्चनसिंह का स्वागत कर रह है।

रोहतक मे इस रैली को मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल तथा हरियाणा कांग्रेस के अध्यक्ष श्री धर्मपाल मलिक सम्बोधित करेंगे।

कृपया ध्यान दें

मेरा फोन नम्बर अब ५७८३३४३ हो गया है, यह नया नम्बर है—पहला नं० ५८३३४५ था अब उस पर फोन न करें।

वेदबन्धु पं० अभिविनय भार्गवी, सदस्य धर्मार्य सभा दिल्ली, निवास—X-१०, पश्चिमी पटेलनगर, नई दिल्ली-११०००८

कर्नाटक का शिष्टमण्डल

(पृष्ठ १ का शेष)

पद्धति से वंचित रहा है। श्री वन्देमातरम् जी ने कर्नाटक के प्रतिनिधियों को आश्वासन देते हुये कहा कि वैदिक प्रचार के मार्ग में आने वाली किसी भी बाधा को दूर करने या अपेक्षित सहायता हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव तैयार रहेगी।

यह विदाई समारोह सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द गोसंवर्द्धन दुग्ध केन्द्र में सम्पन्न हुआ। जिसमें सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा न्याय सभा के संयोजक विमल वधावन एडवोकेट भी उपस्थित थे।

महज एक कार दुर्घटना या कत्ल

भारत मे सडक दुर्घटनाए सामान्य बात है। प्रतिदिन सैकडो दुर्घटनाए होती हैं पर जब पुलिस का एक आई जी पद का अफसर दुघटना का शिकार हो तो उसको शक की नजर से देखना स्वाभाविक है। ५ अक्तूबर को मेरठ मडल के पुलिस महानिरीक्षक सुरेशपाल सिंह की कार की एक ट्रक से भयकर टक्कर हुई। श्री सुरेशपाल सिंह अपनी कार से मेरठ जा रहे थे। दूसरी तरफ से तजी से आ रहे एक ट्रक ने मोरटा के पास उनकी कार को भीषण टक्कर मारी। भिडत से उनकी कार के परखच्चे उड गये। सुरेशपाल सिंह, ड्राइवर दुगपाल तथा गनर रिछपाल त्यागी मौके पर ही मारे गये।

श्री सुरेशपाल सिंह की मौत दुघटना से हुई या उनको मारने के लिए दुर्घटना कराई गई इस पर आजकल काफी चर्चा है। जो लोग इसे हत्या की साजिश मानते है वह इसके पीछे कई कारण पेश कर रहे हे। जनता कह रही है कि गाजियाबाद मेरठ के मध्य भोटी गाव के समीप ट्रक न श्री सिंह की कार को साइड छोडते हुए रौंद डाला जबकि काफिले मे अन्य वाहन भी थे उन्हे तनिक भी खरोच नही आई। दूसरी ओर उनकी गाडी के आगे चल रहो क्षेत्राधिकारी वार्डर की कार व मोटर साइकिल सवार पाइलेट ने बचने का काफी इशारा किया। इसके बावजूद ट्रक न उस समय सडक के किनारे कच्चे मे उतर आई कार मे सामने से टक्कर मारी। यही नही दुर्घटना के उपरात ट्रक ड्राइवर प्रकाश मौके से फरार हो गया। दिल्ली व मेरठ मे कई माफिया गिरोह सक्रिय हे। सवाल यह उठताहै कि इतनी जबरदस्त एस्कोर्ट साथ होने के बावजूद पुलिस महानिरीक्षक का सडक दुर्घटना मे यू मर जाना समझ नही आ रहा।

श्री सुरेशपाल सिंह निवाण माफिया उन्मूलन के विशेषज्ञ माने जाते थे। उनकी इस काबलियत को देखते हुए ही उन्हे पदोन्नति देकर मेरठ मडल भेजा गया था। गाजियाबाद माफियाओ के आतक से सबसे पहले माफिया उन्मूलन की महत्वपूण मीटिंग गाजियाबाद मे ही रखी गई थी। मीटिंग मे शामिल अधिकारियो का खुद यह कहना था कि जिस तरह के सुझाव उन्होने मीटिंग मे रखे थे उन्ह सुनकर हर पुलिस अधिकारी दग रह गया था। पुलिस महा निरीक्षक के साथ दूसरा प्लस प्वाइट यह भी था कि वे इसी जिले के गाव करहैडा क मूल निवासी थे। इस कारण गाजियावाद के अडरवल्ड तथा भौगोलिक स्थिति पर उनकी सही पकड थी। माफियाओ से सपर्क बनाये रखन वाल भ्रष्ट पुलिस अधिकारियो की एक सूची भी उन्होने तयार कर ली थी। इस कारण इस क्षेत्र के माफिया डानो व भ्रष्ट पुलिस कर्मियो मे हडकम्प मची हुई थी। हैरानगी की बात यह है कि ७ अक्तूबर तक पुलिस महानिरीक्षक की गाडी के साथ चलने वाली एस्कार्ट के कर्ताधर्ताओ से पुलिस प्रशासन ने कोई पूछताछ नही की है। सी ओ बार्डर साहब राय तथा सी ओ मोदीनगर जे पी सिह इस एस्कार्ट पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे। इन दोना बहादुर अधिकारियो की वर्दी को खरोच तक नही आई। खास बात यह है कि साहब राय उम्र लिहाज से भी बुजुर्ग है। इसके बावजूद उन्हे एस्कार्ट का जिम्मा पुलिस ने कैसे सौप दिया ? साहब राय की जिप्सी डी आई जी की गाडी के आगे चल रहीथी जबकि जेपी सिंह की जिप्सी पीछे चल रही थी फिर ट्रक चालक पजाब का रहने वाला है। अत यह भी जाच का विषय हो सकता है कि कही वह किसी आतकवादी सगठन से जुडा तो नही है।

श्री सुरेशपाल सिह की अन्त्येष्टि के समय लखनऊ के भैसा कुड पर कल्याणसिंह मन्त्रिमण्डल का कोई भी सदस्य मौजूद नही था। मुख्यमन्त्री उस दिन सुबह ही सुरेशपाल सिंह के घर पर श्रद्धाजलि द आये पर अन्त्यष्टि के समय एक भी मन्त्री का ना मौजूद होना अच्छा सकेत नहीं। वैसे भी थोक भाव के तबादलो से उत्तर प्रदेश पुलिस बल का मनोबल गिरा हुआ है और ऐसे बहादुर ईमानदार की अन्त्येष्टि मे सरकार द्वारा इतना निरादर समझ नहीं आया। सुरेशपाल सिंह एक निष्ठावान एव समर्पित पुलिस अधिकारी थे। उनकी मृत्यु अपने दायित्वो के निर्वहन करते समय हुई ऐसी स्थिति मे दाह-सस्कार के समय कल्याण सिंह मन्त्रिमण्डल के सदस्यो की अनुपस्थिति उनकी सवेदन शून्यता को दर्शाती है। हमे उम्मीद है कि यूपी सरकार श्री सुरेशपाल की मृत्यु को गम्भीरता से लेगी और इस दुर्घटना की जाच करवायेगी ताकि इसकी जड तक पहुचा जा सके। यह अत्यन्त महत्वपूण है कि जनता को यह पता चले कि श्री सुरेशपाल सिंह महज एक दुघटना का शिकार हुए है या फिर दुघटना के रूप म उनका कत्ल किया गया है।

—अनिल नरेन्द्र

झीलों की नगरी, वीरभूमि, उदयपुर के प्रसिद्ध

नवलखा महल के स्वीकरण के शुभ अवसर पर

विशाल आर्य सम्मेलन

दिनाक २८, २९ नवम्बर, १९९२

स्थान—गुलाब बाग, उदयपुर

यह सर्वविदित है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके क्रातिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश' ने विगत शताब्दी मे सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्र मे असाधारण नवचेतना जगाकर भारत मे अन्धविश्वास छुआछूत भेदभाव सम्प्रदायवाद अशिक्षा आदि समस्त प्रकार की सामाजिक और राजनैतिक कुरीतियो को मिटाने के लिए एक महान आन्दोलन को जन्म दिया। स्वराज्य, स्वदेशी एव स्वभाषा के मन्त्रदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती न ही आधुनिक युग मे सच्चे अर्थो म भारत की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और सास्कृतिक पुनरुत्थान का प्रथम घोष किया था। उनका विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश उदयपुर स्थित नवलखा महल मे उनके निवास काल मे लिखा गया था।

राजस्थान सरकार ने उक्त नवलखा महल को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को सौपने के आदेश प्रसारित कर दिये है ताकि वहा महर्षि का एक भव्य स्मारक बन सके और धर्म, सस्कृति वेद आदि पर शोध कार्य हो सके। राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत उक्त नवलखा महल राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा को दि० २८ २९ नवम्बर १९९२ को उदयपुर मे आयोजित समारोह मे हस्तातरित करेंगे। इस अवसर पर आयोजित द्विदिवसीय विशाल आर्य सम्मेलन मे आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी महात्मा भारत ही नही अपितु विश्व के प्रमुख आर्य नेता एव अन्य अनक गणमान्य व्यक्ति पधार रहे है। इस सम्मेलन के प्रमुख आकर्षण—वृहद यज्ञ विशाल शोभा यात्रा, खुला अधिवेशन विविध सम्मेलन, ऋषिलगर के अतिरिक्त महर्षिकृत ग्रन्थ तथा वैदिक साहित्य विपुल मात्रा मे उपलब्ध होगा।

अत आपसे साग्रह निवेदन है कि आप सपरिवार इष्टमित्रा एव अधिकाधिक आर्यजनो के साथ उक्त समारोह मे सम्मिलित होन हतु पधारे और अपने पधारने की तिथि एव आगन्तुक सज्जनो की सख्या की पूर्व सूचना कार्यालय को भेजें। साथ ही राष्ट्रीय स्तर के इस विशाल समारोह के आयोजन हेतु आर्थिक सहायता आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के नाम से चैक, ड्राफ्ट, धनादेश द्वारा एव यज्ञ तथा ऋषि लगर हेतु अन्न घृत आदि अधिकाधिक मात्रा मे भेजने की कृपा करे।

विद्यासागर शास्त्री प्रधान	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती मन्त्री
छोटूसिंह एडवोकेट सयोजक	हनुमानप्रसाद चौधरी स्वागताध्यक्ष

भाजपा शासित राज्यों से संघ का मोहभंग

भोपाल, ९ अक्तूबर। भारतीय जनता पार्टी से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मोहभंग हो गया है। भाजपा राज्य सरकारो ने अपने ढाई साल के शासनकाल में संघ की सभी आशाओ व उम्मीदों को न सिर्फ बिखेर कर रख दिया है, बल्कि सिद्धान्तो की भी धज्जियां उड़ा कर रख दी हैं।

आज स्थिति यह है कि संघ के नेता इन सरकारों को संरक्षण देना तो दूर सार्वजनिक कार्यक्रमो में इनके नाम का उल्लेख तक करने को तैयार नहीं हैं। भाजपा मे आज जो गुटबन्दी के नजारे दिखाई दे रहे हैं, वह वास्तव में संघ से पूर्व जनसघ मे गए उन नेताओ की छटपटाहट है, जिन्हें आज भाजपा की सत्ता मे राजनीति रास नहीं आ रही है।

ऐसा नहीं है कि संघ के बड़े नेताओं की नाराजी सिर्फ भाजपा सरकारो या मुख्यमन्त्रियो से है, उनकी नाराजी भाजपा के बड़े नेताओ से भी है जो आर. एस. एस. की दुहाई तो देते है लेकिन उसके सिद्धान्तो की हत्या करने मे भी पीछे नही रहते। इसी कारण आजकल आर. एस. एस. की भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी से पटरी नहीं बैठ रही।

श्री जोशी से सघ की नाराजी के दो प्रमुख कारण हैं. पहला कारण दक्षिण के समर्पित प्रमुख नेता गोविन्दाचार्य को मद्रास भेजना और दूसरे उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री कल्याणसिंह के सचिव नृपेन्द्र मिश्र को सी. आई. ए का एजेन्ट बताना।

इन दोनों कारणो से संघ के नेता डा. जोशी को पचा नही पा रहे हैं। चर्चा है कि शायद डा. जोशी को संघकी नाराजी के कारण भाजपा का अध्यक्ष पद भी छोड़ना पड़े क्योंकि संघ ने इस पद हेतु राजस्थान के मुख्यमन्त्री भेरोसिंह शेखावत को योग्य मान लिया है। राजमाता की पहली पसन्द भी श्री शेखावत हैं।

बताया जाता है कि श्री शेखावत के नाम पर अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी को भी कोई एतराज नहीं है। किन्हीं कारणों से फिलहाल इस तुरुप के इक्के को गोपनीय ही रखा गया है।

गौरतलब है कि संघ नेताओ का श्री शेखावत से खुश होने का कारण यह है कि श्री शेखावत अपने राज्य में संघ के नेताओं और कार्यकर्ताओं को पूरा सम्मान देते हैं। श्री शेखावत संघ की भावनाओं का आदर करते हुए हर काम करते हैं। लेकिन यह बात अन्य भाजपा सरकारों के साथ नहीं है।

संघ के नेता उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री कल्याणसिंह को इसलिए दोषी नही मानते क्योकि सघ के आला नेताओ की धारणा है कि डा. मुरली मनोहर जोशी कल्याणसिंह को स्वतन्त्रतापूर्वक काम करने नहीं दे रहे।

सघ के बड़े नेताओ की सबसे बड़ी नाराजी मध्यप्रदेश तथा हिमाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्रियो से है। (हिन्दुस्तान १० अक्तूबर से साभार)

जिन्दा व सुक्खा को फांसी दी गई

पुणे, ९ अक्तूबर। पूर्व थलसेना अध्यक्ष जनरल ए. एस. वैद्य की हत्या के मुजरिम कट्टर आतंकवादी हरजिन्दरसिंह उर्फ जिन्दा और सुखदेवसिंह उर्फ सुक्खा को आज तड़के यहा फासी दे दी गयी।

महानिरीक्षक (जेल) श्री एम. एन. सिंह ने पत्रकारो को बताया कि इन दोनो को फांसी यरवदा सेंट्रल जेल मे आज तड़के ४ बजे दी गई।

श्री सिंह ने बताया कि इन दोनो के शवो का अन्तिम संस्कार सिख धर्म की परम्पराओ के अनुसार किया गया, जिसमें उनके अभिभावकों, निकटस्थ सम्बन्धियो और ग्रन्थियो ने भाग लिया। मुख्य जेल से लगभग एक किलोमीटर दूर मोला नदी के किनारे पर अन्त्येष्टि की गई। इनकी अस्थियां इनके रिश्तेदारो को नही सौंपी जाएंगी और उन्हें इस नदी मे प्रवाहित कर दिया जाएगा।

इन दोनो को फासी दिये जाने के बारे मे नई दिल्ली मे पिछली देर रात तक भ्रम बना था। उनको मांफी देने के लिए राष्ट्रपति को दो याचिकाएं सौंपी गई थी। उच्चतम न्यायालय में भी तीन नई याचिकाएं पंजीकृत की गई थी।

उच्चतम न्यायालय ने इससे पहले कल दिन मे जिन्दा और सुक्खा के खिलाफ फैसले और सजा को चुनौती देने वाली एक अभियुक्त करमजीतसिंह की याचिका खारज कर दी थी। यहां जेल अधिकारी फांसी देने के लिए पूरी तैयारी कर चुके थे।

अधिकारियो ने बताया कि दोनो मुजरिमो को यहां सेंट्रल जेल मे फासी देने के लिए तीन जल्लाद बुलाए गए थे।

इन हत्यारों को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच फांसी दी गई। सेंट्रल जेल जाने वाली सभी सड़को को बन्दकर दिया गया था। किसी अप्रिय घटना को रोकने के लिए वरिष्ठ अधिकारी रात भर लगाई गई गश्त का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण करते रहे। हथियार पहुंचाने के एक प्रयास को पुलिस द्वारा विफल किए जाने के बाद जेल और उसके आसपास सुरक्षा प्रबन्ध कड़े कर दिए गए थे।

उच्चतम न्यायालय ने जनरल ए. एस. वैद्य की हत्या के आरोप में सुखदेव सिंह सुक्खा और हरजिन्दरसिंह जिन्दा को मृत्युदण्ड की सजा की पुष्टि १५ जुलाई को की थी।

न्यायमूर्ति अहमदी और न्यायमूर्ति रामस्वामी ने अपने फैसले में कहा कि जिन्दा और सुक्खा ने बयान दिया था कि वे आपरेशन ब्ल्यू स्टार के लिए जनरल वैद्य को जिम्मेदार मानते है। उन्होने सिखों के पवित्र स्थल को क्षतिग्रस्त किया और उनके इस गम्भीर अपराध की सजा मृत्यु ही हो सकती है।

दोनों अभियुक्तों ने इसी आधार पर अपना जुर्म न स्वीकार करना जारी रखा, जब कि साथ ही साथ वे यह स्वीकार करते रहे कि उन्होंने जनरल वैद्य की हत्या की है।

पाक लड़ाकू विमानों ने अपना ही जम्बू जेट मार गिराना चाहा!

इस्लामाबाद, ५ अक्तूबर। अखबार 'जंग' मे प्रकाशित एक सनसनी खेज रिपोर्ट के अनुसार पिछले सप्ताह पाकिस्तानी वायु सेना के ए-१६ लड़ाकू विमानो ने पाकिस्तानी वायुसेवा (पी आई ए) के एक ७४७जम्बो जेट को लगभग मार ही गिराया था।

यह घटना तब हुई जब पाकिस्तानी वायु सेवा का ७४७ जम्बोजेट रास्ता भटक कर कहूटा परमाणु सयंत्र के ऊपर पहुंच गया। परिणाम स्वरूप दो एफ-१६ लड़ाकू विमानो ने जम्बो जेट को घेर लिया और उसे मार गिराने की धमकी दी। जम्बो जेट के पायलट को दो बार रास्ता बदलने और कहूटा की वायु सीमा से बाहर निकलने के आदेश दिए गये, परन्तु पी. आई. ए. के पायलट का कहना था कि वह ठीक रास्ते पर है और उसने एफ-१६ के फाइटर पायलेटों को अपनी उड़ान का विवरण भी दिया। इस पर वायुसेना के पायलटों ने कहा कि यदि पी आई. ए. कमाडर अपना रास्ता नहीं बदलता तो वे उसे मार गिरायेंगे।

इस पर खतरा महसूस करते हुए पी. आई ए कमांडर ने उत्तर दिशा की ओर अपना विमान मोड़ लिया। इसके बाद एफ-१६ पायलटो ने पी. आई. ए. ७४७ के कमाडर को विमान उतारने और वायुसेना गुप्तचर संगठन को रिपोर्ट करने को कहा।

जंग के अनुसार इस घटना के बाद कहूटा के आसपास सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है और गुप्तचर सस्थाओ को सतर्क कर दिया है। पाकिस्तान की वायुसेना गुप्तचर सस्था ने ७४७ विमान के कप्तान से पूछताछ की।

इस्लामाबाद से ३५ कि मी. पूर्व स्थित कहूटा परमाणु अनुसंधान प्रयोगशाला विश्व की सर्वाधिक सुरक्षा प्रदान की हुई प्रयोगशाला है। सयंत्र के चारों ओर जमीन से हवा मे मार करने वाली मिसाइल लगी हुई हैं। पाकिस्तानी सरकार संयंत्र की सुरक्षा आवश्यकताओ के प्रति काफी सजग है क्योकि यह पाकिस्तान की सर्वाधिक महत्वपूर्ण परमाणु सुविधा है। पाकिस्तान के रक्षा सचिव सलीम अब्बास फिलानी से जब इस सम्बन्ध में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसी किसी घटना की जानकारी नही है।

जमीन वापसी के फैसले से ईसाई मिशनरियों में हड़कंप

चर्च के कब्जे से साढे चार अरब की जमीन वापस ली जाएगी

चर्च पर धोखाधडी, जालसाजी और झूठा बयान देने का आरोप प्रमाणित

—विनय पाठक

राची। जनजातीय क्षत्रो मे ईसाई मिशनरियो ने अपना जाल फला रखा है। इन मिशनरियो ने आजादी के पूव अग्रजो की सरकार के सहयोग से तथा बाद मे भारत की सेकुलर सरकारकी मदद से इस क्षत्र की हजारो एकड भूमि पर कब्जा कर लिया था। सिर्फ राची शहर मे ही ईसाई मिशनरी के कब्जे में लगभग एक हजार एकड से अधिक जमीन है। इसमे से लगभग आधी जमीन तो शहर के सबसे महगे क्षत्र शहर के मुख्य माग व पुरुलिया रोड के किनारे हैं। विभिन्न ईसाई मिशनरियो मे से एक गोस्नर इवैन्जेलिकल लुथेरन चच (जी० ई० एल० चच) के कब्जे मे ही मुख्य माग के बगल मे १२० एकड से कुछ अधिक जमीन है। पर प्रशासन द्वारा ध्यान न देने के कारण इन चर्चो द्वारा जमीन का धडल्ले से दुरुपयोग किया जाता है।

इस क्रम मे निश्चय ही भाजपा नेता व पूव विधायक प्रो० ननी गोपाल मित्रा की प्रशसा की जानी चाहिये उन्होने चच द्वारा जमीन के दुरुपयोग की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट किया और न्यायालय म इस सम्ब ध मे मुकदमा भी लडा प्रो० मित्रा की तत्परता के कारण ही गत दिनो राची के उपायक्त न्यायालय न जी०ई०एल० चर्च के कब्जे मे लगभग साढ चार अरब रुपये मूल्य की ८९ २५ एकड जमीन वापस लने का निणय सुनाया। फसल के अनुसार जी०ई०एल० चच परिसर का ८९ २५ एकड जमीन सरकार द्वारा चच के कब्जे से वापस ले ली जाएगी। मुख्य मार्ग के बगल की उक्त जमीन पर ही चच प्रबन्धन द्वारा व्यावसायिक दृष्टिकोण से बनवाई गई कई दुकान करोडो की लागत से बना वातानुकूलित बाजार है। उपायक्त न्यायालय के इस आदेश के कारण जी ई०एल० चच प्रबन्धन तो बौखला हो गया है जनजातीय क्षत्र म काय कर रही अन्य ईसाई मिशनरियो के बीच भी खलबल मच गई है।

उपायक्त सधीर प्रसाद न यायालय के मुकदमा सख्या ३९५ ७९ पर फसला सुनाते हुए कहा कि जी०ई०एल० चच प्रबन्धन के कब्जे में अब मात्र १२२६६० २८ वग मीटर ३० २ एकड जमीन रहेगी। प्रबन्धन को शेष ३५४१५८ ४० वगमीटर ८९ २५ एकड जमीन सरकार को लौटानी होगी। चच के कब्जे म अभी तक ४७६८४८ ६६ वग माटर १२० १७ एकड जमीन थी। फसले म कहा गया क नियमानसार जमीन का कब्जे मे लने के लए जमीनो पर बने भवनो को गिरान पर आने वाली लागत भी चच प्रबन्धन से ही वसूली जायेगी। न्यायालय की नजर म १९ ६ के बाद उक्त चच परिसर मे निर्मित भवन अवध तराके से बनाये गये हैं अत म सम्बन्ध म किसी भी प्रकार के मुआवजे का कोई प्रश्न नही है न्यायालय ने चच प्रबन्धन के कब्जे मे जिस ३० २ एकड जमीन रख रह का आदेश दिया है उस पर बिशप हाउस कल कानज खल का मदान व चच बने ०ए हैं तथा नका उपयोग शक्षणिक सामाजिक तथा धार्मिक कार्यो म होता है। शष ८९ २५ एकड जमीन का चच प्रबन्धन व्यापारिक और व्यावसायिक लाभ क दृष्टिकोण से गलत उपयोग कर रहा है ऐसा न्यायालय का मानना है।

ब्रिटिश कृपा का फल

उल्लखनीय है क १९१ के पूव तक राची मन रोड के किनारे की यह जमीन जमन इवन्जेलिकल लुथेरन मशन (जी०ई०एल मिशन की थी परन्तु १९१ के बाद तत्कालीन अग्रजी सरकार न इस सम्पत्ति को जब्त कर लिया।

परिणामत एनेमी एक्ट के तहत भारत सरकार का इस सम्पत्ति पर कब्जा हो गया। प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होनेक बाद १ अक्तू १९१९ को यह सारी सम्पत्ति जमीन व जमीन पर बने भवन आदि) मशन ट्रस्ट आफ नादन इण्डिया को हस्तातरित कर दी गई। हस्तातरण के क्रम म तयार किये गए समझौते मे यह तय किया गया कि सम्पत्ति पर मालिकाना हक भारत सरकार का ही रहेगा तथा सका उपयोग सिफ धार्मिक व शक्षणिक काय म ही हो सकेगा।

उपायुक्त न्यायालय ने जमीन वापसी के सम्बन्ध मे फसला देकर ईसाई समुदाय मे हडकम्प मचा दिया है क्योकि सभवत भारत मे पहली बार किसी चच के कब्जे से इस प्रकार जमीन वापसी का आदेश निगत हुआ है।

समझौते मे यह बात स्पष्ट रूप म कही गयी थी कि गवनर जनरल की पूर्वानुमति के बिना मिशन ट्रस्ट इस जमीन का अपनी मर्जी से हस्तातरण बिक्री या किसी को पटटे पर नही दे सकताहै इसके साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया था कि जमीन का उपयोग सिफ धार्मिक व शक्षणिक कार्यों मे ही किया जायेगा व्यावसायिक या लाभप्रद कार्यो मे नही इस समझौते को१९२१ मे एक्ट १८ के तहत तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने अनुमोदित किया था और तभी से यह जमीन सम्बन्धी कानन का एक अग बन गया।

१९२९ म मिशन ट्रस्ट की पूरी सम्पत्ति ट्रस्टियो के एक मण्डल को हस्तातरित कर दी गई तथा ट्रस्टियो के मडल न १९४० म इस सम्पत्ति का हस्तातरण गोस्नर इवन्जेलिकल लथरन चच (जी०ई०एल० चच) को कर दिया। ये दोनो हस्तातरण १३ अक्तूबर १९१९ के समझौते के अनुसार गवनर जनरल की अनुमति से किये गये। १९४० के बाद से इस सम्पत्ति का उपयोग जी० ई० एल० चच ही करता रहा है। यहा यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि

शेष पृष्ठ ६ पर

ईसाई मिशनरियो मे हड़कंप

(पृष्ठ ५ का शेष

जी०ई०एल० चच व जी० ई० एल० मिशन अलग अलग स्वतन्त्र सगठन है और इनका परस्पर कोई सम्बन्ध नही है। जी०ई०एल० चच सोसाइटी पजीकरण अधिनियम १८६० के तहत १९२१ मे निबन्धित सोसाइटी है।

चच के भक्तों का विरोध

१९७६ के पूव तक जी०ई०एल० चच प्रबन्धन अपन कब्जे की १२० १७ एकड जमीन का मनमाना उपयोग करता रहा परन्तु १९७६ मे राची जिला प्रशासन के ध्यान मे यह बात आई कि राची मे एक ओर जमीन की कमी बढती जा रही है दूसरी ओर जी ई एल चच प्रबन्धन के पास काफी जमीन फालतू पडी है। चूकि जमीन पर मालिकाना हक भारत सरकार का था जमीन खाली व उपयोग रहित पडी है अत उपायुक्त सह सक्षम पदाधिकारी ने जी ई एल चच प्रबन्धन को एक नोटिस जारी किया कि क्या नही इस खाली जमीन को भारत सरकार वापस अपने कब्जे मे ले ले। इस नोटिस के कारण चच प्रबन्धन बौखला गया क्योकि राची मेन रोड के किनारे की ८६ २५ एकड जमीन का हाथ से निकल जाना निश्चय ही चच प्रबन्धन के लिये काफी बडी बात थी। वतमान समय मे इस स्थान पर एक एकड जमीन की कीमत लगभग पाच करोड रुपये है। इस हिसाब से इस जमीन के हाथ से निकल जाने से चर्च प्रबन्धन को अरबो का नुकसान होता। अत आनन फानन मे जी ई एल चर्च के तत्कालीन प्रमुख अध्यक्ष स्व० रेवरड मार्टिन टटे ने योजना बनानी शुरू कर दी। अत तत विभिन्न दलो म रह चुके राजनीतिक नेता(अभी बिहार प्रदेश काग्रेस काय समिति के सदस्य) व्यवसायी व बहुचर्चित रेवरड मार्टिन टेटे हत्याकाड के प्रमुख अभियुक्त रोशनलाल भाटिया तथा झारखण्ड पार्टी के अध्यक्ष निरल एनम होरो के सुझाव पर स्वर्गीय टेटे न खाली व उपयोग रहित भूमि पर दुकानें बनाने का निश्चय किया।

चच के कब्जे की जमीन पर दुकान परिसर बनान के निणय का अन्य लोगो ने तो विरोध किया ही चर्च के अनुयायियो न भी विरोध किया। परतु इस विरोध का चच प्रबन्धन पर कोई असर नही पडा और उसन निर्माण काय शुरू करवा दिया। फलत श्री ज्योति प्रकाश मिज श्रीमती एनम खलखो व श्रीमती आशा तिर्की ने राची के उपायुक्त न्यायालय मे एक मामला (केस सख्या—५९ आर २८) दायर कर दिया। मामले मे चच के अध्यक्ष व सचिव को दोषी बताते हुए कहा गया कि यह जमीन सिफ शैक्षणिक व धार्मिक कार्यो म ही उपयोग की जा सकती है अत चच प्रबन्धन इस जमीन पर दुकान परिसर बनवाकर गलती कर रहा है। उन्होने कहा कि इन काय से परिसर का धार्मिक व शैक्षणिक माहौल भी बिगडेगा।

झूठा शपथपत्र

यहा यह याद रखना आवश्यक है कि १९१९ के पूव यह पूरी सम्पत्ति जमन इवेंजेलिकल लुथरन मिशन (जी ई एल मिशन) की थी और इसका गोस्नर इवैन्जेलिकल लुथरन चच (जी ई एल चच से कोई सम्बन्ध नही था। १९१९ के बाद उस सम्पत्ति पर भारत सरकार का मालिकाना अधिकार हो गया तथा गोस्नर इवैन्जेलिकल चच जो१९२१मे निबन्धित हुई थी का अभी महज इस जमीन पर शैक्षणिक सामाजिक व धार्मिक कार्यो के उद्देश्य से कब्जा है। परन्तु चूकि दोनो सगठनो का सक्षिप्त नाम जी ई एल ही है अत चच प्रबन्धन केस सख्या ५९ आर/८८ म उपायक्त न्यायालय ने चच प्रबन्धन के पक्ष मे फैसला दे दिया।

भाजपा नेता व पूव विधायक प्रो० ननी गोपाल मित्रा इस मामले मे १९८७ मे हस्तक्षेपक (इटरवेनर के रूप मे आए। प्रो० मित्रा के इस प्रकार मुकदमे मे शामिल होने का जी ई एल चच प्रबन्धन न विरोध किया और कहा कि मामल मे प्रो० मित्रा शामिल नही हो सकते। परन्तु उपायुक्त न्यायालय ने इस विरोध को नामजूर करते हुए व्यवस्था दी कि राष्ट्रहित से सबधित मामले मे कोई भी नागरिक मुकदमे मे हस्तक्षेप कर सकता है।

मामला स० ३९५।७६ मे हस्तक्षेपक के रूप मे प्रो० मित्रा ने दलील दी कि चच प्रबन्धन का खाली जमीन पर दुकान-परिसर व वातानकूलित बाजार बनान का फसला गलत था। अत तिथियां जल्दी जल्दी पडने लगी। झूठ आलरटी और धोखाधडी के आरोप प्रमाणित होने के बाद अब चर्च के अधिकारी पूरे मामल को साम्प्रदायिक रग देकर छूटना चाहते है।

८९ के आम चुनाव म राजीव गाधी से सत्ता छिन गई परन्तु उनका दबदबा तब भी कायम था अत यह मामला ठडा ही पडा रहा। १९९१ के अत मे यह मामला पुन गर्म हुआ और न्यायालय मे सुनवाई क तिथिया जल्दी जल्दी पडन लगी।

चच के कब्जे की जमीन पर दुकान परिसर का निर्माण कर चच प्रबन्धन तो विवाद मे फस ही गया है चच के अनुयायियो को अपने प्रमुख अध्यक्ष को भी इसी कारण गवाना पडा है। पुलिस का मानना है कि दुकान परिसर को पटटे पर देने और अर्जित लाभ के बटवारे के मामल मे चच के पूव अध्यक्ष रेवरड मार्टिन टेटे का रोशनलाल भाटया से विवाद हो जान के कारण हो उनकी हत्या कर दी गई। इस हत्याकाड म पुलिस ने भी भाटिया को प्रमुख अभियुक्त बनाया था और श्री भाटिया को कई दिन तक जल मे रहना पडा था। हत्याकाड का मामला अभी भी चल रहा है।

पूरे प्रकरण का साराश यह है कि उपायुक्त न्यायालय ने जमीन वापसी के सम्बन्ध मे फसला देकर ईसाई समुदाय म हडकम्प मचा दिया है क्योकि सभवत भारत म पहली बार किसी चच के कब्जे मे इस प्रकार जमीन वापसी का आदेश निगत हुआ है। इस मिशनारया इस खबर को यथासभव दबाने का प्रयास कर रही है ताकि अन्य स्थानो पर भी उसके अवैध कब्जे को लोग चुनौती न देन लग।

यह शर्तो मूलहदबदी कानून का स्पष्ट उल्लघन है। परन्तु चच प्रबन्धन ने कानून की अवज्ञा करते हुए न कवल दुकान परिसर व वातानकूलित बाजार का निर्माण कया वरन दुकानो को तीस वष के पटटे पर कई लोगो को दे दिया। इस दुकान परिसर की योजना का राची क्षत्रीय विकास प्राधिकरण न चच प्रबधन द्वारा प्रस्तुत शपथपत्र के आधार पर अनुमोदित किया था। मामल की सुनवाई के दौरान न्यायालय ने उक्त शपथपत्र को भी झूठा करार दिया।

२१ जुलाइ १९८८ को राज्य विधान सभा मे भाजपा विधायक सत्य नारायण दुधानी ने एक अल्पसूचित प्रश्न के माध्यम से इस मुद्दे को उठाया जिस पर सम्बन्धित मन्त्री श्री धीरज ने स्वीकार किया कि चच प्रबधन ने बिना किसी पूव अनुमति के निमाण काय शुरू करवाया था जो कि नियमो का उल्लघन है। इसके बाद मन्त्री के निदश पर राची के उपायुक्त ने पुन निर्माण काय पर रोक लगा दी।

दुकान परिसर व वातानकूलित बाजार के निर्माण काय पर रोक लग जान से परेशान चच के प्रमुख अध्यक्ष रेवरड मार्टिन टेटे ने तत्कालीन प्रधान मन्त्री राजीव गाधी से गुहार की।

इस पत्र के जवाब मे राजीव गाधी के उपसचिव एस एस अहलावत ने २३ अगस्त ८८ को राची के उपायुक्त को एक पत्र (पत्राक २ ३ पी एम पी १११।५९४९३७) भेजकर मामले मे हस्तक्षप न करन क निर्देश दिया। परिणाम स्वरूप यह मामला ठडे बस्ते मे चला गया।

दूसरी ओर खबर है कि इस मुद्दे के कारण अब ईसाई मिशनरी भी लालू यादव के खिलाफ हो गई है। गत दिनो लालू और बिहार के प्रशासन पर साम्प्रदायिक ताकतो के दबाव म निणय लेने का आरोप लगाते हुए इन ईसाई सगठनो ने इका के केन्द्रीय नेताओ के यहा अपनी शिकायत दज की। प्रधान मन्त्री गृहमन्त्री सहित कई केन्द्रीय मन्त्रियो से ईसाई नेता मिल चुके हैं। इतना ही नही केन्द्र सरकार पर दबाव डलवाने के लिये ईसाई नेताओ ने अपने अन्तर्राष्ट्रीय त त्र का भी उपयोग किया है। उल्लेखनीय है कि ये ईसाई सगठन पहले से ही पृथक झारखण्ड राज्य की माग के समर्थक रहे हैं और गत दिनो चव्हाण के बयान के बाद इका और इन ईसाई सगठनो का मेलजोल और बढ गया है। परिणामस्वरूप अब तक चल रहे ईसाई मिशनरी लालू गठबन्धन मे दरार आ गई है। (पाञ्चजन्य ११ अक्तूबर से साभार)

हिदायतुल्लाह मुसलमान थे या काफिर ?

वेदप्रकाश भाटिया

मुस्लिम पत्रो मे छीटाकशी

भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा उपराष्टपति मुहम्मद हिदायतुल्लाह का ८७ वर्ष की आयु मे गत १८ सितम्बर को मुम्बई मे देहान्त हो गया। देश भर मे उनके निधन पर शोक प्रकट किया गया परन्तु वह अपने मुस्लिम जगत मे विशेषकर उर्दू पत्रो के लिए एक बहुत बडी समस्या छोड गए। समस्या इतनी जटिल हो रही है कि शीघ्र ही यह एक बवडर का रूप धारण कर सकती है।

समस्या यह है कि देहावसान के पश्चात हिदायतु लाह महोदय को मरहूम (स्वर्गीय) कहा जाए या केवल आजहानी अर्थात इस जहान से कूचकर गए जिसका सीधे शब्दो मे अर्थ है कि वह हिन्दू काफिर थे या मुसलमान मोमिन। क्योकि उनकी वसीयत के अनुसार उनके मत शरीर का दाह सस्कार किया गया।

यहा एकमात्र अल्लाह के एकमात्र रसूल द्वारा प्रकाशित एकमात्र सच्चे मजहब से वचित अज्ञानी काफिरो के ज्ञ न वर्धन के लिए बता दिया जाए कि इस सर्वश्रेष्ठ मजहब के अनुसार मरने के बाद केवल सच्चे मुसलमान ही मरहूम अर्थात अल्लाह की रहमत अथवा मेहरबानी को प्राप्त माने जा सकते है। इस प्रकार मरणोपरान्त केवल वही अल्लाह को प्यारे हो सकते है। शरीर के जल जाने के पश्चात काफिरो की रूहे कहा कूच कर जाती है इससे उनको कोई सरोकार नही। हा इतना पता है कि वह अल्लाह के घर नही पहुच सकती। परन्तु मुसलमानो के शरीर रूहो सहित कब्रो मे सुरक्षित रहते है कयामत अथवा रोजे हिसाब आने तक

पेचदार व्याख्या

खैर यह समस्या अब यू उत्पन्न हुई कि नेहरू खानदान के उर्दू दैनिक कौमी आवाज ने अपने २० सितम्बर के सम्पादकीय मे न्यायमूर्ति हिदायतुल्लाह को श्रद्धाजलि देते हुए उन्हे बार बार मरहूम की पदवी दे दी और इस पर आग बबूला होकर एक और काग्रेस समर्थक मुस्लिम दैनिक

ने एक सम्पादकीय मे कौमी आवाज की कडी निन्दा की और श्री हिदायतुल्लाह के विषय मे कहा कि ऐसे लोगो को जो इस्लामी ढग से दफन नही होना चाहते अपने जीवनकाल मे ही हिन्दू हो जाना चाहिए।

विवाद को आग बढाते हुए जमीयत उलेमा के एक मौलाना इखलाख हुसन कासिमी ने इसी कौमी आवाज पत्र मे एक लम्बे डेढ कालम के पत्र मे कहा है कि हिदायतुल्लाह का दाह सस्कार शायद उनकी अपनी वसीयत के अनुसार नही अपितु उनकी हिन्दू पत्नी के निर्देशानुसार किया गया है। इस छीटाकशी के अतिरिक्त मौलाना कासिमी ने श्रीमती पुष्पा हिदायतुल्लाह पर और भी तानाबाजी की है। मौलाना का कहना है कि एक बार कुछ मुसलमान नेता श्री हिदायतुल्लाह साहिब से देहली मे उनके निवास स्थान पर मिलकर आए तो उन्होने (मौलाना कासमी को) बताया कि जनाब श्री हिदायतुल्लाह ने एक अलमारी के ऊपर पडे कुरान मजीद की ओर इशारा करके कहा कि देखो मैं इसका नियमित पाठ करता हू परन्तु मेरी बीवी बहुत सख्त मिजाज की है। उससे बचाकर पढता हू। किस्सा कोताह यह है कि इस घटना का और इस्लामी नियमो की एक पेचदार व्याख्या करते हुए मौलाना ने फतवा दिया है कि जनाब हिदायतुल्लाह मरणोपरान्त मरहूम कहलाने के हकदार थे यद्यपि कब्र मे दफन मुसलमानो को ही कयामत के दिन बिगुल बजने के बाद ही खुदा की कचहरी मे हाजिर किया जाएगा। मौलाना ने यह नही बताया कि कयामत का वह शुभ दिन कब आएगा और मुर्दे कब तक दफन रहेगे। परन्तु एक कवि ने व्यग्य मे यह अवश्य शिकायत की है —

> खुदाया देर क्या है हश्र के होते होते।
> पसलियां दुखने लगी कब्र मे सोते सोते ।।
> (हश्र खुदा के दरबार मे हिसाब का दिन)

कवि को शायद चिन्ता थी कि जाने कितनी सदिया उस जन्नत की प्रतीक्षा करनी पडेगी जहा शहद खाने लम्बे लम्बे वृक्षो की छाया मे आराम करने और सुन्दर हूरो से विलास करने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं होगा। और शायद इस निकम्मे और विलासपूर्ण जीवन की कल्पना से घबराकर विख्यात अग्रेजी नाटककार बरनार्ड शा ने कहा था कि सब भले और उद्यमी लोग नर्क मे जाते है

नेहरू भी रहमत से वचित

कुछ भी हो मरहूम और आजहानी के इस विवाद मे कौमी आवाज की शामत आई लगती है। पत्र (जो कि दिल्ली के अतिरिक्त लखनऊ और पटना से भी छपता है) के प्रधान सम्पादक एक मुस्लिम सज्जन है परन्तु दिल्ली सस्करण के स्थानीय सम्पादक हिन्दू है जिन्हे पहले भी आलोचना झेलनी पडी है। अब पता नही कि जनाब हिदायतुल्लाह को मरहूम की उपाधि देने की धृष्टता किसने की परन्तु इस पत्र के स्थानीय सम्पादक मुस्लिम भावनाओ का आदर करने मे किसी कठमुल्ले से कम नही उदाहरणतया नेहरू खानदान की मलकियत होने के बावजूद इस पत्र मे एक ही लेख अथवा एक ही रिपोर्ट मे जवाहरलाल अथवा इन्दिरा गाधी के लिए आजहानी और मौलाना आजाद तथा डा जाकिर हुसन के लिए मरहूम शब्द का प्रयोग देखा गया है अर्थात इस खानदानी पत्र के लिए भी नेहरू खानदान के सर्वोपरि सदस्य खुदा अथवा परमात्मा की रहमत के हकदार नही थे।

और तो और जबसे दूरदर्शन पर ५ मिनट का उर्दू समाचार बुलेटिन आना शुरू हुआ है उसमे भी दिवगत मुसलमानो के लिए मरहूम तथा काफिरो के लिए आजहानी का प्रयोग किया जाता है यह इस लेखक का स्वय का अनुभव है और कह सकता है कि उर्दू एक मजहबी तथा मुस्लिम पृथकतावाद का तेजतरीन हथियार नही

पृथकता का हथियार

स्पष्ट है कि उर्दू भाषा स्वय मे ही एक मुस्लिम मजहबी भाषा बनकर रह गई है। क्योकि उर्दू पत्र अधिकतर मुसलमान ही पढते है इसलिए हर एक उर्दू पत्र को कट्टर नियमो का पालन करना पडता है। इस पद्धति मे केवल एक मात्र अपवाद जालन्धर का हिन्द पत्र हिन्द समाचार है जो एक लाख के करीब छपता है बाकी सब उर्दू दैनिक पत्रो से कही अधिक। और अधिकतर पुराने पजाबी लोगो विशेषकर शरणार्थियो द्वारा पढा जाता है। वास्तव मे स्वतन्त्र भारत मे उर्दू को जीवित रखने का श्रेय इन शरणार्थियो को ही जाता है क्योकि अग्रेजो के राज्यकाल मे उर्दू अनिवार्य रूप से पहली कक्षा से पढाई जाती थी। परन्तु नई हिन्दू पीढी उर्दू से पूर्णतया अनभिज्ञ है।

कई मुसलमान लेखक यह मानते है कि उर्दू को केवल पजाब के शरणार्थियो ने ही जिन्दा रखा है यद्यपि अब केन्द्रीय मन्त्री अर्जुनसिंह ने इस मिशन का बीडा उठाया है।

पुन बटेगा पाकिस्तान'

परन्तु अर्जुनसिंह सरीखे वोट बैंक के कैदी यह भूलते है कि उर्दू न केवल भारत के विभाजन का एक बहुत बडा हथियार बनी मिस्टर जिन्ना के कुख्यात १४-सूत्री प्रोग्राम का यह एक भाग था बल्कि पाकिस्तान का विभाजन और बगलादेश का उदय भी बगला भाषी पाकिस्तान के विद्रोह के कारण हुआ। और जैसे कि अब पाकिस्तानी लेखक विशेषकर सिन्धी विद्वान और पत्रकार लिख रहे है अब पाकिस्तान का विभाजन भी उर्दू के कारण ही होगा। उर्दू भाषी महाजर लोग जो अपने आपको पाकिस्तान की पाचवी कौम कहते है पहले ही सिन्ध के बटवारे द्वारा एक नए यू पी (उर्दू प्रदेश) की माग कर चुके हैं। और बेनजीर भुट्टो के अनुसार मुहाजर नेता अल्ताफ हुसन शेख मजीब से भी अधिक खतरनाक सिद्ध होगे। अल्ताफ हुसन जोकि ६ महीने से लन्दन मे आत्म निर्वासित हुए है। ने अभी एक वक्तव्य मे कहा है कि पाकिस्तान मुहाजरो की कुर्बानियो की देन है और इन्हे अपना अस्तित्व सुरक्षित रखने के लिए अन्य देशो को उनकी सहायता करनी चाहिए इशारा स्पष्टत भारत और अमरीका की ओर था। इस सन्दर्भ मे एक रोचक तथ्य यह है कि पिछले (अक्तूबर १९९०) चुनाव मे बेनजीर भुट्टो के हारने के पश्चात उनके ससुर हाकिम जरदारी ने लन्दन मे एक संवाददाता सम्मेलन बुलाकर कहा था कि भारत को सिन्धियो की सहायता करनी चाहिए। हाकिम जरदारी उनके पुत्र आसिफ जरदारी और स्वय बेनजीर भुट्टो के विरुद्ध कई मुकदमे चल रहे है। उनके पति आसिफ सासद होने के बावजूद दो वर्ष से जेल मे है।

जल-संकट का स्थायी हल : यज्ञ

—प० ब्र श्यामन बन शास्त्री वदिक एम ए (द्वय) शोधप्रज्ञ (भागलपुर विश्वविद्यालय)

देश मे अवर्षण अतिवर्षण तथा असामयिक वर्षण के परिणामस्वरूप सूखा बाढ एव अकाल की स्थितिया उत्पन्न होती हैं जिससे देशवासियो को अनेक प्रकार के अभावजन्य कष्ट भोगने पडते हैं और देश की प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप से जन धन सम्पदा व बल बुद्धि की हानिया होती रहती हैं। हालाकि इस दिशा मे हमारे द्वारा सराहनीय प्रय न होते रहते हैं। पर क्या हमारे विगत प्रयत्नो से जल सकट का स्थायी हल हुआ है ?

के द्र से लाखो करोडो एव अरबो रुपयो की सहायता राशि लेकर नलकूपा नहरो तथा तालाबो का जाल बिछा देने मात्र मे जल-सकट का स्थायी हल नही होगा। ये नलकप जितने गहरे लगगे और उत्तरोत्तर गहरे लगते जायेंगे भूजल-स्तर उतना ही गहरा होता जायगा तथा जल सकट प्रतिवष बढता ही जायेगा। अन्तरिक्ष मे मेघो का सचय भी घटता जाएगा एव सहायता राशि पूवपिक्षया दुगुनी चौगुनी व अठगनी बढती ही जायगी अत इसके हल हेतु प्रयत्न अ यावश्यक है कि वर्षा सुखद यथानुकल करायी जाए वस्तुत वर्षा तो ऊपर से होगी तभी यह सकट दूर होगा और भू जलस्तर भी ऊपर उठगा। इस कठिन समस्या के निराकरण हेतु वर्षा कराने एव रोकने के प्रयत्नो का आश्रय लेना होगा और इसके लिए वेदो मे यज्ञ की यवस्था है जिसके अन्त गत पाज ये ष्ट ागेरिष्टि त्रष्यिज्ञ आ के रूप याम ष्टया है जो समग्र रूप मे यज्ञ व ष्ट नमान कह ता है

यज्ञाद भव त ज य गीता १४ म आषव क्य से नम्स देह मन है क यज्ञ से वर्षा होती है यन की पावत्रता द्वारा वायमण्डल के निय त्रण से निकामे निकामे न पज या वषत (यजु० २२ २२ अर्थात जब जब चाहे तब तब वर्षा हो इस आभप्राय से यज्ञो का विधान किया गया है वेदा मे यज्ञ से वर्षा के सकत भी पर्याप्त स्थलो पर मिलते है और इन्ही के आधार पर प्राचीन ऋ षया मुनियो ने यज्ञा द्वारा समय समय पर आव यकतानुसार वर्षा करायी थी वेद मे यह वर्णित है कि यज्ञ वर्षा को बढाने वाला है वर्षवृद्ध मसि-यजु १ १६ यज्ञ स मेरे लये वृष्टि होवे वष्टिश्च मे यज्ञन कल्पन्ताम यजु १८ ९ बरसन ा वादल के लिय यज्ञ करो वर्षा के लिय यज्ञ करो (मेघाय स्वाहा वषते स्वाहा स्वाहोग्र वषते स्वाहा—यजु० २२ २६ इ यादि

यह एक सुप रचित वज्ञ नक नथ्य है कि अ स्न पदार्थो का शोधक भेदक एव विभाजक है यज्ञ मे ी हुई अ न सूय को पहुचती है सूय स वर्षा होती है वर्षा से अ न होन है और अ न मे प्रजा उत्प न होती है वा पा लत पोषित होनी है —

> अग्नौ प्र स्त ति मम्यग ादित्यमुप तष्ठति
>
> आ द या ज यते व ष्टव ष्टर न तत पजा मनु ३ ७६

यज्ञ वपा लाने म कम प्रकार सहायक है इसे समझन हेतु यह जानना आवश्य है र वपा कसे होती है ? वज्ञ नका क अनम र त्र य की ग त का ऊर्ध्वाधर घटक वर्षा के लय मह यक है य द य की ग त ऊर्ध्वाधर भी नही है ता का ाग र ग न म ह ग अ र ा क ान म उपयोगा

सिद्ध होगा। वायु की ऊर्ध्वाधर गति से वाय भी ऊपर उठती है। ऊपर जाने से वायु के अतिरिक्त नमी के बड-बड बिन्दु बन जाते हैं जो भारी होने की वजह से अधिक ऊपर नही जा सकते। अत वे वही बरस पडते हैं। ऊर्ध्वगति होने से वाय मे छोटे और हल्के परन्तु सख्या मे कम बिन्दु रह जाते हैं और वे भी ऊपर चले जाते है। इस प्रकार वहा पर वायु अतिसतप्त हो जाती है तथा वहा इन बि दुओ पर नमी जमनी आरम्भ हो जाती है और बिन्दु बड व भारी बन जाते हैं। भार अधिक होने के कारण वे अधिक ऊचा नही उठ सकते और न ही अधिक ऊचा रह सकते हैं अत वे नीचे गिरना आरम्भ कर देते हैं। जो बिन्दु पहले से बने हुए थ वे उनसे भी नमी ले लते हैं और इतने भारी हो जाते हैं कि पृथ्वी पर बरसने लगते हैं।

वर्षा होने की उपय क्त विधि मे सबसे महत्वपूण बात यह हैं कि रणुकणो की सख्या कम होनी चाहिये अन्यथा वर्षा बिन्दु आकार मे छोटे होगे और बरसगे नहीं अपित बादल के रूप मे आकाश मे ही बने रहेगे। इस बात के साथ यह भी मह वपूण है कि रेणुकणो के सवथा न होन से वर्षा नही हो सकती अत वर्षा के लये रेणकणो का होना आवश्यक है।

वर्षा की अपेक्षित सभी शत यज्ञ से पूरी हो सकती है। जब हम यज्ञ करते ह तो कार्बन के छोटे छोट कण जनम पानी की मात्रा बिल्कुल नही होती छोटे छोटे रेणकणो का काय करत है जिनके ऊपर घी की एक परत जमी हुई रहती है ये जर प्राय विद्य ताविष्ट देख गय हैं इनमे आद्र ता चसन की शक्ति भी होती है जब इनके ऊपर नमी की परत जम जाता है तो और अधिक नमी खिचती चन ज ती है अत ये जर बादल बनान मे सहायक सद्ध होत है

बड बड यज्ञो म वाह पूवक आहुति दने से वाय उष्ण हो जाती है और उसकी ऊर्ध्वग त होनी है द्रष्टव्य है स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभस मारुत गच्छतम (यजु ६ १ । वाय उष्ण होकर ह की होने से घनत्व भी कम हो जाता है और यह ऊपर चली जानी है जो वर्षा के लिए सहायक बन जाती है पूर्वोक्तानुसार वाय मे ऊ र्वाधर गति हो तो वर्षा अ छ होती है। अत यह सिद्ध हो जाता है कि वाय म ऊ वग न उ प न कर के लए यज्ञ अ य त उपयोगी है।

प्राय यह देखा गय है क वर्षा के मौसम मे कई स्थानो पर बादल मडराते रहते हैं परन्तु वर्षा नही होती सभी वर्षा की प्रतीक्षा करते रहते हैं पर नराशा ही हा र लगती है कारण वाय की ऊर्ध्वाधर गति न होना है अस्तु जब तक आवश्यक ऊ र्वाधर ग ति वायु को न होगी तब तक बादलो के बने रहने के बावजूद भी वर्षा नही होगी (क्रमश)

पाकिस्तान में शाही मेहमान बने आतंकवादियों से ऐशो-आराम छिना

अमृतसर। विश्वस्त सूत्रो के अनुसार पडोसी देश पाकिस्तान ने पजाब के आतकवादियो को पिछले महीने से हथियार देने बन्द कर दिये हैं और पाकिस्तानी शहरो मे ठहरे आतकवादियो को दी जा रही सुविधाए छीन ली हैं तथा उन्हे आलीशान बगलो से हटाकर आम होटलो मे ठहरा दिया है। इस समय पाकिस्तान मे वासनसिंह जफ्फरवाल, तेजेन्द्रसिंह रायपुर, जरनैल सिंह जैसे आतकवादियो से सैन्याधिकारियो एव गुप्तचर अधिकारियो के मुलाकात पर पाबन्दी लगा दी गई है।

यह रहस्योद्घाटन वासनसिंह जफ्फरवाल द्वारा अपने सगठन को भेजे ८ पृष्ठो पर आधारित पत्र मे किया गया है। इन्ही सूत्रो ने यह भी रहस्योद्घाटन किया है कि पाकिस्तान ने पिछले कुछ महीनो से पजाब के आतकवादियो को मुह लगाना पूर्णत बन्द कर दिया है यद्यपि इसका स्पष्ट कारण ज्ञात नही हो सका है लेकिन समझा जाता है कि पजाब मे आतकवादियो की हरकतें लगभग ठप्प हो जाने पर पाकिस्तान मे बैठे उनके आकाओ को पाकिस्तानी हमदर्दों की उपेक्षा का शिकार होना पड रहा है। यहा तक कि वासन सिंह जफ्फरवाल से उसको दिया गया अत्याधुनिक सुविधाओ वाला बगला तथा अन्य सुविधाए छीनकर एक साधारण से होटल मे ठहरा दिया गया है। इसके अलावा कई अन्य आतकवादियो से भी ऐसा ही व्यवहार किया गया है। गुरबचन सिंह मानोचहल, वधावा सिंह बब्बर, परमजीतसिंह पजवड के सम्बन्ध मे सूचना मिली है कि यह कुख्यात आतकवादी भारत मे ही कहीं छिप हुए है।

वासन सिंह जफ्फरवाल द्वारा अपने सगठन तथा कथित खालिस्तान कमाडो फोर्स को भेजे एक पत्र मे सगठन के स्वयभू लै जनरल को जी भरकर लताडा गया है और कहा गया है कि पजाब मे स्थिति ऐसी ही बनी रही तो पाकिस्तान हम सब को माफ नही करेगा। ८ पृष्ठो पर लिखे गये इस पत्र की कुछ प्रतिया अभी तक साधारण आतकवादियो को नही बल्कि कुछ लै० जनरल तक ही पहुच पाई हैं। यदि पत्र मे उल्लेखित तथ्य सही है तो इस समय पाकिस्तान सरकार ने भी आतकवादियो को मुह लगाना बन्द कर दिया है क्योकि पिछले छ महीनो से सुरक्षा बलो तथा पुलिस को भारी सफलताए मिली है।

सूत्रो के अनुसार पाकिस्तानी सेना तथा गुप्तचर सगठन ने आतकवादियो से कहा है कि वह हत्याओ और बम विस्फोटो का सिलसिला जारी रखें अन्यथा उनके विरुद्ध कारवाई की जायेगी। इसके साथ ही इन दोनो सगठनो के अधिकारियो की आतकवादियो से मुलाकातो पर भी पाबन्दी लगाई गई है।

अब नारी महज आगन तक सीमित नहीं रही

खण्डवा। गत दिनो श्री महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति की ओर से ग्राम छैगावमाखन मे आयोजित ग्रामीण महिला जन जागरूकता शिविर का शुभारम्भ करते हुए अनुविभागीय अधिकारी श्री आर० के० शर्मा साहब ने कहा कि सेवा जीवन का श्रेष्ठतम गुण हैं और महिलाओ द्वारा जिस ममता के साथ सेवा कार्य किया जाता है उसकी अनुभूति अलग ही होती है। आज की नारी केवल घर आगन तक सीमित नही है वरन प्रत्येक क्षेत्र मे अपनी सफलता के झडे फहरा रही है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र जी आर्य विशिष्ट अतिथि प० गयाप्रसाद तिवारी ने ग्रामीण महिलाओ से आह्वान किया कि वे अपने अधिकारो एव कर्तव्यो का बोध करें। शिविर सम्बन्धी जानकारी सचिव श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल ने दी आभार प्रदर्शन शिविर सयोजिका सुश्री कोकिला खण्डेलवाल ने किया।

इस अवसर पर ग्राम पचायत के सरपच श्री रामचन्द्र जी वर्मा व अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

मां, मैं आर्य-समाजी बनूंगा

मा, मैं आर्य समाजी बनूगा,
पहन खादी वस्त्र सत्सगो मे घूमूगा।
पहले पैदल, फिर साइकिल और कभी कार मे,
आर्यों का नमस्कार स्वीकार करूगा ॥ मा, मैं आर्य

क्या ही सच्चे आर्य की शान है,
करते सभी उसे नमस्कार है।
कोई ऊचे स्वर न बोले,
आर्य के आगे सबका हृदय डोले ॥

यज्ञ सत्सग कराऊगा घर-घर मैं,
आर्य-समाए अनगिनत बुलवाऊगा।
एकत्रित करके सभी आर्य जनो को,
वेदो का प्रचार मैं करवाऊगा ॥

बनूगा ना मा आर्य समाजी मैं,
बोलो कुछ न कुछ बोलो आप भी।

बेटा, तू आर्य समाजी तो अवश्य बनना,
परन्तु मेरी बात को ध्यान से सुनना।
आर्य समाजी का कार्य कोई आसान नही
सस्कार, वेद-प्रचार से कही आराम नही।

सच्चा आर्य समाजी बनकर तुम दिखलाना,
आर्य समाजी नियमो से हर घर आगे ले जाना।
सध्या, हवन प्रतिदिन हर घर मे करवाना,
गायत्री-मत्र का जापकर बुद्धि सत्कर्मो पर ले जाना।

यज्ञ-हवन प्रार्थना ऐसे करवाना जिससे
बढता ही जाए मान आर्य समाज का,
खुशहाली चारो ओर होवे, शात सबके चित्त होवें।
कोई भी ना अनार्य हो सब ओर सुख और शान्ति हो।
रोग से मुक्त हो सब, आर्यसमाज की जय-जयकार हो ॥

—धर्म सिंह कोली, डबल एम० ए०

अखिल भारतीय महिला शिविर

राष्ट्राय युवा योजना एक ऐसा सगठनात्मक ढाचा है जो देश के नौजवानो की शक्ति को रचनात्मक कार्यों की ओर अग्रसारित करता है। इसके निर्देशक एस एन सुब्बाराव, विश्वख्याति प्राप्त प्रसिद्ध गाधीवादी एव सर्वोदयी विचार-धारा के अग्रणी नेता हैं जो विगत ५० वर्षो से राष्ट्रीय युवा योजना के तहत हमारे देश म दर्जनो इसी तरह के शिविरा का आयोजन कर चुके हैं। विशेष तौ प जसे कि नागालेंड, मणिपुर, सिक्किम लक्ष्यद्वीप लद्दाख आसाम पजाब, आदि आ द। अपनी दिनचर्या मे युवा राष्ट्रीय एकता आपसा सदभाव सर्वधर्म प्राथना आ म विश्वास अनुशासन की भावना जागृतकर अपने आप मे उन गुणो का विकास करने हैं जिसमे राष्ट्र का एक आदर्श नागरिक बना सके।

नारो मे सृजन शक्ति एव ममता के मातृत्व के बाहुल्य होने के कारण इस अखिल भारतीय महिला शिविर का महत्व इसलिये ओर बढ जाता है कि राष्ट्रीय युवा योजना के तत्वावधान मे चलने वाले इस शिविर मे १६ से ३५ वर्ष तक का युवतिया समापन के बाद देस के कौने-२ के प्रत्येक गाव व घर घर जाकर इसी तरह के शिविर अपने क्षेत्र मे आयोजित करेंगी जिससे राष्ट्रीय एकता व साम्प्रदायिक सद्भाव के माहोल को भारत मे और अधिक सफलता प्राप्त हा सके।

देश के २५ राज्यो से ४५० युवा महिलायें ७ से १८ अक्टूबर ९२ तक दिल्ली के चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर वेदराज परिसर ब्लाक सी ईस्ट आफ कैलाश नई दिल्ला ६५ मे चलने वाले इस शिविर मे भाग ले रही हैं।]

एतिहासिक एव महत्वपूर्ण अखिल भारतीय महिला शिविर मे आने पर आपको इस वेदराज परिसर मे चल रहे समाज सेवा के विभिन्न कार्यों मे अग्रणी सस्थाओ के अवलोकन का भी अवसर मिलेगा। लगभग १० एकड भूमि मे फैले आशिक पर्वतीय क्षेत्र मे स्थित हरे भरे मैदाना व बगीचा से सुसज्जित यह स्थान नगर के सुन्दरतम एव दर्शनीय परिसर के रूप मे उभरा है। इसमे दो छात्रावास हैं कक्षा छठी से बारहवी तक वे अपनी शिक्षा परिसर मे स्थित चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर विद्यालय मे ग्रहण करती हैं। परिसर मे ही एक योग प्रशिक्षण एव प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र चल रहा है इसमे ३० रोगियो के रहने की व्यवस्था है और बहुत बडी सख्या म बाहरी रोगी इस स्वास्थ्य सेवा का लाभ उठा रहे है। एक वष के डिप्लोमा कोर्स के लिये ४० विद्यार्थियो की आरम्भिक सख्या मे इसी वष से योग एव प्राकृतिक चिकित्सा का चन्द्र महाविद्यालय का शुभारम्भ किया जा चुका है। यह डिप्लोमा कोस योग एव प्राकृतिक चिकित्सा अनुसधान केन्द्र जो स्वास्थ्य मन्त्रालय भारत सरकार के अधीन हैं द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसी परिसर म विशाल यज्ञशाला, पुस्तकालय अनुसधान केन्द्र एव गोशाला है। एक सभागार भी निर्माणाधीन है।

सस्थाओ के अधिष्ठाता शिविर के प्रवक्ता श्री एच ए रघुवशी ने बताया कि इस अखिल भारतीय महिला शिविर का कुशल सचालन सुप्रसिद्ध समाज सेवी एव उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री वीरेश प्रताप चौधरी कर रह है।

– हमीरसिह रघुवशी
प्रवक्ता
राष्ट्रीय युवा योजना

आवश्यकता

मध्यप्रदेश की प्रमुख आर्यसमाज सागर के लिये एक सुयोग्य पुरोहित की शीघ्र ही आवश्यकता है। योग्यता शास्त्री या उसके समकक्ष/उच्चत्तर माध्यमिक स्तर तक सस्कृत पढाने की क्षमता आवश्यक। यदि धर्मपत्नी की शैक्षणिक योग्यता स्नातक तक हो तो आर्य कन्या विद्यालय मे शिक्षिका का पद दे सकते हैं। निवास, विद्युत तथा जल का प्रावधान है। वेतन योग्यतानुसार

आवेदन मे उपाधि, अनुभव, आयु तथा पारिवारिक जानकारी दें।

प्रधान

आर्य समाज के बढ़ते कदम

अठासी वर्षीय स्वामी अमृतानन्द सरस्वती द्वारा मुजफ्फर नगर में प्रचार कार्य

उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग मे वैसे तो आर्य समाज का प्रचार प्रारम्भ से ही सन्तोष जनक रहा है। स्वय महर्षि दयानन्द सरस्वती उत्तर प्रदेश के इस भाग मे कई स्थानो और विशेष रूप से मेरठ और मुजफ्फर नगर मे कई बार पधारे। मुजफ्फर नगर जिले के अन्तर्गत आर्य विद्वान स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती अपनी ८८ वष की अवस्था को भी नजरन्दाज करत हुये कर्मठ योगी की तरह दिनरात मुजफ्फर नगर और आस पास के क्षेत्रो तथा जनता मे वेद प्रचार के लिये सर्वंव प्रयत्न शील रहते हैं। सारी उमर बिना किसी सहारे के स्वामी जी ने अपने व्यक्तिगत बल पर ही समस्त प्रचार कार्य किया है। और गत ६ वर्षो से मुजफ्फर नगर शामली मार्ग पर काजी खेडा ग्राम मे एक भव्य वैदिक वानप्रस्थाश्रम की स्थापना की है। इस आश्रम मे वानप्रस्थियो के लिये कोई शुल्क निर्धारित नही किया गया परन्तु स्वामी जी के कार्यों को देख कर धर्म प्रेमी जनता द्वारा एकत्रित धन से ही यह आश्रम चलता है। इसी आश्रम मे एक नि शुल्क ऋषि दयानन्द बाल विद्यालय भी स्वामी जी द्वारा चलाया जा रहा है। और अभी हाल ही मे एक नि शुल्क आयुर्वेदिक औषधालय भी इसी आश्रम मे शुरू किया गया है। जिससे सैकडो की सख्या मे ग्रामवासियो को स्वास्थ्य लाभ हो रहा है। स्वामी जी के आश्रम का अच्छी नसल की गौओ की एक गौशाला प्रारम्भ करने का भी विचार है।

यह सब महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के त्याग और तपस्या का ही परिणाम है कि उनके अनुयायी व्यक्तिगत रूप मे भी किसी बडी से बडी सस्था से कम नजर नही आते।

जिस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वय एक चलता फिरता आर्यसमाज थे उसी मार्ग पर उनके ये अनुयायी उन्ही के बताये हुये लक्ष्यो की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हैं।

स्वामी जी का कहना है कि आर्य समाज को अब जलसे और अधिवेशनो पर अधिक जोर न देकर अपने-अपने क्षेत्र की एक-एक बुराई और अन्ध विश्वासो की तरफ गम्भीरता से विचार करके उन्हे दूर करने का प्रयत्न करना पडेगा। स्वामी जी जलसे का अथ इस प्रकार करते है कि जो जलसा हो अर्थात जैसे जल आया और गया उसी प्रकार इन कार्यक्रमो का प्रभाव भी आया और गया ही हो जाता है। उनका कहना है कि आर्य-समाजियो को अपना चरित्र और अपनी परोपकारी छवि को मजबूती मे समाज के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिये जिससे लोग उनकी श्रेष्ठता की ओर आकर्षित हो सके। —विमल वधावन एडवोकेट

वार्षिकोत्सव

- आर्य समाज नया नागल का ३२ वा वार्षिकोत्सव १२ अक्तूबर से १८ अक्तूबर ९२ तक अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त आर्य-जगत क प्रसिद्ध विद्वान तथा उपदेशक पधार रह है। समारोह मे अन्य कार्य-क्रमो के अतिरिक्त अनेको सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया है।

- आर्य समाज मुल्तानपुर नैनीताल का ४५ वा वार्षिकोत्सव १० से १२ अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रथम दिवस एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई, जिसका नगर निवासियो पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। समारोह मे आर्य समाज के विख्यात विद्वानो ने अपन अमृतमय उपदेशो से श्रोताओ को लाभान्वित किया।

—आर्य समाज फिरोजपुर झिरका का ४० वा वार्षिकोत्सव १७ से १८ अक्तूबर तक अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य सत्यप्रिय जी के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। समारोह मे सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के अतिरिक्त आर्य जगत के अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

ऋषि निर्वाणोत्सव

रामलीला मैदान नई दिल्ली मे

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे दि० २५ अक्तूबर ९२ को रामलीला मदान दिल्ली मे ऋषि निर्वाणोत्सव प्रात ८ बजे से १२ बजे तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, डा० वाचस्पति उपाध्याय, श्रीमती शकुन्तला आर्या, आचार्य यशपाल सुधाशु, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती सहित आर्य जगत के अनेक विद्वान पधार रह ह। आप सपरिवार एव इष्टमित्रो सहित पधारकर महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करे।

—डा० शिवकुमार शास्त्री, महामन्त्री

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई—श्री ओकारनाथ जी आर्य प्रधान, श्री धर्मवीर जी गुलाटी मन्त्री, श्री कस्तूरीलाल जी मदान कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज बूदी —श्री पीताम्बरलाल शर्मा प्रधान श्री श्रवणलाल मन्त्री, श्री भवरलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज जोगवनी अररिया—श्री सीताराम अग्रवाल प्रधान, श्री पृथ्वीचन्द राय मन्त्री, श्री मागीलाल शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज खडखडी मोहल्ला नारनौल—श्री ईश्वरदास बजाज प्रधान, श्री किशनचन्द्र कटारिया मन्त्री, श्री चन्दनराम जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज हावडा—श्री पुरुषोत्तमलाल जी सर्राफ प्रधान, श्री प्रमोद कुमार जी अग्रवाल मन्त्री, श्री पवन कुमार जी अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का विशाल आयोजन

देश की एकता, अखण्डता, वैदिक धर्म, सभ्यता, सस्कृति की रक्षा, प्रचार, प्रसारार्थ तथा देश मे बढ रहे हिंसक, अशान्त एव दूषित वातावरणके निवारण हेतु दिनाक ३ अक्टूबर, १९९२ से दिनाक ८ अक्टूबर तक आर्य समाज मन्दिर, कृष्णपोल बाजार, जयपुर मे नगर आर्यसमाज जयपुर के तत्वावधान मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का विशाल एव अभूतपूर्व आयोजन किया गया।

इस यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध ओजस्वी वेद व्याख्याता आचार्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती थे।

शनिवार दिनाक ३ अक्टूबर से ८ अक्टूबर तक नित्य प्रात ७ से ९ बजे तक तथा साय ४ से ६ बजे तक यज्ञ व प्रवचन की अमृतवर्षा होती रही।

—भगवती प्रसाद

शोक प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के पूर्व भजनोपदेशक स्व० श्री धर्मदत्त आनन्द, निवासी ग्राम-सर्वागपुर, जनपद-लखीमपुर खीरी की धर्मपत्नी तथा श्री शर्वीन्द्र कुमार मिश्र, आर्य पुरोहित, आर्य समाज सीतापुर की पूज्य माता जी के दिनाक ७-९-१९९२ को हुए आकस्मिक निधन पर आर्य समाज, सीतापुर के साप्ताहिक अधिवेशन मे दिनाक २०-९-१९९२ की यह सभा उनके समस्त परिवार की उस अपूरणीय क्षति एव शोक मे समा। रूप से भागीदार है एव दो मिनट मौन रखकर उनकी मा की अक्षय आत्म शान्ति के लिए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थनावान है। प्रभु श्री मिश्र एव उनके परिवारजनो को धैर्य प्रदान करे। —वी एम चौहान, मन्त्री

आर्य समाज, सीतापुर

पुरोहितों की आवश्यकता

हिमाचल प्रदेश की दो प्रमुख आर्य समाजो के लिये दो कर्मठ तथा सुयोग्य पुरोहितो की आवश्यकता है। अनुभवी एव सस्कृतज्ञ पुरोहितो के लिये निवास स्थान एव योग्यतानुसार मासिक वेतन का प्रावधान है। कृपया पूर्ण विवरण, उपाधि, अनुभव, आयु पारिवारिक जानकारी एव अपेक्षित मासिक राशि की पूर्ण जानकारी, मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ के पते पर भेजे। —मन्त्री सार्वदेशिक सभा

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८-१०-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U 93Post in N D P.S O on 15, 16-10-1992

आदर्श समाजसेवी, वैदिक धर्म के निष्ठावान अनुभवी
९५ वर्षीय वयोवृद्ध

आर्य श्री दानमलजी सिंहवी का नागरिक अभिनन्दन

जोधपुर निवासी सभी नागरिक बन्धुओ तथा आर्यसमाज के सभासदो को महर्ष सूचित किया जाता है कि आदर्श समाज सेवी, ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति अनन्य आस्थावान तथा आर्य समाज के प्रति समर्पित वयोवृद्ध श्रीमान् दानमलजी साहब सिंहवी का अखिल भारतीय स्तर पर अभिनन्दन तथा सम्मान दिनाक १५ नवम्बर १९९२ रविवार को आर्यसमाज सरदारपुरा जोधपुर मे किया जा रहा है।

निवेदन है कि नगर के इस वयोवृद्ध नागरिक के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने हेतु आप तन मन धन से हमे सहयोग प्रदान करे।

—डा० भवानीलाल भारतीय
अध्यक्ष अभिनन्दन समिति

वृष्टियज्ञ सफल

विगत दिनाक ११ १२ सितम्बर ९२ को आर्य समाज पथरगामा (गोड्डा) के तत्त्वावधान मे पथरगामा शिवमन्दिर के प्रागण मे वृष्टियज्ञ का सार्वजनिक आयोजन भागलपुर विश्वविद्यालय के "वैदिक यज्ञो की वैज्ञानिकता" विषय पर शोधकर्त्ता प० ब्र० व्यासनन्दन शास्त्री वैदिक के आचार्यत्व मे बड़े ही धूमधाम से सोत्साह सम्पन्न हुआ। वृष्टियज्ञ की पूर्णाहुति पश्चात् मेघो की तीव्र गडगडाहट के साथ ढाई तीन घण्टो तक भीषण वर्षा हुई। लगभग एक-सवा महीने से अनावृष्टि से जूझ रहे किसानो और आम जनता को इस वृष्टियज्ञ से साक्षात् लाभ हुआ। इस यज्ञ का प्रभाव पश्चिमी और उत्तरी दिशाओ मे भी १०० किलोमीटर तक देखा गया। अस्तु, वृष्टियज्ञ की अपूर्व सफलता से स्थानीय नर-नारियो मे इसका बहुत अच्छा असर हुआ।

रामप्रसाद सेठ अस्वस्थ

आर्य समाज आजमगढ के वरिष्ठ नेता महाशय श्री रामप्रसाद सेठ निवासी पुरानी कोतवाली, आजमगढ अगस्त माम से अस्वस्थ चल रहे हैं। महाशय जी वर्तमान मे आर्य समाज मन्दिर निर्माण समिति के सयोजक है।

अत. परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की जाती है कि वे शीघ्र स्वस्थ हो तथा मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो।

—राजीवकुमार आर्य

प्रवेश

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद का नवीन सत्र १ जुलाई ९२ से प्रारम्भ हो गया है। अपने बच्चो के उज्जवल भविष्य तथा राष्ट्र के लिए योग्य नागरिक बनाने के लिए सिराथू 'क' वर्गीय प्रथम श्रेणी म राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय मे सम्बद्ध हैं। यहा सुयोग्यतम आचार्यों द्वारा प्रथमा (कक्षा ६) से आचार्य (एम०ए०) तक की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है। विद्यालीय पाठयक्रम के अतिरिक्त विद्यार्थियो की दैनिक दिनचर्या प्रात साय हवन, व्यायाम, योगासन नैतिक-शिक्षण धार्मिक शिक्षा धनुर्विद्या, सगीत आदि के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया जाता है।

विशेष जानकारी के लिए कार्यालय से शीघ्र सम्पर्क कर।

—डा० रमामित्र शास्त्री (प्राचार्य)

सचलन को देखकर आश्चर्य चकित रह गये। अमेठी के मुख्य चौक पर राजा रणजय सिंह ने आर्य वीरो का स्वागत करते हुए कहा कि देश को दिशा निर्देश देने हेतु इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर अत्यन्त आवश्यक है।

समापन समारोह मे विद्यालय के समस्त अध्यापको, छात्रो तथा स्थानीय आर्य नेताओ सहित हजारो व्यक्तियो ने भाग लिया। इस समारोह मे बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि युवा वर्ग ही देश की रीढ है यदि युवाओ का चरित्र ठीक रहेगा तभी देश उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकेगा। स्वामी जी ने शिविर के आयोजको का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस प्रकार के शिविरो की सुदूर प्रान्तो मे अत्यधिक आवश्यकता है जहा की जनता और विशेष रूप से युवा वर्ग हमारी प्राचीन आर्य सस्कृति से दूर होता जा रहा है।

आर्य वीर दल फरीदाबाद (मण्डल) की नियुक्तिया सम्पन्न

सर्वश्री होतीलाल आर्य (डीग) मण्डलपति, ओम्प्रकाश आर्य (जवाहर कालोनी) उपमण्डलपति, रामवीरसिंह नाहर एडवोकेट (सैक्टर १०) मन्त्री, ब्र० राजसिंह आर्य (टेम्पर इन्टुमेण्ट) उपमन्त्री, सत्यपाल शास्त्री (दयानन्द पब्लिक स्कूल ५ ई। ५५) कार्यालय मन्त्री, विरेन्द्र आहूजा (सैक्टर सात) प्रचार मन्त्री, हरिबाबू यादव (डबूआ कालोनी) उपप्रचार मन्त्री, अमरजीत सहगल (सैक्टर ६) कोषाध्यक्ष, सत्यप्रकाश अरोडा (एन आई टी न. ४) लेखा निरीक्षक।

दो मुसलमान युवती एक ईसाई युवक वैदिक धर्म में दीक्षित

आदर्श विवाह एव शुद्धि मन्दिर, मागोरथपुरा, इन्दौर मे दो मुसलमान तथा एक ईसाई युवक का शुद्धिकरण किया गया।

१—कु० कनीज ईशाकखान का शुद्धि सस्कार कराकर हिन्दू नाम जया रखा गया उसका विवाह सस्कार राजेन्द्र जैन इन्दौर के साथ कराया गया।

२—नारवट विक्टर का शुद्धिकरण कराकर हिन्दू नाम नीलेश रखा गया।

३—कु० निलोफर मुम्हमद अलीम खान का शुद्धि सस्कार कराकर उसका हिन्दू नाम नीलम देवी रखा गया और उसका विवाह सस्कार सदीप मेहता के साथ सम्पन्न कराया गया शुद्धि सस्कार एव विवाह सस्कार आर्य पुरोहित श्री गुलजारीलाल शर्मा श्री देवप्रकाश जी शर्मा द्वारा कराया गया। इस समस्त कार्य की व्यवस्था शकरसिंह आर्य द्वारा कराई गई।

शुद्धि सम्पन्न

हैदराबाद दिनाक २० ९ ९२ को श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् के घर पर एक बैठक हुई जिसम कुछ ईसाई पादरियो ने भाग लिया, इस अवसर पर वैदिक धर्म व ईसाईमत पर विस्तृत चर्चा हुई। दिनाक २७ ९-९२ को शुद्धि कार्यक्रम रखा गया इसमे तीन ईसाई परिवारो के आठ सदस्यो का शुद्धि का सस्कार कर उन्हे वैदिक धर्म मे प्रवेश दिलाया गया।

— एम० नारायण स्वामी

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- उन्ही के सन्तान विद्वान् सभ्य और सुशिक्षित होते हैं, जो पढाने मे सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते।
- जो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्य-भाषणादि युक्त ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उसको धर्म और जो पक्षपात सहित अन्यायाचरण, मिथ्या भाषणादि, ईश्वराज्ञा भंग, वेद विरुद्ध है उसको अधर्म कहते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक ३६] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१ कार्तिक कृ० १५ सं० २०४६ ।२५ अक्तूबर १९९१

केरल में मोपला काण्ड दोहराने की तैयारी

इस्लामी सेवक संघ की खतरनाक गतिविधियां तेज

नई दिल्ली १६ अक्तूबर।

केरल के त्रिसूर जिला के अन्तर्गत एक हाई स्कूल के चालीस मुस्लिम विद्यार्थियो ने इस्लामी टोपी पहन कर स्कूल में दहशत फैलानी आरम्भ कर दी और स्कूल के प्रधानाचार्य तथा वरिष्ठ अध्यापकों को यह धमकी भी दी गई है कि उनकी गर्दनें काट कर बाजार मे लटका दी जायेंगी। यह सभी छात्र इस्लामी सेवक संघ से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार की धमकियां शिक्षित समाज में अविश्वसनीय लगती हैं। प्रतीत होता है कि कहीं इस प्रकार की घटनाओं से "मोपला कांड" को दोहराने की तैयारी तो नहीं हो रही ? ऐसा भी अनुमान हैं।

दुर्भाग्यवश केरल की राज्य सरकार ने कानून की धज्जियां उड़ाने वाली इस प्रकर की घटनाओं की ओर से आंखें बन्द की हुई हैं क्योकि करुणाकरण की संयुक्त सरकार अपने एक साम्प्रदायिक दल, जिसके समर्थन से वह चल रही है, की नाराजगी बर्दाश्त नहीं कर सकती, क्योंकि यह नाराजगी इस सरकार की अस्थिरता का कारण बन सकती है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि कम से कम इस प्रकार की धमकियों के विरुद्ध सरकार निर्णायक कदम उठायेगी और विद्यालयों के छात्रों में अनुशासन बनाये रखने के लिये हर प्रकार के सुरक्षात्मक उपाय करेगी, जिससे इस्लामी सेवक संघ के इस रवैये से उत्पन्न भय को समाप्त किया जा सके। उल्लेखनीय है कि मुस्लिम समुदाय के लिये सिर पर टोपी धारण करना उतना आवश्यक नहीं है, जिस प्रकार सिखों में पगड़ी धारण करना।

संख्या की दृष्टि से केरल मे हिन्दू, मुसलमान तथा ईसाई लगभग समान हैं जिससे इन सब समुदायोंका सामाजिक आर्थिक तथा राजनैतिक तौर पर एक दूसरे पर निर्भरता सम्भव हो सकी है। केरल के इस संयुक्त परिवार का एक सदस्य यदि विभाजन की मांग करता है तो हो सकता है वह सफल हो जाये परन्तु ऐसा स्वयं उसके लिये ही घातक सिद्ध होगा। इस्लामी सेवक संघ केरल के इस वातावरण को खराब करने का हर प्रयत्न कर रहा है परन्तु यह केरल-वासियों पर निर्भर करताहै कि वे किस प्रकार इन विघटनकारी षड़यन्त्रों को असफल बनातेहैं।

हिन्दुस्तान टाइम्स १६ अक्तूबर मे भी इस आशय का एक वक्तव्य छपा है।

वेदामृत

उत्तम ज्योति प्राप्त हो

आ रोहत दिवमुत्तमाम्, ऋषयो मा बिभीतन। सोमपाः सोमपायिनः, इदं वः क्रियते हविः, अगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥

अथर्व० १८-३-६४

शब्दार्थ—(हे ऋषयः) हे मन्त्रदर्शी ऋषियो, (उत्तमां दिवम्) तुम उत्तम द्युलोक में, (आ रोहत) चढो, जावो। (मा) मत, बिभीतन) डरो, भयभीत हो (हे सोमपाः) हे सोमपान करने वाले, (हे सोमपायिनः) हे सोमरस पिलाने वाले, (वः) तुम्हारे लिए, (इद हविः) यह हवि, (क्रियते) हम करते हैं, डालते हैं।(उत्तमं ज्योतिः,जिससे हम उत्तम ज्योति को, (अगन्म) प्राप्त कर सकें।

अनुशीलन—इस मन्त्र में उत्तम ज्योति की कामना की गई है। इस उत्तम ज्योति के लिए ही यज्ञ किया जाता है। ऋषियों ने यज्ञ किया और इसके फलस्वरूप उन्हें द्युलोक मे उत्तम स्थान मिला। वे भय से मुक्त हो गए। (शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक :
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

तीसरा भारतीय भाषा सम्मेलन पटना में १२ नवम्बर को

नई दिल्ली १६ अक्तूबर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे तीसरे भारतीय भाषा सम्मेलन का आयोजन पटना में किया जा रहा है। यह सम्मेलन बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से पटना के रंगशाला भवन मे होगा। इस सम्मेलन के लिये बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादव को आमन्त्रित किया गया है तथा केन्द्रीय सरकार के ग्रामीण विकासमन्त्री श्री जी० वेंकट स्वामी इस सम्मेलन मे मुख्य अतिथि होंगे। सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा वरिष्ठ उपप्रधान श्री पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव भी इस सम्मेलन मे भाग लेंगे।

समस्त भाषाओं के लिये देवनागरी को अतिरिक्त लिपि के रूप मे विकसित किया जाये इस उद्देश्य को लेकर आर्यसमाज के प्लेट फार्म से वयोवृद्ध आर्य नेता पं० वन्देमातरम् जी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य समाज क्या है ?

—श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी, गुरुकुल भटिण्डा

सनातन धर्म के एक विद्वान् ने बडा सुन्दर कहा था कि हमारे अन्दर अविद्या के कारण, अन्धविश्वास, कुरीतिया, अवैदिक मान्यताए और जहालत रूपी कूडा करकट इकटठा हो गया था, जिसको महर्षि दयानन्द ने स्वय और उसके बाद आर्य समाज ने छलनी कर सब कूडा करकट निकाल कर ससार के सामने हमारा सही स्वरूप, सत्य सनातन वैदिक धम का दिग्दर्शन कराया।

मेरी दृष्टि मे आर्य समाज—

१ घोर निद्रा मे सो रहे हिन्दुओ का आर्य समाज चौकीदार है।

२ रोग ग्रस्त हिन्दुओ का आर्य समाज डाक्टर हैं।

३ विधवा, अनाथो, दलितो, गौ आदि पशुओ का वकील है।

४ दु खियो और पीडितो का सहायक है।

५ ईश्वर उपासना, सन्ध्या, हवन यज्ञ एव वेद का प्रचारक है।

६ जहालत, अविद्या, अन्धविश्वास, कुरीतियो को दूर करने वाला है।

७ सारे ससार (पशु-पक्षियो तक) का उपकारक है।

८ प च यज्ञ, सोलह सस्कार, वर्ण व्यवस्था (जन्म से नही, गुण कर्म, स्वभाव से) चार आश्रमो को पुन प्रचलित करके सभी स्त्री-पुरुषो को देवता के रूप मे देखने का इच्छुक है।

९ हमारे पूर्वजो पर मिथ्या दोष लगाने वालो को ललकारने वाला है।

१० केवल एक ईश्वर (जिसका नाम ओ३म् है) का उपासक है।

११ कोई भी स्त्री-पुरुष जो आर्य समाज के दस नियमो को स्वीकार करे आर्य समाज का सभासद् बन सकता है।

श्रद्धा के सुमन

यो तो जगती मे लाखा मानव जीते मरते हैं।
पर विरल ही मर कर निज नाम अमर करते है॥
कुछ पूर्व जन्म के प्राणी, सस्कार साथ लाते है।
वे बीज योग पाकर ही, वर तरुवर बन जाते है॥
जातियो और देशा मे जो पुरुष महान हुए है।
वे त्यागी और सुधारक ज्ञानी गुणवान हुए हैं॥
सस्कृति के सर्व सुधारक, ससृति ने देखे भाले।
पर दयानन्द ऋषि जन्मे, उन सबमे एक निराले।
तन, धर्म समाज सुद्ध का, दे ज्ञान राजनीति का।
'सत्यार्थप्रकाश' किया, तम हटा कुटिल रीति का॥
उस जगत सुगुरु के गुणनित, गोपाल कथन करता है।
श्रद्धा के सुमन चढाकर, नित चरणो मे धरता है॥

—कविरत्न सिद्ध गोपाल

ओं तमसो मा ज्योतिर्गमय

हे ईश, करुणा सिन्धु तुम ही ज्योति के आधार हो।
दूर कर अज्ञान तम को आत्म ज्योति प्रकाश दो॥
दीप माला की प्रभा यह विश्व को नवज्योति दे।
राग द्वेश कुकम हर कर स्नेह सरिता वारि दे॥
कीर्ति वैभव, स्नेह सदगुण, सौम्य भाव प्रसार दे।
ज्योति शक्ति, परेश भक्ति, शान्ति सौख्य प्रकाश दे॥

—पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी

ज्योतिर्मय हो अवनी अम्बर

दीपावलि के शुभ्र दिवस पर,
आओ ! ऐसी ज्योति जलाए।
सारी भू की गहन तमिस्रा
महि मण्डल से दूर भगाये।
आलोकित करदे जगती को,
ऐसी जगमग रश्मि निकर।
ज्योतिर्मय हो अवनी-अम्बर॥

प्रेम, दया, परहित का दीपक,
घर आगन मे आज जले।
मानवता पथ हो आलोकित
कण्टकरहित तथा उजले।
भ्रमित जगत को ज्ञान प्रभा की
किरण प्रभासित करे प्रखर।
ज्योतिर्मय हो अवनी-अम्बर॥

सत्य अहिंसा-समरसता की,
पावन ज्योति मिल जन-जनको।
दूर हटे अन्याय-अनय सब
मिले, उजाला, कण कण को।
सत्य शिवम् सुन्दरता पूरित--
मिले धरणि को प्रभा प्रवर।
ज्योतिर्मय हो अवनी अम्बर॥

—राधेश्याम आर्य, सुलतानपुर

संसार का उपकार और संसार में वेद प्रचार

आर्य समाज के दो मुख्य उद्देश्य

आय समाज के पजीकरण के समय यह घोषणा की गई थी कि इस समाज का उद्देश्य वही है जो इसके नियमो मे वर्णित है। बम्बई मे निर्मित २८ नियमो मे यह स्पष्ट किया गया था कि सब मनुष्यो के हितार्थ आर्य समाज का होना आवश्यक है। इन शब्दो से यह स्पष्ट है कि आय समाज का उद्देश्य मनुष्य मात्र का हित करना है जो कि किसी वग विशेष, जातीय सम्प्रदाय अथवा देश या काल के लिए नही है। इसी कारण आर्य समाज एक विश्व सस्था बन सका। प० इन्द्र विद्यावाचस्पति के शब्दो मे 'ससार मे इससे बढकर व्यापक उद्देश्य और नही हो सकता।

वस्तुत इससे पहले इतने व्यापक उद्देश्य के बारे मे शायद ही किसी ने सोचा होगा। परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती इससे भी सन्तुष्ट नही थे। उन्होने विचार किया कि मनुष्य, मनुष्य का हित क्यो करे, अन्य प्राणियो का भी क्यो न करे। अन्यथा सर्व भूतेषु आत्मवत की भावना किस प्रकार आ पायेगी। इस लिए १८७७ मे लाहौर आर्य समाज की स्थापना के शुभ अवसर पर स्वामी जी ने बम्बई वाले नियमो मे कई क्रान्तिकारी परिवर्तन करके 'ससार का उपकार करना आय समाज का मुख्य उद्देश्य' घोषित कर दिया।

'ससार का उपकार' के अतिरिक्त ससार मे वेद का प्रचार आर्य समाज का दूसरा मुख्य उद्देश्य है। देखने मे चाहे ये दोनो भिन्न प्रतीत होते हो परन्तु गम्भीरता से विचार करने पर दोनो का प्रयोजन एक ही प्रतीत होता है। ससार को वेद मार्ग पर लाने से ही ससार का उपकार सम्भव है यही वह निष्कटक मार्ग है जिस पर चलकर मनुष्य अभ्युदय और नि श्रेयस दोनो की सिद्धि कर सकता है।

—विमल वधावन, एडवोकेट

सम्पादकीय

मुस्लिम जमात में-अशरफ और अजलफ क्या है ?

अभी तक लोग यही समझते हैं कि हिन्दू समाज मे ही जात-पात, छुआछूत और भेदभाव की दीवार खडी है। पर अन्य जातीय वर्ग के अन्दर देखा जाय तो हिन्दुओ से बदतर मुस्लिम जमात की हालत है।

१९०१ मे बगाल प्रान्त के जनगणना अधीक्षक ने बगाल के मुसलमानो के बारे म रिपोर्ट दी थीकि मुस्लिमसमाज भी हिन्दुओ की वर्ण-व्यवस्था की भाति चार वर्गो मे विभाजित है

१ शेख, २ सैय्यद, ३ मुगल, और ४ पठान।

सामाजिक दृष्टि से इन मुसलमानो के भी दो वर्ग है ?

१ अशरफ, २ अजलफ।

१ अशरफ का अर्थ है कुलीन या उच्चवर्ग जो अफगान अरब मूल के या हिन्दुओ से धर्मान्तरित मुसलमान कहे जाते हैं।

२ अजलफ —पेशेवर जातियों से धर्मान्तरित मुसलमानो का वर्ग है जो 'नीच, कमीना और बदजात' कहे जाते हैं। परन्तु एक तीसरा वर्ग—कुछ स्थानो पर सबसे नीच मुसलमानो का है जिनकी त्रासदी यह है कि उनके साथ कुलीन मुसलमान ही नही, अजलफ मुसलमान भी सम्बन्ध नही रखते। यहा तक कि उनके लिए मस्जिद और सार्वजनिक कब्रिस्तान का उपयोग भी निषिद्ध है ?

हिन्दू समाज यदि वर्ण व्यवस्था और जातिभेद मे पीडित है तो इस मुस्लिम समाज का जातिवाद उससे भी भयकर है। हम 'अजलफ' मुसलमानो को पिछडी जातिया कह सकते है ? जिनमे—जुलाहा, दर्जी, फकीर, रगरेज, बढई, मनिहार, दाई-गद्दी, कलाल-कसाई, कुजडा-लहेडी, महिफरोश, मल्लाह, धोबी हज्जाम, मोची, नट, मदारी, पनवाडी आदि जातिया आती है ?

एक उप जाति और भी है उसे 'अरजल' कहते हैं—

'अरजल' अर्थात् सबसे नीच मुसलमानो म—भनार हलालखोर, हिजडा, कसबी, लालबेगी, मोगता और मेहतर आदि मुख्य है। इन्हे हम दलित और अछूत कह सकते है ?

इन दलित मुसलमानो के साथ कुलीन मुसलमानो का वही व्यवहार है जो हिन्दू दलितो के प्रति सवर्णो का है। हिन्दू समाज मे तो दलितो के प्रति दृष्टिकोण मे परिवर्तन भी आया है और बहुत से प्रगतिशील हिन्दुओ का सहयोग भी दलितोत्थान के क्षेत्र म मिल रहा है परन्तु दलित मुसलमानो का दुर्भाग्य यह है कि उनके उत्थान के प्रश्न पर कुलीन मुसलमानो मे न तो इस पर विचार ही पैदा हुआ और न अब तक हो सका है।

किसी समय जो बीमारी अस्पृश्यता की हिन्दुओ मे पहले थी वह बीमारी स्वामी दयानन्द के अछूतोद्धार मे और म० गाधी के हरिजनोद्धार से बदलाव तो आया है। कारण कुछ भी हो आज मानव मन की वक्रति मे राजनीति म नजदीक तो लाए हैं परन्तु विचारणीय बात और है ?

स्वामी दयानन्द ने कहा था 'मनुष्य से नफरत व परहेज मत करो। उसकी गन्दगी से नफरत कर उसे दूर करो। परन्तु म० गाधी की राजनीति ने कहा कि हर एक हाथ मे झाडू लो गन्दगी से परहेज मत करो। परिणामत उच्चकुलीन व छोट वर्ग म विभेद की दीवार ज्यो की त्यो बनी रही।

आज हिन्दुओ की मानसिकता बदली है वह हरिजनो को तीर्थो मन्दिरो म प्रवेश का हामी है जो कि पहले नही था। अलगाव की प्रवृत्ति दूर क्या नही होती ? कारण यह है कि छोटे वर्ग के लोग भी अपने से छोटी बिरादरी से सम्बन्ध नही करना चाहते हैं यही दशा उच्च वर्ग की भी है। मच पर कहना और बात है परन्तु व्यवहार मे लाना और बात है।

मुस्लिम जमात मे बरेली इस्लामिक स्कूल तो आज भी मौ० अहमद रजा खा की इस हिदायत पर अमल करता है कि—

'अरजाल' की इमायत मे अशरफ की नमाज नही हो सकती है ? ये दलित मुसलमान कौन है ? और उनके जीवन की विभिन्न क्षेत्रो मे क्या स्थिति है। यह भी जानना आवश्यक है कि पद धन और जागीरो के प्रलोभन मे भारत मे मुसलमान बनने वालो की सख्या सर्वाधिक हिन्दू सवर्णो की थी।

सम्पूर्ण भारत की छोडिये, उत्तर प्रदेश के सम्भागो को देखें तो त्यागी ब्राह्मण (भूमिहार) राजपूत खान बन गये हैं कि हरिजन दलितो के पीछे मुसलमान बनने मे पद, धन, जागीर का लालच नहीं था। हिन्दू समाज व्यवस्था अपमानित रहने के अतिरिक्त सम्मान के लिए भी इस्लाम ग्रहण नही किया जैसा कि कहा जाता है। पर उनका मुस्लिम समाज मे स्थान दयनीय नही होता। वरन् व कुलीन मुसलमानो की तरह समादृत होते।

दलित मुसलमानो की दुर्दशा का कारण हिन्दू साम्प्रदायिक राजनीति ही नही बल्कि 'अशरफ' मसलमान भी है। भारत मे इस वर्ग के हाथो मे मुस्लिम नेतृत्व है। बल्कि यही वर्ग जमाअत इस्लामी जैसी मजहबी तन्जीमो और आन्दोलनो का सचालक है।

इस्लामी सिद्धातो को देवबन्दी और बरेलवी दो स्कूलो मे विभाजित करने वाला यही वर्ग है। इस वर्ग ने जहा इस्लामी साहित्य की रचना करके अपनी बौद्धिक प्रगति शीलता का परिचय दिया। वहा अपने ही सहधर्मी वर्गो की उपेक्षा करके अपनी सकीर्ण मनोवृत्ति का भी प्रमाण दिया है।

इस्लाम दासता का समर्थक नही और ससार भर के देश भी अब इसके खिलाफ कानून बना चुके हैं। पर मुस्लिम रईसो, जमीदारो के यहा आज भी दलित मुसलमानो का गुलामी करते देखा जाता है। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण दशा मे मोची धोबी, भिश्ती हलालखोर, मेहतर, कमीना आदि मुसलमानो के साथ रोटी-बेटी का व्यवहार तो दूर मानवीय सम्बन्ध भी कुलीन मुसलमान नही रखते।

सभी अशरफ मुसलमान सम्पन्न है ? अशरफ मुसलमानो ने तरक्की भी की है और शिक्षितो की सख्या भी बढी है। शासन प्रशासन म भी भागीदारी है। इसके विपरीत दलित मुसलमान अशिक्षित है। अशिक्षा के कारण इस्लाम के सम्यक ज्ञान से भी अनभिज्ञ है। इन सस्थाओ के आलिम कारकुन अपनी औलादो को तो ऊची शिक्षा दिलाते हैं और दलितो की बस्तियो मे जाना तक पसन्द नही करते है।

इस समय दलित मुस्लिमो मे मुक्ति की चेतना जाग चुकी है और अपने समाजो मे अशिक्षा और उत्पीडन के खिलाफ सघर्ष कर रहे हैं। विडम्बना यह है कि कुलीनवाद से अभिशप्त मुस्लिम नेतृत्व इन राजनीतिज्ञो को स्वीकार नही करता है। दलित शोषित मुस्लिम वर्ग दोहरी कुण्ठा के शिकार होते है।

दलित मुसलमानो के रूप मे इस्लाम की विभाजित मुस्लिम मनुष्यता मानव मानव के बीच बढती घृणा से दम तोडती कुरान की आयतें और हजरत मुहम्मद सल्ल) के नैतिक मानवीय आदेशो का जघन्य उल्लघन उनको उद्वेलित क्या नही करता। देवबन्द और बरेली के धर्माधिकारी मुसलमानो पर बातिल कुफ्र तथा शिर्क का फतवा जारी करते है। इन्होने अशरफ मुसलमानो के खिलाफ कोई फतवा जारी किया ? कारण कि स्कूलो के धर्माधिकारी स्वय अशरफ है ? या इसलिए नहीं किया कि सत्रन्म मुसलमानो पर इस्लाम का मानवतावाद लागू नही होता है।

हिन्दू समाज म फैले वर्णो की विशमता से मुस्लिम समाज मे भी विशमता कम नही है किन्तु अधिक ही है।

ऋषि मेला अजमेर

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में दिनांक ३० अक्तूबर से १ नवम्बर ९२ तक ऋषि उद्यान पुष्कर रोड अजमेर मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०९वे निर्वाण दिवस के उपलक्ष मे ऋषिमेला का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर २५ अक्तूबर स प्रात. तथा साय सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न होगा। समारोह मे हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता, लेखक सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा आर्य सम्मेलन सहित अनेको कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। २९ अक्तूबर को वैदिक यति मण्डल की बैठक स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न होगी। ३० अक्तूबर को ध्वजारोहण के पश्चात भव्य शोभायात्रा का आयोजन भी किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् महात्मा तथा आर्य नेताओ को आमन्त्रित किया गया है। १ नवम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ तथा परोपकारिणी सभा के सयुक्त तत्वावधान मे वेद गोष्ठी का आयोजन भी किया गया है।

इस्लामी देशों का साम्प्रदायिक न्याय

शारजाह मे दस भारतीय कलाकारो को छह साल की सजा

शारजाह सयुक्त अरब अमीरात १४ अक्तूबर। दस भारतीयो को यहा की एक अदालत ने नाटक के जरिये इस्लाम का कथित अपमान करने के अभियोग म आज छह साल कैद की सजा सुना दी। अभियुक्तो का कहना था कि इस नाटक का मकसद साम्प्रदायिक सौहार्द को बढावा देना है।

शारजाह की प्राथमिक अदालत के न्यायाधीश अब्दुल रहमान ने अभियुक्तो की लिखित दलीलो की जाच करने के बाद यह सजा सुनाई। उन्होने जेल की सजा पूरी होने के बाद इन सबको इनके देश भेज देने का निर्देश दिया।

अदालत ने केरल के वबला वासुदेवन पिल्ल को भी ऐसी ही सजा सुनाई। उन्होने सफदर हाशमी के इस प्रतिबन्धित नाटक का मलयालम मे रूपातर किया था। इस रूपातर का मचन यहा केरल कला प्रेमी सघ के ए एल ए ने किया था।

सजायाफ्ता लोगो मे भारतीय एसोसियेशन शारजाह आई ए एस) के अध्यक्ष टी के ए नैय्यर और अन्य पदाधिकारी शामिल है। इस सस्था ने नाटक के मचन के लिय अपने आडिटोरियम के इस्तेमाल की इजाजत दी थी।

अदालती फैसले का अरबी से अग्रजी मे अनुवाद किया जा रहा है। फैसले के बारे मे विस्तार से जानकारी इसके बाद ही मिल सकेगी।

सयुक्त अरब अमीरात मे भारतीय राजदूत रणजीत सेठी ने कहा हम इस फैसले का अध्ययन कर रहे हैं। सामान्य फैसले की तरह ही इसे भी चुनौती दी जा सकती है।

श्री सेठी और दुबई मे भारत के महावाणिज्य दूत नरेन्द्र कुमार ने इस मामले के सिलसिले मे शारजाह के अधिकारियो से मुलाकात की थी। भारतीयो के एक समुदाय की शिकायत पर हा यह मामला चलाया गया था।

नाटक के एक दृश्य मे एक लाश को ईसाई जीसस क्राइस्ट का मुस्लिम मोहम्मद साहब का और कम्युनिस्ट कार्ल माक्स का बताने है। आयोजको को सजा मिलनी चाहिए या नही इस बात को लकर विवाद था।

नाटक के २८ मई को मचन के बाद शुरूआत मे लगभग २० लोगो को अभियुक्त बनाया गया था। अदालत ने ९ सितम्बर को पाचवी सुनवाई के दौरान १० अभियुक्तो से कहा था कि वे बचाव प क वकीलो के माफत अपनी लिखित दलील २० दिन के अन्दर पेश कर।

फैसला सुनाये जाने के वक्त आज अदालत खचाखच भरी थी। बाहर खडी भारतीयो की भीड को तितरबितर करन क लिय पुलिस को लाठी का सहारा लना पडा। ग्यारहव अभियुक्त श्री पिल्ल के खिलाफ मुकदमा उनकी गैरमौजूदगी मे चलाया गया।

सयुक्त अरब अमीरात म कुल सात अमीरात है। अबुधाबी दुबई शारजाह फुजैरा रास अल खैमा उम अल कुवैन और अजमान। हर अमीरात म उसका शासक न्यायपालिका का सर्वोच्च होता है। इस मामले मे आखिरी फैसला शारजाह के शासक शेख सुलतान कर सकते है।

अदालत ने श्री नैय्यर और आइ ए एस के अन्य पदाधिकारियो की इस दलील को नही माना कि उन्होने सस्था का आडिटोरियम आयोजको को इस भरोसे पर दिया था कि उनकी गतिविधिया कानून सम्मत होगी।

श्री नैय्यर को गिरफ्तारी के बाद जमानत पर रिहा कर दिया गया था। वह सुनवाई को देखने के लिय अदालत गये थे। सजा सुनाये जाने के बाद उन्हे फिर हिरासत मे ले लिया गया।

इससे पहले उन्होने नाटक के मचन और उससे उपजे विवाद को दुर्भाग्यपूर्ण बताया था। उन्होने कहा था कि भारतीय समुदाय को यहा के अधिकारियो और नागरिको का स्नेह हासिल है।

सभी सजायाफ्ता लोग केरल के रहने वाले है। उनके नाम हैं कृष्णन पायोली नारायणन कृष्णन कुट्टी एम मैथ्यूस टी के ए नैय्यर राजेन्द्र प्रसाद गिगो फ्रासिस वी के भास्करण अछन बालाना एन सी भवनदास के जे फ्रासिस और वीवी पिल्ल।

छप रही है! छप रही है!!

संस्कार चन्द्रिका

लेखक

स्व० प० भीमसेन शर्मा एव स्व० प० आत्माराम जी अमृतसरी

प्रकाशक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री एम ए पी एच डी

दीपावली तक अग्रिम धन भेजने पर ६०) रु० तथा पश्चात मूल्य १००) रु०

प्राप्ति स्थान —

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

पाकिस्तान के इस्लामी समाज में बिखराव के आसार

नई दिल्ली १३ अक्तूबर। कश्मीरियो के लिए आत्मनिर्णय की दुहाई देने वाल पाकिस्तान म शिया मुसलमानो के खिलाफ नफरत का प्रबल अभियान वहा के इस्लामी समाज म आ रहे बिखराव की हकीकत को उजागर करने लगा है।

इस बिखराव पर प्रकाश डालते हुए समीक्षक न दावा किया है कि पाकिस्तानी समाज का वास्तविक तस्वीर उससे पूरा तरह अलग है जो वहा का सरकारी मीडिया और वहा की शासक जुडली पेश करती है जिस पर पजाबी नौकरशाही हावी है।

साम्प्रदायिक और धार्मिक गुटबन्दी समाज म गहराई तक पैठ कर चुकी है। यदि इसकी रोकथाम नही हो पाई तो सामजस्यवादी तत्व भी इसकी चपेट मे आ जाएग।

समीक्षक के अनुसार कराची म फटेहाल लोगो की बस्तियो से लेकर डेरा इस्माइल खान के गली कूचो और मकरान के तटवर्ती ग्रामो से लेकर उत्तरी अचलो तक वहा इन दिनो काफिर काफिर शिया काफिर की गज सुनाई पडती है। फिरकापरस्ती का यह जहर वहा खून खौलाने वाले पत्रको और स्टिकरो के द्वारा तो फैलाया ही जा रहा है अब वहा ईमान लाने वालो को उकसाने वाल कैसेट भी इस अभियान का हिस्सा बन गए है।

सूबा सिंध को अपराधियो की हिंसा कुचलने के लिए सेना के हवाले कर दिया गया था। सेना के इस छह माह के अभियान के दौरान पहले पहले लोगो ने राहत की सास ली थी परन्तु पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेता आफताब मीरानी ने स्थिति की समीक्षा इन शब्दो मे की है इस सतही अमन से गुमराह मत होइए चारो तरफ अलगाव की हवा बह रही है और अगर अभी राजनीतिक कदम नही उठाए जाते हैं तो हम भारी मुश्किल मे पड सकते है।

कभी सिन्ध के कराची और हैदराबाद जैसे महानगरो मे मुहाजिर कौमी मुहाज का बोलबाला था जबकि अब यह सगठन व स्तुत तहस-नहस हो चुका है। विभाजन के समय भारत से पाकिस्तान गए शरणार्थियो के इस सगठन का नेतृत्व ३८ वर्षीय अल्ताफ हुसैन के हाथ मे है। सैनिक अभियान के दौरान इस सगठन द्वारा सचालित यातना केन्द्रो का भी पता लगाया गया जिसमे राजनीतिक विरोधियो की हत्या भी कर दी जाती थी। यह सगठन अभी भी कराची और हैदराबाद मे जातीय भावनाए भडकाने मे लगा हुआ है।

दूसरी ओर सिन्ध मे पाकिस्तानी सेना की उलझन भी स्पष्ट है। कराची स्थित पत्रकार के अनुसार सैनिक हाई कमान ने इस बात का पूरा-पूरा सकेत दिया है कि वह सिन्ध से हटना चाहेगी। (क्रमश)

स्वामी दयानन्द : मानवता के ज्योतिपुँज

श्री रामचन्द्र 'विकल', संसद-सदस्य

स्वामी दयानन्द का जब प्राविर्भाव हुआ,भारत अन्याय,अभाव तथा अज्ञान के गहनतम अन्धकार मे पड़ा हुआ था । अग्रेजो का यहा शासन था उसने भारतीय सस्कृति को अग्रेजी शिक्षा प्रणाली द्वारा जहरीला टीका लगा कर नष्ट करने की योजना बनाई थी । अग्रेज यहा व्यापारी बन आया था और यहा की फूट तथा कमजोरी का लाभ उठाकर शासक बन बैठा था । देशवासियो मे अन्धविश्वास व अज्ञान ने घर कर लिया था । आत्मविश्वास समाप्त हो गया था । गरीबी व दरिद्रता, गले का हार बन चुकी थी । यहा के देशी रजवाड़े विलासिता और परस्पर द्वष के विषैले जहर के शिकार थे । सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एव सास्कृतिक पतन के गढे मे भारतवासी पड़े हुए थे । स्वामी दयानन्द ने गुरु विरजानन्द के आशीर्वाद से जब राष्ट्रीय स्तर पर देश को चहुमुखे पतन के गर्त्त से निकालने का दृढ सकल्प लिया उस समय अग्रेजी आतक छाया हुआ था । स्वामी दयानन्द पहले महापुरुष थे जिन्होने अग्रेजी राज्य को भारत से विदा करने का मन्त्र फूक दिया था ।

स्वामी दयानन्द ने स्वदेशी, स्वभाषा एव स्वराज्य का उद्घोष किया । स्वदेशी के द्वारा आर्थिक आत्म निर्भरता विदेशी वस्तुओ से पृथकता तथा देश निर्मित वस्तुओ का प्रयोग भारतीयता के सस्कारो का बीजारोपण नही तो क्या था ? स्वभाषा के बिना कोई भी देश मानसिक दासता से मुक्त नही हो सकता । स्वामी जी ने अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी मे लिखे थे ।

स्वराज्य का मन्त्र भी स्वामी जी की देन है । उन्होने विदेशी धर्मात्मा राजा को भी स्वदेशी अधर्मी राजा से श्रेष्ठ नही माना । इससे अनुमान होता है कि वे स्वराज्य के जन्म दाता नही तो क्या थे ? यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने उनके विचारो के अनुसार आर्यक्रम राष्ट्र को दिया । महिला उत्थान, हरिजन उद्धार, राष्ट्रभाषा, हिन्दी, राष्ट्रीय शिक्षा (गुरुकुल व दयानन्द शिक्षा सस्थाए) राष्ट्रीय एकता, गो रक्षा, शराबबन्दी आदि महत्वपूर्ण आन्दोलन आर्य समाज ने चलाये, जिसे महात्मा गाधी जी के नेतृत्व मे काग्रेस ने अपनाया, चोटी के शीर्षस्थ नेता देश को आर्य समाज ने दिये ।

स्वामी दयानन्द जी के बाद, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, लाला लाजपतराय, महात्मा हसराज, हरदयाल एम०ए० गुरुदत्त चन्द्रशेखर आजाद, शहीदे आजम भगतसिह बिस्मिल राजगुरु सुखदेव, चौ० छैलसिह, लेखराम कुवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, देशबन्धु गुप्त, इन्द्र विद्यावाचस्पति आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। काग्रेस मे अधिकतर नेता सस्कार और विचार से आर्य समाजी थे। स्वाधीनता सग्राम मे आर्यसमाज ने जितना योगदान दिया है उतना अन्य किसी सस्था का नही है । यदि यू कहू तो अधिक ठीक हो सकता है काग्रेस आर्य समाज दोनो आजादी की लडाई मे बराबर कदम मिलाकर चल रही थी । एक और विशेषता यह भी थी कि आर्य समाज ने अपनी सेवाओ का कभी मुआवजा नही मागा। मुझे यह कहने मे सकोच नही है कि देश की निस्वार्थ सेवा यदि कभी किसी सस्था ने की है तो आर्य समाज ने की है । जब किसी प्रश्न को उठाया है तो राष्ट्रीय दृष्टि से उस पर विचार किया है, राष्ट्रहित सर्वोपरि है यह लक्ष्य कभी भुलाया नही गया ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपना जीवन मानवता को समर्पित किया था । अपने हत्यारे को अभय दान देकर रास्ता बताया, किराया दिया और क्षमा कर दिया । वे मानव को बन्दी बनाने नही मुक्त कराने आये थे । उनके जीवन आचरण एव व्यवहार से मानवता की झलक स्पष्ट नजर आती है । आर्यसमाज के दस नियम सार्वभौम सत्य पर आधारित है । इन नियमो के माध्यम से प्राणिमात्र और मानव जाति की सेवा और उपकार के भाव दर्शाये गये है । वे सार्वभौम मानवता के पुजारी थे ।

आर्यसमाज ने पिछले सौ से अधिक वर्षो मे देश की निःस्वार्थ सेवा की है आर्य समाज के दस नियमो का सबसे अधिक पालन आर्य बन्धुओ को करना होगा ।

पिछले सौ सालो मे हमने दूसरो की आलोचना अधिक की है । अब अगली शताब्दी मे अपनी त्रुटियो को निकाल फेंकना होगा और दूसरो के गुणो की प्रशसा करनी होगी । उदारता को हर क्षेत्र मे अपनाना होगा । उदारता मनुष्य को महा मानव बना देती है ।

एक विचारणीय प्रश्न आर्यसमाज के सामने यह भीहै कि हमारी भावी पीढी आर्य समाज के सत्सगो, अधिवेशनो और उत्सवो मे भाग नही लेती । हम अपनी सन्तति मे आर्य सस्कारो के बीज नही डाल रहे । जब हमारे परिवार ही इस मानवीय सस्कारो की जन्मदात्री आर्य समाज से विमुख रहेगे तो सारे ससार को आर्य बनाने का हमारा सकल्प नारा मात्र ही रह जायेगा । दूसरा प्रश्न है आर्य समाज ने राष्ट्र को एकता का पाठ पढाया अब स्वय परस्पर फूट का शिकार न बने यही मेरी शुभकामना है तीसरा मुख्य प्रश्न है राजनैतिक छूत-छात का, इससे आर्य समाज को ऊपर उठना होगा धार्मिक, जातीय छूत छात मे भी अधिक जहरीली और घातक राजनैतिक छूत-छात होती है । सारे भारत मे आर्य समाज ही केवल भारत को ही नही अपितु विश्व को राजनीति का पाठ पढा सकती है और राज गुरु का आसन ग्रहण करके मानवता पर आधारित राजनीति द्वारा ससार के लिए कल्याणकारी मार्ग बना सकती है । आर्य समाज का प्रचार तो जारी रहना ही चाहिये लेकिन अब अधिक जोर देना होगा भावी भारत सन्तानो मे आर्य सस्कारो का बीजारोपण करना । तभी हमारा राष्ट्र सुन्दर, सुदृढ एव सबल होगा ।

अन्त मे कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टगोर की एक कविता के भावो भाव देकर आर्य जनता से अपील करूगा कि वे इस कविता के भावो के अनुरूप कार्य करें । भाव इस प्रकार हैं "जब सूर्य अस्ताचल का चल पडा तो उसने चन्द्रमा से कहा मेरा काम अब तुम करो मैं विश्राम करने जा रहा हू । चन्द्रमा ने विनम्रता पूर्वक अपनी असमर्थता प्रकट की तो तारो से वही निवेदन किया गया जो चन्द्रमा से किया था, उन्होंने भी निराशा ही दिखाई उसी समय मे मिट्टी का दीवला (दीप) भी उपस्थित था उसने नम्रता पूर्वक सूर्य को विश्वास दिलाया जब तक तेल और बत्ती रहेगे मैं अन्धेरा हरता रहूगा इसी प्रकार हम करे । अपनी शक्ति, सामर्थ्य एव योग्यतानुसार देश और राष्ट्र को सबल सुन्दर एव शक्तिशाली बनाने के लिए योगदान देना चाहिए ।

ऋषिवर की पावन स्मृति में

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक नजीबाबाद

विक्रमी वर्ष १९४० की दीपावली को सायकाल साढे पाच बजे जब देश-देशान्तर मे बस भारतीय अपने-अपने घरो मे दीपमाला के दीप प्रज्ज्वलित कर रहे थे, तब विश्व मानवता के हितार्थ ज्ञान विज्ञान से परिपूर्ण वेद-दीप प्रज्ज्वलित कर महर्षि दयानन्द का जीवन दीप अनन्त आकाश मे विलुप्त हो गया।

उस महामानव के महाप्रयाण की सूचना जहा जहा पहुची—न केवल भारत और आय जाति म ही अपितु समस्त भूमण्डल पर निवास करने वाले मनीषियो के मन और मस्तिष्क पर शोक छा गया।

यद्यपि वह महान विभूति १९४० विक्रमी की दीपावली की सायकाल से इस ससार मे कही दिखायी नही देती किन्तु उसके द्वारा प्रकाशित किया गया वह ज्ञान विज्ञान परिपूण दीप अनादि पुरुष का वह शाश्वत ज्ञान—जो शताब्दियो से लुप्त प्राय था और जिसके विषय मे अविद्यान्धकार के गत्त मे भटकती आय जाति म यह किवदन्ति प्रसिद्ध थी कि वेद को शखासुर लेकर पाताल चला गया—उस महामानव ने पुन प्रकाशित कर विश्व मानवता के विशाल प्राङगण मे उसका प्रकाश फैला दिया। केवल उस प्रकाश को स्वय ही फैलाया हो ऐसा बात भी नही अपितु युगयुगान्तर तक इस विशाल पृथिवी पर उसे प्रज्ज्वलित करने रहने के लिये अपने उत्तराधिकारी के रूप मे आय समाज का सगठन बनाकर वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परमधम है इस सूत्र के रूप म उसे दायित्व सौंप दिया।

महर्षि के उत्तराधिकारी आय समाज ने भी उस दायित्व के निवहन मे अपने पूण सामर्थ्य का उपयोग किया और निरन्तर कर रहा है। महर्षि की इस घोषणा के अनुरूप कि वद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है आय समाज ने वेद के विविध विज्ञानो से सम्बद्ध अब तक सैकडो ग्रन्थ प्रकाशित कर ससार के पुस्तकालय की श्री वृद्धि की है।

आय समाज का एसा मन्तव्य नही है कि यान्त्रिकीय ही विज्ञान है अपितु आय समाज की यह मान्यता है कि प्रत्येक विषय का अपना विज्ञान होता है। यह तो सभी जानते हे कि प्रत्येक विषय का अपना ज्ञान होता है किन्तु इससे आगे बढकर प्रत्येक विषय के विज्ञान तक सब नही पहुच पाते हो एसी ही बात नही है अपितु प्रत्येक विषय का विज्ञान भी होता है ऐसा विचार भी सब नही कर पाते तथा तथ्य तो यह है कि सव सामान्य की तो बात ही क्या बड बड ज्ञानी मनीषियो का भी इस ओर ध्यान नही जाता। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक विषयक ज्ञान का विवेचन और विश्लेषण तथा उसके परिणाम स्वरूप होन वाली उपलब्धि उस विषय का विज्ञान होता है।

यदि केवल यान्त्रिकीय दृष्टि से भी देखा जाय तो वेद म इस परिमाण मे विज्ञान भरा पडा है कि न केवल हमारी पृथिवी पर आपत विश्व ब्रह्माण्ड म यावत चन्द्र दिवाकरौ जब तक चन्द्रमा और सूय सहित यह सृष्टि रहेगी तब तक उस प्रभु प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान मे से विज्ञान के सूत्रो की उपलब्धि होती रहेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती न ही वद को सब सत्य विद्याओ का पुस्तक कहकर वद की वैज्ञानिकता की चर्चा की हो ऐसी बात भी नही है अपितु अब से दीघ समय पूव महर्षि भारद्वाज के यन्त्र सवस्व नामक ग्रन्थ के टीकाकार श्री बोधानन्द ने अपन द्वारा की गयी टीका के मगलाचरण मे लिखा है

> निमथ्य तदवेदाम्बुधि भरद्वाजो महामुनि ।
> नवनीत समुद्धृत्य यन्त्र सर्वस्व रूपकम ॥

अर्थात महामुनि भारद्वाज ने वदरूपी समुद्र को मथकर उसमे से यन्त्र सवस्व ग्रन्थ के रूप मे नवनीत (मक्खन) निकाल लिया है। यदि यन्त्र सवस्व को ही हम उदधृत करने लग जाये तो लेख का कलेवर बहुत बढ जायेगा। किन्तु फिर भी इतना कह देना अनुचित न होगा कि उक्त ग्रन्थ के केवल वैज्ञानिक प्रकरण को ही लिया जाय तो भी वैज्ञानिक यान्त्रिकी के साथ साथ उसमे युद्धोपयोगी अन्य भी अनेक यान्त्रिकीय उपकरणो क निर्माणाथ उनके तन्त्र भी वर्णित किये गये है जिनमे प्रयुक्त होने वाली धातुओ तथा वनस्पतियो के अतिरिक्त आग्नेय आदि पदार्थो के प्रयोग का भी वर्णन है और शत्रु क विमानो म आग लगाकर उन्हे नष्ट कर देने के लिये तैयार किये गये दर्पण तथा भूगम मे छिपाकर रक्खे गये भयकर आग्नेय गोलो का पता लगाने वाले यन्त्रो (राडारो) को तैयार किये जाने के लिये प्रयोग मे लाये जाने वाले तारमानो के अश तक वर्णित हैं।

इसके अतिरिक्त भी हम वेद मे दैवी अर्थात अणुचालित नावो और पनडुब्बियो तक का वर्णन गर्भे अन्त समुद्रे अन्दर समुद्र के गर्भ मे तथा सिन्धुकर्मी कार विभ्रत समुद्र की लहरो पर कार को चलाने का वणन पाते है।

आकाश मे सूर्य के चारो ओर शकमय धूम सूर्यमारात सूर्य को चारो ओर से घेरे हुए श्वेत धूप (हीलियम गैस) वर्णित है तो सूर्य मे खाद्य पदार्थो के भरे होने की बात कहकर सूय की ऊर्जा उसकी किरणो के माध्यम से प्राप्त होने वाली भोज्य सामग्री की भी चर्चा है। यहा इस लघु निबन्ध मे इन सब उद्धरणो को वेद से प्रस्तुत करने का हम प्रयत्न नही कर रहे वह तो पृथक से एक ग्रन्थ का विषय है फिर कभी किसी लेख मे वेद विज्ञान विषय पर पृथक से चर्चा की जायगी।

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के दिवगत होने के पश्चात अभी तक एक ही महापुरुष योगीराज अरविन्द घोष ऐसे भारतीय मनीषी हुए है जिन्होने महर्षि दयानन्द की वद म विज्ञान होने की घोषणा का यह कहकर समथन किया है कि महर्षि दयानन्द न वद मे विज्ञान होने की बात कहकर कुछ अतिशयोक्ति नही की है अपितु न्यूनोक्ति से ही काम लिया है क्योकि वेद के असख्य विज्ञानो के रहस्य तो अभी तक अज्ञात ही है। यह स्मरण रहे कि श्री अरविन्द घोष आय समाजी नही थ किन्तु उन्होन जब वद का अध्ययन किया तो आधानक युग प्रवतक तथा वेदोद्धारक के वेदभाष्य के अतिरिक्त उनकी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भी—जिसमे तार विद्या तथा नौविमानादि विद्या करण भी है—अवश्य पढी होगी। परिणामस्वरूप उन्होने उक्त घोषणा करके महर्षि दयानन्द के वेद मे विज्ञान होने के दृष्टिकोण का उनसे भी आगे बढकर समथन किया।

पाश्चमीय जगत मे महर्षि दयानन्द के समकालीन जर्मन निवासी प्रोफसर मैक्समूलर ने ऋग्वद के नासदीय सूक्त का जब अध्ययन किया तो वह आश्चय चकित रह गय और वद मे प्रलयावस्था की वैज्ञानिकता के वणन को स्वीकार किया। उन्होन अपनी भारतीय दशन के छ सिद्धान्त नामक पुस्तक मे लिखा है कि मै अब तक वदो को ऋषियो की खोज मानता था किन्तु ऋग्वद के नासदीय सूक्त को पढकर इस परिणाम पर पहुचा कि प्रलयकाल मे क्योकि ऋषि आदि कोई भी प्राणी नही था अतएव यह ऋषियो की खोज नही हो सकता। प्रलयकाल म मानवो की उपस्थिति न होन पर भी उस काल के इतने स्पष्ट आखो देखे जैसे वैज्ञानिक वणन के होने से तो यह ज्ञान परमात्मा की ओर से ऋषियो की ओर आता प्रतीत होता है। इस प्रकार ऋषिवर दयानन्द ने वद को शखासुर द्वारा पाताल न जाने की भ्रान्ति का निवारण कर वैदिक विज्ञान का दुन्दुभि बजाकर विश्व मनीषियो का ध्यान वेद की ओर आकर्षित किया।

वेदार्थों का जादूगर

—डा० रामनाथ वेदालंकार वेदमन्दिर ज्वालापुर

स्वामी दयानन्द १९वीं शताब्दी ईस्वी के भारतीय गगन मे एक महान समाज सुधारक धर्म प्रचारक और वेदोद्धारक आदित्य के रूप मे उदित हुए। उनकी समस्त समाज सुधार योजना वेदो का आधार लेकर चली। जो वेदानुकूल है उसे उन्होंने मान्यता दी और वेद प्रतिकल को त्याज्य घोषित किया। परन्तु क्या वेदानुकल है और क्या वेद प्रतिकल है इसका विवेक कसे हो? दण्डी स्वामी विरजानन्द से अध्ययन कर चुकने के पश्चात स्वामी दयानन्द का कायकाल सन १९१३ से १९३३ तक लगभग बीस वष रहा। इस बीच वे अपने व्य ख्यानो वार्तालापो और शास्त्रार्थों से वेदानुकल का प्रचार और वेद विरुद्ध का खण्डन करते रहे। सायण महीधर आदि के वेदभाष्यो से उ हे सतोष न था अत बाद मे उन्होंने स्वय चारो वेदो का भाष्य करने की योजना तैयार की।

प्रथम ऋग्वेद भाष्य का उपक्रम करना था। किन्तु उसे आरम्भ करने से पूव महर्षि दयान द ने वेदभाष्य के नमूने का अ क प्रकाशित किया जसमे ऋग्वेद के प्रथम सूक्त का भाष्य किया था उसे उ होन अनेक विद्वानो के पास सम यथ भेजा जिसमे कोई शका कर तो उसका उत्तर दकर ही आगे भाष्य मे प्रवत्त हुआ जाए। इसमे कुछ म त्रो म अग्नि के अथ परमेश्वर और भौतिक अग्नि दोनो किये गये थे। अग्नि का अथ परमेश्वर करने पर उस समय वेदो के विद्वान माने जाते वाले कई व्यक्तियो ने अपनी असहमति प्रकट की थी जिनमे बनारस के ग्रिफिथ तथा सस्कृत कालेज कलकत्ता के प्रिंसिपल प० महशच द्र यायरत्न प्रमुख थे प० महेशचन्द्र के आक्षपो का उत्तर महर्षि ने अपनी भ्रान्ति निवारण नामक पुस्तक मे दिय है क्रमश वेदभाष्य प्रस्तुत करने से पूव महर्षि ने एक विस्तत भूमिका ऋग्वदादिभाष्य भूमिका नाम स लिखी जिसमे अपनी वेदविषयक मान्यताओ का विस्तार स सप्रमाण स्थापना की। यह भूमिका सवत १९३३ सन १८७६) मे लिखी गयी स पर राजा शिवप्रसाद ने कतिपय आक्षप किये थ जिनका उत्तर स्वामी जी न अपनी भ्रमोच्छदन पुस्तका म दिया ह

सवत १९३४ मार्गशीष शुक्ल ६ सन १ ७ को ऋग्वेद भाष्य का आरम्भ हुआ पश्च त प० गोपाल राव ह र दशमुख के प्र ताव पर ऋग्वेद के साथ ही साथ यजुर्वेद का भाष्य करने के लिए भी स्वामी जी सहमत हो गये यजुवद भाष्य करने क प्रस्ताव मे यह कारण रहा होगा क सवत्र यजुर्वदीय कमकाण्ड का अधिक प्रचार था जिसमे पशु बलि आदि सम्ब धी भ्रान्तिया भी थी उक्त प्रस्ताव के अनुसार ऋग्वेदभाष्य के साथ साथ सवत १९३४ पौष शुक्ल १३ (सन १८७७) को वाजसनयी माध्य दिन शक्ल यजुर्वेद स हिता का भाष्य भी स्वामी जी ने प्रारम्भ कर दिया ऋग्वेद भाष्य मण्डल ७ सूक्त १ म त्र २ तक ही हो पाया कि तु यजुवद भाष्य सम्पूर्ण हो गया अपनी निर्वाण प्राप्ति से दो मास एक सप्ताह पूव स्वामी जी ने म शी समथदान को एक पत्र मे लिखा था कि याद ईश्वर ने चाहा तो एक वष म शेष ऋग्वेद का भाष्य पूरा हो जाएगा और एक या डढ वष सामवद औ अथववेद के भाष्य मे लगेगा।

वेद भाष्य की विशेषताए —

अपने वेदभाष्य के विषय मे महर्षि का कथन है कि ब्रह्मा से लेकर जमिनी पय त ऋषियो ने जो ऐतरेय शतपथ आदि भाष्य रचे थे पाणिनि पतजलि यास्क आदि महर्षियो ने जो वेद याख्यान और वदाग निर्मित किये थे जमिनी आदियो ने जो वेदो के उपाग षट शास्त्र बनाये थ और सी प्रकार जो उपवेद तथा वदो की शाखाए रची गयी थी उनकी सहायता लत हुए मे अपन भाष्य मे सत्य अथ का प्रकाश कर रहा हू कोई भी बात अप्रमाणिक और कपोल कल्पित नही लिख रहा हू। इस भाष्य का फल क्या होगा इसका उत्तर देते हुए अपनी भाष्य भूमिका के भाष्यकरण शका समाधानादि विषय म वे लिखते है कि रावण उवट सायण महीधर आदियो ने जो वेद विरुद्ध भाष्य किये हैं और उन्ही के अनुसरण करते हुए इगलड व जमनी देश मे उत्पन्न यरोपखण्ड निवासियो ने अपने देश की भाषा मे जो स्वल्प व्याख्यान किये है तथा उन्ही का देखा देखी आर्यावत देशस्थ किन्ही लोगो न आय भाषा मे जो व्याख्यान किये हैं और किये जा रहे है वे सब अनथ से भरे हुए है ऐसा सज्जनो के हृदयो मे यथावत प्रकाश हो जायेगा और उन टीकाओ मे क्योकि दोष अधिक हैं अत उनका त्याग किया जा सकेगा

वेद विषय मे स्वामी दयान द की प्रमुख धारणाए जो उनके ग्र थो से ज्ञात होती है इस प्रकार हैं —

१) ऋग्वेद (शाकल यजुवद वा मा शुक्ल यजुर्वेद साहता सामवेद (राणायनीय) अथववेद (शौनकीय) ये चार ही मूल वेद सहिताय है। इतर ११२७ शाखाए इनकी व्याख्यानभत है ब्राह्मणग्र थ आरण्यक उपनिषद वद नही हे अपितु वद व्याख्यान ग्र थ है। ईश्वरोक्त स्वत प्रमाण केवल चार वद ही हैं शेष वदिक साहित्य परत प्रमाण हे अर्थात वेदानुकल होने पर ही प्रमाण हैं।

२) वेद नित्य ह प्रलय हो जान पर भी ईश्वर के ज्ञान म रहते ह। सष्टि के आदि मे अग्नि वाय आदित्य और अगिरस नामक ऋषियो के हृदयो मे क्रमश ऋग यजु साम और अथव वदो का परमेश्वर न प्रकाश किया है। वेद उस ज्ञान का नाम है वेद की पुस्तको को वेद इस कारण कहते हैं क्योकि उनमे वह ज्ञान लिखा रहता है

३) वेदो म सत्योप त सब विद्याए है यथा ब्रह्मविद्या सष्टिविद्या

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेदार्थो का जादूगर

पृष्ठ ७ का शेष

भूगोल विद्या खगोलविद्या गणितविद्या योगविद्या मुक्तिविद्या नौविमानादि विद्या तारविद्या आयुर्वेदविद्या पुनर्जन्मादिविद्या राजप्रजाविद्या वर्णाश्रमविद्या यज्ञविद्या धनुर्विद्या वाणिज्यविद्या कृषिविद्या आदि

(४) वेदो मे अनेक देवो की पूजा का वर्णन नही है प्रत्युत अग्नि इन्द्र वरुण मित्र आदि देव एक ही परमेश्वर के विभिन्न गुणो को बताने वाले नाम हैं साथ ही व श्लेषालंकार आदि द्वारा विभिन्न क्षेत्रो मे अग्नि सूर्य विद्युत आत्मा प्राण राजा सेनापति वैद्य विद्वान आदि अर्थो को भी देते है।

(५) वेदो के शब्द यौगिक है किसी एक ही अर्थ मे रूढ नही है। इस कारण वे अनेक अर्थो को प्रकट करने मे समर्थ है यह आग्रह करना उचित नही है कि लोक मे किसी शब्द का जो अर्थ है केवल वही सर्वत्र वेद मे भी अभिप्रेत है।

(६) वेदो मे किन्ही ऋषियो राजाओ नगरियो नदियो आदि का इतिहास नही है। ऐतिहासिक प्रतीत होने वाले नामो का यौगिक अर्थ है

(७) वेदो मे पशुबलि नरबलि मांसभक्षण परस्त्रीगमन आदि अमानवोचित कार्यो का समर्थन तथा अश्लील बाते नही है। जो वेदभाष्य इनका समर्थन करते हैं वे भ्रान्त है।

(८) वेदार्थ करते हुए पूर्वकृत विनियोगो का अनुसरण करना अनिवार्य नही है। उनसे स्वतन्त्र होकर भी वेदार्थ किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त वे ही विनियोग स्वीकार करने योग्य है जो युक्तिसिद्ध वेदादि प्रमाणो के अनुकूल तथा मन्त्रार्थानुसारी है

(९) वेद पढने का अधिकार मनुष्यमात्र को है। स्त्री शूद्र आदि को उससे वंचित रखना न्याय नही है।

(१०) वेदो मे पितृयज्ञ से जीवित पितरो का श्राद्ध अभिप्रेत हैं मृतको का नही।

(११) ऐसे कोई देवता विशेष वेदो को अभिमत नही जो ऊपर कही स्वर्ग मे रहते है तथा जिनके असुरो से युद्ध होते है न ही वेदोक्त आर्य और दस्युओ (दासो) के युद्ध से आर्य और द्रविड जाति के मध्य होने वाले कोई ऐतिहासिक संग्राम अभिप्रेत हैं। देव या देवता शब्द समाज मे विद्वानो का वाचक है। माता पिता अतिथि आचार्य आदि विद्वज्जन देव हैं इसके अतिरिक्त दिव् धातु के विभिन्न अर्थ जिनमे घटित होते हैं व ईश्वर आत्मा प्राण इन्द्रिय सूर्य चन्द्र आदि भी देव है

(१२) वेदो के सविता सूर्य विष्णु आदि तथा उषा अदिति सरस्वती आदि पुलिंगी और स्त्रीलिंगी देवता जैसे किन्ही प्राकृतिक पदार्थो के वाची हैं वैसे ही विशिष्ट पुरुष और स्त्रियो के वाची भी है अत वेदो मे प्राकृतिक पदार्थो के ज्ञान के साथ समाज शास्त्र का भी उत्कृष्ट वर्णन है।

वेदार्थ की अध्यात्म अधिदैवत अध्ययन अधिभूत आदि प्रक्रियाए पहले से ही प्रचलित थी जिनके अनुसार एक ही वेदमन्त्र के विभिन्न अर्थ किये जाते थे फिर भी अधिकांश भाष्यकारो ने वेदो को याज्ञिक प्रक्रिया तक ही सीमित रखा और उनकी धारणा थी कि अग्नि इन्द्र अश्विनी आदि देवता यज्ञिय हवि से प्रसन्न होकर यजमान को पुत्र पशु धन आदि प्रदान करते हैं यही वेदमन्त्रो का प्रयोजन है स्वामी दयानन्द ने इस कूप मण्डूकता से हमे निकाल कर वेदो का व्यापक रूप हमारे सम्मुख प्रकट किया। वे श्लेष और वाचकलुप्तोपमा अलंकारो का आश्रय लेकर प्राय वेदमन्त्रो के पारमार्थिक और व्यावहारिक दोनो प्रकार के अर्थ करते हैं। पारमार्थिक प्रक्रिया के अन्तर्गत वे ईश्वर जीवात्मा प्राण आदि परक अर्थ ग्रहण करते है और व्यावहारिक प्रक्रिया मे शिल्प शास्त्र भौतिक विज्ञान भूगोल खगोल वर्णाश्रम धर्म राज प्रजा धर्म आदि को प्रपंचित करते है। वेदमन्त्रो के व्यावहारिक अर्थ करना महर्षि दयानन्द की एक विशेष देन हैं जिसका प्राचीन आचार्य संकेतमात्र करके ही रह गये। दयानन्द द्वारा पल्लवित की इस व्यावहारिक प्रक्रिया का आश्रय लेने पर वेद की उषा केवल प्राची मे छिटकने वाली प्राकृतिक उषा न रहकर गृहस्थाश्रम मे ज्ञान और तेजस्विता की अपूर्व आभा के साथ जगमगाने वाली तथा अन्यो को भी ज्ञान, सदाचार आदि की ज्योति से जगमग करने वाली नारी हो जाती है। वेद की गौ विदुषी स्त्री का रूप धारण कर लेती है वेद का अग्नि यन्त्रो तथा यानो को चलाने का साधन भौतिक शिल्पाग्नि तथा विद्वान पुरुष बन जाता है। वेद का इन्द्र राष्ट्र के सम्राट के रूप मे प्रकट हो जाता है। वेद के अश्वि युगल अध्यापक उपदेशक सभाधीश सेनाधीश प्राण अपान आदि अर्थो का चोगा पहनकर मुस्कराने लगते हैं। वेद का रुद्र कैलासवासी महादेव न रहकर उत्पत्ति स्थिति प्रलय कर्ता परमेश्वर प्राण वैद्य सेनापति आदि के चेहरो मे हमारे सम्मुख प्रकट होते हैं। यह सब अनोखे जादूगर दयानन्द की जादुई छड़ी से ही सम्भव हो सका है। उस वेदार्थो के जादूगर को हमारा शतश प्रणाम।

जल-संकट का स्थायी हल : यज्ञ (२)

प० ब्र० व्यासनन्दन शास्त्री

ऐसी स्थिति मे याज्ञिक प्रक्रिया वर्षा लाने मे अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है। जब जल का भार अधिक और वायु का भार कम होता है तो वृष्टिजल द्युलोक से पृथिवी पर आ गिरता है। अथर्ववेद ४ १५ ७ मे कहा गया है कि वायु से गिराए या छोड गए मेघ पृथिवी पर बरसे मरुद्भिप्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु ? घृत के परमाणुओ से मिश्रित धुए से वायु को हल्का करने ऊर्ध्वगति करने तथा जल को भारी करने के प्रयोजन एक साथ सिद्ध होते है। अग्नि मे आहुत द्रव्यो के छिन्न भिन्न होने से हल्के होकर ऊपर आकाश मे चढ जाने से रेणुकण का उत्पन्न होना तो स्वाभाविक व प्रत्यक्ष है।

वर्षा के लिए मित्र और वरुण—

मित्रावरुणौ वा वृष्ट्यावताम यजु० २ १ का मन्त्र कहता है कि हे मित्र और वरुण ! तुम दोनो वृष्टि से हमारी रक्षा करो प्राणोदानौ वै मित्रावरुणौ के अनुसार मित्र और वरुण दोनो को ही प्राण एव उदान कहा गया है। मित्र और प्राण नाम से वेद मे जिस तत्व को कहा गया है वह वर्तमान विज्ञान की परिभाषा मे आक्सीजन कहते है तथा वरुण या उदान को हाइड्रोजन। इन दोनो के मिश्रण से जल तत्व का निर्माण होता है। इसलिए वेद ने मित्र और वरुण के गुणो को देखकर ही मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावताम अथर्व० ५ २४ ५ से मित्र और वरुण को वर्षा का स्वामी कहकर रक्षा की प्रार्थना की है। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि वर्षा कराने मे मित्र और वरुण तत्वो की भी आवश्यकता है और यज्ञाहुति से इन दोनो तत्वो का आकर्षण निर्माण या वृद्धि होती है तथा दोनो के मिलने से वृष्टि होती है। मन्त्र दर्शनीय है ऊर्जा नो मित्रावरुणा यजादेवा ऋत बृहत (यजु० ३३ ३) अर्थात महान ऊर्जा के निर्माण के लिए मित्र और वरुण को हे अग्नि तुम संगत करो। जल निर्माण मे वरुण तत्व की प्रधानता अर्थात उसका आधिक्य होता है और अपेक्षाकृत मित्र तत्व कम होता है मित्रस्य भागोऽसि वरुणस्याधिपत्यम यजु० १४ २४

इस तरह मित्र और वरुण के मिलन से यदि वर्षा होती है तो जल के वरुण और मित्र के रूप मे विभक्त होकर जलाभाव हो जाने से वर्षा बन्द हो जानी चाहिए इसका संकेत यजु १३।५३ मे इन शब्दो मे किया गया कि हे जलो मैं तुम्हे तुम्हारे योनि अर्थात कारणतत्वो मे स्थापित करता हू जब वर्षा कराना व करना अभीष्ट हो तो जलो को वायु मे स्थापित करता हू तथा औषधियो को होम कर जलो की धारक शक्ति बढाकर उन्हे भस्म मे अर्थात बादल के रूप मे परिवर्तित करता हू। तत्सम्बन्धी मन्त्र है—अपा त्वा योनौ सादयामि अपा त्वमन सादयामि अपा त्वा भस्मन्त्सादयामि। (यजु० १३।१५) इस प्रकार वेद वृष्टिकारक और वृष्टिरोधक दोनो प्रकार के विद्याओ के विषय मे स्पष्ट संकेत कर रहा है। इसके साथ ही यज्ञमाध्यम से जो वर्षा होती है उसमे वायु के सुगन्ध्यादि द्रव्य परमाणुओ से युक्त होने से वृष्टि सुखद शुद्ध तथा आधिक होती है। द्रष्टव्य है यो होमेन सुगन्धयुक्तद्रव्यपरमाणुयुक्तवायुर्भवति स वृष्टिजल शुद्ध कृत्वा वृष्ट्याधिक्यमपि करोति (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका महर्षि दयानन्द सरस्वती पृ० ५७।। इस तरह याज्ञिक प्रक्रिया के ज्ञान अभ्यास तथा प्रयोग से वर्षा को नियन्त्रण करके ही निकामे निकामे न पर्जन्योवर्षतु की घोषणा सम्भव है।

वस्तुत जल संकट के स्थायी हल हेतु यज्ञ को अपनाना चाहिये और इसका व्यापक रूप मे आयोजन होना चाहिये। केन्द्र द्वारा जितनी सहायता राशि इसके लिए दी जाती है उसकी दशांश राशि यज्ञ मे व्यय करने से जल की महती समस्या का समाधान शीघ्र सम्भव हो सकेगा।

स्वास्थ्य चर्चा—

हल्दी में गुण अनेक

आटे में नमक का जो स्थान है, वही स्थान सब्जियों में हल्दी का है। इसकी रंगत और महक सब्जी में जान डाल देती है। जहां हल्दी अन्य मसालों की तरह एक महत्वपूर्ण मसाला है, वहां यह स्वास्थ्य का अनमोल खजाना भी है।

हल्दी से निर्मित वैनिशिंग-क्रीम का बहुत प्रचार-प्रसार है। वैसे पिसी हुई हल्दी को दूध की मलाई में डाल कर अच्छी तरह फेंटकर क्रीम तैयार कर लें या सरसों के तेल में बारीक पिसी हल्दी फेंट कर पेस्ट बना लें, इसके प्रयोग से त्वचा में गजब का निखार आ जाता है।

आइए, अब हम गुणों से भरपूर हल्दी का स्वास्थ्य पर असर देखें और इसके प्रयोग जानें।

— दूध में हल्दी डाल कर उबालिए और इसे कुनकुना कर पीकर सो जाइए, कफ से छुटकारा मिलेगा।

— जिनकी त्वचा चिकनी हो, वे कम मलाई में ज्यादा हल्दी मिला कर यह प्रयोग करें तो चेहरा नई आभा से प्रदीप्त हो उठेगा।

— पलकों पर सोजिश हो, खुजली उठती हो, आंखों की कालिमा हटती न हो तो हल्दी उबाल कर छान लें और इस पानी से आंखें धोएं, आराम मिलेगा।

—चोट लगने से यदि खून जम गया हो तो नमक व हल्दी को पानी में भलीभांति पीस कर फेंट कर गर्म करें, फिर चोट पर इसका गर्म-गर्म लेप कर दें।

— यदि बिच्छू ने काट लिया हो, तो डाक्टर के आने तक दर्द से निश्चित राहत पाने के लिए पिसी हल्दी अंगारों पर डालकर जलाएं, फिर उसे दंश के घाव पर अच्छी तरह छिड़कें, आराम मिलेगा।

— खून की खराबी के कारण फोड़े-फुंसियां निकलती हों तो भोजन में हल्दी का सेवन अधिक करें व हल्दी का फोड़े-फुंसियों पर लेप भी लगाएं।

— जिगर को शक्ति देने की क्षमता हल्दी में है लेकिन पीले रंग के कारण इसे पीलिया रोग में निषेध बताया गया है, अतः सतर्कता जरूरी है।

—दांत में दर्द हो तो हल्दी पीस कर उसका मंजन कर लार बहा दें, दर्द से छुटकारा मिलेगा।

— कान से पीप निकलने या कान में दर्द उठने पर तिल का तेल गर्म कर उसमें पिसी हल्दी डाल कर उसे ठंडा कर लें और पतले कपड़े से छान लें, फिर ड्रापर से इसे कान में दो-तीन बूंदें डालें, राहत मिलेगी।

— मुंह में छाले होने पर एक किलो पानी मे दो चम्मच पिसी हल्दी उबाल कर ठण्डी कर लें। फिर इसी गुनगुने पानी से कुल्ला कर लें, छाले दूर होकर आराम मिलेगा।

— खांसी चलने पर पिसी हल्दी शहद मे चाटने से लाभ होता है।

—पेट दर्द होने पर हल्दी की गांठ छाछ में पीसकर चाटने से दर्द हवा हो जाता है।

वैसे यह सांवलेपन की शत्रु, गर्म, तीखी, पित्तनाशक, विषनाशक तथा पाचन क्रिया में बहुत सहायक भी है।

—सन्तोष मेहता, १७, उषापुरा, इन्दौर (म०प्र०)

विदेश समाचार

आर्यसमाज नैरोबी का ८९वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी आर्य समाज नैरोबी ने अपना वार्षिकोत्सव पांच सितम्बर से तेरह सितम्बर तक अत्यन्त हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया, उत्सव में निम्नलिखित का विशेष आकर्षण रहा।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ—पांच सितम्बर से नौ सितम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ, जो कि प्रातः काल एवं सायं काल हुआ, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया, दोनों समय यज्ञ पर आने वाले बच्चों को पुरस्कार दिये गये, इस यज्ञ के पुरोहित थे, उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के स्नातक पं० रामकृष्ण शर्मा सिद्धान्त शास्त्री एवं पं० ओं कुमार आर्य, पं० जी ने दोनों समय वेद मन्त्रों की व्याख्या की।

पांच तारीख को ही ऋषि लंगर के पश्चात् ८.३० पर वेद मन्त्र उच्चारण प्रतियोगिता हुई, जिसमे तीन से लेकर बीस वर्ष तक की आयु के बच्चों ने भाग लिया, सबसे श्रेष्ठ उच्चारण करने वाले बच्चे को ट्राफी प्रदान की गई, यह ट्राफी कुल भूषण जी विद्यार्थी ने अपने पूज्य पिता स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी विद्यार्थी की स्मृति मे प्रदान की। कुमारी ऋचा सैनी ने इस ट्राफी को जीता।

आर्य स्कूलों के मनोरंजक कार्यक्रम—आर्य स्कूलों ने प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी अपने-अपने मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इन स्कूलो के कार्यक्रम वेदमन्त्रो के उच्चारण से प्रारम्भ हुये, आर्य गर्ल्ज मैकेन्जी स्कूल की छात्राओ ने वेद मन्त्र बोले जिसको पं० राम कृष्ण शर्मा ने तैयार करवाया था। इसके अतिरिक्त, आर्य प्राइमरी स्कूल पार्कलेण्ड आर्य गर्ल्ज स्कूल, श्रद्धानन्द नर्सरी स्कूल, आर्य वैदिक नर्सरी एवं प्राइमरी स्कूलों ने भी अपने-अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। (शेष पृष्ठ १० पर)

आर्यसमाज नैरोबी

पृष्ठ ६ का शेष)

धर्म सम्मेलन एव रीलिजम फोर्म—उत्सव का यह कार्यक्रम सबसे अधिक महत्व रखने वाला था, पूरा महर्षि दयानन्द भवन श्रोताओ से भरा हुआ था, जिसमे अनेक वक्ताओ ने अपने-अपने भिन्न-भिन्न विषयो पर विचार प्रस्तुत किये, यह आयोजन आर्य समाज नैरोबी के प्रसिद्ध समाज सेवा श्री प्रीतम जी सैनी एव प० रामकृष्ण जी शर्मा ने किया था ।

इसके अतिरिक्त आर्यन यूथ, वाग्वर्धिनी सभा आर्य स्त्री समाज नैरोबी, ने भी अपने-अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये, उत्सव का अन्त "धन्य है तुझको ऐ ऋषि" इस गान से हुआ, अन्त मे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्म प्रकाश जी आहलूवालिया ने आर्य समाज के प्रधान श्री विजय जी धई को इस उत्सव की पूर्ण सफलता पर बधाई दी और भविष्य मे भी सभा का सहयोग देने का वचन दिया । श्री विजय जी धई ने भी अपने धन्यवाद प्रस्तावमे सब आर्य जनो का धन्यवाद किया कि जिनके सहयोग से यह उत्सव सफल रहा ।

कुलभूषण विद्यार्थी, मन्त्री

शोक-सभा

आर्यसमाज बैतूल द्वारा दिनाक १३-९-९२ को सायकाल ४ ३० पर श्री विजय आर्य स्नेही जिला वेद प्रचार अधिष्ठाता के निवास कार्यालयमे श्रीयुवराजसिंह परिहार के असामयिक निधन पर शोक सभा आयोजित की । श्री युवराजसिंह परिहार आर्य समाज के सदस्य भी थे तथा अत्यन्त मृदुभाषी मिलनसार एव प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता थे, इनके निधन से गहरा आघात लगा है । ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके शोक सतप्त परिवार को इस कठिन समय मे धैर्य और शान्ति प्रदान करे ।

सभी आर्य सदस्य एव पदाधिकारियो ने दो मिनट का मौन रख शोक सभा विसर्जित की ।

वार्षिकोत्सव

आर्य गुरुकुल एरवा कटरा (इटावा) का ११वा वार्षिक महोत्सव आगामी ६ ६-७ ८ नवम्बर ९२ मे बडे ही धोल्लास पूर्ण वातावरण मे मनाया जाना निश्चित हुआ है । समस्त आर्य विद्या प्रेमी सज्जनो से प्रार्थना है कि उक्त कार्यक्रम मे पधार कर हमारा मार्गदर्शन करे एव अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर अनुगृहीत करे । इस कार्यक्रम मे आर्य जगत् के अनेक वरिष्ठ सन्यासी एवं विद्वान पधार रहे हैं । सभी आर्य जनो के भोजन विश्राम आदि की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि शुल्क रहेगी ।

स्वामी देवानन्द मेधावी — कुलपति
आचार्य राजदेव शर्मा — प्रधानाचार्य

आर्य समाज संगरूर में वेद प्रचार

आर्य समाज मन्दिर सगरूर मे वेद प्रचार सप्ताह एव चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ दिनाक १५-९-९२ से २०-९-९२ तक श्रद्धेय महात्मा प्रेमप्रकाश जी की अध्यक्षता मे बडी ही धूम-धाम से मनाया गया । पूज्य स्वामी आनन्दवेश जी सरस्वती के अमृत प्रवचन तथा श्री धर्मप्रकाश जी शास्त्री के सुमधुर भजन हुए । वेदप्रचार सप्ताह के शुभ अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर सगरूर मे दिनाक १८-९-९२ साय ५ बजे श्री महात्मा जी के कर-कमलो से आर्य वीर दल एव आर्य कुमार सभा की स्थापना भी की गयी । पूर्णाहुति के पश्चात् लाजपतराय आर्य कन्या विद्यालय सगरूर की छात्राओ का बडा ही रोचक सास्कृतिक कार्यक्रम हुआ ।

—रामसुफल शास्त्री

तीसरा भारतीय भाषा सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

ने इस आन्दोलन का बिगुल बजाया है। उल्लेखनीय है कि इस भाषायी एकता के आन्दोलन का श्री गणेश श्री वन्देमातरम् जी की जन्मस्थली आन्ध्रप्रदेश से ही किया गया है। जहा गतवर्ष दिसम्बर माह मे प्रथम भारतीय भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया था। उसके बाद दूसरा सम्मेलन राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली मे किया गया था।

इस प्रकार के सम्मेलनो को हर प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभाओ के सहयोग से देशभर मे आयोजित किया जायेगा।

जहीराबाद में आर्य समाज की स्थापना

जहीराबाद (मिलाप वार्ता) आन्ध्र-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के प्रधान श्री कान्तिकुमार कोरटकर (प० विनायकराव विद्यालकार के सुपुत्र) की अध्यक्षता मे आन्ध्र-प्रदेश प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत यहा पर आर्य समाज की स्थापना की गई। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० रामचन्द्रराव "वन्देमातरम" प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री अडिवप्पा चन्द्र तथा डा० शीलमवेंकटेश्वरराव के अतिरिक्त भारी सख्या मे स्वतन्त्रता सेनानी व आर्य समाज के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

विस्तृत विचार-विनिमय के पश्चात सर्वसम्मति से यहा पर आर्य समाज की स्थापना एव स्वतन्त्रता सेनानी श्री माणिकराव सस्तापुर कर आदर्श समाज के सयोजक और श्री के० झरनाजी, विजयकुमार, सत्यकुमार, चिन्नाराम महेन्द्रकर, मोहन आर्य, अननाराव कुलकर्णी, विट्ठलराव खडके, सगप्पा दर्जी, रावजी ६ सदस्य मनोनीत हुए।

कोड़ासिया (रायगढ़) में विशाल आर्य वीर दल शिविर का आयोजन

'कोडासिया जिला रायगढ मे मध्य प्रदेश का प्रान्तीय स्तर का शिविर दिनाक २३-१०-९२ से ३१-१०-९२ तक विशाल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर मे १०० आर्य वीर भाग लेगे। शिविर मे आर्य वीरो को पूर्ण गणवेश के साथ लिया जायेगा। शिविर मे आर्य वीरो को अपने साथ खाकी हाफ पेंट, सफेद सेन्डो, ब्राऊन रग का जूता, सफेद मोजा, लाठी कापी कलम, थाली, लोटा, कटोरी, ऋतु अनुकूल विस्तर, एक टार्च आदि सामान साथ लावे। शिविर मे आर्य वीरो को आसन प्राणायाम, दण्ड बैठक, लाठी, भाला, छूरी, क्रिया के अतिरिक्त नैतिक शिक्षा भी दी जायेगी। शिविर शुल्क २५) रुपये है। शिविर मे भाग लेने के इच्छुक आर्य वीर २२-१०-९२ को सायकाल तक पहुचे।" यह शिविर आर्य कुमार सभा मुडागाव के नवयुवको के सहयोग से लगाया जा रहा है।

— जनकराम आर्य, व्यायाम शिक्षक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

अलीगढ। केन्द्रीय आर्य समाज मन्दिर के वार्षिक उत्सव पर आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ २ अक्तूबर ९२ से ६ अक्तूबर ९२ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती थे सर्वश्री चैतन्यदेव वानप्रस्थी, सूरज प्रसाद वानप्रस्थी, ब्र० ब्रजेश स्नातक गुरुकुल कालवा, आचार्य वेदप्रिय (बिहार) एव आचार्य मित्रसेन आर्य द्वारा वेदपाठ किया गया। यज्ञशाला की व्यवस्था व साजसज्जा श्री सौर मुनि ने की। यज्ञ के उपरान्त नित्य प्रति प्रात व साय अनेक विद्वानो द्वारा वेद कथा हुई।

पूर्ण आहुति ६ अक्तूबर को सायकाल सम्पन्न हुई। पूर्ण आहुति के उपरात नगर के ७ आर्य विद्वानो को ऊनी चादर व प्रशस्ति पत्र भेंट कर आर्य समाज के प्रधान श्री महेशचन्द्र लोहे वालो के द्वारा सम्मानित किया गया।

—विद्याधर आर्य शास्त्री, मन्त्री

महर्षि दयानन्द का अन्तिम सन्देश

दीप जलने लगे शहर अजमेर मे, खुशिया दीपावलि की मनाने लगे।
ऋषि भिनाय भवन मृत्यु शय्या पडे अपनी अन्तिम वसीयत बताने लगे ॥

रट लगाने लगे ओम के नाम की, द्वार सुरलोक का खटखटाने लगे।
ध्यान देकर मेरी तुम सुनो आर्यो, इच्छा अन्तिम मेरी वह बताने लगे ॥

खोल दो सारे द्वार भवन के तुरन्त, सामने से सभी पीछे आ जाइये।
कुछ अन्धेरा भी है और प्रकाश भी, यह इशारा मेरा सब समझ जाइये ॥

बाद जाने के मेरी कोई प्रतिमा, नही समाधि बनाना कही पर मेरी।
गगा यमुना हरिद्वार, प्रयाग मे, अस्थिया न बहाना कही पर मेरी ॥

ये खुला द्वार रखिये सभी के लिए, बन्द रखना किसी को नही द्वार है।
वेद पढना-पढाना प्रभु भगती का, यह मनुष्य मात्र के लिए अधिकार है ॥

भूले भटके जनो से मिलो प्रेम से, मन्य मार्ग सभी को बताते रहो।
एक ही ईश के सब पुजारी बने वेद सन्देश घर-घर सुनाते रहो ॥

इच्छा पूर्ण हुई उस परब्रह्म की, यही सन्देश सबको दिये जा रहा।
वेद अमृत पिलाया जगाया मैंने, वेदना, विष का प्याला पीये जा रहा ॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

स्वामी श्रद्धानन्द भवन का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

बिलासपुर (मध्य प्रदेश) २०-९-९२। स्थानीय दयानन्द शिक्षण समिति द्वारा नवनिर्मित श्रद्धानन्द भवन का उद्घाटन समारोह यज्ञीय वातावरण मे सानन्द सम्पन्न हुआ। कार्यक्रमका आयोजन आर्यसमाज बिलासपुर एव दयानन्द शिक्षण समिति द्वारा सयुक्तरूप से किया गया। उद्घाटन प राजगुरु जी शर्मा द्वारा किया गया। तत्पश्चात राजगुरु जी के आचार्यत्व मे हवन का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा आनन्द कुमार (आई पी एस) पुलिस अधीक्षक बिलासपुर ने हवन मे सपरिवार भाग लिया। हवनोपरान्त आय समाज के प्रधान श्रीकृष्ण वल्देव जी, शिक्षण समिति की अध्यक्षा श्रीमती कृष्णादेवी जी तथा दयानन्द प्राथमिक शाला की प्रधान अध्यापिका श्रीमती रत्ना तिवारी द्वारा श्री राजगुरु शर्मा एव डा आनन्द कुमार दम्पति का पुष्पहार एव गुलदस्ते भेट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर नन्हे मुन्ने बच्चो द्वारा वेद मन्त्रो का पाठ तथा अन्य सुरुचिपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

अतिथियो को सत्साहित्य का उपहार दिया गया। प्रसाद वितरण के उपरान्त कार्यक्रम का समापन किया गया।

—विक्रमादित्य गुप्त, मन्त्री
आर्य समाज बिलासपुर

वेदामृत

(पृष्ठ १ का शेष)

समाज के कल्याण के लिए उत्तम ज्योति या दिव्य ज्योति चाहिए। दिव्य ज्योति क्या है? आत्म-निष्ठता, आत्मदर्शन या तत्त्वज्ञान दिव्य ज्योति है। इस जीवन मे मनुष्य परमात्मा का दर्शन कर सके, यह अत्यन्त गौरव की बात है। आत्म-दर्शन ही ज्योति-दर्शन है। परमात्मा प्रत्येक व्यक्ति के हृदय मे ज्योति रूप मे विद्यमान है। साधना, योग और भक्ति, सबका लक्ष्य है—उस ज्योति का दर्शन करना। यह ज्योति जब जिसके हृदय मे जग जाती है, उस समय से वह प्रबुद्ध, प्रकाशवान् और विवेकशील हो जाता है। प्रबुद्धता इस ज्योति के जागरण पर निर्भर है। यह ज्योति सर्वोत्तम है, अत इसे उत्तम ज्योति कहा गया है।

यज्ञ और उपासना के द्वारा ऋषिगण इस ज्योति को जगाते हैं। जो इसको जगा लेते है, उनके हृदय की पाप-वासना स्वय नष्ट हो जाती है। जब पाप या पाप वासना नहीं रहेगी, तब भय भी स्वय समाप्त हो जाएगा।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२५-१०-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U 93Post in N.D.P.S.O.on 22, 23-10-1992

जहीराबाद में दशहरा का भव्य जुलूस

जहीराबाद (मिलाप वार्ता) परम्परागत ऐतिहासिक प्रभु मन्दिर से विजया दशमी की शोभा यात्रा निकलकर विभिन्न मार्गों से होती हुयी शिवालय के विशाल मैदान म पहुचा।

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान तथा प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनाना प० रामचन्द्रराव 'वन्देमातरम न शोभा-यात्रा का नेतृत्व किया। आन्ध्र प्रदेश आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कान्तिकुमार कोरटकर अश्व पर विराजमान थे। पुष्पा से सजे हुए विशाल पडाल मे मुख्य अतिथि प० वन्देमातरम न श्री कान्तिकुमार का शाल ओढाकर सम्मान किया गया। मच पर स्वतन्त्रता सेनानी श्री आडवप्पा चन्द्रे, डा० शीलम वेकटेश्वरराव, वीरेशम अल्लाडी श्री नागभूषण तथा भारी सख्या मे आर्य जन उपस्थित थे।

प० वन्देमातरम न अपने भाषण मे कहा अब हम सभी देश प्रेमियो को सगठित रूप मे भारत की अखण्डता व भारतीय आर्यसस्कृति के लिए कार्य करने की आवश्यकता है।

आपने कहा— देश म विघटनकारी तत्व पुन अपना सर उठा रहे हैं, जैसे पाकिस्तान आदियो को पुन पूर्व की भाति सबक सिखलाना है इसके लिए नवयुवक आगे आये। —सवाददाता

गुरुकुल बरनावा के संरक्षक ब्रह्म. कृष्णदत्त जी नहीं रहे

वेद और वैदिक सस्कृति के प्रति पूणत समर्पित ब्रह्म० कृष्णदत्त जी ने ५० वर्ष की अवस्था म १५ अक्तूबर १९९२ को प्रात ३ ३० बजे इस नश्वर शरीर को त्याग दिया। इस दु खद समाचार को सुनकर हजारो नर नारी दिन निकलते ही गुरुकुल प्रागण मे एकत्र हो गए। ब्रह्म० जी सादगी की प्रतिमूर्ति थे। वे प्रतिवष शिवरात्रि के बाद पडने वाले रविवार से आठ दिन का चतुर्वेद पारायण यज्ञ गुरुकुल की पाच विशाल यज्ञशालाओ मे आयोजित कराते थे।

ब्रह्म० जी के शव को मुखाग्नि दिनकरपुर ग्राम निवासी श्री कालूराम जी ने साय ४-३० बजे दी और उपस्थित जन-समूह द्वारा सामूहिक वेदोदघोष के बीच उनका अन्तिम सस्कार किया गया। सत्तरह अक्तूबर को अस्थि सचयन के लिए पुन कई हजार व्यक्ति उपस्थित हुए। ब्रह्म० जी की स्मृति मे शाति यज्ञ का आयोजन २७ अक्तूबर को प्रात ९ बजे गुरुकुल बरनावा मे किया जा रहा है जिसमे आर्य जगत के सभी गणमान्य नेताओ के आगमन की आशा है।

ब्रह्म० कृष्णदत्त जी की पुण्य स्मृति मे रिस्तल, जिला गाजियाबाद के ग्रामवासियो ने १८ अक्तूबर से चारो वेदो का पारायण यज्ञ और वेद प्रचार कार्यक्रम शुरू किया है। इस चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति २५ अक्तूबर को प्रात ९ बजे होगी। समस्त आर्य धर्म प्रेमियो से इस अवसर पर पधारने का सादर अनुरोध यज्ञ आयोजको की ओर से किया गया है। —भीमसिंह

दीपावली पर विशाल यज्ञ

दिनाक २४-२५ अक्तूबर ९२ को आर्य समाज बागपत के सौजन्य से नगर मे एक विशाल यज्ञ का आयोजन मा० मुरारीलाल आर्य सिद्धान्त शास्त्री के पौरोहित्य मे किया जायेगा। यज्ञोपरान्त भजन प्रवचन के कार्यक्रम व एक आर्य प्रदर्शनी का आयोजन होगा। इस अवसर पर सभी आर्य सज्जन सादर आमन्त्रित है।

—हरिहर 'स्नेही प्रधान
आर्य समाज बागपत

शोक समाचार

स्नातक मण्डल, दिल्ली प्रदेश की बैठक मे गुरुकुल कागडी के यशस्वी स्नातक स्वर्गीय पडित सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार, स्वर्गीय भाई नरेन्द्र जी आयुर्वेदालकार (गुजरात, स्वर्गीय श्री सुरेन्द्रकुमार विद्यालकार (मद्रास) तथा श्री अनिल जी विद्यालकार की धर्मपत्नी तथा स्वर्गीय पडित विष्णुदत्त जी विद्यालकार की पुत्री बहन श्रीमती इन्दु के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। सभी स्नातको ने खडे होकर दिवगत व्यक्तियो की आत्मा की शान्ति व सदगति के लिये दो मिनट का मौन धारण किया।

—प्रशान्त वेदालकार

स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती प्रधान प० मार्गदर्शन एव अध्यक्षता मे आर्य विद्वानो की एक बैठक ६ सितम्बर । गुरुकुल गौतम नगर मे सम्पन्न हुई। इस बैठक मे सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न सस्करणो के पाठो का विवेचन पाण्डुलिपियो के सन्दभ मे किया गया। इसमे विद्वानो ने कार्य की अनेक दिशाओ की ओर ध्यान दिलाते हुए सत्यार्थ प्रकाश के गौरव को अक्षुण्ण रखने का विचार व्यक्त किया। इस गोष्ठी मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, पडित क्षितीश वेदालकार पडित उमाकान्त उपाध्याय कलकत्ता, पडित राजवीर शास्त्री, डा सुदर्शनदेव शास्त्री, आचार्य वेदव्रत शास्त्री, पडित विशुद्धानन्द जी, डा वेदपाल सुनीथ, श्री धर्मवीर विद्यालकार, डा ज्वलन्त कुमार शास्त्री आचार्य हरिदेव जी आदि ने अपने विचार रखे।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आह्वान पर विद्वानो ने परोपकारिणी सभा अजमेर मे बैठकर अपेक्षित अवशिष्ट कार्य को पूरा करने का सकल्प किया।

श्री विरजानन्द देवकरणि एव श्री धर्मवीर ने कार्य के इतिहास एव परिस्थितियो से विद्वानो को अवगत कराया।

सभा मन्त्री श्री गजानन्द आर्य ने विद्वानो का समय निकालकर इस पवित्र कार्य हेतु सभा मे पधारने का स्वागत एव धन्यवाद ज्ञापन किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का ११० वां निर्वाण दिवस

वेदोद्धारक, आर्य जाति के सरक्षक, स्वतन्त्रता सग्राम के प्रथम उद्घोषक, स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार के प्रबल समर्थक, बालविवाह छुआछूत रूढि प्रथा के विरोधी महर्षि दयानन्द सरस्वती का ११० वा निर्वाण दिवस आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के तत्वावधान मे श्री ओकारनाथ आर्य की अध्यक्षता मे रविवार दिनाक १८-१०-९२ को प्रात ८ से १२-३० बजे तक आर्य समाज मन्दिर, सान्ताक्रुज (पश्चिम) मे मनाया गया। इस अवसर पर डा० यशवीरसिंह तथा गजानन्द जी आर्य एव डा० राममनोहर त्रिपाठी मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- जो सस्कार क्रिया को देखना चाहे वे पृथक्-पृथक मौन करके बैठे रहे। कोई बात चीत, हल्ला गुल्ला न करने पावें। सब लोग ध्यानावस्थित प्रसन्न वदन रहे।
- देखो ! मासाहारी मे दया आदि उत्तम गुण होते ही नही, किन्तु वे स्वार्थवश होकर दूसरे की हानि करकेअपना प्रयोजन सिद्ध करन ही मे सदा तत्पर रहते है।
- हे मासाहारियो ! तुम लोगो को जब कुछ काल के पश्चात पशु न मिलेगे, तब मनुष्यो का मास भी छोडोगे या नही ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७०७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अक ४०)   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३   कार्तिक सु० १३   स० २०४९   ८ नवम्बर १९९२

देश की स्वतन्त्रता तथा उसे आगे बढ़ाने के लिए जितना काम आर्यसमाज ने किया और किसी ने नहीं

भैरोंसिह शेखावत द्वारा आर्यकन्या शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अलवर का उद्घाटन

अलवर २८ अक्तूबर। वैदिक विद्या मन्दिर मालवीय नगर अलवर मे आर्य कन्या शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय क भवन का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोसिह जी शेखावत न कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती न शिक्षा के द्वार स्त्रियो के लिए खोल दिय। ऋषि दयानन्द के आने से पूर्व स्त्री और शूद्रो को पढाना कार्य विरुद्ध माना जाता था। मुख्यमन्त्री ने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द न आत तो यह नही कहा जा सकता कि हमारी क्या दशा होती? मुझे बालक पन मे ही अपन विद्यालय से आर्य समाज के सस्कार मिले थ जो आज तक मेरे मे विद्यमान है। उन्होन कहा कि देश की स्वतन्त्रता तथा उसे आगे बढाने के लिए जितना काम आर्य समाज ने किया उतना और किसी ने नही?

इस अवसर पर आर्यकन्या विद्यालय के प्रधान श्री छोटूसिह एडवोकेट ने कहा कि अजमेर विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रखना, और उदयपुर का नवलखा महल आर्य समाज को सौपना तथा कन्याओ के लिए बी० एड० कालज की मान्यता मिलना यह सभी कार्य श्री भैरोसिह जी शेखावत के शासनकाल म ही सम्पन्न हुए है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस अवसर पर आर्य जनो को सम्बोधित करते हुए कहा कि मै समूचे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज के सगठन की ओर से राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोसिह शेखावत को धन्यवाद देता हू जिन्होने अपने शासन काल मे आर्य समाज के विभिन्न कार्यो को साकार करके दिखाया है तथा मुख्य रूप से उन्होने कन्याओ के लिये बी० एड० कालेज की मान्यता देकर आज सबका मन जीत लिया है। स्वामी जी न अपने भाषण को आगे जारी रखते हुए कहा कि ऋषि दयानन्द से पूर्व— स्त्री शद्रो नाधीयताम्" माना जाता था। लेकिन उन्होने स्त्रियो और शूद्रो को समान शिक्षा, समान भोजन और समान वस्त्र देने का नारा दिया। यह ऋषि दयानन्द की ही देन है कि स्त्रिया आज पुरुषो से पीछे नही है। स्वामी जी ने भैरोसिह शेखावत से कहा कि जिस प्रकार से उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सरकारो ने विद्यालयो के पाठयक्रम म प्राचीन इतिहास को पढाए जान की घोषणा की है उसी प्रकार से व भी राजस्थान के विद्यालयो के पाठ्यक्रम मे लागू करावे।

श्री लालचन्द डूडी वन मन्त्री ने कहा कि सरकार द्वारा पाखण्डवाद को रोका जाना चाहिए जब तक इसे रोकने के प्रयास नही किये जायेगे तब तक कोई ठोस निर्णय नही लिया जा सकता, उन्होन चरण पादुकाओ और ईटो की पूजा को भी अनावश्यक बताया। उन्होने स्पष्ट किया कि परमात्मा एक है और महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के द्वारा इसी सिद्धात को जन-जन तक पहुचाने का प्रयास किया था।

(शेष पृष्ठ २, पर)

तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन

१२ नवम्बर को पटना मे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की दूरदर्शिता तथा प्रेरणा से भारतीय भाषा सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। इसके दो सम्मेलन हैदराबाद तथा दिल्ली मे सफलता पूर्वक सम्पन्न हो चुके है। अब तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन १२ नवम्बर १९९२ को भारतीय नृत्य कला मन्दिर, फ्रेजर रोड पटना मे सम्पन्न होने जा रहा है। सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेगे।

सम्मेलन म भारतीय स्तर के विभिन्न भाषाभाषी विद्वान, नेता तथा विचारक भाग लेग। अत आप से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या मे भाग लेकर तथा आर्थिक सहयोग देकर सम्मेलन को सफल बनावें।

"हजार घोड़ों का सवार" धारावाहिक पर रोक : मध्य प्रदेश हाईकोर्ट का आदेश

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इन्दौर खण्डपीठ के न्यायमूर्ति श्री वी एस कोकजे एव आर डी. शुक्ला ने एक याचिका पर सुनवाई करत हुए दूर दर्शन पर धारावाहिक हजार घोडो के सवार क प्रसारण पर रोक लगा दी है।

विदित हो कि सितम्बर १९९२ की मनोरमा पाक्षिक म उक्त सीरियल की पटकथा मे आर्य समाज विरोधी आपत्ति जनक प्रसगो को देखकर सार्वदेशिक सभा ने इस सीरियल के प्रसारण पर रोक लगाने के लिए सरकार से जोरदार माग की थी। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधान मन्त्री, सूचना एव प्रसारण मन्त्री तथा निदेशक दूरदर्शन को आर्यसमाज की भावनाओ से अवगत कराने हुए अपने पत्र मे यह स्पष्टकर दिया था कि यदि धारावाहिक

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक डा० सच्चिदानन्दशास्त्री

उन्होंने कहा मुसलमान बनो वरना भारत चले जाओ

अफगान हिन्दुओं की दारुण कथा

—सानन्द बर्मा

नई दिल्ली २९ अक्तूबर। दीवाली के रोज कुछ राशन यहा के लोग दे गये थे। उसके बाद से अभी तक कोई नही आया। हम कोई काम नही देता। किसी को भरोसा नही है हम पर। हम तबाह हो चुके है। अफगानिस्तान मे मुजाहिद हमे लूटते रहे। वे कहते थे कि मुसलमान बनो, वरना हिन्दुस्तान भागो। हमारी जवान बहू-बेटियो को उठाकर ले जाते। अस्मत लूटते। कत्ल तो मामूली बात है। हिज्बुल इसलामी के नेता गुलबुद्दीन हिकमतयार ने यह सब करवाया।'

यह दारुण कथन है अफगानिस्तान के उन सैकडो शरणार्थियो का, जो लगभग चार माह से फरीदाबाद के सेक्टर १६ मे जानवरो से भी बदतर जिन्दगी जी रहे हैं।

फरीदाबाद के सेक्टर १६ म कई एकड जगलनुमा जमीन है। सौ से अधिक शरणार्थी परिवार यही टिके है। कई बच्चो के शरीर पर इतने भयानक फोडे हो गये है, कि देखकर रोगटे खडे हो जाए। वहा सूअर घूमते है और भयानक मच्छर है।

सर्दी से बचने के लिये उन्होने इस जमीन पर २५ कच्चे कमरे बनवाये थे। जमीन के मालिक ने आकर सारे कमरे तोड डाले। जमीन नम है। वे ईटे जोडकर सोते हैं। सुबह उठते है तो पूरी कमर मे लगता है जैसे कि खून जम गया हो। उन्हे राहत सामग्री नही मिलती, शरणार्थियो की सुरक्षा का भी इन्तजाम नही है। बारिश मे तो नरक सा हो जाता है।

श्री नन्द किशोर काबुल स्थित अफगान नेशनल बेंक म कैशियर थे। लुटते पिटते सपरिवार फरीदाबाद पहुचे। उन्होने बताया 'यह मुसीबतो का पहाड टूटा कुछेक माह पहले, जब अफगानिस्तान मे नजीबुल्ला की सरकार ढही। नजीबुल्ला का तख्ता पलटा और फिर शुरू हो गया हम हिन्दू सिखो पर बेइ तहा जुल्मोसितम का दौर। मुजाहिदीनो ने हमे खूब लूटा। हम किसी तरह इज्जत बचाकर भागे। हम सभी पाकिस्तान के रास्त आय। वही तो रास्ता है जो थोडा बहुत रुपया पैसा काबुल से बचाकर ला सके थे, वह लूट लिया पाकिस्तानियो ने। पाकिस्तान के सभी बार्डरो पर हम लूटा गया। चेकिंग पोस्ट पर तैनात सिपाहियो ने हमे लूटा। पाकिस्तान की सडको पर रोक-रोककर हमे लूटा गया। हम ट्रक से आय। हमारे पास ट्राजिट बीजा था, जिनमे कि इस तरीके से रास्ते मे रोक रोककर चेकिग नही होती। लेकिन वे लोग तो कहते कहुत नन्दकिशोर का गला रुध जाता है।

अपने को सभालत हुए व आग बतात है हम सब काबुल के शरीफ शहरी थे। लकिन मुजाहिदीन हम मुसलमान बनन को कहते थे। कुछ लडकिया डरकर मुसलमान बन भी गई लकिन उन ब च्चयो को भी दरिन्दो ने मार डाला।

आपको वीजा कैसे मिला ? नन्दकिशोर बताते है भारतीय दूतावास ने हमारी मदद की। तीर्थयात्रा के लिये हमे सस्त मे पासपोट मिल जाते है। दूतावास वाला ने कहा कि चाहे जितना भो पुराना पासपोर्ट हो ले आओ, हम वीजा दे दग। फिर भी बहुत सारे लोगो के पास पासपोर्ट नही था। लाखो रुपये रिश्वत देकर या फिर दलालो के जरिये पासपोट हासिल किये। हमे तो अपनी इज्जत और जान बचानी थी।

श्री किशनलाल काबुल मे किराने की दुकान चलाते थे। उनकी दुकान और मकान दोनो जलकर राख हो गये। उनका नौजवान बेटा राजेश फरीदाबाद के एक सब्जी के व्यापारी के यहा काम करता है। ७० किलो से १०० किलो तक बोझ उठाने पर उसे रोजाना २० रुपय मिलत हे।

मानवाधिकारो का राग अलापने वाले प्रशासनिक त त्र को तनिक भी आभास नही है कि फरीदाबाद म मानवाधिकारो का हनन हो रहा है। हिन्दू सिख शरणार्थियो के कुछ तम्बू नानक प्याऊ के निकट प्रताप बाग मे भी हैं।

वे भुखमरी के कगार पर है। सभी शरणार्थी यही कहत हैं कि उन्हें रोटी, कपडा और मकान चाहिए। कहते हैं कि मुस्लिम शरणार्थियो को सारी सुविधाए दी जाती हैं, फिर हमारे स थ इतना अन्याय क्यो ?

काबुल के सरकारी मुलाजिमो को वेतन बहुत कम मिलता है लेकिन उन्हे चावल, आटा, घी, तेल साबुन चीनी आदि मुफ्त मे दिया जाता हैं। लेकिन जब से मुजाहिदीन सत्तारूढ हुए, तब से ये सारी खाद्य सामग्री बन्द हो गई।

श्री रामप्रकाश मेहरा काबुल मे कपडे का काम करते थे। श्री मेहरा के पिता फरीदाबाद के इसी नरक मे बीमार होकर चल बसे। उनका इलाज नही हो सका।

शरणार्थियो ने कहा कि दो चार लोगो ने किराए पर कमरा लेने की कोशिश की थी, लेकिन मकान मालिको ने कमरा देने से साफ इन्कार कर दिया। वे सोचते हैं कि काबुल से आए है तो पठान ही होगे। उन्हे हम पर भरोसा नही। ७० ८० ऐसे लोग यहा है जो काम कर सकते हैं। वे दर ब दर भटकते रहे, लेकिन किसी ने भी उन्हे काम नही दिया।

श्री टेकराम काबुल म मिठाई की दुकान चलाते थे। उन्होने कहा 'मुझे हलवाईगिरी के अलावा कुछ भी नही आता। दीवाली के मौके पर बहुत सारी मिठाई की दुकानो मे गया, लेकिन किसी न भी भरोसा नही किया। सबने नफरत से कहा कि हमारे पास बहुत आदमी हैं जरूरत नही।

य शरणार्थी हिन्दी मुश्किल से बोल पाते हैं। फरीदाबाद के डी ए वी पब्लिक स्कूल मे सस्कृत के एक शिक्षक श्री भगवती प्रसाद शर्मा ने एक सप्ताह पूर्व यहा के छोटे छोटे बच्चो को हिन्दी सिखाना शुरू कर दिया है। दोपहर मे ढाई से पाच बज तक वह लगभग ५० बच्चो को पढात है। परन्तु साधनाभाव के कारण त्रस्त है। पठन-पाठन के साधनो के अभाव मे यह नन्ही सी पाठशाला कब तक चल पाएगी कहा नही जा सकता। फिर भी श्री शर्मा आशान्वित दिखते है। वह कहत है बच्चो की पढाई लिखाई लम्बी जग की वजह से अरसे से ठप थी। इसलिए परेशानी बहुत ज्यादा हो रही हैं। लेकिन बच्चे होनहार है। मुझे आशा है कि एक महीने मे वे ठीक ठाक हिन्दी जान जायेंगे।

श्री भगवती की सेवा नि शुल्क है। उन्होने इस नन्ही सी और बिल्कुल नवीन पाठशाला को एक अच्छे खासे स्कूल की शक्ल देने की इच्छा व्यक्त की।

देश की स्वतन्त्रता में आर्यसमाज का कार्य

(पृष्ठ १ का शेष)

श्री हरिकुमार औदिच्य शिक्षा मन्त्री तथा श्री जगतसिंह दायमा राज्य मन्त्री अल्प बचत राजस्थान सरकार ने भी इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा किये गये कार्यों की प्रशसा की और कन्या विद्यालय समिति अलवर के प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट को इस महान समारोह के आयोजन पर बधाई और धन्यवाद का पात्र बताया।

इस समारोह के पश्चात आर्य कन्या विद्या मन्दिर दयानन्द मार्ग पर एक दूसरी सभा मे मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह जी शेखावत को एक मान पत्र दिया गया जिसे श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने पढ़ा। इस अवसर पर हजारो की सख्या मे आर्य जन उपस्थित हुए।

घुसपैठियों की समस्या एक राष्ट्रीय संकट

बाग्लादेश से जुडी पश्चिमी बगाल की एक हजार किलोमीटर लम्बी सामा से विदेशी नागरिको की घुसपैठ लगातार जारी है। सरकारी आकडो के अनुसार इस सीमा की निगरानी करने वाले सीमा सुरक्षा बल के जवानो ने पिछले साल ५५ हजार ५७३ विदेशी नागरिको को अवैध रूप से सीमा पार करते हुए पकडा था। इस साल जनवरी से जून तक पकड गये विदेशी नागरिको की सख्या १४७७९ रही है। इससे अन्दाज हो सकता है कि प्राकृतिक सीमा के अभाव मे बटे दो देशो भारत और बाग्लादेश की खुली सीमा से कितने बड स्तर पर घुसपैठ का क्रम जारी है। सीमित सख्या मे तैनात सुरक्षा बल क जवानो को इस सीमा पर बसे लोगो के समथन के स्थान पर आम तौर पर विरोध सहना पडता है। विदेशी नागरिको की घुसपैठ और दोनो देशो मे चावल की कीमत म बडा अन्तर होने के कारण तस्करी ही सीमा पर बसे अनेक व्यक्तियो की आय का मुख्य साधन है।

घुसपैठ को रोक न पाने के कारण पश्चिम बगाल के सीमावर्ती जिलो मे बडी सख्या म बाग्लादेशियो का जमाव हो गया है। अनुमान है कि असम त्रिपुरा बिहार और पश्चिम बगाल मे डढ करोड से अ एक बाग्लादेशी नागरिक बिना वैध दस्तावेजो के घुस आए हैं।

एक अनुमान के अनुसार इस शताब्दी के अन्त तक भारत मे पाच मे छह करोड बाग्लादेशी नागरिको की घुसपैठ हो जाने की आशका है। पश्चिमी बगाल असम उडीसा बिहार मे भारतीय नेताओ का राजनीतिक सरक्षण मिलने से घुसपैठ की इस प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिला है। राशन कार्ड जैसी सुविधा के साथ साथ ज्यादातर बाग्लादेशी घुसपैठियो के नाम मतदाता सूचियो मे भी शामिल करवा दिये गय है। आबादी के चरित्र मे परिवतन के फल स्वरूप अनेक क्षत्रो म सामाजिक तनाव पैदा हो गया है। सीमावर्ती क्षेत्रो मे विदेशी नागरिको के बसने से भारत की सुरक्षा को भी खतरा है। घुसपैठियो की आबादी वाले क्षत्रो मे तस्करी पशुओ की चोरी डकैती तथा विभिन्न अपराधो का बोलबाला है।

बाग्लादेश की सीमा पार करके आने वाल व्यक्तियो मे समृद्ध मध्य वग व गरीब सभी प्रकारके लोग है। समृद्ध व्यक्तियो ने सीमावर्ती क्षत्रो म जमीन खरीद ली है तथा खेती और अन्य व्यवसाय कर रहे है। गरीब घसपैठिए दश भर के नगरो मे मजदूरी करन दिखाई देने हैं। इस तरह से लाखो बाग्लादेशी सीमावर्ती जिलो से दूर दिल्ली बम्बई अहमदाबाद कटक हैदराबाद बगलूर कानपुर पटना इलाहाबाद आदि अनक शहरो मे रिक्शा खीचत तथा अन्य प्रकार की मजदूरी करते आसानी से मिल जात है।

बाग्लादेश की सीमा से एक हजार किलोमीटर दूर बसी राजधानी दिल्ली मे भी बाग्लादेशियो की भरमार है। दिल्ली प्रदश भारतीय जनतापार्टी अध्यक्ष ओमप्रकाश कोहली दिल्ली म बाग्लादेशी घसपैठियो की सख्या पाच से छ लाख तक मानते है। ससद मे गृह राज्य मन्त्री एम एम जकब ने बताया कि दिल्ली की १० बस्तियो म एक लाख से ज्यादा अवैध रूप से बाग्लादेशी बस हुए ह। उन्होने दिल्ली तथा दश के अन्य हिस्सो मे बाग्ला नागरिको की भरमार होन का बात भी स्वीकार की। असम सिक्किम मणिपुर त्रिपुरा और मेघालय म बाग्लादेशियो की घुसपैठ का सिलसिला कई दशक स जारी है। इन राज्यो म त्रिपुरा घसपैठियो की सख्या ७ लाख के आस पास आकी जाती है। इन सभी राज्यो म बाग्लादेशी घसपैठियो के आने स आबादी के चरित्र म बदलाव आया है। चार राज्यो की आबादी वाले सिक्किम राज्य म पिछले पाच वष के दौरान विदेशी नागरिको का सख्या तजी से बढी है। कई कई क्षत्रो मे तो कुल आबादी मे उनका हिस्सा ४० प्रतिशत तक पहुच गया है।

ज्योति बसु की वामपथी सरकार लम्ब समय तक बाग्लादेशियो की घुसपैठ होने की बात अस्वीकार करती रही। लकिन जब कलकत्ता मे बाग्लादेशियो के सगठन न प्रदशन किये और सवाददाता सम्मेलन मे एक लाख से ज्यादा सख्या मे होने का दावा किया तो उन्हे भी यह तथ्य स्वीकार करना पडा। बाग्लादेशी मुहाजर सस्था ने १२ फरवरी १९९१ के सवाददाता सम्मेलन म बताया था कि पश्चिम बगाल मे एक लाख स ज्यादा बाग्लादेशी हैं गृह राज्यमन्त्री एम एम जैकब न पिछल साल दिसम्बर तक पश्चिम बगाल मे ५ ८७लाख बाग्लादेशियो के होने की जानकारी ससद मे दी है। इन घुसपैठियो के कारण इस राज्य के १२ जिला मे आबादी का चरित्र ही बदल चुका है।

पश्चिम बगाल के नदिया जिल म १९८१ की जनगणना के अनुसार आबादी २९ लाख थी। लकिन १९८९ तक राशनकार्ड पाने वालो की सख्या ४५ लाख हो गइ। पाच वर्षों मे जनसख्या मे ५० प्रतिशत से अधिक वृद्धि निश्चित रूप से अवैध रूप से आने वाल विदशी नागरिकों के कारण हुई है। इसी तरह कलकत्ता के खिदरपुर क्षत्र मे राशन कार्डो मे दज व्यक्तियो की सख्या पाच वर्ष पूव जनगणना से दुगुनी है।

१९६१ से १९७१ और १९७१ से १९८१ के दस वर्षो के दौरान पश्चिम बगाल की आबादी की दर म बढोतरी की दर २० प्रतिशत रही। लेकिन बाग्लादेश की सीमा से दूर के जिलो बाकुडा या पुरुलिया और हुगली मे यह दर १५ से १६ प्रतिशत ही है। सीमावर्ती जिलो मे आबादी की वृद्धि की दर ३० से ४२ प्रतिशत तक रही। इनमे नदिया जिले मे ३० और उत्तर २४ परगना मे सर्वाधिक ४२ प्रतिशत है।

बिहार म बाग्लादशियो का जमाव १२ जिला मे बडी सख्या म दिखाई देता है। इनम किशनगज पूर्णिया अररिया कटिहार मधपुरा महरसा सुपोल खगडिया बगूसराय भागलपुर साहबगज और गोडडा शामिल है। किशनगज जिले के किशनगज खण्ड मे एक सर्वेक्षण के आधार पर बताया गया है कि इस खण्ड की १२ पचायतो के क्षत्र मे १४ हजार बाग्लादेशी है। इनम से अधिकाश व्यक्ति मतदाता के तौर पर पजीकृत भी हो गय है। इस कारण इन जिलो मे मतदाओ की बढोतरी दर बिहार के अन्य क्षत्रो से डढ गुनी से ज्यादा है। कुछ जिलो म तो यह दर औसत से दुगुनी तिगुनी तक है। उल्लेखनीय है कि अनक बाग्लादेशी घसपैठिए सरपच या मुखिया भी चुने जा चुके है।

विदेशी घुसपठियो की बडी सख्या का दबाव पूर्वी भारत के राज्यो की अथव्यवस्था पर भी पडा है। रोजगार की समस्या भी पहले से ज्यादा भयावह हुई है। सीमा पर तस्करी बढने से भारत से चीनी मिट्टी का तेल दाल साधारण नमक और मसाल जसी रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुए बाहर चली जाता है। फलस्वरूप इन राज्यो या जिलो के नागरिको के लिए इन वस्तुओ की कमी हो जाती है। दूसरी तरफ स सोना चादी इलेक्ट्रानिक सामान मादक द्रव्यो तथा शस्त्रो के आने का सिलसिला जारी है। इससे आर्थिक स्थिरता तथा सामाजिक शाति के खतरे मे पडने के साथ साथ राजनैतिक हिंसा और आतकवाद का असर भी बढ रहा है।

मस्जिद परिषद को मिलते-मिलते रह गई

—के० नरेन्द्र

स्थानीय स्टेटसमैन ने अपने विशेष संवाददाता गोपाल शर्मा का एक लेख प्रकाशित किया है। जो यह बताता है कि श्री राजीव गांधी के दिनों में बाबरी मस्जिद विश्व हिन्दू परिषद के हवाले होते २ रह गई। हस्तांतरण का विवरण तैयार हो गया था परन्तु किसी कारणवश इस पर हस्ताक्षर न हो सके। आशा करनी चाहिए कि यह रहस्योदघाटन इन सेकुलरिस्टों की जबान पर ताला लगा देगा जो दिन रात यही बक बक करते रहते है कि मस्जिद मन्दिर को तोडकर न बनी थी और इसको वर्तमान जगह से परिवर्तित करना विचारणीय नहीं हो सकता। खैर इसमें बताया गया है कि जनवरी १९८९ में श्री राजीव गांधी जी की सरकार के दिनों में विहिप और आल इन्डिया शिया कान्फ्रेंस के मध्य मस्जिद को हिन्दुओं के हवाले करने का निर्णय हो गया था। यह निश्चय हुआ कि इसे इसकी वर्तमान जगह से हटाकर फैजाबाद के शियानूर गांव में मीरबाकी की कबर के नजदीक ले जाया जाए। जो समझौता हुआ था इस पर एक तरफ विहिप और राम जन्मभूमि न्यास ने हस्ताक्षर करने थे और दूसरी तरफ आल इंडिया शिया कान्फ्रेंस के जावेद हबीब ने दस्तखत करने थे। दुर्भाग्यवश इस समझौते पर हस्ताक्षर न हो सके। क्योंकि आल इंडिया बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी और आल इन्डिया बाबरी मस्जिद क्वाडनिशन मूवमेन्ट कमेटी जैसी संस्थाओं ने इस पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। इस समझौते का सबसे मुख्य वह फतवा है जो आल इन्डिया शिया कान्फ्रेंस ने इराक के अलम उल्मा के आका अबुल कासिम ने दिया था और जिसमें कहा दिया गया था कि मस्जिद को इसके मौजूदा स्थान से हटाया जा सकता है।

यह मसौदा भारत सरकार की फाईलों मे मौजूद है और इसकी एक कापी प्रो बी आर ग्रोवर ने विहिप के नाम पर २१ अक्टूबर को गृहमन्त्री श्री चौहान को पेश कर दी था इसके अतिरिक्त दूसरे कई दस्तावेज भी पेश किए गए जिसमे बताया गया था कि मस्जिद को इस जगह से हटाकर मन्दिर बहाल किया जाए। प्रो ग्रोवर ने यह भी बताया कि इलाहाबाद के चिन्तामणि मन्दिर को शहजादा औरंगजेब के आदेश से १६४० में तोडकर मस्जिद में बदल दिया गया था। परन्तु दाराशिकोह ने इसे १६८४ में शान्तिदास नाम के एक व्यक्ति को वापस कर दिया। यह इसलिए किया गया क्योंकि किसी मन्दिर के ऊपर मस्जिद बनाना एक गैर इस्लामी कार्य है। बयान किया जाता है कि मुल्ला अब्दुल हकीम ने बादशाह शाहजहां को शिकायत की थी कि शाहजादा औरंगजेब ने मन्दिर में महराब बना दिए थे और इस वजह से यह मस्जिद गैर इस्लामी घोषित होनी थी। प्रो ग्रोवर ने बताया कि मिश्र सऊदी अरब और पाकिस्तान में मस्जिदों के इन्तकाल की बाकायदा तफशील मौजूद है। इस हालत में मुस्लिम स्कालरों का कहना है कि बाबरी मस्जिद को मुन्तकिल नहीं किया जा सकता गैर वाजिब है। इस सम्बन्ध में यह भी कहा जा रहा है कि मलिक मियां ने अपनी यह राय प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को लिखित रूप मे नही दी थी। वह श्री गांधी जी से कई बार मिले परन्तु लिखित रूप में कभी नहीं दिया। अतः यह दस्तावेज का हिस्सा नहीं बन सके। जिनका विहिप और आल इन्डिया बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के दरम्यान अदला बदला होना है। जो प्रस्ताव तैयार हुआ था वह इस तरह है। आल इन्डिया शिया कान्फ्रेंस और मस्जिद के अधिकारियों के दरम्यान एक समझौता हो गया है कि इलाका में शान्ति और अमन कायम रखने के उद्देश्य से एक निर्णय किया जाए कि बाबरी मस्जिद हमेशा शिया मुसलमानों की मलकियत रही है और शिया के प्रतिनिधि फैजाबाद में सुन्नी सेन्ट्रल बोर्ड आफ वक्फ और दूसरे लोगो तथा गोपालसिंह और हिन्दू न्यास के प्रतिनिधियों में फैजाबाद के एडीशनल जिला जज की अदालत मे मुकदमा नं० १२ आई १९६१ चल रहा है इसमें शिया प्रतिनिधि यह दरखास्त देंगे कि इन्हें भी इस मुकदमा में एक फरीक माना जाये। यह सब अदालत के सामने मस्जिद की हकीकत बयान करने के लिए किया जा रहा है और जब शिया प्रतिनिधि शरीक बनाये जायेंगे तो इस अदालत से दरखास्त करेंगे कि इन्हें राम जन्म भूमि नाम की जगह मे बाबरी मस्जिद का ढाचा हटाने की इजाजत दी जाय ताकि इसे फैजाबाद जिला के गांव शियानूर में मीरबाकी के मजार के नजदीक ले जाया जा सके। इस सम्बन्ध मे इराक से फतवा हासिल कर लिया गया है और उ० प्र० की सरकार से प्रार्थना की जाएगी कि इस मस्जिद के ढाचे को यहां से हटाने की स्वीकृति दी जाए और साथ ही हर किस्म की दूसरी सहायताएं भी दी जायें। ताकि उ प्र के शिया सेन्ट्रल बोर्ड आफ वक्फ से परामर्श करके मस्जिद के पुर्ननिर्माण के लिए आवश्यक निर्णय ले सके। जिस जगह पर बाबरी मस्जिद बनी हुई है और उसके आसपास का सारा इलाका मन्दिर न्यास की मिलकियत हो जाएगा। और इस कार्य के लिए सरकार से दरखास्त की जाएगी और सब सम्बन्धित पार्टियां इस हालत मे दरखास्त देंगे जिसमे मुकदमा चल रहा है ताकि समझौते की सरायत को सही रूप दिया जाए। इस सिलसिले मे यह भी कहा जा रहा है कि आल इन्डिया शिया कान्फ्रेंस के प्रधान ने एक बयान मे यह भी कहा है कि बाबरी मस्जिद को एक मन्दिर को तोडकर बनाया गया है तो हम अपनी मस्जिद का परिवर्तित करने के लिए तैयार हैं। यह मस्जिद शिया फिरके की है और हम विहिप से यह नहीं कह रहे कि वह यह साबित करें कि भगवान राम ने यहां जन्म लिया था। इस सबके बावजूद मस्जिद एक्शन कमेटी के लीडर जैलानी ने अदालत में दरखास्त दी है कि चाहे यह प्रमाणित हो जाए कि मन्दिर को तोडकर बाबरी मस्जिद बनी है इसे तोडा न जाए। जो कि ४०० साल से अधिक समय वाकिया को हो गए हैं। और ला आफ लिमिटेशन इसकी इजाजत नहीं देता इसके मुकाबले मे अजमतुल्ला दर की तरफ से एक दरखास्त दी गई कि इस्लामी शराबें ला आफ लिमिटेशन नाम का कोई कानून नहीं है। बाबरी मस्जिद का शिया भी मेरे इस दावे की तस्दीक करता है। इस रहस्योदघाटन के पश्चात तो कोई भी इस बात पर सन्देह न करेगा कि मस्जिद मन्दिर को तोडकर नही बनाई गई और इस मन्दिर तथा इस इमारत पर हिन्दू न्यास का पूरा अधिकार है।

प्रताप २७ अक्तूबर)

पुस्तक समीक्षा

आर्यसमाज के दस नियमो की व्याख्या

लेखक—श्री विजयबिहारीलाल माथुर

प्रकाशक तथा पुस्तक प्राप्ति—श्री विजय बिहारीलाल माथुर

डी० १० गणेश मार्ग बापूनगर जयपुर

इस पुस्तक के लेखक श्री विजय बिहारीलाल माथुर जो कि आर्य समाज के कर्मठ विद्वान है ओर कई महत्वपूर्ण पदो पर रह कर आपने समाज की सेवा में ही अपना जीवन लगाया है वर्तमान कृति आपके स्वाध्याय का प्रत्यक्ष परिचायक है।

१० नियमो का सप्रमाण तथा स्थान स्थान पर दिए गए उदाहरणो की सहायता से सर्वोच्चता तथा सार्वभौमिकता सिद्ध करने का यह अनूठा प्रयत्न है। यह दस नियम जहां आर्य समाज की नीव है वहीं वेदादि सत्य शास्त्रो के आधार पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के दृष्टिकोण को इस प्रकार से प्रस्तुत करते है कि जिससे समस्त मानव जाति इन्हे सहर्ष स्वीकार कर सके।

आर्य समाजो के साप्ताहिक तथा दैनिक सत्संगो मे इन नियमो का पाठ अवश्य होता है परन्तु इनकी सार्थकता तभी होगी जब पढने वाले इन्हे गहराई से समझ गम्भीरता पूर्वक विचार एवं मनन कर तथा तदनुसार इन्हे अपने जीवन शैली में उतारने का प्रयत्न करें क्योंकि ये नियम केवल धर्म सम्बन्धी आर्य वैदिक सिद्धान्तो को ही नही अपितु सामाजिक एवं राष्ट्रीय चिन्तन का भी मूल स्रोत है।

१५२ पृष्ठो के इस लघु ग्रन्थ में समाजवाद तथा साम्यवाद के वैदिक दृष्टिकोण का भी इन्ही नियमो में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सूत्रपात किया गया है।

इस प्रकार के नियमो की व्याख्या श्री विजय बिहारीलाल माथुर जैसे विद्वानो की लेखनी से आर्ष साहित्य में यथोचित स्थान पाएगी ऐसी कामना है। —विमल वधावन एडवोकेट

शिक्षा और उसका माध्यम

पूर्णचन्द्र उपाध्याय

शिक्षा और भाषा का बडा घनिष्ठ सम्बन्ध है। भाषा शिक्षा प्राप्ति का साधन है। भाषा विचारों का वाहन है। बिना भाषा के कोई भी विचार हमारे अन्दर नही पहुच सकते। हम एकान्त मे बैठे हुए भी बिना भाषा के विचार नही कर सकते। जिन्होने भाषा सम्बन्धी विज्ञान पर विचार किया है वे भाषा के महत्व को जानते है। सृष्टि के आरम्भ मे परमात्मा ने ज्ञान प्रदान करने के लिए न केवल विचार दिये बल्कि भाषा भी दी।

इस प्रश्न पर हमने अपनी ज्ञान की उत्पत्ति नाम की छोटी सी पुस्तक मे विचार किया है। यहा इस सम्बन्ध मे केवल सकेत मात्र कर देना पर्याप्त है।

भाषा विचारो को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुचाने का साधन है। साधन का सुगम ओर सरल होना आवश्यक है। यदि साधन कठिन और क्लिष्ट हुआ तो शक्ति साधन के उपयोग मे ही व्यय हो जायेगी और लक्ष्य तक पहुचने मे बाधा पडेगी। बालक के लिये शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिये क्योकि हर एक बालक उसको सबसे अधिक सरलता से सीख सकता है। जब मातृभाषा के सहारे बालक की शिक्षा आरम्भ हो और वह कुछ विचारो को अपने अन्दर धारण कर सके तब वह आगे चलकर अपने ज्ञान की वृद्धि के अभिप्राय से अन्य भाषाए भी सीख सकता है और उसको सीखना भी चाहिये। अब सब विद्वान इस पर सहमत है कि मातृभाषा द्वारा शिक्षा होना चाहिये। अनेक प्रकार की शिक्षा प्रणालियो मे इस प्रथा की उपेक्षा की जा रही है। स्वामी दयानन्द ने भारतवर्ष मे सबसे पहले इस आवाज को उठाया और आज सभी लोग भी इसका अनुमोदन कर रहे है। सरकारी विद्यालयो मे भी हिन्दी कक्षा तक कई विषयो मे शिक्षा का माध्यम मातृभाषा मे कर दी गई है और नवीन वाली स्कीम मे इस बात पर बहुत अधिक बल दिया गया है।

शिक्षा और उसके अग

शिक्षा जीवन भर की तैयारी के लिये है। वह सर्वांगपूर्ण होना चाहिये। सदाचार और ब्रह्मचर्य शिक्षा के आवश्यक अग है। शिक्षा की स्कीम मे शारीरिक उन्नति मानसिक उन्नति सामाजिक उन्नति और आत्मिक उन्नति इन सब पर ध्यान रखना चाहिये। शिक्षा से शरीर भी पूर्ण समर्थ और बलवान हो तथा मन भी शुद्ध एव पवित्र हो।

व्यावहारिक जीवन को सफल बनाने के लिये भी शिक्षा मिलना चाहिये शिक्षा और गृहस्थाश्रम का घनिष्ठ सम्बन्ध है। गृहस्थाश्रम को सुखी बनाना भी शिक्षा की सफलता पर निर्भर है। गृहस्थाश्रम की सफलता आर्थिक प्रश्न के समाधान पर निर्भर है। आर्थिक प्रश्न और व्यवसाय का सम्बन्ध है। इसलिये व्यवसाय सम्बन्धी शिक्षा भी होना चाहिये।

धार्मिक शिक्षा के बिना कोई शिक्षा सर्वांगपूर्ण नही हो सकती। धार्मिक जीवन का सम्बन्ध हमारे आचार विचार और व्यवहार सबसे है। शिक्षा के समय धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध मे उदासीन रहना अत्यन्त हानिकारक है। Secular E[illegible] o अर्थात केवल दुनिया सम्बन्धी शिक्षा अधूरी ही नही हानिकारक भी है। इसलिये शिक्षा सर्वांगपूर्ण होना चाहिये जिससे बालक पूर्ण रूप मे विकास प्राप्त करने के योग्य बने। शिक्षा मे किसी भी आवश्यक अग की उपेक्षा नही करनी चाहिये। आज पश्चिम मे In[illegible]ectual devils अर्थात दिमागी शैतान बहुत दृष्टिगोचर होते है। पढे लिखे है परन्तु उनके आचार और विचार भ्रष्ट एव भ्रष्ट है। शिक्षा एक हथियार है। वह दूसरो के ओर अपने उपकार के लिये भी उपयोग मे आ सकता है और अपने और दूसरे के प्रतिकूल भी उसका प्रयोग किया जा सकता है। तलवार से मित्र की रक्षा भी हो सकती है और शत्रु का गला भी काटा जा सकता है।

कहते है कि प्राचीन काल मे रावण बहुत विद्वान था। उसमे दस आदमियो के बराबर मानसिक शक्ति या विद्या थी इसलिये उसके दस सिर माने जाते है परन्तु आचार भ्रष्ट होने के कारण उसको राक्षस की उपाधि मिला। एक नही ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। व्यवसाय मे भी धार्मिक विचारो की आवश्यकता है। बिना धार्मिक विचारो के हम जीवन के किसी भी क्षेत्र मे सफलता नही हो सकती।

दिमाग और शरीर भी साथ साथ उन्नत होने चाहिए। रोगी शरीर और अच्छे दिमाग का मेल ठीक नही चलता। पहलवानो का सा शरीर और मूर्खो का सा मस्तिष्क भी बेमेल रहते है। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क सफल जीवन के लिये दोनो ही आवश्यक है। सदाचार की वृत्ति के लिये शिक्षा प्राप्त करने के समय मे ब्रह्मचर्य पालन करना परम आवश्यक है। ब्रह्मचर्य पालन के लिये एकान्तवास और सादा जीवन आवश्यक है ब्रह्मचर्य पालन की दृष्टि से बालक और बालिकाओ की शिक्षा का प्रबन्ध पृथक पृथक होना चाहिये।

राज्य धर्म—व्यवस्था

सत्यार्थ प्रकाश से संग्रहीत

प्रजा से वार्षिक कर आप्तपुरुषो के द्वारा ग्रहण करे और जो सभापतिरूप राजा आदि प्रधान मुख्य है वे सब सभा वेदानुकूल होकर प्रजा के साथ पिता के समान वर्ते ।।१।। उस राज्यकार्य मे विविध प्रकार के विद्वान् अध्यक्षो को सभी नियत करे, इनका यहीकाम हैं जितने-जितने जिस-जिस काम मे राजपुरुष हो वे नियमानुसार वर्त्त कर यथावत् काम करते है वा नही, जो यथावत् करे तो उनका सत्कार और जो विरुद्ध करे तो उनको यथावत् दण्ड दिया करे ।।२।। सदा जो राजाओ का वेदप्रचाररूप अक्षय कोश है इसके प्रचार के लिए जो कोई यथावत् ब्रह्मचर्य से वेदादि शास्त्रो को पढकर गुरुकुल से आवें उनका सत्कार राजा और सभा यथावत् करे तथा उनका भी जिनके पढाए हुए विद्वान होवें, इस बात के करने से राज्य मे विद्या की उन्नति होकर अत्यन्त उन्नति होती है ।।३।। जब कभी प्रजा का पालन करने वाले राजा को कोई अपने से छोटा, तुल्य और उत्तम सग्राम मे आह्वान करे तो क्षत्रियो के धर्म का स्मरण कर के सग्राम मे जाने से कभी निवृत्त न हो अर्थात् बड़ी चतुराई के साथ उनसे युद्ध करे जिससे अपनी ही विजय हो ।।४।। जो सग्रामो मे एक दूसरे को हनन करने की इच्छा करते हुए राजा लोग जितना अपना सामर्थ्य हो बिना डर पीठ न दिखा युद्ध करते है वे सुख को प्राप्त होते है इससे विमुख कभी न हो, किन्तु कभी-कभी शत्रु को जीतने के लिए उनके सामने से छिप जाना उचित है क्योकि जिस प्रकार से शत्रु को जीत सके वैसे काम करें, जैसा सिंह क्रोध मे सामने आकर शस्त्राग्नि से शीघ्र भस्म हो जाता है ऐसे मूर्खता से नष्ट भ्रष्ट न हो जावें ।।५।। युद्ध समय मे न इधर-उधर खडे, न नपुसक, न हाथ जोडे हुए, न जिनके शिर के बाल खुल गए हो, न बैठे हुए, न "मैं तेरे शरण हूं" ऐसे को ।।६।। न सोते हुए, न मूर्छा को प्राप्त हुए, न नग्न हुए, न आयुध से रहित, न युद्ध करते हुओ को देखने वालो, न शत्रु के साथी ।।७।। न आयुध के प्रहार से पीडा को प्राप्त हुए, न दुखी, न अत्यन्त घायल, न डरे हुए और न पलायन करते हुए पुरुष को, सत्पुरुषो के धर्म का स्मरण करतेहुए योद्धा लोग कभी न मारें किन्तु उनको पकड के जो अच्छे हो बन्दीगृह मे रख दे और भोजन आच्छादन यथावत देवे जो घायल हुए हो उनकी औषधादि विधिपूर्वक करे। न उनको चिढाव न दुख देवे। जो उनके योग्य काम हो करावे। विशेष इस पर ध्यान रक्खे कि स्त्री, बालक, वृद्ध और आतुर तथा शोकयुक्त पुरुषो पर शस्त्र कभी न चलावे। उनके लडके वालो को अपने सन्तानवत् पाले और स्त्रियो को भी पाले। उनको अपनी मा बहिन और कन्या के समान समझे कभी विषयासक्ति की दृष्टि से भी न देखे। जब राज्य अच्छे प्रकार जम जाय और जिनमे पुन पुन युद्ध करने की शका न हो उनको सत्कारपूर्वक छोडकर अपने अपने घरवा देश को भेज देवे और जिनसे भविष्यत काल मे विघ्न होना सम्भव हो उनको सदा कारागार मे रक्खे ।।८।। और जो पलायन अर्थात भागे और डरा हुआ भृत्य शत्रुओ से मारा जाय वह उस स्वामी के अपराध को प्राप्त होकर दण्डनीय होवे ।।९।। और जो उसकी प्रतिष्ठा है जिससे इस लोक और परलोक मे सुख होने वाला था उसको उसका स्वामी ले लेता है, जो भागा हुआ मारा जाय उनको कुछ भी सुख नही होता उसका पुण्यफल सब नष्ट हो जाता है और उस प्रतिष्ठा को वह प्राप्त हो जिसने धर्म से यथावत् युद्ध किया हो ।।१०।। इस व्यवस्था को कभी न तोडे कि जो जो लडाई मे जिस-जिस भृत्य वा अध्यक्ष ने रथ घोडे, हाथी, छत्र, धन धान्य अन्न, गाय आदि पशु और स्त्रियो तथा अन्य प्रकार के सब द्रव्य और घी तेल आदि के कुप्पे जीते हो वही उस उसका ग्रहण करे ।।११।। परन्तु सेनास्थ जन भी उन जीते हुए पदार्थो मे से सोलहवा भाग राजा को देवे और राजा भी सेनास्थ योद्धाओ को उस धन मे से, जो सब ने मिल के जीता हो सोलहवा भाग देवे। और जो कोई युद्ध मे मर गया हो उसकी स्त्री और सन्तान को उसका भाग देवे और उनकी स्त्री तथा असमर्थ लडको का यथावत् पालन करे। जब उसके लडके समर्थ हो जावे तब उनको यथायोग्य अधिकार देवे। जो कोई अपने राज्य की रक्षा, वृद्धि, प्रतिष्ठा, विजय और आनन्दवृद्धि की इच्छा रखता हो वह इस मर्यादा का उल्लघन कभी न करे ।।१२।।

—पुष्करलाल आर्य
१२१, काटन स्ट्रीट कलकत्ता-७

सरकार का एक अदूरदर्शिता पूर्ण कदम

निर्धनों के लिए शराब के नए ठेके खुलेंगे

—ललित मोहन बंसल

नई दिल्ली, १ सितम्बर। दिल्ली मे शीघ्र ही देशी शराब के और नए ठेके खोले जायेगे ताकि मदिरा सेवन के इच्छुक निर्धन और असहाय लोगो को मिलावट रहित सस्ती शराब मिल सके। इस समय दिल्ली मे देशी शराब के बारह ठेके है। इनमे प्रतिदिन एक लाख बोतले बेची जाती हैं।

सुरा काड की रिपोर्ट के पश्चात यह टिप्पणी मगलवार को दिल्ली प्रशासन के आबकारी विभाग के वरिष्ठ अधिकारी ने की। सुराकाड रिपोर्ट मे न्यायमूर्ति जगदीश चन्द्र आयोग ने देशी शराब को सुलभ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से नए ठेके खोलने की आवश्यकता पर बल दिया है। रिपोर्ट मे कहा गया है कि दिल्ली की ऐसी बस्तियो मे देशी शराब के और ठेके खोले जाने चाहिए जहा निर्धन और असहाय लोग रहते है। रिपोर्ट मे इस बात का भी उल्लेख है कि देशी शराब आधे और पव्वो मे भी बची जानी चाहिए।

आबकारी विभाग के सूत्रो के अनुसार दिल्ली मे पिछले दस वर्षों मे देशी शराब का एक ही ठेका दिया गया, वह भी चालू वर्ष मे, अन्यथा इन ठेको के खोले जाने को अभी तक हतोत्साहित ही किया जाता था। इसके विपरीत आबकारी विभाग ने अपनी नई नीति के तहत राजधानी मे पिछले पाच महीनो मे भारत मे बनी विदेशी शराब की २० दुकाने खोल दी। यही नही, दिल्ली जनता के विरोध के बावजूद दो दर्जन दुकाने और खोलने की योजना है। इस समय दिल्ली मे भारत मे बनी विदेशी शराब की १५२ दुकाने है।

भारत मे बनी विदेशी शराब की बिक्री के बारे मे एक दिलचस्प पहलू सामने आया है। सूत्र बताते है कि दिल्ली प्रशासन के चारो निकायो दिल्ली राज्य औद्योगिक विकास निगम, दिल्ली राज्य नागरिक आपूर्ति निगम, दिल्ली पर्यटन विकास निगम दिल्ली उपभोक्ता सहकारी होलसेल स्टोर्स के बीच भारत मे बनी विदेशी शराब की अधिकाधिक बिक्री के लिए होड लगी हुई है।

चादनी चौक मे भाईमती दास मार्ग पर हाल मे खोली गई शराब की नई दुकान की तह मे भी दो निगमो का आपसी टकराव बताया जाता है। अभी जो नई दुकान खुली है, वह दिल्ली राज्य औद्योगिक विकास निगम की है, और कहा जा रहा है कि इस दुकान के शुरू होने के पश्चात दिल्ली पर्यटन विकास निगम की मोजूदा दुकान को बिक्री मे भारी नुकसान उठाना पड सकता है। सूत्र तो यही बताते है ये निगम भारी मुनाफे की गरज से अपने कर्मचारियो को अधिकाधिक बिक्री के लिए परोक्ष अन्यान्य लाभ दिलाते है।

दिल्ली पर्यटन विकास निगम के सूत्र बताते हैं कि देशी शराब की बिक्री से उन्हे प्रतिमाह ५० करोड रुपये की आय होती है। इसमे उन्हे प्रतिमाह तीन से पाच करोड रुपये मासिक शुद्ध लाभ होता है। निगम इस राशि का अधिकाश हिस्सा राजधानी के फ्लाई ओवरो के निर्माण मे लगाना चाहता है।

सूत्रो ने स्वीकार किया कि देशी शराब के ठेको पर प्रतिदिन भारी भीड़ होती है, और त्यौहार के मौको पर भीड काबू से बाहर हो जाती है। उनका कहना था कि देशी शराब के और नए ठेके खुलने से राजधानी की गरीब जनता को निश्चित तौर पर राहत मिलेगी।

उल्लेखनीय है कि प्रशासन के राजस्व के मुख्य स्रोतो मे आबकारी और बिक्री कर है। प्रशासन को १९९१-९२ वर्ष के दौरान आबकारी शुल्क के रूप मे २१५-४८ करोड रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है, जो पिछले एक दशक मे लगभग तीन गुणा हो गया है। प्रशासन इस शुल्क को चालू वर्ष मे तीन सौ करोड रुपये एकत्र करने का लक्ष्य बनाकर चला रहा है।

हमारे बच्चे आर्य कैसे बनेंगे ?

लेखक
प० जगतराम आर्य, बी-१०९ प्रीत विहार दिल्ली-९२

जिस आर्य समाजी ने महर्षि दयानन्द और आर्य समाज को जान लिया है और समझ लिया है,ऐसा प्रत्येक आर्यसमाजी हृदय से चाहता है कि मेरी सन्तान मेरी तरह आर्य समाज के प्रति निष्ठावान, कर्मठ बने, आर्य समाज का भूत हर समय उसके सिर पर सवार रहे, महर्षि दयानन्द का अनन्य भक्त बने। इसके लिए माता-पिता बच्चे की आयु के लिहाज से उसी स्तर का महर्षि दयानन्द का सरल, सुबोध जीवन चरित्र पढाया जाए। महर्षि के जीवन-चरित्र के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा प० गुरुदत्त विद्यार्थी, प० लेखराम आर्य मुसाफिर और महात्मा हसराज जी का जीवन-चरित्र पढाया जाए। इन पाच महापुरुषो के जीवन चरित्र पढ लेन के बाद बच्चो को आर्य समाज के बारे मे बहुत कुछ समझ मे आ जाता है और आर्य समाज के प्रति आस्था, श्रद्धा बन जाती है और वे आर्य समाज के महत्व को समझने लग जाते हैं।

कुछेक माता-पिता समझते है कि यदि हमारे बच्चे इन महापुरुषो के जीवन चरित्र को पढने और समझने मे लग जाए गे तो स्कूली किताबें जिनकी परीक्षा देकर पास होना है, उसमे कमजोर रह जाए गे और पास नही हो पाए गे। ऐसी बात नही है। २४ घण्टे मे एक घण्टा केवल इन महापुरुषो की जीवनी पढने मे लगाना है। विषय को छोडकर दूसरे विषय की पुस्तक पढने मे बच्चे विश्राम अनुभव करते है।

बच्चो को आर्य समाज मन्दिर मे साप्ताहिक सत्सग मे अपने साथ ले जाना आरम्भ कर देना चाहिए। यह प्रथा सदैव बनी रहनी चाहिए।

अक्सर देखा गया है प्राय माता-पिता लडके से अधिक लाड-प्यार करते है, लडकीसे कम। साप्ताहिक सत्सगमे भी आर्यसमाज मन्दिरमेप्राय लडकोको ही साथ ले जाते है परन्तु लडकी बेचारी को घर के किसी-न-किसी छोटे-मोटे कार्यों मे लगाए रखते है। यह न्याय नही है। एक बात याद रखिए - परिवार मे यदि माता आर्य विचारधारा की होगी तो बच्चो पर आर्य विचारधारा का प्रभाव अवश्य पडेगा। इस प्रकार समस्त परिवार आर्य परिवार होगा और यदि केवल पिता आर्य विचार धारा का होगा तो परिवार मे केवल पिता ही आर्य विचार धारा का रहेगा अन्य कोई नही। ऐसे परिवार को आर्य परिवार नही कहा जा सकता। कन्या का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वे आर्य विचार धारा की बने। बडी होकर आर्य समाज का प्रचार और प्रसार महिलाओ द्वारा जितना हो सकता है उतना पुरुषो द्वारा नही -ता। बच्चो का स्वभाव नकल करने का होता है। घर मे माता-पिता की जैसी दिनचर्या होगी, बच्चे वैसा ही करेगे। इसलिए घर का वातावरण अर्थात कार्यक्रम आर्यत्व से भरपूर हो। जैसे मिलकर सन्ध्या करना हवन-यज्ञ करना, सात्विक भोजन करना मीठा बोलना, क्रोध न करना, हर हाल म खुश रहना, सबका भला करना झूठ न बोलना आदि। बच्चे का पहला गुरु माता होती है इसलिए माता जैसा चाह, बच्चे को बना ले। इसलिए माता को सोच समझकर हर काम और हर बात करनी चाहिए जिससे बच्चे मे कोई बुरी आदत न पड जाए। ऐसा मेरा अनुभव है।

आज से ४० ५० वष पहले जैसे आर्य समाज क रग मे पूर्णतया रगे हुए आय समाजी देखन म नही आते। आज तो प्राय नकली, फसली व अवसरवादी आर्यसमाजी है। आर्य समाज के अधिकारियो म अधिकतर ऐसे है जो महर्षि दयानन्द को और आर्य समाज को समझे ही नही। आयससाज के नियमो-उपनियमो आय समाज के सिद्धातो को नही समझ है। आर्य समाज के सिद्धान्तो पर आचरण करना तो दूर की बात है। पुराने आर्य समाजी आर्य सिद्धातो पर कदाचित किसी कीमत पर भी समझौता नही करते थे। ऐसे आर्य समाजी बनने के लिए उपरोक्त चो आर्य समाज की महान विभूतियो के जीवन चरित्र और उनके कार्य पढने चाहिए तभी हम और हमारे बच्चे देवऋण, ऋषिऋण तथा पितृऋण से उऋण हो सकते हैं।

दिल्ली से आर्य समाज की हिन्दी मे ती र पत्रिकाए छपती हैं। कुछेक आर्य समाज मन्दिरो मे यह तीनो पत्रिकाए मगाते ही नही, जो मगाते भी हैं तो वहा के अधिकारी तथा सदस्यगण पढते ही नही। आर्य जगत मे क्या हो रहा है, उन्हे कुछ पता नही। आर्य ग्रन्थो के स्वाध्याय का तो नाम लेते ही नही। वह समय था जब कोई विपक्षी महर्षि दयानन्द पर तथा आर्य समाज पर कोई आक्षेप अथवा आरोप लगाता था तो आर्य समाज के अधिकारी अथवा सदस्यगण उस विपक्षी को ऐसा मुहतोड़ उत्तर देत थे कि विपक्षी भविष्य मे ऐसा साहस न करता था।

यदि आप ऐसा बनकर महर्षि दयानन्द का स्वप्न साकार करना चाहते हैं तो उपरोक्त पाच महान विभूतियो के जीवन-चरित्र अवश्य पढे और उसके बाद विश्व का अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" पढे और समझे तभी अपना आर्य समाज का तथा राष्ट्र का कल्याण कर सकेग।

महर्षि दयानन्द का जोवन-चरित्र पढकर ही पता लगता है कि उन्होने ३७ वर्ष सत्य की खोज तथा समाज सुधार के लिए कितने भीषण कष्ट सहन किए। सस्कृत के बडे-बडे धुरन्धर विद्वान वेद मार्ग को भूलकर निजी स्वार्थो के कारण जनता को अध-विश्वास, अन्ध श्रद्धा रूढिवाद, मूर्तिपूजा और अवतारवाद के अधे कुए मे धकेल रहे थ। महर्षि ने समस्त भारत के विद्वानो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। सैकडो शास्त्रार्थ हुए और सभी मे विपक्षी पराजित हुए। चकित करने वाली बात तो यह है कि एक व्यक्ति जो केवल सस्कृत पढा-लिखा हुआ था, समस्त विश्व मे चर्चित और प्रसिद्ध हुआ। समस्त विश्व मे तहलका सा मचा दिया। ऋषि, साधु-सन्त, महात्मा, धुरन्धर विद्वान सभी कहते थे कि ऐसा अद्वितीय सन्यासी आज तक न हुआ और न होगा। पूर्वजन्म के पवित्र सस्कारो को लेकर सत्य की खोज और ईश्वर प्राप्ति के लिए योगबल और ईश्वरीय वरदान प्राप्त करके मानव-मात्र के भले के लिए दिन रात व्यस्त रहकर अति कष्ट सहन करके जो कार्य किया इतना काम पौराणिको के अवतारो ने नही किया। पौराणिको के अवतारो और सन्तो, महात्माओ सन्यासियो से यदि निष्पक्षता से तुलना की जाए तो महर्षि दयानन्द का नाम सबसे ऊपर आएगा।

ध य पडित गुरुदत्त विद्यार्थी जिन्होने रात दिन काम करके २६ वर्ष की अल्पायु मे ही महर्षि दयानन्द का स्वप्नसाकार करने के लिए और आर्य समाज के प्रचार एव प्रचार मे चमत्कारिक कार्य कर दिया।

आर्य समाजी भाईयो से मेरा नम्र निवेदन है कि यदि आप आर्य समाज को सर्वश्रेष्ठ धार्मिक सस्था मानते है और आर्य समाज का काम जो ईश्वरीय काम है, उसे तन-मन धन से करना चाहते है तथा अपनी सतान को इसी राह पर ाना चाहते है तो प्रेरणा करन के लिए महर्षि दयानन्द का और उनके उत्तराधिकारी चारो विभूतियो के जीवन-चरित्र एव सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढे।

आर्य समाज का कार्य करने से आपको जो सन्तोष और आनन्द प्राप्त होगा, वैसा सन्तोष एव आनन्द सम्पत्ति प्राप्त करने से भी नही होगा।

पक्षाघात की चिकित्सा पंचकर्म से भी सम्भव

विगत बीस वर्षों मे पक्षाघात तथा पोलियो जैसी गम्भीर बीमारियो ने मनुष्य को बहुत प्रभावित किया है। पक्षाघात के रोगियो की सख्या इतनी बढ़ी है कि चिकित्सालयो मे अलग वार्ड बनाने पड़े है। पक्षाघात को वात व्याधियो मे असाध्य माना जाता है। अखिल भारतीय आयुर्वेद अनुसधान सस्थान के शोध का नया चरण 'पक्षाघात' ही है।

पक्षाघात कितने प्रकार का होता है क्यो होता है, इसके लक्षण पचकर्म चिकित्सा तथा रसायन प्रयोग/पोलियो के लक्षण, रोकथाम, चिकित्सा, रोगियो की दिनचर्या, आहार विहार इत्यादि प्रश्नो पर पिछले दिनो सस्थान के प्रमुख चिकित्सक तथा पचकर्म के विभागाध्यक्ष वैद्य वेदप्रकाश शर्मा से बातचीत हुई प्रस्तुत है उसी बातचीत के मुख्य अश —

पक्षाघात कितने प्रकार का होता है ?

—पक्षाघात की कई अवस्थाये हैं, जिसमे अर्दित पक्षाघात, एकरगघात, अधरागघात, वामभागीय, दक्षिणभागीय, सर्वागघात, बालपक्षाघात, केन्द्रविकार इत्यादि अवस्थाये है, जिसके तीन भेद किये जा सकते हैं साध्यावस्था, कष्ट-साध्यावस्था और असाध्यावस्था।

पक्षाघात के क्या लक्षण है ?

साध्यावस्था म वायुदोष अधिक होता है। यदि इस प्रकुपित वायु के साथ पित्त का अनुबन्ध हो तो दाह, उष्मा मूर्च्छावस्था इत्यादि लक्षण होते है। यदि वायु के साथ कफ आता हो तो शीतलता शोथ, भारीपन आदि महसूस होता है।

कष्टसाध्य मे वातजन्य अवस्था होती है। वातजन्य लक्षणो के साथ धातु-क्षयजन्य लक्षण हो, वेदनाए नष्ट हो जाए, आज्ञावाहक नाडियो मे ज्ञान प्राप्त प्रेरणा नष्ट हो जाए।

रोगी यदि गर्भवती स्त्री हो अथवा बाल, वृद्ध या कमजोर शरीर वाला हो तो रोग की असाध्यवस्था हो जाती है।

अकारण पसीना आना, श्वास फूलना, सिर चकराना, चक्कर आना, हाथ-पैर मे दर्द होना, मानसिक अशाति, अग-प्रत्यग मे शिथिलता, सुस्ती, नीद न आना, बोलने और चलने म लड़खडाना इत्यादि लक्षण हो तो तुरन्त उपचार कराना चाहिए।

आपके यहा किस प्रकार के रोगी अधिक आते है ?

यहा प्रतिवर्ष ८०० मे १२०० रोगी आते है जिसमे वातव्याधियो से त्रस्त ३३ प्रतिशत रोगी तथा शेष ६७ प्रतिशत पक्षाघात के रोगी होते है, यहा आने वाले ३ प्रतिशत रोगी, आधुनिक चिकित्सा पद्धति से निराश होकर आते है। अनेको रोगी ऐसे भी है जो मात्र पेय पदार्थ से जिन्दा है और वर्षों से जिन्होने अन्न नही खाया है। ऐसे रोगियो को 'मल प्रवृत्ति का अभाव होता है और इनके मुह व अग सज्ञाहीन हो जाते है। यह 'तन्द्राकाल' कहलाता है।

उम्र के आधार पर यहा ५५ प्रतिशत वृद्ध ३५ प्रतिशत युवक, और १० प्रतिशत बालक आते है जो कि क्रमश ४० प्रतिशत ७० प्रतिशत और ८० प्रतिशत लाभ प्राप्त करके जाते है।

पक्षाघात की उपचार पद्धति क्या है ?

—पक्षाघात के लिए तर्पण नस्य, शिरो अभ्यग अभ्यग लेप, स्नेहन स्वेदन, कोष्ठ शोधन और औषध चिकित्सा मुख्य सूत्र है।

स्नेहन और स्वेदन, पचकर्म पूर्व क्रियाए हैं। स्नेहन मे बला तेल का प्रशसनीय प्रयोग किया जाता है सस्थान मे बलाम्बरस पानक, बलातल पानक बला तेल अभ्यग और बलातल बस्तिका का प्रयोग होता है। इसके विशिष्ट योग चन्दन बलालाक्षादि, क्षीरबल तथा बला तेल इत्यादि है। इसके अतिरिक्त नारायण तेल, सेधवादि तेल, कारस्यकर तेल, विषगर्भ तेल, महानारायण और महाविषगर्भ तेलो का भी प्रयोग किया जाता है।

स्वेदन म पिडस्वेद नाडीस्वेद, स्निग्ध पोटली, शुष्क पोटली सेक, शुष्क वाष्प सेक, तथा कुटी सेक आदि पद्धतियो से इलाज किया जाता है।

नस्य मे मूर्छावस्था और श्वास मे तकलीफ होने पर षडबिन्दु तेल नस्य, अजाजी पोटली नस्य इत्यादि क्रियायें की जाती हैं।

बस्ति म अनुवासन बस्ति एनीमा के रूप म बला तेल बस्ति तथा सेध-वादि बस्ति दी जाती है। पक्षाघात मे अन्य शिरबस्ति, मात्राबस्ति, सिद्धबस्ति आदि का प्रयोग होता है।

पक्षाघात की श्रेष्ठ औषधिया कौन-कौन सी हैं ?

—पक्षाघात मे बृहत वात, चिन्तामणि वात, कुलान्तक, वात विधसक, महायोगराज गुग्गल, सिंहनाद, ब्राह्मी बूटी, महालक्ष्मी विलास रस, अग्नितुंडा, स्मृतिसागर रस, अभ्रक भस्म, मल्ल सिंदूर, वचा, शखपुष्पी, पिप्पली, काली मिर्च आदि को अवस्थानुसार दिया जाता है।

पक्षाघात मे 'बला' प्रयोग सर्वश्रेष्ठ माना गया है। बला के चारो भेद-बला, अतिबला, महाबला और नागबला उपयोग होते हैं।

क्या बाल पक्षाघात (पोलियो-माइलाइटिस) की पचकर्म चिकित्सा से रोकथाम सभव है ?

—बाल पक्षाघात के लिए पचकर्म चिकित्सा सभव है। इसके लिए अभ्यगबला तेल, पिण्ड स्वेद, मात्रबस्ति तथा रसायन चिकित्सा की जाती है।

पोलियो के लिए कपोत विष्टादि तथा बला तेलो का प्रयोग लाभकारी रहता है।

पक्षाघात के लिए और बाल पक्षाघात के लिए आदर्श दिनचर्या और आहार-विहार क्या है ?

—पक्षाघात के रोगियो को सुबह से शाम तक हर कार्य मे गरम जल का प्रयोग करना चाहिये। पानी गर्म करते समय उसमे निर्गुण्डी के ५० ग्राम पत्ता को पाव लीटर पानी मे डाल लेना चाहिए।

सुबह गरमपानी से दैनिक दिनचर्या से निवृत्त होकर पूर्व वर्णित तेलो मे से उपयोगी तेल की मालिश करे। यह मालिश रोग स्थानो, मास पेशियो व स्नायुयो पर नीचे से ऊपर की तरफ करे। तेल मालिश के पन्द्रह मिनट बाद शरीर को आग का सेक दे, फिर सामान्य व्यायाम करके स्नान करे।

प्रात कालीन नाश्ते मे शहद, दूध या मधुयष्टि के साथ अनार के दाने चबायें। सल्पाहार मे ५० ग्राम बादाम का हलवा या घी मिला हुआ सौ ग्राम दलिया या खिचडी ल।

भोजन म रोटी, साठी चावल तुवर की दाल या मसूर की दाल, परवल, गोभी, आलू, अरबी, सेम, मटर, भिण्डी इत्यादि हरी सब्जियो को लेना चाहिए।

कुछ अपनी कुछ उनकी

भारत की जनसख्या को बढते हुए रोज प्रात काल दूरदर्शन पर ठीक ७ बजे देखा जा सकता है। मेरा अनुभव है कि एक गायत्री मन्त्र का जितनी देर सामान्य गति से उच्चारण किया जाये उतनी देर मे इसके २७ पदो के बराबर सख्या मे बच्चे पैदा हो चुके होते है। देश की जनसख्या आज दिनाक २५ १० ९२ का लगभग ८७ ३० २६ ५०७ है और जब तक यह लेख पाठको के हाथ म होगा तब तक शायद २ या ४ जिलो की जनसख्या के बराबर किलकारिया मारते बच्चे इस धरती पर पदार्पण कर चुके होगे।

इसम कोई दो राय नही कि मनुष्य योनि कम योनि है और इस योनि म जीव कर्म करने के लिए ही परमात्मा द्वारा भजा जाता है तथा ईश्वरीय नियम क मताबिक समस्त कर्मो का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति ही होना चाहिए। अर्थात दूसरे माने म यो कहा जा सकताहै कि मोक्ष प्राप्ति के लिए मनुष्य योनि अन्तिम सोपानहै। पर इसका अभिप्राय यह कतई नही हो सकता और न ही होना चाहिए कि जनसख्या वद्धि की रोकथाम के उपायो का विरोध किया जाये। इस देश की धरती पर ऐसा वहा लोग करते आये हु जो उक्त ईश्वरीय ज्ञान पुनजन्म के सिद्धान्त इत्यादि का विरोध करते रहे है और जो एक पत्नीव्रतधारी नही है तथा जो किसी एक समुदाय या एक वाद के नाम र अपनी स्थिति को मजबूत करने के उददेश्य से जनसख्या वद्धि का उपदेश करते है जिससे वोटो की राजनीति म वतमान अन्ध सेकुलर वाद उनका पिछलग्गू बना हे और धीरे धीरे राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर इस देश की सत्ता और शासन पर काबिज हो जाय। मेरा इशारा स्पष्ट रूप से मुसलमान समुदाय और इस्लामवाद की ओर है और यह मेरा दावा है कि बढती जनसख्या का हिसाब यदि अलग अलग करके लगाया जाये तो यह स्पष्ट हो जायगा कि मुसल मानो की जनसख्या हिन्दुओ य। अन्य मतावलम्बियो की जनसख्या से अधिक तेजगति से बढ रही है। परन्तु यह सेकुलरवाद इन बातो को स्पष्ट करने का और इनकी रोकथाम के लिए कोई महत्वपूर्ण और कडा कदम उठाने का साहस कदापि नहा कर सकता परन्तु सजय गाधी अवश्य इन सेकुलरवादी नेताओ का अपवाद था।

आज के सेकुलरवादी नेताओ की आख सयुक्त राष्ट जनसख्या कोष का पाकिस्तानी कार्यकारी निदेशक श्रीमती डा० नफीश सादिक के इस स्पष्ट वय न से खुल जानी चाहिए कि इस्लाम धम म ऐसा कुछ भी नही जिस हथियार बनाकर परिवार नियोजन के रास्ते म बाधा उत्पन्न की जाये। उनका कहना है कि इस्लाम तो यह कहता कि मद और औरत को ववाहिक जीवन का उत्तरदायित्व सभालने के लिए आर्थिक रूप से तैयार रहना चाहिए। श्रीमती सादिक ने स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये कि इन्डोनेशिया मिश्र और ईरान के अतिरिक्त कई इस्लामी देशो ने परिवार नियोजन के क्षत्र म बड कदम उठाकर उल्लेखनीय कार्य किये है। अब उक्त बयान से तो ऐसा प्रतीत होना है कि जनसख्या वद्धि का वकालत करना और परिवार नियोजन के उपायो का विरोध करना इस्लामी मान्यताओ के विरुद्ध है।

अब भगवान जाने भारत के इस्लामी वकील ज्यादा विद्वान है या पाकिस्तानी यह फैसला तो वे स्वय करत रहेग परन्तु हम तो केवल इतना जानते है कि धम के नाम पर किसी भी प्रकार की मान्यता परिवार को वेहतरी के लिये किय गये उपायो का मुखालफत नही कर सकती। —विमल वधावन एडवोकेट

प्रथम वार्षिकोत्सव तथा (ऋ ष मेला)

दिनाक ३० १० ९२ से १ ११ ९२ तक मनाया गया

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि वदिक प्रचार मण्डल २९ मन्दिर (माम राम नगर (हाउसिंग बोड कालोनी के पास) अम्बाला छावनी का वार्षिकोत्सव बड उत्साह पूवक मनाया गया।

समारोह मे उच्चकोटि के स यासी स्वामी इन्द्रवेश जी स्वामी माधवानन्द सरस्वती प्रो उत्तमचन्द शरर आचाय देवव्रत जी डा० सवदानन्द आय (कुलपति कुरुक्षत्र विश्वविद्यालय डा० विक्रमसिवेका (पजाब विश्वविद्यालय) ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी डा० धमदेव विद्यार्थी दाऊदयाल जी प० जयदेव जतोई वाल तथा स्थानीय उपदेशक एव भजनोपदेशक आदि के अतिरिक्त श्री धमवीर गाबा (मन्त्री हरियाणा सरकार) श्री बच्चनसिंह आय मन्त्री हरियाणा सरकार तथा डा० रामप्रकाश जी (म त्री हरियाणा सरकार) एव श्री बृजआनन्द जी (एम एल ए) एव (अध्यक्ष हरियाणा टूरजम) ने पधार कर श्रोताओ का ज्ञानवधन किया।

विदेश समाचार

आर्यसमाज लंदन मे हिन्दी दिवस

२० सितम्बर १९९२ को आयसमाज लदन मे हिन्दी दिवस का सफल आयोजन श्री वारेन्द्र वीर वर्मा (प्रधान) की अध्यक्षता मे किया गया। उसमे अनेक कवि और हिन्दी प्रमी विद्वानो ने भाग लेकर हिन्दी के प्रचार और प्रसार की विशेष योजना बनाकर कार्य करने पर सर्वाधिक बल दिया।

हिन्दी भारत का राष्ट भाषा है। अत प्रत्येक भारतीय का यह प्रमुख कर्त्तव्य है कि वह उसे जाने और सारे कार्य राष्टभाषा मे कर। यह खद की बात है कि आज तक भी स्वय भारतीय शासन तथा कुछ अराष्ट्रीय तत्व कहतेहै कि हिन्दीभाषा थोपी नही जायेगा। हिन्दी भाषा कोई अग्रजी की तरह विदेशी भाषा नही कि जिसे किसी पर थोपा जाना कहा जाय। क्या अग्रजी को स्वय थोपे जा रहे है अपने पर! यह कसा विडम्बना है। अग्रजी राज्य म अग्रजो न भारतीयो पर अग्रजी बलात थोपी मस्लिम राज्य मे मस्लिमो ने उर्दू लादा। इन दोना भाषाआ को तब तो वह स्थान और मान नही मिल पाया। किन्तु स्वतन्त्र भारत म आज लगभग ४५ वष के पश्चात ये दोनो भाषाए अपना मातभाषा और राष्ट्रभाषा दोनो पर हावी हो रहा है। दुर्भाग्य से कहना पड़ रहा है कि स्वय शासन तथा कुछ अराष्ट्रीय तत्त्व राष्ट्रभाषा का अपमान जान बूझकर करत जा रहे हे। यह नाति या तो केवल स्वाथ है अथवा निरा अदूरदर्शिता है।

जिन देशा म शिक्षा का माध्यम अपना अपनी मातभाषा और राष्ट्रभाषा है वहा देश आज विकसित देशो की पक्ति म है। शिक्षा के लिए विदेशी भाषा का अपनाना नई पीढी के साथ अत्याचार है और शिक्षा म बाधा है। जापान अमरीका फ्रान्स रशिया चीन आदि देश अपने सारे काय राष्ट्रभाषा म करत है। इत्यादि विषयो पर वक्ताओ ने विशेष जोर दिया।

इस कायक्रम म प्रा० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज श्री वारेन्द्र वीर वर्मा डा० ऋषि श्री कौशल श्री सुरेश गुप्ता श्री साहन रानी डा० भागव श्री प्रभाकर शमा श्रीमती उर्बशी श्रीमती स्वर्णा शर्मा श्री जगदीश कपिला एव किरण भागिया थे। श्री राजेन्द्र चोपडा मन्त्री ने सबका आभार प्रकट किया। —डा० नानाजी आचाय लदन

लुधियाना मे लाला लाजपतराय बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे अन्त कालेज भाषण प्रतियोगिता

आय युवक सभा लुधियाना की ओर से ७ नवम्बर को प्रात ११ ३० बजे एस सी डी कालेज फार वीमेन दरेसी रोड लुधियाना मे लाला लाजपतराय बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे अन्त कालेज भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। समारोह की अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता पूव एम एल ए तथा उदघाटन श्री एम के कथूरिया रिजनल मैनेजर न्यू बक आफ इण्डिया करेगे। —रोशनलाल आय प्रधान
आय युवक सभा पजाब

आर्य समाजों के निर्वाचन

—मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल मे स्वामी सत्यानन्द जी प्रधान श्री सेवाराम जी आर्य मन्त्री श्री रमेशचन्द्र दीक्षित कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर पलवल मे श्री अजीत कुमार आर्य प्रधान, श्री सत्यपाल आर्य मन्त्री मा० मदनलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज चन्दैना मे श्री राजेश आर्य प्रधान श्री ऋषिपाल आर्य मन्त्री, जिलेसिंह आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा जौनपुर मे श्री अयोध्याप्रसाद जी प्रधान, श्री रमाशंकर आर्य मन्त्री श्री मन्नप्रसाद जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज बम्बई मे श्री झाऊलाल जी शर्मा प्रधान, श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय मन्त्री श्री करसनदास जी राणा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य केन्द्रीय सभा आगरा मे श्री दयानन्द आर्य प्रधान, श्री सन्तोष कुमार मन्त्री श्री उमेशचन्द्र गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज सैक्टर २२ ए चण्डीगढ़ मे श्री रामरतन महाजन प्रधान, श्री बुद्धराम आर्य मन्त्री श्री महावीर शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज पालम कालोनी नई दिल्ली मे श्री राजेश बहल जी प्रधान, के० भागमलसिंह मन्त्री श्री नेकीराम आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—हि० प्र० संस्कृत शिक्षक परिषद हमीरपुर मे श्री रत्नचन्द्र प्रधान, श्री रामप्रकाश महासचिव श्री पृथ्वीचन्द्र कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के तत्वावधान मे वेद प्रचार की धूम

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के तत्वावधान मे मेवात क्षेत्र के तेतालीस स्थानो पर वेद प्रचार कार्यक्रम की धूम सकुशल सम्पन्न हुई।

क्षेत्र की अनेको समस्याओ को मुद्दा बना कर आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात क्षेत्र के ग्रामीण अचलो म १२ सुयोग्य प्रचारको द्वारा धुआधार प्रचार कराया गया था जो बहुत ही सफल रहा। प्रचार कार्यक्रम लगभग दो मास तक निरन्तर चलता रहा। ग्रामीण हिन्दू जनमानस मे इस बार नई चेतना जागी है। तथा इस प्रकार का निरन्तर प्रचार कराने की माग की जारही है।

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के मन्त्री श्री सत्यम ने बताया कि मण्डल मे एक और भजनोपदेशक की स्थाई नियुक्ति कर ली गई है जिससे प्रचार कार्यक्रम को और अधिक गति दी जा सके।

श्री सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम ने हरियाणा दिवस १ नवम्बर से १० स्थानो पर महिला जागृति अभियान चलाने की भी घोषणा की।

श्री सत्यम ने विशेष जोर देकर कहा कि मेवात क्षेत्र मे आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात गौ सम्वर्धन क्षेत्रीय अल्पसख्यक हिन्दुओ मे समाजिक एव धार्मिक चेतना, बाल विकास योजनाओ का क्रियान्वयन युवा पीढ़ी मे राष्ट्रीयता एव नैतिकता के साथ साथ अछूतोद्धार पर विशेष बल देता रहेगा।

—दीवानचन्द्र आर्य

आर्य युवा सम्मेलन

आर्य समाज मन्दिर मार्ग के ६८ वे वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान मे आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे १५ नवम्बर १९९२ को आर्य युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर अनेको गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

छुट्टियों का देश

भारत छुट्टियो का देश है। यहा छुट्टिया ही छुट्टिया हैं। दुनिया भर मे कही भी इतनी छुट्टिया नही होती। हमारे देश मे हर धर्म, हर मजहब और हर शुभावसर पर छुट्टी होती है यह फेहरिस्त बहुत लम्बी है और इसमे भी दिन-प्रतिदिन नई छुट्टिया जुडती जा रही हैं। यह हाल रहा तो वह दिन दूर नही जब कैलेंडर मे सिर्फ उन्ही दिनो को लाल रग मे अलग से दिखाया जायेगा, जिन दिनो अवकाश नही है। वर्ष के शेष दिनो मे छुट्टिया रहेंगी। बचे-खुचे कार्य दिवसो के लिये कर्मचारी घर बैठे आकस्मिक, अर्जित, चिकित्सा मातृत्व इत्यादि अवकाशो के लिए आवेदन पत्र भेज कर आराम से तन्ख्वाह अर्जित किया करेंगे। इससे दफ्तरो पर सरकारी व्यय कम होगा और देश की उत्पादकता बढेगी ? पिछले दिनो केरल सरकार के सभी दफ्तर 'ओणम' के अवसर पर लगातार १५ दिन बन्द रहे। वहा के मुख्यमन्त्री का कहना था कि इससे सरकारी खर्च मे बचत होगी। इस पर हमारे प्रधानमन्त्री महोदय गम्भीरतापूर्वक विचार करके देश भर के सभी दफ्तर बन्द कर दे तो भारत सरकार को करोडो क्या, अरबो रुपये की बचत हो सकती है। वैसे भी अधिकतर दफ्तर, कर्मचारी और अधिकारी सरकार को नुकसान ही पहुचा रहे हैं। वित्त-मन्त्री महोदय कृपया ध्यान दें और लगे हाथो इनका भी निजीकरण करवा दे।

काम कम, छुट्टी ज्यादा—हम कम से कम काम करने मे विश्वास रखते है और ज्यादा से ज्यादा छुट्टिया लेना चाहते है। यह हमारा राष्ट्रीय चरित्र है। काम करने के मामले मे भले ही हम निखट्टू हो लेकिन हम पहले ही से प्लानिंग करके देख लेते हैं कि कब दो-तीन दिनो की छुट्टिया पड़ रही है और १-२ दिन की छुट्टी लेकर (या मार कर) तथा आगे-पीछे सडे जोड कर बच्चो के नाना-नानी या दादा दादी के पास जाने का प्रोग्राम बना लेते हैं। हमारे अन्य भाई-बहन भी, राष्ट्रीय चरित्र के अनुरूप ऐसा ही करते है। इससे रेल-गाडी के डिब्बो मे भारी भीड़ इकट्ठी हो जाती है और हम सब मिल कर भारतीय रेल को बेहतर बनाते हुए उसका लाभ उठाते है। त्यौहार से लौटकर हम अपनी खाली जेब और महगाई का रोना रोने है।

साल मे कई बार यहा त्यौहारो का माहौल होता है। हफ्त मे ४ दिन जब छुट्टी होगी तो स्वाभाविक है कि शेष ३ दिन कार्यालयो मे काय और भीड बढ जाएगी। ऐसे मे ग्राहको को असुविधा होना भी स्वाभाविक है क्योकि आधे से ज्यादा कर्मचारी छुट्टी पर होते हैं। शेष बचे कर्मचारी भी काम नही करते। सिर्फ इतना ही कहते है—'फलाना बाबू या दफ्तरी या साहब छुट्टी पर है। उनके लौटने पर ही काम होगा।" इस तरह अरबा-खरबो काम के घटे बर्बाद हो जाते है। कार्य ठप्प हो जाता है और लोगो को परेशानी होती है। मजे की बात तो यह है कि बडे साहब से लेकर अदना कर्मचारी तक सभी बगुले की तरह ध्यान लगाये बैठे रहते है कि कब छुट्टियो पर जाए। मौका मिलते ही सब खिसक लेते है और निर्धारित तिथि के कुछ दिन बाद बाकायदा विलम्ब से लौटकर कोई बहाना बनाते है।

धर्म और कर्म—एक विशेष किस्म के धार्मिक लोगो पर मेरी श्रद्धा दिनो-दिन गहरी होती जा रही हैं, जो भगवान, खुदा गोड के लिए तो बहुत पूजा-नमाज प्रेयर करते है लेकिन बेईमान और भ्रष्ट है तथा दफ्तर मे काम से मन चुराने है। शायद ही कोई धर्म सिखाता हो कि बेईमानी भ्रष्टाचार और कामचोरी करो। मेरे विचार मे तो धर्म की आड लेकर कामचोरी करना पाप है। कर्म ही पूजा है।

आदिकाल मे जब धर्मग्रन्थ लिखे गये तब शायद दफ्तर और कारखाने नही होते होगे। इतने ढेर सारे कामचोर भी नही होत होगे, तब धर्म गुरुओ ने यह कल्पना भी न की होगी कि धर्म लोगो के लिये अफीम बन जायेगा और लोग इसकी आड मे निकम्मे हो जायेंगे।

मनुष्य मे बुद्धि है और वह तजी से विकसित और सभ्य हो रहा है। इस दौड़ मे हमे भी थोडा कष्ट, थोडा श्रम करना होगा। हमे सदियो पुरानी सोच बदलनी होगी। हमे सकल्प लेना होगा कि दफ्तरो और कारखानो मे निष्ठा पूर्वक कार्य करके उत्पादकता और खुशहाली बढायेंगे।

और अन्त मे—भारत मे छुट्टियो का परिवार नियोजन करने पर एक राष्ट्रीय बहस होनी चाहिये। इस समय देश मे ३ राष्ट्रीय अवकाश घोषित हैं, १५ अगस्त, २६ जनवरी और २ अक्तूबर। इनमे से सिर्फ १५ अगस्त को ही छुट्टी पर्याप्त होगी। २६ जनवरी को हम सुबह एक घटे परेड करें और शेष दिन जमकर काम करे। २ अक्तूबर को महात्मा गाधी को श्रद्धापूर्वक स्मरण कर सत्य का आचरण करे।

दीवाली और होली पर छुट्टी वाजिब है। राखी दशहरा, रामनवमी, जन्माष्टमी इत्यादि सुबह-शाम मनाकर काम पर जा सकते है। ईद और क्रिसमस पर भी छुट्टी होनी चाहिए। अन्य धर्म गुरुओ पर भी हमारी पूर्ण श्रद्धा है किन्तु उनके जन्मदिवसो पर हमे अधिक काम करने की शपथ लेनी चाहिए, न कि आराम करने की। नानक, बुद्ध और महावीर जयन्ती भी हम आपस मे मिल-जुलकर मनाए। अन्य छुट्टियो की हमे क्या जरूरत है।

यदि दफ्तरो और कारखानो की उत्पादकता और देश की खुशहाली बढानी है तो हमे छुट्टियो का परिवार-नियोजन करना ही होगा।

—जगत सिंह बिष्ट, जि० सोधी

नवलखा महल की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के नाम हो गई

मुख्य हस्तातरण समारोह २८-२९ नवम्बर को उदयपुर में मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिह शेखावत द्वारा सम्पन्न होगा

सार्वदेशिक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान और आर्यसमाज उदयपुर के विशेष प्रयत्नो से राजस्थान सरकार ने महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित ऐतिहासिक नवलखा महल आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को ९९ साल के लीज (पट्टे) पर हस्तातरण की कार्यवाही पूरी करके १४-१०-९२ को विधिवत् इसकी रजिस्टरी प्रतिनिधि सभा के नाम कर दी है।

इसी प्रसग मे १३-१० ९२ को नवलखा महल के प्रागण मे वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे उदयपुर सभाग के आयुक्त श्री धर्मसिह सागर एव अतिरिक्त जिलाधीश तथा नगर दण्डनायक श्री चतरसिह बैनीवाल ने भी भाग लिया। इस अवसर पर उदयपुर के अनेको गणमान्य नागरिक एव आर्य सभासद् उपस्थित थे। यज्ञ मे श्री बैनीवाल के अतिरिक्त सर्वश्री हनुमानप्रसाद चौधरी श्री छोटूसिह एडवोकेट, केशवदेव वर्मा व गोकुललाल आदि ने भाग लिया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विद्यासागर शास्त्री, मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती तथा अन्य प्रमुख अधिकारी भी उपस्थित थे। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती न राज्य सरकार से विशेष रूप से माग की कि नवलखा महल के हस्तातरण के बाद यहा महर्षि का एक भव्य स्मारक स्थापित किया जावे और साथ ही उनके कार्य और चिन्तन एव वेद के सम्बन्ध मे शोध केन्द्र की स्थापना की जावे ताकि महर्षि के अधूरे कार्य को पूरा किया जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से आगामी २८ और २९ नवम्बर ९२ को नवलखा महल स्वीकरण समारोह दो दिवसीय आर्य महा-सम्मेलन के रूप मे उदयपुर मे मनाया जायेगा। इस अवसर पर राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिह शेखावत नवलखा महल आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को विधिवत् हस्तातरित करेंगे।

वेद प्रचार एव यज्ञोपवीत संस्कार

आर्य समाज कोतरादा (पश्चिमी चम्पारण) मे वेद प्रचार का सफल कार्यक्रम दिनाक २३ एव २४ सितम्बर १९९२ को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस प्रचार कार्यक्रम की सफलता का ही परिणाम है कि उपदेशादि से प्रभावित होकर सात व्यक्तियो ने यज्ञोपवीत धारण करन की प्रतिज्ञा की। अगले दिन समाज के प्रधान श्री जगन्नाथ आर्य के निवास स्थान पर यज्ञोपवीत सस्कार का आयोजन किया गया। सातो व्यक्तियो ने यज्ञोपवीत धारण किया। अन्य गावो से भी हजारो लोग वेदादि का प्रवचन सुनने आते रहे एव लाभान्वित हुए। सभी श्रोताओ एव दर्शको ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की।

पोस्टल रजिस्ट्रशन न० डी० एल० ११०४९/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (८ ११ १९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U 93Post in N D P.S O on 5, 6 11 1992

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज पजाबी बाग एक्सटैन्शन नई दिल्ली का सातवा वार्षिकोत्सव ९ से १५ नवम्बर तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ९ से ११ नवम्बर तक प्रात काल प्रभात फेरी का आयोजन किया गया है। तथा १२ से १४ नवम्बर तक चतुर्वेद शतकीय यज्ञ डा वीरपालजी विद्यालकार के पौरोहत्य मे सम्पन्न होगा। तथा प्रतिदिन सायकाल को भजन तथा प्रवचन भी सम्पन्न होगे। मुख्य कार्यक्रम १५ नवम्बर को सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक तथा नेता पधार रहे हैं।

—आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर का वार्षिक महोत्सव ८ से १० नवम्बर तक श्री विद्यासागर शास्त्री की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के अतिरिक्त आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान सन्यासी महात्मा तथा विद्वान पधार रहे है। प्रतिवर्ष की भाति कार्तिक मास का विशेष यज्ञ १२ अक्तूबर से प्रारम्भ हो चुका है। जिसकी पूर्णाहुति १० नवम्बर को समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा।

छिन्दवाडा नगर मे एव ८ नवम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ का प्रान्तीय सम्मेलन तथा आर्य समाज छिन्दवाडा का वार्षिकोत्सव और श्रीमद्दयानन्द शिक्षा समिति द्वारा सचालित विद्यालय का वार्षिक स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा का भी आयोजन किया गया है। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक एव नेता पधार रहे हैं।

—आर्य समाज गोविन्द बाग बलरामपुर जनपद गोण्डा का वार्षिकोत्सव १३ नवम्बर से १ नवम्बर तक महाराजा बलरामपुर की पुरानी हवेली मे धूमधाम से मना रहा है। इस अवसर पर विद्वानो के अमृतमय प्रवचन सुनने हेतु अधिक से अधिक सख्या मे पधारे।

नगर आर्य समाज गोरखपुर का चौवनवा वार्षिकोत्सव गोपाष्टमी के राष्टीय पर्व पर ३० अक्तूबर से ३ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक तथा साधू महात्माओ ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया। १ नवम्बर को पूर्वाचल आर्य सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज मुल्तानपुर नैनीताल का वार्षिकोत्सव १० से १२ अक्तूबर तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रात यज्ञ प्रवचन तथा उपदेश के कार्यक्रम हुए। दोपहर तथा सायकाल को भी प्रभावोत्पादक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस अवसर पर श्री रामस्वरूप आर्य तथा श्री जयदेवसिंह आर्य को सम्मानित किया गया १० अक्तूबर को एक विशाल शोभा यात्रा नगर के मुख्य मार्गों से निकाली गई जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

—आर्य समाज गुरुकुल अशोक विहार मे १६ अक्तूबर से १८ अक्तूबर तक एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर युग पुरुष श्री राम के सम्बन्ध मे विचार तथा यज्ञ भजन उपदेश तथा बच्चो के कार्यक्रम रखे गये।

—आर्य समाज नजफगढ का ५ वा वार्षिकोत्सव ९ से ११ अक्तूबर तक महर्षि दयानन्द पार्क मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा वक्ताओ ने उपदेश दिये। प्रथम दिन विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसका नगर निवासियो पर अत्यन्त प्रभाव पडा।

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का ६७ वा वार्षिकोत्सव १२ ९ ९२ से २० ९ ९२ तक जन सम्पर्क के रूप मे मनाया गया। समारोह मे प्रतिदिन प्रात काल यज्ञ भजन तथा प्रवचन का कार्यक्रम चलता रहा। कार्यक्रम मे आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय तथा भजनोपदेशक श्री सीताराम जी आर्य ने उपस्थित जन समूह का भरपूर ज्ञानवर्धन किया। समारोह मे कुलभूषण जी भाटिया बालकृष्ण जी शास्त्री स्वामी सुमना यति ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर पारिवारिक सत्सगो का आयोजन तथा महिला सम्मेलन भी आयोजित किये गये। मुख्य कार्यक्रम मे श्री वीरेन्द्र जी ने देश सस्कृति धर्म तथा भाषा के विषय मे उदबोधन दिया।

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार जि हरद्वार (उ प्र)

ह

(पृष्ठ १ का शेष)

का प्रसारण बन्द नहीं किया गया तो उसके विरुद्ध देशव्यापी आन्दोलन चलाया जायेगा। हजारो आर्य समाजो ने भी इस सम्बन्ध मे प्रस्ताव पारित करके सरकार को भेजे थे।

यह प्रसन्नता की बात है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प० राजगुरु शर्मा श्री कृष्णगोपाल माहेश्वरी एडवोकेट और श्री उमेशचन्द्र माहेश्वरी एडवोकेट द्वारा मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय मे प्रस्तुत याचिका पर इन्दौर खण्डपीठ ने उक्त निर्णय सुना दिया है। ●

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल सहारनपुर द्वारा आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन २१ अक्तूबर से ३० अक्तूबर तक किया गया। इस अवसर पर डा० देवव्रत आर्य प्रधान सचालक सा० आर्य वीर दल के अतिरिक्त अनेको विद्वानो ने समारोह मे भाग लिया। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता चौ० घसीटासिंह द्वारा की गई तथा मुख्य अतिथि श्री सत्यवीर आर्य थे। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री देवपाल आर्य तथा अध्यक्षता श्री गिरवरसिंह ने की। इस अवसर पर अनेको प्रबुद्ध शिक्षको के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

वैदिक सगोष्ठी व आर्य सम्मेलन

आर्य समाज गज स्टेशन रोड मुरादाबाद के तत्वावधान मे १९ से २१ अक्तूबर तक तीन विशेष आयोजन सम्पन्न हुये। किरीट जोशी की अध्यक्षता मे वैदिक सगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था वैदिक शासन व्यवस्था आर्य सम्मेलन के आयोजन मे आध्यात्मिक गुरुओ विद्वानो एव नेताओ को आमन्त्रित किया गया तथा विश्व कल्याणार्थ वृहद यज्ञ का आयोजन भी किया गया जिसमे गुरुकुल के ब्रह्मचारी तथा अध्यापको ने भाग लिया।

समाज कल्याण मन्त्राणी आर्य पुत्री बनी

कानपुर १८ अक्तूबर। आर्यसमाज के अध्यक्ष एव प्रख्यात महिला उदधारक श्री देवीदास आर्य की नारी जगत को समर्पित अमूल्य सेवाओ का प्रशसा करते हुये प्रदेश की समाज कल्याण मन्त्री श्रीमती प्रेमलता कटियार ने कहा कि माननीय आर्यजी वैसे तो मेरे राजनैतिक गुरु हैं आपने ही मुझे घर की दुनिया से निकाल कर समाज सेवा के लिए प्रेरित किया था वरना आज मैं एक सामान्य घरेलू महिला होती माननीय आर्य जी पाच सौ अनाथ कन्याओ का कन्यादान करके पाच सौ पुत्रियो का पिता होने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं। मैं उसमे थोडा सशोधन कर उन्हे पाच सौ एक पुत्रियो के पिता घोषित करती हू। क्योकि उनकी पाच सौ एकवी पुत्री मैं स्वय हू यद्यपि मेरा विवाह आर्य जी ने नही कराया था

उपरोक्त उद्गार श्रीमती प्रेमलता कटियार ने आर्यसमाज गोविन्द नगर तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज के ४५व तीन दिवसीय सयुक्त अधिवेशन के समापन समारोह मे व्यक्त किये।

—आर्य समाज कपूरथला के वार्षिकोत्सव का मुख्य कार्यक्रम १८ अक्तूबर को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। सप्ताह भर चलने वाले इस कार्यक्रम मे प्रतिदिन योग शिविर तथा गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ। समारोह मे आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वानो व भजनोपदेशको ने भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री सत्यानन्द मुन्जाल तथा अध्यक्षता श्री ऋषिपालसिंह एड० ने की।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- देखो ! जिसके शरीर मे सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य बुद्धि बल और पराक्रम बढ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।
- चाहे मरण पर्यन्त कन्या पिता के घर मे बिना विवाह के बैठी भी रहे परन्तु गुणहीन असदृश और दुष्ट पुरुष के साथ कन्या का विवाह कभी भी न करे।
- कन्या और वर का विवाह के पूर्व एकान्त म मेल न होना चाहिए क्योंकि युवावस्था म स्त्री पुरुष का एकान्त वास दूषण कारक होना है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३ अंक ४१]   दयानन्दाब्द १६८   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१   मार्गशीर्ष शु० ५   सं० २०४८ १५ नवम्बर १९९१

पंजाब से आतंकवाद समूल नष्ट होने के बाद ही सेना लौटेगी

पाकिस्तान की शत्रुतापूर्ण करतूतें ज्यादा दिन नहीं चलेंगी

हिन्दसमाचार शहीद परिवार फण्ड के सहायता वितरण समारोह मे श्री जैकब की घोषणा

जालन्धर ८ नवम्बर। जालन्धर मे हिन्द समाचार शहीद परिवार फण्ड के ८७वें सहायता वितरण समारोह म मुख्य अतिथि भारत सरकार के गृहराज्यमन्त्री श्री एम०एम० जैकब ने पजाब के निवासियो को विश्वास दिलाया कि केन्द्र सरकार उन्हे कभी भी मझधार मे नही छोडेगी। जब तक राज्य म प्रत्येक व्यक्ति अपने को आतंकवाद से सुरक्षित अनुभव नही करेगा तब तक वहा से सेना को वापस नही लौटाया जायेगा। उन्होने पजाब के लोगो की प्रशसा करते हुए कहा कि वे बडे साहस के साथ आतंकवादियो से जूझ रहे है और बहुत लम्बे समय से देश के रक्षक के रूप मे विदेशी हमलावरो के विघटनकारी मन्सूबो को नाकाम याब कर रहे है जिसके लिए सारा देश सदैव उनका ऋणी अनुभव करता रहेगा। श्री जैकब ने दृढ शब्दो म कहा—पजाबी इस बात के लिए भी बधाई के पात्र हैं कि उन्होने पाकिस्तान की इच्छा के अनुरूप आतंकवादियो की साम्प्रदायिक दगे करवाने की सभी योजनाओ को भी विफल कर दिया है। उन्होने पाकिस्तान की शत्रुतापूर्ण और कुटिल चालो की भर्त्सना करते हुए स्पष्ट किया कि उसकी यह करतूते ज्यादा दिन नही चल सकेगी। क्योकि अब पाकिस्तान द्वारा भारत म आतंकवाद को बढावा और समर्थन देने की कारवाई की विश्वभर मे निन्दा की जाने लगी है और इसके खिलाफ साझी रणनीति बनाने की आवश्यकता पर भी विचार हो रहा है इस प्रकार आज पाकिस्तान विश्व के अनेक देशो से अलग थलग पड गया है।

जैकब ने प्राचीन भारतीय सस्कृति की प्रशसा करते हुए कहा—राष्ट्रवासियो के हृदय म एक गहरी सास्कृतिक एकता का सूत्र मौजूद है जो हमारी विभिन्नता को कभी भी बिखरने नही देता है। उन्होने हिन्द समाचार समूह द्वारा शहीदो के परिवारो को दी जा रही सहायता योजना की भूरि भूरि प्रशसा की। इस अवसर पर हिन्द समाचार पत्र समूह के परिसर मे हिन्द समाचार शहीद परिवार फण्ड से उग्रवाद पीडित परिवारो मे छः लाख चालीस हजार रुपए की राशि श्री जैकब द्वारा वितरित की गई। प्रत्येक पीडित परिवार को वित्तीय सहायता के अतिरिक्त एक सिलाई मशीन, पखा तीन कम्बल एक खेस एक बर्तन सैट एक लेडीज सूट एक कमीज तथा साबुन व चावल की थैली भेट की गई।

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर जायेंगे

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पं० वन्देमातरम रामचन्द्र राव आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के विशेष निमन्त्रण पर आगामी १ नवम्बर को हवाईजहाज से डरबन के लिए प्रस्थान करेगे।

माननीय पण्डित जी वहा पर आर्य समाजो के कार्यक्रमो म भाग लेगे और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार कार्यों का निरीक्षण करेगे। दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर जाने वाले वह सार्वदेशिक सभा के प्रथम वरिष्ठ अधिकारी होगे। दक्षिण अफ्रीका आर्य समाजो द्वारा उनके स्वागत की जोरदार तैयारियां चल रही हैं।

माननीय पडित जी १० नवम्बर को तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन म भाग लेने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के साथ पटना जायेंगे। जहा १२ नवम्बर को तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन का उदघाटन बिहार के मुख्यमन्त्री श्री लालू प्रसाद यादव करेगे।

माननीय पडित जी १२ नवम्बर को पटना से सीधे हैदराबाद के लिए प्रस्थान करेगे और वहा से डरबन जाने की तैयारी करेगे।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

नम्रता बड़ी चीज है

— श्री जयप्रकाश सोखिया, बम्बई वाली

दो दिन की जिन्दगी पं न रस्ता उछल के चल।
दुनिया है चल चलाव की रस्ता संभल के चल।।
लेने को ओ३म् नाम, देने को कुछ दान।
तारन को है नम्रता, डूबन को अभिमान।।

नम्रता ऐसा विशिष्ट गुण है जिसके आश्रय से साधारण सा व्यक्ति उच्च पदासीन हो सकता है। जिसके अन्दर नम्रता होगी उसे अभिमान तो आ ही नही सकता। अभिमान आता तभी है जब विनम्रता को विदा कर दिया जाता है और मनुष्य आटा लगे रुमाल की तरह अकड़ा रहता है।

एक निर्धन व्यक्ति साधारण सा पढ़ा लिखा था। रोजगार की तलाश मे शहर पहुचा। एक सेठ ने उसकी विनम्रता पर अपने यहा साधारण नौकर रख लिया और झाड़ू देने का कार्य दे दिया। सेठ नौकर के घरेलू कार्य से तो प्रसन्न, प्रभावित था ही किन्तु सबसे अधिक उसकी नम्रता ने उसे प्रभावित कर दिया। एक दिन सेठ के पास कोई न था केवल यह झाड़ू लगाने वाला नौकर ही था। उसे पढ़ने मे कठिनाई हो रही थी सम्भवत: दृष्टि की कमजोरी के कारण। उसने इस नौकर से पूछा—कुछ पढ़ा भी है उसने बताया कि साधारण पढ़ा लिखा हू। पत्र उससे पढवाया तो सेठ उसके उच्चारण और शुद्धता पूर्वक पत्र पढ़ने से बहुत खुश हुआ। ऐसे ही एक दिन पत्र लिखवाने का कार्य उससे कराया तो उसका सुलेख देखकर भी सेठ चकित था। अब उसने उसे झाड़ू का कार्य न देकर अपने कार्यालय मे ही कार्य दे दिया। धीरे-धीरे वह मुनीम और फिर प्रधान मुनीम बन गया। उसे ठहरने के लिये सेठ ने एक कमरा अलग दे दिया था उसमे एक सन्दूक था जिसमें उसका कुछ निजी समान बन्द था।

सामान्यतया लोगो मे ईर्ष्या होती है। सेठ के अन्य कर्मचारी और कार्यालय के मुनीम इस उन्नत हुए मुख्य मुनीम से कुढ़ने लगे। उन्होने सेठ से शिकायत की कि आपका हैड मुनीम जिसकी आप प्रशंसा करते नहीं अघाते आपको धोखा दे रहा है उसने बहुत सी राशि व्यापार से बचाकर इकट्ठी कर छुपाकर रखली है। सेठ को इस आलोचना पर विश्वास न हुआ। उसने सुना अनसुना कर दिया। वह समझता था कि मुनीम बड़ा ईमानदार, विनम्र विश्वास पात्र है जबसे इसने कार्य संभाला है व्यापार की उन्नति ही हुई है।

लगा बुरा होता है। ईर्ष्यालु सेठ के कान भरते रहे और अन्त मे सेठ को सुझाया कि वह अपने निजी कमरे मे किसी को नही आन देता। आप चाहें तो परीक्षा करके देख ले। सेठ परीक्षा करने को तैयार हो गया क्योकि उसे सदेह जमा दिया गया।

एक दिन प्रात काल सेठ हैड मुनीम के कमरे पर पहुचा, कमरा बन्द था। आवाज दी कमरा खोलो। अन्दर से आवाज आई अभी खोलता हूं जरा ठहरें। नही अभी खोलो तुरन्त पुन बाहर से आवाज आ पहुची क्योकि यहा तो संदेह काम कर रहा था। दरवाजा खुला। सेठ आख फाड़कर देखता रहा वहां कोई सम्पत्ति न थी। हा एक कोने मे एक पुराना सन्दूक अवश्य रखा था। सेठ के साथ लगे लोगो ने कहा—सेठ जी यह सन्दूक ही तो खजाना है इसे खुलवाओ न! सेठ ने मुनीम से उसे खोलने को कहा वह गिड़गिड़ाया 'हुजूर इसे न खुलवाये।' सेठ ने कड़क कर कहते हुए उसे खुलवा लिया। उसमें क्या था? एक फटी धोती एक पुराना कुर्ता और एक पुराना जूता। सेठ के साथ आये चुगलखोर तो वहां से खिसक गये सेठ वही रह गया।

आत्मग्लानि से सेठ का कण्ठ भर गया उसे रह-रह कर पश्चाताप था कि लोगो की बात मे आकर उसने व्यर्थ सन्देह किया उसने मुनीम से पूछा आखिर बक्से मे तुमने यह सब क्यो रख छोड़ा है? हैड मुनीम का उत्तर था—ये वे वस्त्र हैं महाराज जिन्हें पहनकर मै कई वर्ष पूर्व इस नगर मे आया था। आपसे नौकरी की प्रार्थना की थी। आपने कृपा कर झाड़ू क. नौकरी दी थी आपकी उस कृपा को मैं भूल न जाऊ, अपनी वास्तविकता को भूल न जाऊं, मेरे हृदय मे कभी अभिमान न जाग उठे। इसलिये प्रतिदिन प्रात.काल दुकान पर आने से पूर्व इन वस्त्रो को देखता हू और प्रभु से प्रार्थना करता हू कि प्रभो! मुझे अभिमान से बचाकर वह शक्ति दे कि मैं अपने अन्नदाता की सेवा अधिक से अधिक परिश्रम और ईमानदारी से कर सकूं।

अत: अभिमान कभी भी नही करना चाहिये। अन्त मे यह शरीर जलकर राख का ढेर हो जाएगा।

सभा प्रधान जी द्वारा आर्य समाजों का धन्यवाद

दूर दर्शन से प्रसारित किये जाने वाले हजार घोड़ो का सवार सीरियल मे आर्य समाज विरोधी पटकथा को पढ़ने के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाज की ओर से इस धारावाहिक के प्रसारण पर रोक लगाने की जोरदार मांग की थी। सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर देश भर की हजारो आर्य समाजों ने अपने प्रस्ताव बनाकर भारत सरकार को भेजे हैं।

विदित हो कि आर्य समाज के कड़े विरोध पर मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इन्दौर खण्डपीठ ने इस धारावाहिक हजार घोड़ो के सवार पर रोक लगा दी है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उन सभी आर्य समाजों व आर्य जनो का धन्यवाद किया है जिन्होने सभा के निर्देशों का पालन करते हुए इस आन्दोलन मे अपना सहयोग दिया है। व्यक्तिगत पत्रों का उत्तर देना संभव न होने के कारण इस वक्तव्य द्वारा सबका धन्यवाद किया है।

—सभा मन्त्री

बनो वीर प्रताप, शिवा तुम

आज जरूरत है भारत को, आर्य वीर महानो की।
यश गाथाए गाता है जग, देशभक्त मर्दानो की।।

आर्य वीर उन्हे कहते है, काम जगत के आते हैं।
अबला, दीन, अनाथजनो को, अपने गले लगाते है।।
विघ्न और बाधाओ मे जो, कभी नही घबराते हैं।
मानवता के हत्यारो से, कभी नहीं दहलाते हैं।।

अमर कहानी हो जाती है, जग मे उन बलवानो की।
यश गाथाएं गाता है जग, देश भक्त मर्दानो की।।

परम पिता उस परमेश्वर को, भूल गये है नर-नारी।
भौतिकता की चकाचौंध में, अन्धी है दुनिया सारी।।
खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ, कहते हैं भ्रष्टाचारी।
भेद-भाव की, ऊच-नीच की पनप गई है बीमारी।।

घूम रही है आज टोलियां, दगा-बाज शैतानो की।
यश गाथाए गाता है जग, देशभक्त मर्दानो की।।

युवक, युवतिया, ऋषियो-मुनियो की शिक्षाएं भूल गए।
फैशन के दीवाने वैदिक, पथ से हो प्रतिकूल गये।।
स्वास्थ्य, चरित्र दिया खो, पगले झूठे मद में फूल गये।
अण्डे मांस लगे खाने, मदिरा में हो मसगूल गये।।

गीता, रामायण ना पढ़ते, होड़ है फिल्मी गानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देशभक्त मर्दानो की।।

भारत मां के वीर सपूतो, अपना सीना तान उठो।
क्या थे हम क्या आज गये हो, ठीक तरह पहचान उठो।।
बनो वीर प्रताप, शिवाजी, मलवा से बलवान उठो।
बिसमिल, शेखर, भगतसिंह, बन भारत मां की शान उठो।।

निर्भय अकिल ठीक कर दो, तुम पापी बेईमानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देशभक्त मर्दानों की।।

भारत की माताओ, बहिनो, अपना धर्म निभाओ तुम।
भ्रष्टाचार की लपटो से, मिटता संसार बचाओ तुम।।
दुर्गा, लक्ष्मी, किरणमयी, बन रण में तेग बजाओ तुम।
अत्याचारी व बदमाशो का, जग से वंश मिटाओ तुम।।

कदर करैगी सारी दुनियां, नन्दलाल के गानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देशभक्त मर्दानों की।।

—श्री नन्दलाल निर्भय, बहीन फरीदाबाद (हरियाणा)

सम्पादकीय

आइए हम अपने पर विचार करें

आर्य समाज ने मानव मे धार्मिक जागृति मानवता के प्रसार, समाज सुधार, शिक्षा-प्रसार आदि के अतिरिक्त चार मानव को देन दी हैं ?

(१) एक उन्नत शील सात्विक विचारधारा (२) बुद्धिसगत धार्मिक दृष्टि-कोण, (३) निष्काम भाव से परिष्कृत समाज सेवा की प्रवृत्ति (४) देश प्रेम की जागृति।

देश का विज्ञ समाज आर्य समाज के उपकारो को न केवल कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार ही करता है अपितु देश के वर्तमान अन्धकार युक्त परिवर्तन काल मे आर्य समाज से बहुत आशा भी रखता है।

इस समय मानव का आचार-विचार पतन की पराकाष्ठा पर है भ्रष्टाचार से उसका गला घुट रहा है। देश और समाज के आचार की रक्षा व उन्नति तथा नवप्राप्त स्वतन्त्रता की,स्थिरता और शासन मे चरित्रवान व्यक्तियो के अभाव की पूर्ति के लिए आज आर्य समाज की महती आवश्यकता है।

आर्य समाज की आवश्यकता को समाप्त समझने के भ्रम मे जो पड़े हुए हैं उन्हे आख खोलकर अपने विगत कार्य कलापो को पढना चाहिए। आर्य समाज ने सदा ही बड़े परखे हुए सार्वजनिक कार्यकर्ता दिए हैं जिन्होन देश प्रेम की वेदि पर अपनी उत्तम बलि दी हैं। वह देश की आजादी को निधि समझता था जिसकी रक्षा के लिए वह अपने को समर्पित किए था। वही भावना आज भी मानव मन मे चाहिए।

—आज इतवारी लाल नहीं चाहिए ?

उस मनोभावना के लोगो के साथ कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं जिन्हे काम न तब करना था और न काम आज ही करना है। उनका केवल काम है कि इधर उधर बैठकर इस उसकी आलोचना करन। काम कैसे बढेगा, काम करने से बढेगा, व्यर्थ की गप्पबाजी से नही ?

सभा सत्सगो मे जाकर यज्ञ-सन्ध्या, पूजन, प्रवचन स्वाध्याय से कोई मत-लब नही। मन्दिर मे गये हस्ताक्षर किये और बैठ गय इधर उधर की आलो-चना करन। यह काम केवल है इतवारी लालो का।

प्रत्येक मन्दिर का अपना—२ महत्व है जाइये और सत्सग मे सम्मिलित होकर फिर उपस्थिति बढाइये। आय समाज मे खास कर जहा भी जाइये वहा सत्सग का महत्व नही ? हा परचर्चा, परनि दा का आचरण प्रमुख है।

साप्ताहिक सत्सग होते ही सगठनात्मक व प्रचारात्मक है पर इसका यह मतलब नही कि परचर्चा जरूरी है सत्सग का महत्व व प्रमुखता नही।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने दैनिक यज्ञ घरो मे चलाने करने का आदेश दिया है जब साप्ताहिक सत्सगो का यह हाल है तो दैनिक पचयज्ञ कौन करता है। घरो मे वही पुरानी रूढिवादिता घुसी हुई है।

बडबोले लोगो की क्या पूछो, अरे भाई इस पचयज्ञ को महत्व दो आत्मिक सामाजिक उन्नति के यह साधन है पर्यावरण कैसे दूर होगा। गन्दगी तो हम पैदा करते हैं वातावरण शुद्ध करने क्या अमेरिका से आयेंगे।

प्रचार के साधन भी मिल रहे हैं चाहे टेपरिकार्ड से, पुस्तको से या भाषणो से। परन्तु यह थोथे गाल बजाने के समान हैं जब तक हमारे वैयक्तिक जीवन मे परिवर्तन नही होगा।

आने वाले समय मे हम भावी पीढी को आग आते नहीं देख रहे हैं तो चिन्ता होनी स्वाभाविक है कि भविष्य मे दयानन्द के विचारो का क्या बनेगा।

यह कहने से काम नही चलेगा कि आर्य समाज की मूल बातें तो सबने मान ली हैं अब हमारी क्या जरूरत हैं।

जीवन मे क्रियाशीलता बनी रहनी चाहिय और वह तभी होगी। जब हम अपनी दिन चर्या मे परिवर्तन लायेंगे।

केवल रविवार को इतवारी लालो का जमघट न लगाकर भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगाकर कार्य करने लग जाओ। आर्य समाज मन्दिरो मे सत्सग स्थल शुद्ध पवित्र देखने लायक होने चाहिये। हम मोर की भाति सुन्दरता पर गर्व अनुभव करते हैं पर जब मोर अपने पैरो को देखता है तो बदसूरत पैरो को देखकर रोता है। महर्षि के सामाजिक सुधारवादी तत्वो को देखते है तो गुण ग्रहण करने मे प्रीति होती है। परन्तु महर्षि के आदेश युग वचनो से जब हट कर चलते है तब दुख होता है। आइये अपनी समालोचना पर बुरा न मान-कर अपने भविष्य के निर्माण मे लग जायें। इसमे भलाई हमारी ही है। इत-वारी लाल की नही।

पुस्तक समीक्षा

वेद और वेदार्थ

ले०—डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री

वैदिक प्रकाशन मूल्य—२५) रु०

६११५, गली पहाडवाली, पहाडी धीरज दिल्ली-६

मान्यवर डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री युवा पीढी के कर्मठ कार्यकर्ता वैदिक विद्वान वक्ता व लेखक हैं। आज अमेठी स्नातकोत्तर महाविद्यालय मे सस्कृत के प्राध्यापक हैं।

समय समय पर आप अपनी लेखनी का सदुपयोग कर जनता जनार्दन की सेवा मे लेखो के माध्यम से पत्र-पत्रिकाओ मे स्फुट विचारो का प्रदर्शन करते ही रहते हैं। वर्तमान मे—

"वेद और वेदार्थ" नामक लघु ग्रन्थ आर्य जनता के हाथो मे प्रस्तुत है आर्य विद्वान सदा ही वैदिक दर्शन पर शास्त्रार्थ लेखन व भाषणो के द्वारा विचार देते ही रहे है।

परन्तु डाक्टर साहब ने जिस प्रमाण कोटि मे अपने विषय का प्रतिपादन किया है विद्वत्ता पूर्ण है।

(१) वेदो का महत्व पर तेजस्वी जीवनवाद व आर्य कौन है जीवन विरोधी शक्तियो की रक्षा है।

(२) आपने आर्यों की नैतिकता पर आक्षेप रीति नीति तत्व 'विवेक एके-श्वरवाद वेदो मे अग्नि, इन्द्र पर विचार देकर कामरेड डागे का साम्यवादी विपर्यास पर करारी चोट की है।

(३) वेदो मे दार्शनिक अवधारणाये वेदो मे ब्रह्मतत्व विचार।

(४) ऋग्वेदिक विवाह सूक्त, आदर्श गृह जीवन, यम-यमी सूक्त सम्वाद।

(५) पापो स मुक्ति, पवित्रता शक्ति, दृढ इच्छा शक्ति, ब्रह्मज्ञान से वास-नाओ का नाश लिखकर आपने वेद विमर्श मे महर्षि की वैदिक मान्यतायें बता-कर तत्कालीन वैदिक सस्कृति व शासन व्यवस्था का लोक मे प्रचलन किया है।

इस सम्भाग मे विचारोत्तेजक निबन्धो का सकलन है, पाठक पुस्तक पढ़-कर ही लेखक के मनोभावो को समझ सकेंगे। पठनीय पुस्तक पर लेखक का प्रयास तभी सफल माना जाएगा जब विद्वानो मे कुछ चर्चा हो फिर प्रचार-प्रसार हो बधाई के पात्र—प्रकाशक—श्री राजपाल शास्त्री, वैदिक प्रकाशन, गली आर्य समाज, सीताराम बाजार दिल्ली-६ है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

इस्लामी अदालत ने यूं दी मौत की सजा

कुनार (अफगानिस्तान ३ नवम्बर। अफगानिस्तान के बीहड से सूबे कुनार की राजधानी असदाबाद के समीप एक खेत मे उस समय एक अजीब सा माहौल था जब हजारो लोगो की मौजूदगी मे मीरहसन ने गुल मोहम्मद को गोलियो से भून कर मौत के घाट उतार दिया। गुल मोहम्मद को यह कजा (मौत) थी। उस सजा का नतीजा जो उसे एक इस्लामी अदालत ने सुनाई थी।

गुल मोहम्मद के खिलाफ इलजाम था कि उसने मीर हुसन की बीबी और भाई का कत्ल किया। मामला अदालत मे पहुचा और उसने गुल मोहम्मद को मौत की सजा सुनाई। इस्लाम की व्यवस्था के अनुसार जैसे को तैसा के उसूल को मीर हुसन ने निभाया। असदाबाद शहर के बाहर एक लम्बे चौड़े खेत मे पिछले शनिवार को हजारो लोग जमा थे। उनके कंठो से अल्ला हो अकबर के नारे गूंज रहे थे।

कापते-हाफ्ते गुल मुहम्मद को खेत मे लाया गया उसकी आखो पर पटिटया बांधी गई तथा मीर हुसन ने क्लाशिनकोव को अपने हाथ मे सम्भाला। प्रत्यक्षदर्शियो के अनुसार हुसन की पहली गोली के लगते ही गुल मोहम्मद ने दम तोड दिया मगर हुसन ने तब तक गोलियो की बौछार गुल मोहम्मद पर जारी रखी जब तक कि एक बार भरी गई सभी बत्तीस गोलियां नही दग गई। गुल मोहम्मद के गुनाह का पूरा पूरा ब्यौरा अवाम के सामने नही आ पाया। क्योकि अफगानिस्तान के नये इस्लामी गणराज्य मे अन्य मामलो की तरह इस मामले की सुनवाइ भी बन्द कमरे मे हुई थी।

पिछले अप्रैल माह मे अफगानिस्तान मे नजीबुल्ला सरकार का तख्ता पलटने के बाद मुजाहिदीन ने वहा सत्ता सम्भाली थी। लगभग डेढ करोड की आबादी वाले इस मुल्क मे ज्यादातर लोग अनपढ और गरीब है। मुजाहिदीन सत्ता सभालने के बाद से वहा अपनी कल्पना की कट्टर इस्लामी हुकूमत कायम करने के लिए प्रयत्नशील है। इन मुजाहिदीन ने चौदह साल तक अफगानिस्तान की मार्क्सवादी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष किया था।

पिछले अप्रैल माह मे नजीबुल्ला के सत्ता से हटने के बाद कुछ ही सप्ताह के भीतर हजारो मुजाहिदीन अफगानिस्तान की राजधानी काबुल मे दाखिल हो गए थे। उन्होने अफगानिस्तान मे पावन कुरान की शिक्षाओ के अनुसार इस्लामी प्रणाली लागू करने का फैसला किया है। मगर ये मुजाहिदीन भी दस जातीय गुटो मे बटे है। उन गुटो के अलग-अलग मुखिया हैं जिनकी इस्लामी अफगानिस्तान के बारे मे अपनी अपनी सोच है। कुछ ईरानी ढंग की इस्लामी आचरण संहिता के पक्षधर हैं जिसमे औरतो के लिए बुर्के और पर्दे की सख्त पाबन्दी है। कुछ गुटो के मुखिया ऐसे है जो उदार मुल्क की छवि के हामी है। मगर कट्टरपंथी सत्ता पर हावी है। अफगानिस्तान मे सरेआम सजाए मौत का सिलसिला पिछले अगस्त माह से शुरू हुआ था जब बलात्कार चोरी और हत्याओ आदि के जुर्म मे लगभग एक दजन लोगो को मौत की सजा दी गई थी। इनमे से किसी के खिलाफ भी खुली अदालत मे अभियोग नही चला था।

कुछ अफगान यह कहते है कि वे कठोर सजा के खिलाफ हैं और वे सुनवाइयो के मामले मे गोपनीयता का तरीका अपनाए जाने के भी विरोधी है परन्तु पिछले माह ही राष्ट्रीय सुरक्षा निदेशक उस्ताद फहीम ने कहा था कि माहौल खुली अदालतो के लिए अनुकूल नही है।

कुनार के पूर्वोत्तर प्रान्त मे गत शनिवार को गुल मोहम्मद को सरेआम मौत के घाट उतारे जाने का मामला अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के बाहर हुई इस तरह की पहली घटना मानी जा रही है। कुछ अफगानो ने यह आशंका जताई है कि इस्लाम की कट्टरपंथी व्याख्या उनकी गृहभूमि मे जड जमाती जा रही है।

अफगानिस्तान के राष्ट्रपति बुरहानुद्दीन रब्बानी को अभी अपने मुल्क के लिए नया संविधान बनवाना है मगर उन्हे कट्टरपंथी माना जाता है। उन्होने यह वचन भी दिया है कि वे मुल्क मे इस्लामी कानून लागू कराएगे।



अखिल भारतीय सेवाश्रम संघ की ओर से बोकाजान (आसाम) केन्द्र मे स्व० पृथ्वीराज शास्त्री की स्मृति मे स्थापित कुटीर उद्योग। यहां पर संघ के होस्टलो मे रहने वाले छात्रो को निःशुल्क बेंत के सामान का निर्माण करने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

रशीदी की जान की कीमत

बेशक मुसलमान रशीदी को इस्लाम का धीरे धीरे पूरा अन्दाजा हो रहा है। आज से चार साल पूर्व ईरान के अयातउल्ला खुमैनी ने उसे इस कारण मौत की सजा दी कि इसने अयातउल्ला के विचार मे हजरत महम्मद के अपमान की एक कहानी लिखी थी। मुसलमान रशीदी ने अपनी सफाई मे कहा कि वह एक पक्का मुसलमान है और इसने जब वह कहानी लिखी थी तो मुहम्मद साहब इसके दिमाग मे बिल्कुल न थे। यदि कोई यह कह रहा है कि इसने जानते हुए ऐसा किया है तो वह इसके लिए सार्वजनिक रूप मे क्षमा मागता है। रशीदी का दुर्भाग्य था कि खुमैनी साहब पर इसका कोई प्रभाव न हुआ सारी दुनिया ने कहा कि जब रशीदी ने अपनी भूल स्वीकार कर क्षमा माग ली है तो इस फतवाह (आदेश) को समाप्त किया जाये परन्तु खुमैनी ने सबको एक ही उत्तर दिया कि इस्लाम मे क्षमा नाम का कोई शब्द नही है जिस किसी ने भी एक बार गलती जाने अनजान मे की हो उसे दण्ड मिलेगा और इस अवस्था मे जबकि इस्लाम के बानी का अपमान हुआ है इसलिए इस्लाम का प्रमुख होने के नाते वह रशीदी को सजाये मौत देता है। इस दिन से रशीदी भगोड़े की भांति जीवन व्यतीत कर रहा है। आज यहा तो कल वहा अर्थात कभी किसी नगर मे तो कभी किसी नगर मे। बरतानवी सरकार ने इसकी सुरक्षा का दायित्व उठा रखा है और उसने ईरानी सरकार को कहा है कि जब रशीदी ने क्षमा माग ली है और अपनी भूल मानी है तो उसे क्षमा कर दिया जाए परन्तु ईरान पर कोई प्रभाव नही हुआ। खुमैनी की मृत्यु के उपरान्त यह आशा की जाती थी कि उसका उत्तराधिकारी दुनिया की अपीलो का ध्यान करते हुए रशीदी को क्षमा कर देगा परन्तु क्षमा तो इस बेचारे को क्या मिलनी थी अब यह घोषणा हो गई है कि रशीदी की जिन्दगी की कीमत बढ़ा दी गई है। दूसरे शब्दो मे यह कि जो भी उसे कत्ल करेगा उसे २० लाख पौण्ड से भी अधिक इनाम मिलेगा। ईरान के धार्मिक नेता और वहा की सरकार धन्यवाद के पात्र हैं कि इन्होने सारी दुनिया को इस्लाम के असली रूप का परिचय करा दिया है। आज तक इस्लाम के तरजमान यह कहा करते थे कि इस्लाम इन्साफ-रहम और प्रेम का मजहब है, ईरान की सरकार बतौर इस्लामिक सरकार होने के नाते यही साबित कर रही है कि इस्लाम प्रेम और मोहब्बत को कितनी मान्यता देता है।

—के० नरेन्द्र

(४-११ ९२, प्रताप के सौजन्य से)

पुण्य तिथि पर विशेष

तपोमूर्ति महात्मा हंसराज

—श्री धर्मदेव जी आर्य—

महात्मा हसराज जी का जन्म १९ अप्रैल १८६४ का ग्राम बज वाडा जिला होशियारपुर मे हुआ जब वह दस वर्ष के थे तो सन १८७४ उनके पिता श्री चुन्नीलाल का देहान्त हो गया। इनकी माता का नाम गणश देवी था। इनकी पढाई इनके बड भाई श्री मुल्कराज की देख रेख म हुई। इन्होने लाहौर के मिशन स्कूल म शिक्षा प्राप्त का इस स्कूल से सन १८८० मे इन्होने मैट्रिक की परीक्षा पास की और उसा वष गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर म दाखिल हो गए। कालेज मे आपका सम्पर्क लाला लाजपत और गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे मेघावी छात्रो से हुआ। इसके साथ ही यह तीनो आयसमाज के सम्पक मे इससे पहले ही आ चुके थे। इन तीनो महापुरुषो के मन म आर्य सभ्यता के उत्थान और प्रसार की आत्म समपण की ज्योति यही पर जगी थी। यह त्रिमूर्ति कालेज भर म आदर की दृष्टि से देखा जाती थी लाला साई दासजी के सम्पक म आने से इन तीनो का आयसमाज से निकट का सम्बन्ध हो गया। जब यह तानो पढते थे तो उस काल मे लाहौर म आयसमाज की बहुत चर्चा थी। सभी बुद्धि जीवी लोग आयसमाज की ओर आकर्षित हो रहे थे। ऐसी अवस्था मे यह तीनो मेधावी छात्र इससे कैसे बच सकते थे।

लाला साईदास जी बहुत दूरदर्शी थे उन्ह इन तीनो नौ जवानो के भावी जीवन मे आयसमाज का उज्जवल भविष्य दिखाई पडा। इससे वह तीनो को लोक सेवा की राह क पथिक बनाने मे सफल हो गए। उन्होने इनके कधो पर रजेनेटर आफ आर्यावत के सम्पादन का बोझ डाल दिया। १८८३ के अक्तूबर मास म महर्षि दयानन्द बहुत अधिक रुग्ण हो गए और गुरुदत्त विद्यार्थी लाहौर से अजमेर महर्षि क अन्तिम दर्शनो क लिए गए। आयसमाज के सम्पक म आने पर भी मेधावा गुरुदत्त का नास्तिकपन दूर नही हुआ था। महर्षि के अन्तिम दशन करके गुरुदत्त जा के परमात्मा के सम्बन्ध म सभी सशय दूर हो गए। ३० अक्तूबर १८८३ को महर्षि का देहावसान हो गया। लाहौर मे महर्षि की याद को चिरस्थाई बनाने के लिए दयानन्द एग्लो वैदिक कालेज खोलने का निश्चय किया गया इसके लिए कुछ धन भी एकत्र किया गया परन्तु कालेज छोटा माटी राशि से नही चल सकता था उसक लिए धन का बहुत आव श्यकता थी। इसके साथ ही उसके लिए एक सुयाग्य प्रिसिपल की भी आवश्यकता थी।

लाला हसराज जी ने अपने बड भाई मुल्कराज जी से आज्ञा लेकर दयानन्द स्कल व कालेज के लिए अपना जावन दान दे दिया। इस प्रकार सन १८८६ म लाला हसराज इस स्कूल के मुख्या ध्यापक नियुक्त हुए और सन १८८८ मे वह डी ए वी कालेज के प्रिसिपल नियुक्त हुए। वह नन्हा सा बीज जो एक स्कूल क रूप मे बोया गया था फल फूल कर कालेज के रूप मे एक वट वृक्ष बन गया जिसकी शाखाए पहले पजाब और फिर पजाब से बाहर भी फलने लगी। पजाब मे शिक्षा के प्रसार का श्रय बहुत कुछ आयसमाज की शिक्षा सस्थाओ को प्राप्त है। इस बात को सरकारा यूनिवर्सिटी क अधिकारी भी खुले तौर पर स्वीकार करते थे। इन सस्थाओ ने पजाब मे शिक्षा को सब साधारण तक पहुचाया। डी०ए०वी० कालेज की प्रज्ज्वलित ज्योति से अनेक छोटे-छोटे दीपक जल कर पजाब प्रान्त के अज्ञान अन्धकार को मिटाने म सहायक सिद्ध हुए। इस ज्योति के जलाने मे मुख्य हाथ महात्मा हसराज जी का था। वह तो डी०ए० वी के लिए समर्पित थे। त्याग भाव और पूरा लगन से उन्होने इन सस्थाओ की सेवा की। उन्होने अपनी सुख का सभी कामनाए त्याग कर अपना सवस्व डी०ए०वी० आन्दोलन के लिए न्यौछावर कर दिया था।

कौन ऐसा व्यक्ति है जो पढ लिख कर धन कमाना न चाहे और अधिकतर लोग धनोपार्जन के लिए ही शिक्षा प्राप्त करते है।

महात्मा हसराज की माता और उनके बड भाई मुल्कराज जी भी इसीलिए हसराज को पढा रहे थे कि वह पढ लिखकर घर की निधनता को समाप्त कर देगा और कोई बडा अफसर बन जाएगा। परन्तु आर्य समाज क प्रभाव म आकर वह ऐसा बदला कि उसने सभी प्रकार के ऐश्वर्यो को लात मार दी। महर्षि दयानन्द और आय समाज का उस पर ऐसा रग चढा कि उसके जीवन का काटा ही बदल गया।

इसमे कोई सन्देह नही महात्मा हसराज का बहुत श्रष्ठ रास्ता था। यह ठीक है उन्होने जीवन निर्वाह के लिए और परिवार के लिए कोई धनोपार्जन नही किया। परन्तु जो धन उन्होने अपने लिए सचित किया वह कभी भी समाप्त हाने वाला नही है। यहा का धन धन वाले के साथ नही जाता परन्तु जा धन महात्मा हसराज ने कमाया वह उन्हे अमर कर गया। कितने ही सरकारी नौकर हुए अफसर हुए बड बड अधिक री हुए परन्तु उन्हे आज कौन जानता है। परन्तु महात्मा हसराज का जमाना सदियो नही भलेगा। डी०ए०वी० की एक एक सस्था सदा महात्मा हसराज जा का याद दिलाती रहेगी।

महात्मा जी केवल शिक्षा सस्थाओ तक हा सीमित नही रहे वह

(शेष पृष्ठ ६ पर)

कश्मीर का समाधान पटेल के रास्ते पर चलकर मिलेगा

—श्री जगमोहन

कश्मीर आज जिस तूफान मे फंसा हुआ है उसके बीज धोखे की राजनीति और राज्य सत्ता के नरम तथा ढीले ढाले रुख, अन्यथा उदार कश्मीरी इस्लाम के कट्टरपंथ में परिवर्तन, प्रशासनिक अक्षमताओ, कठोर सत्य को स्वीकार करने के बजाय कल्पनाओ में जीने की आदत तथा सबसे अधिक उन शक्तियों को उपेक्षित करने में निहित हैं, जो एक राष्ट्र को सुसंगठित बनाती है।

यदि सरदार पटेल जीवित होते या राष्ट्रीय क्षितिज पर कोई और सरदार उदित होता तो क्या उन्होने इस प्रकार के राष्ट्रघातक बीजो का बोया जाना सहन किया होता ? अगर ये बीज किसी शैतानी हवा मे उड़कर हमारे देश के नये खेतो मे आ जाते, तो भी क्या सरदार ने इन बीजों को अंकुरित होने और जड़ जमाने के बाद एक बड़ी फसल का रूप लेने का मौका दिया होता ?

श्री वी० शंकर सरदार पटेल के बुद्धिमान सचिव थे। कश्मीर को विशेष दर्जा देने के सम्बन्ध मे श्री गोपाल स्वामी अय्यंगर द्वारा तैयार किये गये मसौदे से भीतर ही भीतर सरदार पटेल सहमत नहीं थे। फिर भी उन्होने इसे स्वीकृति दी। वी० शंकर ने इस स्वीकृति के बारे मे सन्देह प्रकट करते हुए लिखा है कि "आखिरकार न तो शेख अब्दुल्ला न ही गोपाल स्वामी स्थायी रहने वाले हैं। भविष्य भारत सरकार की शक्ति और हिम्मत पर निर्भर करेगा और अगर हम अपनी शक्ति मे विश्वास नहीं रख सकते है तो हम एक राष्ट्र के रूप मे रहने के योग्य नहीं है।"

क्या इसके बाद की घटनाएं दिखाती है कि एक राष्ट्र के रूप मे हमने पर्याप्त शक्ति और हिम्मत दिखाई ? क्या सरदार पटेल या उनके जैसे लोगों ने देश की ऐसी दुर्दशा को सहन किया होता ?

इन सभी प्रश्नो का जवाब 'न' मे ही मिलेगा। क्योकि सरदार पटेल का बहुत स्पष्ट और रचनात्मक मस्तिष्क था। एक महान सृजनकार की तरह वह अपने सृजन के विभिन्न अवयवो को एकात्मक ढंग से देखते थे और साथ ही साथ उसके लिये उपकरणो के बारे मे भी विचार करते थे। उनके मस्तिष्क में सर्वोपरि विचार यही होता था कि कैसे देश की मजबूत आधार शिला रखी जाए। उनकी योजनाओ के आकलन में समय का बहुत महत्व था। वह जानते थे कि जब लोहा गरम हो तभी चोट करनी चाहिए।

अगर सरदार पटेल अपने तरीके से चलने में स्वतन्त्र होते तो वह कभी भी महाराजा हरिसिंह को शर्मिन्दा नही होने देते। उन्होंने राज्य और केन्द्र में एक बेहतर सन्तुलन बिठाया होता और एक ठोस तथा सच्चे सेकुलर लोकतांत्रिक ढाचे में शेख अब्दुल्ला, महाराजा हरिसिंह और जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख के लोगो की आकाक्षाओ को पूरा कर दिखाया होता।

जिस ढंग से सरदार पटेल ने ५६१ देशी रियासतो के विलय की समस्या को सुलझाया,वह उनकी रचनात्मक प्रतिभा का सर्वोत्तम प्रमाण है उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियो में समस्या का हर दृष्टि से विश्लेषण किया और विभिन्न राजा-महाराजाओ, नवाब और निजाम के दिमागो और प्रेरणाओं के बारे में आंकलन किया तथा इसके बाद देश को एकता और अखण्डता के अपने महान स्वप्न को पूरा करने के लिए उन्होने काम शुरू कर दिया। एक साल से भी कम समय में उन्होने देश मे एक प्रकार से रक्तहीन क्रांति कर दी थी और भारतीय संघ में ८ करोड़ ६० लाख नागरिक तथा ५ लाख वर्ग मील भूमि और जोड़ दी। उन्होने दिखा दिया कि परिस्थितियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन सड़कों पर क्रांति का नाटक रचने से नहीं, बल्कि समस्या का व्यावहारिक समाधान करने से होता है।

महात्मा हंसराज

(पृष्ठ ५ का शेष)

वेद प्रचार के कार्य के लिए भी आगे आये १८८६ में लाला साईंदास जी का देहावसान हो गया तब लाहौर आर्य समाज का तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान सर्व सम्मति से लाला हंसराज जी को चुना गया उस समय इनकी आयु केवल २५ वर्ष की थी। इतनी छोटी आयु में इन्होंने न केवल कालेज का भार अपने कन्धो पर लिया बल्कि आर्य समाज का कार्य भार भी स्वयं सम्भाल लिया और उसे बाखूबी निभाया। १८९३ में उन्होने इस आशय से अपना स्थान त्याग दिया ताकि उनके दूसरे साथी लाला लाजपतराय जी को सेवा करने का अवसर मिल सके। सन् १८९८ में उन्होने लाला लाजपतराय जी के साथ मिलकर आर्य गजट उर्दू साप्ताहिक का सम्पादन आरम्भ किया। १९०५ में कांगड़ा में भूकम्प आया ऐसे अवसर पर लाला जी आराम से बैठने वाले नही थे। उन्होंने भूकम्प पीडित लोगो की सहायता का कार्य बड़े मनोयोग से किया। वह समय-समय पर प्रचारार्थ आर्यसमाज के उत्सवों पर भी जाते रहे। १९११में उनके सुपुत्र बलराज को दिल्ली के षड़यन्त्रमें फंसाया गया और कहा गया कि लार्ड हार्डिग पर बम फेंकने में बलराज भी शामिल था। इस आरोप मे मुकद्दमा चला और अन्त में काले पानी की सजा हुई। जिस दिन दिल्ली की अदालत ने यह फैसला सुनाया था उसी दिन सायंकाल को महात्मा जी का जालन्धर की आर्यसमाज के उत्सव मे व्याख्यान होना था लाला जी दिल्ली मे यह फैसला सुनकर ठीक समय पर जालन्धर आ गए और किसी को भी यह पता नहीं होने दिया कि यह घटना घट गई है। ठीक समय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने उस सजा की किसी से भी चर्चा तक न की परन्तु लोगो की नजर इस अभियोग पर थी जब प्रातः लोगो ने अखबारो मे यह खबर छपी पढ़ी तो वह हैरान रह गए कि महात्मा हंसराज पर इसका तिलभर भी असर नही था।

वह बहुत गम्भीर व्यक्ति थे और दुःख सुख से वह बहुत ऊपर उठ चुके थे। पारिवारिक चिन्ताओं से वह मुक्त थे वह सफेद कपड़ों में एक सन्यासी की तरह थे जिन्हें अपने परिवार की कोई चिन्ता नही थी परन्तु देश धर्म और जाति के कार्य के लिए वह बहुत ही अग्रसर थे। चाहे उडीसा का दुर्भिक्ष हो, चाहे मोपला काण्ड हो, चाहे क्वेटा का भूकम्प हो। देश में कही भी किसी प्रान्त में चाहे कोई भी कष्ट जनता पर आया हो उसमें सहायतार्थ महात्मा जी सबसे आगे रहते थे। उन्होने अपने शरीर से इतना अधिक काम लिया कि वह कमजोर हो गये और वह बीमार रहने लग गए उन्होंने २२ अक्तूबर १९३८ को आर्यसमाज अनारकली लाहौर मे अपना अन्तिम उपदेश दिया और १५ नवम्बर १९३८ को रात के समय ११ बजकर पाच मिनट पर अपना नश्वर शरीर ७४ वर्ष की आयु मे, लाहौर मे छोड दिया। यह समाचार आग की भान्ति सारे लाहौर मे फैल गया रेडियो आदि से सूचना दी गई जिसके परिणाम स्वरूप उनकी शव यात्रा के जलूस में लगभग पचास साठ हजार स्त्री पुरुष शामिल थे। हाईकोर्ट के जज, वकील बैरिस्टर प्रोफेसर अध्यापक और बड़े-बड़े नेता अर्थी के साथ साथ चल रहे थे।

संस्कार चन्द्रिका प्रकाशन में है

सभा द्वारा दी गयी विज्ञप्ति की अवधि दीपावली पर समाप्त हो गयी है। कृपया अब उसके लिये साठ रुपये भेजने का कष्ट न करें। अब उसकी कीमत १००) रुपये है। धन राशि भेजने वाले सज्जनों को डाक द्वारा संस्कार चन्द्रिका शीघ्र भिजवा दी जायेगी। आगे केवल १००) रुपये भेजने का कष्ट करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

हिन्दी पत्रकारिता में क्षितीश जी का योगदान

—शिव कुमार कौशिक

मैंने अनेक वर्षों तक दैनिक हिन्दुस्तान म क्षितीश जी के साथ काम किया है। इसलिये पत्रकारिता सम्बन्धी उनकी सूझबूझ का मैं प्रत्यक्ष साक्षी हू। उसी के आधार पर कुछ अपने व्यक्तिगत सस्मरण लिख रहा हू।

एक बार श्री देवदास गाधी ने जो उस समय हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान टाईम्स के मैनेजिंग एडीटर थे। हमारे स्टाफ की मीटिंग बुलाई, उसमे उन्होने कहा कि जिस तरह अ ग्रेजी मे हिन्दी शब्दो का प्रयोग नहीं होता उसी तरह हमें भी हिन्दी मे अ ग्रेजी शब्दो का प्रयोग नही करना चाहिए। जिस समाचार की ओर उनका सकेत था, वह क्षितीश जी ने लिखा था इसलिए सब लोग उनकी ओर देखने लगे, उसमे गारण्टी शब्द का प्रयोग हुआ था। देवदास जी ने कहा कि जैसे गारण्टी अ ग्रेजी का शब्द है, उसका हमे हिन्दी में क्यो प्रयोग करना चाहिए ? क्षितीश जी ने सुनते ही कहा कि गारण्टी के लिए हमको तो हिन्दी शब्द मालूम नही है, कृपया करके आप ही बता दें तो भविष्य मे हम उस शब्द का प्रयोग किया करें। क्षितीश जी की इस बेबाकी से हम सब लोग स्तब्ध रह गए। तब देवदास जी ने कहा नही मेरा यह मतलब नही है। हमे उसके लिए हिन्दी शब्द तलाश करना चाहिए।

एक बार जब एयरकण्डीशन शब्द चला तो प्रश्न पैदा हुआ कि इसके लिए हिन्दी मे क्या शब्द रखा जाय। उस समय शीतता पर नियन्त्रक शब्द सुझाया गया, लेकिन वह किसी को पसन्द नही आया। तब एक शब्द सामने आया— व यु अनुकूलित उस शब्द के बारे मे कुछ-२ रजामन्दी हो ही रही थीकि क्षितीश जी ने कहा—वातानुकूलित। इस शब्द पर सबकी सहमति हो गई और आगे से यही शब्द प्रयोग होने लगा। इसी तरह इमरजेंसी के लिये संकटकालीन स्थिति शब्द का प्रयोग होता था, परन्तु एक दिन पता नही कहा से क्षितीश जी ने सुझाया —आपात स्थिति। मैं नही जानता उन्होने यह शब्द अपनी प्रतिभा से ही खोजा या डा० रघुवीर के जिसी शब्द कोष से परन्तु उससे पहले हमारे किसी साथी ने यह शब्द सुना नही था। जब पहली पहली बार क्षितीश जी ने इसका प्रयोग किया तो सब चौके कि क्या यह शब्द ठीक है परन्तु बाद मे वही सही सिद्ध हुआ और उसी का प्रयोग होने लगा।

इसी तरह एक बार सुपर सोनिक शब्द के लिये हिन्दी शब्द की तलाश हुई, तब कई शब्द सामने आये किसी ने कहा—शब्दातिशायी—लेकिन शब्द और ध्वनि शब्द मे तो अन्तर है न। और ध्वनि के लिये कोष मे स्वन शब्द स्वीकृत है। तब क्षितीश जी ने कहा कि सुपर सोनिक के लिए हम अतिस्वन शब्द का प्रयोग क्यो न करें ? सबको यह बात जच गई और आगे से इसी शब्द का प्रयोग होने लगा।

इसी तरह अ ग्रेजी अखबार वाले अफ्रीकी और एशियाई देशो के लिए अफशियन कन्ट्रीज शब्द का प्रयोग करते थे और हम हिन्दी वाले उसका अनुवाद अफ्रीकी और एशियाई देश किया करते थे। तब क्षितीश जी ने एक दिन कहा कि यदि अ ग्रेजी वाले अफ्रेशियन कन्ट्रीज लिखते हैं तो हम हिन्दी मे उनको अफ्रेशियाई देश क्यो नही कह सकते। बात सबको जच गई और आगे से इसी शब्द का प्रयोग होने लगा। कहा जाता है कि पत्रकार की एक तीसरी आख भी होती है जिससे वह अपनी दूरदृष्टि से भूत और भविष्य का भी आकलन कर लिया करता है। मुझे याद है कि मेरे जनकपुरी के निवास स्थान पर उस दिन क्षितीश जी रात को वही सोये थे। तो रात को ही मुझे कहने लगे कि मुझे लगता है कि कल सवेरे आपात स्थिति शुरू हो जायेगी। सवेरे जब हम उठे तो हमे देखकर आश्चय हुआ कि किस तरह बसो और ट्रको का चलना बन्द हो गया था और क्षितीश जी का आकलन सही सिद्ध हुआ था। यह दूरदर्शिता मैंने उनकी अन्य राजनैतिक विषयो मे भी कई बार देखी है और उनका आकलन सही पाया है।

मुझे जब पता लगा कि अपने जीवन के प्रारम्भ मे कविता करते रहे है तब उनकी भावुकता से मैं पूर्व परिचित तो था ही इस जानकारी से उसकी और पुष्टि हो गई। इस विषय मे मैं एक अत्यन्त निजी सस्मरण का उल्लेख करना चाहता हू जिसमे उनकी भावुकता मुखर होती है और मैं उसे कभी भूल नहीं सकता

मैंने बौद्ध कालीन साहित्य के आधार पर एक उपन्यास लिखा था जिसके एक अध्याय को जब मैंने क्षितीश जी को सुनाया तब उन्होंने बार बार उसमे कुछ कमिया निकाल कर उस अध्याय को मुझसे तीन-तीन बार लिखवाया। इससे वह पुस्तक इतनी मझ गई कि हिन्दी के बडे प्रकाशक आत्मा राम एण्ड सन्स ने उसको बडे शौक से छापा और वह पुस्तक खूब लोकप्रिय भी हुई। मैंने वैशाली की जिस नगर वधू का चित्रण किया था उसका एक काल्पनिक खूब बढिया रगीन पूरे पज का चित्र धर्मयुद्ध मे भी प्रकाशित हुआ था। इससे पुस्तक की लोकप्रियता और बढ गई। अन्त मे नौबत यहा तक आई कि इस पुस्तक के बारे मे एक समारोह करने का अवसर उपस्थित हो गया। उस समारोह मे बौद्ध और जैन भिक्षु जिन दोनो के लिये बुद्ध और महावीर दोनो से जुडे होने के कारण और प्रसिद्ध गणराज्य होने के कारण तीर्थ स्थल बन गया था बडी सख्या मे उपस्थित हुए। समारोह का उदघाटन गन्धर्व महा विद्यालय के छात्र छात्राओ के गायन से हुआ। उसके बाद समारोह मे उपस्थित प्रसिद्ध राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर बोले। अन्त म मैंने क्षितीश जी से कुछ कहने का आग्रह किया। क्षितीश जी ने अपना भाषण शुरू ही इस वाक्य से किया—इस सस्थागार मे उपस्थित हे भिक्खुओ इस सम्बोधन को सुनने ही बौद्ध और जैन भिक्खू तो मुग्ध हो गये और इसके बाद क्षितीश जी ने जो भाषण दिया उसमे उनका बौद्ध साहित्य का विपुल ज्ञान उदभाषित होता है। श्री दिनकर जी ने पूछा कि यह आदमी कौन है तो मैंने उनसे कहा कि हमारे दैनिक हिन्दुस्तान के कार्यालय में ही काम करते हैं। बडे प्रतिभाशाली और साहित्यकार भी हैं।

अन्त मे जब गन्धर्व महाविद्यालय के छात्र छात्राओ को वापस भेजने का प्रसग आया तो उसके निमित्त टैक्सी के लिये मेरे पास पैसे नहीं थे, मैं बगलें झाकने लगा। क्षितीश जी ने पूछा- कौशिक ! क्या बात है ? और यह कहकर मुझे तुरन्त अपनी जेब से १०० रुपये का नोट निकाल कर दिया। मैं उनके मुह की ओर देखने लगा यह क्या। क्षितीश जी ने कहा, कौशिक जी, कहीं छोटे भाई के समारोह मे खाली हाथ जाया जाता है। उसके बाद न तो उन्होने मुझसे वह पैसे कभी मागे और न मैंने लौटाये ही। पाठक जी मुझे बतायें कि क्या आपने इस अग्रज की ऐसी उदारता और ऐसा सौहार्द मैं कभी भूल सकता हू। एक बार हिन्दुस्तान टाइम्स ने मारिशस मे हुए अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के बाद कुछ हिन्दी साहित्यकारो के सम्बन्ध मे लेख छापन का निश्चय किया। तब उनका ध्यान भी क्षितीश जी की ओर ही गया। तब पता लगा कि क्षितीश जी तो अग्रेजी भी बढिया लिखते है। उसके बाद 'ईवनिंग न्यूज मे उनकी साहित्यिक प्रतिभा के बारे मे डबल कालम चित्र के साथ इनके ऊपर एक फीचर छापा। तब कई अग्रेजी भक्ता का भी इनकी ओर ध्यान हो गया।

८३/३४ जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

वैदिक दण्ड-विधान से ही राष्ट्र का समुत्थान

निहालसिंह आर्य यादव पार्क, नांगलोई, दिल्ली-४१

ससार मे सृष्टि के प्रारम्भ से ही आर्य तथा दस्यु दो प्रकार के मनुष्य चले आ रहे हैं। इन दो को सज्जन और दुर्जन, पुण्यात्मा, भले या बुरे, शिष्ट या दुष्ट, मित्र या शत्रु सुखदायक या दुखदायक भी कहते हैं। ये दोनो प्रकार के मनुष्य ही चारो युगो मे होते हैं अत हर युग मे आर्यों को प्रोत्साहित करने का कार्य जिस शासन व्यवस्था द्वारा होता रहा है उसी शासन व्यवस्था से दस्यु पर अकुश रखने की व्यवस्था भी होती रही है। (वैदिक दण्ड विधान) का मुखर रूप हमे मनु स्मृति मे मिलता है जिसके रचयिता स्वायम्भुव मनु थे। समय-समय पर अन्य विधि वेदाओ स्मृतिकारो ने भी दण्ड विधान के निर्देश दिये हैं। इससे स्पष्ट हुआ कि बिना दण्ड विधान के कोई शासन नही चल सकता, स्वार्थियो, हत्यारो, पापियो, अपराधियो पर अकुश नही रखा जा सकता और जन साधारण को विश्वास नही कराया जा सकता कि उनकी जान व माल सुरक्षित है। इतिहास गवाह है कि जिस काल खण्ड मे दण्ड-विधान की कठोर व्यवस्था रही है ईमानदारी से उसका पालन किया गया है नीर क्षीर विवक से उसका औचित्य सिद्ध होता रहा है आम नागरिक के लिए वह सुलभ रहा है, त्वरित फैसल देने मे वह सफल रहा है धन अथवा अन्य किसा प्रलोभन या दबाव मे उसे खरीदा नही गया है उस काल-खण्ड की प्रजा सुखी रही है समृद्ध रही है यशस्वी रही है।

आज की स्थिति क्या है ? १५ अगस्त १९४७ ई० को हमारा देश दुष्ट अंग्रेजी शासन से स्वतन्त्र हो गया स्वराज्य आ गया परन्तु सुराज नही कुराज आ गया अमृत गुणो के भण्डार गो-वश का विनाश, वेद विद्याओ की उपेक्षा, देव-भाषा सस्कृत के स्थान पर भ्रष्ट व अधूरी भाषा अंग्रेजी का बोलबाला, चोरी, डाके, छल कपट आदि से उत्पन्न सामाजिक असन्तोष, मासभक्षण और मदिरापान का बढता प्रचलन, अनुचित उपायो से धन सग्रह की बढती प्रवृत्ति पाश्चात्य सस्कृति के प्रति अपरिचित मोह नास्तिकता का बढता प्रभाव स्वदेशी वस्तुओ का परित्याग आदि-आदि उल्टे कर्म ही हमारे देश के पतन का कारण बन रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि राष्ट्र का राजदण्ड कमजोर है, उसम घुन लग गया है। हमारे शासन मे अपराधिया के लिए समुचित दण्ड व्यवस्था का पूर्णतया अभाव है। इसी के फलस्वरूप चहु ओर असन्तोष ही व्याप्त है। दण्ड-विधान को लागू करना न करना अच्छे या बुरे शासन पर निर्भर करता है। (लोकतन्त्रीय व्यवस्था मे हर पाच साल बाद या कभी कभी उससे पहले भी वोट प्राप्ति के लिए शासको को जनताके सामने आना पडता है धन्ना सेठो से पैसा बटोरना पडता है, समाज की नियामक इकाइयो के आगे घुटन टेकन पडते हैं। इस तन्त्र मे कोई भी शासक कठोर या निरकुश होकर दण्ड विधान लागू नही कर सकता अत नम्र वृत्ति अपनाने को वह विवश रहता है। इन खतरो से चुनाव-तन्त्र को बचाने पर ही शासक दण्ड विधान की सुचारू व्यवस्था कर सकत है। प्राचीन काल मे शासको के सन्मुख ऐसी कोई समस्या नही थी अत उनका राजदण्ड मजबूत रहता था। लेकिन यदि राजदण्ड इसी प्रकार कमजोर होता रहा तो एक दिन लोकतन्त्र से ही लोगो का विश्वास उठ जायेगा। जिन लोगो ने अंग्रेजी राज देखा है वे आज भी उनकी दण्ड व्यवस्था की प्रशसा किये बिना नही रहते। यह ठीक है कि उनके राज मे गुलामी का अहसास निरन्तर लोगो को आहत करता रहता था लकिन उनकी जान उनकी सम्पत्ति, उनकी इज्जत इस प्रकार सरे-आम, नही लुटती थी जैसी आज लुट रही है। हर प्रकार के अपराध के आकडे यहा दिन व दिन बढते ही जा रहे हैं। इतने डाके, इतनी हत्याए, इतने अपहरण और फिरौतिया, जमीनो पर इतने नाजायज कब्जे, इतन नशे, इतना मासभक्षण, इतने घोटाले, इतना भ्रष्टाचार क्या पहले भी कभी देखने-सुनन को मिले थे। पुलिस बल ज्यो-ज्यो बढता जा रहा है त्यो-त्यो स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। शासक और शासन जहा दोनो हो वहा राजदण्ड क्या खाक अपराधियो पर उठेगा ? महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' मे (समु० ६) मनु जी को उद्धत करते हुए दण्ड-विधान का महत्व दर्शाया है। उसकी तुलना तनिक आज की दण्ड व्यवस्था से करें और देखें कि हम कहा थे और गिरकर कहा पहुच गये हैं। मनु के अनुसार दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति। दण्ड सुप्तेषु जागर्ति दण्ड धर्मं विदुर्बुधा ॥१॥ यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत् साधु पश्यति ॥२॥

मनुस्मृति अ ६ श्लोक १८-२५

अर्थात् वही (दण्ड) प्रजा का शासनकर्ता सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यो मे जागता है। इसलिये बुद्धिमान लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं।

जहा कृष्णावर्ण रक्तनेत्र भयकर पुरुष के समान पापो का नाश करनेहारा दण्ड विचरता है, वहा प्रजा मोह को प्राप्त न हो के आनन्दित होती हैं। परन्तु जो दण्ड का चलाने वाला पक्षपात रहित विद्वान हो तो।

वस्तुत दण्ड ही धम, व्यवस्था, सुशासन का पर्याय हैं। इसके भय के बिना जगल राज की स्थापना की आशका बनी रहती है। लोक भाषा मे कहावत है 'भय से ही प्रीत होती है। पजाबी की एक अन्य कहावत है 'डण्डा पीर है बिगडिया-तिगडिया दा। गुरुकुल घरौ डा हरयाणा के प्रधान स्वामी भीष्म ब्रह्मचारी भी गाया करते –डण्डा ऊचा रहे हमारा, दुष्टो को डण्डे ने सुधारा, झण्डे का भी वही सहारा। राष्ट्रीय कवि चौ० पृथ्वीसिंह बेधडक का गीत है कि—

मन्त्री विधान बनावें डण्डे से, राजा राज चलावे डण्डे से पुलिस चोर को पकडे डण्डे से मदारी वन्दर नचावें डण्डे से। बकरा तख्त पै चढ जा डण्ड से, गुरु शिष्य पढावे डण्डे से।

वेद कहता है 'बधीर्हिदस्यु धनिन धनिन। अर्थात राजा दुर्जन धनी को लोह के घण से दबा कर रखे। विदुर जी कहते हैं कि आलसी ठाली बैठें निर्धन को और कृपण लोभी दानहीन धनी पुरुष को पत्थर की शिला के साथ जल मे डुबो देना चाहिए।

द्वावम्भसि निवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढा शिलाम्।
धनवन्तमदातार दरिद्र चातपस्विनम्।

यही वह दण्ड विधान है जो समाज मे व्याप्त लूट खसोट पर अकुश रख सकता है, जन साधारण के अग-भग विश्वास का पुनरुदय कर सकता है, लोक मानस के असन्तोष का शमन कर सकता है। राष्ट्र की अस्मिता का रक्षण उसकी प्राचीन धरोहर के उज्जवल पक्ष को शिरोधार्य करके ही हो सकता है। इस दिशा मे वेद ही अन्तिम विकल्प हो सकते हैं अत वैदिक दण्ड विधान से ही राष्ट्र का समुत्थान सम्भव है।

आर्यसमाज के बढ़ते कदम

डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री का प्रशंसनीय कृत्य

उत्तर भारत के सबसे बड़े मन्दिर श्री रघुनाथ जी के मन्दिर में वेद प्रचार करने के उद्देश्य से मैंने एक योजना बनाई सबसे पहले तो मैंने वहां पर गीता पर प्रवचन किये जिससे वहां के अधिकारी और जनता बहुत प्रभावित हुई। फिर मुझसे उन लोगों ने स्वयं कहा कि हम आप से वेद सुनना चाहते हैं। मैंने कहा कि प्रतिवर्ष एक वेद का पारायण यज्ञ करो और उसी की कथा सुनो।

कार्यक्रम बन गया। तीन वर्ष से यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद के पारायण यज्ञ हुए तथा उनकी कथा भी हुई। ११ कुण्डों में २०० यजमान सभी सनातनधर्मी यजमान अपनी याज्ञिक वेशभूषा में स्त्रियों ने पीली साड़ी पहनी तथा पुरुषों ने धोती कुर्ता पहने। सनातन धर्म के तथा आर्यसमाज के वेद पाठियों को इकट्ठे बैठाकर यज्ञ सफलता से सम्पन्न हुआ। वेद कथा भी हुई तथा जनता बहुत प्रभावित हुई। मन्दिर के इतिहास में यह पहला ही ऐसा चारों वेदों का आयोजन था। इस यज्ञ की विशेषता यह रही कि इसके लिये कहीं भी चन्दा नहीं किया गया। स्वयं यजमानों ने सारा व्यय वहन किया। इस वर्ष ऋग्वेद पारायण यज्ञ हो रहा है। १६ अक्तूबर से १ नवम्बर तक प्रत्येक वर्ष वेद यज्ञ के साथ हो सवा लाख गायत्री की भी आहुतियां पड़ती हैं। मैंने यह अनुभव किया कि ऐसे स्थानों पर यदि हम कटु खण्डन न करके वेदों के द्वारा मण्डनात्मक प्रचार करें तथा मण्डन में मीठा खण्डन स्वतः आ जाये तो जनता आपके विचारों को स्वीकार करेगी। इस प्रयोग में मुझे सफलता मिली। जिस मन्दिर में वेद कथा नहीं होती थी। स्वा वेद नहीं पढ़ता थी। गायत्री का यज्ञ नहीं होता था वहां अब यह सब होने लगा है। एक मन्दिर के अधिकारी कहने लगे कि महर्षि दयानन्द का कितना महान जीवन है कि उन्होंने स्वार्थ के लिये कोई कार्य न करके परोपकार के लिये जीवन दे दिया। एक तरफ श्रीराम को हम भगवान मानकर पूजते हैं परन्तु श्रीराम ने तो केवल अपनी धर्मपत्नी सीता की रक्षा के लिये रावण का विनाश किया था उसमें उनका स्वार्थ अधिक था। परन्तु महर्षि दयानन्द का अपना स्वार्थ कोई न था। महर्षि की यह प्रशंसा एक सनातन धर्मी से सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ रखा था मैंने उन्हें ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका एवं वैदिक सम्पत्ति जैसी किताब पढ़ने को दी। वे सज्जन यहां धर्मार्थ ट्रस्ट के सचिव रहे हैं।

आवश्यकता है कि यदि सनातन धर्मी आपको आर्य समाजों में नहीं आते तो हम उनके स्थानों पर जाकर वेद का प्रचार मधुर भाषा में करें।

—डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री

आर्य शिक्षा निधि की स्थापना

गत ४ अक्तूबर को आर्यसमाज दीवानहाल में हिन्दू युवक आत्मा-दयाल का एक अमेरिकन युवती क्लेयर से विवाह सम्पन्न हुआ। श्री परमात्मा दयाल जी के सुपुत्र श्री आत्मा दयाल अपनी स्नातक तक शिक्षा भारत में पूरा करके उच्च शिक्षा के लिए लगभग १५ वर्ष पूर्व अमरीका गए उच्च शिक्षा प्राप्त करते-करते वहीं पर कारोबार भी स्थापित कर लिया और पूर्ण रूपेण अमेरिका वासी हो गए। श्री आत्मा दयाल अमेरिका के स्थायी नागरिक भी बन चुके हैं इस पर भी अपना प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा मान्यताओं के प्रति किसी भी प्रकार से मोह भंग नहीं हुआ। वहीं अमेरिका में इनका परिचय सुश्री क्लेयर से हुआ जो एक ईसाई युवती थी तथा जिसके पिता अमेरिका के ही एक सुदूर राज्य में ... अधिवक्ता हैं। इस युवती के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति आदर और श्रद्धा को देखकर श्री आत्मा दयाल ने इस युवती से विवाह का निश्चय किया तथा यह निश्चय दोनों के माता पिता की सहमति में सगाई में बदल गया सुश्री क्लेयर ने अपनी इच्छा जताई कि यह विवाह भारत में हो तथा इससे पूर्व वे वैदिक धर्म में प्रवेश पाएं।

इधर आत्मादयाल के पिता श्री परमात्मा दयाल हमसे सार्वदेशिक सभा में मिले तथा क्लेयर के वैदिक धर्म में प्रवेश तथा विवाह संस्कार आदि की तैयारी होने लगी। अन्तत ४ अक्तूबर रविवार को यह संस्कार सम्पन्न हुआ। क्लेयर ने अपना वैदिक नाम पूनम स्वीकार किया ३१अक्तूबर को वापस अमेरिका की उड़ान करने से पहले दोनों पति पत्नी सभा कार्यालय पधारे श्री आत्मा दयाल ने सभा में पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी को दस हजार रुपये कल्याण कार्यों हेतु दान स्वरूप भेंट किए। मैंने सुझाव दिया कि इन दस हजार रुपयों की स्थिर निधि इनके नाम से ही बनादो जिससे आगे भी उनका सम्बन्ध सभा तथा आर्यसमाज से बना रहे। पूनम क्लेयर ने इच्छा व्यक्त की कि इस राशि या उनके ब्याज को गुरुकुलों के गरीब बच्चों की सहायतार्थ खर्च किया जाए परन्तु किसी भी हालत में उनके नाम को इस स्थिर निधि के साथ न जोड़ा जाए अतः आपसी विचार विमर्श से इस स्थिर निधि का नाम आर्य शिक्षा निधि रखने का निश्चय हुआ। इस पर श्री आत्मा दयाल ने ५००० रुपये और इस निधि में जमा करा दिए। इस प्रकार १५००० रुपयों से आर्य शिक्षा निधि की स्थापना हो गई। पूनम ने कहा कि वे अपना नाम इस निधि से इसलिए जोड़ना नहीं चाहती थीं क्योंकि नाम जोड़ने से ये उनकी व्यक्तिगत निधि बनकर रह जायगी। उन्होंने कहा कि मैं चाहती हूं कि अन्य लोग भी इस निधि में अपना सहयोग करें जिससे गुरुकुलों में पढ़ने वाले उन गरीब बच्चों की सहायता की जा सके जो कि भविष्य में भारतीय संस्कृति के कर्णधार बनेंगे। विदेशियों के मन में भारत की प्राचीन संस्कृति के प्रति श्रद्धापूर्ण भावनाओं को हमारा शत शत प्रणाम।

—विमल वधावन एडवोकेट

विदेश समाचार

नीदरलैण्ड में वेद प्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड (नीदरलैण्ड को अंग्रेजी भाषा में हॉलैण्ड कहते हैं) के निमन्त्रण पर ब्रह्मचारी सत्यवीर जी लंदन से २६ सेपटेम्बर को एम्सटर्डम आये। ब्रह्मचारी सत्यवीर आर्ष गुरुकुल बड़लूर कामारेड्डी आन्ध्रप्रदेश में वैदिक प्रचार हेतु योरप आये हैं।

२६ व २७ सितम्बर को २ दिनों का वेद यज्ञ रोटर्डम (ROTTERDAM) में आर्य समाज रोटरडम जिस गरीब बच्चों का सहायक समाज के नाम से भी जाना जाता है। द्वारा हुआ २६ व २७ सितम्बर को ब्रह्मचारी सत्यवीर के प्रवचन विशेष रूपसे हुये जिसे जनताने बहुत पसन्द किया। दोनों दिन भोजन इत्यादि की व्यवस्था पण्डित देवनारायण शुभधन की तरफ से हुई। पहला अक्तूबर को भी रोटर्डम में एक दिन का वेद यज्ञ आर्य सभा के मन्दिर में हुआ तथा महिला समाज द्वारा भजनों के कार्यक्रम के बाद ब्रह्मचारी सत्यवीर का विशेष प्रवचन हुआ।

२ ३ और ४ अक्तूबर को एम्सटडम (AMSTERDAM) में ३ दिनों का विशेष रूप से वेद यज्ञ आर्य समाज सत्य सनातन वैदिक प्रकाश द्वारा रचाया गया जिसमें तीनों दिन भारी संख्या में लोग उपस्थित हुये तथा महिला समाज द्वारा तीनों दिन भजनों का कार्यक्रम रखा गया तथा वैदिक धर्म की विशेषता और मानव जीवन के ध्येय पर विशेष प्रवचन लगातार तीन दिनों तक हुये। तीनों दिन भोजन इत्यादि के प्रबन्ध में पण्डित एस० शुभधन एवं महिला समाज का विशेष सहयोग रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड से सम्बन्धित समाजों की नीति रही है कि अतिथि का सम्मान धन दान द्वारा भी किया जाये ऐसा ही हुआ जिससे वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार भी हो।

—महेन्द्र स्वरूप

चम्पारण मे वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

सितम्बर महीने मे पश्चिमी एव पूर्वी चम्पारण मे एक विशेष प्रचार अभियान के अन्तर्गत वेद प्रचार का कायक्रम आयो जत वया गया। जिसमे बिहार के अलावा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री लक्ष्मण सिंह बेमेल न श्री भजन तथा भाषण द्वारा वेदादि का उपदेश लोगो को दिया। आय समाज मरकटिया गंज मे यह कायक्रम लगातार एक सप्ताह तक चलता रहा। इसके पश्चात आय समाज मलाही आय समाज मगलपुर (प चम्पारण) आय समाज कोत राहा मे यह प्रचार काय सोल्लास सम्पन्न हुआ।

—डा राजेन्द्र जिज्ञासु सहमन्त्री सभा

शोक समाचार

आय समाज अल्मोडा मे रावचार दिनाक १ ११ ९२ को निम्नाकित महानुभावो के निधन पर शोक सभा हुई—

(१) श्री लालमणि मिश्र आयु ९५ वष (२) श्रीमता शिवबती मिश्र (९३ वर्ष) दोनो डा ज्ञानप्रकाश कच्चाहारी (स्वामी गुरुकूलानन्द सरस्वती) जी के माता पिता थे और क्रमश गत सित मास की १४ तथा २३ तारीख को केवल ९ दिन के अन्तराल से दिवगत हो गय।

२—श्री रणजीत सिंह रावत (६९ वष) कनिष्ठ भ्राता श्री पूरनसिंह प्रधान आय समाज अल्मोडा। स्व श्री रणजीतसिंह आय समाज दीवानहाल दिल्ली के भी सदस्य थे और बहुत मिलनसार एव धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे।

शोक सभा मे उक्त तीनो दिवगत आत्माओ के प्रति परमात्मा से शान्ति की प्राथना की गई और उनके प्रिय सम्बन्धियो के सम्बन्ध म वियोगजन्य दुख को सहन करने की क्षमता प्रदान करने की कामना की गई।

—मन्त्री आय समाज अल्मोडा (उ प्र)

जापानियो का संस्कृत प्रेम

टोकियो ६ अक्तूबर (पीटीआई)। जापानी विद्वानो को सस्कृत मे शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए एक जापानी मन्दिर पुस्तकालय न सस्कृत व्याकरण और श्लोको की एक कम्पक्ट डिस्क तैयार करने की योजना बनाई है।

यह कम्पैक्ट डिस्क नारा तोप जी बौद्ध मन्दिर पुस्तकालय बना रहा है। इसमे सस्कृत के एक मद्रासी विद्वान डा० एस एस जानकी की आवाज मे सस्कृत व्याकरण और चुने हुए श्लोक भरे जायेंगे।

डा जानकी का चुनाव मन्दिर पुस्तकालय के निदेशक श्री शोशु हिराओका न कया था।

श्री हिराओका दो सस्कृत शब्दावलिया पहले ही तैयार कर चुके है। आज के जापान टाइम्स मे छपी एक रिपोट मे उन्होने कहा है कि कम्पैक्ट डिस्क से जापानियो को देवभाषा सस्कृत सीखने मे सहायता मिलेगी।

(दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स ७ अक्तूबर १९९२ के अक से साभार)

छपरोली (मेरठ) मे वेद प्रचार की धूम

दीपावली से दो दिन पूव विश्ववेद परिवार सघ के सस्थापक तथा महामन्त्री श्री प ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री तथा कायवाहक अध्यक्ष स्वामी वेदानन्द जी वैदिक का छपरोली पहुचन पर भव्य स्वागत किया गया। मध्य बाजार मे स्थित ठाकुर द्वारे के प्रागण मे स्वामी जी महाराज ने वैदिक धम की विशेषताओ का वणन किया और श्री शास्त्री जी ने कहा कि यदि महर्षि दयानन्द जी न आते तो सत्य सनातन वैदिक धम की रक्षा ही न हो पाती।

अयोध्या पर तीसरे दौर की बातचीत असफल

राम मन्दिर बाबरी मस्जिद त्रिपक्षीय वार्त्ता का तीसरा दौर मात्र आधे घण्टे की बात-चीत के बाद स्थगित हो गया। बैठक मे विश्व-हिन्दू परिषद ने माग की कि उनकी अन्तरिम रिपोर्ट को अन्तिम माना जाए और स्पष्ट किया कि त्रिपक्षीय वार्त्ता का कार सेवा घोषणा से कोई सम्बन्ध नही है। अ० भा० बाबरी मस्जिद एक्शन समिति ने आगामी छ दिसम्बर से कार सेवा शुरू करने का विश्व हिन्दू परिषद् का आहवान वापस लिए जाने और मन्दिर मस्जिद इमारत की सुरक्षा की माग की।

इस बैठक मे दोनो पक्षो के प्रमुख नेताओ के अतिरिक्त सरकार की ओर से श्री पी० आर० कुमार मगलम श्री सुबोध कान्त सहाय ने भी भाग लिया। बैठक स्थगित करने से पूर्व यह निर्णय हुआ कि दोनो पक्ष अलग-अलग प्रधान मन्त्री श्री पी०वी० नरसिहराव से भेट करेगे।

महर्षि निर्वाणोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज बोट क्लब—

आर्य समाज बोट क्लब, उद्योग भवन के समीप मैदान मे महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव २ नवम्बर से ६ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन दोपहर १ बजे से २ बजे तक श्री गुलाबसिह राघव द्वारा भजनोपदेश तथा श्री प्रणव शास्त्री द्वारा उपदेश सम्पन्न हुये। ६ नवम्बर को दोपहर १२-३० पर यज्ञ सम्पन्न हुआ तदुपरान्त मुख्य कार्यक्रम मे श्री विशम्भरनाथ भाटिया रवीन्द्रकुमार मेहता तथा श्रीमती कान्ता सिक्का ने सभा को सम्बोधित किया।

कानपुर। आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्द नगर के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस पर एक सभा कालेज के प्रबन्धक श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे की गई।

सभा मे वक्ताओ ने आर्य समाज के आदि सस्थापक महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि भारत के प्रथम महापुरुष थे जिन्होने नारी शिक्षा पर बल दिया। उन्होने एक ईश्वर, एक अभिवादन नमस्ते वेदो का अध्ययन करने, स्वदेशी राज्य, जन्म से नही बल्कि गुण व कर्म व स्वभाव की वर्णव्यवस्था का समर्थन किया।

सभा मे सर्वश्री ओ पी आर्य मुख्य अभियन्ता कानपुर विकास प्राधिकरण, प० महेन्द्रपाल शास्त्री (पूर्व इमाम), आचार्य धर्मानन्द बालगोविन्द आर्य, कु० शहनाज, बसन्तकुमारी मिश्रा, वीरा चोपडा, डा० नन्दलाल गाधी ने भाषण दिय।

कार्यालय प्रमुख
आर्य कन्या इण्टर कालेज
गोविन्द नगर, कानपुर

दीपावली (ऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस)

बागपत। आर्य समाज बागपत द्वारा ऋषि निर्वाण दिवस २४ व २५ अक्तूबर ९२ को मनाया गया। आर्य विद्वान मा० मुरारीलाल सिद्धान्त शास्त्री द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त भगवान राम व ऋषि दयानन्द पर प्रवचन काव्य गोष्ठी, आर्य प्रदर्शनी का कार्यक्रम चला। इस अवसर पर आर्य साहित्य तथा ऋषि दयानन्द का आकर्षण कलैण्डर नि शुल्क वितरित किया गया। प्रधान हरिहर 'स्नेही तथा मन्त्री सुभाषचन्द त्यागी न सभी आगन्तुको का आभार व्यक्त किया। द्विदिवसीय सम्मेलन का मा० सत्यप्रकाश गौड ने सचालन किया।

—सुभाषचन्द त्यागी, मन्त्री

दयानन्द निर्वाणोत्सव सम्पन्न

पटना, २५ अक्तूबर ९२। माडर्न आर्यन्स सेन्ट्रल स्कूल, कंकड़बाग मे आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १०९ वा निर्वाण दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के सहमन्त्री डा राजेश्वर जिज्ञासु ने कहा कि आर्य समाज कोई मजहब या पथ नही है बल्कि एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र के कल्याण के लिए की थी।

लुधियाना २४ अक्तूबर

प्रेम एजूकेशनल सोसाइटी (रजि) की ओर से प्रेम माडल हाई स्कूल जनकपुरी लुधियाना म आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस बडी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। समारोह के आरम्भ मे यज्ञ किया गया जो कि प अनिल शास्त्री पुरोहित आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना न सम्पन्न कराया। कायक्रम की अध्यक्षता सोसाईटी के प्रधान श्री प्रेम वर्मा ने की।

समारोह के मुख्य वक्ता श्री रोशनलाल आर्य प्रधान आय युवक सभा पजाब ने अपन सम्बोधन मे कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने धार्मिक अन्ध विश्वास सामाजिक कुरीतियो को दूर करने, वेदो का ज्ञान जन साधारण तक पहुचान देश को स्वतन्त्र कराने, शिक्षा प्रसार दलितोद्धार नारी जाति के उत्थान एव सभी मनुष्यो को बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए आजीवन सघष किया और अपने प्राणो की आहुति दे दी। उन्होने युवा वर्ग को आह्वान किया कि व राष्ट्र निर्माण मे रचनात्मक भूमिका निभाए तथा देश की एकता और अखण्डता की रक्षा हेतु कार्य करें।

रोशनलाल आर्य प्रधान
आर्य युवक सभा पजाब

दीपावली तथा ऋषि निर्वाण उत्सव

आय समाज अडडा होशियारपुर जालन्धर, मे दीपावली के उपलक्ष्य मे रविवार २५ १० ९२, प्रात ८-३० से ११ ३० तक ऋषि निर्वाण उत्सव बडे समारोह से मनाया गया, प्रात ८ ३० से १० बजे तक यज्ञ एव भजन कीर्तन तथा १० से १०-३० तक वेदपाठ तथा ११ ३० तक नगरके वैदिक विद्वानो ने महर्षि दयानन्द जी को अपनी श्रद्धाजलि भेट की। —श्रवण कुमार भारद्वाज महामन्त्री, आर्य समाज

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४९/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५-११-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626, 57 Licensed to post without prepayment License No. U 93Post in N D P.S O.on 12, 13-11 1992

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य युवक सभा पटियाला श्री सुशीलकुमार आर्य प्रधान, श्री रजीतसिंह आर्य मन्त्री श्री गम्भीरसिंह आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज टण्डा—श्री आनन्द कुमार आर्य प्रधान, श्री कृष्ण कुमार आर्य मन्त्री, श्री स यप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आय समाज झज्जर रोड रोहतक श्री हरिकृष्ण आर्य प्रधान, श्री हरिराम आर्य मन्त्री श्री नीश कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज मसूरी—श्री परमात्माशरण पधान श्री नरेन्द्र साहनी मन्त्री, श्री के एल शाह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज हषवधन के एण्ड मि लि अन्तरवेलिया—श्री रामसिंह राठौर अध्यक्ष, डा रणजीतसिंह चौहान मन्त्री, प आर्येन्द्र कुमार वैदिक कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश श्री महेन्द्रप्रताप जी प्रधान, श्री गणेशदास ग्रोवर मन्त्री, श्री डा अर्जुननाथ भल्ला कोषाध्यक्ष चुने गए।

आय समाज बिरला लाइन्स दिल्ली—श्रीमती सुशीला सेठी प्रधाना, श्री जयकृष्ण आर्य मन्त्री श्री देवदत्त गौतम कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर—श्री छोटूसिंह एड वोकेट अध्यक्ष, श्रीमती कमला शर्मा मन्त्री श्री नन्नीलाल गर्ग एड कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज नरौरा बुलन्दशहर—श्री हिमाशु वर्मा प्रधान, श्री ओमप्रकाश आर्य मन्त्री, श्री नजपालसिंह आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज भटिण्डा—श्री प्रेम जी भाटिया प्रधान, श्री बिहारीलाल जी मन्त्री, श्री इन्द्रजीत जी गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज गया श्री सोममित्र व्यस्ती अध्यक्ष, श्री जगदम्बाप्रसाद मन्त्री, श्री मुन्शी प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज टकारा श्री नानालाल कालिदास टाक प्रधान, श्री एसमुखराय भरमश्री परमार मन्त्री, भगवानजी देवजी भाईभीमाजी कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य वीरों का उत्साह

पिछले कई वर्षो से आर्य वीर दल शबगा (मेरठ) निरन्तर प्रगति कर रहा है वहा श्री धर्मवीरार्य के नेतृत्व मे सैकडो आर्य वीर नित्य प्रति व्यायाम करते है आर्य वीर बाल विद्यालय भी आर्य वीरो द्वारा गाव मे चलाया जा रहा है लेकिन कुछ समाज विरोधी ताकतो को यह सब रास नही आया और एक दिन जब शाखा स्थल पर यज्ञ किया जा रहा था वही आर्य वीरो से उलझ पडे। लेकिन आर्य वीरों ने डटकर मुकाबला किया। शत्रु पक्ष द्वारा काफी हो-हल्ला किया गया तथा ईट पत्थर की बौछार की गई। लेकिन आर्य वीरो ने मैदान नही छोडा और शत्रुओ को पछाडकर उनके अरमान ढीले कर दिए। आर्य समाज की रक्षार्थ सभी आर्य वीरो ने एकजुट होकर पौराणिको को छटी का दूध याद दिला दिया। आर्य वीरो जागो।

मदनलाल राठी, वरिष्ठ शिक्षक आ वी दल

आर्य वीरदल द्वारा वृहद आर्य सम्मेलन

आर्य वीर दल जनपद अलीगढ द्वारा वृहद आर्य सम्मेलन १८ अक्तूबर-९२ को केन्द्रीय आर्य समाज मन्दिर (अलीगढ) मे प्रात ७ बजे यज्ञ से आरम्भ हुआ। जिसमे जनपद अलीगढ एव बुलन्दशहर से बडी सख्या मे आर्य वीर एव आर्य जन सम्मिलित हुए। वेदो के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ जी का प्रेरक प्रवचन हुआ।

आर्य वीर दल का ध्वजारोहण श्री जयनारायण आर्य कमिश्नरी सचालक आगरा द्वारा हुआ। भोजन उपरात मध्यान्ह मे श्री रामअवतार आर्य भजनोपदेशक एव सुरेन्द्र सिंह आजाद व्यायाम शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के जोशीले भजनो से अधिवेशन आरम्भ हुआ। जिसमे आचार्य जीवनसिंह आर्य जिला मन्त्री जी ने आर्य वीर दल जनपद अलीगढ का विवरण सुनाया।

रात्रि कार्यकर्ता गोष्ठी मे गाव-गाव मे आर्योदय केन्द्र स्थापित करने, साईकिल द्वारा जन-सम्पर्क करने तथा पूरे जनपद मे प्रचार मडलियो द्वारा निरतर वेद प्रचार करने का निश्चय किया गया।

आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम अलीगढ़ द्वारा 'आर्य राम का राष्ट्र प्रेम' सफल प्रतियोगिता का आयोजन

आर्य समाज सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम अलीगढ के विजय दशमी वेदोत्सव के अवसर पर मुरादाबाद के सिद्धान्त मनीषी श्री यशपाल आर्य बन्धु एव श्री रामदास प्रशासु गुरुकुल एटा के भजनोपदेशक के मनोरम प्रवचन व भजन हुए। श्री देवदत्त उपाध्याय एव माता प्रभावती का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। कक्षा ९ से १२ तक के छात्र-छात्राओ ने "आर्य राम का राष्ट्र-प्रेम" विषय पर भाषण प्रतियोगिता मे भाग लिया।

— रामदीन आर्य, मन्त्री

स्वास्थ्य लाभ हेतु प्रार्थना

दिनाक २०-९-९२ के सार्वदेशिक मे आर्य जगत की तीन महान विभूतियो के रुग्ण होने का समाचार पढ कर आर्य समाज आवास विकास कालोनी काशीपुर के आर्य बन्धु अति दुखित है तथा तीनो ही महान आत्माओ पू० स्वामी वेदमुनि परिव्राजक वैदिक सस्थान नजीबाबाद, श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी खतौली तथा पं० श्री सत्यमित्र जी शास्त्री वेदतीर्थ बल्लभगढ को स्वास्थ्यलाभ एव दीर्घायु प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

शान्तिप्रसाद गोयल कोषाध्यक्ष

शोक समाचार

म० ताराचन्द आर्य नारनौल अन्तरग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के ज्येष्ठ पुत्र यशदेवसिंह का निधन दिनाक ५-१०-९२ को हो गया। जिनका अन्त्येष्टि सस्कार दिनाक ६-१०-९२ को वैदिक विधि से कराया। शान्ति यज्ञ और शोक सभा दिनाक १६-१०-९२ को समय २ से ४ बजे तक चली। इस अवसर पर अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने गहरा शोक प्रकट करते हुये श्रद्धाजलि अर्पित की।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

- देखो श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम भी किया हो, ऐसा नही लिखा।
- जगत् को मिथ्या मानने में जगत् की उन्नति, परस्पर प्रीति और विद्या आदि गुणो को प्राप्ति करने मे पुरुषार्थ और श्रद्धा अत्यन्त नष्ट होने से जगत् के जितने उत्तम कार्य है, वे सब नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अङ्क ४३] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ मार्गशीर्ष शु० १३ सं० २०४९ २२ नवम्बर १९९२

देश की समस्त भारतीय भाषाओं का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध

राष्ट्रीय एकता हेतु हिन्दी का व्यापक प्रयोग किया जाये

तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन में दक्षिण तथा उत्तर के विद्वानों का साझा उद्बोधन

पटना १२ नवम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे तीसरे भारतीय भाषा सम्मेलन का सफल आयोजन आज पटनाके भारतीय नृत्य कला भवन में हुआ। यह आयोजन बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया था। इस सम्मेलन में तमिलनाडु आ० प्र०, केरल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र तथा दिल्ली आदि प्रान्तों से भाषाई विद्वानो ने भाग लिया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आ० प्र० के प्रधान श्री क्रान्तिकुमार कोरटकर भी उपस्थित थे। सम्मेलन में तमिलनाडु के विद्वान् प्रो० पी० के० वालसुब्रामण्यम् नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डा० कुमार विमल तथा पटना उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति (जस्टिस) विनोदकुमार राय, ने भी सभा को सम्बोधित किया। सम्मेलन का कुशल संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री प्रो० योगेन्द्र नारायण ने किया।

बिहार सरकार के राजस्व मन्त्री श्री देवनारायण यादव ने दीप प्रज्ज्वलित करके इस सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन किया। सम्मेलन का शुभारम्भ आर्य कन्या विद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत गान से हुआ तथा बिहार सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने देश के कोने-कोने से आये हुए प्रतिनिधियों तथा वक्ताओ के स्वागत में अपना सम्बोधन किया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने की।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कहा कि राष्ट्रद्रोही शक्तियों के द्वारा भाषा के नाम पर विघटन पैदा करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं, श्री वन्देमातरम्जी ने इच्छा व्यक्त करते हुए कहा कि केन्द्र तथा राज्य सरकारो को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समस्त भारतीय भाषाये जो कि परस्पर बहनों के समान हैं और जिनका उद्गम संस्कृत से है वे एकता स्थापित करने की ताकत बने। उन्होने कहा कि आर्य समाज राष्ट्रीय एकता को इस नये दृष्टिकोण के आधार पर जन-चेतना जागृत करने के लिए भविष्य में लक्ष्यबद्ध होकर कार्य करेगा। श्री स्वामी आनन्दबोध जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में घोषणा करते हुए कहा कि आर्य समाज की यह भाषा यात्रा देश के समस्त बडे प्रान्तों तक पहुंचेगी और सम्भवत: चतुर्थ भारतीय भाषा सम्मेलन दक्षिण भारत के मद्रास या बंगलौर मे आयोजित किया जायेगा।

सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने उपस्थित विद्वानों के समक्ष ६ प्रस्ताव विचारार्थ पढकर सुनाये जिन पर सम्मेलन के अन्त में उपस्थित प्रतिनिधियों ने हाथ उठाकर एक मत से अपना समर्थन व्यक्त किया। सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्तावों में मांग की गई कि सभी भारतीय भाषाओं को नागरी लिपि के माध्यम से परस्पर एकीकरण करने का प्रबल आन्दोलन किया जाये।

प्रधानमन्त्री जी का प्रेरणादायक संदेश

हिन्दी, जिसकी एक बडी समृद्ध साहित्यिक परम्परा रही है, ने यह भी प्रमाणित कर दिया है कि वह अपने आपको बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुसार ढाल सकती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा प्रशासन जैसे क्षेत्रो मे हिन्दी के बढते हुए प्रयोग ने इस भाषा की बहुमुखी क्षमता को प्रमाणित कर दिया है। पिछले कई वर्षो से यह स्पष्ट हो गया है कि हिन्दी का व्यापक पैमाने पर प्रयोग किया जा सकता है और यह संचार एवं अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम है।

पी. वी. नरसिंह राव
प्रधानमन्त्री

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज द्वारा कश्मीर को सेना के हवाले करने की मांग

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा (इटावा) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

इटावा जनपद से ६० किलोमीटर दूरी पर स्थित गुरुकुल ऐरवा कटरा का ११ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ५ से ८ नवम्बर ९२ मे उत्साह एवं श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम मे चारो दिन प्रात यज्ञ कार्य बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर शिक्षा, व्यसन मुक्ति, गो कृषि रक्षा, एव राष्ट्र रक्षा पर विविध सम्मेलन हुए। फिर भी लोगो का मुख्याकर्षण था गुरुकुल का राष्ट्र रक्षा सम्मेलन। इस सम्मेलन में मुख्यातिथि श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा थे एव युवकों के प्रेरणा स्रोत श्री विमल वधावन जी भी इस कार्यक्रम मे उपस्थित थे। श्री वधावन जी ने राष्ट्र रक्षा के लिये युवको का आवाहन किया कि वे संसार की बुराइयो को त्याग कर राष्ट्र रक्षा मे अपना योगदान दें। समारोह के मुख्य अतिथि पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी ने अपने मार्मिक उद्‌बोधन द्वारा गुरुकुल मे उपस्थित जनता का ध्यान राष्ट्र रक्षार्थ अपनी ओर खींचते हुए कहा कि आज कश्मीर टूटने के कगार पर है वहा अघोषित युद्ध चल रहाहै। मैंने भू.पू. प्रधानमन्त्री राजीव गाधी से कहा था कि काश्मीर की सुरक्षा के लिए सीमा पर सुरक्षा पट्टी का निर्माण कर भारत के इकतालीस लाख भूतपूर्व सैनिकों को बसा दिया जाय तो एक दिन मे कश्मीर समस्या हल हो सकती है। रामजन्म भूमि की ओर ध्यान खींचते हुए पू० स्वामी जी ने कहा कि हमने विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष डालमिया को कहा था कि आर्य समाज सदैव आपकी रक्षा के लिये तत्पर रहेगा। कारसेवा के अवसर पर हमने ५००० जवानो को पण्डित इन्द्रराजजी के निर्देशन मे अयोध्या भेजा था। राम मन्दिर का हवाला देते हुए उन्होने कहा था कि फैजाबाद आर्य समाज के प्रधान ने गर्भ गृह में आर्य समाजी होते हुए भी मूर्तिया स्थापित की थी यदि वह ऐसा न करते तो आज मन्दिर का निशान भी न होता। इस सम्मेलन मे अनेकों आर्य विद्वानों सन्यासियो आदि ने अपने विचारो से समस्त जनमानस को लाभान्वित किया।

न्यायालय अधिकारी की, महिला कर्मचारी के घर में कोड़ों से पिटाई

जीनत जहां गिरफ्तार

बरेली, १३ नवम्बर। स्थानीय दीवानी न्यायालय के अधिकारी को अपने यहा की एक चतुर्थ श्रेणी महिला कर्मचारी की 'दावत' इतनी महंगी पड़ी कि" उनको घंटों बंधक बनाकर निर्वस्त्र करके पहले कोड़ो से पिटाई की गई और फिर कथित रूप से नंगे फोटो खिचवाकर एक लाख रुपये की माग कर घर से निकाल दिया गया।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक दीवानी-न्यायालय के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी बी. डी. शर्मा ने थाना किला मे रिपोर्ट दर्ज कराते हुए आरोप लगाया कि उक्त थाना क्षेत्रान्तर्गत मोहल्ला मलूकपुर घेर बाजदारान निवासी जीनत जहा नामक महिला उनके विभाग मे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के पद पर कार्यरत थी, उसे पिछले दिनो चली जजी कर्मियो की हड़ताल के दौरान बर्खास्त कर दिया गया था। उक्त महिला कर्मचारी ने अपने बहाल होने की खुशी में अपने निवास पर एक दावत का कुचक्र रचकर उस दावत मे उन्हे भी आमन्त्रित किया।

बी डी. शर्मा ने रिपोर्ट मे कहा है कि तकरीबन ६ बजे के दावतनामे के मुताबिक वह दावत मे शामिल होने के लिए जीनतजहा के निवास पर पहुचे, लेकिन वह वहा दावत का कोई प्रबन्ध व अन्य किसी भी कर्मचारी को न देखकर सकते मे आ गये, लेकिन इसी बीच उक्त महिला कर्मचारी ने बड़ी गर्मजोशी से उनका स्वागत करते हुए कहा कि आप अन्दर बैठकर आराम करे, तब तक और लोग भी आ जायेंगे। इतना कहने पर वह उसके घर मे जैसे ही प्रविष्ट हुए जीनत जहा ने अन्दर से दरवाजा बन्दकर लिया,तभी दो-तीन युवक अन्दर से बाहर निकल आए और उन पर लात घूंसो से वार करने लगे और उन्हे नीचे गिराकर चाकू निकाल लिये और फिर चाकूकी नोक पर उसके सारे कपड़े उतरवाकर नगा कर दिया और फिर जीनत जहां के साथ नंगे फोटो खिचवाने पर बाध्य करके फोटो खीचे।

श्री शर्मा ने रिपोर्ट मे आरोप लगाया है कि बाद में कोड़ो की मार के बीच उक्त युवको ने उनसे इस्तीफा लिखवा लिया और फिर एक लाख रुपये लाने के लिए उन्हें निर्वस्त्र ही घर से बाहर निकाल दिया। श्री शर्मा का कहना है कि वह बाद मे किसी तरह छुपते छुपाते अपने घर पहुंचे और अपने बेटे को साथ लेकर थाने आए। श्री बी. डी शर्मा के पुत्र सुनील शर्मा ने उक्त घटना की रिपोर्ट दर्ज कराते हुए रिपोर्ट मे जीनत जहा व दो अन्य लोगो को नामजद किया है।

पुलिस ने उक्त प्रकरण की रिपोर्ट दर्ज कर छापा मारकर उक्त महिला को गिरफ्तार कर श्री शर्मा के कपड़े अडरवियर बनियान आदि व कैमरा बरामद कर उसे जेल भेजा है। जीनत जहा ने वरिष्ठ पुलिस अधिकारी को दिये ज्ञापन मे आरोप लगाया है बी. डी शर्मा की उसके प्रति नीयत खराब थी और वह उसकी मजबूरी का फायदा उठाना चाहते थे, इस बात की मौखिक शिकायत उसने जिला जज से भी की थी।

पुलिस ने मामले को दर्ज कर इस घटना की जाच शुरू कर दी है।

(पंजाब केसरी १४-११-९२)

स्वामी दयानन्द की पुण्यतिथि मनाई गई

हैदराबाद, २६ अक्तूबर। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की १०९ वी पुण्य तिथि २५ अक्तूबर दीपावली के दिन सिकन्दराबाद आर्य समाज में मनायी गयी। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रदेश शाखा के अध्यक्ष कान्तिकुमार कोरटकर ने की।

कार्यक्रम मे उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने कहा कि संसार नश्वर है ससार की कोई वस्तु अमर नही है।

अमर वही है जो अपने अच्छे कार्यो के कारण संसार में मृत्यु के बाद भी जाना जाताहै स्वामी दयानन्द सरस्वती ने धर्म और न्यायके लिये अपना जीवन बलिदान कर दिया। उनके बताये आदर्शों में से कुछ को भारतीय संविधान में भी स्थान दिया गया है अत. स्वामी जी अपने कार्यों में अमर है।

नवलखा महल स्वीकरण समारोह हेतु तैयारियां जोरों पर

दिनांक: २८-२९ नवम्बर, १९९२ स्थान: गुलाब बाग, उदयपुर

राजस्थान सरकार द्वारा उदयपुर स्थित नवलखा महल, जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने "सत्यार्थ-प्रकाश" लिखा था, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को, वहां महर्षि दयानन्द का एक भव्य स्मारक, एक वैदिक, शोध केन्द्र एवं वैदिक वाङमय पुस्तकालय तथा समाज और राष्ट्र सुधार के उनके अधूरे कार्य को पूरा करने का केन्द्र स्थापित करने हेतु सौंपे जाने के निर्णय से सर्वत्र प्रसन्नता और हर्ष की लहर दौड़ गई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने आर्यजगत की उदारता और सहयोग के भरोसे ही इतना बड़ा आयोजन करने का बीड़ा उठाया है। अतः समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओ, आर्य समाजो और आर्य जनों से निवेदन है कि वे इस हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहायता भेजने की कृपा करें। चैक अथवा ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के नाम में ही होने चाहिये और जयपुर अथवा उदयपुर में से किसी भी पते पर भेजे जा सकते हैं।

— स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

पाश्चात्य संस्कृति का बहुमुख आक्रमण

—वैद्य रणजीत राय देसाई

राजनीतिक दासता की शृंखला से भारत भले मुक्त हो चुका हो, तथापि उससे भी कहीं अधिक भयंकर सांस्कृतिक दासता की शृंखला में तो वह अधिकाधिक विबद्ध ही होता जा रहा है। इस दास्य से मुक्ति के लिए प्रयास का विचार एवं आचरण आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य किसी संस्था के बूतें का नही है, इसमे लेशमात्र संशय नहीं है। कठिनाई यह है कि आर्य समाज के सभी लक्ष्य हिन्दू महासभा, कांग्रेस आदि ने अपना लिए, अथवा आर्यसमाज के सभी धुरन्धर नेता एवं कार्यकर्त्ता इन संस्थाओं की परिधि मे समा गए, अत. आर्यसमाज के लिए कोई कर्तव्य शेष न रहने से वह हठात् शिथिलावस्था में आ गया। भारत के विभाजन ने भी इस स्थिति के उत्पन्न करने में विशेष भाग लिया, परन्तु मैं नहीं समझता इस सांस्कृतिक पराधीनता से मुक्ति का कार्य अन्य कोई संस्था उठा सकेगी। और यह महत् कार्य भी इतना विशाल है कि शेष सभी कार्यक्रमों के विस्तार जितना ही विस्तार इस कार्य का भी है। परिणामतया, आर्यसमाज की समग्र कार्य-शक्ति के उपयोग की श्रेष्ठ सामग्री इसमें उपलब्ध हो सकती है। इस विचारधारा से प्रेरित होकर इस सांस्कृतिक दासत्व के कतिपय पहलुओं का निर्देश इस लेख में कर रहा हूं। विज्ञवाचक इसी दृष्टि से विचार-विमर्श करते हुए अन्य मुद्दों को भी प्रकाश में ला सकते है।

१. आर्यों का बाहर से आगमन

भारत को सांस्कृतिक दृष्टि से दास बनाने के निमित्त पश्चिम की ओर से किए गए आक्रमणो में प्रथम वह है जिसका निर्देश ऊपर शीर्षक में किया गया है। इसका स्वरूप यह है कि आर्य सुदूर लोक बाहर से इस देश में प्रविष्ट हुए और यहां के तथाकथित आदिवासियों को पराभूत कर यहां के स्वामी हो गए।

इस मन्तव्य में सत्य हो या न हो, परन्तु इसके प्रचार-प्रसार मे प्रच्छन्न हेतु यह मन्तव्य था कि भारत आर्यो की मूल भूमि नही है। तथापि जिस प्रकार उन्होंने बाहर से आकर इस पर आधिपत्य जमा लिया, ठीक उसी प्रकार पहले मुगलो ने और अनन्तर अंग्रेजो ने बाहर से आकर यहा अपना शासन प्रवर्तित कर दिया। सो यदि भारतीयों को आर्यों के भारत-प्रवेश एवं भारत के स्वामी होने में कोई दोष नही प्रतीत होता तो ब्रिटिशों द्वारा इसी प्रकार के आचरण मे उन्हे कोई नवीनता या अनौचित्य नहीं मानना चाहिए।

इसी प्रसंग मे यह भी साम्य आर्यों और ब्रिटिशो के क्रमिक आधिपत्य विस्तार में प्रदर्शित किया जाता है कि ब्रिटिशो पर यह दोषारोपण किया जाता है कि वे प्रथम भारतीयों के क्षेत्रों में धर्म-प्रचारकों (पादरियों) को भेजते थे, ये लोग अपने कृत्यों से भारतीयो को उत्तेजित करते जिसके फलस्वरूप उस क्षेत्र के निवासी लोग पादरियों का अप्रियाचरण करते तो इन पादरियों की रक्षा क उद्देश्य से ब्रिटिश सैन्य उस प्रदेश मे प्रवेश करता और उसे अपने हस्तगत कर लेना। भारतीयों को इसमे भी कुछ नावीन्य एव अनौचित्य प्रतीत होना न चाहिए। कारण आर्यों के आधिपत्य के विस्तार की भी परिपाटी यही तो थी। उनके अगस्त्य, विश्वामित्र आदि धर्म-प्रचारक तथा उनकी रक्षाके उद्देश्य से विस्तार-वृद्धि करने वाले राम आदि और क्या करते थे? इसी पद्धति का अनुसरण करते हुए तो उन्होंने लंका तक अपना प्रभुत्व जमा लिया था न?

भारतीय वांगमय में आर्यों के बाहर से भारत में आने का कोई संकेत नहीं है। आर्य ऐतिहासिक उनका तथा अन्य प्रमाणों का निर्देश करेंगे ही। इस लेखक का आयुर्वेद से सम्बन्ध होने से वह उसी का एक प्रमाण विद्वज्जनों के विचारणार्थ प्रस्तुत करता है। चरक-संहिता के चिकित्सा स्थान के प्रथम अध्याय के चतुर्थपाद के आरम्भ में हिमालय के विशेषणों में एक विशेषण "पूर्वनिवास" आया है। इसका सम्भावित अर्थ यही प्रतीत होता है कि आर्यजन प्रथम हिमालय की अधित्यका मे (ऊर्ध्वभूमि मे) निवास करते थे। पश्चात् वहा से उतरकर नीचे उपत्यका मे (तलहटी मे) आए और क्रमशः आगे बढते गए। इस प्रक्रियामें उन्होंने अन्य निवासियो पर आक्रमण नहीं किया। उलटे उनके देवों, देवियों, रीति-रिवाजों, संस्कृति और शब्दों को भी अपना लिया। (गगा शब्द या अपने राष्ट्रपक्षी का वाचक मयूर शब्द भी मूल संस्कृत का नही है।)

ब्रिटिशों द्वारा प्रवर्तित उक्त मन्तव्य का प्रभाव आज भी इस रूप में देखा जाता है कि दक्षिण भारत के लोग बात-बात में अपने को पूर्वकाल के इतिहास को सत्य मानते हुए उत्तर भारत द्वारा आक्रांत मानते है। हमारे शासक भी उक्त मन्तव्य के चगुल मे ऐसे आ गए हैं कि आज भी प्रजा के अमुक अंश को 'आदिवासी' कहा जाता है। ब्रिटिश काल से अब तक इन तथाकथित आदिवासियो के अचलों में देश के हितशत्रु नत्रव्य जनता को देश के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उत्तेजित करते हैं।

२. रामायण-महाभारत की अनैतिहासिकता

पाश्चात्य ऐतिहासिको द्वारा भारतीय जनता को प्रच्छन्न एवं अज्ञात रूप से स्वाभिमत विचारधारा की अनुयायी बनाने का एक प्रयास यह भी था। अकबर और औरंगजेब मे चारित्र्य की दृष्टि से औरंगजेब अति उन्नत कक्षा का था। तथापि अकबर सुविदित साम उपायो का अवलम्बन कर अपने प्रभाव-क्षेत्र के विस्मरण और संरक्षण का कार्य करता था, यही नीति अंग्रेजो की भी थी। सो अकबर की प्रशसा की जाए तो प्रशंसक अनायास अग्रेजो का भी प्रशंसक हो जाएगा, यह मनोरथ अकबर की स्तुति करने मे था। परन्तु—

इन ऐतिहासिको का प्रचण्डतम एव भारतीय संस्कृति के मूल पर ही कुठाराघात करने वाला आक्रमण एक अन्य ही रूप मे सामने आया। इसका स्वरूप यह है कि—रामायण और महाभारत में वर्णित घटनाए कोई ऐतिहासिक घटनाएं नहीं हैं, प्रत्युत वे कवियों की कल्पना-मात्र (उपन्यासवत्) हैं।

यह बात विस्तार मे समझाने की आवश्यकता नहीं कि रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के दो प्रमुख आधार-स्तम्भ है। इनमे वर्णित सुपात्र भारतीयों के लिए उज्ज्वल आदर्श का काम करते है। अब ये रामायण-महाभारत ही कपोल-कल्पित गपोडो से अधिक महत्व न रखते हो तो भारतीय सस्कृति कितने दिन जिएगी? भारत के इतिहास में से तो इनका नाम निकल ही गया है। स्कूलों-कालेजों में पढाए जाने वाले भारतीय इतिहास के ग्रन्थ देखिए। उनमे आदि मानवों का विवरण देकर, रामायण-महाभारत की घटनाओं या राम-युधिष्ठिर आदि का उल्लेख न कर लेखक सीधे बुद्ध और महावीर के समय पर आ जाते है।

इस मन्तव्य का क्या परिणाम भावी प्रजा पर होगा इसका सूर्य प्रकाशवत् स्पष्ट उदाहरण देते हैं। एक राज्य के हिन्दी के एक विद्वान् को हिन्दी की पाठशाला बनाने का कार्य सौंपा गया। पुस्तक में कृष्ण-सुदामा की प्रसिद्ध घटना भी लेखक ने रखी थी। पुस्तक पूर्ण कर सरकारी विभाग को भेजी गई। कुछ दिन पीछे विभाग की ओर से उक्त घटना का निर्देश कर लेखक पर पत्र आया कि—ऐसे गपोड़े क्यो पुस्तक में समाविष्ट कर दिए? किसी सूफी की बात लिखी होती तो वह स्वीकार्य होती।

गनीमत इतनी है कि सरकारें रामनवमी, दशहरा, दिवाली, जन्माष्टमी आदि की छुट्टियों को चालू रखे हुए हैं। (क्रमशः)

क्लिंटन और आलम इस्लाम

यह कहना अधिक गलत न होगा कि आज बिल क्लिंटन की अमरीकन राष्ट्रपति के निर्वाचन मे सफलता पर केवल अमरीकन डेमोक्रेट के और कोई निश्चित रूप में यह नहीं कह सकता कि वह क्या नीति अपनाते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इस चुनाव से पूर्व क्लिंटन को अमेरिका के बहुत कमलोग जानते थे। इसकी सारी प्रसिद्धि अपने राज्य तक ही सीमित थी और उनका सारा समय और ध्यान उस राज्य की उन्नति पर केन्द्रित था, अब अचानक इसे अन्तर्राष्ट्रीय मामलो में ध्यान देना पड़ा है, इसलिए हर कोई यह जानना चाहता है कि इन अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ पर वे अब क्या नीति अपनाते हैं जहां तक मध्य यूरोप का सम्बन्ध है यह कहा जा रहा है कि इसमे अनेक परिवर्तनों की सम्भावना है, इसलिए इस्लामी देश इस बात पर परेशान हो रहे हैं कि कहीं वह इनके विरुद्ध अपनी रविश अख्तियार न कर ले। वैसे भी बिल क्लिंटन फिलस्तीनी मुक्ति मोर्चा के मध्य यूरोप की शान्ति वार्ता में सम्मिलित होने में अधिक उत्सुक नही हैं। फिलस्तीनियो को परेशान करने के लिए इसके और चन्द जुमले भी पेश किए जा रहे हैं।

यह कहा जा रहा है कि इसने चुनाव से पूर्व कहीं ऐसा कह दिया कि यदि वह सफल हो गया तो वह प्रधान जार्ज बुश की अरब निवाज की पालिसी से अमेरिका को दूर ही रखेगा और अरब, इजराईल झगड़े को इजराइल की हस्ती के लिए एक खतरा ही समझेगा यह शब्द ऐसे हैं जिन पर कोई, अरब निश्पक्ष होकर नहीं पढ़ सकता यदि इसका कोई अर्थ है कि अमरीका का नया प्रधान यहूदियों के पक्ष में हैऔर विपक्ष के दृष्टिकोण को अनदेखा करने को तैयार हो जाएगा जब तक वह अपना रवैया बदलने पर विवश न किया जाए।

इसके अतिरिक्त अनेक लोग यह भी सोच रहे हैं कि चुनाव से पहले यह विचार अमरीकी जनता को प्रसन्न करने के लिए थे, परन्तु इन्हें इस बात का भय लग रहा है कि अगर यह कहीं अधिक विरोधी रहे तो फिर अरबों को होशियार होना पड़ेगा। अरबों को एक बहुत बड़ी दुविधा का सामना करने का कारणहै क्लिंटन का अरबी पत्रिकाके सम्वाददाता को यहकहना कि वह आजाद फिलस्तीन के राज्य के विरुद्ध है और इस बात का प्रबन्ध करेगा कि अरबो के जो भी हथियार बिकते हैं इनसे इजराईल को कोई अन्तर न पड़े। बाखबर लोगों का कहना है कि इस समय अरबों और यहूदियों में जो बात चीत चल रही है इसकी सफलता का अधिकांश उत्तरदायित्व बड़ी सीमा तक अमरीका के धन पर निर्भर है। पश्चिमी एशिया और आलम इस्लाम पर मिस्टर क्लिंटन की पालिसी का प्रभाव इस बात से कहीं अधिक होगा क्योंकि इजराईल नवाज होने के कारण वह अरबों के निमित्त कहीं अधिक सख्त रवैया अपनाएगा और एक अरब डिपालोमैंट के अनुसार अरब और इस्लामिक इन्ताह पसन्दों के प्रति इसकारवैया और भी सख्त होगा। इस समय क्लिंटन के अनेक सलाहकार यहूदी है और लोगो का कहना है कि पद सम्भालने के पश्चात यह लोग मतबाजी रविश अपना लेंगे, क्योंकि इस हालत में इन पर जिम्मेदारी होगी जो चुनाव से पूर्व नहीं थी। वैसे भी मध्य यूरोप मे स्थिति बदल चुकी है अब इसराईल में जो सरकार अधिकृत है और अरब सरकारे भी युद्ध की बजाय बात चीत से इजराईल से अपने झगड़े निपटाने के मूड मे हैं। विचारको का कहना है कि इस समय दाव पर कुछ जमाया लगा हुआहै और यदि श्री क्लिंटन को अपने से पहले डेमोक्रेटिक प्रधानकी तरह मध्य यूरोप की समस्या का कोई नया हल ढूंढने में सफलता मिल जाती है तो इसके परिणाम कहीं अधिक खुशगवार होंगे। श्री बुश इस सफलता के लिए समुचित अधिकारी है क्योंकि वह ईरानी प्रधान सद्दाम हुसैन को पसन्द न करते थे अब यह देखने की बात है कि क्लिंटन सद्दाम हुसैन से क्या रवैया अपनाते हैं, सरकारी तौर पर मिस्टर क्लिंटन ने अभी कुछ नहीं कहा। एक प्रमुख अधिकारी ने कहा है कि जहां तक खलीज का सम्बन्ध है प्रधान बुश को याद किया जाएगा। क्योंकि इस इलाके की सुरक्षा के लिए वही सबसे अधिकजोखते हैं। इन तमाम हालात ने मध्य यूरोप नीति को अनिश्चित बना दिया है।

—के० नरेन्द्र, (प्रताप के सौजन्य से १०-११-९२)

अजमेर के एम. डी. विश्वविद्यालय के नाम पट पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ही लिखा जाय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत तथा विश्वविद्यालय के पदेन कुलपति श्री चेन्ना रेड्डी को एक विशेष पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि अजमेर के एम. डी. विश्वविद्यालय के नाम पट पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय लिखा जाय, क्योंकि कालान्तर में अंग्रेजी में लिखे एम. डी. नाम के कारण लोग महर्षि दयानन्द के नाम को भूल जायेंगे। स्वामी जी ने इस सम्बन्ध में राजस्थान के अन्य राजनैतिक नेताओं को भी पत्र लिखे हैं।

श्री प्रसन्न कुमार जी का निधन

नैतिक शिक्षा के प्रबल प्रचारक, विश्व की घटनाओं के शोधकर्ता और आर्य समाज के कार्यकर्ता (सी. पी, डब्ल्यू. डी. के रिटायर्ड इंजीनियर) श्री प्रसन्न कुमार जी का ७६ वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से ६-११-९२को सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में निधन हो गया है। वह अपने पीछे दो पुत्र और दो पुत्रियां (सभी विवाहित) छोड़ गए हैं।

श्री प्रसन्नकुमार जी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओ में जाकर नैतिक शिक्षा तथा चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते थे। रोगों के निदान के लिये वह आयुर्वेदीय औषधि का भी विशेष अनुभव रखते थे। सार्वदेशिक सभा के साथ उनके वर्षों तक घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं। उन्होंने संसार के ऐतिहासिक घटनाक्रमों और फ्रांस तथा अन्य प्रमुख भविष्य वक्ताओं की भविष्यवाणियों का भी संग्रह किया हुआ था जिसके आधार पर उनकी मान्यता थी कि १९वीं सदी के अन्त तक भारत का विश्व की महानतम शक्ति के रूप में उदय होगा और संसारसे इस्लामका अन्त हो जाएगा। उनकी रस्म पगड़ी १५-११-९२को आर्य समाज मन्दिर सरोजनी नगर नई दिल्ली में उनके हजारों प्रशंसकों के बीच सम्पन्न की गई।

सार्वदेशिक सभा उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करती है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान

मारीशस के युवा आर्य विद्वान प्रहलाद रामसरन का भारत आगमन

आर्य सभा मारीशस के पूर्व मन्त्री तथा मारीशस में हिन्दी के नवोदित साहित्यकार श्री प्रहलाद रामसरन इन दिनों भारत यात्रा पर हैं। भारत आगमन पर उन्होंने अजमेर में स्वामी भवानी दयाल जन्म शताब्दी समारोह में भाग लिया। ११ नवम्बर को रवीन्द्र भारतीय विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें शोध व्याख्यान के लिए आमन्त्रित किया गया। श्री प्रहलाद जी को हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद की ओर से आमन्त्रित किया गया है। वह नागपुर, वर्धा, जयपुर आदि नगरो में जायेंगे और वहां विभिन्न संस्थाओं में शोध विषयक सामग्री का अवलोकन करेंगे। दिल्ली में भी भारतीय संस्कृत संस्थान की ओर से उनके व्याख्यान की व्यवस्था की जा रही है। वह ३० अक्तूबर से २० दिसम्बर ९२ तक भारत प्रवास पर रहेंगे।

श्री प्रहलाद रामसरन जी ने सार्वदेशिक सभा में सभा प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सभा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री से भी मारीशस में आर्य समाज की गतिविधियों पर विशेष रूप से चर्चा की।

अपरिवर्तनीय है वेदों की शब्द रचना

—डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर

वेदो का रचना का कालनिर्णय करने का प्रयास करने वाले आधुनिक अभारतीय तथा भारतीय विद्वानों ने अपने भिन्न-भिन्न मतों का प्रतिपादन करते हुए एक ने दूसरे का खण्डन किया है। इस परस्पर विवाद के कारण इस विषय में प्रतिपादित मतों में से कोई भी एक विशिष्ट मत प्रतिष्ठित नही हुआ है। प्रायः भारतीयों को वेदों की प्राचीनता प्रतिपादित करने वाला मत ग्राह्य लगता है और अभारतीय लोगों को उसकी अर्वाचीनता प्रतिपादन करने वाला मत उपादेय लगता है। वेदकाल विषयक आधुनिक विवाद में, वेदों के प्रति नितान्त श्रद्धा अन्तःकरण मे धारण करने वाले परम्परावादी भारतीय विद्वानों के युक्तिवादों को ध्यान मे रखना अत्यन्त आवश्यक है। वैदिक धर्म संकल्पना का परिचय होने के लिए उन प्राचीन युक्तिवादो का ठोक आकलन विशेष महत्व रखता है।

कालनिर्धारण असम्भव

प्राचीन भारतीय विद्वानो के मतानुसार वेदनिर्मिति के काल का निर्णय करना असम्भव माना गया है। संसार के सभी इतिहासज्ञों का इस बात में मतैक्य है कि वेद ही ससार का आज उपलब्ध होने वाला सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ ज्ञानराशि है। परन्तु उसका काल वे निर्धारित नहीं कर सके। ईसा पूर्व १०० से ७५००० वर्षों तक अन्यान्य शताब्दियों में वेदों की निर्मिति मानने में कोई स्वारस्य नही। इनअन्वेषकों का अध्ययन और चिन्तन अभिनन्दनीय है। परन्तु उनके निष्कर्ष स्वीकार योग्य नहीं हैं।

इस विषय में प्राचीन परम्परावादी भारतीयो की जो धारणा है उसका सारांश इस प्रकार कहा जा सकता है—

(१) वेद नित्य हैं और सृष्टि के प्रारम्भ से ही वेदो का आविर्भाव हुआ होगा। जिस परमात्मा ने सृष्टि की निर्मिति की, उसी परमात्मा ने उसके पहले वेद निर्माण किए होंगे। जैसे कुम्हार जब घट की निर्मिति करता है तो उसके पहले अपनी बुद्धि में उसकी निर्मिति कर, तदनुसार मिट्टी को आकार देता है। कोई भी कार्य किसी कर्ता के बिना नहीं हो सकता। यह ब्रह्माण्ड भी एक कार्य ही है, अत तर्कानुसार उसे भी किसी कर्ता का अस्तित्व मानना ही चाहिए। प्रत्येक कर्ता अपना कार्य, अपनी बुद्धि मे अलिखित करने के बाद ही उसे साकार करता है। इस निरपवाद सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्माण्ड रूपी कार्य का आलेख, उसके कर्ता की बुद्धि में प्रथम निर्माण होना चाहिए। इस युक्तिवाद के अनुसार परम्पराओ की यह धारणा है कि सृष्टि के विधाता ने जिस आलेख अथवा जिस विचार की सर्वप्रथम कल्पना अपनी बुद्धि में की, वही "आम्नाय" यानी वेद है। सामान्य तर्क के अनुसार ब्रह्माण्डरूपी कार्य के कर्ता को (कार्य निर्मिति के पहले स्फूर्त होना आवश्यक है।

इस तथ्य को मान्यता देने पर भी यह शंका उपस्थित होनी है कि सृष्टि निर्माता की वह स्फूर्ति वेदस्वरूप ही थी, इस बात को मान्य करने वाला प्रमाण नही है। वेदो को ही पर ब्रह्म परमात्मा का आद्य विचार क्यो माने ?

परमश्रेष्ठ आप्तवाक्य

इस शंका का उत्तर प्रत्यक्ष और अनुमानतः इन प्रमाणों द्वारा देना असम्भव होने के कारण आप्तवाक्यरूपी प्रमाण के द्वारा देना आवश्यक होता है। वैदिको की धारणा के अनुसार वेद ही परमश्रेष्ठ आप्तवाक्य है। इस विषय में वेदों के वचन इस प्रकार है:—

१—यज्ञेन वाच. पदवीयमायन् तामन्वविन्दन् ऋषिषु प्रविष्टाम्।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्तरेभा अभिसन्नवन्ते ॥
ऋ॰ १०,७१/३ ॥

२—बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरयत् नामधेयं दधानाः।
येदषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत् प्रेम्णा तदेषां निहित गुहाविः ॥ १
(ऋ॰ १०/७१/१)

वेद-मन्त्रों के अक्षरों का परम्परागत जो क्रम है, वह सर्वथा अपरिवर्तनीय है। उसके एक भी अक्षर, वर्ण या मात्रा में भी लेशमात्र परिवर्तन करने पर वह मन्त्र 'वैदिक' नहीं रहेगा। 'अग्निमीले पुरोहितम्' इस मन्त्र का 'इले अग्निं पुरोहितम्' इस प्रकार पाठान्तर करने से अर्थहानि भले न हो, परन्तु मन्त्र के वैदिकत्व की हानि अवश्य होती है।

३—तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋच. सामानि जज्ञिरे।
छन्दासि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत ॥
(ऋ॰ १०/९०/९)

४—तस्मादृचोऽपातक्षन् यजुस्तस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखम् ॥
(ऋ॰ १०-७ २०)

इन वेद वचनों में यज्ञ (अर्थात् यजनीय, पूजनीय ईश्वर परमात्मा) से ऋक् यजु.. साम और अथर्व इन चारो वेदो की उत्पत्ति स्पष्ट शब्दों में कही है। अतीन्द्रीय विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप्तवाक्य का ही प्रमाण क्यों मानना चाहिए, यह स्वतन्त्र चर्चा का विषय है। आप्तवाक्य का प्रामाण्य मानने वाले प्राचीन आचार्यो ने इस सम्बन्ध में मार्मिक युक्तिवाद प्रस्तुत किए है। श्रेष्ठ दार्शनिकों द्वारा अंगीकृत "आप्तवाक्य" के आधार पर, वेदो का जनिता परमात्मा ही है, यह मत वैदिकों ने मान्य किया है। उसी मान्यता के साथ आनुषंगिकतया यह भी मानना पड़ता है कि सर्वज्ञ और निर्दोष परमेश्वर हो अगर वेदो का जनक होगा, तो उसके वेद भी सर्वज्ञानमय और निर्दोष ही होने चाहिए। जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने वेदों का सर्वज्ञानमयत्व मानते हुए यह युक्तिवाद प्रस्तुत किया है कि—

'महत ऋग्वेदादेः शास्त्रस्य अनेक विद्या स्थानो पबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थविद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनि कारणं ब्रह्म। न हि ईदृशस्य शास्त्रस्य ऋग्वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञगुणान्वितस्य सर्वज्ञात् अन्यत सम्भवः अस्ति।' (ब्रह्मसूत्र शां.भा. १-१-३)

अर्थात् ऋग्वेदादि महान् शास्त्र अनेक विद्यास्थानो से [४ वेद, ६ शास्त्र, धर्मशास्त्र, पूर्वोत्तर मीमांसा और तर्कशास्त्र इन चौदह विद्याओं को "विद्यास्थान" कहते है[विकसित हुआ है और प्रदीपवत् सारे विषयों को प्रकाशित करता है इस प्रकार के सर्वज्ञान सम्पन्न शास्त्र का [अर्थात् वेदो का] उत्पत्ति स्थान ब्रह्म ही हो सकता है, क्योकि सर्वज्ञ परब्रह्म परमात्मा के अतिरिक्त और किसी से ऋग्वेदादि सर्वज्ञान सम्पन्न शास्त्र की उत्पत्ति नहीं हो सकती। (क्रमशः)

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

डा० दुःखनराम पूर्व प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार

स्वामी भवानीदयाल जी सन्यासी की गणना संसार के उन महापुरुषो में है, जिन्होंने विशाल भारत के निर्माण मे अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया था। स्वदेश मे ही कौन कहे, विदेशो मे भी वैदिक धर्म का प्रचार और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा बुलन्द किया। विदेशो मे, विशेषत: दक्षिण अफ्रीका में, भारतीय संस्कृति और साहित्य का प्रचार जितना आपने किया, उतना शायद ही किसी ने किया हो। स्वामी जी के दुबले-पतले सौम्य, गौरांग छरहरे बदन के रोम रोम मे तेज की आभा छटकती थी। आपकी लेखनी में ओज, वाणी में शक्ति और चेहरे पर प्रसन्नता थी। आपकी विधिवत् कार्य-शैली, लेखन कला और बात करने का ढंग पत्थर जैसे कठोर हृदय को भी मोम बना देता था और चुम्बक की तरह अपनी ओर बरबस खींच लेता था। मृदुल स्वभाव और भावुकतापूर्ण हृदय होने के कारण आप जहां कहीं भी जाते, मित्र पैदा कर लेते थे।

स्वामी भवानीदयाल जी का जन्म यद्यपि दक्षिण अफ्रीका के जोहानीसवर्ग शहर मे १० सितम्बर १८९२ ई० को हुआ था, किन्तु आपके जीवन का अधिकाश भाग मातृ-भूमि भारत की सेवा में व्यतीत हुआ। आपके पूज्य पिता श्री जयरामसिंह और माता श्रीमती मोहिनी देवी प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर सासाराम, जहा मेरा घर है, उससे छः मील उत्तर-पश्चिम के कोने पर देहाती अंचल में बहुआरा नाम के एक छोटे से ग्राम में रहते थे। वहां आपका पैतृक गृह, सम्पत्ति और जमींदारी थी। १२ वर्ष की अवस्था में आप अपने पूज्य पिता और लघु भ्राता के साथ प्रथम बार यहां आये। स्वामी जी की शिक्षा एक उच्च अफसर अथवा वकील बनने के अभिप्राय से जोहानीसवर्ग शहर में पश्चिमी सभ्यता के प्रांगण में प्रारम्भ तो हुई किन्तु भारत में आने पर आपको हिन्दी की शिक्षा इसी गांव मे मिली, जिसने आगे चलकर आपको साहित्यकार पण्डित और विद्वान बना डाला। यहीं की शिक्षा-दीक्षा ने आपके मन में सेवा और त्याग का बीजारोपण किया। वह बीज महात्मा गांधी के संसर्ग से दक्षिण अफ्रीका में अंकुरित हुए और आगे चल कर देश के एक महान नेता के रूप में आप दिखाई दिये।

१८ वर्ष की अवस्था में इसी सासाराम सबडिवीजन के नासरीगंज थाना अन्तर्गत सखरा गांव मे श्री रामनारायण राव की सौभाग्यवती कन्या जगरानी देवी के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ।

आर्य मिशनरी

बाल्यकाल की इस अवस्था मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थप्रकाश और वैदिक साहित्य के पाठ ने स्वामी जी को दृढ़ आर्यसमाजी बना डाला। आपकी यह धारणा थी कि आर्य समाज ही एक ऐसी जीती जागती संस्था है जिससे ससार के अन्धकार का नाश और भारत का भावी सुधार और उन्नति हो सकती है। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त और उपदेशो से आप इतने प्रभावित हुए कि अपने गांव बहुआरा में आर्य समाज की स्थापना की। कुछ ही दिनो के बाद स्वामी जी सासाराम आये। यहां के कट्टरपन्थी रूढ़िवादी पण्डितों से आपका शास्त्रार्थ हुआ जिसमे पण्डितो को परास्त होना पड़ा। आपके विद्वत्तापूर्ण तर्क से जनता बहुत ही प्रभावित हुई और आपने सासाराम शहर मे भी आर्य समाज की स्थापना की। यह सभा मेरी ही बैठक मे हुई थी और यही स्वामी जी से मेरा पहला साक्षात्कार हुआ था। कुछ ही दिनो के बाद स्वामी जी दक्षिण अफ्रीका रवाना हो गये।

स्वामी जी के रोम-रोम में आर्य समाज का सिद्धान्त भरा था। दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीय उन दिनों विदेशियों के रहन-सहन, वेश-भूषा और भाषा के बाहरी आडम्बर से आकर्षित और प्रभावित हो,भारतीय संस्कृति और रस्म-रिवाज को प्राय: भूलते जा रहे थे। उसी समय स्वामी जी ने वहां आर्य समाज की बुनियाद डाली। घोर विरोध और अनेक विघ्न-बाधाओं के बावजूद भी आपने दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न शहरों में आर्य समाजों की संस्थापना की। समाजों को शृंखलाबद्ध करने तथा विस्तार, प्रचार एवं नियन्त्रण की सुविधा के लिये सन १९२५ ई० मे, जब कि भारत के मथुरा शहर में ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा था, आपने दक्षिण अफ्रीका में नेटाल आर्य प्रतिनिधि सभा की संस्थापना की। आप ही इसके प्रधान निर्वाचित हुए। आपके उद्योग से दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों के घर-घर में नमस्ते और हवन का प्रचलन हुआ और वैदिक संस्कारों की अभिरुचि बढ़ी। सन १९३४ ई० में दूसरी बार आप पुन: नेटाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित हुए। आपने इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका में दयानन्द अर्द्ध शताब्दी निर्वाण महोत्सव जिस उत्साह और लगन के साथ मनाया था वह दक्षिण अफ्रीका के लिये अभूतपूर्व था। १८, २० वर्ष की अवस्था में ही आप लेखन कला मे इतने प्रवीण हो गये थे कि आपकी गणना बिहार के सुयोग्य लेखको और पत्रकारों में होने लगी थी और बिहार प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रकाशित साप्ताहिक "आर्यावर्त" पत्र के आप सम्पादक नियुक्त हुए और कुछ दिनों तक आप कुशल सम्पादन भी करते रहे। सन १९१२ ई० के मार्च में आपके दक्षिण अफ्रीका प्रस्थान करने के पश्चात उसका प्रकाशन बन्द हो गया।

कर्मठ राजनैतिक कार्यकर्ता

सन १९२२ ई० के गया कांग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिये स्वामी जी तीसरी बार भारत में पधारे। इस समय देश मे सर्वत्र महात्मा गांधी के विदेशी वस्त्र बहिष्कार और असहयोग आन्दोलन की धूम मची थी। स्वामी जी ने गया से लौटने के पश्चात सासाराम तथा डिहरी-आन-सोन के हजारों नागरिकों के बीच प्रभावशाली व्याख्यान दिये। जनता में काफी उत्साह भर आया। शाहाबाद जिले में राजनैतिक चेतना का श्रीगणेश हुआ। स्वामी जी ने जिले के विभिन्न नगरोंमे भ्रमण कर एक अपूर्व जागृति उत्पन्न कर दी।

सन १९३० ई० मे महात्मा गांधी का नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। उसके कुछ ही दिन पहले स्वामी जी भारत मे पधारे थे। अग्नि परीक्षा के इस अवसर पर शाहाबाद जिले के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने आपको अपना नेता चुना। शाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी का सभापति और इस अहिंसात्मक संग्राम का सेनानी बनाया। कुंवरसिंह की इस वीर भूमि मे स्वामी जी ने जिले के एक छोर से दूसरे छोर तक सर्वत्र तूफानी दौरा करके आग लगा दी। हजारों की संख्या में नये रंगरूट और स्वयंसेवक भर्ती कर संग्राम का बिगुल बजा दिया। इधर २९ मार्च सन १९३० ई० को जबकि स्वामी जी यात्रा से लौट कर आरा मे आर्य कुमार सम्मेलन का सभापतित्व करने आ रहे थे, आप आरा स्टेशन पर ही गिरफ्तार कर लिये गये। आपकी गिरफ्तारी से सारे शाहाबाद जिले में एक तहलका सा मच गया। शाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी का जैसा सफल सभापतित्व आपने किया वैसा आज तक किसी को करते नहीं देखा गया।

प्रवासी भारतीयों के प्राण

स्वामी भवानीदयाल जी संन्यासी प्रवासी भारतीयों के प्राण थे। उठते-बैठते, सोते-जागते हर समय उनकी भलाई और स्तर ऊंचा करने की बात सोचते रहते थे। चाहे राजनैतिक सभा हो या साहित्यिक, सामाजिक हो या सांस्कृतिक, किसी भी प्लेटफार्म से बोलते समय प्रवासी विषय को इस रोचक रूप में रखते कि श्रोताओ का हृदय द्रवित हो उठता। प्रवासी भारतीयों का हित-साधन आपके रोम-रोम में इस प्रकार भरा था कि व्यक्तिगत बातचीत और पत्रो में भी उनका उल्लेख किये बिना नहीं रहते थे। स्वामी जी मेरे परम मित्र थे और वे बराबर अपनी चिट्ठियों में प्रवासी भाइयों का जिक्र और सहायता की चर्चा किया करते थे। स्वामी जी का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि इनके इशारे पर प्रवासियों की उन्नति के लिये रुपयों की वर्षा होने लगती थी।

सन १९३५ ई० में जब स्वामी जी प्रवासी भारतीयो के प्रश्न को लेकर भारत का भ्रमण करते हुए बिहार की राजधानी पटना में पधारे थे तब उन्होने हमारा ही आतिथ्य स्वीकार किया था। जबतक स्वामी जी हमारे अतिथि रहें, बराबर प्रवासी भाइयों की कथा सुनाते रहे जिसे सुनकर कभी कभी तो रोमांच तक हो जाता था।

(शेष पृष्ठ १० पर)

मंजिल पाने के लिए केवल सात कदम

—डा० मिथलेश वर्मा

मजिल तक पहुचना कतई नामुमकिन नही है -हा मुश्किल हो सकता है, ज्यादातर अपनी ही गल्तिया इसको मुश्किल बना देती है। अभी हाल की ही बात है एक मेधावी छात्रा साक्षात्कार कक्ष मे पहुचते ही घबरा गयी फिर तो बोलते समय उसकी जीभ जैसे तालू मे चिपक गई। आवाज की थरथराहट, घबराहट सभी बता रहे थे कि वे अपने पर नियन्त्रण रखने मे असमर्थ थी। जाहिर था कि वो वह स्थान न पा सकी जिसकी वह हकदार थी।

ऐसे उदाहरण आपको रोज ही देखने को मिलते होगे। आत्म विश्वास और सकल्प शक्ति के अभाव इसके मुख्य कारण हैं। आवश्यकता है अपने व्यक्तित्व को पुन गठित करने की।

इस पुनर्गठन का पहला कदम है अपना मूल्याकन स्वय करना। अपनी विशेषताओ को पहचानिये। इसके लिए अपने आस-पास के लोगो पर ही निगाह दोडाये। उनके कौन से व्यवहार अरुचिकर हैं जो आपको बेचैन करते हैं। क्या वे अधिक बोलते हैं ? दात से नाखून काटते रहते हैं ? अगुलिया चटखाते रहते हैं—या बात-बात मे हाथ मलते हैं। क्या बात करते समय मे उनका चेहरा उनकी आखें भावहीन निर्जीव से लगते हैं ? उनके स्थान पर अपने आपको रखकर कल्पना कीजिये। बात करते समय अपनी भाव भगिमा का अन्दाज लगाइये। कही आपकी भाव भगिमा नकारात्मक सन्देश तो नही प्रवाहित कर रही है ? अगर ऐसा है तो प्रयत्न करके इसमे परिवर्तन लाइये। आत्म निरीक्षण से आमतौर पर छिपी रहने वाली कमिया नजर आने लगती हैं। इस सम्बन्ध मे स्वस्थ निन्दा का स्वागत कीजिये।

दूसरा कदम होगा—अपने आपको, अपने तौर तरीको को अपनी बात-चीत को सुरुचिपूर्ण और गहन बनाना। किसी भी विषय पर अधिक ज्ञान अधिक रचनाये आपकी शब्द शक्ति को बढाती हैं। आपकी कल्पना को सत-रगी बनाती है। उत्तेजक प्रश्न उनके समाधान आपमे जीवन शक्ति पैदा करते हैं। धैर्यपूर्वक सुनना भी उतना ही जरूरी है जितना प्रभावपूण बोलना। आत्म विश्वासी हमेशा नजर मिलाकर बात करता है। अपनी गल्तियो पर खुद ही हसना भी जानता है।

तीसरा कदम होगा —अपने आप मे एक सुखद दृढता के स्वत्व सूचक लक्षण विकसित करना। अगर आप स्पष्ट बात कहने से डरते हो तो इसको समझिये और दूर कीजिये। यह गुण आपकी सतुलित आवाज मे आपकी भरी अदाओ व बातचीत मे आपके शारीरिक सन्तुलन मे खुद ही दिखाई देता है। जहा आप न कहना चाहते हैं तो खुल कर कहिये। आलोचना भी कीजिये लेकिन एक सुखद ढग से।

चौथा कदम होगा—अपने मे धैर्य शक्ति का विकास। हडबडाहट मे 'हार' को अपनी तकदीर मत माने बैठिये। मेधावी लोग अपने मन की हार पर केन्द्रित नही कर लेते। अन्तिम पुरस्कार ही उनका ध्येय होता है। जाहिर है इसके लिये प्रयत्न करते रहना होगा और जोखिम भी उठाना होगा। कठिन परिस्थितियो मे सतुलन बनाये रखे। अपन सवेगो और निराशाओ को अपना मास्टर न बनने दीजिये उनको सेवक बनाये रखने की कला सीखिये।

पाचवा कदम आपकी उस आदत की ओर इशारा करता है जिसके तहत आपको मानसिक विश्राम' का अर्थ समझना होगा यह एक प्रकार से 'आवेश की रोक थाम है। जो शारीरिक और मानसिक दोनो प्रकार की दुर्दशा का कारण होता है। अपनी भारतीय पद्धतिया प्राणायाम और शान्ति पाठ इसके लिये अति उत्तम है।

छठा कदम होगा कि आप तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता विकसित करे। आपको कहा तक पहुचना है, क्या पाना है, कैसे पाना है, कौन सा रास्ता अपनाना है—इसमे अधिक समय की दुविधा खतरनाक है। सही और गलत का तर्क करके शीघ्र ही निर्णय लीजिये—वरना आप एक ही जगह खडे मजिल तो मिलनी ही है —यह विश्वास बनाये रखें। इसमे सकल्पशक्ति ही हर मुश्किल से जूझने का हौसला देती है। आपकी सोच ही आपकी उपलब्धि को नीव बनती है और फिर सघर्ष ही तो जीवन है। नकारात्मक सोच आपकी जीवन शक्ति को कमजोर करते हैं।

किसी भी विषय पर अधिक ज्ञान अधिक रचनाये आपकी शब्द शक्ति को बढाती है—आपकी कल्पना को सतरगी बनाती है। उत्तेजक प्रश्न उनके समाधान आप मे जीवन शक्ति पैदा करते है। धैर्यपूर्वक सुनना भी उतना ही जरूरी है जितना प्रभावपूर्ण बोलना। आत्म विश्वासी हमेशा नजर मिलाकर बात करता है। अपनी गल्तियो पर खुद ही हसना भी जानता है।

सातवा कदम—अपने आप मे जागरूकता विकसित करने से सम्बन्धित है। आपको अपनी गतिविधि का अन्दाज रखना होगा। सतर्कता ही सुधार और परिवर्तन को जन्म देती है। इसके लिये परिश्रम और मनोयोग का समन्वय करना होगा। जिनके स्वभाव मे यह शामिल होगे वे कभी भी उथले प्रयत्न नहीं करेंगे।

आप नही जानते हैं कि आप चमत्कार कर सकते हैं अगर आप मेहनत और मनोयोग से आगे बढें। लगन और ललक सफलता की कुजी है। बस अहकार से बचे रहें। आत्म-शक्ति को बनाये रखें। भविष्य के प्रति अटूट आशा का रास्ता उज्ज्वल भविष्य की ओर ही जाता है।

विकास और परिवर्तन

भूदेव साहित्याचार्य

इस्लाम भारतीय मूल मान्यताओ को शासन की छाया में बलात् और सार्वजनिक रूप से तलवार के माध्यम से उखाड़ना चाहता था, तो ईसाई वर्ग उसका भी एक प्रकार से बाप था। बाप क्यों? क्योंकि उसने सभ्य, शिष्ट, सदाचारी एवं सहनशील होने का लबादा भी ओढ रखा था और वह शासन का दुरुपयोग भी चोरी-छिपे इस्लाम की तरह बड़ी क्रूरता पूर्वक करता था। न केवल इतना हो मूल भारतीय मान्यताओं के उच्छेद के लिये उसने शासन तन्त्र के माध्यम से अनेकों दुष्प्रचारों का विधिवत् स्कूलों, कालिजो आदि के माध्यम से पठन-पाठन पूर्वक प्रचार-प्रसार किया। उदाहरण के रूप मे आप अंग्रेजी की इन मान्यताओं को देख सकते है—१. वेद गडरियों के गीत हैं। २. सांस्कृतिक कार्यक्रम नाम देहाती वर्ग के उस असभ्य वर्ग के नाच-गानो के अश्लील स्वरूप का है जो प्रायः न देहात ही हमारा स्वीकार करता और न शहर ही। ३. संस्कृत मृत भाषा है। ४. भारतीयो को सभ्यता अंग्रेजो ने सिखाई। ५. भारतीय इतिहास, भूगोल खगोल आदि कुछ भी नहीं जानते थे इत्यादि।

हम यहां एक ऐसी भारतीय मान्यता के सम्बन्ध मे चर्चा करना चाहते हैं, जिसे अंग्रेजों ने नकारा करने के लिये, विशेषकर ईसाई पादरियो ने भारत मे एड़ी से चोटी का जोर लगा दिया। यह मान्यता है—ब्रह्मचर्य। हम भारतीयों का यह अटल विश्वास था, कि ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने से शारीरिक शक्ति से लेकर मानसिक और आत्मिक शक्ति तक व्यक्ति में बढ़ती है। जिससे शरीर, मन, आत्मा और बुद्धि इत्यादि सहित मनुष्य का सर्वांगीण विकास होना है। अपनी आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति के आधार पर हम मानते रहे है, कि वीर्य की एक बूंद का भी कण बरबाद होना मृत्यु के समान है और वीर्य की एक-एक बूंद शरीर में, प्रकृति जिस प्रकार उसे बनाती है और शरीर में उसका विकास और परिवर्तन करती है, उससे जीवन मिलता है। 'मरणं बिन्दु पातनात् जीवनं बिन्दु रक्षणात्।' शरीर के अन्दर सुरक्षित वीर्य शरीर में शक्ति, चेहरे पर चमक, विचारो में गम्भीरता, निर्णय में स्थिरता, अदम्य उत्साह गति मे मन्थरता, चेतना में स्फूर्ति, मन मे सहनशीलता इत्यादि अनेकों सद्गुणो को पैदा करता है।

हम मानते रहे है कि व्यक्ति को भूलकर भी वीर्य का दुरुपयोग नही करना चाहिये। क्योकि जो व्यक्ति काम-वासना मे ग्रसित होकर यह सोचकर कि अब कर लू इसके बाद नही करूगा वीर्य का किसी भी माध्यम से क्षय करना है तो फिर आगे भी वह चाहे जितना प्रतिज्ञा करे, उस दुरुपयोग से बच नही पाता। क्योंकि काम की वासना की अग्नि काम की वासना की पूर्ति करने से और भी अधिक भडकती है। काम की ज्वाला में काम की पूर्ति घी का काम करती है, जिस प्रकार घी डालने से अग्नि भडकती है उसी प्रकार काम भी भडकता है और तब तक भडकता ही रहता है जब तक व्यक्ति को फूक-फांककर राख नही बना देता। इसलिये हमारी मान्यता थी—

न जातु कामः कामनांमुपभोगे शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय पुनरेवाभिवर्धते॥

कभी काम को काम पूर्ति करके शान्त न करें, अपितु उसे मानसिक दृढता से जहा का तहा रोक दे। इसका इससे बढ़िया और कोई उपाय नही है। मन यदि गलत के लिये प्रेरित करे तो मन को भी विशेष शक्ति के साथ रोकना चाहिये।

भारत मे अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन के अनेको उदाहरण मौजूद रहे। वीर बजरंगी हनुमान, पितामह भीष्म, महर्षि दयानन्द आदि।

अविवाहित ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त भारतीय मान्यताओं मे उन गृहस्थियों को भी द्वितीय श्रेणी का ब्रह्मचारी माना गया है, जो ऋतुकाल व्यवहार के ज्ञान के साथ अपनी पत्नी से उपयुक्त काम-व्यवहार के अतिरिक्त हर प्रकार की काम चेष्टा के व्यवहार से मनसा वाचा कर्मणा दूसरों की तरह चिपके नहीं बल्कि दूर रहते है।

भारतीय मान्यता है, सभी सभ्य मनुष्यों को काम का उपयोग केवल सन्तानोत्पत्ति के लिये करना चाहिये। मनोविनोद के लिये काम का प्रयोग चाहे किसी अन्य के साथ हो अथवा स्वयं स्वसम्बद्ध के साथ, वह सब नीच कर्म है, इसलिये घोर पाप है। जो सन्तानें कामातुरता से पैदा की जाती हैं उनमें कामातुरता अनुवंश क्रम से पैदा हो जाती है और जिस प्रकार बीज से पेड़ का आकार-प्रकार बहुत बड़ा होना है। उसी प्रकार कामातुरता का पेड़ अनुवंश क्रम से बहुत विशाल होता है। जिसका परिणाम बहुत ही भयंकर होता है। कामातुरता अनुवंश क्रम में भविष्य में बीज को कमजोर करते-करते एक समय वह ला देती है, जिसमे बीज में से समस्त शक्तियों का नाश हो जाता है। उसकी अन्ततः उत्पादन क्षमता भी नष्ट हो जाती है।

किन्तु भारतीय मान्यताओ के उच्छेद का एक प्रकार से संकल्प लिये हुए लोगो ने, लोगों को स्वेच्छाचार की खुली छूट के लड्डू लुटाये। जब यह प्राप्त हो गया, तो फिर भय दिया कि जनता बढ़ रही है और लोग इसी प्रकार से बढते रहे तो कल को बडी समस्या खडी हो जायेगी। समस्या क्या? समस्या यह कि मकान रहने को नही मिलेंगे। अन्न भोजन को न मिल पायेगा और इसी प्रकार स्वांस लेने को वायु भी न मिल पायेगी। वस्तुतः भय यह सच्चा है, किन्तु इस भय को उन्होंने अपने हथियार के रूप में प्रयोग किया है। उनसे जब आप पूछे कि मनुष्यो से इतना घबरा रहे हो क्या बता सकते हैं, कि मनुष्यों को आप गिन रहे हैं क्या कभी आपको मक्खी, मच्छर, कीड़े इत्यादि यहा तक कि हाथी घोडे आदि की भी समस्या ने सताया है। क्या कभी आप इनकी संख्या से भी भयभीत हुए है। तो वे महानुभाव या इस प्रकार के प्रश्न का अक्फ-भक्फ कुछ उत्तर देंगे अथवा मौन हो जाते हैं।

लेकिन जब मनुष्य की सवृद्धि की बात आती है तो वे कितनी ही दलीलें दे डालते है। फिर अपने उपाय सुझाते है कि स्त्री सम्बन्ध तो चाहे जितना कर लीजिये, परन्तु वह सम्बन्ध करते समय हमारे कृत्रिम साधन उपयोग कर लीजिये। दुर्भाग्य से यह फार्मूले हमारे चमड़ी देकर भी दमडी चाहने वाले चिकित्सा व्यवसायियो को मिल गये है। अत वे सब भी नित्य-निरन्तर अनेकों प्रकार की चीजें खोजकर विज्ञापन द्वारा पहले जनता मे उनकी आवश्यकता पैदा करते हैं। फिर अपने उत्पादन से देश की गरीब जनता को लूटते है। इससे भी बड़ा दुर्भाग्य हमारी सरकार है। सरकार को पब्लिक बढने का भय है। इसलिये वह मानव हत्यारों का उत्साह बढ़ाती है उन्हे नौकरी देती है। पुरस्कार देती है। सरकार के पास किसी ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने और विवाह न करने वाले के लिये किसी पुरस्कार का प्रावधान नहीं हैं। पर हां, नसबन्दी करवा लेने पर इनाम की व्यवस्था अवश्य है।

स्वास्थ्य चर्चा

जब शरीर में खून की कमी हो जाती है

अनीमिया, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का ही दूसरा नाम है। हमारे रक्त में लाखों की तादाद में लाल रक्त कणिकाएं रहती हैं। उनमें ही हीमोग्लोबीन वास करता है। वही फेफड़ों से जीवनरूपी आक्सीजन लेकर शरीर के हर हिस्से में उसे बांटता है। इससे ही हमारा शरीर जीवन शक्ति पाता है।

अनीमिया में लाल रक्त कणिकाओं में इसी हीमोग्लोबिन की कमी हो जाती है। इससे जिस्म कमजोर हो जाता है और थकान रहने लगती है।

हमारे खून में हीमोग्लोबिन की मात्रा स्त्री, पुरुष और बच्चों में अलग-अलग होती है। वयस्क स्त्रियों में १०० मिली लिटर खून में १२-१४ ग्राम हीमोग्लोबिन होना अपेक्षित है। यदि यह घटकर १० ग्राम से कम हो जाये, तो उसे अनीमिया के दर्जे में शामिल किया जाता है। कुछ महिलाओं में घटते-घटते यह मात्रा दो-तीन ग्राम तक उतर आती है। इससे जीवन खतरे में पड़ जाता है। आज बहुत सी गर्भवती महिलाएं इसी वजह से दम तोड़ देती हैं।

क्यों होता है यह रोग

अनीमिया कई कारणों से होता है। पर मोटे तौर पर इन कारणो को दो वर्गों मे बांटा जा सकता है। पहला वर्ग वह है जिसमें लाल रक्त कणिकाओं का रक्तस्राव बेकार जाना या असाधारण नाश शामिल है।

जिस्म के किसी भी हिस्से से यदि बार-बार रक्तस्राव होता रहे तो अनीमिया हो सकता है। बवासीर, खूनी पेचिश, पेट या आंतों के अल्सर, नकसीर, फेफड़े की टी.बी. और कैंसर जैसे रोगो में इसी वजह से अनीमिया पैदा हो सकता है। आंतो में दूषित जल या खान-पान से कीड़ों का बस जाना और महिलाओं मे मासिक धर्म, प्रसूति और गर्भपात भी इसका कारण बन सकते हैं।

कुछ रोगों में लाल रक्त कणिकाओं का असाधारण नाश भी अनीमिया पैदा कर देता है। रक्त कणिकाओं की पैदायशी विकृतियां जैसे सिकल सेल अनीमिया, थेलेसीमिया, स्फीरोसायटोसिस आदि और जीर्ण संक्रमण जैसे मलेरिया और कालाजार इसके कुछ प्रमुख रूप हैं।

दूसरा वर्ग उन कारणों का है, जिसकी वजह से शरीर में लाल रक्त कणिकाओं या हीमोग्लोबीन बनने की क्रिया ठण्डी पड़ जाती है। लाल रक्त कणिकाएं हड्डियों की मज्जा में बनती है। उनके निर्माण के लिए बहुत से तत्वो की जरूरत पड़ती है। इनमें लौह तत्व (आयरन), फोलिक एसिड और विटामिन बी-१२ खास उल्लेखनीय है। खान-पान मे इनकी कमी अनीमिया को बुलावा देती हैं। देश में अनीमिया के ज्यादातर मामले इसी से जुड़े हैं।

लक्षण

अनीमिया के कुछ खास लक्षण इस प्रकार है जिनसे इसकी पहचान की जा सकती है—अत्यधिक कमजोरी, थकावट, काम में मन न लगना, हृदय-धड़कन तेज चलना, जरा सा काम करने पर सांस का फूलना, शरीर में सुइयां सी चुभना, ठीक तरह से नींद न आना और सिर दर्द रहना अनीमिया के प्रमुख लक्षण हैं। इनके साथ-साथ आंख की पुतलियों के अन्दर का भाग, नाखून और मसूड़ों का रंग अपनी लालिमा खोकर सफेद या पीला पड़ जाता है। जीभ चमकदार और सपाट हो सकती है। यदि अनीमिया बहुत बढ जाये तो दिल पर बहुत ज्यादा जोर पड़ने लगता है और वह फैल कर बढ़ जाता है। इस हालत मे जिस्म पर सूजन चढ़ जाती है।

चिकित्सा

यदि खून की कमी शरीर मे लौहतत्व और फोलिक एसिड की कमी से हो, तो फेरस सल्फेट और बी० काम्प्लेक्स की गोलियां नियमित तौर पर लेनी होती है। इसके साथ आंतों में कीड़ों के इंफेक्शन को खत्म करने के लिए भी दवा दी जाती है।

दवाओं के साथ खान-पान पर भी ध्यान देने की जरूरत होती है। यदि अनीमिया ज्यादा गम्भीर हो, तो आयरन के इञ्जेक्शन भी लगाने पड सकते हैं। हालत बहुत गम्भीर होने पर खून भी चढ़ाना जरूरी हो सकता है।

अनीमिया में खान-पान कैसा हो

लौह तत्व की पूर्ति के लिए फलियां, पालक, मेंथी, चौलाई, अमरंथ और मटर जैसे गहरे रंग की सब्जियां और बाजरा, रागी और गुड़ फायदेमंद चीज हैं। पत्तेदार सब्जियो में फौलिक एसिड काफी मात्रा में होता है।

अन्य सावधानियां

दरअसल, आंतो में कीड़ों का घर कर जाना देश में अनीमिया का एक बड़ा कारण है। इससे बचने के लिए जरूरी है कि सब्जियों को धोकर खाया जाये। पीने के लिए साफ पानी का ही उपयोग किया जाए। गांवों और कस्बाई इलाकों मे जहां लोग निवृत्त [शौच] होने के लिए खेतो में जाते हैं, यह सावधानी बरती जाये कि वे नंगे पैर न हों।

—डा० अमरनाथ दत्त गिरि

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

स्थान—श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतम नगर नई दिल्ली-४९

आप सब को यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आपकी प्रिय सस्था वेद विद्यालय का वार्षिक चतुर्वेद पारायण यज्ञ पूर्व वर्षों की भाति इस वर्ष भी विभिन्न सम्मेलनो के साथ २९ नवम्बर रविवार से १३ दिसम्बर रविवार तक सम्पन्न हो रहा है। इस शुभ अवसर पर सपत्निक यजमान बनकर १, २ ३ या ४ वेदो के यज्ञ मे अथवा कम से कम किसी एक समय प्रात या सायकालीन हवन मे यज्ञीय वेशभूषा धारण कर यजमान बन सकते हैं। जिसकी सूचना दूरभाष न० ६५७२३४ अथवा विद्यालय के पते पर भी दे सकते हैं।

यज्ञ समय—प्रात —६ बजे से ९ ३० बजे तक
साय—३ बजे से ६ ३० बजे तक
यज्ञ प्रवचन एव भजनोपदेश सहित।

निवेदक
हरिदेव आचार्य

प्रधान
चौ० दिलीपसिंह

आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का शिविर २२ अक्तूबर से ३१ अक्तूबर तक कोडासिया जिला रायगढ मध्यप्रदेश मुडागाव आर्य कुमार सभा के तत्वावधान मे आयोजित किया गया। यह क्षेत्र आदिवासी क्षेत्र है। ईसाई बाहुल्य है। इस शिविर मे स्थानीय १३० नौजवानो ने भाग लिया जिनमे से ८० युवक ईसाई परिवार से थे।

यह शिविर सार्वदेशिक आर्यवीरदल के कार्यालय सचिव श्री हरिसिंह आर्य एव वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री सुरेन्द्र आजाद जी के नेतृत्व मे सफल हुआ। इन सभी आर्य वीरो ने वैदिकधर्म की दीक्षा दीक्षान्त समारोह मे ३० अक्तूबर को श्रीयुत हरीसिंह आर्य कार्यालय मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल से प्राप्त की और सभी ने प्रतिज्ञा की हम जीवन भर अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं करेंगे। और आर्य वीर दल एव वैदिक धर्म का कार्य करते रहेंगे।

—ब्र० कपिलदेव आर्य प्रधान
आर्य कुमार सभा मुडा गाव रायगढ (उ० प्र०)

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

(पृष्ठ ६ का शेष)

स्वामी जी के अन्तिम दर्शन

स्वामीजी जब कभी पटना आते तो मेरे यहा ही ठहरते थे। उनसे और उनके परिवार से मेरा पुराना सम्बन्ध मित्रता और घनिष्टता थी। सन् १९४८ ई० के अप्रैल मे स्वामी जी अपने सहयोगी प० कन्हैयालाल जी सहित यहा अन्तिम बार पधारे थे। इन दिनो स्वामी जी बहुत ही रुग्ण थे शरीर मे केवल हड्डी-हड्डी नजर आती थी। मैंने स्वय उनके स्वास्थ्य की परीक्षा की। डा० बी०एन० प्रसाद तथा अन्य डाक्टरो से भी जाच करा उनकी चिकित्सा दवा आदि और उपचार का समुचित प्रबन्ध किया था। मैंने उन्हे विश्राम की सलाह दी थी किन्तु उन्हे विश्राम कहा ? वे जब कभी थोडा भी अच्छा होते, प्रवासी और प्रवासियो के हित चिन्तन मे निमग्न हो जाया करते थे। स्वामी जी पूरा स्वस्थ भी नही हो पाये थे कि प्रवासियो की चिन्ता उन्हे अजमेर उठा ले गयी और वहा वे प्रवासी कार्य मे व्यस्त रहने लगे।

अन्त मे ९ मई सन् १९५० ई० को विकराल काल ने स्वामी भवानीदयाल जी को हम लोगो के बीच से छीन ही लिया। उनकी क्षति से दक्षिण अफ्रिका और भारतवर्ष ने एक महान देशभक्त और नेता को खो दिया। यद्यपि स्वामी जी का पार्थिव शरीर आज इस असार ससार मे नही है, किन्तु उनकी अमर कीर्ति सदा चिरस्थायी रहेगी और उनके हम प्रेमी तथा मित्र उनको सदा ही याद करते रहेंगे।

पुष्कर में ऋषि दयानन्द के नामपट्ट को खंडित करने पर रोष

परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे आयोजित दिनाक २ नवम्बर १९९२ को आर्य समाजो तथा शिक्षण सस्थाओ की इस सभा को यह जानकर अत्यन्त क्षोभ हुआ कि हिन्दुओ के तीर्थ पुष्कर ब्रह्मा जी के मन्दिर मे ऋषि दयानन्द के निवास की स्मृति मे उसके सामने स्थापित महर्षि दयानन्द मार्ग का शिलालेख ध्वस्त करके वैदिक धर्म के इस युग के महान धर्मोद्धारक ऋषि दयानन्द की स्मृति को अपमानित करने का प्रयत्न किया गया।

यह आश्चर्य की बात है कि इसी प्रकार की पूर्व घटना के आधार पर अजमेर सभाग के सासद प्रो० रासासिंह द्वारा स्थानीय प्रशासन को इस प्रकार की घटना के आधार पर सूचना दिये जाने के उपरान्त भी इसकी पुनरावृत्ति न किये जाने का प्रशासन ने प्रयत्न नही किया।

ऋषि दयानन्द के नाम का शिलालेख ध्वस्त करके उनके करोडो अनुयाइयो और प्रशसको की धार्मिक भावना को इस प्रकार आघात पहुचाने वाले अपराधियो का शीघ्र पता लगाकर उनके विरुद्ध कडी कार्यवाही की जाय। ऐसी इस सभा की सर्वसम्मत माग है।

— कै० देवरत्न आर्य, सदस्य-परोपकारिणी सभा
आचार्य गोविंदसिंह, सयुक्तमन्त्री आर्यसमाज अजमेर

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज होडल का २३ वा वार्षिकोत्सव १३ से १५ नवम्बर ९२ तक आर्य समाज होडल के प्रागण मे अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सम्मेलन मे उच्चकोटि के धार्मिक व राजनैतिक नेताओ तथा विद्वानो ने भाग लिया। इस अवसर पर अन्तिम दिवस चौ० उदयभान जी (चेयरमैन कृभको) ने आर्य उच्च विद्यालय होडल के १०० फुट लम्बे बरामदे का शिलान्यास किया। समारोह के अन्तर्गत एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया था जिसमे आर्य युवको द्वारा विभिन्न प्रकार के व्यायामो का प्रदर्शन किया गया। समारोह मे सार्व० सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री भी पधारे थे।

—आर्य समाज खेजुरी, बलिया का तेरहवा वार्षिकोत्सव २९ से ३० अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आय जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने अपने प्रवचनो से समारोह को सफल बनाया। इस अवसर पर एक शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमे आर्य वीरो ने अत्यन्त सुन्दर शारीरिक प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

—आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव ३० अक्तूबर से १ नवम्बर तक बडी श्रद्धा तथा उत्साह के साथ मनाया गया। इस समारोह का विशेष आकर्षण वृहद यज्ञ था जिसमे अत्यन्त श्रद्धापूर्वक लोगो ने आहुतिया दी। इस अवसर पर आचार्य विद्याभानु जम्मू वालो तथा श्री जगतराम वर्मा ने अपने प्रवचनो तथा भजनो से लोगो को मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर तीन सिलाई मशीनो का वितरण आर्य समाज की ओर से किया गया।

ईसाई युवती वैदिक धर्म मे

आदर्श विवाह एव शुद्धि मन्दिर भागीरथपुरा इन्दौर (म० प्र०) मे—

कुमारी अनीता फान्सिस ईसाई युवती का शुद्धिकरण कराकर उसका हिन्दू नाम अनीता रखा गया तत्पश्चात उसका विवाह सस्कार वैदिक पद्धति मे हरीसिंह कश्यप के साथ सम्पन्न करवाया गया।

कुमारी मोनिका बेंजामिन ईसाई युवती का शुद्धि सस्कार करवाकर हिन्दू नाम प्रभावती रखा गया फिर उसका विवाह सस्कार सुनील कुमार प्रजापति धार के साथ सम्पन्न करवाया गया। शुद्धि सस्कार एव विवाह सस्कार आर्य पुरोहित प० देवप्रकाश शर्मा द्वारा सम्पन्न करवाया गया उसकी सारी व्यवस्था शकरसिंह आर्य द्वारा करवाई गई उपस्थित देवी और सज्जनो ने इन दोनो को आर्शीवाद दिया।

डा० रविकान्त जी दुर्घटना ग्रस्त

आर्य समाजी परिवार के युवा एव होनहार युवक डा० रविकान्त जी का दिनाक १३-११-९२ को अपनी क्लीनिक से घर लौटते समय एक ट्रक से एक्सीडेन्ट हो गया है। डा० रविकान्त दो पहिया स्कूटर पर सवार थे। उन्हें गम्भीर रूप से घायल अवस्था मे गुरु तेगबहादुर अस्पताल मे भर्ती किया गया था। उन्हे सिर पर तथा कधे और बाहो मे चोटे आई है। इस समय वह श्यामलाल नर्सिग होम दरियागज मे उपचार पर हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की विगत २-३ वर्षों से वह नि शुल्क चिकित्सा कर रहे है। गरीब परिवार के रोगियो को वह नि शुल्क चिकित्सा परामर्श देते है।

डाक्टर साहब दिल्ली आ०प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी के ज्येष्ठ सुपुत्र है। पिछले महीने ही उनकी शादी हुई है। सार्वदेशिक परिवार उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करता है। —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

गुमशुदा की तलाश



देवदत्त वैदिक पुत्र स्व० श्री रामप्रसाद जी वैदिक निवासी ८४० महावीर नगर कोटा ५ (राज०), आयु १५ १ २ वर्ष लम्बाई ५ फुट ४ इच, रग गोरा, बाल काले तथा चेहरा गोल है। सामने ललाट पर पुरानी चोट का आडा निशान है इकहरा बदन है, दिनाक ४ ९-९२ से कोटा (राज०) से लापता है अथवा किसी ने गायब कर दिया है। वह आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी कोटा का सक्रिय आर्य वीर है, तथा वैदिक सस्कारो से ओतप्रोत है। सभी आर्य बन्धुओ से निवदन है कि यदि किसी को वह मिले तो अविलम्ब उक्त पते पर सूचित करने की कृपा करें। धन्यवाद।

सम्पर्क हेतु पता —
ओमदत्त वैदिक ८४० महावीर नगर प्रथम कोटा, राजस्थान
फोन २२४४८

सार्वदेशिक साप्ताहिक (२२-११-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U 93Post in N.D P.S.O.on 19 20 11 992

वेद कक्षा आरम्भ

दिल्ली की प्रमुख वैदिक संस्था वेद संस्थान में सोम से शुक्रवार तक सप्ताह में पांच दिन वेद ३० नवम्बर, १९९२ से पढाया जाएगा। संस्कृत का ज्ञान वेद पढाने के साथ साथ कराया जाया करेगा। जो लोग नित्य नहीं आ सकते उन्हें शनिवार को पांच कालांश तक वेद पढाया जाएगा।

जो लोग वेद पढना चाहें वे २८ नवम्बर ९२ को सांय ३.३० बजे से वेद संस्थान सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली) में अपना पंजीकरण करा ले उसी दिन सांय ४ बजे पंजीकृत अध्येताओं की बैठक होगी जिसमें कक्षा का समय तय किया जाएगा।

आर्य समाज शामली में चिकित्सालय तथा पुस्तकालय का शुभारम्भ

आर्य समाज, शामली द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय तथा पुस्तकालय एवं वाचनालय का शुभारम्भ माननीय श्री अमृतपाल कालिया क्षेत्राधिकारी शामली के कर कमलों द्वारा वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के मध्य हुआ। प्रातः ७.३० बजे वैदिक मन्त्रों के विख्यात पंडित स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती वेदभिक्षु ने अपनी ओजस्वी वाणी से यज्ञ सम्पन्न कराया।

उक्त कार्यक्रम का सफल संचालन श्री सत्यप्रकाश जी एडवोकेट ने किया माननीय क्षेत्राधिकारी ने आर्य समाज, शामली को शुभकामनाएं प्रदान की।

—सलेकचन्द आर्य, उपमन्त्री

भजनोपदेशक विद्यालय की स्थापना

आर्य समाज में भजनोपदेशकों की कमी को देखते हुए स्वामी रतनदेव जी सरस्वती के नेतृत्व में एक भजनोपदेशक विद्यालय की स्थापना की गई है स्वामी भीष्म वैदिक भजनोपदेशक विद्यालय का उद्घाटन यहां के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री दीपचन्द जी गोयल द्वारा २६ अक्तूबर को आर्य समाज मन्दिर रामनगर में किया गया जो कि रोहतक रोड पर स्थित है। भजनोपदेशक विद्यालय में प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित चन्द्रभान जी आर्य (जीन्द) हारमोनियम की शिक्षा देंगे साथ ही वैदिक ज्ञान की शिक्षा भी देंगे। यहां आर्य समाज मन्दिर का अपना एक विशाल उद्यान एवं भवन है मन्दिर का प्रांगण वास्तव में मनमोहक है। बाहर से शिक्षा ग्रहण करने के लिए आने वाले सज्जन को आवास एवं भोजन की व्यवस्था विद्यालय की ओर से निःशुल्क होगी विद्यालय में प्रवेश एक नवम्बर ९२ से आरम्भ हो चुका है।

—सुभाष चन्द आर्य, व्यायाम शिक्षक (जीन्द) हरि

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज तथा कविनगर गाजियाबाद—श्री सुन्दरलाल चावला प्रधान, श्री दीवानचन्द्र अरोडा मन्त्री श्री चन्द्रभूषण बंसल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्योप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद—श्री धर्मवीर आर्य प्रधान श्री विद्यासागर आर्य मन्त्री श्री रवीन्द्र कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज महरौली श्री अमरदास प्रधान श्री मोहनलाल सभ्रवाल मन्त्री, श्री मदनलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना—श्री रणवीर जी भाटिया प्रधान, श्री महेन्द्र प्रताप आर्य महामन्त्री, श्री श्रवण कुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

वैदिक यज्ञ एवं धार्मिक सम्मेलन

महद्दीपुर दुर्गा स्थान ग्राम पंचायत भवन जि० खगड़िया में ५ से ६ दिसम्बर ९२ तक वैदिक यज्ञ तथा धार्मिक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा महोपदेशक पधार रहे हैं।

यजुर्वेद पारायण यज्ञोत्सव

आर्य समाज शान्ति नगर चार मरला) सोनीपत हरियाणा में २३ से २९ नवम्बर तथा यजुर्वेद पारायण महायज्ञ श्री सामदेव जी दिल्ली के ब्रह्मत्व में समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा वक्ता गण पधार रहे हैं। समारोह में दानवीर भगत गोपालदास जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है।

(12437—श्री उपकुलपति महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कांगड़ी, हरिद्वार (उ० प्र०))

गुरुकुल होशंगाबाद में योग एवं ध्यान शिविर

गुरुकुल होशंगाबाद (म प्र) में २८ नवम्बर से ४ दिसम्बर ९२ तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। आर्य जगत के जाने-माने योग विद्वान स्वामी सत्यपति परिव्राजक जी योग प्रशिक्षण देंगे। शिविरार्थी २७ नवम्बर की शाम तक गुरुकुल पहुंच जावें। भोजन व्यवस्था हेतु शिविर शुल्क २००) रु प्रतिव्यक्ति है जो लौटाया नहीं जाएगा। कृपया शीघ्र सम्पर्क करके आने की सूचना देवें।

योग शिविर की समाप्ति के पश्चात ५ व ६ दिसम्बर ९२ को गुरुकुल का भव्य 'वार्षिकोत्सव भी होगा। शिविर व उत्सव में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—आचार्य जगदेव नैष्ठिक

तृतीय स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज मुम्बई की मुलुण्ड शाखा का तृतीय स्थापना दिवस समारोह १० नवम्बर को आर्य समाज मन्दिर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर पं० रामदत्त जी शर्मा के पौरोहित्य में बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। समारोह में पं० देवदत्त जी शर्मा, डा० सोमदेव जी शास्त्री, पं० रामस्वरूप जी तथा पं० महेन्द्र जी शास्त्री ने अपने प्रवचनों तथा भजनोपदेशों से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

शोक समाचार

आर्य समाज नरवाना के पूर्व प्रधान श्री धर्मपाल जी आर्य के कनिष्ठ भ्राता श्री कर्मपाल आर्य का अकस्मात दो गाडियों की भिडन्त में मौके पर ही निधन हो गया है। ४० वर्षीय युवक श्री कर्मपाल निःशुल्क और प्रभावशाली भजनों के माध्यम से आर्य समाज का प्रचार करते थे और एक कर्मठ और साहसी कार्यकर्ता थे। आपके निधन से आर्य समाज को जो क्षति हुयी है उसकी पूर्ति असम्भव है। आर्य समाज में आयोजित शोक सभा में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। रामकुमार मन्त्री

आर्य समाज नरवाना जि० जीन्द हरियाणा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिल कर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नही तो कुछ हाथ न लगेगा क्योकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना और जिनसे अब भी पालन होता है और आगे भी होगा उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर कर इसलिए जैसा आर्य समाज आर्य्यावर्त की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नही हो सकता यदि इस आर्यसमाज को यथावत सहायता देव तो बहुत अच्छी बात है क्योकि समाज का सौभाग्य बढाना समुदाय का काम है एक का नही।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक ४४] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ मार्गशीर्ष शु० ५ सं० २०४९ २९ नवम्बर १९९२

पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात नाजुक

अमेरिका के नए राष्ट्रपति के चुनाव पर भारी हड़कम्प

अमेरिका मे डैमोक्रेटिक पार्टी के श्री क्लिटन के राष्ट्रपति बन जाने पर पाकिस्तानी सत्ता मे हडकम्प मचा हुआ है। वहा के जर्नलिस्ट क्लिटन की चुनावी घोषणाओ का बारीकीसे अध्ययन कर रहेहैं। पाकिस्तान को इस बातका डर है कि वाशिंगटन मे डैमोक्रेटिक प्रशासन बडी बारीकी से इस्लामाबाद के रिकार्ड की जाच करेगा जो कि मानवाधिकारो का उल्लघन मादक द्रव्यो और उग्रवाद सभी मामलो मे निराशाजनक है। श्री क्लिटन ने अपने चुनावी भाषण मे १९८९ मे जयेनआनमन चौक (चीन) मे भोले-भाले विद्यार्थी विरोधकर्त्ताओ के नर-सहार का उल्लेख किया और चीन के साथ जार्जबुश की वचनबद्धता की आलोचना की थी।

इसी प्रकार जर्मनी के पूर्व न्याय मन्त्री और वर्तमान विदेश मन्त्री क्लाज किन्केल के विचारो से पाकिस्तान म नया विवाद खडा हो गया है। श्री किन्केल ने कहा था कि बदलती हुई दुनिया की स्थिति का देखते हुए पाकिस्तान को कश्मीर के मामले म अपने मतभद शिमला समझौते के अनुसार भारत से निपटा लेने चाहिए क्योकि सयुक्त राष्ट्रसघ का काश्मीर प्रस्ताव अब पुराना पड चुका है। उन्होने पाकिस्तान म मानवाधिकारो के हनन पर भी आलोचना की थी। और कहा था कि पाकिस्तान मे आज मानवाधिकार अल्पमत के मुद्दे का साधा सम्बन्ध सरकार द्वारा राष्ट्रीय परिचय-पत्र मे धार्मिक कालम जोडना है।

पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो ने भी पाकिस्तान की धर्म लिंग और जाति के आधार पर भेद भाव करने वाले कानून बनाने की कडी आलोचना की है।

पाकिस्तान के ही अनेक प्रमुख समाचार पत्रो मे फ्रटियर पोस्ट' ने लिखा है—सच्ची निष्ठा से देश सेवा करने वाले गैर मुस्लिम समुदाय को दबाव देकर उन्हे समाज से विमुख लोगो के खेमे मे भज रहे है। गैर मुस्लिमो को अलग करके पाकिस्तान को सगठित नही रखा जा सकेगा। आज आबादी के एक बड हिस्से को राष्ट्रीय मुख्यधारा मे अलग करके पाकिस्तान पाक भूमि बनाने की कोशिश मे लगा हुआ है। पत्र ने परिचय पत्र की नीति की आलोचना करते हुए चेतावनी दी है कि अवसरवादी राजनीतिज्ञो द्वारा जिस ढग से पवित्रता लाई जा रही है उससे पाकिस्तान की नीव कमजोर पड रही है।

सिंध राज्य मे पाकिस्तान द्वारा सैनिक शासन और बढाये जाने मे सिंध के लोगो का विश्वास भी पाकिस्तान से हटता जा रहा है।

पाकिस्तान के प्रमुख समाचार पत्रो ने भी इन परिस्थितियो पर पाकिस्तान की नीतिया पर गहरी निराशा व्यक्त की है। इस प्रकार पाकिस्तान आज समस्याओ के जाल मे उलझ गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६९वां जन्म दिवस

फा०व० दशमी, १६ फरवरी ९३ को मनाया जाये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने विश्व की सभी आर्य समाजो और आर्य प्रतिनिधि सभाओ से अपील की है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६९वा जन्म दिवस पूरे उत्साह और समारोह के साथ फा० वदी दशमी सम्वत २०४९ तदनुसार मगलवार १६ फरवरी १९९३ को मनाया जाये।

सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा के निर्णय के अनुसार महर्षि का जन्म दिन देशी तिथि फा० वदी दशमी को ही मनाने का निर्णय हुआ है न कि अग्रेजी तिथि १२ फरवरी को। —सभा मन्त्री

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को दूसरे दर्जे का शहरी बनाया जा रहा है : ईसाइयों द्वारा जुलूस और जलसे

नई दिल्ली २२ नवम्बर।

इन दिनो जब कि पाकिस्तान म आन्दोलनो का दौर चल रहा है उस देश के सबसे बड अल्पसख्यक ईसाई फिरके न इस हकीकत के खिलाफ अपने आन्दोलन शुरूकर दिये है जो पाकिस्तान के प्रवर्तक मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा की गइ घोषणाओ के खिलाफ गैर

(शेष पृष्ठ २ पर)

क्या आप कभी अपने आप से भी मिले हैं ?

दूसरों से मिलना तो बड़ा आसान है परन्तु अपने आप से मिलना बहुत कठिन है क्योंकि अपने आप तक पहुंचने का कभी विचार बने तो कोशिश की जावे। अब अपने आप से पूछिए कि मैं क्या कर रहा हू। जीवन एक यात्रा हैं, यात्री को यह पता होना चाहिए कि मैंने जाना कहां है ? पहुंचना कहां पर है ? जीवन मे हम बहुत घूमते रहते हैं। शायद तेली के बैल की तरह रहते वहीं के वहीं हैं। प्रश्न तो जीवन यात्रा के लक्ष्य का है। जीवन को वर्षो में न नापा जाकर उपलब्धियो मे नापना होगा। क्या हमने कभी यह भी सोचा है कि करना क्या है ? पहुचना कहा है और लक्ष्य कौन सा है ? एक अध्यापक ने किसी से कहा कि चालीस वर्षो से बच्चो को पढा रहा हू परन्तु जीवन भर सुख शान्ति की एक झलक भी नही देख सका। अत: एक प्रश्न है जो प्रत्येक व्यक्ति को अपने आपसे पूछना चाहिये कि मैं आर्य समाज के सत्संगो में तो बहुत वर्षों से जाता रहा हू यदि आर्य समाज के सिद्धात मेरे अन्दर प्रविष्ट नहीं हुए तो फिर क्या लाभ हुआ ? आर्य समाज में जो उपदेश सुने वह मेरे जीवन के अंग नहीं बने।

तेली के बैल ने सारा दिन बड़ी यात्रा की उसने देखा कि शाम को मैं वहीं खड़ा हूं, न तेली से और न कोहलू से पेंडा ही छूटा, परन्तु बैल की आंखो पर तो पट्टी बंधी थी उसने तो गोल चक्र द्वारा यात्रा की थी इसलिए वह इतनी यात्रा करने पर भी आगे न जा सका, वहीं का वहीं रहा उसे कुछ पता भी नही था कि कहा जा रहा है। सिद्धांत तो यह हैं कि गति करने से प्रत्येक प्राणी आगे बढ़ता है। सिद्धांत असत्य भी नहीं, सीधा चलेंगे तो जरूर आगे बढेंगे और यदि चक्र में चलेंगे तो वहीं के वहीं रहेंगे।

बैल मनुष्य से पूछ सकता है कि मेरी आंखो पर तो पट्टी बंधी थी, ऐ मानव तेरी आखें तो खुली थी, तूने कहां भूल कर ली जो दिन रात बडी तीव्र गति से चल रहा है फिर भी वहीं खड़ा है।

दृष्टान्त—एक मनुष्य डाक घर में पत्र डालने बडी तेजी से दौडता हुआ जा रहा था ताकि डाक निकलने के समय से पहले डाला जा सके। मार्ग में एक आदमी ने कहा कि जरा धीरे चलो, रुक जाओ इतनी क्या जल्दी है, अरे भले आदमी इस पत्र पर तो तूने पता भी नहीं लिखा, यह ठीक स्थान पर कैसे पहुंचेगा। उसने कहा कि समय की तंगी के कारण तो मैं इसमे कुछ लिख भी नही सका केवल खाली कागज ही डाल सका हू। क्या हमारी यही दशा तो नहीं है ? यदि यही दशा है तो ऐसे मनुप्य का क्या नाम रखोगे जो बिना लक्ष्य के, बिना योजना के भागा जा रहा है उसे पता ही नहीं कहा पहुचना है। ऋषियो का कहना है कि पहले जीवन का लक्ष्य निश्चित कर लो कि कहा पहुचना है फिर उसमे पूरी शक्ति लगा दो। राजकुमार नचिकेता ने—"मैं कौन हू ? आत्मा क्या है ?" यह लक्ष्य निश्चित किया था। आचार्य यम ने बडे भारी प्रलोभन देते हुए कहा कि यह प्रश्न बड़ा कठिन है। यह न पूछ इसके बदले स्वयं धन दौलत, राज्य, हाथी-घोडे, भवन भूमि आदि माग ले, परन्तु इस प्रश्न को छोड़ दे। परन्तु नचिकेता के आगे एक लक्ष्य था, एक योजना थी, प्रयोजन था वह इन प्रलोभनो मे फंसा नहीं। हम तो पद अधिकार का प्रलोभ भी छोडना नही चाहते, और आचार्य से प्रार्थना की कि मैंने तो यह जानना अपना लक्ष्य बनाया है मुझे और किसी वस्तु की जरूरत नही है।

अत तीन प्रकार की उन्नति के लिये अपना कोई लक्ष्य बनाना होगा। योजना बनानी होगी, फिर उसकी प्राप्ति के लिए पूरा यत्न करना होगा। ऋषि कृत ग्रन्थो से स्वाध्याय द्वारा विद्वानो के उपदेशो द्वारा आर्य समाज के सत्सगो द्वारा अपने आपको उन्नति की ओर ले जाने के लिए अपने कर्तव्यो का पालन करना होगा। यज्ञ करने वालो को अपना जीवन यज्ञमई बनाना होगा।

तीन कर्तव्य

१. मेरा मेरे अपने प्रति क्या कर्तव्य है ? इसे जानना होगा।
२. मेरा दूसरो के प्रति क्या कर्तव्य है ? इसे जानना होगा।
३. मेरा ईश्वर के सम्बन्ध मे क्या कर्तव्य है ? इसे जानना होगा।

१. मै अपने को जानू कि मैं आत्मा हू। ईश्वर कृपा और गुण कर्मों से मनुष्य का जन्म मिला है। इसी जीवन मे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। इस शरीर को अन्दर-बाहर से शुद्ध पवित्र-निरोग-संयम-तप द्वारा अन्तिम लक्ष्य तक (मोक्ष) पहुचा जा सकता है। इसे शारीरिक उन्नति भी कहा जा सकता है।

२. दूसरो के प्रति मेरा क्या कर्तव्य है, मैं सब का उपकार करता हुआ सब को सुख-सुविधा-विद्या-ज्ञान आदि से सब का कल्याण चाहूं। इसी का नाम सामाजिक उन्नति भी है।

३. ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना द्वारा ईश्वर के गुणों को धारण करते हुए आत्मिक उन्नति करना।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इन तीन प्रकार की उन्नति को आर्यसमाज के छटे नियम मे लिखा है कि संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात शारीरिक-आत्मक और सामाजिक उन्नति करना।

ईश्वर हमें ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करे। जिससे हम अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सब को सुखी बना सकें। ओम् शम्

—ओम् प्रकाश वानप्रस्थी
आर्य वानप्रस्थ आश्रम, गुरुकुल बठिण्डा (पंजाब)
बठिण्डा (पंजाब) १५१००१

पं० वन्देमातरम् जी का दक्षिण अफ्रीका में जोरदार स्वागत

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र-राव का डरबन हवाई अड्डे पर उतरते ही दक्षिण अफ्रीका की आर्य जनता द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। विदित हो कि पं० जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के विशेष निमन्त्रण पर १७ नवम्बर की रात को हवाई जहाज से नई दिल्ली के इन्दिरा गांधी एअर पोर्ट से डरबन के लिए प्रस्थान किया था।

दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा और समस्त आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओ द्वारा आयोजित अनेक कार्यक्रमों में प०जी बहुत व्यस्त है। अब तक आर्य समाज के अनेक सम्मेलनों के आयोजनों में भी वह भाग ले चुके हैं। प० जी के प्रवचनों और विद्वता का वहां के लोगो पर गहरा प्रभाव पड रहा है। पं० जी वहां दिसम्बर ९२ तक रहेंगे।

पाकिस्तान में अल्पसंख्यक

(पृष्ठ १ का शेष)

मुसलमानों कों दूसरे दर्जे का शहरी बनाकर रख देने की एक सोची-समझी चाल है। इस मामले मे ईसाई पादरियों के नेतृत्व में उस देश के अल्पसंख्यक समुदाय एक सप्ताह से जुलूस तथा आम जलसे कर रहे हैं।

इससे चार दिन पहले लाहौर मे अनेक लोग उस समय घायल हो गये जब पुलिस ने अल्पसंख्यकों के ऐसे जुलूस पर जो जुदागाना शनाख्ती कार्डो के खिलाफ आवाज उठाने के लिये निकाला गया था। उन पर आंसू गैस छोडी गई और लाठी चार्ज किया गया। जुलूस वालों ने पाकिस्तान मे अल्पसंख्यकों की बुरी हालत को दर्शाने वाला एक मानव पुतला उठा रखा था, जिस पर अल्पसंख्यकों पर होने वाले मुस्लिम जनूनियो के अत्याचारों का एक नक्शा था। बुनियाद परस्त पार्टी के लीडरों ने इस्लामाबाद में एक मीटिंग की और उसमें सरकार से माग की गई, जिसमे कहा गया है कि अल्पसंख्यक देश के दुश्मन हैं और किसी न किसी तरह वे पाकिस्तान को तबाह करना चाहते है।

अग्निवेश व कैलाश सत्यार्थी को देश द्रोह और अन्तर्राष्ट्रीय साजिश में सहभागिता के आरोप में गिरफ्तार किया जाये

संसद सदस्य श्री वीरेन्द्र सिंह की मांग

मिर्जापुर-मदोही के संसद सदस्य श्री वीरेन्द्र सिंह का कहना है कि अग्निवेश और कैलाश सत्यार्थी का गिरोह देशद्रोही है। यह मुट्ठीभर लोगों का एक प्रभावशाली गिरोह है जो मिथ्या प्रचार, विदेशी दलाली, तोड़-फोड़ और भारतीय कानूनों के दुरुपयोग में दक्ष है। उन्होंने कहा अग्निवेश और कैलाश सत्यार्थी को तुरन्त गिरफ्तार किया जाना चाहिए और दोनो पर देशद्रोह और अन्तर्राष्ट्रीय साजिश मे सहभागिता के मामले की सी० बी० आई० द्वारा जांच कराई जानी चाहिए।

जनसत्ता दैनिक के सम्वाददाता के सर्वेक्षण की रोंगटे खड़े करने वाली रिपोर्ट १८ नवम्बर १९९२ में प्रकाशित विवरण से साभार।

—सम्पादक

श्री सिंह ने सरकार से जोरदार मांग की है कि बन्धुआ मुक्ति की फर्जी धन्धेवाजी, क्षेत्र में वास्तविक काम न कर विदेशो में झूठा प्रोपेगण्डा करने की कलंकित जालसाजी, फरेब और मक्कारी, अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई मिशनरी संगठनों से करुणा के नाम पर इस काम के लिए भारी रकम लेकर उससे ऐश करने और झूठे ब्यौरे देने व कागजी संगठन चलाने और मानवाधिकार के नाम पर तथ्यहीन प्रचार करने के संगीन आरोपो के मामले मे अग्निवेश और कैलाश सत्यार्थी पर मुकद्मा चलाया जावे और विदेशी मुद्रा नियमन-अधिनियम के तहत इन्हे दी गई मान्यता तुरन्त रद्द कर इनके पासपोर्ट जब्त किए जावें।

इसी प्रकार भारत के अतिरिक्त महान्यायवादी श्रीदेवेन्द्र द्विवेदीने कहा—कि बाल श्रमिकों की मुक्ति के स्वयंभू दूत अग्निवेश व कैलाश सत्यार्थी और उनके आठ दस सहयोगियों की आर्थिक दशा मे आश्चर्यजनक सुधार हुआ है। ये लोग लगभग हर महीने वायुयान से विदेश आते-जाते है। भव्य ढंग से ठहरते और बरतते हैं। इनके प्रचार तन्त्र के पास प्रचुर धन आया है।

इसी प्रकार के आरोप खमरिया गोपीगंज कटरा के सर्वमान्य व्यक्ति सच्चा बाबा, नुमरिया के नागेश मिश्र, घनश्याम, शिवानन्द, कोई गुना के शिवानन्द, सुरियावां के राधेश्याम दुबे राधेश्याम मिश्र धनिकवार के रामचन्द,मानापुर के जयप्रकाशसिह, फत्तूपुर के पुरुषोत्त पाडे, अमोला के सत्यनारायण, धनीपुर के प्रकाशनाथ, रुद्रनाथ, राकश मिश्र, गिरिजाशकर, करमनपुर के प्रेमशंकर, मसुघी के चन्द्रनाथ, कांवलगांव के रामविलास का कहना है कि अग्निवेश कोई विदेशी एजेण्ट दीखता है और इनका गिरोह राष्ट्र द्रोही है।

भाजपा भी भ्रष्ट हो सकती है : अशोक सिंघल

नई दिल्ली, २१ नवम्बर। विश्व हिन्दू परिषद के महासचिव श्री अशोक सिंघल का कहना है कि भारतीय जनता पार्टी उतनी ही भ्रष्ट हो सकती है जितनी कांग्रेस हो गई है। श्री सिंघल कहते हैं कि गुरु गोलवलकर ने भी कहा था कि भाजपा को भ्रष्ट होने में कोई देर नहीं लगेगी। 'न्यूजट्रैक' के हिन्दी सस्करण को दी गई एक मुलाकात मे श्री सिंघल ने कहा है कि भाजपा में आखिर कौन से ऐसे सुर्खाब के पर लगे हुए हैं कि वह भ्रष्ट नहीं होगी।

इस मुलाकात मे श्री सिंघल अयोध्या के मसले पर अपने पुराने वादो से अलग बात कहते नजर आते हैं। पहले वे कहा करते थे कि विवादास्पद ढाचे को अगर अल्पसंख्यक हटा कर कही और ले जाना चाहे तो ले जा सकते है। लेकिन अब वे कहने लगे हैं कि मन्दिर का पूरा स्थान प्राचीन मन्दिर के टुकड़ो से बना हुआ है। श्री सिंघल का कहना है कि अब वहा केवल एक ही चीज ऐसी है, जिसे इस्लाम की चीज कहा जा सकता है और वह एक पत्थर है, जिसे मीर बकी ने लगाया था। श्री सिंघल कहते हैं कि बहुत अच्छा होगा, अगर मुसलमान इस पत्थर को ले जाएं। बाकी का सारा ढाचा तो एक हिन्दू मन्दिर का ढाचा है।

श्री सिंघल अब सिर्फ तीन मन्दिरो को छोड देने की बात भी नहीं कर रहे है। वीडियो पत्रिका के एक दृश्य मे वे लोगों को सम्बोधित करते हुए कहते नजर आते हैं कि देश में ३० हजार मन्दिर ऐसे थे, जिन्हें तोड़ दिया गया। हम उनकी बात नहीं करते हैं।

इंटरव्यू के दौरान श्री सिंघल कहते है कि जब हमारे कोई पर्व होते हैं तो उन पर आक्रमण किए जाते हैं। क्या कारण है कि मना कर दिया जाता है कि जुलूस इस क्षेत्र से मत गुजारो। जुलूस उन क्षेत्रों से क्यों नहीं गुजर सकते? हम किसी को मार तो नहीं रहे। लेकिन उनकी हिम्मत कैसे हो जाती है कि दुर्गा की मूर्ति पर आक्रमण कर दें इसलिए हो जाती है कि जुलूस में साहसी लोग नहीं हैं। यह हिन्दू समाज की कायरता है।

श्री सिंघल का कहना है कि असहिष्णु इस्लाम भारत मे नही रह पाएगा। वे कहते है कि इस देश मे सिर्फ सहिष्णु इस्लाम ही रह सकता है। श्री सिंघल कहते है कि भारत का सहिष्णु इस्लाम ही बचा रहेगा। वे मानते है कि इस्लाम की शिक्षा दुनिया को भारत देगा।

(नवभारत टाइम्स २२ नवम्बर से साभार)

हिन्दी बोलो

हिन्दी बोलो, हिन्दी बोलो, अपनी बोली खुलकर बोलो।
लज्जा छोडो, मानस खोलो, हिन्दी बोलो हिन्दी बोलो ॥१॥
मुल्क हमारा आजाद हुआ, अब तो अपनी आंखें खोलो।
तोड़ गुलामी की जंजीरें, हिन्दी बोलो, हिन्दी बोलो ॥२॥
तुम अपना अदनापन भूलो, कुछ अपनी भी गरिमा तोलो।
छोड फिरंगी की भाषा को, हिन्दी बोलो, हिन्दी बोलो ॥३॥
अंग्रेजी से मान घटेगा, हिन्दी के कोषों को खोलो।
देशज शब्दों को भी सीखो, हिन्दी बोलो, हिन्दी बोलो ॥४॥
आजादी जिसने दिलवायी, वीरो की वह भाषा बोलो।
राजघाट अब भी कहता है, हिन्दी बोलो, हिन्दी बोलो ॥५॥
आजाद भगत की कुर्बानी, याद दिलाती हिन्दी बोलो।
संसद के पाषाण कह रहे, हिन्दी बोलो, हिन्दी बोलो ॥६॥

श्री गंगा नारायण शर्मा, जयपुर

राक्षसी वृत्ति को छोड़ो

पृथ्वी पर नाना प्रकार के जीव-जन्तु पशु पक्षी अपना जीवन यापन कर रहे हैं। इन सब जीवो मे मनुष्य को उत्तम एव सर्वोपरि बताया गया है। मनुष्य को उत्तम रूप बुद्धि एव सुख-सुविधाए आहार, नाना प्रकार के फल-फूल, दूध घी आदि सभी स्रोत प्रदान किये हुए हैं। ईश्वर उपासना यज्ञ-हवन एव समस्त विश्व कल्याण के लिए वेदो का अमर ज्ञान दिया है। मनुष्य को जब ये मूल जीवनापयोगी वस्तुयें, ज्ञान दिया है तो उसे पशुओ की भाति अनाचार, मास एव मदिरा के चगुल मे नही फसना चाहिए, किन्तु यह तब ही सम्भव है जब सतगुरु द्वारा सत्य वाणी, सत्य ज्ञान लिया जाय, सच्चे समाज की शरण मे आया जाय।

आर्य महापुरुषो/अवतारो ने वेद की वाणी से हमे सत्य का रास्ता बताया, इन्ही वेदो के ज्ञान से हमारे ऋषि-मुनियो मे इतनी शक्ति थी कि उनका एक हाथ उठाने मात्रा से सारी पृथ्वी काप जाती थी, धनुष और वाण तो दूर की बात थी। आज यह काम परमाणु बमो से नही हो सकता है, जो सत्य का हाथ उठाने से हो जाता थ। क्या आश्चर्य था, क्या तप-त्याग और वैभव शक्ति थी। अब वेदो का ज्ञान न होने से भटकना तो जरूरी है, क्योकि सत्य मार्ग तो वेद ही है। ऋषि दयानन्द ने इन वेदो की गरिमा से अपने अन्दर प्रकाश कर वेदो का डका बजाया सत्य सत्य को उजागर कर सत्य और असत्य का तराजू हमारे सामने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश इसलिए पेश की थी कि हम भी सत्य और असत्य को जानकर व्यवहार करें वेदो से सारे विश्व का कल्याण करें। सत्य को ग्रहण और असत्य का त्याग कर अपना जीवन सुखमय बनाये। सत्य का ज्ञान वेदो म हैं ईश्वर की वाणी वेद है।

हमारे आर्य महापुरुषो/ऋषि-मुनियो ने वेदो के सत्य ज्ञान से सबको मोह लिया था, जीत लिया था। सत्य ही सब कुछ है तथा सब कुछ सत्य पर स्थिर है। जैसे—

सत्येन धायेते पृथ्वी सत्येन तपते रवि।
सत्येन वाले वायुश्च सर्व सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

बिना सत्य वेद ज्ञान के पण्डित, गुरू एव राजा आदि कैसे सत्य ज्ञान का प्रकाश कर सकने हैं। यही तो नया जमाना है शौकीय जीवन अर्द्धनग्न वस्त्र, शराब मास थियेटर गाना ईलू-पीलू एव भोग-विलास। पूजा पाषाण भक्ति, शराब की बोतलें आदि से जीवन यात्रा कैसे हो सकती है।

शराब हमारे जीवन के लिए नरक है। यह पहला दुष्ट पेय है जिसमे तमाम बुराइया ही हैं। जिसके सेवन से करोडो परिवार बरबाद हो रहे। एव क्लेश बना रहता है एव इसके सेवन से क्लेश बना रहेगा। आगे इसके सेवन से दुखो के सागरको न्यूता देना है। यह पृथ्वी भी मास एव मदिरा पीने वालो से बोझित है यह पेय केवल राक्षसो एव मूर्खों का ही सेवन है —

आर्य मन्दिर राशन की दुकान, दूध की दुकान फलो की दुकान में उतनी भीड नही जितनी विष प्याली की दुकान मे देखी जाती है। इस विष को अपने सर्वोपरि जीवन जो पशु पक्षियो से ऊपर है घोलकर अपने मनुष्य जीवन को नरक मे धकेलते हैं जबकि वेद वाणी तथा सभी धर्मों एव साधु-सन्तो की वाणी मे मास मदिरा सेवन को राक्षसी एव नीचता का प्रतीक बताया है। इसके सेवन का श्रेय मूर्ख, नीच प्राणी को जाता है। मनुष्य को तो मधुर आहार, जो कि बलवर्धक है दिया है। खेद है वेद ज्ञान एव गुरु/महापुरुषो के बताये माग से हटना गुरुओ की जड को उखाडना, उनके बताये मार्ग से भटक जाना, जिससे बरवादी होना स्वाभाविक ही है —

विप्रो वृक्षस्तस्य मूल च सन्ध्या,
वेदा शाखा धर्म कर्माणिपत्रम्।
तस्मात्वल यत्नतो रक्षणीयं
छिन्दे मूले नैव शाखा न पत्रम्॥

वेदो/महापुरषो ऋषि मुनियो के रास्ते से भटककर जीवन सफल बनाना सम्भव नही है उनके बनाये रास्ते पर चलकर जीवन सुखमय होना सम्भव है जैसे कि—

धम धन च धान्य च गुरोर्वचनमौषधम्।
सगृहीन च कतव्य भान्यथा तु न जीवति॥

मेरा लिखने का उद्देश्य केवल निवेदन है कि हम महापुरुषो की सन्तान है, हमे उनके पदचिन्हो पर चलकर सारे विश्व को आर्य बनाना होगा। ऋषि दयानन्द का सच्चा सैनिक बनकर आय समाज का डका बजाना तमाम कुरीतियो, अन्धविश्वासो का पर्दाफास कर सत्य की तरफ यानि वदो की शिक्षा यज्ञ-हवन पर समस्त मनुष्य जीवन का ध्यान केन्द्रित करना होगा। अपने पवित्र सस्कार जैसे विवाह नाम जन्म समारोह पर ऋषि दयानन्द के सैनिक तो मदिरा आदि का ध्यान कर ही नही सकते किन्तु अन्य लोगो पर इसके कुप्रभाव के प्रति जागरूकता उत्पन्न करनी होगी क्योकि मास मदिरा सेवन मूर्खों का एव राक्षसी पेय है। ऋषि दयानन्द के सच्चे आर्य सैनिक हम अपने को बताते हैं तो हमे सगठित होकर इन व्यसनो कुरीतियो का पर्दाफास करके ऋषि का प्रकाश समूचे विश्व को देना होगा। तभी हम आर्य सैनिक कहला सकेंगे।

—गोपाल आर्य
सैनिक ऋषि दयानन्द पाखण्ड खण्डनी पताका
प्लौट म० ७, सांवल नगर,
नई दिल्ली-११००४९०

कलकत्ता आर्य समाज का शिष्ट मण्डल सूचना प्रसारण मन्त्री श्री अजीत पांजा से मिला

कलकत्ता आर्य समाज का एक शिष्ट मण्डल श्री लक्ष्मणसिंह जी के नेतृत्व मे ९-११-९२ को सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री अजीत कुमार पाजा से मिला है। इस शिष्ट मण्डल मे आर्य समाज के मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल श्री प० उमाकान्त जी उपाध्याय, श्री सतीश चन्द जायसवाल, श्री रामधनी जायसवाल श्री राजकिशोर जायसवाल तथा श्री दिलीपकुमार जायसवाल सम्मिलित थे।

शिष्ट मण्डल ने दूर दर्शन द्वारा प्रसारित किये जाने वाले धारावाहिक हजार चोडो का सवार के प्रसारण पर रोक लगाने की माग की। सारी बातें समझने के बाद मन्त्री महोदय ने दिल्ली स्थित अपने कार्यालय को निर्देश दिया है कि उक्त सीरियल का प्रसारण स्थगित रखा जाय तथा पूरी फाइल आज ही उनकी मेज पर रख दी जावे।

—मन्त्री आर्य समाज कलकत्ता

पाश्चात्य संस्कृति का बहुमुख आक्रमण (२)

—वैद्य रणजीत राय देसाई

३. स्वभाव आदि की अपरिवर्तनशीलता

आधुनिक जीव विज्ञान का एक सिद्धान्त है कि, मानव आदि प्राणियों एवं वनस्पतियों के जीवन का आरम्भ पुंबीज (स्पर्म) और स्त्री-बीज (ओवम) के संयोग से होता है। दोनों बीजों में क्रोमोसोम-नामक सूत्र होते है, जो माता-पिता तथा उनके भी पूर्वज पुरुषो के शारीरिक-मानसिक स्वरूप, स्वभाव, गुण-अवगुण आदि का वहन कर सन्तान के शरीर में लाते है। प्रत्येक क्रोमोसोम में एक-एक विशिष्टता के वाहक 'जीन' नामक अगणित अंश होते है। माना यह जाता है कि जीन विकासवाद के क्रम से उस-उस मानव का सवप्रथम प्रादुर्भाव [उत्पत्ति] हुआ तब से अब तक रचना एवं स्वभाव-सम्बन्धी जो विशेषता रखते थे वह विशेषता बिना किसी प्रकार का परिवर्तन हुए अगली-अगली संतति में सक्रान्त होती आई है और आगे भी होती रहेगी। इसका फलितार्थ यह है कि प्रत्येक स्त्री-पुरुष के सर्वप्रथम उत्पन्न हुए पूर्वज का जो स्वभाव था, जो संस्कार थे, जो गुण-अवगुण थे वे सब वैसे के वैसे उसकी पीढी-दर-पीढ़ी में उतरते आए हैं और आगे भी प्रलय-पर्यन्त इसी प्रकार उतरा करेंगे। इनमें परिवर्तन का कोई अवकाश नहीं। यह और बात है कि नोबल पारितोषिक विजेता डाक्टर हरगोविन्द खुराना के प्रयासों से जीनों को बदला जा सके तो मानवों में तथा अन्य प्राणियो में एवं वनस्पतियों में कुछ परिवर्तन उत्पन्न किया जा सकेगा।

इस सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार का प्रयोजन विज्ञान के प्रचार-प्रसार के अतिरिक्त राजनीतिक भी था। इसका गर्भित तात्पर्य यह था कि जो प्रजाएं दास या पराधीन हैं वे अपने 'जीन' के दासत्व के स्वभाव के कारण दास या पराधीन हुई हैं। उधर, जो देश अन्य देशों को जीतकर उसके स्वामी बने हैं उनके पुरुषों के 'जीन' में ही विजेता एवं प्रभु होने का स्वभाव है। किंबहुना, जो राज्य आज पराधीन हैं वे आ-प्रलय पराधीन ही रहने वाले हैं और जो मालिक हैं वे सृष्टि के अन्त तक मालिक ही रहने वाले हैं। यह वाद पराधीन देशो और जातियो के मानस मे ठस जाए तो इसका परिणाम यह होगा कि उन्हें पराधीनता के पाश से मुक्त होने का उत्साह ही न होगा। फलस्वरूप वे सदा पराधीन ही रहेंगे और शोषको को उनके शोषण का अवसर नित्य के लिए प्राप्त होता ही रहेगा।

स्वभाव की अपरिवर्तनीयता के उपर्युक्त सिद्धान्त को सत्य माना जाए तो भारतीय संस्कृति जिनकी असाधारण प्रशंसा एवं अपरिमित उपयोगिता की महिमा गाते थकने का नाम नही लेती उन षोडश संस्कारों, सत्संगति, उत्तम शिक्षण आदि का मूल्य ही कहां रहा?

२: सैडिज्म तथा मैजोकिज्म

आधुनिक मानस रोग विज्ञान (सिकाए ट्री) द्वारा आविष्कृत एवं प्रवर्तित ये दो बाद हैं। ये दोनों कामवासना की विकृति (सेक्सुअल परवर्शन) के परिणाम हैं। इनमें सैडिज्म से यह अभिप्रेत है कि इससे आक्रान्त पुरुष वचन एव कर्म द्वारा अन्य पुरुष को कष्ट देने में, अथवा अन्यों द्वारा किसी को कष्ट दिए जाने में आनन्द का अनुभव करता है। कभी-कभी उसे इस प्रकार के विचारों में मग्नता भी पीड़ित करती है। इसके अतिरिक्त मैजोकिज्म में पुरुष अन्यों के हित के लिए स्वयं प्रयास करने मे अथवा कष्ट सहन करने में आह्लाद मानता है।

अब यह द्वितीय सिद्धान्त सत्य माना जाए तो बुद्ध, महावीर, ईसा, दयानन्द, गांधी आदि महात्मा एवं मेक्स्विनी, भगतसिंह आदि देश-भक्त जो जनता तथा देश को सुखी करने के लिए अपने जीवन तक को अर्पित करते हैं तथा इसी में आनन्द मानते हैं वे आराध्य महात्मा न रहकर कामविकार (सेक्सुअल परवर्शन) से आक्रान्त रुग्ण-विशेष ही माने जायेंगे। परहित, परमार्थ आदि सद्गुण एव सत्कर्म भी इस रोग के लक्षण ही मानना प्राप्त होगा।

उधर हत्या आदि के अपराधी पुरुषों को न्याय के नियमों के अनुसार दण्ड देने के पूर्व उनकी मानसशास्त्रीय परीक्षा आवश्यक मानी जाती होने से वे भी कानून के अनुसार उपयुक्त दण्ड की मर्यादा मे न आकर मानसरोगी ही माने जायेंगे। परिणामतया, दण्ड से मुक्त होकर समाज को पूर्ववत् कष्ट देने की अबाध स्वतन्त्रता उन्हे प्राप्त होगी। इसके परिणाम की कल्पना अनायास की जा सकती है।

५. साम्यवाद

ईश्वर, धर्म, परलोक आदि के अस्तित्व का अस्वीकार अथ च हिंसा, अत्याचार आदि द्वारा अपने सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार इस बाद के घोर रूप हैं। प्रथम अन्तरिक्ष-यात्री यूरी गागारीन ने अपनी यात्रा सम्पूर्ण कर पृथ्वी पर अवतीर्ण हो पत्रकारो को अपने अनुभवों का जो विवरण दिया उसमे एक विधान यह भी था कि सम्पूर्ण यात्रा में कही भी उसे ईश्वर दिखाई नही दिया।

६. विकासवाद

विकासवाद के तीन अंगों में मानव की क्रमिक उत्पत्ति तथा बौद्धिक विकास की गणना है। इसके अनुसार निर्जीव सृष्टि मे प्रथम सजीव सृष्टि उत्पन्न हुई, पश्चात् उत्तरोत्तर एक प्राणी से अन्य प्राणी का विकास होते-होते अन्त मे मानव की उत्पत्ति हुई। जैसे-जैसे प्राणिसृष्टि का विकास होता गया वैसे-वैसे बुद्धि भी विकसित होती गयी। इसका अर्थ यह हुआ कि आर्यों ने अथवा भारतीयों ने जो असाधारण विकास जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में किया था उसको सर्वथा अस्वीकार ही किया जाए।

भारतीय विज्ञान के अनुसार सृष्टि के साथ ही मानवो की भी उत्पत्ति हुई। एवं उन्हें ईश्वर की ओर से वेदों के रूप में ज्ञान का भण्डार सौंपा गया। विकासवाद के उपर्युक्त दो सूत्रों को यथार्थ माना जाए तो अपने पूर्वाचार्यों द्वारा प्रवर्तित उक्त सिद्धान्तों का परित्याग ही करना होगा।

इस प्रकार संक्षेप में पाश्चात्य संस्कृति द्वारा भारतीय संस्कृति पर प्रच्छन्न रूप में हो रहे आक्रमणों में से कुछ का निरूपण हमने किया। विज्ञ वाचक समझ सकते हैं कि इनमें एक-एक भी आक्रमण भारतीय संस्कृति के मूलभूत सिद्धान्तों का सर्वनाश करने की असाधारण शक्ति रखता है। इसका सामना करने की सामर्थ्य आर्यसमाज को छोडकर अन्य किसी संस्था में नहीं है। यह न किया जाएगा तो स्वयं आर्यसमाज द्वारा अब तक किए गए प्रयत्न भी निरर्थक सिद्ध होंगे।

अपरिवर्तनीय है वेदों की शब्द रचना (२)

—डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर

वेदों का जनक ईश्वर

सर्वज्ञ ईश्वर ही वेदों का जनक होने के कारण, उसका वेदरूप कार्य भी सर्वज्ञानपूर्ण होना चाहिए इस अनुमान मात्र से भी जगद्गुरु शंकराचार्य का युक्तिवाद अधिक वेदनिष्ठापूर्ण है। वे कार्यरूप वेदों का सर्वज्ञानमयत्व सिद्धवत् मानकर उसके कारण की सर्वज्ञानमयत्व सिद्धवत् मानकर उसके कारण की सर्वज्ञानमयत्व का तर्क प्रस्तुत करते हैं। अर्थात् इस तर्क के अनुसार परब्रह्म परमात्मा सर्वज्ञानमय होने के कारण वही वेदो का जनक या निर्माता माना जा सकता है।

श्री शंकराचार्य जी ने वेदों का ईश्वर-कर्तृत्व सिद्ध करते हुए वेदों के विषय मे "विद्यास्थानोपबहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थाविद्यौतिन. सर्वज्ञकल्पस्य" इत्यादि जो विशेषण प्रयुक्त किए है, उनमे यत्किंचित भी अनिशयोक्ति का अश नही है। इसका पहला कारण श्री शंकराचार्य जैसे विश्ववंद्य परमज्ञानी महापुरुष ने उन विशेषणों का प्रयोग किया है और दूसरा कारण यह है कि अतिप्राचीन काल से आज तक के प्रदीर्घ कालावधि मे विविध प्रकारों से जो वेदो का मंथन और चिन्तन हुआ, उससे भी उन विशेषज्ञों की यथार्थता सिद्ध हुई है।

जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य की वेदों की "सर्वज्ञानमयता" पर इतनी प्रगाढ श्रद्धा है कि अपने ब्रह्मसूत्र भाष्य मे, पांचरात्र नामक मत का खण्डन करते हुए, उन्होने यह युक्तिवाद प्रस्तुत किया है कि 'शांडिल्य को 'चारों वेदों में नि.श्रेयस का मार्ग न दिखने के कारण उसने इस शास्त्र (पांचरात्र-दर्शन) का ज्ञान प्राप्त किया, इस प्रकार के पांचरात्र दर्शन के स्तुति वाक्यों में से वेदों की निन्दा ध्वनित होती है, अत. वह दर्शन भी अग्राह्य मानना चाहिए। (विप्रतिषेधाच्च भवति। चतुर्षु वेदेषु परं श्रेय. अलब्ध्वा शाण्डिल्यः इदं शास्त्रम् अधिगतवान् इत्यादि वेदनिन्दादर्शनात्)।

भगवान् व्यास ने भी "विप्रतिषेधाच्च' (२-२-४५) इस ब्रह्मसूत्र के द्वारा यही मत सूचित किया है। इस प्रकार वेदों का ईश्वरकर्तृत्व उपपत्ति और उपलब्धि [अनुमान और आप्तवाक्य] इन प्रमाणो के आधार पर सिद्ध मानते हुए, अर्वाचीन (पाश्चात्य तथा पौरस्त्य) पण्डितों ने अथवा प्राचीन वेद विरोधी नास्तिक पण्डितो ने माना हुआ वेदों का पोरुषेयत्व याने पुरुषकर्तृत्व वैदिकों की परम्परा में अप्रमाण माना गया है।

वेदों का नित्यत्व

परम्परावादियों ने शिरोधार्य माना हुआ वेदो का नित्यत्व तथा अपौरुषेयत्व का सिद्धान्त विविध 'आस्तिक' दर्शनों के आचार्यो ने अन्यान्य युक्तिवादों में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है—भगवान जैमिनि जी ने अपने पर्व मीमांसा दर्शन में इस विषय की चर्चा की है। "कर्मके तत्र दर्शनात्" इस सूत्र से आगे १२ सूत्रों में वेदो का अनित्यत्व प्रतिपादन करने वाले पूर्वपक्ष के तर्क सविस्तार देकर आगे "नित्यस्तु स्याद् दर्शनस्य परार्थत्वात्"(१-१-६)इत्यादि छह सूत्रों द्वारा अनित्यवादी पक्ष के तर्कों का खण्डन करते हुए, वेदों का नित्यत्व बड़ी मार्मिकता से प्रतिपादन किया है।

उत्तरमीमांसा दर्शन में भगवान बादनारायण व्यासजी ने "शास्त्रयोनित्वात्" इस सूत्र के द्वारा वेदों का उद्गम परब्रह्म से ही हुआ है, इस सिद्धान्त कों स्थापित कर, यह निष्कर्ष बताया है कि परमात्मा नित्य होने के कारण उसका ज्ञान यानी वेद भी नित्य ही होने चाहिए।

वैशेषिक दर्शन में वेदों का अपौरुषेयत्व और स्वतः प्रामाण्य "तद्वचनात् आम्नायस्य प्रामाण्यम्" इस सूत्र द्वारा प्रतिपादन किया है। इस सूत्र का विवरण करते हुए उपस्कारभाष्य में कहा है कि सूत्रस्थ 'तत्' शब्द ईश्वरबोधक है, क्योंकि ईश्वर ही वेदों का जनक है यह बात सुप्रसिद्ध और सिद्ध है। (तद् इति अनुपक्रान्तमपि प्रसिद्धिसिद्धतया ईश्वरं परामृशति।" (—वैशेषिक सूत्र उपस्कार भाष्य) इसी सूत्र का दूसरे प्रकार से अर्थ निकाल कर, वेदों का प्रामाण्य सिद्ध किया गया है। जैसे—'सूत्रस्थ' तत् शब्द, समीपस्थ धर्म यह अर्थ बताता है। अतः धर्म का प्रतिपादन करने के कारण, वेद को प्राम. ण्य प्राप्त हुआहै। जो वाक्य प्रामाणिक या प्रमाणसिद्ध अर्थ का प्रतिपादन करता है वह(वाक्य,प्रमाणभूत ही होताहै। (यद् वा तत् इति सन्निहितं धर्ममेव परामृशति। तथा च धर्मस्य वचनात्-प्रतिपादनात् वेदस्य प्रामाण्यम्। तत् प्रमाणम् एव यतः इत्यर्थ. (उपस्कारभाष्य)।

अन्य साधारण ग्रन्थों के समान वेद भी ग्रन्थ रूप ही होने के कारण पौरुषेय अर्थात् मनुष्य निर्मित ही होने चाहिए, यह सामान्य तर्क सर्वत्र रुढ है। भाष्यकार कहते हैं—अतीन्द्रीय विषयों पर सहस्रावधि शाखाओं का इतना महान ग्रन्थ-राशि व्यक्त करना, हम जैसे मानवों का काम नहीं है। अर्थात् वह ईश्वर का ही काम हो सकता है। (वेदस्तावत् पौरुषेयः वाक्यत्वात् इति साधितम्। न च अस्मददायः तेषां सहस्रशाखाच्छिन्नानां वक्तारः सम्भाव्यन्ते अतीन्द्रियार्थत्वात्। न च अतीन्द्रियार्थदर्शिन. अस्मदादय.)।

दार्शनिकों के मत

वैशेषिक दार्शनिकों ने वेदों का अपौरुषेयत्व प्रतिपादन करने के लिए अनेकविध तर्क प्रस्तुत किए हैं। उसके कुछ उदाहरण मात्र यहां प्रस्तुत हैं।

न्यायदर्शनकार गौतममुनि "मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवत् च तत्प्रामाण्यम् आप्तप्रामाण्यात्" इस सूत्र के भाष्य में कहते हैं "वेदों के अर्थ के जो द्रष्टा एवं प्रवक्ता है, वे ही आयुर्वेदादि के प्रवक्ता है। अतः आयुर्वेदादि शास्त्रों को हम जैसे प्रमाणभूत मानते हैं, वैसे ही वेदों को भी प्रमाणभूत मानते हैं. वैसे ही वेदों को भी प्रमाण मानना चाहिए। (ये एव आप्ता वेदार्थानां द्रष्टारः प्रवक्तारश्च ते एव आयुर्वेद प्रभृतीनाम् इति आयुर्वेद-प्रामाण्यवत् वेद प्रामाण्यम् अनुमातव्यम्।)

सांख्य दर्शन के प्रवर्तक भगवान कपिल ऋषि वेदो के नित्यत्व का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं, 'शब्द और अर्थ का सम्बन्ध नित्य है, इसलिए वेदरूप शब्दराशि नित्य ही होना चाहिए।' इस विधान पर आक्षेपक कहते है, "तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे' इस वेदवचन के अनुसार वेद यजनीय (यज्ञ) ईश्वर से उत्पन्न हुए। इस कारण वे नित्य नही हो सकते, क्योंकि उत्पन्न होने वाला प्रत्येक पदार्थ घटपटादि के समान अनित्य ही होता है—(न नित्यत्वं वेदानां कार्यत्वश्रुतेः (सांख्यसूत्र ४-४५।

इस युक्तिवाद मे वेदो के नित्यत्व का खण्डन करने वाले ने भी वेदों का ईश्वर कर्तृत्व मान्य किया है।

वेद अगर घटपटादि पदार्थों के समान उत्पन्न हुए हैं, तो उनका अपौरुषेयत्व अर्थात् ईश्वरकर्तृत्व क्यों माना जाए? यह भी प्रश्न उपस्थित किया गया। उसका समाधान करते हुए सांख्यदर्शनकार कहते हैं कि वेद पौरुषेय हो ही नहीं सकते, क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ मे ऐसा कोई पुरुष अस्तित्व में ही नहीं था जो वेदों की रचना कर सके—(न पौरुषेयत्वं, तत्कर्तुः) वेदों के पौरुषेयत्व का खण्डन करते हुए, 'सृष्टिनिर्मिति के अवसर पर परमात्मा की'स्वाभाविक शक्ति से वेदों का प्रादुर्भाव होता है अतः वे 'स्वतः प्रमाण' है—[निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्] इस युक्तिवाद से वेदों का अपौरुषेयत्व सांख्य दर्शन में प्रतिपादित किया हुआ है। [क्रमशः]

ऋत एवं सत्य

डा० अजय आर्य प्रवक्ता वनस्पति विज्ञान बड़ौदा

ऋत एवं सत्य—ये दो ही शब्द पर्यायवाची मे प्रतीत होते हैं और प्राय एक अर्थ मे प्रयुक्त भी हुये हैं किन्तु दोनो मे सूक्ष्म अन्तर है। ऋत का सिद्धान्त अपने मे एक अलौकिकता एव दार्शनिकता गम्भीरता को लिये हुए है जिसका विस्तृत विवेचन पृथक से भी अपेक्षित है। सक्षप मे ऋतु परमेश्वर का अटल विधान है जिसके सहारे समस्त सृष्टि चक्र का प्रवतन हो रहा है ऋग्वेद १० ६२४ मे वणन है कि विस्तृत अन्तरिक्ष द्युलोक एव विशाल पृथ्वी ऋत का ही विस्तार। ऋत के द्वारा ही आदि त्यो की स्थिति है—ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति। इतना ही नही सूय चन्द्र अग्नि वायु आकाश एव पृथ्वी आदि सभी का आधार ऋतु को बताया गया है और यह भी कहा गया है कि ये सब ऋत का ही अनुसरण करते हैं।

ऋग्वेद मे मानव जगत की सुख समृद्धि का आधार ऋत को माना है। राष्ट्र की प्रतिष्ठा का आधार भी ऋत ही है। एक मन्त्र मे परमात्मा से प्रार्थना है—हे राजाधिराज! आप ऋत से अनत को दूर करते हुये मेरे राष्ट्र के आधिपत्य को स्वीकार करो।

ऋतेन राजन्ननत विवञ्चयन।
मम राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि॥ ऋक० १० १२४ ५

केवल लौकिक ही नही अपितु पारलौकिक सुख स्वग एव मोक्ष की प्राप्ति का साधन भी ऋग्वेद की दृष्टि मे ऋत है।

ऋतस्यन थिरमृत विजायते। ऋ० ९ ७४ ४

सत्य

ऋत के साथ साथ ऋग्वेद मे सत्य को भी बहुत महत्व प्रदान किया गया है ऋक० १० १९० १ मे ऋत तथा सत्य को सृष्टि के आरम्भ मे (ब्रह्म) के रूप मे उत्पन्न कहा गया है और इसी सत्य एव ऋत के द्वारा रात्रि समुद्र आदि क्रमश आविर्भूत हुए बताये गए हैं।

ऋत च सत्य चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो राम्यजायत तत समुद्रो अर्णव॥

ऋग्वेद मे सत्य को इतना महत्व दिया गया है कि वहा से उसे विश्व का नियन्त्रण एव सचालन करने वाला मान लिया गया है। एक मन्त्र मे स्पष्ट वर्णन है— सत्य के द्वारा ही पृथ्वी स्तम्भित है — सत्येनोत्तभिता भूमि। एक स्थान पर तो धरती एव आकाश को सत्य बोलने वाला बताया है—ऋतावरीरोदसी सत्य वाच इन मन्त्रो से यह सिद्ध होता है कि ऋग्वेद मे न केवल मानव समाज अपितु समस्त ब्रह्माण्ड को यहा तक कि जड़ प्रकृति को भी सत्यमय कल्पित किया है।

ऋग्वेद मे सत्य को विश्व का मौलिक तत्व स्वीकारा गया है। अथववेद मे यही विचार और स्पष्ट रूप मे आया है—वहा वणन—सत्य ऋत दीक्षा तप ब्रह्म एव यज्ञ पृथ्वी को धारण करते है।

उपनिषद काल मे सत्य का स्वरूप पर्याप्त विकसित दखाई देता है। वहा सत्य ब्रह्म का पर्यायवाची बन गया है। यद्यपि उपनिषद की इस भावना का मूल उन ऋग्वैदिक सन्दर्भों मे निहित दृष्टगोचर होता है। जहा सत्य को समस्त जगत का आधार बताया गया है। एक मन्त्र मे तो परमात्मा को सत्य स्वरूप बताकर उसकी स्तुति का शुभसकल्प यो वर्णित है—

सत्यमिद वा उत वयमिन्द्र स्वाम।

सत्य को इतना ऊचा स्थान देने के साथ साथ ऋग्वेद मे असत्य एव असत्यवादी को निम्न स्थान दिया है। और उनकी निन्दा की गई है। ऋग्वेद ४ ५ ५ मे असत्यवादी को पापी बताया गया है।

पापस सन्तो अनता असत्या।

ऋग्वेद मे स्पष्ट रूप से यह विश्वास भी व्यक्त किया गया है कि अन्त मे सत्य की विजय होती है और असत्य पराजित हो जाता है। इस अमर विश्वास के साथ वेद मे यह प्रार्थना भी है— मेरा हृदय तथा विचार सत्य से युक्त हो। सत्यवादी ही देवत्व को प्राप्त करते हैं और अमरत्व की प्राप्ति भी सत्यवादी को ही होती है।

छान्दोग्योपनिषद के अनुसार सत्य मृत्यु से अमृत की ओर ले जाने वाला सोपान है। सत्य स्वगस्य सोपानम महाभारत मे तो सत्य को सर्वाधिक गौरव प्रदान किया गया है। वहा यह वर्णन है यदि तुला मे एक ओर सत्य आदि दूसरी ओर एक हजार अश्वमेध यज्ञ रख जाए तो भी सत्य का पलड़ा ही भारी रहेगा।

कहा गया है। असतो मा सद गमय तमसो मा ज्योतिगमय।

सदा सच बोलने को कहा जाता है सत्य ब्रूयात प्रिय ब्रूयात न ब्रूयात सत्य अप्रियम। और अन्त मे सत्य शिवम सुन्दरम

संस्कार चन्द्रिका प्रकाशन मे है

सभा द्वारा दी गयी विज्ञप्ति की अवधि दीपावली पर समाप्त हो गयी है। कृपया अब उसके लिये साठ रुपये भेजने का कष्ट न कर। अब उसकी कीमत १००) रुपये है। धन राशि भेजने वाले सज्जनो को डाक द्वारा संस्कार चन्द्रिका शीघ्र भिजवा दी जावेगी। आगे केवल १००) रुपये भेजने का कष्ट करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २

आर्य समाज के बढ़ते कदम

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (अलीगढ़)

कन्या गुरुकुल मे भारत के लगभग सभी प्रान्तो तथा नेपाल थाईलैण्ड प्रभृति विदेशो की लगभग ७०० कन्याए अध्ययन कर रही है। स्थानाभाव के कारण कनेक कन्याए बरामदे मे रह रही हैं। दानी महानुभाव भवन निमार्ण मे सहयोग देकर पुण्यलाभ कमावे। गुरुकुल को दिया दान आयकर से मुक्त हैं।

कन्या गुरुकुल का जन्मदिवस व्यास पूर्णिमा १४ जुलाई सन् १९९२ को सोत्साह मनाया गया। यज्ञ के यजमान श्री ओमप्रकाश जी आय हापुड सपत्नीक बने। श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री कुलपति, कन्या गुरुकुल द्वारा कुलध्वज फहराया गया। श्री ला० भगवत्यप्रसाद जी आर्य हापुड ने सरस्वती परिषद् (सभा) की अध्यक्षता की तथा श्री ओमप्रकाश जी आर्य ने मुख्य अतिथि पद को सुशोभित किया। हापुड परिवार एव उनके सहयोग से प्रतिवष विपुल धनराशि गुरुकुल को प्राप्त होती है जिसके लिये गुरुकुल परिवार उनका हृदय से आभारी हैं और धन्यवाद देता है।

गुरुकुल जन्मदिवस के अवसर पर मथुरा के एक मुस्लिम परिवार का शुद्धिकरण किया गया। यज्ञवेदी पर पवित्र मन्त्रो के गु जार से उनके द्वारा यज्ञ किया गया। तत्पश्चात उनके नाम परिवर्तन किये गये जो इस प्रकार है—

१—श्री अहमद का नाम श्री राजकुमार किया गया।

२ - श्रीमती गुड्डी का नाम श्रीमती गीता किया गया।

३ पुत्री रेशमा का नाम कु० रश्मि किया गया।

४—पुत्री सुल्ताना का नाम कु० सुनीति किया गया।

शुद्धिकरण के बाद कु० रश्मि एव कु० सुनीति का गुरुकुल मे प्रवेश कर लिया गया।

श्रावणी पर्व भी गुरुकुल मे सस्कृत दिवस के रूप मे सोत्साह मनाया गया। ब्रह्मचारिणियो के व्याख्यान, भजन, सस्वर वेदपाठ, नाटक आदि विभिन्न कार्यक्रम हुये। श्रावणी से जन्माष्टमी पर्यन्त यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया।

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर यज्ञ, ध्वजारोहण एव ब्रह्मचारिणियो के देशभक्त सम्बन्धी विभिन्न कायक्रम हुये।

श्रावणी के अवसर पर ब्रह्मचारिणियो की एक टोली आर्य समाज बम्बई, काकडवाडी द्वारा आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ मे भाग लेने गई। वहा से गुरुकुल को प्रतिवष अच्छा आर्थिक सहयोग प्राप्त होता है जिसके लिए गुरुकुल उनका अत्यन्त आभारी है तथा हार्दिक धन्यवाद देता है। श्रावणी के अवसर पर ही ब्रह्मचारिणियो की दूसरी टोली सिकन्दराऊ (अलीगढ) मे आयोजित वेद प्रचार सप्ताह मे भाग लेने गई तथा पारिवारिक यज्ञो के आयोजन मे यज्ञ भजन व्याख्यान आदि से जनता को प्रभावित किया। वहा भी प्राय प्रतिवर्ष ही कन्याए वेद प्रचाराथ जाती हैं। वहा की आर्य जनता द्वारा गुरुकुल को सदा सहयोग मिलता है, जिसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। इसके अतिरिक्त हाथरस के प्रसिद्ध दाऊजी के मेले मे आयोजित महिला सम्मेलन में भी कन्याओ ने भाग लिया और अपने विभिन्न कार्यक्रमो से जनता को प्रभावित करके उपहार प्राप्त किये तथा गुरुकुल को आर्थिक सहयोग भी प्राप्त हुआ। गुरुकुल दानदाताओ का हृदय से आभारी है।

मुख्याधिष्ठात्री

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस।

पुस्तक समीक्षा

चयनिका

लेखक—पं० क्षितीश वेदालंकार

प० क्षितीश जी द्वारा लिखित चयनिका नामक ग्रन्थ को मनोयोग पूर्वक थोडा थोडा पढ रहा हू। क्षितीश जी एक सिद्धहस्त लेखक हैं जिनकी लेखनी की नोक पर सरस्वती नाचती है। इसके साथ ही आप एक स्वतन्त्र चिन्तनशील मनीषी भी हैं। आपके लेखो मे जहा आपकी स्वतन्त्र चिन्तनशील प्रतिभा का दर्शन होता है वहा उनके पढने मे उपन्यास का सा आनन्द भी प्राप्त होता हैं। आपने अपने इस ग्रन्थ मे ऋषि दयानन्द के महान और अद्वितीय लोकोत्तर व्यक्तित्व को उजागर किया है वहा आपने उन द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और आय समाज के सिद्धान्तो तथा स्वरूप का भी बडा सुन्दर निरूपण किया है। जिसमे आपका वैदिक आर्य साहित्य का गम्भीर अध्ययन और मथन प्रतिबिम्बित होता है। आपने अपने इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ मे जिन अन्य अनेक विषयो पर लिखा है उनका आपका चित्रण और प्रतिपादन भी आपके गम्भीर अध्ययन और पाण्डित्य का प्रदर्शन करता है। इस ग्रन्थ मे लिखे गये सभी लेखो से पाठको को नयी सामग्री पढने को मिलती है।

मैं यह सुन्दर ग्रन्थ लिखने पर आपको हार्दिक बधाई देता हू और प्रभु से प्रार्थना करता हू कि आप सौ वर्ष से भी अधिक दीर्घ आयु प्राप्त करें। सदा स्वस्थ और निरोग रहे जिससे आप और भी अनेक सुन्दर से सुन्दर ग्रन्थ लिखकर साहित्य की सेवा कर सकें। प्रभु की कृपा से आप ऐसे महान् लेखक बन जाए जिनका भविष्य मे आने वाले अन्य लखक अनुकरण किया करें।

आपके विचारो से कही कही मेरा थोडा मतभेद भी है। पर यह तो विचारको और चिन्तको मे सदा होता ही रहता है पर आपने अपना यह ग्रन्थ लिखकर जो महत्वपूर्ण कार्य किया है उसकी जितनी प्रशसा की जाए थोडी है। मैं इस ग्रन्थ के लिखने पर अन्त मे एक बार पुन हार्दिक बधाई देता हू।

मगलाभिलाषी

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

प्रश्न आपके उत्तर धर्माधिकारी के

१—अलीगढ से श्री सोहनपाल पूछते है—ओ३म् पद यजुर्वेद (४१/१७) मे उल्लिखित है। यह परमात्मा का प्रधान नाम है, ऋषि दयानन्द ने स्वरचित भूमिका मे भी ऐसा ही वर्णन किया है। किन्तु कभी तो यह मन्त्रो के साथ उच्चारण किया जाता है और किन्ही मन्त्रो के पूर्व मे नही लिखा या बोला जाता। इसका समाधान करे।

उत्तर—निश्चय ही ओ३म् पद परमात्मा का वाचक तथा उसका सर्वोत्कृष्ट नाम है। योगदर्शनकार ने तस्य वाचक प्रणव सूत्र के द्वारा ओकार का ही उल्लेख कर उसे ईश्वर का प्रमुख वाचक माना है। सामान्यतया प्रत्येक मन्त्र के पाठ या उच्चारण करते समय आरम्भ मे ओम् बोलने की परिपाटी है, किन्तु कर्मकाण्ड मे जैसा ऋषियो का विधान होता है तदनुकूल ही ओम् का उच्चारण किया जाता है। सामान्य प्रकरण के अन्तर्गत ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना केआठ मन्त्रो का एक प्रकरण है। अत इस एक प्रकरण के प्रथम मन्त्र के आरम्भ मे एक बार ही ओम् के उच्चारण का विधान ऋषि ने किया है। कर्मकाण्ड मे विधि का महत्त्व होता है। उपासना की दृष्टि से तो सहस्रो बार प्रणव का अर्थ की भावनापूर्वक जप और उच्चारण साधक के लिये लाभप्रद होता ही है।

२—आर्यसमाज सुलतानपुर पट्टी के कोषाध्यक्ष श्रीकृष्ण आर्य पूछते हैं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश व सार्वदेशिक सभा के मध्य के विवाद को कैसे सुलझाया जा सकता है?

उत्तर—आपका प्रश्न धर्मार्य सभा के विचारणीय प्रसग मे नही आता।

३—झालरापाटन (राजस्थान) से श्री नानूराम गुप्ता की जिज्ञासा है कि आर्य समाज के द्वारा गौहत्या को बन्द कराने के लिये क्या कुछ किया जा रहा है और क्या निकट भविष्य मे इस कार्य की सिद्धि के लिये हमे कोई प्रभावशाली आन्दोलन नही छेडना चाहिए।

उत्तर—श्री गुप्ता जी से निवेदन है कि आर्य समाज तो अपने स्थापना काल से ही गोरक्षा के लिये प्रतिबद्ध तथा यत्नशील रहा है। परन्तु यह एक राष्ट्रीय प्रश्न है जिसके लिये व्यापक राष्ट्रीय सहमति अपेक्षित है। गौहत्या के साथ अनेक आर्थिक,साम्प्रदायिक तथा सकीर्ण राजनैतिक भावनाय जुडी हुई है। अत इस प्रश्न पर व्यापक स्तर पर बहस होनी चाहिए तथा सभी वर्गो और विचारो के लोगो को गौरक्षा के लिये आहूत किया जाना चाहिए। अतीत मे आर्यसमाज ने गौरक्षा के लिये बहुत बार आन्दोलन किये है।

४—दिल्ली मे प० राजवीर शास्त्री ने अपने पत्र मे आशा व्यक्त की है कि मेरे नेतृत्व तथा देखरेख मे धर्मार्य सभा की गतिविधियाँ सुचारु रूप से चलती रहेगी। वे महर्षि सम्मत सृष्टि सम्वत् पर भी सत्याधारित निर्णय का अपेक्षा धर्मार्य सभा मे करते है।

उत्तर—शास्त्री जी की शुभ कामनाओ के लिये आभार व्यक्त करता हुआ निवेदन करता हू कि निकट भविष्य मे सभा की जब बैठक होगी तो उसमे सृष्टि सम्वत् तथा अन्य सभी महत्त्वपूर्ण प्रश्नो पर उचित निर्णय किया जायेगा।

५—ग्राम रजौली [जिला नवादा बिहार] के कृष्णदयाल पुरोहित ने भरतपुर के रमेश मुनि वानप्रस्थ द्वारा लिखित किसी वैदिक यज्ञानुष्ठान विधि का सन्दर्भ देकर पूछा है कि क्या यह विधि आर्य समाज सम्मत है, कारण कि रमेश मुनि ने यज्ञ मे डाले जाने वाले शाकल्य को अस्वीकार किया है, वे वेदमन्त्रो से आहुति देने से पूर्व मन्त्र के ऋषि देवता आदि का नामोल्लेख करना आवश्यक मानते है, यज्ञोपवीत जोड का होना चाहिए, यज्ञ वेदी को नमस्कार करना चाहिए आदि बातो पर इस प्रकार की चौदह शकाये श्री कृष्णदयाल ने की है। इनका विस्तृत उत्तर उन्हे पृथकश दे दिया गया है। सर्वसामान्य आर्यो को आगाह किया जाता है कि भरतपुर के रमेश मुनि द्वारा निर्मित यज्ञानुष्ठान पद्धति आर्यसमाज के मन्तव्यो के अनुकूल नही हैं। सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत पद्धति ही प्रामाणिक और आचरणीय है।

६—कैलिफार्निया [यू०एस०ए०] के प० सत्यपाल शर्मा का पत्र यज्ञ पद्धति मे एकरूपता लाने पर जोर देता है तथा १९९१ मे सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा स्वीकृत पद्धति के कतिपय अशो पर शका व्यक्त करता है।

उत्तर—प० सत्यपाल जी के पत्र मे उठाये प्रश्नो को धर्मार्य सभा की आगामी बैठक मे विचारार्थ प्रस्तुत किया जायेगा।

—भवानीलाल भारतीय
धर्माधिकारी

नोट—वैदिक सिद्धान्त कर्मकाण्ड तथा तत् सदृश प्रश्नो को आप धर्माधिकारी के पास निम्न पते पर भेजे। उनके उत्तर सार्वदेशिक मे प्रकाशित किये जायगे।

—डा० भवानीलाल भारतीय
रत्नाकर ८ ४२३, नन्दनवन जोधपुर-३४२००८

विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना

सेवाग्राम जिला वर्धा (महाराष्ट्र) मे हो

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

नादेड मे प्रस्ताव पारित

राष्ट्रभाषा प्रसार मच नादेड की ओर से अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का द्विदिवसीय सत्र नादेड मे एक और दो नवम्बर १९९२ को आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन मे विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना सेवाग्राम जिला वर्धा महाराष्ट्र मे स्थापित करने के लिए एक स्वर से प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रस्ताव के अतिरिक्त अन्य प्रस्ताव भी पारित किये गये। जो राष्ट्र की राजभाषा विषयक नीति के परिप्रेक्ष्य मे महत्त्वपूर्ण है।

इस सम्मेलन की प्रमुख अतिथि ससद सदस्या श्रीमती सूयकाता जी पाटील थी, उन्होने इस सम्मेलन मे दृढतापूर्वक कहा कि देश का एक सूत्र मे बाधने वाली भाषा ही होती है और तभी हम एक दूसरे को समझ सकते हैं।

इस सम्मेलन के अवसर पर अनेक राजकीय नेतागण वैधकीय अधिकारी प्राध्यापक सामाजिक कार्यकर्ता पत्रकार तथा राज्य अकादमी (हिन्दी के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

प्रभात आश्रम की प्रभा

गुरुकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री राजेन्द्र कुमार तथा श्री हिमाशु ने मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा दिनाक २९ १० ९२ को आयोजित अन्तर्विश्व-विद्यालयीन सस्कृत वाद विवाद भाषण प्रतियोगिता के विषय राजन्ते तावदन्यानि पुराणानि सता गणे। यावन्नदृश्यते साक्षाच्छीमद्भागवत परम। पर अपने पक्ष की प्रबल पुष्टि के पश्चात क्रमश सवप्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक एव रजत पदक सहित चल वैजयन्ती उपहार प्राप्त किये। गुरुकुल प्रभात आश्रम स्नातक मण्डल अपने स्नातक बन्धुओ की विजय से गव अनुभव करते हुए हर्ष प्रकट करता है, और अपने स्नातक बन्धुओ के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। जिन्होने आर्य जगत सहित गुरुकुल का गौरव बढाया है।

स्नातक मण्डल
गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला मेरठ-२५०५०

शराबबन्दी के लिए महिलाये भी मैदान में

८ नवम्बर। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे राष्ट्रीय शराबबन्दी परिषद द्वारा आयोजित महिला सम्मेलन मे शराबबन्दी के लिए कटिबद्ध महिलाओ ने अपने सकल्प दोहराये। सम्मेलन की सचालिका श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित ने कहा शराब का सबसे बुरा प्रभाव, भूख अभाव और उत्पीडन के रूप मे महिलाओ को झेलना पडता है इसलिए इस दुर्गुण को मिटाने के लिए अब वे पुरुषो से आगे हैं। मणिपुर, आन्ध्रप्रदेश उत्तराखण्ड आदि प्रदेशो मे वे स्वय सपर्क कर रही हैं।

देश के विभिन्न क्षेत्रो से आई अनेको महिला नेताओ ने शराब पान का घोर विरोध किया। परिषद की पूर्वाध्यक्ष श्रीमती सुशीला नैयर ने कहा, बोडोलैण्ड पजाब आदि का उग्रवाद शराब की देन है।

उत्तराखण्ड से राजाभटट हरियाणा से नसीब साहू, दिल्ली से निर्मला देशपाण्ड जम्मू से ललिता नागर, बिहार से कलावती देवी, कानपुर से मानवती आर्या नरेला से ब्रह्मचारिणी जबाला, डा शकुन्तला, सभी महिलाओ ने शराब के बढते प्रभाव पर रोष प्रकट किया और शराबबन्दी आन्दोलन मे कूदने का आह्वान किया। यह सभी महिलायें अपने अपने क्षेत्र मे शराबबन्दी आन्दोलन का नेतृत्व कर रही हैं।

पं० गोपदेव शास्त्री सम्मानित

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०९ वे निर्वाण दिवस पर श्रीमती परोप कारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान मे आयोजित दिनाक ३१ अक्टूबर, १९९२ को ऋषिमेला १९९२ के अवसर पर आन्ध्र प्रदेश के आर्य विद्वान प० गोपदेव शास्त्री, दर्शनाचार्य को राजस्थान राज्य के वन एव पर्यावरण मन्त्री श्री लालचन्द डूडी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास आर्य समाज फुलेरा के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार १९९२ से सम्मानित किया। पुरस्कार मे दस हजार रुपये नकद, दयानन्द स्वर्ण पदक उत्तरीय तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। आर्य समाज फुलेरा के मन्त्री श्री भवरलाल शर्मा ने अभिनन्दन-पत्र पढकर समर्पित किया। प० गोपदेव शास्त्री ने पुरस्कार मे प्राप्त दसहजार रुपये की राशि "अम्बारामार्य सत्यार्थप्रकाश ट्रस्ट सिकन्दराबाद को दान स्वरूप प्रदान की तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के सारे ग्रन्थो का तेलुगु अनुवाद एव अपनी अन्य पुस्तके परोपकारिणी सभा के पुस्तकालय को भेंट की जिनकी सख्या ६६ से अधिक है।

—भवरलाल शर्मा, अध्यक्ष

आर्य युवा महासम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान मे आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का नवम आर्य युवा महासम्मेलन का आयोजन किया गया है इस अवसर पर विभिन्न दिवसो मे खेल कूद, चित्र कला, सगीत, वाद विवाद, भाषण, निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया है। आर्य युवा महासम्मेलन का पुरस्कार वितरण समारोह १३ दिसम्बर १९९२ को प्रात नौ बजे तालकटोरा स्टेडियम मे सम्पन्न होगा। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे। समारोह के मुख्य अतिथि श्री महाशय धर्मपाल जी होगे। इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती प्रो शेरसिंह, डा वाचस्पति उपाध्याय व देवव्रत आचार्य श्रीमती व्रजबाला भल्ला आदि अपने विचार व्यक्त करेंगे।

गायत्री महायज्ञ एवं स्मृति सभा

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा तथा वैदिक सतसग समिति के सयुक्त तत्वावधान मे २२ नवम्बर से २५ नवम्बर तक गायत्री महायज्ञ तथा स्मृति सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात तथा साय आचार्य विश्वमित्र मेधावी के ब्रह्मत्व मे गायत्री महायज्ञ सम्पन्न किया गया। २५ नवम्बर को पूर्णाहुति के पश्चात सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने आर्य विदुषी स्वर्गीया श्रीमती सुदेश बजाज के ५४वे जन्म दिवस के अवसर पर उनकी स्मृति मे "सुदेश जीवनी सजीवनी' का लोकार्पण किया। समारोह मे श्रीमती शकुन्तला आर्या, आचार्य यशपाल सुधाशु, डा० धर्मपाल प० वृजलाल, डा० महेश विद्यालकार रामनाथ सहगल, तथा प लक्ष्मी नारायण आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

आर्य प्रतिनिधि सभा को साधारण सभा सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ का वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन, आर्य समाज छिन्दवाडा की व्यवस्था मे अग्रसेन भवन छिन्दवाडा मे दिनाक ७-८ नवम्बर को श्री रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे शालीनता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन मे सस्था से सम्बन्धित सामान्य नीति निर्धारण सम्बन्धी विषयो के अतिरिक्त वेद प्रचार नवयुवको एव युवा वर्ग म देश प्रेम, नैतिकता की महत्ता और आय शिक्षण सस्थाओ मे नैतिक शिक्षा का समावेश आदि सामाजिक विषयो पर सारगर्भित चर्चा हुई और निर्णय लिये गय।

सभा मे प्रदेश की ४५ आर्य समाजो के ८० प्रतिनिधियो न भाग लिया था। यह दो दिवसीय अधिवेशन अर्घ रात्रि तक चलता रहा।

योग साधना शिविर एव प्रवचन

आर्य समाज कीर्तिनगर नई दिल्ली मे २३ नवम्बर से २९ नवम्बर तक योग साधना शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर प्रात योग साधना, प्राणायाम, सायकाल को योग साधना और रात्रि ८ बजे से नौ बजे तक प्रवचन होगे। योग की शिक्षा स्वामी दिव्यानन्द जी देंगे।

मध्यप्रदेश के राज्यपाल कुंवर महमूदअली क्षत्रिय परमार वंशी हैं

मध्यप्रदेश क राज्यपाल कुवर महमूदअली खा ने कहा कि हमने भले ही अपनी उपासना पद्धति बदल ली है परन्तु इस तथ्य से इन्कार नही किया जा सकता कि हमारे पूर्वज हिन्दू थे।

उत्तरप्रदेश की रामपुर रियासत के रहने वाले कुवर महमूदअली अपने आपको धार के क्षत्रिय परमार शासको का वशज मानते है। कुछ समय पहले उन्होने धार से अपनी वशावली भी प्राप्त की थी।

कुवर महमूद अली खा ने पिछले दिनो बडी श्रद्धा के साथ धार के प्रसिद्ध कालिका देवी मन्दिर मे जाकर पूजा भी की थी। उनका मानना है कि राजा भोज भी वहा पूजा करने जाते थे।

गुरुकुलभूमि मे आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

दशहरा अवकाश के पावन अवसर पर विद्यालय महाविद्यालयो के विद्यार्थियो को भी पूर्ण लाभ प्राप्त हो इस दृष्टि से गुरुकुल आश्रम आमसेना मे ९ से १३ अक्तूबर तक पचदिवसीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे श्री अरुण मदन सुरे जी व्यायाम शिक्षक (प्रान्तीय सचालक महाराष्ट्र) ने आय वीरो को आसन, प्राणायाम क्रिया दण्ड बैठक, लाठी, भाला और कुफू का प्रशिक्षण बडी श्रद्धा व निष्ठापूर्वक दिया।

श्री स्वामी परमानन्द जी सरस्वती (कोरबा) और श्री विधिकेसन जी उत्कल आर्य वीर दल बौद्धिकाध्यक्ष ने आर्य वीरो को बौद्धिक उपदेश दिया।

—ब्र० जीववर्धन आर्य,

आर्य वीर दल क्रीड़ा प्रतियोगिता सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल सीमिति चौगामा क्षेत्र मे तथा भडल ग्राम मे १०-११-९२ की प्रात १० बजे से साय ५ बजे तक खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे निम्न स्थानो के आर्य वीरो ने भाग लिया। दाहा बिटावधा, गढ़ी गेंडबरा, भुण्डपुर, बामनौली, पलजी, नगला कनवाडा, निरपुडा शामली क्षेत्र से करौदा महाजन, खिजरपुर, खेडामस्तान, बहावडी, लिसाड आद के आर्य वीरो ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। तथा १५ नवम्बर को क्षेत्रीय विधायक श्री कटारसिंह जी ने प्रतियोगिता मे प्रथम, द्वितीय तृतीय आने वालो को पुरस्कार वितरित किये।

वैदिक ज्ञान मेला सम्पन्न

म हला आर्य समाज, उन्नाव के तत्वावधान मे गतवर्षो की भाति इस वष भी कार्तिकी पूर्णिमा के अवसर पर वैदिक ज्ञान मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिनाक ८ से ११ नवम्बर को प्रात साय यज्ञ, सन्ध्या-वन्दन, भजनोपदेश व व्याख्यान आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुये। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० सत्यानन्द शास्त्री वेदवागीश, अलवर (राजस्थान), प० सत्यदेव शास्त्री महोपदशक (वाराणसी) के व्याख्यान हुये तथा अमरोहा से पधारे श्री तेजपाल आय व श्रीमती आशा आर्या के भजनोपदेशो ने श्रोताओ को आत्म बिभोर कर दिया। इस वष १० नवम्बर को सामूहिक यज्ञोपवीत का भी कार्यक्रम रखा गया था।

वयोवृद्ध समाज सुधारक दान मल सिंघवी का नागरिक अभिनन्दन

आर्य समाज सरदारपुरा के तत्वावधान म १५ नवम्बर को सुबह ११ बजे विशेष समारोह मे वयोवृद्ध आर्य समाज सेवी श्री दानमल सिघवी को उनकी उल्लेखनीय सामाजिक सेवाओ के लिये नागरिक अभिनन्दन किया गया। उन्होने जीवन पर्यन्त सामाजिक करीतियो एव रूढियो के विरुद्ध सघष करने का अनुकरणीय आदश प्रस्तुत किया है। इस अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता नगर सुधार न्यास के अध्यक्ष श्री चम्पालाल सालेचा ने की। समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार श्री नेमीचन्द्र जैन भावुक थे। इस अवसर पर अनेको विद्वानो न सिघवी जी से सम्बन्धित सारगर्भित विचार व्यक्त किये।

—सुखदेव गोयल, मन्त्री
आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर

पीस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/६२ सावदेशिक साप्ताहिक (२९ ११ १९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ९३
R N 626/57 L censed to post without prepayment License No U 93Post in N D P S O on 26 27 11 1992



दयानन्द विद्या निकेतन दोमापुर अ भा दयानन्द सेवाश्रम सघ (उ पू भारत द्वारा सचालित विद्यालय । गत माह सघ के महामन्त्री श्री देवव्रत महता मन्त्री श्रीमती प्रेमलता खन्ना और श्रीमती ईश्वररानी महता ने उ० पूर्वी भारत के सभी केन्द्रो का दौरा किया ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का ११० वां निर्वाण दिवस मनाया गया

—बम्बई की समस्त आय समाजो की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा क तत्वावधान म रविवार दिनाक १८ १० ९२ की प्रात ८ बजे से १ बजे तक आय समाज मन्दिर सान्ताक्रुज [प०] मे महर्षि दयानन्द सरस्वता का ११०वा निर्वाण दिवस मनाया गया । समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान श्री ओकारनाथ जी आय ने की ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे भारत सरकार खादी ग्रामोद्योग कमीशन के अध्यक्ष श्री डा० यशवीरसिह जी एव डा० राम मनोहर जी त्रिपाठा अध्यक्ष हिन्दी साहित्य अकादमो महाराष्ट्र एव पूर्व राज्यमन्त्री डा० सोमदेव जी शास्त्री श्री प्रकाशचन्द जा त्यागी अध्यक्ष सस्कृत विभाग भारतीय विद्या भवन कप्टिन देवरत्न जी आय श्रीमती लज्जारानी जी गोयन ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की ।

—आयसमाज बोरकलब की आर से महर्षि दयानन्द निर्वाणउत्सव म कडा आय ब धुओ तथा मानाओ और बहिनो के साथ यह यह काय क्रम २ से ६ नवम्ब १९९२ नक वड घूमधाम से मनाया गया । इसम माननीय प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री का कथा और माननीय श्री गुलाब सिह राघव नी के सु दर भजनो द्वारा अमृत वर्षा की गई इस अमृत वर्षा का सभी श्रोतागणो ने अधिक सख्या मे एकचित्त होकर पान किया ।

नोट—दोपहर १ से २ बज तक सरकारी अवकाश क अतिरिक्त नित्य सत्सग लगता है । यह सत्सग लगभग १६ वर्ष से (वैदिक प्रचार)सुचारु रूप स चल रहा है कृपया आकर धम का लाभ उठाए ।

—बलेश कुमार आर्य मन्त्री

—दिना २५ १० ९२ को अ यसमाज सगरूर के प्रागण मे आय वीर दल एव आयकुमार सभा का ओर स ऋषि निर्वाण दिवस बडी धमधाम स मनाया गया ऋषि निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य मे एक दिन पूव दिनाक २४ १० ९२ को प्रात ५ ३० बजे से ७ ३० बजे तक विशाल प्रभात फरी निकाली गयी । जिसमे लाजपतराय आय कन्या विद्यालय की छात्राओ एव शिक्षक वग तथा नगर की सभी आय सस्थाओ ने भी भाग लिया । ऋषि निर्वाण दिवस का कार्यक्रम दिनाक २५ १० ९२ को प्रात ७ ३० बजे से ११ बजे तक चला ।

—रामसुफल शास्त्री सचालक
आय वीर दल एव आर्य कुमार सभा सगरूर

मागलिक समाचार

ज्ञानपुर वाराणसी) सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी के तृतीय पुत्र श्री ज्ञानेन्दु द्विवेदी का विवाह आयु० सुनीता के साथ गाजीपुर मे पूण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर नगर के गणमान्य नागरिक प्रशासनिक अधिकारी एव विद्वान उपस्थित थे । उन्होने नवदम्पति को आशीर्वाद दिया । — आर्येन्द्र द्विवेदी

विश्वभारती अनुसन्धान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी)

वेद कथा एव यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आय समाज मेन बाजार रानी बाग शकूर बस्ती दिल्ली ३४ मे वेद कथा एव यजुवद पारायण महायज्ञ का आयोजन २३ नवम्बर से २९ नवम्बर १९९२ तक किया गया है । इस अवसर पर २८ नवम्बर तक प्रतिदिन रात्रि ८ से १० बज तक भजन तथा उपदेश होगे । २९ नवम्बर को प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति आचाय श्री अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न होगी । तत्पश्चात भजन तथा विद्वानो के उपदेश आदि होगे ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित ।

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

वर्ष ३० अंक ४५] | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ | पौष कृ० ११ | सं० २०४९ २० दिसम्बर १९९२

महर्षि दयानन्द उवाच

- जगत को मिथ्या मानने मे जगत की उन्नति, परस्पर प्रीति और विद्या आदि गुणो की प्राप्ति करने मे पुरुषार्थ और श्रद्धा अत्यन्त नष्ट होने से जगत के जितने उत्तम कार्य हैं, वे सब नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं।
- मेरा दृढ विश्वास है कि मेरे देशवासियो की अबाध राजनीतिक उन्नति और ससार के राज्यो मे समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए।
- जिस पुरुष की व स्त्री की विद्या धर्म वृद्धि और सब ससार का उपकार करना ही प्रयोजन हो वह विवाह न करे।

आर्य समाज द्वारा 'आर० एस० एस० तथा विश्व हिन्दू परिषद् पर प्रतिबन्ध की निन्दा

राष्ट्र रक्षा में सदा जागरूक हों

वाजस्येम प्रसव सुषुवेऽग्रे,
सोमꣳ राजानमोषधीष्वप्सु।
ता अस्मभ्य मधुमतीर्भवन्तु,
वयꣳराष्ट्रे जागृयाम
पुरोहिता स्वाहा॥

यजु० ६। २३

अनुशीलन—इस मन्त्र मे शिक्षा दी गई कि राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हम सदा जागरूक रहें।

किसी भी राष्ट्र या देश की सुरक्षा वहा के निवासियो की जागरूकता पर निर्भर है। जहा व्यक्ति सावधान हैं जागरूक है और कर्तव्य-निष्ठ हैं, वहा शत्रु आक्रमण करने का साहस नहीं कर सकते है। जहा असावधानी प्रमाद और आलस्य है, वही पर बाहरी आक्रमण होते है। राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति मे जागरूकता हो, इसके लिए राष्ट्र के प्रत्येक स्तर पर कार्य करना आवश्यक है। देश को ऊचा उठाना या गिराना यह युवको पर निर्भर है। युवा वर्ग यदि अपने कर्तव्यो को ठीक समझकर उच्च चरित्र वाला होगा, तो देश आगे बढेगा अन्यथा नहीं।

मन्त्र मे दूसरी बात कही गई है कि सृष्टि का प्रारम्भ जल से हुआ है। उपनिषदो आदि मे भी सृष्टि का प्रारम्भ जल से माना गया है। जलीय सृष्टि के बाद औषधिया और वनस्पतिया हुई। उनसे आगे सृष्टि क्रम चला। जल और वनस्पतिया मानवमात्र के लिए शुभ एव हितकर हो, यह प्रार्थना मन्त्र में की गई है।

नई दिल्ली १२ दिसम्बर।

आर्य समाज की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ तथा विश्व हिन्दू परिषद् पर गैर कानूनी गतिविधि निरोधक कानून के अन्तर्गत प्रतिबन्ध लगाये जाने की कडी निन्दा की है। एक वक्तव्य मे स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री से अपील करते हुए कहा है कि वे अपने विवेक से देश के बहुमत की भावनाओ का आदर करते हुए इस निर्णय पर पुर्नविचार करे और यह अनावश्यक पाबन्दी हटाई जानी चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि समूचा देश साम्प्रदायिकता की आग मे झुलस रहा है। देश के अन्दर तथा बाहर, विशेष रूप से पाकिस्तान बगलादेश तथा इगलैण्ड मे मन्दिरो को तोडा और जलाया जा रहा है, जिससे बहुमत का दिल आहत है। प्रतिबन्ध आदेश को अनुचित ठहराते हुए वक्तव्य मे कहा गया है कि केन्द्र सरकार ने मुस्लिम लीग को इस आदेश के बाहर क्यो रखा है जिसने १९४७ मे देश का बटवारा कराने मे मुख्य भूमिका निभाई थी और आज भी उसकी नीति वही है। स्वामी जी ने कहा कि इसी लीग के प्रधान सुलेमान सेठ ने अयोध्या घटनाओ के बाद प्रधानमन्त्री के इस्तीफे की माग की थी। स्वामी जी ने सरकार से प्रश्न करते हुए कहा कि श्री लालकृष्ण अडवाणी और मुरली मनोहर जोशी को ससद के दोनो सदनो मे अपनी सफाई पेश करने का अवसर दिया जाना चाहिए था जिससे वे तथ्यो को देश के समक्ष रख पाते।

स्वामी जी ने कहा कि हिन्दू नेताओ द्वारा ६ दिसम्बर की घटना के लिए अविलम्ब खेद व्यक्त कर दिया गया था। सघ तथा विहिप के उच्च नेता इतनी बडी भीड पर नियन्त्रण नही पा सके जिसमे कुछ असामाजिक तथा अवाछनीय तत्व घुसपैठ कर गये थे और ४०० साल पुराने ढाचे को नुकसान पहुचाया जो कि बुद्धिमत्ता का काम नही था। परन्तु इसके विपरीत सरकार ने अल्पसख्यक समुदाय को प्रसन्न करने के लिए वरिष्ठ तथा जिम्मेवार नेताओ को राजद्रोह के आरोप मे गिरफ्तार किया और उनके सामाजिक तथा राष्ट्रीय सगठनो पर प्रतिबन्ध लगा दिया जो कि न तो कानून सम्मत है और न उचित।

स्वामी जी ने कहा कि यदि यह प्रतिबन्ध तथा मुकदमे वापिस न लिये गये तो देश मे न बुझने वाली आग सुलगती रहेगी। उन्होने कहा कि वामपन्थी ताकतो के प्रभाव मे किये गये इन निर्णयो से राष्ट्रीय एकता और शान्ति के बनाये रखने के उद्देश्यो को प्राप्त नही किया जा सकेगा।

आर्य नेता ने केन्द्रीय सरकार को चेतावनी देते हुए कहा है कि हिन्दू इस प्रकार की घटिया और घृणित राजनीति को कदापि बर्दास्त नही करगे जिसके परिणाम स्वरूप सैकडो मन्दिरो को तोडा जाये और बेकसूर लोगो का कत्ल किया जाये। अत देश के भविष्य को सुधारने के लिए सरकार उदारता पूर्वक इन नेताओ पर चलाये गये मुकदमो को वापिस ले तथा हिन्दू सगठनो पर लगाये गये समस्त प्रतिबन्ध आदेश निरस्त किये जाय।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रकाण्ड वैदिक विद्वान प० राजगुरु शर्मा नही रहे



आय जगत के सुप्रसिद्ध वदिक विद्वान तथा सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान प० राजगुरु शर्मा महू निवासी का २८ नवम्बर को ७० वष की आयु मे दिल का दौरा पडने से नई दिल्ली मे निधन हो गया है। उनका शव हवाई जहाज से उनके पैतृक स्थान महू २९ नवम्बर को भेजा गया था। जहा उनका अन्तिम सस्कार वैदिक मन्त्रोचार के साथ किया गया।

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे आयोजित शोक सभा मे सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उदयपुर से लौटते ही उनके निधन पर गहरा दुख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धाजलि मे कहा कि पण्डित राजगुरु जी आय जगत के प्रकाण्ड विद्वान और बौद्धिक बल थे। पिछले कई वर्षों से वह सार्वदेशिक सभा के अधिकारी रहते आये थे। उन्होने जीवन भर महर्षि दयानन्द और आय समाज के उपदेशो और सिद्धातो का प्रबल प्रचार किया था। वह वैदिक यज्ञ के सुप्रसिद्ध विद्वान और कुशल वक्ता थे। सम्पूर्ण आर्य जगत में बृहद् यज्ञो के अनुष्ठान मुख्यत उनसे ही सम्पन्न कराये जाते थे।

स्वामी जी ने कहा उनका निधन आय समाज की ही नही अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। ऐसे अवसर पर जबकि आर्य समाज को उनके माग दशन और नेतृत्व की नितान्त आवश्यकता थी उनका ससार से अचानक चले जाना हम सबके लिए व्यक्तिगत आघात भी है।

शोक सभा मे दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्राथना करते हुए शोक सतप्त परिवार और उनकी विधवा पत्नी के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की गई। शोक सभा के उपरान्त सभा कार्यालय बन्द कर दिया गया।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सावदेशिक सभा दिल्ली

वार्षिकोत्सव

—आय समाज दिलशाद गार्डन का चतुर्दवर्षीय वार्षिकोत्सव ८ नव० ९२ को समारोह पूवक सम्पन्न हुआ। वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे चार दिनो तक वेद शतक यज्ञ प० भूदेव शास्त्री व प० प्रणव शास्त्री के ब्रह्मत्व मे आयोजित किया गया। आचार्य क्षमचन्द्र सुमन के ध्वजारोहण के साथ मुख्य समारोह का प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर आचाय यशपाल सुधाशु डा० धमपाल स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ब्र० आय नरेश तथा श्री गुलाबसिंह राघव आदि ने आयजनता को सम्बोधित किया। समारोह के पश्चात ऋषिलगर की व्यवस्था क गई थी।

—आय समाज बिरला लाइस दिल्ली का वार्षिकोत्सव २३ से २९ नवम्बर तक उल्लासपूर्ण वातावरण मे मनाया गया। इस अवसर पर प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व म साम-वेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया था। वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे प्रतिदिन रात्रि मे प० अभिविनय भारती के द्वारा वेद कथा का कार्यक्रम रखा गया था। २९ नवम्बर को मुख्य समारोह मे श्री जगदीश टाइटलर मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे थे।

—आर्यसमाज वेस्टन रोड कानपुर का ११३ वा वार्षिकोत्सव १८ से २१ फरवरी ९३ तक समारोह पूवक मनाया जायेगा। जिसमे आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे है। १९ से २१ फरवरी को मुख्य समारोह आयोजित किया जाएगा।

सूचना

पाठको को सूचित किया जाता है कि दिल्ली म कर्फ्यू के कारण दिनाक १३ १२ ९२ का अक प्रकाशित नही हो सका। इसका हम खेद है।

—सम्पादक

रजत जयन्ती महोत्सव एवं गायत्री महायज्ञ

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थादला जि० झाबुआ म० प्र० दिनाक १२ से १४ जनवरी ९३ तक अपना रजत जयन्ती महोत्सव एव विशाल गायत्री महा यज्ञ का आयोजन करने जा रहा है। इस अवसर पर अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ दिल्ली के पूव महामन्त्री स्व० श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य मे कन्या आश्रम भवन का उदघाटन तथा एक स्मारिका का विमोचन भी किया जाएगा। इस अवसर पर बाल मेला आय वीर दल शिविर वनवासी सम्मेलन महिला सम्मेलन अग्रजी हटाओ तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनी के उत्पादन प्रयोग का विरोध भी सन्निहित है। समारोह म १४ १ ९३ को कन्या आश्रम भवन का उदघाटन सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के द्वारा सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आय जगत के मूर्धन्य विद्वान सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

सम्पादकीय

धर्म चिन्तन में—

मस्जिद मन्दिर तथा मस्जिद मस्जिद में विवाद

भारत मे आजकल बाबरी मस्जिद पर राम जन्मभूमि मन्दिर का विवाद जोरो पर है। मन्दिर और मस्जिद के मध्य लड़ाई तो समझ मे आती है किन्तु भारत मे व भारत से बाहर के देशो मे मस्जिद मस्जिद के बीच की लडाइ नादानी से पूर्ण है। भारत का मुसलमान लड रहा है कि मस्जिद की जगह मन्दिर नही बनेगा। इस मन्दिर मस्जिद के विवाद ने सारे देश की नीद हराम कर रखी है।

दूसरी ओर भारत मे व पाक० आदि देशो मे शिया और सुन्नी एक दूसरे की मस्जिद के दुश्मन हैं। इसी के साथ एक तीसरा समुदाय है जिन्हे अहमदिया (कादियानी) मुसलमान कहते हैं। अहमदियो को पाक० मे मुस्लिम नही माना जाता है वहा अहमदियो को गैर मुस्लिम समुदाय के रूप मे मान्यता प्राप्त है।

वे आम मुस्लिम की तरह मस्जिदो मे भी नही जा सकते हैं उनकी मस्जिदें अलग हैं। मजहब मे "इस्लाम" लिखने का अधिकार नही है। पाक० की तरह ईरान मे अहमदियो का निर्दयता पूर्वक हत्या कर सफाया कर दिया है।

भारत मे सबसे बडा केन्द्र पजाब मे कादियान है यही से अहमदिया पथ से सम्बन्धित साहित्य भी प्रकाशित होता है। अहमदिये चू कि पैगम्बर मुहम्मद के अलावा भी अपना एक खलीफा मानते है। इससे बहुतायत देशो मे इनके प्रति द्वेष घृणाके भाव भरेहैं। बड़े समयसे इनकी हत्या के साथ ही बगलादेश पाक आदि देशो मे कट्टर पन्थियो ने मस्जिदें ही जलाकर खाक कर दी।

आश्चर्य यह है कि मस्जिद के जलाने पर किसी वर्ग के मुसलमान, या किसी सैक्युलर वादी के पेट मे पीडा नहीं हुई।

यह कट्टर पन्थ क्यो ?

भारत के कट्टर-पन्थी मुसलमानो स जब यह प्रश्न पूछा जाता है कि आप मुसलमान होकर मुस्लिमो की मस्जिदो का विरोध तोड़ फोड़ क्यो करते हो।

जब बाबरी मस्जिद का हटाना या तोडना कटटर मुस्लिमो को जायज नही तो फिर अहमदियो की मस्जिद तोडना किस प्रकार उचित माना जाय।

तब वे कहते हैं कि हम अहमदियो को मुसलमान ही नही मानते हैं। क्योकि वह हमारे पैगम्बर हजरत मुहम्मद को अपना अन्तिम पैगम्बर नही मानते हैं। दूसरे यह कि वे हिन्दुओ के राम कृष्ण बुद्ध को भी पैगम्बर मानते है उन्हे अवतार मानते हैं ? जो राम को मानेगा वह भला राम मन्दिर बनाने का विरोध क्यो करेगा। हिन्दू पन्थ उनके अधिक समीप होगा। यह कभी भी स्वीकार नही करेंगे। अत हम विरोध भी करेंगे विरोधी का साथ भी देंगे।

भारत मे भी अहमदिया काफिर और पाक० मे भी।

अभी नई सूचना के अनुसार बगला देश के बक्सी बाजार ढाका मे स्थित अहमदिया मस्जिद को सुन्नी मुसलमानो के एक वग न आग लगाकर खाक मे मिला दिया।

अहमदिया मिशन के एक प्रवक्ता के अनुसार एक करोड़ रुपये से भी अधिक की हानि हुई है। दोपहर नुमाज के समय हमला किया जिसमे काफी अहमदिये घायल व मरे है। मस्जिद जलाकर लौट रही भीड नारे लगा रही थी कि—

जो इनको बचायेगा वह हमारे हाथो से बचकर नही जायेगा। अहमदिया प्रचारक का कहना है कि बगलादेश मे १५० से ऊपर मस्जिदे हैं जो खतरे से घिरी हुई है जो कभी भी तोडी जा सकती है।

मस्जिदो मे परचे बाटे जाते हैं जिनमे अहमदियो को काफिर कहा जाता है कुरान और हदीस का प्रमाण देकर वे कहत है कि इन अहमदियो को मारना और उनकी मस्जिदो को नष्ट करना इस्लाम की सेवा करने जैसा है।

भारत मे इन कठमुल्ला कट्टरवादियो से प्रश्न किया जाता है कि तुम सभी मुस्लिम होकर भी मुस्लिमो की मस्जिदो का विरोध क्यो करते हो ? जब बाबरी मस्जिद हटाना या तोड़ना क्या जायज नही है उनका कहना है कि हम अहमदियो को मुसलमान ही नही मानने पैगम्बरे इस्लाम को आखिरी पैगम्बर वह नही मानते फिर उन्हे काफिर ही माना जायगा जो कि आवश्यकीय हत्या के योग्य है।

आज का खतरा

चाणक्य की नीति है कि घर को घुसपैठियो से बचाओ ?

किसी देश को कमजोर करना और उसे मिटाना हो तो ऐसे गुप्तचरो को उस देश मे भेजो जो अन्दर जाकर तोड फोड करे देश को हानि पहुचाकर इस लायक न होने दो कि वह समथ हो जाय।

चाणक्य न नन्द वश को विनष्ट करने के लिये अप" गुप्तचर उन्ही के व्यक्ति बताकर उनके यहा भेजकर नन्द वश का नाश कर दिया।

आज आजादी के बाद भारत की भी यही दशा है—लाखो नही करोडो घुसपैठिये आज देश मे आ गये हैं और हमारी दुबल नीति का लाभ उठाकर आदिवासी भी बन गये हैं जिसका समय २ पर विरोध भी किया गया पर हमारी नीद नही खुली।

आज देश मे अन्दरूनी खतरे पैदा हो रहे हैं तो सरकार की निद्रा टूटी और घुसपैठियो को निकालने पर विचार किया और उन्हे देश से बाहर करने को कृत सकल्प हैं ? परन्तु

जब खजाना लुट गया फिर होश म आये तो क्या ?

आज देश को बाहर से इतना खतरा नही है जितना भीतर के घुसपैठियो से हो गया है।

अक्ल तो आती है मगर वक्त पर नहीं आती

प्रधानमन्त्री श्री पी वी नरसिम्हाराव ने गत दिवस सीमा सुरक्षा बल के ३७ वे स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित परेड को सम्बोधित करते हुए देश की पूर्वी सीमा पर हो रही अवैध घुसपैठ पर चिन्ता की अभिव्यक्ति की, मगर साथ ही यह भी कहा कि इस घुसपैठ को रोकने के लिए हम उन तरीको का इस्तेमाल नही कर सकते जिनका इस्तेमाल आतकवादियो की घुसपैठ रोकने के लिए किया जा रहा है। उन्होने कहा कि पूर्वी सीमा पर समस्या आतकवादियो की नहीं है बल्कि लोग बेहतर भविष्य की तलाश मे घुसपैठ करना चाहते हैं।

इस सन्दर्भ मे यह लिखना असगत नही होगा कि जब असम मे आन्दोलन आरम्भ हुआ तो वहा के छात्र रह रह कर एक ही माग करते थे कि जो विदेशी घुसपैठिए असम में आ गए हैं और आ रहे हैं, उनकी वजह से असम के लोग अल्पमत में आ जायेंगे और असमियो के लिए भविष्य में तरह-तरह की कठिनाइया और परेशानिया पैदा हो जायेंगी मगर उनकी बात अनसुनी कर दी गई।

अन्तत अब इतना नुकसान हो चुकने के बाद देश की पूर्वी सीमा पर हो रही घुसपैठ के बारे मे जो चिन्ता प्रधानमन्त्री ने व्यक्त की है उससे स्पष्ट है कि असम के लोगो की चिन्ता निर्मूल नहीं थी। बहरहाल, प्रधानमन्त्री ने जो यह कहा है कि इस घुसपैठ को रोकने के लिए उन तरीको का इस्तेमाल नही किया जा सकता जो आतकवादियो की घसपैठ को रोकन के लिए किए जा रहे है उससे स्पष्ट है कि वह घुसपैठियो का पकडने या मारने की कार्य-विधि नही अपनाना चाहत अत जरूरत इस बात की है कि वहा घुसपैठ को रोकने के लिए उसी तरह सीमा पर फैंसिग ब्बी ट्रैप्स पास-पास चौकिया स्थापित करने और सर्चलाइट आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए जैसे पजाब की पाकिस्तान से लगती हुई सीमा पर की गई है।

जिस ढग से भारी सख्या म बगलादेश के लोग बेहतर भविष्य की खोज मे हमारी पूर्वी सीमा में प्रविष्ट हो रहे हैं उसे यदि तुरन्त न रोका गया तो पूर्वी प्रदेशा में रहने वाले हमारे अपने ही लोगो के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा। इस सिलसिल के न रुकने से पूर्वी प्रदेशो मे तो बेचैनी और आर्थिक समस्यायें पैदा होगी ही उनके निकटवर्ती प्रदेश भी कठिनाई बेचैनी और आर्थिक विषमता की लपेट म आए बगैर नही रहेगे।

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वनामधन्य श्री राजगुरु

नेत्रपाल शास्त्री, आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली-६

तथाकथित समाचार मे सन्देह के लिए लेशमात्र भी स्थान नही है कि श्री राजगुरु जी अब संसार मे नही रहे। उक्त दुःखद समाचार नवलखा महल स्त्रीकरण आर्य सम्मेलन समारोह उदयपुर (राजस्थान) मे सुनने को मिला। सुनते ही वहा उपस्थित हजारो आर्य बहिन भाई शोक सागर में डूब गए।

कहना न होगा—अब श्री राजगुरु जी के दर्शन असम्भव है। परन्तु उनका अनुकरणीय चरित्र आर्य जगत विस्मृत नही कर पायेगा। उनके सम्बन्ध मे इतना भी कहना पर्याप्त होगा कि वे आर्यसमाज के प्रति व स्नेह मे ही समर्पित व्यक्ति थे।

गुरुजी निरन्तर चालीस वर्षो मे आर्यसमाज की सेवा मे सलग्न रहे। इन चालीस वर्षो म उन्होने आर्यसमाज के कार्य मे जहा गति प्रदान की वहा चेतना स्फूर्ति भी उत्पन्न की।

क्योकि वे सबसे हृदय से स्नेह करते थे इसी लिए वे सबके प्यारे थे। वे कार्य कुशलता तथा क्षमता के धनी थे वे वास्तव मे ही कर्म योगी थे। अनथक परिश्रम करना उनका स्वभाव था। वह नर भी थे और नारायण भी। नारायण जल का वाचक है। अर्थात उनका जीवन कमलवत था।

कर्मकाण्ड के वे प्रकाण्ड पण्डित थे यज्ञ कुण्ड के कितने प्रकार है कौनसा यज्ञकुण्ड कितनी इष्टिकाओ ईण्टो) से निर्मित होना है यज्ञ सामग्री समिधा तथा पात्रो का ज्ञान उनको अच्छी प्रकार से था।

यज्ञ सम्पन्नता के लिए सत्य ज्ञान आदि का होना परमावश्यक है ये गुण उनमे परिलक्षित होते थे। यज्ञ का प्रतिष्ठा सत्य पर है। सत्य ज्ञान सत्य वाणी सत्य कर्म सत्य श्रद्धा सत्य नियम के बिना कोई यज्ञ सम्पन्न नही हो सकता। वास्तव मे सत्य ही मूल है जिससे यज्ञ को पल्लवित किया जाता है ऐसी उनकी अवधारणा थी।

गुरु जी यज्ञ का मन का विचार पूर्वक कार्य मानते थे। और मन की पवित्रता यज्ञ के द्वारा ही सम्पन्न होती है ऐसा उनका कथन था यज्ञ के सम्बन्ध म उनका गहन अध्ययन था।

यह कहना अतिशयोक्ति नही होगी कि यज्ञ और राजगुरु जी एक दूसरे के पर्याय बन चुके थे। क्योकि उनका जीवन ही यज्ञमय था। उन्होने अपनी योग्यता कार्य कुशलता तथा विद्वत्ता के अनुसार देश और विदेश म स्थान स्थान पर बड़े बड़े विशाल यज्ञो का सम्पन्न कराया।

चार बवर्ची, भिस्तीखान

गुरु जी के जीवन मे उक्त कहावत अक्षरश घटित होता है। जहा भी उनको यज्ञ कराने के लिए आमन्त्रित किया जाता था। वहा वह एक दो दिन पहले ही पहुच जाते थे। यज्ञ मण्डप का निर्माण वे स्वय अपने हाथो से करते थे। मिट्टी खोदना है तो मिटटी खोदते थे। भूमि को समतल बनाने के लिए मजदूरो के साथ जुट जाते थे। यज्ञ वेदी को सजाने के लिए व र बार मोडा नसेनी) से उतरते चढते थे। यज्ञ सज्जा म वे खाना पीना भी भूल जाते थे।

पानी लाना गारा बनाना लेपना लीपना आदि कार्य सहायको के साथ वे स्वय ही करते थे। इनके भीतर सकोच नाम की चीज नही थी। जब तक यज्ञशाला सब प्रकार से बनकर तैयार नही हो जाती थी तब तक वे चैन से नही बैठते थे।

पाकशास्त्र मे भी वे निपुण थे। उनके हाथ का बना भोजन अति स्वादिष्ट होता था। भोजन वे स्वय बनाना ही पसन्द करते थे। जहा साधन उपलब्ध हो जाते थे वहा वे भोजन स्वय ही बनाते थे। न अकेले रहते थे और न अकेले खाते थे।

पीर तो थे ही वे याज्ञिक थे विद्वान थे। वेदमन्त्रो के व्याख्याता थे। अच्छे वक्ता तो [illegible] थे। उनमे अच्छे प्रबन्धक तथा व्यवस्थापक के गुण थे। यज्ञ दर्शन के मर्मज्ञ थे।

गुरु जी एक अच्छे वैद्य भी थे। वह भी ययाति रूप मे। उनका औषधालय उनके साथ ही रहता था। खरल भी उनके अंग-संग ही रहा करता था। और खरल करते करते ही वे ब्रह्मलीन हो गए।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

२५ दिसम्बर ९२ शुक्रवार

यज्ञ के उपरान्त प्रात १० बजे

विशाल शोभायात्रा

श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर साय ३ बजे लालकिला मैदान म सार्वजनिक सभा के रूप मे परिणित हो जाएगी जिसमे अनेक आर्य विद्वान व राष्ट्रीय नेता स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान सेनानी प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री गुरुकुल कागडी के सस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करगे। शोभायात्रा एव विराट जनसभा मे अधिकाधिक सख्या मे पधारने की कृपा कर।

इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्राचार्य सत्यप्रिय शास्त्री को मेजर डा०) अश्विनी कुमार कण्व वैदिक विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

महाशय धर्मपाल — प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१

विदेश मे आर्यसमाज के बढ़ते कदम

अमरीका से श्री त्रिलोकीनाथ भट्ट लिखते हैं

श्रीमती ऊषा सैनी जी आगरा उ०प्र० की निवासिनी है आजकल अमरीकीय आर्य सगठन की अध्यक्षा है। सस्कृत मे एम०ए० है वहा कालेज म सस्कृत हिन्दी की लेक्चरार है। विदुषी महिला है।

ऊषा जी के पतिदेव भी धर्म परायण व्यक्ति है उन्ही के सहयोग से आर्य समाज का कार्य तन्मयता लगन व श्रद्धा से चल रहा है।

आज विभिन्न स्थानो पर प्रत्येक मास किसी भी सदस्य के घर पारिवारिक सत्सग लगाती है जिसमे ५० ६० स्त्री पुरुष दूर दूर से आकर सम्मिलित होते है आर्थिक दशा ठीक न होने से स्थान का अभाव है और उपदेशक आदि को बाहर से बुलाने म भी धन ही रुकावट है।

ऊषा जी व उनके पतिदेव के विवेक और सकल्प शक्ति से कार्य सचालित है जो अत्यन्त प्रशसनीय है।

यहा कई पौराणिक सस्थाए भी धर्म प्रचार म लगी है। उनमे ऊषा जी के परिवार के साथ श्री त्रिलोकीनाथ भटट का परिवार भी सहयोगी बन गया है।

इसी वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सस्था वैदिक शिक्षा के प्रचार हेतु स्थापित हुई है उनका चिन्ह (ओ३म) है पौराणिक है।

श्री त्रिलोकीनाथ जी भटट आज कल अपने पुत्र के पास गये हैं पर वहा भी आप शान्त न बैठकर श्रीमती ऊषा जी के साथ धर्म प्रचार मे तत्पर है।

प्रभु ऊषा परिवार को शक्ति दे कि वे और अधिक धर्म प्रचार कर सके।

आर्यसमाज के नियम और ऋषि दयानन्द

—आचार्य दत्तात्रेय बाब्ले, आर्य

इसमे सन्देह नही कि आर्य समाज के वर्तमान दस नियम अत्यन्त व्यापक और सार्वभौम रूप से स्वीकृत किये जाने योग्य है उनमे भी यदि प्रथम तीन नियमो को छोड़ दिया जाय तो बाकी के सात ऐसे हैं जिन्हें किसी सम्प्रदाय जाति या राष्ट्र के किसी निष्पक्ष व्यक्ति को स्वीकार करने मे कोई आपत्ति नही हो सकती। इन नियमो की एक दूसरी विशेषता यह है कि ये अत्यन्त संक्षिप्त, सरल और हिन्दी की बीस पंक्तियो मे गागर मे सागर के समान अपनी एक विशेषता को प्रदर्शित करते हैं।

जहा तक प्रथम तीन नियमो का प्रश्न है उनका सीधा सम्बन्ध ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित उस वैदिक धर्म से है जिसका प्रचार और प्रसार वह करना चाहते थे, इन तीनो नियमो मे ईश्वर विश्वास और उसके द्वारा वेदो के रूप मे प्रदत्त ज्ञान का उल्लेख है इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जहा बाकी के सात नियमो का सम्बन्ध किसी धार्मिक मान्यता से नहीं है वही पहले तीन नियम स्पष्ट रूप से ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म के आधार हैं।

प्रचारक धर्म :

यह भी निर्विवाद है कि ऋषि दयानन्द अपने इस वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार करना चाहते थे और इसीलिए उन्होने आर्य समाज की स्थापना की। यह भी उल्लेखनीय है कि जिसे पौराणिक या हिन्दू धर्म कहा जाता है वह उनके अनुयायियो और नेताओ के स्वय के अनुसार उस प्रकार का प्रचारक धर्म नही है जैसा इस्लाम, ईसाई और स्वय आर्य समाज। इसके विपरीत महात्मा गाधी और उसके बाद धर्म निरपेक्षता के उनके प्राय सब अनुयायी भी यह कहते हैं कि हमारे देश की धर्म निरपेक्षता की विशेषता ही यह है कि वह सब धर्मों को समान समझता है। दूसरे शब्दो मे जहा धर्म निरपेक्षता का आधुनिक अर्थ यह है कि राज्य का किसी भी धर्म से कोई सम्बन्ध नही है वहीं भारत एक सर्व धर्म सापेक्ष राज्य है। जिसमे सब धर्मों के प्रति समान आस्था का सिद्धात स्वीकार किया गया है। ऐसी स्थिति मे जैसा महात्मा गाधी स्वय भी कहते थे कि किसी एक धर्म के अनुयायी के धार्मिक विश्वास को बदलने का प्रयत्न तक अनुचित है इसीलिए हिन्दू धर्म एक प्रचारक धर्म न होकर सब धर्मों के प्रति आदर रखने का समर्थक है इसे हिन्दू धर्म की उदारता, व्यापकता और सहिष्णुता कहकर भी प्रशसा की जाती रही है। इस मान्यता पर टीका टिप्पणी करने की यहा प्रासगिकता नही है, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जिसे हिन्दू धर्म की उदारता कहा जाता है, दूसरे व्यक्ति उसे उसकी निर्बलता समझते हैं इसी प्रकार उसकी उदारता को भी उसकी कायरता और असमर्थता का द्योतक समझा जाता है। चाहे जो हो, जहा तक आर्य समाज का सम्बन्ध है वह स्पष्ट रूप से सारे ससार को आर्य बनाने का स्वप्न देखता है इस दृष्टि से वह भी इस्लाम और ईसाई धर्मो के समान ऐसा एक प्रचारक धर्म है जो न केवल पौराणिक हिन्दुओ अपितु जन्म के ईसाई, मुसलमानो तक को वैदिक धर्म मे दीक्षित करने का प्रयत्न करता रहा है।

नियम और वैदिक सिद्धांत :

जैसा लाला लाजपतराय जी ने स्पष्ट किया है कि आर्यसमाज के भजनीको प्रचारको और उपदेशको के लिए यह एक चुनौती थी कि यदि वे केवल १० नियमो के आधार पर ऐसे वैदिक धर्म का प्रचार करते तो उनके सामने भी वही समस्याये और कठिनाइया उत्पन्न होती जो व्यापक और उदारता की तथाकथित विशेषताओ के कारण हिन्दू धर्म के सामने सदा से रही है और अपनी इस प्रकार की उदार या खिचड़ी मान्यताओ के कारण ब्रह्म समाज को जिसका सामना करना पड़ा है। परिणामस्वरूप हिन्दू धर्म के समान आर्य समाज भी एक सीमित क्षेत्र मे सिकुड कर प्रभावहीन बन गया होता।

ऋषि दयानन्द की मान्यताओं की विशेषता :

स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित धार्मिक सिद्धातो की विशेषता और उनका सबसे बड़ा आकर्षण ही यह था कि उन्होने वैदिक धर्म के प्रत्येक सिद्धात और दार्शनिक मन्तव्य को एक निश्चित स्पष्ट और तर्क सगत स्वरूप देने का प्रयत्न किया। यदि आर्य समाज के नियमो के आधार पर ही इस वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार करने का प्रयत्न किया जाता तो उसमे इसलिए सफलता प्राप्त नही होती कि उसके प्रारम्भिक ३ नियम भी उनमे प्रतिपादित सिद्धातो को ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो के अनुसार स्पष्ट और सुनिश्चित नही करते हैं। उदाहरण के लिए वेद के सम्बन्ध मे जो तीसरा नियम है वह जहा वेद को सब सत्य विद्याओ की पुस्तक घोषित करता है और उसके पढने पढाने और सुनने सुनाने का सब आर्यो को आदेश देता है वही यह स्पष्ट नही करता कि वास्तव मे वेद क्या कहते है और क्या उपदेश देते हैं ?

आर्य समाज के वेद :

एक प्रकार से यह कहना उपयुक्त होगा, कि आर्य समाज जिन वेदो मानता है वे उन वेदो से भिन्न हैं जिन्हें पौराणिक या सनातन धर्मावलम्बी मानते हैं। चाहे दोनो के मन्त्र समान ही हो, किन्तु उनका ऋषि दयानन्द ने जो अर्थ किया है वह मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तीर्थ, अवतार, बाल विवाह आदि उन सब मान्यताओ को वेद विरुद्ध सिद्ध करता है जिन्हे पौराणिक हिन्दू उन्हीं वेद मन्त्रो के आधार पर वेद सम्मत कहते हैं। ऐसी स्थिति मे आर्य समाज तीसरे नियम का कोई प्रयोजन या उपयोगिता नही है जब तक कि उसके साथ ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धातों को मानना अनिवार्य न किया जाय। वस्तुत इन नियमो की व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋषिकृत ग्रन्थो द्वारा ही की गई है। अत उनके बिना इन नियमो का पालन सम्भव नहीं है।

महर्षि की महान देन :

इसी प्रकार यह भी स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित मान्यताओ को स्वीकार किये बिना आर्य समाज के १० नियमो की व्यापकता और उदारता भी समाप्त हो जाती हैं। उदाहरण के लिए इन १० नियमो मे जात-पात छुआछूत, स्त्रियो को पढ़ाने तथा विधवा विवाह के समर्थन का कोई स्पष्ट उल्लेख नही है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यदि आर्य समाज इन सब सामाजिक कुरीतियो और धार्मिक अन्धविश्वासो के विरुद्ध प्रचार नहीं करता तो उसे जो सफलता और लोकप्रियता मिली है वह कभी प्राप्त नही होती। दूसरे शब्दो मे ऋषि दयानन्द के सिद्धातो और मान्यताओ के कारण ही आर्य समाज १९वी सदी मे भारत का सबसे अधिक प्रभावशाली और सफल आन्दोलन सिद्ध हुआ है। यह श्रेय भी ऋषि दयानन्द को ही है कि उन्होने ही तथाकथित हिन्दू धर्म को भी इतना उदार और शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया जो पहले कभी नही था जो हिन्दू विधर्मी मुसलमान और ईसाई धर्मानुयायियो का छुआ हुआ पानी पीने मात्र से भ्रष्ट हो जाता था उसे आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन ने इतना दृढ और शक्तिशाली बना दिया कि मुसलमान और ईसाई धर्म के अनुयायी तक को हजम करने मे भी वह समर्थ बन गया। अस्पृश्य या अछूतो की परछाई तक से दक्षिण के नम्बूद्री ब्राह्मण परहेज करते थे। वे ही आर्य समाज की कृपा से न केवल ब्राह्मण बनने लगे बल्कि उसके पडित, पुरोहित उपदेशक तक बने। हिन्दू धर्म की इस असहिष्णुता और सकीर्णता को इतना उदार और व्यापक बनाने का श्रेय भी ऋषि दयानन्द को ही है।

गत कुछ दशको से आर्यसमाज की शिथिलता का यदि कोई कारण है तो वह भी उसकी उसी प्रकार की उदारता या सहिष्णुता ही है जिसके परिणाम स्वरूप स्वय हिन्दू समाज या हिन्दू धर्म की यह दयनीय स्थिति हुई है। यदि आर्य समाज इस झूठी उदारता और सहिष्णुता के नाम पर हिन्दुओ की जात-पात आदि सामाजिक कुरीतियो से समझौता न करता और अपने उन सिद्धातो पर दृढ रहता जिसके कारण उसे एक समय आक्रामक हिन्दू समझा जाता था, तो वह आज भी एक व्यापक क्रान्तिकारी आन्दोलन बना रहता।

पादरी की कुर्सी पर स्त्री

—गोविन्द सिंह—

शाही समाज की जड़ता को तोड़ते हुए इंग्लैंड के चर्च ने स्त्रियों को पादरी बनने का अधिकार दिया है। मात्र दो मतों से जीती इस लड़ाई से पश्चिमी स्त्री को निश्चय की काफी नैतिक बल मिला है। इससे न सिर्फ ईसाइयत में जबर्दस्त विवाद छिड़ गया है बल्कि दुनिया भर के मजहबी हल्कों में खलबली मच गयी है।

पुरुष प्रभुत्व वाले धार्मिक क्षेत्रों में यह चिन्ता उठनी स्वाभाविक है कि इससे दुनिया भर मे फैले एंग्लिकन चर्च की चूलें हिल जायेंगी। ईसाई समाज में अनेक वर्षों से यह विवाद छिडा हुआ था कि स्त्रियों को पादरी बनने का अधिकार दिया जाए या नही? पश्चिमी समाज का एक वर्ग ऐसा रहा है जो मानता है कि जब आधी आबादी को पादरी बनने तक का अधिकार नहीं तो ऐसे मिशन का क्या मतलब? वे गिरजाघर के तमाम काम कर सकती है लेकिन पादरी के रूप में आरूढ नहीं हो सकती? स्त्रियों को भी अपने ईश्वर प्रदत्त गुणों को दिखाने का अवसर मिलना चाहिये। दूसरी तरफ वे लोग भी है जो इसे एक खतरनाक नजीर मान रहे हैं। वे कहते है कि पुरुषों का पादरी बनने का अधिकार कोई आज का नही है। स्वय ईसा मसीह ने दो हजार वर्ष पहले अपने १२ शिष्यों को बुलाकर पहला सन्देश दिया था। वे १२ शिष्य पुरुष ही थे। पारम्परिक कैथोलिक विश्वासों के अनुसार चूंकि ईश्वर ने पुरुष के रूप मे ही अवतार लिया, इसलिए पुरुषों को ही उनका उत्तराधिकारी बनाया जा सकता है। वैटिकन चर्च ने १९७६ मे जारी 'महिला पादरियों के विरुद्ध घोषणा' में कहा, 'हालांकि ईसा मसीह पुरुष के रूप में ही अवतरित हुए थे, फिर भी

बहरहाल एंग्लिकन चर्च के फैसले से अकेले इंग्लैंड में ही १३०० चर्च कर्मी महिलाओं के लिये गिरजाघर के सर्वोच्च आसन तक पहुंचने का रास्ता खुल गया है। और दुनिया भर के गिरजाघरों, मिशनों में भी इसका अनुसरण होगा।

इसका यह अर्थ नही समझा जाना चाहिये कि पुरुष कोई श्रेष्ठ प्रजाति है। चूंकि पुरुष ही आमतौर पर ईसा मसीह जैसे दिख सकते हैं, इसलिए आम जनता भी उन्हे सहज ही अपना लेती है। इन्ही विश्वासो की वजह से आज आम ईसाई इस फैसले के विरुद्ध दिख रहा है और बाकायदा इंग्लैंड में इसके विरुद्ध जुलूस निकले और प्रदर्शन हुये। जुलूसों में भी उस सगठन का प्रदर्शन सबसे जबर्दस्त रहा जो स्त्रियों ने स्त्रियो को पादरी बनाये जाने के खिलाफ बनाया है। बहरहाल एंग्लिकन चर्च के इस फैसले से अकेले इंग्लैंड मे ही १३०० चर्च कर्मी महिलाओं के लिये गिरजाघर के सर्वोच्च आसन तक पहुंचने का रास्ता खुल गया है। और दुनिया भर के गिरजाघरों, मिशनो में भी इसका अनुसरण होगा। विश्व में कोई ७ करोड लोग इस चर्च के अनुयायी है। दुनिया के सिर्फ ११ गिरजाघर ही ऐसे हैं, जहा महिलाओ को यह अधिकार पहले से ही मिला हुआ है।

बन्धुआ मुक्ति नेता पर लोकसभा में गम्भीर आरोप

नई दिल्ली, ३० नवम्बर। बन्धुआ मुक्ति आन्दोलन से जुड़े एक नेता पर आज लोकसभा के शून्यकाल के दौरान तरह-तरह के आरोप लगे। इस नेता को भाजपा सांसद वीरेन्द्र सिंह ने ढोंगी, विदेशों से धन लेकर सस्ता प्रचार पाने वाला, भारत की छवि विदेशों में खराब करने में लगा और कालीन उद्योग को बर्बाद करने वाला बताया। जनता दल सांसद मोहम्मद अली अशरफ फातिमी और देवेन्द्र यादव ने भी इसका समर्थन किया। हॉलाकि यह नेता जनता दल का ही है।

लोकसभा उपाध्यक्ष मल्लिकार्जुनैया ने कुछ आरोप और नेता का नाम कार्यवाही से निकलवा दिए। वीरेन्द्र सिंह ने सैकड़ों करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा कमाने वाले कालीन उद्योग को बचाने के लिए सरकार से इस नेता को गिरफ्तार करने और उसका पासपोर्ट जब्त करने की भी मांग की।

इस फैसले का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि पश्चिमी स्त्री के अब तक के कदमों की ही तरह इस संघर्ष का भी तमाम तीसरी दुनिया के देशों में अनुसरण होगा। क्योंकि धर्म के मामले में सब जगह पुरुषों का ही बोलबाला है। हिन्दू मुसलमान, सिख, बौद्ध कहीं भी तो स्त्रियों को पुजारी या धर्मगुरु का दर्जा नही दिया जाता। इक्का-दुक्का आदिवासी समाजो, केरल के नायरो या मेघालय की कुछ जन-जातियों को छोड ` ` तो भारतीय समाज में स्त्रियों की हैसियत दूसरे दर्जे की ही रही । धर्म के क्षेत्र में भी हजारों में से एकाध ही ऐसे उदाहरण मिलेगे जब किसी स्त्री को सर्वोच्च पीठ पर बैठाया जाता । आज के युग में कुछ स्त्रिया धार्मिक सभाओं को सम्बोधित करती हुई देखी जाती है या आनन्दमयी मां जैसी कुछ स्त्रियों ने अपने कुछ धार्मिक केन्द्र खोले या अनुयायी बनाये लेकिन आमतौर पर उनका काम या तो भजन कीर्तन तक सीमित रहता है या संन्यासिनियां बनकर भिक्ष रने तक। बहुत सी भिक्षुणियां तो सामाजिक अन्याय के कारण सन्यास लेती है। ऐसे उदाहरण भी बहुत कम मिलते है कि किसी महिला के नाम पर कोई धर्म या मजहबी आन्दोलन चला हो जब कि सच्चाई यह है कि आम तौर पर भारतीय घरों में धार्मिक रीति रिवाजो, धार्मिक अनुष्ठानो की वाहक स्त्रियां ही होती है। बच्चों मे भजन-कीर्तन या मन्दिर-गुरुद्वारे जाने का संस्कार भी वे ही डालती हैं लेकिन धर्म की केन्द्रीय सत्ता में वे कहीं नहीं होतीं।

इसलिए यदि भविष्य में भारतीय उप महाद्वीप में भी स्त्रियां अपने धार्मिक अधिकारों के लिए लड़ें या मन्दिरो-मस्जिदों की राजनीति मे अपना हिस्सा मांगे तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये।

संस्कार चन्द्रिका प्रकाशन में है

सभा द्वारा दी गयी विज्ञप्ति की अवधि दीपावली पर समाप्त हो गयी है। कृपया अब उसके लिये साठ रुपये भेजने का कष्ट न करें। अब उसकी कीमत १००) रुपये है। धन राशि भेजने वाले सज्जनो को डाक द्वारा संस्कार चन्द्रिका शीघ्र भिजवा दी जायेगी। आगे केवल १००) रुपये भेजने का कष्ट करें।

— डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

एक नजर देश के मानचित्र पर

देश की दुर्दशा बनाम, राजनैतिक पार्टियां

विमल वधावन एडवोकेट नई दिल्ली

देश की राजधानी मे एक विशाल स्थल पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनिया इत्यादि आयोजित करने के लिए समुचित व्यवस्था पिछले लगभग दो दशक पहले से की गई है। उच्चतम न्यायालय के बिल्कुल सामने बने इस स्थल को समूचा जगत प्रगति मैदान के नाम से जानता है। सर्वप्रथम एशिया ७२ के नाम से एक विशाल अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन इसी प्रगति मैदान म सन् १९७२ मे किया गया था। तबसे लेकर आज तक प्रतिवर्ष इसी प्रगति मैदान मे नवम्बर के महीने मे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। मैंने आज तक लगभग सभी प्रदर्शनियो को देखा है। प्रगति मैदान की इन प्रदर्शनियो का मुख्य उद्देश्य भारत के विभिन्न प्रान्तो की व्यापारिक और औद्योगिक गतिविधियो की प्रगति को दिखाना होता है, साथ ही भारतीय स्तर को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक ले जाने मे भी इस प्रकार की प्रदर्शनिया सहायक सिद्ध होती है। भारत के समस्त राज्यो के नाम से निर्मित अलग-अलग विशाल हालो मे सम्बन्धित राज्य की प्रगति सूचक जानकारी जनता को दी जाती है। मेरा अन्तर्मन जानना है कि भारत के समस्त प्रान्तो की प्रगति के बारे मे सूचनायें एकत्रित करके हृदय कितना प्रसन्न होता है। लगभग सारा वर्ष मन मे यही विचार उठता है कि हर प्रात लोगो के साथ आपसी सहयोग, विचार-विमर्श और समन्वय से दिन दुनी रात चौगुनी उन्नति करे। परन्तु अखबारो मे जिस प्रकार से खबरें प्रकाशित की जाती हैं उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि इन सब प्रान्तो मे आपसी सहयोग के स्थान पर एक दूसरे के विरुद्ध आन्दोलन खडा करने के प्रयत्न राजनीति के योद्धा अक्सर करते रहते हैं।

प्रगति मैदान से मिली प्रगति की सूचना तो दिल्ली के ही कुछ लाख आदमियो को मिल पाती है, परन्तु अखबारो के माध्यम से देश की दुर्गति की सूचना सारे राष्ट्र को ही नही अपितु विश्व स्तर तक पहुच जाती है।

एक तरफ आर्य समाज यह चाहता है कि अन्तंजातीय और अन्तर्राज्यीय मेल जोल, रिश्ते, रिवाज बढ़ने चाहिए जिससे राष्ट्रीय एकता का सम्वर्धन और सरक्षण सम्भव हो और दूसरी ओर ये राजनीतिक दल हर प्रान्त के हर मुद्दे का राजनीतिकरण करने की फिराक मे रहते है। उत्तर प्रदेश का राम मन्दिर निर्माण मात्र एक राजनीतिक षड्यन्त्र के अतिरिक्त कुछ भी नही है, फिर भी समस्त भारत की जनता का ध्यान इस मुद्दे की तरफ लगा रहता है। इसी राममन्दिर निर्माण की हवा मद्रास तक पहुची जहा हिन्दू मुसलमानो में आज तक दगा नही हुआ था, वह क्षेत्र भी दगे की चपेट म आ गया। बिहार मे आदिवासी युवको ने गैर-आदिवासियो और ओर अन्य प्रान्तो के लोगो के विरुद्ध अभियान छेड रखा है, अभी हाल ही के दगे मे मारे गए समस्त व्यक्ति उत्तर प्रदेश बिहार, बगाल, नेपाल और पजाब के रहने वाले थे। यह सब दगे उन परिस्थितियो मे हुए जब दगाईयो ने ३ महीने पहले पोस्टरो द्वारा दगो की पूर्व घोषणा खुले रूप मे कर दी थी। असम मे गैर असमियो के विरुद्ध, बिहार के झारखण्ड मे गैर बिहारियो के विरुद्ध, मिजोरम मे गैर मिजोरम निवासियो के विरुद्ध नागालैण्ड मे गैर नागाओं के विरुद्ध, मणिपुर मे बिहार और कच्छार निवासियो के विरुद्ध, दार्जिलिंग मे बगालियो और नेपालियो के विरुद्ध, उडीसा मे भी बाहरी लोगो के विरुद्ध जबरदस्त हिंसात्मक अभियान राजनीतिक रूप से चलाए जा रहे है।

उत्तर पूर्वी राज्यो के अतिरिक्त मध्य प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश मे नक्सलवादियो के उग्र आन्दोलन कर्नाटक प्रान्त मे भ्रष्टाचार और केरल में इस्लामी सेवक सघ की साम्प्रदायिक गतिविधिया, एन० टी० रामाराव का स्वायत्तता के नाम पर राजनीतिक तमाशा इस देशकी प्रगति को कितनी हानि पहुचायेंगे यह वही जान सकता है जो प्रगति मैदान की सूचनाओ और अखबारी सूचनाओ का तुलनात्मक अध्ययन करे।

मेडिकल छात्रो के आन्दोलन ने आन्ध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री जनार्दन रेड्डी की कुर्सी छीन ली और भ्रष्टाचार ने बगारप्पा की सत्ता को उसके घर तक सीमित कर दिया। इन घटनाओ से अन्य प्रान्तो के मुख्यमन्त्री और राजनीतिक दलो के नेताओ को समुचित सबक लेना चाहिए। कुछ महीने पहले सुप्रीम कोर्ट ने पजाब के लिए एक आदेश के द्वारा ६४ सीटे विद्यार्थियो को परीक्षाओ के आधार पर मेडिकल कालेजो मे देने का फैसला किया। परन्तु पजाब सरकार ने इसकी परवाह न करते हुए इसमे से ३२ सीटो के मनोनयन का अधिकार पजाब शासन के हाथ मे दे दिया। ऐसे आदेश ही भविष्य मे छात्रो को आन्दोलन के लिए भडकाते हैं।

यह हिंसात्मक आन्दोलन राजनीतिज्ञो द्वारा ही शुरू करवाये जाते हैं इसमे कोई सन्देह नही परन्तु दूसरी तरफ एक वास्तविकता और भी है कि हर आन्दोलन की शुरुआत किसी न किसी विकास कार्यों की दुर्दशा या भेदभाव को आधार बनाकर की जाती है। सरकार यदि प्रारम्भ मे ही इस तरफ ध्यान दे और अपनी भेदभाव पूर्ण नीतियो को त्याग कर समस्त राष्ट्र को एक परिवार समझ कर काय करे तो काफी हद तक इन षडयन्त्रो को विफल किया जा सकता है।

अपरिवर्तनीय है वेदों की शब्द रचना (३)

—डा० श्रीधर भास्कर वर्णेकर

असंख्य विवाद

इस प्रकार बुद्धकाल के पूर्वकाल मे ही वेदो का अपौरुषेयत्व, नित्यत्व, स्वतः प्रामाण्य इत्यादि विषयों पर बड़े मार्मिक विवाद चलते आए है। सभी आस्तिक दर्शनकारो ने अपने सूत्रों तथा भाष्यों द्वारा, वेद विरोधी युक्तिवादों का खण्डन करते हुए, अपनी अद्‌भुत विचार शक्ति का परिचय दिया है। उन सिद्धान्तों का दार्शनिको के मार्मिक युक्तिवादों का, ठीक आकलन किए बिना, प्राचीन भारतीयों का वेदविषयक दृष्टिकोण ध्यान में आना सम्भव नहीं है। अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में दार्शनिक विद्वानों ने जो अद्‌भुत बुद्धिकौशल्य व्यक्त किया है, उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा अभारतीय विद्वानों ने भी की है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध यूरोपीय पण्डित म्यूर कहते हैं इन दार्शनिकों के वाद-विवाद जो पढ़ता है उसे उनके युक्तिवाद की तीक्ष्णता, तर्कों की निर्दोषता और प्रासंगिक उचित दृष्टान्तों की मौलिकता तथा सजीवता, इनकी ठीक कल्पना आए बिना नहीं रहती।

अपरिवर्तनीय वेद

वेदों का अपौरुषेयत्व, नित्यत्व एवं स्वतः प्रामाण्य, [इन सिद्धान्तों का अपने प्रखर तर्कों एवं युक्तवादों से प्रस्थापित करने वाले परम्परावादी वैदिक पण्डितों का और एक आग्रह है कि, वेद-मन्त्रों के अक्षरों का परम्परागत जो क्रम है, वह सर्वथा अपरिवर्तनीय है। उसके एक भी अक्षर, वर्ण या मात्रा में भी लेशमात्र परिवर्तन करने पर वह मन्त्र 'वैदिक' नहीं रहेगा। 'अग्निमीले पुरोहितम्' इस मन्त्र का 'इले अग्निं पुरोहितम्' इस प्रकार पाठान्तर करने से अर्थहानि भले न हो, परन्तु इस मन्त्र के वैदिकत्व की हानि अवश्य होती है। वैदिक वाक्यों और अवैदिक वाक्यों में यही महत्वपूर्ण भेद है। 'पात्रम् आहर' इस लौकिक वाक्य की रचना "आहर पात्रम्' इस प्रकार उल्टी कर पर भी कोई दोष नहीं माना जाता। परन्तु वैदिक वाक्य में इस प्रकार से परिवर्तन करने से उसमे मन्त्रत्व नही रहता। इसका कारण यह माना गया है कि वेद नित्य होने के कारण उनके शब्दों का क्रम प्रत्येक कल्प मे एक रूप ही रहता है। प्राचीन कल्पों का विशिष्ट क्रम का शब्दराशि, कल्पान्तरों के पश्चात् मन्त्र द्रष्टा के हृदय मे उसी अनुक्रम से प्रकट होता है। नए कल्पों के ऋषि नूतन वेदों का निर्माण नहीं करते। वास्तव में ऋषि वेदमन्त्रों के कर्ता या निर्माता होते ही नहीं। इसी कारण वेदों का अपौरुषेयत्व सम्प्रदायानुसार माना गया है। इस प्रकार वेदों का अपौरुषेयत्व मान्य करने पर, भ्रम, प्रमाद. विप्रलिप्सा (वंचना करने की इच्छा) इत्यादि पुरुषकृत दोषों की वेदों में कल्पना भी करना अयोग्य होता है। इसी सर्वंकष निर्दोषता के कारण वेदवाक्यों [को आप्तवचनरूप निरपवाद प्रामाण्य साम्प्रदायिकों द्वारा दिया गया है।

साम्पदायिकों का वेदों के विषय में और भी एक सिद्धान्त है उतना बताकर इस विषय को विराम देंगे।

'अग्निमीले पुरोहितम्। यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।' इस आद्य वेद मन्त्र में भाषा के प्रमुख स्वरों और व्यंजनों का अन्तर्भाव होता है अतः यह आद्य वेदमन्त्र ही सर्व वर्णों का अर्थात् वर्णात्मक भाषाओं का मूल है।

प्राचीन वैदिक विद्वानों की वेदविषयक धारणाएं किस प्रकार की थी और उनका समर्थन किस प्रकार से युक्तिवादों से किया जाता था इसकी संक्षेपत. सामान्य कल्पना प्रस्तुत विवेचन से आ सकती है। हमने यहां अर्वाचीन और प्राचीन दोनों मतों का यथाशक्ति संक्षेपतः परिचय दिया है। पाठक अपना मत निर्धारित करें।

महर्षि निर्वाणोत्सव सम्पन्न

—टंकारा स्थित दयानन्द जन्म-गृह मे ऋषि निर्वाण दिवस दीपावली को परम्परागत ढंग से मनाया गया। इस अवसर पर उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के छात्रो द्वारा खेल एवं व्याख्यान प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। जिसमे सभी ब्रह्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता सभा का अध्यक्ष स्थान बम्बई निवासी श्री शान्तिप्रिय विद्यालंकार ने व निर्वाण दिन के उपलक्ष्य मे सभा का अध्यक्ष स्थान श्री शामजीभाई आर्य ने सुशोभित किया।

—अरुणकुमार विदर्भीय

—दिनाक २४-१०-९२ को पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस तथा वैश्यो के पावन पर्व दीपावली के अवसर पर आर्य समाज, रजौली जिला नवादा (बिहार), के पच्चीस आर्य परिवारो के गृह एवं दुकानो मे वैदिक यज्ञ अनुष्ठान आर्य पुरोहित कृष्ण दयाल प्रजापति एवं भू.पू. प्रधान श्री युवराज राम के पौरोहित्य मे सम्पन्न किये गए। इस अवसर पर स्वामीजी के अलौकिक गुणो का भी दिग्दर्शन कराया गया।

—कृष्ण दयाल आर्य प्रजापति पुरोहित

-आर्य समाज राजामण्डी मे महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिसमे भारी उपस्थिति रही। अनेक वैदिक विद्वानो भजनोपदेशको, कवियो ने महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की।

—उमेशचन्द्र गुप्त

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर मे महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का निर्वाण दिवस अमावस्या दीपावली रविवार २५ अक्तूबर ९२ को प्रातः काल ७॥ बजे से १०॥ बजे तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

—विजयपाल शास्त्री मन्त्री

—दिनाक २५-१०-९२ रविवार को प्रातः ८॥ बजे श्री मदन मनोहर की आर्य कालांवाली मण्डी की दुकान पर मण्डी के प्रांगण में महर्षि दयानन्द निर्वाण (दीपावली पर्व) उत्सव श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा की प्रधानता मे मनाया गया। हवन यज्ञ सन्ध्या के पश्चात श्री वानप्रस्थी जी ने महर्षि दयानन्द के महान उपकारो एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के आदर्श जीवन पर अपने विचार दिए। सभी उपस्थित सज्जनों का चाय एवं मिठाई से सत्कार किया गया।

—ओमप्रकाश वानप्रस्थी

—नई दिल्ली २५ अक्तूबर को आर्य युवा विकास परिषद दिल्ली के तत्वावधान मे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न देव दयानन्द जी के १०९ वीं निर्वाण दिवस के शुभोपलक्ष्य मे दीपावली के शुभ अवसर पर आर्य समाज पालम कालोनी से पूरे पालम क्षेत्र मे एक भव्य शोभायात्रा हर्षोल्लास के साथ निकाली गयी जिसमे पालम क्षेत्र में स्थित सभी आर्य समाजों के लोग तथा अन्य श्रद्धालु सम्मिलित हुए। शोभायात्रा का शुभारम्भ आर्य समाज नागलराय के प्रचार मन्त्री श्री कैप्टन भागमल शर्मा जी द्वारा ध्वजारोहण के साथ किया गया। तदुपरान्त आर्य समाज पालम कालोनी के प्रांगण में एक साधारण सभा हुयी जिसमें युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी को भावभीनी श्रद्धाजली दी गई।

—गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज मन्दिर दीनापुर में ऋषि निर्वाणोत्सव बड़ी श्रद्धा और उत्साह से मनाया गया। इस सम्बन्ध में १९-१०-९२ को दोपहर बाद २ बजे एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें नगर के बहुत सारे विद्यालयों के बच्चे शामिल हुए। इस भव्य शोभा यात्रा का नेतृत्व श्री गन्धर्वराज प्रिंसीपल आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल दीना नगर ने किया। शोभा यात्रा में नगर के गण्यमान्य आर्यजनों ने भी भाग लिया।

—योगेन्द्रपाल मन्त्री

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां

श्री रामशरण बाली स्थिर निधि २ हजार रुपए
(अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

सस्थापक—श्री रामशरण बाली एम जी न० १८ बोदा बाग कालोनी (रीवा)

इस निधि का ब्याज वैदिक धम प्रचार प्रसार मे खच किया जायेगा। उसी अनुसार सभा व्यय कर रही है।

श्री हनुमान प्रसाद स्थिर निधि २९ हजार रुपए
(अन्तरग ३ जून १९८४ द्वारा स्वीकृत)

सस्थापक—स्व० हनुमान प्रसाद जी गाजीपुर।

श्री हनुमान प्रसाद जी ने सभा को १३ हजार रुपये दिये थे। बाद मे उनका देहान्त हो गया। आय समाज गाजीपुर के मन्त्री श्री नारायण प्रसाद जी ने सभा को सूचित किया कि इस राशि को सभा ६ वष के लिए फिक्सड डिपोजिट मे रख दे। उसके बाद यह राशि जब २६ हजार हो जाएगी तो इस की स्थिरनिधि—स्व० हनुमान प्रसाद स्थिर निधि के नाम से सभा बना दे और इस निधि के ब्याज को सभा धम प्रचार आदि जिसमे भी उचित समझे व्यय करे। स्व० हनुमान प्रसाद जी की यही इच्छा थी।

स्व० श्री सुरेशचन्द एव श्रीमती शकुन्तला नरुला वनवासी
उपकार स्थिर निधि ५ हजार रुपए
(अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

सस्थापक—श्रीमती शकुन्तला नरूला

इस निधि का ब्याज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा वन वासी क्षेत्रो मे नवयुवक और नवयुवतियो म वैदिक धम के प्रचार प्रसार तथा उन्हे आर्य वीर और वीरागना बनाने मे शिक्षाथ व्यय किया जाव। यह धन अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के खाते मे जमा रहेगा। प्रति वष १४ माच को स्व० सुरेशचन्द के जन्म दिवस पर पति पत्नी का फोटो सावदेशिक पत्र म प्रकाशित करना अनिवाय होगा। वष के अन्त म ४३३ ५० पैसे ब्याज के जमा थे। इस वष निधि के ब्याज मे से २५००) अ भा० दयानन्द सेवाश्रम सघ बासवाडा को दिये।

श्री भोलाराम कृष्णा कुमारी ग्रोवर स्थिर निधि ५० हजार रुपए
अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

सस्थापक—श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर

यह निधि ५०००० रु० के मूलधन से सैन्ट्रल बक म जमा की गइ है। इस निधि का ब्याज तिमाही लेकर आय वीर आय वीरागना दल वनवासी क्षेत्रो मे वनवासी विद्यार्थियो धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन अथवा शुद्धि (पुनर्मिलन कार्यो पर व्यय किया जाए। ८ नवम्बर को प्रतिवष दोनो (पति पत्नी) के चित्र सावदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशित किये जाव। यह पत्र श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर २३२ गली मस्जिद वाली छोटी बजरिया रेलवे रोड गाजियाबाद तथा क्रमश चन्द्रभान ग्रोवर गाजियाबाद अ नन्दस्वरूप मलिक नई दिल्ली तथा श्री सुमन राजकुमार बत्रा नई दिल्ली को उनके पतो पर भेजा जावे।

इस वर्ष ब्याज राशि मे से ११४०० स्वामी धर्मान द जी को दिए गए।

श्री कृष्णदत्त शर्मा तथा आनन्दीबाई स्मृति स्थिर निधि ३ हजार रुपए
(अन्तरग १५ १२ ८४ द्वारा स्वीकृत)

निधिकर्ता—श्री शरदचन्द शर्मा श्री ऋषि परफ्यूमरी वक्स धार (म०प्र०)

इस निधि का ब्याज अनाथ बच्चो के विद्याध्ययन धार्मिक टैक्टो के नि शुल्क वितरण अथवा वेद प्रचाराथ ट्रैक्टादि के प्रकाशन पर सभा व्यय करेगी।

श्री जे० नारायण राय स्थिर निधि दस हजार रुपए
(अन्तरग १५ १२-८४ द्वारा स्वीकृत)

सस्थापक—श्री जे० नारायण राव २५ वेद मन्दर के० आर० रोड बसवान गुडी बगलौर।

यह निधि कन्नड सत्याथ काश के लिए है इसके ब्याज से कन्नड सत्यार्थप्रकाश पढने वालो को एक प्रति पर ५) रुपये की छूट सभा दे। यदि ब्याज बच जावे, तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका यदि कन्नड मे हो तो उसके पढने वालो को भी ५) रु० प्रति पुस्तक छूट दी जावे।

श्री माखनसिंह परमार स्थिर निधि एक हजार रुपए
अन्तरग १५ १२ ८४ द्वारा स्वीकृत)

निधिकर्त्ता—मा वर्नसिंह परमार खाटसूर जिला शाजापुर मध्य प्रदेश)

यह राशि ३ वष के लिए फिक्स डिपाजिट मे रखी जावे तदुपरात इस निधि का ब्याज वानप्रस्थाश्रम मे सहायता के पात्र व्यक्तियो को सभा देवे।

श्री ओमप्रकाश परमार स्थिर निधि दो हजार एक रुपए
अन्तरग १५ १० ८४ द्वारा स्वीकृत

सस्थापक—श्री प्रहलाद सिंह परमार पो खाटसूर जिला शाहजहापुर म प्र)

यह राशि पहले छ वष के लिए फिक्सड डिपाजिट मे रखी जावे। तदुपरात स्थिर निधि बन कर ... वानप्रस्थियो की सहायताथ सभा व्यय करे।

श्रीमती सुशीला देवी स्थिर निधि हजार रु
(अन्तरग १५ १२ ८४ द्वारा स्वीकृत)

सस्थापक—श्री रामकृष्ण नैय्यर १/३५१ सर्विस आफीसर फ्लैट सरदार पटेल माग नई दिल्ली।

इस निधि का ब्याज सभा द्वारा वेद प्रचार तथा शुद्धि काय पर व्यय किया जावे।

श्री मेजर विश्वम्भर ... दम ... ता देवी स्थिर निधि ५०००) रु०
अन्तरग ६ ... ८२ द्वारा स्वीकृत)

शत ब्याज राशि सभा वेद प्रचाराथ व्यय करेगी। उसी अनुसार ब्याज राशि का उपयोग हो रहा है।

(क्रमश)

विधायिका ने वेदपारायण यज्ञ रचाया

कमालगज (फरुखाबाद) क्षत्र की विधायिका श्रीमती उर्मिला राजपूत ने निर्वाचन से पूव किए सकल्प के अनुसार नगर के ऐतिहासिक पटेल पाक के निकट अपने निवास स्थान गल्ला मण्डी प ला (फरुखाबाद उ प्र) मे ३ ४ ५ नवम्बर ९२ को वदिक विद्वानो से सामवेद पारायण यज्ञ सम्पम्न कराया। इस समारोह मे अनपद फरुखाबाद के एक मात्र गुरुकुल कृष्णपुर के कुलपति माननीय आचाय च द्रदेव जी शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा थ और उक्त गुरुकुल के ही ब्रह्मचारी श्री मनुदेव जी अशोक जी रामवीर जी एव ब्रह्मदेव जी वेदपाठी थे। यज्ञ के सयोजक परामशदाता श्री लालताप्रसाद वानप्रस्थ एव ी बालकराम आर्य ने बताया कि कायक्रम का सभी आगन्तुको तथा क्षत्रीय जनता पर व्यापक रूप से हार्दिक प्रभाव पडा है।

पूर्णाहुति के अवसर पर उत्तरप्रदेश क कृषि ज्यम त्री ी वी द्र शुक्ला समाज कल्याण राज्यम त्री श्री सूरजसिंह शाक्य ग्रामीण विकास राज्यम त्रा श्री वासुदेवसिंह प्रौढशिक्षा म त्री श्री दौलतराम लोक निर्माण रा यम त्री श्री मुन्नूलाल कुरील ने उपस्थित होकर पावन यज्ञ मे अपनी सात्विक आहुति प्रदान की। एतदतिरिक्त लोक निर्माण म त्री श्री रामकुमार वर्मा पूव खाद्य राज्यम त्री श्री मस्तराम विधायक बादशाहसिंह विधायक सुवीर वर्मा विधायक रार्मसिंह विधायक भानुप्रताप वर्मा विधायक बनवारीलाल दोहरे आदि दजनो म त्रियो विधायको ने समारोह मे यथावसर पधार कर अपनी पवित्र आहुति दी। कहा जाता है कि उत्तर प्रदेश के फरुखाबाद जनपद मे एक साथ इतने मन्त्रियो की उपस्थिति इससे पूव कभी नही हुयी। सभी राजनयिको पर वेद पारायण यज्ञ एव यज्ञ के ब्रह्मा माननीय आचाय जी के वैदिक उपदेशो का हार्दिक प्रभाव पडा। चारो तरफ लोग यज्ञ की प्रशसा के ही गीत गाते हुए नजर आते थे।

माण्या विधायिका उर्मिला राजपूत के निम त्रण पर समारोह मे पधारे हुए लगभग पन्द्रह हजार लोगो ने इस अवसर पर प्रीतिभोज किया। पूर्णाहुति के उपरान्त यज्ञमण्डप मे उपस्थित सभी प्रतिष्ठित नर-नारियो मन्त्रियो विधायको आदि गणमा य महानुभावो ने यजमान दम्पती श्री डा० रामकृष्ण राजपूत एव श्रीमती उर्मिला राजपूत पर पुष्पवष्टि करते हुए शुभ आशीवचन कहे तथा उनके ममुज्ज्वल भविष्य की कामना हेतु मगलगीत गाए।

—सम्वाददाता

लालताप्रसाद वानप्रस्थ रामपुर (फरुखाबाद)

अक्ल तो आती है मगर

शेष पृष्ठ ८ पर)

यहा यह लिखना भी असगत नही होगा कि जब पिछले दिनो बगलादेश की प्रधानम त्री बेगम खालिदा जिया भारत के दौरे पर आई थी तो पत्रकारो न उनसे बगलादेश के लोगो द्वारा की जा रही घुसपठ के बारे में भी सवाल किए थे और उ हे यह भी बताया था कि अकेले दिल्ली म ही लाखो बगला देशीय लोग बठ हुए है तो उन्होने उत्तर दिया था कि ये लोग बगलादेशी नहीं है। उनके तो यहा पर राशन काड तक बने हुए हैं।

बहरहाल जिस तरह से देश की आबादी मे वृद्धि हो रही है बेरोजगारो की सख्या बढ रही है और देश के साधन आबादी के अनुपात मे कम होते जा रहे हैं और बगलादेश के शासक अपने लोगो को भी अपना मानने और उ हे वापस लेने को तयार नही इस सब के दृष्टिगत यह अत्यन्त आवश्यक है कि बाहर से जो लोग अच्छ भविष्य की खोज मे यहा घुसपैठ करने का प्रय त्न कर रहे हैं उन्हे हर सभव तरीके से रोका जाए। इस काम मे जितना भी विलम्ब होगा उतनी ही हानि होगी और उतनी ही अधिक समस्यायें पदा होगी।

—विजय

संगरूर में महात्मा प्रेमप्रकाश जी का भव्य अभिनन्दन

दिनांक २४-१०-९२ को आर्य समाज संगरूर के प्रांगण में आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभा की ओर से पूज्यपाद श्रद्धेय महात्मा प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी का भव्य अभिनन्दन बडी धूमधाम से किया गया। जिसमें आर्य-समाज संगरूर स्त्री आर्य समाज संगरूर लाजपतराय आर्य कन्या विद्यालय संगरूर तथा नगर के गणमान्य व्यक्तियों ने भी भाग लिया।

स्वागत मंच से सभी संस्थाओ के अधिकारियो ने पुष्प मालाओ एवं गुलदस्तो से महात्मा जी का स्वागत किया। मच से संचालन करते हुए श्री मास्टर धर्मवीर जी ने कहा कि आर्य समाज संगरूर के इतिहास में यह एक विलक्षण एवं पहला स्वागत कार्य हुआ है जो कि आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभा ने किया है। सभी दर्शको ने इस अनोखे कार्यक्रम की मुक्त कण्ठ से भूरि-भूरि प्रशंसा की।

—रामसुफल शास्त्री सचालक

आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभा संगरूर १४८००१ (पंजाब)

राजस्थान सरकार को धन्यवाद

आर्य समाज सफ्कता के मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव एवं प्रधान श्री कृष्णप्रसाद आर्य ने जानकारी दी कि महर्षि स्वामी दयानन्द ने जिस पवित्र स्थान उदयपुर महल में सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रन्थ के लिखने का शुभारम्भ किया था उस महल को राजस्थान सरकार ने धरोहर के रूप में आर्य समाज के अधिकार में दे दिया। इसमें राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत सरकार को धन्यवाद जिन्होंने एक पवित्र कार्य किया। इसके लिए आर्य समाज कृतज्ञ है।

लक्ष्मीनारायण भार्गव मन्त्री
आर्य समाज सफ्कता

वैदिक ज्ञान मेला

महिला आर्य समाज उन्नाव का वार्षिकोत्सव गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी दिनांक ८ नवम्बर से ११ नवम्बर तक वैदिक ज्ञान मेला के रूप में आर्य-समाज मन्दिर, उन्नाव के प्रांगण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पं० सत्यदेव शास्त्री वाराणसी, पं० सत्यानन्द जी वेदवागीश अलवर, श्री तेजपाल आर्य, श्रीमती आशा आर्य आदि विद्वानो ने पधार कर श्रोताओं को लाभान्वित किया। अन्य विशेष कार्यक्रमो में सामूहिक यज्ञोपवीत का भी आयोजन किया गया।

—प्रवेश तुली मन्त्रिणी

बंगहि गांव में आर्य समाज मन्दिर को स्थापना

८-११-९२ को न्यू कालोनी, इन्सटीट्यूट पारा बंगहि गांव कालिज रोड पर विधिवत आर्य समाज मन्दिर की स्थापना हुई है। बंगहि गांव की इस रेलवे कालोनी में वहां की आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रामेश्वर प्रसाद जी सराफ के अथक प्रयत्नो का फल है कि वहा इस ऐतिहासिक आर्य-समाज का गठन हुआ है।

वहां एक यज्ञशाला तथा दो कमरे बन गये हैं।

डा० नारायणदास जी को जो कि आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं उदघाटन के लिये निमन्त्रित किया था डा० साहब अपनी धर्म पत्नी सहित वहा गये, तथा विधिवत यज्ञ आदि किया गया तथा बाद मे यज्ञ के महत्व पर व्याख्यान भी हुए - वैदिक साहित्य की भी बुक स्टाल लगाई गई थी असम आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक ने दो दिन पूर्व 'यजुर्वेद' पारायण वेद पाठ भी किया था। —मन्त्री, असम आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द शिक्षा समिति का गठन

दिनांक १५-१०-९२ को सायंकाल ७-३० बजे आर्य समाज भवन नरसिंहपुर म० प्र० में प्रधान माता दयावन्ती जी शास्त्री आर्या एवं आचार्य श्री सेवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य समाज की बैठक बुलाई गई जिसमें एक महर्षि दयानन्द शिक्षा समिति का गठन किया गया तथा तत्काल निर्णय लिया गया कि जुलाई सन १९९३ से आर्य समाज भवन में वैदिक संस्कारों के उत्थान हेतु KG 1, KG 2, एवं पहली कक्षा प्रारम्भ की जाये। इस हेतु शिक्षा समिति मे निम्न लिखित पदाधिकारियो का चयन किया गया।

अध्यक्ष—श्री सियलदास बुलचानी आर्य
उपाध्यक्ष—श्री चन्नमान जी लखेरा आर्य
मन्त्री—मनोहर आय बुलचानी
कोषाध्यक्ष—श्री नेतराम यादव आर्य एवं अन्य सात सदस्य।

योग साधना शिविर

महात्मा रसीलाराम वैदिक गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम आनन्द धाम हरतरयाम गढ़ी ऊधमपुर जम्मू कश्मीर में १३ दिसम्बर से २० दिसम्बर तक योग साधना शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा दिये गये विचारो से लाभ उठाये। १३ दिसम्बर को धर्म सम्मेलन तथा विराट भण्डारा का आयोजन भी किया गया है।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२०-१२-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R.N 626/57 Licensed to post without prepayment License No U (C) 93 Post N D P S O.on 17,18- 2-1993

पुस्तक समीक्षा

नया सवेरा लायें

रचनाकार श्री राधेश्याम आर्य
प्रकाशक—रश्मिरथी प्रकाशन
मुसाफिर खाना जि० सुलतानपुर
(उत्तर प्रदेश)
मूल्य—दस रुपये मात्र

श्री राधेश्याम जी आर्य की कवितायें रचनात्मक विकास एवं प्रगति की प्रेरणा देती हैं एवं वैदिक उदात्त शिक्षाओं से समन्वित होती हैं। देश भक्ति की भावना जागृत करने के साथ-साथ मानवता के प्रति प्रेम और सेवा भाव के लिये उत्साहित करती है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार अन्याय, अत्याचार, जातिवाद, विषमता, वैमनस्य तथा रूढ़ियों, कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान करती हैं। अभी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ऐसी ही कविताओं का इनका एक काव्य संग्रह नया सवेरा लायें प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में लगभग पैंतालीस फुटकर कवितायें संग्रहीत हैं। सभी रचनायें प्रवाहपूर्ण सरल और सरलता से गाने योग्य हैं। रचनायें इस उद्देश्य को पूर्ण करने में कथंचित सक्षम हैं, काव्य प्रेमी सुधीजन अवश्य ही इन्हें प्रचारित करें। मैं कवि के यशस्वी होने की मंगल कामना करता हूं।

पुस्तक मिलने का पता —
सम्पादक —'रश्मिरथी' द्विमासिक
मुसाफिर खाना—२२७८१३
जिला—सुलतानपुर (उ० प्र०)

—वेद प्रिय शास्त्री मन्त्री
आर्य सेवक संघ, कोटा

अम्बाला छावनी में वेद प्रचार की धूम

वैदिक प्रचार मण्डल, २९ रामनगर अम्बाला छावनी में ३० अक्तूबर से १ नवम्बर तक वार्षिकोत्सव बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से मनाया गया। जिसमें स्वामी माधवानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी, डा० विक्रम 'विवेकी', आचार्य देवव्रत जी, डा० प्रतिभा पुरन्धि श्री महीपाल जी के वेद उपदेश तथा श्री नरेन्द्र शास्त्री श्री हुकेलसिंह आर्य एवं आर्य भजन मण्डली के रोचक भजन हुये। १ नवम्बर को समापन समारोह की अध्यक्षता नगर पालिका के कार्यकारी अधिकारी श्री जयप्रकाश बिश्नोई ने की। मंच का सफल संचालन मण्डल के मन्त्री श्री वेदमित्र हापुड़ वालों ने किया। यह वार्षिकोत्सव एक चर्चा का विषय बन गया जो मण्डल को विजयश्री की ओर प्रेरित करता है। अन्त में बुद्ध देवी जी का ऋषि लंगर हुआ।

—वेद प्रकाश शर्मा प्रधान
वैदिक प्रचार मण्डल २९ रामनगर अम्बाला कैन्ट

आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर चम्बा में पुरोहित की आवश्यकता है जो हवन यज्ञ संस्कार के साथ-साथ रविवारीय सत्संग में वैदिक प्रवचन कर सके तथा समय-समय पर जिले के आस-पास के इलाकों में भी वैदिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार कर सके। चम्बा एक पहाड़ी क्षेत्र है, इन सब बातों का ध्यान रखते हुए, आवेदन करें। इच्छुक व्यक्ति शास्त्री अथवा उसके समकक्ष योग्यता रखते हों। यहां आवास की सुविधा भी होगी आवेदक व्यक्ति स्वीकार्य वेतन आयु तथा अन्य जानकारी के बारे में पत्र-व्यवहार करें।

मन्त्री आर्यसमाज मन्दिर चम्बा
जिला व तह० चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

१०१५० —पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार, जि हरिद्वार (उ प्र)

—आर्य समाज भरथना इटावा का वार्षिकोत्सव ३० अक्तूबर से १ नवम्बर तक उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक तथा सन्यासियों ने अपने विचारों से श्रोताओं का मार्गदर्शन किया।

—आर्य समाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश दिल्ली का २६ वां वार्षिकोत्सव ३० नवम्बर से ७ दिसम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर ४ दिसम्बर तक प्रतिदिन प्रात काल अथर्ववेद महायज्ञ का आयोजन तथा रात्रि में पं० जैमिनी शास्त्री द्वारा वेदकथा का आयोजन किया गया। मुख्य समारोह ५ दिसम्बर से प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर वेद सम्मेलन, कुरीति उन्मूलन सम्मेलन बाल प्रोत्साहन सम्मेलन तथा भारतीय संस्कृति रक्षा सम्मेलनों का आयोजन किया गया। ७ दिसम्बर को महिला सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा नेताओं ने पधार कर श्रोताओं को लाभान्वित किया।

—आर्य समाज लखीमपुर खीरी का ९९ वां वार्षिकोत्सव १४ से १६ नवम्बर तक आर्य कन्या इन्टर कालेज के प्रांगण में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई जिसका नगर निवासियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। श्री वीरेन्द्र बहादुर जी के नेतृत्व में एक सप्ताह का योग शिविर भी लगाया गया।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म् सार्वदेशिक साप्ताहिक

महर्षि दयानन्द उवाच

जब आपस मे भाई-भाई लडते है तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। क्या तुम लोग महाभारत की बाते जो पाच सहस्र वर्ष पहले हुई थी उनको भी भूल गए ? देखो ! आपस की फूट मे कौरव पाण्डव और यादवो का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक वही रोग पीछे लगा हुआ है। न जाने यह भयकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यो को सब सुखो से छुडाकर दु:ख सागर मे डूबो मारेगा। परमात्मा कृपा कर कि यह राजरोग हम आर्यो मे से नष्ट हो जावे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे
वर्ष ३० अंक ४७] दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२ पौष शु० ३ सं० २०४८ २७ दिसम्बर १९९१

पंजाब आर्य प्रति. सभा के तत्वावधान में जालंधर में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का भव्य आयोजन

पंजाब के मुख्यमन्त्री को तलवार भेंट और शेरे पंजाब की उपाधि से सम्मानित किया

सार्वदेशिक सभा को ५१ हजार रुपए की थैली भेंट

अनेक विद्वानों को भी सम्मानित किया गया

जालन्धर २० दिसम्बर। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय के समीप दोआबा कालेज के मैदान म सम्पन्न हुआ। प्रात गुरुदत्त भवन मे बृहद यज्ञ हुआ जिसके यजमान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी थे। सम्मेलन मे पजाब के कौने-कौने से हजारो नर-नारियो ने बडे जोश के साथ भाग लिया। इसके अतिरिक्त आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ से भी हजारो की सख्या मे छात्र-छात्राए उपस्थित थी। सर्वप्रथम आर्य जगत के मान्य सन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्दजी और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का फूल मालाओ से जोरदार स्वागत किया गया। सम्मेलन के सयोजक श्री अश्विनी कुमार एडवाकेट ने सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम का प्रस्ताव किया तो जन-समूह से खचाखच भरा हुआ मदान तालियो की गडगडाहट से गूज उठा। स्वामी सर्वानन्द जी ने इस अवसर पर मुख्यमन्त्री सरदार बेअन्तसिंह तथा सम्मेलन मे पधारे विशाल जन समुदाय को अपना आशीर्वाद दिया।

सम्मेलन के अध्यक्ष पद से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पजाब के मुख्यमन्त्री सरदार बेअन्तसिह को आर्य समाज की ओर से तलवार भेट करते हुये उन्हे शेरे पजाब की उपाधि से सम्मानित किया। इस अवसर पर पूरा वातावरण जयकारो से गूज उठा। स्वामी जी ने कहा कि सरदार बेअन्तसिह ने पजाब की जनता को जो सुरक्षा प्रदान की है उसके लिये वे बधाई के पात्र है। पजाब पाच नदियो के समूह का नाम है जिसमे से दो नदिया निकल गई हैं हम आशा करते है कि सरदार बेअन्तसिह शेरे पजाब के प्रयत्नो से वह भी भारत मे मिल जायगी और पजाब पुन पचनद प्रदेश बन जायेगा।

स्वामी जी ने भारत सरकार से निवेदन किया कि आर्य समाज ने सदैव सत्य और न्याय का पक्ष लिया है। अयोध्या मे जिस ढाचे को गिराया गया है वहा पुन मस्जिद न बनाई जावे। यदि वहा पर पुन. मस्जिद बनाई गई तो जो बुझने वाली आग है वह हमेशा जलती रहेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने आर्यसमाज के कार्यो की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि आर्यसमाज को देश की वर्तमान समस्याओ के निराकरण के लिये वही भूमिका निभाने के लिये आगे आना चाहिये जसी उसने आजादी से पहले निभाई थी।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

इन्दिरा गांधी हवाई अड्डे पर

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव का ३० दिसम्बर को भव्य स्वागत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव दक्षिण अफ्रीका के एक मास के दौरे को सफलता पूर्वक सम्पन्न कर ३० दिसम्बर को वापस भारत लौट रहे हैं। ३० दिसम्बर को दिल्ली के इन्दिरा गान्धी हवाई अड्डे पर उनका भव्य स्वागत किया जायेगा।

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

राजस्थान के राज्यपाल श्री एम. चेन्ना रेड्डी द्वारा एम.डी. विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय लिखे जाने का निर्देश

अजमेर में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के नामपट पर एम०डी० विश्वविद्यालय (संक्षिप्त नाम) लिखा होने के कारण अनेक लोगों ने सार्वदेशिक सभा से पूरा नाम लिखाये जाने के लिये प्रार्थना की थी। इस सम्बन्ध मे सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री और विश्वविद्यालय के कुलाधिपति को इस सम्बन्ध में पत्र लिखकर निवेदन किया था कि इस प्रकार के संक्षिप्त शब्दों से महर्षि दयानन्द का वास्तविक अर्थ खो जाता है जिस प्रकार भोपाल मे तात्याटोपे नगर का नाम टी०टी० नगर रखने से हो रहा है।

राज्यपाल महोदय ने स्वामी जी की बातो का समर्थन करते हुये उन्हे निम्न पत्र भेजा है जो अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

राजभवन, जयपुर
५-१२-१९९२

प्रिय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती,

आपका पत्र दिनांक १७-११-१९९२ का प्राप्त हुआ। मैं आपकी इस बात से सहमत हू कि इस प्रकार के संक्षिप्त शब्दो (एबरीवेशन) का प्रयोग मुनासिब नही है। इस सम्बन्ध में मेरे कार्यालय द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के अधिकारियों को इसको दुरस्त करने के लिये आवश्यक कार्यवाही करने वास्ते पत्र द्वारा कहा गया है।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय
(एम० चन्ना रेड्डी)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वनी
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान, नई दिल्ली

कलिंग देश उड़ीसा में वेद प्रचार यात्रा

अज्ञान, धार्मिक अन्ध विश्वास, जड़पूजा व भाग्यवाद, गरीबी तथा ईसाई लोगो से पीड़ित प्रदेश में आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता द्वारा श्रद्धापूर्वक उड़ीसा के विद्यालयो ग्रामों मन्दिरो आर्य समाजो तथा नगरो मे सार्वजनिक एवं पारिवारिक प्रवचन दिए गए। यह यात्रा अक्तूबर मास मे सम्पन्न हुई इससे स्थानीय जनता को अद्भुत लाभ हुआ। इसी मध्य आर्य समाज कटक की भी सुचारु स्थापना हुई।

प्रचार से प्रभावित होकर अनेक लोगो ने मांस, अण्डा, तम्बाकू छोड़ने तथा यज्ञ व गायत्री मन्त्र एवं संध्या करने का संकल्प लिया।

आर्य पर्वों का सूची

सन् १९९३ तदनुसार सम्वत् २०४९-२०५०

क्र०सं०	नाम पर्व	अंग्रेजी तिथि	चन्द्र तिथि	सम्वत्	वार
१	मकर संक्रान्ति	१४-१-९३	माघ वदी ७	२०४९	गुरुवार
२	बसन्त पंचमी	२८-१-९३	माघ सुदी ८	२०४९	गुरुवार
३	सीताष्टमी	१४-२-९३	फा० वदी ८	२०४९	रविवार
४	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	१६-२-९३	फा० वदी १०	२०४९	मंगलवार
५	दयानन्द बोध दिवस	१९-२-९३	फा० वदी १३	२०४९	शुक्रवार
६	लेखराम तृतीया	२४-२-९३	फा० सुदी ३	२०४९	बुधवार
७	नव संस्येष्टि	८-३-९३	फा० सुदी १५	२०४९	सोमवार
८	आर्य समाज स्थापना दिवस	२४-३-९३	चैत्र सुदी १	२०५०	बुधवार
९	श्री रामनवमी	१-४-९३	चैत्र सुदी ९	२०५०	गुरुवार
१०	हरि तृतीया	२२-७-९३	श्रावण सुदी ३	२०५०	गुरुवार
११	श्रावणी उपाकर्म	२-८-९३	श्रावण सुदी १५	२०५०	सोमवार
१२	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	११-८-९३	भाद्र वदी ८	२०५०	बुधवार
१३	विजया दशमी	२४-१०-९३	आश्विनी सुदी १०	२०५०	रविवार
१४	गुरु विरजानन्द दिवस	२७-१०-९३	आश्विनी सुदी १२	२०५०	बुधवार
१५	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	१३-११-९३	कार्तिक वदी १५	२०५०	शनिवार
१६	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३-१२-९३	मार्गशीर्ष सुदी १०	२०५०	गुरुवार

टिप्पणि : १—सभी आर्य समाजें इन पर्वों को उत्साह पूर्वक मनावें।
२—देशी तिथियों में घट-बढ़ के कारण पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।
३—महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिन आर्य पर्व सूची में सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग के निश्चयानुसार इस वर्ष से सम्मिलित किया गया है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

वेदप्रचार का वृहद कार्यक्रम

आर्य समाज मन्दिर कृष्ण नगर दिल्ली में ३० नवम्बर से ४ दिसम्बर १९९२ तक वेद प्रचार के वृहद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः ६.३० से ८ बजे तक अथर्ववेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया तथा रात्रि मे आचार्य यशपाल सुधांशु की वेदकथा तथा श्री गुलाबसिंह राघव द्वारा मधुर भजनो का सहस्त्रो व्यक्तियों ने श्रवण किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गोपाल नगर खुदागंज का वार्षिकोत्सव १२ से १५ अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री यशपाल आर्य बन्धु, श्री वेमचन्द आर्य तथा कृपाल सिंह जी आदि ने अपने ओजस्वी विचारो से जनता को अत्यन्त प्रभावित किया।

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्यसमाज सीतामढ़ी, सर्वश्री धीरजचन्द्र सुथवानी प्रधान, डा० लक्ष्मीप्रसाद गुप्ता मन्त्री, पवन कुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज दयानन्द नगर बुढ़ाना (मु० नगर), सर्वश्री राजेन्द्रसिंह प्रधान, राजसिंह आर्य मन्त्री, मा० जयभगवान कोषाध्यक्ष।

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्दजीका मिशन

२३ दिसम्बर ९२६ को भारत मे एक ऐसे महापुरुष का बलिदान हुआ जिसे अपना कहने को प्रत्येक का हृदय तडप उठा । वह काग्रेस के थ इसलिए काग्रेस की बिकटतम सकट की घडिया म वह काग्रेस की डूबती नैया के माझी बने । वे हिन्दू सभाई भी थ इसलिए हिन्दुओ मे सगठन के पवित्र मन्त्र फ कन वाल वे ही थे । मुसलमा- भा उनके चाहने वाला म थे क्योकि इस्लाम के इतिहास मे पहली बार उन्होने किसी गैर मुस्लिम को अपन मिम्बर पर खडा करके उनके श्रीमुख से गायत्री मन्त्र सुना । राष्ट्रपिता महात्मा गाधी को जिन्होने अपने श्रीमुख से महात्मा की पदवी प्रदान की । प० जवाहरलाल नेहरू के पिता प० मोतीलाल नेहरू को अपन साहस पर काग्रेस का अध्यक्ष बनाया । अग्रेजो की सगीनो के आगे अपना सीना खोल दिया । इतने अप्रतिम अद्भुत नरपुगव आर्यों की शिरोमणि सभा सावदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के १९१० से १९१७ तक प्रधान भी रहे । बलिदान से ३ वष पूर्व तक भी १९२१ से २३ तक पुन सभाके प्रधान बने । पहले महात्मा मुन्शीराम जी के रूप मे बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के रूप मे । सार्वदेशिक सभा उनके पवित्र बलिदान से गौरवान्वित हो उठी क्योकि अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान भी सभा भवन मे हा हुआ था । यह बलिदान मात्र बलिदान ही नही था । सावदेशिक सभा को निश्चित दिशा निर्देशन देने के लिए एक दैवीय घटना थी । बलिदान के समय सभा की बागडोर आय समाज के तपोधन महात्मा नारायण स्वामी जी सभाले हुए थे । उनका जीवन भी महान त्याग व तपस्या का जीवन था जिस पर कोई भी आर्य गौरवान्वित हो सकता है ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने आप मे एक सम्पूण सस्था थे परिणाम स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान ने मृतप्राय हिन्दू जाति को झकझोर कर जैसे प्राण फूक दिये । निस्सन्देह १९२६ से १९४७ तक का आय समाज का इतिहास महान क्रातिकारी व स्वर्णाक्षरो मे लिखे जान योग्य है ।

इस अवधि मे स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रेरणा प्राप्त कर राष्ट्रोत्थान का जैसे सारा भार आर्य समाज के देशभक्त व त्यागी तपस्वी कायकर्ताओ ने अपने कधो पर उठा लिया । स्वतन्त्रता सग्राम म हजारा आय नर नारी जेलो मे गए । राष्ट्रीयता का घोर शत्रु निजाम हैदराबाद तो केवल आय समाज के ही बल पौरुप से ही सत्वहीन बन सका स्वामी श्रद्धानन्द जी के ही पद चिन्हो पर चलकर सार्वदेशिक सभा ने इस महान स्वतन्त्रता अभियान का सफल नेतृत्व किया ।

आय समाज स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस सदा से मनाता आ रहा है । यह दिवस मनाने का एकमात्र उद्देश्य उनके छोड हुए कार्यों हिन्दू समाज की रक्षा वैदिक धर्म की स्थापना वैदिक युग का निर्माण भारतीय राष्ट्र की एकता अखण्डता की रक्षा आदि अनेक गतिविधिया है जिन्हे आर्य समाज पूरा करने मे कृतसकल्प हैं ।

स्वामी जी महाराज ने महर्षि दयानन्द से सीधी प्रेरणा पाकर ही अपन जीवन को आर्य समाज को समर्पित किया था । ये ऋषि के विचारो व उनके कायक्रमो से इतने प्रभावित थे कि उन्होने ऋषि मिशन का केवल अनुयायी बनकर नही अपितु एक समर्पित मिशनरी के रूप मे जीवन बिताया । महर्षि के देहावसान के बाद वे पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ कार्यकर्ता रहे । प० लेखराम जी के ग्रन्थो का सकलन उन्होने कुल्लियात आर्य मुसाफिर के रूप मे प्रकाशित किया । वे मुसाफिर मिशन को भारत के उत्थान के लिए परमावश्यक समझते थे । कुल्लियात की भूमिका मे बड मार्मिक शब्दो मे हिन्दू राज्य व हिन्दू जाति के पतन पर प्रकाश डाला है । अपने देशभक्ति व शौर्य गुण के कारण वे प्रत्येक क्षेत्र मे एक विजयी सेनापति की भाति अग्रसर हुए । गुरुकुल की स्थापना उनके धैर्य का अद्भुत परीक्षण था जिसमे वे सफल हुए । तत्कालीन वायसराय ने गुरुकुल कागडी के निरीक्षण के पश्चात एक बडा मार्मिक लेख लिखा जिसमे स्वामी श्रद्धानन्द जी की तुलना ईसा व सेंट पीटर से करते हुए उनके द्वारा किये जा रहे महान कार्य की भूरि भूरि प्रशसा की थी ।

स्वामीजी की कल्पना का भारत वैदिककाल का भारत था जिसकी सरचना मे वे अहर्निश लगे रहे । मोहनदास कर्मचन्द गाधी को भी उन्होने महात्मा की पदवी प्रदान कर भारत के आध्यात्मिक अभ्युत्थान की कल्पना की थी ।

वे आर्य समाज के कार्यक्रमो को ही राष्ट्र की सेवा मानत थे यह सत्य भी है कि आर्य समाज के कार्यक्रमो के आधार पर ही राष्ट्र निर्माण राष्ट्रविकास की कल्पना के अतिरिक्त जिन बातो की ओर हमारा अधिक ध्यान गया है उससे धन बढा हो पर देश का सिर ऊचा नही हुआ । गत वर्षों मे नैतिक रूप से हमारा जो पतन हुआ है उसे देखते हुए कोई भी महर्षि की भविष्य वाणियो के प्रति नतमस्तक हो सकता है जो उन्होने अपने अमर ग्रन्थो मे भारतीय राष्ट्र के महान अतीत व वर्तमान दुर्दशा व भविष्य के निर्माण के लिए की थी ।

हमने जहा आध्यात्मिकता व नैतिकता से मुह मोडा है वही हमारा जो अध पतन हुआ है उसको कहानी हमारा वतमान विषय नही परन्तु सच्चाई यह है कि आज भी देश को महर्षि दयानन्द के अमर सन्देश की आवश्यकता है जिसे कोई अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जैसा जावाज सेनापति कार्यान्वित करे तभी देश व समाज वतमान सामाजिक व राजनीतिक सकटा से उबर सकेगा ।

जिन समस्याओ पर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गहरे अध्ययन व चिन्तन पर अपनी लेखनी से महान प्रेरणादायक साहित्य लिखा है सौभाग्य से वह अब गोविन्दराम हासानन्द के द्वारा पुन प्रकाशित कर दिया गया है । समस्याये आज भी वही है । हमारा धर्म है धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी के विचारो से लाभ उठावें और देश समाज की समस्याओ का समाधान सबके अनुभूत प्रयोग मे खोजे ताकि देश व समाज जिस विकट परिस्थितियो मे होकर गुजर रहा है उसके कल्याण का सन्मार्ग प्रशस्त हो सके ।

सामाजिक सेवा कार्यों के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का लगाया हुआ पौधा आज वट वृक्ष के रूप मे आर्यों की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के रूप मे उनके महान मिशन को पूरा करने मे अहर्निश सलग्न है । वह विकसित होकर ससार भर मे अपनी बहुमुखी सेवायें कर रहा है । जिस प्रकार स्वामी जी के काल मे सारा देश उनके साथ था आज भी देश का सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त होने पर सभा स्वामी जी के महान मिशन को सफलता पूर्वक पूरा कर सकेगी । सभा को सुदृढ बनाने में ही हमारा, देश का व समाज का सब का कल्याण है ।

मुन्शीराम—श्रद्धानन्द

तुच्छ सीप मे मूल्यवान मोती पलता है ।
शूलो मे फूलो का जीवन रथ चलता है ।।

जैसे रात्रि के आचल से प्रात फूटता ।
धूम पुञ्ज से जैसे ज्वाल बाण छूटता ।।

तूफानी लहरो से पोत यथा बच पाये ।
और भवर से उछल स्वय तट को छू जाये ।।

कमल कीच से निकले औ मुस्काये जैसे ।
दर्पण मल को छोड बदन दिखाये जैसे ।।

ज्यो रसाल गुठली को फोड बढकर लहराये ।
बुझा दीप जलते दीपक से ज्योति पाये ।।

क्षुद्र नदी जल सुरसरिता से जब मिल जाये ।
नाम रूप तज गगोदक पावन कहलाये ।।

जैसे लोहा पारसमणि से छू जाने पर ।
बन जाता है स्वर्ण, चमक उठता है सत्वर ।।

ऐसे मुन्शीराम ऋषि से जब मिल पाये ।
त्याग कलुष बलिदानी श्रद्धानन्द कहाये ।।

—ले० श्री उत्तमचन्द शरर एम०ए०

स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्य स्मृति के अवसर पर :

कैसे मोड़ लिया जीवन ने

—सत्यानन्द आर्य

कैसे छोटी-छोटी घटनायें मनुष्य के जीवन को प्रभावित करती हैं—यह अगर जानना हो तो झांक कर देखें स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन चरित्र को। कैसे एक शराबी, मांसाहारी, वैश्यागामी मनुष्य न केवल इन बुराइयों पर विजय प्राप्त कर सका, बल्कि इन बुराइयो के विरुद्ध लोहा लेने के लिए महात्मा और तदन्तर उच्चकोटि के संन्यासी के रूप में प्रकट हुए। भारत मां की आजादी की लड़ाई में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और भारत में स्वामी दयानन्द के मन्तव्यो के प्रचार के लिए सही उत्तराधिकारी साबित हुए। उनके जीवन के प्रसंग हम सब लोगों के लिए प्रेरणादायक है।

बालक मुन्शीराम को उसके साथी मोटर कारो में राग और नृत्य आदि में ले जाते। उसके साथी सब बिगड़े हुए रईस थे। उनके संग से वह भी भ्रष्टाचारी हो गया। एक दिन मुन्शीराम अपने साथियों के साथ खूब मद्यपान करके मद मे चूर होकर वेश्या के घर जा रहे थे कि न जाने भीतर प्रभु प्रेरणा से क्या भाव पैदा हुए कि मुख से ध्वनि निकलने लगी—अपवित्र ! अपवित्र !

डगमगाते हुए वेश्या के कोठे से सहसा नीचे उतर आए। घर पहुंचे बड़ा नशा था। घर आते ही वमन होने लगा। उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी ने आकर संभाला। जूते उतारे, मुख धोया, मैले कपड़े उतारे, बिस्तर पर लिटाकर सिर और मस्तक दबाना आरम्भ कर दिया। मुन्शीराम की पथराई आंखें गूढ़ निद्रा में बन्द हो गई। रात के एक बजे निद्रा खुली तो शिवदेवी बैठी हुई पांव दबा रही थी। जल मागने पर देवी ने गर्म दूध का गिलास मुंह से लगा दिया। नशा चूर हो गया। उस समय तक बराबर जागते रहने और भोजन न करने का कारण पूछने पर देवी ने कहा—"आपके भोजन किये बिना मैं कैसे खाती ?"

मुन्शीराम प्राय: रोज भ्रमण पर जाया करते थे। भ्रमण करते-करते लाहौर के अनारकली आर्य समाज पहुचे। जहा एक ओर स्वच्छ वायु का सेवन करते हुए वाटिकाओ के सुन्दर दृश्य देखे। वहा अनारकली के सामने से सिर पर मास का टोकरा उठाये बोझ के दबाव से बचने के लिए एक आदमी भागा जा रहा था। टोकरे मे भेड, बकरियो और बकरो की खाल उधड़ी टाग बाहर लटकती हुई एक भयानक दृश्य उपस्थित कर रही थी। श्रद्धानन्द जी का दिल दहल गया। वे बाल्यावस्था से मासाहारी थे, उनके पिता मास भक्षण स्वाभाविक समझते थे।

नित्य कर्मों से निवृत्त होकर सत्यार्थ प्रकाश का दशम समुल्लास भक्ष्याभक्ष्य के विषय मे माम-भक्षण के दोष पढ़ने गए तथा प्रात. काल का दृश्य मूर्तिमान् होकर उनके समक्ष खड़ा होता गया। एक-एक शब्द ध्यानपूर्वक पढते गए। भोजन का समय आ पहुचा। अपने विचार मे निमग्न मुन्शीराम भोजनालय मे आ बैठे। अन्य खाद्य वस्तुओ के साथ ही मास भी कटोरे मे आया ही था उसे देखकर ऐसी घृणा हुई कि कासी के कटोरे को उठा दीवार पर फेंक मारा। कटोरा टुकड़े-टुकड़े हो गया।

उनके साथी सब घबराये। मुन्शीराम जी ने कहा कि मैंने आज पुराने सस्कारो की बेड़ियो को कासी के बर्तन की तरह टुकड़े-टुकड़े कर दिया है। मास भक्षण आर्य मत मे महापापो मे से एक हैं। उस दिन के पश्चात मास भक्षण तो दूर माम खाने वालो की पक्ति मे बैठना उनके लिए असह्य हो गया।

१४ श्रावण सवत १९३६ को क्रान्ति के अग्रदूत, महर्षि दयानन्द बरेली पधारे। मुन्शीराम जी के पिता श्री न नकचन्द जी को आदेश मिला कि पंडित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानो मे कोई उपद्रव न हो ऐसा प्रबन्ध करें। प्रबन्ध के लिए वे स्वय सभा म गए और महर्षि के व्याख्यान से बड़े प्रभावित हुए साथ ही उन्हे यह भी विश्वास हो गया कि उनके नास्तिक पुत्र की संशय-निवृत्ति उनके सत्सग म हो जाएगी। घर आकर उन्होने मुंशीराम से कहा—'बेटा मुन्शीराम ! एक दण्डी सन्यासी आए हैं, बड़े विद्वान और योगिराज हैं। उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जायेंगे। कल मेरे साथ चलना।"

मुंशीराम व्याख्यान सुनने जाते थे और उनका हृदय महर्षि की ओर आकर्षित होता जाता था, जैसे कि भटके हुए जहाज का कप्तान प्रकाश स्तम्भ का प्रकाश पाकर तीव्रता से इधर बढ़ रहा हो। उस दिन व्याख्यान परमात्मा के निज नाम "ओ३म्" पर था। व्याख्यान के सम्बन्ध में मुंशीराम जी (जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द कहलाये) ने लिखा है—"वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषि-आत्मा का ही काम था।"

पंजाब में ऋषि दयानन्द जी की स्मृति में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज बनाये गए। महात्मा मुंशीराम जी को इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि वेद प्रचार का काम खूब चले। संस्कृत शिक्षा का कार्य वैदिक पद्धति पर हो। महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में पढ़ा कि विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश मे होना चाहिए। तो आपने गुरुकुल स्थापना का दृढ़ संकल्प कर लिया। स्वामी जी के अनथक प्रयत्नों से ही सन् १९०२ में हरिद्वार के निकट कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना का काम पूर्ण हुआ।

अब सवाल यह था कि पढने वाले कहां से आयें। कौन माता-पिता अपने बच्चों को नये परीक्षण में एक लम्बे समय के लिए जंगलो में भेजने का साहस कर सकता है। इसके लिए भी सबसे पहले लाला मुंशीराम जी आगे बढ़े। आपने अपने दोनो पुत्रो हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल में प्रविष्ट किया, शीघ्र ही कुछ अन्य मित्रो ने भी अनुकरण किया और अपने पुत्र दिए। आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ख्याति चारों दिशाओं में व्याप्त है।

गुरुकुल की स्थापना करने के बाद महात्मा मुंशीराम को गुरुकुल को सुचारु रूप म चलाने के लिए धन की आवश्यकता महसूस हुई। आप घर से निकले और प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक तीस हजार रुपया एकत्रित न कर लूंगा घर न लौटूंगा। आपने समस्त देश का भ्रमण किया। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर स्थान-स्थान पर व्याख्यान दिये। रुपया प्राप्त हुआ। परन्तु गुरुकुल चलाने के लिए कार्यकर्ताओ की चिन्ता थी। कहां से त्यागी और विद्वान सदाचारी कार्यकर्ता प्राप्त किये जाये। जो व्यवस्था संभाल सकें। सबसे पहले मुंशीराम जी ने वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश किया और वे सेवा कार्य के लिए स्वतन्त्र हो गये। अब तो सहयोगी व्यक्तियो का ताता लग गया। लाला शालिगराम (जालन्धर) आजन्म रहने का व्रत लेकर गुरुकुल के काम में लग गये। लाला मुंशीराम जी के दो पुत्र पडित गगादत्त और विष्णुमित्र थे, उन्होने भी अपना पूरा समय गुरुकुल को समर्पित कर दिया इन तीनो व्यक्तियो के साथ प्रारम्भिक काम शुरू हो गया।

गुरुकुल कागडी का उत्सव चल रहा था। गुरुकुल के लिए अपील के सम्बन्ध मे महात्मा मुंशीराम जी का उस दिन का व्याख्यान महत्वपूर्ण था, जिसका मुख्य आशय इस प्रकार था—

कुछ समय हुआ, गुरुकुल के लिए धन संग्रह करने के निमित्त मैं दिल्ली गया। वहा और प्रमुखजना के साथ मे सदर के सबसे बड़े रईस के घर चन्दा मांगने पहुचा। उस रईस को जब गुरुकुल की शिक्षा मण्डली के आने का समाचार मिला तो वह घर के अन्दर चला गया और कहला भेजा कि राय साहब घर में नही है। यह बात उस समय मुझे बहुत बुरी लगी और मैं असन्तुष्ट होकर मण्डली को लेकर वहा से चला आया। डेरे पर आकर मैंने अपनी अन्तरात्मा से पूछा कि ऐसा क्यो हुआ। मेरे अन्दर क्या कमी है, जिसके कारण वह धनी आदमी मुझसे बचने की चेष्टा कर रहा था। उसके बाहर न आने को मैंने बुरा माना ? मेरी आत्मा ने उत्तर दिया कि इसका कारण यह है कि तूने अभी अपने आपको--सर्वतोभाव से धर्म की सेवा में अर्पण नहीं किया और तेरे मन मे बची हुई सम्पत्ति के कारण अहंकार है। उसी समय मैंने निश्चय किया कि मैं अहंकार की जड अपनी पुश्तैनी कोठी जो मेरी अन्तिम भौतिक सम्पत्ति शेष है को भी गुरुकुल को अर्पण कर दूंगा तभी वस्तुत: धर्म की सेवा के योग्य हो सकूंगा।

महात्मा मुन्शीराम जी अपनी और समस्त सम्पत्ति प्रेस आदि पहले ही गुरुकुल कांगड़ी के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को समर्पित कर चुके थे। उस दिन उनकी इस असाधारण घोषणा से सभा में आये नर-नारियो के भाव विह्वल होकर आंखों मे आसू आ गये।

श्रद्धा, सत्य एवं साहस की मूर्ति—श्रद्धानन्द

—डा० रघुवीर वेदालकार, दिल्ली

यदि कभी अश्रद्धा तुम्हे नास्तिकता की ओर धकेलना चाहे यदि कभी असत्य तुम्हे पथ से विचलित करना चाहे यदि सकट आने पर कभी तुम्हारी आत्मा मे भय का प्रवेश हो तो श्रद्धा, सत्य एव साहस की मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द का स्मरण तुम्हे इन सभी दुर्बलताओ से मुक्ति दिला देगा।

श्रद्धालु श्रद्धानन्द ! सत्य के पुजारी श्रद्धानन्द ! साहस की प्रतिमूर्ति श्रद्धानन्द ! तुम्हारे अन्दर सिंह के समान साहस एव वीरता थी, तुम्हारे जीवन मे नदी के समान सतत् गतिशीलता थी, सकटो के समय हिमालय के समान अडिग रहने की क्षमता थी तथा तुम्हारे हृदय मे निष्कलक चन्द्रमा के समान पवित्रता थी। उसमे भरे थे—प्रेम-करुणा उदारता, विशालता तथा निश्छलता। आज तुम्हे भौतिक शरीर त्यागे हुए ६६ वर्ष व्यतीत हो गये। तुम्हारी शहादत से उत्पन्न आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति आज तक पूर्ण नही हो पायी है।

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन खुली किताब रहा है। कल्याण मार्ग के उस पथिक ने 'कल्याणमार्ग के पथिक मे अपने जीवन को सर्व सुलभ कर दिया। काश ! हम उसके किसी भी अ श को ग्रहण कर पाते। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन सत्य एव श्रद्धा पर आधारित था। वे सत्य को व्यक्तिगत नही अपितु सामाजिक एव राजनीतिक स्तर पर भी व्यवहार की वस्तु मानते थे। उन्होने असत्य का छल, प्रपञ्च का आश्रय नही लिया अपितु 'सत्येन पन्था विततो देवयानम्' के अनुसार वे देवयान पथ के हो पथिक रहे। उनको पता था कि सत्य का मार्ग अति कठिन है, उस पर चलने वाले दुर्लभ है तभी तो उन्होने लिखा 'सचाई की वेदी पर सिर रखने वाले कहा दिखाई देते है ? क्या आर्यावर्त्त की पवित्र भूमि धर्मवीरो से शून्य हो गयी ? स्वामी जी का यह प्रश्न आज भी हमारे सामने उत्तरापेक्षी अवस्था मे खडा है। स्वामी जी की मान्यता थी कि राजनीतिक या अन्य किसी भी दलीय स्तर पर असत्य, धोखाधडी का आश्रय न लेना चाहिए। इसी लिए वे लिखते हैं, 'एक ऐसे धार्मिक दल की आवश्यकता है जो विरोधी को धोखा देना भी वैसा ही पाप समझना हो जैसा कि अपने भाई को। आज क्या कोई भी धार्मिक अथवा अन्य दल इस पर आचरण करने की सोच भी सकता है ?

सचाई का इच्छुक सदैव जिज्ञासु रहता है। वह सदैव सत्य को स्वीकार करता चलता है, असत्य को नकारता चलता है। इसीलिए तो महर्षि ने लिखा 'सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द इसके अक्षरश अनुयायी थे। जो जिज्ञासा मूलशकर को शिवपिण्डी पर चढ चूहो को देखकर हुई थी उसी सत्यान्वेषिणी जिज्ञासा को स्वामी श्रद्धानन्द अपने शब्दो मे इस प्रकार प्रकट करते है—क्या सचमुच 'यह जगत् स्वामी का दरबार है जिससे एक रानी उसके भक्तो को रोक सकती है ? क्या यह मूर्त्ति विश्वनाथ हो सकती है जिसके अन्दर ऐसा पक्षपात हो। चूहे की घटना के बाद मूलशकर निकल पड़े थे सच्चे शिव की खोज मे तथा रात्रि की घटना के बाद मु शीराम चल दिये चर्च की ओर ईसाई बनने। फाल्गुन स० १९३० मे रोमन कैथोलिक विधि से बपतिस्मा लेने की तिथि भी निश्चित की जाने लगी। यदि ऐसा हो गया होता तो क्या से क्या हो गया होता ? उल्टी गगा हिमालय को बह जाती। मु शीराम की जो शक्ति महात्मा बनकर तथा तत्पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द बनकर आर्य जाति के उद्धार मे लगी, वही शक्ति उसके समुच्छेद मे लग जाती और एक बार फिर ब्राह्मण से यवन बने कालेचाँद का इतिहास दोहरा दिया जाता। परमात्मा को अभीष्ट कुछ और ही था। उसे श्रद्धानन्द के रूप मे ही महान् समाज सेवक, राष्ट्रसेवक, गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धारक वीर सन्यासी देना था इसीलिए एक पादरी तथा नन का घृणित दृश्य देखते ही मुंशीराम अधोगति के द्वार पर जाकर भी वापस लौट आया। वह नास्तिक भी बना किन्तु उसकी सत्यान्वेषिणी जिज्ञासा तभी शान्त हो पायी जब कि वह महर्षि दयानन्द का सच्चा सेवक बना।

स्वामी श्रद्धानन्द परमात्मा के सच्चे भक्त थे इसीलिए हताशा, निराशा उनके जीवन को छू नही पायी थी। विकट से विकट परिस्थिति मे भी उन्होने सत्य एव साहस नही छोडा। गुरुकुल के लिए धन सग्रह की प्रतिज्ञा करके निकले तो उसे पूर्ण करके ही लौटे। जीवन मे निराशा से ग्रस्त व्यक्तियो को सबक देते वे लिखतेहै 'मनुष्य को कभी निराश न होना चाहिए परमात्मा पर दृढ विश्वास रखना चाहिए। इसी प्रकार अपने जीवन चरित्र की प्रस्तावना मे लिखतेहैं—'जब तक दम मे दम है, तब तक मनुष्य को बेदम नही होना चाहिए यह मेरा सिद्धान्त है और इसी सिद्धान्त पर वे पूरे जीवन चले भी।

कर्तव्य परायणता ईश्वर भक्ति तथा सत्याचरण के कारण स्वामी श्रद्धानन्दमे अप्रतिम साहस विद्यमान था इसके कारण उनको वीर सन्यासी कहा जाने लगा था। सुना है कि भीष्म पितामह अपने ब्रह्मचर्य के कारण मृत्युञ्जयी हो गये थे। स्वामी श्रद्धानन्द अपने साहस के कारण मृत्युञ्जयी थे। मौत जिससे प्राणीमात्र थर्राता है, श्रद्धानन्द का भयभीत न कर सकी। करती भी कैसे ? यह उसी नगे फकीर का चेला था जिसने कहा था कि दयानन्द को तोप के आगे बाधकर भी उड़ावे तब भी उसके मुख से वेदो की श्रुति निकलेगी। श्रद्धानन्द को भी मृत्यु से पूर्व धमकी भरे पत्र मिले। मित्रो ने अकेला यात्रा करने से मना किया किन्तु वे बोले सिवाय परमात्मा के मैं किसी का सहारा क्यो लू ? उसकी इच्छा के विपरीत एक पत्ती भी नष्ट नही हो सकती। वाह ! श्रद्धानन्द मृत्यु तुम जैसे जीवित शहीदो का क्या बिगाड सकती थी। वह तो डरकर लौट जाती थी। हा, वह उस समय भी तो उलटे पाव ही लौटी थी जब रौलेट एक्ट के विरोध मे एकत्रित जलूस का नेतृत्व करते हुए तुमने गोरो की सगीनो के आगे अपना विशाल वक्ष खोल दिया था। अपने अदम्य साहस का स्मरणीय परिचय स्वामी जी ने तब भी दिया था जब कि वे सुल्ताना डाकू का नोटिस पाकर अपने साहसी ब्रह्मचारियो के साथ एक दुर्दान्त डाकू का सामना करने जा डटे थे। फल उलटा ही निकला। मृत्यु तो भाग ही

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द—जिन्हें महर्षि के सत्यार्थप्रकाश ने कल्याण-मार्ग का पथिक बना दिया

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

क्रांतिदूत दयानन्द का क्रांतिकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश ऐसा अनुपम अमरदीप अथवा प्रकाशस्तम्भ है जो अगणित भूले भटके मानवों को सुपथ दर्शा चुका है। इसके स्वाध्याय से न जाने कितने पतित सुधर कर महात्मा बन गये। कितनों के जीवन बदल गये और कितनों के उजड़े घर फिर से बस गये? अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द भी उन्हीं में से एक थे। इसी ग्रन्थ ने एक नास्तिक एवं नाना व्यसनों में लिप्त नवयुवक को कल्याण-मार्ग का पथिक बना दिया।

मुन्शीराम जी अपने यौवनकाल में नास्तिकता की ओर उन्मुख हो चुके थे और नास्तिक भी ऐसे जिन्हें अपनी नास्तिकता पर गर्व था। बरेली में जब महर्षि दयानन्द पधारे थे, तब मुन्शीराम जी के पिता श्री नानकचन्द जी वहां नगर कोतवाल थे। महर्षि के व्याख्यानों में शांति-व्यवस्था बनाये रखने का काम उनके सुपुर्द था। अपने पुत्र को नास्तिकता की ओर उन्मुख होते और नाना व्यसनों से घिरे होने से वे बहुत चिन्तित थे और चाहते थे कि किसी तरह मेरा बेटा इस अन्धकारमय अवस्था से उभर आवे। जब उन्होंने बरेली में महर्षि के दर्शन किये और उनके व्याख्यान सुने तो उन्हें कुछ आशा बन्धी कि यह महात्मा अवश्य मेरे बेटे को उभार लेंगे और इसी विचार से उन्होंने अपने बेटे मुन्शीराम से कहा कि वेदों के मर्मज्ञ एक अद्‌भुत विद्वान सन्यासी यहां पधारे हुए हैं। क्या ही अच्छा हो यदि तुम भी उनके दर्शन एवं प्रवचनों का श्रवण कर सको। और यह भी कहा कि उनके दर्शनों के लिए एवं उनके प्रवचनों को सुनने के लिए नगर के बहुत से सम्भ्रान्त लोग उपस्थित होते हैं। कई वकील, कई डाक्टर, कई प्रोफेसर, यहां तक कि कलैक्टर और पादरी भी उपस्थित होते हैं। अतः कल तुम भी उनके उपदेश सुनने को चलना। मुन्शीराम ने चलने के लिए हां कर दी। किन्तु उसके बाद वह अपने मन में सोचने लगा कि केवल संस्कृत पढ़ा व्यक्ति भला युक्तियुक्त एवं तर्कसंगत बात कैसे कर सकता है?

अगले दिन नियत समय पर पिताजी ने चलने को कहा। मुन्शीराम बेमन ही पिता के साथ हो लिए। वहां आकर देखते हैं कि नगर के अनेक गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति उनका भाषण सुनने के लिए समुपस्थित हैं। पादरी स्काट और कई अन्य यूरोपियन भी वहां पर उपस्थित थे इसे देखकर मुन्शीराम के मन में कुछ उत्सुकता एवं व्यग्रता उत्पन्न हुई और वे अधीरता से भाषण प्रारम्भ होने की घड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। महर्षि का भाषण क्या था, अमृतवर्षा थी। प्रथम दिन के उस भाषण ने ही मुन्शीराम के मस्तिष्क को झकझोर कर रख दिया और यही उनके जीवन में परिवर्तन का कारण बना। उस प्रभाव का जो महर्षि के पहले दिन के व्याख्यान का मुन्शीराम जी पर पड़ा, उसको उनके अपने शब्दों में देना उचित समझते हैं। अपनी आत्मकथा में स्वामी जी लिखते हैं कि—'वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषिआत्मा का ही काम था।'

इतना ही नहीं स्वामी जी तो यहां तक लिखते हैं कि 'यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था तथापि मैं मन में सोचा करता था कि यदि ईश्वर और वेद के ढकोसले को पण्डित दयानन्द स्वामी तिलांजलि दे दें तो फिर कोई भी विद्वान उनकी अपूर्व युक्ति और तर्कणा शक्ति का सामना करने वाला न रहे। मुझे अपने नास्तिकपन का उन दिनों अभिमान था। एक दिन ईश्वर के अस्तित्व पर आक्षेप कर डाले पांच मिनट के प्रश्नोत्तर में ऐसा घिर गया कि जिह्वा पर मुहर लग गई। मैंने कहा—"महाराज! आपकी तर्कना बड़ी तीक्ष्ण है। आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्व) है। दूसरे दिन भी ऐसा ही कहने पर महर्षि ने उनसे कहा कि देखो! तुमने प्रश्न किये मैंने उत्तर दिए यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी मैं तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास करा दूंगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।"

सत्यार्थप्रकाश का जादू

महर्षि के सत्संग ने मुन्शीराम पर गहरा प्रभाव छोड़ा तथापि ईश्वर पर उनका पूर्णरूपेण विश्वास नहीं जम पाया था। किन्तु एक समय ऐसा आया जब महर्षि के ही विचारपुंज सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से उनके हृदय में आस्तिकता के भाव जागृत हो उठे। इस तथ्य को श्री स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा में स्वीकारा है। वे लिखते हैं कि "सम्वत १९४१ का माघ मास और आदित्यवार का दिन है। नास्तिकपन के गढ़े से मैं निकल चुका हूं। धर्म-विषयक गहरे आंदोलन के पश्चात सत्यार्थप्रकाश का पाठ दिन-रात आरम्भ कर चुका हूं। अनारकली के पास रहमत खां के अहाते में एक तीन कमरोंवाली कोठी के बाईं ओर के कमरे में मैं प्रातः ६ बजे कुर्सी पर बैठा हूं। 'सत्यार्थप्रकाश' का आठवां समुल्लास सामने खुला पड़ा है, किन्तु मैं हाथ पर सिर रखे किसी गम्भीर विचार में निमग्न हूं। इतने में कमरे का द्वार खुला और मेरे मित्र सुन्दरदास जी ने अन्दर प्रवेश किया। उनके पैर की आहट ने मुझे विचारनिद्रा से जगा दिया। यह सुन्दरदास जी रावलपिण्डी के राजकाज में फंसे वकील, लाला अमोलकराम के भाई आर्यजाति की उन्नति के बड़े पक्षपाती थे। सुन्दरदास जी जानते थे कि आस्तिक बनने के पश्चात मेरा अधिक झुकाव ब्राह्मसमाज की ओर हो रहा है। उन्होंने पूछा—'किस चिन्ता में हैं। कहिए कुछ निश्चय हुआ?' मेरी ओर से उत्तर मिला—'पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने फैसला कर दिया, आज मैं सच्चे दिल से आर्यसमाज का सभासद बन सकता हूं।"

यह सब महर्षि दयानन्द और उनके विचारपुंज सत्यार्थप्रकाश का ही चमत्कारी प्रभाव था और कल्याण मार्ग के इस पथिक ने इस प्रभाव को मुक्त-कण्ठ से स्वीकारा भी है। स्वामी जी के ये शब्द इसमें प्रमाण हैं—'मैं क्या था इसे इस कहानी में मैंने छिपाया नहीं। मैं क्या बन गया और अब क्या हूं? यह सब तुम्हारी कृपा का ही परिणाम है।' (वही) श्री स्वामी जी महर्षि के प्रति कितने कृतज्ञ हैं, यह उपरोक्त शब्दों से प्रतिध्वनित होता है।

सत्यार्थप्रकाश की प्राप्ति की उत्सुकता भरी कहानी

स्वामी जी अपनी धुन के बड़े पक्के थे। एक बार जो ठान लेते थे तो उसे कर ही गुजरते थे। जब सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय की बात मन में आई तो उसे प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठे। अपनी इस आतुरता और अधीरता को दर्शाते हुए वे लिखते हैं कि "मैं सीधा बच्छोवाली के आर्यसमाज मन्दिर की ओर सत्यार्थप्रकाश खरीदने के विचार से चल दिया। विक्रय पुस्तक भण्डार बन्द था। चपरासी ने कहा कि लाला केशवराम पुस्तकाध्यक्ष के आने पर पुस्तक मिल सकेगी। मैंने उनके घर का पता लिया और दो घण्टों की आवारागर्दी के पीछे उनका घर ढूंढ निकाला। केशवराम जी घर न थे, बड़े तारघर गये थे, क्योंकि वह तार बाबू (सिगनेलर) का काम करके ही आजीविका प्राप्त करते थे। मैं तारघर का पता लगाकर वहां पहुंचा। उस समय वह छुट्टी में जलपान के लिए घर गये थे। मैं फिर उनके घर लौटा तो वह तारघर लौट गये थे। पूछने से पता लगा कि वे डेढ़ घण्टे में ड्यूटी से लौटेंगे। मैंने वह डेढ़ घण्टा पास की गली के अन्दर मटरगश्ती में बिताया। एक सज्जन बाबू केशवराम जी के घर में जाते दिखाई दिये। मैंने उन्हें जा घेरा। "महाशय जी, मुझे सत्यार्थप्रकाश खरीदना है।" उत्तर मिला "निवृत्त होकर कुछ खालूं फिर आपके साथ समाज मन्दिर चलूंगा। मैंने अपना सारे दिन का इतिहास सुनाकर बाहर ठहरने की इच्छा प्रकट की। केशव जी का मुख सहानुभूति से चमक उठा और उन्होंने कहा—"महाशय जी! चलिए पहले आपको पुस्तक दे दूं। जब तक आपका काम न करलूं, मुझे इत्मीनान न होगा।"

समाज मन्दिर में पहुंचने पर सत्यार्थप्रकाश मेरे हाथ में रखा गया। मैंने मूल्य दिया और इस प्रकार आह्लादपूर्वक लौटा, मानो बड़ा कोष हाथ लगा है। मेरे साथी मुझे प्रातःकाल के भोजन में सम्मिलित न देख विस्मित थे। जब मैं पहुंचा तब सायंकाल का भोजन परोसा जा रहा था, भूख खूब लगी थी, भोजन रुचिपूर्वक किया। शाम को भ्रमण के लिए गया ही नहीं। दीपक जला, सत्यार्थप्रकाश की भूमिका समाप्तकर प्रथम समुल्लास के स्वाध्याय में लग गया।

पाठकवृन्द! सत्यार्थप्रकाश की प्राप्ति के लिए व्याकुलता और आतुरता इससे बढ़कर और फिर क्या हो सकती है? महर्षि के इसी ग्रन्थ ने मुन्शीराम को कल्याण-मार्ग का पथिक बनाया था। काश! हम महर्षि के इस पावन ग्रन्थ को अपना प्रेरणास्रोत बना सकें।

सत्य के अवतार—स्वामी श्रद्धानन्द

—डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार

स्वामी श्रद्धानन्द के नाम का स्मरण आते ही हमारा मन अपार श्रद्धा, स्नेह और आदर से भर जाता है। वह सत्य का प्रकाशक, निर्भयता की मूर्ति और अन्याय अत्याचार के विरुद्ध लड़ने वाला परमेश्वर की सृष्टि का अनुपम योद्धा था समस्याओं का समाधान, आत्म विश्वास और आत्मशक्ति का आत्मस्वमान मूर्ति था, वह सच्चा मानव था।

२१-५-१९२५ को कर्नाटक के मगलौर आर्य समाज के उत्सव पर विद्यामार्तण्ड श्री प० धर्मदेव सिद्धान्तालंकार के निमन्त्रण पर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सन्देश भेजा—

'तुम यह मत सोचो कि वैदिक धर्म पन्थ या सम्प्रदाय है। यह वह सत्य सनातन धर्म है, जिसके बिना ससार की सामाजिक व्यवस्था एक पल भर के लिए भी नहीं रह सकती। प्राचीन काल मे असख्य आध्यात्मिक कोषो को खोलने वाली चाबी तुम्हारे ही हाथो में दी गई और अब भी अशात ससार को शान्ति देना तुम (आर्य वीरो का) लोगो का ही काम है। किन्तु तुमको पहले अपनी सब अपवित्रताओं को धोना होगा आज गम्भीर भाव से प्रतिज्ञा करो कि तुम वैदिक पच महायज्ञो के अनुष्ठान मे प्रमाद न करोगे, तुम अस्वाभाविक जाति भेदो के बन्धनो को छोड वर्णाश्रम व्यवस्था को अपने जीवन मे परिणत करोगे, तुम अपनी मातृभूमि मे से अस्पृश्यता के कलक को समूल नाश कर दोगे और तुम आर्यसमाज के सार्वभौम मन्दिर का द्वार मत, सम्प्रदाय जाति, रग आदि भेद भावना का कुछ भी विचार न करके मनुष्य मात्र के लिए खोल दोगे। परमपिता परमात्मा इस प्रतिज्ञा पालन मे तुम्हारे सहायक हों।

एक दिन की बात है। स्वामी श्रद्धानन्द स्वामी दयानन्द का भाषण सुनकर आए और उस पर चिन्तन करते हुए लिखा मैंने केशवचन्द्र सेन, लालमोहन घोष, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, एनीबेसेन्ट और अन्य बहुत से नेताओ के भाषण सुने हैं और वह भी उनकी बढ़ती के समय। परन्तु उस दिन आत्मा के स्वरूप पर स्वामी जी के व्याख्यान का असर अवर्णनीय है। स्वामी जी ने सत्य के बल पर बोलते हुए कहा 'सत्य को प्रकट मत करो। कलक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीडा देगा। अरे, चक्रवर्ती राजा क्यो न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।' उसके बाद महर्षि ने उपनिषद के उस वाक्य को पढा जिसमे लिखा है कि आत्मा को न कोई हथियार छेद सकता है और न उसे आग जला सकती है, गर्जती हुई आवाज मे बोले यह शरीर तो अनित्य है उसकी रक्षा मे प्रवृत्त होकर अधर्म करना असत्य बोलना, सत्य को छिपाना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नष्ट कर दे।' महर्षि सिंहनाद करते हुए बोले 'मुझे वह सूरमा दिखलाओ जो यह दावा करता है कि मेरी आत्मा का नाश कर सकता है। जब तक ऐसा वीर इस ससार मे नहीं है, मैं यह सोचने को भी तैयार नहीं हू कि मै सत्य को दबाऊ गा।

स्वामी दयानन्द के इस सत्य की प्रेरणा से प्रेरित स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन भी सत्य की परिधि पर घूमता था। उन्होने सत्य की भावना से भरकर अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखा। श्रद्धा का अर्थ है सत्य को धारण करना। सत्य धारयतीति श्रद्धा भवति जो सत्य को धारण करने मे आनन्द का अनुभव करे वह श्रद्धानन्द है। उन्होने सत्य को धारण करने का प्रयत्न किया सत्य पर चले और अन्त मे सद्धर्म के लिए बलिदान भी किया।

एक और घटना सुनिए —

रात का समय है। सर्वत्र निःस्तब्धता और शान्ति का साम्राज्य छाया हुआ है। एक घर मे एक स्त्री अपने पति की देर रात तक न लौटने से व्याकुल हो होकर कभी बाहर, कभी अन्दर आती है और बाहर दूर दूर तक दृष्टि फेंकती है। इतने मे शराब के नशे मे चूर लडखडाता हुआ एक व्यक्ति आकर धड़ाम से गिर पड़ता है। स्त्री वहां झट से पहुच जाती है। उसके मुख से शराब की दुर्गन्ध आ रही है। वह इसकी कुछ भी परवाह नहीं करती। वह अपना पतिसेवा धर्म निभा रही है। यह उसके अपने पति लाला मुन्शीराम हैं। होश मे आने पर अपनी पत्नी की कर्त्तव्य परायणता, धर्म प्रियता एव सेवाभाव देखकर उनका हृदय परिवर्तन हो जाता है। उसी समय शराब न पीने का प्रण करते हैं। शराब के सब पात्र मास की प्लेटें पटक दी जाती हैं और मास तथा शराब से छुटकारा पाकर उनके जीवन का नया अध्याय शुरू हुआ।

डिगो न अपने प्रण से तो कुछ कर सकते हो।
तुम भी ऊ चे उठ सकते हो, छू सकते हो नभ के तारे।।

इसी तरह सत्य और निर्भयता की मूर्ति श्रद्धानन्द स्वामीजी की एक घटना और सुनिए—

इस गुरुकुल का प्रारम्भ घने जगल मे हुआ था जिसमे जगली हाथी, शेर, चीते, भालू, रीछ साप अजगर और पानी मे घड़ियाल भी रहते थे। इन जानवरो के अतिरिक्त मानव पशुओ से भी गुरुकुल निवासियो का पाला पड़ जाता था। कार्य कर्ताओ और विद्यार्थियो की रक्षा और उनके जीवन का उत्तरदायित्व निर्भयता की मूर्ति और आत्मा की अमरता मे विश्वास रखने वाले सत्यव्रती, स्वामी श्रद्धानन्द के ऊपर था। गुरुकुल की पूर्वीय दिशा मे सुलताना नामक डाकू रहता था और उसका बड़ा आतक था। उससे तो पुलिस और सरकार भी डरती थी। वह डाका डालने से पूर्व जहा डाका डालना होता था उसको सूचित कर देता था। एक बार उसने गुरुकुल को अपना लक्ष्य बनाया और सूचना भी भिजवाई। बरसात का मौसम था। गुरुकुल का पूर्वीय नाला भी भरकर चल रहा था। पर, स्वामी श्रद्धानन्द के चेहरे पर जरा भी घबराहट और चिन्ता के चिन्ह न थे। उन्होंने गुरुकुल के कर्मचारियो, अध्यापको एव ब्रह्मचारियो की टोलिया बनाकर गुरुकुल के चारो ओर सबको लाठिया हाकी और कुछ को मशालें देकर खड़ा कर दिया। सुलताना सूचित समय पर पूरब की ओर से आया उसने मशालो की रोशनी मे सैकड़ो ब्रह्मचारियो और कर्मचारियो को लाठी लिए हुए तैयार देखा तो वह स्वामी जी की ओर बढ़ा। अपने घोडे पर बैठेही उसने पूछा 'यह क्या हो रहा है? क्या आप लोगो को मेरा नोटिस नहीं मिला? जानते हैं मैं कौन हू?' स्वामी जी ने तटस्थ भाव से कहा 'हमे डाकुओ के सरदार किसी सुलताना ने डाका डालने का नोटिस दिया था, हम उसका मुकाबला करने आए हैं। हमारे यहा निःशुल्क शिक्षा दी जाती है और सबको एक समान भोजनादि दिया जाता है। परन्तु सताने वाले का सामना तो करना ही पड़ेगा।' स्वामी जी की सत्य, ओज, निडर वाणी सुनकर तथा चेहरे पर विराजमान दिव्य तेज को देखकर वह घोडे से उतरा, उनके चरणो पर झुका और श्रद्धास्वरूप कुछ राशि देकर चला गया। है न निर्भीकता, सत्यवादिता और दृढ सकल्प। किसी कवि के शब्दो मे—

त्याग तपस्या मूर्ति धन्य, श्री श्रद्धानन्द महान् हुए।
धर्म वीरता ध्रुवता की वर वेदी पर बलिदान हुए।
उनका विमल विवेक विश्व मे, भव्यभाव भर जाएगा।
पावन पुण्य चरित्र जगत मे जीवन ज्योति जगाएगा।
आज अमर जिनकी सुकीर्ति है, भला कहीं वह मरता है?
उसका तो आदर्श चरित, कल्याण त्राण नित करता है।

एम १/६९ राप्तीनगर कालोनी आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर

स्वामी श्रद्धानन्द

(पृष्ठ ५ का शेष)

गयी डाकू सुल्ताना स्वामी जी के पैरो मे गिरकर पश्चाताप के आंसू बहा रहा था। क्या हमे इससे उस घटना का स्मरण नही हो आता जब कि महात्मा बुद्ध ने अकेले बन मे जाकर अगुली माल जैसे दुर्दान्त डाकू को भी अपना भक्त बना लिया था। इसके लिए ही तो कहा गया है—'ब्रह्मतेजो बल बलम्'। स्वामी जी ने लिखा है—मारने वाले से रक्षा करने वाला ज्यादा बलवान् होता है। यह केवल उनका मन्तव्य ही नही था अपितु उनके जीवन का सत्य था।

स्वामी श्रद्धानन्द मनसा वाचा कर्मणा एक थे। उनका जीवन उनके ही अनुभवो पर आधारित था। दूसरा को उपदेश देने से पहले लिखते हैं 'यदि जाति को स्वतन्त्र देखना चाहते हो तो स्वय सदाचार की मूर्त्ति बनकर अपनी सन्तान के सदाचार की बुनियाद रख दो। स्वामी जी का मानना था कि सदाचारी व्यक्ति कभी भी निराश नही हो सकता इसके विपरीत 'जब तक मनुष्य का आचार दृढ न हो जावे तब तक बारम्बार की निराशा मनुष्य को बडा ही निरुत्साही बना देती है ?

स्वामी जी के उक्त बचनो से स्पष्ट है कि वे सदाचार तथा आशा का अविनाभाव सम्बन्ध मानते है। सदाचारी व्यक्ति निराश नही हो सकता तथा दुराचारी कभी भी आशावान् नही हो सकता, यह स्वामी जो के जीवन का सत्य जो उन्होने क्रियात्मक रूप मे धारण किया हुआ था। महर्षि दयानन्द तो युग पुरुष थे किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जैसे सत्य श्रद्धा-साहस समन्वित उ के भक्त भी विरले ही होते हैं। ब्रह्मर्षि विरजानन्द को योग्य शिष्य दयानन्द मिला तथा महर्षि दयानन्द को श्रद्धा समन्वित शिष्य श्रद्धानन्द मिला। खेद है कि यह परम्परा आगे न चल पायी। यद्यपि स्वामी श्रद्धानन्द के सुयोग्य स्नातक शिष्यो ने देश-विदेश मे अनेक क्षेत्रो मे अपने आचार्य के काम को आगे बढाया किन्तु वह परम्परा भी अब लुप्त प्राय है। दोष कहाँ है, आर्य जनता को स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर यह परीक्षण भी करना चाहिए और श्रद्धानन्द को राष्ट्रीय पुरुष घोषित किया जाए। काग्रेस मे जिस व्यक्ति ने इतना कार्य किया उसे क्या इसीलिए राष्ट्रीय नेना नही माना जा रहा कि वह आर्यसमाज का नेता था। आर्य समाज के इसी नेता को महात्मा गाधी अपना बडा भाई कहते थे तथा मोहनदास करमचन्द गाधी को महात्मा की पदवी देने वाला भी यही आर्य समाजी नेता था।

बी २६६ सरस्वती बिहार दिल्ली-३

श्री माधो प्रसाद जी का निधन

आर्य समाज के परम शुभ चिंतक श्री माधो प्रसाद (आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर) का २७-११-९२ को सोतीगज मेरठ मे अपने भान्जे के घर पर निधन हो गया, वे लगभग ९० वर्ष के थे। वे कई वर्षों से सार्वदेशिक सभा के साथ जुड हुए थे। उन्होने मृत्यु से पूर्व अपनी समस्त धरोहर राशि को सभा मे स्थापित 'श्री माधो प्रसाद विद्यावती स्थिर निधि' मे जमा करवा दिया था। वेद प्रचारार्थ उनकी यह स्थिर निधि लगभग पौने दो लाख रु० की है।

सभा कार्यालय मे उनके निधन के समाचार के उपरान्त एक शोक सभा आयोजित की गई। सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दिवंगत के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री माधो प्रसाद जी जाति व धर्म की रक्षा के लिए सदैव काम करते रहे थे। उन्होंने इसी कार्य के निमित्त सभा में अपने व अपनी पत्नी विद्यावती जी के नाम से एक स्थिर निधि बनाई थी आर्यसमाज ऐसे धर्म परायण दानवीर का सदैव आभारी रहेगा। अन्त में दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए उनके परिजनों व मित्रों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थिर निधियां (२)

श्री शम्भूसिंह सूबेदार स्थिर निधि ५ हजार रुपए
(अन्तरंग १६-१०-८२ द्वारा स्वीकृत)

इस निधि का ब्याज वेद प्रचारार्थ सभा व्यय करेगी। उसी अनुसार ब्याज राशि व्यय की जा रही है।

वीर विद्यासागर शुद्धि एवं दलितोद्धार स्थिर निधि ६००० रुपए
देवेन्द्र नाथ शास्त्री द्वारा स्थापित
(अन्तरंग १ ६-८३ द्वारा स्वीकृत)

यह निधि श्री विद्यासागर जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री देवेन्द्र नाथ शास्त्री १५ आर्य कुटीर नरेला ने अपने कनिष्ठ भ्राता की स्मृति मे स्थापित की।

श्री कल्याणमल मांगेलाल तापड़िया साहित्य प्रकाशन
स्थिर निधि ५ हजार रुपए

शर्तें—(१) इस निधि का ब्याज ही वैदिक साहित्य के प्रकाशनार्थ खर्च होगा। मूल राशि नहीं।

(२) इस राशि का निधि कर्ता अथवा उसके किसी भी सम्बन्धी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

श्रीमती यशोदा देवी सहायता स्थिर निधि ४००० रु०
(अन्तरंग १५ १२ ८३ द्वारा स्वीकृत)

इस निधि का ब्याज अनाथ बच्चों की पढ़ाई पर खर्च होगा और सभा को खर्च करने का अधिकार होगा। निधि कर्ताओं या उसके किसी सम्बन्धी को मूल राशि वापस लेने का अधिकार न होगा। ब्याज राशि शर्त के अनुसार व्यय की जा रही है।

यशोवर्धन स्थिर निधि ६ हजार रुपए
संस्थापित द्वारा स्व० श्री म० बनवारी लाल आर्य गाजियाबाद
(पुत्र की पुण्य स्मृति मे)

शर्तें—(१) कम से कम ५ सार्वदेशिक पत्र निर्धन व अधिकारी व्यक्तियों को निःशुल्क हर वर्ष बदलते रहकर भेज दिया जाया करे।

(२) इस निधि के ब्याज से मुख्यत स्व० पं० रामचन्द्र देहलवी तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज कृत साहित्य प्रकाशित करके उसका लाभ इस निधि मे जमा करके उन्नत किया जाय।

दानी महोदय ने इस निधि की राशि बढ़ाने की भी स्वीकृति चाही थी जो दी गई। प्रारम्भ मे यह राशि ३१०) थी। इस निधि की स्वीकृति ३०-५ ८१ की अन्तरंग बैठक ने दी। यह निधि अब ६०००) की हो गई है। इस वर्ष ३००) व्यय किये गए।

श्री सरदारी लाल आर्य नय्यर स्थिर निधि ५ हजार रुपए

शर्तें—(१) इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जायेगा। मूल नहीं।

(२) इस निधि का ब्याज प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे अध्ययन कर रहे किसी निर्धन होनहार व मेधावी वेदपाठी छात्र के अध्ययन पर छात्रवृत्ति के रूप मे व्यय किया जाएगा। यदि किसी अन्य गुरुकुल मे भी ऐसे ही वेदपाठी को सहायता की आवश्यकता हो तो सभा को अधिकार होगा कि वह ब्याज की पूरी राशि दूसरे विद्यार्थियों को देकर उक्त निधि से सहायता कर दे। ऐसा न होने पर ब्याज की पूरी राशि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रों को ही दे दी जाए।

(३) इस निधि के ब्याज से सभा प्रति वर्ष २ प्रतिशत का दस्तांश ले सकेगी।

(४) इस निधि की मूल राशि दानी को वा उनके किसी उत्तराधिकारी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

(५) दानी अपनी इच्छानुसार इस निधि मे राशि को बढ़ा सकेंगे। गत वर्ष ८००) व्यय हुए।

श्री चिरंजीलाल भल्ला गोसवर्धन स्थिरनिधि एक लाख रुपए
(चिरंजीलाल भल्ला चैरिटेबल ट्रस्ट अध्यक्षश्री मुल्कराज भल्ला द्वारा स्थापित)

(१) सभा अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के लिए अपनी इच्छा से इस राशि का विनिमय करेगी।

(२) इस निधि से प्राप्त आय गोवंश की रक्षा, नस्ल सुधार उसके हित, पालन पोषण आदि मे व्यय तथा अन्य किसी ढंग से प्रयुक्त की जा सकेगी जिसमे कि गोसवर्द्धन तथा दुग्ध उत्पादन मे वृद्धि हो और सब सामान्य जनता विशेषत पिछड़ी जातियों के स्वास्थ्य म सुधार हो।

(३) पशुओ की बीमारियो की रोकथाम के लिए अनुसधान कार्य मे व्यय करना।

(४) इस निधि की आय सम्पूर्ण अथवा आंशिक धनराशि का उपयोग पशु चिकित्सालय पशुओ के रोगो पर अनुसधान नस्ल सुधार केन्द्रो की शीघ्र स्थापना पर इस शर्त के साथ किया जा सकेगा कि इस प्रकार के केन्द्र (चिकित्सालय) का नाम लाला चिरंजीलाल भल्ला रखना होगा।

(५) इस निधि की राशि को चिरंजीलाल भल्ला चैरिटेबिल ट्रस्ट को वापिस लेने का अधिकार न होगा।

इस निधि की स्वीकृति १० ९ ८१ की अन्तरंग सभा ने दी।

स्त्री आर्य समाज पारिवारिक सत्संग मण्डल

डी ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली ने १८९३८-६४ (अठारह हजार नौ सौ अड़तीस रुपये चौसठ पैसे की एक स्थिर निधि सभा मे कायम की है। इस निधि के ब्याज का उपयोग निम्न कार्यो मे होगा।

धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन गरीब छात्र छात्राओ की छात्रवृत्ति। प्रकाशित पुस्तकों पर श्रीमती ईश्वरी देवी जी आर्य समाज डी० ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली की स्थिर निधि के ब्याज से प्रकाशित किए जाने का उल्लेख हो। इस निधि के धन को कोई भी कभी भी वापिस लेने का अधिकारी नही होगा। २१ २-८२ की अन्तरंग सभा ने इसकी स्वीकृति दी।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द

तज दुर्व्यंन बन सन्त श्रद्धानन्द आये,
कोटि-कोटि मानवो के सकट मिटा गये।
ऊच-नीच भेद-भाव जाति-पाति छुआछात
नाशकारी सारी कुप्रथाय हटा गये।।
बिखरे जो मोती बीन माला मे पिराये गये,
बिछडे जनो को गले से लगा गये।।
बिखरी अनेक शक्ति एक कर जोड दई,
प्रेम पुनीन पाठ ममता का पढा गये।।
सदियो से बन्द द्वार खोले श्रद्धानन्द ने,
दिशा भ्रान्त यात्रियो को रास्ता दिखा गये।
डगमगाई नैया नही कोई था खिवैया यहा,
ज्ञान की ज्योति जला पार नैया लगा गये।।
पाठ शुद्धि पढाया चक्र सुदर्शन घुमाया,
पुण्य-पद वेद रूपी दीपक जला गये।
झुक रही सगीन सीना तानकर आगे बढे,
फिरगी कुशासन की नीव को हिला गये।।
परतन्त्रता भगाई और स्वतन्त्रता बिठाई,
नष्ट अन्याय कर आजादी दिला गये।
तेईस दिसम्बर सन् उन्नीससौ छब्बीस को,
हो गये शहीद खून प्यासे को पिला गये।।

गुरुकुल आश्रम आमसेना का रजत जयन्ती महोत्सव

गुरुकुल आश्रम आमसेना का रजत जयन्ती महोत्सव २८ से ३१ दिसम्बर १९९२ को समारोह के साथ पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता मे मनाया जा रहा है। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन ११ दिसम्बर से पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी के आचार्यत्व मे हो रहा है। अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलनो के साथ शुद्धि समारोह मे हजारो ईसाई, पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाका आशीर्वाद लेकर वैदिक धर्म मे प्रविष्ट होगे।

इस अवसर पर एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन भी किया गया है समारोह मे देश के सभी भागो से उच्चकोटि के साधु-महात्मा विद्वान आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी तथा राजनीतिक नेता पधार रहे है। अधिक से अधिक सख्या मे सपरिवार पधार कर अपना अमूल्य आशीर्वाद एव सहयोग देकर कृतार्थ करे।

—धर्मानन्द सरस्वती आचार्य

वधु की आवश्यकता

२२ वर्षीय, सम्पन्न अग्रवाल आर्य परिवार के सुन्दर, सुयोग्य, स्वस्थ, कद ५ फुट ७ इन्च स्वत का "डाईमण्ड व्यापार" वर हेतु, आर्य परिवार की शिक्षित स्वस्थ सुन्दर, सुशील कन्या चाहिए।

कृपया लिखे—

पोस्ट बाक्स न० ७६ जी०पी० ओ० नागपुर-४४० ००१

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

पजाब के मुख्यमन्त्री सरदार बेअन्तसिह ने आर्य समाज व महर्षि दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि शिक्षा काल से ही मैं आर्यसमाज की गतिविधियो तथा राष्ट्रीय निष्ठा से पूर्ण परिचित हू। आर्य समाज द्वारा की गई सेवाओ का शब्दो मे वर्णन नही किया जा सकता, वास्तव मे आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रदूत थे। मुझे आज आर्य समाज के महान सन्यासियो ने यहा आकर अपना आशीर्वाद दिया है जबकि मुझे स्वय उनके चरणो मे जाकर आशीर्वाद लेना चाहिए था।

इस अवसर पर पजाब के वित्तमन्त्री डा० केवल कृष्ण ने कहा कि मैं चाहता हू कि आर्य समाज अपने पुराने स्वरूप को दिखाए और पूरा देश स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चले।

सम्मेलन मे सनातन धर्म सभा के नेता पं० मोहनलाल शर्मा और पंजाब के प्रसिद्ध विद्वान महन्त राम प्रकाश दास ने अपने ओजस्वी भाषणों मे कहा कि राष्ट्र की वर्तमान समस्याओ में आर्य समाज ही सही मार्ग दिखा सकता है।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से महर्षि दयानन्द गो सवर्धन दुग्ध केन्द्र के लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी को इक्यावन हजार रुपये की थैली भेंट की गई और छत्तीस हजार रुपये की राशि से अनेकों विद्वानो को सम्मानित किया गया।

सम्मेलन का सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री अश्विनी कुमार एड० ने कुशलता पूर्वक सम्पन्न किया। ●

विशेष ध्यान योग शिविर

पातंजल योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर हरिद्वार

दिनांक ३ जनवरी, रविवार से १३ जनवरी १९९३ बुधवार तक

साधना प्रेमी साधक—साधिकाओं को महर्ष सूचित किया जाता है कि साधकों के विशेष आग्रह पर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे मौन साधना का विशेष अभ्यास एवं योग दर्शन का क्रमिक अध्ययन कराया जायेगा। अतः साधक-साधिका ३ जनवरी सायंकाल तक योगधाम पहुंच कर शिविर से लाभ प्राप्त करें। शिविर के मध्य में प्रवेश नही लिया जायेगा। आने की सूचना पत्र द्वारा अवश्य करें।

—योगानन्द मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४१/९२ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२७ १२-१९९२) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post । N D P.S O on 24, 25-12-1992

विदेश समाचार

आर्य समाज एम्सटर्डम मे स्वास्थ्य परिचर्चा

आर्य समाज एम्सटडम (Amsterdam) जिसे सत्य सनातन वैदिक प्रकाश के नाम से भी पुकारते हैं, मे २७ नवम्बर १९९२ को, शाम को ७ बजे से रात के १०॥ बजे तक, एक विशेष कार्यक्रम हुआ जिसमे डाक्टर चन्दर महाबीर (जो कि होलेण्ड के सरकारी अस्पताल मे सर्जन हैं) द्वारा बाताया गया कि पित्ताशय (पित्त की थैली) मे जब पत्थर बन जाते हैं तो किस प्रकार से नई विधि द्वारा बिना पेट काटे किस प्रकार से पित्त की थैली को लिवर से अलग करके पत्थरो को निकाला जाता है। पित्त रोग से बचने के उपाय बताये तथा अधिक चिकनाई (घी तेल इत्यादि) ना खाने पर भी बल दिया। शाम को ७ बजे से ८ बजे तक स्लाईडो द्वारा समझाया गया फिर ८ बजे से ८॥ बजे तक प्रश्न व उत्तर हुये।

८॥ बजे से ९ बजे तक सभी के लिये जलपान का प्रबन्ध था। ९ बजे से १० बजे तक फिल्म दिखाई गई कि किस प्रकार से आपरेशन होते हैं। आपरेशन के पहले कैसे पेट मे हवा भरते हैं फिर बिना पेट काटे केवल एक विशेष यन्त्र द्वारा पेट मे थोडा सा काट कर उस यन्त्र से पेट के अन्दर देखते हैं और ऐसे यन्त्र आवश्यकता अनुसार ३ या ४ जगह लगाकर पूरे आपरेशन को दिखाया गया।

रोगी आपरेशन के बाद शीघ्र ही दूसरे दिन घर आ सकते हैं। इस कार्यक्रम मे प्रश्न पूछने के लिये भी सबको समय दिया गया।

कार्यक्रम मे सभी वर्ग के नवयुवक व नवयुवतियां अधिक सख्या मे आये थे। लोगो के विशेष आग्रह पर भातो के आपरेशन की नई विधि पर फिल्म दिखाये जाने के प्रस्ताव को भी स्वीकार किया गया।

मेडिकल विज्ञान मे जो उन्नति हो रही है उसके बारे मे लोगो को फिल्म व स्लाईडो इत्यादि द्वारा अधिक जानकारी दने के कार्यक्रमो को भी सभा के अधिकारियो ने सभी के आग्रह पर स्वीकार किया।

—महेन्द्र स्वरूप
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैण्ड

दंगाइयों ने लण्डन आर्य समाज को जलाया

आर्य समाज लण्डन के मन्त्री श्री इन्द्र चोपडा ने सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे टेलीफोन द्वारा सूचना दी है कि भारत मे अयोध्या काड से प्रभावित लोगो न आर्य समाज लण्डन के भवन पर आक्रमण कर दिया तथा पेट्रोल छिडक कर भवन मे आग लगा कर सम्पत्ति को काफी नुकसान पहुचाया है। भारत मे हुये काय का बदला यहा लण्डन मे लिया जा रहा है। आश्चर्य की बात है कि इस सम्बन्ध मे सरकार भी बिलकुल मौन है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस सम्बन्ध मे रोष प्रकट करते हुये सरकार से माग की है कि विदेशो म हो रही इस प्रकार की घटनाओ को अविलम्ब रोका जाय तथा सम्पत्ति के नुकसान का मुआवजा दिलाया जाय और अपराधियो को दण्ड दिया जाय।

तपोवन मे आर्य विद्या गुरुकुल का प्रारम्भ

देहरादून, २ दिसम्बर। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून मे "आर्ष विद्या गुरुकुल" चलाने का निश्चय किया गया है। इसमे समाजसेवी, राष्ट्रप्रेमी युवको को वर्णोच्चारण-शिक्षा से लकर महाभाष्य तक तथा वेदाग-प्रकाश, सत्यार्थप्रकाश सस्कार विधि, दशन, उपनिषद् आदि शास्त्र पढाकर उन्हें आर्ष विद्वान आचार्य, आर्योपदेशक धर्मप्रचारक, पुरोहित के रूप मे तैयार किया जायेगा। छात्रो का सख्या अभी दस से अधिक नही होगी। प्रवेश के लिए योग्यता कम से कम दशम श्रेणी उत्तीर्ण या इसके समकक्ष और आयु कम से कम १६ वष रक्खी गई है। प्रवेशार्थी हिन्दी या सस्कृत मे लिख, पढ, बोल सकता हो।

छात्रो का चयन आरम्भ कर दिया गया है। आचार्य भद्रकाम वर्णी, आर्ष विद्या गुरुकुल, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून-२४८००८ से सम्पर्क कर सकते हैं।

—देवदत्त बाली

गुजरात के राज्यपाल श्री स्वरूपसिंह जी का टंकारा में आगमन

दिनाक २३ नवम्बर १९९२ सोमवार को गुजरात के राज्यपाल श्री स्वरूपसिंह जी स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज के जन्मस्थान टकारा मे महर्षि स्मारक महालय मे सपरिवार पधारे। सर्वप्रथम उन्होने प० अरुण कुमार विदर्भीय के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हो रहे गायत्री यज्ञ में सपरिवार सम्मिलित होकर आहुतिया प्रदान की। तदन्तर श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के अधिकारियो ने राज्यपाल श्री का एव श्रीमती सिन्धुबेन ने राज्यपाल श्री की धर्मपत्नी श्रीमती शीला जी का पुष्प मालाओ से स्वागत किया। उपदेशक महाविद्यालय टकारा के प्राध्यापक ब्र० अनिल कुमार शास्त्री ने उन्हें विद्यालय सम्बन्धि-विस्तृत जानकारी दी। तत्पश्चात दयानन्द चित्र दर्शन (चित्र प्रदर्शनी) का ऋषि बोधस्थान एव ऋषि जन्मस्थली का दर्शन करके राज्यपाल महोदय ने राजकोट के लिए प्रस्थान किया। उन्होने टकारा की समस्याओं को बडे ध्यान से सुना एव उनका निराकरण करने का आश्वासन दिया।

—अरुण कुमार विदर्भीय

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्यसमाज रीवा, सर्वश्री सत्यपाल जी प्रधान, जयरामलाल श्रीवास्तव मन्त्री, सुदामालाल सचदेव कोषाध्यक्ष।

—गु० प्रा० आर्य प्रतिनिधि सभा, सर्वश्री मगलसेन चोपडा प्रधान, प्रा० जगदीश प्रसाद त्रिपाठी मन्त्री, बच्चुभाई टीकायस्थ कोषाध्यक्ष।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।